Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
110504
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मासिक प्रकाशन जनवरी ९०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

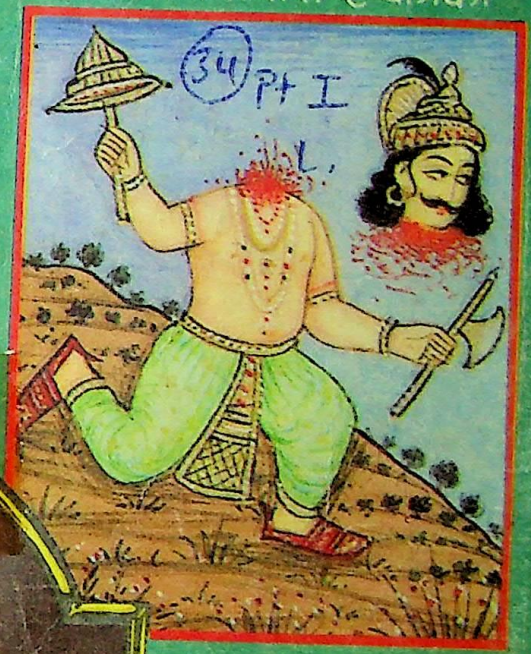

हाथी दांत महिषासुर की चपेट में

110504

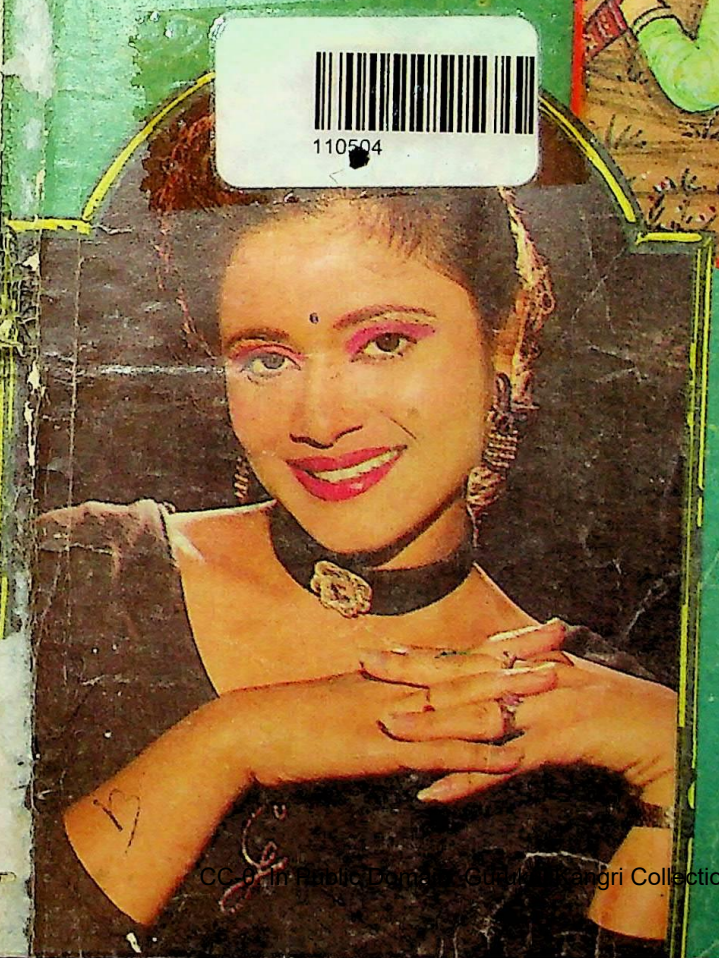

नहीं मिलेंगे ये राहु-केतु

सुंदर है सुंदरतम यह जीवन

७ रुपये

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टीचर मुझको कुशल बताएँ
पापा मुझको लाड जतायें
दोस्त मुझे सब करते प्यार
है न यह मॉर्टन का कमाल।

मॉर्टन स्वीट्स व टॉफियाँ — वर्षों से पूरे परिवार की मनपसन्द। स्वादिष्ट व पौष्टिक - इतने सारे जायकों में। चीनी, ग्लूकोज व क्रीमयुक्त शुद्ध दूध, के गुणों से भरपूर। चॉकलेट व कोकोनट कूकीज, रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम, चॉकलेट तथा कोकोनट टॉफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य अनेक मज़ेदार स्वादों में उपलब्ध। मुस्कुराहट भरा मॉर्टन का साथ।

MORTON SWEETS

मॉर्टन कन्फेक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री,
पो० आ०: मढ़ौरा — ८४१४१८, जिला सारन, बिहार

चेतावनी :
MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर ऑपर गैंगेज सूगर एंड इंडस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापार-चिन्ह है।
किसी भी प्रकार से व्यापार- चिन्ह अधिकारों का उल्लंघन अभियोजनीय है।

CC-2789 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रैपिडेक्स" इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

प्रिय अभिभावक,
आपका बच्चा अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता है,
अंग्रेजी अच्छी तरह लिख-पढ़ लेता है;
उसकी एकमात्र समस्या.....
वह इसे बोलने में हिचकता या अटकता है !

इसका समाधान बता रहे हैं
उसके प्रिय खिलाड़ी कपिल देव—

"अंग्रेजी बोलचाल सीखने का एकमात्र सोर्स
रैपिडेक्स इंगलिश स्पीकिंग कोर्स"

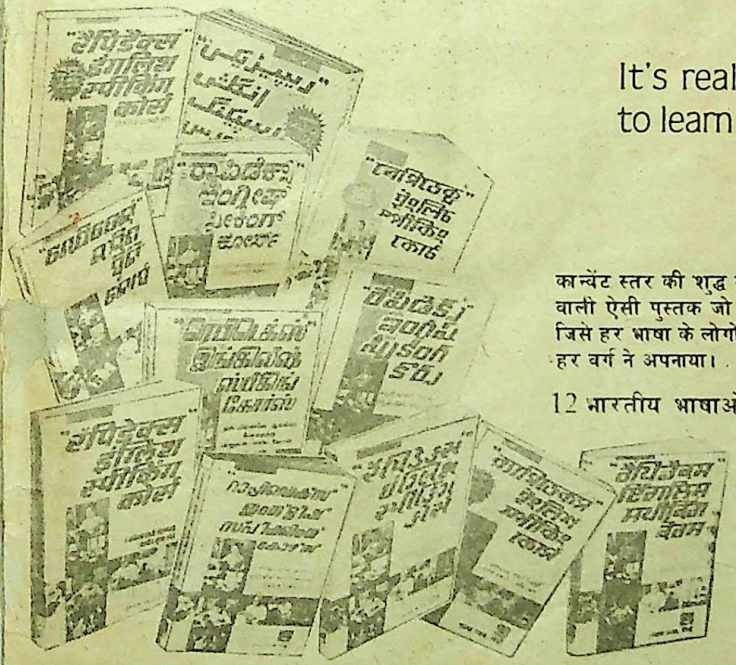

It's really a good book
to learn spoken English
—Kapil Dev

कान्वेंट स्तर की शुद्ध व फर्राटेदार अंग्रेजी सिखलाने वाली ऐसी पुस्तक जो भारत के कोने-कोने में फैली, जिसे हर भाषा के लोगों ने पसंद किया तथा समाज के हर वर्ग ने अपनाया।

12 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित

बड़े साइज के
400 से अधिक पृष्ठ
मूल्य : 36/- प्रत्येक
डाकखर्च : 5/- प्रत्येक

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डा पर स्थित बुकस्टालों पर मांग करें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता.

पुस्तक महल, रवाशि बावली, दिल्ली-110006
नया शो रूम : 10-B नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. **कर्पट**—क. कूड़ा, ख. फटा-पुराना कपड़ा, ग. कठोर, घ. बूढ़ा।

२. **अरुणोदय**—क. लाल होना, ख. प्रकट होना, ग. उषा, घ. उन्नति।

३. **प्राणघ्न**—क. खतरनाक, ख. विषमय, ग. हत्यारा, घ. जानलेवा।

४. **मर्मस्थल**—क. वह स्थान जहां कोई पहुंच न सके, ख. सजीव भाग, ग. जिस जगह का महत्त्व हो, घ. नाजुक हिस्सा।

५. **सौख्य**—क. संपन्नता, ख. सुख, ग. भ्रातृत्व, घ. सखापन।

६. **मतिविभ्रम**—क. मतभेद, ख. गलतफहमी, ग. मन की अव्यवस्था, घ. अविश्वास।

७. **वर्धमान**—क. बढ़नेवाला, ख. बड़ा, ग. उन्नत, घ. लंबा-चौड़ा।

८. **निरपेक्ष**—क. जो अन्य किसी पर निर्भर न हो, ख. अलग, ग. अतुलनीय, घ. निराशामय।

९. **अनर्गल**—क. अनुचित, ख. अव्यवस्थित, ग. अनियंत्रित, घ. निर्ल्लज।

१०. **भिक्षाटन**—क. भीख मांगना, ख. भीख से पेट भरना, ग. भीख मांगने का पेशा, घ. भीख मांगते हुए घूमना।

११. **तदात्व**—क. कभी-कभी, ख. वर्तमान समय, ग. जैसा भी हो, घ. इस तरह।

१२. **निद्रित**—क. लेटा हुआ, ख. आलस्यमय, ग. सोया हुआ, घ. शांत।

१३. **निरभिमान**—क. जिसमें स्वाभिमान न हो, ख. अहंकाररहित, ग. विनयपूर्ण, घ. जिसमें कोरा घमंड हो।

१४. **बहुभाषी**—क. अच्छा भाषण करनेवाला, ख. अनेक भाषाएं जाननेवाला, ग. बेकार बोलनेवाला, घ. वाचाल।

उत्तर

१. ख. फटा-पुराना कपड़ा। यह **कर्पट** किसी गरीब को देने लायक नहीं है।

२. ग. उषा, प्रातः। **अरुणोदय** मानव के लिए प्रकृति का नव-संदेश देता है। (अरुण+उदय)

३. घ. जानलेवा, जीवननाशक। नशीले पदार्थ अंततः **प्राणघ्न** सिद्ध होते हैं। (प्राण+घ्न)

४. ख. सजीव भाग। **मर्मस्थल** पर चोट लगने के कारण उसका अंत हुआ। (मर्म+स्थल)

५. ख. सुख। **सौख्य** की कामना किसे नहीं होती। (संज्ञा)

६. ग. मन की अव्यवस्था या गड़बड़ी। स्वभाषा की अवहेलना लोगों के **मतिविभ्रम** का परिणाम है। (मति+विभ्रम)

७. क. बढ़नेवाला। **वर्धमान** राष्ट्र की उन्नति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कोई सीमा नहीं होती ।

८. क. जो अन्य किसी पर निर्भर न हो । उसने निरपेक्ष रहकर ही जीवन-यापन किया है । तटस्थ के अर्थ में भी प्रयुक्त, जैसे 'धर्म-निरपेक्ष' । (निर+अपेक्ष)

९. ग. अनियंत्रित, असंयत । अनर्गल वार्त्ता से आपस में मनमुटाव हो जाता है । (अन्+अर्गल)

१०. घ. भीख मांगते हुए घूमना । प्राचीन काल में देश-भ्रमण और जन-जागृति ही भिक्षाटन का मुख्य उद्देश्य था । (भिक्षा+अटन)

११. ख. वर्तमान समय । तदात्व तथा भूतकाल की गतिविधियों का मापदंड एक नहीं हो सकता ।

१२. ग. सोया हुआ । नवयुग की अरुण वेला में लोगों को निद्रित अवस्था से जगाना चाहिए । (संज्ञा-निद्रा)

१३. ख. अहंकाररहित । निरभिमान रहकर समाज-सेवा करना चाहिए । (निर्+अभिमान)

१४. घ. वाचाल । वह ऐसा बहुभाषी है कि लोग अवाक हो उसे सुनते रहते हैं । (बहु+भाषी)

Appointee	नियुक्त व्यक्ति
Nominee	नामित/मनोनीत
Nationalism	राष्ट्रीयता
Nationality	राष्ट्रिकता
Expenditure	व्यय/खर्च
Investment	पूंजी-निवेश/विनिधान
Exchequer	राजकोष
Revenue	राजस्व
Income	आय
Guidance	मार्ग-दर्शन

समस्या-पूर्ति— १२५

सूरज निकलेगा

प्रथम पुरस्कार

क्यों हम अपने मन को मारें
जो कुछ बीता उसे बिसारें
आशाओं का बल-संबल है
सुख अपने हाथों का बल है
पीड़ा का पर्वत पिघलेगा
अपना भी सूरज निकलेगा

—राजा चौरसिया

उमरियापान— ४८३३३२, जिला- जबलपुर (म.प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

दुःख की काली रात कटेगी सुख के दिन आएंगे
मेरी कुटिया में आशा के पाटल मुसकाएंगे
समय बड़ा बलवान, बदलता है, यह बदलेगा
छंट जाएंगे गम के बादल, सूरज निकलेगा

—चन्द्रप्रकाश 'माया'

हिंदी विभाग, दी बिहार जर्नल्स, पटना-९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

देशसेवा की भावना की परीक्षा

श्री गोपालकृष्ण गोखले : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी उनका अत्यंत आदर करते थे। गोखले जी ने देशसेवा के लिए एक संस्था बना रखी थी— 'भारत सेवक समाज' (सर्वेंट्स ऑव इंडिया सोसाइटी)। बंबई म्युनिसिपैलिटी में एक इंजीनियर थे, जो इस संस्था में आकर देशसेवा करना चाहते थे।

संकोच के नाते उन्होंने गोखलेजी को स्वयं पत्र न लिखकर डॉ. देव नामक एक सज्जन से एक पत्र लिखकर अपना मंतव्य जाहिर किया। उन्हें शंका थी— कदाचित गोखलेजी उन्हें अपनी सोसाइटी में भरती करेंगे या नहीं। इसी नाते उन्होंने डॉ. देव से यह भी कहा कि पहले मैं सोसाइटी को प्रार्थनापत्र दूंगा, यदि वह मंजूर हो गया तो म्युनिसिपैलिटी की नौकरी से इस्तीफा दे दूंगा। न मंजूर होने की हालत में नयी नौकरी कहां ढूंढ़ता फिरूंगा ?

गोखलेजी बड़े पारखी थे। वह ठोंक-बजाकर ही किसी को अपनी संस्था में भरती करते थे। सो उन्होंने डॉ. देव से इंजीनियर महाशय को यह कहलवाया कि पहले वह नौकरी से इस्तीफा दे दें, फिर उनके प्रार्थनापत्र पर विचार किया जाएगा। उनकी दृष्टि में इसी कदम से इंजीनियर की देशसेवा की भावना की परीक्षा हो जानी थी।

मगर उक्त इंजीनियर भी थे कट्टर देशभक्त। जब उन्हें गोखलेजी का संदेश मिला तो उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र देने में कोई विलंब न किया। फिर उनके प्रार्थनापत्र पर विचार करके गोखलेजी ने उन्हें अपनी सोसाइटी में सदस्यता दे दी।

यही इंजीनियर आगे चलकर 'ठक्कर बापा' के नाम से ख्यात हुए।

संकल्प की शक्ति

अमरीका के दिवंगत राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के नौजवानी के दिनों की घटना है। वे बहुत निर्धन थे लेकिन उनके अंदर आगे बढ़ने, कुछ कर गुजरने की बड़ी ललक थी, दृढ़ संकल्प था।

एक बार उन्हें पता चला कि नदी के दूसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

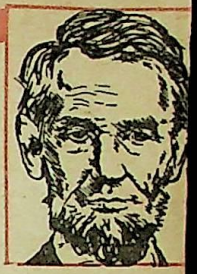

ओर ओगमोन नामक गांव में एक अवकाशप्राप्त न्यायाधीश रहते हैं, जिनके पास कानून की पुस्तकों का अच्छा संग्रह है । सो लिंकन कड़ाके की सरदी के दिनों में उस बरफानी नदी के नाव में बैठ गये । नाव वह स्वयं खे रहे थे । आधी नदी उन्होंने पार की होगी कि नाव एक बरफ की एक चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो गयी । फिर भी साहस के धनी नौजवान लिंकन निराश नहीं हुए । उन्होंने बड़ी मुश्किल से तैरकर नदी पार की और जा पहुंचे रिटायर्ड जज के घर ।

संयोग से उस समय जज का घरेलू नौकर भी नहीं था, सो लिंकन को जज के छोटे-मोटे घरेलू काम भी करने पड़ते । वे जंगल से लकड़ियां बटोरकर लाते और घर में पानी भी भरते और पारिश्रमिक ।

पारिश्रमिक के नाम पर सिर्फ एक ही इच्छा कि वह उक्त जज की सारी किताबें पढ़नेभर को पा सकें । जज ने खुशी-खुशी उन्हें अपनी पुस्तकों को पढ़ने का मौका दिया । संकल्प के धनी यह लिंकन आगे चलकर अमरीका के राष्ट्रीय जीवन में छाये रहे और देश के सर्वोच्च आसन पर जा विराजे, राष्ट्रपति के रूप में । सच ही है, संकल्प हो, तो आदमी क्या नहीं कर सकता ।

ज्ञान-गंगा

कर्म कृत्वा ततस्तस्य फलप्राप्तावनुत्सुकः ।
प्रसन्नश्च निरुद्वेगः स्वस्थ आसीत
पण्डितः ॥

(रश्मि-माला १७/४)

बुद्धिमान मनुष्य को कर्म करके उसके फल की प्राप्ति में उत्सुकता और उद्वेग को छोड़कर प्रसन्नचित्त और शांत रहना चाहिए ।

अभिगम्योत्तमं दानमाहूतं च मध्यमम् ।
अधमं याच्ययानं स्यात् सेवादानं च
निष्फलम् ॥

(पराशर स्मृति १/२८)

जरूरतमंद को स्वयं पास जाकर देना उत्तम दान है, बुलाकर देना मध्यम है, मांगने पर देना अधम है, और सेवा कराकर देना तो सर्वथा निष्फल एवं व्यर्थ है ।

सुखार्थी संयतो भवेत् ।

(मनुस्मृति ४/१२)

सुख की इच्छा रखनेवाले को संयम से रहना चाहिए ।

घृतैर्बोधयताऽतिथिम् ।

(तैत्तिरीय ब्राह्मण १/२/१)

अतिथि को घृत से अर्थात स्नेह-सिक्त मधुरवाणी से संबोधित करना चाहिए ।

हीना वा एते हीयन्ते ये व्रात्यां प्रवसन्ति ।

(ताण्ड्य महाब्राह्मण १७/९१२)

जो निषिद्ध कर्म का आचरण करते हैं, वे हीन से और अधिक हीन होते जाते हैं ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

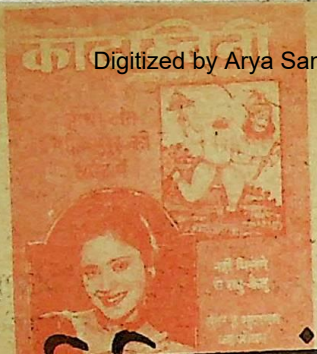

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

'इतिहास' के अंतर्गत गोपा चक्रवर्ती का आलेख 'एक चित्रकार तानाशाह बना' पढ़ा। लेख के अंत में उठाये गये प्रश्न ने चिंतन के लिए प्रेरित किया। मेरा मानना है कि प्रत्येक चैतन्य प्राणी अपने जीवन में सफलता के चरमोत्कर्ष को प्राप्त करना चाहता है। सर्वप्रथम वह सुखद स्वप्न संजोता है तत्पश्चात यथासंभव संघर्ष भी करता है। परंतु कभी-कभी प्रतिकूल परिस्थितियोंवश उसका संघर्ष उस आदर्श स्थिति को प्राप्त नहीं कर पाता जो कि वांछित लक्ष्य के लिए आवश्यक था।

इस अवस्था में उसका एक लंबे समय तक संघर्षरत रहना कठिन हो जाता है और उसके अंदर नकारात्मक विचारधारा का सूत्रपात हो जाता है। इस नकारात्मक विचारधारा के बावजूद उसका हृदय सुकोमल प्रकृतिजन्य स्पंदन से परिपूर्ण होता है। क्योंकि शिशु के अंदर जन्म से ही मां की गोद, पितृसंबल एवं प्रकृति के प्रति कौतूहल इत्यादि कारणों से संवेदना का स्रोत सघन हो जाता है। किसी परिस्थिति विशेष में वह चाहे कितना कठोर आचरण व्यवहार में लाये किंतु स्थापित संवेदनात्मक स्रोत के कारण अंततः उसका हृदय सुकोमल सुवास से आच्छादित हो जाता है। 'पश्चाताप' इसी स्थिति का एक रूप है। यहां एक प्रश्न उठता है कि आखिर यह 'कठोर' आचरण क्यों ?

दरअसल यह विचारों के केंद्रीयकरण का परिणाम है। इस अवस्था में केवल स्वयं के प्रति लाभ की भावना रहती है। और यह लाभ की भावना ही उसे क्रमशः कठोर आचरण करने के लिए प्रेरित करती है। यहां उसकी भावना यह भी मान बैठती है कि यह 'कठोरता' लक्ष्य की प्राप्ति और उसकी स्थिर अवस्था के लिए आवश्यक 'अनुशासन' है।

जैसा कि लेख से स्पष्ट है कि 'हिटलर' का बचपन, मां के प्रति अगाध स्नेह, उनकी असमय मृत्यु, कुछ करने की अद्वितीय इच्छा शक्ति एवं आर्थिक विपन्नता से आच्छादित था। एक शिल्पकार का स्वप्न संजोये जब वह तानाशाह बना तब भी उसका हृदय प्रकृति के अनसुलझे रहस्यों, चित्रकारी के प्रति स्पंदित रहा।

इस अकल्पित शीर्ष पर पहुंचने के पश्चात उसके द्वारा आरोपित दुःखद अंकुश-बर्बरता स्वयं की सत्ता के चिरस्थायित्व, विस्तारवाद का ही परिणाम थी। यहां यह स्पष्ट है कि इस अवस्था में उसने अपनी मूल स्वाभाविकता के विपरीत काम किया किंतु उससे किनारा भी नहीं किया।

सारतः हम कह सकते हैं कि— "सतत् संघर्ष, असह्य थपेड़े सहने के पश्चात हस्तगत शीर्ष पर पहुंचने के उपरांत स्वयं की स्थिर अवस्था के लिए इनसान अपनी प्रकृति जन्य,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नींव प्रदत्त स्वाभाविकता से कुछ क्षण (कभी-कभी लगभग मृत्यु अवस्था तक) दूर तो हो सकता है किंतु समूल विलग नहीं हो सकता।"

शायद प्रकृति के मानवीय अध्याय का कालजयी, सर्वदेशज्ञ एवं अपरिभाषित (अहसास जनित होने के कारण) सिद्धांत यही है।

—प्रदीप पालीवाल
गांधी मार्केट, इटावा

प्रोत्साहन पुरस्कार

'भारतीय चिंतन में धर्म-निरपेक्षता' शीर्षक से प्रकाशित लेख में विभिन्न धर्मों के संक्षेपित सार उल्लेखित कर जिस तथ्य को उजागर किया है, वह आध्यात्मिक धरातलीय होने के कारण जटिल होकर भी सत्य के सन्निकट है और गृहणीय है। तुलसी ने इसी बात को सरल और सरस रूप में धर्म के गरिमामयी स्वरूप को 'पर हित सरित धर्म नहिं' और पर-पीड़ा को अधर्म के रूप में परिभाषित किया है।

मानवीय दृष्टिकोण चाहे आस्तिक हो या नास्तिक अंततोगत्वा वह भावना के संवेगों, उसके प्रभाव से इनकार नहीं कर सकता। कहने की आवश्यकता नहीं, इसी भावना से भगवान का संबंध है। प्रत्यक्ष दृष्टव्य न होने के बाद भी प्रेम की तन्मयता में तुलसी ने राम और सूर व मीरा ने कृष्ण में ईश्वरत्व का निरुपण किया है।

भावना प्रधान कोई भी कार्य विनाशकारी व विघटनकारी नहीं है और न ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में भावनाएं किसी दूसरे की इच्छाओं को आहत करने की अनाधिकार चेष्टा करती हैं। किंतु यदा-कदा जब इस भावना के देवालय में हथियारों का संग्रहण होता है— चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक, तब ही विघटन का मार्ग, एक-दूसरे पर बलाबल आजमाने की होड़ अभिलाषित होती है।

मंदिरों, मसजिदों, गिरजाघरों और गुरुद्वारों में परमेश्वर के अस्तित्व को सीमाबद्ध करने का प्रयोजन आपसी विवादों की उत्पत्ति से नहीं है, वरन केवल हमारी भावना के प्रतिरूप को सीमाबद्ध करने और आराध्य क्षेत्र की निर्मिति के लिए है। वे हमारे प्रार्थना-गृह हैं न कि हमारी शक्तियों की परख के अखाड़े।

धर्म का अर्थ धारण करने से है, और धारण की क्षमता ही धर्म की जीवन उत्सर्गित शक्ति। किसी वस्तु, व्यक्ति या धर्म के प्रति अपनत्व की धर्मांधता में दूसरे मजहब की कमजोरियां, कमियां और हीनता देखना भावना का नहीं, प्रतिशोध का कार्य है। इसके पीछे कई अन्य स्वार्थी तत्वों के हित होते हैं। यह साधारण व्यक्ति व प्रबुद्ध वर्ग के लिए चिंतनीय हो जाता है। आज सर्वत्र धर्मांधी अपने-अपने धर्मेश्वर को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं, बिना यह समझे कि अनेकानेक स्वरूपों में विभाजित ईश्वरत्व एक ही है। नश्वर शरीरों का धर्म कोई भी, क्यों न हो—अविनाशी आत्मा का धर्म परमार्थ ही है। यदि गहराई से आत्म-बोध जाग्रत हो तो 'पर' और 'स्वयं' के बीच एकत्व दृष्टिगत होगा यही एकत्व धर्म है।

—सजग
ज/४९७ कोटरा, सुलतानाबाद, भोपाल

'जब नकारात्मक विचार आएं तो उन्हें एक कागज पर उतार डालिए। फिर इस कागज को बिना पढ़े फाड़ डालिए। सोचिए कि आपने मन का मैल बाहर निकाल फेंका है' मार्गेट जींस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा सुझाया गया यह अभ्यास 'कादम्बिनी' के 'चमत्कार विशेषांक' में उनके लेख 'चमत्कारी होती है मानसिक शक्ति' के अंतर्गत मैंने पढ़ा। वैसे तो मार्गेट जींस के इस समूचे लेख ने मुझे प्रभावित किया है, किंतु उनके द्वारा सुझाया गया उपरोक्त अभ्यास मेरे लिए इसलिए अहमियत रखता है क्योंकि यह अभ्यास मेरी रोजमर्रा की आदतों में से एक था। अपनी इस आदत से मुझे अद्‌भुत मानसिक शक्ति व शांति मिलती थी, किंतु मैं अनभिज्ञतावश इसे 'अपनी बुरी आदतों में से एक' मानता था। अब तो 'फेथ हीलर' मार्गेट जींस के द्वारा सुझाया गया यह अभ्यास सचमुच मेरे लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है। कृपया मेरा धन्यवाद स्वीकार करें।

—केशव चंद्र लाल

ओकनी, हजारीबाग (बिहार)

'कादम्बिनी' के कदम तीसवें वर्ष में पड़ चुके हैं। मेरी हार्दिक एवं आत्मीय बधाई। 'कादम्बिनी' ही एक पत्रिका है जो जीवन के सभी पहलुओं को हार्दिक और आत्मिक पहलुओं से जोड़ती है।

देश-काल-समाज के जितने भी विषय और क्षेत्र हैं, वे सभी मानवीय जीवन से संबंधित हैं। और मानवीय जीवन का आईना हमारा हृदय है, जीवन का प्रतिबिंब हमारी आत्मा है। हमारा बौद्धिक जगत तो मात्र जीवन को संचालित करने तथा जीवन के उद्देश्य को (या स्वार्थ को) लेकर सृष्टि के तत्वों, व्यक्तित्वों से जोड़ने और विश्लेषण करने का माध्यम और साधन है। जीवन का उद्देश्य हमारी आत्मा की, स्वयं की पहचान है।

'कादम्बिनी' इस लोक जगत के मेले में हमें अपना प्रतीक बनाये रखने में टार्च लाईट की तरह प्रकाश प्रदान करती है।

नवम्बर, ८९ में भारतीय चुनाव और उसके बाद के भविष्य के विषय में ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों के अतिरिक्त इतिहास और भारतीय मनोवृत्तियों को विश्लेषित करके मैं कहना चाहता हूं कि भारत की आजादी के बाद हम हर कोणों से निरंतर ह्रास की ओर जा रहे हैं।

इस बार सरकार किसी की भी बने, देश भयानक अराजकता और भ्रष्टाचार के दलदल में धंस जाएगा। यह स्थिति दस वर्ष तक रहेगी।

हम हर तरह से चिंतन की शक्ति से वंचित हो चुके हैं।

—राम मोहन

एल.आई.जी. ८१, हाथीताल कॉलोनी, जबलपुर

नवम्बर विशेषांक में प्रकाशित ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों के संबंध में हमें बहुत बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं। इस संबंध में पाठक पढ़ें पृष्ठ २२ पर प्रकाशित 'समय के हस्ताक्षर' के अंतर्गत 'ज्योतिषियों से सावधान'

हाथी दांत महिषासुर की चपेट में

पृष्ठ १३५ पर प्रकाशित इस लेख के सामने, पृष्ठ १३४ पर प्रकाशित रंगीन चित्रों के साथ छपी पंक्तियों में निम्नलिखित अंश अंत में छूट गया है। पाठक कृपया पृष्ठ १३४ पर प्रकाशित अंतिम पंक्ति इस तरह पढ़ें— लेकिन सज्जाद और उन जैसे सैकड़ों कलाकारों के समक्ष एक संकट आ गया है। यह संकट हाथी दांत पर प्रतिबंध लगाने की विश्व-व्यापी मांग के कारण उत्पन्न हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वर्ष की कुछ विशिष्ट योजनाएं

मार्च में एक और बेजोड़ विशेषांक

गत नवम्बर विशेषांक की भांति ही आकर्षक, पठनीय और संग्रहणीय

□

कहानी-विशेषांक

एक साथ पढ़िए समस्त भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ कथा कृतियां

तीसवें वर्ष के उपलक्ष्य में कुछ विशेष आयोजन

'कादम्बिनी' तीसवें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है । इस उपलक्ष्य में लेखकों, पाठकों आदि के लिए विशेष आयोजन । विस्तृत विवरण अगले अंकों में

और पाठकों के सुझावों के अनुरूप

'कादम्बिनी' में कुछ और नये स्तंभ

इस वर्ष 'कादम्बिनी' का प्रत्येक अंक विशेषांक की तरह आकर्षक, श्रेष्ठ रचनाओं से युक्त एक संग्रहणीय कृति की भांति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

वर्ष : ३०, अंक ३,
जनवरी १९९०

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

सेवक राम ओखाड़ू
बैताल सुनो..... २८

शिव प्रसाद सिंह
मुजरिम हाज़िर है..... ४२

रतन लाल जोशी
गणतंत्र हमारा सांस्कृतिक चैतन्य..... ५६

मुक्ता सिंह
भूतों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा..... ६१

राजकिशन नैन
मंदिर जो ढह गये..... ६८

डॉ. सुधीर खेतावत
अद्‌भुत करिश्मे..... ८२

डॉ. भगवती शरण मिश्र
प्यार एक प्रेरक शक्ति..... ८४

नवीन पंत
होगा यूरोप एक देश..... ८८

राजेंद्र शंकर भट्ट
देह और देश की बात..... ९४

डॉ. चंद्रिका प्रसाद शर्मा
जहां हनुमानजी ने..... ९८

डॉ. जगमल सिंह
घुड़सवार सैनिकों के..... १०३

मुकुन्द दास माहेश्वरी
भारत में जन्मा..... १०७

हबीब खान व लखन अकेला
उनकी आवाज..... १२०

मुनि किशन लाल
कैसे करें विचार..... १२४

नवनीता सरकार
हाथी दांत..... १३४

पं. जगदीश प्रसाद शर्मा
साम्यवादी देशों में भी..... १४३

बाला दुबे
एक नाटक दिल्ली के कत्ल पर..... १४६

डॉ. वीरेंद्र शर्मा
काल तोपची है..... १५६

स्थायी स्तंभ

पैनी नजर-४, शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए-६, समस्या-पूर्ति-७, आस्था के आयाम-८, ज्ञान-गंगा-९, प्रतिक्रियाएं-१०, काल चिंतन-१६, तनाव से मुक्ति-५४, घरोहर-६७, इनके भी बयां-८६, बुद्धि-विलास-९३, आइए चलें जंगल की ओर-११८, गोष्ठी-१२९, हंसिकाएं-१४९, विधि विधान-१५३, यह महीना-१६२, ज्योतिष समस्या और समाधान-१६७, वैद्य की सलाह-१७०, नयी कृतियां-१७२, प्रवेश-१७४, दस्तक-१७८, क्या करेंगे आप-१८०, सांस्कृतिक समाचार-१९६, और अंत में-१९८

आवरण—लियाकत अली भट्टी (चित्र)
ज्ञान दीक्षित (युवती)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

डॉ. कमल किशोर गोयनका
सुंदर है सुंदरतम जीवन..... १७६

कहानियां एवं व्यंग्य

डॉ. जगन्नाथ प्रसाद दास
संप्रदाय..... ३५
मेजर कृपाल वर्मा
स्तूप..... ७४
गायत्री कमलेश्वर
विस्फोट..... ११०
डॉ. एन. रामन नायर
तलाक..... १३९
डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी
अनुभव एक परीक्षक के १५०

कविताएं

राजेन्द्र अनुरागी
एक हत्यारा तिलिस्म..... ४१
गीत एक भाव अनेक..... ५०

सार-संक्षेप

रवि बतरा
क्या वह भयानक घटना..... १८३

विशेष

ज्योतिषियों से सावधान २१

संपादकीय परिवार

सह संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक प्रभा भारद्वाज
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल,
सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त
पता : संपादक
'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

चंदे की दरें

वार्षिक : ७५ रुपये
द्विवार्षिक : १४५ रुपये
विदेशों के लिए : २९० रुपये वार्षिक वायु सेवा से, समुद्री जहाज से : १३५ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोल-मंथन

अलस भोर !

— गांव में था, जानवरों के गलों में बंधी घंटिया सुना करता था ।

— गांव जागा हो, अधजगा हो या सो रहा हो, जानवर चारागाहों की ओर चल पड़ते थे ।

— वर्षों पहले की ये आवाजें आज भूल गया हूं, घंटियां नहीं बजतीं, कारखानों की चिमनियों से हर घंटे आवाजें उठती हैं : मजदूरों सावधान ! मजदूरो जागो !

— मजदूरों के जागने की आवश्यकता ने दूसरों को अधिक सोने का अवसर दे दिया है ।

□

— लेकिन नहीं... !

— वही अलस भोर और मैं एक आवाज सुनता हूं ।

— अस्पष्ट हैं उसके स्वर । अर्थ-अनर्थ के द्वंद्व में समाहित !

— कभी सकारात्मक, कभी नकारात्मक !

— कभी स्वीकार और कभी एकदम अस्वीकार !

□

— वह अचानक मेरे सामने आकर खड़ा हो गया है : मेरे कागज खींचना चाहता है; कागज खींचते हुए वह 'हा-हू' की आवाजें करता है ।

— नन्हे और कोमल हाथों को हटाना मुझे अच्छा नहीं लगता, लेकिन मेरे समय के मर्यादा है, वह इस समय समयातीत है । मैं आंख उठाकर तेज नजरों से देखता हूं, वह रोने लगता है । मैं डांटता हूं, कोई उठाकर ले जाता है ।

— बरामदे से रोने और चिल्लाने की आवाजें आ रही हैं ।

— ये आवाजें मेरे लिए व्यवधान हैं : मैं इन्हें रोकने के लिए चिल्लाता हूं।

— मैं चिल्लाता हूं, डांटता हूं, वह एकदम खिलखिलाने लगता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— वह गेंद से खेलने लगा है शायद !

□

— एक आवाज :
पा...पा !
मां...मां !
डै...डी !

— एक स्त्री के स्वर : हां, बेटे, पा...पा... ! घूम्मी चलेंगे.. चलोगे ?

— शायद,वह समर्थन में सिर हिलाता है ।

— हां, मेरा बेटा घूम्मी चलेगा ।

— आह्लाद में चीख... नन्हे स्वर ।

— थोड़ी देर शांति !...बस थोड़ी देर ही, फिर आवाजें—
मातृत्व : मेला बेता, कपले बदलेगा ? बदलेगा न ?
नन्हा स्वर : आह्लादमय !
मातृत्व : बेते, क्या पहने है ?
नन्हा स्वर : तप्पल ।
मातृत्व : तप्पल नहीं, जूते । क्या पहने है, जूते । जूते बोलो बेटे ।
नन्हा स्वर : दूते ।
मातृत्व : हां, मेरा बेटा जूते पहने है; दूते नहीं जूते कहो !
नन्हा स्वर : जूते !

— मुसकराहट बिखर जाती है !

— फिर स्वर : दा...दा... !
भारी स्वर : दादा !
फिर स्वर : माम्मा... माम्मा !
भारी स्वर : नहीं पा...पा ! क्या है पापा ।

— पागल हैं ये सब,नन्हे बच्चे के साथ वही स्वर मिलाते हैं । जो वह कहता है, वे दोहराते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

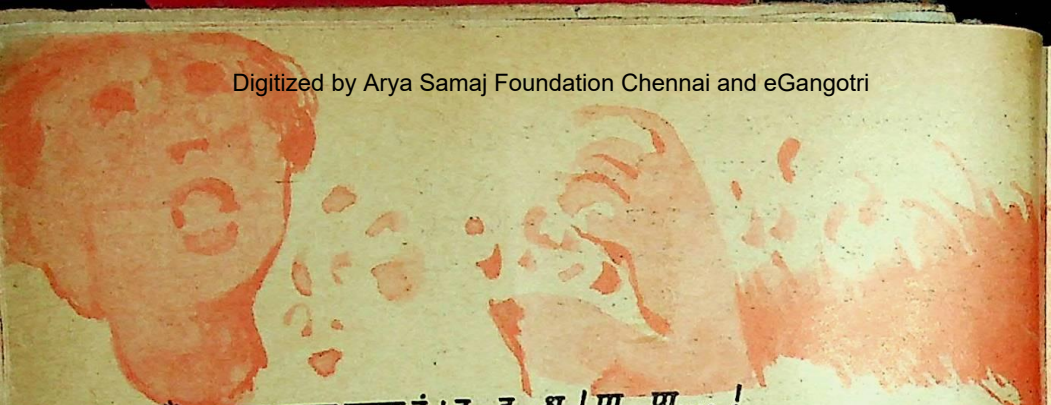

— मैं बार-बार पुकार सुनता हूं। दू...द्...धू ! पा...पा.... !

— हां ! दू...द्...धू !

— फिर अस्पष्ट स्वर !

— स्वर कभी बनते हैं, कभी बिगड़ते हैं ! उनका कोई व्याकरण नहीं है, उनमें काव्यात्मकता है तब भी !

— कोई कहता है : कल से आज साफ बोल रहा है।

— मैं अपने कमरे में बंद सोचता हूं : कल कुछ और साफ बोलेगा, फिर और साफ... और... और साफ ! अर्थहीन नहीं होंगे स्वर ! हर स्वर का अर्थ होगा।

— तब ?

□

— अजीब स्थिति है : उसे खिलाते हैं सब, उसको खुश करना चाहते हैं, पर क्या सच ?

— सच उसके बहाने स्वयं तो नहीं खेलते, स्वयं तो खुश नहीं होना चाहते।

— उसके अर्थहीन शब्दों को अपनी सार्थकता की संधि में जोड़ना तो नहीं चाहते ?

□

— मां उसे बाहर ले जाती है तो वह अत्यंत प्रसन्न होता है, भीतर आते ही रोने लगता है।

— कई बार इसके विपरीत होता है और वह बाहर नहीं जाना चाहता।

— समझ में नहीं आता, चाहता है क्या वह ?

— इस नन्हे बच्चे की तरह अनगिनत व्यक्ति हैं जिनकी मानसिकता इसी स्तर पर जीवित है।

— वह सब यूं क्यूं करता है ?

— सारे दिन घरभर में भटकना, आराम नहीं, रात को भी रोने और चिल्लाने की आवाजें।

— यह झटपटाहट किसलिए ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— अपनी अस्मिता को बनाये रखने का उपक्रम तो नहीं है ?
— अपनी पहचान रह-रहकर बताना, ध्येय तो नहीं है !
— खाली नहीं है, मैं उपस्थिति हूं, शांत नहीं है, मौन मेरे स्वरों में है, तब तक रहेगा जब तक चाहूंगा ।
— हंसोगे सब मेरे तालियों पर !
— पूरा घर उठाकर परेशान कर सकता हूं सब-कुछ सिर पर उठाकर !
— एक क्षण के लिए भी अनुपस्थिति का आभास न हो, यही ध्येय है क्या ?

□

— वह समय को पहचानता है :
- क्रूर-काल कुछ वर्षों में ही छीन लेगा सब कुछ
- स्पष्ट स्वर अर्थपूर्ण हो जाएंगे तब ?
- स्पष्ट होते ही उसे उनका उत्तर मिलेगा; उसके स्वरों के साथ समवेत स्वर नहीं होंगे
- उसके आग्रह और दुराग्रह स्पष्ट हो जाएंगे

— यहीं प्रश्न उठेगा : घर में मनमाना क्यों भटकता है वह !
— व्यर्थ समय क्यों गंवा रहा है । उसे भविष्य देखना चाहिए !
— उसके भविष्य की चिंता से सारा घर परेशान होगा :
टूटे-फूटे शब्द बिखर जाएंगे, उसे संयत होना होगा !
— संयत करने के लिए एक टट्टू सामने खड़ा होगा : ज्ञान-अज्ञान के बीच, निर्भय, निष्छल, निष्कपट —सोल्लास घूमनेवाला वह एक टट्टू बन जाएगा ।
— सपने उभरने लगेंगे : बेटा ! स्कूल जाएगा !

□

— बेटा स्कूल जाएगा, यह खुशी का क्षण हो सकता है; किंतु स्कूल एक इस्पात का कारखाना है ।
— इस्पात के कारखाने में सार्थक और निरर्थक सभी ढलता है; संहार और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

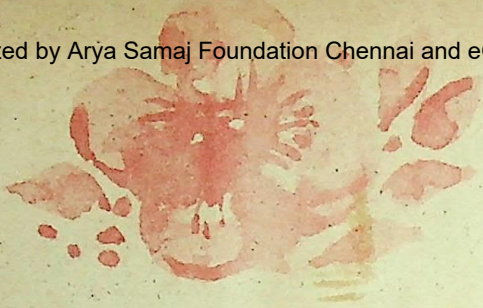

संयम एक साथ पलते हैं ।

— पल सकते हैं, संदेह नहीं है, लेकिन...

□

— लेकिन :

लौटकर नहीं आएंगे ये शब्द : पा...पा... ! दा...दा... ! मां... मां... ! रोना... हंसना... गाना... मौन नहीं अपने अस्तित्व और अपने पहचान की लड़ाई बनाये रखना !

— बचपन फिर नहीं लौटता !

— बचपन की खुशियां फिर नहीं लौटतीं, जैसे व्यतीत समय वापस नहीं आता ।

— अस्तित्व और पहचान की जो लड़ाई अचानक और अनजाने उसने अपने अनगढ़ हिलते पैर-हाथों से शुरू की थी, जीवनभर उनके साथ उलझना होगा उसे !

— जितना बढ़ेगा, उतना उलझेगा, यह समय सत्य है ।

— समय सत्य को स्वीकारते हुए इन किलकारियों का स्वागत कीजिए : नन्हा सूरज अभी-अभी उभरा है उसके दर्शन को सब भागते हैं, दोपहर होगी तो उससे बचना चाहेंगे !

— बच्चे की ये किलकारियां नये मनुष्य की अलस भोर है !

— भविष्य कोई नहीं जानता : भोर का यह उदय असंख्य संभावनाओं से भरा है !

— उदित होते सूरज की तरह इन किलकारियों की भी अभ्यर्थना करें, नया सवेरा शाम तक सुखद और शांत हमारे जीवन का संवाहक बना रहे । वह मित्र बने हमारा, शत्रुता के बीज जमीन के भीतर बहुत गहरे हमेशा दबे रहते हैं, उभर न पाएं वे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

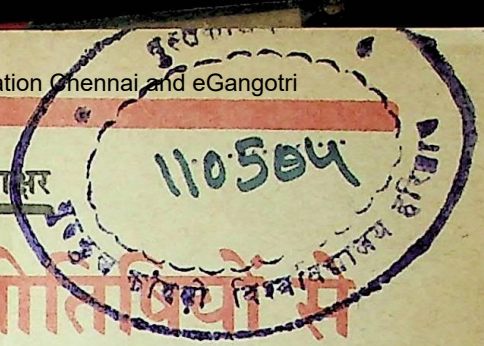

समय के हस्ताक्षर

सावधान इन ज्योतिषियों से

'कादम्बिनी' के नवम्बर '८९ अंक में हमने कुछ ज्योतिषियों की भविष्यवाणियां प्रकाशित की थीं। ये भविष्यवाणियां सामान्य भविष्यवाणियों से अलग थीं, क्योंकि हमने सीधे प्रश्न किये थे और उनके सीधे उत्तर मांगे थे। अनेक ज्योतिषियों ने भविष्यवाणियां भेजीं और बिना किसी परिवर्तन के हमने उन्हें प्रकाशित कर दिया। एक बात अपने पाठकों के सामने हमने प्रस्तुत की थी कि चुनाव-परिणामों के बाद हम भविष्य-वक्ताओं का विश्लेषण करेंगे।

पाठकों को दिये गये आश्वासन को पूरा करना हमारा धर्म है, चाहे कितने भी भविष्य-वक्ता हमसे नाराज क्यों न हो जाएं। एक बात स्पष्ट रूप से सामने आयी है कि अधिकांश ज्योतिषी अपनी भविष्यवाणियों में गलत सिद्ध हुए हैं। तब प्रश्न उठता है कि क्या ज्योतिष-शास्त्र बेबुनियादी है ? ज्योतिषी कई आधारों पर भविष्यवाणी करते हैं जिनमें मुख्य आधार हैं लग्न, लग्न में ग्रहों की स्थिति, महादशा, अंतर्दशा इत्यादि। जब चुनाव की घोषणा की गयी थी तो यह सारी स्थितियां सभी के सामने समान रूप से स्पष्ट थीं। इनके बावजूद ज्योतिषियों ने आखिर अलग-अलग धारणाएं कैसे बनायीं ? स्पष्ट है कि ये तथाकथित ज्योतिषी उस समय की स्थिति से प्रभावित हुए हैं और इन्होंने ज्योतिष शास्त्र को ताक में रख दिया है। ऐसे ज्योतिषी व्यापारी नहीं तो क्या हैं ! एक मजे की बात यह है कि व्यापार में भी सचाई और ईमानदारी होती है, इन ज्योतिषियों में मात्र अवसरवादिता है। हमने कुछ ज्योतिषियों को सावधान किया था और स्वयं भविष्यवाणी की थी। वह भविष्यवाणी हमने एक लिफाफे में बंद कर रख दी थी। आश्चर्य तो यह है कि सारे ज्योतिषी हमें नकारते हुए स्वयं ताल ठोंककर अपना ढोल बजाते रहे। अपने पाठकों को हम यह स्पष्ट बता दें कि हम ज्योतिषी नहीं हैं, हमारी भविष्यवाणियां पत्रकारिता जगत में हमारे दीर्घकालीन अनुभवों का परिणाम हैं। निश्चित रूप से एक अच्छा संपादक अथवा पत्रकार राजनीतिक स्थितियों का बहुत साफ ढंग से विश्लेषण कर सकता है।

भारत से अंधविश्वास अब भी नहीं गया है। ज्योतिषियों के पीछे भागना पूजा-पाठ कराना और तांत्रिक सिद्धियों का सहारा लेना, अत्यंत बुद्धिमान और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत से अंधविश्वास अब भी नहीं गया है । ज्योतिषियों के पीछे भागना, पूजा-पाठ कराना और तांत्रिक-सिद्धियों का सहारा लेना अत्यंत बुद्धिमान और सजग व्यक्तियों ने भी बंद नहीं किया है ।

सजग व्यक्तियों ने भी बंद नहीं किया है । हम यह भूल गये कि गीता में कर्म की बात कही गयी है और इसके परिणामों के लिए भाग्य का सहारा लिया जाए, यह बिलकुल नहीं कहा गया है । कहा तो यह गया है कि जैसे कर्म होंगे वैसा फल मिलेगा । इसलिए परिणाम की आशा करना व्यर्थ है । उसके बावजूद ज्योतिषियों की दुकानें बहुत ठाठ से चल रही हैं । कई ज्योतिषी तो लखपति और करोड़पति भी हैं । ये सब आदमी की कमजोरी का फायदा उठाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं । हताश और निराश व्यक्ति मनमाना धन इन्हें इस आशा से देता है कि इनके पास ज्योतिष रूपी पारस मणि है । उससे सब कुछ बदल जाएगा । ईमानदारी से व्याख्या की जाए तो यह एक धोखा है । भारतीय दंड संहिता में धोखा देनेवाला अपराधी माना जाता है और उसे सजा दी जाती है । गलत भविष्यवाणियां करनेवाले ज्योतिषी फिर इस सीमा से क्यों बचे हैं ? हमारी नयी सरकार में यदि थोड़ा भी बल है तो ज्योतिष व्यवसाय पर अंकुश लगाने के लिए विधेयक लाना चाहिए और ऐसे ज्योतिषियों को अपराध की सीमा में रखा जाना चाहिए ।

लीजिए कुछ गलत भविष्यवाणियों की बानगी

'कादम्बिनी' नवम्बर '८९ के पृष्ठ २०० से आगे देखिए । जयपुर के ज्योतिषी डॉ. विनोद शास्त्री ने लंबा विश्लेषण करते हुए लिखा है कि श्री राजीव गांधी नाजुक दौर से गुजर रहे हैं । श्री सिंह स्वयं तो चुनाव जीत जाएंगे लेकिन उन्हें अपनी मेहनत और त्याग का फल हासिल नहीं हो पाएगा । श्री सिंह १९९५ में ही सत्ता में आ सकेंगे । श्री चंद्रशेखर पुनः कांग्रेस में आएंगे और सर्वश्री देवीलाल, लालकृष्ण आडवाणी, अजीत सिंह और रामधन को चुनाव में प्रतिकूल परिणाम देखने पड़ सकते हैं । श्री शास्त्री ने यह भी लिखा है कि श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव गांधी ही सत्ता में फिर से आएंगे ।

कानपुर के श्री के.ए. दुबे पद्मेश ने बहुत से ग्रहों की स्थितियों का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि गोचर में राहू और बृहस्पति का षडाष्टक योग रहेगा, जिस कारण कांग्रेस पार्टी अपनी सरकार बनाने में सफल होगी । लोकसभा में सर्वाधिक सदस्य-संख्या कांग्रेस की होगी, तथापि अनेक दिग्गज नेता चुनाव में पराजित होंगे । जनता दल को हानि कांग्रेस से उठानी पड़ेगी । जनता दल सरकार बनाने में असफल रहेगा ।

नयी दिल्ली के कंप्यूटर ज्योतिषी श्री अजय भाम्बी लिखते हैं कि, 'आगामी चुनाव में तमाम अस्पष्टता के बावजूद कांग्रेस (आई) सरकार बनाने में सक्षम रहेगी लेकिन विपक्ष भी मजबूत होकर सामने आएगा । विपक्ष अथवा संयुक्त सरकार बनने का प्रश्न ही नहीं उठता ।'

नयी दिल्ली के ही ज्योतिषी श्री दिनेशचंद्र अवस्थी ने लिखा है कि आगामी चुनाव में कांग्रेस (आई) दल सत्तारूढ़ होगा । यद्यपि कांग्रेस के नेताओं के बीच मतभेद के कारण चुनाव के पहले फूट पड़ेगी । परिणामतः अपेक्षाकृत कम सीटें प्राप्त होंगी, किंतु यह दल सरकार बनाने में सफल होगा ।

चांदनी चौक दिल्ली के ज्योतिषी श्री मोती मेहता— 'आगामी आम चुनाव में कांग्रेस (आई) को पुनः बहुमत प्राप्त होगा एवं श्री राजीव गांधी भारी बहुमत से विजयी हो पुनः प्रधानमंत्री बनेंगे । पिछले पांच वर्ष यदि उन्होंने 'छात्र' रूप में गुजारे तो आगामी पांच वर्ष वे 'शिक्षक' के रूप में गुजारेंगे । विपक्ष के कई नेता पराजित होंगे । उनमें से अनेक कांग्रेस (आई) में शामिल हो जाएंगे । श्री अजीत सिंह एवं श्रीमती मेनका गांधी को कांग्रेस में लाने के प्रयास सार्थक होंगे । श्रीमती सोनिया गांधी को कोई विशेष पद प्राप्त होगा । श्री नारायणदत्त तिवारी एवं श्री रे को केंद्र में महत्त्वपूर्ण पद मिलेगा ।'

हैदराबाद के ज्योतिषी डॉ. राजीवकुमार शर्मा कहते हैं कि आगामी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस (आई) के सत्तारूढ़ होने के योग हैं । विपक्ष एवं संयुक्त सरकार की संभावना नहीं है ।

भोपाल के ज्योतिषी पं. शिवप्रसाद पाठक— आगामी आम चुनाव में कांग्रेस की जन्म पत्रिका के आधार पर कहा जा सकता है कि कांग्रेस सत्तारूढ़ होगी । गोचर की गुरु की दृष्टि तथा चुनाव काल में शनि का संक्रमण कांग्रेस को बेहतर स्थिति देगा । राजीव गांधी की पत्रिका में स्थित पंच ग्रही योग तथा वर्तमान में राहु में बुध की अंतर्दशा उनको आगामी वर्ष में प्रधानमंत्री बनाये रखेगी । कांग्रेस शत्रुपक्ष को पराजित कर सकेगी । लोकसभा में कांग्रेस को

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना और अनुष्ठान

नयी दिल्ली : प्राप्त समाचारों के अनुसार गृह मंत्री श्री सईद के निवास स्थान पर साई बाबा ओमजी ने कल दोपहर प्रार्थना एवं अनुष्ठान किया । इस अवसर पर श्री देवीलाल, श्री इंद्रकुमार गुजराल, श्री अरुण नेहरू, श्री आरिफ मोहम्मद खान और श्री ओमप्रकाश चौटाला भी उपस्थित थे ।

अनुष्ठान के बाद साई बाबा ओमजी ने भविष्यवाणी की कि कुमारी रूबिया सोमवार की शाम तक मुक्त कर दी जाएगी ।

कुमारी रूबिया सईद छह दिनों तक बंधक बनी रहने के बाद सोमवार नहीं, बुध को मुक्त हुई । सामान्य व्यक्ति भी इस तथ्य को जानता था कि अंततः उन्हें छोड़ दिया जाएगा । इसके लिए किसी भविष्यवाणी की जरुरत नहीं थी ।

सर्वाधिक मत प्राप्त होंगे । भारतीय जनता दल दूसरे स्थान पर एवं भारतीय जनता पार्टी तीसरे स्थान पर होगी ।

लखनऊ के ज्योतिषी ओंकार प्रसाद तिवारी— आगामी आम चुनाव के बाद श्री राजीव गांधी पुनः प्रधानमंत्री बनेंगे । केंद्र में कांग्रेस (आई) की सरकार बनेगी । लोकसभा में उसके ३०० से ३५० के मध्य सदस्य होंगे ।

पाठक देखें कि ये सारे ज्योतिषी कितने निकम्मे और बेकार साबित हुए हैं ।

कुछ अन्य पत्रों में प्रकाशित भविष्यवाणियों को पढ़कर भी दिलचस्प बातें सामने आती हैं । नयी दिल्ली के युवा ज्योतिषी आशुतोष— कांग्रेस को लगभग ३५० सीटें मिलेंगी । नयी दिल्ली के श्री के.के. लाल— राजीव गांधी ही सरकार बनाएंगे । बंबई के आचार्य राज— विश्वनाथ प्रताप सिंह लोगों को सत्तासीन तो कर सकते हैं परंतु अपने भाग्यबल पर कभी भी उच्च सत्ता प्राप्त नहीं कर सकते ।

तांत्रिक लाल बाबा— कांग्रेस को २७५ सीटें मिलेंगी ।

बंगलोर से प्रकाशित 'एस्ट्रॉ— लाजिकल मैगजीन' ने एन.टी. रामाराव के प्रधानमंत्री बनने की संभावना पर जोर दिया । जोधपुर के राधाकृष्ण श्रीमाली— निर्णायक रूप से कहा जा सकता है कि भावी प्रधानमंत्री राजीव गांधी ही होंगे ।

नयी दिल्ली के के.एस. राव— राजीव गांधी कुछ दुर्बल ग्रहों के बावजूद देश के अगले प्रधानमंत्री होंगे ।

नागपुर के श्री राम शर्मा— कांग्रेस को २५० से ३०० सीटें मिलने की संभावना ।

मेरठ के सदानंद त्यागी— इस चुनाव में कांग्रेस को ३३० से ३७२ सीटें मिलेंगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरा के श्री रोशनलाल शास्त्री— कांग्रेस को २५० से ३०० सीटें मिलेंगी ।

दिल्ली के श्री केवल आनंद— कांग्रेस को ३०० सीटें मिल सकती हैं और वी.पी. सिंह को प्रधानमंत्री की कुरसी तक पहुंचने में अभी देर है ।

अमृतसर के श्री श्यामसुंदर चोपड़ा— कांग्रेस को २७२ या २७५ सीटें मिलेंगी ।

ज्योतिषी जो इनसे कुछ अलग हैं

मालवीय नगर, जयपुर के ज्योतिषी प्रमोद कुमार चतुर्वेदी— 'कादम्बिनी पृष्ठ २११ नवम्बर विशेषांक राष्ट्रीय मोर्चा और भारतीय जनता पार्टी की संयुक्त सरकार बनेगी । राष्ट्रीय मोर्चे के सदस्यों की संख्या सर्वाधिक होगी । महत्त्वपूर्ण नेताओं में सर्वश्री राजीव गांधी, बूटासिंह, बलराम जाखड़, के.के. तिवारी, गुलाम नबी आजाद, हरिकिशन लाल भगत, बी. शंकरानंद, चंद्रशेखर तथा माधवराव सिंधिया के पराजय की आशंका है ।

रामापुरा, वाराणसी के ज्योतिषी श्री ब्रह्मगोपाल भादुड़ी— संयुक्त सरकार बनने का अधिक योग होगा । कांग्रेस (आई) की सदस्य संख्या सर्वाधिक होगी ।

देवघर के ज्योतिषी पं. कृपाकांत मठपति— लोकसभा के चुनाव में सत्तारूढ़ दल को बहुमत नहीं मिल पाएगा । अन्य दलों के सहयोग से सत्तारूढ़ दल केंद्रीय सरकार बनाने में सक्षम हो सकेगा । राजीव गांधी व्यक्तिगत रूप से चुनाव में विजयी होंगे लेकिन सत्तारूढ़ दल सरकार नहीं बना पाएगा । (देखिए— भविष्यवाणी में विरोधाभास है ।)

□ अन्य पत्रों में प्रकाशित भविष्यवाणियों के अनुसार कलकत्ता के श्री आनंद—चुनाव के बाद विरोधी दलों की मिली-जुली सरकार बनेगी । प्रधानमंत्री देवीलाल या अटल बिहारी वाजपेयी होंगे । न तो राजीव गांधी और न वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री होंगे । लखनऊ की श्रीमती मृदुला त्रिवेदी— श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधानमंत्री बनेंगे । उनके मंत्रिमंडल में देवीलाल, अरुण नेहरू, चंद्रशेखर, अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी और रामकृष्ण हेगड़े प्रमुख पदों पर रहेंगे ।

नयी दिल्ली के महावीर तुली— केंद्र में कांग्रेस की सरकार बनने की संभावना कम है ।

'कादम्बिनी' का नवम्बर विशेषांक लगभग छप चुका था, तब हमें कुछ ज्योतिषियों से पत्र भी मिले थे । विलंब से पत्र मिलने के कारण हम उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कादम्बिनी' कहानी-प्रतियोगिता

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी एक कहानी-प्रतियोगिता । विस्तृत विवरण की प्रतीक्षा कीजिए ।

उपयोग नहीं कर सके । उनकी भविष्यवाणियां इस प्रकार हैं—

डॉ. ए. कुमार पटना : पत्र दिनांक १५-११-८९— "अखिल भारतीय तांत्रिक एवं योग महासभा ने एक वक्तव्य प्रसारित किया है और कहा है कांग्रेस (आई) चुनाव में पराजित होगी । कांग्रेस (आई) और विपक्ष के कई दिग्गज नेता पराजित होंगे । भारत के प्रधानमंत्री पद पर एक नया चेहरा होगा । कांग्रेस (आई) को १५० से २०० के बीच स्थान मिलेंगे ।"

ब्रह्म ओम सरकार, व्यास ज्योतिष कार्यालय, डूंगरपुर— दिनांक २६-१०-८९ को कार्यालय की कार्यकारिणी की बैठक संपन्न हुई जिसकी अध्यक्षता ब्रह्ममयी मां सीमा द्विवेदी 'ब्रह्मचारिणी' ने की । पांच व्यक्तियों के हस्ताक्षर से घोषणा की गयी कि वर्तमान प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी आगामी चुनाव के परिणामस्वरूप भारत सरकार के प्रधानमंत्री पद पर बने नहीं रहेंगे । कुछ भारतीय विपक्षी दलों के गठबंधन से केंद्र सरकार बनने की संभावना है । मतदान केंद्रों पर कब्जे, हिंसा, उपद्रव आदि बड़े पैमाने पर धांधलियां होंगी ।

पं. भंवर लाल ज्योतिषी, रींगस, सीकर— कांग्रेस (आई) को फूट के कारण चुनाव में अपना अस्तित्व खोना पड़ेगा । केंद्र में कोई भी पार्टी भारी बहुमत से सरकार नहीं बनाएगी । तालमेल के कारण जो भी सरकार बनेगी, वह आगामी पांच साल का कार्यकाल पूरा करने में अक्षम रहेगी ।

महेन्द्र मिश्रा, ग्राम सरवानीपुर, जिला वाराणसी— कांग्रेस सरकार बनाने में सफल होगी । राजीव गांधी बहुत ज्यादा वोटों से विजयी होंगे । कांग्रेस को २६७ स्थान मिलेंगे । कांग्रेस के कई नेता चुनाव के बाद कांग्रेस छोड़ेंगे । १९९१ में पुनः चुनाव होंगे ।

आर.एन. सोनकर, सहारनपुर— चंद्रशेखर अगले प्रधानमंत्री होंगे ।

अगला प्रधानमंत्री होगा कौन इस बात पर मैं नहीं रहूंगा मौन चंद्रशेखर के सिर बंधेगा ताज इसमें होगा बहुत बड़ा राज इंदिरा ने जिस तरह चरणसिंह को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पी. एन. बनर्जी राजीव द्वारा वही इतिहास पुनः जाएगा दोहराया ।

इन परिणामों को निष्पक्ष पाठकों के सामने रखने के बाद यह बताना उचित होगा कि हमने अनेक ज्योतिषियों को सलाह दी है कि वे राजनीतिक भविष्यवाणियां न करें । यदि नक्षत्र विज्ञान वैज्ञानिक है तो उसके परिणाम भी वैज्ञानिक होने चाहिए । कठिनाई यह है कि ये सारे ज्योतिषी मिथ्या वाहवाही लूटने और अवसरवादिता में पड़ जाते हैं । सच कहने की हिम्मत किसी में नहीं होती । यहां तक कि एक ही ज्योतिषी दो-तीन पत्रों में अलग-अलग भविष्यवाणी छपवा लेते हैं । जो भविष्यवाणी सही होती है, उसी को ये प्रचार का माध्यम बनाते हैं । जहां तक व्यक्तिपरक भविष्यवाणी का संबंध है वहां व्यक्ति विशेष का पूरा जन्मांग होता है । जो विद्वान या गुणी ज्योतिषी हैं, वे ये तो बता सकते हैं कि कौन-सा समय उनके लिए लाभप्रद है और किस समय के बीच उन्हें सतर्क रहने की आवश्यकता है । अर्थ यह हुआ कि एक व्यक्ति के मामले में सही ज्योतिषी कुछ सीमा तक मार्गदर्शक बन सकता है लेकिन जहां व्यक्तियों और दलों के समूह हों, वहां भविष्यवाणी करना अपनी अज्ञानता का परिचय देना है । अपने पाठकों को हम ऐसे सभी तथाकथित ज्योतिषियों से सावधान कर देना चाहते हैं ।

ज्योतिष संबंधी स्तंभ : आपकी प्रतिक्रिया

'कादम्बिनी' के ज्योतिष संबंधी दो स्तंभों— 'ज्योतिष : समस्या और समाधान' तथा 'यह महीना और आपका भविष्य' के संबंध में हम पाठकों के विचार जानना चाहते हैं । पाठकों की उन दोनों स्तंभों के बारे में निष्पक्ष रूप से क्या प्रतिक्रिया है । हमारा उन पाठकों से विशेष अनुरोध है, जिन्होंने 'ज्योतिष : समस्या और समाधान' स्तंभ के अंतर्गत अपनी किसी समस्या के बारे में प्रश्न पूछे और उन्हें उनके उत्तर भी मिले । कृपया ऐसे पाठक हमें बताएं कि ज्योतिषी-विशेष द्वारा उन्हें दिये गये उत्तर कहां तक ठीक थे और उनके परामर्श से उन्हें कितना लाभ हुआ । ऐसे पत्र इस पते पर भेजें ।

संपादक कादम्बिनी (ज्योतिष विभाग)
हिन्दुस्तान टाइम्स लि. कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैताल सुनो—१९

अरे राजा तो बदल गया !
नहीं मिलेंगे राहु-केतु

□ सेवकराम ओखाडू

राजा विक्रम अपने सहचर बैताल सहित कहीं गायब हो गये थे। नारों और दिन-रात बजते माइक की आवाजों से वे परेशान थे। उन्होंने न कभी धारा नगरी में ऐसा देखा और न कभी उज्जैनी में ! रात-दिन मोटर-गाड़ियों का दौड़ता काफला और शोर . . .शोर . . .शोर !

अकेले रहना विक्रम ने पसंद किया। जिस दिन शोर समाप्त हुआ वह बाहर आये। कैसे बाहर आये किसी को पता नहीं। कैसे गये थे, यह भी कोई नहीं जानता था।

चारों तरफ शांति देखकर विक्रम को अच्छा लगा। बोले, 'बैताल, शोर से बाद की शांति कैसी लगती है ?'

'शमशान की तरह, महाराज !' उसने कहा। विक्रम क्रोधित हुए, बोले, 'तेरा उत्तर तो ठीक है पर मैं वैसी शांति की बात नहीं कर रहा। अब देख न सब ठीक चल रहा है !'

'कब तक चलेगा, महाराज, बैताल की बात सुनकर विक्रम ने कहा शुरू किया :

मैंने कहा था तुझसे यह अंतिम भीड़ है, याद है न ? यह भी कहा था कि यहीं से नयी फसल उगेगी। राजा नया हो या पुराना फसल हर बरस नयी ही उगती है। इसलिए यह कह कि यह शांति नयी उगती फसल-सी लग रही है !

बैताल ने सिर हिलाया, 'हां, महाराज, यही कहूं, जैसो आदेश हो पालन करूं।'

किस राजा को अपनी प्रशंसा पसंद नहीं आती। कौन राजा चापलूसी नहीं चाहता। जो भी बड़ा आदमी हो वह चाहता है छोटा आदमी उसकी 'हां' में 'हां' मिलाये। यह एक पूरा सिलसिला है।

"बैताल सुनो,
जो पीढ़ी
एक शव को अब
तक कंधे
पर ढोती आयी है,
मैं उनमें से नहीं हूं
और अब यह
स्थिति
नहीं चलने
दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'समरथ को नहीं दोस गुसाईं !' जिसके हाथ लाठी उसकी भैंस । जिसकी बाजुओं में जोर होगा काम तमाम करेगा ही ।

राजा विक्रम बैताल को चाणक्य नगरी के खूब भरे-पूरे इलाके में ले गये । वहां पहुंचकर बोले, 'बैताल, यह चांदनी चौक है ! समझे !'

'हां समझा, महाराज ?'

'क्या समझा, बोल ?' विक्रम के चेहरे पर गुस्सा नहीं था । बैताल इसे भांप गया । वह मुसकरा दिया, तो विक्रम ने पूछा, 'तू मुसकराया क्यों ?'

'इसलिए कि महाराज के चेहरे पर आज शिकन नहीं है ! ऐसा होता है तो महाराज जो भी बोलते हैं फूल झड़ते हैं ।'

'शाबास !' विक्रम ने कहा, 'तू बहुत चतुर सियाना है ! तो सुन, मैं यहां तुझे मिन्नी-मिठाई खिलाने लाया हूं ।'

'क्या हुआ, महाराज ?' बैताल ताली पीटने लगा । विक्रम ने रोका, 'ऐसा मत कर वरना लोग हमें पहचान लेंगे । कम से कम यह तो जान ही लेंगे कि हम कोई अलग जंतु हैं ।'

'नहीं करूंगा, महाराज ।'

विक्रम ने बताया कि चांदनी चौक में यही एक दूकान है जहां शुद्ध देसी घी की जलेबियां मिलती हैं, इमरती मिलती है, बालूशाही, मोतीचूर के लड्डू, गाजर का हलवा और सब कुछ ।

दूकान में भीड़ थी । विक्रम भीड़ की एक बाजू से दूकान के पास तक गये । बैताल सिकुड़ता हुआ साथ था । उसने देखा एक-दो लोग कहीं से आकर सामने खड़े हो गये हैं । वह जोर से चिल्लाया, 'हटो यहां से, देखते नहीं महाराजा . . . ।'

विक्रम ने बैताल को झटका देकर रोक दिया । रोक तो दिया पर दूकानदार ने 'महाराजा' शब्द सुन लिया । उसने सामने आये आदमियों को पीछे ढकेला और उठकर खड़ा हो गया । उसने कहा, 'कहिए, सरकार, क्या सेवा की जाए ।'

राजा विक्रम सकते में आ गये—क्या इसने पहचान लिया है ?

दूसरे ही क्षण बैताल की समझ में आया कि कभी यहां भी राजे-रजवाड़े थे, सो हलवाई ने किसी बिगड़े रजवाड़े का राजा समझा होगा । वे आश्वस्त हुए । बोले, 'भई, हमने तुम्हारी दूकान का नाम बहुत सुना है, सो कुछ खाने चले आये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो हुजूर, ऊपर आकर कुरसी में बैठिए । हम तरह-तरह के व्यंजन खिलाकर आपको खुश कर देंगे ।'

बैताल ने कहा, 'यहां तो सभी खड़े होकर खाते हैं, सो मजा तो खड़े होकर खाने में है ।'

इसके बावजूद हलवाई ने आवाज लगायी और कुरसियां मंगायी । तुरंत दो कुरसियां खुले बरामदे में रख दी गयीं ।

इसके बाद पत्ते-दोनों में मिठाइयों का दौर चला । एक-के-बाद हर तरह की मिठाई का मजा विक्रम और बैताल लेते रहे । इसी बीच भीड़ की बातें भी वे सुनते रहे ।

भीड़ उमंग से भरी थी ।

एक : कहा था, मैंने यह होगा ।

दूसरा : मैंने कब नहीं कहा था पर ऐसा हो जाएगा, समझ में नहीं आता था ।

तीसरा : जनता वांटेट चेंज । समझे, यानी जनता परिवर्तन चाहती थी । वह बदलाव चाहती थी ।

चौथा : (तेज स्वर) कैसा चैंज, कैसा बदलाव ! कब तक चलेगा ये सब, भिड़ेंगे आपस में !

पहले ने समझाने के मूड में कहा, 'भइया, भिड़ना तो भीड़तंत्र का धर्म है । वह भिड़ेगी नहीं तो अपना सिर स्वयं पीट लेगी । अरे, अन्याय हो और गोली न मारो तो आत्महत्या, बस ! इसमें विवाद क्या ?

दूसरे ने इसी बात को मजबूती से कहा, 'एकदम ठीक । अरे, बदलाव देखना चाहिए । मिठाई की दूकान में हम रोज इमरती खाने थोड़े आते हैं !'

चौथा बोला, 'राज-काज इमरती है क्या ?'

तीसरा बोला, 'राजकाज इमरती से भी घटिया है ।' इसके बाद उसने इतिहास दोहराना शुरू कर दिया—अरे, कभी यहीं जमुना की धारा बहती थी । कहां थे ये बाजार, ये भीड़, ये चहल-पहल । मुगल बादशाहों के शाही खुशबूदार फव्वारों से यह जगह भरी थी . . . !

तीन-चार लोग एक साथ बोले— चलो, भई चलो यहां से, इतिहास सुनने तो आये नहीं हैं । एक ने आवाज दी, 'सेठजी कितने पैसे हुए !'

सेठ ने पैसों का हिसाब एक मिनट में लगा दिया और आवाज दी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर चारों में सुलह हो गयी । चंदा जमा हुआ और पैसे देकर भीड़ रवाना हो गयी । एक भीड़ गयी तो दूकान खाली तो होगी नहीं, दूसरी भीड़ आने लगी ।

तभी सेठ ने पूछा, 'हुजूर कुछ और ?'

'नहीं, बहुत खादिष्ट है । जैसा नाम सुना था, वैसा ही निकला । हमारे यहां यह सब कहां,' बैताल ने पैसे बढ़ा दिये । सेठ ने पैसे लेते हुए कहा, 'कहां से आना हुआ सरकार का ?'

बैताल ने बहुत बड़ा मुंह खोला । तभी विक्रम बोल पड़े, 'जी, यहीं हिंदुस्तान से ! बस यूं समझो भटकते चले आये ।'

'किस शहर से सरकार !' सेठ ने पूछा तो विक्रम घबराया । उन्हें डर था कि कहीं बैताल का मुंह न खुल पड़े और कुछ बोल जाए । बोले, 'बस यूं ही, धन्यवाद !' और दोनों तेजी से दूकान से हटकर बायीं ओर लौटे और चल पड़े । चले तो राजा विक्रम ने इतने बड़े-बड़े डग रखने शुरू किये कि बैताल के लिए कदम मिलाना कठिन हो गया । थोड़ी दूर दोनों चले कि अंतर्ध्यान हो गये ।

□

दोपहर !

विक्रम आराम से पलंग पर बैठे थे । बैताल उनके पैर दबा रहा था । पैर दबाते-दबाते बैताल ने पूछा : महाराज, आज मिठाई खिलायी तो क्यूं खिलायी ।

विक्रम ने जम्हाई ली और पहले तो उसकी बात अनसुनी कर दी, फिर बोले, 'चाणक्य नगरी में बहुत कुछ हो गया है, बैताल । तू उन लोगों की बातें सुन रहा था न, उससे पता नहीं चला तुझे !'

'चला तो महाराज, पर थोड़ा-थोड़ा ।' बैताल ने जोर से विक्रम की पिंडलियों पर थाप दी ।

राजा विक्रम ने कहा—अजीब है यह चाणक्य नगरी, अच्छा हुआ हम यहां चले आये, वरना चूहे की तरह वहीं बिल खोदते रहते या मेढ़क की तरह दुनिया से अनजान रहते ।

बैताल ! उज्जैनी नगरी में राजा महासेन का राज्य था । महासेन के पहले उसका बाप राजा था । बाद में महासेन का लड़का राजा हुआ । धर्मपुर नगर में राजा धर्मशील का राज्य था । चम्पापुर नगर तो तूने खूब देखा है, वहां चम्पकेश्वर नाम के महाराजा थे । उन्हीं की लड़की त्रिभुवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदरी थी, जिसकी कहानी तुझे बता चुका हूं । प्रताप मुकुट का एक राजा बनारस में राज्य करता था । उसके बेटे का नाम था बजर मुकुट । चूड़ापुर की कहानी तो कुछ समय पहले ही मैंने सुनायी है, वहां चूड़ामणि नाम का राजा था । धारानगरी में नरवीर का राज्य था । नरवीर का राज्य दूर-दूर तक फैला था । इन सारे राजाओं मे एक परंपरा थी—'स्वस्थ परंपरा' । राजा मरे तो बेटा राज करे । अब इनमें कुछ जनता के भलइया थे, कुछ जनता के बुरइये थे पर थे सब अपने वंश के । यह न्यायो नहीं तो का है कि जे वंश ने राजा पालो-पोसो सो सुख पावै; जो घी में गुड़ डालै है वही तो गुड़ खावै है न ?

चाणक्य नगरी में सब कुछ उलट-पलट !

'सो क्या, महाराज ?' बैताल ने टोका तो विक्रम ने डांट पिलायी, सुनता जा—मैंने कहा था, देख ये राहु-केतु फिर नहीं मिलेंगे । तो सुन मेरा मनसब क्या था ? राहु-केतु चमचे हैं । चमचे बहुत पराक्रमी होते हैं । कप-प्लेट फूट जाए पर चमचे नहीं टूटेंगे । हिसाब-किताब चमचों का ही रखा जाता है । ये चमचे मिलकर एक राग छेड़ते हैं । राग बेतुके भले हों पर सबके समवेत स्वर एक होते हैं । ये चमचे जब तक एक जगह रहेंगे समवेत राग छेड़ेंगे । जिस दिन ये बंट जाएंगे, और बंटेंगे तो है ही, राग बदल लेंगे । फिर जिन चमचों की जमात में जो पहुंचेगा वही राग छेड़ेगा । सो राहु-केतु रूपी चमचे जब तक मिले रहें तब तक ठीक, ये फूटे कि फूटे । सत्ता की लड़ाई में चमचों का सबसे बड़ा हाथ होता है । तोड़-फोड़ का काम इन्हीं से लिया जाता है तो फिर एक दिन वह आता है कि जो इनसे काम लेता है, वे उसे तोड़ते हैं ।

सुन बैताल, मेरा तो दिमाग चक्कर खा रहा है । मैंने कहा था, मैं तुझे चाणक्य नगरी के राजा से मिलाने ले जाऊंगा । पर सुना तूने—वो तो राजा ही बदल गया !

'महाराज, राजा कैसे बदल गया ? यह तो हमने कभी न देखा और न सोचा ।' बैताल की प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी । जिन नगरियों से ये आये हैं वहां राजाओं की सत्ता ! यह सब कैसे हो सकता है वहां ?

राजा विक्रम गुणी और ज्ञानी । वे त्रिलोकदर्शी और सब-कुछ जाननेवाले । बोले, 'बैताल, तू ठीक कहता है । तेरी तरह बहुत-से लोग हैं जो यूं ही सोचते हैं । पर मैंने तुझे बताया था कि चाणक्य नगरी में राजशाही नहीं है । यहां की सत्ता जनता के हाथों में है, इसलिए इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनतंत्र कहते हैं । मैं जितने दिन चुपचाप एकांत में पड़ा रहा, सब-कुछ देखता रहा . . .' इतना कह राजा विक्रम ने बैताल से कहा, 'तू, चुपचाप सुन, बीच में बोलना नहीं ।'

विक्रम ने हाथ जोड़े, 'जो आज्ञा महाराज !'

'हम भाग्यशाली हैं बैताल,' राजा विक्रम ने कहना शुरू किया, 'ऐसे अवसर पर चाणक्य नगरी आये थे जब यहां बहुत-कुछ घट रहा था । चाणक्य नगरी के राजा का विरोध था । राजा पर तरह-तरह के लांछन लगाये जा रहे थे । तभी चाणक्य नगरी के राजा ने जनता की अदालत में अपना मामला रख दिया, यानी चुनावों की घोषणा कर दी । इसे कहते हैं ईमानदारी, जो हो सामने आ जाए—दूध और पानी अलग हो जाएं ।

शाही ढंग से चुनाव की घोषणा हुई । बेहद चुनाव प्रचार हुए, बहुत कुछ तो हम दोनों ने देखा भी है । फिर एक दिन वह आया जिसे कयामत का दिन कहते हैं । यानी सब शांत । अलसु सुबह उत्साहभरे लोग घूम रहे थे । उस दिन बोट पड़नेवाले थे । चाणक्य नगरी तो महाराजा की राजधानी हुई न, बोट तो सारे देश में पड़ने थे । सो सुबह से बोट डालने का क्रम चला । बोट कैसे डलते हैं, तुझसे छिपा नहीं है । हमने कई बूथ देखे हैं । अधिकांश जगह तो चुप-चाप शांत जनता बोट डालती रही ।

तू नहीं जानता, कुछ बेहद प्रपंच के स्थान थे—गोलियां चलीं, भगदड़ हुई, लोग घायल हुए, कुछ मरे, कुछ मारे गये और कुछ गुंडा और उचक्के लोगों ने अवसर का फायदा उठाया । कई जगह तो बोट डालने की मतपेटियां ही लोग उठा ले गये । पुलिसिया ने रोकने की कोशिश की तो पुलिसिया की भी मारपीट । कहीं जबरन छीनकर बोट डले ।

इस हुड़दंग को अफसर और जनता देखते रहे । सरकार देखती रही । राजा देखता रहा । सभी लाचार । फिर एक अफसर ने जांच के आदेश दिये । जांच में गड़बड़ी मिली तो घोषणा हुई उन स्थानों में फिर बोट डलेंगे । आखिर दोबारा बोट डले ।

जनतंत्र में जनता के हाथ सभी होता है । जैसी जनता होगी वैसा ही सब-कुछ होगा । कई जगह अनपढ़ जनता थी । कई जगह उस अनपढ़ जनता को भड़कानेवाले लोग थे । फिर बैताल, यहां जाति और धरम भी है । जाति और धरम के नाम चाणक्य नगरी जैसा विशाल साम्राट

ए दइयाऽऽऽ
ए का भवो !
राजा बदल गयो !
जनतंत्र की जय !
चाणक्य नगरी की जय
इह लोक वा सब होत
न होत जैसो किसी लोक में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्याओं से भरा है । जाति और धरम का नंगा नाच हुआ । 'फतवे' दिये गये । अब ये पूछ कि —'फतवा' क्या होता है । कुछ होता है, बस यह जान ले । ये प्रजातंत्र का शब्द नहीं है, पर है तो कुछ, कुछ है तो कुछ होता भी है । इस तरह मार-पीट, धोखे-धड़ी, खरीदने-मोलने, तौलने-बांटने और बंदर-बिल्ली के झगड़े से पूरे चाणक्यदेश में तहलका मचा रहा । मजा यह कि इसके बाद भी जनता उसे झेलती रही । देश की सेना अपने काम में लगी रही, उसने देश के अंदरूनी मामलों में दखल नहीं दिया । कित्ती बड़ी बात है रे, बैताल; दुनियाभर में सेना दहाड़ती है, चाणक्य देश में सेना संयमित है ।

इस तरह बोट पड़े । बोट पड़ेंगे तो गिने ही जाएंगे । मतगणना आरंभ हुई । देखते-देखते चाणक्य नगरी के महाराजा के दिग्गज सूबेदार पंख फड़फड़ाकर धराशायी हुए । वे धराशायी तो हुए पर चुप देखते रहे । खड़े होकर उन्होंने जीतनेवाले से हाथ मिलाये । दो दिन में चाणक्य देश का नक्शा बदल गया । मतगणना के बाद पता लगा कि चाणक्य नगरी के राजा का बहुमत नहीं रहा । कई दलों ने मिल कर अपना बहुमत बनाया । यह बहुमत दलों का तो था, कहना चाहिए जनता का जनादेश था । सो चाणक्य नगरी के सुकुमार, सुकोमल महाराजा ने सत्ता उन्हें सौंप दी, जिसे जनता ने सौंपने को कहा ।

देखा, इत्ता बड़ा महाराजा, लेकिन जनता के सामने वह भी छोटा हो गया ।

जनमत की जय जनता की जय

अनेक गगनभेदी नारों के बीच चाणक्यदेश में इसके राजा ने बागडोर सम्हाली और अब वह शासक बना । चाणक्य नगरी की सारी भीड़ पहली जगह से उठ कर दूसरी जगह पहुंच गयी । वहीं आजकल राजनीति की सरगर्मियां चल रही हैं । पुराने राजा अपना काम करते हैं क्योंकि उनका दल अब भी तो है ।

सो बैताल, जनतंत्र की जय बोल । कई दल मिलकर इस देश में रहते हैं । सभी दल देश का भला चाहते हैं, हां, पहले अपना भला वे चाहेंगे ही ! भला ऐसा हुआ है कि आदमी अपना भला पहले न चाहे !'

राजा विक्रम ने बात पूरी की तो बैताल खुशी से झूम उठा और बहुत देर तक नाचता रहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संप्रदाय

● डॉ. जगन्नाथप्रसाद दास

उस आदमी का धर्म, जाति, गोत्र इस कस्बे के लोगों को मालूम न था, यहां तक कि उसका असली नाम क्या था, यह भी कोई नहीं जानता था । वह आदमी पागल था और 'पागल' के ही नाम से जाना जाता था । उसके जाति या नाम का होना,न होना लोगों के लिए, और यहां तक कि खुद उसके लिए भी कुछ माने नहीं रखता था क्योंकि.इस पागल का किसी से कोई संबंध न था और किसी के भले-बुरे से भी उसको कोई मतलब नहीं था । चूंकि वह बोलता भी नहीं था, इसलिए किसी को यह भी नहीं मालूम था कि वह कहां का रहनेवाला था या उसकी भाषा कौन-सी थी । न ही अब किसी को इस बात को जानने में दिलचस्पी रह गयी थी । लोगों को यह भी शक था कि कहीं वह जन्म से बहरा तो नहीं । खैर,कुछ भी हो वह पागल अब इस शहर का एक चलता-फिरता अनुष्ठान बन गया था ।

न तो इस पागल के रहने की कोई खास जगह थी और ना ही उसके खाने-पीने की

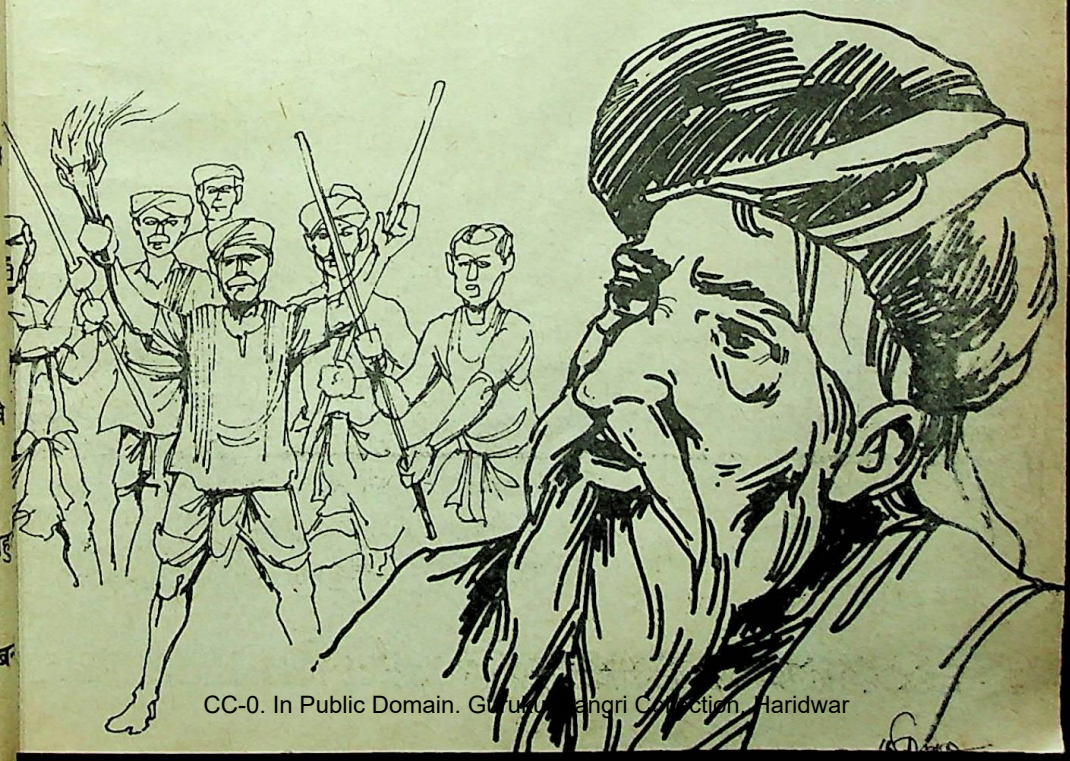

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई उचित व्यवस्था । उसे जो मिल जाता, वह खा लेता और जहां सिर-छुपाने की जगह मिल जाती, वहां सो रहता । वह किसी से कुछ मांगता नहीं था लेकिन कोई यदि उसे कुछ दे देता तो उसे लेने से इनकार भी नहीं करता था । वह सारा दिन और कभी-कभी सारी रात कस्बे में घूमता रहता था, इसलिए गली के लोग उसके जूतों की आहट पहचानते थे । एक-दो दिन यदि वह गली में दिखायी नहीं देता तो लोग उसे याद करते थे । सुनसान निःशब्द रात में उसके जूतों की आहट से सभी को राहत मिलती थी ।

उस पागल की वजह से अगर कभी समस्या होती भी थी तो वह समय था सांप्रदायिक दंगों का । कुछ वर्षों के अंतराल में राजनीतिक दलों को दंगे करवाने के कुछ न कुछ कारण मिल ही जाते । शहर में अकसर दंगे का स्वरूप भयानक होता और उसका अंत होता शहर में हत्या, लूटपाट और शरणार्थी शिविरों में । किंतु कस्बे के दंगों का स्वरूप साधारण था । विभिन्न संप्रदायों के बीच गाली-गलौज, दुकानों के ताले तोड़ना या फिर कभी-कभी थोड़ी-बहुत हाथापाई । कस्बे में सांप्रदायिक असद्भाव ने इससे अधिक गंभीर रूप कभी नहीं लिया ।

समस्या का सबसे बड़ा कारण था पागल की बेतरतीब बढ़ी दाढ़ी । दाढ़ी के कारण वह आमतौर से मुसलमान लगता था लेकिन जरा गौर से उसे देखने पर यह भ्रम होता था मानो जगत्गुरु-जैसा धार्मिक निष्ठावान हिंदु हो । हिंदु-मुसलमान दंगों के समय हिंदु उस पागल को पीटा करते । उस समय यह पागल उनके लिए बन जाता एक धर्मांध मुसलमान । दंगों के समय अपनी अल्पसंख्यकता की वजह से मुसलमान चुप रह जाते, किंतु जैसे ही स्थिति थोड़ी संभलती प्रतिशोध लेने के लिए वह जा पकड़ते उसी पागल को, क्योंकि या तो उन्हें कोई और मिलता नहीं या फिर किसी और को मारने की उनमें हिम्मत नहीं थी । उसकी वे लोग, 'हिंदु बाबा' या 'साधु महाराज' कहकर पिटाई करते । इस तरह बिचारा पागल दोनों ओर से मारा जाता । किंतु खतरनाक दंगों के समय भी वह गली में अपनी पहरेदारी जारी रखता ।

इन दंगों के अनेक अलिखित नीति-नियम थे । दंगा ठीक किस दिन आरंभ होगा ।

उस कस्बे में दंगों का एक अलिखित नियम था । बेहद कठोरता से पालन होता । दंगे के पूर्व हवा में तनाव बढ़ने लगता । औरतें और बच्चे जाती ताकि वे सुरक्षित रहें । छोटे-छोटे लड़के पत्थर लगाते एक पागल को छोड़कर और सब दुकानें बंद । धीरे-धीरे इस नियम में बाहरी ताकतों के हस्तक्षेप के कारण परिवर्तन होने लगा और एक दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात की खबर कस्बे में बहुत पहले पहुंच जाती । शहर के छोटे-मोटे नेता रात को कस्बे में आते और यहां रहनेवाले अपने राजनीतिक सहायकों के साथ घंटों चाय के कपों पर गुप्त मंत्रणा करते और सुबह होने के पहले लौट जाते । अगले दिन विधिवत रूप से झगड़े शुरू होते, बरगद के पेड़ के नीचे बने चाय की दुकान पर ।

बरगद के पेड़ के नीचे पास-पास दो दुकानें थीं जिनमें से एक का नाम था हिंदु चायवाला और दूसरी दुकान का नाम गांधीजी के नाम पर था किंतु सभी उसे मुसलमान चायवाले की दुकान ही कहते थे और बूढ़े मुसलमान को मजाक में 'महात्मा' कहते थे ।

यद्यपि पुलिस व अन्य सरकारी अफसर दंगों के विषय में पूरी तरह से बेखबर होते थे और झगड़ों के खतम होने पर ही अपनी पूरी फौज के साथ वारदात की जगह पहुंचते, लेकिन इन आनेवाले दंगों की खबर बाकी सब लोगों को बहुत पहले ही हो जाती ।

दंगे वाले दिन बूढ़ा 'महात्मा' मुंह अंधेरे ही जाकर चुपचाप अपनी दुकान खोलता और जरुरी चीजों को अलग कर छुपा रखता उसके बाद दुकान में ताला बंदकर घर आ जाता । उसके बाद की घटनाओं का आंखों देखा हाल लगभग इस प्रकार होता—

सारी गलियों में घूम-फिरकर सुबह नौ बजे पागल आकर बरगद के पेड़ के नीचे बैठ गया । वह जानता था कि हिंदु हो या मुसलमान किसी न किसी चाय की दुकान से उसके लिए बुलावा जरूर आएगा । या फिर चाय पीने आये ग्राहकों में से ही कोई न कोई उसे चाय पिला देगा । और इसी आस में वह पूर्ण रूप से आश्वस्त होकर बैठा था । आज लेकिन सांप्रदायिक दंगे वाला दिन है । किसी ने उसकी ओर देखा तक नहीं । पागल को बिना चाय पीये ही रहना पड़ा । कुछ समय बाद लड़कों के झुंड बरगद के नीचे जमा होने लगे और अचानक ही वे महात्मा गांधी, हिंदू एकता, भारत माता की जय आदि नारे लगाने लगे । थोड़ी-सी धूप चढ़ते ही नारे बदल गये । जैसे, 'मुसलमान मुर्दाबाद', 'खून के बदले खून', 'देशद्रोही देश छोड़ो' आदि ।

चाय न मिल पाने के कारण पागल भीड़ के पास आकर खड़ा हो गया और इस तरह देखने लगा मानो अगर बोल पाता तो जरूर उनके सुर में सुर मिलाकर नारे लगाता ।

अब भीड़ मुसलमान चायवाले की दुकान की ओर बढ़ी । 'महात्मा' इस भीड़ के सभी लड़कों के चेहरों से परिचित था और वह भली-भांति जानता था कि आगे क्या होनेवाला है । उसने अंगीठी पर से चाय की केतली उठायी और चुपचाप बाहर आकर खड़ा हो गया । लड़कों ने सबसे पहले दुकान की नामपट्टी को उतारकर फेंका । उसे नीचे फेंककर कुछ लड़के उसके ऊपर नाचने लगे । अब लोगों ने अल्मारी तोड़कर वहां से बिस्कुट निकाले और आपस में बांटकर खाना शुरू कर दिया । हिंदु चायवाले ने भी इस खुशी में अपनी दुकान से खाने की चीजें निकालकर बांटना शुरू कर दिया और अपने पैसों की संदूक में चाबी लगाकर भीड़ के साथ मिलकर नारे लगाने लगा । अंत में हिंदु चायवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नौकर ने मुसलमान चायवाले की अंगीठी जलाकर उस पर चाय बनाकर सबको पिलायी । धीरे-धीरे धूप चढ़ जाने पर गरमी की वजह से लड़कों का उत्साह धीमा पड़ गया और सब घर जाने को तैयार हो गये । दंगे के दौरान किसी मुसलमान को अभी तक कोई शारीरिक चोट नहीं पहुंची थी, यह बात किसी ने याद दिलायी और अब सबकी आंखें जा टिकी पागल पर । 'साला मुसलमान' कहते हुए चार लड़के उसकी ओर झपटे । उनमें से एक ने धक्का मारकर पागल को नीचे गिरा दिया । और दोनों ने उसे लातों से मारना शुरू कर दिया उसके बाद फिर 'महात्मा गांधी जिंदाबाद' इत्यादि नारे लगाती हुई भीड़ वहां से चली गयी । हिंदू चाय दुकानवाला और उसका नौकर अपनी दुकान पर लौट गये । 'महात्मा' न जाने कहां से आकर अपनी दुकान पर चीजें तरतीब से रखने लगा । पागल भी धूल झाड़ते हुए उठ खड़ा हुआ और चारों तरफ ऐसे देखने लगा मानो कहीं कुछ हुआ ही नहीं है । 'महात्मा' ने उसे बुलाकर चाय पिलायी । कहीं 'महात्मा' उदारता दिखाने में उससे आगे न बढ़ जाए इस डर से हिंदू चायवाले ने भी पागल को बुलाकर जबरदस्ती खाने को दिया और चाय भी पिलायी ।

घंटेभर बाद जब पुलिस वहां पहुंची तब तक 'महात्मा' अपने दुकान की नामपट्टी को ठोक-पीटकर दुकान पर लगा चुका था । शाम को बरगद के नीचे लोग फिर इकट्ठे हुए और सब भूल गये कि सुबह कोई भयंकर हादसा हुआ भी था ।

सच कहा जाए तो कस्बे के सांप्रदायिक दंगों में भयंकर कुछ भी न था क्योंकि इन दंगों के कुछ कठोर नीति-नियम थे । दंगों का आरंभ और अंत होता बरगद के नीचे बस्ती के बाहर एक आम जगह पर । दंगे में कितना नुकसान किया जाए इसकी एक सीमा निर्धारित थी । इस नियमावली की सबसे कठोर शर्त थी कि 'महात्मा' के ऊपर हाथ उठाने की बात तो दूर उसे अंगुली उठाकर कोई असम्मानजनक बात तक नहीं कह सकता । (इस बात की सिर्फ एक बार अवहेलना हुई थी जब एक अपरिचित गैर जिम्मेदार लड़के ने 'महात्मा' को मुसलमान कहकर संबोधित किया था । इस घटना के बाद उस लड़के को धक्का देकर औरों ने दल से निकाल बाहर किया और लड़का रोते-रोते घर लौट गया था ।)

कालांतर में यह नीति नियम धीरे-धीरे बदलने लगे । बुजुर्गों के हाथ से बागडोर अब नये लड़कों के हाथों में आ गयी थी । कस्बे का नेतृत्व संभाल रहे नये लड़कों ने दुकानदारों से पैसे भी वसूलने शुरू कर दिये थे । अबकी बार जब दंगे का मसविदा तैयार करने शहर से नये नेता कस्बे में आये तो लड़कों के साथ उनकी बातचीत बिलकुल अलग तरह की हुई जो लगभग इस प्रकार थी....

'पिछले दंगे में यहां क्या हुआ था ?'— नेता ने पूछा । इस प्रश्न का उत्तर देने में लोग जरा सोच में पड़ गये क्योंकि यहां कोई ऐसी गंभीर वारदात ही नहीं हुई थी इसलिए सब असमंजस में थे । उनमें सबसे चालाक दिखनेवाले आदमी ने स्थिति भांपकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ा-चढ़ाकर बताया कि यहां पर सभी मुसलमानों की दुकानों को तोड़ दिया गया था ।

'कितने लोग मरे ?'

इस प्रश्न ने सबको शरमिंदा किया ।

शहर में यद्यपि काफी लोगों की हत्या की गयी थी किंतु इस कस्बे में केवल पागल को धक्का मारकर नीचे गिराने के अलावा कोई गंभीर घटना नहीं हुई थी । इसी पागलवाली घटना को बढ़ा-चढ़ाकर चालाक आदमी ने कहा— 'एक मुसलमान के हाथ-पैर तोड़ दिये गये थे ।'

वह नेता इस बात से संतुष्ट नहीं हुआ और बोला, 'तुम लोगों ने क्या हाथ में चूड़ियां पहन रखी हैं । दंगा बड़ा गंभीर विषय है । तुम लोगों ने उसे खेल समझ रखा है । हमने सोचा था, पंद्रह मिनट में तुम्हें सब कुछ समझा-बुझाकर दूसरी जगह चले जाएंगे । किंतु अब ऐसा लगता है यहां पर हमें अधिक समय रहना पड़ेगा । रात में यहां शराब मिलेगी या रात में आप लोग कहेंगे कि दुकान बंद हो गयी है ?'

देर रात तक बैठ अगले दिन के दंगे की विधिवत योजना बनाकर नेता लोग चले गये । मुंह अंधेरे अल्पसंख्यक लोगों को खबर कर दी गयी कि वे घर छोड़कर चले जाएं और वाकई डरकर सभी घर छोड़ चले भी गये । केवल 'महात्मा' ने कहा कि यदि मुसीबत आयी भी तो मैं घर छोड़कर भला कहीं और क्यों जाऊं ?

इस बार दंगे में पहली बार लड़कों ने 'महात्मा' की दुकान में आग लगा दी सचमुच पागल के पैर तोड़ दिये । लेकिन फिर भी किसी ने 'महात्मा' को छुआ नहीं । दंगे के बाद पागल अस्पताल से लंगड़ाता हुआ लौटा और 'महात्मा' ने भी अपनी दुकान फिर से संभाल ली ।

इसी बीच चुनाव का समय हो आया और नेताओं ने आकर धर्म और धर्मों के बीच सद्भावना पर भाषण दिये । महात्मा बोला, 'मैं कहता न था सब फिर ठीक हो जाएगा ।'

कुछ दिन बाद सब कुछ फिर सामान्य हो गया । इस बार केवल हिंदू-मुसलमान नहीं वरन हिंदू-सिख दंगों का भी सूत्रपात हुआ और हिंदू-मुसलमान भाई-भाई के नारे लगाये जाने लगे । पागल की बदकिस्मती, लड़कों ने उसे अब अकाली बना दिया और लंगड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरदार कहकर उसे मारने दौड़े ।

निकट भविष्य में जो सांप्रदायिक दंगा होनेवाला था सिवाय पुलिसवालों के सभी को पता था कि यह दंगा भयानक खून-खराबे का रूप लेगा । शहर व कस्बे के सभी अल्प-संख्यक सुरक्षित स्थानों पर चले गये थे । यहां तक कि हिंदु चायवाला भी अपनी दुकान पर ताला लगा गांव चला गया था । कस्बे के कुछ जिम्मेदार लोगों ने 'महात्मा' से जाकर कहा कि तुम कुछ दिनों के लिए कहीं चले जाओ । महात्मा ने कहा, 'कुछ नहीं होगा । पिछली बार भी सब मुझे डरा रहे थे भला क्या हुआ मुझे ?'

अगले दिन सुबह जब लड़के पागल को मारने दौड़े उनके हाथ में चाकू था । इस बार 'महात्मा' उन्हें पहचान नहीं पाया क्योंकि उनके चेहरे के हाव-भावों से वह नितांत अपरिचित था । पागल जब लंगड़ाते हुए चाय की दुकान की ओर दौड़ा, 'महात्मा' दुकान से निकलकर चिल्लाते हुए सीधे भीड़ में घुस गया । 'साले मुसलमान को मारो' शोर मच और किसी का चाकू जाकर 'महात्मा' की छाती में धंस गया और वह जमीन पर गिर पड़ा । अचानक सब दौड़ने लगे और क्षणभर में वह जगह वीरान हो गयी । पागल ने जाकर महात्मा को उठाने की कोशिश की । तब तक महात्मा के प्राण पखेरू उड़ चुके थे। किंतु इससे अनजान पागल उसके पास बैठा रहा ।

इसी समय वहां पर एक जीप आकर रुकी । पागल के मुंह से पहली बार आवाज निकली— 'पुलिस-पुलिस' । जीप से किंतु जो लोग बाहर निकले वे पुलिस के लोग नहीं थे । वे थे शहर के जिम्मेदार लीडर । कस्बे के लड़कों जैसे वे कमजोर दिलवाले और कायर नहीं थे और मुर्दे को देखकर डर से भागने वालों में से भी न थे । 'महात्मा' की ओर इशारा कर अब पागल चिल्लाया— 'डॉक्टर, डॉक्टर' । सुनकर जीप के सभी युवक जोर से हंसे । उनमें से दो ने आकर पागल को पकड़ा और जीप से पेट्रोल निकालकर डिब्बे में भरने लगे । अब उन्होंने पागल को बांधकर उसके ऊपर सारा पेट्रोल उड़ेल दिया । इसी समय उनमें से किसी ने कहा यह आदमी पागल लगता है । क्या मालूम यह हिंदु है या मुसलमान । दल के नेता ने पागल से पूछा, 'तू कौन से संप्रदाय का है !'

पागल का मुंह जैसे अचानक खुला था वैसे ही अचानक बंद हो गया । वह कुछ न कहकर चुप रहा ।

सारे युवक फिर से ठठाकर हंसे । नेता ने आराम से अपनी जेब से सिगरेट निकालकर सुलगायी और धुआं उड़ाने लगा । सिगरेट खत्म होने पर उसने बची हुई सिगरेट को दूर फेंक माचिस की डिबिया अपने साथी की ओर बढ़ा दिया ।

३०५, एस.एफ.एस., हौजखास, नयी दिल्ली-११००१६

अनुवाद : विजय लक्ष्मी छाबड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

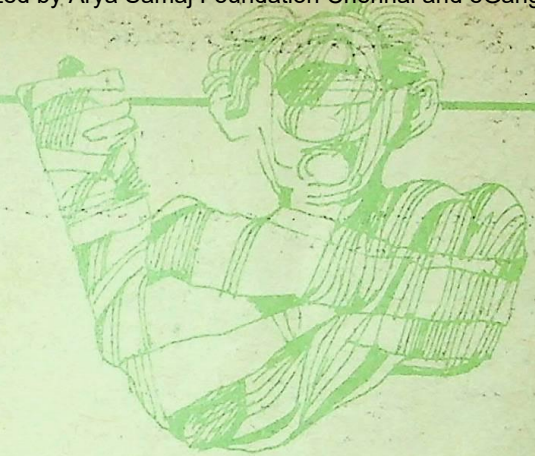

दिल्ली : एक हत्यारा तिलिस्म

ओ दिल्ली
उछल आये हैं मेरी समूची चेतना पर
तेरी रोशनी के कशाघात
और मैं
यह अपनी लहूलुहान चेतना लिये
वापस जा रहा हं अपने गांव
ताकि वहां लोगों को दिखा सकूं
अपनी चेतना पर पड़े
ये टीसते निशान
और कह सकूं उनसे साफ-साफ
कि दिल्ली, दिलवालों की नहीं
दलवालों की है
गांवों में खटते हुए
मेरे वे अपने लोग
जो पांच साल में एक बार
अपना एक प्रतिनिधि भेजते हैं यहां
और खुश हो लेते हैं
स्वराज का हक पाकर
वे नहीं जानते
कि उनकी आस्थाओं की कीमती गठरी
कंधों पर लादे हुए
उनका वह निर्वाचित
यहां कदम रखते ही
कैसे लुट जाता है !
कैसे छिन जाती है उससे
जन-आस्था की वह कीमती गठरी
कैसे वह सीखता है
सरकारी कागज पर
अंगरेजी में दस्तखत करना
वह सुआ, यहां
नौकरशाही के
नक्काशीदार पिंजरे में डालकर
पढ़ाया जाता है
और फिर पांच साल तक
वही-वही गाता है
वही दुहराता है
मैं मगर
अपने पांवों चलकर
आया था यहां
अतः वापस जा रहा हूं अपने गांव
जहां मैं
अपनी इस लहूलुहान चेतना पर
अपने खेतों की मिट्टी लगाऊंगा
और अब
जब दुबारा दिल्ली आऊंगा
तो ये हत्यारा तिलिस्म तोड़ने आऊंगा ●

—राजेन्द्र अनुरागी
९४/१३ तुलसीनगर
भोपाल-४६२००५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुजरिम हाजिर है

● शिवप्रसाद सिंह

प्रिय संपादक,

इतनी जल्दी शहीद मत बनो ।

शहादत बहुत बड़ी चीज है . . .रुक जाओ ।

अब होने लग्यो है प्रभात . . .सखी . . .अब होने लग्यो है प्रभात . . .

बड़ी दिलकश आवाज है । सुबह के सात बजकर दस मिनट हुए हैं । दूरदर्शन पर इस आवाज के जन्मदाता को देख रहा हूं । उन्हें धन्यवाद देने की इच्छा है । मगर पूरी नहीं हो सकती । क्यों ?

चलो, तुम्हें शहादत से बचा लेता हूं ।

मैं भी पिछले सैंतालीस वर्ष से प्रभात को देखने की आशा संजोये जी रहा हूं । सन १९४२ में, दुर्भाग्य कहो या सौभाग्य, मैं छात्र आंदोलन का एक अदना-सा नेता था । सन १९४२ की छात्र-क्रांति संभवतः पहली घटना थी, जिसने समूचे भारत को हिला दिया । 'भारत-छोड़ो' का नारा कण-कण में थरथराहट जगा देता था । लोग कहते हैं कि मैं पैदाइशी मूर्ख हूं । इतनी कम उम्र में अड़तालीस घंटे जेल में बंद होना, कैरियर को बिगाड़ देता है । मेरे बाबा गणेशसिंह पैदाइशी अंगरेज-भक्त थे । बोले—'का हो, नेता बने के सवख चराई हौ ?' दुनिया जिसे मूर्खता कहती है उसे हमारे पितामहश्री 'शौक का चर्राना' कहते थे । मैं स्वतंत्र बलिया गणतंत्र के जमानिया क्षेत्र का 'कमांडर-इन-चीफ' था, संपादक । मैंने भी थाना फूंका । जमानिया स्टेशन के टेलीफोनों को झटके से तोड़-ताड़कर साथियों को कमांड दिया कि, 'सारे सिगनल तोड़ दो, स्वतंत्र बलिया में 'इमरजैंसी' लगा दो,ताकि कोई बाहर से हमारी आजादी छीनने नहीं आने पाये । सारे संसार से संपर्क छिन्न-भिन्न कर दो ।' हमारे मातहत अफसरों ने पूछा, 'कमांडर, बनारस तक नहीं जा सकते, ठीक है, वहां अंगरेजी फौज आ गयी है, लेकिन बनारस के पहले तक यानी सकलडीहा तक हमारी आजाद हिंद ट्रेन नहीं चली, तो हमारे सकलडीहा के साथी क्या कहेंगे ? 'साथियों साथ दो' का नारा झूठा हो जाएगा ।' कमांडर ने कहा, 'ठीक है, 'बक्सर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति के बीच जंगलों, खेतों, खलिहानों की अपनी अलग अस्मिता है । हम गरीब हैं लेकिन वंचक नहीं ।

शटल हमारे कब्जे में है । काशी चच्चा हमारे ड्राइवर रहेंगे । सकलडीहा तक शटल चलेगी । प्लाटफरेम पर भीड़ नहीं होनी चाहिए ।'

हमारे मातहत अफसरों को यह सब मंजूर था । 'पर काशी चच्चा ड्राइवर कैसे होगा कमांडर ? लंगड़ा है । मचकता है । ऊ तो राम-सीता के चेहरे रंगना ही जानता है । रामलीला में भंड़ैती करता है । कभी रहा ड्राइवर कुल दो हफ़्ता । नौकरी छोड़ के भाग आया . . .अपने घर । बहेतू है । ऊ ड्राइवर बनेगा ? तुम हमारा एक्सीडेंट कराओगे । हम नहीं मानते तुम्हें,कमांडर ।'

'सुनो अफसर,अपनी सीमा में रहो । कमांडर कम से कम उतना मूर्ख तो हो ही सकता है जितना तुम्हें होने का हक है । लंगड़ा इसलिए नौकरी छोड़कर नहीं आया कि उसे भंड़ैती का शौक था । उसे तूफान मेल के अंगरेज ड्राइवर ने गोली दी । उसने उसके मुंह पर थूक दिया और जब तक वह ललमुंहा बंदर उसे दौड़ाये,लंगड़े ने ऐसी रेस लगायी कि वह विलायती दो साबुत पैरोंवाला आदमी भी उसे पकड़ नहीं पाया । अफसर, तुमने उसे आइंदा भांड़ कहा, तो तुम्हें खुलेआम कोर्ट मार्शल फेस करना होगा ।'

'जी कमांडर ।'

संपादक, कितना मजा आता था ? गाजीपुर जेल में भी लगा था कि छपरा के दीयरे में अपने काका की दूसरी शादी कराने बरात के साथ आये हैं । बड़ी मजे से चल रही थी जिंदगी । एक दिन जेलर ने कहा, 'तमाम छात्र छोड़े जा रहे हैं, लेकिन याद रहे । . . .' इस्माइल चाचा ने हंसते हुए बीच में ही कहा, 'आइंदा ऐसी हरकत की तुम लोगों ने तो मुरगा बनाकर यहीं लटका दूंगा ।' और 'कुकड़ कू' कहते हुए इस्माइल मियां हंसे और आगे बोले 'मैं बहुत सख्त अफसर हूं ।'

'जाहिर है चाचा,' मैंने कहा, 'आज से गाजीपुर के एरिया कमांडर तुम रहोगे । और जमानिया का कमांडर तुम्हारे अधीन 'वर्क' करेगा ।'

'चुप बे छोकरे', इस्माइल चाचा हंसे, 'मेरे घर दो अदद बीवियां और आठ बच्चे-बच्चियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, तेरा बाप खिलाएगा क्या उन्हें ? बोल हरामी कमांडर ! मैं तुम लोगों की नस-नस पहचानता हूं । चाचा कहकर ठगने का शौक चर्राया है क्या ?'

संपादक, बहुत फर्क था । गणेशसिंह के 'चरनि' और इस्माइल मियां के 'चरनि' में बहुत फर्क था । तीन दिन के भीतर बनारस से एक स्पेशल ट्रेन आयी । हमने रेलवे के पटरियां उखाड़ दी थीं । दो घंटे तक रुकी रही गाड़ी सीपिया नाले के पुल पर । पटरियां बनी । इस बीच हम दौड़कर स्टेशन पहुंच सकते थे, अपने साथियों को खबरदार कर सकते थे, पर गणेशसिंह का शिकंजा इतना जबर्दस्त था कि मुझे पैर तुड़ाकर बैठ जाना ही पड़ा । जमानियां में गोली चली । तीन लोग मामूली घायल हुए, वे तो पैर घसीटते भाग गये, पर वरुइन गांव का लालजी सिंह मारा गया । हलकी सांस चल रही थी । अंगरेज अफसर ने उसकी छाती पर बूट से बड़ी करारी चोट की । खून का एक हुलक्का गिरा और लालजी मर गया । उसकी लाश कटे हुए बकरे की तरह पीछे के बिना छतवाले डब्बे में, जिसमें पटरी ठीक करने के हर्वा हथियार थे, फेंक दी गयी । स्पेशल मिलेट्री ट्रेन ऐसे ही कांड करती बढ़ती रही । स्वतंत्र बलिया गणतंत्र, चित्तू पांडे का गणतंत्र,पुनः गुलाम हो गया ।

मैंने अपने निबंध 'अंधेरी रात का गुलाब' में इस वाक्‌ये को बताया है कि नेहरू हम छात्रों के चाचा उसी दिन हुए थे । हम अपनी कमअक्ली की वजह से गांवभर की गालियां सुनते । अपने ही गांव के भाई, चाचा हमें गधे, मूर्ख, जाहिल कहते । उन्हें हर रात रेलवे पर चार किलोमीटर पर जबर्दस्ती पहरा देना जो पड़ता था । बारी-बारी रोज पहरे पर जाते वक्त वे लोग कहते, 'अरे घोंचू साले, कोई नेता है हिंदुस्तान में, जो तुम्हारी करतूतों का समर्थन करे ? दुई अच्छर पढ़के ससुर लोग चले थे अंगरेज से टकराने । गधे कहीं के . . . . ।'

और तभी जेल से छूटते ही नेहरू चाचा ने कहा, 'बयालीस की क्रांति के लिए जिम्मेवार मैं हूं । वह क्रांति असफल नहीं है । वह नये भारत का प्रभात है ।'

हां संपादक,

अब होने लग्यो है प्रभात सखी . . . अब होने लग्यो है प्रभात सखी . . .

क्या लिखूं, मन में थकान ही थकान है । कलम रख रहा हूं, दोस्त । अब कल सोचूंगा, फिर साहस हुआ, मन ने कहा कुछ तो फिर 'कल सुनना मुझे . . . ।'

तुम्हारे महानगर तो भारत के लिए कोढ़ बनते जा रहे हैं । जब भी उनकी याद आती है, लगता है मैं घोर नरक में आ गया हूं । मेरी भी वही हालत होती है, जो कण्व के शिष्यों की हुई । तुम तो जानते ही हो संपादक ! प्रकृति के बीच जंगलों, खेतों-खलिहानों की अपनी एक अलग अस्मिता है । हम गरीब हैं, लेकिन वंचक नहीं है ।

अभिज्ञान शाकुंतल के पांचवें अंक में ही तो वह दृष्टि झलक गयी, झुका दिया जिसने सौंदर्योपासक महाकवि को शिवम् की ओर ज्यादा । दुष्यंत को शकुंतला की याद नहीं थी, यह सरासर झूठ है । वह एक औरत से बंधकर रहनेवाला था भी कब ? वह मृगया से तापस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्या का आखेट करके लौटा था । उसकी रानी हंसपदिका कोई सामान्य बुद्धिजीवी औरत नहीं थी । हर तेज नारी आदमी की आंखों में झांकते ही सीधे वहां तक उतर जाती है, जहां जीवन का सार-तत्व सात्विक संस्कृति का रस बन जाता है । किंतु दुष्यंत में कौन-सा रस था ? एक फूल से दूसरे फूल पर मंडराना । हमारे त्रिलोचन कवि कहते हैं कि जब भौंरे ने आकर पहले पहले गाया/कली मौन थी/नहीं जानती थी वह भाषा/इस दुनिया की कैसी होती है अभिलाषा/इससे भी अनजान पड़ी थी/तो भी आया/ भौंरे तो रहेंगे ही । हंसपदिका औरत थी न, इसलिए वह बुद्धिजीवी आलोचकों की जुबान नहीं जानती थी । वह गंवारू-भाषा ही बोल सकती है । यही था तत्कालीन समीक्षकों का धमदिश । शूद्र और नारी को संस्कृत बोलने का अधिकार नहीं है, इसलिए पंचम अंक में वह प्राकृत में गा रही है । मैं बहुत बढ़िया अनुवाद तो कर नहीं पाऊंगा, कभी कोई कर भी नहीं पाता । अनुवाद तो हमेशा अनुवाद ही रहता है, कुछ इस तरह से हैं पंक्तियां—

अभिनव मधु के लोलुप भौंरे
आम्र कुंज की गंध भरी मंजरियों का रस पीकर
तुम निवास कर रहे कमल-कोश में अब
हमें अचानक कैसे भूल गये हो, वंचक !

सुनते ही दुष्यंत कहता है, 'वाह, अनुराग-भरे गीतों में खोयी प्रेम-नदी का प्रवाह, कैसा अद्‌भुत है ।'

यह नागर-जन की वाचालता है । वह हर नारी को समान रूप से भोग्या मानने का दंभ लेकर जीता है । शकुंतला से मिला तो सर्वभोग्या नारी के रूप ने बांध दिया । गनीमत है कि वह भरत के जन्म के पहले का भारत था, अतः लंबी-लंबी सांसें लेकर ही दुष्यंत चुप रहा । मौके की तलाश में था । तभी एक भौंरा सोन जुही को छोड़कर पद्मिनी नारी के मुख की ओर गुंजार करता चला और वह नारी थी शकुंतला, जो प्राकृत में बोली—**हे हले, हे सखि, इस दुष्ट भौंरे से परित्ताह (बचाओ) इस दुष्ट भौंरे से परित्ताह ! परित्ताह !**

उसी नागर राजा ने उस कमल पुष्प को यज्ञवेदी के पार्श्व में अपने पौरुष से कुचल दिया । वह गर्भिणी हुई । कण्व ने मुर्झाये चेहरेवाली बेटी को डांटा नहीं, विश्वास किया एक अधम क्षत्रिय का, और उसका परिणाम भी भोगना पड़ा उनकी बेटी को । जो बिना वृक्षों, लताओं को जल दिये खुद जल नहीं लेती थी, हर लता के फूलने पर, हर वृक्ष में फल लगने

साहित्य का न अतीत होता है न भविष्य । साहित्य एक क्षण है ।

पर जो आनंद से विभोर हो जाती थी—वह पतिगृह जा रही है । ओषधियों, वनस्पतियों उसे आशीर्वाद तो दो । 'ओषधयः शांतिः वनस्पतयः शांतिः' का पाठ करनेवाला यह देश इनके बीच में पलनेवालों को बहुत कम ही याद करता है । इनके बीच में गरीबी पलती है, मूर्खता में डूबी नारी हर अत्याचार सहती है, यही है नियति ।

राजा ने अपनी वाग्दत्ता नहीं, भोग्या को पहचानने से इनकार कर दिया—यही सत्य है । यही राम नाम सत्य है । कवि लाचार था । वह प्रेम की कथा कहने चला था । उसे ज्ञात था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादाखिलाफी और बलात्कार लगभग एक-जैसी चीजें होती हैं, पर वह जिस प्रेम-राज्य के सौंदर्य को उतारना चाहता था, उसे अगर प्रवंचना की नींव पर खड़ा करता तो वह जीवन के सर्वश्रेष्ठ मधु को जनता तक नहीं पहुंचा पाता । अतः दुर्वासा के शाप को दोषी कहकर अपने मन के प्रेम-मधु को बांटता रहा । हजारों वर्षों तक संस्कृति को तपना पड़ता है, तब कहीं प्रेमरस की दो-चार बूंदें मिलती हैं । बहुत कम होता है यह रस । बांटना चाहते हुए भी मन मसोसकर रह जाता है । सभी तो अपने ही हैं । सारी नगरी ही मेरी हितू है । रस बहुत थोड़ा है—

रसवा के भेजलीं भंवरवा के संगिया/सेऊ ले आइल थोर/ एतना हि रस हम केकरा के बांटी/ सगरि नगरि हितु मोर ।

तुम्हारे महानगर तो भारत के लिए कोढ़ बनते जा रहे हैं । जब भी उनकी याद आती है, लगता है, घोर नरक में आ गया हूं ।

छोड़ो संपादक,

यह सब कहनेवाले आधुनिक नहीं होते । आधुनिकता परंपरा के जीवन-तत्वों को समझकर ग्रहण करने को धोखेबाजी मानती है और उस से गुरेज करती है । आधुनिकता को 'इनवर्टेड कामा' में बंद करो ।

इसी से चिढ़कर नागर को गाली देते हुए कण्व के शिष्यों ने कहा था—'कितना नीच था वह राजा । बार-बार एक तापस बालिका, प्रेम के नाम पर सब कुछ लुटा देनेवाली बालिका, को इतनी पीड़ा दी ठुकराकर कि निर्लज्ज होकर वह 'हनीमून' के रहस्य बताने लगी कि आपने मेरे पालतू मृगछौने को देखकर, जो आपसे डर रहा था और मुझ से चिपक गया था, कहा था 'तुम दोनों ही बनवासी हो, इसीलिए इतना आपसी प्रेम है ।' राजा बोला था संपादक—

स्त्री-गामशिक्षितपटुत्वमानुषीषु
संहश्यते किमतुः याः प्रतिवोधवत्यः
प्रागंतरिक्षगमनात्स्वमपत्यजात
मनैद्विजैः परभृताः खलु पोषयंति

हां भई, श्लोक टेढ़ा है । बहुत संधियां हैं, पर क्या करूं, मुदर्रिस होने का दंड तो देना होता ही है । बिना प्रमाण के मैं कुछ कहता नहीं, कुछ लिखता नहीं । यह गौतमी-जैसी वृद्धा को कहा गया था । तपस्विनी ने कह दिया कि 'आपको यह शोभा नहीं देता । तपोवन में पली कन्या छल-छद्म नहीं जानती ।' राजा बोला, 'बूढ़ी तपसिन,जो मानवी स्त्रियां नहीं हैं, वे ही बिना सिखाये-पढ़ाये इतनी चतुर हो सकती हैं । पढ़ी-लिखी तो इतनी गयी-बीती होती हैं कि वे कोयल की तरह अपने अंडों को कौवों के घोंसलों में रख देती हैं । उनका पाप तब खुलता है, जब बच्चे बड़े होकर घोंसला छोड़कर भाग जाते हैं ।'

सुनो संपादक, भारत को बचानेवाला, भरत का बाप उसकी मां को निर्लज्ज,पापाचारिणी और धोखेबाज कह रहा है । यहीं से हमारा जन्म शुरू हुआ । जब मां ही पतित हो गयी, तो देश भी क्या बनेगा ?

भई, जानता हूं कि तुम कण्व के शिष्योंवाला वाक्य सुनना चाहते हो, लेकिन आतुरता क्यों ? वह वाक्य कोई ऐसा वाक्य नहीं है, सामान्य है, उसे मैं सस्पेंस नहीं मानता । तुम्हें भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानना चाहिए । सस्पेंस का भूत जब मेरे-जैसे प्रोफेसर पर मुर्दरिसी के दिनों में, कहानी पढ़ाते वक्त कभी हावी नहीं हुआ, तो अब क्या खाक मुर्दरिस होंगे ? यह नयी कहानी के नये-नये प्रोफेसर ही कह सकते हैं, जो जिंदगीभर यही कहते रहे कि अध्यापन और लेखन साथ-साथ नहीं हो सकता । मैं उस समय अपनी मित्र मन्नू के नाम की शरण ले लेता था, अब लोग प्राध्यापक कहलाने के लिए बेचैन नजर आते हैं । मैं बार-बार सोचता हूं मन्नू ने भारत के मर्द बुद्धिजीवियों को चुनौती दी, लिख दिया—'आपका बंटी' । दो जवाब ? हर मर्द को जवाब देना होगा । तुम नहीं दे सकते । क्योंकि, तुम नागर राजा के पुत्र हो । जवाब तो किसान का बेटा ही देगा, कहो नागर लोगों—लिखूं—'आपकी गुड्डन ।'

आजकल शिवप्रसाद सिंह की कहानियों पर 'रिफ्रेशर कोर्स' चल रहा है ।

पहला आरोप है कि एक गरीब हरिजन औरत के बारे में ऐसा वाक्य लिख दिया गया है, जो हिंस्र है और इससे शायद 'डीसेंसी' को क्षति पहुंची है । कहानी पर मेरे पास भी, जो पत्र आ रहे हैं, उनमें कई ऐसे हैं, जिनसे पता चलता है कि पाठकों को पीड़ा हुई है । बहुत मासूम रही है मेरी इमेज, हमारे पाठक परेशान हैं । मेरे एक बहुत ही आस्थावान पाठक श्री रत्नेश कुमार ने, मगरहट्टा, हाजीपुर से लिखा—'श्रद्धेय शिवप्रसाद जी, सादर अभिवादन सहित १९ अगस्त पर मेरी मंगल-कामना स्वीकारें । आप दो सौ से भी अधिक कहानियां लिखें पर 'आदम खोर पैंथर'-जैसी नहीं, 'हत्या और आत्महत्या के बीच'-जैसी । यही हार्दिक कामना है ।' रत्नेश को पूरा हक है कि वे अपने प्रिय कथाकार से ऐसी 'शॉकिंग' कहानी न लिखने का आग्रह करें । मैंने उन्हें लिखा कि कोशिश करूंगा ।

'हत्या और आत्महत्या के बीच' एक ऐसी कहानी है, जो बहुत लोकप्रिय हुई । नारी-स्वतंत्रता की अत्यंत सधी थीम बहुत ही कारुणिक ढंग से आयी है । अकसर चिट्ठियां यही आती हैं, वे भी प्रायः बेटियों की । सब में एक न एक वाक्य होता है इस तरह कि, 'बहुत रोयी । शोभा बुआ ने हिला दिया ।' मैं लिखता रहा, 'बेटे,रो चुके अच्छा है, अब यह देखना तुम्हारा काम है कि दूसरी शोभा बुआ इसी तरह आत्महत्या कही जानेवाली हत्या की फंसरी से लटकने के लिए मजबूर न हों ।' वह कहानी अंगरेजी में अनूदित होकर 'पायनियर' वाराणसी में १८ अगस्त, १९८८ को 'विट्वीन मरडर एंड सुसाइड' नाम से छपी । पश्चात तो वह एक 'लीजेंड' बन गयी । मैं रत्नेशजी को कैसे बताऊं कि शोभा मेरे जीवन का हिस्सा थी । मैं दूसरी शोभा या सौ शोभाएं कहां से लाऊं ? मैं कोई विधाता नहीं हूं और न जादूगर । एक रही शोभा, जो गयी काल संग । मैं तब भी रहा असंग । अब अगर मनसा जुड़ी है, तो उसे देखने से लोग कतरा रहे हैं । पाठकीय संवेदना जब बहुत मुलायम हो जाती है, तो लोग ढेला

आज तक सर्वत्र नारी प्रेम की वस्तु रही । शीतल छांव, टूटे छप्पर के नीचे सिसकती, मजबूर, रोती, कलपती रही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार देते हैं । शीशे टूट सकते हैं । पर औरत का फूल कुचला जाता है, तो लेखक सारा कुछ रोते हुए लिखता है । अब भी मैं असंग ही हूं । परेशानी तब होती है, जब यह सब महसूस करनेवाली पाठिकाएं भी लाचार होकर बैठ जाती हैं । मैंने १५० से अधिक नारी चरित्रों को अपना क्षमता के अनुरूप, जहां तक उनके भोग को भोग सका, उनके दर्द को बांट सका, उसके हिसाब से प्रस्तुत किया । आज तक सर्वत्र नारी प्रेम की वस्तु रही । शीतल छांव, टूटे छप्पर के नीचे सिसकती, मजबूर, रोती कलपती रही । मैं घमंडी कहलाता हूं, तो मैं वही क्यों न कहूं ? मेरे कथा-साहित्य के पूरे नारी-चित्रों के अलबम को अगर सच्चे रंग में, यथार्थ के साथ, तूलिका डुबोकर सजा दो और तुम्हारा अलबम ज्यादा सही और प्रतिनिधि बन जाए, ज्यादा यथार्थ और उतना ही शिल्प-मंडित, तो मैं नारी को नमस्कार कहकर हट जाऊंगा ।

लेकिन एक अनजान बेटी लिखती है १९ अगस्त को लक्ष्य करके कि—'मंजू दीदी गयी तो क्या हम आपकी बेटी नहीं हैं ।' बड़ा दर्द होता है ऐसे खत जब मिलते रहते हैं । मैंने जो संभव था किया । मैं संतुष्ट हूं । कोई मुदर्रिस बाप इससे अधिक क्या कर पायेगा ? पर मैं इन लड़कियों से जानना चाहता हूं कि कब तक ? कब तक, तुम्हारे चंडी रूप को देखने के लिए, कितनी लंबी प्रतीक्षा करूं ? तुम कहती हो कि 'हम क्या बेटियां नहीं हैं', हो, शतप्रतिशत हो । किंतु, आज मैं अपनी रचनाओं के अंत में 'विदा पुनर्मिलनाय' नहीं लिखता, तो तुम उदास क्यों हो जाती हो ? लिखती हो कि अब 'विदा पुनर्मिलनाय' जरूर लिखो—झूठ बोलूं ? क्यों ? तुमने चालीस साल लगा दिया और मैं तुम्हें तुम्हारे तेज को जगाता रहा । तुम जगे ? बोलो तुम जगे ? इसलिए अब मैं 'सायंस आफ हेट्रेड' का प्रयोग कर रहा हूं । यह मेरी कहानी नहीं, शोलोखोव की पहली कहानी का शीर्षक है । मैं तुम्हारे ऊपर झपटनेवाले गीधों की ऐसी सच्ची और नंगी चित्रावली बना देता हूं । देखूंगा, कि तुम लोग कब तक आराम से सोती रहती हो ? तब भी धक्का नहीं लगे, तुम सारी रात जगकर कमरे में बेचैन घूमती नहीं दिखोगी, तो मैं 'विदा पुनर्मिलनाय' कैसे लिखूं ? किसलिए जिंदा रहूं ?

सिर्फ दो पत्र हैं ऐसे, जिनसे पता चलता है कि परीक्षण गलत नहीं था । 'शॉक' था । मैं मानता हूं, पर यह पत्र देखिए । चूंकि कह चुका हूं कि बिना प्रमाण के नहीं कहता, इसलिए पहली बार एक पत्र के लेखक का नाम ले रहा हूं । वे हैं जोधपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के वरिष्ठ रीडर ओंकारस्वरूप शर्मा । पत्र यों है—

'आदमखोर पैंथर'पढ़ा । जानता हूं ईमानदार वस्तु-स्थिति के चित्रण से लकीर के फकीरों की भौंहें चढ़ेंगी । चढ़ा करें । आंख मूंद लेने से ही यदि सब कुछ शुभ है, तो कानों से सुनायी पड़ेगा ही । ये मुंह बंद कर लेने से अब काम नहीं चलेगा । मैं इसे शुद्ध यथार्थवादी कहानी मानता हूं । एक माहौल का उसमें चित्रण है । पात्र और संवाद उसी को गहराते हैं । जिसमें साहस होगा, जिसे यश की भी चिंता नहीं होगी, वही तलवार की धार पर चल सकेगा । नयी कहानी का ढिंढोरा तो बहुतों ने पीटा है, पर है हिम्मत किसी में, जो बेवाक चित्रण कर जाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर भी जो न गुदगुदाए, न जुगुप्सा उत्पन्न करे, बल्कि दिमाग पर हथौड़े की तरह चोट कर जाए । मैं इस ईमानदार अभिव्यक्ति का कायल हूं । जिन्हें नाज है हिंद पर वे कहां हैं ? सिर्फ नारेबाजी से तो साहित्य हथियार नहीं बनेगा । यह हथियार बनेगा तो बेवाक होने पर ही । शिव की बातें कभी होती होंगी, और सुंदर का चित्रण भी असुंदर से किनाराकशी करके होता रहा होगा; पर इस जमीन पर सत्य तो यही है । और जो जमीन छोड़ देगा, उसे सातवें आसमान में भी जगह नहीं मिलेगी ।

मेरे दिये तेरी आंधियों ने बुझा तो दिये मगर
हवाओं में एक जुगनू रौशनी का इमाम है

संपादक, तुमने सुना है । साहित्य का न अतीत होता है न भविष्य । साहित्य एक क्षण है । अति-यथार्थवादी यानी 'सुर्रियलिज्म' मर गया, पर प्रेत खड़ा है । आलोचक कहता है—एक उबलता क्षण, जिसे उसने कुछ निरर्थक से लगनेवाले रंगों में ऐसा बांध दिया है कि वह अमर कलाकृति बन गयी । यह कौन-सा क्षण है ? मैं और कुंवर नारायणजी पिछले हफ़े २३ अगस्त को इसी क्षण पर सोच रहे थे । यह बौद्धों का क्षणवादी दर्शन नहीं है । वहां तो क्षण इतनी जल्दी जलता, इतनी जल्दी बुझता है कि त्वरित जलन, त्वरित बुझन-एक कतार बना देते हैं, जिसके कारण दीपशिखा निर्वात अकंप जलती-सी लगती है । बुद्ध कहते हैं, 'नदी भी क्षण है ।' किंतु उठने-गिरनेवाले क्षणों की 'रिद्म' इस तरह की है, कि नदी निरंतर प्रवाहित लगती है । पर यह क्षण क्या है ? यह कुछ नहीं है सिर्फ पेरेस्त्रोइका के पहले वारसा-संधि के देशों का वह चिंतन है, जो मार्क्स के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की अनपयुक्तता पर हमेशा के लिए प्रश्न-चिह्न बन गया है । आज सुर्रियलिज्म जी कर लौटा है, कल रीतिकाल की क्षयिष्णु संस्कृति के क्षणबद्ध मैथुन को सजीव चित्रण कहकर साहित्य के इतिहास में लटकाया जायेगा । अंतः क्षण में जीना सीखो संपादक, क्षण में मरना । और जो कहना, वह याद रखना क्योंकि, वह मर चुका है । दूसरा क्षण पकड़ो । नहीं पकड़ पाये ? वह भी मर गया । बुद्ध बहुत बड़ी वैचारिक-क्रांति का नाम है । बुद्ध को सनातन का मोह था—इसीलिए हर बार ब्राह्मणवादी दर्शन को कुचलकर भी अपनी बात कहते वक्त वे हमेशा परंपरा के जीवित रेशों को काटना नहीं चाहते थे—'सच्चा ब्राह्मण वह नहीं है, जो तण्हा (तृष्णा) में, वासना में, स्वार्थ-पूर्ति में खोया है । सच्चा ब्राह्मण वह है जो तृष्णा रहित है ।'—'एस धम्मो सनन्तनो, एस धम्मो सनन्तनो ।' इसलिए हमेशा याद रखना चाहिए कि उनका क्षण परंपरा की एक सूक्ष्म इकाई है । वही उसकी शक्ति है । उनकी नकार को 'निहिलिज्म' कह देने से नहीं समझा जा सकता, क्योंकि वे सार्त्र के 'प्रेडिकामेंट' में (गडमगड्ड) चिंतन में नहीं जी रहे थे । उनका नकारना 'नदिंगनेस' है नहीं । 'एन सोइ और पार सोइ' में यानी मैं और एतद् में यानी 'इनसेल्फ इन टू इटसेल्फ' में उनके यहां झगड़ा है ही नहीं । वह भी मर गया । ऐसा ही होता है ।

आदाब अर्ज, फिर कभी सुनना मुझे ।

—सुधर्मा, १३ गुरुधाम कॉलोनी,
वाराणसी-२२१०१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत एक : भाव अनेक

वन्देमातरम्

वन्दे-वन्दे मातरम् सदा पूर्ण विनयेन।
श्री देवी परिवन्दिता या निज-पुत्र-जनेन।
या निज-पुत्र जनेन पूजिता मान्यानूपा।
या धृत-भारतवर्ष देश-वसुमती-स्वरूपा।
तामहमुत्साहेन शुभे समये स्वच्छन्दे।
वन्दे जनहित करी मातरम् वन्दे-वन्दे !

—राय देवीप्रसाद 'पूर्ण'
स्वदेशी-आन्दोलन

"सुजला सुफल" है मही यहाँ की,
"सस्यश्यामल" मही यहाँ की
"मलयज शीतल" मही यहाँ की।
विवुध-मनोहर मही यहाँ की।

—गिरिधर शर्मा
भारतमाता, सरस्वती सं. 1905

आयि भुवन-मन-मोहिनी
आयि निर्मल सूर्य करोज्ज्वल धारिणी जनक जननि जननी !
नील सिन्धु जल धौत चरणतल
अनिल विकम्पित श्यामल अंचल
अम्बर चुम्बित भाल हिमाचल शुभ्र तुषार किरीटिनी !

—रवीन्द्र

वन्देमातरम्

कौम के खादिम की है, जागीर वन्देमातरम्।
है वतन के वास्ते, अक्सीर वन्देमातरम्।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जालिमों को है उधर, बन्दूक पर अपनी गरूर।
है इधर हम बेकसों का, तीर वन्देमातरम्।।
कत्ल की हमको न दे, धमकी हमारे सब्र से।
तेग पर हो जायेगा, तहरीर वन्देमातरम्।।
किस तरह भूलूँ इसे मैं, जबकि किस्मत में मेरी।
लिख चुका है शकि में तहरीर वन्देमातरम्।।
फिक्र क्या जल्लाद ने गर, कत्ल पर बाँधी कमर।
रोक देगा दूर से, शमशीर वन्देमातरम्।।
जुल्म से गर कर दिया, खामोश मुझको देखना।
बोल उट्ठेगी मेरी, तस्वीर वन्देमातरम्।।
सर जमीं इंगलैंड की, हिल जायेगी दो रोज में।
गर दिखायेगी कभी, तासीर वन्देमातरम्।।
सँवरी भी मुजतरिब थे, जबकि हर झंकार पर।
बोलती थी जेल में, जंजीर वन्देमातरम्।।

वन्देमातरम्

सुजलां सुफलां
मलयज शीतलां
मातरम्
शुभ्र-ज्योत्सना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित-द्रुमदल शोभनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्
सप्त कोटि कंठ कलकल निनाद कराले
द्विसप्तकोटि भुजैर्धृतिश्वरकर वाले
अबला केनो मां एतो बलो।
बहुबल धारिणी
नमामि तारिणी
रिपुदल वारिणी
मातरम्
तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हृदि तुमि मर्म
त्वाहि प्राणः शरीरे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहुते तुमि मा शक्ति
हृदय तुमि का भक्ति
तो भारह प्रतिमा गड़ि
मंदिरे मंदिरे।
त्वंहि दुर्गा दशप्रहरण धारिणी
कमला कमल-दल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी
नमामि त्वां,
नमामि कमलाम्
अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां
मातरम्
वन्देमातरम्
जय जनक जननी जननि जय भुवन मानस हारिणी।
धौत तेरा चरण-तल है नील नीरधि-नीर से।
जय अनिल-कम्पित मनोरम श्याम अंचल धारिणी

— बंकिमचंद्र चटोपाध्याय

व्योम चुम्बी भाल हिमगिरि है तुषार किरीट है
जय जयति लक्ष्मी-स्वरूपा दैन्य दुःखनिवारिणी !

—सियारामशरण गुप्त
भारत-लक्ष्मी

विविध-सुमन-समूह-चित्रित
शस्य-श्यामल-वसन-संजित
मलय-मारुत से सुगंधित
रत्नगर्भा जननि !
मंगल-करणि संकट-हरणि !

—राम नरेश त्रिपाठी
मातृभूमि

है तेरी कृति में विक्रान्ति,
भरी प्रकृति में अविचल शान्ति
फटक नहीं सकती है भ्रान्ति
आँखों में है अक्षय कान्ति
आत्मा में है अजअखिलेश,
मेरे भारत, मेरे देश !

—मैथिली शरण गुप्त
मेरा देश

जन गण मन अधिनायक जय हे भारत-भाग्य विधाता !
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग,
विन्ध्य हिमाचल यमुना-गंगा उच्छल जलधि-तरंग,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव शुभ नामे जागे तव शुभ आशिष माँगे।
गाहे तंव जय गाथा
जनगण मंगलदायक जय हे भारत भाग्य-विधाता !
जय हे जय हे जय हे, जय जय जय जय हे ! —रवीन्द्र

उन्नत—भाल-विराजत-चारु हिमाचल हे
प्रनत पयोधि-प्रसर्षित-पद-चल-अंचलहे
जय जय भारत हे !
जय भारत, जय भारत, जय जय भारत हे ! —श्रीधर पाठक

होगा ऐसा कौन अभागा नर तनु धारी ?
जिसे न हो निज मातृभूमि प्राणों से प्यारी ? —परशुराम चतुर्वेदी

नहीं स्वर्ग की चाह मुझे है, नहीं नरक की भीति
बढ़ती रहे सदा मेरी बस जन्मभूमि में प्रीति। —रामचरित उपाध्याय

जगदीश यह विनय है जब प्राण बन से निकलें,
प्रिय देश रटते रटते ये प्राण तन से निकलें। —जोशी प्रताप

अभय दुर्जया शक्ति-धारिणी,
निमिष में अरि उर-विदारिणी,
खड्गहस्ता तेजरूपिणी,
देवि, दुर्जन-दलनि !
"मातु ! जीवन पुष्प यह मम
है समर्पित चरण पर तव।" —राम नरेश त्रिपाठी

नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम प्रवाह सूर्य-तारे मण्डन है।
वन्दी विविध विहंग शेषफन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद हैं बलिहारी इस वेशकी।
हे मातृभूमि तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।

—मैथिली शरण गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

बोल नहीं सकता

प. वि. कु., मोकामा : पटना आयु २१ वर्ष, बी. ए. आनर्स का छात्र हूं। सभा, गोष्ठी, जनसमूह को संबोधित करने में हिचकिचाता हूं। यदि मुझे सभा या गोष्ठी में बोलने को कहा जाए तो बोलते समय मेरा बायां पैर कमर से तलवे तक कांपने लगता है व दिमाग अस्थिर हो जाता है। जानते हुए भी ठीक से बोल नहीं पाता हूं। हीन भावना का इसी कारण शिकार होता जा रहा हूं। चिंता बढ़ गयी है। यदि देखकर पढ़ने को कहा जाए तब भी थरथराहट होती है। शरीर कांपता है, लगता है गिर जाऊंगा।

सभा,गोष्ठी आदि में न बोल पाना व हिचकिचाना हीन-भावना से उत्पन्न होता है। यदि आप अपने में आत्मविश्वास पैदा करें तथा सभा के सभी सदस्यों को ऐसा समझें कि वे आपसे कम ही जानते हैं,जो कि एक तरह से सही भी है, क्योंकि आपको बोलने को कहा गया तो निश्चित ही आपका औरों से अधिक ज्ञान होगा। तब हीन-भावना उत्पन्न नहीं होगी। साथ ही शुरू-शुरू में सभा में बैठकर वक्ता न बन, प्रश्नकर्त्ता बनें।

फिर धीरे-धीरे ऐसी सभा को संबोधित करें जो निश्चय ही बुद्धि व ज्ञान में आपसे निचले स्तर की हों। इस प्रकार धीरे-धीरे आपमें विश्वास उत्पन्न होगा तथा धाराप्रवाह बोल सकेंगे। जो लक्षण आप में हैं, वह केवल तनाव ही है न कि कोई रोग।

मैं हृदय रोगी तो नहीं ?

मु. कु., पूर्णिया : मैं १९ वर्ष का १३वीं छात्र हूं। ३ वर्ष पूर्व एक लड़की से संपर्क तथा बाद में ग्लानि। तत्पश्चात हस्तमैथुन आदत-सी पड़ गयी। डेढ़ वर्ष पूर्व दिन में हुआ था, तब ही हस्तमैथुन करने के बाद से धड़कने लगा। अब अकसर बिना भी ऐसा होता है। सीढ़ी चढ़ने पर, दौड़ने तेजी से धड़कता है। दिन में सोने पर पसीना अधिक आता है। क्या मुझे हृदय रोग है? सुबह उठ दौड़ या व्यायाम कर सकता हूं। का कोई भी अंग—जांघ, बांह व आंख का भाग फड़कने लगता है।

आप 'दुश्चिंता' से पीड़ित हैं न कि रोग से। दुश्चिंता के कारण आपमें हृदय गति व अधिक पसीना या मांसपेशियों फड़फड़ाना है। इस रोग का यूं तो हस्त कोई संबंध नहीं, परंतु हमारे देश में विश्वास है कि इस क्रिया द्वारा मनुष्य मानसिक तौर पर कमजोर हो जाता है यह क्रिया करते लोग अपराधबोध आत्मग्लानि, परिणाम का डर व दुश्चिं हैं। और बार-बार इस प्रकार सोच-सो रोगी हो जाते हैं। मनन करें कि पाश्चात्य भी इस आयु के किशोर व युवक-युव से मनोरंजन करते हैं, उन्हें कोई रोग न

कामभावना में गिरावट

ल. श्रीवास्तव, वार्दा (उ.प्र.) : मैं दो मां हूं—छोटा बच्चा ८ माह का है। मेरी संभोग की बिलकुल इच्छा नहीं करती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्थी में परेशानी होती रहती है । पति इसी कारण
राज रहते हैं तथा ठीक से नहीं बोलते । कृपया,
ाय बताएं, जिससे संभोग की इच्छा अत्यधिक
ा में होने लगे तथा परिवार ठीक तरह से चल
के ।

ी कोई दवा नहीं जिससे काम-इच्छा बढ़
के । हां,आपको इच्छा न होने के कारण
वश्य ढूंढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए तथा
का हल ढूंढ़ते ही आप फिर से गृहस्थी ठीक
ा सकती हैं । उदाहरण के तौर पर,आपको
ाघ फिर से गर्भ ठहरने का डर भी इस इच्छा
गायब कर सकता है । यदि ऐसा हो तो पति
पत्नी कोई भी गर्भनिरोधक विधि प्रयोग में
सकते हैं । ऐसा भी हो सकता है कि
पको आपके पति मात्र काम-तुष्टि के लिए
झते हों, तब आपका अंतर्मन इसका विरोध
ता है । आपके पति और आपमें यदि प्रेम है,
वह ही शारीरिक प्रेम में बदल जाता है । हो
ता है संभोग से पूर्व वह आपको पूरी तरह
त्तेजना नहीं देते । इन सब बातों का ध्यान
उन्हें हटाने का प्रयास करें । इसमें आपकी
आपके पति की बराबर की साझेदारी
श्यक है ।

स्वप्नों के ताने-बाने

म.एल. आर्य, चमोली : २१ वर्षीय पुरुष
पक हूं । मानसिक गरमी से परेशान हूं ।
रिक रूप से कमजोर हूं । हर रात्रि में सोते ही
के ताने-बाने, अच्छे हों या बुरे चलते रहते हैं ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें । —संपादक

जिंदगी में बिना स्वप्न की रात्रि कभी नहीं मिली । यहां तक कि कुछ समय पूर्व पृथ्वी पर प्रलय भी देख चुका हूं । अध्यापन कार्य के अलावा अन्य बाह्य जानकारियों में विस्मृति होती जा रही है । डॉ. साहब ! क्या जिंदगी का समापन शीघ्र होनेवाला है ?

आप एक अंतर्मुखी व्यक्ति हैं । वैसे भी, बाहर की रुचि आप में कम है । जब रुचि ही कम हो तो ज्ञान भी कम होता है । परंतु आपको इन अंतर्मुखी लक्षणों को बाहरी दुनिया की घटनाओं के साथ संतुलित करना चाहिए । स्वप्न हरेक व्यक्ति को आते हैं । कुछ लोग सुबह उठते ही भूल जाते हैं,कुछ लोग नहीं । आपके स्वप्नों से लगता है कि वह भयानक व गलत प्रतिफल वाले अधिक हैं । स्वप्न हमारे अंतर्मन की स्थिति के स्मृति पटल पर लाते हैं । आपके स्वप्न भी मनोचिंता, उदासीनता व भय को लेकर हैं । एकतरफा यानी अंतर्मुखी स्थिति अच्छी नहीं है । जिंदगी का समापन निकट कदापि नहीं, केवल स्वप्नों की भाषा समझने की आवश्यकता है तथा मन में तनाव का कारण जान लेने की आवश्यकता ।

जिज्ञासा तेज बुद्धि का स्थायी और निश्चित गुण है । —सैम्युअल जॉनसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणतंत्र हमारा सांस्कृतिक चैतन्य है

● रतनलाल जोशी

आज के विकसित गणराज्य के बीज ऋग्वेद में यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। 'गण' शब्द विश्व को ऋग्वेद के ऋषियों की ही देन है। ऋग्वेद के एक मंत्र में 'विदथ' नामक संस्था का उल्लेख है—

विदथस्य धीमिः क्षात्रं राबाना प्रदिवो दधाये।

—ऋग्वेद-३-३८-५

यह संस्था—विदथ आर्यों की सबसे प्राचीन लोक-संस्था थी, जो नागरिकों के दैनिक जीवन से संबंधित सामाजिक-धार्मिक आचरणों का नियमन-नियंत्रण करती थी। 'विदथ' के पश्चात 'समिति' एवं 'सभा' के रूप में राजनीतिक परिषदों का विकास हुआ। संहिताओं में 'समिति' एवं 'सभा' की विशद व्याख्याएं हैं। इन दोनों परिषदों का महत्त्व इसी से स्पष्ट है कि इन्हें अथर्ववेद में प्रजापति की जुड़वां बेटियां कहा गया है—

सभा च मा समितिश्चावतां
प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने

अथर्ववेद-७-२

ऋग्वेद के दसवें मंडल के अंतिम सूक्त में समिति एवं सभा में भाग लेनेवालों के को निर्धारित करते हुए जो मंत्र रचे गए वस्तुतः किसी भी देश-काल की लोक जीवन-प्रणाली को सार्थकता देने के नींव के पत्थर हैं। संक्षेप में इन मंत्रों इस प्रकार है—

'सभा या समिति में भाग लेने के आप एक साथ मिलकर आएं और संचालन में भाग लेते समय एकमत बोलें। गण-सभा में मैत्री-भाव अनि सभा में बहुमत का ही निर्णय मान्य किंतु बहुमतवालों को चाहिए कि अ को सौहार्द्र एवं शांति से समझाएं अ मत-परिवर्तन का प्रयत्न करें। श्रेष्ठ सभा की औपचारिक बैठक आरंभ पहले, विवादजन्य प्रसंगों पर परस्प विचार-विनिमय कर लें। पूर्वकाल और ऋषि भी एक-दूसरे के सहयो कार्य-संपन्न किया करते थे।

'सभा अथवा समिति के सदस्यों कि वे परस्पर एक-हृदय और एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गण-सभा में मैत्री भाव अनिवार्य है । सभा में बहुमत का ही निर्णय पाना चाहिए किंतु बहुमतवालों को चाहिए कि अल्पमतवालों को सौहार्द्र एवं शांति से समझाएं और उनके मत-परिवर्तन का प्रयत्न करें ।

व्यापक उत्कर्ष का कोई लक्ष्य निर्धारित करें । यह लक्ष्य सबकी पहुंच के भीतर एवं सबके लिए समान रूप से कल्याणप्रद होना चाहिए । सभा में सभी सदस्यों के अधिकार और सुविधाएं भी समान होनी चाहिए ।'

सभा एवं समिति के सदस्यों में पारस्परिक हित की भावना सर्वोपरि रहनी चाहिए । सभा एवं समिति की बैठकों में वाद-विवाद के समय सहिष्णुता एवं एक-दूसरे को समझने का लक्ष्य रहना चाहिए । क्योंकि, इन बैठकों में जो निर्णय होंगे, राष्ट्र एवं नागरिकों के जीवन उन्हीं के अनुरूप बनेंगे या बिगड़ेंगे । गणतंत्र के आदर्शों और उसके सफल संचालन के लिए आवश्यक नैतिक योग्यता पर प्रकाश डालने के साथ-साथ वैदिक साहित्य में बहुमत के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला गया है और कहा गया है कि बहुमत का निर्णय निश्चित रूप से सब पर लागू होना चाहिए । उसके उल्लंघन का कोई प्रश्न ही नहीं उठता । संभवतः इसी बात को ध्यान में रखकर अथर्ववेद ने बहुमत का नामकरण 'नरिष्ट' किया है । सायण के अनुसार, 'नरिष्ट' का अर्थ उस निर्णय से है, जिसका उल्लंघन नहीं किया जा सके ।

ईशान बनाम राजा

सभा अथवा समिति के अध्यक्ष के लिए 'ईशान' शब्द स्थान-स्थान पर आया है, किंतु बाद में 'राजा' शब्द व्यापक हो गया था । प्रजा द्वारा राजा के निर्वाचन का उल्लेख भी जगह-जगह आया है । बाद में तो लिच्छिवियों, विदेहों एवं मल्लों के गणराज्यों में 'गण' को ही 'राजा' कहा जाने लगा था । राजाओं के निर्वाचन-संबंधी यजुर्वेद के मंत्रों से प्रमाणित होता है कि वैदिक आर्यों के मानस में राष्ट्र के सर्वांगपोषी राजधर्म की धारणा कितनी उदात्त थी । निर्वाचित राजा सदैव 'समिति' एवं 'सभा' की अनुकूलता प्राप्त करने का प्रयत्न करता था । अथर्ववेद में इस प्रसंग के अनेक मंत्र हैं ।

राज्य की मूल प्रेरक शक्ति इस समिति के आंतरिक संगठन एवं सर्वोपरि प्रभुत्व के जो प्रमाण वैदिक साहित्य में मिलते हैं, उनसे स्पष्ट हो जाता है कि आर्यों की गणतंत्रीय राज्य-व्यवस्था लोकरंजन के आदर्शों को कितनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशाल परिधि में मूर्त करने की क्षमता रखती थी । राजा और प्रजा दोनों अपने-अपने कर्त्तव्यों और अधिकारों के प्रति जागरूक बने रहें, एकमत एवं एकमंत्र होकर राष्ट्र के रथ को नित्य-नवीन समृद्धि के स्तर पर प्रतिष्ठित करते रहें और देह और आत्मा के समानांतर श्रेय द्वारा समस्त जाति के परम कल्याण की जड़ें सींचते रहें, भावना एवं कर्म की ऐसी प्रेरणाएं केवल चरम सौमनस्य एवं सौहार्द के ही वातावरण में संभव हो सकती है ।

विशि राजा प्रतिष्ठितः

यजुर्वेद के 'विशि राजा प्रतिष्ठितः'— 'जनता के आधार पर राजा की अवस्थिति है' —की भावना लगभग गुप्तकाल तक देश में बिखरी मिलती है । प्रजा के हित एवं व्यक्ति के व्यापक स्वातंत्र्य की उपेक्षा करनेवाले निरंकुश राजाओं को केवल राज्य से वंचित ही नहीं किया गया, उन्हें कठोर दंड भी दिया गया है । ऐसे बीसियों उदाहरण वैदिक एवं पौराणिक इतिहास में मिलते हैं । ऋग्वेद के दसवें मंडल में उल्लेख है—

'—जब राजा ने प्रजापति की पुत्री— जैसी समिति की उपेक्षा की, तो प्रजा के साथ उसका संघर्ष हुआ । 'विशः' के कोप ने राजा को भस्म किया और प्रबुद्धों ने नया विधान बनाकर कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति को राजा निर्वाचित किया ।'

अथर्ववेद के नीचे के मंत्र से राजा एवं समिति के पारस्परिक संबंधों की जो झलक मिलती है, उससे स्पष्ट हो जाता है कि आर्य जाति को राज्य-शक्ति के स्वभावगत विकारों का कितना गहरा अनुभव था । समिति के वैमत्य से आशंकित राजा सभासदों से प्रार्थना करता है—

'हे सभासदो, आप लोगों का जो मन कहीं अन्यत्र चला गया है, उसे पुनः मैं अपने ऊपर लौटाने की प्रार्थना करता हूं । आपका वह मन फिर मेरे ऊपर आस्था रखे, ऐसी मेरी कामना है ।'

गण और गणतंत्र संबंधी ऐतिहासिक साक्ष में ऐतरेय ब्राह्मण प्राचीन है । इसका रचनाकाल १००० ई.पू. माना जाता है । ऐतरेय में उन गणराज्यों को 'वैराज्य' कहा है । 'वैराज्य' के स्थान पर कहीं-कहीं 'संघ' तथा 'राज्य' शब्द भी मिलते हैं । पाणिनि ने संघ के लिए 'गण' शब्द का भी प्रयोग किया है । कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में तो तत्कालीन गणराज्यों का सांगोपांग में योधेय, पार्श्व, ब्रक, त्रिगर्त, भद्र, वृजि, अंधक, वृष्णि, अंग आदि 'संघों' के नाम आये हैं । तदुपरांत बौद्ध ग्रंथों में कपिलवस्तु के शाक्यों, वैशाली के लिच्छिवियों, मिथिला के विदेहों और कुशीनारा के मल्लों के भी व्यापक उल्लेख पाये जाते हैं । लिच्छिवियों के शासन का नीति-कौशल तो इतिहास-प्रसिद्ध रहा है । सिकंदर के आक्रमण के समय सिंधु और गंगा के भू-विस्तार में अनेक ऐसे गणराज्य बिखरे थे, जिनके शासन-कौशल और शौर्य-पराक्रम का बहुत ही चित्ताकर्षक वर्णन यूनानी ग्रंथकारों ने किया है ।

महामंत्र सफलता का

गणराज्य की सभाओं एवं समितियों में वाद-विवाद एवं तर्क-वितर्क के लिए कितना स्वातंत्र्य एवं सहिष्णुता थी, इसका एक रोचक उदाहरण महाभारत में कृष्ण-नारद संवाद है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

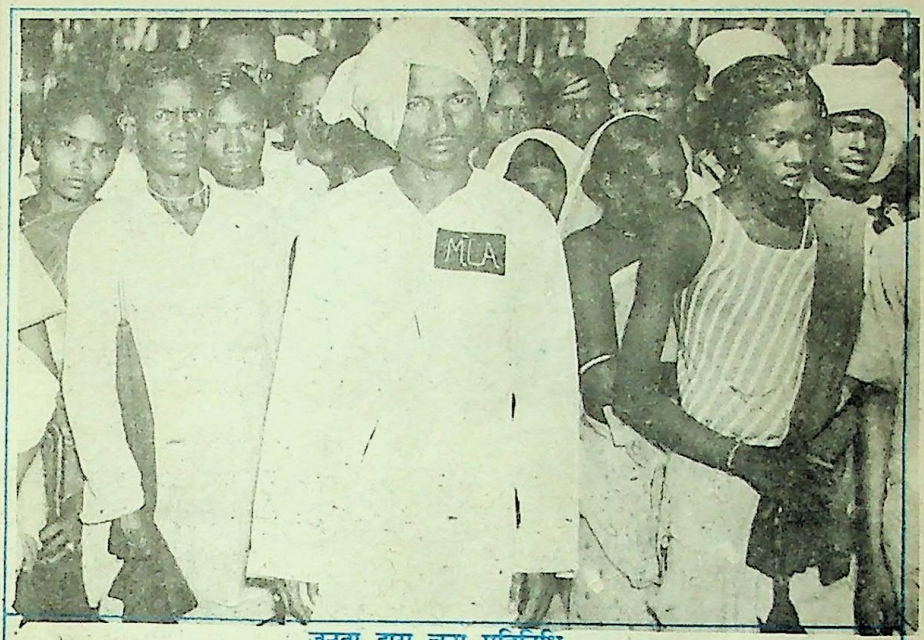

जनता द्वारा चुना प्रतिनिधि

उस समय अंधक-वृष्णि संघ नामक एक विशाल गणराज्य था। वृष्णि-संघ के अध्यक्ष कृष्ण थे और अंधक-संघ के अक्रूर। गण-प्रमुख कृष्ण थे। बड़े कौशल से कृष्ण समिति का संचालन करते थे, किंतु एक बार अक्रूर की आलोचना इतनी कड़वी और तीक्ष्ण हो गयी कि कृष्ण तिलमिला उठे। एक दिन नारद का आतिथ्य करते हुए उन्होंने अपने दुःख को यों व्यक्त किया—

"मुनिवर ! स्वजनों से ऐश्वर्य मुझे अवश्य मिला है, किंतु मेरे लिए यह दासता से बढ़कर और कुछ नहीं है। कहने के लिए मैं भी एक गण-प्रमुख हूं, किंतु मुझे सदैव गालियों की बौछारें ही सहनी पड़ती है। जैसे आग पैदा करनेवाला अरणि का मंथन करता है, वैसे ही मेरे हृश्य का मंथन हो रहा है। मुनिवर, मैं अपने को सर्वथा विवश, निःसहाय पाता हूं। सभा में आहुक और अक्रूर जिसके विरोधी हों, उसके लिए और अधिक दुःख क्या होगा ? मेरी गति जुआरी की मां के समान है। हे मुनिश्रेष्ठ ! ऐसी विकट परिस्थिति में कैसे काम करूं, कुछ उपाय हो तो बताइए।"

श्रीकृष्ण के मन की यह पीड़ा सुनकर नारद पहले तो संकोच में पड़ गये, फिर सोच-विचार के बाद जो वह बोले, उसे गणराज्यों की सफलता का महामंत्र कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। नारद ने कहा—

"श्रीकृष्ण, आपकी आपत्ति संघ के भीतर की देन है। यह व्यक्तिगत अधिक है। इसके निवारण के लिए आपको ऐसे शस्त्र का उपयोग करना चाहिए, जो लोहे से नहीं बनता हो। वह अनायास शस्त्र है—आपकी मीठी वाणी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबके प्रति सहनशीलता, मृदुता और सरलता का भाव रखिए । सब के लिए जीविका के साधन जुटाइए । सब सभासदों की आवश्यकताओं का ध्यान रखिए । जो संघ सम्मान के योग्य हो, उसे वैसा सम्मान दीजिए । संघ के सदस्यों में जब भी कोई कड़वी, निराधार बातें कहे, आप अपनी मीठी वाणी एवं व्यवहार से उसके हृदय को शीतल कीजिए । आप कहेंगे, ऐसा करना कठिन है, लेकिन स्मरण रखिए, जिस व्यक्ति के हृदय में महानता-उदारता नहीं है, जिसने अपने मन को वश में नहीं कर लिया है, वैसा व्यक्ति चाहे वह कोई भी हो, जन-नेतृत्व के ऐसे भारी बोझ को अपने कंधों पर सुगमता से ढोकर चल नहीं सकता । मैदान में बोझ खींच ले जाना हर बैल के लिए आसान है, किंतु जो गाड़ी का बैल है, वही ऊबड़-खाबड़ भूमि में गाड़ी को पार लगाता है । श्रीकृष्ण ! आप संघमुख्य हैं । क्या आप नहीं जानते कि संघों के विनाश की जड़ भेद अथवा आपसी फूट या वैमनस्य ही है ! आपके—जैसे संघपति को पाकर यह संघ नष्ट न होने पाये, ऐसा उपाय कीजिए । बुद्धि, स्थितिभाव, इंद्रिय-निग्रह और उदारता को छोड़कर बुद्धिमान व्यक्ति के पास और कौन-सी विशिष्ट शक्ति होती है ? राज्य, धर्म, समाज और व्यक्ति के उत्कर्ष के संबंध म ऐसा कहीं कुछ भी नहीं है, जिसे आप नहीं जानते हैं । अतः सौमनस्य एवं सौहार्द से कार्य का संचालन कीजिए ।''

अपने जन्म से ही हमारे गणतंत्र लोकतंत्रीय जीवन-प्रणाली की ऐसी उदात्त भावभूमि कैसे प्राप्त कर सके, इसका श्रेय हमारी सांस्कृतिक विशेषताओं को है, जिनमें सर्वोपरि है— मनुष्य की महत्ता का सर्वोच्च सम्मान । व्यक्ति अर्थात् मनुष्य भारतीय संस्कृति का केंद्र-बिंदु है । अथर्ववेद के 'वर्चस्तेजो बलमोनश्च प्रियताम्' से लेकर गीता की 'पुरुषोत्तम विभूति' तक मानव की श्रेष्ठता का ही प्रतिपादन है । मानव-पूजा में अभिषेक का गंगाजल है—'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना । महाभारत के शांति पर्व में मनुष्य अथवा व्यक्ति के सर्वोच्च महत्त्व को व्यासजी ने निर्णायक शब्दों में घोषित करते हुए कहा है कि मनुष्य से बढ़कर यहां, वहां और कहीं कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है—'नहि मनुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित् ।'

हमारी सहिष्णुता सब भेद-भावों से परे है—मनुष्य-मात्र के लिए उसका प्रेमामृत है । अथर्ववेद की कामना है—

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं
नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहा
ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरंती अथर्व. १२.१.४५

अर्थात्, अनेक बोलियों को बोलनेवाले एवं अनेक धर्मों को माननेवाले मानव-गण एक ही परिवार के स्वजनों की भांति जिस पृथ्वी की गोद में स्नेह-सौहार्द से निवास करते हैं, वह धरती-माता हमारे लिए दुधारु गाय की भांति सुख-समृद्धि की सहस्रों धाराएं प्रवाहित करे ।

—१२, फिरोज गांधी मार्ग, लाजपतनगर
नयी दिल्ली-११००

ऐसी नसीहत मत दो जो अति सुंदर हो, बल्कि ऐसी दो जो अति लाभदायक हो । —सोलन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य शुक्ल को मिर्जापुर की काली शिलाओं के आगे भेड़ाघाट की श्वेत संगमरमर की चट्टानें नीरस लगती थीं।

उन्होंने लिखा है—

"मैं हिमालय को भव्य समझता हूं। रमणीय! रमणीय तो मुझे अपना विंध्याचल ही मालूम होता है। इसी से मैं समझता हूं कि हिमालय में 'गलने' से अच्छा विंध्याचल में 'तपना' है।

संस्मरण : आचार्य रामचंद्र शुक्ल

भूतों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा

● मुक्ता सिंह

पूर्वी उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के एक छोटे-से गांव में सन १८८४ को आश्विन मास के पूर्णिमा की दोपहर में एक सतमांसा बालक जन्म लेता है। बालक अत्यंत दुर्बल है। रोने के प्रयास में उसके मुंह से केवल 'अरा, अरा' शब्द ही निकल पाता है। यह दृश्य देखते ही दूधू मां (पितामही) छाती पीटकर कहती है—'काव आयो हो, तू काव जियबऽ।'

सद्य : प्रसवा माता की दृष्टि अपने पुत्र की ओर उन्मुख होती है। पुत्र के जीर्ण चेहरे की ओर देखकर माता का मन आशंकित हो जाता है। पुत्र जन्म के स्वाभाविक उल्लास पर तुषारापात हो जाता है। किसी तरह बारह दिन पूरे होते हैं, कुछ जीवन की आशा बंधती है और सोहर, बधावे के बीच बेटे का नाम रखा जाता है 'रामचंद्र'। यही पं. चंद्रबली शुक्ल का पुत्र आगे चलकर रामचंद्र शुक्ल नाम से प्रसिद्ध हो जाता है।

प्रायः देखा जाता है कि अपरिपक्व गर्भ से उत्पन्न बालक शारीरिक और मानसिक रूप से दुर्बल एवं भीरू होते है किंतु शुक्लजी के जीवन में इसके विपरीत हुआ। घटना उस समय की है जब इनकी अवस्था पांच वर्ष की थी और इनके पिता की नियुक्ति सुपरवाइजर कानूनगो के पद पर हमीरपुर की राठ तहसील में हो गयी थी। इनके पिता ने अपने पद के अनुकूल मकान न मिलने पर एक ऐसे मकान को किराये पर लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो 'भुतहा' और मनहूस प्रसिद्ध था । बालक रामचंद्र ने भी उत्सुकतावश उस सैयद की प्रेतात्मा के किस्से सुने थे जो रात में एक हाथ में तलवार और एक हाथ में कुरान लेकर निकलती है और आंगन में नाच-कूदकर गायब हो जाती है । उसका सिर लपट फेंकती हुई आग के समान दिखायी देता है । भयभीत होने के विपरीत उसे इन्होंने अपने मनोरंजन का साधन बनाया और एक दिन स्वयं ही मच्छरदानी के डंडे में कपड़ा लपेटकर, मिट्टी के तेल में डुबाकर मशाल हाथ में लेकर आंगन में चक्कर काटते रहे और सुबह होने पर खुद ही प्रचारित कर दिया मैंने सैयद की लाठी देखी है । जब दूसरे दिन फिर इन्होंने अपना यह स्वांग दोहराया तो अगल-बगल सभी छतों पर लोग इस दृश्य को देखने के लिए जमा हो गये थे ।

भुतहे घरों की वास्तविकता यद्यपि विवादास्पद कही जा सकती है परंतु वास्तविकता तो यह थी कि 'भुतहा मकान' जैसे शुक्लजी की नियति का अंग बन गया था । काशी आकर सर्वप्रथम भदैनी मोहल्ले के जिस मकान में वे आठ रुपये महीने की किरायेदारी पर रहे वह भी 'भुतहा' मकान के नाम से बदनाम था । जानकारों का कहना है कि निर्भयता एक सात्विक गुण होता है । शुक्लजी के चरित्र में यह गुण कूट-कूट कर भरा था । उनके अनुसार, 'भूतप्रेत का दिखायी पड़ना मस्तिष्क का दौर्बल्य जनित विकार है ।'

सन १८९३ में शुक्लजी की माता का देहांत हो गया और पिता की नियुक्ति मिर्जापुर जिले में सदर कानूनगो के पद पर हो गयी । प्रकृति-प्रेमी शुक्लजी, जो 'चंद्रमा का हास' और 'दुपहरिया का नाच' देखकर मुग्ध हुआ करते थे, हिंदी संसार में प्रवेश इसी अवस्था में हुआ ।

प्रेमधनजी के संपर्क में

यहीं भारतेंदु मंडल के उज्जवल नक्षत्र चौधरी बदरीनारायणजी उपाध्याय 'प्रेमधन' के संपर्क में शुक्लजी आये । यही संपर्क शुक्लजी के हिंदी लेखन की दीक्षा के रूप में सिद्ध हुआ । इन्हीं की प्रेरणा से शुक्लजी ने तेरह वर्ष की आयु में हिंदी का पहला संवादात्मक लेख 'भारत और बसंत' नाम से लिखा जो 'आनंद कादंबिनी' में प्रकाशित हुआ । यह वही समय था जबकि बाबू भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा चलाया गया हिंदी प्रचार का कार्य अपने चरम रूप में था ।

शुक्लजी के हिंदी जगत में प्रवेश की यही पृष्ठभूमि बनी । हिंदी में अपनी रुचि, अध्यवसाय और लगन के परिणाम स्वरूप जिस 'आनन्द कादंबिनी' नामक पत्रिका में उनका पहला लेख छपा था, आगे चलकर सन १९०३ से १९०८ तक शुक्लजी ने ही उस पत्रिका का संपादन भी किया ।

काशी-निवास एक लाचारी

आज शुक्लजी की ख्याति काशी के साथ जुड़ी हुई है,परंतु यह वास्तविकता कम लोग ही जानते हैं कि शुक्लजी का काशी निवास एक लाचारी थी । उनका मन तो सदैव ही विध्यांचल की गोद में बसे मिर्जापुर की रमणीय उपत्यकाओं, वन प्रांतरों एवं जल प्रपातों में रमा रहता था । मिर्जापुर की काली शिलाओं के आगे भेड़ाघाट की श्वेत संगमरमर की चट्टानें उन्हें नीरस लगती थी । उनके विचार में 'भव्यता ने रमणीयता को दबा दिया है । नदी की धारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी ऊंची-ऊंची चट्टानों में हंसती-खेलती नहीं दिखायी पड़ती । मुझे ऐसा दृश्य मनोहर नहीं लगता । रमणीयता क्षण-क्षण पर रूप बदलने में है । यह बात मुझे कश्मीर के पहाड़ों में मिली या फिर मिर्जापुर में ही मिलती है । समुद्र भव्य विशाल और भयानक कहा जा सकता है । सुंदर, रमणीय या मनोहर नहीं । ताजमहल मैंने १९१० में एक बार अच्छी तरह देखा था फिर कभी मन न बढ़ा । यही होता है कि अब वहां क्या देखना । मैं हिमालय को भव्य समझता हूं, रमणीय नहीं । रमणीय तो मुझे अपना विंध्याचल ही मालूम होता है । इसी से मैं समझता हूं कि हिमालय में 'गलने' से अच्छा विंध्याचल में 'तपना' है ।'

शुक्लजी के चरित्र में निर्भयता का एक विशेष गुण था । उनके जीवन में कई ऐसे अवसर आये जब कि उनका जीवन संकटमय हो गया था परंतु फिर भी उनका धैर्य अडिग रहा । स्वभाव से सैलानी तबियत के शुक्लजी फक्कड़ स्वभाव के थे ।

जल प्रलय आ गया

मिर्जापुर के प्रवास के दिनों में एक बार वे वहां के प्रसिद्ध जल प्रपात विंढम अपनी पत्नी एवं इष्ट मित्रों के साथ गये । सावन का महीना था । आकाश में काली घटा छायी हुई थी । शीतल हवा बह रही थी । यहां पहुंचकर मित्र मंडली ने भांग छानी । फिर एक ऊंची विशाल चट्टान पर बैठकर सभी लोग वार्तालाप में मग्न हो गये । इसी बीच इक्केवानों ने आकर चेतावनी दी कि पहाड़ पर पानी खूब बरसा है इसलिए उस चट्टान से हट जाना चाहिए । सभी लोग वार्तालाप में मग्न थे किसी ने ध्यान नहीं दिया ।

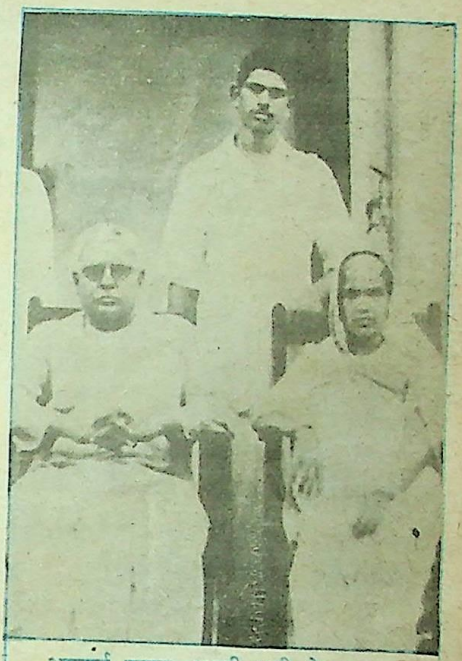

आचार्य शुक्ल अपनी पत्नी के साथ

देखते-देखते उस चट्टान के नीचे बड़े वेग से नदी बहने लगी । धारा की तेजी के कारण पैर जमाना मुश्किल हो गया । सब लोग उसी चट्टान पर धिर गये । अब पानी ऊपर चढ़ने लगा, चट्टान डूबने लगी । चट्टान साठ-सत्तर फुट ऊंची थी । पानी बराबर बढ़ रहा था । इक्केवान ने दो बजे रात निराश होकर शुक्लजी के घर पहुंचकर खबर दी । वहां सबको बहा समझकर रोना-पीटना मच गया । सबके घरवाले विंढम के लिए रवाना हुए । तीन बजते-बजते घुटनेभर पानी चढ़ गया । सब लोग एक-दूसरे को पकड़कर खड़े हो गये । पानी का वेग इतना था कि हाथ छूटते ही लोग बहने लगते थे । शुक्लजी ने मुसकराते हुए अपनी पत्नी से कहा, 'अब बहने में एक हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कसर है । हम लोगों का जल-प्रलय आ गया । देवता-पितर मना लो, शायद यह चट्टान नूह की किश्ती हो जाए ।' संयोग की बात है घुटने तक पहुंचकर पानी घटने लगा । सबसे आशा बंधी । एक घंटे के भीतर चट्टान पानी के ऊपर हो गयी । सब लोग इक्के पर सवार हो घर की ओर चले तो रास्ते में ही रोते-बिलखते घर वाले मिल गये ।

ऐसी ही एक संकटपूर्ण स्थिति उस समय आयी थी, जब वे काशी में थे । बात १९३६ की है । बडहर कोठी के किराये के कमरों को छोड़कर शुक्लजी अपने नये मकान में आ गये थे । वहां से गौरीगंज, मदनपुरा करीब है । एक बार हिंदू-मुसलमान में सांप्रदायिक तनाव हो गया । 'हर हर महादेव' और 'अल्लाहो अकबर' की आवाजें पास से आ रही थीं । नये मकान के इर्द-गिर्द केवल जंगलनुमा बड़े-बड़े पेड़ चारों ओर थे और कुछ खेत थे जहां एक खटिक का परिवार रहता था । ऐसा लगा कि दंगाई उन्हीं पेड़ों के बीच से नारे लगा रहे हैं । खटिक का पूरा परिवार शुक्लजी के यहां भागकर आया । शुक्लजी की पत्नी तुरंत शुक्लजी के पास आयी और बोली 'चला-चला जल्दी, बडहर कोठी में ।' शुक्लजी मुसकराने लगे 'कसहे' । पत्नी ने हाथ पकड़कर कहा, 'अरे ऊ लोग पहुंच गेए चला जल्दी । अरे कमली, कत्थे तू लोग भागा जल्दी बडहर कोठी, हम आवन हई ।'

सारा शुक्ल परिवार और खटिक परिवार बडहर कोठी में चला गया । सबको पहुंचाकर छोटे पुत्र गोकुल चंद्र वापस आये । शुक्लजी चुपचाप लिख रहे थे और पत्नी माथे पर हाथ धरे खड़ी थी । पुत्र को देखते ही बोलीं, 'देखत का हम कत्थे ई नाही जात हऐं ।' गोकुल चंद्र बोले,— 'बडका भाई (पिता को बड़का भाई कहते थे)ठीक नाही बा इहों । चलें ।' शुक्लजी बोले, 'का ठीक नाही बा । अरे, ऊ लोग भी त आदमिये हऐं । अइहें त हम बात करब न । ई सब अंगरेजन का चाल हो । नाही त कभी दंगा होत रहा ?' अब पत्नी घबरा गयीं । कलम पकड़कर बोली, 'आज त चला । काहे हट किये हय ?' शुक्लजी बोले, 'हम आदमी क अपमान करब ? जा हमें न सतावा । कहये । ले जा इन्हें ।' गोकुलचंद्र बहुत मनाकर मां को बडहर कोठी पहुंचा आये । स्वयं वहीं से खाना बनवाकर लाये और शुक्लजी के साथ रातभर रहे ।

इस घटना से शुक्लजी के चरित्र का मानवतावादी पक्ष उजागर होता है ।

सिद्धांतों के लिए समझौता नहीं

लक्ष्मी और सरस्वती में सदैव बैर रहा है । अतः सरस्वती के उपासक शुक्लजी का जीवन सदैव आर्थिक विपन्नता में कटा । परंतु वे इतने स्वाभिमानी थे कि उन्होंने कभी अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं किया । सन १९२४ में उन्होंने अलवर नरेश महाराज जयसिंह के यहां हिंदी सचिव के रूप में कार्यभार ग्रहण कर लिया । अवकाश की स्वीकृति प्रदान करते समय मालवीयजी ने उनसे कहा, 'जाइए तो जरूर, लेकिन मैं खूब जानता हूं । न अलवर आपके अनुकूल पड़ेगा, न आप अलवर के ।'

'अलवर पहुंचने के तीसरे दिन ही राज्य के शिक्षा मंत्री का पत्र लेकर बारह बजे रात एक सवार आया जिसमें लिखा था, 'महाराज विनय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

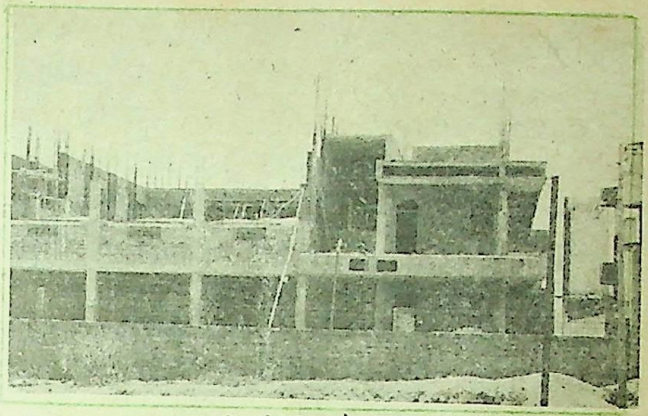

पत्रिका पढ़ रहे हैं । उसमें कहा खेहर शब्द आया है । प्रधानाध्यक्ष और शिक्षा निदेशक इसका अर्थ नहीं लगा सके । आपके पास सवार भेज रहा हूं । उत्तर महाराज के पास दो बजे रात तक पहुंच जाना चाहिए ।' पत्र सुनकर शुक्लजी ने कहा, 'लिख दो खेहर का अर्थ है धूल । बस और कुछ जरूरत नहीं ।' वे दूसरे दिन ही काशी वापस आ गये । बाद में अलवर नरेश के बहुत आग्रह करने पर भी वापस न गये और पत्नी के बहुत जिद करने पर निम्न पंक्तियां लिख कर भेज दीं—

चीथड़े लपेटे चने चाभेंगे चौखट चढ़
चाकरी न करेंगे ऐसे चौपट चमार की

शुक्लजी की पत्नी (सावित्री देवी) ने 'शैलबाला' और 'कलंकिनी' दो बंगला उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद किया था, जिससे उन्हें तीन सौ रुपये मिले थे । वे शुक्लजी से बोलीं, 'अब एही क गहना गढवाय लेन हई ।' शुक्लजी बोले, 'अब तू हू' पत्नी ने पूछा, 'का मतलब', शुक्लजी बोले, 'अरे ! मंदिर-वंदिर बनवाय के गहना क प्रतिष्ठा करके पूजा और का ।' शुक्लजी की पत्नी इस व्यंग से तिलमिला उठीं । वे तीन सौ रुपये भी घर में ही खर्च हुए ।

मिर्जापुरी से लगाव

शुक्लजी घर में सादगी से रहते थे उन्हें अपनी मातृ भाषावत् बोली 'मिर्जापुरी' से बड़ा लगाव था । काशी-निवास में भी वे मिर्जापुरी बोली में ही बोला करते थे । जो लोग बाहर मिलने पर अपने गांव घर के लोगों से उर्दू या विदेशी भाषाओं से मिली खिचड़ी भाषा बोलते थे, उन्हें वे बनावटी और नकली आदमी कहा करते थे ।

जयशंकर प्रसाद काशी में 'सुंघनी साहू' के नाम से प्रसिद्ध थे । शुक्लजी की मित्र-मंडली में थे । वार्तालाप हो रहा था । प्रसादजी ने कहा, 'आपने मनोविकारों पर निबंध लिखा है । सोचता हूं, मैं कविता लिख डालूं इन पर ।' शुक्लजी बोले, 'कविता वह हाथ उठाये हुए चलिये कविवृंद बुलाती वहां ।' पूरा वातावरण माधुर्य से भर गया ।

शुक्लजी के संबंधी मकरंद प्रसाद पांडे बड़े पुजारी थे । शुक्लजी के शब्दों में 'उन्होंने थाली भर ठाकुर जिला रखा था ।' एक बार शुक्लजी उनके यहां गये । स्नान के बाद ठाकुरजी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थाली के साथ ही पुजहाई का सारा सामान उनके सामने रखा गया । शुक्लजी आस्थावान होने के बावजूद आडंबर पूर्ण कर्मकांड में विश्वास नहीं करते थे । संकोचवश किसी तरह नाक-मुंह दबाकर आंख-मूंदकर एक दिन उन्होंने पूजा की रीत निबाह दी लेकिन,जब दूसरे दिन फिर वही नौबत आयी तब उनका धैर्य समाप्त हो गया । उन्हें लगा, अपने सिद्धांतों के साथ अब वे और समझौता न कर पाएंगे । बड़ी नम्रता से उन्होंने पांडेजी से कहा, 'मैं तो कल की ही पूजा जन्मभर के लिए काफी समझता हूं । अब आप क्षमा करें । ऐसी कसरत का मुझे बिलकुल अभ्यास नहीं है ।'

बहुआयामी प्रतिभा

शुक्लजी की प्रतिभा बहुआयामी थी । उनका कवि एवं चित्रकार रूप सर्वसामान्य की दृष्टि से अछूता ही रह गया । अभी कुछ वर्षों पहले ही उनका एकमात्र काव्य-संग्रह 'मधुस्रोत प्रकाशित हुआ है । पूरे जीवन में केवल एक कविता उन्होंने अयोध्या में हुए कवि-सम्मेलन में पढ़ी थी, जिसकी कुछ पंक्तियां उद्धृत हैं--

'धन्य ! यह कमनीय कोशल भूमि परम ललाम,
'गुरु प्रसाद' विभूति लहि जहं लखन जन श्री राम
बैठि तुलसी जहां 'मानस' द्वार खोलि अनूप
दियो सबहिं दिखाय हरि को लोकरंजन रूप

शुक्लजी को राम का 'लोकरंजक वनवासी' रूप अधिक प्रिय था । उन्होंने राम के इसी रूप का चित्रांकन अपनी कल्पना के अनुसार किया था । यह चित्र अधूरा ही रह गया था,रंग पूरे न भरे जा सके थे । उनके जीवन के अंतिम दिन तक यही चित्र उनके शयनागार में टंगा था ।

शुक्लजी अस्वस्थ थे फिर भी शादी के निमंत्रण में फैजाबाद गये । अयोध्या के कनक भवन में श्री राम के विग्रह के आगे मौन खड़े गये । हाथ प्रणाम के लिए जुड़े फिर पूरे र विचार मग्न ही रहे । लौटने पर अपनी छोटी कमलावती को पुकारा, 'ननवा ।' वे दौ आयीं । शुक्लजी बोले, 'देखऽ घिस गवा ह कमलावती बोली, 'का बाबूजी ।' 'इहै (पैर)' शुक्लजी ने उत्तर दिया । कमलावती उत्सुकता जाग्रत हुई, 'कइसे बाबूजी ! च त-चलत । शुक्लजी बोले 'नांहीं छुअत-छु त ।' यह टिप्पणी उन्होंने पैर छूने की परंपरा ऊपर की थी ।

यही उनकी अंतिम यात्रा थी । ३१ जनव सन १९४१, शुक्रवार को कक्षा में वे मैथिलीशरण गुप्त की 'यशोधरा' पढ़ा रहे थे जिसमें बुद्ध कहते हैं—'क्षणभंगुर भव राम-राम ।' आलोचना करते हुए उन्होंने कह 'बुद्ध देव संसार से कहते हे, है ! नाशवान जगत, तू मुझे छोड़ दे,नहीं तो मैं ही तेरे हित लिए तुझे छोड़ दूंगा ।' चलते समय उन्होंने बार फिर कहा, 'आदाब अर्ज । राम-राम ।'

फिर वे विश्वविद्यालय न जा सके । उनक दमा का रोग फिर उभड़ गया । २ फरवरी स १९४१ की रात्रि को बसंत पंचमी के दूसरे दि शुक्लजी चिर-निद्रा में मग्न हो गये ।

यद्यपि पं. रामचंद्र शुक्ल की यशःकाया उनके साहित्य के रूप में सदैव अजर-अमर रहेगी,तथापित उनकी कीर्ति शेष को अक्षुण्ण रखने के लिए काशी में 'आचार्य रामचंद्र शु साहित्य शोध संस्थान' की स्थापना उनके पु स्व. पं. गोकुल-चंद्र शुक्ल द्वारा की गयी है

— ११-६/१४ मालवीय नगर,नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

धरोहर Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

जन्म : ४ अक्तूबर, १८८४ निधन : २ फरवरी, १९४१

In Public Do

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

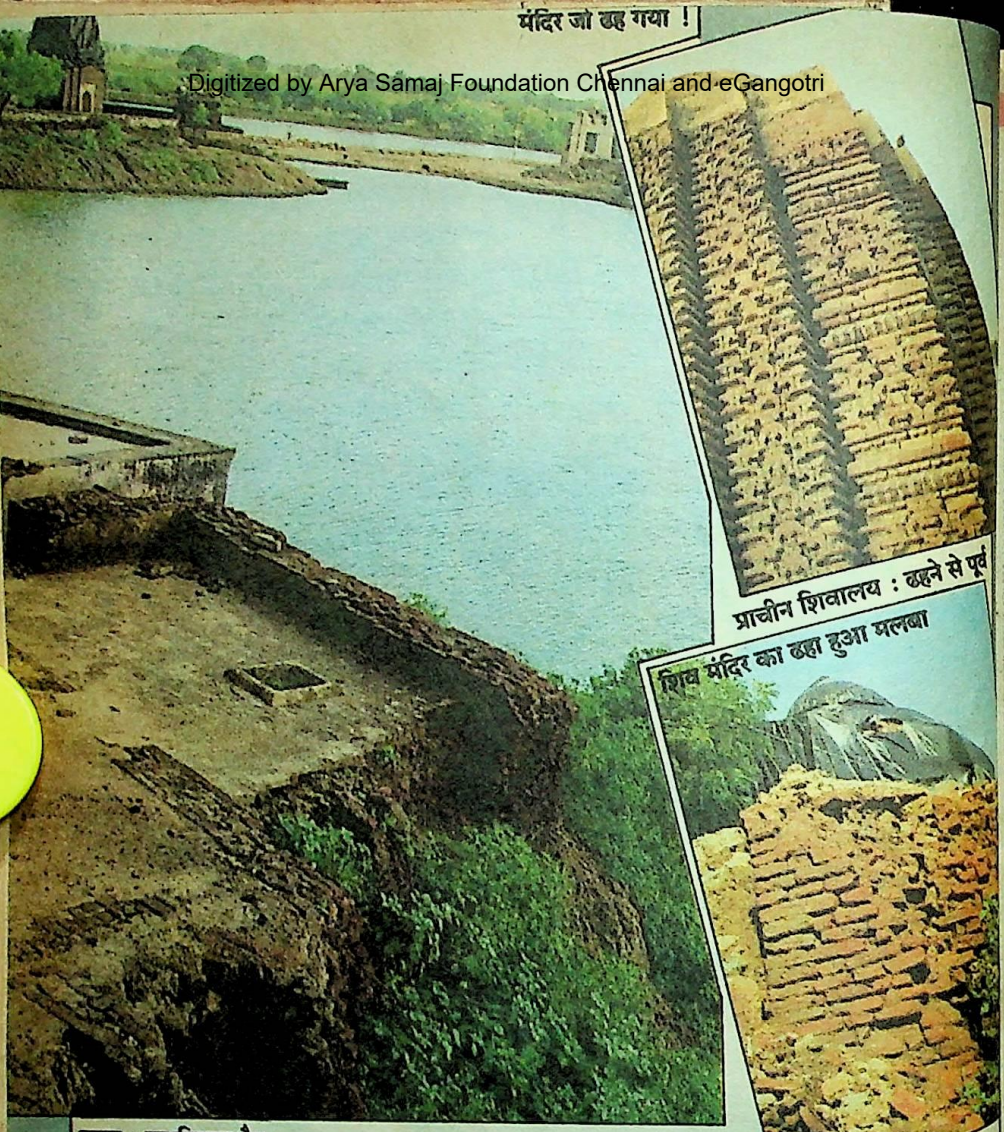

प्राचीन शिवालय : ढहने से पूर्व

शिव मंदिर का ढहा हुआ मलबा

छाया : राजकिशन नैन

पुरातत्व विभाग की लापरवाही

कलात्मक मंदिर जो ढह गये हैं

□ राजकिशन नैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि कपिल तीर्थ एवं शिवालयों का ठीक रख-रखाव किया गया होता...तो भावी पीढ़ियां, अपनी बीती हुई संस्कृति को इनके भग्नावशेषों में प्रतिबिंबित होते देख सकती थीं । किंतु दुःखद सत्य यह है कि कुछ समय बाद इन मंदिरों के अवशेषों को ढूंढ़ा भी न जा सकेगा ।

हरियाणा के वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक स्थलों, विशिष्ट पुरातात्विक धरोहरों व विभिन्न ऐतिहासिक कलाकृतियों को सहेजने, साफ-सुथरा रखने और संरक्षण देने की जिम्मेदारी प्रदेश के पुरातत्व विभाग की है । बदकिस्मती से यह विभाग शुरु से ही ऐसे अड़ियल और मुफ़्तखोर अधिकारियों के कब्जे में रहा है, जिन्हें विभागीय कार्यों के प्रति घोर उदासीन रहने में आनंद मिलता है । दफ़्तर की कुरसियों पर अजगर की भांति कुंडली मारे बैठे ये अधिकारीगण हमेशा घरेलू उत्थान-पतन की चिंता में रहते हैं । फाइलों की धूल झाड़ने में अक्षम इन कर्महीन अधिकारियों के कारण प्रदेश की गरिमामय सांस्कृतिक विरासत के जर्जर स्मृति चिह्न दिनों-दिन तीव्रता से लुप्त हो रहे हैं । भारतीय वास्तुकला की श्रेष्ठता के प्रतीक 'कलायत' के प्राचीन मंदिरों का ढहना, प्रदेश के पुरातत्व विभाग की अक्षमता का सजीव उदाहरण है ।

अकर्मण्यता की त्रासदी

ईस्वी पूर्व आठवीं सदी में गूजर-प्रतिहारों के काल में बने तमाम स्मारकों में, 'कलायत' के ये दो शिवमंदिर ही पंजाब व हरियाणा में अवशेष रूप में बचे हुए थे । किसी समय कला और सौंदर्य के पुजारी कलायत के इन मंदिरों को देखकर हतप्रभ रह जाते थे, किंतु विभागीय अर्कमण्यता के कारण इन मंदिरों के स्वर्णिम सौंदर्य को अब काल रूपी ग्रहण ने ग्रस लिया है । ये मंदिर सवा साल से अधिक अरसे से ढहे पड़े हैं, किंतु पुरातत्व विभाग के एक कर्मचारी व उसकी टूटी खटिया के अलावा इन मंदिरों की किसी को परवाह नहीं है । गिनती के रुपये पानेवाला नौकर अपनी रोटियों की फिक्र करे या ढहे हुए मलबे की, यह वह समझ नहीं पाता है ।

पुरातत्व विभाग ने इन्हें बचाने का प्रयास करने की बजाय— सालभर पहले इन्हें मोमजामे के काले तिरपालों से ढांपकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर ली है । स्थानीय लोगों के बार-बार अनुरोध के बाद विभाग ने कई साल पहले इन मंदिरों को ऐतिहासिक धरोहर घोषित करते हुए इनके संरक्षण का जिम्मा अपने सिर लिया था, किंतु बाद में विभाग ने इनके जीर्णोद्धार की जरूरत नहीं समझी और कोई कदम नही उठाया । इसी से इन मंदिरों के भाग्य का सूर्य समयपूर्व अस्त हो गया । उचित देख-रेख के अभाव तथा तालाब की नमी व दलदल के कारण इन मंदिरों की नींव कई साल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व ही कमजोर पड़ चुकी थी । गत वर्ष बारिश के दिनों पहले से धंस रहा चबूतरा...तालाब की ओर धंसक जाने के कारण एक मंदिर के नीचे का भाग गिर गया तथा दूसरे मंदिर की ऊपरी दीवारों में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गयीं । गांववासी पुरातत्व विभाग को कई साल से सूचित करते रहे हैं किंतु उन्हें सदैव नकारात्मक जवाब ही मिलता रहा । सालों से कस्बे की पूरी गंदगी इस तीर्थ में सड़ रही है— किंतु स्थानीय प्रशासन ने इसके निवारण हेतु कभी कुछ नहीं किया । इसी अनदेखी के कारण 'कलायत' का विगत का वैभव धूल में मिल गया है ।

धार्मिक मान्यताओं के केंद्र

आठ हजार की आबादी वाला यह कस्बा नरवाना उपमंडल की उपतहसील है तथा अपने मंदिरों के लिए प्रसिद्ध रहा है । यह स्थल चंडीगढ़-हिसार राजमार्ग पर नरवाना और कैथल के बीच, कैथल से २० कि.मी. तथा जींद से ५५ कि.मी. दूर है । विगत में, कुरू-भूमि की सात में से पांच नदियों का संगम स्थल रहा यह कस्बा यक्ष मंदिरों की परिधि के घेरे में है । सभ्यता के शुरू में कुरुक्षेत्र तीर्थ की पावन भूमि के चारों ओर चार यक्ष मंदिरों की स्थापना की गयी थी । ये मंदिर क्रमशः इस प्रकार हैं । वासुकी यक्ष (पिहोवा के निकट), रतन यक्ष (कुरुक्षेत्र), कपिल यक्ष (जींद के निकट रामराय गांव), अरंतक यक्ष (सफीदों) । कपिल यक्ष और कपिल तीर्थ कलायत में प्रत्येक अमावस व पूर्णिमा को श्रद्धालुजनों के स्नान करने की सुदीर्घ परंपरा रही है । इन मंदिरों के घेरे में बसनेवाले प्राणियों को मोक्ष प्राप्त होता है, ऐसी मान्यता है ।

संस्कृति के दुर्लभ दस्तावेज

'कलायत' शब्द कपिलायत का अपभ्रंश है । गुदड़ी में छुपे हुए लाल की भांति...अपनी कोख में दुर्लभ अवशेष दबाये यह कस्बा पांच बार उजड़ने के बाद छटी बार अस्तित्व में है । विद्वानों के अनुसार सांख्य दर्शन द्रष्टा कपिल मुनि यहीं पर रहते थे । प्रसिद्ध है कि कपिल एक ऐतिहासिक और यथार्थ ऋषि थे, वे ही सांख्य दर्शन के आदि प्रवर्तक और प्रणेता माने जाते हैं । जनश्रुति है महर्षि कपिल का जन्म सतयुग के अंत अथवा त्रेता के प्रारंभ में 'कलायत' से तेरह कि.मी. दूर बिंदुसार (वर्तमान हंसडैहर) नामक स्थान पर हुआ था ये देवहूति और कर्दम ऋषि के पुत्र थे । कर्दम ऋषि कलायत के समीप कैलरम नामक जगह पर तपस्या करते थे ।

विद्वानों का विचार है कि ब्रह्मा ने सृष्टि रचते समय अपने शरीर के अर्धभाग द्वारा पुरुष व दूसरे भाग से नारी की रचना की थी । ये पुरुष और नारी क्रमशः मनु तथा शतरूपा थे । कपिल मुनि की मां देवहूति इन्हीं की संतान थी । देवहूति के माता-पिता का आश्रम 'कलायत' के पूर्व में करीब सत्रह कि.मी. दूर देववन (कुरुक्षेत्र) में था ।

सांख्य शास्त्र के प्रवर्तक : कपिल

विष्णु के चौबीस अवतारों में कपिल मुनि छटे अवतार माने गये हैं । इनसे बड़ी इनकी नौ बहनें थीं, जिनके नाम अनुसूइया, अरुंधति, कला, ख्याति, योग, शति, शक्ति, हवी तथा श्रद्धा थे । जिन ऋषियों से इनके विवाह हुए, उनके नाम अत्रि, अंगिरा, अथर्वण, कृतु, भृगु मारिचि, पुलस्त्य, पुलत्य व वशिष्ठ थे । कपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह खंडित हो जाते हैं मंदिर : अरथूणा का मंदिर

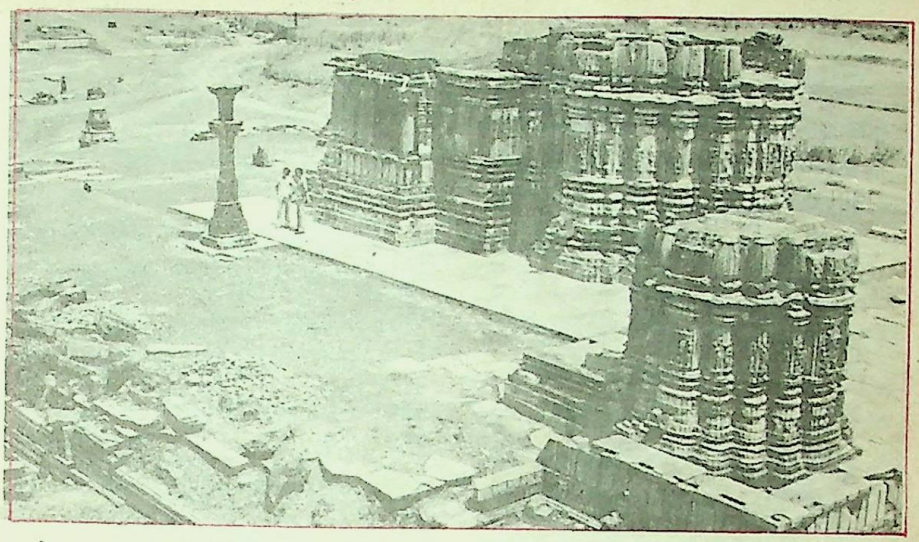

नाम के अन्य कई ऋषि होने के कारण सांख्य दर्शन के असल प्रणेता के बारे में विद्वानों में मतभेद रहे हैं । कोलब्रुक, जेकोबी, मैक्समूलर आदि विदेशी विद्वानों के कथनानुसार कपिल एक काल्पनिक व्यक्ति का नाम है । इसी तरह के विचार पाश्चात्य विद्वान कीथ के भी हैं । कुछ भारतीय विद्वानों ने भी कपिल को ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं माना है । किंतु रामायण, महाभारत, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रंथों, पुराणों और स्मृतियों में कपिल ऋषि के बारे में जो पुष्ट जानकारी है, उसके सामने उपरोक्त विद्वानों के विचार फीके और बेतुके लगते हैं । संभवतः इन विद्वानों ने कपिल शब्द के अर्थ ठीक से नहीं समझे हैं । श्रीमद्भागवत में स्पष्टतः देवहूति-कर्दम पुत्र कपिल को ही सांख्य शास्त्र का प्रवर्तक बताया है, जो सत्य के कहीं अधिक निकट है । कुछ बौद्ध विद्वानों ने कपिल को अनीश्वरवादी के रूप में प्रस्तुत करने की भी चेष्टाएं की हैं । ऐसा करना तर्क एवं न्याय की दृष्टि से ठीक नहीं है ।

'कलायत' में स्थित जीर्ण-शीर्ण कपिल सरोवर का व्यास लगभग तीन कि.मी. है । विगत में कपिल मुनि ने इसी तालाब के मध्य भाग में ज्ञानमयी सिद्धियां पाने हेतु कठोर तप किया था । इसी स्थल पर महर्षि कपिल ने सांख्य दर्शन के चौबीस तत्वों का ज्ञान अपनी मां को सुनाया था । एक पुष्ट जानकारी के अनुसार महर्षि कपिल का जो मंदिर...वर्तमान में तालाब के किनारे मंदिर-समूहों के बीच अवस्थित है, कभी तालाब के बीच में स्थित था । ऐसा अनुमान है कि मुसलमानों ने भारत आक्रमण के समय इस मंदिर की गरिमा को खंडित कर दिया था । प्राचीन मंदिर की भव्य चौखट लगभग अस्सी वर्ष पूर्व वर्तमान मंदिर में स्थापित की गयी थी । इस मंदिर का नवीनीकरण बीस वर्ष पूर्व किया गया था ।

मंदिर : वास्तुकला के श्रेष्ठ प्रतीक

कलायत में प्रवेश करते ही विशाल तालाब के किनारे अनेकों मंदिर समूह दिखायी पड़ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं । इन समूहों में, दो प्राचीन शिवालयों में चित्रित हिंदू स्थापत्य कला एवं शिल्प दर्शकों की चेतना को अभिभूत करनेवाली है । छोटी ईंटों द्वारा बने ये शिवालय स्थानीय परंपरानुसार थानेसर के प्रसिद्ध पुण्यभूति राजा हर्षवर्धन के कहलाते हैं । इनका न्यास पंद्रह फीट और ऊंचाई बत्तीस फुट है । गारे-चूने व लकड़ी-काठ का प्रयोग किये बगैर ईंटों को तराश कर बनाये गये ये मंदिर अतीत के कलाकारों की वास्तुकला के श्रेष्ठ नमूने हैं । ईंटों पर चित्रित तत्कालीन कलाकारों का सूक्ष्मांकन और कला सौष्ठव देखकर दातों तले अंगुली दबानी पड़ती है । छोटी से छोटी जगह में भी कलाकारों ने अपनी कला बखूबी प्रदर्शित की है । मंदिरों की दीवारों पर हिंदू देवी-देवताओं की टूटी-फूटी व घिसी मूर्तियां मुगल काल में हुए विनाश को दर्शाती हैं । एक शिवालय के प्रवेश द्वार पर देवी-देवताओं की प्रतिमाएं सज्जित हैं । इन मंदिरों में लिंग प्रतिष्ठित हैं, जो इनके शैव होने का आभास देते हैं । यहां से खुदाई में मिली गणेश तथा महिषासुर मर्दिनी की मूर्तियां भी इनके शैव होने का प्रमाण हैं । इन शिवालयों की एक अन्य खूबी यह है कि इनके शीर्ष पर किसी अज्ञात लिपि में कुछ खुदा हुआ है, जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है । पुरातत्वविदों को इस दिशा में प्रयास करना चाहिए था, किंतु ऐसा नहीं हुआ ।

प्रचलित जनश्रुतियां

प्रचलित जनश्रुतियों एवं इतिहासकारों के मतानुसार इन शिवालयों का निर्माण राजा शालिवाहन ने लगभग अढाई हजार वर्ष पूर्व करवाया था । इनके बनवाने में कितना श्रम और समय लगा, इसका अनुमान नहीं है । आरंभ में इनकी संख्या पांच थी । इनमें से तीन के तो अवशेष तक ध्वस्त हो चुके हैं । शेष दो भी नष्ट होने जा रहे हैं । इनके निर्माण की कथा भी रोचक है ।

बड़े-बूढ़ों का कहना है कि एक बार राजा शालिवाहन शिकार का पीछा करते हुए महर्षि कपिल के सरोवर तक आ पहुंचे और तरकश का तीर अपने शिकार पर छोड़ दिया । निशाना ठीक न होने के कारण तीर कपिल तालाब की मिट्टी में धंस गया । तीर निकालते समय राजा के हाथ का अंगूठा व अंगुली गारे में सन गये। शाम घिरने लगी थी, सो राजा अपने दरबारियों के साथ वापस महल लौट गये । राजा शालिवाहन एक दुर्भाग्यपूर्ण विडंबना के शिकार थे । वे निद्रावस्था में हर रात पत्थर तुल्य बन जाया करते, ऐसा किसी ऋषि के शापवश था। किंतु शिकारवाली रात रानी ने एक विचित्र बात देखी । जिस हाथ से राजा ने तीर खींचा था, उस हाथ का अंगूठा व अंगुली जीवित थे । अगली सुबह रानी द्वारा यह जानकारी पाकर राजा तुरंत कपिल सरोवर में स्नान करने पहुंचे और सदैव के लिए स्वस्थ हो गये । तब कृतज्ञतावश राजा ने इस स्थल पर इन शिवालयों का निर्माण करवाया ।

शिवालयों के अतिरिक्त जो प्राचीन मंदिर हैं उनमें दुर्गा कात्यानी मंदिर विशेष महत्त्व रखता है । इस मंदिर में स्थित शिला पर श्री यंत्र खुदा है । इस श्री यंत्र का पौराणिक महत्त्व इसलिए है क्योंकि भारत में यहां के अलावा यह केवल श्री बद्रीनाथ मंदिर में ही अंकित है । इसके अलावा यहां एकाधिक महाभारत कालीन सुरंगें भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुप्तावस्था में शेष हैं । ऐसी मान्यता है कि विगत में इन सुरंगों के रास्ते प्राचीन घाटों एवं दूर-दराज के स्थानों से जुड़े थे । इन सुरंगों के बारे में एक अटकल यह लगायी जाती है कि महाभारत काल में ये कौरवों द्वारा निर्मित की गयी थीं ।

प्राचीन कालीन पंचायत

कस्बे में कुछ प्राचीन थेह व टीले भी हैं । 'मडाढ' नाम का एक प्राचीन चबूतरा है, जहां विगत में बड़े-बड़े पंचायती फैसले होते थे । इनकी अवमानना कोई नहीं कर सकता था । एक ऐसा भी समय था जब 'कलायत' को ३६० गावों में विशेष वर्चस्व प्राप्त था । तब, देशभर में यहां के राजपूत सामंतों की वीरता की धाक थी । यहां की गणिकाओं की गणना भी भारत की प्रतिष्ठित गणिकाओं में होती थी । इनके रूप-गुण और नृत्य ने हर किसी को प्रभावित किया था ।

शिवालयों के साथ सटे कपिल सरोवर के पानी में रोगों को दूर करने की जो अद्‌भुत क्षमता थी, अब नहीं है । ठीक रख-रखाव के अभाव में पानी के नैसर्गिक गुण नष्ट हो गये हैं । सरदी के दिनों में इस तालाब में विदेशी पक्षियों के झुंड अब भी देखे जा सकते हैं ।

मंदिर : उद्धार की प्रतीक्षा में

'कलायत' के अलावा हरियाणा में कौल, हंसडैहर व देववन में कपिल मुनि की स्मृतियों से जुड़े मंदिर हैं । राजस्थान में कोलायत व पश्चिमी बंगाल में गंगा सागर आदि जगहों पर भी कपिल मंदिर हैं । गंगासागर वह स्थल है, जहां बीते जमाने में देवराज इंद्र ने चक्रवर्ती सम्राट सगर के अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा चुराकर कपिल आश्रम में बांधा था । आगे की कथा में वर्णन है कि सगर के पुत्र जब घोड़ा ढूंढ़ते हुए कपिल आश्रम पहुंचे तो कपिल मुनि तपस्या में लीन थे । राजकुमारों के आवागमन से उनकी तपस्या में व्यवधान पड़ गया । सगर-पुत्रों ने उन्हें तिरस्कृत करने की चेष्टा की, परिणामस्वरूप ऋषि के कोप के कारण सगर के सभी पुत्र तत्काल भस्म हो गये । उसके बाद राजा सगर की कई पीढ़ियों ने घोर तप किया और उसी वंश में दिलीप के पुत्र भगीरथ के साहसिक प्रयासों द्वारा गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर आयी । भागीरथ त्रिभुवन पावनी गंगा को वहां ले गये जहां उनके पितरों के शरीर राख के ढेर बने पड़े थे । गंगा सागर पर पहुंचकर, गंगा ने सगर के जले हुए पुत्रों की राख को अपने जल में डूबो दिया । वह गंगा थी...सो उसने सगर-पुत्रों का उद्धार कर दिया, किंतु कपिल तीर्थ का उद्धार कोई नहीं कर सका ।

यदि कपिल तीर्थ एवं शिवालयों का ठीक रख-रखाव किया गया होता...तो भावी पीढ़ियां, अपनी बीती हुई संस्कृति को इनके भग्नावशेषों में प्रतिबिंबित होते देख सकती थीं । किंतु दुःखद सत्य यह है कि कुछ समय बाद इन मंदिरों के अवशेषों को ढूंढ़ा भी न जा सकेगा ।

ग्राम-पत्रालय : अजायब, जिला रोहतक (हरियाणा)

ईमानदार आदमी का सोचना लगभग हमेशा न्यायपूर्ण होता है । —रूसो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तूप

● मेजर कृपाल वर्मा

हवा में भरा हू-हू का शोर हमें टैंकों के भीतर से भी सुनायी दे रहा था । सेंच्यूरीअन टेंक की विशालकाय काया के भीतर हम पांच पांडवों की तरह लुके-छिपे बैठे थे । हमने टैंक को एक चुस्त कमीज की तरह पहन-सा लिया था । टैंक के भीतर हिलने-डुलने की बहुत कम आजादी थी । तनिक-सी असावधानी होने पर शरीर टैंक की लौह-यष्टि से टकराता और दुःख-सा जाता । लेकिन टैंक द्वारा दिया यह दुःख बाहर मुंह फाड़े खड़ी मौत से कहीं ज्यादा बेहतर था ।

सहेजरा बल्ज में बैठी दुश्मन की बटालियन को पता चल गया था कि हम हमले के लिए संगठित हो रहे थे । हमारा टैंकों का एक स्क्वाड्रन बताये स्थान पर पहुंच गया था मेंहदीपुर गांव में अपनी जीप, फालतू लड़ाई का साज-सामान और अपने अतिरिक्त साथियों को छोड़कर मुझे टैंकों के साथ तोपखाने के

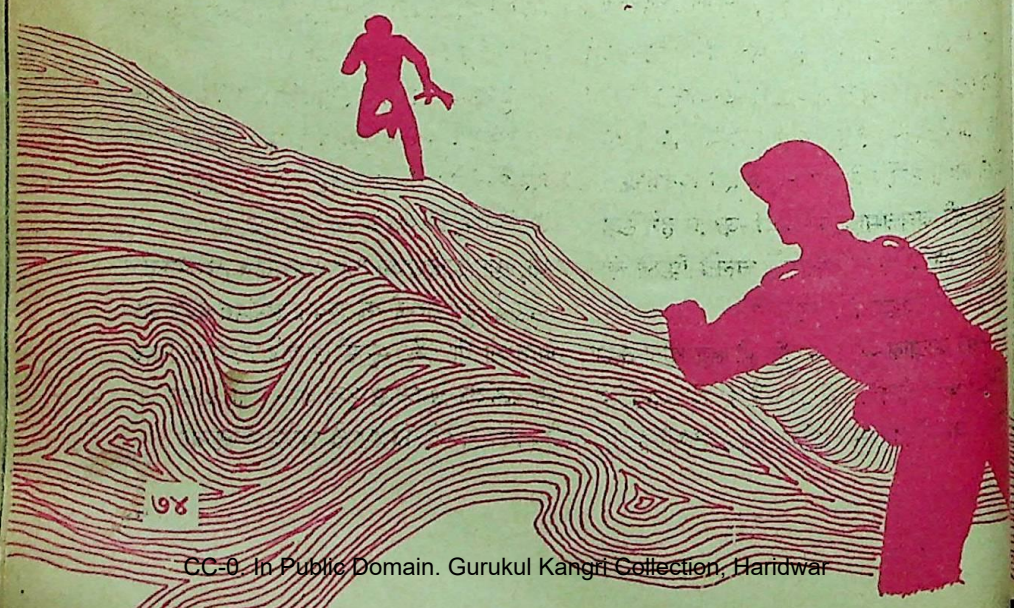

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑब्जर्वेशन ऑफिसर की हैसियत से हमले में जाना था । टैंक के भीतर 'कू' के अलावा अन्य आदमियों के लिए स्थान का नितांत अभाव होता है, यह मैं भी जानता था । लेकिन जब मुझे केवल एक ही वायरलैस सैट भीतर रखने का आदेश मिला, तो मैं तनिक झिझका था ।

तोपखाने की दोहरे संचार-प्रबंध की परंपरा को ठुकराना मुझे आदतन अखरा था । तार और बेतार पर एक साथ तोपों के फ़ायर के लिए संचार-सुविधा जुटाना तोपखाने का शौक नहीं, एक जरूरत है । लेकिन टैंकों के साथ तार बिछाना संभव नहीं होता । बेतार की सुविधा ही टैंकों के साथ संचार का मुख्य साधन होती है । केवल एक ही तर्क था, जिसके सहारे मैं अपने साथ एक वायरलैस सैट लेकर चला आया था—कुल डेढ़ घंटे की ही तो बात थी । मेरी टोली को सहेजरा फतेह होते ही टेलीफोन का तार बिछा देना था ।

यह डेढ़ घंटे का कीमती वक्त अब हमारी मुट्ठियों में भिंचा बैठा था ।

पूरे बिग्रेड का हमला होना था । बटालियनें बनायी योजना के तहत अपने-अपने गंतव्यों पर पहुंच रही थीं । दुश्मन पल-पल बढ़ते खतरे को सूंघ रहा था । उसके तोपखाने ने हमारे ऊपर मेह की बूंदों की तरह गोले बरसाना आरंभ कर दिया था । अंधेरे के पेट को चीरती गोलों के फटने की चपचमाहट में कभी-कभार हमें टैंक में लगे पेरिस्कोप के भीतर से चलते-फिरते चंद काले धब्बे दिखायी दे जाते थे ।

मुझे अजीब-सी अनुभूति हो रही थी । कैसी विचित्र बात थी कि हमें अब टैंकों की आंखों से देखना था, बेतार पर आते-जाते आदेशों का ही

हमले की सारी तैयारियां हो चुकी थीं । दुश्मन के तोपखाने ने तो गोले भी बरसाने शुरू कर दिये थे । और ठीक ऐन वक्त पर वायरलैस सेट बेकार हो गया था । बस, अब एक उपाय था । दुश्मन की गोलियों की बौछारों के बीच नये सेट की व्यवस्था करना !

पालन करना था, टैंकों की तोपों और लगी मशीनगनों के लिए ज्यादा से ज्यादा मौतें जुटानी थीं । दुश्मन के सर पर टैंक चढ़ाकर उनकी रुंदाई करने की योजना और फिर उनके चकना-चूर हुए शवों को संगीनों से छेदना-भेदना मुझे बेमानी लगने लगा था ।

जिस शूरता, वीरता, साहस और सामरिक उठा-पटक का मैं कायल था—वह कहीं मीलों तक मुझे दृष्टिगोचर नहीं हो रही थी, सबका सब बहुत ही यांत्रिक-तांत्रिक लग रहा था । मैं उस टैंक में बैठा एक अजूबा था और उस टैंक ने अपनी सुरक्षा में तनी हथेली तले बिठा मुझे एक कायर का करार दे दिया था ।

कुल पच्चीस मिनट ही शेष थे । टैंक में बैठे स्क्वाड्रन के सेकेंड कमान अफसर कैप्टन गाडगिल ने मेरी ओर आंखें उठाकर देखा था । उन निगाहों में प्रश्न के अलावा एक चेतावनी भी थी, एक आदेश था और साथ ही साथ अपनी ओर से पूर्ण तैयारी की सूचना संप्रेषित करने की मांग भी थी । मैंने मुट्ठी में भिंचे बेतार के स्विच को दबाकर चुपके से पूछा था—'थ्री ओवर' । मैंने तोपखाने के बिग्रेड के बिग्रेड मेजर को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुकारा था, मैं एक बार फिर से परख लेना चाहता था कि हिन-हिनाते तोपखाने के अश्वों की लगाम मेरे ही हाथों में थी ।

लेकिन उधर से कोई जवाब नहीं लौटा, तो मुझे फालिज-सा मार गया । एक लमहे के लिए मैं अंधा हो गया था, मेरे कानों में फटते गोलों के शोर के स्थान पर अब एक ठंडा और बहुत ही बेरहम सन्नाटा भरने लगा था । मेरी आंखों के सामने बेतार का सैट नहीं-उसकी मृत लाश पड़ी थी ।

मशीन के मरने में और आदमी के मरने में क्या अंतर होता है—यह मेरी समझ में पहली बार आया था ।

मुझे लगा था, जैसे किसी ने मेरी बोलती जुबान को तेज चाकू से काट दिया हो । मैं अब तोतला था । मैं जो आदेश देना चाहता था, उसे शब्दों में ढालकर तोपों तक पहुंचाना मेरे लिए समस्या-सा बन गया था । क्या हो सकता था ? मीलों पीछे लगी पूरे बिग्रेड की तोपों को एक साथ आदेश पहुंचाना, एक साथ सबका एक ही ठिकाने पर फायर गिराना, और उस आते फायर का पल-छिन में दिशा स्थान बदली कर देना, बिना बीच की संचार-व्यवस्था के असंभव ही था, तोपों के और मेरे बीच अब गहन सन्नाटा भरा था । सामने पड़ा मृत बेतार का सैट मेरा मुंह चिढ़ा रहा था । मेरी सामर्थ्य तौल रहा था, और एक सैनिक को हमेशा की तरह असंभव को संभव बनाने की बात कह रहा था ।

मेरा मन हुआ था कि उस मृत सैट में एक जोर की लात लगाऊं और जोरों से ठुकराकर कहूं, 'बोलो, बेईमान, बोलो । क्या मिलेगा तुम्हें मुझे यों मंझधार में डुबोकर ? पूरे तोपखाने की मिट्टी ख्वार हो जाएगी—मेरे भाई ।'

"क्या हुआ, सर ?" मेरी मनःस्थिति भांप कर कैप्टन गाडगिल ने पूछा था ।

"सैट . . . गया । मैंने मरी हुई आवाज में कहा था ।

कैप्टन गाडगिल पर मेरे-जैसी ही प्रतिक्रिया हुई थी ।उसकी आंखें उबल-सी आयी थीं । उसका चेहरा बेनूर हो गया था । वह तोपखाने के बिना आगे बढ़ने की जहमत को जानता था ।

"ओह हैल !" बेसाख्ता कैप्टन गाडगिल के मुंह से निकला था, "अब क्या होगा ?" उसने लाचार होते हुए पूछा था ।

"दूसरा सैट ! है तो ।" मैं जैसे नींद से जागा था । "मेंहदीपुर में पड़ा है, सब कुछ ।" उत्तर के साथ-साथ ही मैंने दूसरा सैट प्राप्त करने में आनेवाली तमाम कठिनाइयां सामने रख दी थीं ।

जहां हम थे, वहां से मेंहदीपुर गांव कुल पांच सौ गज की दूरी पर ही था । लेकिन उस दूरी को पार करना और सैट लेकर लौट आना मौत को अंगूठा दिखाने—जैसा था । मेरे दोनों ऑपरेटर और जीप का ड्राईवर मेंहदीपुर में ही थे । यहां मैं अकेला था । अपने वायरलैस सैट के चुप हो जाने के बाद तो मैं और भी निरीह और अकेला हो गया था । इस टैंक में सुरक्षित बैठा भी रहा . . . लड़ाई में मरा भी नहीं . . . तो क्या ? मैं बाहर कैसे आऊंगा . . . ? इस संभावित पराजय के बाद पूरा दोष अपने सर रख मैं देश की आंखों में कैसे देख पाऊंगा ?

मैं जानता था कि देश की शिराओं में धधकते गरम रक्त जैसे हम आज की हार-जीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए पूर्णतया जिम्मेदार थे । लिखे जानेवाले इतिहास के हम ही स्वर थे—हम ही व्यंजन ।

"मैं सैट लेकर आता हूं" मैंने कैप्टन गाडगिल को सूचित किया था और टैंक के कपोले से बाहर छलांग लगा दी थी ।

मैंने महसूस किया था कि मैं टैंक के भीतर भरी गरमाहट को त्याग बाहर की काटती सर्द हवा के सुपुर्द हो गया हूं । जमीन पर पैर पड़ते ही जब कई गोले एक साथ फूटे थे तो मैं बचाव के लिए खड़े टैंक के नीचे घुस गया था । जमीन पर पेट के बल लेट मैंने सामने खुल गये दृश्यपटल को गौर से देखा था । हार मेरे सामने खड़ी हंस रही थी । लग रहा था—मेरे हाथ से तलवार छीन किसी ने मुझ से निहत्था लड़ने को कहा हो ।

गोले फटने के बाद चंद पल सूने पड़े रहे थे । दूसरी बार जब गोले फटे थे तो मेरी युद्ध-परक बुद्धि ने दोनों बार के गोले फटने के इस छोटे अंतराल को नाप लिया था । मैंने निर्णय कर लिया था कि इन्हीं नन्हे-नन्हे पलों की पलकों पर बैठकर मेरी कामयाबी मुझ तक चलकर आएगी ।

जैसे ही दूसरी बार गोले फटे थे, मैं टैंक के नीचे से निकला था और मुट्ठी बांधकर मेंहदीपुर गांव की ओर दौड़ा था । एक लंबी सांस में एक लंबा फासला तय कर मैं फिर से धरती मां की गोद में लंबा लेट गया था । चलती तेज-तेज सांस पर काबू पाने का प्रयत्न करता मैं शुतुरमुर्ग की तरह रेत में सर छुपाये गोलों के फटने का इंतजार करता रहा था । शूरता के आसपास आ लेटी ठंड के पैने दांतों के आघात सहता मैं गोलों के फटने के बाद

फिर उठा था और पहले के मानिंद ही भाग लिया था ।

ना जाने कब तक इसी तरह मैं यातना-बोधों की इन लक्ष्मण रेखाओं को पार करता रहा था । मेरे कान गोलों के फटने के हा-हाकार से बहरे हो गये थे, चलती हंफनी की वजह से मेरा मुंह फटा हुआ था । हारे-थके हाथ बार-बार धरती को गह रहे थे और हर बार मैं उठ-उठकर एक प्रमादी की तरह मेंहदीपुर की ओर भागा जा रहा था । बाहर का चलता भूचाल मेरे भीतर बैठे सूरमा को भयातुर बना रहा था । कह रहा था, 'किसी पल भी टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाओगे बंधु ।' सच भी था, किसी पल भी जीवित से मृत बन जाने का इतना अच्छा सुयोग और हो भी कहां सकता था ?

'जाको राखे साईयां मार सके न कोय' किसी ने मेरे कान में कहा था । उस अतलांत के शोर में भी मैं दिव्य वाणी सुन सका था । आश्चर्य की ही बात थी । कहीं दिव्यता की दैदीप्यमान दीपमाला जल रही थी और जीवन ज्योति बन मुझे अपने बल पर जिलाये थी । मैं जान रहा था कि मेरी इस स्थिति के लिए मैं नहीं कोई और ही जिम्मेदार था । मैं मात्र एक अणु था, जो एक गहरी आंतरिक इच्छा से भावित था, और अब पूर्ण भय रहित था । निडर, अडिग, एक इकाई-सा निरंतर पानी की तरंगों की तरह आगे बढ़ता मैं जानता था कि गंतव्य तक पहुंचने या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीच में टूटकर बिखर जाने के सिवा मेरे लिए तीसरा कोई विकल्प शेष ही नहीं था ।

मेंहदीपुर गांव पर भी दुश्मन के तोपखाने के गोले मेह की बूंदों की तरह बरस रहे थे ।

गोलों की मार से गांव रूप-अरूप हो चुका था । फटते गोलों की चमचमाहट के बीच से मैंने मेंहदीपुर गांव के उजड़े-बिगड़े स्वरूप को आंख भरकर देखा था । मांडव के खंडहरों की यादें मुझे खांडव-दाह से भर गयी थीं । मैं भीतर से भभक आया था । मेंहदीपुर गांव का दुर्भाग्य मुझसे सहा नहीं जा रहा था । सबसे ज्यादा चिंता तो मुझे अपनी टोली के जवानों की जान की थी । कहां थे ? कैसे थे ? कुछ पता नहीं चल रहा था । गांव का समूचा वजूद गोलों की बेरहम मार से गड्ड-मड्ड हो गया था ।

धरती पर कान टिकाकर मैं आती आवाजों और गोलों के फटने की अर्राहटों के बीच कुछ पहचानने-पकड़ने का प्रयत्न कर रहा था ।

फुस-फुस बतियाने की आवाजें सुनी थीं तो मैं प्रसन्न हो उठा था । मैंने उन आती आत्मीय आवाजों को पहचान लिया था । जसबीर मेरा ऑपरेटर कुछ कह रहा था । लेकिन वह था कहां—मेरी समझ में न आ रहा था । जिस घर के आंगन में मैं उन्हें बिरवे की तरह रोप गया था—वह घर ही घूरा हो चुका था । मात्र एक मलबे का ढेर था, जो एक स्तूप की शक्ल में आसमान की ओर तना था । चारों ओर से बंद उस स्तूप का मुझे कोई मुंह-माथा भी दिखायी नहीं दे रहा था । मन हुआ था कि जोर से जसबीर को पुकार लूं । लेकिन युद्ध की चलती इस विभीषिका में जोरों से बोलने के जुर्म की सजा भी मौत ही होगी-यह मैं जानता था ।

अंधे आदमी की तरह पैर के पंजों-हाथ की अंगुलियों और कानों से आती आवाजों को टटोलता—और संदिग्ध सूत्रों के सहारे चलता मैं उस स्तूप के भीतर प्रवेश पाने का कोई उपाय खोजने लगा था । अचानक ही मेरा पैर फिसला था और बेध्यान में एक गहरी खंदक में जा गिरा था । मेरे शरीर के साथ खंदक में गिरती माटी की अर्राहट का शोर मुझे मौत के महाकांतार में घसीटता लगा था । मैं एक पल के लिए उस खुदी कब्र में दफन हो गया था । मैं न हिला था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न डुला था । ऊपर से आती माटी का स्वागत करता मैं माटी के ढेले की तरह निष्प्राण हुआ पड़ा रहा था ।

कई पलों के बाद फिर जसबीर की आवाज लौटी थी । अब की बार उसकी आवाज बहुत स्पष्ट थी, बहुत पास थी ।

"बी.ए. पास है, पार्टनर ।" जसबीर कह रहा था । "नियति नाम है—उसका—"

"कैसे पटायी ?" मनबीर ने जिज्ञासु भाव से पूछा था ।

"मैं रोज उसका कॉलेज से घर जाते वक्त पीछा करता था । वह कुछ न बोलती थी, मूक आंखों से मुड़कर मुझे कई पल टुकुर-टुकुर देखती और घर में घुस जाती । मैं भी कुछ बोलने का साहस न कर पाता था । लेकिन जब उसने अचानक मुझे एक सैनिक की पोशाक में देखा तो वह द्रवित हो गयी । आश्चर्यचकित आंखों से मुझे घूरते हुए पूछा था—'कब भरती हुए ?' बस उसके बाद तो—"

"शादी नहीं हुई ?"

"नहीं ।" जसबीर चुप हो गया था । वह किसी गहन निराशा को पीता लग रहा था ।

"उसके मां-बाप बहुत अमीर हैं और मैं . . . ।" बाहर गोले फटे थे और जसबीर के कहे अगले शब्दों को चाट गये थे, "लेकिन मैंने उसे पत्र लिखा है—बताया है कि मुझे बहादुरी के लिए वीरचक्र मिला है । मेरी पदोन्नति भी होगी और मैं . . ."

"तो क्या नियति तुमसे मां-बाप से अलग होकर शादी कर लेगी ?" मनबीर पूछ बैठा था ।

खंदक में घायल हाथी के मानिंद पड़ा-पड़ा

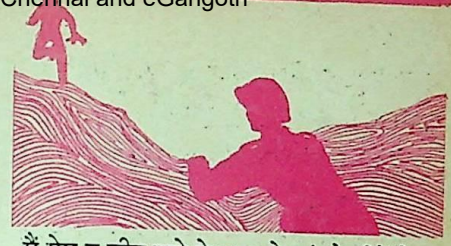

मैं प्रेम न जीत पाने के भय से कांपते वीरों के जीवन का जायजा ले रहा था । मौत से जूझनेवाले ऐसे ही अनेकानेक वीरों के प्रेमविहीन—कातर और दयनीय स्वर मैंने कई बार सुने हैं—बार-बार मुझे यही लगा है कि इन सूरमाओं के सच्चे प्रेम के बीचोंबीच कोई न कोई कायर आ खड़ा होता है, जिसे ये जीतना नहीं जानते । इनकी जंग-उनकी जंग से अलहदा होती है । शायद जसबीर भी अमीरी-गरीबी के द्वंद्व में अपनी प्रियतमा को गंवा बैठेगा—मुझे भय था ।

जसबीर का दिखाया जौहर क्षणांश के लिए मेरी आंखों के सामने आ खड़ा हुआ था . . .

अमीन-वाहिनी के आक्रमण के पूर्व भाग में हम अपनी मंजिल से केवल ढाई सौ गज की दूरी पर गोलियां खा-खाकर गिरने लगे थे । पूरी कंपनी दौड़ते घोड़े की तरह अचानक औचक देख रुक गयी थी । सामने जमीन पर बैठा जाल-जंजाल-सा माईन फील्ड हमें किसी दैत्य की तरह रोककर खड़ा हो गया था । पैर पड़ते ही धरती धधक उठेगी—सभी को डर था । अपना मनसूबा पूरा हुआ देख दुश्मन ने हमारे ऊपर राइफल, मशीनगन, हथगोलों और स्टेनगनों तथा मौर्टरों तक का फायर डाल हमारी पूर्ण बरबादी का समा बांध दिया था । मुझे जंच गया था कि अब कंपनी में से कोई भी जीवित बचनेवाला नहीं था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

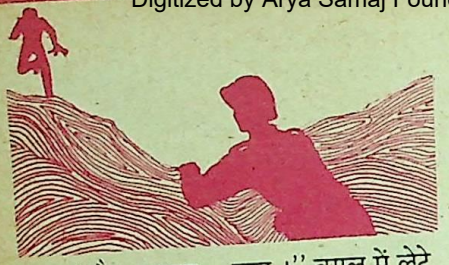

"सैट पकड़ना—साब।" बगल में लेटे जसबीर ने अप्रत्याशित हरकत की थी।

"क्या हुआ ?" मैंने पूछा था।

जसबीर ने मेरे प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया था। वह मेरे पास सैट को फेंक उठ खड़ा हुआ था। मैं अवाक जाते जसबीर को देखता रहा था। उसने अपनी बंदूक संभाली थी और सामने बिछे डराते माइन-फील्ड में धावक की तरह दौड़ने लगा था। माइन फील्ड को आधा पार करते ही उसने पुकारा था, 'जय-बजरंग बली' गोलियां चलाता हुआ वह बारूद के धुएं और हवा में भरी चिरांध में चंपत हो गया था।

भेड़चाल के कायल कंपनी के जवान जसबीर के दिखाये जौहर से प्रेरित हो उठे थे और उसका अनुसरण करते हुए खंदकों में बैठे दुश्मन पर गिद्धों की तरह टूट पड़े थे। पल-छिन में हमारे इन रण-बांकुरों ने दुश्मन को खा-पचा डाला था। विजय ने उस दिन जसबीर को ही वरा था।

अब नियति की बारी थी। वह जसबीर को वरेगी या नहीं—इसका जसबीर को ही नहीं, मुझे भी भय था। मेरा मन था कि कहीं से नियति को खोजकर कहूं—'सुनो, तुम केवल जसबीर को ही वर-माला पहनाना। वह अव्वल दरजे का वीर है—एक बहुत ही अच्छा-सच्चा इनसान है। उसे नारी का आदर करना आता है। जहां नारी के मन में सैनिक के लिए सम्मान है—वहीं सैनिक के मन में नारी के लिए पूर्ण श्रद्धा है। सैनिक-जैसा स्नेह और भक्ति तुम्हें कहीं ढूंढ़े नहीं मिलेगी। सैनिक अपने एकांत में जब एकचित्त हो अपनी प्रियतमा को पुकारता है तो—प्रेम-तंतु दीर्घकाय हो एक सूक्ष्म संधि-रेखा का सृजन करते हैं। इस संधि-रेखा के द्वारा उनके बीच कोमल और कमनीय भावनाओं का आदान-प्रदान आजीवन चलता रहता है।"

मैंने आंखें उठाकर देखा था। सामने अंधकार की छाती पर अगरबत्ती-सा रुका वह स्तूप मुझे गेसू खोले खड़ी नियति जैसा ही लगा था। मैंने उठने का प्रयत्न किया था। जैसे ही मैं सीधा हुआ कि मौत ने मेरी बांह आ गही थी।

"थम-कौन-आता है— ?" जसबीर और मनबीर मेरी ओर बंदूकें ताने मुझे घूर रहे थे। उन्होंने मुझे उठते हुए देख लिया था।

"गोली मत-चलाना-मनबीर—।" मैं युद्ध के तमाम कायदे-कानून भूल अपने प्राणों की दुहाई दे रहा था।

"मैं—मैं—मैं—हूं—मैं।"

मुझे पहचानते ही उन्होंने उस स्तूप के भीतर मुझे शरण दे दी थी। मैं उनकी स्मृतियों के बीचों-बीच आ खड़ा हुआ था। मैंने देख लिया था कि सैनिक की ताम-झाम उतार वह दोनों अपनी-अपनी देह के सुख-दुःख के पूरे चेत में बैठे थे—निश्चिंत—निर्विघ्न। उस स्तूप के भीतर का भभकता वह अंतरंग मुझे बेहद भा गया था। वह घर का भीतरी तहखाना था, जिसके ऊपर घर ढहकर गिर गया था जसबीर और मनबीर ने इस तहखाने में ही खंदक खोल ली थी। खंदक में जलते स्टोव का उजास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतर के हर कोने को एक हलकी विभा से आलोकित किये था । स्तूप के भीतर भरी गरमाहट के अलावा भी वहां कई प्रकार की गंध-सुगंध मौजूद थी । नितांत भय-रहित और बेहद रक्षित सुरक्षित वह स्थान मुझे बेहद भा गया था ।

राज प्रासाद में सुखपूर्वक बैठे धृतराष्ट्र के महाभारत के होते युद्ध का आनंद उठाने की कल्पना एक साथ मेरे मन में कौंध गयी थी ।

"क्या हो रहा है— ?" मैंने अपनी बिगड़ी सांस समेटते हुए पूछा था ।

"मुरगा बन रहा है, साब ।" मनबीर ने मुसकराते हुए कहा था । "कई दिन हो गये . . . ।"

मनबीर की बात सुन मैं सोच रहा था, दुःखों को सुखों में परिवर्तित कर देने की सैनिक की दही के जीवाणुओं-जैसी आदत होती है । उन्हें बेशक जहनुम्म में फेंक दो, वह वहीं अपने लिए छोटे-छोटे सुख उगा लेते हैं । औरों को सुख-शांति और सत्ता सौंप खुद अकिंचन ही बने रहते हैं ।

जसबीर और मनबीर के इस सृजित सुख-संसार में मेरा हारा-थका मन सुस्ताने के लिए अधीर हो उठा था । स्टोव पर बनते मुरगे की महक मुझे भी गुमराह करने लगी थी । उस स्तूप के आसपास बैठी पूर्ण सुरक्षा—उसमें भरी गरमाहट-उजास-और वह सर्व सुख-मुझे कायर बनाने लगा था । थकान से टूटी मेरी देह एक पल सुस्ताने को कह रही थी नींद से कर-कराती मेरी आंखों में आराम करने का आग्रह उठ आया था ।

मैंने घड़ी में समय देखा था । आक्रमण आरंभ होने में कुल सात मिनट शेष रह गये थे । हमले की शुरूआत भी तोपखाने के फायर होने से थी । मीलों पीछे मेरी आवाज के आने का पल-पल इंतजार करते मेरे सहोदर तोपची आकुल व्याकुल हुए बैठे थे । लेकिन मेरा बेईमान मन था कि स्तूप के भीतर भरे उस सुख संसार में दो पल सुस्ताने की जिद् कर रहा था ।

पृथ्वीराज चौहान का रास्ता रोके खड़ी संयोक्ता को मैंने न जाने कैसे देख लिया था । जसबीर के जहन में उठती नियति से प्रेम-विवाह करने की आंधियों को रोक मैं स्तूप के बाहर से आती घायल होते सैनिकों की कराहें सुनने लगा था । प्रियतमा के स्पर्श बोध से आगे की इस यात्रा का आभास अब मुझे होने लगा था । मेरे भीतर बैठा अनाड़ी और मूर्ख सैनिक फिर से मौत के मुंह में कूदने की जिद करने लगा था ।

बाहर बहते जिंदगी और मौत के झंझावात में फिर से कूदने की तैयारी के तहत मैंने जमीन पर पड़े बेतार के सैट को उठाया था और अपनी कमर पर पहनने लगा था ।

"मैं चलता हूं—साब ।" जसबीर ने मेरा हाथ पकड़ लिया था । वह मेरे आने का कारण समझ गया था । मैंने आपसे तो पहले ही कहा था— ।" मेरे हाथ से सैट को झपट वह स्वयं पहनने लगा था ।

मैं अवाक खड़ा अब जसबीर का मुंह ताक रहा था ।

"तुम्हारी . . .वह . . .नियति . . . ?" मैंने जसबीर को याद दिलाया था,

"गप्पें मार रहा था—साब— ।" उसने मुसकराकर मुंह फेर लिया था ।

—एच-३१६, विकासपुरी, नयी दिल्ली-१८.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति में बहरेपन का भी इलाज है । इस रोग को दूर करने के लिए ये उपाय अपनाइए ।

१. कनिष्ठा और अनामिका के मध्य हथेली पर स्थित बिंदु पर एक मिनट दबाव दें ।

२. चित्र में दर्शाये गये स्थान पर हलका दबाव दें ।

३. पैरों के तलुए में सबसे छोटी अंगुली और उसके पासवाली अंगुली के मध्य में स्थित बिंदु पर एक मिनट तक हलका दबाव दें ।

४. हाथ के अंगूठे पर मध्य में स्थित बिंदु पर एक मिनट तक हलका दबाव दें ।

१७ अद्‌भुत करिश्मे

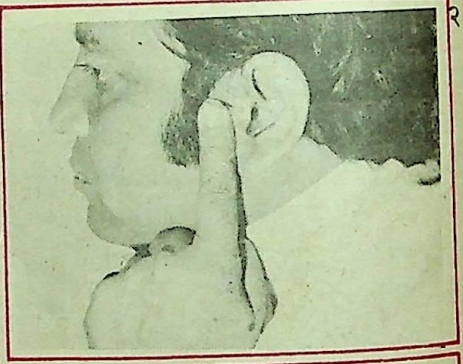

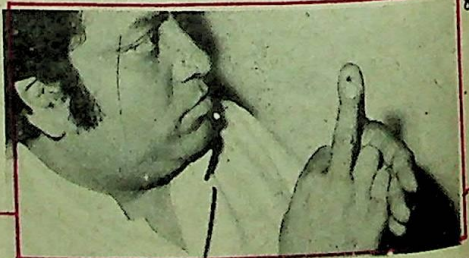

एक्यूप्रेशर चिकित्सा की एक प्राचीन विधि है । इस चिकित्सा पद्धति में शरीर के विभिन्न स्थलों को दबाकर रोगों का उपचार किया जाता है । पाठकों के लाभ के लिए हम एक्यूप्रेशर की विधियां प्रकाशित कर रहे हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय रोगों के उपचार में भी एक्यूप्रेशर चिकित्सा से लाभ होता है । यदि अचानक हृदयगति रुक जाए तो डॉक्टर के आने तक निम्नलिखित विधियां अपनाइए ।

१. दोनों कानों पर उभरी हुई हड्डी के पास अंदर की ओर दबाव दें ।

२. नाक और ऊपर के होंठ के मध्य स्थित बिंदु पर एक मिनट तक दबाव दें ।

३. हथेली की मूल सिलवट के दोनों सिरों पर अंगूठे की सीध में व सबसे छोटी अंगुली के सीध में स्थित बिंदु पर बीस बार हलका दबाव दें

४. कनिष्ठा के भीतरी ओर नाखून के पास बीस बार हलका दबाव दें ।

—एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण एवं रोग उपचार केंद्र, नील कमल सिनेमा परिसर, इंदौर

अपना इलाज स्वयं कीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे प्रिय पात्र

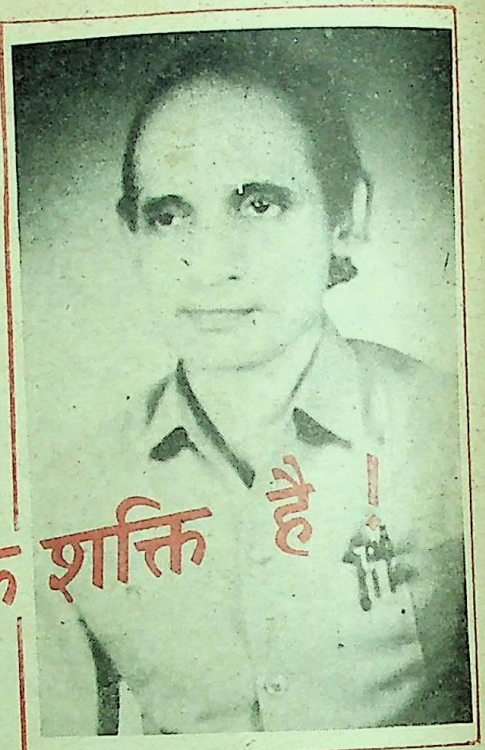

प्यार एक प्रेरक शक्ति है !

● डॉ. भगवतीशरण मिश्र

चुनाव सदा कठिन होता है । अनिर्णय की स्थिति होती है वह और दुविधा की । यह कार्य और कठिन हो जाता है जब अपनी ही प्रिय वस्तुओं अथवा व्यक्तियों में ही एक को सर्वाधिक प्रिय बताना पड़े । अपने ही द्वारा परिश्रम पूर्वक गढ़े, सजाये, संवारे पात्रों में से भी एक को चुनने की अनिवार्यता आ जाए तो चुनाव अथवा चयन की क्रिया और कष्ट साध्य हो जाती है ।

लेखक जब किसी औपचारिक कृति पर काम आरंभ करता है तो स्वभावतः उसे सर्व प्रथम उस कृति विशेष से संबंधित पात्रों पर ध्यान देना होता है । उनका स्वरूप वह अपने अंदर गढ़ता है और जैसे कोई शिल्पकार छेनी और हथौड़ी के माध्यम से बड़ी बेरहमी से पत्थर के टुकड़े पर प्रहार कर उसे छांट तराशकर— एक सुंदर-सी मूर्ति गढ़ लाता है उसी तरह, उसी तन्मयता और तटस्थता से एक रचनाधर्मी भी अपने पात्रों को तराशता-निखारता है । अब उससे कोई यह पूछे कि तुम्हारे इतने सारे पात्रों में कौन तुम्हें सर्वाधिक प्रिय है, तो उसकी कठिनाई तो बढ़ेगी ही । एक बार उन्हें पुनः अपने सभी पात्रों के साथ वैसा ही श्रम करना पड़ेगा, जितना उसने उनके निर्माण के कारण किया था— फिर से एक-एक को तौलना परखना पड़ेगा और वह भी एक निर्मम तटस्थता से जिसे शायद ही वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने अंदर विकसित कर सके ।

अब मेरी कृत्तियों की बात लें तो सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि इधर की जो मेरी सर्वाधिक चर्चित औपन्यासिक रचनाएं हैं अर्थात 'पहला सूरज' और 'पवन पुत्र' उन्हीं में से किसी एक का प्रधान पात्र मेरा सर्वाधिक प्रिय पात्र होगा । यह बात मान ली जाए तो 'पहला सूरज' के शिवाजी अथवा 'पवनपुत्र' के भगवान हनुमान को मेरा अत्यंत प्रिय पात्र होना चाहिए । पर ऐसी बात है नहीं । इसके पूर्व के मेरे तीन उपन्यासकारों की बात मैं नहीं कह सकता हूं । 'पहला सूरज' के शिवाजी और 'पवन पुत्र' के हनुमान तो गढ़े-गढ़ाये पात्र थे । सही है कि इनके साथ भी मुझे श्रम करना पड़ा । इनको, कुछ हद तक, अपने आदर्शों और मूल्यों के सांचे में ढालने के लिए मुझे कल्पना के कुछेक सूत्रों को पकड़ना पड़ता, पर ये पात्र तो मात्र मेरे नहीं हैं । इनके आदर्श, स्वरूप इनकी मान्यताएं, आस्थाएं तो पहले से गढ़ी-गढ़ाई हैं । ये ऐतिहासिक और पौराणिक पात्र हैं ।

पाठकों को कोई एतराज नहीं हो तो मैं उद्घोषित करूं कि आज भी मेरा प्रिय पात्र मेरी पहली औपन्यासिक कृति का नायक ही है और वह है 'एकला चलो रे' का डॉ. विशाल

उपन्यास— 'सूरज के आने तक' 'एकला चलो रे' और 'नदी नहीं मुड़ती' के पात्रों को अनदेखा कर मैं इधर की रचनाओं में से किसी एक के किसी एक पात्र को सर्वश्रेष्ठता प्रदान कर दूं, यह संभव नहीं लगता । इसका कारण है और वह यह है कि कभी-कभी किसी छोटे पात्र को गढ़ने-संवारने में अधिक श्रम लगता है । बड़े पात्र की अपेक्षा कभी-कभी वह छोटा पात्र यथार्थ से बहुत कटे रहने पर भी रचना की ऐसी अनिवार्यता बन जाता है कि उसके साथ लेखक को अतिरिक्त श्रम करना आवश्यक होता है — कल्पना के ताने-बाने बुनने पड़ते हैं और इस क्रम में लेखक की मानसिक शक्ति का भी पर्याप्त क्षरण होता है और तब स्वाभाविक है कि ऐसे पात्र अथवा पात्रों के साथ कृतिकार का लगाव कुछ अधिक ही गहरा हो जाता है ।

मेरे साथ तो ऐसा ही होता है और लेखक-मानस में इनकी एक छवि पहले से बनी बनायी है । ऐसी स्थिति में इनके चरित्रों को लेकर लीक से हटकर चलना लेखक के लिए बहुत संभव नहीं था । ऐसी स्थिति में मेरे होकर भी ये मेरे पात्र नहीं हैं, ये कइयों के रहे हैं और भविष्य में भी कइयों के रहेंगे । सब अपनी ओर से थोड़ा-बहुत रंग-रोगन इन पर चढ़ाएंगे, पर इनके मूल स्वरूप में कोई परिवर्तन कर पाएगा यह संभव नहीं है ।

इस दृष्टि से 'पहला सूरज' अथवा 'पवन-पुत्र' की सफलता उनके पात्रों के सफल अथवा असफल चित्रण अथवा प्रस्तुतिकरण को कम और उनकी भाषा, शिल्पगत विशेषता आदि को अधिक जाती है । ऐसा कहने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है यों इन पुस्तकों में ऐसे भी पात्र हैं जो बहुत ख्यात नहीं हैं और जिनको लेकर मुझे श्रम भी करना पड़ता है और कल्पना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति का भी आवश्यकता से अधिक व्यय करना पड़ता है । इनमें 'पहला सूरज' की जीजा जी अरुंधती और उसी के गागा भट्ट और अफजल खां के नाम विशेष रूप से लिये जा सकते हैं ।

'पवन पुत्र' में मां अंजना विभीषण, सुग्रीव तथा लक्ष्मण के नाम भी इसी रूप में लिए जा सकते हैं किंतु जैसा मैंने पहले स्पष्ट किया इनमें से कोई भी शत-प्रतिशत मेरी उपज (प्रोडेक्ट) नहीं है । 'पहला सूरज' की अरुधंती की बात पृथक है जो एक पूर्णतया काल्पनिक पात्र है, पर उसके साथ भी मेरा लगाव उस सीमा तक नहीं है कि मैं उसे अपना सर्वाधिक प्रिय 'कैरेक्टर' घोषित कर सकूं । तब यह विडंबना ही मानी जाएगी कि अपने सर्वाधिक प्रिय पात्र की खोज मुझे अपने सर्वाधिक लोकप्रिय और आकार की दृष्टि से भी वृहद् ग्रंथों की अपेक्षा अपनी अपेक्षाकृत कम ख्यात तथा आकार में भी लघु कृतियों में करनी पड़े । 'पहला सूरज' के शिवाजी अथवा माता जीजा मेरे लिए अनुकरणीय हो सकते हैं और 'पवन पुत्र' के हनुमान मेरे पूज्य और आराध्य हो सकते हैं वे मेरे सर्वाधिक प्रिय-पात्र हैं यह उद्घोषि करने में मैं अपने को सक्षम नहीं पा रहा । करना निस्संदेह लेखकीय बेइमानी होगी लिए मैं तैयार नहीं ।

तब मेरे सर्वाधिक प्रिय पात्र को या तो 'एकला चलो रे' या 'सूरज के आने तक' अथवा 'नदी नहीं मुड़ती' में ही ढूंढ़ना पड़े मैंने पहले ही निवेदित किया कि यह चुना कार्य जरा कठिन है, अतः मैं इस क्रम में अधिक ही ईमानदारी और तटस्थता का लेने पर आमादा हूं । और इस कार्य में को भी सहभागी बनाये रखना उचित स हूं । जिन लोगों ने इन पुस्तकों को पढ़ा है खासी संख्या है, इनकी क्योंकि 'एकला का तो पुस्तकालय संस्करण के अलावा पॉकेट बुक्स से पॉकेट संस्करण भी हुआ के आने तक' के भी दो वर्षों में दो संस्क और 'नदी नहीं मुड़ती' को तो लोगों ने पसंद किया कि 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में जाने-माने समीक्षक ने लिखा कि बहुत

इनके भी बयां जुदा-जुदा

ये उसका ज़र्फ था अनजान बनके टाल गया,
हमें तो याद थीं सारी हिमाकतें अपनी !

—फिज़ा

घर छोड़ के निकले हो अबस तुम तने-तन्हा,
हर शख्स तो घर छोड़ के गौतम नहीं होता ।

—मो

मेरा दुःख ये है कि मैं अपने साथियों जैसा नहीं,
में बहादुर हूं मगर हारे हुए लश्कर में हूं ।

—मु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात एक ऐसी पुस्तक पढ़ने को मिली जिसमें मिथिला की माटी की सोंधी-सोंधी गंध से साक्षात्कार हुआ । तो चुनना हो तो मुझे 'एकला चलो रे' के डॉ. विशाल और वीणा, 'सूरज के आने तक' के नुनु बाबा और राधा तथा 'नदी नहीं मुड़ती, की सुषमा और शास्त्रीजी के मध्य ही चुनना पड़ेगा ।

'एकला चलो रे' का डॉ. विशाल एक आदर्शवादी पात्र है जो प्यार और वासना को सर्वथा पृथक मानता है और प्यार में वासना अथवा वासना में प्यार की कोई भूमिका देखता । नहीं,

यह 'प्लैटोनिक लव' की बात नहीं है । यह डॉ. विशाल की अपनी धारणा है कि प्यार एक रचनात्मक शक्ति है, जो व्यक्ति के लिए विकास और भावनाओं के अनेक द्वार उद्घाटित करती है जबकि वासना उसे पाशविक धरातल पर ला पटकती है । उसकी सहयोगिनी वीणा भी कुछ ऐसी ही विचार रखती है । पर विशेष रूप से उभरकर जो चरित्र इस पुस्तक में आया है वह डॉ. विशाल का ही है ।

'सूरज के आने तक' के नुनु या नुनू !? बाबा परंपरावादियों के मध्य रहते हुए भी आधुनिकता और प्रगतिशीलता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और राधा एक सशक्त पात्रा के रूप में नूनू बाबा के आदर्शों को क्रियात्मक स्वरूप प्रदान करती है ।

'नदी नहीं मुड़ती' की सुषमा एक अत्यंत ही तेज-तर्रार चरित्र है जो आज के जीवन विशेष का राजनीतिक परिवेश की विसंगतियों का शिकार होकर भी अपने मनोबल को कायम रखने में सफल सिद्ध होती है ।

इस विश्लेषणात्मक प्रक्रिया से गुजरने के पश्चात मेरा चुनाव अब सीमित होकर मात्र दो पात्रों— डॉ. विशाल और सुषमा— तक पहुंचता है और पाठकों को कोई एतराज नहीं हो तो मैं उद्घोषित करूं कि आज भी मेरा प्रिय पात्र मात्र मेरी पहली औपन्यासिक कृति का नायक ही है और वह है 'एकला चलो रे' का डॉ. विशाल ।

—४५/६० गवर्नमेंट फ्लैट्स, बेली रोड, पटना-१ ।

कोई भी फितना जगा के देखो, कोई भी तूफां उठा के देखो,
तो मेरे हक में बुरा है यारो तुम्हारे हक में भला न होगा ।
—इंदर स्वरूप नादां

थक गया हो, करो उसका इंतजार मगर,
तुमसे तेज चले, उसको हम कदम न करो । —मुश्ताक शाद

तेरा चेहरा हमारी जुबान है लोगो,
अपने हाथ से कुछ भी लिखा नहीं करते । —अख्तर इमान

तेरे ख्वाब ही देखूं न तुझको याद करूं,
तो तो सोच कि मेरी हैं मुश्किलें कैसी ।
—कुमार पाशी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विंस्टन चर्चिल ने एक यूरोप का विचार तो प्रकट कर दिया किंतु यूरोपीय देशों को अपने स्वार्थों, संदेहों और आशंकाओं से ऊपर उठकर इस महान लक्ष्य के लिए काम करने और इसे मूर्त रूप प्रदान करने में काफी समय लगा । इस दौरान यूरोप के बुद्धिजीवियों, राजनीतिज्ञों और अर्थशास्त्रियों के बीच इस विषय पर जबरदस्त बहस चलती रही ।

होगा पूरा यूरोप एक देश के रूप में

• नवीन पंत

आज से दो वर्ष बाद सन १९९२ के प्रारंभ से यूरोप के १२ देशों की सीमाएं एक-दूसरे के लिए पूरी तरह खुल जाएंगी । पर्यटक बिना रोक-टोक के लिसबन से कोपेनहेगन तक और शैटलैंड द्वीप से क्रीट द्वीप तक कहीं भी आ-जा सकेंगे । पश्चिम यूरोप के १२ देशों के बदले वहां एक 'मिनी यूरोप' का जन्म हो जाएगा । शक्तिशाली, गतिशील और साधन संपन्न ।

पर्यटक को इन १२ देशों के लिए पृथक वीसा, सीमा-शुल्क और विदेशी मुद्रा लेने की झंझट समाप्त हो जाएगी । सन १९९२ में १९७३ के १२ देशों की पृथक मुद्राएं तो समाप्त नहीं होंगी । लेकिन यूरोपीय मुद्रा इकाई की मदद से उनका मूल्य इस प्रकार निश्चित कर दिया जाएगा कि सभी मुद्राओं का मूल्य लगभग बराबर हो जाएगा । यूरोपीय आर्थिक समुदाय के ये १२ देश जिसमें से अधिकांश विश्व के विकसित और औद्योगिक देश हैं एक अभिन्न इकाई के रूप में काम करेंगे । इस नये समुदाय की, जो व्यवहार में एक देश होगा, जनसंख्या ३२ करोड़ होगी । यह विश्व के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे बड़ी व्यापारिक इकाई होगी । वर्तमान आंकड़ों के अनुसार विश्व व्यापार में इस समय समुदाय का हिस्सा १९ प्रतिशत है, जबकि अमरीका का १७ प्रतिशत और जापान का १० प्रतिशत है । विश्व आयात व्यापार में समुदाय का भाग २२ प्रतिशत, अमरीका का २१ प्रतिशत और जापान ९ प्रतिशत है । विश्व निर्यात व्यापार में समुदाय का भाग २१ प्रतिशत, अमरीका का १५ प्रतिशत और जापान का ९ प्रतिशत है । इस प्रकार सन १९९२ में विश्व के आर्थिक-राजनीतिक मानचित्र पर एक नयी महाशक्ति का उदय होगा, जो औद्योगिक उत्पादन क्षमता, टेक्नोलाजी विकास दर और सकल राष्ट्रीय उत्पादन की दृष्टि से जापान, अमरीका और सोवियत संघ से टक्कर ले सकेगी ।

लड़ाइयों से भरा यूरोप का अतीत

यूरोपीय समुदाय की स्थापना महान राजनीतिज्ञों, विचारकों और अर्थ शास्त्रियों के अनवरत सोच और लगभग चार दशकों के प्रयत्नों का परिणाम है । यूरोपीय आर्थिक समुदाय में सन १९५२ में ६ देश थे । सन १९७३ में इनकी संख्या ९ हो गयी । आज इनकी संख्या १२ है ।

यूरोपीय समुदाय के देश समान विचारों और आदर्शों से प्रेरणा लेते हैं । अपने साधनों को मिलाकर वे लोकतंत्र को मजबूत और शांति की भावनाओं को उज्ज्वल बनाना चाहते हैं । वे अपनी समृद्धि तथा खुशहाली का अधिक न्यायपूर्ण एवं बेहतर वितरण करना चाहते हैं । इस नये परिक्षेप में यूरोपीय समुदाय की स्थापना शांति को बढ़ावा देने, यूरोपीय जनता के जीवन में सुधार लाने, विश्व व्यापार और विकास को बढ़ावा देने और यूरोप की आवाज को मुखरित करने के लिए की गयी है ।

उपनिवेशों की स्थापनाएं

पश्चिमी यूरोप के देशों ने अपना निजी व्यक्तित्व समाप्त करके यूरोपीय समुदाय में विलय होना क्यों स्वीकार किया ? इस प्रश्न का उत्तर समझने के लिए हमें यूरोप के पुराने इतिहास पर एक नजर डालनी होगी ।

नवजागरण और औद्योगिक क्रांति के बाद यूरोप के देशों ने विशाल महासागरों की छाती चीरकर सुदूर महाद्वीपों में नये साम्राज्यों और उपनिवेशों की स्थापना की । इन उपनिवेशों पर अपना प्रभुत्व बनाये रखने के लिए उन्होंने यूरोप और उसके बाहर अन्य यूरोपीय देशों के साथ अनेक लड़ाइयां लड़ीं । उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के यूरोप का इतिहास लड़ाइयों से भरा पड़ा है ।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में विश्व पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के प्रयत्न में यूरोपीय शक्तियां प्रथम महायुद्ध में उलझीं । यह युद्ध लगभग विश्व के सभी क्षेत्रों में लड़ा गया । अतः इसे प्रथम विश्व युद्ध भी कहा जाता है । इसमें लगभग छह करोड़ सैनिकों ने भाग लिया । इनमें से ९० लाख सैनिक रणभूमि में मारे गये । इसके अलावा युद्ध में लाखों लोग घायल और अपाहिज हुए ।

युद्ध की विभीषिकाएं

प्रथम महायुद्ध की समाप्ति की संधि, वर्साई की संधि पर १८ जून, १९१९ को हस्ताक्षर किये गये । अभी इस संधि की स्याही भी नहीं सूखने पायी थी कि पहली सितम्बर १९३९ को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

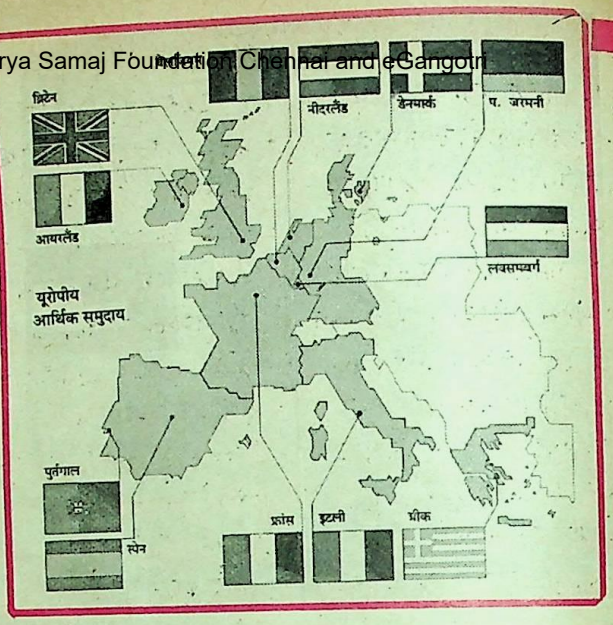

दूसरा विश्व युद्ध शुरू हो गया । सन १९४० के अंत तक लगभग समूचे यूरोप पर अधिकार कर लेने के बाद जरमनी ने २२ जून, १९४१ को सोवियत संघ पर हमला किया । ७ दिसंबर, १९४१ को अमरीकी नौसैनिक अड्डे, पर्ल हार्बर पर हमले के बाद जापान और अमरीका भी इस युद्ध में शामिल हो गये । इस प्रकार द्वितीय महायुद्ध समूची दुनिया में फैल गया ।

द्वितीय विश्व युद्ध में ५ करोड़ लोग मारे गये । इनमें से २ करोड़ २० लाख सैनिक और २ करोड़ ८० लाख असैनिक थे । लगभग २ करोड़ २० लाख लोग फासिस्ट यातना शिविरों के मारे गये । द्वितीय महायुद्ध में अंतिम दिनों में अमरीका ने जापान के दो नगरों, हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराया । इन बमों से ३ लाख २० हजार लोग — असैनिक, बूढ़े, बच्चे, औरतें और जवान मारे गये और लाखों बुरी तरह घायल हुए । यह युद्ध का सबसे कुरुप्त, वीभत्स और घिनौना रूप था ।

द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका देख बाद सभी देशों में एक विश्व की भावना हुई । इसके परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का गठन हुआ । तीस कम समय के भीतर दो रक्त रंजित लड़ देखने के बाद यूरोप का जनमानस विरुद्ध हो गया था ।

अनेक भाषाओं, बोलियों के बावजू में एकता का विचार किसी न किसी युग से विद्यमान रहा है । ईसाई धर्म और रोमन कानून के आदर्शों ने यूरोप एकता के सूत्र में जोड़ा है । यूरोप के साहित्यकारों, और संगीतकारों ने ग्रीक कथाओं, स्केंडनेवियाई संतों और ईसा से प्रेरणा ग्रहण की है । दांते, पिरे ईनिया सिलवियो पिकोलोमिनी और की रचनाओं में यूरोप की एकता का प्रमुख है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त यूरोप राज्य की अवधारणा

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद १९ जुलाई ४६ को द्वितीय विश्व युद्ध के जन नायक और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान मंत्री विंस्टन चर्चिल ने जूरिच में पहली बार संयुक्त यूरोपीय राज्य 'युनाइटेड स्टेट्स ऑव यूरोप' की स्थापना के विचार का प्रतिपादन किया । गरीबी, बदले और घृणा से ग्रस्त यूरोपीय महाद्वीप में, जहां शांति की चाह भी प्रबल थी, इससे आशा और उदारता की भावना का संचार हुआ । यह यूरोपीय देशों के बीच मेल-मिलाप और भाईचारे की स्थापना की दिशा में पहला कदम था ।

षिका देख
की भावना
युक्त राष्ट्र
। तीस
जित लक्ष्य
ानस युद्ध

विंस्टन चर्चिल ने एक यूरोप का विचार तो प्रकट कर दिया किंतु यूरोपीय देशों को अपने स्वार्थों, संदेहों और आशंकाओं से ऊपर उठकर इस महान लक्ष्य के लिए काम करने और इसे मूर्त रूप प्रदान करने में काफी समय लगा । इस दौरान यूरोप के बुद्धिजीवियों, राजनीतिज्ञों और अर्थशास्त्रियों के बीच इस विषय पर जबरदस्त बहस चलती रही ।

के बाद
किसी रूप
भाई-धर्म,
ों ने यूरोप
यूरोप के
रों ने ग्रीक
और ईसा
, फिर डूबने
नी और
कता का

संयुक्त यूरोप के गठन की दिशा में पहला कदम ९ मई, १९५० को उस समय उठाया गया, जब फ्रांस के विदेश मंत्री राबर्ट शूमैन ने फ्रांस और पश्चिम जरमनी के कोयले और इस्पात उत्पादन का मिलजुलकर प्रबंध करने के लिए एक यूरोपीय संगठन यूरोपीय इस्पात और कोयला समुदाय गठित करने का प्रस्ताव किया । अन्य यूरोपीय देश इस संगठन के सदस्य हो सकते थे । इसी वर्ष फ्रांस के प्रधानमंत्री रेने प्लेवेन ने यूरोपीय सुरक्षा समुदाय गठित करने का प्रस्ताव किया ।

राबर्ट शूमैन का प्रस्ताव क्रांतिकारी था । इस प्रस्ताव में पहली बार राष्ट्रीय सरकारों को अपनी प्रभु सत्ता का कुछ भाग अपने द्वारा चुने गये, लेकिन स्वतंत्र रूप से कार्य करनेवाले संगठन को सौंपने को कहा गया था । यूरोपीय इस्पात और कोयला समुदाय की सहायता के लिए उच्च शक्ति, मंत्रिपरिषद, न्यायालय और संसदीय सभा की व्यवस्था थी । न्यायालय का काम 'उच्च शक्ति' और विभिन्न सरकारों के बीच विवादों का निपटारा करना था । इस प्रकार यूरोपीय आर्थिक समुदाय का जन्म इस्पात और कोयला समुदाय के रूप में हुआ । तभी से ९ मई का दिन यूरोपीय साझा मंडी के जयंती दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

अठारह अप्रैल १९५१ को फ्रांस, पश्चिम जरमनी, इटली, बेल्जियम, नीदरलैंड और लक्समबर्ग ने इस्पात और कोयला समुदाय की स्थापना के लिए पेरिस संधि पर हस्ताक्षर किये । अगले वर्ष २७ मई को इन्होंने यूरोपीय रक्षा समुदाय और राजनीतिक समुदाय की स्थापना के प्रस्तावों पर हस्ताक्षर किये ।

पचास के दशक में पश्चिम यूरोप के देश उत्तर अटलांटिक संधि संगठन को मजबूत बनाने को चिंतित थे । वे पश्चिमी यूरोप की रक्षा के लिए एक एकीकृत सेना बनाना चाहते थे । लेकिन समान विदेश नीति के अभाव में एकीकृत सेना बनाने की बात सोची भी नहीं जा सकती थी । अतः राजनीतिक समुदाय बनाने की आवश्यकता अनुभव की गयी । राजनीतिक समुदाय तो विकसित नहीं किया जा सका । लेकिन २५ मार्च, १९५७ को यूरोपीय आर्थिक समुदाय और यूरोपीय परमाणु ऊर्जा समुदाय की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापना की संधि का छह यूरोपीय देशों ने अनुमोदन किया ।

एकजुटता की भावना

साठ के दशक में यूरोपीय आर्थिक समुदाय को कुछ धक्का लगा । फ्रांस का कहना था कि इंगलैंड में समुदाय में शामिल होने की राजनीतिक इच्छा शक्ति का अभाव है । कुछ समय तक फ्रांस ने समुदाय की बैठकों में भाग नहीं लिया । लेकिन साठ के दशक में अनेक रचनात्मक कार्य हुए । आर्थिक समुदाय के देशों के बीच सभी किस्म के सीमा शुल्क समाप्त कर दिये गये और समान कृषि नीति पर जोर दिया गया । समुदाय के सभी देशों के लिए कृषि जिंसों की समान मंडी और समान मूल्यों की घोषणा की गयी । यह आश्वासन दिया गया कि कृषि क्षेत्र में कार्य करनेवाले लोग उसी तरह का जीवन स्तर बिता सकेंगे जिस तरह का अन्य क्षेत्रों के लोग बिताते हैं । इससे कृषि उपज में अभूतपूर्व बढ़ोतरी हुई ।

समुदाय के सदस्य देशों ने समय-समय पर विदेश मामलों पर बातचीत करने के लिए विदेश मंत्रियों के सम्मेलन करने का फैसला किया । यह भी संकल्प किया गया कि यूरोप के देश सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय और विश्व समस्याओं पर एक स्वर से बोलेंगे और एक साथ मिलकर कार्य करेंगे ।

सत्तर के दशक में वित्तीय और मौद्रिक मामलों में घनिष्ठ सहयोग शुरू हुआ । समुदाय के देशों ने मुद्रा संकट और ऊर्जा संकट का मिलकर सामना किया । समुदाय के सदस्य देशों की संख्या सन १९७३ में डेनमार्क, आयरलैंड और ब्रिटेन द्वारा सदस्यता ग्रहण करने के बाद ६ से बढ़कर ९ हो गयी । समुदाय काम-काज में तेजी लाने और विवादों को समाप्त करने के लिए शासनाध्यक्षों की शिखर बैठकें हुई ।

ग्रीस सन १९८१ में यूरोपीय आर्थिक समुदाय का दसवां सदस्य बना और सन में पुर्तगाल और स्पेन इसके सदस्य बने। यूरोपीय समुदाय केवल सीमा शुक्ल-संघ 'यूनियन' नहीं है । यह आर्थिक क्षेत्र में की एक मजबूत इकाई है । अब यूरोप के देशों के बीच सामान, मजदूर और पूंजी आदान-प्रदान की व्यवस्था है । अन्य देशों साथ समुदाय समान व्यापारिक नीति का अनुसरण करता है । इसकी कृषि नीति है । विकास सहायता, उद्योग, ऊर्जा, मत्स्य पालन, सामाजिक और क्षेत्रीय नीति पर्यावरण, वैज्ञानिक अनुसंधान, कंपनी और मौद्रिक मामलों-जैसे विविध विषयों समान नीतियों और रण-नीतियों का अनु कर रहा है ।

समुदाय के देशों ने सन १९८६ के एक्ट' में जिसका सभी सदस्य देशों ने अ कर दिया है समान यूरोपीय विदेश नीति विकसित और लागू करने की दिशा में करने का वचन दिया है । समुदाय ने मा अधिकारों, फिलस्तीन समस्या, दक्षिण अ अफगानिस्तान, मध्य अमरीका, निरस्त्रीक और आतंकवाद-जैसे विषयों पर समान अपनाया है ।

२२ मैत्री एपार्टमेंट्स, ए/३, पश्चि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प । —संपादक

१. एक युवक आज से तीन दिन पूर्व एक संगीत-प्रतियोगिता में भाग लेने गया था, जो प्रति शनिवार को आयोजित होती है । बताइए— क. आज क्या वार है, ख. तीसरे दिन क्या वार होगा ?

२. भारत में निर्वाचन-आयोग द्वारा मान्यता-प्राप्त राष्ट्रीय दल कितने और कौन-से हैं ? इससे पहले कितने थे ?

३. गत वर्ष अक्तूबर में यूरोप के किस देश की संसद ने संविधान में संशोधन करके ४१ वर्षों का साम्यवादी शासन समाप्त कर अपने को एक गणराज्य (बहुदलीय प्रजातंत्र) घोषित कर दिया ?

४. क. अमरीका ने बृहस्पति ग्रह के खोजी अध्ययन के लिए कौन-सा अंतरिक्ष-यान विगत अक्तूबर मास में छोड़ा है । यह उपरोक्त ग्रह के निकट कब पहुंचेगा ? ख. यह अंतरिक्ष-यान किस अंतरिक्ष-शटल से छोड़ा गया ?

५. क. विश्व का सबसे बड़ा नागरिक (सिविल) दूरसंचार-उपग्रह कौन-सा है ?

ख. इसे कहां, किस प्रक्षेपण-वाहन (राकेट) से तथा कब छोड़ा गया ?

६. गत वर्ष अक्तू. के अंत में किस देश ने अपनी मुद्रा का इतना भारी अवमूल्यन किया जितना कि इससे पूर्व किसी देश ने नहीं किया था ?

७. निम्नलिखित नोबेल पुरस्कार (१९८९) किसे मिले हैं ?— क. शांति, ख. साहित्य, ग. अर्थशास्त्र ।

८. क. देश में निर्मित पहली पनडुब्बी का क्या नाम है ? उसका जलावतरण कब और कहां हुआ ?

ख. वह किसके सहयोग से बनी है ?

९. क. देश में किस पदवाले व्यक्ति को लोकसभा का सदस्य न होते हुए भी लोकसभा की बैठक में उपस्थित होने का अधिकार है ?

ख. कौन-सा पदाधिकारी राज्यसभा का सदस्य न होते हुए भी उसकी बैठकों की अध्यक्षता करता है ?

१०. क. गत वर्ष नेहरू कप क्रिकेट टूर्नामेंट का विजेता कौन रहा ?

ख. उसने किसे हराया था ?

११. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देह और देश की बात

● राजेन्द्र शंकर भट्ट

देश-भक्ति देव-भक्ति—जैसी नहीं होती, यद्यपि वाराणसी में भारत माता का भी आकर्षक मंदिर है। मैं इसे इसकी स्थापना के समय से जानता हूं, लेकिन जब मैं हाल में वाराणसी गया, इसका स्मरण भी नहीं आया। विश्वनाथ मंदिर मैं दो दिन में तीन बार गया।

देह-भक्ति के निकट अवश्य देश-भक्ति लगती है। 'देह' और 'देश' के एक-जैसे भी अर्थ होते हैं, 'देह' तो शरीर होता ही है, 'देश' भी शरीर का, उसके अंगों का द्योतक माना गया है, जैसे कटि-देश, स्कंध देश।

देश शरीर का अंग उसी प्रकार होता है, जैसे वह इकाई के रूप में स्वतंत्र राजनीतिक सत्ता से संपन्न होते हुए भी, संसार का अंग होता है। जो हो, इससे काम चल सकता है कि 'देश' को 'देह' जितना तो माना ही जाए।

हमारे लिए अपनी देह सबसे सन्निकट और सहानुभूतिशील होती है, परंतु हमारे दैहिक संबंध अपनी देह तक सीमित नहीं होते। जो-जो हमारे दैहिक संपर्क में आते हैं, जिन-जिनका आर्कषण, स्वार्थ और संबंध हमें उनके निकट ले जाता है, उन सबकी 'देह' हमारे लिए निकट हो जाती है, एक सीमा तक अपनी ही देह की तरह।

परंतु 'देहत्याग' तो शब्द है, लेकिन 'देहभक्ति' जैसा कोई शब्द नहीं है। यह आश्चर्य ही है, क्योंकि अपनी और अपनों की देह-सेवा में हम प्रायः सारे जीवन लगे रहते हैं। कदाचित 'सेवा' को 'भक्ति' नहीं माना जा सकता, इसलिए 'देशभक्ति' तो है 'देह-भक्ति' नहीं।

भक्ति, सेवा और लगाव

यह लगता है कि 'सेवा' में आराधना, उपासना और पूजा भी आती है। वैसे, वह होती है दूसरे को आराम पहुंचाने की क्रिया। इसी में जब जीवनदायन होने लगता है, तब सेवा ही चाकरी और नौकरी हो जाती है।

भक्त भक्ति करनेवाला तो होता ही है, उसे सेवा करनेवाला भी माना गया है। भक्ति भी सेवा होती है। जो सेवा भक्ति के बिना की जा है, वह न अपने को लगती है, न उसे जिसकी सेवा में सारे दिन तल्लीन लगा देखने में आत

'अत्यंत अनुराग' भक्ति मानी गयी है। अनुराग का अर्थ होता है प्रेम, प्रीति।

यहां तक सारी बात का संबंध और संदर्भ समझना जरूरी है। प्रीति और प्रेम के बिना न 'देह-सेवा' हो सकती है, न 'देश-सेवा'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रीति कैसे जोड़ती है, इसे अपना एक रोम निकालने का यत्न करके अपने अनुभव में लाया जा सकता है । अपने आप नोचना तो कष्टकर होता ही है, दूसरा ऐसी चेष्टा करे तो शरीर का सारा रक्त खौल उठता है । बुरी नजर उसके एक रोम पर भी अगर कोई डाले, जिससे हम प्रेम करते हैं, तो हम उसे सह नहीं सकते ।

अपनी देह और उसके रोम-रोम के प्रति जिस तरह का यह लगाव और जुड़ाव है, वैसा का वैसा, उतना का उतना, कम से कम, देश के प्रति भी होना चाहिए ।

जो 'हमारा देश' होता है, वह हम से भिन्न नहीं होता । यह कल्पना और मान्यता मात्र की बात नहीं, वास्तविकता का अर्थ है ।

हमारा आवास और हमारे लोग 'हम' से भिन्न हैं क्या ? फिर, उन सबका आवास, और उन सब के लोग भी, हमारे निकट हुए ।

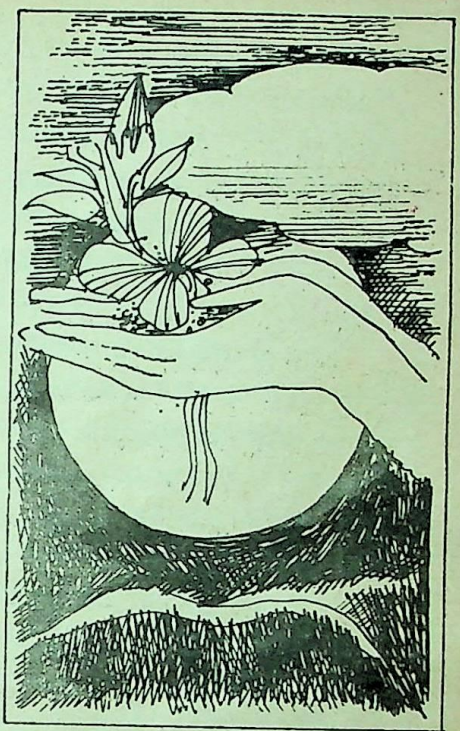

निष्क्रियता और उत्कृष्टता के बीच की विभाजक रेखा जितनी मंद इस समय हो गयी है, उतनी पहले कभी नहीं हुई । सामाजिकता का एक नियम यह भी है कि जिसका आदर किया जाता है, वही ऊपर आता है । हम भक्ति का आदर नहीं करते, उसे ढकोसला, पिछड़ापन और बेसमझी मानते हैं । भारत का अनुभव ऐसा नहीं है । भक्ति के बिना न देह चलती है, न देश चल सकता है ।

देव को लेकर देश की यह बात समझ में आ जाती है । मैं दो दिन में तीन बार वाराणसी के विश्वनाथ मंदिर क्यों गया ? मंदिर एक कहीं, कितनी भी दूर टूटता है, उस पर हमला होता है, अथवा कोई कहीं नया मंदिर बनता है, कितनी ही दूर, और इस संभावना से विहीन कि उसे देखने का मौका मिलेगा, हमें झंकृत और उत्तेजित करता है, भीतरी भक्तिभाव उद्वेलित होता है, और वह लगाव अपने आप उमड़ आता है, जो प्रत्यक्ष दृष्टि से न तो दिखाया जा सकता है, न दीखता है ।

'मंदिर' में यहां सभी आराध्य-स्थलों को ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया जाना चाहिए । यह सांप्रदायिकता, पंथ-प्रियता अथवा भेदभाव की बात नहीं है । इसे अच्छी तरह समझना आवश्यक है, क्योंकि भक्ति जो जोड़ती है, उसी का अर्थ अनेक भागों में विभक्त करना भी होता है । अर्थ निर्धारकों ने अपनी अत्यंत विज्ञता और दूरदर्शिता का परिचय दिया है— जो भक्ति जोड़ती है, वही तोड़ती भी है ।

तोड़ने से मुश्किल है जोड़ना

मनुष्य में यह सामर्थ्य है कि वह विवेक, बुद्धि और अनुभव का उपयोग करे । तोड़ना आसान होता है, जोड़ना मुश्किल, और जो मुश्किल से मुश्किल को जीतता है, वही मनुष्य होता है । टूटने में जो गिरना और निकम्मा होना आता है, वह मनुष्यता में नहीं आता । इसलिए दो अर्थ होते हुए भी, जो मनुष्य है, श्रेष्ठ और सम्माननीय है, वह भक्ति को सेवा, अर्चना, श्रद्धा, प्रीति ही मानता है ।

परंतु उसकी दृष्टि उतनी संकुचित हो गयी है कि वह देश के दृष्य जगत तक ही अपने को सीमित करने लगा है । ऐसा होता नहीं, हो नहीं सकता । जिससे प्रेम है, उसके सात समंदर पार जाने से क्या उसके प्रति अनुराग नहीं दीखता ? जो दीखता है, उस तक मनुष्य ने कुछ भी सीमित नहीं माना है, ज्ञान, विज्ञान, सभी कुछ मनुष्य की यह शक्ति सीमित बताता है कि वह सब कुछ नहीं देख सकता, लेकिन उसी की शक्ति का यह प्रतिमान है कि उसके लिए असीम, अनंत और अप्राप्य कुछ भी नहीं है । 'असंभव' को नहीं मानने वाले ही श्रेष्ठ मनुष्य माने गये हैं ।

यह जो असीमता से अपने को आवृत्त और आत्मसात करने की शक्ति है, उसी ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' का निर्धारण किया है । यह भारत ज्ञान और संकल्प है । हमें जो राजनीतिक में 'हमारा' देश मिला हुआ है, उसी के प्रति परकीया— जैसा व्यवहार करने लगे हैं । परकीया जो होती है, वह कुटुंब की नहीं होत देश के प्रति उसे, देश को, अपना कुटुंब मानकर ही व्यवहार किया जाना चाहिए ।

दिन प्रतिदिन के आचरण में जिस तरह व्यवहार अपनी और अपनों की देह के प्रति किया जाता है, वैसा या वैसा देश के प्रति दिन-प्रतिदिन के व्यवहार का अंग तथा निय बने, यही यहां प्रतिपादित है । देह और देश जो जुड़ाव और लगाव है, उसके कारण यह उचित और आवश्यक है ।

परंतु बहुत हैं, जो अपनी और अपनों की देह के प्रति भी उचित और आवश्यक व्यव नहीं कर पाते । उनसे नीचे वे होते हैं, जो सामर्थ्य होते हुए भी ऐसा नहीं करते । परंतु कितने नीचे होते हैं जो जानबूझकर अपनी अपनों की देह को क्षति पहुंचाते हैं— आत्मघात-आत्महत्या भी होती है, और पति पुत्र, पिता, पत्नी, पुत्री, माता की हत्या भी हो है । यह देह की बात है, यही की यही देश बात है । होते हैं, जो जानबूझकर अपने छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए या निरे पागलपन अपने को और अपनों को नुकसान पहुंचा हैं, लेकिन क्या कोई उनकी सराहना करता जिसका बस चलता है, ऐसे लोगों को पागलखाने ले जाता है ।

अवांछनीय के प्रति भक्ति नहीं

दिक्कत और दुर्भाग्य यह है कि पागलख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश में ही होते हैं । परंतु पागलखाने तो बरदाश्त कर लिये जाते हैं, पागलों को कोई बरदाश्त नहीं करता ।

तो क्यों बरदाश्त किया जाता है, उन्हें जो देश को नुकसान पहुंचाते हैं !

देश और देशभक्ति की बातें और कामनाएं होती रहेंगी, जब तक जो कष्टदायक रूप में पागल है, उसे उसकी कुचेष्टाओं के लिए खुला छुड़ा रखा जाएगा ।

सब कुछ जो बुरा है, हमेशा से होता आया है । लेकिन बुरे से समझौता और बुराई का मान इतना और इस तरह का पहले कभी हमारे यहां नहीं होता था ।

लोकतंत्र में समानता का सिद्धांत होता है, परंतु लोकतंत्र विवेक-बुद्धि के परित्याग का परिपोषक नहीं होता । इस समय हमारे यहां ऐसा है, इसलिए हमारे यहां विकृति, विग्रह, विदेश और विनति है ।

सनमति और सहमति, समानता का भी, यह अर्थ नहीं होता कि जो दुत्कारने योग्य है उसी की जय-जयकार की जाए । कोई व्यवस्था इतनी विकृति नहीं सह सकती ।

देश-भक्ति के जिस अभाव की आजकल अधिक चिंता है, उसका एक पहलू यही है कि जो अवांछनीय है, उसको भक्ति का वह अर्थ नहीं दिया जाता जो अपने से अलग रखने का होता है । जानकारी में ऐसे अधिक हो जाने से जो दंडनीय होने पर भी, अलंकृत, संपन्न और शोभनीय हो रहे हैं, अपने आप भक्ति का वह भाव मंद पड़ने लगता है जो श्रद्धा, सेवा और लगाव उत्प्रेरित करता है ।

देश-भक्ति में ही देशद्रोहियों को दंड का समावेश है । इस ओर कम ध्यान दिये जाने के कारण ही, हमारे यहां देश के प्रति भक्ति का इतना अभाव इन दिनो होता जा रहा है । निरे आर्थिक अर्थ में यह सत्य नहीं है कि खोटे सिक्के ज्यादा होने पर, अच्छे सिक्के छिप जाते हैं । मानव व्यवहार के हर पहलू पर यही नियम लागू है । देशभक्त देशद्रोहियों की भीड़ में दीख नहीं सकते ।

देशद्रोहियों का देश में स्थान नहीं

परमपिता परमात्मा तक का संहारक स्वरूप स्वीकार किया जाता है । देश का यह रूप भी मानना होगा कि उसमें देशद्रोहियों के लिए स्थान नहीं हो सकता ।

देशद्रोह क्या है, इसे समझने के लिए फिर देह पर आना होगा । जो एक रोम भी नोचे, उस पर जरा भी बुरी निगाह डाले, वह देशद्रोही होता है ।

निष्क्रियता और उत्कृष्टता के बीच की विभाजक रेखा जितनी मंद इस समय हो गयी है, उतनी पहले कभी नहीं हुई । सामाजिकता का एक नियम यह भी है कि जिसका आदर किया जाता है, वही ऊपर आता है । हम भक्ति का आदर नहीं करते, उसे ढकोसला, पिछड़ापन और बेसमझी मानते हैं । भारत का अनुभव ऐसा नहीं है । भक्ति के बिना न देह चलती है, न देश चल सकता है । ३- म्यूजियम मार्ग, जयपुर

आनंद वह खुशी है जिसके भोगने पर पछतावा नहीं होता । —*सुकरात*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजेथुआ के महाबीरन मंदिर के प्रति आसपास की जनता में अगाध श्रद्धा है । लोगों का विश्वास है कि महाबीरजी की कृपा से हर काम पूरे हो जाते हैं ।

जहां हनुमानजी ने कालनेमि

लखनऊ से सुलतानपुर— सुलतानपुर से कादीपुर और कादीपुर से सरपुर । पूरे पांच घंटे की यात्रा के बाद बस ने हमें इस छोटे-से कस्बे में उतार दिया । रिक्शा किया और गोमती घाट की ओर टूटी-फूटी सड़क पर चल पड़ा । एक कि.मी. चलने के बाद रिक्शाचालक ने घंटी घनघनाते हुए दायीं और रिक्शा मोड़ दिया ।

कोलतार के इस 'सर्प' के दोनों ओर अधपके गेहूं के खेत अपनी बालों के साथ लहरा रहे थे । अरहर की झुनझुनियोंवाली फलियों से लदी डालियां जमीन की ओर झुकी जा रही थीं । सरसों अपनी पीली बहार को अब फलियों में बंद किये झूम रही थी । आम के कुछ पेड़ अपनी मंजरियों के भार से दबे महमह सुगंध बिखेर रहे थे । महुआ के पेड़ों में कुछ पीले पत्ते दूसरे दिन अपने झड़ने की बाट-पोह रहे थे और उनकी टहनियों की फनी में फूल सजे थे जो प्रातः टपककर धरती पर मादकता बिखेर देते ।

चैत का महीना-वसंत की ऋतु— समूचा वातावरण वांसती था । दिन मंगल का था । सड़क पर सैकड़ों नर-नारी, बाल-वृद्ध हनुमानजी के दर्शन के लिए बढ़े चले जा रहे थे । कुछ लौट भी रहे थे । इक्केवाले, रिक्शेवाले 'हटो, बचो' की आवाज के साथ प्रसन्न मुद्रा में चल रहे थे । ग्रामीण स्त्रियां चार-चार, छह-छह के झुंड में गीत गाती चल रही थीं । सभी प्रसन्न थे । कुछ पुरुष अपने-अपने बच्चे को कंधे पर बैठाये बीड़ी सुलगाये, नाक से धुआं निकालते चले जा रहे थे । कोई गले में पहने चांदी के ताबीज को कुरते के ऊपर निकाले पान चबाते बढ़ रहा था, कोई कान की फुलेहरी को अंगुल से छूकर सूंघता हुआ फाग की कड़ी गुनगुना रहा था, कोई सिदरी की जेब से कंघी निकालकर अपने बालों को संवारता चल रहा था, कुछ मनचले फब्तियां कसते हुए अपने गालों पर हाथ फेरते हुए ताक-झांक करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लोक विश्वास यह भी है कि इसी स्थान पर हनुमान ने मायावी राक्षस कालनेमि को पैरों से दबाकर पाताल लोक भेज दिया था ।

राक्षस को पाताल भेजा था

● डॉ. चंद्रिका प्रसाद शर्मा

आपस में इठलाते चल रहे थे । कुछ आगे बढ़ने पर स्त्रियों का एक झुंड देवी-गीत गाता चल रहा था । दो-दो सहेलियां आपस में हाथ मिलाये चल रही थीं । मुदित मुद्रा में वे टहकारे स्वर में गा रही थीं—

भोरा जियरा, लहरिया लेइ
देवी तोरे दरसन कां ।
तोरे चरनन ऊंसु जा ढ़ राम
मड़या तोरे दरसन कां ।

अब भीड़ बढ़ रही थी । एक किनारे तमाम इक्के, खड़खड़े और रिक्शे खड़े थे । वहीं रिक्शा चालक ने रिक्शा रोक दिया । हम भीड़भाड़भरी गलियों को पार करते, दुकानों का दृश्य देखते ब्रह्मचारीजी के स्थान पर पहुंच गये । विजेथुवा ग्राम के महाबीरन से संबंधित जानकारी जो उनसे तथा अन्य कई लोगों से प्राप्त हुई वह इस प्रकार है :

. महाबीरन की प्राचीन कथा

जब लंका में राम-रावण युद्ध हो रहा था तो मेघनाद द्वारा छोड़ी गयी शक्ति लगने से लक्ष्मण मूर्छित हो गये थे । हनुमान लघु स्वरूप धारण कर सुषेन वैद्य को भवन समेत उठा लाये । सुषेन ने धवलागिरि से संजीवनी बूटी लाने को कहा, तभी लक्ष्मण के प्राण बच सकते थे । हनुमान संजीवनी बूटी लेने चल पड़े । उधर रावण के एक दूत ने यह सब रावण को बता दिया । रावण तुरंत कालनेमि के घर गया और माया बल से हनुमान का पथ अवरोध करने का निर्देश दिया । कालनेमि माया रचना में बड़ा पटु था । उसने इसी स्थान (विजेथुवा) पर एक सुंदर मनमोहक आश्रम बनाया । स्वयं एक साधु का वेश धारण कर वहीं मंदिर में अराधना करने लगा ।

हनुमान आकाश मार्ग से पवन वेग से धवलागिरि की ओर चले जा रहे थे । इस सुंदर आश्रम को देखकर वे प्यास के कारण रुक गये । कालनेमि ने उन्हें बताया, 'मैं त्रिकालदर्शी हूं । तुम जिस कार्य के लिए जा रहे हो, उसे मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान गया हूं। इस समय राम-रावण में भयंकर युद्ध हो रहा है। निःसंदेह राम विजयी होंगे। मैं अपनी ज्ञान दृष्टि से सब कुछ देख रहा हूं। तुम समीप के मकरी कुंड में जाकर स्नान करो और तब मैं अपना दिव्य ज्ञान तुम्हें भी सिखा दूंगा।'

हनुमान ने मकरी कुंड में स्नान हेतु प्रवेश किया। उनके पैरों से एक मकरी लिपट गयी। हनुमान के चरण स्पर्श से उसने अपना वह शरीर त्याग दिया और सुंदर दिव्य अप्सरा बन गयी। वास्तव में वह एक अप्सरा ही थी, जो एक मुनि के शापवश मकरी हो गयी थी और इस कुंड में रहती थी। शाप देते समय मुनि ने कहा था कि जब हनुमान इस मार्ग से जाएंगे तब तेरा उद्धार होगा। उस अप्सरा ने हनुमान को बताया कि यह साधु नहीं है, यह मायावी राक्षस है। इतना कहकर वह अप्सरा आकाश लोक को चली गयी। इधर हनुमान क्रुद्ध होकर उस राक्षस के समीप गये और बोले, 'हे मुनि। मैं पहले आपको गुरुदक्षिणा दे दूं बाद में आप मुझे अपना दिव्य ज्ञान दें।' उनका इतना कहना था कि वह कपटी राक्षस कालनेमि अपना वास्तविक स्वरूप धारण कर उत्तर दिशा की ओर भागा। हनुमान ने उसे अपनी पूंछ में लपेटकर पटक दिया और दाहिने पैर से दबा दिया फलतः वह पाताल में चला गया। इसके उपरांत वे संजीवनी बूटी लेने धवलागिरि की ओर चले गये।

महाबीरन का मुख्य मंदिर

अपनी प्राचीनता संजोये हुए यह मंदिर सुलतानपुर जौनपुर आजमगढ़, बाराबंकी, फैजाबाद और प्रतापगढ़ जनपदों के जनमानस में विशिष्ट श्रद्धा का केंद्र बना हुआ है। मंदिर के अंदर दक्षिण की ओर अभिमुख महाबीरजी (हनुमान) की प्राचीन प्रतिमा है। प्रतिमा का दाहिना पैर अंदर धंसा हुआ है और बांया पैर ऊपर उठा है। मंदिर के तरुण पंडा बाबा श्री नरेन्द्र प्रताप ने यह किंवदंती बतायी—

'महाबीर के पैर के नीचे कालनेमि राक्षस भी दबा पड़ा है। अमर होने के वरदान के कारण वह मरा नहीं है। इसलिए महाबीरजी उसे पैरों से दाबे हैं।''

यहां महाबीरजी की प्रतिमा का प्रतिदिन और सिंदूर से अभिषेक होता है। प्रातः-मध्य और सायं के भोग का प्रबंध स्थानीय हलवा बारी-बारी से करते हैं। मंदिर में तीन बार आरती भी होती है। वर्ष में तीन विशेष अव पर यहां लाखों दर्शनार्थी आते हैं। हनुमान जयंती के अवसर पर श्रद्धालुओं की भीड़ रात्रि के बाद से शुरू हो जाती है। इस दिन १०८ घड़े दूध से प्रतिमा का अभिषेक किय जाता है। संप्रति यह कार्य रामानुज सेवा संस्थान, लक्ष्मी नारायण मंदिर विजेथुवा द्वार किया जाता है। दूसरा बड़ा मेला श्रावण मा के शुक्ल पक्ष की पंचमी के बादवाले मंगल होता है। और तीसरा मेला इसी के बाद व मंगल को, जिसे यहां के लोग बुढ़वा मंगल कहते हैं। इन तीन बड़े मेलों के अतिरिक्त मंगलवार और शनिवार को यहां अच्छा-ख मेला लग जाता है।

यहां पर प्रसाद की कई दुकानें हैं जिनमें बताशे, लड्डू, पेड़े और बर्फी बिकती है। दुकानों की गंदगी और मंदिर के अंदर की में आगे बढ़ने की होड़-सी लगी रहती है। मंदिर के बरामदे में बहुत-सी प्राचीन प्रतिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर-उधर पड़ी हैं । पुरातत्त्वों को इनमें काफी महत्त्वपूर्ण सामग्री मिल सकती है । मंदिर के बाहर कई माला-फूल बेचने वाले माली बैठे रहते हैं । नीचे के ओंठ के बीच सुरती दाबे, पैसे गिनते हुए अनंतराम माली से जब पूछा गया कि तुम्हारी दिनभर में कितनी आय हो जाती है तो उसने चालाकी भरा उत्तर दिया— 'जउन महाबीरन बाबा के किरपा होइ पात है तउन पिलि जात बाटे ।' मंदिर के चढ़ावे की धनराशि तीन पंडा-परिवारों में बराबर-बराबर बंट जाती है । मंदिर के बरामदे में बैठी तीन-चार बूढ़ी स्त्रियां चढ़ावे के पैसों की गिनती बड़ी योग-मुद्रा में कर रही थीं । काश ! इसी मुद्रा से वे मंदिर की स्वच्छता भी करतीं । मंदिर का पूरा फर्श चिपचिपा रहा था । लगता था महीनों से इसकी धुलाई नहीं की गयी ।

हत्याहरण तीर्थ

महाबीरन के मंदिर की दक्षिण और कुछ दूर चलकर एक विशाल तालाब है । तालाब में चारों ओर पक्की सीढ़ियां बनी हैं । यह वही स्थान है जहां कालनेमि को पाताल भेजने के बाद हनुमान ने स्नान किया था । कालनेमि के वध के पश्चात इस तालाब में स्नान करके हनुमान हत्या से मुक्त हुए थे । इस तालाब में किसी प्रकार की हत्या संबंधी भूलचूक करनेवाले लोग स्नान कर अपने पापों का प्रक्षालन करते हैं । तालाब बहुत गहरा है और जल के निष्कासन का कोई मार्ग नहीं है । इस कारण तालाब का जल बहुत गंदा रहता है । एक वयोवृद्ध सज्जन इस विषय में बताने लगे, "भैया, पाप का रंगु कार होत है । पापी यहि मां नहात हैं मीह मोर महि का जल कार बा ।"

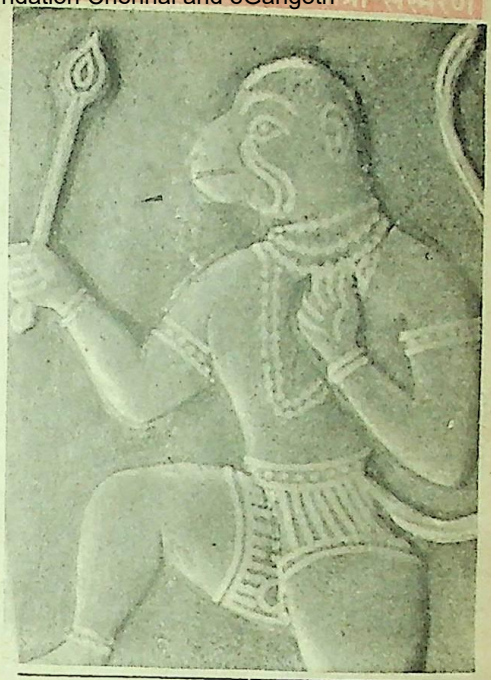

लक्ष्मी नारायण मंदिर

महाबीरन मंदिर के थोड़ी ही दूर पर श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर है । इसी स्थान पर बैठा कालनेमि भगवान की आराधना कर रहा था । हनुमान ने जब उसे मंदिर में अराधना करते हुए देखा था तो उन्हें विश्वास हो गया था कि यह कोई सच्चा संत है । यह मंदिर अब नये ढंग से बनाया जा रहा है । मंदिर के सेवक श्री वेदांती नारायणाचार्य ने बताया कि दस लाख रु. की योजना के अधीन इस मंदिर का पुनर्निमाण किया जा रहा है । उन्होंने मंदिर की विस्तृत योजनाएं भी बतायीं । मेलों के अवसर पर तीर्थयात्रियों का यहां जमघट रहता है । मंदिर के सामने के खुले मैदान में यात्री अपना भोजन बनाते-खाते हैं और वहीं रात्रि में विश्राम करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकरी कुंड

यह वही कुंड है, जिसमें अभिशप्त अप्सरा मकरी के रूप में निवास करती थी । हनुमान को इसी ने कालनेमि राक्षस के कपट वेश को बताया था । हनुमान के चरण स्पर्श से वह मकरी-रूप से पुनः अप्सरा-रूप में हो गयी थी । क्षेत्रीय लोगों में इस कुंड का बहुत महत्त्व है । महाबीरन के दर्शन को आनेवाले लोग पहले इस कुंड में स्नान करते हैं, तब दर्शन करने जाते हैं । इस कुंड के चारों ओर मजबूत पक्की सीढ़ियां बनी हैं । कुंड की गहराई के विषय में पंडा बाबा का कहना था, 'आज तक भीह कुंड के काऊ थाह नहीं लइ पावा । यहु पाताल तक गहिर बाटे ।' कुंड की गहराई पाताल तक हो न हो पर पंडा बाबा की बातों की जड़ें तो पाताल के और नीचे तक गयी थीं ।

मकरी कुंड की यह भी मान्यता है कि किसी भी शुभ संस्कार के पूर्व इसकी सीढ़ियों पर बैठकर गीत गाने से कार्य में कोई बाधा नहीं आती । कुंड के चारों ओर कई स्थानों पर स्त्रियों के झुंड अपनी-अपनी शैली में लोकगीत गा रहे थे । एक स्थान पर मेला गीत गाये जा रहे थे । बोल इस प्रकार थे—

रघुबर संग जाब, हम ना अवध मां रह बइ ।
जे रघुबर रथ पर जइ हैं, भुइयां चली जाबइ... हम ना
जे रघुबर बनफल खर हैं, फोकली बिन खबइ ।... हम ना
जे रघुबर पति बिछे हैं, भुइयां पड़ि जबइ
रघुबर संग जाब हम ना अवध मां रइबइ ।।

विजेथुवा के महाबीरन की मान्यता इस क्षेत्र में बहुत अधिक है । मंदिर के समीप प्रसाद की दुकान रखनेवाला हलवाई छोटे लाल बता रहा था, "महाबीरन मां इतना सत्त है कि जो मानता करो सब पूरी हो जाती है । लोग मुकदमा, शादी-व्याह, रोग-दोख से संबंधित 'मानता' मानते हैं, और महाबीरन की किरपा ते सब का बन जाता है ।'

विजेथुवा महाबीरन के मंदिर का जीर्णोद्धार प्रदेश में पर्यटन विभाग द्वारा किया जा रहा है । बाहर का चौतरफा बरांडा गिराकर नये रूप में बनाया जा रहा है । खंभे उठे तो कई महीने बीत गये पर इस समय काम बंद पड़ा है । सरकारी कामकाज है दो-चार वर्ष तो लग ही जाएंगे । हां, यदि ठेकेदार और इंजीनियर में पटरी बैठ गयी तो शीघ्रता भी हो सकती है ।

—सी-१०, के. रोड महानगर, लखनऊ

महत्त्वाकांक्षा मानव हृदय की इतनी शक्तिशाली अभिलाषा है कि हम चाहे कितने ही उच्च पद पर पहुंच जाएं, संतुष्ट नहीं होते । —मैकियावैली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुड़सवार सैनिकों के अभ्यास से जन्मा लोकप्रिय खेल पोलो

● डॉ. जगमल सिंह

'पोलो' शब्द की व्युत्पत्ति तिब्बती भाषा के शब्द 'पूलू' से मानी जाती है, जिसका अर्थ जड़ (मूल) है। मणिपुरी भाषा में 'काङ' शब्द जड़ के लिए प्रयुक्त होता है। तिब्बती 'पूलू' और मणिपुरी 'काङ' समानार्थी हैं। पूलू से पोलो शब्द बना जबकि मणिपुरी काङ से शगोल (घोड़ा) काङ (जड़) जै (छड़ी) शब्द बना है। काङ एक लता की फली में से निकले गोलाकार फल को कहते हैं। प्रारंभ में यह खेल उसी से खेला जाता था, किंतु बाद में उसका स्थान बांस की गोल जड़ ने ले लिया। फिर भी काङजै शब्द ही प्रचलित

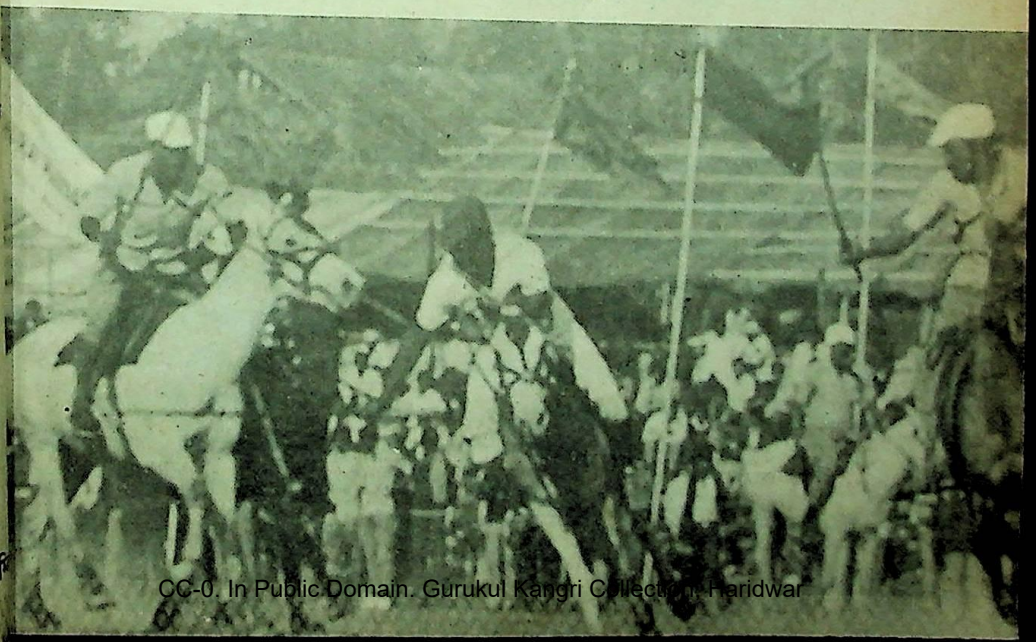

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा । काङ के मणिपुरी में अन्य अर्थ हैं— रथ, मच्छर या गाड़ी का पहिया । वर्तमान विश्वविख्यात खेल पोलो मणिपुर के शगोल काङजै खेल का ही संशोधित संस्करण है ।

मणिपुर के इतिहास में पोलो

पोलो खेल का जन्म कहां हुआ, इस संबंध में कई मत उपलब्ध हैं । ईसा पूर्व ५२२ में फारस के राजा डारियस के शासनकाल में पोलो खेले जाने का वर्णन है, मणिपुर में उससे ढाई हजार वर्ष पूर्व पोलो खेलने के उल्लेख हैं । किंतु मणिपुर के इतिहासकारों की मान्यता है कि वर्तमान पोलो का उद्भव मणिपुर में हुआ तथा यह संसार का प्राचीनतम खेल है और प्रमाणस्वरूप वे मणिपुरी पुया (पुराण) को उद्धृत करते हुए कहते हैं कि शगोल काङजै खेल ३१०० ईसा पूर्व से मणिपुर में खेला जाता था । ३३वीं ईस्वी में पाखङबा नामक राजा की पत्नी लैशरा के राज्याभिषेक के समय शगोल काङजै खेल का आयोजन किया गया था, यह उल्लेख भी उपलब्ध है । पुया ग्रंथों के आधार पर राजा काङबा, जो मणिपुर का प्रथम राजा था, के समय यह खेल खेला गया था और उसके नाम काङबा से ही इसका नाम शगोल काङजै रखा गया । पुराणों में मारजिङ, थाङजिङ आदि देवताओं द्वारा शगोल काङजै खेलने के उल्लेख इसकी प्राचीनता के प्रमाण हैं । इन मणिपुरी पौराणिक उल्लेखों से मणिपुर में इस खेल की प्राचीनता स्वतः सिद्ध है ।

सोलहवीं शताब्दी में मुगलकाल में पोलो खेलने के उल्लेख मिलते हैं । बादशाह अकबर का एक चित्र है, जिसमें वह पोलो खेलते दिखाया गया है । मणिपुर के राजवंश के हस्तलिखित इतिहास 'चैथरोल कुम्बाबा' में महाराज कयाम्बा या कियाम्बा (सन १४६७-१५०८ ई.) के शासनकाल में शगोल काङजै खेलने का उल्लेख है । इसी ग्रंथ के अनुसार महाराजा सगेम्बा (सन १५९७-१६ ई.) के शासनकाल में इंफाल के वर्तमान पोलो-ग्राउंड में प्रथम बार इस खेल के खेले जाने का वर्णन है । उस समय से आज तक यहां यह खेला जाता है ।

मणिपुर पर समय-समय पर पड़ोसी देश बर्मा के आक्रमण होते रहे हैं । मणिपुर की में बसनेवाले मैतै राजा व समाज को पर्वतों बसनेवाले गिरिजन से भी निरंतर संघर्ष कर पड़ा । फलस्वरूप यहां घुड़सवारी का अभ्य किया जाता रहा । अनुमान है यहां की घुड़ सेना व सैनिकों ने इसी अभ्यासक्रम में पोलो खेल का आविष्कार किया होगा । खोङ का (स्थानीय हॉकी) नामक खेल प्रत्येक मणिपु व्यक्ति बचपन से खेलता है और बाद में श काङजै । प्रतिदिन इस खेल के आयोजन क परंपरा रही है । आज भी प्रत्येक गांव में स समय दर्शकों की अपार भीड़ में शगोल क खेल खेला जाता है, जिसमें ७०-८० वर्ष बूढ़े तक उत्साह से भाग लेते हैं । बचपन खेलने के कारण यहां के लोग इसमें दक्षत प्राप्त कर लेते हैं, जो स्वाभाविक ही है ।

प्रथम पोलो क्लब

मणिपुर की महारानी कुमुदिनी देवी बा महाराजा चंद्रकीर्ति सिंह को गृहकलह के अपने विश्वासपात्र लोगों के साथ सन १ में कछार ले गयीं । वहीं मणिपुरी सैनिक प्रतिदिन यह खेल खेलते थे । वहां अंगरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोलो को आज अंतरराष्ट्रीय लोकप्रियता प्राप्त है । इस खेल का जन्म कहां हुआ, इस विषय में अनेक मत प्रचलित हैं । मणिपुर के लोगों का विश्वास है कि यह खेल ईसा के सैकड़ों वर्ष पहले मणिपुर में प्रचलित था और बाद में अंगरेजों के संपर्क में आने के बाद वह विदेशों में भी खेला जाने लगा । मणिपुरी पुराण के अनुसार ईसा से ३१०० वर्ष पूर्व इस क्षेत्र में शगोल काङ जै नामक एक खेल खेला जाता था । बाद में यही खेल पोलो के रूप में प्रचलित हुआ ।

सैनिक अफसर व चाय बागान के विदेशी लोगों ने इसको देखा । वहीं इन प्रवासी मणिपुरी लोगों से उन्होंने यह खेल सीखा तथा संसार के प्रथम पोलो क्लब की स्थापना की गयी । कछार क्लब ने एक परचा छपवाया था, जिसमें कहा गया कि पोलो मणिपुर का राष्ट्रीय खेल है, जो वहां सन १५५० पूर्व से खेला जाता रहा है । सन १८६३ में मेजर शेरार मणिपुर के दो दल कलकत्ता ले गये । जहां पोलो मैच का प्रदर्शन किया गया । सन १८६९ में हसार की दसवीं वाहिनी ने इसे इंगलैंड में खेला । १८७१ ई. में हीथ में सेना की दो टीमों के मैच का भी आयोजन हुआ । सन १८८६ में वहां से यह खेल अमरीका गया । इस तरह मणिपुर का शगोल काङजै खेल विश्व-प्रसिद्ध खेल पोलो के नाम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेला जाने लगा । इस प्रकार मणिपुर का खेल शगोल काङजै अपने जन्म स्थान से बाहर जाकर पोलो के नाम से विश्व-प्रसिद्ध हो गया । जब उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में प्रिंस ऑव वेल्स भारत आये तो मणिपुर से पोलो दल कलकत्ता गये और वहां मैच खेला । मणिपुर का यह प्राचीन खेल विश्व को मणिपुर की देन है । सन १९४९ तक जब मणिपुर पर राजा का शासन था, राज्य सरकार के संरक्षण में यह खेल फलता-फूलता रहा । उसके बाद राज्य का संरक्षण तो समाप्त हो गया परंतु मणिपुर में इस खेल की लोकप्रियता कम नहीं हुई ।

एक आदर्श खेल

शगोल काङजै एक आदर्श खेल है । इसके नियम बहुत ही सरल हैं । इसमें सात-सात घुड़सवार खिलाड़ियों के दो दल होते हैं । प्रत्येक के हाथ में एक छड़ी होती है । गेंद की गोलाई लगभग चौदह इंच होती है । प्रत्येक खिलाड़ी के सिर पर पगड़ी, कमर में घुटनों तक बंधी धोती और घुटनों से टखनों तक कपड़े की पट्टी बंधी रहती है । वक्षस्थल पर आजकल कमीज पहनी जाती है । इस वेशभूषा में घोड़े पर बंधी विशेष जीन पर एक हाथ में लगाम तो दूसरे में छड़ी घुमाता हुआ प्रत्येक खिलाड़ी २००×१०० गज के आयताकार मैदान में उतरता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल के मैदान में खेल के साथ ही खिलाड़ी घुड़सवारी के अद्‌भुत करतब भी दिखाते हैं। छोटी-सी गेंद पर प्रत्येक खिलाड़ी का ध्यान केंद्रित रहता है, सभी उसका पीछा करते हैं। गेंद को सफेद रंग से रंग दिया जाता है। कभी-कभी उसको छड़ी से हवा में उछालकर हाथ में लेकर गोल रेखा के पार ले जाया जाता है। गेंद को मारने के लिए उठी छड़ी से कभी दूसरी छड़ी उलझ जाती है। कभी कंधे-से-कंधे भिड़ते हैं तो कभी घोड़े। खेल की तेज रफ़्तार, दौड़ते घोड़े, खिलाड़ियों की कुशलता और त्वरा देखने योग्य दृश्य हैं।

रेफरी भी घोड़े पर सवार

जब गेंद सीमा रेखा को पार कर जाती है तो गोल माना जाता है। मैदान की सीमा सफेद चूने की रेखाओं से बनायी जाती है। गोल बचानेवाला कोई गोल कीपर नहीं रखा जाता है। रेफरी स्वयं घोड़े पर सवार होकर मैदान में खिलाड़ियों के बीच रहता है। जो टीम पहले सात गोल बनाने में सफल होती है, वही टीम विजेता घोषित की जाती है। खिलाड़ी या घोड़ा जब घायल हो जाता है तो उसके स्थान पर दूसरा लिया जाता है। वास्तव में शगोल काङजै के घोड़े को, घोड़ा कहने से टट्टू कहना ही उपयुक्त होगा। इनकी ऊंचाई चार से साढ़े चार फुट होती है। खेल का समय निर्धारित नहीं है। जब तक कोई टीम सात गोल न बना सके खेल चलता रहता है। इसीलिए एक मैच कभी-कभी कई दिन चलता है। प्राचीनकाल में खेल में राजा उपस्थित रहता था और विवाद की स्थिति में अंतिम निर्णय वही देता था। परंतु अब अंतिम निर्णय रेफरी देता है।

मैत्री भावना का प्रतीक

खेल के आरंभ में खिलाड़ी एक-दूसरे को फल भेंट करते हैं। पूर्ण मैत्री भावना से यह खेल खेला जाता है। दर्शकों से प्रशंसा प्राप्त करने हेतु खिलाड़ी अपने कौशल का प्रदर्शन करते हैं। खिलाड़ियों के साथ दर्शकों का उत्साह भी प्रशंसनीय है। विजय-पराजय के उपरांत खिलाड़ी एक-दूसरे के खेल की प्रशंसा करते हैं और जीतनेवाले दल के सदस्य न केवल दर्शकों से बल्कि पराजित दल के लोगों से भी बधाई और साधुवाद स्वीकार करते हैं।

मणिपुर का इतिहास युद्धों का इतिहास है, जिसमें युद्ध में विजय-पराजय के विवरण भरे हैं। मणिपुर की घुड़सवार सेना के कौशल की प्रशंसा शत्रु सेना के लोगों ने भी की है। शगोल काङजै खेल का मणिपुरी घुड़सवार सेना की कुशलता में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मणिपुर के इतिहास में विजय के अध्याय जोड़ने में इस खेल की तथा मणिपुर के वीरों के शौर्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यह खेल मणिपुर की प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति तथा शौर्य का प्रतीक है।

खेलप्रियता के ही परिणामस्वरूप मुक्ना, युबी लाकपी, खोङकाङजै, काङ आदि अनेक स्थानीय खेल यहां अत्यंत प्राचीनकाल से खेले जाते रहे हैं और आज भी प्रतिदिन खेले जाते हैं। खेलप्रियता के कारण ही यहां के खिलाड़ियों ने विविध राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय खेल-कूद प्रतियोगिताओं में ख्याति अर्जित की है।

—२/४८, प्रताप नगर,
ब्यावर-३०५९०१

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

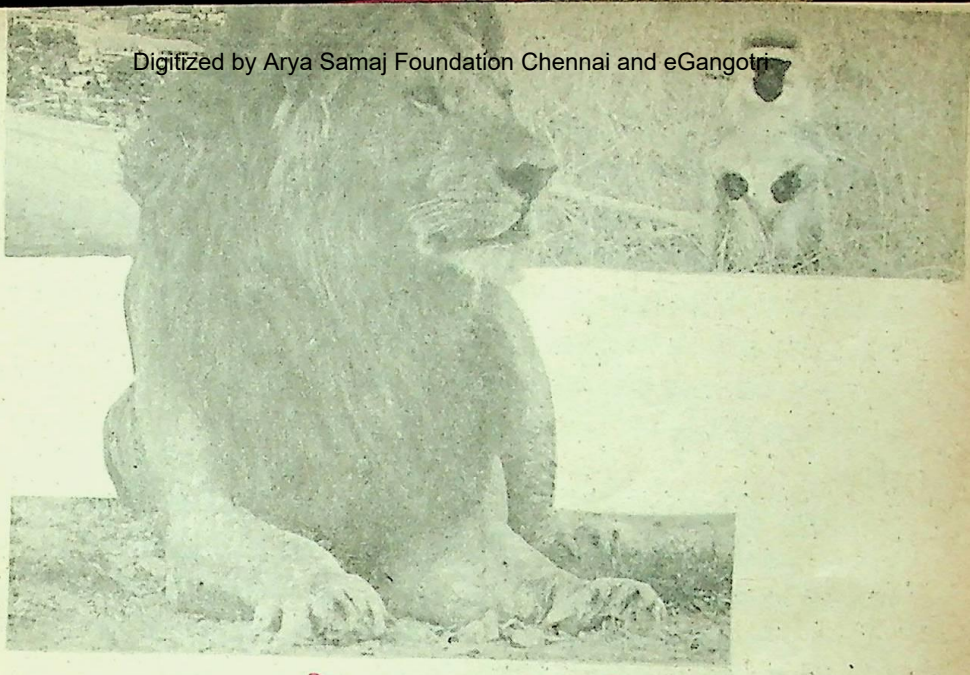

भारत में जन्मा सिंहों का रहस्यमय देवता–एडमसन

● मुकुन्ददास माहेश्वरी

हाल ही में सारी दुनिया को आश्चर्यचकित कर देनेवाले एक ऐसे महान वन्य पशुपालक पराक्रमी पुरुष जॉर्ज एडमसन का नाम उछलकर सामने आया है जिसके चरणों में अफरीका के सिंह लोटते थे और जिसकी टक्कर का कोई इनसान आज तक इस धरती पर कभी नहीं जन्मा । अफरीका के नैरोबी शहर से २५० कि.मी. दूर कोरा नामक उसी के द्वारा निर्मित सिंहों के रक्षित क्षेत्र में डाकुओं ने सिंहों के इस देवता की निर्मम हत्या कर दी । एडमसन की मृत्यु के पश्चात उसके अद्‌भुत वन्य-जीवन के निम्नलिखित सत्य उजागर हुए हैं—

जॉर्ज एडमसन के पिता जॉन एडमसन मध्य भारत की एक रियासत में उच्चाधिकारी थे । उन्हें क्या पता था कि सन १९०६ में वीर भूमि भारत में उन्होंने अपने जिस बेटे को जन्म दिया है वही एक दिन मां दुर्गा देवी का प्रचंड भक्त बनकर अफरीका के खतरनाक सिंहों का विश्व विख्यात देवता बन जाएगा । सन १९२० में एडमसन परिवार भारत छोड़कर अफरीका के कीनिया इलाके में बस गया और कॉफी की खेती करने लगा जहां कुछ वर्षों तक पिता को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेती में सहयोग देने के बाद जॉर्ज हाथी दांत के लिए हाथियों का शिकार करने, सोने की तलाश में भटकने, शहद तथा मोम का धंधा करने तथा व्हिस्की की खाली बोतलों में दूध बेचने के धंधे में लगकर अच्छे पैसे कमाने लगा। सन १९४४ में जॉर्ज का विवाह जॉय नामक एव सुंदर तथा हिम्मतवर युवती से हो गया और वह सपत्नीक आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगा।

कलेजे के पक्के तथा निशाने के सच्चे एडमसन के जीवन में अचानक एक नया क्रांतिकारी मोड़ सन १९५६ में तब आया जब उसने एक दिन एक भयंकर विकराल आदमखोर सिंहनी को मार गिराया। वह शेरनी अपने पीछे ३ बच्चे १ नर मादा छोड़ गयी जिन्हें एडमसन दंपती ने न केवल पाला बल्कि नैरोबी से २५ मील की दूरी पर तीनों नदी के किनारे, कोरा नामक बेहद कंदीली तथा रोंगटे खड़े कर देनेवाले घने जंगलों भरे ग्रेनाइट की पहाड़ियों वाले इलाके में ५०० वर्ग मील क्षेत्र का अपना

विश्व विख्यात सिंह पालन केंद्र स्थापित कर डाला। कोरा में उन्होंने सिंहों के सपरिवार रहने, उनके खाने-पीने, घूमने-फिरने, उनके प्रशिक्षण, साफ-सफाई, दवा-दारू आदि की अच्छी व्यवस्था की। जॉर्ज ने अपने भाई टेरेंस के साथ अपने लिए सुविधापूर्ण मकान तथा विश्रामगृह की भी व्यवस्था की और सड़कें भी बनवायीं। सिंह-सिंहनियों को उनके बच्चों सहित रहने के लिए लोहे की मजबूत जालियों के कटघरे भी बनाये गये। धीरे-धीरे एडमसन के सिंहों के विचित्र आश्रम के चर्चे अफरीका, इंगलैंड, इटली, अरब, फ्रांस, जरमनी, रूस तथा अमरीका तक जा पहुंचे और यूरोप के बड़े-बड़े पत्रकार, बुद्धिजीवी, फिल्म निर्माता, लेखक, पशु-व्यवसायी आदि विमान द्वारा नैरोबी पहुंचकर कोरा आने लगे। नैरोबी हवाई अड्डे पर एक सूचना-पटल पर लिखे इस वाक्य से उनकी उत्सुकता बढ़ जाती— "सावधान। सिंह सड़कों पर घूम रहे हैं। समझ-सोचकर, रुककर चलिए।" कोरा पहुंचकर एडमसन दंपती की कार्यप्रणाली देखकर तो वे उस समय भय, आश्चर्य तथा रोमांच से भरकर दंग रह जाते जब वे बड़े-बड़े विकराल सिंह-सिंहनियों को एडमसन के पांवों में लोटते, खेलते, उसकी डांट-फटकार और मार-पीट सहते तथा झुंड बनाकर उसके पीछे-पीछे पालतू कुत्तों या बिल्लियों-जैसे चलते-फिरते देखते थे। यही कारण था कि उन सभी ने अखबारों, रेडियो तथा समस्त टेलीविजन केंद्रों से एक मत से प्रचारित किया था कि कोरा के सिंह-आश्रम का दुबला-पतला, उघारेबदन, केवल एक हाफ और पांवों में सैंडिल पहने, कंधे पर कैमरा

-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लटकाये तथा हाथ में साधारण डंडा लिये एक चुग्गी दाढ़ी वाला एडमसन बाबा सिंहों को पालतू बनाकर एक चमत्कार पैदा कर रहा है। यह समाचार पाते ही कोरा स्थित एडमसन का सिंह-आश्रम दान-दक्षिणा के धन से भरने लगा। एडमसन भी पालतू सिंहों को बेचकर, फिल्म निर्माताओं से फिल्में उतारने के बदले पैसे लेकर, दर्शकों से आश्रम-दर्शन का शुल्क लेकर तथा पत्र-पत्रिकाओं को दिये गये साक्षात्कारों से करोड़ों रुपये कमाने लगा। यही कारण था कि अफरीका के अनेक आदिवासी गोरोहों के ईर्ष्यालु नेता उसे और उसके आश्रम को नष्ट करने की ताक में रहने लगे। उनका पहला हमला लगभग १० वर्ष पूर्व हुआ जब उन्होंने आश्रम के ही एक नौकर द्वारा एडमसन की पत्नी की हत्या करवा दी। दूसरा अंतिम हमला शिफ्टा कबीले के डाकुओं ने अगस्त ८९ में किया और गोलियों से इस ८३ वर्षीय बूढ़े, सिंहों के देवता बाबा एडमसन के शरीर को छलनी कर डाला। एडमसन की मौत के बाद पुलिस द्वारा की गयी जांच-पड़ताल में उसके कोरा स्थित मकान से अनेक बहुमूल्य दस्तावेजों और सामग्रियों के साथ ही भारत की देवी-वाहिनी मां दुर्गा की एक फोटो भी प्राप्त हुई जो उसकी प्रेरणा-स्रोत थी और जिसकी वह प्रति नियम से पूजा किया करता था। भारत के पत्रकारों को खोज करनी चाहिए कि क्या एडमसन सचमुच कोई रहस्यमय व्यक्तित्व था ? क्या उसके शरीर में किसी दैवी आत्मा का वास था ? क्योंकि कोई साधारण मानव ऐसा चमत्कार नहीं दिखला सकता।

आई.बी. वल्लभदास पैलेस, जबलपुर (म.प्र.)

वे संजोये हैं प्राचीन परंपरा

जरमनी के एक भाषा-विज्ञानी डॉ. क्लाउस पेटर त्सोलर का मत है कि पश्चिमोत्तर गढ़वाल के बांगन क्षेत्र के निवासी आज भी बोलचाल में उन संस्कृत शब्दों का प्रयोग करते हैं, जिनके बारे में यह विश्वास किया जाता था कि वे सदियों पहले प्रचलन से बाहर हो, विलुप्त हो चुके हैं। इतना ही नहीं यहां के निवासी तीन हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन परंपराओं को भी अब तक संजोये हुए हैं।

संस्कृत के ये प्राचीन शब्द वैदिक कालीन संस्कृत के हैं। इनके अलावा इनकी बोलचाल में पुराकालीन केंटम भाषा के भी शब्द हैं। केंटम भाषा भारत-योरोपीय भाषा की एक शाखा है। इसके बारे में अब तक यह जानकारी नहीं थी कि यह विश्व के इस भाग में भी कभी बोली जाती थी। केंटम भाषा का इस क्षेत्र में पाया जाना उस विवादास्पद प्रश्न कि आर्य भारत के मूल निवासी थे या कहीं बाहर से आये, के संदर्भ में एक विशेष महत्त्व रखता है।

डॉ. त्सोलर एक जरमन छात्रवृत्ति पर गढ़वाल की बोलियों का अध्ययन कर रहे हैं। उनका कहना है कि दिलचस्प बात यह है कि बांगनी लोग संस्कृत के सैकड़ों दुर्लभ शब्दों को, जिनमें से आज अनेक तो संस्कृत भाषा में भी लिपिबद्ध नहीं हैं, साथ ही बांगनी परंपरागत व्याकरण और आर्य रीति-रिवाजों को भी बचाये हुए हैं। वे अनेक कृदंत, उपसर्ग, प्रत्यय और संस्कृत व्याकरण के पुरानी तरह के मिश्रित शब्दों का प्रयोग करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेती में सहयोग देने के बाद जॉर्ज हाथी दांत के लिए हाथियों का शिकार करने, सोने की तलाश में भटकने, शहद तथा मोम का धंधा करने तथा व्हिस्की की खाली बोतलों में दूध बेचने के धंधे में लगकर अच्छे पैसे कमाने लगा। सन १९४४ में जॉर्ज का विवाह जॉय नामक एव सुंदर तथा हिम्मतवर युवती से हो गया और वह सपत्नीक आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगा।

कलेजे के पक्के तथा निशाने के सच्चे एडमसन के जीवन में अचानक एक नया क्रांतिकारी मोड़ सन १९५६ में तब आया जब उसने एक दिन एक भयंकर विकराल आदमखोर सिंहनी को मार गिराया। वह शेरनी अपने पीछे ३ बच्चे १ नर मादा छोड़ गयी जिन्हें एडमसन दंपती ने न केवल पाला बल्कि नैरोबी से २५ मील की दूरी पर तीनों नदी के किनारे, कोरा नामक बेहद कंदीली तथा रोंगटे खड़े कर देनेवाले घने जंगलों भरे ग्रेनाइट की पहाड़ियों वाले इलाके में ५०० वर्ग मील क्षेत्र का अपना

विश्व विख्यात सिंह पालन केंद्र स्थापित कर डाला। कोरा में उन्होंने सिंहों के सपरिवार रहने, उनके खाने-पीने, घूमने-फिरने, उनके प्रशिक्षण, साफ-सफाई, दवा-दारू आदि की अच्छी व्यवस्था की। जॉर्ज ने अपने भाई टेरेंस के साथ अपने लिए सुविधापूर्ण मकान तथा विश्रामगृहों की भी व्यवस्था की और सड़कें भी बनवायीं। सिंह-सिंहनियों को उनके बच्चों सहित रहने के लिए लोहे की मजबूत जालियों के कटघरे भी बनाये गये। धीरे-धीरे एडमसन के सिंहों के इस विचित्र आश्रम के चर्चे अफरीका, इंगलैंड, इटली, अरब, फ्रांस, जरमनी, रूस तथा अमरीका तक जा पहुंचे और यूरोप के बड़े-बड़े पत्रकार, बुद्धिजीवी, फिल्म निर्माता, लेखक, पशु-व्यवसायी आदि विमान द्वारा नैरोबी पहुंचकर कोरा आने लगे। नैरोबी हवाई अड्डे पर एक सूचना-पटल पर लिखे इस वाक्य से ही उनकी उत्सुकता बढ़ जाती— "सावधान। सिंह सड़कों पर घूम रहे हैं। समझ-सोचकर, रुककर चलिए।" कोरा पहुंचकर एडमसन दंपती की कार्यप्रणाली देखकर तो वे उस समय भय, आश्चर्य तथा रोमांच से भरकर दंग रह जाते जब वे बड़े-बड़े विकराल सिंह-सिंहनियों को एडमसन के पांवों में लोटते, खेलते, उसकी डांट-फटकार और मार-पीट सहते तथा झुंड बनाकर उसके पीछे-पीछे पालतू कुत्तों या बिल्लियों-जैसे चलते-फिरते देखते थे। यही कारण था कि उन सभी ने अखबारों, रेडियो तथा समस्त टेलीविजन केंद्रों से एक मत से प्रचारित किया था कि कोरा के सिंह-आश्रम में दुबला-पतला, उघारेबदन, केवल एक हाफ और पांवों में सैंडिल पहने, कंधे पर कैमरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लटकाये तथा हाथ में साधारण डंडा लिये एक चुग्गी दाढ़ी वाला एडमसन बाबा सिंहों को पालतू बनाकर एक चमत्कार पैदा कर रहा है। यह समाचार पाते ही कोरा स्थित एडमसन का सिंह-आश्रम दान-दक्षिणा के धन से भरने लगा। एडमसन भी पालतू सिंहों को बेचकर, फिल्म निर्माताओं से फिल्में उतारने के बदले पैसे लेकर, दर्शकों से आश्रम-दर्शन का शुल्क लेकर तथा पत्र-पत्रिकाओं को दिये गये साक्षात्कारों से करोड़ों रुपये कमाने लगा। यही कारण था कि अफरीका के अनेक आदिवासी गिरोहों के ईर्ष्यालु नेता उसे और उसके आश्रम को नष्ट करने की ताक में रहने लगे। उनका पहला हमला लगभग १० वर्ष पूर्व हुआ जब उन्होंने आश्रम के ही एक नौकर द्वारा एडमसन की पत्नी की हत्या करवा दी। दूसरा अंतिम हमला शिफ्टा कबीले के डाकुओं ने अगस्त '८९ में किया और गोलियों से इस ८३ वर्षीय बूढ़े, सिंहों के देवता बाबा एडमसन के शरीर को छलनी कर डाला। एडमसन की मौत के बाद पुलिस द्वारा की गयी जांच-पड़ताल में उसके कोरा स्थित मकान से अनेक बहुमूल्य दस्तावेजों और सामग्रियों के साथ ही भारत की सिंह-वाहिनी मां दुर्गा की एक फोटो भी प्राप्त हुई जो उसकी प्रेरणा-स्रोत थी और जिसकी वह नित्य नियम से पूजा किया करता था। भारत के पत्रकारों को खोज करनी चाहिए कि क्या एडमसन सचमुच कोई रहस्यमय व्यक्तित्व था ? या उसके शरीर में किसी दैवी आत्मा का वास था ? क्योंकि कोई साधारण मानव ऐसा चमत्कार नहीं दिखला सकता।

—डी.बी. वल्लभदास पैलेस, जबलपुर (म.प्र.)

वे संजोये हैं प्राचीन परंपरा

जरमनी के एक भाषा-विज्ञानी डॉ. क्लाउस पेटर त्सोलर का मत है कि पश्चिमोत्तर गढ़वाल के बांगन क्षेत्र के निवासी आज भी बोलचाल में उन संस्कृत शब्दों का प्रयोग करते हैं, जिनके बारे में यह विश्वास किया जाता था कि वे सदियों पहले प्रचलन से बाहर हो, विलुप्त हो चुके हैं। इतना ही नहीं यहां के निवासी तीन हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन परंपराओं को भी अब तक संजोये हुए हैं।

संस्कृत के ये प्राचीन शब्द वैदिक कालीन संस्कृत के हैं। इनके अलावा इनकी बोलचाल में पुराकालीन केंटम भाषा के भी शब्द हैं। केंटम भाषा भारत-योरोपीय भाषा की एक शाखा है। इसके बारे में अब तक यह जानकारी नहीं थी कि यह विश्व के इस भाग में भी कभी बोली जाती थी। केंटम भाषा का इस क्षेत्र में पाया जाना उस विवादास्पद प्रश्न कि आर्य भारत के मूल निवासी थे या कहीं बाहर से आये, के संदर्भ में एक विशेष महत्त्व रखता है।

डॉ. त्सोलर एक जरमन छात्रवृत्ति पर गढ़वाल की बोलियों का अध्ययन कर रहे हैं। उनका कहना है कि दिलचस्प बात यह है कि बांगनी लोग संस्कृत के सैकड़ों दुर्लभ शब्दों को, जिनमें से आज अनेक तो संस्कृत भाषा में भी लिपिबद्ध नहीं हैं, साथ ही बांगनी परंपरागत व्याकरण और आर्य रीति-रिवाजों को भी बचाये हुए हैं। वे अनेक कृदंत, उपसर्ग, प्रत्यय और संस्कृत व्याकरण के पुरानी तरह के मिश्रित शब्दों का प्रयोग करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विस्फोट

● गायत्री कमलेश्वर

अखबार की सुर्खियां पढ़-पढ़कर श्यामलाल का मन जाने कैसा हो गया था। 'पंजाब में ग्यारह लोगों की हत्या, पांच लोग एक ही परिवार के थे'— पढ़कर उनको लगा कि उनके सीने पर किसी ने गोली मार दी है। लाल-लाल खून उनके सीने से निकल रहा है, जिसे वह रोक नहीं पा रहे।

जब भी वह इस तरह की घटना पढ़ते हैं, तो उनके सामने जालंधर की एक घटना, ताजा हो जाती है। शाम का समय था। एक चाय की दुकान पर श्यामलाल आराम से चाय पी रहे थे। उसी समय एक बम फटने की आवाज सुनायी दी। सभी लोग स्तब्ध रह गये, फिर भागने लगे। पर वह वहीं दुकान में अंदर की तरफ छिप गये। वहीं से उन्होंने गोलियां चलने की आवाजें सुनीं और कुछ आदमियों को भागते हुए देखा। फिर उन्होंने देखा कि एक सरदार लड़का गोलियों से छलनी होकर जमीन पर गिर पड़ा और तड़पने लगा। यह देखते ही दुकानवाले ने उन्हें और भी पीछे की तरफ धकेल दिया और स्वयं भी दुकान के नीचे जाकर दुबक गया। फायरिंग के डर से वह कुछ कर नहीं पाये बस, बेबस हो देखते रहे। वह लड़का तड़प-तड़पकर वहीं ढेर हो गया। उस दिन से उनका उस शहर में मन नहीं लगा। उस समय बाल-बच्चे दिल्ली में थे। रिटायरमेंट का एक साल बाकी था। कुछ सोचा-न-समझा, इस्तीफा देकर दूसरे दिन दिल्ली चले आये। उस समय कितना कमजोर हो गया था उनका मन।

बुढ़ापा भी कितनी अजीब चीज है। आदमी बहुत कुछ करने की बात दिल-दिमाग से सोच लेता है, पर तन की लाचारी आदमी को हमेशा पीछे की तरफ खींचती जाती है। जालंधर से आने के बाद वह सोचते थे कि अपने मित्र

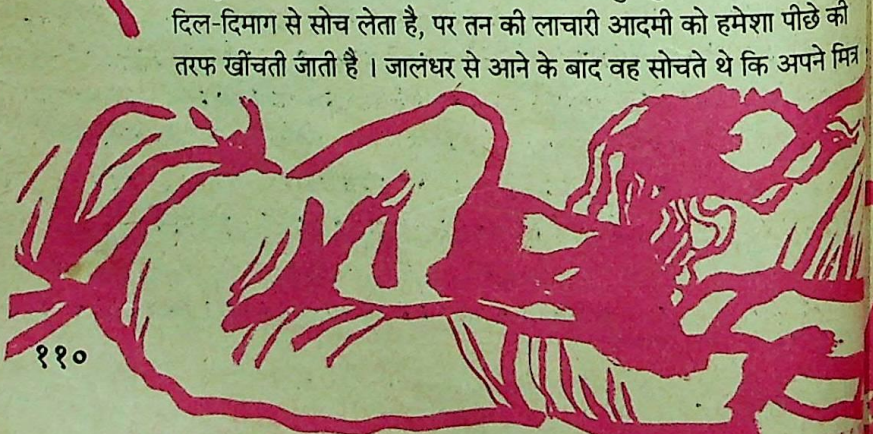

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीवास्तवजी के साथ मिलकर वह भी एक संस्था बनाएंगे, जिनमें उन लोगों के लिए पैसा इकट्ठा करेंगे, जो घर से बेघर हो गये हैं, जिनकी मांगें सूनी हो गयी हैं, जिनके जवान बेटे आतंकवादियों के शिकार हो गये हैं । वह यदि इस तरह का काम करेंगे तो उनका भी मन हरा बना रहेगा । पर पिछले साल हार्ट अटैक के चपेट में आ जाने से उनका मन वहीं का वहीं दबा रह गया ।

उस समय उसके बड़े बेटे ने बहुत तीमारदारी की थी, अस्पताल से घर, और घर से अस्पताल— एक कर दिया था । उनकी पत्नी ज्यादातर अस्पताल में ही रहती थी । उनकी दोनों बेटियों ने भी बहुत सेवा की थी । इसके बाद से वह उन सब के मुहताज-से हो गये थे, जैसे उनका कोई अपना मन ही नहीं रह गया हो । लोग उनसे कहते, दवा खा लो तो वह दवा खा लेते । लोग कहते कि खाना खा लो, तो वह खाना खा लेते । यहां तक कि सोना-जागना भी अब उनके अपने मन का नहीं रह गया था । रात के आठ बजते ही घर के सब लोग कहने लगते 'बाबूजी को भी जल्दी खाना खिला दो, ताकि वह आराम से सो जाएं ।' यह सुनते ही उनका मन बिखर जाता और सोचने लगते कि इन लोगों ने मुझे बिलकुल अपाहिज बनाकर रख दिया है । उनका कितना मन करता है कि, लल्लू, उनका बड़ा बेटा, जब फैक्टरी से लौटे, तब उससे ढेर सारी बातें करें कि आजकल दुनिया में क्या-क्या हो रहा है । उसकी पूरी जानकारी ले । उसके साथ धीरे-धीरे खाना खाएं फिर शांति से सो जाएं । इससे उनको लगेगा कि उनके होने का भी दुनिया में कुछ बजूद है । यद्यपि, वह लल्लू के फैक्टरी से आने तक जागते रहते थे । वैसे उनको भी उसके लौटने की चिंता लगी रहती थी । पर वह बोलते कुछ नहीं थे । बाद में उन्हें धीरे-धीरे नींद आ जाती थी ।

जब से उन्हें हार्ट अटैक हुआ है, घर के लोग उन्हें बुद्धू या पागल समझने लगे हैं । पहले तो अखबार से उन्हें बड़ा लगाव था, पर जब से आतंकवादी घटनाएं छपने लगी थीं, उनको पढ़कर उनका मन अजीब-सा पनीला हो जाता था । उनको लगता था कि हर इनसान जैसे कीड़े-मकोड़े की जिंदगी जी रहा है । इनसान की कोई कीमत ही नहीं रह गयी हो । फिर भी अखबार पढ़ना उनकी आदत से जुड़ गया था । बिना पढ़े वह रह भी नहीं सकते थे । उनको लगता था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि अखबार पढ़ने के बाद जैसे उन्होंने बहुत बड़ा काम कर लिया है ।

जिस दिन उनके दोस्त श्रीवास्तव साहब आ जाते थे, उस दिन उन्हें बहुत अच्छा लगता था । जाने कहां-कहां के प्लान बनते रहते थे । श्रीवास्तव साहब बहुत जीवंत आदमी थे । रिटायर होने के बाद उन्होंने एक क्लब में सेक्रेटरी की नौकरी कर ली थी । इसलिए सारी दुनिया की खबरें उनके पास होती थीं । श्यामलाल की उनके साथ बहुत पटती थी । श्रीवास्तव साहब ने बहुत बार उनसे क्लब में आने को कहा था । उनका मन भी करता था कि वे रोज शाम को तैयार होकर उनके क्लब चले जाया करें । ताकि घर की चक-चक से थोड़ी राहत मिले । एक दिन वह क्लब जाने के लिये तैयार भी हुए, शाम को चार बजे ही कोट-पैंट पहनकर उस पर मफ़लर डालकर तैयार हुए कि तभी घर में हंगामा-सा मच गया । पत्नी ने जोर से कहा, 'तन तो चलता नहीं है, जाने को तैयार बैठे हैं क्लब में, क्या करेंगे वहां जाकर ? अब क्लब में जाने की तुम्हारी उमर रही है क्या ? उससे तो अच्छा है घर में बैठे-बैठे रामायण पढ़ो, कुछ तो शिक्षा मिलेगी । अगर रास्ते में गिर-गिरा गये तो कौन संभालेगा तुम्हें ?' यह सुनते वह मन मसोस कर रह गये । वह बोल नहीं पाये कि रामायण की जानकारी उन्हें नहीं चाहिए, अब तो उन्हें बदलते समाज को कैसे सुधारा जाए, इसकी जानकारी चाहिए ।

वह सोचने लगे कि इससे अच्छे तो वह जालंधर में ही थे । दहशत थी तो क्या हुआ, हर काम वह अपने मन से तो कर लेते थे । अपने दिल से जीते थे । यहां आकर तो वह सब के हाथों का खिलौना बन गये हैं । जैसे उनका अपना कुछ तो रहा ही नहीं, यहां तक कि कपड़े भी दूसरों की पसंद के पहनने पड़ते हैं । एक दिन सुबह वह बनियान पहनकर लंबी-लंबी सांसें ले रहे थे ताकि बीजों को बर्दाश्त करने की उनमें थोड़ी-सी ताकत आ जाए, उसी समय उनकी पत्नी बोली थी, 'अरे राम-राम तुम भी अपने से खिलवाड़ कर रहे हो, मैं कहती हूं कमीज पहन लो । लल्लू की लायी हुई दवाओं से थोड़ा-सा तन भरा है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

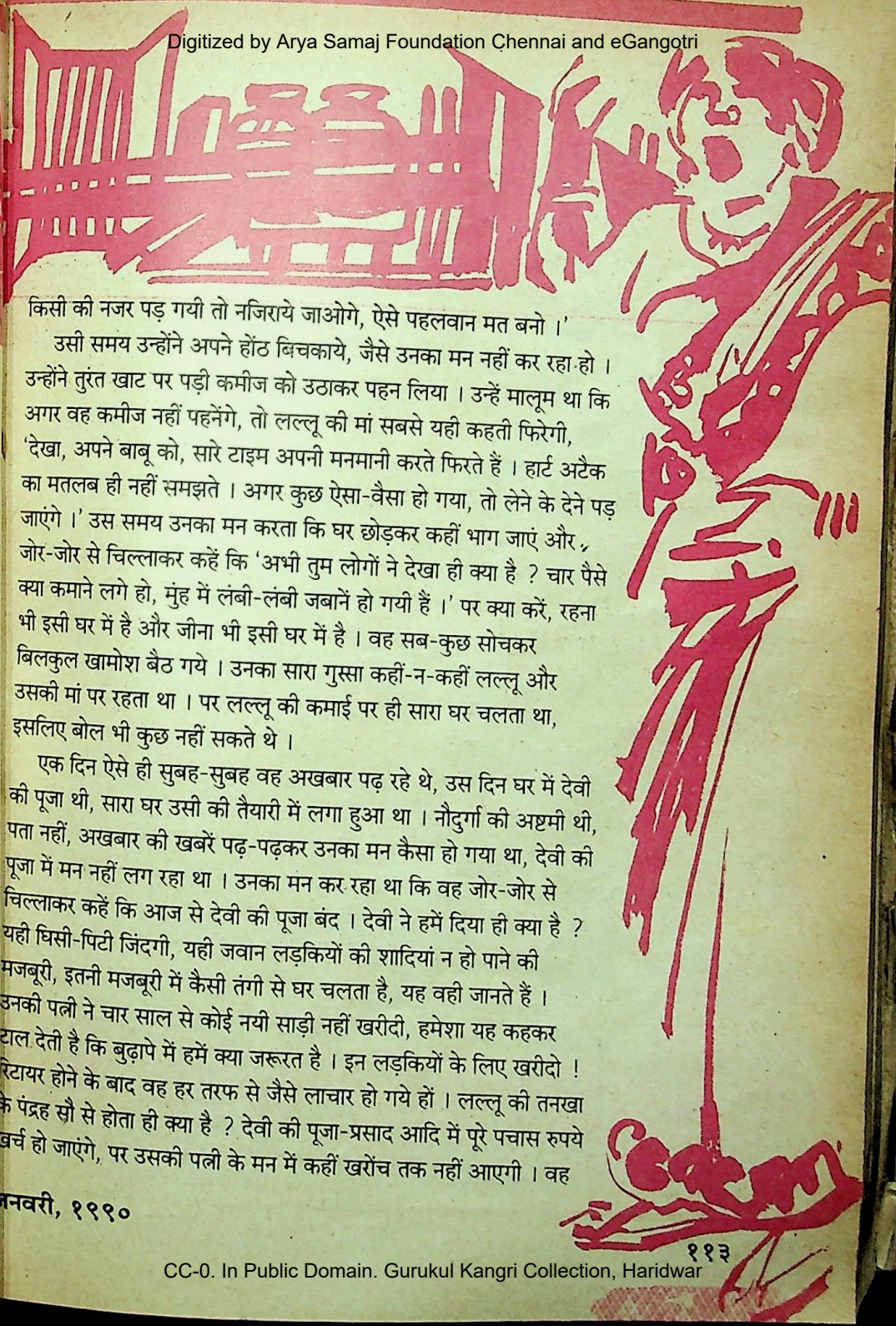

किसी की नजर पड़ गयी तो नजिराये जाओगे, ऐसे पहलवान मत बनो ।'

उसी समय उन्होंने अपने होंठ बिचकाये, जैसे उनका मन नहीं कर रहा हो । उन्होंने तुरंत खाट पर पड़ी कमीज को उठाकर पहन लिया । उन्हें मालूम था कि अगर वह कमीज नहीं पहनेंगे, तो लल्लू की मां सबसे यही कहती फिरेगी, 'देखा, अपने बाबू को, सारे टाइम अपनी मनमानी करते फिरते हैं । हार्ट अटैक का मतलब ही नहीं समझते । अगर कुछ ऐसा-वैसा हो गया, तो लेने के देने पड़ जाएंगे ।' उस समय उनका मन करता कि घर छोड़कर कहीं भाग जाएं और जोर-जोर से चिल्लाकर कहें कि 'अभी तुम लोगों ने देखा ही क्या है ? चार पैसे क्या कमाने लगे हो, मुंह में लंबी-लंबी जबानें हो गयी हैं ।' पर क्या करें, रहना भी इसी घर में है और जीना भी इसी घर में है । वह सब-कुछ सोचकर बिलकुल खामोश बैठ गये । उनका सारा गुस्सा कहीं-न-कहीं लल्लू और उसकी मां पर रहता था । पर लल्लू की कमाई पर ही सारा घर चलता था, इसलिए बोल भी कुछ नहीं सकते थे ।

एक दिन ऐसे ही सुबह-सुबह वह अखबार पढ़ रहे थे, उस दिन घर में देवी की पूजा थी, सारा घर उसी की तैयारी में लगा हुआ था । नौदुर्गा की अष्टमी थी, पता नहीं, अखबार की खबरें पढ़-पढ़कर उनका मन कैसा हो गया था, देवी की पूजा में मन नहीं लग रहा था । उनका मन कर रहा था कि वह जोर-जोर से चिल्लाकर कहें कि आज से देवी की पूजा बंद । देवी ने हमें दिया ही क्या है ? यही घिसी-पिटी जिंदगी, यही जवान लड़कियों की शादियां न हो पाने की मजबूरी, इतनी मजबूरी में कैसी तंगी से घर चलता है, यह वही जानते हैं । उनकी पत्नी ने चार साल से कोई नयी साड़ी नहीं खरीदी, हमेशा यह कहकर टाल देती है कि बुढ़ापे में हमें क्या जरूरत है । इन लड़कियों के लिए खरीदो ! रिटायर होने के बाद वह हर तरफ से जैसे लाचार हो गये हों । लल्लू की तनखा के पंद्रह सौ से होता ही क्या है ? देवी की पूजा-प्रसाद आदि में पूरे पचास रुपये खर्च हो जाएंगे, पर उसकी पत्नी के मन में कहीं खरोंच तक नहीं आएगी । वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी तरह पूजा करेगी, जैसे कि बीस साल पहले उसकी सास किया करती थी। यह सोचकर उनका मन उदास और हो गया था।

फिर भी पत्नी के कहने पर श्यामलाल नहा-धोकर देवी की पूजा के आसन पर बैठ गये थे और विधि-विधान से पूजा करने लगे थे। एक तरफ तश्तरी में धूप की सामग्री रखी थी, और दूसरी तरफ एक कटोरी में असली घी रखा हुआ था, जिसमें लौंग के जोड़े पड़े हुए थे। श्यामलाल ने अपने चश्मे के अंदर से असली घी से भरी कटोरी की तरफ देखा, तो उनका मन अंदर से चीत्कार करने लगा। सोचने लगे कि घर में दाल में डालने के लिए आधी कटोरी से भी कम घी निकलता है। और देवी के लिए पूरी कटोरी घी निकाला गया है। पूरे दस-पंद्रह रुपये का होगा। पर वह कुछ बोले नहीं। रिटायरमेंट के बाद वह हर चीज का हिसाब लगाने लगे थे। कहीं कुछ फालतू खर्चा होता, तो दोनों जवान बेटियों की जवानी उनके सामने आ जाती थी।

फिर भी श्यामलाल हमेशा की तरह देवी के मंत्र पढ़-पढ़कर हवन-सामग्री डालते जा रहे थे, और उसकी पत्नी एक-एक चम्मच से घी डालती जा रही थी। हवन की महक से सारा वातावरण सुगंधित हो गया था। अगियारी की लपट के अंदर से श्यामलाल ने देखा कि देवी की प्रतिमा जैसे कांप रही हो। उनको एक क्षण के लिए अपनी मां याद हो आयी। मां के रहने से उन्हें किसी बात की चिंता नहीं रहती थी। घर जैसे बहता हुआ चलता चला जाता था। कहीं कोई बाधा नहीं, पर अब तो जमाना ही बदल गया है।

पूजा समाप्त होने पर उनकी पत्नी ने सबके लाल चंदन का टीका लगाया। श्यामलाल उठने लगे, तो हमेशा की तरह देवी के पैर छुए और जाकर फिर अपनी खाट पर बैठ गये। उनकी पत्नी ने कटोरियों में सबको हलवा दिया। श्यामलाल ने सोचा, अच्छा ही है, देवी के नाम पर एक दिन तो हंसी-खुशी का निकल जाता है। सब लोग, हंस-हंसकर हलवा खाने लगे थे। उसी समय श्यामलाल की निगाह अखबार पर पड़ी। उन्होंने अपना तकिया सीधा किया और लेटकर अखबार पढ़ने लगे।

उसकी पत्नी जो अभी तक अपने बाल-बच्चों के साथ हंस-बोल रही थी। श्यामलाल के हाथ में अखबार देखते ही हुंकारते हुए बोली, 'लल्लू बेटे, मैं इनके अखबार से तंग आ गयी हूं। अभी हम लोग सब बैठे हुए बातें कर रहे थे, यह तो हुआ नहीं कि जरा हम लोगों के साथ बातचीत करते कुछ अपनी कहते, कुछ हमारी सुनते। बस, इनको तो अखबार क्या दिख जाता है, उससे जोंक की तरह चिपट जाते हैं। इनको नहीं मालूम कि यह अखबार एक रुपए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीस पैसे का आता है । अखबार बंद कर दें, तो एक तरफ का खर्चा ही बचे । अखबार पढ़-पढ़कर यह बिलकुल सूम होते जा रहे हैं, घर की कोई चिंता है इन्हें ।' उन्होंने अपनी पत्नी की तरफ आंखें तरेरकर देखा और जोर से कहा, 'तुम लोग जो जी में आये करो, मैं तो कुछ बोलता नहीं, जो भर कटोरी देवी को असली घी चढ़ाया गया है, वह क्या मुफ़्त का आया है ।' उसी समय लल्लू बोला, 'बाबूजी, यह बात तो मैं भी सोच रहा था कि अम्माजी ने कटोरीभर असली घी चढ़ाया है, पर अम्माजी का खुला हुआ हाथ है, देवी के नाम पर उनको कौन रोक सकता है ? पर देवी की तो पूजा एक दिन की ही है, अगर जरा-सा घी में खर्चा हो गया तो क्या हुआ, पर आजकल अखबार में रखा ही क्या है ? वही आतंकवादी घटनाएं ! मेरा तो मन ही नहीं करता अखबार पढ़ने का । बाबूजी, तुम तो ठहरे, हार्ट के मरीज ! मैं तो कई दिनों से सोच रहा था कि आप को ऐसी खबरें नहीं पढ़नी चाहिए, यही सब तो दिल को कमजोर बनाती हैं ।'

उसी समय श्यामलाल ने आंखें तिरछी करके लल्लू की तरफ देखा, जैसे कह रहे हों, घर के खर्चे में उन्हीं का अखबार बंद करके सब-कुछ पूरा पड़ जाएगा । फिर वह निश्चिंत भाव से बोले, 'तुम लोगों के जो जी में आये करो । मेरी क्या, मैं कैसे भी जी लूंगा ।' उसी समय पत्नी बोली, 'देखा लल्लू, तुम्हारे बाबूजी तो बिलकुल संन्यासी बनते चले जा रहे हैं । मैं एक सही बात बतलाती हूं तो उसे भी नहीं सुनते ।'

श्यामलाल को लगा कि उनकी पत्नी भी उनकी तरफ से बिलकुल बदल गयी है । उसके बच्चे तो नयी रोशनी के हैं । वह अगर बदल गये, तो कोई बात नहीं । उनका मन जैसे डूब-सा गया, उनकी आंखों की कोरों में आंसू भर आये । पर उन्होंने उनको अंदर-ही-अंदर पी लिया और आंखें बंद कर करवट बदलकर लेट गये । फिर भी वह सोच रहे थे कि इन लोगों को यदि अखबार बंद करना है, तो बंद कर दें, वह सुबह उठकर टहलने के बहाने श्रीवास्तवजी के बंगले पर चले जाया करेंगे । वहीं अखबार भी पढ़ लिया करेंगे और उनसे जी खोलकर बातें भी कर लिया करेंगे । यह सोचते-सोचते उन्हें नींद आ गयी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन श्यामलाल की नींद सुबह पांच बजे ही खुल गयी । उनकी आंखें खिड़की से दिखायी देनेवाले आसमान की तरफ लगी हुई थीं, जहां एक तारा टिम-टिम करता हुआ चमक रहा था । वह सोचने लगे कि कहते हैं कि मरने के बाद लोग तारे बन जाते हैं । शायद, वह भी एक दिन मरने के बाद इसी तरह तारा बन जाएंगे । उसी समय चिड़ियों की चहचहाट आने लगी । वह धीरे-से उठे और बाथरूम के अंदर दरवाजा बंद करके धीरे-से लाइट जलाकर अपनी घड़ी देखी, साढ़े पांच बज रहे थे । वह सोच रहे थे कि छह बजे के लगभग वह चुपचाप कुंडी खोलकर बाहर निकल जाएंगे । पहले तो वह सीधे गार्डन की तरफ टहलने निकल जाएंगे, फिर सीधा श्रीवास्तव साहब के बंगले पर । अगर श्रीवास्तव साहब उठ गये, तो ठीक है नहीं तो, उनके नौकर से पूछकर बरामदे में पड़ी कुरसियों पर बैठकर उनका इंतजार करेंगे । यह सब सोचकर उनके शरीर में एक अजीब-सी स्फूर्ति आ गयी थी । झटपट नित्य कर्म से निपटकर खूंटी से उतारकर अपना कोट पहना, सरदी न लग जाए, इसलिए पेंट भी पहन ली, और गरदन में मफलर डालकर अपनी छड़ी ले चुपचाप बाहर के दरवाजे की कुंडी खोलने लगे । हलके अंधेरे में न जाने कुंडी पर कैसा हाथ पड़ा कि कुंडी झनझनाकर खुलकर नीचे लटक गयी । आवाज सुनकर लल्लू एकदम उठ बैठा, बोला, "कौन है ?" वह वहीं ड्राइंग रूम के सोफे पर कंबल ओढ़े सो रहा था । श्यामलाल उसकी आवाज से जैसे घबड़ा गये, उनकी छड़ी नीचे गिर गयी । लल्लू समझ गया कि बाबूजी हैं । फिर वह बोला, 'बाबूजी, इतनी सुबह-सुबह आप कहां जा रहे हैं ?' श्यामलाल घबड़ाये-से बोले, 'टहलने के लिए ।' तब तक उनकी पत्नी भी उठ आयी । श्यामलाल को देखते ही बोली, 'तुम तो कमाल करते हो ! देखो, बाहर कितनी ठंडी हवा चल रही है । ऐसी हवा में आप घूमने जाएंगे, अगर कुछ हो गया, तो हम लोगों को लेने के देने पड़ जाएंगे ।' श्यामलाल ने देखा कि तब तक दोनों बेटियां भी आकर खड़ी हो गयीं । वह वहीं सोफे के किनारेवाली कुरसी पर धम्म से बैठ गये और जोर से बोले, 'मैं तो तुम लोगों के लिए मुसीबत बन गया हूं । बहुत हो गया सहते-सहते, जब देखो तुम सभी लोग मेरे ही पीछे पड़े रहते हो, क्या समझ रखा है मुझे । घर की भेड़-बकरी ! जैसे घुमा दिया, वैसे घूम गये । मैं आदमी हूं, मेरे भी हाथ-पांव है । मेरा भी मन करता है कि कुछ अपने भी मन की करूं । घूमने जा रहा था, कोई चोरी करने नहीं जा रहा था । बड़े अकलमंद बन गये हो तुम लोग, अखबार न पढ़ो, कि दिल का हल्आ बन जाएगा । यह न करो, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न करो, मगर चीखें मत। मैं तो ऐसा चला जाऊं। एक ले-देकर अखबार पढ़ता था, वह भी बंद करवा दिया। अभी अखबारवाला आ रहा होगा, बोल देना कि हमारे घर का खर्चा बहुत बढ़ रहा है, इसलिए बंद कर दो।...बहुत काटने लगा हूं मैं, किसी दिन इसी तरह घर से निकल जाऊंगा, तुम लोग देखते ही रह जाओगे।'

फिर अपनी पत्नी की तरफ मुड़कर बोले, 'संभालती रहना अपना घर और अपने बाल-बच्चे। हमारा कहीं पता भी नहीं लगेगा। अब मुझसे यह सब बातें नहीं सही जातीं। पानी सिर से ऊपर निकल गया है।' कहते-कहते उन्होंने अपनी गरदन सोफे के सिरहाने टिका ली और छत की तरफ देखने लगे।

उनकी दबंग आवाज सुनकर कोई कुछ नहीं बोला। पत्नी ने धीरे-से कुछ बोलने की कोशिश की तो लल्लू ने उन्हें अंगुली के इशारे से मना कर दिया। बाबूजी की बातों से सभी लोग ऐसे डर गये थे जैसे किसी बम विस्फोट की आवाज सुनकर लोग स्तब्ध रह जाते हैं। कमरे में ऐसा ही सन्नाटा छा गया था।

—डब्लू.-२६, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली

कुरसी खाली करे कि...

गोरिल्ला एक वर्ष की उम्र पूरी करते-करते वयस्क हो जाता है। वह वयस्क होते ही अपने दल के नेता को चुनौती देने लगता है कि अब वह जवान हो गया है, लिहाजा वह उसके लिए अपना पद छोड़ दे। चुनौती देने का तरीका भी अजीब होता है। गोरिल्ला दोनों पैरों पर खड़ा होकर अपनी छाती पीटने लगता है, साथ ही वह गुर्राता भी जाता है। धीरे-धीरे उसकी गुर्राहट बढ़ती जाती है फिर वह चिल्लाता हुआ दौड़ने लगता है और दोनों हथेलियां जमीन पर थपथकाने लगता है।

× ×

हमारे यहां दूरदर्शन के कारण पत्र-पत्रिकाओं की बिक्री पर काफी असर पड़ा है, जबकि अमरीका में लगभग डेढ़ सौ टेलीविजन केंद्र और उनके अनेक चैनल होने के बावजूद पत्रिकाओं की प्रसार संख्या बढ़ती ही रही है। अमरीका में इस समय लगभग २० हजार साप्ताहिक, मासिक और त्रैमासिक पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। पत्रिकाओं की संख्या और उनके व्यापक प्रसार का सबसे बड़ा कारण है विविध विषयों पर विशिष्ट प्रकार की पत्रिकाएं, जो पाठकों के विभिन्न वर्गों की रुचियों को ध्यान में रखती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आइए चलें जंगलों की ओर

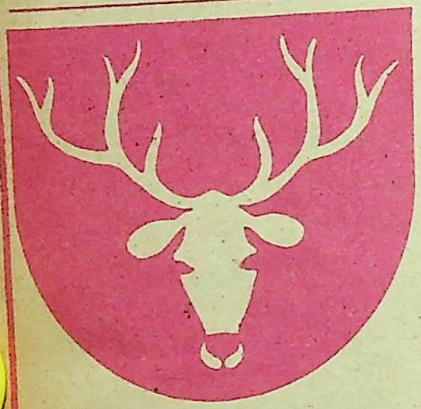

पारिस्थितिकी संतुलन बनाये रखता है नेवला

नेवला : जिसे हम सर्प के शत्रु के रूप में जानते हैं । मदारी भी सड़कों के किनारे सांप और नेवले की लड़ाई दिखाकर अपना पेट पालते हैं । पर हमारे लिए नेवला और अन्य महत्त्वपूर्ण भूमिकाएं भी निभाता है । वह चूहे, बिच्छू एवं अन्य तरह के कीड़े-मकोड़ों को मारकर पारिस्थितिकी संतुलन में महत्त्वपूर्ण योग देता है । सरीसृपवर्ग परिवार का सदस्य यह प्राणी अफरीका के उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र का मूल निवासी माना जाता है लेकिन वह एशियाई देशों के साथ-साथ अन्य देशों में भी पाया जाता है । भारत में नेवले की छह प्रजातियां पायी जाती हैं ।

नेवले का आकार छोटा होता है पर उसमें गजब की फुरती होती है । छोटे-छोटे पैर, पैने नाखून और सघन पूंछवाला यह जीव सर्वत्र आसानी से दौड़ सकता है । यह खिलाड़ी प्रवृत्ति का जीव है । दौड़ना-छिपना-झपट्टा मारना और विजातीय जीव के साथ लड़ना, नेवले की आम आदत है । यह अकसर दिन में ही शिकार करता है ।

आमतौर पर नेवला अकेले रहता है पर कभी-कभी यह समूह में भी पाया है । नेवले की घ्राण शक्ति काफी तेज है और वह गंध के जरिए ही अपनी खाद्य सामग्री तलाशता रहता है ।

पंचतंत्र एवं महाभारत में भी नेवले को पात्र बनाकर अनेक कथाएं कही गयी हैं ।

शरमीला मनोवर

मनोवर एक शरमीला पक्षी है । यह मुख्यतः हिमालय के क्षेत्र में पाया जाता है । मनोवर नर का शरीर भूरे रंग का होता है जिस पर उभरे होते हैं श्वेत बिंदु । उसकी चोटी के पर चित्तीदार होते हैं । पीठ और डैनों पर बैंगनी रंग के चित्ते पड़े होते हैं ।

मादा मनोवर का शरीर और डैने गाढ़े भूरे रंग के होते हैं । इसकी पीठ पर काले चित्ते होते हैं । ऐसे ही काले चित्ते डैनों पर भी होते हैं । इन काले चित्तों के बीच-बीच में सफेद बिंदु बड़े भले लगते हैं । मादा मनोवर मई और जून के मध्य एक बार में पांच से सात अंडे देती है ।

मनोवर बेहद शरमीला पक्षी है । जरा-सी आहट पाते ही उड़ जाता है और झाड़ियों में छिप जाता है ।

नेवला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट होने से बचे गये

गोरिल्ला

अफरीका में रुआंडा और जाइरे के जंगलों में एक विदेशी महिला पंद्रह वर्षों तक गोरिल्लाओं के बीच रही । उसका एकमात्र लक्ष्य था—गोरिल्लाओं की आदतों का अध्ययन, उनका संरक्षण । बाद में एक दिन इस समर्पित कर्मठ महिला की हत्या कर दी गयी । इस महिला का नाम था—फोस्सी ! फोस्सी ने गोरिल्लाओं पर एक पुस्तक भी लिखी थी जिसमें उसने बताया था कि मध्य अफरीका में विरुंगा ज्वालामुखी के आसपास गोरिल्लाओं की संख्या तेजी से घट रही है और यदि उनका संरक्षण न किया गया तो उनकी प्रजाति लुप्त हो जाएगी ।

गोरिल्लाओं के विनाश का एक कारण रुआंडा की घनी आबादी भी थी । लोग बसने के लिए जंगल काट रहे थे—जंगल जिनमें गोरिल्ला रहते थे । जंगल काटे जाने का गोरिल्लाओं के अस्तित्व पर भी गहरा असर पड़ा था । लेकिन उसकी किसी को कोई चिंता नहीं थी ।

कुछ समय पूर्व फोस्सी और उसके मिशन के संबंध में एक फिल्म बनी 'गोरिल्लाज इन द मिस्ट' । यह फिल्म बेहद लोकप्रिय हुई और प्रकृति प्रेमी पर्यटक, उन स्थानों को देखने के लिए व्यग्र हो उठे, जहां गोरिल्ला रहते थे । फल यह हुआ कि रुआंडा में विदेशी पर्यटकों का तांता लग गया । इससे विदेशी मुद्रा की आय भी बढ़ी । अब गोरिल्लाओं के संरक्षण की ओर सबका ध्यान गया । फल यह हुआ कि अब गोरिल्लाओं की संख्या बढ़ रही है ।

खतरे में है प्राणी उद्यान

गैर कानूनी खुदाई, लकड़ी की कटाई, शिकार और अनियंत्रित पशु चराई से पेरु स्थित महत्त्वपूर्ण वन्य जीवन प्राकृतिक आवास 'मनु राष्ट्रीय उद्यान' को गंभीर खतरा पैदा हो गया है । उच्च पर्वतीय क्षेत्र से अमेजन के निम्न भू-भाग तक करीब १४ लाख हेक्टर क्षेत्र में घास मैदानों का विस्तार है । इनमें पौधों की एक हजार से अधिक प्रजातियां हैं जो जड़ी-बूटियों के दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं और पक्षियों की आठ सौ से अधिक प्रजातियों सहित कई प्रकार के प्राणी यहां पाये जाते हैं ।

सर्वाधिक खतरा मनु में पिंक्वेन नदी के किनारे स्थित गैर कानूनी खुदाई शिविरों से है । खुदाई से नाजुक वन्य जीवन प्राकृतिक आवास नष्ट हो जाते हैं और नदी में गाद का जमाव हो जाता है जो वहां के जीवन को नष्ट कर देता है । सर्वाधिक शिकार होता है जल ऊदबिलाव और एंडियन हिरण का । इन दोनों प्राणियों को संकटग्रस्त प्रजातियों में गिना गया है ।

पेरु की सरकार एक ओर तो बाहरी कर्ज से बुरी तरह जकड़ी हुई है और दूसरी ओर गोरिल्लाओं का सामना भी करना पड़ रहा है । इस कारण वह उद्यान संरक्षण करने और उसके लिए आवश्यक खर्च जुटा पाने में असमर्थ हो गयी है । विश्व प्रकृति निधि के द्वारा उद्यान को संरक्षण प्रदान करने के लिए शिविरों का आयोजन भी किया गया है । (सी. ई. ई. एन. एफ. एस.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी आवाज पुकार रही है!

● हबीब खान एवं लखन अकेला

इंगलैंड की संसद में भी वहां के सांसदों ने इस संदर्भ में प्रश्नों की बौछार कर दी थी कि आखिर हडसन ने शहजादों को मारकर उनका खून क्यों पिया ? कहते हैं कि तब उन्हें यह जवाब दिया गया था कि हडसन यदि ऐसा नहीं करता तो आवेग से उसके मस्तिष्क की रगें फट जातीं और वह मर भी सकता था जो कुछ हो मेजर हडसन ने ऐसी बर्बतापूर्ण अमानवीय हरकतें कर भारतीयों के हृदय में अंगरेजों के प्रति जो घृणा के बीज का रोपण किया, इसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में शायद ही कहीं मिले ?

बहादुरशाह मुगल सल्तनत की आखिरी कड़ी के रूप में अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल की उपज थे। यद्यपि अंतिम दिनों में उनकी सत्ता सिमट कर सिर्फ लाल किले तक ही रह गयी थी, जहां वे अपनी तीन बीवियों—हजरत महल, ताजमहल और जीनत महल एवं अपने शहजादों के साथ रहा करते थे।

बुढ़ापे में बादशाहत

बहादुरशाह जफर का जन्म २४ अक्तूबर, १७७५ में हुआ था और उन्हें भारत की बादशाहत १८३७ में साठ वर्ष की उम्र में प्राप्त हुई थी। इनका पूरा नाम सिराजुद्दीन मोहम्मद बहादुरशाह जफर था। इनके पिता का नाम अकबर शाह सानी था।

जफर की किस्मत का सितारा उस समय गर्दिश में पड़ गया, जब १९ सितंबर, १८५७ को अंगरेजों की फौज का दिल्ली के लाल किले पर भी कब्जा हो गया। इसी रात वे अपने साथियों के साथ दिल्ली स्थित हुमायूं के मकबरे में जाकर छिप गये। जामा मसजिद पर भी ठीक इसी समय अंगरेजों ने अपना कब्जा जमाकर वहां अपने सिपाहियों, घोड़ों, कुत्तों और सूअरों को रहने के लिए छोड़ दिया। जामा मसजिद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का इमाम उस समय अंगरेज़ों के साथ मिल गया और जामा मसजिद आम मुसलमानों के लिए १० मई, १८५७ से बंद कर दी गयी । १ अक्तूबर, १८५७ तक इस अवधि में खुले आम सूअर काटे जाते रहे । और जश्न मनाये जाते रहे ।

अंगरेज सिपाहियों को जफर को ढूंढ़ निकालने में ३ दिनों का वक्त लगा और २२ सितम्बर, १८५७ को जफर अंगरेजों द्वारा गिरफ़्तार कर लिये गये और उसी दिन मेजर डब्लूयू. एस. हडसन ने उनके दोनों लड़कों और एक पोते को पकड़ कर सरेआम गोलियां दाग कर उनके सर कलम कर दिये । सौगात के रूप में सरों को ढक कर बूढ़े बादशाह के सामने पेश करके कहा गया, "आज के दिन ब्रिटिश सल्तनत बादशाह सलामत को यह तोहफा पेश करना चाहती है इसे कबूल कीजिए ।" कहते हैं कि जफर के दोनों शहजादों के सिर काटकर उनसे खून के जो कतरे बहे, मेजर हडसन ने चुल्लू लगाकर उन्हें पिया था । बाद में शहजादों के कटे सर घोड़ों की टापों से बांधकर दिल्ली की सड़कों पर घसीटे गये, ताकि यह दृश्य देखकर दिल्ली वासियों के मन में फिर कभी अंगरेजों के खिलाफ कोई साजिश करने की हिम्मत नहीं हो सके ।

आतंक का नंगा नाच

दिल दहला देनेवाली ऐसी करतूतें अंगरेजों ने शायद इसलिए की, क्योंकि इससे पहले तीनों शहजादों को जब बैलगाड़ी में बिठाकर लाल किले की ओर वे ले जा रहे थे तो उनके पीछे दिल्ली वासियों का एक सैलाब उमड़ रहा था । इस सैलाब को शांत करने के लिए आंतक का

सहारा लिया मेजर हडसन ने । शहजादों को नंगा कर खूनी दरवाजे के निकट गोली मार दी ।

इंगलैंड की संसद में भी वहां के सांसदों ने इस संदर्भ में प्रश्नों की बौछार कर दी थी कि आखिर हडसन ने शहजादों को मारकर उनका खून क्यों पिया ? कहते हैं कि तब उन्हें यह जवाब दिया गया था कि हडसन यदि ऐसा नहीं करता तो आवेग से उसके मस्तिष्क की रगें फट जातीं और वह मर भी सकता था जो कुछ हो मेजर हडसन ने ऐसी बर्बतापूर्ण अमानवीय हरकतें कर भारतीयों के हृदय में अंगरेजों के प्रति जो घृणा के बीज का रोपण किया, इसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में शायद ही कहीं मिले ?

बहादुरशाह जफर के प्रति यहां हिंदुओं और मुसलमानों ने इस बात पर अपने आंसू बहाये और हिंदुस्तान की आजादी के लिए खून बहाकर इतिहास का निर्माण किया उसे पढ़कर आज भी किसका दिल मर्माहत नहीं हो उठेगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायर बनकर जीवित

बहादुरशाह जफर ने हिंदुस्तान की आजादी के लिए जितनी और जैसी कुर्बानियां दीं, उन्हें इतिहास कभी भुला नहीं सकेगा; मगर एक शायर के रूप में जो उन्होंने शेर, गजलें और अन्य कलाम लिखे, वे भी उर्दू साहित्य को उनकी एक बड़ी देन ही समझी जाएगी; बल्कि अन्य मुगल काल की ही तरह महान सांस्कृतिक परंपरा को बकायदा शायर बनकर कायम रखा ।

भारत को इस काल ने जहां स्थापत्य कला के प्रतीक स्वरूप ताजमहल, जामा मसजिद आदि दिये, वहीं इसी दौरान भक्त कवियों, सूफियों एवं कलाकारों के रूप में अब्दुल रहीम खान खाना, सूरदास, तुलसीदास, अमीर खुसरो, बीरबल व तानसेन जैसे व्यक्तित्व भी दिये, जिनके गुणों की चर्चा आज भी किसी न किसी रूप में हमेशा होती रहती है ।

साहित्य खूब फूला-फला

अकबर के सदृश ही बहादुरशाह जफर का काल भी साहित्य की दृष्टि से अनुपम था—खुदाए-सुखन मीर हालांकि गुजर चुके थे, लेकिन गालिब, जौक और मौमिन जैसे उर्दू साहित्य के स्तंभ उनके समकालीन थे । दुर्भाग्यवश जफर अंतिम समय में साधनहीन हो गये थे, लेकिन मुगल हुक्मरानों की परंपरा के अनुसार ही उन्होंने कला और साहित्य को अपने समय में भरपूर संरक्षण प्रदान किया था । जौक और गालिब उनके उस्ताद थे । मीर व अमीर खुसरो मानसिक व आध्यात्मिक आदर्श थे । यह इस बात का सबूत है कि उनमें अद्वितीय कला-दृष्टि और साहित्यिक सूझबूझ थी ।

बहादुरशाह जफर हालांकि एक राजपुरुष था लेकिन उनकी शायरी किसी राजपुरुष की निजी वेदना, आत्मपीड़ा और तनावों की द्योतक नहीं थी । वे हर सच्चे शायर की तरह एक आदमी की निजी वेदना और आत्मपीड़ा के कवि थे । उनकी साहित्यिक संवेदना ने मामूली आदमी की व्यक्तिगत त्रासदी की सरहदों को छुआ था ।

उनकी शायरी के चंद मिसालें उपयुक्त बातों की भरपूर पुष्टि करती हैं—

लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में,
किसकी बनी है आलमे ना पायदार में ।
बुलबुल को बागवां से, न सय्याद से गिला,
किस्मत में कैद थी लिखी फसले बहार में ।
एक शाखे गुल पे बैठकर बुलबुल है शाद मां,
कांटे बिछा दिये हैं दिले लालाजार में ।
कह दो इन हसरतों से कहीं और जा बसें
इतनी जगह कहां है दिले दागदार में ।
उमरे दराज मांग के लाये थे चार दिन,
दो आरजू में कट गए, दो इंतजार में ।
है कितना बदनसीब जफर दफन के लिए,
दो गज जमीन भी नहीं मिली कुंचे यार में ।

वास्तव में इस शेर में उनकी तमाम जिंदगी के अनुभव इस तरह सिमटकर दर्द के रूप में उभरे कि आज भी ये दो पंक्तियां पढ़नेवालों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल में उस समय की ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध घृणा और आक्रोश के आवेग ही बढ़ाती है। वास्तव में बहादुरशाह जफर कितने बदनसीब थे।

देश किसी योग्य व्यक्ति के जिम्मे

देश के लिए जफर के दिल में जो जज्बात थे, उन्हें समझने के लिए वह ऐतिहासिक पत्र ही काफी है, जो उन्होंने अंगरेजों के विरुद्ध एक जुट होकर खड़े हो जाने के लिए राजा-महाराजाओं को लिखा था। उन पत्रों में उन्होंने लिखा था कि जिस तरह भी हो और चाहे जिस कीमत पर हो, उनकी दिली ख्वाहिश सिर्फ फिरंगियों को हिंदुस्तान की पाक भूमि से बाहर खदेड़ देना थी। उन्होंने देसी रियासतों और राजा-महाराजाओं से साफ कहा था कि अंगरेजों के भारत से निकल जाने के बाद अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए देश में हुकूमत करने की उनकी जरा भी इच्छा नहीं। वे तो देश को योग्य व्यक्ति के जिम्मे सौंपने के लिए तैयार थे। वास्तव में जफर को ताजोतख्त से नहीं, हिंदुस्तान की आजादी पे मोहब्बत थी और उस आजादी के लिए उनकी बूढ़ी आंखों ने जब अपने जवान बेटों और पोतों के कटे हुए सिर देखे होंगे, तब उस पर क्या जफर की गजल का कोई शेर हो या उसके समय की कोई घटना आज के समय में उसका अर्थ कई गुणा बढ़ गया है। क्योंकि वे एक ऐसे ऐतिहासिक पुरुष थे—जिससे आज भी भारतीयों को प्रेरणाएं मिलती हैं।

इस महान सम्राट ने अंगरेजों की कैद में ७ नवंबर, १८६२ को रंगून (बर्मा) में सदा के लिए आंखें मूंद लीं, लेकिन आज भी उनकी आवाज भारतीयों को पुकार रही है।

३८७, हौज काजी, दिल्ली-६

वे भूखे ही मर जाएंगे

रासायनिक कीटनाशक हालांकि, अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं लेकिन, वे मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकर भी सिद्ध हुए हैं। इसलिए ऐसे कीटनाशक की आवश्यकता महसूस की जाती रही जो कीटनाशक तो हो, लेकिन मानव के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव न डाले। इसके इसके भारतीय वैज्ञानिकों ने नीम के तेल से एक ऐसा यौगिक प्राप्त किया है, जो प्राकृतिक रूप से कीट-रोधी है। इसका नाम उन्होंने 'वेपासाइड' रखा है। यह वेपासाइड कीट-पतंगों को मारता नहीं, बल्कि उन्हें फसलों के पास नहीं फटकने देता। लिहाजा कीट-पतंगें फसल से अपना भोजन प्राप्त न कर पाने के कारण भूखे ही मर जाते हैं। उन्हें मारने की जरूरत ही नहीं पड़ती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे करें विचार और मनन ?

● मुनि किशनलाल

एक बच्चा पढ़ना चाहता है । यह उसका विचार है । जब तक विचार नहीं बनता तब तक आगे मनन का सवाल ही पैदा नहीं होता । मनन में मन का काम इतना ही है, पढ़ा क्या जाए ? क्यों पढ़ा जाए ? कितना पढ़ा जाए ? कब पढ़ा जाए ? कहां पढ़ा जाए ? शुरू में बच्चे का मन खेल में लगता है । खेल-खेल में वह कुछ सीखता है । वैसे-वैसे उसके अपने भी कुछ विचार बनते जाते हैं । जब तक उसके अपने कोई विचार नहीं बनते तब तक वह अपने बड़ों और मार्गदर्शकों के विचार को ही सर्वोपरि मानकर चलता है । कैसे बनते हैं विचार, आइए इस पर चिंतन करें :

प्रत्यक्षीकरण की पद्धति

इस पद्धति में बच्चा किसी अच्छे पढ़े-लिखे विद्वान को देखता है । उसकी बातें सुनता है । ज्ञान से प्रभावित होता है । उसका समाज में आदर होता है । इन सबको देखकर उसे प्रेरणा जागती है कि मैं भी इसी तरह पढ़-लिखकर विद्वान बनूं । देखकर या विश्लेषण करके विचार-दृढ़ करने की, प्रत्यक्षीकरण की चार सीढ़ियां हैं :

विपाक विचय : बच्चा विद्वान या विद्वानों को देखता है, उनकी विद्वत्ता से प्रभावित होता है । जैसे विद्वान यदि इंजीनियर है तो उसकी बनायी हुई वस्तुओं जैसे पुल, मकान, मशीन, सड़क, कार, हवाई जहाज, रेल का इंजन, रेल का डिब्बा, बिजली उत्पादन यंत्र, बिजली वितरण यंत्रों को देखता है । उनकी उपयोगिता को देखता है, जानता है, हृदयंगम करता है और वैसा ही बनना चाहता है, फिर वह यह विश्लेषण करता है कि यह आदमी मेरे-जैसा ही था । फिर भी इनकी परिणति इस प्रकार किसी तरह हो गयी ?

संस्थान विचय : बच्चा प्रत्यक्ष (परसेप्शन) की दूसरी सीढ़ी पर चढ़ता है । वह इंजीनियर की पढ़ाई कहां होती है ? कौन करवाता है आदि की जिज्ञासाओं से भरा हुआ इंजीनियरिंग के संस्थानों को देखता है । इंजीनियरिंग के पाठ्यक्रमों को देखता है । स्वयं अपने को तौलता है, देखता है कि क्या मैं भी इन संस्थानों में प्रशिक्षु बन कभी इंजीनियर बन सकूंगा । वह संस्थान और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्यक्रम का विश्लेषण करता है । स्वयं अपना विश्लेषण करता है और तीसरी सीढ़ी पर पहुंचता है ।

अपाय विचय : अब बच्चा उन कारणों की खोज करता है, उन कारणों को प्रत्यक्ष करता है जिसकी वजह से विद्वान व्यक्ति ने इस गहन विषय को चुना, इन संस्थानों में भरती हुआ और गहन पाठ्यक्रम को पूरा किया । इस तरह प्रत्यक्षण और विश्लेषण करते-करते वह चौथी सीढ़ी पर पहुंचता है ।

आज्ञा विचय : चौथी सीढ़ी पर आकर वह इस निश्चय पर पहुंच जाता है कि वह विद्या की शाखा हस्तगत करने लायक है । उसे अपनी चेतना से जैसे आज्ञा होती है कि तुम इस विद्या को पढ़ो और ऐसा ही बन जाओ । जो योग्यता इस विद्या की प्राप्ति के लिए विद्वान व्यक्ति में है वह तुम्हारे अंदर भी मौजूद है । उसमें आस्था का निर्माण होता है और आगे इस चिंतन में लगता है कि इस विद्या को वह किस तरह हस्तगत करे ?

मनन को चिंतन भी कहते हैं । यह मन का कार्य है इसलिए इसे मनन कहा जाता है । मनन में पूर्व की स्मृति, अनुभव, जानकारी, जहां काम आती है वहां कल्पना, प्रतिमा, विश्वास भी महत्त्वपूर्ण है । तर्क भी निश्चय पर पहुंचने में मदद करता है ।

स्मृति : बीस साल पहले जिस व्यक्ति को देखा था, अचानक उसे देखने पर उसकी स्मृतियां, यादें हमारे दिमाग में उभर जाती हैं । हम जान लेते हैं कि यह व्यक्ति वही है । मेले में जो कुछ देखकर आते हैं घर आकर सबको सारा

मनन को चिंतन भी कहते हैं । मनन में पूर्व स्मृति, अनुभव, जानकारी, कल्पना, प्रतिमा और विश्वास भी महत्त्वपूर्ण है । तर्क भी निश्चय में पहुंचने पर मदद करता है ।

विवरण बता देते हैं । पुस्तक को पढ़ते हैं और उसके बाद जब पुस्तक को याद करते हैं तो उसके प्रकरण एक-एक करके हमारे सम्मुख उभरकर सामने आते रहते हैं । जैसे कि अभी पुस्तक खोलकर पढ़ रहे हों । ऐसा क्यों होता है ? जिस चीज को हम पूरे ध्यान से देखते हैं । वह चीज हमारे दिमाग में घर कर जाती है । और जब चाहे याद आ जाती है । यही धारणा कहलाती है । कुछ चीजें हमें वर्षों पहले की ज्यों-की-त्यों याद रहती हैं तो कुछ चीजें कल देखी हुई आज ही भूल जाते हैं । ऐसा क्यों ? जिसकी धारणा स्पष्ट बनती है, वह वर्षों याद रहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । और जो यों ही चलते-चलाते देखते जाते हैं वे शीघ्र ही विस्मृत हो जाती हैं । आदमी जो कुछ भी जागरुकता पूर्वक करता है, उस काम की प्रक्रिया, अनुभव और जानकारी सद्स्मृति में— धारणा के रूप में सुरक्षित रहती हैं । जब हम कोई नया काम करना चाहते हैं तो ये पूर्व के अनुभव और धारणाएं हमारे नये चिंतन में सहायक होती हैं ।

कल्पना : मनन का दूसरा सहारा है कल्पना, प्रतिमा, विश्वास आदि । मानव जीवन में कल्पना आवश्यक है । उसी के आधार पर मानव अपना भविष्य देखता है । कोई भी कल्पना तभी सार्थक चिंतन का आधार बन सकती है जब वह तथ्यों पर आधारित हो न कि मात्र कल्पना । जितनी भी योजनाएं जीवन के निर्माण के लिए बनायी जाती हैं, उनमें भविष्य की बहुत बड़ी कल्पनाएं जुड़ी रहती हैं । तथ्यहीन कल्पनाओं से रचनात्मक मनन नहीं किया जा सकता । कल्पना और चिंतन में अनेक प्रतीक काम आते हैं । प्रतिमा भी ऐसा ही एक प्रतीक है । प्रत्यक्ष (परशेप्शन) और प्रतिमा (इमेज) में भेद यह है कि प्रत्यक्ष की अपेक्षा इसमें तीव्रता, स्पष्टता और स्थिरता की कमी होती है । प्रतिमा, सिद्धांत (कंसेप्ट) से भी भिन्न है । सिद्धांत या दृष्टि अनाकार होती है किंतु प्रतिमा साकार होती है ।

जितनी तरह की ज्ञानेंद्रियां मनुष्य में होती हैं, वह उतनी तरह की प्रतिमाएं भी निर्मित कर लेता है । इस प्रकार मनुष्य में निम्न इंद्रिय प्रतिमाएं पायी जाती हैं :—

ध्वनि प्रतिमा : ये स्रोत इंद्रिय से प्राप्त ज्ञान के आधार पर निर्मित होती हैं ।

चक्षु इंद्रिय प्रतिमा : ये दृष्टि द्वारा प्राप्त ज्ञान पर आधारित होती हैं । तीव्र दृष्टि प्रतिमा वाले व्यक्ति विगत अनुभवों को बहुत दिनों तक स्मरण रख सकते हैं ।

घ्राण प्रतिमा : इसमें गंध के अनुभवों को ग्रहण करके प्रतिमा निर्मित होती है । इस प्रतिमा के स्मरण से ब्राह्य में कोई गंध न होने पर भी आदमी गंध का अनुभव कर सकता है ।

स्वाद प्रतिमा : अतीत के स्वाद के अनुभवों को याद करके आदमी स्वाद का तत्काल अनुभव करता है । मिठाई की याद से मुंह में पानी इसीलिए चलता है ।

स्पर्श प्रतिमा : इसमें बाह्य रूप से शीत, ताप, भार न होने पर भी पुरानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद मात्र आने से शीत, ताप व भार— किसी का भी अनुभव होने लगता है ।

क्रिया प्रतिमा : इसमें व्यक्ति को यह अनुभव होता है कि जैसे उसकी इंद्रियां और शरीर कार्यरत हैं और उस कार्य की गति वह अनुभव करता है ।

इसके अलावा भी भावों पर अनेक प्रतिमाएं होती हैं । स्मृति और कल्पना में अंतर यह है कि जब स्मृति पूर्वानुभवों को दोहराना मात्र है, कल्पना पूर्वानुभवों को मानसिक क्रिया द्वारा नये रंग-रूप में प्रस्तुत करती है ।

विश्वास : विश्वास या श्रद्धा भी मनन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है । विश्वास वास्तविकता का बोधक है । जिस वस्तु या विचार में हमें श्रद्धा होती है, उसमें हम संदेह नहीं करते । विश्वास का संकल्प से गहरा संबंध है । मनुष्य अपने विश्वास या श्रद्धा के अनुरूप ही संकल्प करता है । श्रद्धा या विश्वास को तीन भागों में बांटा जा सकता है —

१. ज्ञानात्मक २. संवेगात्मा ३. संकल्पात्मक

मनन करने में प्रत्यक्षों, प्रतिमाओं, आदर्शों का प्रयोग किया जाया है । स्मृति से पूर्व के अनुभवों से सबक लिया जाता है और भविष्य की ठोस योजना बनायी जाती है ।

जब किसी लड़के को प्रत्यक्ष द्वारा यह ज्ञात हो जाता है कि इंजीनियरिग की पढ़ाई उसके उज्ज्वल भविष्य की सूचक है तो वह इंजीनियरिग की शिक्षा को अपना आदर्श मान लेता है । उसकी सारी क्रियाएं इस एक ही लक्ष्य की प्राप्ति के लिए होती हैं । अब वह अपना तर्कसंगत चिंतन इस प्रकार करता है ।

द्रव्यमूल भूत की दृष्टि से चिंतन : क्या मैं इंजीनियरिग की शिक्षा प्राप्त करने के लायक नंबरों से पास हुआ हूं ? अगर नहीं तो इंजीनियरिग कॉलेज में

विचार और मनन को सही तरीके से उभार दिया जाए तो जीवन में बहुमूल्य निर्णय अच्छी तरह ग्रहण किये जा सकते हैं !

भरती कैसे होऊंगा ? इसी चिंतन के फलस्वरूप ऐसे भी लड़के देखे गये हैं जो एक साल और लगाकर भी दुबारा इम्तिहान देते हैं और इंजीनियरिग कॉलेज में भरती होने लायक अंक प्राप्त करते हैं । फिर उसका चिंतन होता है कि क्या मेरे पास इतने रुपये हैं कि मैं कॉलेज में रहकर इस पढ़ाई को जारी रख सकूं । इस चिंतन पर गौर करके वह किसी-न-किसी नतीजे पर पहुंचता है । रुपया है तो ठीक, नहीं है तो ठीक, किसी से मदद लेने की सोचता है । अथवा कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम-धंधा करके अपने लक्ष्य को आगे बढ़ाता है ।

क्षेत्र की दृष्टि से चिंतन : कौन-से कॉलेज में भरती होना चाहिए, कौन-सा कॉलेज मेरे घर से ज्यादा नजदीक है ? कौन-से कॉलेज में शिक्षकों का अत्युत्तम चयन किया हुआ है ? अनेक दृष्टियों से सोचकर क्षेत्र का निर्णय करता है ।

काल की दृष्टि से चिंतन : अतीत के अनुभवों को अपने सम्मुख रखकर देखता है, उनसे सबक ग्रहण करता है । वर्तमान अवस्था पर नजर डालता है । भविष्य में अपनी श्रद्धा और विश्वास के आधार पर निर्णय करता है कि मुझे इंजीनियर बनना ही है ।

भाव दृष्टि से चिंतन : इस प्रकार के चिंतन द्वारा वह अपना इंजीनियरिंग संबंधी प्रत्यक्ष ज्ञान, भविष्य की कल्पनाओं का और वर्तमान की कठिनाइयों का अवलोकन करके इंजीनियरिंग की पढ़ाई का दृढ़ संकल्प करके आगे बढ़ जाता है ।

गुण की दृष्टि से चिंतन : इस प्रकार के चिंतन द्वारा वह इंजीनियरिंग विद्या के गुणों का अवलोकन करता है और उसके गुणों में अनुरक्त होकर इस विद्या के पक्ष में अपना निर्णय लेता है ।

इस तरह हम देखते हैं कि विचार और मनन को सही तरीके से उभार दिया जाए तो जीवन में बहुमूल्य निर्णय अच्छी तरह ग्रहण किये जा सकते हैं ।

द्वारा श्री एम.सी. भंडारी
४, सिनेमागॉग स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००१

भारत का पहला सौर ताप बिजली केंद्र

हरियाणा स्थित गुड़गांव में सूर्य के ताप से बिजली बनानेवाला बिजलीघर गत मई माह में चालू हो गया है । यह भारत का पहला सौर ताप बिजलीघर है । इसकी क्षमता पचास किलोवाट है । बिजलीघर पूरी तरह से स्वदेशी तकनीक पर आधारित है । यह बिजलीघर अन्य बिजलीघरों की तुलना में न केवल किफायती है, बल्कि इससे पर्यावरण प्रदूषण भी कम होता है । इस बिजलीघर की सफलता को देखते हुए अब ३० मेगावाट व इससे अधिक क्षमतावाले कई बिजलीघर लगाये जाने की योजना पर कार्य शुरू हो चुका है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

गार्गी शंकर तिवारी, लोहारडागा

प्र. वेदियों के निर्माण का संबंध ज्यामिति (ज्योमिट्री) से बताया जाता है । किस प्राचीन भारतीय कृति में इसका उल्लेख मिलता है ?

☐ सत्व सूत्र वैदिक काल की ज्यामितीय रचना है जिसमें वेदियों के निर्माण की विधियों का वर्णन किया गया है । धार्मिक अवसरों पर इन सूत्रों का अब भी पालन होता है ।

सुरेंद्र झा, बरौनी

प्र. साइनस टचीकार्डिया रोग क्या है ?

☐ दिल की सामान्य से अधिक तेज धड़कन को साइनस टचीकार्डिया कहते हैं जो अपने आप में कोई रोग नहीं है ।

सुरेश नारायण शर्मा, हरदुआगंज

प्र. कान में तीली डालने से खांसी क्यों आने लगती है ?

☐ कान की नाड़ियों का गले से एक नली द्वारा सीधा संबंध है । अतः कान को जोर से छेड़ने पर ये नाड़ियां झनझना उठती हैं जिससे खांसी आने लगती है । यह एक प्रतिवर्ती क्रिया (रिफलेक्स एक्शन) है ।

प्रकाश चंद्र कनेरिया, रतलाम

प्र. भारत का राष्ट्रीय गीत और राष्ट्रीय गान क्या दो भिन्न चीजें हैं ?

☐ बंकिम चंद्र चटर्जी कृत 'वंदेमातरम्' राष्ट्रीय गीत है और रवीन्द्रनाथ टैगोर रचित 'जन गण मन' राष्ट्रीय गान है ।

कुरबान खां, बोकारो

प्र. अमृतसर स्थित स्वर्ण मंदिर का निर्माण कब और किसके द्वारा हुआ ?

☐ सिखों के पांचवें गुरु श्री अर्जुनदेव ने १६०१ में इसका निर्माण करवाया था ।

नारायणी कथूरिया, बिलासपुर (हि.प्र.)

प्र. कपिल, गार्गी और मैत्रेय मुनियों के आश्रम कहां थे ?

☐ कोसी और गंडकी नदियों के बीच मिथिला में ।

प्रमोद कुमार सोनी, खेतड़ी (राज.)

प्र. बच्चों को गुदगुदाने से उन्हें हंसी क्यों आती है ?

☐ यह एक प्रतिवर्ती क्रिया (रिफलेक्स एक्शन) है जो बच्चे अपनी रक्षा के लिए प्रयोग करते हैं । बड़ी आयु के भी ऐसा ही करते हैं, परंतु सभी नहीं ।

उदयनारायण यादव, भागलपुर

प्र. सौर ऊर्जा का शोर भारत में ही है या विदेशों में भी इस पर ध्यान दिया जाता है ?

☐ ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों की खोज हर कहीं हो रही है । चित्र देखिए, यह इंगलैंड स्थित मिल्टन कींस नगर का एक घर है जिसे सौर

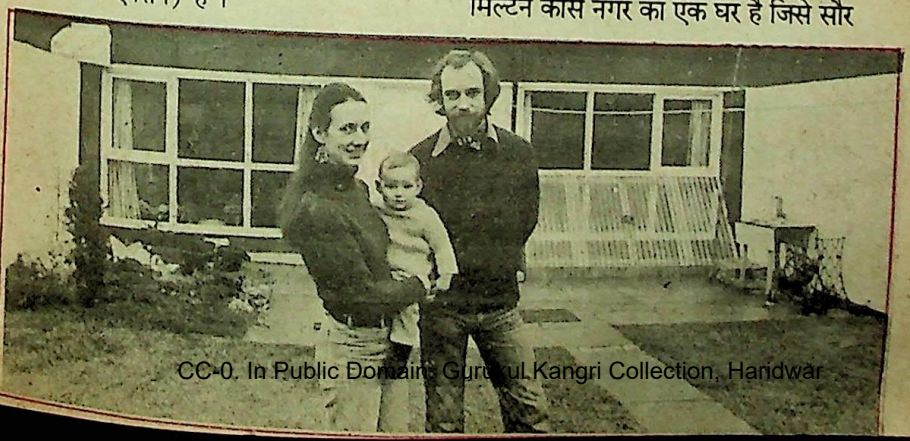

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊर्जा से गरम किया जाता है । इसकी छत पर सौर ऊर्जा के पैनल दिखायी दे रहे हैं ।

भरत डोगरा, जम्मू

प्र. समुद्रगुप्त का ज्येष्ठ पुत्र रामगुप्त था, फिर चंद्रगुप्त विक्रमादित्य को गद्दी कैसे मिल गयी ?

☐ एक अनुश्रुति के अनुसार रामगुप्त ने अपनी जान बचाने के लिए एक आक्रमणकारी शक सरदार को अपनी पत्नी ध्रुवदेवी का समर्पण कर दिया था । फिर विक्रमादित्य वेश बदलकर शक शिविर में गया और वहां शक सरदार का वध करके रानी को बचा लाया । ऐसी स्थिति में फिर एक कायर को कैसे सहन किया जा सकता था । इसलिए चंद्रगुप्त विक्रमादित्य गद्दी पर बैठा और उसने ध्रुवदेवी से विवाह किया ।

केशवचंद्र लाल, हजारीबाग

प्र. संभवतः, दाल की ऐसी कोई किस्म है जिसे खाने से लकवे की शिकायत हो जाती है । वह कौन-सी दाल है ? परहेज क्या है ?

☐ वह खेसरी दाल है जिसके खाने से लकवा हो जाता है । यह अरहर से मिलती-जुलती होती है तथा इसकी दाल के साथ ही खेसरी दाल की मिलावट की जाती है । खेसरी जहरीली होती है । परहेज यही है कि अरहर की दाल देख-भालकर खरीदी जाए । इसमें खेसरी दाल की मिलावट न हो ।

नंद लाल यादव, आजमगढ़

प्र. मायस्थेनिया ग्रेविस रोग क्या है ?

☐ शरीर में एसिटाइन कोलीन नामक रसायन कम हो जाने या उसके प्राभाविक न रह जाने के कारण यह रोग मनुष्य को पकड़ लेता है । इस रोग से शरीर की मांसपेशियां ढीली होकर कमजोर पड़ जाती हैं जिससे चलना-फिरना कठिन हो जाता है ।

कौशिक प्रसाद, रिंकू सिंह, मुगलसराय

प्र. मिस्र के पिरामिडों का स्थापना काल क्या है ?

☐ मैकमिलंस विश्व कोश के अनुसार इनका निर्माण ईसा पूर्व २६०० और २५०० के बीच हुआ था ।

सुरेंद्रमोहन मिश्र, दुमका (बिहार)

प्र. धृतराष्ट्र और पांडु के कुलधर कौन थे ?

☐ सत्यवती और पराशर मुनि के पुत्र भगवान वेदव्यास ।

सुरेश कुमार, बादली (दिल्ली)

मनोजकुमार मिश्र, गोपालगंज (बिहार), रामानंद त्रिपाठी, वाराणसी

प्र. मोनालिजा किसकी रचना है, और यह कितनी पुरानी है ? यह कलाकार की कल्पना है या वास्तविकता ?

☐ यह इतालवी चित्रकार लिओनार्डो द विंची की रचना है जिसे उसने १५०३ और १५०६ के बीच तीन वर्षों में तैयार किया था। मोनालिजा एक फ्रेंच सज्जन फ्रैंसिस्को देल जिओकांदो की पत्नी थी ।

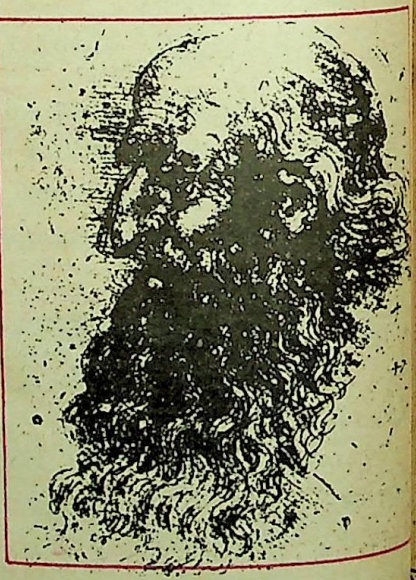

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र. हर्पीज रोग कैसे फैलता है ?

☐ हर्पीज़ जोस्टर एक न्यूरोजेनिक (तंत्रिजनक) वायरस रोग है जो एक से दूसरे रोगी तक वायु द्वारा फैलता है ।

भीम प्रसाद, गिरडीह

प्र. हेलन केलर को विकलांगों का मसीहा क्यों कहते हैं ?

☐ उन्नीस माह की अवस्था में ब्रेन फीवर के कारण वह अपनी दृष्टि और श्रवणशक्ति खो बैठी थीं । अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर उन्होंने ब्रेल लिपि में पढ़ना और टाइपराइटर पर लिखना सीखा । फिर बोस्टन में बोलना सीखा । उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन विकलांगों की सेवा के प्रति अर्पित कर दिया था ।

संतोष कंडपाल, चमोली (गढ़वाल)

प्र. मैग्सेसे पुरस्कार कब स्थापित हुआ और यह किस देश से संबंधित है ?

☐ फिलीपींस के लोकप्रिय राष्ट्रपति रेमन मैग्सेसे की १९५७ में एक विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गयी थी जिसके बाद उनकी स्मृति में इस पुरस्कार की स्थापना की गयी । यह पांच क्षेत्रों, यथा (१) अंतरराष्ट्रीय सद्भावना; (२) पत्रकारिता, साहित्य और सृजनात्मक संचार कलाओं, (३) सामुदायिक नेतृत्व; (४) जन सेवा; और (५) सरकारी सेवा, में दिया जाता है । एक स्वर्ण पदक के साथ २० हजार डॉलर की धनराशि इस पुरस्कार में दी जाती है ।

अभिषेक नैथानी, पौड़ी-गढ़वाल; विष्णु प्रसाद कौशिक, बिलासपुर (म.प्र.)

प्र. नहाने के साबुन के रैपरों पर लिखे टी.एफ.एम. का क्या अर्थ है ?

☐ इसका अर्थ है 'टोटल फैटी मैटर', अर्थात तेल के रूप में कितने प्रतिशत चरबी इस साबुन में प्रयुक्त की गयी है । अच्छे साबुन में यह ७६ प्रतिशत तक होती है— जितनी अधिक प्रतिशतता उतनी ही उत्तम कोटि ।

प्रदीप आचार्य, बाड़मेड़; राम प्रबोध रमण, मधुबनी; राजेन्द्र परवार, नागदा जंकशन

प्र. (१) कृत्रिम गर्भाधान कैसे होता है, और यह कितना सफल है ? (२) क्या कृत्रिम वीर्य सेचन मनुष्य में भी संभव है ? और (३) परखनली शिशु के जन्म लेने की प्रक्रिया क्या है ?

☐ (१) कृत्रिम गर्भाधान अनेक प्रकार से होता है, शरीर के अंदर और बाहर (परखनलियों में) तथा हमारे देश में ही इसे अनगिनत सफलताएं मिल चुकी हैं । (२) लेडी डॉक्टर की सलाह और सहायता से मनुष्य में भी कृत्रिम वीर्य सेचन संभव है । (३) शरीर के बाहर गर्भाधान की प्रक्रिया संपन्न करके कुछ समय तक गर्भ को परखनली में पनपने देते हैं और बाद में गर्भाशय में प्रतिरोपित करके इसे बढ़ने देते हैं ।

भीम शंकर 'फैयाजी', ग्वालियर

प्र. पंडित जसराज गायन शैली के किस घराने से संबंधित हैं ?

☐ मेवाती घराने से, और उन्होंने शिक्षा अपने बड़े भाई पंडित मनीराम से प्राप्त की जिनके गुरु इन दोनों के पिता पंडित मोतीराम थे ।

वसंतराव खेमका, अकोला

प्र. महाराष्ट्र में केला खूब खाया जाता है, फिर भी लोग इतने मोटे तो नहीं हैं जब कि यह फल मोटापा बढ़ाता है । क्यों ?

☐ यह एक भ्रम है । सेव या संतरे के मुकाबले केले में कार्बोहाइड्रेट अधिक होते हैं फिर भी एक औसत केले में मात्र ६० कैलोरी होती है तथा सेव या संतरे से ५० कैलोरी प्राप्त होती हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय घोष, वाराणसी

प्र. 'बुद्धचरित' किसकी रचना है, और यह काव्य कितना पुराना है ?

☐ यह काव्य नहीं नाटक रूप में महात्मा बुद्ध की जीवनी है, तथा सम्राट कनिष्क (ईसवी सन १२०-१६२) के एक दरबारी रत्न अश्वघोष की रचना है ।

मनीष जैन, हैदराबाद

प्र. उबलने पर दूध बरतन से निकल क्यों पड़ता है ?

☐ पानी की तरह दूध सामान्य द्रव्य नहीं है । इसमें प्रोटीन, शक्कर और चरबी-जैसे अनेक पदार्थ शामिल हैं । दूध के गरम होने पर प्रोटीन और चरबी एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं, और दूध से हलके होने के कारण ऊपरी सतह पर एकत्रित हो जाते हैं । गरम होने के समय कुछ पानी भाप में परिवर्तित हो जाता है । चूंकि दूध की ऊपरी सतह मलाई से ढकी होती है इसलिए यह भाप नीचे फंस जाती है । दूध के अधिक गरम होने पर यह भाप फैलती है और बाहर निकलने की कोशिश करती है जिससे दूध की ऊपरी सतह पर घना झाग बन जाता है । अंततः, यह भाप उक्त सतह को भेद कर निकल पड़ती है जिसके साथ दूध भी उफनकर बरतन से बाहर गिर जाता है ।

सत्य प्रकाश जायसवाल, बोरसाल (बिहार); भोलादत्त जोशी, पिथौरागढ़

प्र. माफिया क्या है ? भारत के अतिरिक्त क्या अन्य देशों में भी यह है ?

☐ अपराधियों के गिरोह को माफिया कहते हैं । इसकी शुरुआत सबसे पहले १३वीं शताब्दी में इटली के सिसली प्रांत में हुई थी । लेकिन तब अपराधियों के इस समाज का स्वरूप उस तरह का नहीं था जिसे आज हम देखते हैं । इसका जन्म भूपतियों के जुल्मों का मुकाबला हिंसक तरीकों से करने के लिए हुआ था । वे किसी कानून को नहीं मानते थे । माफिया गिरोह अमरीका में भी है और पाकिस्तान में भी, तथा कई अन्य देशों में भी ये सक्रिय हैं ।

चलते-चलते

प्रश्न : काम के समय भी कोई लड़की बड़बड़ाती क्यों रहती है ?

उत्तर : शायद घर में कोई सुननेवाला न होगा ।

गिनी वर्म से पीड़ित

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार गिनी वर्म की बीमारी से दुनिया में एक करोड़ से अधिक व्यक्ति प्रभावित हैं । हमारे देश में सन १९८४ में चालीस हजार गांव इस बीमारी की चपेट में थे, जबकि पिछले वर्ष ऐसे गांवों की संख्या घटकर ४२७८ रह गयी है और इन गांवों में इस बीमारी के केवल बारह हजार रोगी सामने आये हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gu[illegible]ngri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

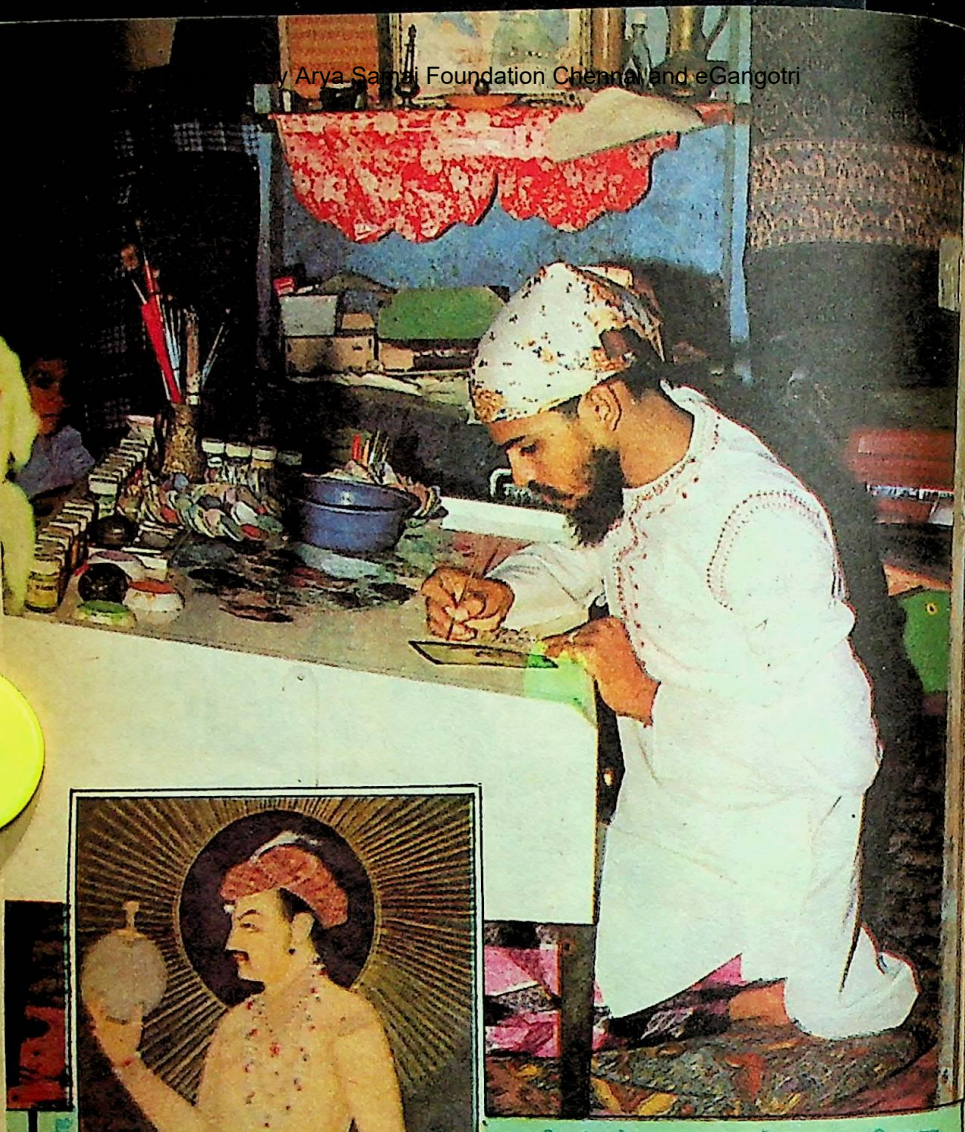

हाथी दांत के कलाकार मोहम्मद अली खान चित्रकारी में तल्लीन

हाथी दांत पर खिंचित सवाई राजा जयसिंह

चांदनी चौक, दिल्ली की एक संकरी गली। यहीं एक पुराने से मकान में रहते हैं पैंसठ वर्षीय मोहम्मद सज्जाद — जो गत पचपन वर्षों से हाथी दांत की कलात्मक कृतियां बनाते आ रहे हैं। लेकिन संभवतः मोहम्मद सज्जाद और उन जैसे सैकड़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथी दांत का व्यापार संकट में है और इस संकट की काली छाया हाथी दांत-कला पर भी पड़ रही है । हाथी दांत के व्यापार पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध लगाने की मांग दिनों-दिन जोर पकड़ती जा रही है । कारण, इस व्यापार से होनेवाले लाभ की लालच में अफरीका और बरमा में हाथियों का चोरी-छिपे शिकार किया जा रहा है । इसी कारण अफरीका में हाथियों की संख्या भी तेजी से घटती जा रही है । बुरुंडी में तो केवल एक हाथी बचा है !

हाथी दांत महिषासुर की चपेट में

● नवनीता सरकार

अफरीकी देश 'सी आई टी ई एस' नामक एक संस्था से समझौते के अंतर्गत हाथी दांत का निर्यात करते हैं । यह संस्था समूचे विश्व में पर्यावरण स्वच्छ बनाये रखने और प्राकृतिक वन संपदा एवं जीव-जंतुओं को, विशेषकर जिनके लुप्त होने का खतरा है, को संरक्षण देने के लिए बनायी गयी है । इस संस्था ने प्रत्येक देश के लिए एक कोटा निर्धारित कर रखा है पर हाथी दांत के व्यापार में अत्यधिक लाभ होने के कारण लोग चोरी-छिपे हाथियों की हत्या कर उनके दांतों के अवैध व्यापार में जुटे हुए हैं । इस तरह इस प्रतिबंध से कोई विशेष लाभ नहीं हो पा रहा है । हाथियों की निर्मम हत्या के कारण उनकी संख्या तेजी से घट रही है । एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले दशक में अफरीका में हाथियों की संख्या लगभग दस लाख तीस हजार से घट कर ६,२५,००० रह गयी है । इसी कारण स्वयं अफरीकी देश हाथियों को बचाने के लिए विभिन्न योजनाएं बना रहे हैं । अनेक अफरीकी देशों में स्वयं शासकों एवं राजनेताओं ने इस प्रश्न पर जनता में जागृति उत्पन्न करने के लिए मुहिम छेड़ दी है ।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हाथी-दांत के निर्यात-व्यापार पर प्रतिबंध लगाने की मांग जोर पकड़ गयी है । अमरीका में प्रकृति-प्रेमियों के दबाव के कारण राष्ट्रपति बुश को भी झुकना पड़ा और अमरीका में हाथी दांत के आयात एवं उससे बनी वस्तुओं पर प्रतिबंध संबंधी अपनी नीति में परिवर्तन करना पड़ा । बाद में यूरोपीय आर्थिक समुदाय ने भी अमरीकी नीति का अनुसरण किया ।

अमरीका में हाथी-दांत के व्यापार के प्रति जनरोष का प्रभाव एक इस घटना से लगता है । न्यूयार्क में अफरीकी हाथी दांतों की नीलामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयोजित की गयी थी । नीलाम करवानेवाले थे सदबी, जिनकी इस क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय ख्याति है । इन हाथी दांतों की कीमत २८,००० डॉलर आंकी गयी थी । नीलामी वाले दिन प्रकृति-प्रेमियों ने इस आयोजन के खिलाफ जबरदस्त प्रदर्शन किया । फल यह हुआ कि सदबी ने न केवल उन हाथी दांतों को एक संग्रहालय को भेंट कर दिया वरन भविष्य में हांथीदांत के व्यापार से कोई संबंध न रखने का निर्णय भी किया । अमरीका में प्रतिवर्ष तीन करोड़ डॉलर के मूल्य के हांथी दांत आयात किये जाते हैं । जापान और हांगकांग में भी हाथी दांतों की काफी मांग है । एक अनुमान के अनुसार नीलामी में बिकनेवाले हाथी दांतों का साठ प्रतिशत जापान और हांगकांग खरीद लेते हैं । शेष चालीस प्रतिशत क्रम से अमरीका, जरमनी और इंगलैंड का नंबर आता है । भारत का स्थान सबसे नीचे है । लेकिन हाथी दांत की शिल्पाकृतियां बनानेवाले देशों में भारत अग्रिम पंक्ति में है ।

यद्यपि हाथी दांत के व्यापार पर प्रतिबंध की मांग दिनों-दिन जोर पकड़ती जा रही है, तथापि इस व्यापार में जुटे लोग इस समय विशेष चिंतित नहीं हैं ।

भारत में सन १९७२ से ही सरकार ने हाथियों के शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया है। यही नहीं उसने भारतीय हाथी दांत के उपयोग पर भी प्रतिबंध लगाया है तथापि अफरीकी हाथी दांत के आयात के संबंध में उदार नीति अपना कर सरकार ने इस व्यापार और हाथी दांत कला को बिलकुल नष्ट होने से भी बचा लिया है । भारत में हाथी दांत कला से लगभग

हाथी दांत पर चित्रकला उन्हें

पांच-छह वर्ष पहले की बात है । मैंने उसे सेंट पॉल्स स्कूल में पढ़ते देखा था । उसे पेंटिंग का बड़ा शौक था और चित्रकारी के विषय में उसके अच्छे नंबर आया करते थे । एक दिन इंडियन एयर लाइंस के काउंटर पर उसके हाथ में इटली के लिए प्लेन का टिकट देखकर मैं चौंक पड़ी । और मेरे मुंह से अनायास ही निकला, 'गौरी तुम ?' और फिर उसकी बातों का सिलसिला चल पड़ा ।

हुआ यूं कि मो. अली खान गौरी ने इंग्लिश मीडियम से आठवीं पास करते ही, ड्राइंग को अपना शौक बनाया । विदेशियों को संपर्क में आते-जाते और जयपुर घुमाते-घुमाते अच्छी दोस्ती बन गयी । और गौरी को काम चलाने लायक चार भाषाएं जैसे जरमनी, इटली, फ्रेंच और जापानी आने लगी । विदेशी दोस्तों ने उन्हें अपने-अपने मुल्क में अपने खर्चे पर दो-दो तीन-तीन महीने के लिए ऑर्ट गैलेरियों में प्रदर्शनी लगाने के लिए बुलाया और वे गये । वहां के अखबारों में उनकी ऑर्ट गैलरी में लगी प्रदर्शनी और हाथी दांत की प्लेट पर रंग-बिरंगे रंगों से पेंटिंग करने की चल खूब हुई ।

मो. अली खान गौरी अपनी मेहनत को आ बेचते भी हैं, जिसके लिए उनके पास बैंक का विदेशी मुद्रा विनिमय का लाइसेंस भी है। उ कहना है कि बारह सौ रुपये लगाकर दो हजा रुपये तक हाथी दांत की प्लेटें भारत सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

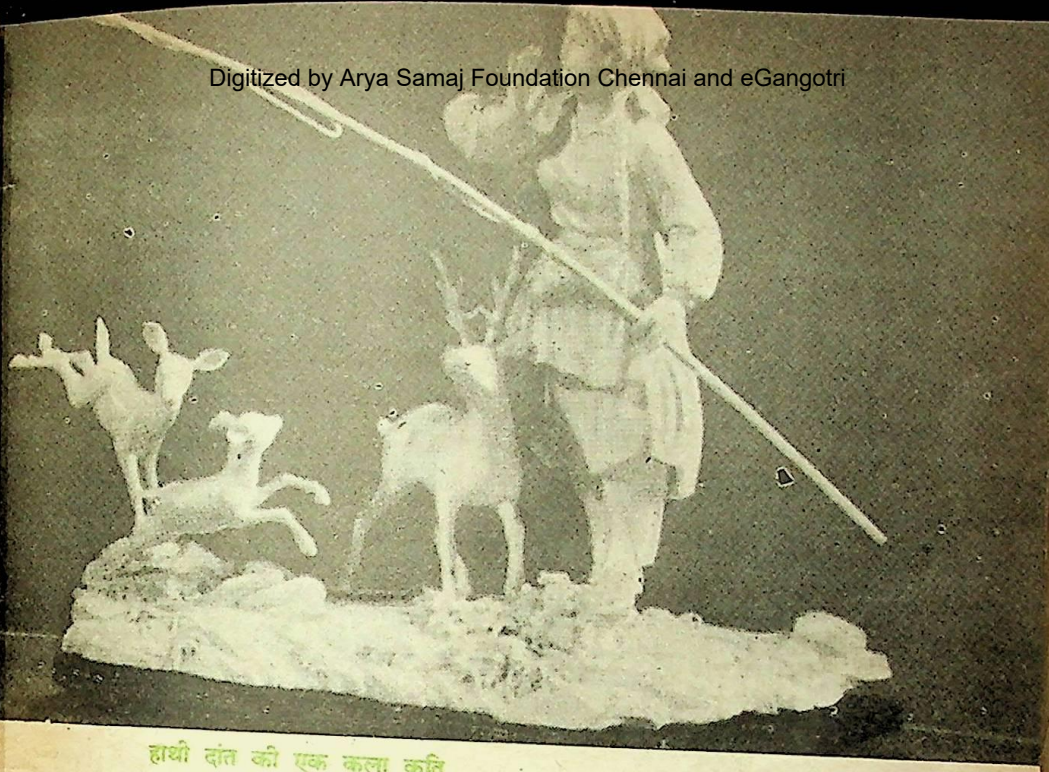

हाथी दांत की एक कला कृति

उन्हें विदेशों में ले गयी

अनुबंध से मिलती हैं। और एक किलो आइबरी में छोटी-मोटी कतरनें निकालकर दस-बारह प्लेटें ही बन पाती हैं। हाथी दांत वैसे भी वजन में भारी होता है। १''×२'' स्क्वेयर इंच से लगाकर अधिक से अधिक ६''×८'' साइज में बन पाती है। हाथी दांत पर किये जानेवाले रंग भी महंगे होते हैं। चित्रों को पेंसिल से रेखांकित कर के उसमें रंग भरा जाता है और उस पर बड़े ध्यान से जिलेटिन पेपर चढ़ाया जाता है, जिससे बार-बार हाथ लगाने पर भी रंग खराब न हों।

चित्रकारी करते समय गौरी को संगीत सुनने का बेहद शौक है। जहां जाते हैं, वहां से अपनी पसंद के गजलों, गीतों, और पॉप म्यूजिक के टेप तथा रेकॉर्ड अवश्य लेकर आते हैं। संगीत की धुन के साथ उनके हाथ चलते हैं और एक से एक सुंदर कलात्मक चित्र आइवरी प्लेट्स पर उभरने लगते हैं। अपने छोटे-से लेकिन सुसज्जित कमरे में बैठकर जब गौरी काम कर रहे होते हैं और कोई अचानक उनसे मिलने पहुंच जाता है तो उनके कमरे में घुसते ही सामने और आस-पास की दीवारों पर लगे कलात्मक चित्रों पर सहसा ध्यान चला जाता है। इन चित्रों में कुछ फिल्मी भी हैं। कुछ पुराने स्टाइल के राजा-महाराजाओं के चित्र भी हैं। कुछ आधुनिक कला से परिपूर्ण चित्र श्री हैं। तमाम अभावों के बावजूद गौरी अपनी कला-साधना में लीन हैं।

—कनीज भट्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठ हजार लोग जुड़े हुए हैं । अफरीकी हाथी दांत के आयात पर सीमा शुल्क हटा देने से जहां आयात कर्ताओं को सुविधा हुई है, वहीं भारतीय हाथियों का शिकार भी कम हुआ है ।

हाथी दांत कला-व्यापार से जुड़े श्री अंजुनाथ के अनुसार भारतीय हाथियों का शिकार कई कारणों से लाभ का सौदा नहीं रहा है । हाथियों का शिकार अवैध घोषित कर दिया गया और वह खरचीला भी बहुत है । दूसरी ओर कोई उसे बेच भी नहीं सकता । एक तो उस पर प्रतिबंध है, दूसरी ओर उसकी जो कीमत मिलेगी, वह खर्च की तुलना में कम होगी । एक तरह से यह घाटे का सौदा रहेगा । दूसरी ओर बाजार में अफरीकी हाथी दांत आसानी से उपलब्ध है । हम लोगों को प्रत्येक मास खरीदे हाथी दांत का विस्तृत ब्यौरा भी देना पड़ता है । इन सब कारणों से भारतीय हाथियों के शिकार में कोई दिलचस्पी नहीं लेता ।

अफरीका में हाथियों के अवैध शिकार में इधर कमी आयी है । लेकिन कुछ ऐसे भी देश हैं, जहां आर्थिक कारणों से सरकार की जानकारी में हाथियों का शिकार जारी है ।

बुरुंडी में १२० मीट्रिक टन अवैध हाथी दांत का संग्रह है । विडंबना यह है कि आज बुरुंडी में केवल एक हाथी बचा है, वह भी एक चिड़ियाघर के संरक्षण के कारण । बरमा में भी हाथियों का अंधाधुंध शिकार जारी है । कारण बरमी विद्रोही कच्चे हाथीदांत को बेचकर हथियार खरीदते हैं ।

सी आई टी ई एस द्वारा गठित एक समिति ने नैरोबी में हाल ही में हुई एक बैठक में इन सब प्रश्नों पर विचार किया था । लेकिन हाथी दांत के व्यापार में होनेवाले लाभ के कारण सदस्य-देश एकमत नहीं हो पाये ।

हाथी दांत के व्यापार पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध से उन शिल्पियों को बेहद नुकसान होगा, जिनके यहां पीढ़ियों से यह कार्य होता आया है ।

बदलते समय को देखते हुए उन्होंने हाथी दांत के अलावा अन्य पशुओं की हड्डियों-विशेषकर ऊंट की हड्डियों, चंदन की लकड़ी आदि पर अपनी कला को उकेरना शु कर दिया है । पिछले दस वर्षों में ऐसे शिल्पि की संख्या भी घटी है । केवल कुछ समर्पित शिल्पी ही अपनी पुश्तैनी कला को जीवित रखे हुए हैं । लेकिन उनके सामने भी एक अहम् है कि वे कब तक समय की मार से बच पाएंगे ।

—३३८, ध्रुव एपार्टमेंट्स पटपड़गंज, दिल्ली

मिलान (इटली) के दो जुड़वां भाई मार्को और रोबर्टो अभ्यास के लिए गये । वायुयान से उड़ान भरी और पैराशूट के सहारे छलांग लगा दी । रोबर्टो तो जमीन पर सही सलामत उतर आया, लेकिन मार्को चूक गया और उसकी दायीं टांग टूट गयी । कुछ घंटों बाद ही रोबर्टो की कार दुर्घटनाग्रस्त हो गयी और इस दुर्घटना में उसकी भी दायीं टांग टूट गयी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम कहानी

तलाक

डॉ. एन. रामन नायर

डॉक्टर साहब— मैं बहुत परेशान हूं । वे मेरी एक बात न मानते । हमेशा पीटते हैं । सयानी बेटियों को भी पीटते हैं । बड़ा बेटा इनसे डरकर भाग निकला, इकलौता था । उसके प्रति भी उनके मन में रंजमात्र की प्यार की भावना नहीं । मैं क्या करूं । मैं कुछ समय तक उस नवोढा के मुंह की ओर ताकता रहा सत्रह वर्ष पहले उसकी शादी में गया था । उस समय वह नव यौवन स्फूर्त दुलहिन थी । मांग में सिंदूर की रेखा थी । घुंघराले बालों में पुष्प की माला थी । कपोल में सौंदर्य बिंदु थे । चेहरे पर लज्जा की लहरें अपना रंग दिखा रही थीं । शादी की शानदार बनारसी साड़ी में वह परी-जैसी दीखती थी । दुलहा भी सुंदर था । मेडिकल कॉलेज का अध्यापक था । अच्छे घराने का था । दोनों वर-वधु कामदेव-रति जैसे लगे । मुझे विश्वास नहीं हुआ, वही लड़की आज मेरे पास सिसकती हुई अपने जीवन की कठिनाईयों का चित्र एक-एक करके खोल रही थी । मुझे कतई विश्वास नहीं हुआ । कैसे विश्वास हो सकता है । कुलीन पढ़ा-लिखा पति ऊंचे ओहदे पर काम करनेवाला-उससे क्या स्वप्न में भी ऐसा संभव है । मिसिस चांदनी तुम क्या कह रही हो । "ऐसा कभी हो सकता ? मुझे विश्वास नहीं होता ।"

"आप विश्वास करें या न करें मेरी बात शतप्रतिशत सत्य है ।" "इसका कारण क्या है ? तुम्हें कुछ पता है ?"

"जब से हम गोवा मेडिकल कॉलेज में आ गये तब से यही हालत है । उनके विभाग की मिसिस लीना से उनका संबंध ऐसा है जो वह कहती वही करते हैं । उसकी आज्ञा उनके लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर आंखों पर है ।

"मिसिस लीना के संबंध के बारे में तुम क्या जानती हो ।"

"डॉक्टर साहब, वह ऐसे गंदे परिवार की है कि उसके दुश्चरित्र से उसके पति उसको छोड़कर चले गये । उनकी एक बेटी थी अब दसवीं कक्षा में पढ़ रही है । उसे पति ले गये थे, लेकिन बाद में वह उसको छीनकर ले आयी । अकेली रहती है, जो चाहे करती है ।"

"मिसिस चांदनी, दूसरों को भला-बुरा कहना सोच-समझकर कहना होगा । यदि मिसिस लीना तुम्हारे संबंध में इस तरह की अफवाहें उड़ायेगी तो तुम क्या करोगी ।"

"डॉक्टर साहब असली बात यह है कि मिसिस लीना मेरे पतिदेव को अपनी अंगुलियों पर नचा रही हैं । हमेशा उनके घर जाकर रहते हैं उससे सलाह-मशविरा करते हैं । विभाग में भी उन्हीं की बात मानते हैं । वे विभागाध्यक्ष हैं, लेकिन मिसिस लीना ही प्रशासन कर रही हैं । लीना कहे, 'तुम इधर आओ, वह कुत्ते की तरह दुम हिलाता आ जाता है । अगर वह कहे उधर जाओ तो वह आज्ञापालक पशु की तरह चला जाता है । घर आकर अपना कमरा बंद करके सो जाता है । महीने-दो महीने घर का खर्च भी देता नहीं । पहले बच्चे छोटे थे, अब सयाने हो गये हैं । उनको पिता की यह शक्ल पसंद नहीं आती । बेटियां कुछ पूछने जाती हैं तो मुंह मोड़ लेता है । लड़के को देखना भी नहीं चाहता । डॉक्टर साहब मैं तंग आ गयी हूं, तंग आ गयी हूं । बताइए मैं क्या करूं ?'

"लेकिन चांदनी कई वर्षों से तुम्हारे पतिदेव से मेरा अच्छा परिचय है । पदोन्नति में जब बाधायें आयीं तो उन्होंने लीना का सहयोग स्वीकार किया और अपने विरोधियों के खिलाफ कुछ किया । इसमें अपना स्वार्थ था— शायद चांदनी का भी स्वार्थ था । चांदनी असिस्टेंट प्रोफेसर बनना चाहती थी, तुम्हारे पति प्रोफेसर । इस सहयोगी प्रयत्न को देखकर उन पर तुम्हारी कुदृष्टि गयी । तुम बिगड़ते स्वर में उनको डांटने लगी । तुम्हारे अच्छे व्यवहार को भी उन्होंने बुरा समझा । इसलिए वह तुम से दूर भाग रहे हैं । तुम उनके पास आने का प्रयत्न करो ।"

"डॉक्टर साहब कैंपस में सिर ऊंचा करके चल नहीं सकती । हर कहीं यही बात चलती है । मिसिस लीना और उनको लेकर । बच्चे आकर मेरे सामने रो पड़ते हैं । उनको अच्छे कपड़े मिलते नहीं, अच्छा भोजन मिलता नहीं, पिता का स्नेह प्राप्त नहीं, न चाहते हुए भी बच्चे उनके पास जाते हैं, मेरे पास आकर रोते हुए पिता के व्यवहार की शिकायत करते हैं । घर कभी खाते हैं, कभी खाते नहीं ।"

मैंने पूछा, "क्यों चांदनी, तुम लोग एक ही कमरे में नहीं सोते हो ?" "नहीं, यह हमारा आचार है ।"

"अब तुम गोवा में रहते हो यहां का रीति-रिवाज ऐसा नहीं है, पति-पत्नी एक ही कमरे में एक ही बिस्तर पर सोते हैं ।"

"डॉक्टर साहब, इसकी भी कोशिश की लेकिन वे कहते हैं बेटियां सयानी हो गयी हैं उनको अकेली छोड़कर तुम मेरे कमरे में कैसे सोओगी । इसलिए मैंने उनकी बात मान ली

"तब तुम्हारा पति-पत्नी का संबंध कैसा

"डॉक्टर साहब, मैं क्या कहूं ? उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास आये कई साल हो गये । मैं भी उनके पास रात में गयी मैंने कई बार कोशिश की, छिप-छिप कर गयी...उस समय से उन्होंने कमरा बंद करके सोना शुरू कर दिया । आप ही कहिए इसमें मेरा क्या अपराध है ।''

''चांदनी, तुम क्या सोचती हो कि कसूर तुम्हारे पतिदेव का है ।''

''नहीं, दस साल तक वे मुझसे अच्छा व्यवहार करते रहे जबसे लीना बीच में आयी, तब से बात ही बदल गयी । उस समय तक अच्छे इनसान थे अब हैवान से भी बदतर हो गये ।''

''क्यों चांदनी, तुम्हारे मन में यही संदेह है कि लीना के साथ उनका यौन संबंध है । इसी कारण तुम को नफरत की दृष्टि से वे देखते हैं ?''

''नहीं डॉक्टर साहब, मैं कभी विश्वास नहीं करती हूं कि लीना-जैसी गंदी औरत के साथ मेरे पति का अनैतिक संबंध हो सकता है ।''

''फिर क्या ?''

''वह जादूगर है, उसने मेरे पति पर प्रयोग किया होगा । आप मेरी सहायता करें । एक अच्छे तंत्री से पूछताछ कर उसकी सहायता से मेरे पतिदेव को मुक्त करें ।'' मैं हंस पड़ा । पढ़ी-लिखी औरत अंधविश्वास के वश में आकर क्या-क्या कह रही है ।

''सुनो चांदनी, तुम्हारा पति मेरा पुराना छात्र है उसकी नैतिकता और अनैतिकता की सीमा मैं जानता हूं । अब भी उसको ठीक पहचानता हूं । उसमें काम की तीक्ष्ण संवेदना नहीं है । उसका शारीरिक बल भी उसके लिए अनुकूल नहीं है । वह दमा का रोगी है । वह सेक्स से दूर रहता

लीना का मुख क्रोध से लाल हो गया । वह जोर-जोर से हंसकर कहने लगी, ''डॉक्टर साहब, आप क्या कहते हैं ? उस जैसे बेकार आदमी से . ,.. . !''

है ।''

''डॉक्टर साहब, मैं यही चाहती हूं कि घर में वे पति-जैसा व्यवहार करें, पिता जैसा व्यवहार करें । लीना की बात मान भी लें कोई परवाह नहीं, परंतु हमारे ऊपर इनसानियत रखें ।'' मैंने बीच में पूछा, ''चांदनी, तुम्हारी दोनों बेटियां सयानी हो गयी हैं, उनकी शादी तो करानी ही है ।''

''डॉक्टर साहब, इससे और भी चिंतित हूं, बड़ी बेटी तो चौबीस साल की हो गयी है, दूसरी बाईस साल की, हमारे घराने में लड़कियों की शादी सत्रह साल से पहले होती है । बहुत पहले सात साल में हो जाती थी । आज आप जानते हैं कि अच्छे वर ढूंढ़ने के लिए कितना खर्च करना पड़ता है ?''

''अब तो चांदनी तुमको मालूम नहीं, तुम्हारे पति के पास बचत का कितना रुपया है ?''

''नहीं, नहीं मुझे दिखाते तब न ? क्यों ? पति-पत्नी में अलगाव ?'' वे अपने बैंक के कागजात अपनी आलमारी में बंद रखते हैं । मैं भी देखना नहीं चाहती । वे मुझे नहीं चाहते तो मैं उनको क्यों चाहूं ?'' ''तब तुम अक्खड़ प्रकृति की हो । पति को अनुनय-विनय से अपनी ओर खींचना चाहिए । तुम इस बात में हार गयी ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ऐसा नहीं डॉक्टर साहब । मैंने लाख कोशिश की जब मैं दासी जैसी बनती हूं, तब वे आज्ञाकारी बन जाते हैं । मैं यह सब सह नहीं सकती हूं । तब मेरे मुंह से गाली-गलौज निकल पड़ता है । मैं भी पढ़ी-लिखी हूं, इसलिए सोचा नौकरी करूं, घर संभालूं । इसीलिए मैं कॉलेज में साइंस की प्रोफेसर बन गयी ।

"क्या तुमने अपने पति से इस बारे में राय ली थी ?"

"क्यों लेती जब वे मेरे और मेरे परिवार की बातें देखते नहीं हैं । घर-खर्च के लिए भी पैसा देना भूल जाते हैं । मेरे पास पैसा रहते हुए भी अपने निजी खर्च के लिए लीना के पास जाकर कर्ज लेते हैं उसकी आज्ञा सर्वोपरि मानते हैं, ऐसे पति पर मैं कैसे विश्वास करूं ? उसको कैसे प्यार करूं ?"

"चांदनी, तुम पत्नी मात्र नहीं हो, माता हो, गृहणी हो बच्चों के साथ, पति के साथ, समाज के साथ तुम्हारे कर्तव्य अनेक हैं । भूलो मत । तुम पति से प्यार करना सीखो । अपनी ओर आकृष्ट करके लीना को उससे दूर करो । लीना और तुम एक ही उम्र की हो । वह बदसूरत औरत मोटी-ताजी । तुममें परी का सौंदर्य है । उस सौंदर्य के केंद्र में तुम उसको आकृष्ट करो । तुम्हारी जीत होगी ।"

रोते हुए उसने कहा, "मैंने ये सब करके देखा, डॉक्टर साहब किंतु हार गयी हूं । कई बार हार चुकी हूं । अब एक ही उपाय है क्यों न तलाक के बारे में सोचूं ।"

"पगली, तुम कहां तक पहुंच गयी ? भगवान का भरोसा करो । बच्चों का विचार करो । घर-गृहस्थी की ओर देखो ।"

वह सिसकती रह गयी । मेरा वहां से निकल जाना ही उसको याद नहीं रहा । मन में इस घटना को लेकर बहुत दुःख था । लीना भी मेरी छात्रा थी । उससे कैसे पूछूं—"अरी जादुगरनी तू एक परिवार का सर्वनाश करना क्यों चाहती है, तू अपने आकर्षण से उस बंदी को रिहा कर । पूर्ववत् उस घर में शांति और आनंद आये ।"

एक दिन मैंने लीना से पूछने का मन ही मन निर्णय किया । वह अकेली मेरे सामने बैठी थी मैंने शांत भाव से पूछा, "लीना मैं तुम से एक बात पूछना चाहता हूं, तुम सही-सही जवाब दोगी ?"

"आप क्या पूछना चाहते हैं, पूछिए ।"

"लीना, मैं इस कैंपस में तुम्हें और चांदनी के पति को लेकर बहुत से किस्से सुन रहा हूं । तुम इस अनैतिक संबंध को छोड़ दो ।"

लीना का मुख क्रोध से लाल हो-गया । वह जोर-जोर से हंसकर कहने लगी, "डॉक्टर साहब आप क्या कहते हैं ? उस जैसे बेकार आदमी से मेरा अनैतिक संबंध . . . ?" मैं हक्का-बक्का-सा रह गया ।

प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
हिंदी विभाग कोचिन विश्वविद्यालय

शत्रु के भी गुण लें, गुरु के दोष भी छोड़ दें । —चाणक्य नीति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष और आयुर्वेद

साम्यवादी देशों में भी ज्योतिष के प्रति आस्था

● वैद्यराज पं. जगदीश प्रसाद शर्मा

बीसवीं शती की नौवीं दशाब्दि में ज्योतिष के प्रति देश-विदेश में हर स्तर के लोगों में जैसा विश्वास, आस्था और आकर्षण आज देखने को मिल रहा है, वैसा शायद पहले कभी नहीं देखा गया।

मेरी ऐसी धारणा थी कि साम्यवादी देशों में ज्योतिष तथा तंत्र के प्रति लोगों में आस्था नहीं होगी किंतु विदेश भ्रमण के दौरान कतिपय अंतरराष्ट्रीय स्तर के राजनेताओं द्वारा मुझे जानकारी मिली कि साम्यवादी देशों में भी सामान्य नागरिकों के साथ-साथ वहां के राजनेता भी परोक्ष रूप से ज्योतिष तथा तंत्र के प्रति बड़ी आस्था रखते हैं। आधुनिक विज्ञान पर गर्व करनेवाले एवं सर्वथा प्रगतिशील राष्ट्रों की पत्र-पत्रिकाओं में भी अब भारत की तरह ही ज्योतिष के विज्ञापन प्रकाशित किये जाते हैं। अनेक पढ़े-लिखे लोग यूरोप के विभिन्न देशों के शहरों-महानगरों में ज्योतिष और तंत्र के व्यावसायिक केंद्र चलाकर अर्थोपार्जन कर रहे हैं। विदेशों में ज्योतिष के प्रति विभिन्न धर्मावलंबियों में समान रूप से आस्था देखी जा सकती है। ज्योतिष के मामले में इसलाम, ईसाइयत या अन्य कोई मजहब आड़े नहीं आता। जिस प्रकार आयुर्वेद विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरा है, उसी प्रकार ज्योतिष भी विज्ञान है। वस्तुतः ज्योतिष को यदि आयुर्वेद का अभिन्न अंग कहा जाए तो अनुचित न होगा। यद्यपि आयुर्वेद के आठ अंगों में ज्योतिष का उल्लेख नहीं किया गया है, फिर भी आयुर्वेद के पैंतालीस गुणों में ज्योतिष को भी एक माना गया है। अतः वास्तव में देखा जाए तो ज्योतिष के बिना आयुर्वेद की चिकित्सा सफल नहीं हो सकती है। भले ही आयुर्वेद के स्नातक ज्योतिष को महत्त्व न दें, किंतु विकलेंद्रिय और विक्षिप्तेंद्रिय व्याधि पर अनुसंधान कार्य के दौरान

विदेश-भ्रमण के दौरान कतिपय अंतरराष्ट्रीय स्तर के राजनेताओं द्वारा मुझे यह जानकारी मिली कि साम्यवादी देशों में भी सामान्य नागरिकों के साथ-साथ वहां के राजनेता भी ज्योतिष और तंत्र के प्रति बड़ी आस्था रखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत विशे
के साथ लेखक

पांच सौ पचहत्तर बच्चों की जन्मपत्रियों के माध्यम से यह जानने में सफलता मिली कि उनकी जन्मपत्रियों में ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार ही उन बच्चों के विभिन्न अंगों में विकृतियां पायी गयीं । फिर पत्रिओं के आधार पर ही साध्य, सुसाध्य, कष्ट साध्य तथा असाध्य की समीक्षा करके उन बच्चों की चिकित्सा की गयी, जिसमें यथेष्ट सफलता प्राप्त हुई ।

मिश्रित ज्योतिष

जिस प्रकार आयुर्वेद के चार काल माने जाते हैं, उसी प्रकार ज्योतिष के भी चार काल कहे गये हैं । यथाः एक, वैदिककाल, दो, पौराणिककाल, तीन, संहिताकाल और चौथे
संग्रहकाल की संज्ञा दी गयी है । इस आधार
हम आज के ज्योतिष को मिश्रित ज्योतिष
कहें तो अनुचित न होगा । यह और बात है
वैदिक, पौराणिक और संहिताकाल के पश्चात
यद्यपि ज्योतिष के क्षेत्र में अनुसंधान नहीं हो
सका, फिर भी बौद्ध और जैन धर्म के उत्कर्ष
दौरान ज्योतिष के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर
कार्य किये गये थे । बौद्ध तथा जैन संप्रदाय
प्रज्ञावान अनुसंधित्सुओं ने ज्योतिष के क्षेत्र
जो योगदान किया निश्चय ही वह स्तुत्य है ।

यद्यपि दिवंगत प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रयत्नों से आयुर्वेद को एलोपैथी के समकक्ष मान्यता दी गयी तथापि उसके विकास के लि अभी तक कोई प्रयत्न नहीं हुआ है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान आक्रांताओं की अविवेकिता, क्रूरता और अंगरेजों की धूर्त्तता के कारण यद्यपि भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक वाङ्मय का भारी विनाश हुआ, किंतु गुरु-शिष्य परंपरा से अध्ययन-अध्यापन एवं ग्रंथों के कंठस्थ करने की परंपरा के कारण ज्योतिष और आयुर्वेद के साथ-साथ भारतीय वाङ्मय के अनेक ग्रंथ सुरक्षित रह सके । इतना ही नहीं, अपितु विदेशी आतताइयों के कारण बड़ी-बड़ी यातनाएं सहन करते हुए भी कुछ मनीषियों ने महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की । यही कारण है कि आज ज्योतिष और आयुर्वेद की थाती सुरक्षित है ।

स्वाधीनता के बाद सरकारी स्तर पर ज्योतिष तथा आयुर्वेद के विकास के लिए कुछ कार्यक्रम भी बनाये गये । प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी ने आयुर्वेदिक चिकित्सा को एलोपैथी के समकक्ष मान्यता प्रदान करने के लिए स्वयं संसद में एक विधेयक प्रस्तुत किया था, जिसे संसद ने सर्वसम्मति से पारित किया । इस प्रकार आयुर्वेद को एलोपैथी के समकक्ष मान्यता दिलाते हुए इंदिराजी ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में भारतीय चिकित्सा परिषद एवं केंद्रीय अनुसंधान परिषद की स्थापना कर आयुर्वेद के पाठ्यक्रम में एकरूपता लाकर एक ऐतिहासिक कार्य संपन्न किया था, जो निश्चय ही इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा । किंतु यह चिंता की बात है कि अभी तक ज्योतिष के कुछ विद्वानों को सरकारी अलंकरण द्वारा सम्मानित करने के सिवा ज्योतिष के लिए ऐसा कोई प्रयत्न नहीं हुआ है । और संभवतः इस कारण कि ज्योतिष को मात्र ब्राह्मणों की विद्या समझने की गलत अवधारणा लोगों के मन में बनी हुई है ।

यद्यपि यह सही है कि ब्राह्मणों का ज्योतिष और संस्कृत पर एकाधिपत्य रहा है । बहुत हद तक ज्योतिष और कर्मकांड के माध्यम से ब्राह्मण अपनी आजीविका भी अर्जित करते रहे हैं । लेकिन इसके बावजूद यह एक स्पष्ट यथार्थ है कि विज्ञान किसी वर्ग विशेष की बपौती नहीं हो सकता । अतः ज्योतिष के विकास की बात सोचते समय उसे किसी वर्ग विशेष की पुश्तैनी संपदा मानने की अपेक्षा उसे एक विज्ञान के रूप में देखा जाना ही समीचीन होगा ।

आज जब ज्योतिष के प्रति लोगों की आस्था बढ़ रही है, सरकार का यह नैतिक दायित्व बन जाता है कि वह अच्छे ज्योतिषियों के निर्माण के लिए ज्योतिष के पठन-पाठन और तत्संबंधी आधुनिक शोध के लिए विश्वविद्यालयों में समुचित व्यवस्था करे, ताकि छद्म ज्योतिषियों द्वारा लोगों को भ्रांत न किया जा सके । राजनेताओं, राजकीय अधिकारियों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण वर्गों की ज्योतिष के प्रति विश्वव्यापी आस्था और विश्वास को देखते हुए, उल्लिखित मुद्दे पर सरकार जितना जल्दी विचार करे, उतना ही अच्छा रहेगा । अतः यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि सरकार ज्योतिष के महत्त्व का, सही परिप्रेक्ष्य में आकलन करते हुए, ज्योतिष के विकास के लिए भी समुचित कदम उठाएगी ।

—बी ५/७, लाल क्वार्टर
कृष्णानगर, दिल्ली

ज्ञान का लक्ष्य सत्य है और सत्य आत्मा की भूख है । —*लेसिंग*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली के एक रईस के घर जब एक तवायफ नजीर का कत्ल उसी के सगे भाई ने कर दिया तो तहलका-सा मच गया । लेकिन उससे भी ज्यादा तहलका तब मचा, जब पं. नारायण प्रसाद 'बेताब' ने इसी घटना को केंद्र बिंदु बनाकर एक नाटक लिखा 'कत्ले-नजीर'

एक नाटक दिल्ली के कत्ल पर आधारित

● बाला दुबे

३ फरवरी १८९९

दिल्ली के सेशंस जज मिस्टर क्लिफर्ड की इजलास में तिल रखने को भी जगह बाकी नहीं थी । शहर दिल्ली के सबसे सनसनीखेज खून के मुकदमे की सुनवाई हो रही थी । लहीम, शहीम, रौबीला और जालिम खूनी गुलाम दस्तगीर पठान कटघरे में खड़ा बेचैन खड़ा था । हां—इसी ने दिल्ली की सबसे हसीन तवाइफ नजीर का बेरहमी से कत्ल किया था—अपनी ही बहन का और दस्तगीर की हिम्मत कि उसने दिल्ली के जाने-माने रईस सेठ अंजुम की हवेली में जाकर पहले तो नजीर की चोटी और नाक काट डाली और जब शोर-शराबा सुनकर वहां तलवार से लैस एक सिपाही आ पहुंचा तो गुलाम दस्तगीर ने उस सिपाही से तलवार छीनकर उसे घायल कर दिया । फिर उसी तलवार से नजीर के टुकड़े-टुकड़े कर डाले । कत्ल कर गुलाम दस्तगीर दिल्ली छावनी भागा था—अपने फौजी दोस्त वफादार खां के पास । उसने पूरा कच्चा चिट्ठा अपने दोस्त को सुनाया था, पर वफादार खां ने वफा नहीं की । थोड़ी ही देर बाद उसे पकड़वा दिया ।

सेठ अंजुम चश्मदीद गवाह था । दिल्ली और लाहौर दोनों ही जगह उसकी हवेलियां और कारोबार था । बयानों से यही पता लगा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नजीर अपने भाई दस्तगीर के हाथों निकलना चाहती थी । सेठ अंजुम ने उसे पनाह का आश्वासन दिया और जब वह एक दिन सेठ अंजुम के हवेली पर मुजरा करने आयी तो वहीं जम गयी और लौटने से इनकार कर दिया । यह सुनकर ही दस्तगीर आपा खो बैठा था और वहां आ धमका । मिस्टर क्लिफर्ड ने बयानों को नापा तौला । और फिर उसकी इजलास भी तो नजीर के हमदर्दों से ठसाठस भरी हुई थी । नजीर-जैसे संगमरमर की मूर्ति को दूध से नहला दिया हो, फूलों से लदी हुई लहराती हुई शाख जैसी, जिधर नजर उठ जाए वहीं सांस थम जाए । कुदरत का बहुत ही नफीस खिलौना थी नजीर चलती-फिरती कयामत-जैसी ।

उस अंगरेज सैशंस जज ने फिर अपना फैसला सुनाया था 'दिल्ली दरवाजे के बाहर खुले आम गुलाम दस्तगीर पठान को फांसी दी जाए ।' और हजारों की भीड़ ने लटकती हुई रस्सी के एक छोर पर जिंदगी को तड़पते देखा— जैसे बगैर पानी के मछली तड़पती है ।

नजीर के कत्ल की दिल्ली में धूम मच गयी थी । लावनी, झूलने— यहां तक कि 'चना जोर गरम' बेचनेवालों तक ने नजीर के कत्ल को अपने गानों में पिरो लिया था । फिर नजीर के इस कत्ल की शोहरत को दिल्ली के कैसरे हिंद प्रेस के प्रूफ रीडर पं. नारायण प्रसाद 'बेताब' कैसे नजर अंदाज करते !

उन दिनों नाटक मंडलियों का बोलबाला था । पारसी मालिकों और फनकार की नाटक कंपनियां चारों तरफ छायी थीं— ईरानी नाटक कंपनी, ऐलफिस्टन क्लब, नाटक उत्तेजक मंडली, हिंदी नाटक मंडली, विक्टोरिया नाटक

पं. नारायणप्रसाद बेताब

कंपनी, अल्फ्रेड कंपनी, न्यू अलफरेड थियोट्रकल कंपनी...अधिकतर दिल्ली में आयी नाटक मंडली के प्रूफ कैसर हिंद प्रेस में ही छपने आते थे और पं. नारायण प्रसाद 'बेताब' उन माहिर प्रूफ रीडरों में थे जो प्रूफ रीडिंग के साथ-साथ डायलॉग और शायरी में माकूल संशोधन भी कर देते थे ।

नजीर के कत्ल की चर्चा ने उन्हें झकझोरा और उन्होंने तभी इरादा कर लिया— उसे

नाटक जगत में 'कत्ले नजीर' पहला नाटक था, जो सत्य कथा पर आधारित था । उसने बेताबजी को विख्यात कर दिया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक का रूप देने का । पं. नारायण प्रसाद 'बेताब' ने फिर नाटक लिखा था— 'कत्ले नजीर ।' उन्हीं दिनों लुधियाना गयी हुई जमादार साहब की नाटक कंपनी के कुछ नाटककार छुट्टी पर चले गये थे और उनके नाटक 'रूप सुंदरी' में कुछ दृश्य बदलने को जरूरत पड़ गयी । जमादार साहब की नजर बेताब पर टिकी और उन्हें बुला लिया । बेताबजी लुधियाना पहुंच गये । वहां जाकर उन्होंने 'रूप मंजरी' का वह काया कल्प किया कि पूरा ड्रामा ही फिर से लिखने की नौबत आ गयी । और तभी कंपनी के अधिकारी ने यह निर्णय लिया कि 'रूप मंजरी' का रिहर्सल बंद किया जाए और उसकी जगह 'कत्ले नजीर' शुरू किया जाए ।

'कत्ले नजीर' को मांजकर नाटक मंडली लाहौर जा पहुंची । जिस मकान में दिल्ली में नजीर का कत्ल हुआ था, उसी मकान के रईस सेठ की हवेली लाहौर में भी थी । दोनों जगह कोठियां, दोनों ही जगह व्यापार और दोनों ही जगह नजीर के कत्ल की ख्याति ।

जैसे ही लाहौर पहुंचकर 'कत्ले नजीर' का विज्ञापन छपा कि शहर में धूम मच गयी । लाहौर की वेश्याओं ने खुले दिल से मांगने पर सामान दे दिया— मूल्यवान पिशवाज (पोशाक जो मुजरे के समय पहनी जाती है) जेवर, कालीन, तकिये, पानदान, इत्रदान— सबके ढेर लग गये । 'कत्ले नजीर' के टिकट हाथों हाथ बिक गये और बेसब्री से जनता इंतजार करने लगी कि कब खेल देखने को मिले । पंडित नारायण प्रसाद बेताब की कामयाबी देखकर नाटक के कुछ लोग जल उठे और उसी नाटक का नायक चुपके से लाहौर के रईस सेठ के पास जा पहुंचा और भरा कि 'इस नाटक में आपकी माताजी का भी अपमान किया गया है ।' सेठ भड़क उठा ।

नाटक आरंभ होने में उस दिन दो घंटे बाकी थे कि पुलिस अफसर सौ सवा सौ जवानों के साथ 'खेल बंद करो' का हुक्म लेकर आ धमका । यह देखकर बेताबजी तो चक्कर खाकर जमीन पर गिर गये । रात का समय था और अदालती कार्यवाही का उस वक्त कोई जरिया भी नहीं था । लिहाजा मन मारकर टिकट के पैसे जनता को वापस कर दिये गये और उस रात नाटक नहीं हो पाया । सुबह होते ही जमादार साहब कचहरी की ओर लपके । केस की जांच शुरू हुई । नाटक के लेखक को बुलवाया गया । लाहौर के उन रईस महोदय ने पांच-पांच सौ रुपये रोज के बैरिस्टर कर रखे थे । यह देखकर लाहौर की तवाइफों ने चंदे किये, फ्री पास वाले लोग और वकील भी इकट्ठा हो गये और बाकायदा मुकदमा स्वयं नाटक-जैसा बन गया । नौ पेशियों के बाद तय पाया गया कि नाटक सत्य पर आधारित और उसके सब तथ्य मिस्टर क्लिफर्ड सेशन जज दिल्ली के फैसले में देखे जा सकते हैं यही बात सेठजी की जिन्होंने नजीर को पनाह का वादा किया था और जिनकी दिल्ली की हवेली में नजीर का कत्ल हुआ था, उनका भी बदला हुआ रखा गया था और उनके खानदान का कोई भी जिक्र कहीं भी नहीं भारी-भरकम फीस वाले वकील बैरिस्टर विरुद्ध जनता के वकीलों के जमघटे ने विजय पायी और अदालत ने यह फैसला दिया कि नाटक किया जा सकता है । उ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाहौर में खुशियों का ओर-झोर न था। मुकदमेंबाजी ने नाटक की चौगुनी पब्लिसिटी कर डाली और जनता नाटक पर टूट पड़ी। उन दिनों अगर कोई नाटक तीन दिन तक लगातार चल जाता तो वह 'हिट' माना जाता था। 'कल्ले नजीर' नाटक लगातार ग्यारह दिन चला और हाल ठसाठस भरे रहे।

पं. नारायण प्रसाद 'बेताब' का 'कल्ले नजीर' उनका सर्वप्रथम नाटक था। इस नाटक में २५ गाने थे और इसका दिग्दर्शन स्व. हीरालाल भाई ने किया था। देखा जाए तो 'कल्ले नजीर' की सफलता ने ही बेताबजी को नाटक जगत में विख्यात कर दिया और इस नाटक युग में दो ही नाटकों के धुरंधर माने जाने लगे— एक तो आगा हश्र काश्मीरी और दूसरे पं. नारायण प्रसाद 'बेताब'।

नाटक-मंच के मेधावी अभिनेता पृथ्वी राज कपूर ने बेताब से पृथ्वी थिएटर्स के लिए अपना सब से पहला नाटक 'शकुन्तला' लिखवाया जो इस धूमधाम से चला कि २१२ बार अभिनीत किया गया और हर बार सफल रहा। पृथ्वी राज कपूर तो बेताबजी के पांव छूते थे और जिस दिन बेताबजी स्वर्ग सिधारे, उस दिन पृथ्वी राज कपूर ने उनके माटुंगा स्थित निजी मकान 'भानु-भवन' से श्मशान घाट तक कंधा दिया था।

नाटक जगत में 'कल्ले नजीर' पहला नाटक था जो सत्य कथा पर आधारित था और फिर भी से सत्य-कथाओं को तोड़-मरोड़कर कहानी गढ़ने की प्रथा चल पड़ी।

एफ-४८, ग्रीन पार्क,
नयी दिल्ली-११००१६

हंसिकाएं

गहन

उसके दार्शनिक पति
चिंता में डूबने लगे
तथा पनडुब्बी में बैठते ही
पैराशूट के बारे में पूछने लगे

अनुपात

प्रिय जाने की मत बात कहो
चार दिन की जिंदगी है
तुम भी तो—
चार दिन के मेहमान हो, यहीं रहो

स्पष्टीकरण

पाठ्यपुस्तक में ढेरों गलतियां देखकर
उन्होंने कह दिया,
'गलतियों से सबक सीखो, इसीलिए हैं
प्रत्येक सबक में इतनी गलतियां'

मदिरा

एक शराबी, पत्नी को बता रहा है
'और मत पियो
मुझे तुम्हारा चेहरा
पहले से ही धुंधला नजर आ रहा है'

समान

सैनिक की पत्नी स्वेटर बुनते समय बोली
'बार्डर में कितना साम्य है
कहीं फंदा डाला, कहीं चली गोली'

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे आदरणीय कवियों के बारे में कहा जाता है कि 'जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि' लेकिन आज के अधिकांश परीक्षार्थियों ने कवियों को बहुत पीछे छोड़ दिया है।

मनोरंजक अनुभव एक परीक्षक के—

● डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी

जैसे दशहरे के अवसर पर जगह-जगह रामलीलाएं होती हैं, उसी तरह मार्च-अप्रैल-मई के महीनों में परीक्षा लीला होती हैं। पूर्व जन्मों के संचित पुण्यों से परी बनने का अवसर मिलता है। विद्यालय तो उनको भी जो एक दिन भी विद्यालय में अ पगधूलि नहीं बखेरते उन्हें भी परीक्षा में बै का प्रवेश-पत्र देकर 'जान बची और लाखों पाये' कहकर चैन की सांस लेते हैं। जिसे नहीं पता कि कोर्स क्या है, किताबें कौन-सी वे सपूत और सुपुत्रियां भी जब परीक्षा-भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी उपस्थिति से पवित्र करते हैं तथा मौलिक कृतियां परीक्षकों को उनके पूर्वजों की याद दिलाने हेतु भेंट करते हैं, उन्हें पढ़-पढ़कर रोम-रोम हर्षित हो जाता है । घर से पापा और मम्मी ये कहकर ऐसे लाड़लों को विदा करते हैं कि तुम कुछ भी लिख आना, कापी भर जानी चाहिए बाद में हम सब देख लेते हैं । 'समरथ को नहिं दोष गुंसाई' । और सचमुच वे सब देख ही नहीं लेते, परीक्षक के वक्षस्थल पर सवार होकर साम, दाम, दंड, भेद से मनचाहे अंक भी प्राप्त कर लेते हैं ।

कल्पना देवी को साथ लेकर ही वे परीक्षा रूपी रूपसी को जीत कर ले जाते हैं । हमारे आदरणीय कवियों के बारे में कहा जाता है कि 'जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि' लेकिन आज के अधिकांश परीक्षार्थियों ने कवियों को बहुत पीछे छोड़ दिया है । कहां-कहां से दूर की कौड़ियां लाते हैं हमारे ये प्रतिभाशाली कलाकार कि कापियां जांचते समय 'आह' और 'वाह' ही कहने को मन करता है ।

हिंदी की दुर्दशा करने में सरकार और उसके वफादार अफसर ही कसर नहीं छोड़ रहे, रही-सही कसर अंगरेजों के बाथरूम ये अंगरेजी-माध्यम के स्कूल निकाल रहे हैं । इनका बस चले तो ये हिंदी पढ़ाएं ही नहीं । ये तो बच्चे की नस-नस में अंगरेजी भाषा और आंग्ल-संस्कृति भरकर ही अपना कर्त्तव्य पूरा करना चाहते हैं । अंगरेज आखिर में गये ही, अंगरेजी को भी एक न एक दिन अपने घर लौटना ही पड़ेगा ।

हां, तो मैं उत्तरपुस्तिकाएं जांच भी रहा हूं और बीच-बीच में जो सुभाषित मेरी नजर पड़ते हैं, उन्हें मस्तक से लगाकर नोट भी करता जाता हूं, आपके मनोरंजन के लिए उन अमर वाक्यों में कुछ प्रस्तुत हैं—

—फोर्ट विलियम कॉलेज के दो हिंदी शिक्षकों के नाम लिखिए ?

—ये कोर्स के बाहर हैं । हमने इस कॉलेज का नाम ही नहीं सुना । फोर्ट विलियम कॉलेज मे हिंदी शिक्षकों का क्या काम ? कहीं न कहीं कुछ गलत है ?

—निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियां लिखिए : श्रृंगार रस, अद्‌भुत रस, अलंकार, चौपाई,

—श्रृंगार रस का उदाहरण—श्री देवी

अद्‌भुत रस का उदाहरण—नेता

अलंकार—हमारे यहां के प्रसिद्ध सिनेमाघर का नाम

—'श्रवण कुमार' खंडकाव्य के आधार पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रवण कुमार का चरित्र चित्रण कीजिए ।

—'श्रवण कुमार' 'एक' बैकवर्ड किस्म का व्यक्ति था जो अपने 'मम्मी' 'डैडी' को बहुत 'लिफ्ट' देता था । एक 'फिल्म' भी इन पर बनी थी पर वो बुरी तरह से 'फ्लाप' हो गयी ।

—निम्नलिखित कवियों एवं लेखकों के बारे में संक्षेप में लिखिए—

सूरदास, तुलसीदास, डॉ. संपूर्णानंद, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

—सूरदास का नाम हमें 'कंफ्यूज' करने को दिया गया है जब उन्हें आंखों से दीखता ही नहीं था तो वे न कविता लिख सकते थे न लेख ।

तुलसी पर एक फिल्म बनी थी 'मैं तुलसी तेरे आंगन' की जो 'हिट' हुई । डॉ. संपूर्णानंद अच्छे कवि तथा अच्छे लेखक के साथ होम्योपैथी के डॉक्टर भी थे । अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के नाम से ही प्रतीत होता है कि उन्होंने भावनात्मक एकता पर रचनाएं की होंगी । उन्होंने अपने नाम में क्षत्रिय जाति का प्रतीक 'सिंह' तथा ब्राह्मण जाति का प्रतीक उपाध्याय मिलाकर जातीय-क्षुद्रभावना को अपने से अलग रक्खा है ।

—निबंध लेखन में तो 'किसी कवि सम्मेलन का वर्णन' ही अधिकांश परीक्षार्थियों ने किया है । कुछ वाक्यांश :

—'कवि सम्मेलन' और 'भगवतीजागरण' रात्रि को शुरू होते हैं और देर तक चलते रहते हैं । कवि सम्मेलन में हमें जादूगरी का भी मजा आ जाता है जब चुटकुलों को कविता कहकर ये अपना कमाल दिखाते हैं । कवि सम्मेलन में हंसानेवाले कवि सर्कस के जोकरों की तरह ही हंसाते हैं । कवियों की ये विशेषता है कि वे हाथ-पैर चलाकर ही मनोरंजन करते हैं जबकि सर्कस के जोकरों को फटे बांसों का सहारा लेना पड़ता है । कवि एक ही चुटकुला-कविता को इसलिए हर कवि सम्मेलन में सुनाते हैं कि श्रोताओं को वे जबानी याद हो जाएं'' ।

ऐसे आदर्श परीक्षार्थियों के चरणों में परीक्षक का सादर प्रणाम ।

—१३/७ शक्तिनगर, दिल्ली

फैलाव रासायनिक हथियारों का

सन १९८४ में जहां विश्व के केवल पांच राष्ट्रों के पास ही रासायनिक हथियार थे, वहां आज बीस देशों के पास रासायनिक हथियार हैं और कई अन्य देश इन्हें हासिल करने की फिराक में हैं, जबकि सन १९२५ के जेनेवा समझौते के अनुसार इनके उपयोग पर प्रतिबंध लगा हुआ है । रासायनिक हथियारों के तेजी से फैलने का कारण यह है कि वे अपेक्षाकृत सस्ते हैं और उनके उत्पादन के लिए बहुत ऊंचे किस्म की तकनीक भी नहीं चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरक्षण का लाभ

सुशीलकुमार, मद्रास : उस व्यक्ति को, जो अनुसूचित जाति की लड़की से शादी कर ले, तो क्या उसे वह आरक्षण संबंधी सभी अधिकार प्राप्त हो जाएंगे, जो एक अनुसूचित जाति के अभ्यार्थी को प्राप्त होते हैं ? यदि नहीं तो क्यों ? जबकि कोई व्यक्ति किसी अन्य देश की नागरिक महिला से शादी करके उसके देश की नागरिकता पा सकता है तो अनुसूचित जाति की महिला से शादी करके आरक्षण संबंधी अधिकार क्यों नहीं पा सकता ?

अनुसूचित जाति की महिला से विवाह करने के आधार पर पुरुष अनुसूचित जाति का अधिकार नहीं प्राप्त करता । हां, कुछ प्रदेशों में इस प्रकार के विवाह को प्रोत्साहन देने के लिए विशेष नियम जरूर बनाये गये हैं, जिनका लाभ उस पुरुष को, जो अनुसूचित जाति की महिला से विवाह करे, प्राप्त हो सकते हैं ।

जहां तक अन्य देश की नागरिकता का प्रश्न है वह भी साधारणतयः उस देश की नागरिक महिला से विवाह के बाद अपने आप नहीं मिल जाती । उसके लिए भी आवेदन करना होता है और नागरिकता देने के लिए अलग-अलग देशों में अलग-अलग नियम हैं ।

गोद लेने की समस्या

लीलावती, रामसिंहपुरा (राय.) : मेरी एक अट्ठाइस वर्षीय अविवाहित चचेरी बहन बच्चा या बच्ची गोद लेना चाहती है, लेकिन वह यह बात सोचकर परेशान हो जाती है कि जब बच्चा या बच्ची स्कूल में जाएगा तो उसके पिता के नाम के स्थान पर क्या दर्ज होगा ? और इस समस्त कार्यवाही में आइंदा बहन का अविवाहित होना आड़े तो नहीं आएगा ?

विधि के अनुसार अविवाहित महिला द्वारा

बच्चा गोद लेने पर कोई प्रतिबंध नहीं है । गोद लेने के बाद बच्चे का पिता कोई नहीं रहेगा । ऐसी स्थिति में अभिभावक के नाम के स्थान पर मां का नाम ही लिखा जा सकेगा । बच्चे के लिए मां या बाप एक ही रहेंगे । अतः आपकी बहन का अविवाहित होना उनके द्वारा संतान गोद लेने संबंधी कार्यवाही में कभी कोई किसी प्रकार की बाधा नहीं बनेगा ।

मांग दहेज की

मदन सिंह, जयपुर : मैंने अपनी लड़की की शादी कुछ महीने पहले ही की है । लड़की अपनी ससुराल में ही है । लड़की के ससुर ने मुझे पत्र लिखकर हजार रुपये नकद और एक मोटर साइकिल बिक्की की मांग की है । जिसे न देने पर उन्होंने लिखा है कि वे लड़की को मेरे यहां नहीं आने देंगे । मैं उनकी मांग पूरी करने की स्थिति में नहीं हूं । बताइए मैं क्या करूं ? कोई कानूनी सलाह दें ।

लड़की के ससुर ने रुपया व विक्की की मांग करके कानून विरोधी कार्य किया है । उनकी इस मांग के सामने झुकने की बजाय आपको उन्हें पत्र लिखकर स्पष्ट कर देना चाहिए कि आप

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी मांग को स्वीकार नहीं कर सकते । लड़की को आपके घर आने-जाने से भी उसके ससुरालवाले नहीं रोक सकते । ससुर के पत्र को संभालकर रखें और इस पत्र के हवाले से इस मामले की सूचना पुलिस के दहेज विरोधी विभाग को दे दें । आपकी इस कार्यवाही से हालांकि आपकी लड़की के संबंध उसके ससुरालवालों से बिगड़ सकते हैं, लेकिन आपकी लड़की को हिम्मत से इन परिस्थितियों का मुकाबला करना होगा ।

कानून क्या कर सकता है

सुरेंद्र पटेल, भोजपुर (बिहार) : इक्कीस वर्षीय एम.ए. का छात्र हूं । अपने ही कॉलेज की एक लड़की से मुझे कई वर्षों से प्रेम है । सर्टिफिकेट से उसकी उम्र १९ वर्ष है । मैं उससे शादी करना चाहता हूं । मेरे परिवार की तुलना में लड़की के मां-बाप बहुत धनी तथा ऊंची पहुंच वाले हैं । लड़की मुझसे शादी करने को तैयार है । क्या मैं उससे कोर्ट मैरेज कर सकता हूं । मुझे डर है कि शादी के बाद वे लड़की को नाबालिग साबित करके मेरे लिए परेशानी पैदा कर सकते हैं । क्या उस लड़की से शादी करने के बाद कानून मेरी सहायता कर सकता है ? मुझे क्या करना चाहिए ?

लड़की १९ वर्ष की होने की स्थिति में अपने भविष्य का निर्णय स्वयं कर सकती है । विवाह की सोचने से पूर्व उसकी सही आयु, जन्म-तिथि आदि की जानकारी प्राप्त कर लें । उचित तो यह रहेगा कि विद्यालय से लड़की की जन्म-तिथि का प्रमाण-पत्र प्राप्त कर लें और उसके उपरांत ही विवाह का निर्णय करें । विशेष विवाह अधिनियम के अंतर्गत कानून १८ वर्ष की लड़की तथा २१ वर्ष के लड़के को स्वेच्छा से विवाह की अनुमति देता है ।

जहां तक विवाह के बाद लड़की को अल्पवयस्क ठहराने की बात है, वह तो प्रमाण का विषय है । आपके पास उचित प्रमाण रहने पर, परेशानी की स्थिति में आप प्रमाण प्रस्तुत कर सकते हैं ।

नियुक्ति संबंधी समस्या

विवेक सिंह बड़ौत : संघ लोक सेवा आयोग तथा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा किसी उम्मीदवार का चयन किये जाने तथा नियुक्ति की सिफारिश किसी विभाग अथवा मंत्रालय को भेजे जाने पर संबंधित विभाग या मंत्रालय को, डॉक्टरी परीक्षा, पुलिस जांच आदि औपचारिकताएं पूरी कर लेने के पश्चात अधिकाधिक कितने समय तक नियुक्ति पत्र देना आवश्यक होता है ? यदि वह किसी विभागीय कानूनी या प्रशासनिक अड़चनवश (प्रस्तावित पद हेतु ही) ऐसा नहीं करता, तो उसके विरुद्ध क्या तथा कहां कानूनी कार्यवाही की जा सकती है ? क्या आयोगों की नियुक्ति संबंधी सिफारिश मानने को सरकारी विभाग तथा मंत्रालय कानूनन बाध्य होते हैं या नहीं ? कृपया, उचित जानकारी दें ।

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा उम्मीदवार चयन किये जाने के बाद, संबंधित विभाग या मंत्रालय विभागीय कार्यवाही पूरी करने के बाद ही नियुक्ति देते हैं । इसमें होनेवाली देरी के आधार पर ही कोई कानूनी कार्यवाही संभव नहीं है । यदि आपकी वरीयता समाप्त करके अन्य किसी व्यक्ति को नियुक्त किया जा रहा हो, उस स्थिति में आप न्यायालय की शरण में जाकर अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए कार्यवाही कर सकते हैं । किस आधार पर आपकी नियुक्ति नहीं की जा रही, इसका पूरा उल्लेख आपके पत्र में नहीं है । इसलिए यह कहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठिन है कि मंत्रालय के विरुद्ध सिफारिश नहीं मानने के लिए कानूनी कार्यवाही संभव है या नहीं ?

मान्य वसीयत कौन-सी ?

रामनरेश यादव, कटनी : मेरे दादाजी ने लगभग सात वर्ष पहले मेरे नाम अपनी जायदाद, जो कि मेरे पिताजी व चाचा के बीच बंटवारे के बाद प्राप्त हुई है, वसीयत की थी । किंतु वह वसीयत सादे कागज में की थी । अतः सुरक्षा की दृष्टि से मैंने उस पर प्लास्टिक लेमिनेशन करा लिया था । अब दादाजी की एक महीने पहले हुई मृत्यु के पश्चात मैं उसे पंजीकृत करवाना चाहता हूं । किंतु रजिस्ट्रार उसे पंजीकृत करने से मना कर रहा है । वह कह रहा है कि लेमिनेशन हो जाने की वजह से वह वसीयत पंजीकृत नहीं हो सकती ।

दूसरे, मेरे दादाजी ने मेरे चचेरे भाई को भी लगभग नौ वर्ष पहले एक पंजीकृत वसीयत की थी जिसको उन्होंने मेरी वसीयत के द्वारा रद्द कर दिया था । कृपया बताएं कि कौन-सी वसीयत मान्य होगी । मेरी वसीयत सादे कागज पर अपंजीकृत है और उसमें केवल दो गवाहों के हस्ताक्षर हैं । और दोनों गवाहों की मृत्यु हो चुकी है ।

वसीयत को पंजीकृत करवाने के लिए वसीयत करनेवाले व्यक्ति का साथ रहना आवश्यक है । आपके दादाजी का स्वर्गवास हो चुका है, इसलिए उनको अब रजिस्ट्रार के समक्ष उपस्थित नहीं किया जा सकता । लैमीनेशन से वसीयत की वैधता पर कोई अंतर नहीं पड़ता फिर वह लैमीनेशन तो खोला भी जा सकता है ।

वसीयत का पंजीकृत होना आवश्यक नहीं होता । सबसे अंतिम वसीयत ही वैध मानी जाएगी । यदि आप यह प्रमाणित कर सकें कि आपकी वसीयत बाद में लिखी गयी है, तो आप उसके आधार पर अधिकार प्राप्त कर सकते हैं । वसीयत सादे कागज पर होने के बाद भी वसीयत वैध मानी जाती है । वसीयत की अन्यथा वैधता, उसमें लिखे जाने के बारे में तथा हस्ताक्षर आदि के विषय में आपको आवश्यक प्रमाण देने होंगे ।

मुकदमे का क्षेत्र

जगतपाल शर्मा, बरेली : लखनऊ की एक कंपनी को दो ट्रक टीन देने का हमारा लिखित सौदा हुआ । एक ट्रक टीन चला गया लेकिन दूसरा नहीं जा पाया । लखनऊ की कंपनी ने हमारे ऊपर लखनऊ की अदालत में मुकदमा दायर कर दिया है । क्या यह कंपनी लखनऊ अदालत में मुकदमा दायर कर सकती है, जबकि सौदे का एग्रीमेंट बरेली में हुआ है । माल भी एफ.ओ.आर. बरेली डिलीवरी से बेचा है । कंपनी को माल हमारे गोदाम से खुद किराया देकर लखनऊ ले जाना तय था ।

वाद उस न्यायालय में हो सकता है, जिसके न्याय क्षेत्र में मुकदमा करने का कारण बना हो । वाद उस न्यायालय में भी हो सकता है, जिसके न्याय क्षेत्र में प्रतिवादी रहता हो । वाद किस न्यायालय में हो सकता है, इसका निर्णय दीवानी प्रक्रिया संहिता की धारा १५ से धारा २० तक के आधार पर किया जाता है ।

आपके मामले में समझौता बरेली में हुआ तथा माल बरेली में ही दिया जाना था । इससे तो ऐसा लगता है कि वाद भी बरेली में ही होना चाहिए था । लखनऊ के न्यायालय में मुकदमा करते समय वादी ने किस आधार पर लखनऊ के न्याय क्षेत्र में वाद का कारण बनने की बात कही है, वह भी देख लेना आवश्यक है । ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल तोपची है

● डॉ. वीरेन्द्र शर्मा

लगभग ३ वर्ष पूर्व की बात है । न्यूयार्क से यू.पी.आई. नामक प्रसिद्ध वार्ता-संस्था ने एक सर्वेक्षण मूलक रोचक समाचार प्रसारित किया था, जिसके अनुसार प्रायः पूरे विश्व में ही—समग्र चेतन जगत में अपराह्न में ३ बजे के लगभग मानव-व्यवहार में एक सहज-सूक्ष्म परिवर्तन परिलक्षित होता है ।

मानव व्यवहार में परिवर्तन

इस मानव-व्यवहार के सूक्ष्म परिवर्तन के संबंध में किये गये शोध-अनुसंधान से जिन व्यापक तथ्यों का पता चलता है, उनमें कुछ उल्लेखनीय इस प्रकार है । ३ बजे के पश्चात कालखंड में दुर्घटनाओं की संख्या में वृद्धि हो जाती है । कार्यकर्ताओं की कार्य-संपादन-क्षमता में एवं श्रमिकों की उत्पादन-प्रक्रिया की सामान्य कुशलता में क्रमिक ह्रास आभासित होता है । कार्यालयों में लोग चाय, काफी, पानी आदि स्फूर्तिदायक पेय पदार्थों की ओर चल पड़ते हैं अथवा अपने कक्षों में ही उन्हें मंगा लेते हैं । कॉलेजों, विश्वविद्यालय परिसरों और अन्य शिक्षण संस्थाओं में अधिसंख्य विद्यार्थी अपनी पुस्तकें एक ओर हटाकर रख देते हैं ।

वैज्ञानिकों, समाज शास्त्रियों एवं मनोविज्ञान के विद्वानों के अनुसार मानव व्यवहार के इस सूक्ष्म परिवर्तन के कारण संस्कृति, भोजन, कार्य-शैली, परिवेशगत आदि नहीं है । प्रत्युत इसका प्रमुख कारण जीव-विज्ञान मूलक मानव संरचनात्मक सहज समय-सूचक बोध (बायोलॉजिकल टाइम क्लाक) के क्रमिक परिवर्तन में निहित हैं । वे लोग इस सूक्ष्म परिवर्तन-प्रक्रिया को मानव-मस्तिष्क में जागृति-सुषुप्तिचक्र से संबद्ध मानते हैं । निश्चय ही अंर्तचेतना के काल बोध के संबंध में किया गया यह अनुसंधान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जिसमें विशद शोधकार्य की अमिट संभावनाएं हैं ।

एक अन्य घटना में ३३ वर्षीय मौरीजिओ मौंताल्बीनी नामक एक इटली निवासी ने एसोना नगर के निकट अवस्थित फ़ुर्ससासी गुफा में १४ दिसम्बर, १९८६ को पूर्ण एकांतवास का जीवन-क्रम प्रारंभ किया । जब १२ जुलाई, १९८७ को उसे यह सूचना दी गयी कि २१० दिनों की अवधि के एकांतवास में रहकर उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व में एक नवीन कीर्तिमान स्थापित कर दिया है—(इससे पूर्व सन १९७२ में एक फ्रांसीसी मीशैलसीफ्रे ने टैक्सास में १०३ दिनों तक एकांतता में रहकर कीर्तिमान स्थापित किया था), तो उसे इसका सहसा विश्वास ही नहीं हुआ। क्योंकि गुफा में रहते हुए उसे भौतिक काल के सम्यक बोध का विस्मरण हो गया। उसके अपने मानसिक काल के अनुसार अभी ३ मार्च की ही तिथि थी। काल-खंड की अवधि में वृद्धि के शुभ संवाद से उसके आनंद और परितोष का सागर उमड़ पड़ा। वह बहुत ही प्रसन्न हुआ।

इसी प्रकार की एक अन्य घटना अब से लगभग १०-११ वर्ष पूर्व दिल्ली की फ्रेंड्स कॉलोनी के अपर्णा आश्रम में घटित हुई। उस समय जब योग-साधना में लीन सत्य-मूर्ति अपनी आठ दिवसीय भूमि-गत समाधि के पश्चात बाहर आये तो उन्हें आभास हुआ कि समाधि में एक रात्रि ही व्यतीत हुई है।

काल समाप्त

विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन के सापेक्षत्व सिद्धांत के अनुसार प्रकाश की गति के सदृश उड्डयन की क्षमता संपन्न अंतरिक्ष यान में सभी प्रक्रियाएं (यदि उन्हें पृथ्वी पर वर्तमान घड़ी की काल-गणना के अनुसार मापें), मंथर गति से परिपूर्ण होंगी—हृदय-गति मंथर होगी, पादप-पल्लव-प्ररोह शनैः शनैः होगा, घड़ी की सुइयों की गति धीमी होगी, अणुओं के इलेक्ट्रॉन धीरे-धीरे हिलेंगे-डुलेंगे इत्यादि। इसी सिद्धांत के आधार पर भौतिक शास्त्री प्रायः एक अत्यंत विस्मयात्मक उदाहरण वृत्त प्रस्तुत किया करते हैं—यदि कोई नवयुवक, अपने एक

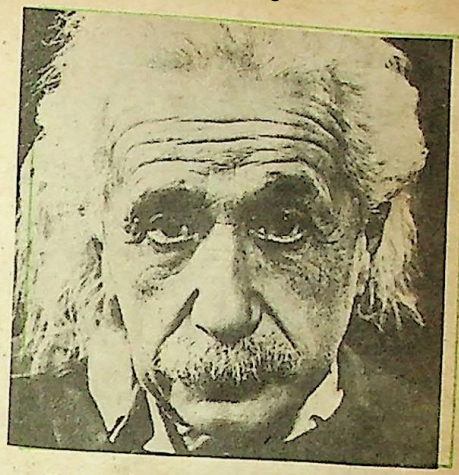

वर्षीय पुत्र को पृथ्वी पर छोड़कर किसी निर्दिष्ट नक्षत्र की ओर प्रकाश-गति-सदृश-गतिमान अंतरिक्ष यान में उड़ान भरे और एक वर्ष के अंतराल के पश्चात अंतरिक्ष यान की काल-गणना-परिकल्पना क्रम में उससे अधिक बड़ा होगा—क्योंकि पिता मंथर काल-गति के क्षेत्र में रहा—उसके लिए एक वर्ष का काल व्यतीत हुआ—जबकि पृथ्वी पर वर्तमान व्यक्तियों के लिए ५० वर्ष या उससे भी अधिक का काल व्यतीत हो गया होगा। काल की अवधारणा के इसी संदर्भ में यह भी कहा जाता है कि प्रकाश की गति प्राप्त हो जाने पर काल ही समाप्त हो जाता है।

काल की अवधारणा, उसके विविध आयाम एवं स्वरूप का प्रसंग अत्यंत कौतूहल एवं आश्चर्य का विषय है। काल सर्वव्यापी है। विश्व में जीवन के उद्भव, परिपालन एवं विकास तथा उसकी चरम परिणति काल-क्रम से ही संपन्न होती है। शाश्वत, असीम एवं परिपूर्ण काल को, जो दंड के समान अखंड है, महाकाल की संज्ञा दी गयी है। नक्षत्रों की गति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के परिणामस्वरूप अनुभूत होनेवाला सापेक्षकाल, सतत प्रवाहमान महाकाल का आभासमान अंग है, जिसकी अनुभूति अनेक रूपों में होती है।

शिव के स्वरूप

भारतीय दर्शन एवं भारतीय वाङ्मय में काल विषयक विविध अनुभूतियों एवं धारणाओं का सविस्तार विवेचन हुआ है। भारतीय मानस सदा काल के विचार से अधिशासित रहा है, जिसकी सर्वोपरि महत्ता सभी ने स्वीकृत की है। यजुर्वेद में काल ही शिव के स्वरूप का आधार है। महाभारत में काल को सबका मूल कारण बताया गया है। काल ही विश्व-नियामक का स्वरूप है। वह ही प्राणियों की परिपक्वता एवं प्रजा के संहार का कारण है। श्रीमद भगवदगीता में भगवान कृष्ण ने काल को अपना ही स्वरूप बतलाया है। मैत्रेयी उपनिषद में ब्रह्म के दो स्वरूपों को काल और अकाल की संज्ञा से अभिहित किया गया है। औपनिषदिक चिंतन के अनुसार विकास का निरंतर क्रम सृष्टि की सहज प्रवृत्ति है और यह विकास क्रम काल के गर्भ में ही रूपायित होता है। सूर्य सिद्धांत के अनुसार काल के दो रूप हैं—स्थूलभाव से मूर्त तथा सूक्ष्म भाव से 'अमूर्त'।

भौतिक काल की अवधि का बोध अभिव्यक्त सूचित करने के लिए अनेक मापदंडों एवं शैलियों का प्रश्रय लिया गया है। कहीं यह परिगणना सौर सिद्धांत पर आधारित रही है तो कहीं वह चांद्र आधार पर। मानवीय एवं देवताओं की कालावधि के परिगणन एवं उसकी अनुभूति में भी अंतर होता है। काल की परिकल्पना भौतिक, मानसिक, जीव-संरचना पर पर्यावरण के प्रभाव का बोध आदि रूपों में भी की गयी है।

पुराण-साहित्य में ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जिनके माध्यम से काल की विविध अनुभूतियों एवं आयामों को अत्यंत प्रतीकात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है। काल को माया के रूप में चित्रित करने का निम्नलिखित संदर्भ भारतीय चिंतन में काल की अवधारणा-प्रतिभा का अद्‌भुत उदाहरण है—

माया का अभिलाषी

एक बार का प्रसंग है—मुनि नारद पर प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने वरदान मांगने के लिए कहा। मुनि ने प्रार्थना की, "प्रभो, मैं आपकी माया के दर्शन का अभिलाषी हूं।" भगवान ने कहा, "ठीक है। तुम मेरा अनुगमन करो।"

क्रमशः वे एक अत्यंत निर्जन बीहड़ स्थल पर पहुंचे। तीव्र सूर्य के प्रकाश से ग्रीष्म ऋतु में सभी पदार्थ उष्णता और ताप से झुलस रहे थे। भगवान ने मुनि से कहा—मुझे तीव्र पिपासा है। निकटस्थ ग्राम से जल लाकर मुझे पिलाने का प्रबंध करो।

निकटस्थ एक ग्राम में पहुंचकर मुनि ने पहली ही कुटिया में गुहार लगायी। अत्यंत सौंदर्य-मंडित रमणी उन्हें अंदर ले गयी। रमणी के माता-पिता ने मुनि का आदर-सत्कार किया। रमणी के रूप माधुर्य पर मुनि मुग्ध हो गये एवं वहीं पर टिक गये। माता-पिता ने रमणी का विवाह मुनि के साथ कर दिया। अब मुनि एक गृहस्थ का जीवन व्यतीत करने लगे।

कालक्रम में मुनि के तीन बच्चे हुए। श्वसुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का निधन हो गया । मुनि के कंधों पर ही परिवार का समस्त भार आ पड़ा । १२ वर्षों के अंतराल के पश्चात एक दिन सहसा अभूतपूर्व घमासान वृष्टि हुई—सर्वत्र पृथ्वी जल-मग्न हो गयी । मुनि की कुटिया में भी जल भरने लगा । उन्होंने बच्चों को साथ लेकर पत्नी का हाथ पकड़ कुटिया से बहिर्गमन किया । असमान पृथ्वी तल पर उन्हें ठोकर लगी, वह लुढ़क गये । बच्चे बहने लगे, पत्नी एक ओर जल में मग्न होने लगी और दूसरी ओर मुनि विवश—अर्धचेतन, विषण्ण हो गये ।

वैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों एवं मनोविज्ञान के विद्वानों के अनुसार मानव-व्यवहार के इस सूक्ष्म परिवर्तन के कारण संस्कृति, भोजन, कार्य-शैली, परिवेशगत आदि नहीं है ।

चेतनावस्था लौटने पर मुनि को लगा यह तो चट्टान है । अच्छा हुआ डूबने से बच गया, किंतु, अरे मेरी पत्नी, बच्चों का क्या हुआ ? वह ऐसा विचार कर ही रहे थे कि चिरपरिचित स्वर कानों में सुनायी पड़ा, "मुनिवर, क्या शीतल जल ले आये ? मैं प्यास से बहुत व्यग्र हूं—आधा घंटे से अधिक हो गया, मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं ।"

पूर्ण स्वस्थ होने पर मुनि ने देखा—सर्वत्र मरुस्थल—भगवान ने मुसकराकर पूछ लिया, "मुनिश्रेष्ठ, क्या तुमने माया के दर्शन कर लिये । स्पष्ट ही इस संदर्भ में माया प्रस्तुत करने का माध्यम है काल । काल-क्रम में माया का विस्तरणशील आवरण ।

प्रणय व्यवहार पुनर्जागृत

महाकवि कालिदास ने प्रवाहमान काल का बोध अवचेतन मन की अनुभूतियों तथा स्मृतियों की भावाभिव्यक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है । उनकी मान्यता है कि काल-बोध का स्रोत मात्र तात्कालिक न होकर, कहीं अधिक गहरा होता है, वह अदृश्य में होता है । अतीत में होता है । अभिज्ञान शाकुंतलम् में राजा दुष्यंत के मन पर मधुर संगीत का जो विलक्षण प्रभाव होता है, उसके संबंध में उनका विचार है—

'रमणीय पदार्थों का अवलोकन कर तथा मधुरिम शब्द संकलित गीत का श्रवण कर सुखी व्यक्तियों के अंतर में भी जो उत्कंठा-लालसा जागृत हो जाती है, तो वह निश्चय ही अवचेतन मन में अवस्थित जन्म-जन्मांतरों के प्रणय-व्यवहारों को अनायास ही स्मरण कर लेता है ।' यह तथ्य ज्ञात ही है कि स्मरण के द्वारा वर्तमान में अतीत का बोध होता है और कल्पना द्वारा वर्तमान में रहता हुआ व्यक्ति, भविष्य के गह्वर में दृष्टिपात करता है । इस प्रकार अतीत, वर्तमान और भविष्य काल के तीन भेद हैं । अतीत ही क्रमशः वर्तमान और वर्तमान क्रमशः भविष्यत का रूप ग्रहण करता है । योग द्वारा योगी तीनों कालों को देख लेते हैं ।

इसी प्रकार स्वयंवर के स्थान पर राजकुमारी इंदुमती ने राजकुमार अज को अनेकों राजाओं के मध्य चिह्नित कर लिया । यह बोध भी जन्म-जन्मांतर के ज्ञान के कारण ही संभव हुआ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करदाता ध्यान दें

यदि आप ऐसे कर्मचारी हैं जिन्हें वेतन मिलता है या आप ऐसे नियोजक हैं जो वेतन से स्रोत पर कर की कटौती के लिये उत्तरदायी हैं, तो निम्नलिखित दर सूची आपके लिये लाभदायक होगी।

वित्तीय वर्ष 1989-90 के लिये वेतन से स्रोत पर कर की कटौती के लिये आयकर की दरें

कुल आय के स्लैब (रुपयों में)		आयकर की दरें
से	तक	
	18,000	कुछ नहीं
18,001	25,000	उस रकम का 20% जो 18,000 रुपये से अधिक है।
25,001	50,000	1,400 रुपये + उस रकम का 30% जो 25,000 रुपये से अधिक है।
50,001	1,00,000	8,900 रुपये + उस रकम का 40% जो 50,000 रुपये से अधिक है।
1,00,001	और अधिक	28,900 रुपये + उस रकम का 50% जो 1,00,000 रुपये से अधिक है।

नोट : 50,000 रुपये से अधिक शुद्ध कर योग्य आय पर आयकर का 8% अधिभार भी शामिल करें।

कर की सही-सही गणना करें – शीघ्र भुगतान करें

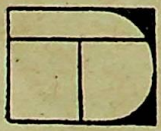

आयकर विभाग

आयकर निदेशालय (ग.सां.प्र.व ज.सं.)
नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि मन जन्म-जन्मांतर की संगति का बोध-भंडार है ।

काल की गति स्थिर

मानसिक काल की अनुभूति और प्रतीति, मानसिक काल का समग्र बोध मन की मुद्राओं पर आधारित रहता है । यदि हम आनंद मग्न हैं, तो घंटों का काल-प्रवाह कितनी शीघ्रता में व्यतीत हो जाता है—इसका आभास ही नहीं रहता और यदि मन चिंतातुर व्यग्र होता है तो एक पल का समय भी एक कल्प के समान भारी, असह्य लगता है ।

भौतिक और मानसिक काल-बोध की अनुभूतियों में अंतरक्रम को गोस्वामी तुलसीदास ने अनेक स्थलों पर बड़ी कुशलता से निरूपित किया है । श्री रामचन्द्र के जन्म के पावन अवसर पर मानो काल की गति स्थिर हो गयी । सभी आनंद मग्न हैं—तीनों लोक सुध-बुध खो बैठे । अतः दिनकर भी अपनी गति भुला बैठे—

कौतुक देख पतंग भुलाना
एक मास तेइ जात न जाना

स्वयंवर के अवसर पर श्रीराम धनुष-भंजन के लिए जिस क्षण आगे बढ़ रहे हैं, वह क्षण सीताजी के लिए अत्यंत आतुरता का क्षण है । सीताजी के लिए उस पल की अनुभूति का भाव इन पंक्तियों में सांकेतिक रूप में अभिव्यक्त है—

देखी विपुल विकल वैदेही
निमिष विहात कलप सम तेही

ऐसे संदर्भ अनेक हैं—

प्राणियों में काल बोध का एक अन्य रूप है, जीव संरचना पर पर्यावरण के परिवर्तनों की सहज अनुभूति । ऋतुओं में परिवर्तन के साथ विभिन्न प्राणियों में काल-बोध-विषयक परिवर्तन अनुभूत होने लगते हैं । शीत ऋतु के समागम से पूर्व ही भालुओं को इसका आभ्यांतरिक बोध होने लगता है, जिससे वे शीतकालिक विश्राम के लिए तत्पर हो जाते हैं । रात्रि में गतिशील प्राणियों को संध्या होते ही जागृति बोध हो जाता है, जिससे दिन के शयन-विश्राम के पश्चात उनकी गतिविधियां प्रारंभ हो जाती हैं । समुद्र के तटों पर रहनेवाले केकड़ों को ज्वार-भाटे के परिवर्तनों का सामयिक बोध सहज भाव से होता रहता है ।

काल अनंत है । उसका प्रवाह अविच्छिन्न है । वह अजेय है और जीवन तथा जगत का पूर्ण नियामक है । तुलसीदासजी ने काल को तोपची कहा है । प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह काल के सार्वभौम, सार्वकालिक महत्त्व को पहचान कर समय रहते अपने सभी कार्य दक्षता से संपन्न करने का यत्न करे और सर्वदा स्मरण रखे

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब

१२/९०९, रामकृष्णपुरम नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : नव वर्षारंभ उपलब्धिदायक होगा। नवीन योजनाओं में सफलता, आत्मीय जनों से समागम तथा धार्मिक दिशा में चले आ रहे प्रयास सार्थक होंगे। शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारियों का नवीन योजना में सहयोग मिलेगा। ८ से १५ के मध्य इच्छित कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रु पक्ष के कारण संपत्ति कार्यों में प्रगति शिथिल होगी। १६ से २४ के मध्य प्रियजन से भेंट होगी। उत्साह तथा उल्लासपूर्ण वातावरण होगा। आमोद-प्रमोद पर व्ययाधिक्य होगा। मासांत में आकस्मिक यात्रा का योग उपस्थित होगा। मांगलिक अथवा धार्मिक कार्यों की पूर्ति के प्रयास पूर्ण होंगे।

महिलाओं को कार्यों की अधिकता होगी। विशिष्ट कार्य की पूर्ति से प्रसन्नता होगी। आजीविका संबंधी अनुकूल स्थिति रहेगी।

विद्यार्थियों को शिक्षा, परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी।

वृषभ : मास मध्यम फलदायी होगा। पारिवारिक सुख मिलेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। पराक्रम तथा प्रभाव वृद्धि होगी। १ से ७ के मध्य प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय प्राप्त होगी। नवीन वस्तु के क्रय करने की योजना पूर्ण होगी। उच्चाधिकारी वर्ग का उल्लेखनीय सहयोग मिलेगा। ८ से १५ के मध्य कार्य की अधिकता, व्यर्थ तनाव बढ़ेंगे। अस्वस्थता पर व्यय होगा। वाहनादि का प्रयोग सावधानी से करें। १६ से २४ के मध्य नवीन स्थान की यात्रा तथा प्रियजन से भेंट होगी। राज्याधिकारी से विवाद टालना हितकर होगा। संपत्ति कार्यों में प्रगति होगी। मासांत में लेखन सृजन, रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में रुझान बढ़ेगा। सत्संगति का लाभ मिलेगा।

महिलाओं को उपहार, भेंट अथवा आकस्मिक लाभ होगा। आजीविका संबंधी अनुकूल स्थिति होगी। भावुकता से बचें।

विद्यार्थियों की शिक्षा कार्यों में धीमी उन्नति होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मिथुन : मास उत्साहवर्धक होगा। आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार होगा। शत्रु पक्ष से सावधानी रखना हितकर होगा। १ से ७ के मध्य राजकीय कार्यों में संबंधित जनों

ग्रह स्थिति : सूर्य १४ जनवरी से मकर में, मंगल २० से धनु में, बुध ४ से धनु (व) में, गुरु मिथुन में, शुक्र २७ से धनु में (व), शनि धनु में, राहु मकर में, केतु कर्क में, हर्षल नेपच्यून धनु में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व और त्योहार

१ जन. ईस्वी नववर्षारंभ, ४ दुर्गाष्टमी, ७ पुत्रदा एकादशी, ८ सोम प्रदोष, ११ पौषी पूर्णिमा, १३ लोहड़ी, १४ संकष्ठी श्रीगणेश चतुर्थी, सूर्य की मकर संक्रांति खिचड़ी, १८ कालाष्टमी, २२ षटतिला एकादशी व्रत, २४ प्रदोष व्रत, २६ मौनी अमावस्था भारत में अदृश्य कंकड़ाकृति सूर्यग्रहण, भारतीय गणतंत्र दिवस, ३० वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, ३१ वसंत पंचमी श्री पंचमी ।

का सहयोग मिलेगा । लेखन सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । ८ से १५ के मध्य नवीन स्थान की यात्रा तथा प्रियजनों से भेंट होगी । राज्याधिकारी के साथ विवाद टालना हितकर होगा । १६ से २४ के मध्य शत्रु पक्ष के गुप्त षड्यंत्र प्रतिष्ठा को प्रभावित करेंगे । मानसिक एवं शारीरिक व्यथा का सामना करना होगा । नवीन संपत्ति संबंधी कार्य लाभदायी होगा । मासांत में उल्लेखनीय उपलब्धि होगी । सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी । नवीन पद अथवा अधिकार लाभ होगा ।

महिलाओं को स्वल्प अस्वस्थता होगी । नवीन वस्तु का लाभ होगा । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक रहेगा ।

विद्यार्थियों को शिक्षा क्षेत्र में सफलता मिलेगी । सांस्कृतिक अथवा अन्य क्रियाकलापों से सार्वजनिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी । मित्रों का सहयोग मिलेगा ।

कर्क : मास उत्तम फलदायी होगा । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । पारिवारिक कार्यों से खिन्नता रहेगी । उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा । १ से ७ के मध्य शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा । पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । शत्रु पक्ष के प्रयास निरर्थक होंगे । ८ से १५ के मध्य संपत्ति संबंधी विवादों में सफलता मिलेगी । पारिवारिक वातावरण खिन्नतापूर्ण होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । १६ से २४ के मध्य दौड़धूप की अधिकता से स्वास्थ्य अस्थिर रहेगा । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करें । साहसिक प्रयास लाभदायी होंगे । मासांत में नवीन योजना हेतु यात्रा लाभदायी होगी । पारिवारिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी । संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्यय होगा ।

महिलाओं को विशिष्ट लाभ होगा । स्वजनों का सहयोग उत्साहवर्धक होगा । यात्रा सुखद होगी ।

विद्यार्थियों को विशिष्ट पुरस्कार अथवा सफलता मिलेगी । शिक्षा संबंधी प्रयास पूर्ण होंगे ।

सिंह : प्रतिकूल वातावरण में साहसिक प्रयासों से सफलता मिलेगी । मित्रों से विचारों में विषमता होगी । पराक्रम वृद्धि एवं यश प्राप्ति होगी । १ से ७ के मध्य श्रम की अधिकता तथा यात्राओं की अधिकता से अस्थिरता का सामना करना होगा । ८ से १५ के मध्य स्थिर संपदा की दिशा में महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त होगी । शत्रु पक्ष से सावधानी रखें । प्रियजन अथवा मित्र से कष्ट संभावित है । १६ से २४ के मध्य लेखन, साहित्य अथवा कलात्मक कार्यों से प्रतिष्ठा बढ़ेगी । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । मासांत में पुरुषार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रतिष्ठा तथा धन लाभ होगा । उच्चाधिकारी वर्ग का उल्लेखनीय सहयोग मिलेगा ।

महिलाओं को कार्यों में अधिकता तथा मानसिक अस्थिरता रहेगी । जोखिम पूर्ण कार्यों से धन लाभ होगा । स्वजनों से भेंट होगी ।

विद्यार्थियों की शिक्षा कार्यों में उन्नति होगी । पारिवारिक वातावरण अनुकूल होगा ।

कन्या : मास अनुकूल फलदायी होगा । आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी । निकटजनों से विरोधाभास होगा । उदासीनता की अधिकता रहेगी । १ से ७ के मध्य सुख-साधनों की वृद्धि होगी । वैभव अथवा कलात्मक वस्तुओं पर धन व्यय होगा । स्वजनों से अकारण विरोध बढ़ेगा । ८ से १५ के मध्य शत्रु पक्ष के गुप्त षड्यंत्रों का भंडाफोड़ होगा । संपत्ति विवाद का निराकरण मध्यस्थों से होगा । १६ से २४ के मध्य शारीरिक अस्वस्थता का सामना करना होगा । जीवन साथी की सलाह से लाभदायी स्थितियों का उदय होगा । शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारियों की अनुकंपा रहेगी । मासांत में रचनात्मक अथवा आध्यात्मिक कार्यों में रुझान बढ़ेगा । उदासीनता अथवा मानसिक खिन्नता रहेगी ।

महिलाओं को स्वल्प उदर अथवा रक्त विकार का सामना करना होगा । वरिष्ठजनों के सहयोग से पारिवारिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।

विद्यार्थियों को उत्साहवर्धक वातावरण में शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी ।

तुला : विद्यमान समस्याओं का समाधान होगा । आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार होगा । आध्यात्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की संपन्नता से प्रसन्नता होगी । १ से ७ के मध्य आर्थिक दिशा में प्रभावशाली व्यक्ति के सहयोग से लाभ मिलेगा । लंबित योजना पूर्ण होगी । सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी । ८ से १५ के मध्य आजीविका संबंधी स्थिति दृढ़ होगी । मांगलिक अथवा धार्मिक कार्यों के संपादन में परिवारजन का सहयोग मिलेगा । १६ से २४ के मध्य शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे । उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा । कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता होगी । मासांत में मानसिक प्रसन्नता तथा उत्साहवर्धक वातावरण रहेगा । इच्छित स्थान की यात्रा होगी ।

महिलाओं का रचनात्मक अथवा आध्यात्मिक कार्यों में उल्लेखनीय योगदान होगा । आजीविका की दिशा में उत्साहवर्धक स्थिति रहेगी ।

विद्यार्थियों को विशिष्ट लाभ पुरस्कार मिलेगा । इच्छित कार्य पूर्ण होंगे ।

वृश्चिक : मास प्रतिष्ठादायी होगा । नवीन परिवर्तनों से लाभ मिलेगा । विशिष्ट नवीन परिवर्तनों से लाभ मिलेगा । विशिष्ट कार्य की पूर्ति होगी । उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग सम्मानदायी रहेगा । १ से ७ के मध्य आपके कार्य क्षेत्र में अनेक परिवर्तन होंगे जो कि लाभदायी रहेंगे । मित्रों तथा स्वजनों से सहयोग मिलेगा । ८ से १५ के मध्य आकस्मिक धन लाभ होगा । आजीविका संबंधी कार्यों से लाभ मिलेगा । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । १६ से २४ के मध्य सृजन, लेखन, रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों से प्रतिष्ठा बढ़ेगी । लंबित योजना की पूर्ति होगी । मासांत में शत्रु पक्ष के अवरोधों के बावजूद उच्चाधिकारियों क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहयोग फलदायी रहेगा । पारिवारिक चिंता बढ़ेगी ।

महिलाओं को पारिवारिक सुख मिलेगा । नवीन दायित्व से कार्यों की अधिकता होगी ।

विद्यार्थियों को सांस्कृतिक अथवा कलात्मक कार्यों में पुरस्कार मिलेगा । पारिवारिक सहयोग उत्साहवर्धक होगा ।

धनु : अकारण विरोधाभास तथा तनावों के बावजूद उपलब्धिपूर्ण समय रहेगा । परोपकारी कार्यों से पीड़ा होगी । भावुकता पर नियंत्रण रखें । स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता अपेक्षित है । १ से ७ के मध्य शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से नवीन योजनाओं में अवरोध उपस्थित होंगे । प्रियजन के कारण मानसिक पीड़ा बढ़ेगी । ८ से १५ के मध्य जोखिमपूर्ण निर्णयों से पीड़ा होगी । आकस्मिक धन लाभ होगा । जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा । १६ से २४ के मध्य कार्यों की अधिकता, मानसिक तनाव, अस्वस्थता रहेगी । व्यर्थ विवाद टालना हितकर होगा । मासांत में पुरुषार्थ से प्रतिष्ठा तथा धन लाभ होगा । दूसरों की सहायता हेतु सोच-विचारकर कदम बढ़ाएं ।

महिलाओं को मानसिक खिन्नता तथा अस्वस्थता होगी । व्यर्थ विवाद टालें ।

विद्यार्थियों की शिक्षा में धीमी उन्नति होगी । वाहनादि से सावधानी रखें ।

मकर : मास में आर्थिक एवं भाग्यवर्धक प्रयासों में उल्लेखनीय प्रगति होगी । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । सुख-साधनों की वृद्धि होगी । १ से ७ के मध्य नवीन योजनाओं में तीव्रगामी प्रगति होगी । कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा । आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी । ८ से १५ के मध्य शत्रु पक्ष से सुलह होगी । शत्रु विवाद का निराकरण होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी । १६ से २४ के मध्य भावुकता की अधिकता से खिन्नता रहेगी । वाहनादि से सावधानी रखें । पारिवारिक सहयोग मिलेगा । मासांत में शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा । व्यस्तता बढ़ेगी । गुप्त शत्रुओं से सावधानी रखें ।

महिलाओं को नवीन कार्यों में व्यस्तता रहेगी । यात्रा का योग होगा । स्वजनों से भेंट होगी ।

विद्यार्थियों को सुखद समाचार मिलेगा । शिक्षा कार्यों में शिथिलता रहेगी ।

कुंभ : रोजगार संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी । पारिवारिक कार्यों पर धन व्यय होगा । नवीन मित्रों के समागम से प्रसन्नता तथा उत्साह रहेगा । शत्रु पक्ष की चिंता होगी । १ से ७ के मध्य नवीन योजनाओं पर व्यय होगा । आकस्मिक धन लाभ से समस्याओं का समाधान होगा । परिवारजनों के असहयोग से खिन्नता रहेगी । ८ से १५ के मध्य शत्रु पक्ष अथवा विघटनकारी तत्वों की चिंता रहेगी । दैविक कृपा से संपत्ति, वाहनादि की समस्या का हल मिलेगा । १६ से २४ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी । नवीन मित्रों से भेंट होगी । आमोद-प्रमोद पर व्यय होगा । उत्साहवर्धक वातावरण होगा । मासांत में शत्रु पक्ष से सावधानी रखें । प्रतिष्ठा के प्रतिकूल प्रयास होंगे । उच्चाधिकारियों से विवाद टालना हितकर होगा ।

महिलाओं को धार्मिक अथवा मांगलिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यों में नेतृत्व मिलेगा । परिवार की चिंता रहेगी । आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी ।

विद्यार्थियों को विशिष्ट पुरस्कार अथवा सफलता मिलेगी । कार्यों की अधिकता होगी ।

मीन : मास में अस्थिरता रहेगी । अधिकाधिक परिश्रम के बावजूद वांछित लाभ में विलंब होगा । प्रियजन के असहयोग से खिन्नता होगी । १ से ७ के मध्य सामाजिक अथवा पारिवारिक कार्यों में दौड़धूप की अधिकता होगी । आर्थिक अस्थिरता बढ़ेगी । ८ से १५ के मध्य शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग से मालिन्य बढ़ेगा । अस्वस्थता का सामना करना पड़ेगा । क्रोध अथवा आवेग पर नियंत्रण हितकर होगा । १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । कामकाज के प्रति उदासीनता रहेगी । शत्रु पक्ष की चिंता रहेगी । मासांत में नेत्र अथवा सिर संबंधी पीड़ा रहेगी । जोखिम के कार्यों में विश्वास का आश्रय न लें । अज्ञात चिंता अथवा भय का सामना करना होगा ।

महिलाओं को पारिवारिक परेशानी, अस्वस्थता का सामना करना होगा । नवीन कार्यों में उदासीनता रहेगी । आर्थिक अस्थिरता रहेगी ।

विद्यार्थियों की शिक्षा कार्यों में प्रगति शिथिल रहेगी । आमोद-प्रमोद तथा मित्रों से सावधानी रखें ।

—ज्योतिषधाम पत्रिका
१२/४ ओल्ड सुभाष नगर, गोविंदपुरा,
भोपाल (मध्य प्रदेश)

आप भी तांत्रिक बन सकते हैं कैसे?
पढ़ें मासिक पत्रिका
तंत्र त्रिकाल
अब भारत के सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध
सम्पादक एवं प्रकाशक :-
बंगाली तांत्रिक
संकटमोचन प्रतिष्ठान
जयदेवी नगर, गढ़ रोड, मेरठ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

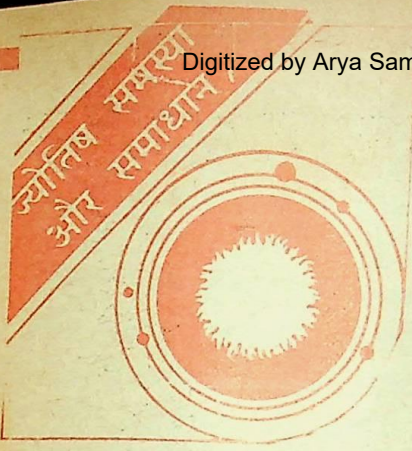

'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' प्रविष्टि ९३ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए। सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं—पाठकों के सुपरिचित पं. के.ए. दुबे 'पद्मेश'।

● के.ए. दुबे. पद्मेश

ब्रजगोपाल, कलकत्ता

प्रश्न : भाग्योदय कब होगा ?

उत्तर : ४१ वर्ष की आयु में।

रंभा, दिल्ली

प्रश्न : विवाह कब तक ?

उत्तर : मंगली दोष है, २९-३० वर्ष की आयु में विवाह का योग।

भगवान प्रसाद टंडन, कन्नौज

प्रश्न : वर्तमान व्यवसाय से प्रगति कब से होगी ?

उत्तर : २३ वर्ष की आयु से। मई १९९० से सामान्य प्रगति।

तेज बहादुर रवि, फालना

प्रश्न : आर्थिक स्थिति में कब से सुधार होगा ?

उत्तर : ४१ वर्ष की आयु से।

भूपेन्द्र सिंह, हल्द्वानी

प्रश्न : विवाह कब, रत्न कौन-सा धारण करें ?

उत्तर : पुखराज धारण करें, मंगली दोष, विवाह में विलंब, जुलाई १९९० तक विवाह का योग।

नीरा पंत, अल्मोड़ा

प्रश्न : विवाह कब तक होगा ?

उत्तर : नवंबर १९८९ से २१ जुलाई १९९० के मध्य।

प्रबोध कुमार, रायपुर

प्रश्न : पत्नी का स्वास्थ्य कब तक ठीक होगा ?

उत्तर : आपकी जन्मांग से राहु की महादशा चल रही है जो कि लग्न में है, वह पत्नी के स्वास्थ्य को प्रभावित किये हुए है। ४१वां वर्ष लाभप्रद होगा।

श्रीमती शशि कान्त, आगरा

प्रश्न : आर्थिक प्रगति के लिए कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : द्वितीयेश और सप्तमेश मंगल है, जिस कारण ४१ से ५६ तक प्रचुर मात्रा में धन रहेगा। मूंगा धारण करें, मंगल यंत्र का पूजन करें।

मनोज कुमार श्रीवास्तव, पटना

प्रश्न : किस क्षेत्र में सफलता मिलेगी ?

उत्तर : नौकरी में, काव्य, साहित्य में रुचि रहेगी। आंशिक सफलता भी मिलेगी।

देवव्रत, इलाहाबाद

प्रश्न : अधिकारी बनने के योग हैं या नहीं, रत्न बतायें ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर : सप्तमेश, द्वितीयेश मंगल, द्वितीय भाव में है, अधिकारी बनने के योग हैं। मूंगा धारण करें।

अमरेश श्रीवास्तव, मुजफ्फरनगर

प्रश्न : नौकरी का योग कब तक ?

उत्तर : २३ वर्ष की आयु में।

राजेश कुमार श्रीवास्तव, देवरिया

प्रश्न : प्रतियोगी परीक्षा में सफलता ९० में मिलेगी या नहीं ?

उत्तर : मूंगा धारण करें, पूरे मन से प्रयास करें, सफलता मिलेगी।

सीमा, कटनी

प्रश्न : विवाह कब तक होगा ?

उत्तर : २१ जुलाई १९९० तक विवाह का योग है।

सलिल कुमार जोशी, रामपुर

प्रश्न : किस क्षेत्र में प्रगति ?

उत्तर : सूर्य, बुध, शुक्र सप्तम भाव में हैं, व्यापार से प्रगति होगी।

सुशील कुमार, हरदोई

प्रश्न : नौकरी का योग है या नहीं ?

उत्तर : चंद्रमा का मंगल बुध से षडाष्टक योग उच्च अधिकारी बनाता है। २९वां वर्ष महत्त्वपूर्ण होगा।

प्रदीप खरे, झांसी

प्रश्न : नौकरी में उन्नति कब ?

उत्तर : सिंह लग्न में मंगल कारक होता है। २८वें वर्ष में उन्नति तथा ४१ से ५६ तक श्रेष्ठ काल खंड होगा।

किरन, इलाहाबाद

प्रश्न : विवाह कब तक होगा ?

उत्तर : ३७ या ४१ वर्ष की आयु में।

पियुष रमन, भिंड

प्रश्न : मैं क्या बनूंगा ?

उत्तर : आपकी कुंडली में डॉक्टर बनने के योग हैं, उस दिशा में प्रयास करें।

जानकी प्रसाद सिन्हा, पटना

प्रश्न : मेरा भाग्योदय कब होगा ?

उत्तर : आपका भाग्येश मंगल है, अतः ४१ वर्ष की आयु में भाग्योदय होगा।

रामेश्वरी दीक्षित, नागपुर

प्रश्न : मेरे मकान का कब तक योग है ?

उत्तर : नवम्बर ८९ से जुलाई ९१ के मध्य मकान का योग है।

सुधा सेठ, खंडवा

प्रश्न : मेरा विवाह कब तक होगा ?

उत्तर : १९ नवम्बर से ११ जुलाई १९९० के मध्य विवाह का योग है।

आरती बंसल, बंबई

प्रश्न : मेरा विवाह कब तक होगा ?

उत्तर : २४ वर्ष की आयु में विवाह का योग है।

पवन अनेजा, गाजियाबाद

प्रश्न : नौकरी में चल रहे व्यवधान कब समाप्त होंगे ?

उत्तर : व्यवधान अभी मार्च ९० तक चलेंगे।

मीना तिवारी, ग्वालियर

प्रश्न : भाग्योदय कब से होगा ?

उत्तर : २५ वर्ष की आयु से।

विनोद कुमार, रायपुर

प्रश्न : राजयोग कब से कब तक ?

उत्तर : २८ से ५६ वर्ष की आयु में।

अनुराधा भटनागर, पूना

प्रश्न : विवाह कब तक होगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर : जुलाई, १९९० तक विवाह का योग है।

श्रीमती मृदुला, कोटा

प्रश्न : जीवन में स्थायित्व कब से ?

उत्तर : पूरी तरह ४१ वर्ष की आयु से।

बृजेश कुमार गुप्ता, बस्ती

प्रश्न : स्वास्थ्य लाभ के लिए कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : चांदी की अंगूठी में गोमेद धारण करें।

निमेष, भोपाल

प्रश्न : नौकरी कब से ?

उत्तर : २५ या २८ वर्ष की उम्र में।

उमा पाण्डेय, हाथरस

प्रश्न : विवाह का योग कब ?

उत्तर : कन्या लग्न में सप्तम भाव का मंगल विवाह को बहुत मुश्किल से होने देता है। ३४ से ३६ वर्ष की आयु में होता है।

प्रियतम सिंह, बरेली

प्रश्न : भाग्योदय कब होगा ?

उत्तर : ५० वर्ष की आयु में भाग्योदय होगा।

जगदीश नारायण शर्मा, उत्तरकाशी

प्रश्न : क्या करोड़पति बनने का योग है ?

उत्तर : दशम भाव की बुध, शुक्र, चन्द्र और केतु की युति करोड़पति बना देगी।

प्रतिभा, अल्मोड़ा

प्रश्न : पदोन्नति के लिए कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : चांदी की अंगूठी में मोती धारण करें।

विजय सिंह, देवरिया

प्रश्न : आर्थिक प्रगति के लिए कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : तर्जनी अंगुली में पुखराज धारण करें।

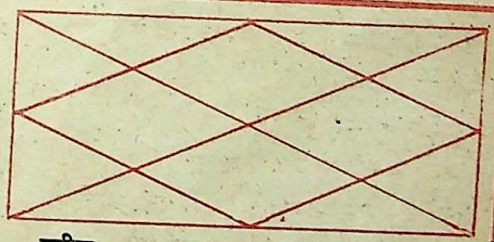

९५

नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख).....महीना.....सन.....

जन्म-स्थान.....जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा.....वर्तमान .....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि-९५) 'कादम्बिनी',
हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

अंतिम तिथि : २० जनवरी, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

कु. सावित्री, बहादराबाद

प्रश्न : उम्र २६ वर्ष । दस वर्ष से लिकोरिया से पीड़ित हूं मासिक के करीब एक सप्ताह तक पानी के साथ काफी मोटे तार आते हैं यह क्रम हमेशा मासिक के बाद शुरु हो जाता है । काफी इलाज सभी प्रकार के कर चुकी हूं !

उत्तर : 'सुपारी पाक' एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें 'अशोकारिष्ट' दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

अरविन्द घोष, बैरागढ़

प्रश्न : उम्र १८ वर्ष । दो वर्ष की अवस्था से शरीर फटता गया— जलन होती है—शरीर में काले-काले धब्बे बनते गये । काफी इलाज हुए परेशान हूं ।

उत्तर : 'केशोर गूगल' एक वटी, 'गंधक रसायन' एक वटी सुबह-शाम पानी से लें 'सारिवाधासव' दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें । 'पंचतिक्तघृत गूगल' एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

दयाल मनचंदा, पडरी

प्रश्न : उम्र चौबीस वर्ष । छह माह से नींद नहीं आती है । एलोपैथी दवा ली हैं, कोई फायदा नहीं ।

उत्तर : 'ब्रह्मरसायन' एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । 'बलारिष्ट' दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

ऋचा, शालीमार बाग

प्रश्न : उम्र १४ वर्ष । धूल-कण-धुआं आदि से एलर्जी-सिरदर्द व जुकाम सामान्यता रहता ही है । हाथ-पैरों में दर्द ।

उत्तर : 'चित्रकहरित्तकी' एक-एक चम्मच सुबह-रात गरम पानी या दूध से लें । 'व्योशादि वटी' एक-एक वटी दिन में दो बार गरम पानी से लें ।

श्याम प्रकाश, कलकत्ता

प्रश्न : उम्र सत्तर वर्ष । अचानक बेहोश हो जाता हूं । हाथ-पैर हिलने लगते हैं । दांत बंद हो जाते हैं तथा मुंह से झाग निकलने लगते हैं जन्म से ही यह रोग है !

उत्तर : 'वात्तकुलानाकरस' ५ ग्राम साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । 'सारस्वतारिष्ट' दो चम्मच, 'अश्वगंधारिष्ट' दो चम्मच, 'बलारिष्ट' दो चम्मच, भोजन बाद पीयें ।

श्यामा देवी, रघुनाथपुर

प्रश्न : उम्र ४० वर्ष । पेट के निचले भाग दर्द होता है । किसी समय छाती-कमर योनी में भी दर्द हो जाता है । पेट बढ़ता रहा है । शरीर में चींटी काटने-जैसी अनुभूति होती है ।

उत्तर : 'आरोग्यवर्धनीवटी' एक वटी 'चंद्र वटी', एक वटी, सुबह-शाम गरम पानी से 'दशमूलारिष्ट' दो चम्मच, 'सारिवाधारिष्ट' चम्मच भोजन बाद पीयें ।

केदार नाथ भट्ट, झिरन्या

-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न : कमर से एड़ी तक दर्द बराबर बना रहता है। ठीक तरह चल नहीं पाता, बैठ नहीं सकता। कब्ज रहती है।

उत्तर : 'रास्नागूगल' दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें। 'दशमूलारिष्ट' दो चम्मच 'अश्वगंधारिष्ट' दो चम्मच भोजन बाद पीयें। 'पंचषकार चूर्ण' एक चम्मच रात सोने से पहले गरम पानी से लें।

श्री कृष्ण वाजपेयी, चम्पारन

प्रश्न : उम्र ६० साल। अधोगवात से पीड़ित हूं। शरीर में भारीपन। हाथ-पैरों में हर समय झनझनाहट। चलने-फिरने में अशक्त, साधारण उपचार लिखें।

उत्तर : 'त्रयोदशांग गूगल' एक वटी, 'योगराजगूगल' एक वटी, सुबह-रात दूध से लें। 'अश्वगंधारिष्ट' दो चम्मच, 'बलारिष्ट' दो चम्मच, भोजन बाद पीयें। ६ माह नियमित औषधि सेवन करें।

बी. एम. अग्रवाल, भोपाल

प्रश्न : पुत्र की आयु १९ वर्ष है। पांच वर्ष पूर्व खूनी दस्त से पीड़ित हो गया था। इलाज से ठीक हुआ, किंतु तीन-चार बार शौच के लिए जाता है। कमजोरी रहती है। कभी-कभी आंव भी आती है।

उत्तर : 'कुटजारिष्ट' दो-दो चम्मच भोजन बाद नियमित तीन माह सेवन करें।

अभिषेक कुमार, साबरमती

प्रश्न : उम्र २६ वर्ष। पिशाब करने के बाद फिर इच्छा होती है तथा बूंद-बूंद पिशाब आता है कपड़े खराब हो जाते हैं। महीने में चार-पांच बार स्वप्नदोष भी हो जाता है।

उत्तर : 'चंद्रप्रभा वटी' एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें। 'चंदनासव' दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें।

श्रीमती नीलम, मुरी

प्रश्न : मेरे पांच वर्षीय पुत्र को लगभग ६ माह से शौच के साथ धागे की तरह लिपटा खून आता है।

उत्तर : 'कुटजारिष्ट' आधा चम्मच सम भाग पानी मिलाकर, भोजन बाद पीयें।

जयकान्त, काझी

प्रश्न : उम्र ब्यालीस। पैप्टीक अल्सर का पुराना रोगी हूं। अनेक चिकित्सा करा चुका हुं, आप्रेशन भी करवाया विशेष लाभ नहीं।

उत्तर : 'स्वर्णसूतशेखर रस' ५ ग्राम, 'प्रवाल पंचामृत' ५ ग्राम, साठ मात्रा बनायें, एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से 'आंवलाचूर्ण' आधा-आधा चम्मच दोपहर-रात पानी से लें।

— कविराज वेदव्रत शर्मा

नाम..... आयु.....

रोग..... कब से है.....

अब तक क्या इलाज किया .....

वैद्य की सलाह

द्वारा—संपादक—'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, नयी दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत : पुस्तक में लेखक डा. भारद्वाज ने पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र के स्वरूप, सिद्धांत और उसके विकासात्मक इतिहास को समझाने का स्तुत्य प्रयास किया है। हिंदी की सभी पुरानी-नयी विधाओं को तात्विक दृष्टि से समझने के लिए पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र को समझे बिना एक कदम भी आगे बढ़ पाना मुश्किल है। इसीलिए साहित्य के सुधी पाठक पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र को समझने के लिए समुत्सक रहते हैं। किंतु यह क्षेत्र अत्यंत विशद और जटिल होने से इस विषय पर लिखनेवालों को कम ही सफलता मिल पायी है। कुछ लेखक विषय, प्रतिपादन में संतुलन दृष्टि के अभाव में आवश्यक प्रतिपाद्य से भटक जाते हैं, और कुछ बेहद विस्तारी विवेचन के शिकार हो जाते हैं। किंतु साढ़े चार सौ पृष्ठों के इस ग्रंथ में तीन खंडों के अंतर्गत अट्ठावन अध्यायों में निबद्ध करके प्रायः सभी आवश्यक और ज्ञातव्य विषयों का विवेचन प्रस्तुत कर दिया गया है। प्रथम खंड में प्लेटो, अरस्तू, होरेस आदि सुख्यात समीक्षकों के संग ड्राइडन, सेंत ब्यव आदि के समीक्षा सिद्धांतों का निरूपण भी किया गया है। इसी प्रकार प्रमुख वाद और सिद्धांत विषयक द्वितीय खंड में कलावाद, बिंबवाद, प्रतीकवाद जैसे प्रचलित वादों के साथ दादावाद, मिथकवाद जैसे अपेक्षाकृत अप्रचलित सिद्धांतों का परिचय भी दे दिया गया है। विविध विधाओं और काव्य रूपोंवाले तृतीय खंड में काव्य के महाकाव्य, गीतिकाव्य आदि विविधरूपों के साथ नाटक, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, आत्मकथा आदि प्रचलित और अपेक्षाकृत कम प्रचलित सभी विधाओं का विवेचन प्रस्तुत किया है। 'आलोचना' विषयक अध्याय में आलोचना की प्रकृति और उसके विविध रूपों का सर्वांगीण विवेचन विशेष उपयोगी बन पड़ा है।

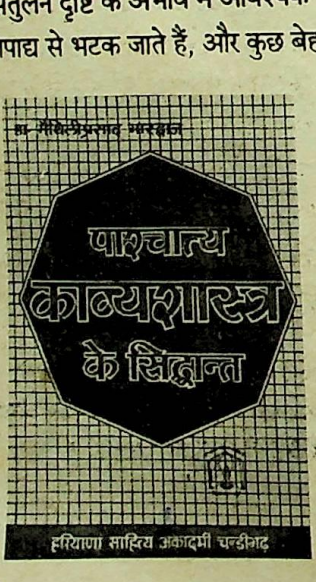

पाश्चात्य समीक्षा के सभी अंगों के तलस्पर्शी ऐतिहासिक और स्वरूपगत परिचय देने के लिहाज से लिखा गया यह ग्रंथ अपनी सारग्राहिता और सुबोधता के कारण विशेष लोकप्रियता पा सकेगा। हरियाणा साहित्य अकादमी ने इसका मूल्य भी कम रखकर सराहनीय कार्य किया है।

पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत : लेखक मैथिली प्रसाद भारद्वाज। प्रकाशक : हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़-१८, मूल्य : ६० रु.।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी पत्रकारिता और समाचार लेखन : हिंदी में अपने विषय पर शायद अपने तरह की अकेली पुस्तक है । पत्रकारिता को पेशे और शौक के रूप में ग्रहण करने वालों की संख्या दिनोंदिन बढ़ रही है तथा पाठ्यक्रम में भी अब इसे पढ़ाने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है । परंतु इस लिहाज से इस विषय पर मौलिक पुस्तकों का लेखन-प्रकाशन देखने में नहीं आ रहा । इस कमी की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए ही लेखिका ने इस पुस्तक को तैयार किया है । पत्रकारिता के स्वरूप, उसका सामान्य परिचय तथा उसके उद्भव और विकास के अध्यायों के बाद लेखिका ने 'स्वतंत्र पत्रकारिता और सृजनात्मक लेखन' के अंतर्गत मनोयोग से कहानी, रेखाचित्र, लेख, व्यंग्य, समीक्षा, यात्रावृत्त आदि के सैद्धांतिक पक्ष का विश्लेषण करने के उपरांत इनके सृजनपक्ष को समझाने का प्रयास भी किया है । साथ ही, इनमें से प्रत्येक विधा के व्यावहारिक रूप को स्पष्ट करने के लिए प्रसिद्ध लेखकों के उदाहरण भी प्रस्तुत किये हैं । समाचार-लेखन में लेखिका ने समाचारों के शीर्षक, उनके प्रकारों, उन्हें प्राप्त करने के स्त्रोतों आदि पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए विवेचन दिया है ।

इनके अतिरिक्त संपादकीय विभाग के अंतर्गत आनेवाले समाचार संपादक, साहित्य संपादक, फिल्म संपादक, व्यापार संपादक आदि श्रेणियों में आनेवाले विभिन्न संपादकों के स्वरूप और स्वभाव को समझाने का प्रयास भी किया है । अपराध समाचार, वाणिज्य समाचार, आदि क्या होते हैं और उन्हें कैसे तैयार करना चाहिए— इन पर भी प्रकाश डाला गया है । फीचर, लेख, इंटरव्यू आदि तैयार करने के लिए किन-किन बातों का विशेष और साधारण तौर पर ध्यान रखना चाहिए— इन पर भी अलग-अलग अध्याय दिये गये हैं । समाचार समितियों, प्रूफ रीडिंग, प्रेस शब्दावली संबंधी अध्यायों में भी आवश्यक जानकारी प्रस्तुत की गयी है । पत्रकारिता में प्रशिक्षण पानेवाले तथा शौकिया जानकारी चाहनेवालों के लिए यह पुस्तक उपयोगी प्रतीत होगी ।

'नयी पत्रकारिता और समाचार लेखन' लेखिका : सविता चड्ढा । प्रकाशक : तक्षशिला प्रकाशन, २३/४७६२, अंसारी रोड, नयी दिल्ली-२ । मूल्य : ८५ रु. ।

हिंदी की भूमिकाएं : पुस्तक में हिंदी के जानेमाने प्रशासनिक अधिकारी और एकाधिक सरकारी संस्थानों के वर्षों निदेशक पद पर कार्य करने का अनुभव रखने वाले डॉ. गोपाल शर्मा द्वारा समय-समय पर लिखे और भाषण रूप में दिये गये निबंधों का संकलन है । हिंदी को स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा, राज्य भाषा और संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करने का जो प्रयास सरकार और जनता की ओर से विगत चालीसेक वर्षों से किया जा रहा है, उसमें कितनी प्रगति और दुर्गति हुई है एवं उनके मूल में क्या-क्या कारण रहे हैं— आदि के बारे में व्यापक तौर पर इन निबंधों में जानकारी स्वतः ही मिल जाती है ।

हिंदी की भूमिकाएं, लेखक : डॉ. गोपाल शर्मा, प्रकाशक : पुस्तकायन, २/४२४० अंसारी रोड, नयी दिल्ली-२, मूल्य : ५० रु. ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

सिर्फ एक सपना

सुदूर उस ओर
एक छोटा-सा गांव है
यह मेरे सपनों का गांव है
जहां मैं रहने का स्वप्न देखती हूं
जहां, 'ये' नहीं है 'वो' नहीं है
ऐसा-वैसा कुछ नहीं है
सिर्फ सब सुखद-सा है
भीड़-भाड़ नहीं है
कोई मारा-मारी नहीं है
कोई होड़ नहीं है
बस सब बेजोड़ है
मानव है यहां भी
पर मानवता अधिक है
शांत है यहां सब
क्लांत-अशांत कोई नहीं
सुसंगति है यहां विसंगति नहीं
आनंदमय है यहां सब
इसलिए सिर्फ संपन्नता है यहां
परंतु दुःख है मुझे यह कि
यह तो सिर्फ मेरे सपनों का गांव है
असलियत में इसे बदल देना
क्या आज संभव है

समाधान

मर्यादा को तोड़ कर निकल जाना चाहती हूं
किंतु अक्षम हूं
आसमान छूना चाहती हूं
घुटन से निकल जाना चाहती हूं
अब खुली हवा में सांस लेना चाहती हूं
किंतु वही तड़प कि मैं अक्षम हूं

लगता है सब हिल रहा है
सब कुछ घूम रहा है
सब पाताल में धंस रहे हैं
मैं भाग जाना चाहती हूं
एक नया रास्ता खोजना चाहती हूं
निराश हो आंख मूंद लेती हूं
पुनः आंख खोलती हूं
सब-कुछ वैसा ही पाकर भयभीत हो
पुनः आंख मूंद लेती हूं

कुछ समय बीतता है
भय समाप्त होता है
चित्त शांत होता है
समाधान मिल गया है
सब-कुछ व्यवस्थित हो गया है
पलायन की इच्छा समाप्त होती है
'जूझने' की शक्ति जागृत होती है
एक नयी क्षमता आती है
अब मैं सक्षम हूं
सचमुच मैं सक्षम हूं

आत्मकथ्य :

पारुल जैन

द्वारा— डॉ. अतुल कुमार जैन ५, नरेन्द्र विहार चकरौता रोड, देहरा

हालांकि मैं पूर्णतया संवेदनशील होने का दावा नहीं कर सकती, किंतु जीवन के कु
पहलू ऐसे हैं, जिनके प्रति मेरा हृदय बेहद संवेदनशील है । जब यह संवेदना वेदना बन जाती है, त
शब्द बनकर कागज तक पहुंच जाती है । किंतु ऐसा कभी-कभी ही होता है । क्योंकि मन प्रायः अ
समस्या का समाधान खोजने का प्रयास करता रहता है कि क्या समस्याएं मात्र कविता लिखने से सु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्म-कथ्य :

कमलेश्वर साहू

जन्म— २६ नवम्बर, १९६५ शिक्षा— बी. एस-सी,.. डी.एम.एल.टी.
सेक्टर-२, सड़क-६ ब्लॉक १६ए भिलाई नगर म.प्र. ४९०००१

"जिस वर्तमान में मैं जी रहा हूं, जिस वर्तमान में मेरी पीढ़ी जी रही है, और जो वर्तमान हम सब में जी रहा है बस उसी वर्तमान को अपनी दृष्टि से, अपने ढंग से, कोण-विशेष से देखने की छोटी-सी कोशिश है, मेरी कविताएं।"

सपना

सबसे मीठा सपना देखता है बच्चा
पिता के लाये बिस्कुट
टाफियां और ढेर सारे खिलौने होते हैं
बच्चे के सपने में
सबसे प्यारा सपना देखती है लड़की
जिम्मेदार पति
प्यारा-सा बच्चा
छोटा-सा घर होता है
लड़की के सपने में
सबसे ऊंचा सपना देखती है मां
बेटा होकर जवान
देता है सहारा
उसके बुढ़ापे को
मां के सपने में
सबसे सच्चा सपना देखता है किसान
जुताई-बुआई के बाद
लहराती है फसल खेत में
झूमती हैं बालियां
पके हुए दानों की
किसान के सपने में
हमेशा ही मीठा, प्यारा, ऊंचा, सच्चा होता है
आदमी का देखा हुआ सपना

मां की याद

रात
जब भी कोई
मीठा सपना आता है
सुबह
सबसे पहले मां की याद आती है
एक मां ही तो थी
जिसे सताया करता था मैं
सुबह (रात के)
अपने सपने के बारे में

ओ पृथ्वीवासियो

देवता लड़ रहे हैं
राक्षस लड़ रहे हैं
देवता लड़ रहे हैं
पृथ्वी को स्वर्ग बनाने के लिए
राक्षस लड़ रहे हैं
पृथ्वी को नर्क बनाने के लिए
पृथ्वीवासियो
ओ पृथ्वीवासियो
पृथ्वी की रक्षा करो
देवताओं और राक्षसों की लड़ाई में
नष्ट हो रही पृथ्वी
ओ पृथ्वीवासियो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्त्रहीन विजय

गांव के लोग निर्धन हैं, निरक्षर हैं, —सत्य हैं। फिर भी सभ्य और सुसंस्कृत समझे जानेवाले शहरी को अभी भी व्यावहारिक शिक्षा का पाठ उन्हीं से लेना होगा, ऐसा मेरा अनुभव बताता है।

बात पिछली गरमी के दिनों की है। मैं भागलपुर के टी.एन.बी. कॉलेज में अपने साथ ही पढ़ रहे दो मित्रों, जो मेरे बचपन के मित्र हैं, के साथ पालवंश के राजा धर्मपाल द्वारा ८वीं सदी में निर्मित विक्रमशिला विश्वविद्यालय के भग्नावशेष को देखने के उद्देश्य से निकला। सवारी के अभाव में विक्रमशिला स्टेशन से खुदाई-स्थल तक की दूरी (६ कि.मी.) तय करने पैदल ही चल पड़े, लेकिन सिर्फ एक ही किलोमीटर पश्चात तेज धूप की गरमी और प्यास से हौसला पस्त होने लगा। हम एक-दूसरे को कोसे जा रहे थे —"कैसा घटिया प्लान है।" तभी मेरी नजर पास के खेत में ईख का रस पेर रहे युवक पर गयी। हम लोग खुद को रोक न पाये। हमारी इच्छा व्यक्त करते ही वह सहर्ष तैयार हो गया। उसकी लड़की हमारे बैठने की तथा पत्नी रस पिलाने की व्यवस्था करने लगी। उसकी तन्मयता को देख हम यह समझ रहे थे कि वे हमें बाहर का समझ कर अधिक पैसा ऐंठने के जुगाड़ में हैं। लेकिन हम लोगों की भावी नीति भी तैयार हो चुकी थी —दो रुपये से अधिक नहीं देना है और अपने को लोकल बताना है। परंतु ये सारे ताने-बाने बेकार हो गये जब हम लोग पूरे चौदह कटोरा (लगभग ५ किलो) रस डकारने के बाद उसे दो रुपये देने लगे। वाद-विवाद की उम्मीद में मेरा मित्र पहले ही गरज पड़ा —रख लो, हम लोग लोकल ही हैं। परंतु उम्मीद से परे वह हाथ जोड़ कर विनम्र भाव से बोला —"मालिक बातचीत से तो गंगा पार के बुझाते हैं (मैं मूलतः मिथिला का हूं) और उस पर से विद्यार्थी। रोज तो आइएगा नहीं, हमारा इतना भी अधिकार नहीं जो आप लोग जैसे बटोही को जरा-सा सेवा कर सकें। आप ग्राहक नहीं, मेहमान हैं और हां मेरी बैलगाड़ी वहीं जा रही है, चले जाइए थकावट से बचिएगा।"

उसके व्यवहार और कथन पर हम लोग स्तब्ध हो गये। अपने कृत्य पर हम लोग शर्म से गड़े जा रहे थे।

—विमलेन्दु कुमार सिंह (मुखियाजी)
पुत्र-श्री केसरी कुमार
(चंद्रिका पांडे के मकान
अलकापुरी (गर्दनीबाग) पो.-अनीसाबाद

वृद्धा की नसीहत

अपने जीवन की बहुत छोटी-सी ही पर मैंने मृत्यु और जीवन की नजदीकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत बारीकी से परखा और जाना है ।

घटना आज से करीब ७-८ वर्ष पहले की है, जब मैं प्रतियोगात्मक परीक्षा की तैयारी कर रहा था । मैं अपने गांव से रोज मेरठ बस से आता-जाता था । हापुड़ से मेरठ जानेवाली किसी भी बस को सड़क के किनारे हाथ दिखाकर रोक लेता था । एक दिन मैं प्रतिदिन की तरह सड़क पर खड़ा होकर बस की प्रतीक्षा कर रहा था । करीब १०-१५ मिनट बाद एक बस आयी, जो यात्रियों से ठसाठस भरी थी । मैं जबरदस्ती बस में घुसने की चेष्टा करने लगा तभी बस में बैठी एक वृद्धा ने खिड़की से मुझे पुकारते हुए कहा 'बेटा दूसरी बस में आ जाना, इसमें बड़ी भीड़ है ।' उनकी बात मानना तो नहीं चाह रहा था, परंतु न जाने कैसे, किसी दबाव से उनकी बात मान ली ।

करीब २० मिनट बाद दूसरी बस में बैठा । करीब १० कि.मी. आगे पहली बस को रुके देखा, जो किसी पेड़ से टकरा गयी थी ।

—शशांक
प्रवक्ता, बायोकेमिस्ट्री विभाग
ला.ला.रा. मेडिकल कॉलेज मेरठ (उ.प्र.)

एक ईमानदार जेबकतरा

कुछ ही दिनों पूर्व की बात है । मैं 'वन-विकास निगम' में 'डाटा एंट्री ऑपरेटर कम जूनियर प्रोग्रामर' का इंटरव्यू देने भोपाल जा रहा था । होशंगाबाद स्टेशन पर चाय पीने उतरा, तो एक स्थान पर भीड़ देख उत्सुकतावश उस ओर बढ़ गया । मैं वहां पहुंच भी न पाया था कि अचानक वहां भगदड़ मच गयी और इसी आपाधापी में कोई मेरा पर्स छीनकर भाग गया । पर्स में मेरा 'काल-लैटर' तथा अन्य सभी सर्टिफिकेट्स रखे थे । मैं हतप्रभ खड़ा निर्णय नहीं कर पा रहा था कि क्या करूं ? इतने में ही गाड़ी ने सीटी दे दी, तब यह सोचकर कि कहीं मेरा अन्य सामान भी न चला जाए, मैं बोझिल कदमों से ट्रेन में चढ़ गया ।

दूसरे दिन सुबह दस बजे इंटरव्यू होना था, पर मेरे पास तो कुछ था ही नहीं, तो मैं इंटरव्यू देने कैसे जाता ? फिर भी यह सोचकर चला गया कि चयनकर्ताओं को वस्तु-स्थिति बता दूंगा, हो सकता है मुझे इंटरव्यू देने का अवसर मिल जाए । तभी अचानक एक लड़का लगभग हांफता हुआ वहां आ खड़ा हुआ, और पूछा —आप लोगों में से व्यास कौन है ? मैं हड़बड़ाकर खड़ा हो गया, वह मुझे एक ओर ले गया तथा मेरे हाथ में मेरे सर्टिफिकेट्स तथा 'काल-लेटर' थमा दिया । मैंने प्रश्न-सूचक निगाहों से उसकी ओर देखा ।

उसने कहा —कल मैं ही तो आपके हाथ से पर्स लूटकर ले गया था । घर जाकर खोलकर देखा, तो उसमें सिर्फ सर्टिफिकेट्स एवं काल-लेटर देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ । मैंने सोचा, मुझे तो नौकरी मिली नहीं, तो मेरी वजह से आपका यह अवसर क्यों चूके ? अतः मैं यह वापस करने आ गया ।

मैंने पूछा —तुम तो पढ़े-लिखे मालूम होते हो, फिर ऐसा कार्य क्यों करते हो ?

पेट की खातिर ! तत्परता से उसने कहा । नौकरी मिलती नहीं, तो क्या करूं ?

—अशोक कुमार व्यास
पचरीघाट, जूना बिलासपुर,
बिलासपुर (म.प्र.) पिन-४९५००९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या करेंगे आप ?

'क्या करेंगे आप' स्तंभ के लिए आप हास्य के रंग और व्यंग्य की तरंग में डूबी अपनी खिलखिलाती हुई, गुदगुदा देनेवाली रचनाएं भेजें, और हां 'देखन में छोटी लगें घाव करें गंभीर' की उक्ति को चरितार्थ करती हुई आपकी रचना आठ-दस पंक्ति की ही हो, ताकि अधिक से अधिक रचनाकार इस रोचक 'काव्य-चर्चा' में सम्मिलित हो सकें, काव्य-चर्चा का विषय है— बन गयी एक सरकार निराली

भागवती कहे हंसो प्रिय
पर निकले कैसे खीस
महंगाई की मार ने
बना दिया कटपीस
ऐसे गाढ़े समय में
मिल जाए यदि भंग
मैं तो खूब जमाऊंगा
भागवती पर रंग
भंग की तरंग में
बेगम से बोलूं बोल
प्राणेश्वरी तू होगी जब भी
इस दुनिया से गोल
तो शाहजहां से दो डग आगे
तेरी याद में मैं जाऊंगा
ताजमहल पत्थर है पत्थर
मैं भांगमहल बनवाऊंगा

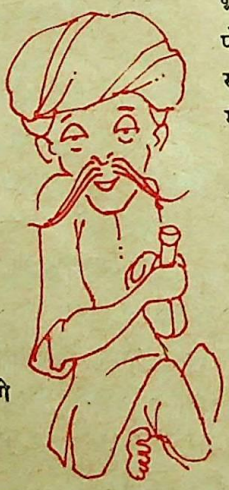

—राजकुमार यादव

मगरधा : बीना, म.प्र.

फुनगियां हैं फागुनी, बहार ही बहार है
रंग भी अपार है, उमंग भी अपार है
भोर के उजास-सा, हास है बिखर गया
पोर-पोर अनायास, सहज ही निखर गया
स्वागतेय हो गया अनंग अंग-अंग में
मन मलंग हो गया भंग की तरंग में

—राजा चौरसि

उमरियापान, ४८३३३२, जि.- जबलपुर (म.प्र.)

आज हर रंग-रंग आज हर ढंग-ढंग
आज हर अंग-अंग भंग की तरंग में
खादी, खाकी, नेता, हाकिम, चपरासी
सभी मदमस्त यहां भंग की तरंग में
कोई पांच साल तक कोई साठ साल तक
कोई चार दिन ही भंग की तरंग में
अंग भंग भंग यहां बंगभंग-जैसी
फूंक-फूंक रखो पैर भंग की तरंग में

—पं. संतोष

बालाजी धाम उनाव, दतिया (म.प्र.)४७५६७१

संपर्क 'क्या करेंगे आप', द्वारा : संपादक, 'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली-१

अंतिम तिथि : २० जनवरी १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतरिक्ष यात्रा का
मजा उठाना हो
बिना कोई शुल्क दिए
हिचकोले खाना हो
बिना चुनाव लड़े ही
मंत्री बन जाना हो
या स्थितप्रज्ञ-सी
समाधि लगाना हो
तो रंग जाओ रंग में
भंग की तरंग में

—मोहन कुमार सरकार
कार्य. दंडाधिकारी, अररिया -८५४३११ (पूर्णिया)

काव्य की समीक्षा बेजोड़ कर लूंगा मैं
फर्क नहीं दीखेगा 'भूषण' या 'गंग' में
संगीत-प्रवीण हूं सबूत यह काफी है
समभाव रखता कनस्तर-मृदंग में
कादम्बिनी-संपादन बखूबी संभालूंगा
रहूं चाहे उटकमंड अथवा शिलंग में
आप क्यों चिंतित हैं, छुट्टी ले घर जाएं
देखें, क्या मजा मिला भंग की तरंग में !

—नंदकुमार मिश्र
अधीक्षक (कार्मिक) मुख्य भंडार, एच.एस.सी.एल.
बोकारो इस्पात नगर-८२७०११

गये आज बाजार में ली दो गोली भंग
आधे घंटे बाद ही चढ़ा भंग का रंग
चढ़ा भंग का रंग साइकिल लड़ी गधे से
मैं नीचे ऊपर गर्दभ देखें सब लोग ठगे से
किंतु रहा सौभाग्य खरोंच तनिक ना आयी
हाथ जोड़कर उससे बोला करदे माफ मुझे भाई
बोला गदहा सुन ले बे दोपाये गदहे
चौपाया हूं माफ कर रहा दोपाये ये न सहते

—अनिल कुमार उपाध्याय
[illegible]रा— गोमती ग्रामीण बैंक, गौसपुर, खुटहन, जौनपुर
उ. प्र.)

खाने को भंग, नहाने को गंग
चढ़ैं को तुरंग प्रेम पावन प्रसंग में
बिजिया भवानी है निशानी मर्दानी की
छानों-घोटो यारो डूब जाओ रस-रंग में
शिव का प्रसाद, ये बिषाद हरे जीवन का
तारे लोक दोनो, सुनी संतन-सत्संग में
पौरुष की बूटी, ये जन-जीवन घूटी
है भक्ति में अनूठी-शक्ति फूंके अंग-अंग में
क्या करेंगे हम, है थोड़ा सा भ्रम
कहीं घुट न जाए दम, इस भंग की तरंग में
अपनी यही रीति-पत्र-पत्रिकाओं से प्रीति
तीन दशक बीते 'कादम्बिनी' के संग में

—हरीकृष्ण श्रीवास्तव
बनाड़ी-चित्रकूट धाम (बांदा) उ.प्र.-२१०२०५

भंग की तरंग में
पड़ रहा पैर नहीं
धरती-जमीन पर
पंख लगे आज
मेरे हर अंग में
उड़ रहा आकाश में
परी आसपास में
इंद्र के सिंहासन पर
मैं ही विराजमान हूं
स्वयंभू भगवान हूं

—भारती कुमारी
५१०इ, डी.एस. कॉलोनी, समस्तीपुर-८४८१०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर है सुंदरतम जीवन

बाल चित्र समिति, भारत की ओर से छठा बाल फिल्म समारोह १४-२३ नवंबर को नयी दिल्ली के सीरी फोर्ट में आयोजित किया गया। इस समारोह का आरंभ भारत-मॉरिशस द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित बाल फिल्म 'अंकुर, मैना और कबूतर' से हुआ। इस फिल्म का निर्माण भारत की बाल चित्र समिति तथा मॉरिशस फिल्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन ने मिलकर किया है। मॉरिशस की तो यह पहली फीचर फिल्म है ही, इसके निदेशक मदन बवारिया की भी ऐसी पहली फिल्म है, जिसकी संपूर्ण शूटिंग विदेश में हुई है।

मॉरिशस एक सुंदर देश है। प्रकृति ने

'अंकुर मैना और कबूतर

● डॉ. कमलकिशोर गोयनका

अनेक सुंदर जीव-जंतु, पक्षी, वृक्ष तथा रंग-बिरंगी धरती दी है, लेकिन अब वहां कुछ के लुप्त हो जाने का संकट पैदा हो गया है। डोडो पक्षी बहुत पहले लुप्त हो गया है और अब वहां पिंक पिंजस (एक विशेष प्रजाति का कबूतर) के गायब हो जाने का खतरा उत्पन्न हो गया है। भारत के एक प्रसिद्ध पक्षी-वैज्ञानिक डॉ. भगीरथ प्रसाद सिन्हा अपने पोते अंकुर और सहयोगी गंगादीन के साथ मॉरिशस पहुंचकर पिंक पिंजस को बचाने का प्रयास करते हैं। मॉरिशस में वन-अधिकारी शर्मा और उनके सहायक मनीलाल उनकी सहायता करते हैं। यहीं अंकुर और शर्मा की बेटी मैना में दोस्ती हो जाती है। डा. सिन्हा को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। एक जादूगरनी मैडम ज़ोज़ो का भी वह निडरता से सामना करता है और वह मॉरिशस में पिंक पिंजस की संख्या बढ़ाने में सफल होता है। इस पक्षी को बचाने के प्रयासों की ही, एक जीवंत अनुभव की यह फिल्म है।

इस समारोह के अवसर पर मॉरिशस फिल्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन के अध्यक्ष विजय मधु से मैंने जब इस फिल्म के निर्माण के फैसले के बारे में जानना चाहा, तो उन्होंने कहा कि, "१९८५ में यह तय हुआ था कि दोनों देश मिलकर फिल्म बनाएंगे, पर क्रियान्वयन हुआ जया बच्चन के अध्यक्ष बनने पर। इस फिल्म के निर्माण में ४०% व्यय मॉरिशस ने दिया है और ६०% भारत ने, लेकिन इसकी पूरी शूटिंग मॉरिशस में ही हुई। मॉरिशस में मैं पूरे निर्माण का इंचार्ज था। हमने भारत से आयी टीम को सारी सुविधाएं दीं, कुछ कलाकार दिये। हम इस फिल्म से-पिंक पिंजस की रक्षा से पर्यावरण की रक्षा का संदेश देना चाहते हैं। मुझे इस प्रसन्नता है कि लगभग ३००० दर्शकों ने इसे देखा और इसकी सराहना की। हम छोटी-छोटी फिल्में बनाना चाहते हैं तथा भारत एवं अन्य देश के फिल्म-निर्माताओं को सभी सुविधाएं को तैयार हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कहानी के लेखक रमेश रामदयाल ने बताया कि यह कहानी 'आपरेशन पिंक पिंजस' के नाम से अंगरेजी में १९८० में छपी थी, लेकिन जब मुझे सूचना मिली कि मेरी कहानी चुनी गयी है तो मुझे यह मजाक ही लगा। इसके चार वर्ष उपरांत इस फिल्म के बनने का नंबर आया। रामदयाल ने कहा कि यह कहानी उनका जीवंत अनुभव है। मैं उसी क्षेत्र में रहता हूं, जहां यह पक्षी लुप्त होता जा रहा है। मेरे सामने इसकी रक्षा, मॉरिशस के पर्यावरण की रक्षा का प्रश्न था और इसे बच्चों को बताना जरूरी था। उन्होंने यह भी बताया कि वे इसकी स्क्रिप्ट तथा निर्देशन से पूर्णतः संतुष्ट हैं।

फिल्म के निर्देशक मदन बवारिया देश के जाने-पहचाने फिल्म-निर्देशक हैं। मदन की दो फिल्में इस समारोह में दिखायी गयीं, दूसरी थी 'दाज्यू'। मदन ने बताया कि उन्हें जया का प्रस्ताव मिला इस फिल्म को बनाने के लिए तो उन्होंने पहले कहानी पढ़ी और फिर स्वीकृति दी। उनके अनुसार यह व्यक्ति और प्रकृति के परस्पर संबंधों की फिल्म है, जिसका संदेश बच्चों तक पहुंचना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हमने कुछ पात्रों के नाम बदले तथा कहानी को सकारात्मक रूप दिया। वे मुझे पूर्णतः संतुष्ट लगे, इस कारण भी कि वे मॉरिशस में बनी पहली फिल्म के निर्देशक बने हैं।

यह फिल्म दो देशों के सह-निर्माण का एक अनुकरणीय उदाहरण है, साथ ही पर्यावरण-रक्षा का बड़ा संदेश भी बच्चों को देती है। निश्चय ही, यह फिल्म मॉरिशस के प्रति न्याय करती है और मानव-जाति के प्रति भी, जिसका अस्तित्व प्रकृति की रक्षा से जुड़ा हुआ है।

ए/९८ अशोक विहार, फेज प्रथम,
दिल्ली-११००५२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर जी स्टोन क्लीनिक

बिना ऑप्रेशन गुर्दे की पथरी से छुटकारा

- क्योंकि उन्हें हमारी निष्ठा, समर्पण की भावना और विशेषज्ञता पर भरोसा था।
- क्योंकि वे स्वास्थ्य जैसी बहुमुल्य सम्पत्ति के साथ कोई जोखिम नहीं लेते
- क्योंकि हम बेहतरीन लिथोट्रिप्सी इलाज करते हैं।
- क्योंकि हम बड़ी पथरी (3 सेमी. और अधिक) वाले तथा अधिक खतरे की आशंका वाले मरीज़ों का इलाज कर सकते हैं और करते हैं।

आर. जी. स्टोन क्लीनिक

इस क्षेत्र में भारत का प्रथम और आज दक्षिण एशिया में सर्वोत्तम संगठन - आपके लिए लाया है यह क्रान्तिकारी इलाज। यह सुविधा

आर जी स्टोन क्लीनिक

बम्बई में भी उपलब्ध है।

परिणाम जापान में लिथोट्रिप्सी पर 7वीं विश्व कांग्रेस में प्रस्तुत किए जाएंगे।

कुछ परिणाम	
कुल उपचारित मरीज़ (आयु वर्ग 4 से 98 वर्ष)	25
उपचारित पथरी का आकार 3 मि.मी. से 75 से	
मूत्राशय में विभिन्न स्थानों पर उपचारिता पथरी के मामले	5
अधिक खतरे की आशंका वाले उपचारित मरीज़ (मधुमेह, उच्च रक्तचाप, गुर्दा बेकार हो जाना)	
कठिन उपचारित मामले (हार्स शू गुर्दा, दो मूत्राशय)	
एक गुर्दे वाले उपचारित मरीज़	
पिछले इलाज के बाद दोबारा पथरी वाले उपचारित मरीज़	

2500 मरीज़ों से पूछिए उन्होंने क्यों हम पर विश्वास किया

दिल्ली

आर. जी. स्टोन क्लीनि

एफ-12, ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली-110065.
फोन: 6444511, 6444588, 6449121

☐ कृपया लिथोट्रिप्सी के बारे विस्तृत सामग्री मुझे भेजिए

नाम _____

पता _____

Basic-4

भारत में लिथोट्रिप्सी चिकित्सा का सर्वप्रथम और सबसे अनुभवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार-संक्षेप : 'द ग्रेट क्रैश ऑव १९९०'

क्या फिर घटित हो सकती है ऐसी घटना ?

● रवि बतरा

क्या विश्व की आर्थिक व्यवस्था एक भयानक मंदी की ओर अग्रसर हो रही है । अमरीका में बसे भारतीय समाज शास्त्री रवि बतरा की चेतावनी है कि वर्ष १९९० में अमरीकी अर्थव्यवस्था भयानक मंदी का शिकार होगी और उसका असर समूचे विश्व पर पड़ेगा । अपनी बहुचर्चित कृति 'द ग्रेट क्रैश ऑव नाइनटीन हंड्रेड नाइंटी' में रवि बतरा ने उन सामाजिक आर्थिक सिद्धांतों का व्यापक विश्लेषण किया है, जिनके आधार पर उन्होंने कुछ सफल भविष्यवाणियां कीं । उन्होंने सन ९० में आनेवाली भयानक आर्थिक मंदी के कारणों को भी निरूपित किया है । रवि बतरा की यह कृति '१९९० की महान लुढ़कन' शीर्षक से शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है । (प्रकाशक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नयी दिल्ली) सार-संक्षेप में यहां प्रस्तुत है— इसी कृति के कुछ अंशों का हिंदी अनुवाद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९८९-९० में मंदी का दौर शुरू होगा, जो अब तक की आर्थिक विपदाओं में सबसे बुरा सिद्ध होगा और संसारभर को एक महामारी की भांति ग्रस लेगा ।

कुछ व्यक्ति ही ऐसे होंगे, जिन्हें स्वयं व्यक्तिगत रूप से यह पता होगा कि मंदी कैसे और कैसी होती है । वर्ष १९८७ एक गंभीर आर्थिक संकट की अठावनवीं वर्षगांठ थी, १९२९ में यह संकट आया था और दस साल तक रहा । १९३० के दशकों में जीवित रहने की कड़ी, कठोर, कशमकश को वस्तुतः स्मरण करने के लिए आपकी आयु साठ वर्ष से अधिक होना आवश्यक है ।

वर्तमान पीढ़ी को यह सब बहुत दूर की बात लगती है । बच्चों की बाढ़ में आनेवाले ये आशावान नौजवान एक ऐसे समृद्ध आर्थिक वातावरण में पलकर बढ़े हुए हैं, जिसमें बेरोजगारी की दर बड़ी कठिनता से ही कभी दस फीसदी से अधिक बढ़ी थी, जहां स्थूल राष्ट्रीय उत्पादन हर वर्ष उन्नत होता गया और जहां वेतनों में कभी-कभार ही गिरावट आयी ।

परंतु केवल दो पीढ़ियों पूर्व ही अमरीका में एक अभूतपूर्व आर्थिक संकट आया था, जिसने पश्चिमी सभ्यता की नींव को ही हिलाकर रख दिया, माल-मंडी टूटकर गिरी, कीमतें, ब्याज की दरें, और भाड़े-भत्ते ऐसे गिरे, जैसे कोई मुखौटा गिरता है, और, बेरोजगारी इतनी बढ़ी कि पच्चीस फीसदी श्रम-शक्ति इसकी चपेट में आ गयी । अचानक ही जनता मुफलिसी में डूब गयी और हजारों भुखमरी और फाकाकशी की कगार पर जा खड़े हुए । कई शहरों में तो रोटी लेने या मांगनेवालों की कतारें लग जाती थीं और लोग गली के किनारे खड़े होकर सेब बेचते थे । और यह सब तब घटित हुआ जब इतिहास में राष्ट्र की प्रति व्यक्ति आय अपने उच्चतम स्तर को पहुंच चुकी थी ।

क्या ऐसा फिर हो सकता है ? यह जन-साधारण की गरीबी और बेरोजगारी की महामारी फिर हमारे समाज को उत्पीड़ित कर सकती है । यदि मैं कहूं 'हां', तो इस पर आपको संदेह प्रकट करने का अधिकार है, परंतु संदेहवान होना तब तक बुरा नहीं है, जब तक आप दिमाग खुला रखते हैं ।

सच तो यह है कि मंदी की कोई बात करना भी आज एक अविश्वास को निमंत्रण देना है । हमारा अनुमान है कि १९२९ की 'महालुढ़कन' हमारे इतिहास की एक अद्वितीय घटना थी और उसकी पुनरावृत्ति से सावधान रहने के लिए अब हमारे पास सुरक्षात्मक उपायों की एक भरपूर व्यवस्था है । इसके विपरीत सोचना, 'सर्वनाश का मसीहा' कहलाना है ।

मैं एक अर्थशास्त्री हूं, वैज्ञानिक विश्लेषण में मुझे प्रशिक्षण मिला है, न मैं सनसनी पैदा करनेवाला हूं और न ही मैं डरावने भविष्य का संकेत देनेवाला हूं । फिर भी सभी प्रमाणों से जाहिर यही होता है कि एक और महामंदी बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो पीढ़ियों पूर्व ही अमरीका में एक अभूतपूर्व आर्थिक संकट आया था, जिसने पश्चिमी सभ्यता की नींव को हिलाकर रख दिया था । क्या ऐसा फिर हो सकता है ?

रही है और यदि हमने तत्काल उसकी रोकथाम के उपाय न किये, तो १९९० में जो कीमत हमें अदा करनी होगी वह महाभयंकर होगी ।

बुनियादी तौर पर, घटनाओं का दुहराये जाने का अर्थ यही है कि वस्तुओं की गति के चक्र होते हैं छोटे, मध्यम लंबे और बहुत लंबे ।

अधिकांश विचार अपने समय की आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित करते हैं और अर्थशास्त्र इसका अपवाद नहीं है ।

अब तक अर्थशास्त्रियों ने जिन चक्रों को खोज निकाला है, वे स्वभावतः अनियमित या रुक-रुककर होते रहे हैं । इनके प्रकट होने में वह विशेषता है, जिसे हम समय-समय पर बदलनेवाली प्रवृत्ति का नाम देते हैं । इस तरह अर्थशास्त्रीय साहित्य चर्चा करता है एक मिचल चक्र की जो चालीस से पचास माह लंबा होता है । एक जगलर साइकिल की इसकी स्थिति नौ से ग्यारह वर्षों तक रहती है । एक कुजनैटस किस्म का बीच का चक्र, जो पंद्रह से पच्चीस वर्षों तक चलता है और अंत में एक कोंड्राटीफ दीर्घ चक्र, जो चालीस से साठ वर्षों में किसी भी अवधि तक जारी रहता है । इन सभी अनियमित चक्रों में से कोई भी चक्र १९७० के दशकों में हुई आर्थिक प्रगति के पिछड़ जाने के दौर की पूर्णतः संतोषजनक व्याख्या नहीं करता ।

फिर भी जिन चक्रों की परीक्षा हम करने जा रहे हैं वे भिन्न प्रकार के हैं । उन्हें नियमित या लयतालमय चक्र कहा जा सकता है कारण उनके नमूने । एक नियमित अंतराल में प्रकट होते रहे हैं । इसके अलावा उनमें से कुछ का संबंध उन परिवर्तनों से है, जिन्हें अर्थशास्त्रीय सिद्धांत में सामान्यतः बाहरी या अचानक घटित होनेवाला समझा जाता है । रुपये-पैसे या धन की आपूर्ति का प्रसंग एक ऐसा विषय है । मान लिया गया है कि यह फेडरल रिजर्व सिस्टम द्वारा तय किया जाता है । पर यह एक लयतालमय चक्र है । जिसे अमरीकी राष्ट्र के जन्म काल से देखा जा सकता है । कुल मिलाकर मैं चार प्रधान आर्थिक परिवर्तनों में इनके सही-सही प्रतिरूपों का वर्णन करूंगा । ये हैं, धन की आपूर्ति मुद्रास्फीति, नियंत्रण और मंदी । मैं इनकी व्याख्या सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक आधार पर करूंगा । इन्हें सामाजिक चक्र सिद्धांत कहा जाता है । ये परिवर्तन इतने लंबे अरसे तक ठीक और सही-सही समय की सुनिश्चित सीमाओं में आते रहे हैं कि इनके आधार पर थोड़े या लंबे समय के लिए होनेवाली घटनाओं की विश्वसनीय पूर्व सूचना दी जा सकती है । सच तो यह है कि इसी किस्म के ऐतिहासिक विश्लेषण के कारण मैं अतीत में साहसपूर्ण व्यापक और भिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्यवाणियां करने में समर्थ हुआ ।

उदाहरण के लिए सन १९७८ में पांच दिसम्बर को नार्मन शहर की ओकलाहामा यूनिवर्सिटी में मैंने भाषण दिया । तीन सौ छात्रों और प्राध्यापकों की सभा में मैंने उनकी शंकाओं का समाधान किया । तब मैंने ये निम्नलिखित बातें कही थीं—

१९७९ में एक क्रांति होगी, जिसमें ईरान के शाह का तख्ता उलट जाएगा और मुल्ला वर्ग शासन की बागडोर संभाल लेगा ।

१९८०-८१ में ईरान और इराक में एक खूनी जंग छिड़ जाएगी, जो कम से कम सात साल तक चलेगी ।

यूरोप में १९८६-८७ में आर्थिक प्रगति गंभीर रूप से पिछड़ जाएगी ।

१९८९-९० में मंदी का दौर शुरू होगा, जो अब तक की आर्थिक विपदाओं में सबसे बुरा सिद्ध होगा और संसार भर को एक महामारी की भांति ग्रस लेगा ।

१९९० के दशक में पूंजीवाद में आमूलचूल परिवर्तन होगा और इसी शती के नया मोड़ लेते ही साम्यवाद की भी यही स्थिति होगी और अंततः विश्वभर में एक स्वर्ण युग का आरंभ होगा ।

संपत्ति का एकत्र संचय और मंदी की स्थितियां

१९२९ में जो भयंकर और अविस्मरणीय घटना घटी थी, श्री जान कैनेथ गैलब्रैथ ने उसका नामकरण किया था— 'महा लुढ़कन'

उस समय से अर्थव्यवस्था को एक बड़ी शल्यक्रिया में से गुजरना पड़ा है और ऐसी पुस्तकों का ढेर लग गया है, जिनमें अकस्मात टपक पड़नेवाले कारकों की मन और मस्तिष्क को मूढ़ करनेवाली विविधता ही मंदी की स्थितियों के लिए जिम्मेवार ठहरायी गयी है ।

मेरा तर्क यह है कि प्रगति का पिछड़ जाना और चीज है, और मंदी की स्थिति और चीज है । मंदियों का कारण है, संपत्ति के चरम संचय की स्थिति (जिसमें सारी संपत्ति कुछ जमाखोर जोंकों की मुट्ठी में आ जाती है)

आर्थिक, क्रियाकलाप को चार अवस्थाओं में से गुजरना होता है— प्रगति का पिछड़ना, मंदी, पुनरुद्धार या फिर से संभल जाना, और समृद्धि का उल्लास । जब स्थूल राष्ट्रीय उत्पादन और रोजगार के अवसर कम होने लगते हैं तो कहा जाता है कि अर्थरचना पिछड़ रही है और यही स्थिति जब जड़ पकड़ लेती है तो उसे मंदी का नाम दिया जाता है । जब उत्पादित माल और रोजगार के अवसर प्रचुर और सुलभ हैं तो अर्थ रचना पुनरुद्धार की दशा में होती है, यही स्थिति एक समृद्ध उल्लास कहलाती है, जब रोजगार पूरी तरह मुहैय्या होती है और उद्योग-धंधे अपनी अधिकतम क्षमता के साथ कार्यरत होते हैं ।

प्रगति का पिछड़ापन प्रायः एक से तीन साल तक बना रहता है, जब बढ़ती हुई बेरोजगारी की दर सामान्यतः बारह फीसदी से कम होती है । जब पिछड़ापन तीन से अधिक वर्षों तक चले और बेरोजगारी की दर बारह और बीस फीसदी के दरम्यान हो, तो कहा जा सकता है कि अर्थरचना मंदी से पीड़ित है । जब बेरोजगारी बढ़ती ही जाती है और उद्योग-धंधे छह या अधिक वर्षों के लिये ठप्प हो जाते हैं, अथवा बिलकुल ठहराव की स्थिति में आ जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९९० के दशक में पूंजीवाद में आमूलचूल परिवर्तन होगा और इस शती के नया मोड़ लेते ही साम्यवाद की भी यही स्थिति होगी और अंततः विश्वभर में एक स्वर्णयुग आरंभ होगा ।

हैं, तो राष्ट्र की विपत्ति को 'महामंदी' का नाम दिया जा सकता है । इस प्रकार उसकी तीव्रता की गहराई और दीर्घकाल के आधार पर उद्योग चक्र का नीचे की ओर झूल जाना, परिभाषा के तौर पर पिछड़ापन, मंदी और महामंदी कहा जा सकता है ।

उद्योग-व्यापार में पिछड़ जाने या सिकुड़ जाने की सभी स्थितियां बुरी होती हैं, लेकिन मंदियां बहुत अनर्थकारी होती हैं और महामंदियां तो महज एक आंधी या तूफान-सा बरपा कर देती हैं । द्वितीय युद्ध के बाद संयुक्त राज्य की अर्थव्यवस्था फूलती-फलती अवश्य आयी है, लेकिन यह भी अपने लंबे इतिहास में सभी प्रकार के उठा-पटक को भोग चुकी है । बार-बार इसकी प्रगति पिछड़ी है, कभी-कभी मंदियां आयी हैं और महामंदियां बिरली ही आयी हैं ।

मंदी की स्थितियों का आदर्श

संयुक्त राज्य की अर्थरचना हर दशक में कम से कम एक बार तो पिछड़ती ही रही है और प्रत्येक तीसरे या छठे दशक में महामंदी से ग्रस्त होती रही है । इसका अर्थ यह है कि यदि तीसरा दशक किसी प्रकार मंदी की मार से बच गया, तो छठे दशक पर इसका सामूहिक प्रभाव ऐसा पड़ा कि वह सर्वनाशी संहार बन गया । सब कुछ स्वाहा हो गया । इस प्रकार १७८० के दशक में एक मंदी आयी लेकिन १८१० का दशक इससे अछूता रहा । इसके तीन दशक बाद १८४० के दशक में जो संकट आया, उसकी मिसाल इससे पहले नहीं मिलती । १८७० के दशक में महामंदी का आक्रमण हुआ, लेकिन १९०० के दशक में ऐसी घटना नहीं घटी । तो तीस वर्ष बाद इतिहास की सबसे बुरी बिगड़ी महामंदी की स्थिति आ गयी ।

१९९०-१९९६ की संभावित महामंदी

अब समय है कि हम भिन्न-भिन्न तंतुओं को एक-एक करके बुनें और देखें कि इतिहास ने हमें क्या सीख दी है । इतना तो अब स्पष्ट हो चुका है कि इतिहास की एक लयताल होती है । मुद्रा-स्फीति, धनवृद्धि और नियंत्रण सबने एक सुस्पष्ट और विनिश्चित पथ का अनुसरण किया है और चाहे महामंदियों का व्यावहारिक रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना प्रत्यक्ष नहीं है, उनका भी एक सुनिर्दिष्ट प्रतिरूप रहा है । जबकि मुद्रास्फीति, धन वृद्धि और नियंत्रण के चक्र दो शतियों से भी अधिक समय तक हर तीसरे दशक में एक साथ ही चोटी पर पहुंचते रहे हैं, महामंदियां तीन या छह दशकों के मध्यांतर से आती रही हैं । यह एक ज्वलंत सवाल है, जो हम सबके भविष्य और जीवन की चिंता से जुड़ा है । क्या ऐसा फिर हो सकता है ? क्या एक और महामंदी की संभावना है ?

१९९० के दशक की महामंदी

चक्रों का संदेश अब इतना साफ स्पष्ट है जैसे बिल्लौरी कांच । क्योंकि १९६० का दशक महामंदी की मार से बच गया है, इसलिए १९९० के दशक पर इसका एक और सामूहिक प्रभाव होगा— अपने इतिहास का सबसे गहरा अर्थ संकट रीगन-प्रशासन ने इस स्थिति के बीज अपनी पथभ्रष्ट राजकोषीय नीति से पहले ही बो दिये हैं । १९२० के दशक में उद्योग-पालक और अमीर-परिवार टैक्स कटौतियों ने संपत्ति के एकत्रीकरण को बड़ी तेजी से बहुत ऊंचे दरजे पर पहुंचा दिया था, जिसके परिणामस्वरूप अंततः अर्थरचना की कमर टूट गयी । १९८० के दशक में १९८१ और १९८६ की टैक्स कटौतियां वैसा ही कहर ढा रही हैं । संपत्ति की विषमता अब अभूतपूर्व दर पर बढ़ती जा रही है । कुछ ही वर्षों में यह १९२९ की चोटी से भी ऊपर उठ जाएगी । अमीर लोग बहुत हल्का और थोड़ा टैक्स अदा कर रहे हैं । संपत्ति की तीव्र विषमता को सहायता देनेवाला यह केवल एक कारक है । ऐतिहासिक तुलना में ऊंची ब्याज दर जो स्वयं संपत्ति की विषमता की ही देन है, एक और कारक है । जब निवेशों से होनेवाला लाभ बढ़ता है, तो उसके प्रधान प्रसाद-भोक्ता रईस लोग ही होते हैं । संपत्ति की विषमता हर समय की अपेक्षा अधिक ऊंची चढ़ रही है और आज हर जगह उसके चिह्न देखे जा सकते हैं, लेकिन उचित समझ और सूझबूझ के अभाव में इससे होनेवाले खतरों को स्वीकार ही नहीं किया जाता । 'न्यूयार्क टाइम्ज' की एक रिपोर्ट के अनुसार १९८६ में संयुक्त राज्य के खरबपतियों की संख्या तकरीबन दुगुनी हो गयी है— महज एक ही वर्ष में १४ से २६ हो गयी है— इस प्रकार राष्ट्र की संपत्ति में उनका भाग बढ़ता ही जा रहा है और यह सब होता है गरीबों की बलि देकर । अमरीका के सबसे अमीर पांच प्रतिशत लोगों की आमदनी अधर तल पर रहनेवाली सारी चालीस फीसदी जनता की आय से अधिक है । और अमरीका के सबसे अमीर एक फीसदी लोग, तलवासी, नब्बे फीसदी लोगों की सारी संपत्ति से अधिक संपदा के स्वामी हैं, अर्थात तकरीबन सारी जनसंख्या की दस फीसदी लोगों की समूची संपत्ति से अधिक । ये मनहूस अंक हैं, और आनेवाली घटनाओं की पहले से चेतावनी दे रहे हैं । (१९८९-९० में एक पिछड़न की स्थिति को अपने कालचक्र में आना है ।) और यह स्थिति संपत्ति के अभूतपूर्व जमाव से उत्पन्न निर्बल बैंक प्रणाली के साथ मिलकर १९९० के दशक की अभूतपूर्व मंदी को जन्म देगी ।

१९२० का दशक बनाम १९८० का दशक

हम वस्तुतः सुई की नोक से १९९० को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व की सबसे बड़ी मंदी का साल कह सकते हैं। संयुक्त राज्य की अर्थरचना हर तीसरे दशक में बड़े चक्रों में से गुजरती है, क्योंकि हमारी सूचना-सामग्री एक दशक की सूचनाओं की कुल जमा है, इसका अर्थ है कि संयुक्त राज्य की अर्थरचना और समाज में प्रत्येक उनतीस से इकतीस वर्षों में एक विशेष अर्थवान परिवर्तन होता है। फिर भी बीसवीं सदी की सूचना-सामग्री के गहन अध्ययन से यह प्रकट होता है कि अर्थरचना में साठ साल के मध्यांतर काल की चक्रात्मक समानताएं अधिक स्पष्ट और चुभती-सी हैं, अर्थात तीन दशकीय चक्र की दुगुनी लंबाई के अरसे में अधिक प्रभावशाली रही हैं।

पहले हम सामान्य प्रवृत्तियों की परख करेंगे, फिर साल दर साल उनकी तुलना करेंगे। हम ये पहले देख आये हैं कि १९२० के दशक की विशेषताएं थीं, निम्न धनवृद्धि, निम्न मुद्रास्फीति, और नियंत्रण का अभाव। इन बातों में १९८० का दशक १९२० के दशक से अब तक एक-सा रहा है।

संयुक्त राज्य का विदेशी ऋण

क्या यह संभव है कि जिस आगामी मंदी की सूचना मैं दे रहा हूं, वह मूर्तिमान ही न हो ? या वह महज एक हलका-सा पिछड़ापन ही हो। कोई भी चीज संभव है, लेकिन जब तक बहुत कड़े उपाय नहीं किये जाएंगे, उसके घटने की संभावना इतनी अधिक है, कि उसकी कल्पना से ही मन कांप उठता है।

सच तो यह है कि उस भावी संकट के अनेक लक्षण पहले से ही प्रकट हो गये हैं। सरकारी घोषणाओं के प्रतिवाद के बावजूद देश का अधिकांश भाग पहले ही पिछड़ेपन की स्थिति में है।

यह भी ध्यान देने की बात है कि संयुक्त राज्य अब एक अधमर्ण राष्ट्र बन गया है। विदेशी ऋण एक प्राणहारी तीव्रता के साथ बढ़कर एक ऊंचा टीला-सा बन गया है। बहुत थोड़े लोग घटनाओं के इस विकास का अर्थ समझते हैं या इस विषय में सचेत हैं। इससे आगे आनेवाले कष्ट में एक नया आयाम जुड़ जाता है। १९८५ में इस शती में पहली बार संयुक्त राज्य उन राष्ट्रों की कंपनी में शामिल हो गया, जो कर्जे में डूबे हुए हैं। १९८६ तक इस का ऋण २५० खरबों तक जा पहुंचा था। मैक्सिको और ब्राजील के अंतरराष्ट्रीय ऋण के मिश्रित कुल योग से भी यह अधिक है। संयुक्त राज्य को सबसे बड़ा ऋणी देश होने की यह

नेता : सुबह-सुबह बाहर बहुत लोग आये हैं...शायद नये साल की मुबारकबाद देने आये हैं।

पत्नी : जी नहीं, वह लोग बधाई देने नहीं, बल्कि अपने उधार पैसे वापस लेने आये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुटिल ख्याति अब मिली है । इन दो वर्षों में इसने वह पा लिया है, जिसे प्राप्त करने में मैक्सिको और ब्राजील को बीस साल लगे ।

वस्तुतः विदेशी ऋण की स्थिति उससे भी बुरी है, जैसी यह दीखती है । २५०,९ बिलियन की रकम तो संयुक्त राज्य पर वह ठोस कर्ज भार है, जो बाकी दुनिया का उसके सर पर लदा है । यह रकम संयुक्त राज्य के कर्ज की उस रकम के बराबर है, जिसमें संयुक्त राज्य द्वारा उन मुल्कों को दिया हुआ ऋण शामिल नहीं है, जिनमें संसार के तीसरे दरजे के बहुत से देश शामिल हैं, जो स्वयं मुसीबत में इतना मुबतला हैं कि किसी को उनसे अपनी उधार की एक पाई भी वापस मिल जाने की उम्मीद नहीं है । यह दोहरा खतरा है । अमरीका की अपनी दशा एक ऐसे पुरुष की है जिसका रोम-रोम कर्जे से बिंधा हुआ है, लेकिन जिसे कोई ऐसी संभावना नहीं दीखती, कि उसने जो रकम दूसरों को उधार दे रखी है, वह कभी वसूल भी हो सकेगी । इसलिए यह कोई हैरानी की बात नहीं है कि अनेक बैंक जिन्होंने खरबों रुपये १९७० के दशक में कम विकसित देशों को कर्ज दिये थे, आज ऐसी विपदा का सामना कर रहे हैं जो दिन-दिन बढ़ती जाती है । वे वित्तीय संस्थाएं जिन्होंने ऊर्जा और वास्तविक जायदाद के मुद्दों में बड़ी भारी रकम कर्ज दी थी, आज दिवालियापन के मुंह में जाने की इंतजार में है, क्योंकि ऊर्जा की कीमतें बहुत गिर गयी हैं । सच यह है कि श्री इरविन स्प्रेग, जो संघीय जमा बीमा निगम (एफ.डी.आई.सी.) के मंडल के सदस्य रह चुके हैं और जिनका कथन किसी अंतरंग सलाहकार के मशविरे-सा प्रामाणिक माना जाता है, कहते हैं कि सैकड़ों बैंकों और बचत तथा उधार संस्थाओं का नाम अब सरकार की बीमार संस्थाओं की सूची में है । ये संस्थाएं कभी भी ढेर हो सकती हैं । ये सभी आनेवाली मुसीबत के उपलक्षण हैं, इनकी उपेक्षा अपने को खतरे में डालकर ही की जा सकती है ।

इस अनुभाग को समाप्त करने से पहले मैं आपको तीन-दशकीय और छह दशकीय चक्रों के बुनियादी कारण बताता हूं । इन चक्रों की हमने खोज कर ली है । इस बात को समझ लेना बहुत कठिन है कि क्यों कुछ घटनाएं ऐसी नियमितता के साथ घटित होती रहती हैं । इसका उत्तर अवश्यमेव मानस और मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में ही ढूंढ़ना होगा । ये प्रक्रियाएं सापेक्ष्य रूप से अधिक देर तक बनी रहती हैं । इस प्रकार के चक्रात्मक प्रतिरूपों की सृष्टि मानवी प्रकृति ही कर सकती है । हम प्रायः देखते हैं कि एक पीढ़ी तीस बरस तक कुशल कर्मठ बनी रहती है और तब नयी पीढ़ी उसका स्थान ले लेती है । प्रत्येक पीढ़ी को वही गलतियां करने के नये रास्ते मिल जाते हैं । जाहिर तौर पर सबसे आसान और सापेक्ष्य रूप से कम दुःखदायक तरीका यह है कि सरकारी नियंत्रण और कागज-छाप रुपये से सामाजिक समस्याओं को हल किया जाए । पंप प्राइमिं (ढेर के ढेर रुपया ऐसे छापना जैसे एक बड़े नल से पानी की बौछाड़ आती है ।) के प्रलोभन को रोक पाना बड़ा कठिन है, इस प्रकार हर पीढ़ी की यह कोशिश रहती है कि धनवृद्धि और नियंत्रण को बढ़ाकर आर्थिक समस्याओं का हल निकाला जाए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणामस्वरूप मुद्रास्फीति होने लगती है, जिससे अंततः जनता में हाहाकार मच जाता है। तब नियंत्रण में कमी आ जाती है और धन-आपूर्ति पर भी सख्ती बरती जाती है, जब तक कि मुद्रा-स्फीति काबू में न आ जाए। लेकिन दो दशक बाद घटनाओं का यह सिलसिला फिर शुरू हो जाता है और वही पुराने इलाज फिर किये जाते हैं। हर पीढ़ी अपने पूर्वजों के पद चिह्नों पर चलती है। तीन-दशकीय चक्र का करण यही है। हम सभी जानते हैं कि युद्ध से बड़ी हानि होती है। फिर भी हर पीढ़ी इस गलती को दुहराती है और जंग छेड़ देती है। मानव मन की कर्मगति का यही सच्चा जांचा-परखा चित्र है। अपनी गलतियों से ही यह कुछ सीखता है, दूसरों की गलतियों से बहुत कम।

कई गलतियां ऐसी होती हैं, जो अपने विषम परिणामों की गंभीरता के कारण हर पीढ़ी द्वारा नहीं, बल्कि हर दूसरी पीढ़ी द्वारा दुहरायी जाती हैं। इस दृष्टि से लोग अपने मां-बाप नहीं, अपने दादा-दादियों की गलतियों को दुहराते हैं। इस परिदृश्य से पैदा होता है छह-दशकी चक्र। उदाहरण के लिए पिछली मंदी में धन-संपत्ति का बहुत बड़े पैमाने पर विनाश हुआ था। उसके बाद वंशगत विरासत की दो पीढ़ियां बीतीं और फिर संपत्ति की असमानता अपने नाजुक बिंदु पर पहुंची है। इस विषमता का मनहूस प्रभाव आज की पीढ़ी को इसलिए समझ नहीं आ रहा, क्योंकि ऐसी स्थिति साठ साल पहले उत्पन्न हुई थी (और इन्हें इसका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है) गलतियां प्रत्येक पीढ़ी या उसके बाद की हर दूसरी पीढ़ी करती है। यह ही है तीन-दशकीय या छह-दशकीय चक्र के विनिर्णय का आधार।

अंतरराष्ट्रीय पक्ष

१९३० के दशक की मंदी एक विश्वव्यापी घटना थी। अमरीका, यूरोप और समूचा तीसरा संसार इसके चंगुल में आ गया था। यूरोप के कई देशों में तो इसका आरंभ १९२६ से ही हो गया था, चाहे इस का विनाशकारी प्रभाव १९२९ से पहले प्रकट नहीं हुआ।

जबकि अमरीकी अर्थरचना १९२० के दशक के काफी बड़े भाग में समृद्ध बनी रही, बरतानवी अर्थरचना इतनी निर्बल थी मानो इसमें खून की कमी हो। बरतानिया सारे दशकभर तीव्र बेरोजगारी से पीड़ित रहा, विशेषतः १९२६ की व्यापक हड़ताल के बाद। अनेकों उद्योग जैसे कोयला, इस्पात, जहाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माण, कपड़ा मिलें, और गृह-निर्माण इस दबाव में दब गये । बेरोजगारी की दर जो मुख्यतः वेल्ज और उत्तर पूर्व तक सीमित थी, १९२१ में बढ़ कर ९.६ प्रतिशत हो गयी और उसके बाद बहुत धीरे-धीरे उसमें कमी आयी । १९२६ में बरतानिया में बड़ी तेज पिछड़न की स्थिति आ गयी और उसका स्थूल राष्ट्रीय उत्पादन चार प्रतिशत से भी कम हो गया । बेरोजगारी ने फिर ऊंची उड़ान भरी । १९२९ तक अर्थरचना थोड़ा बहुत संभली, लेकिन बेरोजगारी ऊंचाई पर बनी रही ।

फ्रांस की आर्थिक स्थिति बहुत कुछ ऐसी ही थी । १९२४ और १९२७ के दरम्यान फ्रांस का राष्ट्रीय उत्पादन अचल गतिहीन था और बेरोजगारी एक नयी ऊंचाई पर जा पहुंची थी, इसके अलावा उसका टकसाली सिक्का-फ्रांस-सरकार के बुरी तरह ऋणग्रस्त होने के कारण डूब-सा गया १९८० और १९८६ के दरम्यान फ्रांस में बेरोजगारी दस प्रतिशत के इर्द-गिर्द मंडराती रही है और फ्रांस पर निरंतर दबाव पड़ता रहा है । १९८४ में यह सबसे नीचे की दर तक आ गिरा । १९२६ की बरतानवी पिछड़पन ने भी फ्रांस की अर्थरचना को अपनी दाढ़ों की लपेट में ले लिया था अंततः उसका काफी कुछ उद्धार तब हुआ, जब वह १९२८-२९ की अमरीकी समृद्धि में हिस्सा ले सकी ।

१९२० के दशक में जरमनी की स्थिति बरतानिया और फ्रांस की अपेक्षा कहीं बहुत बुरी और गयी-गुजरी थी । जरमनी की अर्थरचना को सीमातीत मुद्रास्फीति ने ग्रस लिया था, जिसका कारण था सरकार का बड़े विशाल परिमाण में कागजी मुद्रा को छापना । १९२२-२३ में मुद्रास्फीति ने तबाही मचा दी । सरकार ने १९२३ में नयी मुद्रा जारी की और अपने घाटे को काटा-छांटा । अंतरराष्ट्रीय आधार पर मिले कर्ज ने १९२४ में उसे कुछ आर्थिक स्थिरता दी, जिसकी उसे बहुत जरूरत थी । परंतु १९२६ में बेरोजगारी उमड़कर आठ प्रतिशत हो गयी । १९२७ आया, तब कहीं जाकर जरमनी की अर्थरचना, मुद्रास्फीति,

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. मंगलवार, ख. गुरुवार, २. आठ— भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, कांग्रेस (स), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, जनता दल, लोकदल (ब) और जनता पार्टी (पहले ७ राष्ट्रीय दल थे), ३. हंगरी, ४. क. 'गैलीलियो', १९९५ में बृह. ग्रह के निकट पहुंचेगा और २ वर्ष तक बृह. की कक्षा में रहेगा । यान से एक रोबट बृह. के गैसीय वातावरण में प्रवेश करेगा, ख. 'अटलांटिस' से, ५. क. 'इनटेलसाट-६' (४,२०० कि.ग्रा.), ३६ हजार कि.मी. ऊपर भूस्थैतिक कक्षा में स्थापित होगा, ख. फ्रेंच गुयाना के तटीय शहर कौरू में, यूरोप के 'एरियान' प्रक्षेपण-वाहन से २८ अक्तू. '८९ को छोड़ा गया, ६. सोवियत रूस द्वारा रूबल का अवमूल्यन— एक डॉलर ६.२७ रूबल का हो गया, जबकि इससे पूर्व ०.६२७ रूबल का था, ७ क. दलाईलामा, ख. स्पेनी लेखक कामिलो होजे सेला, ग. जीग्वे हावेल्यो (नारवे), ८. क. 'आई एन एस शाल्की', मझगांव बंदरगाह पर विगत ३० सितं. को जलावतरण, ख. प. जरमनी की एच. डी. डब्लू. कंपनी के सहयोग से, ९. क. महान्यायवादी (अटोर्नी जनरल), ख. उप-राष्ट्रपति, १०. क. पाकिस्तान, ख. वेस्ट इंडीज को, ११. एक विशेष प्रकार की मकड़ी का सिर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणामतः होनेवाला वित्तीय विनाश और पिछड़न तीनों के मिश्रित आघात से संभल सकी ।

जबकि पश्चिम यूरोप में अर्थरचना की नाव डगमगा रही थी, १९२० के दशक के प्रारंभ में केंद्रीय यूरोप की स्थिति भी कुछ बेहतर न थी । पहली जंग के बाद हैप्सबर्ग साम्राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया गया था, लेकिन इसके मलबे या टूट-फूट से जो देश वजूद में आये, वे बहुत दुर्बल थे और कामचलाऊ या टिकाऊ अर्थरचना की सृष्टि नहीं कर सकते थे । आस्ट्रिया और हंगरी दोनों ही अपने जन्मकाल से गंभीर आर्थिक कठिनाइयों में फंसे थे । जब उनकी वित्तीय व्यवस्था को अंतरराष्ट्रीय निगरानी में लाया गया, तब कहीं जाकर कुछ हद तक उनमें आर्थिक स्थिरता आयी । १९२७ के बाद विदेशी पूंजी देश में लगने से उनकी अर्थरचना की गाड़ी को मानो तेल मिला और उसने समृद्धि की छलांग मारी । इस सारे विवेचन का सार यह है कि १९२६ का वर्ष यूरोप के लिये गंभीर आर्थिक समस्याओं का वर्ष था जबकि अमरीकी अर्थरचना बहुत बड़ी मात्रा में इस गिरानी से अपना बचाव करने में सफल रही । छह दशकीय चक्रगति के अनुसार १९८६ यूरोप के लिए तीव्र पिछड़न लानेवाला सिद्ध हुआ, जबकि अमरीका की समृद्धि कम-ज्यादा अपरिवर्तित रही ।

१९८० के दशक में समूचे १९२० के दशक की भांति पश्चिमी यूरोप ऊंची बेरोजगारी से पीड़ित रहा है । १९८६ की तरह बरतानिया में बेरोजगारी १३.४ प्रतिशत थी । फ्रांस में १०.५ प्रतिशत, जरमनी में ९ प्रतिशत, बैल्जियम में १२ प्रतिशत, हालैंड में १४.५ प्रतिशत और स्पेन में २० प्रतिशत थी । १९८६ की पिछड़न ने कई देशों में विशेषतः बरतानिया, फ्रांस, हालैंड और स्पेन में असंतोषजनक स्थिति पैदा कर दी है । १९८७ और १९८९ में यूरोप की हालत कुछ संभलेगी, लेकिन इसकी बेरोजगारी की समस्या बनी रहेगी । जब १९९० में अमरीका मंदी से आक्रांत होगा, यूरोप भी उसी अनुपात से पीड़ित होगा और उसी तरह ही बाकी सारा संसार भी ।

कनाडा ही एक ऐसा मुल्क है, जिसकी अर्थरचना आधे संयुक्त राज्य की अर्थरचना से जुड़ी हुई है । १९८२ और १९८४ के दरम्यान कनाडा की बेरोजगारी ११ फीसदी के आसपास थी और संयुक्त राज्य की भांति बाद में संयत धीमी गति से कम हो गयी । १९८६ में इसका स्तर ९.५ फीसदी था और इसी स्तर पर ही उसके बने रहने की संभावना है । फिर भी १९९० के बाद यह अब तक से कहीं बहुत ही अधिक ऊंची उड़ान भरेगी ।

विश्व की अन्य सारी विकसित अर्थरचनाओं की अपेक्षा, द्वितीय विश्वयुद्ध के समय से जापान की अर्थव्यवस्था ही समयानुसार उलट-सुलट जानेवाली या पलटकर फिर से संभल जानेवाली साबित हुई है । यहां तक कि १९७३ और १९७९ की तेल की कीमतों के झटके भी, जब ओ.पी.ई.सी. ने कीमतों को नयी ऊंचाइयों पर चढ़ा दिया, जापान की अर्थवृद्धि के अंजन का कुछ नहीं बिगाड़ सके थे । जापानी अर्थरचना और कहीं की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह अपने को असंभावित दबावों के अनुकूल ढाल लेती है । यह कोई हैरानी की बात नहीं है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि जापान में परिग्रही जनों का युग कुछ ५५ वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ और इसीलिए अभी उच्छल उत्साहवान जवान है । पश्चिम की अपेक्षा अब भी वह अभ्युदयोन्मुख स्थिति में है । फिर भी १९९० में जापान को पहली छह साला नाजुक घड़ी या मोड़ के बिंदु का सामना करना पड़ेगा । तब उसे बड़ी कठिनाइयां पेश आएंगी, क्योंकि जापान का आर्थिक स्वास्थ्य भी विश्व की विशेषतः संयुक्त राज्य की अर्थरचना के साथ जुड़ा हुआ है ।

इस समय जापान की भी वही दशा है, जो १९२० के दशक में संयुक्त राज्य की थी । उस समय संयुक्त राज्य एक विपुल वाणिज्य के अधिशेष का मधुभोजी था और एक अंतरराष्ट्रीय शक्ति के रूप में बड़ी जल्दी बरतानिया के साथ होड़ करने में सफल होनेवाला था । इस समय जापान अपने सालाना अधिशेष ८० बिलियन की रकम से संयुक्त राज्य से बढ़ जाने की धमकी-सी देता प्रतीत होता है । पहले ही यह संसार को बड़ी विशाल रकमें उधार देने लगा है । इसके साथ ही टोक्यो की भंडार मंडी उससे भी अधिक उन्माद के जाल में उलझी है, जितना कि न्यूयार्क की मंडी में है । सचमुच यह एक अभिशप्त स्थिति है कि सट्टेबाजी का बुलबुला सारे संसार में बनता जा रहा है । जब यह बुलबुला फूटेगा, शायद पहले जापान में ही फूटे, तो यंत्रणा पहले कभी की अपेक्षा बहुत अधिक विदारक होगी, जैसे कोई पेचकस से इनसान की नसों को कस रहा हो ।

१९३० के दशक में संसार की अर्थरचनाएं अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर इतना आश्रित न थीं जितना कि आज हैं, फिर भी उन्हें बहुत अधिक कष्ट भोगना पड़ा था । इस समय तो उनकी पीड़ा और यातना और भी बढ़ी-चढ़ी होगी । आजकल तो संयुक्त राज्य में हर साल के वाणिज्य के विशाल घाटों से उनका बहुत अहित हो रहा है । लेकिन जब १९९० के दशक में अमरीका, नाक में दम आने पर छींकने को विवश होगा तो उन्हें निमोनिया की पकड़ में आना होगा । जो मुसीबतें मेरी भविष्य-दृष्टि में मुझे भारत, मैक्सिको, ब्राजील, पाकिस्तान, मिस्र के शहरों और बाकी दुनिया में आनेवाली दीखती हैं, वे मेरी वर्णन क्षमता के बाहर हैं ।

१९८० के दशक के अंतरराष्ट्रीय उपद्रव १९२० के दशक की दुर्दशा का स्मरण कराते हैं, परंतु अब उनके आयाम बड़े कठोर भयावह रूप में बढ़ चुके हैं । आज विश्व रचना को मुख्य खतरा इस बात से है कि तीसरे संसार पर विशाल अंतरराष्ट्रीय ऋण का भार लद रहा है और अमरीका में संरक्षात्मक नीति अपनाने के गणगान के स्वर बहुत ऊंचे उठते जा रहे हैं । यह ऋण की समस्या ऐसी है, जैसी जंग की क्षतिपूर्ति के लिए जरमनी और उसके व्यापारिक साझेदारों, विशेषतः फ्रांस के आगे १९२० के दशक में आयी थी । फिर भी आज अंतरराष्ट्रीय ऋण का बोझ बहुत-बहुत अधिक भारी है और भूतकाल की अपेक्षा बहुत अधिक देशों को पीड़ित प्रताड़ित करनेवाला है । युद्ध की क्षतिपूर्ति की समस्या विश्व ऋण से होनेवाली वर्तमान यातना-यंत्रणा के आगे बिलकुल फीकी पड़ जाती है ।

संयुक्त राज्य में संरक्षात्मक नीति की बढ़ती हुई मांगों से अंतरराष्ट्रीय स्थिरता को जो खतरा है, उसकी मिसाल १९२० के दशक में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलती है, लेकिन उस समय विदेशी व्यापार का अनुभाग अमरीका की बाकी अर्थरचना के मुकाबले छोटा था । अब स्थूल राष्ट्रीय उत्पादन में अमरीका के निर्यातों का हिस्सा दुगुने से भी अधिक हो गया है और यदि सरकार संरक्षात्मक नीति के पक्षपातियों के दबाव के आगे झुक जाती है तो आज इससे होनेवाली हानि कभी की अपेक्षा बहुत अधिक होगी ।

संरक्षातमकता का अर्थ है घरेलू मंडियों में आनेवाले विदेशी माल को कम कर देना । जब एक देश ऐसे अवरोधों की सृष्टि करता है तो दूसरे भी प्रायः ऐसा करने लगते हैं । इसलिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सामान्यतः संकुचन होने लगता है और हर जगह व्यापार कार्य मंद पड़ने लगता है । अतीत की अपेक्षा आज संसार कहीं बहुत अधिक परस्पराश्रित है । इसलिए संरक्षा की मांग करनेवालों के दबाव को हर तरह से झेलते हुए उसके आगे झुकना नहीं चाहिए । यदि ऐसा न किया गया तो विश्वव्यापी मंदी, ऐसी स्थिति न होने के मुकाबले, और अधिक गहरी मार करेगी ।

फिर भी विश्व व्यापार का घट जाना या मंद पड़ जाना अनिवार्य हो सकता है । व्यापार के लिए ऋण की जरूरत होती है, जो विदेशी ऋण की दैत्याकारता के कारण दुर्लभ होता जा रहा है । एक ऐसा समय आ सकता है जब उधार दाता बैंक कर्जदार देशों को ऋण देना बंद कर दें । उस समय इस बात से ढाल से गिरने की स्थिति की तरह एक संकट उपस्थित हो जाएगा और मंदी अंततः सारे संसार को दबोच लेगी ।

लघु कथा

कौए ने अपने पंख पहले से ही काले करवा लिये

□ नवीन खन्ना

कौआ पहले काला नहीं होता था, बिलकुल गोरा था । उसको हमेशा यही वहम रहता था कि कहीं मैं काला न हो जाऊं । उधर एक चील ने रंगसाजी की दुकान खोली । पोतने को चील के पास सिर्फ काला रंग था । उसे कोई ग्राहक मिल ही नहीं रहा था । कौए को देखते ही उसने कौए को बुलाया— "भाई कौए, तुम अपने पंखों को काले क्यों नहीं पुतवा लेते ?"

कौआ आश्चर्य से बोला, "मैं क्यों अपने पंख काले पुतवाऊं ?"

चील बोली, "सामने स्कूल के बच्चों को देखो । सबने हाथ में काले छाते पकड़े हुए हैं । जानते हो किस लिए ? ताकि इनका रंग तेज धूप से काला न पड़ जाए ।"

कौए को वहम तो था ही कि कहीं वह काला न पड़ जाए । उसे चील की राय पसंद आ गयी और उसने अपने पंख पहले से ही काले करवा लिये । और बेचारा गोरे रंग से काला हो गया ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक समाचार

हिंदी राष्ट्रीय एकता की संजीवनी

उपराष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने हिंदी अकादमी,दिल्ली द्वारा हिंदी पखवाड़े के उपलक्ष्य में प्रकाशित ग्रंथ 'संकल्प' का विमोचन करते हुए कहा, 'हिंदी देश को जोड़नेवाली भाषा के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता की संजीवनी शक्ति है । इसलिए हिंदी भाषा और साहित्य की सेवा के लिए उठाया गया हर कदम सराहना के योग्य है ।'

समारोह में दिल्ली के उपराज्यपाल श्री रोमेश भंडारी ने अकादमी के प्रयास की सराहना करते हुए 'संकल्प' ग्रंथ को बहुत उपयोगी बताया ।

कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) श्री कुलानंद भारतीय ने इस अवसर पर हिंदी अकादमी की सराहना करते हुए कहा कि 'अकादमी अपने उद्देश्य की ओर समर्पित भाव से अग्रसर है ।'

उपराष्ट्रपति को ग्रंथ अर्पण

उपराष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा को अखिल भारतीय भार्गव शताब्दी समारोह के अध्यक्ष श्री विष्णु भार्गव 'योगदान' शीर्षक ग्रंथ भेंट करते हुए । इस ग्रंथ में भार्गव समाज द्वारा राष्ट्र और समाज की सेवा में किये गये कार्यों का विस्तृत विवरण है ।

वाल्मीकि जयंती

लंदन : आदिकवि वाल्मीकि फाउंडेशन साउथहाल की ओर से विश्व हिंदु केंद्र में वाल्मीकि जयंती समारोहपूर्वक मनायी गयी । इस अवसर पर सर्व श्री सत्यवीर ब्रह्मचारी, आर.एन. पाठक, वीरेन्द्र शर्मा एवं संत मगनभाई भीमजी ने वाल्मीकि के जीवन और काव्य पर प्रकाश डाला !

बम की धमकी के बावजूद फीजी में यज्ञ

लटोका (फीजी) : विश्व शांति एवं फीजी द्वीप समूह की एकता, अखंडता तथा समृद्धि के लिए फीजी में पहली बार १५१ कुंडीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यगायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसका आयोजन लटोका की सनातन धर्म प्रतिनिधि शाखा तथा अंतरराष्ट्रीय प्रज्ञा मिशन ने किया था। यज्ञ-संचालन प्रज्ञा मिशन के संस्थापक स्वामी प्रज्ञानंद ने किया।

उल्लेखनीय है कि स्थानीय रेडियो पर यह समाचार प्रसारित किया गया था कि यज्ञ स्थल को टाइम बम से उड़ाने की धमकी मिली है। इसके बावजूद लोगों ने उत्साह से इस महायज्ञ में भाग लिया।

महायज्ञ में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के स्थानापन्न राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिश्चंद्र शर्मा एवं नेशनल फेडरेशन पार्टी के अध्यक्ष डॉ. बलवंत सिंह रखवा भी उपस्थित थे। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के शाखा अध्यक्ष पं. अनंत आनंद शर्मा एवं शिक्षा परिषद के अध्यक्ष श्री हंसमुख लाल देसाई ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

—हरिदेव, फीजी

ओस्लो में गांधीजी की याद

ओस्लो। स्थानीय इंडो नार्विजन कलचर फोरम समय-समय पर सामाजिक-साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है। फोरम ने स्थानीय संत हालवर्ड गिरजाघर में महात्मा गांधी की जयंती के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम में भारतीय राजदूत श्री एल.एन. रंगराजन, समाजशास्त्री हरल्ड बूरवाल्द तथा साहित्यकार थूर ओबेर्सताद एवं लेखक श्री सुरेशचंद्र शुक्ल ने गांधीजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

'पिया की हवेली' का विमोचन

पटना। 'संस्कार भारती', पटना के तत्वावधान में कवयित्री डॉ. शांति जैन के गीत संग्रह 'पिया की हवेली' का विमोचन स्थानीय श्री अरविंद महिला महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. विमला सिंह ने किया। समारोह की अध्यक्षता-बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के उपाध्यक्ष सह-निदेशक डॉ. शिववंश पांडेय ने की।

श्री अगनानी पुरस्कृत

राजस्थान सिंधी अकादमी द्वारा श्री कन्हैया अगनानी को उनके एकाकी संग्रह 'कमीशन' के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया। चित्र में प्रसिद्ध सिंधी नाटककार श्री जीवन गुरु साहनी श्री अगनानी को पुरस्कार देते हुए।

क्षितीशजी का अभिनंदन

अजमेर। स्थानीय सूचना केंद्र के सभागार में 'नया युग पुरुष' पत्र के तत्वावधान में वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक श्री क्षितीश वेदालंकार का सम्मान किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रकाशन विभाग के निदेशक डॉ. श्याम सिंह शशि ने की। दैनिक 'हिंदुस्तान' के संपादक डॉ. विश्वामित्र उपाध्याय ने क्षितीशजी को समर्पित अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाया : राजकिशन 'नैन'

कांपता मौसम : सेकते हाथ

दी हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ में मुद्रित एवं प्रकाशित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रैपिडेक्स" इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

प्रिय अभिभावक,
आपका बच्चा अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता है,
अंग्रेजी अच्छी तरह लिख-पढ़ लेता है;
उसकी एकमात्र समस्या.....
वह इसे बोलने में हिचकता या अटकता है !

इसका समाधान बता रहे हैं
उसके प्रिय खिलाड़ी कपिल देव–

"अंग्रेजी बोलचाल सीखने का एकमात्र सोर्स
रैपिडेक्स इंगलिश स्पीकिंग कोर्स"

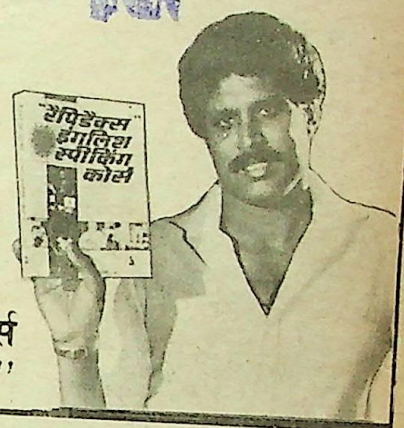

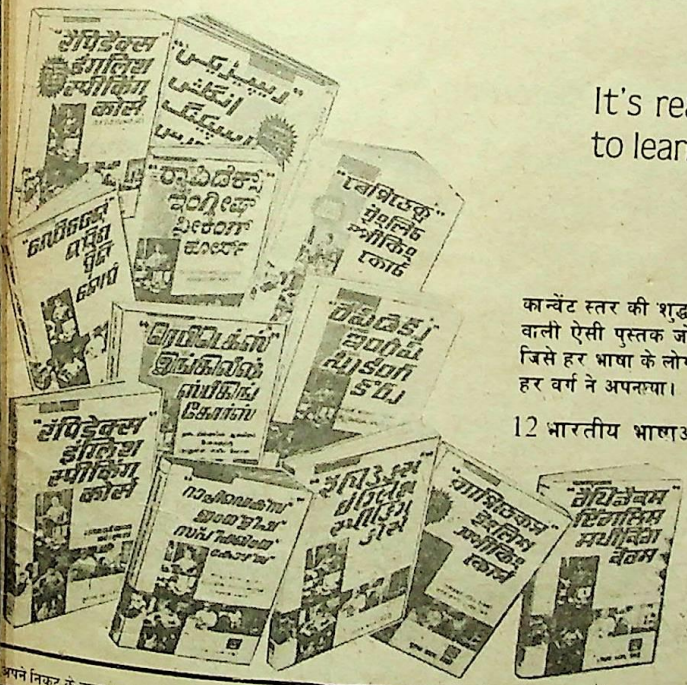

It's really a good book
to learn spoken English
—Kapil Dev

कान्वेंट स्तर की शुद्ध व फर्राटेदार अंग्रेजी सिखलाने वाली ऐसी पुस्तक जो भारत के कोने-कोने में फैली, जिसे हर भाषा के लोगों ने पसंद किया तथा समाज के हर वर्ग ने अपनाया।

12 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित

बड़े साइज के
400 से अधिक पृष्ठ
मूल्य : 36/- प्रत्येक
डाकखर्च : 5/- प्रत्येक

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टालों पर माग करें अन्यथा वी.पी. द्वारा मगाने का पता

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006
नया शो रूम : 10-B नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. निरवद्य—क. जिसकी प्रशंसा न हो, ख. निष्कलंक, ग. असहाय, घ. दीन।

२. भास्वर—क. प्रकाशमान, ख. प्रकट, ग. सुरीला, घ. स्पष्ट।

३. निरापद—क. पद-रहित, ख. जिसमें कोई संकट न हो, ग. बेरोकटोक, घ. निस्संकोच।

४. मंडित—क. घिरा हुआ, ख. सुरक्षित, ग. भूषित, घ. छिपा हुआ।

५. निमिषांतर— क. फौरन, ख. क्षणभर का अंतर, ग. अंधेरा, घ. थोड़ी देर बाद।

६. भवितव्य—क. होनेवाला, ख. आवश्यक, ग. भांति, घ. सुखद।

७. यथावत—क. जैसे-तैसे, ख. ज्यों का त्यों, ग. पूर्णतया, घ. शुभ।

८. मतिगति क. तर्क, ख. उपाय, ग. चिंतन का सिलसिला, घ. सोची-समझी बात।

९. तादात्म्य—क. बराबरी, ख. नकल, ग. समरूपता, घ. दृढ़ता।

१०. निराकुल—क. संपूर्ण, ख. जो घबराया न हो, ग. जिसका कुल ठीक न हो, घ. असभ्य।

११. चरितार्थ—क. जो ठीक उतरे, ख. चरित्रवान, ग. संतोषमय, घ. अर्थपूर्ण।

१२. कवलित—क. समय के अनुसार, ख. खाया हुआ, ग. रौंदा हुआ, घ. खोया हुआ।

१३. गृहछिद्र—क. झरोखा, ख. सेंध, ग. घर की कमजोरियां, घ. गुप्त बात।

१४. ज्ञानचक्षु—क. कल्पना, ख. मन की आंख, ग. बुद्धिमत्ता, घ. दैवी शक्ति।

१५. नजरसानी—क. निगरानी, ख. चितवन, ग. पुनर्विचार, घ. अवहेलना।

उत्तर

१. ख. निष्कलंक, दोषरहित (वि.)। **निरवद्य** शासक ही जनता की श्रद्धा का पात्र होता है। (निर्=अवद्य)

२. क. प्रकाशमान, उज्ज्वल (वि.)। चरित्रवान लोगों से समाज **भास्वर** होता है। (भास्+वर)

३.ख. जिसमें कोई संकट न हो। इस वन में कोई भी **निरापद** विचरण कर सकता है। (निर्+आपद)

४. ग. भूषित, सजा हुआ। यह मूर्ति बहुमूल्य रत्नों से **मंडित** है।

५. ख. क्षणभर का अंतर। **निमिषांतर** में ही कुछ का कुछ हो गया। (निमिष=पलक झपकने का समय)

६. क. होनेवाला (वि.)। जो **भवितव्य** है, कौन टाल सकता है! (संज्ञा-भवितव्यता होनी, प्रारब्ध)

७. ख. ज्यों का त्यों। सारी सामग्री उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथावत सौंप दी गयी । (यथा+वत्)

८. ग. चिंतन का सिलसिला । मनुष्य की **मतिगति** ठीक होने पर वह सत्कर्मों की ओर अग्रसर होता है । (यति+गति)

९. ग. समरूपता । म. गांधी ने समाज के पिछड़े वर्गों के साथ **तादात्म्य** स्थापित किया था ।

१०. ख. जो घबराया न हो । मतदाता **निराकुल** होकर मतदान-केंद्रों पर गये । (निर्+आकुल)

११. क. जो ठीक उतरे । 'कथनी और करनी में भेद है'— यह कहावत यहां पूरी तरह **चरितार्थ** होती है ।

१२. ख. खाया हुआ, चबाया हुआ । निरंतर पीड़ाओं से **कवलित** होने के कारण उसका मनोबल टूट गया । काल-कवलित=मृत ।

१३. ग. घर की कमजोरियां **गृहछिद्र** के कारण उसका परिवार पनप नहीं सका । (गृह+छिद्र)

१४. ख. मन की आंख । नेत्र चाहे बंद रखो, किंतु **ज्ञानचक्षु** सदैव खुले रखो । (ज्ञान+चक्षु)

१५. ग. पुनर्विचार । इस मामले पर **नजरसानी** जरूरी है । (अरबी)

पारिभाषिक शब्द

Envoy	= दूत
Ambassador	= राजदूत
Charge D' affairs	= कार्यदूत/प्रभारी राजदूत
Consul	= वाणिज्य-दूत
De Facto	= वस्तुतः
De Jure	= विधितः
Contribution	= अंशदान/योगदान
Distribution	= वितरण
Leaflet	= पर्णक

समस्या-पूर्ति—१२६

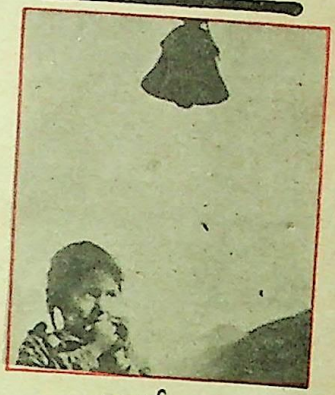

प्रार्थना

प्रथम पुरस्कार

घंटे के नीचे मंदिर के
खड़ी बालिका प्रभु के सम्मुख
तन्मयता में भाव-लीन हो
भूल गयी ज्यों अपना सुख-दुःख
दिखती मानों मूर्त्त साधना
करती है जब मूक प्रार्थना

—डॉ. भवदेव झा

अध्यक्ष हिंदी विभाग
श्री गुरु गोविंद सिंह कॉलेज, पटना सिटी

द्वितीय पुरस्कार

अंतस में निष्काम कामना
जगे देश यह लिये भावना
नन्ही एक बालिका करती
शंख बजाकर प्रभो-प्रार्थना

—कु. मैत्रेयी

आचार्या, सरस्वती शिशु मंदिर,
आलमपुर (म.प्र.)—४७७४४९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

किस-किस का घाटा पूरा करोगे

संत तिरुवल्लुवर, जिनकी सूक्तियों का अब हिंदी में भी अनुवाद हो चुका है । संत तिरुवल्लुवर की धर्म एवं नीति संबंधी उक्तियां आज भी प्रासंगिक और उपयोगी हैं । इन्हीं संत तिरुवल्लुवर के जीवन का एक प्रसंग ।

संत कबीर की भांति संत तिरुवल्लुवर भी जुलाहे का कार्य करते थे । वे हर समय शांत रहते । कभी क्रोध न करते । एक बार कुछ शरारती लड़कों ने शैतानी कर संत तिरुवल्लुवर को क्रोधित करने की ठानी । वे उनके पास गये और साड़ियों के दाम पूछने लगे । एक लड़के ने एक साड़ी उठाकर उसका दाम पूछा । संत तिरुवल्लुवर ने उसका दाम बताया तो शरारती लड़के ने साड़ी को बीच से फाड़ दिया । और फिर उसके एक-एक भाग का दाम पूछा संत तिरुवल्लुवर ने आधे-आधे भाग का जो दाम बताया, उसका जोड़ पहले दाम जितना ही था ।

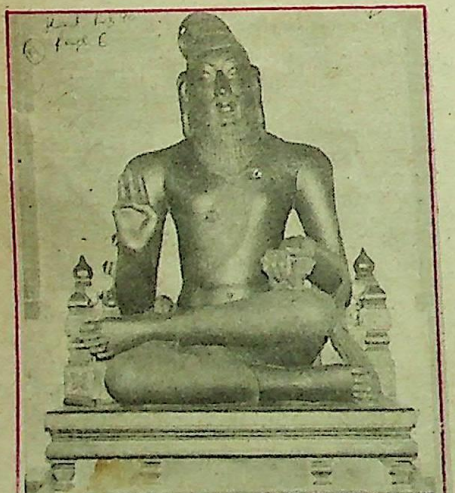

लड़के ने साड़ी के चार टुकड़े कर दिये । फिर दाम पूछा । संत तिरुवल्लुवर ने प्रत्येक दाम मूल दाम का चौथाई भाग बताया । उस भी जोड़ उतना ही होता था ।

शरारती लड़के ने फिर साड़ी के आठ टुकड़े कर दिये और दाम पूछा । संत तिरुवल्लुवर ने कहा, 'अब तो साड़ी किसी काम की रही नहीं दाम किस बात के ?'

लड़के ने कहा, 'आप ठीक कहते हैं । यह साड़ी नहीं चाहिए ।'

संत ने कहा, 'ठीक है न लें ।'

लड़का परेशान-सा हो उठा । वह संपन्न का बेटा था । उसके मन में अभिमान भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि संत शायद गरीब समझकर मुझसे पैसे नहीं ले रहे हैं । उसने उनसे आग्रह किया कि वे पैसे ले लें । उन्हें घाटा भी तो हुआ है ।

संत ने कहा, 'किस-किस का घाटा पूरा करोगे । इस कपड़े को बनाने में अनेकों का श्रम लगा है । किसान से लेकर श्रमिक, मजदूर, न जाने कितनों ने श्रम किया है, तब यह तैयार होता है । तब लोग लाभ उठाते, तन ढकते और सरदी-गरमी में रक्षा करते हैं, किंतु तुम्हें टुकड़े करते कोई देर नहीं लगी— न श्रम ही करना पड़ा । रुपयों से यह घाटा कैसे पूरा होगा ?' संत के स्वर में किशोर के प्रति करुणा का भाव था । किंतु क्रोध की न कोई रेखा मन में थी और न चेहरे पर ।

इस तरह का व्यवहार देखकर लड़का संत के चरणों में गिर गया । संत ने बड़े प्यार से पीठ पर हाथ फेरकर कहा, 'यदि मैं तुम से दाम ले भी लेता तो हो सकता है मेरा थोड़ा-बहुत काम चल जाता, पर तुम्हारी जिंदगी का वही हाल हुआ होता, जो इस साड़ी का हुआ है । कोई भी तुम्हारी जिंदगी से लाभ न उठा पाता । साड़ी मैं दूसरी बना लूंगा, किंतु जिंदगी एक बार अहं में नष्ट हुई तो दूसरी कहां से लाओगे । तुम्हारा पश्चात्ताप ही मेरे लिए बहुत कीमती है ।''

कर्त्तव्य

एक बार प्रताप के संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी ने ग्वालियर रियासत के शासन के संबंध में एक जोरदार टिप्पणी निकाली ।

ग्वालियर के तत्कालीन राजा माधवराव सिंधिया ने उसे पढ़ा और तिलमिला उठे ।

उन्होंने विद्यार्थीजी के पिता, जो कि उन दिनों ग्वालियर में अध्यापक थे, से कहकर उन्हें ग्वालियर बुलवाया । पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए विद्यार्थीजी ग्वालियर आये तथा महाराज को मिले ।

शिष्टाचार के पश्चात महाराज ने कहा— ''हम, चाहेंगे कि आप भविष्य में ग्वालियर राज्य की शासन व्यवस्था पर कोई भी कटु आलोचना नहीं करें ।''

गणेशजी चुप रहे । महाराज ने पुनः कहा— ''इसके लिए आप जो चाहेंगे, दिया जाएगा ।''

विद्यार्थीजी ने अत्यंत तेजस्वितापूर्ण शब्दों में कहा— ''महाराजा साहब ! बाबू जयनारायण लाल, अध्यापक ग्वालियर के पुत्र के नाते मैं ग्वालियर रियासत के प्रति अत्यंत निष्ठावान रहूंगा । परंतु क्षमा करें । प्रताप के संपादक के नाते मेरा जो 'कर्त्तव्य' है उसका पालन करने को मैं विवश हूं ।''

प्रस्तुति : इन्द्रा त्रंसल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

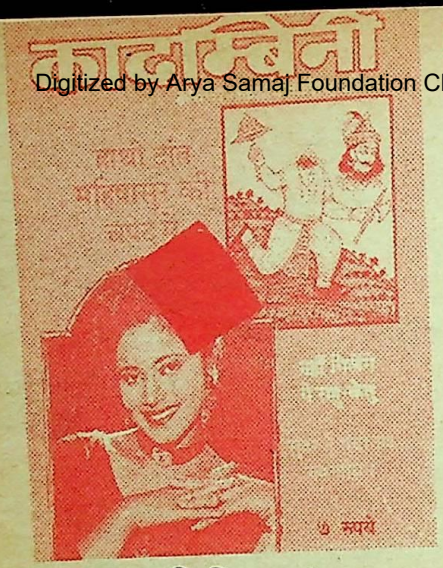

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

दिसम्बर अंक में 'भ्रष्टाचार पर सशक्त अंकुश लोकायुक्त प्रणाली जो २७३ वर्ष पुरानी है' शीर्षक लेख पढ़ा । जिस लोकपाल या लोकायुक्त प्रणाली के चर्चे हम पिछले दो दशकों से सुन रहे हैं यह प्रणाली सबसे पहले १७१६ में स्वीडन में अंबुड्समान नाम से शुरू हुई थी । इतना ही नहीं वहां इस संस्था ने जनहित के सफल रक्षक के रूप में अपना एक स्थान बनाया था । यह प्रणाली भारत में १९६० में शुरू हुई । उस समय श्री के. एम. मुंशी ने भ्रष्ट प्रशासन पर अंकुश लगाने के लिए इसकी नियुक्ति की मांग की थी । इस प्रणाली में मोरारजी देसाई की अध्यक्षता वाले प्रशासनिक सुधार आयोग ने नागरिकों की परेशानियों को दूर किया जा सके इसके लिए निम्नलिखित ७ शर्तों की सिफारिश की ।

(१) आयोग पूरी तरह से भेदभाव रहित तथा किसी के भी आधीन न हो ।

(२) उनकी जांच और कार्यवाही गुप्त और अनौपचारिक होनी चाहिए ।

(३) जहां तक संभव हो उनकी नियुक्ति गैर राजनीतिक हो ।

(४) देश के सर्वोच्च न्यायिक अधिकारी की तरह उन्हें माना जाना चाहिए ।

(५) नाइनसाफी, भ्रष्टाचार तथा पक्षपात के मामलों को उन्हें सौंपा जाना चाहिए ।

(६) उनकी कार्रवाई पर अदालत का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए तथा प्रासंगिक जानकारी पाने की आजादी होनी चाहिए और उन्हें इसका अधिकार दिया जाना चाहिए ।

(७) उन्हें कार्यकारी सरकार से किसी लाभ या आर्थिक सहायता का मोहताज नहीं होना चाहिए ।

अगर लोकायुक्त संस्था को वास्तव में स्थापित करना है और इससे जनता को फायदा पहुंचाने की भावना है यानी भ्रष्टाचार, बेईमानी और नाइनसाफी को दूर भगाना है तो इस पर और गहराई से विचार करके ही लागू किया तो इससे भ्रष्टाचार पर बहुत अंकुश लग सकता है । तभी जनता को फायदा पहुंचेगा ।

— राजेश भावसार

राजेश जनरल स्टोर्स
मेन मार्केट बरेली, जिला-रायसेन (म.प्र.)

भारतीय चिंतन में धर्मनिरपेक्षता

दिसम्बर, १९८९ की मासिक कादम्बिनी प्रथम लेख की श्रृंखला में **'भारतीय चिंतन धर्मनिरपेक्षता'** शीर्षक लेख में श्री डॉ. शंकर दयाल शर्मा उपराष्ट्रपति द्वारा जो प्रस्तुतिकरण किया वह आज के समय में उपयुक्त व प्रशंसनीय कार्य रहा जिसके लिए श्री शर्मा कादम्बिनी के संपादक बधाई के पात्र हैं ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानीय कला साहित्य सांस्कृतिक मंच 'संवेदना' द्वारा भी उक्त लेख को सराहा गया है ।

उक्त लेख में वर्णित एक दिलचस्प घटना 'मंदिर में मसजिद' को गिराने से रोके जाने में सफलता माधवराव पेशवा ने अर्जित की, से वर्तमान संदर्भ में 'राम जन्मभूमि व बाबरी मसजिद' के विवाद को हल करने में सहायता मिल सकती है ।

धर्मनिरपेक्षता की व्यापक चर्चा विभिन्न ग्रंथों एवं विद्वानों द्वारा मय प्रमाण के लेख में सम्मिलित करके शंकाओं का समाधान किया गया है क्योंकि धर्म से जुड़े अंधविश्वासी जनों को अपनी (धर्म निरपेक्षता की) बात भली-भांति समझाना टेढ़ी खीर है अब यह सहज रूप से उनके गले उतर गयी होगी जहां तक प्रबुद्ध वर्ग का सवाल है, वह संतुष्ट है ।

— सुरेश परमार 'अतुल'
रतलाम (म.प्र.)

इस संदर्भ में हमें इनके भी पत्र मिले हैं— चारुचन्द्र मुनगली; रानीखेत, सुधीर खरे 'कमल'; बांदा, रमेशचन्द्र; उज्जैन ।

नव वर्ष के शुभ अवसर पर

जो 'कालों के चिंतन' में विलीन
'आस्था के आयाम' बताता है
उसके कमल करों में ही
'कादम्बिनी'-कुटुम्ब लहराता है
चिरजीवी हों संपादकजी
जो नित 'बुद्धि-विलास' कराते हैं
'शब्द सामर्थ्य' बढ़ाकर के
'समस्या-पूर्ति' 'प्रवेश' कराते हैं
अभ्यागत नव वर्षों पर
अपनी तो यह अभिलाषा है
चिर शाश्वत हो 'कादम्बिनी' हमारी
जो धूमिल हृदयों की नव आशा है

मान्यवर संपादकजी एवं 'कादम्बिनी'-परिवार के लिए हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ—

— श्रवण कुमार वाजपेयी,
इलाहाबाद

'बेताल सुनो' के लेखक ?

एक लंबे अर्से से 'कादम्बिनी' का पाठक हूं । जब से 'बेताल सुनो !' स्तंभ की शुरुआत हुई है मन को एक अजीब-सा संतोष मिला । तबीयत तर हो गयी 'गोष्ठी' की प्रस्तुति बेहद आशाजनक व ज्ञानप्रद है । कृपया स्पष्ट करें कि क्या 'बेताल सुनो !' के लेखक (वास्तव में ?) श्री सेवकराम ओखाडू हैं ?
(छद्म नाम हो तो कृपया वास्तविक लेखक का नाम दें)

— घनश्याम नागौरा,
जोधपुर

(ये हिंदी के एक प्रतिष्ठित लेखक हैं अभी अपना परिचय देना नहीं चाहते—सं.)

सुझाव नये स्तंभों के

कादम्बिनी के ३०वें वर्ष के प्रथम अंक से मेरा नाता इस महान पुस्तक से सदा-सदा के लिए जुड़ गया । अंतःस्थल में एक अजीब-सी सिहरन दौड़ गयी । 'कादम्बिनी' पाकर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे ईश्वर ने मेरे अंतः की बात जानकर इस पत्रिका की रचना की है ।

किसी एक स्तंभ, कविता, कहानी, लेख आदि की प्रशंसा करना मैं न्यायसंगत नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझता । 'कादम्बिनी' तो वह सागर है जिसमें समाया प्रत्येक मोती बहुमूल्य है ।

— दिनेशचन्द्र जोशी हल्द्वानी

किस्सा गंगाराम पटेल का

'कादम्बिनी' माह दिसम्बर, ८९ अंक में 'किस्सा गंगाराम पटेल का' की पूर्ण जानकारी देकर एक बहुत प्रतिष्ठित, सर्वमान्य सामाजिक मान्यता प्राप्त किस्सागो को पुनः जीवित किया है । जहां तक मेरी जानकारी है 'कादम्बिनी' पहली हिंदी पत्रिका है जिसने इस किस्से के नायक के विषय में इतनी गहरी खोजबीन करके तथ्यों को प्रमाण सहित पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है, मेरे बचपन में बाबा नियमित रूप से सायंकाल घर के बाहर अलाव तापते हुए ग्रामीणों को गंगाराम पटेल व बुलाकी दास नाई की कहानी सुनाया करते थे । आज 'कादम्बिनी' में, इस किस्से के संबंध में पूर्ण सामग्री पढ़कर लगा कि जैसे मेरा बचपन पुनः लौट आया है । और मैं भी बुलाकी दास नाई के साथ-साथ कौतूहल निवारण के लिए गंगाराम पटेल के सम्मुख उपस्थित हूं ।

— डॉ. संतोष चतुर्वेदी
कूचोर आथूनी (राजस्थान)

लोकायुक्त प्रणाली

'कादम्बिनी' दिसम्बर, ८९ का अंक अच्छा लगा । कान्ति भारद्वाज द्वारा लोकायुक्त प्रणाली विषयक प्रश्न महत्त्वपूर्ण किंतु अभी भी अनुत्तरित है । अभी हाल में ही वर्तमान प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह द्वारा राष्ट्र के नाम प्रथम प्रसारण में अन्य मुद्दों के अलावा 'लोकपाल' की नियुक्ति संबंधी घोषणा भी की गयी जिसके अनुसार लोकपाल पूर्णतः स्वतंत्र रहकर प्रधानमंत्री की भी जांच कर सकेगा ।

जहां तक भ्रष्टाचार को ऐसा वृक्ष मान लिया जाए जिसकी जड़ ऊपर तथा शाखा-प्रशाखाएं नीचे तक यथासंभव जा पाती है, तो अतिशयोक्ति न होगी । यों तो वर्तमान राजनीतिक दांव-पेंच हम आम लोगों से परे प्रतीत होते हैं तभी तो सत्ता की होड़, पक्ष-विपक्ष के आरोप-प्रत्यारोप जांच-आयोग समितियां और जाने क्या-क्या सब-के-सब प्रश्न होकर हमारी सोच को भटकाने का प्रयास तो करते हैं, किंतु अहम प्रश्न तो हल होने तक प्रश्न ही रहेगा । अभी तो आगे-आगे देखिए होता है क्या ?

— कृष्णगोपाल मिश्र 'राही'
बरगी नगर (म.प्र.)

वंदेमातरम : गीत एक भाव अनेक

'कादम्बिनी' के जनवरी अंक में 'वंदेमातरम : गीत एक भाव अनेक' शीर्षक के अंतर्गत पृष्ठ ५२ पर बंकिमचंद्र चटोपाध्याय का नाम सियाराम शरण गुप्त की कविता की तीन पंक्तियों के साथ प्रकाशित हो गया है । बंकिमचंद्र चटोपाध्याय का गीत 'वंदेमातरम' शब्द के साथ समाप्त हो जाता है । पाठक सियाराम शरण गुप्त की कविता इस प्रकार पढ़ें :—

जय जनक जननी जननि जय भुवन मानस हारिणी ।
धौत तेरा चरण-तल है नील नीरधि-नीर से ।
जय अनिल-कम्पित मनोरम श्याम अंचल धारिणी ।
व्योम चुम्बी भाल हिमगिरि है तुषार किरीट है
जय जयति लक्ष्मी-स्वरूपा दैन्य दुःखनिवारिणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रहणीय विशेषांकों की परंपरा में एक और विशेषांक

अगला अंक—मार्च अंक

मनोरंजन विशेषांक

इस विशेषांक में प्रस्तुत है आपके लिए हास्य-व्यंग्य से भरपूर बेहद दिलचस्प सामग्री, एक-एक रचना पठनीय। साथ ही मनोरंजन के तौर-तरीकों का रोचक इतिहास—

बड़े लेखक : गुदगुदानेवाली हलकी रचनाएं—

इस विशेषांक की कुछ दिलचस्प रचनाएं

- स्पेन में सांड : इंगलैंड में मुरगे
- नसरुद्दीन शाह अवंती के रोचक किस्से
- पत्र एक जगत भौजी का
- पूरे दरबार ने उसे महाराजा समझा
- गदर के बाद बेगम
- जो घर फूके आपना चलै हमारे साथ : अपने घर में आग लगाइए फिर सफलता पाइए
- दूरदर्शन और दर्शन शुल्क—एक करारा व्यंग्य
- तोरो हंसना स्वभाव—मोरे करेजे में ठट गयो—कितनों के करेजे नहीं टूटे, आइए जोड़ें उन्हें !
- पूरे पखवाड़े चलता है लंगर : दावत शामिल होने की
- फाग में पथराव : संस्कृत साहित्य में फाग-महिमा
- किस्से क्रूर और सनकी तानाशाहों के
- जाने कहां गये वो दिन—फिल्मी जोकरों का लंबा इतिहास : राजकपूर से टुनटुन तक
- मनोरंजन : नवाबों, शहंशाहों और महाराजाओं के

यही नहीं और भी अनेक बेहद दिलचस्प रचनाएं, कविताएं, कहानियां, कार्टून और सभी लोकप्रिय स्थायी स्तंभ

होली के रंग और उमंगभरे पर्व पर 'कादम्बिनी' का मनोरंजन विशेषांक स्वयं पढ़िए और अपने मित्रों-संबंधियों को भेंट दीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

वर्ष ३०, अंक ४
फरवरी १९९०

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

पैमिला मानसी
अस्तित्व की व्यथा को झेलता..... १८

राधानाथ चतुर्वेदी
विजयी जनतंत्र..... २१

सेवकराम ओखाडू
बैताल सुनो..... ३०

श्री कृष्ण कुमार त्रिवेदी
आधुनिक अफरीकी साहित्य में..... ४१

विलियम फाकनर
अच्छा उपन्यासकार..... ५२

दीप भोपाली
लैटर पैड का अंतिम..... ५४

श्याम नारायण कपूर
ऋग्वेद में वर्णित : विमान..... ५६

डॉ. सत्य भूषण वर्मा
कौन थे विद्यापति ?..... ६१

श्रीकृष्ण 'जुगनू'
जिन्हें भेड़ें पालती हैं..... ६८

प्रहलाद रामशरण
जहां हिंदी धर्म का..... ८१

डॉ. सुधीर खेतावत
अद्‌भुत करिश्मे..... ८६

जसवंत सिंह विरदी
अलग स्वभाव है..... ८८

सुभाष काक
एक विशाल जुगनू..... ९४

जल में स्मरण शक्ति..... ९८

महावीर तोमर
कलाई दांव का..... ११०

हेमकांत झा
मौत के साये में..... १२२

महेशचंद्र शर्मा
दान कभी कुपात्र को..... १२५

मीता संघवी
भारतीय पतंगबाजी..... १२९

अमरेन्द्र नारायण
एक अयोध्या थाईलैंड में..... १३४

स्थायी स्तंभ

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए—४, समस्या-पूर्ति—५, आस्था के आयाम—६, प्रतिक्रियाएं—८, काल चिंतन—१४, समय के हस्ताक्षर—१८, ज्ञान-गंगा—२९, गोष्ठी—४८, हंसाइयां—७३, बुद्धि विलास—१०१, आइए चलें जंगल की ओर—१५०, विधि-विधान—१५५, तनाव से मुक्ति—१६६, ज्योतिष—समस्या और समाधान—१६९, वैद्य की सलाह—१७६, यह महीना और आपका भविष्य—१७८, दस्तक—१८२, हंसिकाएं—१८३, नयी कृतियां—१८४, इनके भी दयां—१८६, सांस्कृतिक-गतिविधियां—१९६, और अंत में—१९८

आवरण—प्रेम कपूर (नृत्यांगनाएं)
डॉ. एम. एस. अग्रवाल (शिव)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

भगवती प्रसाद डोभाल
नीलकंठ कहां है राम की अयोध्या १३७
ब्र. ना. कौशिक
आयु-आरोग्य का स्रोत..... १४५
डॉ. रमाकांत पांडेय
एंटी विश्व की खोज में १५२
अरुण कुमार पांडेय
क्या पशु-पक्षियों के १५८

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

राधेश्याम
कागज का देश..... ३५
कमल कौल
हस्ताक्षर ७४
वि.वा. शिरवाड़कर
बुद्ध की मूर्ति..... १०२
एम.एस. बतरा
दास्तान फतहखान ११६
जितेन ठाकुर
श्रमदान..... १३८
कुंदन सिंह परिहार
कंधा और बंदूक..... १६१

सार-संक्षेप

इलडगो अगिल
चिलप्पादिकारम..... १८७

कविताएं

माधुरी वाजपेयी
प्रेम कविताएं..... ४६
कमलेश भट्ट 'कमल'
हिंदी हाइकु..... ९७
राजमणि राय 'मणि'
सपनों ने..... ११४
अनामिका
संधि पत्र..... ११४
राधेश्याम बंधु
सुबह के साथी..... ११५
रमेश कौशिक
जाला ११५

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त

मूल्य

वार्षिक : ७५ रुपये
द्विवार्षिक : १४५ रुपये
विदेशों के लिए : २९० रुपये वार्षिक वायु सेवा से
समुद्री जहाज से : १३५ रुपये

पता :
संपादक
'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि.
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-चिंतन

मौसम और मनुष्य का गहन नाता है । हर बदलते मौसम के साथ मनुष्य का बहुत-कुछ बदलता है । बदलता है, फिर लौटता है और लौटकर फिर बदलता है । चक्र की तरह एक जीवन-प्रक्रिया बन गयी है— बदलना मनुष्य का, बदलना मौसम का !

□

— तब ?

— प्रिय ! यह पत्र है तुम्हारे नाम : पत्र लिखना और पत्र पढ़ना दोनों मंगलमय होते हैं । पत्रों के आंतरिक पारगमन से कितना कुछ नहीं हो जाता !

— लिखे जाते समय की स्थितियां साक्षी होती हैं, पढ़े जाने के क्षण भाव भंगिमा इस तरह उभरती हैं जैसे सफेद कागज पर काले अक्षर ! वह क्षण सुख के सौभाग्य का क्षण होता है ।

— प्रिय की पाती : लगता है मरुभूमि में गुलाब, हरे गलीचे-सी बिखरी घास पर ओसकण, हवा से लहराते किसी पत्ते की थिरकन !

□

— मोंगरे की कोंपल बढ़ने लगी होगी, चंपा ने कोपलें फोड़ दी होंगी ।

— देश से बहुत दूर हूं, प्रिय, लगता है तब भी नंगे पेड़ों पर बचपन किलकारियां भरने लगा होगा । बरामदे में बैठी तुम हर रोज, हर क्षण एक नयी कोंपल उभरती देख रही होगी ।

— नागफनी का मौसम जब बीता, तब तुमने क्या किया ?

— सफेद लिली सूखी तो नहीं ? सम्भाला होगा तुमने और अब वह फूलों से भरी होगी— सफेद लिली जिसके कोनों पर गेहूं की बाल के भीतर का पहला पीलापन उभरता है; यही तो लिली का सौंदर्य है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— गुलबकावली में सफेद फूल निकल आये होंगे और आंगन की तुलसी काले मोतियों से फूली, लदी और झुकी होगी !

— हजारिया गेंदा तो अपने आप उगता है, पीले फूल पुराने बीजों को फाड़कर अपने आप निकल आते हैं, इसलिए कि बीजों को समेटने की आदत न तुममें थी और न मुझमें रही ।

— धरती के भीतर अनंत धन है, धरती का गर्भ अभिजात्य है, धरती का सौंदर्य आकाश और पाताल को बनाकर छोड़ देता है ।

— क्या होता है इस महान धरती में कि मौसम के साथ अपने आप गर्भ से अनगिनत अवयव उभर पड़ते हैं— फूल भी, शूल भी, जीवनी-शक्ति से आपूरित अनेक कीड़े— कुछ पतंगों से, तो कुछ उछलते हुए खरगोश से ।

— गिलहरियां फिर लौट आयी होंगी हमारे बाग में, दिन-रात नीम, सेव और अनार के महावृक्षों के साथ खेलती होंगी ।

□

— दर्द !

— हां ! पहले दर्द से यही सब उभरे हैं, पहला दर्द हमारी मां ने भी झेला होगा; वही पहला दर्द प्यार का पौधा और फिर वृक्ष बनता है ।

□

दर्द एक फूल है

□

दर्द मेहमान के आने का संकेत है

□

दर्द अगले सुख का क्षण है

□

दर्द बलिष्ट भुजाओं के लिए भोजन है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्द जिंदगी का सबसे सुखदायक क्षण है

□

दर्द मृत्यु का भक्षण है

— और, प्रिय, हम कोसों दूर पृथ्वी और समंदरों के पार जिस दर्द का अनुभव कर रहे हैं, वह वसंत के आने का सुखद संदेश है !

□

— तो ?

— वसंत आ गया होगा, मृगछोने की तरह

— वसंत उछालें भर रहा होगा हिरनों-जैसा

— वसंत कांप रहा होगा कोपलों-सा

— वसंत खिल रहा होगा तुम्हारी देह की तरह

— वसंत उभर रहा होगा तुम्हारी सहज मुसकान-सा

— वसंत गलबहियां डाले होगा जैसे मैं डालता रहा हूं; याद है, भूलते नहीं ऐसे क्षण !

□

— आयु असीम है ऐसे क्षणों के लिए

— आयु कालजयी है ऐसे सिहरते, सिमटते और कांपते कल्पों के लिए

— कहां है मृत्युबोध

— आवृत्त है वह तो मुक्तिबोध में

— अनुभव कर रहा हूं दूर से कांपती ठंड के बाद की सहजता !

— अपनी धरती का अनंत सौंदर्य महासागरों के पार से ही दिखायी देता है !

— दूरी से ही प्रेम की पीड़ा उभरती है और दूरी से ही प्रेम के पौधे का सौंदर्य झलकता है !

— मेरी धरती महान है, मेरी धरती अजेय और अपराजित है; मेरी धरती से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

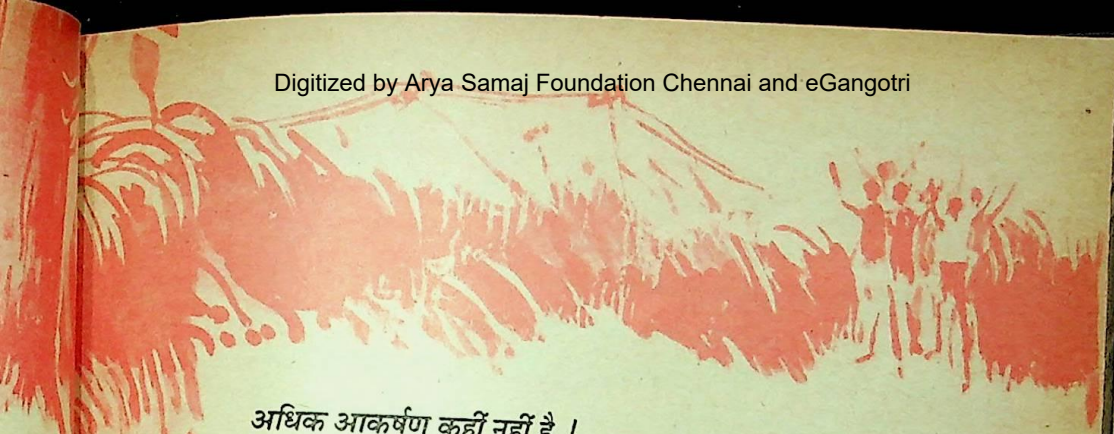

अधिक आकर्षण कहीं नहीं है !

— हवाएं स्वच्छ हैं जहां, वहीं मेरी धरती है !

— यहीं से देख पा रहा हूं उसकी महानता को, यहीं से पहचान सका हूं तुम्हारे रंग-बिरंगे लहराते परिधानों से आवृत्त किसी कोने-से झांकती मखमली देह का टुकड़ा !

□

— मौसम बदल गया है न ?

— स्वागत करो उसका, अभिनंदनीय है वह

— मौसम का स्वागत मेरा स्वागत होगा : मनुष्य और मनुष्य के रिश्ते का स्वागत होगा !

— आया हुआ मेहमान महामानव है, वह ईश्वर का वरदान लेकर आता है ।

— मेहमान की व्याख्या एक देश की धरोहर नहीं है— वहां तो वह है ही, यहां भी है उसी तरह !

— सच कहें तो समस्त जगत एक घर है; अलग-अलग बने टापू भले हों, सब जुड़े हैं एक-दूसरे से; कहीं अलगाव का अनुभव नहीं होता मुझे !

□

— और हां ! यहां मौसम बर्फीला है; पर हवाएं अचानक वासंती हो गयी हैं; यह देश भी स्वतंत्र हो गया है हमारी तरह— और भी देश स्वतंत्र हो गये हैं, होते जा रहे हैं !

— यहां के बर्फीले मौसम में वासंती बयार भारत की तो नहीं !

(प्राह से)

राजेन्द्र अवस्थी

फरवरी, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसार भारती विधेयक १९८९

नयी सरकार कार्यभार संभालते ही अपने वचन पूरे करने के रास्ते पर चल पड़ी है। यहां हम विशेष रूप से सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री पी. उपेन्द्र द्वारा लोकसभा में प्रस्तुत प्रसार भारती विधेयक की चर्चा करेंगे।

आश्चर्य की बात तो यह है कि इस विधेयक पर दूरदर्शन पर जो चर्चाएं इन दिनों हो रही हैं, उनमें ऐसे व्यक्ति होते हैं, जिनका सीधा संबंध अंगरेजी पत्रकारिता से है। यह भुला दिया गया है कि दूरदर्शन और आकाशवाणी दोनों में कार्यक्रमों की अधिकता हिंदी में है और चैनल नं. दो पर भारतीय भाषाओं

कितना जन कल्याण होगा

में। प्रस्तावित प्रसार भारती विधेयक न तो जनता के पास भेजा गया, न ही इसका विज्ञापन किया गया, इसलिए इस विधेयक में है क्या, इससे सभी अनभिज्ञ हैं।

हमारे पास अंगरेजी में प्रस्तावित विधेयक की एक प्रति आयी है। यह विधेयक जिन्होंने भी बनाया है, उन्होंने दूरदर्शिता का परिचय नहीं दिया। उदाहरण के लिए उसमें बताया गया है कि किस तरह के कार्यक्रम प्रसारित किये जाएंगे। ये हैं राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का समन्वित प्रसारण, जनरुचि, साक्षरता-विस्तार, कृषि, ग्रामीण विकास, पर्यावरण, स्वास्थ्य, विज्ञान और तकनालॉजी, संस्कृति, खेलकूद, युवावर्ग, सामाजिक न्याय, सामाजिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष, श्रमजीवी वर्ग के अधिकारों की रक्षा, कमजोर और पिछड़े हुए लागों के लिए कार्यक्रम, अल्पसंख्यक और आदिवासियों के लिए उपयोगी सामग्री, बच्चों, वृद्धों, अंधों और अपंगों के लिए कार्यक्रम, राष्ट्रीय एकता इत्यादि।

हमारे जो पाठक दूरदर्शन देखते हैं या आकाशवाणी सुनते हैं—वे जानते हैं कि ये ही कार्यक्रम हैं, जो इस समय प्रसारित हो रहे हैं। प्रश्न यह रहता है कि क्या कुछ वर्षों बाद इनमें से कुछ कार्यक्रमों की आवश्यकता रहेगी भी या नहीं। जो विधेयक एक बार पारित हो जाएगा, उसमें परिवर्तन करना बहुत आसान काम नहीं होगा। हमने बड़ी-बड़ी संस्थाओं के नियम-कानून देखे हैं, उनकी भाषा और उनका विवरण इतना नपा-तुला होता है कि उसमें सभी तरह के कार्य लगभग समाविष्ट हो जाते हैं, यानी वह संस्था अपनी आवश्यकता के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने कार्यक्रमों में सामयिक परिवर्तन कर सकती है ।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि इस प्रस्तावित विधेयक में सृजनात्मक लेखक (क्रियेटिव राइटर) और मौलिक साहित्य के लिए बहुत अधिक स्थान नहीं है । किसी भी देश की संस्कृति का यह सबसे बड़ा हिस्सा है । इसी के अभाव का फल है कि इस समय दूरदर्शन में इतने घटिया सीरियल चल रहे हैं और आकाशवाणी में चर्चाएं केवल खानापूरी करने के लिए होती हैं । हमारी सलाह है कि सरकार को इस विधेयक के कार्यक्रमों के संबंध में हिंदी व अन्य भाषाओं में सृजनशील लेखकों से आमने-सामने बातचीत करनी चाहिए । बातचीत के पहले प्रस्तावित विधेयक की एक प्रति उन्हें भेजी जानी चाहिए ।

होगा कितना भ्रष्टाचार मिटेगा

प्रस्तावित निगम के संचालन के लिए विधेयक में दो तरह की व्यवस्था है एक—बोर्ड ऑव गवर्नर्स और दूसरा—ब्रॉडकास्टिंग कौंसिल । इन दोनों में कुछ पूरे समय के और कुछ अल्पकालीन पद हैं ।

यह तो ठीक है कि पुरानी सरकार ने दूरदर्शन और आकाशवाणी पर पूरा कब्जा कर रखा था और मनमानी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी । इसके कारण इसकी विश्वसनीयता ही समाप्त हो गयी थी, नयी सरकार ने विश्वसनीयता बनाने का कदम उठाया है, इसलिए हम पूरी तरह उसका समर्थन करते हैं । हमारा आग्रह यह है कि विधेयक को अंतिम रूप देने के पहले जिन मूल प्रश्नों पर विचार किया जाए वे हों—

१. दोनों ही मनोरंजन के साधन हैं ।
२. दोनों ही विश्वसनीय सूचना के केंद्र हैं ।
३. दोनों में ही मौलिक और सृजनशील व्यक्तियों और कार्यक्रमों की जरूरत है ।
४. दोनों माध्यम भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्रतिबिंब हैं ।
५. दोनों ही माध्यमों का सीधा संबंध जनता के साथ है ।

हम आशा करते हैं कि प्रस्तावित विधेयक को समझदारी के साथ और सभी वर्गों के साथ चर्चा करने के बाद अंतिम रूप दिया जाएगा ताकि नयी सरकार कह सके कि इस विषय में वह पूरी तरह निष्पक्ष है । जो भ्रष्टाचार व्याप्त है, उसे पूरी तरह समाप्त करने की दृढ़ इच्छा सरकार के पास होनी चाहिए । इन अनेक मुद्दों पर विचार करने के लिए हम स्वयं 'कादम्बिनी' की ओर से विशेष संवाद का आयोजन करेंगे और उससे सरकार को अवगत कराएंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैमुअल बैकेट

अस्तित्व की व्यथा को झेलता एक व्यक्तित्व

● पैमिला मानसी

अपने अंतिम चरण में वर्ष १९८९ एक महान साहित्यकार को विश्व से छीन कर ले गया है। २२ दिसम्बर १९८९ को सैमुअल बैकेट का पेरिस में देहांत हो गया-८३ वर्ष की आयु में, वृद्धावस्था तथा फेफड़ों में तकलीफ के कारण।

बैकेट अपने-आपमें एक संस्था थे, संसार भर में बुद्धिजीवियों और साहित्य प्रेमियों की श्रद्धा के पात्र। जितने ही वे प्रसिद्ध और लोकप्रिय थे, उतने ही किसी भी प्रकार के प्रचार से भागनेवाले तथा अपने में बंद रहनेवाले व्यक्ति। यह अपने में एक विरोधाभास प्रतीत हो सकता है परंतु बैकेट के संदर्भ में पूर्ण सत्य है।

सैमुअल बैकेट ने एक पूरी पीढ़ी की व्यथा को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया, व्यथा-जो मानवीय जीवन की निरर्थकता से उपजती है।

बैकेट का जन्म १३ अप्रैल १९०६ को आयरलैंड में हुआ। वहीं पर उन्होंने शिक्षा पायी। वर्ष १९२८ में उनके विश्वविद्यालय ने उन्हें विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में दो वर्ष के लिए फ्रांस भेजा और यहीं से आरंभ हुआ उनका फ्रांस के साथ लंबे संबंध का सिलसिला। वे लगभग आजीवन फ्रांस में रहे हालांकि बीच-बीच में अपने देश आयरलैंड भी लौटते रहे। अपनी पहली कविता उन्होंने पेरिस में ही लिखी, जिस पर उनको दस पौंड का पुरस्कार भी मिला। उनकी रचनाएं उन्होंने मातृभाषा में न होकर फ्रैंच में ही हैं।

सबसे अधिक ख्याति मिली उन्हें नाटककार के रूप में। नाटक के क्षेत्र में उन्होंने उ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैमुअल बैकेट के अनुसार—
मनुष्य की स्थिति उस यात्री की सी है, जो रेलवे प्लेटफार्म पर खड़ा एक ऐसी गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा है, जो कभी नहीं आती ।

चलित यथार्थवादी थियेटर की समस्त
ान्यताओं को न केवल नकारा, बल्कि अपने
ाटकों के सफल मंचन से झुठला भी दिया ।
उनका सबसे अधिक प्रसिद्ध व चर्चित
टक 'वेटिंग फॉर गोडो' १९५२ में प्रकाशित
आ । १९५३ में फ्रांस में उसका मंचन हुआ
सके प्रति दर्शकों ने अप्रत्याशित उत्साह
खाया और वे एक अग्रिम नाटककार के रूप
प्रतिष्ठित हुए । १९६१ में उन्हें 'इंटरनेशनल
ेशर्स' पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।
७० उनके जीवन का एक अविस्मरणीय वर्ष
होगा । इस वर्ष उन्हें 'वेटिंग फॉर गोडो' के
ए साहित्य के क्षेत्र में अंतिम उपलब्धि नोबेल
कार के लिए चुना गया ।
चूंकि बैकेट सदा अपने में बंद रहते थे,
कम लोगों से घनिष्ठता थी उनकी और
ने जीवन के विषय में कभी खुलकर बात
करते थे वे, इसलिए प्रायः एक प्रश्न
रहकर उनके प्रशंसकों, आलोचकों को
टता है । इतने उत्कृष्ट साहित्यकार ने अपनी
ओं में केवल जीवन के एक ही पहलू को
ार क्यों किया ? उन्हें जीवन क्यों केवल
वीरान, उजड़ा हुआ, निरर्थक, उदास तथा निराशा से भरा हुआ ही नजर आया ?

बैकेट, अपनी हर कृति में मूलतः अस्तित्ववादी समस्याओं में ही उलझे रहे । इसके लिए उनका अपना व्यक्तित्व भी उतना ही उत्तरदायी रहा जितना उनका परिवेश और देश-काल । उस समय पराधीन आयरलैंड का प्रत्येक लेखक, विचारक एक ही प्रश्न से त्रस्त था, 'मैं कौन हूं' तथा अपने स्तर पर उसका समाधान खोज रहा था । यही नियति उस समय बैकेट की भी थी । दूसरे, वे अपने मध्यवर्गीय परिवेश की घुटन को भी झेल रहे थे ।

एक अन्य घटना का गहरा प्रभाव बैकेट पर पड़ा । ३६ वर्ष की आयु में एक अपराधी ने केवल पैसा छीनने के उद्देश्य से उन पर चाकू से वार कर दिया जिससे उनके एक फेफड़े में गहरी चोट आयी । उस समय की पियानो वादक सुजेन इ्यूमेनिल उस समय वहां से गुजर रही थी । उन्हें घायल देख कर वह तुरंत उन्हें अस्पताल ले गयी । सुजेन से उनकी घनिष्ठ मित्रता हो गयी और बाद में दोनों ने छिपकर विवाह भी कर लिया ।

री, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी पीढ़ी के प्रत्येक संवेदनशील व्यक्ति की तरह द्वितीय विश्वयुद्ध ने भी उनके मन-मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ी । यहां तक कि वे जरमनी के विरुद्ध कार्य करनेवाले एक गिरोह के सदस्य बन गये । नाजिओं को इसकी सूचना भी मिल गयी परंतु इससे पहले कि उनके घर पर नाजी छापा डालते, बैकेट बचकर भाग गये । दो वर्ष अज्ञातवास में रह कर किसी फार्म पर मजदूरी करते रहे । अज्ञातवास में उनकी साहित्य साधना भी साथ-साथ चलती रही और उन्होंने अपने नाटक 'वॉट' की रचना इसी समय की ।

सैमुअल बैकेट ने एक पूरी पीढ़ी की व्यथा को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है—व्यथा जो मानवीय जीवन की निरर्थकता से उपजती है । 'वेटिंग फॉर गोडो' में एक [illegible] पर एक चरित्र कहता है, 'यहां न कोई [illegible] न कोई जाता है । यह एक भयंकर स्थिति 'यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी बैकेट के अनुसार विश्व में मनुष्य की स्थि प्रकार से उस यात्री की-सी है जो रेलवे प्लेटफार्म पर खड़ा एक ऐसी गाड़ी की [illegible] कर रहा है जो कभी नहीं आती । और मानवीय स्थिति की यह व्याख्या सूक्ष्म संवेदनाओंवाले उन सब लोगों के संदर्भ भी है जिनकी चेतना का तो लगातार वि रहा है परंतु जिनके चारों ओर मानवीय संवेदनाओं और मूल्यों का निरंतर ध्वंस में बैकेट—जैसे व्यक्ति के अंदर घोर जन्म ले सकती थी ।

हमारा एक और उपहार

जून अंक—अवकाश अंक

कहानी विशेषांक

भारतीय भाषाओं की चुनी हुई कहानियों का अनूठा संकलन—अवकाश के महीने में उपहार—रूप

कादम्बिनी

अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता

विस्तृत घोषणा, नियमावली आदि अगले अंक में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयी जनतंत्र : ढह रहा साम्यवाद

● राधानाथ चतुर्वेदी

अकसर ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों के बारे में यही राय दी जाती है, और जो सच भी है कि वे ८० प्रतिशत से अधिक मामलों में खरी नहीं उतरतीं और बाकी जो सही होती हैं, वे तीर नहीं तुक्का ज्यादा होती हैं । पर 'भविष्य-वक्ताओं के राजा' फ्रांस में यहूदी परिवार में जन्मे नास्ट्रेडम के विषय में उपर्युक्त कथन विपरीत अर्थों में सत्य है । चार सौ वर्षों पूर्व की गयी उसकी ८० प्रतिशत से अधिक भविष्यवाणियां सत्य के निकष पर खरी उतरी हैं—बाकी २० प्रतिशत की सत्यता की परीक्षा का अभी समय नहीं आया । नास्ट्रेडम ने किसी

लिखते समय झड़कर गिरनेवाली सबसे नवीन पत्ती रूमानिया की है । स्टालिनवाद के इस सुदृढ़तम गढ़ को इस्पाती शिकंजे में चौबीस साल से कसे रखनेवाले अधिनायक चाऊशेस्कू का तख्ता पलटने में प्रजातंत्रवादी तत्वों को चौबीस घंटे का भी समय नहीं लगा । सोवियत संघ ने किसी भी प्रकार की सैनिक सहायता देने से साफ इनकार कर दिया । भयंकर रक्तस्नान के बाद रूमानिया में लोकतंत्र का पौधा लहलहा गया । नयी प्रजातांत्रिक सत्ता ने पैर जमा लिये हैं । कुछ ही दिन पूर्व तक चाऊशेस्कू को रूमानिया का प्रकाशस्तंभ माना जाता था और

गह कहा है कि सन १९९० में साम्यवाद का
ात्मा हो जाएगा ।

साम्यवाद के इस पतझड़ में इन पंक्तियों को

कहा जाता था कि पूर्व यूरोप में प्रजातंत्र की जो आंधी चल रही है, वह रूमानिया का कुछ नहीं बिगाड़ पाएगी । 'नायकों के नायक'

पूर्वी यूरोप और स्वयं सोवियत संघ में जिस तरह साम्यवाद का किला ढह रहा है— वह इस बात का ज्वलंत प्रमाण है कि इनसान रोटी, कपड़ा और मकान के सहारे नहीं जीता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाउसेस्कयू, पोलैंड के नेता जारूजेलस्की, हंगरी के ग्रॉज, पूर्व जरमनी के होनेकर, चेकोस्लोवाकिया के ह्युसाक और बलगेरिया के जिकोव—जैसे कटे वृक्ष की तरह गिरकर धूल-धूसरित हो गये । श्री इलेस्कयू के नेतृत्व में रूमानिया में अंतरिम सरकार बन गयी है । अप्रैल में चुनाव किये जाने की घोषणा कर दी गयी है ।

दूसरे महायुद्ध के अंतिम दौर में जब लाल सेना ने स्टालिन के नेतृत्व में पूर्व यूरोप में साम्यवाद की स्थापना को सोवियत संघ की सुरक्षा का सबसे प्रभावशाली उपकरण मान उसको प्रतिष्ठापित किया तब सारे मानव-अधिकार और उनकी समस्त कल्पनाओं को दफना देना पड़ा । लेकिन मिथिक पक्षी फीनिक्स की तरह लोकतंत्र ऐसा लगता है कि जला दिये जाने के बाद उसकी राख से फि खड़ा हुआ । पोलैंड में अधिनायकवादी साम्यवाद को समाप्त करने में दस वर्ष ल हंगरी में दस महीने, पूर्व जरमनी में दस तथा चेकोस्लोवाकिया में दस दिन ।

पोलैंड में 'सालिडेरिटी' के नेता वाल मजदूरों की ओर से झंडा उठाया । शारी यातनाओं और मानसिक यंत्रणाओं के लोमहर्षक दौर से गुजरने के बाद आज उनके ही सहयोगी ताद्यूज माजोविकी प्रधानमंत्री के रूप में शासन की बागडो पोलैंड की आर्थिक और राजनीतिक स से जूझ रहे हैं । वारसासंधि-देशों के की वचनबद्धता के साथ श्री माजोविकी विश्वशांति की रक्षा के लिए अपनी प्रि की है ।

पर्चों से नाम निकाला गोली मारनेवाले का

रूमानिया के अपदस्थ राष्ट्रपति चाऊशेस्कू से लोग नफरत करते थे । उनकी मृत्यु के बाद पूरे रूमानिया में खुशी की लहर दौड़ गयी ।

उन्हें मारने के लिए भी लोग उतावले थे । इतने लोग उन्हें मारना चाहते थे कि उन्हें कौन मारे, इसलिए पर्ची डालकर लाटरी निकालनी पड़ी ।

रूमानिया के टेलीविजन पर चाऊशेस्कू और उनकी पत्नी ऐलेना को गोली से उड़ाये जाने से पहले के मुकदमे को प्रसारित किया गया ।

फिल्म में गोलियों से छलनी चाऊशेस्कू दंपत्ति के शवों को भी दिखाया गया है । दोनों के शव दीवार के सहारे लुढ़के पड़े हैं

क्लोजअप में भी चाऊशेस्कू का दिखाया गया है । उनकी आंख खुल और चेहरे के दाहिनी ओर खून बह उन्हें गोली मारने का दृश्य नहीं है । बताया गया है कि गोली कहां मारी

सुनवाई के दौरान वे अपने पक्ष रहे । सत्ता के दुरुपयोग के प्रश्न को गलत बताया ।

हालांकि दोनों थके-थके लग रहे वर्ष के शासन में ६० हजार लोगों की आरोप में दोनों ने बार-बार कहा : हम संसद में और जनता को ही देंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रूर दीवार का खेल

पोलैंड के साथ या उसके भी कुछ पहले से पूर्व जरमनी की व्यथा-कथा का श्रीगणेश होता है। बर्लिन की क्रूर दीवार ने अनगिनत परिवारों को अलग कर उन्हें बिछोह के अथाह सागर में डुबो दिया था। इसे भुलाकर पूर्व जरमनी के लोगों ने अथक परिश्रम किया। लेकिन असंतोष के ज्वार ने उन्हें आवृत्त कर दिया। इसके तीन कारण थे। पहला था कि इतने त्याग, इतनी तपस्या के बावजूद वे जीवन-यापन का वह स्तर नहीं पा सके जो पश्चिम में था। यह सच है कि पूर्वी-यूरोप के अन्य साम्यवादी देशों की तुलना में पूर्व जरमनी की आर्थिक और सामाजिक उपलब्धियां सबसे अधिक थीं, लेकिन वहां का नागरिक यह समझने लगा था कि वह उन ऊंचाइयों को स्पर्श करने में असमर्थ है जो पश्चिम ने प्राप्त कर ली हैं। दूसरा कारण सोवियत नेता श्री गोर्बाच्योव की नीति थी। पूर्व जरमनी नेता श्री होनेकर श्री गोर्बाच्योव की नयी आर्थिक और राजनीतिक नीतियों का विरोध कर रहे थे। श्री गोर्बाच्योव की नवीन चेष्टाओं ने पूर्व जरमनी में वहां के नेताओं के प्रति भारी असंतोष व्यक्त करने का अवसर दिया। तीसरा कारण यह था कि सितम्बर में हंगरी ने अपने पश्चिमी दरवाजे खोल उन हजारों पूर्व जरमन नागरिकों को पश्चिम जरमनी जाने का अवसर दिया जो वहां अटके हुए थे। परिणामतः, श्री होनेकर को पार्टी से निष्कासित कर दिया गया। उन पर मुकदमा चलाने का संवैधानिक मार्ग प्रशस्त कर दिया गया। संविधान में संशोधन

बीच-बीच में एलेना ने बोलना चाहा। लेकिन श्री चाऊशेस्कू ने उन्हें रोक दिया। श्रीमती एलेना ने भी अड़ियल रुख अपनाया। उन्होंने सारे आरोप ठुकरा दिए।

उनसे पूछा गया कि स्विस बैंकों में आपका कैसा है ? इसके जवाब में एलेना ने कहा : साबित करो। तुम सब झूठ बोल रहे हो और मुझे उकसाने के लिए ऐसे आरोप लगा रहे हो।

अभियोग पक्ष जब उनके शासनकाल की 'काली करतूतों' को पढ़कर सुना रहा था तो कई बार चाऊशेस्कू ने अपनी चुप्पी तोड़ी। कई बार वे तेज आवाज में चिल्लाये भी, जैसा कि अक्सर अपने जोशीले भाषणों में किया करते थे।

एक बार वह बोले : यहां जो भी कहा गया, वह झूठ है और मैं ऐसे में अब कुछ भी नहीं बोलूंगा। यह तख्ता पलट क्रांति है और मैं आपको सवालों के जवाब नहीं दूंगा।

दंपत्ति के खिलाफ जब जनसंहार करने, विदेशी बैंकों में सोलह अरब रुपयों से ज्यादा रकम जमा करने, देश की अर्थव्यवस्था चौपट करने, देश के ऐतिहासिक स्मारकों को नष्ट करने और देश को तबाही की ओर ले जाने के आरोप लगाये जा रहे थे और सजा सुनायी जा रही थी तो वे निर्विकार भाव से बैठे रहे।

श्री चाऊशेस्कू ने इन सवालों का जवाब भी नहीं दिया कि गत १७ दिसम्बर को तिमिश्यारा में निहत्थे लोगों पर गोली चलाने का किसने आदेश दिया।

श्री चाऊशेस्कू की १८ से २० दिसम्बर की ईरान यात्रा के दौरान श्रीमती एलेना ही राजकाज संभाल रही थी। (एपी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर कम्युनिस्ट पार्टी के प्रभुत्व को विदाई दे दी गयी और सुधारवादी वकील श्री ग्रेगर जोसो को नया नेता चुन लिया गया । उन्होंने ऐलान किया कि पूर्वजरमनी विफल स्टालिनवाद से अपने सारे संबंध तोड़ रहा है । साथ ही पूर्व जरमनी की संसद 'वोल्कस कैमर' के पांच सौ में से दो तिहाई सदस्यों ने संविधान में संशोधन कर घोषणा की कि "जरमन लोकतांत्रिक गणतंत्र मजदूरों और किसानों का राज्य है । वह नगरों और गांवों में रहनेवाले श्रमजीवियों का राजनीतिक संगठन है ।" इसमें कम्युनिस्ट पार्टी के समस्त संदर्भों को काट दिया गया है । पिछला पोलित ब्यूरो भी भंग कर दिया गया ।

यों राजनीतिक रूप से स्वतंत्र होने के बाद पूर्व जरमनी के सामने दूसरा प्रश्न पूर्व और पश्चिम जरमनी के एकीकरण का है । पश्चिम-जरमनी इस संबंध में बड़ा उत्सुक है । उसकी कोहल योजना इसका संकेत है । लेकिन पूर्व जरमनी और सोवियत-संघ तथा अमरीका बहुत उत्साही नहीं हैं । उनका कहना है कि यदि जरमन भाषी आस्ट्रिया अलग स्वतंत्र राज्य हो सकता है तो पूर्व जरमनी क्यों नहीं स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपना अस्तित्व बनाये रख सकता ।

लोकतंत्र के उतार-चढ़ाव

चेकोस्लोवाकिया का लोकतंत्र की दिशा में प्रगति का इतिहास बहुत उतार-चढ़ावों से भरा है । प्रथम महायुद्ध के दौरान १९१८ में आस्ट्रियाई-हंगरी साम्राज्य के पतन के बाद चेकोस्लोवाकिया ने अपने आपको स्वतंत्र घोषित कर दिया । मैसेरिक राष्ट्रपति बने । बीस वर्ष बाद १९३८ में सुडेटनलैंड नाजी जरमनी में शामिल हो गया । हिटलर ने मैसेरिक को खत्म कर दिया । सन १९४५ में लालसेना ने पहुंचकर चेकोस्लोवाकिया की पुरानी सीम पुनर्स्थापित कीं । अगले वर्ष १९४६ में कम्युनिस्टों का प्राबल्य बढ़ा । १९४८ में गैरकम्युनिस्ट मंत्री सरकार से हट गये । १९६० में सोवियत शैली का गणतंत्र घो हुआ लेकिन आठ वर्ष बाद दुबचेक सत्ता आये । उन्होंने मानवतावादी समाजवाद ऐलान किया । यह जनवरी में हुआ और अगस्त, १९६८ को वारसासंधि-देशों की सेनाओं ने हमला कर दिया और चेकोस्लोवाकिया की दुबचेक सरकार को दिया । उन्हें सत्ता श्री गुस्ताव हुसाक को पड़ी । इसके बाद नवम्बर, १९८९ में फिर करवट ली । प्रदर्शन शुरू हुए । विदेशी नागरिकों को भी विरोध रजिस्टर हस्ताक्षर करने का अवसर दिया गया । प्रजातंत्र समर्थक प्रदर्शनकारियों के सा राजनीतिक जागरूकता चेकोस्लोवाकिय प्राचीन विशेषता है । प्राग में टैक्सी ड्राइ बात करें तो वह भी चैंबरलैन और चर्चि बीच का अंतर बतला देगा । श्री चैंबर द्वितीय महायुद्ध के पूर्व ब्रिटिश प्रधानम वे १९३८ में म्यूनिख में हिटलर से मि सुडेटनलैंड नाजी जरमनी को देने पर गये थे । लेकिन श्री विंस्टन चर्चिल ने जरमनी को हटाने में सक्रिय सहयोग दिया—पूरा युद्ध लड़ा ।

दस दिसंबर, १९८९ को कम्युनि की समाप्ति के साथ प्रजातंत्र फिर आ श्री काल्फा के नेतृत्व में नयी सरकार श्री दुबचेक पुनर्स्थापित हो गये । श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेवल नये लोकतंत्री नेता के रूप में उभरे हैं । वे साहित्यकार और नाटककार हैं । श्री गीरी डींस्टबियर नयी सरकार में विदेशमंत्री हैं—जो पत्रकार हैं और टेलीविजन में कार्य करते थे । उन्हें पहले पार्टी से निष्कासित कर दिया था क्योंकि उन्होंने कम्युनिस्ट अधिनायक तंत्र का विरोध किया था । नयी सरकार ने पहला काम यह किया है कि कम्युनिस्टों द्वारा जो अर्धसैनिक बल सेना आदि में स्थापित किये थे उसे भंग कर दिया है । 'सिविक फोरम' नये नेतृत्व का मुख्य संगठन है ।

हंगरी ने पहले और बलगेरिया ने बाद में साम्यवादी प्रभुत्ववाली पार्टियों को उखाड़ फेंका है ।

अगस्त, १९६८ में चेकोस्लोवाकिया पर पोलैंड, पूर्व जरमनी आदि वारसासंधि-देशों ने जो आक्रमण किया था उसके लिए हाल में मास्को में हुई बैठक में खेद व्यक्त किया गया और कई आक्रामक देश चेकोस्लोवाकिया से विधिवत क्षमायाचना की तैयारी कर रहे हैं । इस संबंध में श्री गोर्बाच्योव की भूमिका ऐतिहासिक है । वे श्री ब्रेजनेव के बाद से या शायद उनके समय से यह अनुभव कर रहे थे कि कोई भी व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों का छोटा-सा समूह समग्र देश के चिंतन और उसकी सक्रियता का स्थान नहीं ले सकता । इस संदर्भ में छोटी-सी घटना की चर्चा अप्रासंगिक न होगी ।

साहित्यकारों से गोर्बाच्योव प्रभावित

चार वर्ष पूर्व कुछ भारतीय साहित्यकारों का एक प्रतिनिधिमंडल मास्को में था । श्री राजेन्द्र अवस्थी भी उसमें थे । अवस्थीजी मास्को और सोवियत देश के लिए नये नहीं हैं । बहुत बार गये हैं । इस यात्रा में उनकी भेंट गोर्बाच्योव से हुई । उन्हें बातचीत के लिये चाय पर निमंत्रित किया था । मिलने पर औपचारिक वार्तालाप के बाद गोर्बाच्योव ने श्री अवस्थी से पूछा—"क्या अमरीकी होना खराब है ?" अवस्थीजी प्रश्न का उत्तर टाल जाना चाहते थे, लेकिन गोर्बाच्योव के आग्रह पर उन्होंने कहा—"जब तक इरादे साम्राज्यवादी न हों, अमरीकी होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खराब नहीं है ।" इस उत्तर पर गोर्बाच्योव उछल पड़े । उन्होंने कहा "यही ठीक बात है ।" इसके बाद बातचीत और भी घनिष्ठतापूर्ण वातावरण में हुई । संभवतः तभी से गोर्बाच्योव देश और विदेश के अनेक बुद्धिजीवियों से मिलकर, एक नयी भूमिका बना रहे थे । वही बाद में 'ग्लास्नास्ट' और 'पैरोरोइका' के रूप में सामने आयी ।

स्टालिन, ख्रुश्चेव, ब्रेजनेव आदि के कठोर शासन के बाद गोर्बाच्योव ने जनता की नब्ज पर हाथ रख कर महसूस किया कि अब पुराने समय की जकड़बंदी नहीं चलेगी । उसके आधार पर प्रगति और विकास भी संभव नहीं है । खुलकर मत व्यक्त करने (ग्लासनास्ट) के अधिकार और आर्थिक पुनर्रचना (पैरोरोइका) की कल्पना के पीछे यही कारण था ।

गोर्बाच्योव ने मिलने-जुलने और विचार-मंथन के बाद महसूस कर लिया कि रूढ़िवादी प्रतिबंध, लिखने-बोलने की आजादी पर रोक की बातें अब लोग गले के नीचे उतारने को प्रस्तुत नहीं हैं । नोबुल पुरस्कार विजेता रूसी वैज्ञानिक सखारोव को स्वदेश वापस लाने और उन्हें सभी प्रतिबंधों से मुक्त करने के पीछे भी यही विचार था । दुःख की बात है कि सखारोव गोर्बाच्योव को नैतिक समर्थन देने के लिये हम सब के बीच और अधिक दिनों तक नहीं रहे । दिसम्बर, १९८९ में उनका देहांत हो गया ।

३-४ दिसंबर को माल्टा के पास अमरीकी राष्ट्रपति श्री बुश और श्री गोर्बाच्योव की बैठक में सोवियत नेता की नीति की सराहना की गयी । व्यापारिक प्रतिबंधों को ढीला करने पर भी विचार करने का अमरीका ने आश्वासन दिया । उधर श्री गोर्बाच्योव की सोवियत कम्यूनिस्ट पार्टी की सर्वोच्च परिषद में कुछ कठोर नीति समर्थकों ने जब श्री गोर्बाच्योव आलोचना की तो उन्होंने कह दिया कि वे पार्टी-पद से त्यागपत्र देने को प्रस्तुत हैं लेकि शीघ्र ही उनके विरोधी पीछे हट गये और उन्होंने, खबर है, माफी मांग ली । 'टाइम' पत्रिका ने तो श्री गोर्बाच्योव को इस दशक सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति माना है ।

साम्यवाद के शिविर पर हमला

पूर्व यूरोप में जो कुछ हुआ है उसने साम्यवादी शिविर की अनेक परिकल्पनाओं आदर्शों को उखाड़ फेंका है । सर्वहारा वर्ग अधिनायक तंत्र, विमति या असहमति के असहिष्णुता, एकदलीय शासन, सत्ता पर साम्यवादियों का एकाधिकार, केंद्रीकृत ढांचा, जकड़ी नियोजित अर्थव्यवस्था, नौकरशाही की आज्ञाओं, हुकुमों और फ का परिपालन करने की व्यवस्था, प्रभाव हाट-बाजारी और मंडियों का अभाव, उ को आवश्यक वस्तुओं के चयन करने के अधिकार का अभाव, आर्थिक जड़ता, सामूहिक कृषि व्यवस्था में खेती का चौप होना, व्यक्तिगत पहल का सर्वथा अभाव सारे कारण हैं जिन्होंने पूरी सोवियत व्यव और उसके नेतृत्व वाले पूर्वी यूरोप के ढां ढहा दिया है ।

कुछ राजनीतिज्ञों का मत है कि श्री गोर्बाच्योव ने जो प्रक्रिया शुरू की है उस भविष्य अनिश्चिता के कुहासे में लिपटा हु लेकिन शायद यह कहना अविवादास्पद कि नये चिंतन और नयी हवाओं ने यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आंधी या तूफान कुछ लोग समझ रहे हैं कि वे करें'—नये दरवाजे और खिड़कियों को खोल दिया है। शायद इनके जरिए पूर्व और पश्चिम निकट आयें—वामपंथी फूट में कमी हो और विश्व एकीकरण को बढ़ावा मिले। पूर्वी यूरोप और स्वयं सोवियत-संघ में जिस तरह साम्यवाद का किला ढह रहा है—लोकतंत्र विजय प्राप्त कर उभर रहा है—वह इस बात का ज्वलंत प्रमाण है कि इनसान रोटी, कपड़ा और मकान के सहारे ही नहीं जीता। जीवन धारण करने, तन और मन को एक रखने के लिये ये चीजें एक हद तक आवश्यक हैं, लेकिन इनसे भी जरूरी एक और चीज है—वह आत्माभिव्यक्ति की स्वतंत्रता-आध्यात्मिक चिंतन की आजादी-जिसके अधीन समस्त भौतिक-व्यवस्था आती है। यही कुंजी है—कालजयी लोकतंत्र की और ढहते साम्यवाद की पहेली को समझने की। अब चीन को छोड़कर साम्यवाद हर देश से लगभग विदा ले चुका है। चीन अधिक दिनों तक अपने लौह दरवाजे बंद नहीं रख सकता। चाहे स्वेच्छा से हो अथवा संहार से, चीन में परिवर्तन का समय दूर नहीं है और वहां भी साम्यवाद ढहकर रहेगा।

फ्लैट नं. ८, मैत्री अपार्टमेंट्स
ए-३, पश्चिम विहार नयी दिल्ली-११००६३

ज्ञान गंगा

तमेव विषयं प्राप्य सुख-दुःखे ततो नृणाम्।
मनोऽवस्थितिभेदेन जायेते इति दृश्यते॥
अत एवाभियुक्तानां मतमेतन्मनीषिणाम।
आत्मायत्तं मनो यस्य स एव सुखमश्नुते॥

(रश्मि-माला १३/२/३)

मन ही सुख का कारण है। इसीलिए ऐसा देखा जाता है कि एक ही विषय को पाकर मन की अवस्था के भेद से मनुष्यों को सुख और दुःख हुआ करते हैं। मन की अवस्था के भेद से एक ही वस्तु हमारे लिए कभी सुखद और कभी दुःखद हो जाती है। विचारशील विद्वानों का यह मत है कि वही मनुष्य सुख को पाता है जिसने अपने मन को अधिकार में कर रखा है।

तस्करस्य वधो दण्डः
कुमित्रस्यात्पभाषणम्।

(वृहस्पति नीतिसार २/३०)

तस्कर का वध दंड है और कुमित्र का वध उसके साथ अल्प भाषण करना है।

अन्तः सारविहीनानामुपदेशो न जायते।

(चाणक्य-नीति)

जिन लोगों के भीतर कुछ समझने की शक्ति नहीं, उनके लिए उपदेश नहीं होता।

यदा वै श्रियोऽन्तं गच्छत्यथ पापीयान् भवति।

(मैत्रायणी संहिता २/२/९)

जब मनुष्य के धन का अंत हो जाता है तो वह पापी हो जाता है।

वयं स्याम पतयो रयीणाम्।

(ऋग्वेद १०/१२१/१०)

हम सब धन (ऐश्वर्य) के स्वामी हों, दास नहीं।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैताल सुनो-२०

चाणक्य नगरी में जिसकी इज्जत बच जाए, बहुत है !

● सेवकराम ओखाडू

राजा विक्रम बहुत सुबह उठ गये । खासी ठंड थी और सामने के बाग को कुहरा ढके हुए था । बैताल तब भी खरटि भर रहा था । विक्रम ने बैताल को उठाया नहीं । वह अकेले कुहरे से घिरे बाग में पहुंच गये । ऐसी ठंड का अपना मजा होता है । अकेले होने का भी मजा है । तब सारी चीजें साफ दिखती हैं और दिमाग बारीकी से उन्हें देख सकता है ।

राजा विक्रम ने देखा बाग के कोने में एक स्त्री बिना कोई कपड़ा ओढ़े गठरी-सी बनी सो रही है । वे खड़े हो गये और ध्यान से देखने लगे । उन्हें दर्द हुआ । इस ठंड में बेचारी किस तरह पड़ी है । उन्हें तब बैताल की याद आयी । बैताल साथ होता तो उससे कहते कि पास जाकर देखो यह स्त्री यूं कैसे पड़ी है । राजा विक्रम स्वयं हाथ नहीं लगाना चाहते थे ।

अचानक क्या हुआ कि एक आवाज आयी । आवाज तेज हुई ... रा...जा ! रा...जा ! यह बैताल था । सोकर उठा होगा और राजा को न देखकर पागलों की तरह भागा होगा । बैताल जानता है, राजा विक्रम को बाग-बगीचों, फूल-पौधों का बहुत शौक है । घने कुहरे में उसने एक मानव आकृति देखी । अचानक वह राजा विक्रम के पास पहुंच गया । राजा विक्रम उसे देखकर मुसकराए, 'अरे, तू तो सो रहा था ?'

'हां, महाराज, नींद लग गयी, रात को नींद कम आयी थी !'

'ठीक है, तो यहां भाग कर क्यों आ गया ?' विक्रम की बात सुनकर बैताल ने कहा, 'महाराज, अचानक मेरी नींद खुली । मैंने आपकी खोज करने के प्रयत्न किये, आप कहीं नहीं थे । सो बस यूं ही तलाश में निकल पड़ा ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आपने ही तो कभी कहा था, चाणक्य नगरी में जिसकी इज्जत बच जाए, यही बहुत है । महाराज ! दिनभर सोएंगे हम, पुलसिया घंटे-दो-घंटे घेरा डालेगी और फिर आराम से लावारिस करार कर आगे का काम करेगी ।'

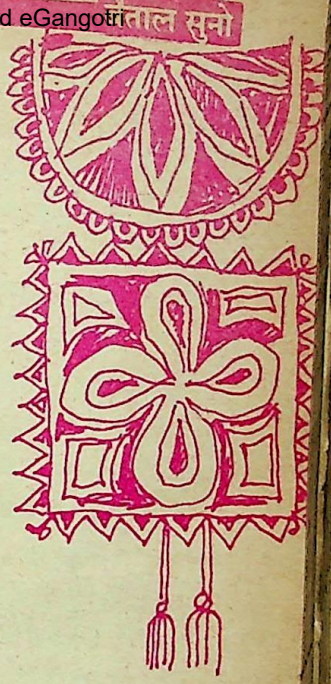

राजा विक्रम तब उस स्त्री के पास नहीं थे । कनेर के एक झाड़ के पास पत्थर की चट्टान पर वे खड़े थे ।

बैताल ने कहा, 'महाराज, यहां तो स्वर्ग-जैसा मौसम है । मीठी ठंड है और ओस-भरी घास कालीन-सी बिछी है । महाराज आपको याद है ?' यह कह कर बैताल ने एक कहानी शुरू कर दी—

हे राजा ! धर्मपुर नाम नगर में गोविन्द नाम का ब्राह्मण रहता था । उसके चार पुत्र थे और वे चारों ही बहुत बुद्धिमान गुणज्ञ थे । कुछ दिन बाद बड़ा बेटा मर गया । वह विप्र पुत्र-शोक में दुःखी हुआ तो प्रोहित उसे समझाने लगे कि महाराज मनुष्य जिस समय मां के गर्भ में रहता है और तब दुःख पाता है फिर जवानी में स्त्री के वियोग में रहता है और बुढ़ापे में शरीर निर्बल हो दुःख पाता है । इसलिए संसार में दुःख ही दुःख है चाहे कोई पर्वत के शिखर पर चला जाए पर काल वहां भी नहीं छोड़ता, महाराज! रामचंद्रजी तथा युधिष्ठिर ने ऐसा राज किया जिनका यश संसार में आज तक लोग गाते हैं परंतु उन्हें भी अंत में काल ने नहीं छोड़ा । इसलिए मोह न करो यह धर्म विचार करो ।

यह सुन विप्र ने अपने पुत्रों से कहा कि मैं यज्ञ करूंगा । तुम एक कछुआ ले आओ । तीनों पुत्र धींवर के घर गये और कछुआ लाने को कहा । धींवर ने कछुआ ला दिया तो पुत्र बोला मैं कुछआ को अपने हाथ पर रख कर नहीं ले चलूंगा, क्योंकि मैं भोजन क्रिया जानता हूं, मेरे हाथ में दुर्गंध हो जाएगी । दूसरा बोला मैं स्त्री की परख जानता हूं मैं भी नहीं ले चलूंगा । इसी तरह झगड़ते-झगड़ते तीनों राजा के यहां गये और राजा से सब हाल कहा । राजा बोला, परीक्षा हो ।

ये कहकर अपने रसोईए को बुलाकर अच्छे-अच्छे सुंदर पकवान बनवाकर थाल लगाकर उसके आगे धरा । उसने जो भोजन करने को ग्रास उठाया तो दुर्गंध मालूम दी और भोजन छोड़ आचमन कर राजा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास आया और बोला, 'महाराज, चावलों में मुरदे के जलने की-सी बू आती है '

यह बात सुन राजा ने भंडारी को बुलाया और पूछा कि चावल कहां के थे। जांच की गयी तो मालूम हुआ कि वह चावल श्मशान भूमि में पैदा हुए थे।

राजा बोला तुम भोजन परखने में बहुत चतुर हो ! फिर दूसरे को महल में सुंदर सेज पर एक स्त्री के पास भेजा। ज्योंही उस ब्राह्मण ने बात करना चाही त्योंही उसके मुंह से बास आयी। रातभर बैठा रहा और सुबह राजा के पास आकर बोला, 'महाराज ! उस स्त्री के मुंह से बकरी की-सी गंध आती थी।'

राजा ने कुटनी से पूछताछ की तो मालूम पड़ा कि वह बकरी का दूध पिला कर पाली गयी थी। फिर तीसरे को बुलाया और गद्दों पर सोने को भेजा। जब वह सुबह वापस आया तो कहने लगा महाराज ! रात बड़े कष्ट से काटी, क्योंकि उस बिस्तर की सातवीं तह में बाल खड़ा था। वह सारी रात बदन में चुभता रहा। राजा ने बिस्तर को खुलवा कर देखा तो उसकी बात ठीक निकली। फिर उस राजा ने तीनों लड़कों से कहा, 'तुम तीनों गुणी हो।'

यह कहकर उन तीनों को इनाम दिया। इतनी कथा कह बैताल बोला, 'राजा वीर विक्रमादित्य इन तीनों में कौन ज्यादा चतुर रहा ?' राजा ने कहा, 'गद्दे पर बाल परखनेवाला। राजा विक्रम ने बैताल को दाद दी और फिर कहा,

सुन मुझे अचानक याद आ रहा है। धर्मपुर नगर में हम दोनों यूं ही अचानक एक जंगल में गये थे। हमने देखा था कि 'जंगल में कुछ चोर घुस आये हैं। चोरों ने राजा को मार दिया और उसका धन लूट लिया। तब बेटी को साथ ले रानी रोती-पीटती रही और गुमसुम एक पेड़ के नीचे बैठ गयी।

तुझे याद है, उसी समय एक राजा अपने बेटे को साथ लेकर वन में शिकार के लिए आया था। वहां उसने मां और बेटी को बैठे देखा था। तब क्या हुआ, पता है ?'

राजा विक्रम एकाएक चुप हो गये। बैताल ने कहा, 'हां महाराज, याद है, वह राजा भी अजीब था, वह बेटी को उठा कर ले गया और मां को वहीं छोड़ गया। मां ने बहुत मिन्नतें की, पर उसने घोड़े पर वो एड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारी कि घोड़ा हवा हुआ ।

मां अकेली रोती रही । उससे उठा भी नहीं गया । रात वह वहीं लेट गयी ।'

'बैताल सुनो ! जो पीढ़ी एक शव को अब तक कांधे पर ढोती आयी है, मैं उनमें नहीं हूं और अब यह स्थिति नहीं चलने दूंगा ।'

राजा विक्रम ने रोका, 'यह तो ठीक, सुबह क्या हुआ ?'

'महाराज, सुबह नहीं, आधी रात को ही राजा ने अपना खास दरबारी भेजा और उस औरत को उठा ले गये । उसे रनिवास में घुड़साल के पास एक जगह रहने के लिए दे दी गयी ।'

'तो सुन' राजा विक्रम बोले, 'मेरे साथ आ ।'

राजा विक्रम ने पीठ ही फेरी थी कि सब-कुछ सामने था । विक्रम ने कहा, 'देख, गठरी-जैसी यह स्त्री कौन है ?'

'न, महाराज, मैं कैसे इस औरत को हाथ लगाऊं !'

'—आखिर क्यों ?'

बैताल, विक्रम के हुक्म को न माने यह कैसे होगा । डरते हुए वह बोला, 'महाराज, यह चाणक्य नगरी है । कुछ पता नहीं, कब क्या हो जाए !'

'क्या होगा ? मैं देख लूंगा । अरे, गरीबों की रक्षा करना हमारा धरम है ।'

बैताल बेबस आगे बढ़ा । तभी पीछे से कोई आवाज आयी । आवाज तो पैरों की ही थी । बैताल रुक गया । विक्रम और बैताल ने देखा, एक सिपहिया चौकीदार के साथ आ रहा है । दोनों पास आये ।

सिपहिया ने ललकारा, 'तुम दोनों कौन हो ?'

बैताल बोला, 'सुन सिपहिए, ठीक बात कर, समझदारी से बोल । हम कोई चोर-उचक्के नहीं हैं ।'

चौकीदार ने डंडा जमीन पर मारा । बोला, 'देख, ठीक उत्तर दे, जो सिपहिया पूछे सो बता ।'

राजा विक्रम जानते थे यह चाणक्य नगरी है । यहां कुछ भी हो सकता है । बैताल ठहरा धांसू । वह उस स्त्री के पास पहुंचा और उसने धक्के से उसे सीधा किया । फिर बोला, 'तू कौन है ?'

कोई आवाज नहीं !

अब क्या था, वहां सनसनी मच गयी । विक्रम, बैताल, चौकीदार और सिपहिया पास आये । डरते-डरते चौकीदार ने देखा और कहा, 'महाराज, यह तो ठंडी पड़ी है । लगता है मर गयी ।'

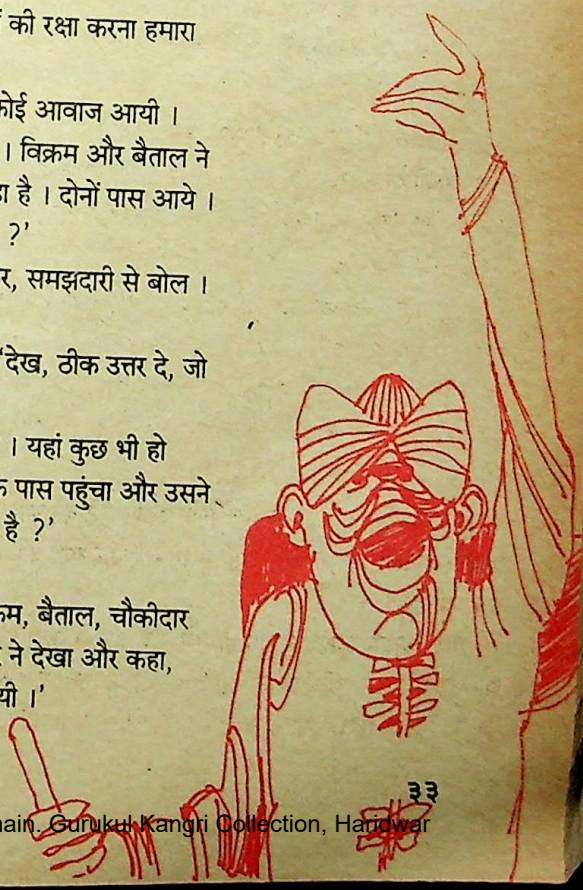

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्रम ने कहा, 'चाणक्य नगरी के राज्य में क्या ऐसे ही लोग आवारा ठंड से मर जाते हैं ।'

सिपहिया ने डांटा, 'चुप रहो, तुम दोनों ने इस स्त्री का खून किया है ।'

विक्रम की सांस टंगी रह गयी । खून ! चाणक्य नगरी में इतना अंधेर है !

विक्रम बोले, 'सिपहिया जी... ।' विक्रम ने बात पूरी नहीं की थी कि वह बोला, 'मुझे सिपहिया कहता है ? खून का खून किया, फिर चाणक्य नगरी को बदनाम करता है और सिपहिया कहता है ?'

चौकीदार ने कहा, 'इन्हें दारोगाजी कहो ।'

विक्रम, बैताल के पास आये । उन्होंने बैताल के कान में कुछ कहा । बैताल बोला, 'हां महाराज !'

इतना कहना था कि विक्रम और बैताल हाथ में हाथ डाले हवा में फरार ? सिपहिया और चौकीदार उनके पीछे भागे—'खून...खून...खून ! पकड़ो, पकड़ो, पकड़ो !'

कुहरा अब भी नहीं हटा था । सिपहिया भला क्या जाने, ये दोनों चाणक्य नगरी के तो हैं नहीं और साधारण आदमी नहीं हैं । दोनों यह गये, वह गये और सिपहिया सिर पीटता रहा !

आगे की कहानी साफ है—बैताल और विक्रम पास ही ठहरे थे । दोनों घर में घुस गये और दरवाजा बंद कर एक-दूसरे से लिपट गये ।

राजा विक्रम की सांस बढ़ गयी थी । फुसफुसाये, 'अजीब नगरी है यह !—चाणक्य नगरी के राजा से शिकायत करनी होगी । यहां के सिपहिया किसी को भी खूनी करार कर दें, जेल भेजें और फांसी पर चढ़ा दें ।'

बैताल फुसफुसाया, 'महाराज, उन्हें भी पता चल जाएगा, हम कहां के हैं । सिर पीटते रहेंगे खूनी का पता नहीं चलेगा ।'

विक्रम ने कहा, 'लेकिन वह स्त्री ?'

'भूल जाइए, महाराज' बैताल बोला ।

'आपने ही तो कभी कहा था, चाणक्य नगरी में जिसकी इज्जत बच जाए, यही बहुत है । महाराज, दिनभर सोएंगे हम, पुलसिया घंटे-दो-घंटे घेरा डालेगी और फिर आराम से लावारिस करार कर आगे का काम करेगी ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कागज का देश

● राधेश्याम

बड़े बाबू की नजर जैसे ही सत्यव्रत के आवेदन-पत्र पर पड़ी तो वे उछल पड़े। एक क्षण को लगा, वे खुशी से पागल हो जाएंगे। 'अब आएगा बच्चू को ईमानदार बनने का मजा', यह सोचकर उन्होंने फुरती से आवेदन-पत्र को उठाया और साहब के कमरे की ओर भागे। लेकिन साहब को कमरे में न पाकर अचानक ढीले पड़ गये। उनकी प्रसन्नता का पारा एकाएक नीचे उतर गया। उन्होंने साहब की खोज में इधर-उधर ताका-झांका। फिर वे वापस अपनी सीट पर आकर बैठ गये। आवेदन-पत्र को सामने मेज पर रखा और पेपरवेट से दबा दिया। उन्हें पान की तलब हुई।

उत्तेजना के मौकों पर उन्हें पान खाने की इच्छा होने लगती है। पान मंगवाने के लिए उन्होंने घंटी बजायी। आवेदन-पत्र को फिर से एक बार सरसरी तौर पर देखा। सत्यव्रत ने

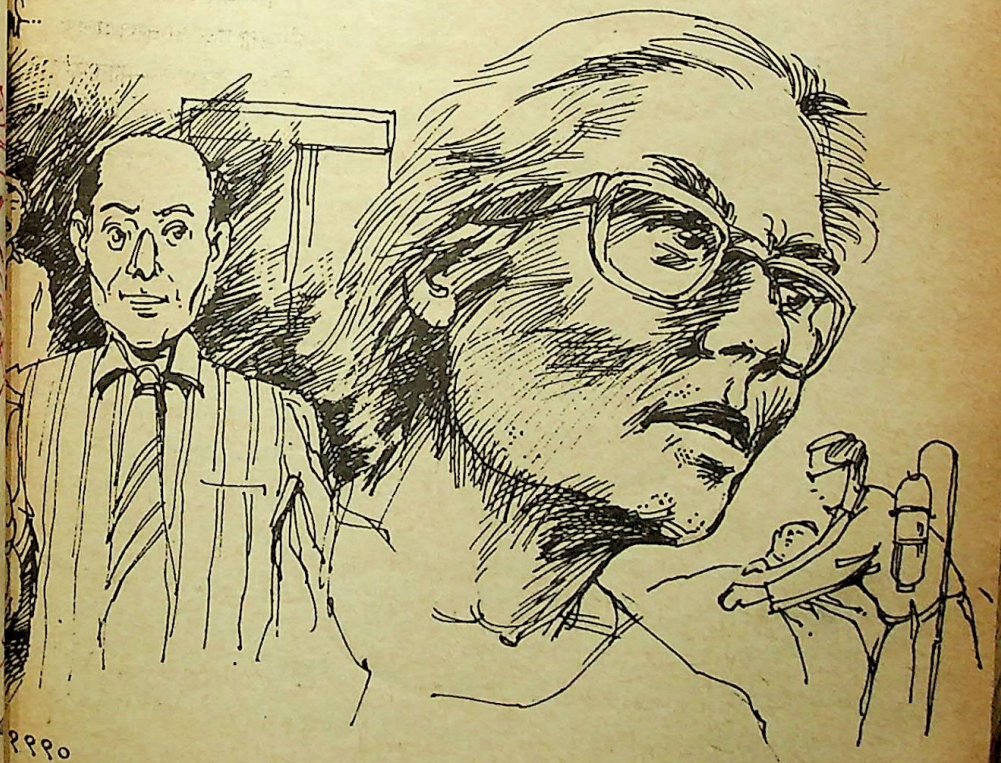

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमारी के इलाज के लिए पांच हजार रुपये का कर्ज मांगा था । आवेदन-पत्र पर लिखा एक-एक शब्द उन्हें झूठ प्रतीत हुआ । यदि सत्यव्रत सचमुच बीमार है, तो इसकी जांच मेडिकल बोर्ड द्वारा करायी जाएगी और तभी उसके आवेदन-पत्र पर विचार किया जाएगा । इस तरह से तो सभी सरकारी कर्मचारी बीमार होते रहते हैं । वे साहब के आते ही मेडिकल बोर्ड से सत्यव्रत की बीमारी की जांच का आदेश निर्गत करवा लेंगे । वे सत्यव्रत को दिखला देंगे कि 'बेटा अब देखो, सरकारी नौकरी और ईमानदारी में कितना फर्क है ।' कागज दुरुस्त है, तो सरकारी नौकरी सुरक्षित है । चाहे देश की तमाम योजनाएं खा जाओ, लेकिन कागज पक्का रखो । सी.बी.आई. का बाप भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता । बड़ा बाबू चोर है, तो कागज पर उसे पकड़कर दिखाओ । भाषण देने से कुछ नहीं होगा । यदि बड़ा बाबू कागज पर बेईमान नहीं है, तो हजारों सत्यव्रत कुत्ते की तरह भौंक-भौंककर पागल हो जाएंगे पर उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा ।

मानसिक रूप से बड़े बाबू सत्यव्रत से उलझ पड़े थे । उनके मस्तिष्क के अंदर सत्यव्रत से जुड़ी एक-एक घटना की प्रतिध्वनि जैसे जीवंत हो उठी थी । 'बड़े बाबू को बेईमान साबित करने के लिए सात जन्म लेना पड़ेगा,'. यह बात बड़े बाबू ने जैसे स्वयं से कही हो । पान की याद आयी तो पुनः घंटी बजाने लगे । घंटी की कर्कश आवाज देर तक होती रही, तब कहीं जाकर बड़े बाबू के चपरासी का ध्यान टूटा और वह लपककर उनके पास खड़ा हो गया ।

''तुम लोग कहां रहते हो भई ?'' बड़े बाबू ने उसे एक प्रश्न थमा दिया, फिर बोले, ''एक फाइल कवर ले आओ और इसके बाद पान ले आना ।'' चपरासी ने फौरन फाइल कवर लाकर दे दिया और पान लाने चल पड़ा । पान के पैसे मांगने का नतीजा जानता था । बड़े बाबू को फोकट में पान खाने की आदत हो गयी थी । जिस किसी चपरासी ने भूल से भी पान के पैसे मांग लिए, उसके बिलों के भुगतान का प्रतिशत बढ़ जाना निश्चित था ।

बड़े बाबू ने सत्यव्रत के आवेदन को फाइल से नत्थी कर दिया और वे साहब के आने का इंतजार करने लगे । मन में कई तरह की बातें उठने लगीं । सबसे पहले तो सत्यव्रत को तार भेजा जाना चाहिए कि वह फौरन छुट्टियां समाप्त करके नौकरी पर हाजिर हो जाए और यदि वह सचमुच बीमार है, तो उसे तत्काल मेडिकल बोर्ड के समक्ष जांच के लिए चला जाना चाहिए । बड़े बाबू ने बोर्ड के प्रमुख डॉक्टर के रूप में अपने समधी के एक रिश्तेदार का नाम भी सोच लिया ।

''सर, सत्यव्रत बाबू का आवेदन-पत्र आया था, मिल गया ?'' एक सहायक ने उनका ध्यान तोड़ते हुए पूछा ।

''हां, मिल गया,'' उन्होंने उत्तर दिया ।

''वे बहुत बीमार हैं सर, उनकी पत्नी ही आवेदन-पत्र लेकर आयी थीं ।''

''ठीक है, बहुत अच्छा किया, और कुछ ?'' बड़े बाबू की रुखाई देखकर वह सहायक चुप लगा गया और कमरे से बाहर गया । उसके जाते ही बड़े बाबू के चेहरे की कठोरता बढ़ गयी । साला सत्यव्रत घुटा आदमी है । सहानुभूति के लिए आवेदन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

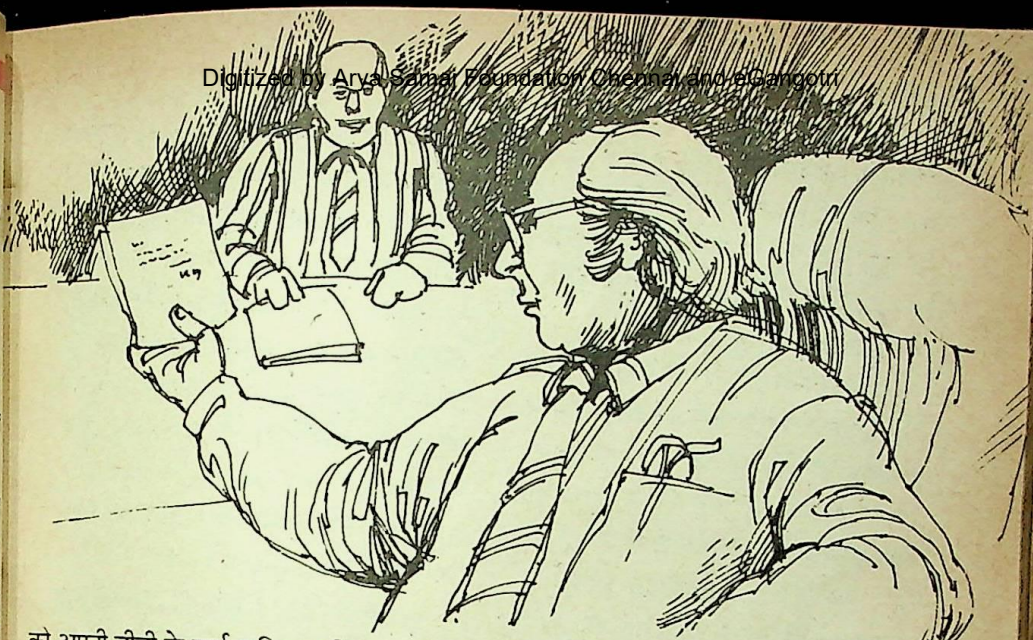

को अपनी बीवी के मार्फत भिजवा दिया ।

'बड़े बाबू की आंखों में धूल झोंकना आसान नहीं है सत्यव्रत बाबू । तुम डाल-डाल तो हम पात-पात', मन ही मन उन्होंने इस संवाद को इस प्रकार कहा मानो वे सामने बैठे सत्यव्रत को सुना रहे हों । वे फिर एक बार उठकर साहब के कमरे की ओर गये । और वापस आ गये । साहब कहीं बाहर निकल गये थे । उन्हें सत्यव्रत के संबंध में सारी बातें कागज पर ले आने की जल्दी थी । मन ही मन उन्होंने तय कर लिया था कि 'इस बार मैंने सत्यव्रत को धूल नहीं चटाया, तो मैं बड़े बाबू नहीं । दफ़्तर के लोग भी देखेंगे कि बड़े बाबू किस तरह बड़े-बड़े शूरमाओं को पालतू कुत्तों में बदलकर रख देते हैं ।'

●

दूसरे दिन काफी उत्साहित होकर बड़े बाबू दफ़्तर आए और आते ही सत्यव्रत का आवेदन लेकर साहब के कमरे में घुस गये ।

"गुड मार्निंग सर," कहकर अभिवादन का एक तमाचा लगाया और मुसकराते हुए सामने की कुरसी पर धंस गये ।

"कहिए बड़े बाबू, क्या हाल है ?" साहब ने पूछा ।

"सब ठीक है सर, सत्यव्रत बाबू का एक आवेदन आया है, देख लीजिए," कहकर उन्होंने फाइल को साहब की ओर बढ़ा दिया । एक क्षण उनके पढ़ने का इंतजार करते रहे, फिर बोले, "इस पर मेरी राय है सर, कि पहले तो उनकी छुट्टियां रद्द कर दी जाएं । यदि वे सचमुच बीमार हैं, तो वे एक मेडिकल बोर्ड के सामने उपस्थित हों । सरकार को इस तरह से धोखा नहीं दिया जा सकता, सर !"

साहब ने एक क्षण के लिए बड़े बाबू की ओर ऐसे देखा जैसे वे इस विचार से सहमत न हों । बड़े बाबू ने इसे भांप लिया । वे झट पैंतरा बदलकर बोले, "याद है सर सरजुग के मामले को लेकर उन्होंने सब के सामने आपको कितना अपमानित किया था । उस दिन मैं आपका मुंह देखकर खून के घूंट पीकर रह गया था सर !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप जैसे सज्जन अफसर को भी भ्रष्ट, रिश्वतखोर, कमीना... न जाने क्या-क्या कह दिया था। वह सब के सामने कहता रहता है कि मैं आपको ब्लैकमेल करता रहता हूं.., क्या यह सच है सर ?''

साहब चुप हो गये। उनके चेहरे को देखने से लगा कि वे कहीं न कहीं बड़े बाबू की बातों से सहमत होने की कोशिश कर रहे हों। मामला जमते देखकर बड़े बाबू ने आगे कहा, ''हम कोई गैर-कानूनी काम तो करने नहीं जा रहे हैं, सर, 'ऐज पर रूल' हमें तो इतना अधिकार है ही, सरकार को धोखा देना आसान नहीं है, सर।''

''अगर वह सचमुच बीमार हुआ तो ?''

''इसका निर्णय मेडिकल बोर्ड करेगा सर ! आप तो जानते ही हैं कि सरकारी नौकरी में अधिकांश मेडिकल छुट्टियां फ्रॉड होती हैं।''

यह सुनकर साहब चुप हो गये। उनके चुप होने का मतलब बड़े बाबू की बातों से सहमत होना था। बड़े बाबू ने तुरंत कहा, ''सर, मैं अभी इसे कागज पर ले आता हूं, और उन्हें खबर भिजवा देता हूं कि आपकी छुट्टियां रद्द हो गयी हैं।''

''ठीक से सोच लीजिए, बड़े बाबू, जल्दी क्या है ?''

''सर, अपना अपमान तो मैं भूल सकता हूं लेकिन आपका अपमान मैं भूल नहीं सकता। आप हमारे अफसर हैं सर ! अभी मत रोकिये। सत्यव्रत को मैं बता देना चाहता हूं कि अफसरों के खिलाफ जाने का क्या हश्र होता है ? यदि उससे आपके पैर न पकड़वाए तो मेरा नाम बदल दीजिएगा सर !''

साहब कुछ नहीं बोले। बड़े बाबू ने मौनं स्वीकारं लक्षणम् समझकर उठे। फौरन अपनी सीट पर बैठकर सत्यव्रत के आवेदन-पत्र पर नोटिंग की। अविलंब उसे लेकर साहब के सामने पहुंच गये।

''क्या है ?'' साहब ने पूछा। क्योंकि बड़े बाबू का स्वयं फाइल लेकर जाने का हमेशा ही विशेष मतलब होता था। जिस मामले का संबंध दस या पंद्रह प्रतिशत से होता था, बड़े बाबू उन मामलों को स्वयं लेकर आते थे।

''सत्यव्रत के कर्जवाला आवेदन है, सर!

''इतनी जल्दी ड्राफ्ट कर लिया ?''

''आप तो जानते हैं सर, कि आपका बड़ा बाबू जिस केस को हाथ में लेता है, उसमें देर नहीं लगती,'' बड़े बाबू कहकर विजयी भाव से मुसकराए।

''क्या लिखा है ?''

''उतना ही, जो मैं आप से बातें करके गया था। पढ़ लीजिए। साहब ने एक नजर देखा और अपने हस्ताक्षर कर दिये। बड़े बाबू का चेहरा खिल उठा। फाइल लेकर फौरन अपनी सीट पर आ गये। सारे अपमानों का बदला लेने की ठान ली थी उन्होंने। 'कल का छोरा यूनियनबाजी करने चला है। ठहरो बच्चू हम दिखाते हैं कानून क्या होता है ?' कहकर उन्होंने स्वयं को आश्वस्त किया और चपरासी के हाथ एक पत्र सत्यव्रत के घर पर भिजवा दिया।

थोड़ी देर बाद जब चपरासी ने वापस आकर 'सत्यव्रत के घर पर नहीं होने की तथा ताला लटकने' की सूचना दी, वे साहब के पास दौड़े गये, ''देखा सर ! मैंने कहा था न कि सत्यव्रत की बीमारी एक फ्रॉड है। मैं सत्यव्रत को नस-नस पहचानता हूं, न तो वह बीमार है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

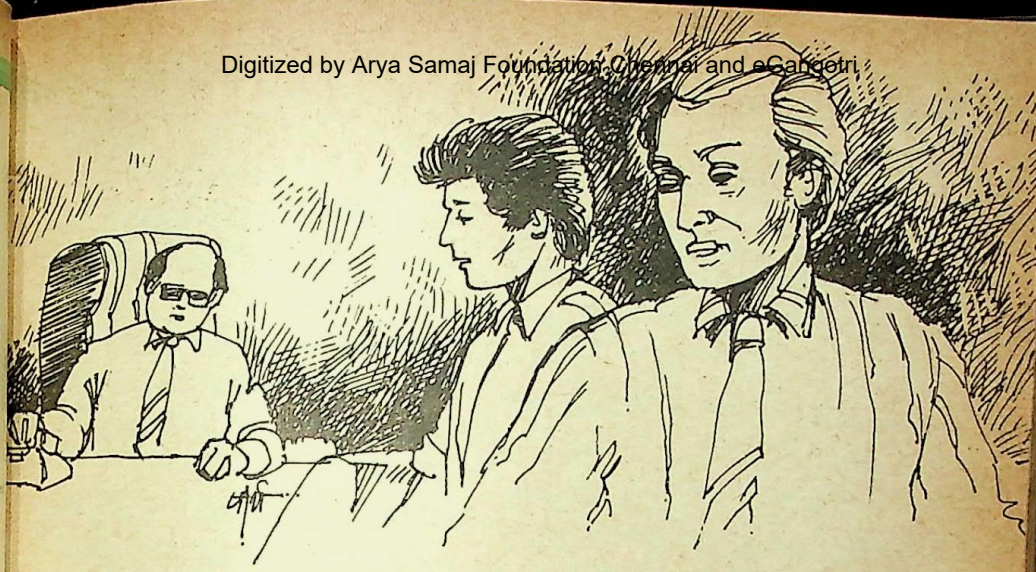

घर पर है।'' यह सुनकर साहब मुसकराए। एक बार फिर बड़े बाबू के अनुभव की प्रामाणिकता साबित हो गयी।

पांचवें दिन जो आदमी बड़े बाबू से मिलने आया वह सत्यव्रत का बाप था।

''कहिए ?''

''जी, सत्यव्रत मेरा बेटा है। उसने कर्ज के लिए आवेदन भेजा था।''

''अभी विचार हो रहा है, लेकिन इसके पहले उसे काम पर आ जाने को कहिए वरना अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।''

''लेकिन वह तो बीमार है... बहुत बीमार ... पैसे की बहुत जरूरत है।''

''सरकार को आप लोग बेवकूफ नहीं बना सकते। यदि वह बीमार होता तो वह घर पर नहीं होता ?''

''लेकिन वह यहां है कहां ? वह तो पटना गया हुआ है...''

बड़े बाबू को जैसे करंट छू गया।

''यह कैसे हो सकता है ? हमारे कागज के अनुसार वह अभी भी इस शहर में है। क्योंकि शहर छोड़ने की अनुमति के लिए उसका कोई आवेदन-पत्र नहीं मिला है। यदि वह बिना हमें बताये गया है, तो हम उस पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करेंगे।''

''जो कुछ चाहे आप कीजिए, लेकिन कर्ज का मिलना बहुत जरूरी है।''

''देखिए आप हमारे बुजुर्ग हैं। मैं कुछ नहीं कह सकता। लेकिन आप तो जानते ही हैं कि सरकार में और भी जरूरी काम होते रहते हैं। समय आने पर उस पर भी विचार होगा।''

''लेकिन रुपये की सख्त जरूरत है,'' बूढ़े की आंखें डबडबा आयीं।''

''सरकार भावुकता से नहीं चलती। मैंने कहा न काम हो जाएगा।''

''सर, मैं बूढ़ा आदमी हूं। रुपये की बहुत जरूरत है। संभव है ऑपरेशन करना पड़े।''

''ठीक है... आप सप्ताह भर बाद आइए,'' यह सुनकर दुबारा उस बूढ़े की हिम्मत कुछ भी कहने की नहीं हुई। उसने बड़े बाबू की नजर बचाकर ढुलक आए आंसुओं को अंगोछे से पोंछा और कमरे से बाहर हो गया। उस बूढ़े के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर जाते ही बड़े बाबू साहब के पास चले गये।

"सर सुना है सत्यव्रत बिना दफ़र को बताये मुख्यालय से बाहर गया हुआ है। सर उसे यह सिखाना जरूरी हो गया है कि सरकारी नौकरी करना कोई खेल नहीं है। इसी बात पर उसे एक मेमो देना जरूरी है, सर !" साहब ने बड़े बाबू की ओर देखा। फिर गंभीर होकर बोले, "वह तो हो जाएगा, लेकिन हमारे लिए आज शाम तक पांच का इंतजाम होना जरूरी है। मकान में हाथ लगा दिया है।"

"सर, बहुत अच्छा किया। आपको तो यह बहुत पहले ही करना चाहिए था। हमारे यहां जितनी जगहें खाली हैं, उसे भरने की मंजूरी मिल जाए तो इसी से एक फर्स्ट क्लास मकान बन सकता है।" बड़े बाबू ने गंभीर होकर यह सुझाव दिया।

"ठीक है आज ही कागज बढ़ाइए, मैं ऊपर को संभाल लूंगा।"

"लेकिन सत्यव्रत को मेमो सर ?"

"वह भी टाइप कर लीजिए। ये लड़के सरकारी नौकरी को गंभीरता से लेते ही नहीं।" यह सुनकर बड़े बाबू आज्ञाकारी बालक की तरह कमरे से बाहर निकल आये।

थोड़ी देर बाद चपरासी के माध्यम से 'बिना अनुमति के मुख्यालय छोड़ने के लिए कारण बताओ' नोटिस भिजवा दिया, और चपरासी के लौटने का इंतजार करने लगे। दोपहर बाद जब चपरासी लौटा तो उसका चेहरा बुझा हुआ था। उसने मेमो मेज पर रखते हुए कहा, "यह लीजिए सर, मैं दे नहीं पाया....।"

"क्यों ?"

"उनके घर कोहराम मचा हुआ था। सत्यव्रत बाबू का देहांत हो गया।"

इसके पहले कि सत्यव्रत के मरने की खब आग की तरह पूरे दफ़र में फैलती, बड़े बाबू झटपट आवेदन-पत्र वाली फाइल निकाली साहब के कमरे में दाखिल हो गये।"

"कहिए बड़े बाबू... क्या लाए मेरे लिए साहब ने इच्छा-पूरित नेत्रों से उनकी ओर देखा।

"सर, सत्यव्रत सचमुच बीमार था। 'डेथ' हो गयी।" बड़े बाबू ने एक झटके के साथ यह सूचना दे दी। साहब के चेहरे का यकायक उड़ गया। एक क्षण को लगा सांस कहीं हलक में ठहर गयी हो। शरीर अचानक पसीने से चुहचुहा गया।

"सर,इसमें चिंतित होने की बात नहीं है हमारा कागज दुरुस्त है सर ! हमने उसी पांच हजार का ऋण स्वीकृत करके चेक बनवा दिया था। अब आप पिछली तारीख इस स्वीकृति पर साइन कर दीजिए।" बड़े ने अत्यंत शांत भाव से आवेदन-पत्र आगे दिया।

"लेकिन वह मेमो..."

"उसकी एंट्री कहीं नहीं है सर... वह विश्वस्त चपरासी ले गया था। लीजिए, स्वयं फाड़ दीजिए। सी.बी. आई. का नाम हमारा कुछ नहीं कर सकता।" फिर बड़े ने कुछ देर बाद कहा, "वैसे आदमी ईमा था सर, आज तक उसने एक भी फर्जी नहीं दिया।" और तेजी से वह कमरे से हो गये।

— १०/४३, मालवीय नगर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक अफरीकी साहित्य में भारतीय तत्व

● श्रीकृष्ण कुमार त्रिवेदी

भारत के साथ अफरीका के शताब्दियों पुराने संबंध यहां के साहित्य में बराबर प्रतिध्वनित होते रहे हैं । पौराणिक गाथाएं चर्चित प्रेमकथाएं अथवा किंवदंतियां किसी न किसी रूप में सर्वत्र आदृत रही हैं । आधुनिक युग में यथार्थ के कठोर धरातल पर खड़े साहित्य, विशेषकर, पूर्व एवं दक्षिण अफरीका के लिए अपने बहुवर्णी समाज का प्रतिबिंबन भारतीय तत्वों के बिना अकल्पनीयप्राय हो गया है । व्यापार से लेकर योग तक, खाद्य-समस्या से लेकर परिवार-नियोजन तक, मूलभूत आवश्यकताओं से लेकर विलासिता तक, स्वाधीनता-संग्राम से लेकर विश्व-शांति तक, दर्शन से लेकर प्रदर्शन तक,....कोई न कोई भारतीय तत्व साहित्य में प्रवेश पा ही जाते हैं । कुछ बानगियां प्रस्तुत हैं ।

चंद्रावत

पारंपरिक अवधारणा से अलग हटकर आज का साहित्यकार सभ्यता के उद्‌गम के साथ अपने समाज को संबद्ध करता है— 'वे (इलमोरोग में प्राप्त पुरातात्विक सामग्री पर हुए अनुसंधानों के परिणाम) यह भी बतला सकते हैं कि (यहां की) नदी उनमें से एक है, जिनका वर्णन प्राच्य हिंदू एवं मिस्री आर्ष साहित्य में हुआ है....अथवा वेदों में वर्णित चंद्रावत है ।'

(न्गूगी वा थियोंगो (केन्या) : पेटल्स ऑव ब्लड, पृष्ठ ६७) अपने समाज में व्याप्त भेदभाव की तुलना भारतीय वर्ण-व्यवस्था से करता है—

'उन दिनों पश्चिमी अफरीका के नगरों की वर्ण-व्यवस्था अपने प्रकार से उतनी ही दृढ़ और उतनी ही दूषित थी, जितनी कि हिंदू वर्ण-व्यवस्था और उतनी ही निरंकुश ।'

(विलियम कांटन : द आफ्रिकन, पृष्ठ ८७)

'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाले युग में सम्राट थिवोडोरोस द्वितीय (सन १८५५-'६८) अट्ठाईस वर्षीय मरियल सामुएल को अपना सलाहकार इसलिए नियुक्त कर लेता है कि उसने अपने जीवन के दस-बारह वर्ष भारत में बिताये थे । सम्राट के यह पूछने पर कि वह क्या था जिसने उसे सबसे अधिक प्रभावित किया था, वह कहता है, '....गोरे आदमी का कभी विश्वास नहीं करना चाहिए ।'

'तुम ऐसा क्यों कहते हो ?'

'यह मैंने भारत में देखा और अनुभव किया है.... ।'

'क्या अनुभव किया तुमने भारत में.... ?'

'...उदाहरणार्थ, भारतीयों के पास कोई देश नहीं रहा, महामहिम ! गोरों ने उसे हड़प लिया... ।'

'क्यों, क्या सबके सब भारतीय औरतें हैं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या वे कमर कसकर अंगरेजों से लड़ नहीं सकते ?'

'यदि भारतीय शुरू में गोरों की भावनाएं जान गये होते, तो उन्होंने अपने देश से दूर रखने की कोशिश की होती । पर वे गोरे आदमी द्वारा ठग लिए गये.... ।' **(सहले सेलासी (इथियोपिया) : वारियर किंग, पृष्ठ ११९-२१)**

(सम्राट गर्व से कहता है कि वह गोरे आदमी द्वारा कभी भी नहीं ठगा जाएगा । पर विडंबना यह रही कि गोरों के साथ मुफ़्त का उलझाव मोल लेकर उसने अपना विनाश कर लिया और विनाश आया गोरों द्वारा संचालित बीस-बाईस हजार भारतीय सेनाओं के सहयोग से ।)

भारतीय साम्यवादी

दासता-अंधकार को दूर करने के लिए अफरीकियों के साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर लड़नेवाले भारतीयों का ससम्मान उल्लेख हुआ है और उनके प्रति शासन की नृशंसता का भी । '....दिन-दहाड़े की गयी एक राजनीतिक हत्या, जिसके हत्यारे कभी भी पकड़े नहीं गये । यह सत्य है कि वह एशियायी मूल का एक नागरिक था, पर स्वाधीनता-संग्राम में सक्रिय भाग लेने और साम्राज्यवादियों के साथ किसी भी प्रकार के स्वाधीनोत्तर सहयोग का सतत विरोध करने के कारण पूरे देश में विख्यात था ।...संसद में और उसके बाहर वह कृषक-क्रांति का आवाहन करता रहा... ।' **(पेट्स ऑव ब्लड,पृष्ठ ७८)** आगे चलकर 'एशियायी' का अवगुंठन नकार कर 'भारतीय' स्पष्ट हो गया है । पृष्ठ ८५ में इलमोरोग का सांसद गर्व से कहता है, 'दूसरों को बहकानेवाला भारतीय साम्यवादी कुछ दिन पहले ही इस धरती से हटा दिया गया... ।' पृष्ठ १७९ में पुनः इस हत्या की चर्चा है—'...भारतीय साम्यवादी की हत्या... ।'

इसी उपन्यास के पृष्ठ १३६ पर लाल विद्यार्थी के समाचार-पत्र 'हबारी जा दुनिया' की चर्चा है, और अफरीकी श्रमिकों के साथ तादात्म्य स्थापित करने के कारण मरखानसिंह की गिरफ़्तारी की भी ।

ओले मसाई

'तब बाद में, दो यूरोपीय महायुद्धों के बीच एक रामजी रामगुलाम धरमशाह (इलमोरोग में) आया, लगा जैसे वह शून्य से प्रकट हो गया और उसने एक बंगला बनाने की आज्ञा मांगी, जिसमें उसका आवास और दुकान रहे थी । उसने लोहे की छत डलवायी, लोहे की दीवारें खड़ी कीं और व्यापार करने लगा । वह नमक, चीनी, मसाले और कपड़ा बेचता था और सेम, आलू, और मक्का भी,जो उसने उन किसानों से फसल के समय सस्ते दामों में खरीदा था । वह हमेशा उसी कोने में कुछ पत्तियां (संभवतः पान) चबाता हुआ मेज के पीछे बैठता था । कभी-कभी दुकान बंद कर वह शहर से सौदा खरीदने चला जाता था ।...एक बार दुकान बंद करके वह एक महीने बाहर रहा । वापस आया तो उसके खिलखिलाती हुई एक शर्मीली लड़की थी, लोगों ने उसे उसकी पुत्री समझा, जब तक वह उसके बच्चों को जन्म नहीं देने लगी । दुकान और घर का काम करने के लिए एक सेविका, इलमोरोग के नूजोगू की लड़की, रख ली । वह बड़े काम की थी, विशेषकर जब धरमशाह की पत्नी भारत या कहीं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली जाती थी । वह भी गोल पेटवाली हो गयी । कहते हैं कि धरमशाह ने उसे बहुत-सा धन दिया और शहर भेज दिया जहां वह प्रायः उसके पास गुप्त रूप से मिलने जाता था, एक अश्वेत पत्नी से अपने एकमात्र पुत्र को अर्धस्वीकृति देते हुए । पर वह पुत्र—एक लंबा काफी के रंग का लड़का—द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एक दिन इलमोरोग आया और अपने नाना-नानी के साथ ठहरा; केवल एक बार अपने पिता से मिलने गया, उसके बाद उसे लेकर पिता ने अपनी खिलखिलाती हुई पत्नी से

१९५६ में धरमशाह को एक ओले मसाई से एक पत्र मिला जिसमें प्रेषक का विचित्र पता दिया था : न्यांडारूरा जंगल में कहीं पर से । उसने कांपते हाथों और जम गये पान चबाते हुए मुंह से पत्र पढ़ा और तुरंत दुकान बंद कर दी । वह और उसकी पत्नी,जिसने उसे दस से अधिक बच्चे दिए थे, जो शिक्षा और शादी के लिए भारत भेज दिए गये थे, इलमोरोग से भाग गये और कभी नहीं लौटे । गांववाले दुकान तोड़कर उसके अंदर घुस गये और दुकान का सारा सामान बटोर ले गये और उनके लिए दुआ की

दासता-अंधकार को दूर करने के लिए अफरीकियों के साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर लड़नेवाले भारतीयों का अफरीकी साहित्य में ससम्मान उल्लेख हुआ है और उनके प्रति शासन की नृशंसता का भी....

झगड़ा किया । धीरे-धीरे इलमोरोग के लोग धरमशाह की दुकान पर हर चीज के लिए निर्भर करने लगे । उनकी अर्थ-व्यवस्था और दैनिक आवश्यकताएं अविच्छिन्न रूप से दुकान की उदीयमान समृद्धि से बंध गयीं । उन्होंने अपनी फसलें, अपना दूध, अपनी आवश्यकताएं दुकान को गिरवी कर दीं, जब तक कि वे उन अदृश्य जंजीरों पर भुनभुनाने नहीं लगे जिन्होंने उनकी गरदनों और जिंदगियों को और उनके सर्वस्व को दुकान से जकड़ दिया था । सन १९५३ में वह अश्वेत स्त्री, सुंदर कपड़े पहने पर क्षीणकाय, अचानक इलमोरोग आयी और धरमशाह से मिलने गयी, और तुरंत बाद रोती हुई अपने बूढ़े मां-बाप के पास गयी । सन

जो जंगल में लड़ रहे थे... ।' (पेटल्स ऑव ब्लड, पृष्ठ ६९-७०)

यह ओले मसाई कौन था, इसका खुलासा पृष्ठ १३५-३७ में इस प्रकार दिया गया है—'ओले मसाई, अर्धभारतीय, उनका (गुरिल्ला छापामारों का) नेतृत्व करता था । तब वे भी गाते थे..... । वे उसे मुहिंदी कहते थे, पर अब वह उसका बुरा नहीं मानता था.... । वे ईष्टले के बड़े भाग में रहते थे ।....उसका भारतीय पिता प्रायः आता था और उसे पैसे दे जाता था और उसकी पढ़ाई का खर्च देता था । उसने अपनी संपत्ति का कुछ अंश देने का वायदा किया था....वास्तव में उसने उसके नाम एक बैंक खाता खोल दिया था...पर वह तब भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं से घृणा करता था... । उसने उन्हें बतलाया था कि कैसे उसने बाद में अपने पिता को एक पत्र भेजा था, अफ्रीकी जनता की संपत्ति से दूर रहने का आदेश देते हुए ।'

ओले मसाई की कहानी उसके सहयोगी अब्दुल्ला से सुनकर 'न्जोगू का हृदय गर्व से दीप्त हो उठा । उसे इस तथ्य से हमेशा लज्जा प्रतीत होती रही थी कि उसकी पुत्री ने एक भारतीय के बच्चों को जन्म दिया था ।

× × × × न्जोगू को लगा कि जिस रक्त ने अपनी धाक जमायी थी वह अश्वेत पक्ष का था ।' (तथैव, पृष्ठ १४०)

आप विवाहित हैं या.... ?

धरमशाह के अनेक प्रतिरूप मिल जाएंगे । (भले ही उसके समान पितृधर्म निभानेवाले दुर्लभ हों), पर भारतीयों ने वह कुख्याति नहीं अर्जित की जो सभ्यता के ठेकेदार गोरों ने की । 'आप विवाहित हैं या केन्या में रहते हैं ?' उनके यौन-संबंधों पर एक क्रूर टिपणी थी । (**कॉलिन एम. टर्नबुल : द लोनली आफ्रिकन**) पहले एक श्वेत उपनिवेशवादी लॉर्ड फ्रीज किल्बी ने खेती करनी शुरू की । अथक प्रयास से उसने गेहूं की अच्छी फसल उगाई । लाइकिपिया प्लेंस के मसाइयों ने एक रात पूरे फार्म को आग लगा दी । लॉर्ड ने हटने से मना कर दिया । पर उसकी पत्नी ने उसका साथ छोड़ दिया । मसाई योद्धाओं ने रात में उसके बंगले के आसपास अजीब भयानक आवाजें लगाकर उसे भयाक्रांत कर दिया—एकाकी दुस्साहसी ने तेजी से ओल कलोऊ की अधिक आनंददायी और स्वास्थ्यवर्द्धक घाटियों के लिए पलायन किया । वहां उसने अपनी प्रिय पत्नी को एक दूसरे लॉर्ड की बांहों में आनंद उठाते पाया, उसने उन दोनों को अपनी रायफल से गोली मार दी ।' (**पेट्रल्स ऑव ब्लड, पृष्ठ ६९**) यह कुख्याति केन्या तक ही सीमित नहीं रही । '१९१६ के युद्ध में जब बेचारा (जिलाधीश विंटर बॉटम) कैमरून में जरमनों से लोहा ले रहा था, कोई चुस्त आदमी घर में उसकी पत्नी को लेकर चंपत हो गया ।' (**चिनुआ अचेबे (नाइजीरिया) : एरो ऑव गॉड, पृष्ठ १०३**) इस संदर्भ में एक स्वनामधन्य दक्षिण अफरीकी वान डर मर्वे का उल्लेख असमी चीन नहीं होगा, जो उस समय न्यूयार्क में था जब डॉ. गैलप जनमत-संग्रह कर रहे थे कि 'प्रजनन कार्य है या आनंद' । वान डर मर्वे के विचार पूछे गये तो उसने बेझिझक जवाब दिया 'आनंद' । वह कैसे इतना निश्चित था, पूछने पर जवाब मिला, 'अरे यार, काम होता तो हमने उसे भी काफिरों पर डाल दिया होता' ! (**एलेक्ज़ेंडर कैंपबेल : द हार्ट ऑव आफ्रिका**)

खुली आंखों से देखे सपने

आखिर, आजादी भी आयी । अश्वेत महाद्वीप श्वेत-मुक्त होता गया । पर तब कबीलावाद इस कदर प्रभावी हुआ कि कबीला-प्रमुख-पद मंत्री-पद से भी अधिक वांछनीय हो गया । अलादे मोजेज, बी.ए., डिप-इन-एड (लंदन) जैसे शिक्षाविदों को केंद्रीय मंत्रि-परिषद का वरिष्ठ सदस्य बनने से उतनी प्रसन्नता नहीं होती, जितनी कि अपने कबीले का प्रमुख बना दिये जाने से । (**टी.एम. अलूको (नाइजीरिया) : चीफ द ऑनरेबल मिनिस्टर**) छोटे लोगों की कौन कहे, वृहत् अफरीका के प्रबलतम पक्षधर डॉ. क्वामे नक्रूमा तक ने, परंपरा के सामने झुककर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पांव रक्त से धुलवाये । **(पीटर एब्राहम्स : द ब्लैक्स—एन आफ्रिकन ट्रेजरी, पृष्ठ ५५)**

सुरा-सुंदरी के बाहुपाश सत्ताधीशों पर कसते गये । स्वार्थसाधक कल तक के नाचीज को सत्ता पर आते ही आभिजात्य सिद्ध करने का उद्योग करने लगे । सत्ता को शाश्वत बनाने के लिए विरोध को गहरे दफनाकर एकदलीय शासनों की प्रवृत्ति संक्रामक बन गयी । स्वयंभू आजीवन राष्ट्रपति भी बने,जिनमें से कुछ का जीवन जलविहीन मछली की भांति कारागारों में तड़पते हुए भी बीता । 'राम से अधिक रामकर दासा' ने जनसामान्य का जीना दूभर कर दिया । **(लेग्सन कमीरा (मलावी) : द डिटेनी)** असहिष्णुता इस कदर बढ़ी कि 'अपने देश की सामाजिक स्थिति की बात करो, तुम्हें स्कूल से बाहर फेंक दिया जाएगा; अपनी दयनीय (कार्य) परिस्थितियों की बात करो, तुम नौकरी से बर्खास्त हो जाओगे; शासन के अन्यायों की चर्चा करो, और तुम स्वयं को जेल में पाओगे; बात करने के लिए मुंहभर खोलो, और तुम्हारे अंतरंग तक तुम्हें अकेला छोड़ देंगे ।' **(डैंयाच्यू वर्कू (इथियोपिया) : द थर्टीन्थ सन, पृष्ठ ११३)** सत्ता के साथ धर्म की दुरभिसंधि का भी अच्छा वर्णन इस उपन्यास में है ।

ऐसे में खुली आंखों से देखे अथवा दिखाये गये सपनों को साकार करने के लिए व्यग्र जनसमूह का मुंह बंद करने के लिए बलि के बकरे खोजे जाने लगे । भारतीयों से सस्ता कौन मिलता ! उदार गोरे भले भारतीयों के समान नागरिक अधिकारों के पोषक रहे हों **(एलन पैटन : क्राय, द बिलवेड़ कंट्री)** अनुदार अश्वेतों को तो गांधीजी का फिनिक्स आश्रम भी सह्य नहीं हुआ । भारतीयों में भी सर्वाधिक अरक्ष्य (एवं आकर्षक !) थे व्यापारी जो सभी जगह थे— सिएरा लियोन जैसे दूरस्थ देश में भी 'मुझे स्टेशन के पास से नयी भारतीय दुकान से कफन के लिए सफेद रेशम लानी है ।' **(आबिओसे निकोल : लव्स ओन टिएर्स— पी. ब्राउनली एवं बी.डब्लू. रोज द्वारा संपादित 'कामनवेल्थ शार्ट स्टोरीज', पृष्ठ ७२)**

'...आजादी से पहले सारा व्यापार भारतीयों के हाथ में था । पर अब उन्हीं दुकानों का काम हमने अफरीकियों के जिम्मे कर दिया है, और...वे कभी-कभी भारतीयों से भी अधिक लाभ कमाते हैं... ।' **(पेटल्स ऑव ब्लड, पृष्ठ १७९)**

यह विचार राजनीतिज्ञों का ही नहीं है, जन सामान्य का भी बन गया—

'राता (कबीला-प्रमुख) की पत्नी दरवाजे पर थोड़ी देर खड़ी रही, अनिश्चित और हथेली से आंखों पर छाया करते हुए ।

'हमारे पास चीनी नहीं है', उसने कहा ।

'जाओ और कुछ खरीद लाओ,' राता ने कहा ।

× × ×

'पैसे कहां हैं ?' उसने उसका लाभ उठाते हुए कहा ।

'उधार', राता ने कहा, 'यदि तुम उस बिना दांतवाले भारतीय के पास जाओ, तो वह उधार सामान दे देगा । आशा करनी चाहिए कि मैं उसके बाद तक जिंदा रहूंगा ।'

औरत घर के अंदर चली गयी । 'यहां के भारतीय हमारे यहां वालों से अवश्य ही भिन्न होंगे', नेपोलो ने कहा, 'हमारे वाले कभी किसी को भी उधार नहीं देते ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो प्रेम कविताएं

तुम्हें पाने के
मेरे सारे प्रयत्न
सुकुमार पौधों से
उखड़ गये हैं
नियति की लंबी चादर
काटने के भ्रम में
अपने ही हाथ काट लिये हैं
तुम्हारा दंभ मेरे
दर्पण में उतर कर
एक काला बिंदु
बन गया है
जहां से सारे संकेत
दिखते हैं न मिटते हैं
मात्र मसीहा के क्रॉस-से चुभते हैं

(दो)

मैं तुम्हारी जिंदगी में
आने वाला कोई पड़ाव नहीं
एक मंजिल हूं
जहां से सारे मोड़
समाप्त हो जाते हैं

भटकन और दुराव में
क्यों बार-बार
अपने दर्प के दर्पण में
आकृतियां संभालते हो

और हारे हुए
मन के कुरुक्षेत्र में
रथ को थामकर
पार्थ को पुकारते हो

—माधुरी बाजपेयी
९१, दुर्गापुरी, लखनऊ

'वे हर जगह एक से हैं,' राता ने कहा, 'यह मुझे कभी-कभार उधार दे देता है, लेकिन अकसर मेरे घर आ पहुंचता है और मुझे यंग ब्रिगेड्स (तानाशाह सर जड्डोक के सशस्त्र समर्थक) की धमकी देता है, यदि मैं पैसे न दूं। एक बार उसे चुप करने के लिए मुझे एक गाय देनी पड़ी थी। वह और यंग ब्रिगेड्स वाले एक-से हैं,' उसने बीचवाली अंगुलियों को साथ मिलाते हुए कहा, 'वे उसे चाहते हैं, क्योंकि वह हमेशा उनके सामने उपहारों का ढेर लगाये रहता है।' (द डिटेनी, पृष्ठ ६९)

भारतीय व्यापारियों के मनोभाव ऐसे नहीं थे। मोडिके डिकोबे (दक्षिण आफ्रिका) के उपन्यास 'द मैरबी डांस' में एक भारतीय दुकानदार भूला का वर्णन है (उसका तकिया-कलाम 'बहन—' भी दिया है!) जो मार्था (नायिका) की मां की मृत्यु पर रात बिताने के लिए आनेवाले अतिथियों को ब्रेड और अन्य खाद्य-सामग्री देता है, 'मैं पैसा बनाता हूं तो मुझे देना भी चाहिए। अल्लाह मुझे और देगा।' (पृष्ठ ९४)

नोट नहीं, सिक्कों में

'हमें अफरीकी वकील चाहिए', मि. इयूब ने कहा, 'नगर का भारतीय वकील गरीब अफरीकियों का अनाप-शनाप शोषण करता है।' (ओब्रे कचिंग्वे (मलावी) : नो ईजी टाक, पृष्ठ ३)

इसी उपन्यास में आगे चलकर (पृष्ठ १०३-१०) आवासीय व्यवस्था के एक भारतीय क्लर्क की चर्चा है। जो (नायक) कहता है, 'मैंने उसके साथ अच्छी दोस्ती स्थापित करने का निश्चय किया। वह लगभग

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी ही उम्र का था ।...वह चालाक था और उसने अनुभव किया कि वह मामले (मकान एलॉट करने के) से थोड़ा पैसा बना सकता था ।××××××''

'मुझे ज्यादा नहीं चाहिए', उसने धंधे के हिसाब से कहा । 'शाम को सात बजे गोल्फ कोर्ट की दूसरी ओर मिलो । बैंक नोट नहीं । सिर्फ चांदी के सिक्के, तुम समझते हो न । तीसरे आदमी से कोई चर्चा नहीं । दस पाउंड का रेट है लेकिन मैं पांच में ही कर दूंगा । ×××सात बजे, चांदी, कोई तीसरा नहीं, पांच पाउंड ।'

उतने सिक्के हर एक की आंख बचाकर पहुंचाने की भी समस्या थी । एक ब्रीफ केश में रखकर पहुंचाए जाते हैं । पर उसके बाद भी बहानेबाजी होती है, 'समय लगेगा । जल्दी हो तो कल फिर मिलो उसी जगह, उसी समय, उतनी ही राशि ।'

××××

यह क्रम जाने कब तक चलता रहता, यदि अन्य कारकों ने हस्तक्षेप न किया होता ।

'पेटल्स ऑव ब्लड' की नायिका वारांगना वांजा एक अनुभव सुनाती है— 'एक बार मैं एक कालासिंह के साथ गयी । वह एक पुलिस इंस्पेक्टर था । उसने हमें गिरफ़ार कर लिया क्योंकि हम किकीयू की एक बार में देर रात गये बिएर पी रहे थे, और जब उसने नौकरों की तलाशी ली, तो उसे उनके पास से भांग मिली । मैं घबड़ा गयी । उसने लड़कों को जेल में डाल दिया । मुझे वह अपने घर ले गया । मैंने स्वयं को उस तरह से बचा लिया । लड़के पांच-पांच साल के लिए गये ।' **(पृष्ठ १३०)**

भारत की भूखे-नंगेवाली छवि लोगों के दिल-ओ-दिमाग में ऐसी बसी है कि घटने के बाद भी मिटने का नाम नहीं ले रही । 'यदि तत्काल कुछ (गंभीर) नहीं किया गया तो हमारी (सूखापीड़ित लोगों की) हालत भारत-जैसी हो जाएगी, हजारों भूखे मुंह हमारी गरदन के लिए लपक पड़ेंगे ।' **(पेटल्स ऑव ब्लड, पृष्ठ १७८)** जबकि भारत इस उपन्यास के लेखन-काल (अक्तूबर १९७०—अक्तूबर १९७५) तक ही भुखमरी से मुक्त हो चुका था और प्रकाशन-काल (१९७७) तक तो हरित क्रांति नयी ऊंचाइयां छूने लगी थी ।

दूसरी ओर योग और ध्यान का (कम से कम शाब्दिक) आकर्षण इतना प्रबल है कि 'उसने (बस के एक यात्री 'जो' ने) किसी से अभी कहा था कि वह योगाभ्यास करता है । वह पुनर्जन्म पर भी थोड़ा बोला पर जब पूछ-ताछ गहराने लगी तो उसने टालते हुए कहा कि वह समय-समय पर स्वयं को सांसारिक कोलाहल से दूर हटा लेना और ध्यान लगाना पसंद करता था ।' **(सिप्रिएन एकवेंसी (नाइजीरिया) : लोकोमोटिव (कथा-संकलन की अंतिम कहानी 'ग्लिटरिंग सिटी', पृष्ठ १२८)** उगांडा के कवि प्रो. ताबान लो लियोंग का दृष्टिकोण दूसरा है—

'भारतीय मुझसे अधिक गहरा ध्यान क्यों लगाते हैं
मेरे दीप कृपया मुझे प्रकाश दो
क्या निर्धनता समृद्धि का एक स्रोत है''

(एनदर निगर डेड (काव्य-संकलन), पृष्ठ ४२)

—P.O. Box 194
AWASSA (SIDAMO)
ETHIOPIA (AFRICA)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

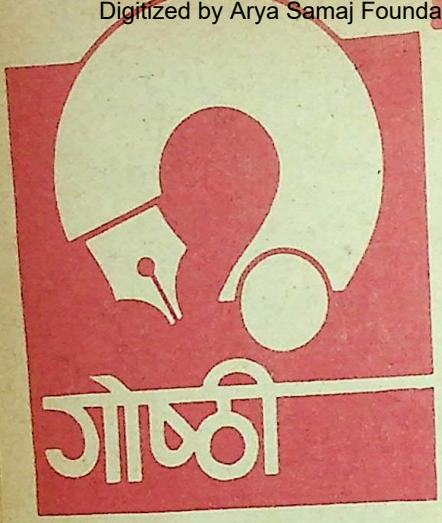

सतीश वर्मा, देहरादून

प्रश्न : 'श्रुतं मे गोपाय' का अर्थ क्या है ? संस्कृत विश्वविद्यालय के इस आदर्श वाक्य का मंतव्य क्या है व इसका स्रोत क्या है ?

☐ इसका अर्थ है : जो सुना (अर्थात पढ़ा) है उसकी रक्षा करें, और मंतव्य भी इसका यही है । इसका स्रोत है तैतिरीय उपनिषद, शिक्षा अध्याय, चतुर्थ अनुवाक, प्रथम मंत्र ।

इंद्र विद्यानिधि, कनखल (हरिद्वार)

प्रश्न : त्रेता एवं द्वापर-युगीन युद्धों में पताकाओं का क्या महत्त्व था ?

☐ कृपया, 'कादम्बिनी' के नवंबर, १९८९ अंक में पृष्ठ ८२ पर संबंधित लेख पढ़ें ।

रेखा सक्सेना, रायबरेली

प्रश्न : पलकें क्यों झपकती हैं और इनका संचालन किस तंत्र से होता है ?

☐ पलकों के झपकने का वास्तविक उद्देश्य नेत्र-गोलकों को साफ रखना है । इनको झपकाने का संचालन इनसे ही जुड़ी मांसपेशियों के एक तंत्र से होता है । आंखों की एक ग्रंथि से निकले अश्रु पलक झपकते ही फैलकर सफाई करते रहते हैं ।

ब्रज कुमार पुष्करणा, अंबाला

प्रश्न : शरत चंद्र चटर्जी और प्रेमचंद-जैसे उपन्यासकारों की कृतियों पर फिल्में बनाना क्यों कठिन है ?

☐ आपकी यह सूचना सही नहीं है । 'देवदास', 'परिणीता', 'स्वामी', 'अपने-पराये' तो शरत बाबू की कृतियों पर और 'गोदान' तथा 'शतरंज के खिलाड़ी' प्रेमचंद की कृतियों पर आधारित फिल्में बन चुकी हैं ।

इंद्रदेव सिंह भास्कर, खैरीडीह (गिरिडीह)

प्रश्न : जूरी प्रथा क्या है ?

☐ जूरी प्रथा के अंतर्गत कुछ व्यक्तियों (सामान्यतया १२) के एक समूह को शपथ लेकर अदालत में अपराधी के विरुद्ध प्रस्तुत सबूत को दृष्टिगत रखते हुए तथ्यों के आधार पर अपना फैसला देना होता है । इसका उद्देश्य न्याय करने में न्यायाधीश की सहायता करना है । जूरी प्रथा भारत में अब समाप्त होती जा रही है ।

श्रीनिवास लावनिया, अकलतरा

प्रश्न : घरों की दीवारों पर पीपल के पौधे कैसे उग आते हैं ? क्या ऐसी कोई रासायनिक विधि है जिससे, दीवार तोड़े बिना, इनको नष्ट किया जा सके ?

☐ पक्षियों की बीट और हवा से पीपल के बीज दीवारों की दरारों में पहुंच जाते हैं । ये इतने उर्वर होते हैं कि हवा में व्याप्त आर्द्रता से ही नमी लेकर बढ़ने लगते हैं । इनको नष्ट करने के लिए रसायन तो अनेक हैं, लेकिन आसानी से उपलब्ध तेजाब की बूंदें दो-चार बार डालने से काम हो सकता है ।

प्रदीप आचार्य, बाड़मेर (राज.)

प्रश्न : क्या नसबंदी कराने के बाद शुक्राणु बनना बंद हो जाते हैं ?

☐ नहीं ! शुक्राणु निरंतर बनते रहते हैं, किंतु बाहर नहीं आते ।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णु कौशिक, देवरी काठाकोनी (बिलासपुर, म.प्र.)

प्रश्न : नुस्खा लिखने से पूर्व डॉक्टर आर.एक्स. लिखते हैं जिसका तात्पर्य क्या है ?

☐ इसका अर्थ है 'आप लें' (दाउ टेक) ।

चतुर्भुज मिश्र, संबलपुर (उड़ीसा)

प्रश्न : व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी बाल क्यों बढ़ते हैं ?

☐ बाल अपनी जड़ों के नीचे नयी कोशिकाएं बनाकर बढ़ते हैं । पैपिला, अर्थात अंकुरक के इर्द-गिर्द जब नयी कोशिकाएं बन जाती हैं, तो वे मृत कोशिकाओं के डंठलों को रोमकूपों (फॉलिकिल) से बाहर ढकेल देती हैं । व्यक्ति के मर जाने के बाद भी बाल इसलिए बढ़ते रहते हैं क्योंकि, शरीर की कोशिकाएं तब तक काम करती रहती हैं, जब तक कि उनका ईंधन समाप्त नहीं हो जाता ।

प्रभावती राजशेखर, पालनपुर (गुजरात)

प्रश्न : बच्चा जन्म लेने के बाद से ही क्यों नहीं बोलने लगता ?

☐ बच्चे को बोलने के लिए अपने ओठों, गले और जबान की मांसपेशियों पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए अभ्यास की जरूरत होती है । इसके अतिरिक्त मस्तिष्क के जिस भाग से बोलने की शक्ति का संचालन होता है, वह जन्म के समय विकसित नहीं होता, और वह भाग भी अविकसित अवस्था में रहता है जो ध्वनि को सुनता है । इसके साथ ही ध्वनि को सुनकर पुनः उत्पन्न करनेवाली ग्रंथि भी विकसित होने की प्रतीक्षा में होती है । किंतु मुख्य कारण यह है कि भाषा पूर्णतया नकल पर निर्भर होती है । हम ध्वनि को सुनकर ही उसकी नकल कर सकते हैं, और बच्चा जब तक सुनेगा नहीं, तब तक नकल कैसे करेगा ?

एक प्राचीन प्रतिमा
धन के देवता कुबेर अपनी पत्नी सहित

रोहिणी नंदन मिश्र, धनबाद

प्रश्न : धन के देवता कुबेर का निवास कहां है ?

☐ पौराणिक मेरू पर्वत पर स्थित अलकापुरी में ।

गुणवंती रावत, अल्मोड़ा

प्रश्न : बाल सफेद क्यों हो जाते हैं ?

☐ वैज्ञानिक अभी तक इसके वास्तविक कारण की खोज नहीं कर पाये हैं । लेकिन इतना तो निश्चित है कि शरीर में मेलानिम (शरीरगत काला रंजक) की उपस्थिति बालों के रंग को प्रभावित करती है । बालों की जड़ों में भूरे या काले रंजक भरे रहते हैं और व्यक्ति की अवस्था के बढ़ने के साथ ही बालों की नयी कोशिकाओं में ये रंजक घटने लगते हैं । ऐसा भी देखा गया है कि चिंता, आघात या गहन दुःख से भी शरीर में मेलानिन का उत्पादन घटने लगता है ।

अनीस सिद्दीकी, देवरिया

प्रश्न : कोयला जलता है, लेकिन पत्थर क्यों नहीं जलता ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

□ वस्तुतः, पत्थर एक दग्ध सिलिकन है, अर्थात पहले ही जल चुका पदार्थ, इसलिए उसे दोबारा नहीं जलाया जा सकता । लेकिन कोयला मुख्यतया कार्बन से बना होता है, जो अब तक जला हुआ पदार्थ नहीं है, इसलिए वह जल सकता है ।

गीता मुखर्जी, आगरा व रणजीत पालीवाल, चित्तौड़

प्रश्न : क्या शुतुरमुर्ग अपना सिर रेत में छिपाता है ? इसके अंडे कितने बड़े होते हैं, तथा क्या नर-मादा दोनों इन को सेते हैं ?

□ अपनी रक्षा के लिए भागते-भागते, यह रेगिस्तानी पक्षी जमीन पर इस प्रकार पसर जाता है कि दूर से रेत का ढेर दिखाई देता है । इसके अंडे १२ से १५ सेंटीमीटर व्यास के होते हैं । तीन-चार मादाएं मिलकर एक गुफा बनाती हैं, जिसमें अंडे देने के बाद बारी-बारी से उनको सेती हैं । नर रात में अंडे सेता है ।

ललित जैन, नीमच कैंट

प्रश्न : स्टेनलेस स्टील क्या है ?

लोहे, निकल, मैंगनीज, फासफोरस, गंधक तथा दूसरे सूक्ष्म मात्रिक तत्वों से बनी मिश्र धातु स्टेनलेस स्टील है । क्रोमियम भी स्टील का एक महत्त्वपूर्ण घटक है, जिसकी मात्रा १२ प्रतिशत से कम नहीं होनी चाहिए ।

मोतीलाल रस्तोगी, लखनऊ

प्रश्न : मनुष्य के शरीर में कितनी मांसपेशियां होती हैं ?

□ कुल छह सौ उन्तालीस ।

मुकेश भारद्वाज, रोहतक

प्रश्न : आतिशबाजी किन वस्तुओं के मिश्रण से बनती है, रंगीन कैसे बनायी जाती है ?

□ पोटेशियम नाइट्रेट, कोयला, गंधक, आदि के मिश्रण से आतिशबाजी तैयार की जाती है । इसको रंगीन बनाने के लिए स्ट्रानशियम तथा बेरियम के लवण का उपयोग होता है । इन धातुओं के लवणों के मिश्रण जब जलते हैं, तो विभिन्न प्रकार के रंगों का प्रकाश पैदा होता है ।

राम नारायण दिग्गा, बंबई

प्रश्न : मुद्रास्फीति क्या है एवं यह किस कारण घटती-बढ़ती है ?

□ कृपया, कादम्बिनी का जनवरी, १९८९ अंक (गोष्ठी) देखें ।

हरदयाल शारदा, हाजीपुर (बिहार)

प्रश्न : भारत का सर्वप्रथम विज्ञापन कौन था ?

□ औलीकर वंश के राजा बंधु वर्मा (ईसवी सन ४३६-४६१) की राजधानी दशपुर (मंदसौर) में जुलाहे रेशमी वस्त्र बनाया करते थे । उस काल के एक अभिलेख में इन वस्त्रों का वर्णन इस प्रकार मिलता है —'सुवर्ण हार धारण किये कोई रूप-यौवना नारी मुख को तांबूल से और देह को सुगंधित पुष्पों से सज्जित करके भी जब तक इन वस्त्रों को धारण नहीं कर लेती, तब तक गोपनीय स्थान में अपने प्रेमी से मिलने नहीं जाती । इन जुलाहों द्वारा निर्मित, विभिन्न रंगों से रंजित और नयन सुखकर ये वस्त्र इतने महीन हैं कि सांस लेने से ही उड़ जाते हैं ।' (कुमारगुप्तबंधु वर्मा अभिलेख श्लोक २०/२१) । डॉ. भगवतशरण उपाध्याय ने इसे भारत की प्रथम चौहद्दी (विज्ञापन) माना है । इससे प्रामाणिक सामग्री हमें और नहीं मिली ।

राधाकृष्ण मिश्र, लोहरदगा

प्रश्न : बिजली किस तरह गिरती है और व्यक्ति को इससे क्या हानि होगी ?

□ इसका उत्तर 'कादम्बिनी' के अक्तूबर १९८९ अंक की गोष्ठी में देखें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

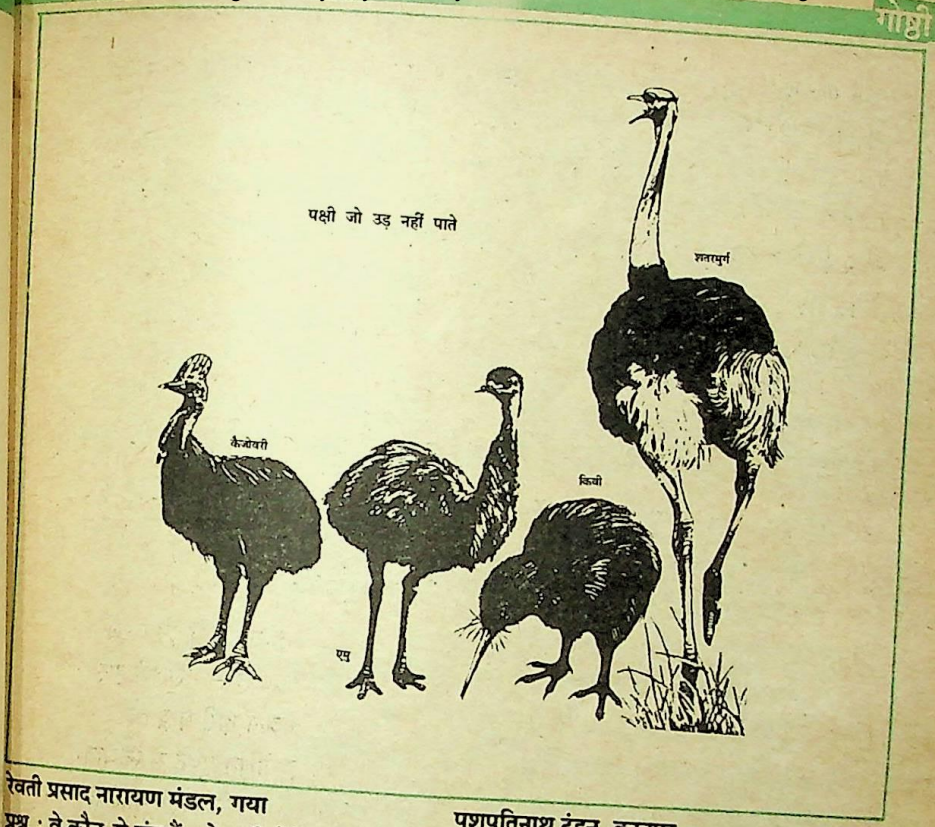

रेवती प्रसाद नारायण मंडल, गया

प्रश्न : वे कौन-से जंतु हैं, जो पक्षी होते हुए भी उड़ नहीं पाते और क्यों ?

☐ दक्षिणी ध्रुव के पेंगुइन पक्षी तैर तो लेते हैं, लेकिन उड़ नहीं सकते; न्यूजीलैंड के किवी रात में जागकर घ्राण-शक्ति से अपना भोजन तलाशते हैं, इनकी दृष्टि भी कमजोर होती है । इंडोनेशिया का खूंखार पक्षी कैजोवरी, अफरीकी पक्षी शुतुरमुर्ग भी इसी कोटि में आता है । आस्ट्रेलिया का एमु भी नहीं उड़ सकता तथा दक्षिणी अमरीकी रीए भी उड़ने में असमर्थ है । हजारों वर्षों से इन पक्षियों का रहन-सहन उनकी परिस्थितियों के कारण इस तरह का बन गया है कि इन्हें अपने परों के उपयोग की आवश्यकता नहीं पड़ी, फलतः वे उड़ नहीं सकते ।

पशुपतिनाथ टंडन, कानपुर

प्रश्न : ऐस्ट्रोटर्फ किन वस्तुओं के मिश्रण से बनता है, पानी से खराब तो नहीं होता ?

☐ यह साठ प्रतिशत नायलन, तीस प्रतिशत प्लास्टिक और दस प्रतिशत लोहे के मिश्रण से बनता है । लोहा होने के कारण यह गरम जल्दी हो जाता है, इसलिए इस पर पानी का छिड़काव करते रहते हैं । लेकिन यह खराब नहीं होता ।

चलते-चलते

प्रश्न : कहते हैं 'ओस चाटकर प्यास नहीं बुझती ।' आप बताइए ?

☐ **उत्तर : यह तो मुहावरा है । वैसे किसी ने कभी प्यासे की प्यास बुझते देखी है !**

—सूत्रधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा उपन्यासकार कैसे बना जा सकता है

● विलियम फॉकनर

अच्छा उपन्यासकार बनने के लिए निन्यान्वे प्रतिशत प्रतिभा की आवश्यकता है। निन्यान्वे प्रतिशत अनुशासन की, और निन्यान्वे प्रतिशत मेहनत की। अपने लेखन से उसे कभी संतुष्ट नहीं होना चाहिए। उसे हमेशा सपना देखना चाहिए और सपने की सीमा से भी आगे, जितनी दूर तक जा सके, जाने का प्रयत्न करना चाहिए। अपने समकालीन या पूर्ववर्ती लेखकों से बढ़िया होने का खयाल उसे दिमाग से निकाल देना चाहिए। उसका प्रयत्न होना चाहिए, खुद अपने से बढ़िया बनने का। कलाकार दानवीय शक्तियों द्वारा संचालित होनेवाला जीव है। वह नहीं जानता कि वे शक्तियां उसे ही क्यों चुनती हैं। वह अपने काम में इतना व्यस्त रहता है कि प्रायः इस विषय में सोच भी नहीं सकता।

कलाकार का एकमात्र कर्त्तव्य अपनी कला के प्रति है। उसके मन में एक सपना है। वह सपना उसे इतना परेशान करता है कि वह उससे छुटकारा पाना चाहता है। छुटकारा पाने तक उसे शांति नहीं मिलती। अपनी कला के लिए वह अनैतिक बनने को भी तैयार है।

वास्तव में, लेखक को आर्थिक स्वतंत्रता की आवश्यकता नहीं है। उसे आवश्यकता है पेंसिल और कागज की। अच्छा लेखक कुछ न कुछ लिखने में लगा रहता है। प्रथम श्रेणी का लेखक नहीं है, वही यह खुद को धोखा देता है कि उसके पास नहीं है या वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र

लोग वास्तव में यह जानने से डरते किस हद तक मुसीबतें या गरीबी सह हैं। वे यह जानने से डरते हैं कि वे कि बलवान हैं। कोई भी चीज अच्छे लेख नष्ट नहीं कर सकती। उसका रास्ता रो एक ही चीज है— मौत। अच्छे लेख सफल बनने या अमीर होने की कोई नहीं होती। सफलता एक स्त्री की तर अगर आप उसके सामने घुटने टेकेंगे आप पर सवार हो जाएगी। इसलिए आने का तरीका है, उसकी ओर से मुं लेना। तब वह आपकी ओर आएगी

अगर लेखक प्रथम श्रेणी का लेख कोई चीज उसके लेखन को खराब नहीं सकती। अगर वह प्रथम श्रेणी का है, तो कोई चीज उसकी खास सहायक सकती। प्रथम श्रेणी से निचले लेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने कला-संबंधी कोई समस्या ही पैदा नहीं होती, क्योंकि वह अपनी आत्मा को बेच चुका होता है।

लेखक अपने पाठक के प्रति कहां तक उत्तरदायी है ? इसके उत्तर में मैं कहूंगा कि लेखक का दायित्व केवल अपने लेखन के प्रति है। मैं अपने लेखन में इतना लीन होता हूं कि पाठकों की ओर से बेखबर रहता हूं। मुझे यह सोचने का समय ही नहीं है कि मेरे साहित्य को पढ़नेवाला कौन है ? मुझे अपने या किसी अन्य लेखक की रचनाओं के बारे में किसी की राय की कोई परवाह नहीं है। मेरा अपना नियत किया हुआ एक स्तर है और उस स्तर तक मुझे पहुंचना है।

अगर लेखक को तकनीक के ही पीछे पड़ना है, तो उसे चाहिए कि डॉक्टर बनकर चीर-फाड़ करे या राज बनकर इमारतें बनाये। लिखने का कोई मशीनी तरीका नहीं है, कोई छोटा रास्ता (शॉर्ट कट) भी नहीं है। वह नया लेखक मूर्ख है जो किसी सिद्धांत के पीछे पड़ता है। उसे अपनी गलतियों से सीखना चाहिए। अच्छा लेखक यह मानता है कि कोई भी इतना अच्छा नहीं है, जो उसे सीख दे सके। उसमें पूरा गर्व होता है। अपना पूर्ववर्ती लेखक चाहे उसे कितना भी पसंद क्यों न हो, वह उसे पछाड़ना चाहता है।

कलाकार के पास इतना समय ही नहीं है कि वह आलोचकों की बात सुने। प्रायः लेखक बनना चाहनेवाले लोग समीक्षाएं पढ़ते हैं। जो लोग वस्तुतः लिखना चाहते हैं, उनके पास समीक्षाएं पढ़ने का समय ही नहीं होता। लेखक आलोचक से ऊंचा है, क्योंकि लेखक आलोचक को प्रभावित करता है। आलोचक जो कुछ लिखता है, वह और सबको तो प्रभावित करता है, पर लेखक को नहीं।

जो कुछ मैं लिखता हूं, अगर वह मुझे खुशी देता है, तो मुझे और कुछ नहीं चाहिए। अगर वह मुझे खुशी नहीं देता, तो उसके बारे में बातें करने या लिखने से वह अच्छा नहीं बन जाता। उसे अच्छा बनाने का एक ही तरीका है कि उस पर और मेहनत की जाए। मैं साहित्यिक व्यक्ति नहीं हूं, केवल एक लेखक हूं।

प्रस्तुति : सुखवीर

मौत को पीछे धकेलेंगी दवाएं

वृद्धावस्था का एक खास रोग है— अस्थि-भंगुरता, यानी हड्डियों का कमजोर हो जाना। अस्थि-भंगुरता की दशा में शरीर की हड्डियां इतनी कमजोर हो जाती हैं कि वे शरीर का बोझ नहीं उठा पातीं और मामूली धक्के से ही टूट जाती हैं। ये रोग ४० वर्ष से अधिक की आयु की महिलाओं में ज्यादा पाया जाता है। रीढ़ की हड्डी की भंगुरता के उपचार के लिए अमरीका में विकसित की गयी एक दवा इस रोग को रोकती ही नहीं, बल्कि छह प्रतिशत वार्षिक की दर से कम हुए हड्डियों के भार को बढ़ाती भी है। यह पहली दवा है, जो हड्डियों के भार को बढ़ा सकती है। इस रोग की विभिन्न अवस्थाओं को नियंत्रित करने के लिए अमरीका में दस दवाएं और विकसित की जा रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

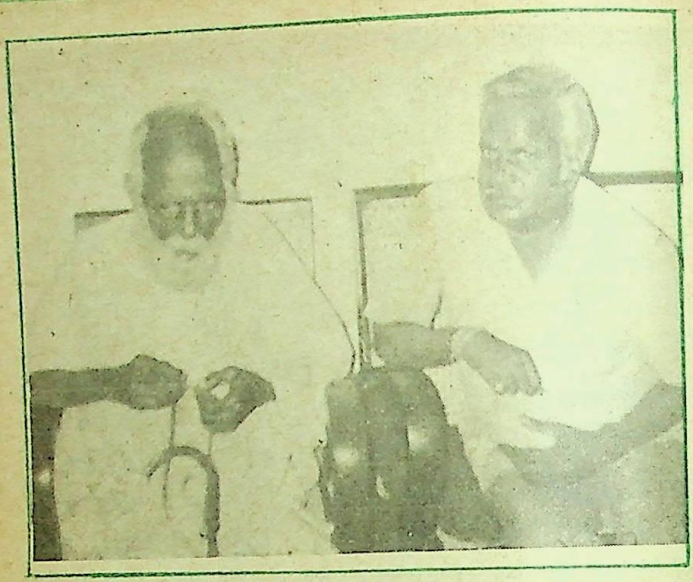

स्वर्गीय मुकुटधर
लेखक के साथ

लेटर पैड का अंतिम पृष्ठ

● दीप भोपाली

आज ही अखबारों में पढ़ा कि छायावाद के प्रवर्त्तक पद्मश्री मुकुटधर पांडेय का देहावसान हो गया है । यह समाचार हिंदी-जगत के साथ-साथ एक हिंदी-सेवी होने के कारण मुझे भी तमाचे की तरह लगा । मैं स्तब्ध रह गया । अभी गत १५ सितम्बर ८९ को ही तो रायगढ़ में मेरी उनसे भेंट हुई थी ।

कभी-कभी कोई क्षण इतिहास बन जाता है । पराशक्ति कभी स्वयं निर्णय लेती है व उसकी इच्छा पर कठपुतली की तरह नाचने को विवश होते हैं व्यक्ति, देश व समाज । उस दिन १२ बजे मेरी रायगढ़ से वापसी सुनिश्चित थी, भेंट व अनुरोध की मान-मनुअल में ही गाड़ी निकल चुकी थी व दूसरी गाड़ी में एक घंटे का समय था । मैंने इस समय का सदुपयो
व भाई अशोक पांडेय के साथ रवाना
वैकुंठपुर,रायगढ़ में स्थित साहित्य-मर्म
मुकुटधरजी पांडेय के निवास पर पहुंच
उनके दर्शन हुए । चर्चा होने लगी सां
संस्कृति व साहित्यकारों की । वह मग्न
रहे थे और मैं सुन रहा था । क्षण-क्षण
था । पांडेयजी ने अपनी कुछ रचनाएं,
सम्मान-फलक, मंजुषाएं, पदक आदि
दिखाने का अपने पौत्र को आदेश दि
सामने थी लोहे की कीट चढ़ी एक पेटी
रखा था हिंदी का स्वर्णिम इतिहास ।
दस्तावेजों को जीभर देखने के बाद मैं
के चरणों पर अपना सर रख दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेटर पेड के अंतिम पृष्ठ पर स्व. मुकुटधर पांडेय के हस्तलेख में स्व. लोचनप्रसाद पांडेय की दो काव्य-पंक्तियां

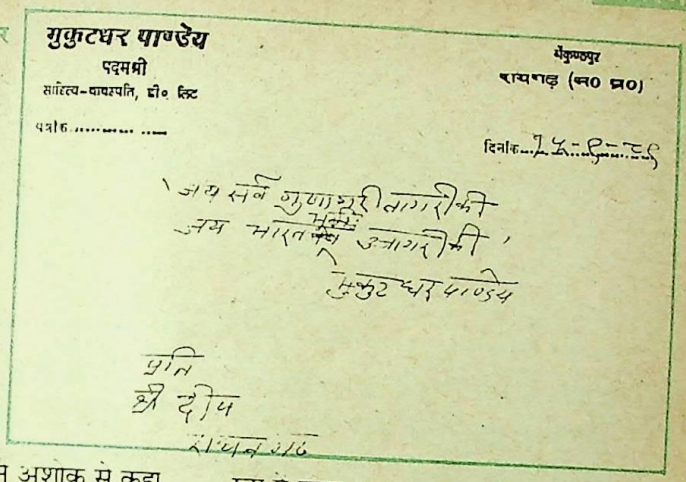

मुकुटधर पाण्डेय
पद्मश्री
साहित्य-वाचस्पति, डी० लिट

मैकुण्ठपुर
रायगढ़ (म० प्र०)

पत्रांक .....

दिनांक 25-9-79

'जय सर्व गुणागरी तागरी की
जय भारत भक्ति उजागरी की'
मुकुटधर पाण्डेय

प्रति
श्री दीप
राधनगढ़

आशीष पाने के साथ ही मैंने अशोक से कहा कि वह बाबा के साथ मेरा चित्र खींच दें । तभी बाबा के पौत्र चाय लेकर आ गये । मैंने चाय पीते-पीते ही उनसे प्रार्थना की कि वह इस भेंट की याद में दो पंक्तियां लिख दें । वाणी-पुत्र ने अपने पौत्र को लेटर पेड लाने का आदेश दिया । विलंब की स्थिति में बोले, ''बाबू, लेटर पेड में अब एक ही कागज बचा है और वह डेक्स में रखा हुआ है ।''

पेड आ गया, एक ही कागज था । बाबा बोले, ''मैं ९५ से ऊपर का हो गया हूं, अब तो जाने का समय आ गया है ।'' मैंने कहा, ''नहीं, आप तो हमारी पूंजी हैं । ईश्वर आपको दीर्घायु करें ।'' वह हंस दिये और दो पंक्तियां लिखकर बोले, ''यह भाई साहब (स्वर्गीय लोचनप्रसादजी पांडेय, हिंदी के प्रख्यात कवि व पुरातत्वविद्) की है ।'' कागज बड़े सम्मान के साथ उन्होंने मुझे दिया व मैंने उसे आशीर्वाद के रूप में ग्रहण कर पुनः प्रणाम किया । वह चर्चा करने लगे कुछ संस्मरणों के साथ अपने बड़े भाई की । इसी भेंट में उन्होंने श्री राजेन्द्र अवस्थी, कवि रामप्रताप सिंह विमल, अशोक वाजपेयी, प्रभाकर माचवे व कवि श्रीराम अधीर आदि का स्मरण भी चर्चा के मध्य किया । उस समय यह एहसास भी नहीं था कि मैं एक ऐतिहासिक दस्तावेज व दुर्लभ चित्र के साथ लौट रहा हूं ।

आज बाबा के हस्तलेख में उनके लेटर पेड पर लिखी यह दो पंक्तियां ऐतिहासिक दस्तावेज बन चुकी हैं, क्योंकि यह लेटर पेड का वही अंतिम पृष्ठ है और उनका अंतिम हस्तलेख ।

लाखों हिंदी भक्तों के साथ स्वर्गीय मुकुटधरजी पांडेय की स्मृतियों को मेरा भी कोटिशः प्रणाम ।

—राधोगढ़, जि. गुना—४७३२२६

बाबर ने पानीपत में प्रथम मसजिद बनायी जो कि मुगल पद्धति की सबसे पहली इमारत है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराणों में विज्ञान

ऋग्वेद में वर्णित: एक चालकहीन विमान

● श्यामनारायण कपूर

पुराण वेदों के पूरक ग्रंथ हैं । पुराणकारों ने वेदों के गूढ़ मंत्रों के रहस्य को अपनी कथा-वार्ता की शैली में सामान्य-जनों के लिए भी सुबोध कर दिया है । वास्तव में पुराण भारतीय संस्कृति, धर्म, इतिहास, राजनीति, कर्मकांड, व्रत-उपवास, ज्योतिष आदि-आदि के विशाल ज्ञान-कोश होने के साथ ही इनमें अनेक लोकोपयोगी विधाओं और विज्ञानों का प्रामाणिक विवरण भी उपलब्ध हैं । संस्कृत के वैज्ञानिक-साहित्य का परिचय पुराणों के गंभीर अध्ययन से सर्वथा सुलभ हो जाता है ।

अग्नि पुराण, गरूड़ पुराण, नारद और भविष्य पुराण इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं । सृष्टि का विस्तार, लय और पुनःसृष्टि के विवरण प्रायः सभी पुराणों में उपलब्ध हैं । पुराणों में मंवंतर एवं कल्पों का जो सिद्धांत प्रतिपादित है उसके अनुसार पृथ्वी की आयु दो अरब वर्ष बतलायी गयी है । आज के वैज्ञानिक भी रासायनिक पद्धति से अन्वेषणकर उसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं । सृष्टि प्रकरण में समुद्र, पृथ्वी, आकाश, ज्योर्तिमंडल, पृथ्वी और अंतरिक्ष में विभिन्न लोकों की स्थिति के वर्णन के साथ ज्योतिष संबंधी अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों का समावेश है ।

गरूड़ पुराण के ५८ से ६२ अध्याय एवं अन्य ग्रहों की स्थिति एवं आकार, विभिन्न ग्रहों, नक्षत्र समूहों और राशियों विवरण तथा उनके स्वामी देवताओं, अन्य ग्रहों के पारस्परिक संबंधों और प्रभाव की चर्चा, चंद्रमा की विभिन्न और उनके प्रभाव-लग्न, लग्नमान अनुसार करने योग्य एवं त्याज्य कर्म उल्लेख किया गया है ।

वेदांगों का शिरोमणि

नारद पुराण के गणित भाग में काल-गणना संबंधी बहुत-सी तथ्य जानकारी प्रस्तुत की गयी है । विभि के स्वामी ग्रहों और उनके प्रभाव, नवमांश और द्वादांशाश की चर्चा, क्रूर राशियां, स्त्री-पुरुष और क्लीव तथा द्विभाववाली राशियां, ग्रहों उनके प्रभाव के विवरण विस्तार से हैं । नक्षत्र, तिथि, पक्ष-मास, ऋतु सभी छोटे से छोटे एवं बड़े से बड़े चर्चा करके ज्योतिष को 'वेद-पुरु बतलाया गया है । और कहा गया ज्योतिष सभी वेदांगों का शिरोमणि ज्योतिष में उत्तरायण और दक्षिणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराणों को धार्मिक ग्रंथ मानकर उनके अध्ययन की उपेक्षा ही की गयी, जबकि वे हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा अर्जित ज्ञान-विज्ञान के अक्षय भंडार हैं। इस परंपरागत ज्ञान को सुबोध बनाकर विकसित किये जाने से ही इस देश का कल्याण हो सकता है।

सूर्य और चंद्रमा की स्थिति २७ नक्षत्रों एवं चंद्रमा की अवस्थिति का निर्देश करते हुए उनकी गणना के नियम भी बतलाये गये हैं। सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग इन चारों युगों का कुल जोड़ ४३ लाख बीस हजार वर्ष बतलाया गया है। इनके दशमांश ४ लाख, ३२ हजार को ४ से गुणा करने पर सतयुग की आयु १७ लाख २८ हजार वर्ष निकल आयेगी। दशांश को ३ से गुणा करने पर त्रेता की आयु १२ लाख ९६ हजार वर्ष, २ से गुणा करने पर द्वापर की आयु ८, लाख ६४ हजार वर्ष तथा एक दशांश ४ लाख ३२ हजार वर्ष कलियुग की आयु है।

नारद पुराण के शिक्षा प्रकरण में बतलाया गया है कि ज्योतिष शास्त्र तीन स्कंधों से युक्त है। ये स्कंध हैं—जातक, गणित एवं संहिता। गणित स्कंध में जोड़, बाकी, गुणा, भाग, वर्ग और घन तथा वर्गमूल एवं घनमूल ज्ञात करने की विधियां वर्णित हैं। इनके द्वारा ग्रहों को स्पष्ट करने की रीति, देश-काल का ज्ञान, सूर्य-चंद्र के उदयास्त का ज्ञान आदि का परिचय मिलता है। जातक या होरा स्कंध में राशियों के वर्णन पहचान, ग्रहों की जाति, रूप-गुण, उनकी दृष्टि के फल आदि के वर्णन हैं। संहिता खंड में ग्रहों की गति, तिथि, दिन, नक्षत्र तथा उनके विभिन्न योग, मुहूर्त आदि की चर्चा की गयी है।

गणित की चर्चा करते हुए बतलाया गया है कि एक, दस, शत, सहस्र, लक्ष, कोटि, करोड़, दस करोड़, अरब, खरब, पद्म, दस पद्म, नील शंकु, दस शंकु आदि संख्या सूचक राशियां हैं, जो दश गुणोत्तर प्रणाली के नाम से जानी जाती हैं और दस से लेकर परार्ध 10^{17} तक पहुंचती हैं।

गुण्य-गुणांक, भाज्य-भाजक और भजनफल आदि का कथा-वार्ता के रूप में रोचक वर्णन है। दो समान अंकों के गुणानफल को 'वर्ग' और समान तीन अंकों के गुणनफल को 'घन' का नाम दिया गया है। वर्गमूल एवं घन-मूल निकालने की भी आसान रीतियां बतलायी गयी हैं। गणित के साथ ही बीजगणित के भी कुछ सूत्रों की चर्चा है। गरूड़ पुराण के अंत्येष्टि संस्कार से संबद्ध होने के नाते प्रायः इसका नाम लेना और चर्चा करना भी वर्जित-सा है, परंतु इसमें समाविष्ट तीन संहिताओं से —अगस्त संहिता, बृहस्पति संहिता और धन्वंतरि संहिता ज्ञान-विज्ञान कोश की दृष्टि से इसको विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान स्वतः प्राप्त हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नों का विज्ञान

अगस्त संहिता में महर्षि अगस्त द्वारा मणिमुक्ता एवं विभिन्न रत्नों की उत्पत्ति, गुण-दोष, लक्षण, मुक्ता, हीरा, पन्ना, लाल, नीलम, बैदूर्य, पुष्पराग प्रभृति विभिन्न रत्नों के स्रोत, कौन रत्न किस देश से आता था अनेक प्रकार के मूंगों की चर्चा उनके लक्षण, गुण-दोष, उपयोग और परीक्षण की विधियां आज भी उतनी ही सार्थक एवं उपयोगी हैं, जितनी ग्रंथ के प्रणायन के समय थीं । इतना सूक्ष्य विवेचन और विषय में गहन पैठ देखकर आश्चर्यचकित होना पड़ता है । इस सूक्ष्म एवं व्यावहारिक विधियों के विकास और सर्वमान्य-मानक स्वरूप प्रदान करने में कितना समय लगा होगा, कितना परिश्रम किया गया होगा, कितने मूंगे, मोती, माणिक्य और रत्नों का निरीक्षण-परीक्षण किया गया होगा, यह तो अलग अध्ययन का विषय है । इतना अवश्य कहा जा सकता है कि आज के खनिज वैज्ञानिक, रत्न पारखी और जौहरी इनसे विशेष रूप से लाभांवित हो सकते हैं, परंतु कठिनाई यह है कि इनसे समुचित लाभ के लिए संस्कृत ज्ञान आवश्यक है और संस्कृत अब केवल उपेक्षित ही नहीं, उसे तो पाठ्यक्रम से निष्कासित कर देशवासियों को पूर्वजों द्वारा संचित ज्ञान-विज्ञान से पूर्णतया वंचित करने की तैयारी की जा रही है । गरूड़ पुराण के साथ ही अग्नि पुराण में भी रत्न-परीक्षा, वज्र (हीरा), मरकर्त (पन्ना), मुक्ता आदि के विषय में विशेष ज्ञातव्य तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं ।

आयुर्वेद का ज्ञान

अग्नि पुराण में कई अध्याय आयुर्वेद को समर्पित हैं । इनमें रोगों के निदान, उपच उनकी औषधियों की चर्चा के साथ शरीर-विज्ञान संबंधी भी महत्त्वपूर्ण जान गयी है । शरीर के अवयव, कर्मेंद्रियों क निरूपण पैर से लेकर सिर तक, सभी अं वर्णन, नाड़ी-चक्र कथन, नाभि के नीचे मूलाधार से ७२,००० नाड़ियों के उत्प बीच इडा आदि प्रधान नाड़ियों, प्राण, आदि वायुओं का विस्तार से वर्णन कि है ।

पशुओं का चिकित्सा-शा

मनुष्यों के रोगों और उनके उपचा ही गरूड़ पुराण एवं अग्नि पुराण में घो हाथियों, गायों तथा अन्य पशुओं के लिए भी कई अध्याय सम्मिलित हैं। के सभा पर्व में अश्व-सूत्र एवं गजसू उल्लेख है । अश्वों की चिकित्सा संब आयुर्वेद शास्त्र 'शालिहोत्र' नाम से था ।

इसी प्रकार सर्पों के बारे में भी अध्याय है । इसमें नागों के लक्षण, डसे हुए व्यक्तियों की चिकित्सा, वि औषधियों के विवरण एवं सर्पादि भी बतलायी गयी है ।

वृक्षायुर्वेद पर भी एक अध्याय वृक्षारोपण विधान, विभिन्न वृक्षों के विधि, वृक्षों के फल-फूल आदि के लिए औषधयुक्त द्रव्यों से सींचने के वृक्षों के रोग और रोगनाशक औष विवरण सम्मिलित हैं ।

अग्नि पुराण में अनेक विधाएं 'नानाविध-विधाएं' ही इस पुराण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिपाद्य विषय है । यह पुराण अपने को 'विद्यासार' कहता भी है । ज्योतिष, आयुर्वेद, रत्न-परीक्षा संबंधी अध्यायों के साथ ही इसमें स्त्री-पुरुष लक्षण के लिए भी विशिष्ट अध्याय हैं । समुद्र नामक आचार्य द्वारा बतलाये गये स्त्री-पुरुष लक्षण का सार प्रस्तुत किया गया है । आचार्य समुद्र के नाम से ही यह विद्या सामुद्रिक-शास्त्र कहलाती थी । इसमें बतलाया गया है कि शरीर का कौन अंग किस प्रकार का होने पर शुभ-अशुभ का सूचक होता है । वास्तव में यह 'अंग विद्या' बहुत प्राचीनकाल से प्रचलित रही है ।

गृह, प्रासाद आदि के निर्माण के लिए 'गर्ग विद्या' का सार दिया गया है । इस विद्या के आचार्य गर्ग मुनि थे । सैन्य-विज्ञान के विषय की चर्चा धनुर्वेद संबंधी अध्यायों में की गयी है । वास्तु-पूजा और मूर्ति-निर्माण के लिए भी स्वतंत्र अध्याय दिये गये हैं ।

वास्तव में पुराणों में उल्लिखित उपरोक्त विवरण अपने-अपने विषयों के प्राचीन प्रामाणिक ग्रंथों के आधार पर हैं । कुछ ग्रंथों का तो स्पष्ट उल्लेख किया गया और कुछ विषयों के आचार्यों का । इससे सिद्ध होता है कि संस्कृत में विज्ञान और वैज्ञानिक विषयों पर महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना अति प्राचीनकाल से होती आयी है और पुराणकारों ने इसे ज्ञान बोधगम्य बनाने के लिए अपनी कथा-वार्ता की शैली में प्रस्तुत किया है ।

उपेक्षा के शिकार

पुराणों को धार्मिक ग्रंथ मानकर उनके अध्ययन की उपेक्षा ही की गयी । प्रामाणिक और सुलभ-सुबोध टीकायुक्त संस्करण उपलब्ध न होने के कारण और भी कठिनाई रही । पुराणों में आस्था रखनेवालों को 'पुराण-पंथी' कहकर एक प्रकार से तिरस्कृत ही किया गया । विज्ञान के अध्येयताओं में संस्कृत भाषा का ज्ञान और संस्कृत विद्वानों में विज्ञान की उपेक्षा पुराणों के सम्यक् अध्ययन की विशेष बाधा है ।

वैज्ञानिक विषयों की चर्चा संस्कृत में केवल पुराणों ही तक सीमित नहीं है । वेदों में भी विज्ञान की विविध विधाओं संबंधी अनेक सूत्र उपलब्ध हैं । कुछ वर्ष पूर्व गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य स्व. स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ ने कुछ वैदिक ग्रंथों के सूत्रों को सम्मिलित करके 'वैदिक मैथेमेटिक' नामक ग्रंथ की रचना की । इस ग्रंथ में उन्होंने गणित की आधुनातम विधाओं की समस्याओं का हल करने के लिए 'वैदिक मंत्रों' का प्रयोग किया । इस ग्रंथ का विदेशों में बहुत सम्मान हुआ । अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों में इसके अनुसार गणित की शिक्षा की व्यवस्था होने लगी है । कई विदेशी वैज्ञानिक एवं गणितज्ञ इस पर शोधकार्य कर रहे हैं । कुछ शोध-प्रबंध प्रकाशित भी हुए हैं । हाल ही में रूड़की विश्वविद्यालय के प्रो. नरेंद्र पुरी ने इस ग्रंथ के आधार पर स्कूली छात्रों के लिए 'वैदिक गणित' भी प्रकाशित किये हैं, जो छात्रों में निरंतर लोकप्रिय हो रहे हैं ।

यह पुस्तक अंक गणितीय समस्याओं, संख्या पद्धति, मिश्रित गुणन, बीजगणितीय क्रियाओं, गुणनखंड, सरल द्विघातीय समीकरण, आंशिक भिन्न, कलावकलन, वर्ग एवं घन क्रियाओं, वर्गमूल, घनमूल, निर्देशांक, ज्यामिति एवं अद्वितीय गणित संकेताक्षरों के विलक्षण अनुप्रयोगों से अवगत कराती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंदन में एक विशेष पाठ्यक्रम के द्वारा प्रदर्शित किया जा रहा है कि वैदिक गणित प्रणाली गणित के उच्चस्तरीय पाठ्यक्रम के अनुरूप प्रयोग की जा सकती है ।

स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुसार तो ज्ञान-विज्ञान की कोई ऐसी विद्या नहीं है, जिसकी चर्चा वेदों में न हो । समय के साथ-साथ यह ज्ञान लुप्त होता जा रहा है । १९वीं सदी के अंत में बंबई स्कूल ऑव आर्ट्स में श्री शिवकर बापूजी तलपदे नाम के एक अध्यापक थे । वे वेदों के निष्णात विद्वान थे । उनकी पत्नी भी संस्कृत साहित्य की अच्छी ज्ञाता थीं । संस्कृत ग्रंथों में विमानों के बारे में पढ़कर उन्होंने वैदिक साहित्य में इस विषय का विशेष अध्ययन किया । ऋग्वेद में वर्णित 'मरूत-सखा' और 'पुष्पक' विमानों के विवरण के आधार पर विमान का एक मॉडल भी तैयार किया । 'मरूत सखा' चालकहीन विमान था । सन १८९५ में अपने इस मॉर्डन विमान का बंबई के चौपाटी मैदान में गणमान्य नागरिकों के सामने प्रदर्शन भी किया । विमान १५ फीट की ऊंचाई तक उड़ा और फिर स्वतः नीचे उतर आया । इस प्रदर्शन को देखनेवालों में बड़ौदा नरेश सर सभाजी राव गायकवाड़ तथा बंबई के प्रमुख नागरिक श्री लालजी नारायण भी थे । इस विमान में एक ऐसा यंत्र लगाया गया था जिससे एक निश्चित ऊंचाई तक पहुंचने के बा विमान का ऊपर उठना बंद हो जाता था और वह स्वतः नीचे उतर आता था । तलपदे महो ने अपना मॉडल तत्कालीन प्रसिद्ध विद्वान महादेव गोविंद रानाडे को भी दिखलाया था श्री रानाडे ने उन्हें इस विषय में विदेशी वैज्ञानिकों से संपर्क करने का परामर्श दिया यह बात तलपदेजी को रुचिकर न लगी और उनकी योजना आगे न बढ़ सकी ।

विमानों का उल्लेख कई पुराणों में भी है । भागवत पुराण में देव-दानवों के युद्ध दोनों पक्षों की ओर से युद्ध स्थल में विमान व्यवहार में लाने का स्पष्ट उल्लेख है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में भारतीय ऋषि-मुनियों द्वारा अर्जित ज्ञान-विज्ञान का अक्षय भंडार अब भी उप है, परंतु हम अपनी मानसिक दासता से मु हैं । विदेशी प्राविधिकी आयात करने में ह जितना उत्साह है उसका शतांश भी यदि ह अपने परंपरागत ज्ञान को सुबोध बनाने और विकसित करने में लगाएं तो गरीब देश का संभवतः अधिक कल्याण हो सकेगा ।

—साहित्य नि

शिवाला रोड, गिलिस बाजार,

मनुष्य के अंदर ईश्वरीय उपस्थिति ही अतःकरण है । —स्वेडनबोर्ग

समय और उचित अवसर पर कहा गया एक शब्द युगों की बात है । —कार्नेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि हरिस्मरणे सरसं मनो
यदि विलासकलासु कौतूहलम्
मधुर कोमलकांत पदावली
श्रृणु तदा जयदेव सरस्वतीम्

ऋग्वेद की ऋचाओं में भारतीय गीति-काव्य की जो प्रथम झलक दिखायी देती है, उसका साहित्यिक विकास कालिदास के मेघदूतम्, ऋतु-संहार और भर्तृहरि तथा अमरूक की वाणियों से आप्लावित होता हुआ और महाकवि जयदेव के गीत-गोविंद में अपने चरम उत्कर्ष तक पहुंचता दिखायी देता है । राधा-कृष्ण की केलि-कथाओं और अभिसार-लीलाओं की प्रणय-गाथा का सरस चित्रण अपने पद-लालित्य और उद्दाम श्रृंगार की रहस्यमयी माधुर्य भावना की अंतःसलिला के साथ गीत-गोविंद को संस्कृत गीति-काव्य का अनुपम रत्न बना देता है ।

कौन थे विद्यापति ?

● डॉ. सत्यभूषण वर्मा

जयदेव की इसी गीति-परंपरा के अन्यतम कवि हैं विद्यापति । बंगाल में जिस समय चैतन्य महाप्रभु का आविर्भाव हुआ, उस समय मिथिला की गलियों से उठे विद्यापति के गीतों के स्वरों की गूंज से बंगाल का रसिक समाज निनादित हो चुका था । शताब्दियों तक विद्यापति बंगाली कवि ही माने जाते रहे । स्वयं चैतन्य महाप्रभु विद्यापति के गीतों को गाते हुए

कौन थे विद्यापति ? कहां और कब जन्मे थे ? वैष्णव थे या शैव ? भक्त थे या श्रृंगारी ? बंगाली थे या बिहारी ?— ऐसे अनेकानेक प्रश्न वर्षों से विवादास्पद रहे हैं ? आखिर कौन थे विद्यापति ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावावेश में मूर्च्छित हो जाते थे । विद्यापति के गीत राजमहलों से लेकर झोपड़ियों तक और मंदिरों से लेकर कोहबर घरों तक समान तन्मयता के साथ गाये जाते हैं । एक शिव पुजारी गाता है—**करवन हरब दुख मोर हे भोलानाथ** तो नव-वधू को कोहबर ले जाती हुई सखियां गाती हैं—**सुंदरि चललिहुं पहुघर ना, जाइलहि लागु परम डरना ।'ससन परस खसु अंबर रे देखलि धनि देह** गुनगुनाते हुए एक नवयुवक अपनी कल्पना की युवती के देह-सौंदर्य के ध्यान में रोमांचित हो उठता है, तो शिथिल गात एक वृद्ध जीवन की व्यर्थता की ग्लानि में गा उठता है—

तातल सैकत वारि-बुंद सम सुत-मित-रमनि-समाज
तोहि बिसरि मन ताहि समप्पिनु अब मझु हब कौन काज
माधव, हम परिनाम निरासा

कौन थे विद्यापति ? कहां और कब जन्मे थे वे ? वे वैष्णव थे या शैव या शाक्त ? भक्त थे या श्रृंगारी ? बंगाली थे या बिहारी ? ऐसे अनेकानेक प्रश्नों पर वर्षों साहित्यिक वाद-विवाद होते रहे हैं । आज यह निर्विवाद कि वे मैथिल कवि थे और इस नाते वे हिंदी कृष्ण-काव्य परंपरा के प्रथम कवि थे । सम्प्र विवादों से छनकर जो तथ्य हमारे हाथ लगे उनके अनुसार वे मैथिल ब्राह्मण थे और उन्ह जन्म दरभंगा के बिसपी गांव में हुआ था। प्रसिद्ध है कि वे मिथिला के राजा शिवसिंह आश्रय में रहे । बिसपी गांव विद्यापति के वंशजों को राजा शिवसिंह का ही दिया हुआ है । इस संबंध में शिवसिंह का दिया हुआ ताम्रपत्र उपलब्ध है, जिसका समय २९३ लक्ष्मणाब्द है । जनश्रुति के अनुसार विद्या शिवसिंह से दो वर्ष बड़े थे और शिवसिंह वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठे थे । यदि शिवसिंह ने गद्दी पर बैठने के बाद ही विद्या को बिसपी गांव दिया हो, तो विद्यापति क लक्ष्मणाब्द २४१ या विक्रम संवत १४०३ अथवा ईस्वी सन १३५० के लगभग मान सकता है । इसी प्रकार अनेक अनुमानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतःसाक्ष्यों के आधार पर उनका मृत्यु समय ईस्वी सन १४३८ के लगभग माना जा सकता है।

विद्यापति ने अपने जीवनकाल में अनेक ग्रंथों की रचना की। कहा जाता है, केवल बीस वर्ष की आयु में ही उन्होंने अपने पहले ग्रंथ 'कीर्तिलता' की रचना की थी, जिसमें महाराजा कीर्तिसिंह के यश की गाथा वर्णित है। अपनी भाषा पर वे इतना विश्वास अर्जित कर चुके थे कि अपने प्रथम ग्रंथ के आरंभ में ही वे लिखते हैं—

बालचंद बिज्जावइ भाषा
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा
ओ परमेसर हर-सिर सोहइ
इ निच्चय नायर मन मोहइ

अर्थात, 'बाल चंद्रमा और विद्यापति की भाषा—इन दोनों को दुष्टों की हंसी नहीं लग सकती। वह (बाल-चंद्रमा) परमेश्वर शिव के शीश पर शोभित है और यह (विद्यापति की भाषा) निश्चय ही नागर-हृदयों को मोहती है।'

सेवक थे शिव उनके

विद्यापति अपने जीवन-काल में अनेक राजाओं के साथ रहे और प्रायः सभी के नाम से उन्होंने ग्रंथ रचे हैं। परंतु विद्यापति की कीर्ति का आधार-स्तंभ उनकी पदावली है, जिसमें मुख्यतः महाराजा शिवसिंह और उनकी रानी लखिमादेई के नाम पर राधा-कृष्ण के प्रणय-संबंधी पदों का संग्रह है। प्रणय संबंधी पदों के अतिरिक्त शिव की नचारियां, गंगा, दुर्गा आदि की स्तुति, नीति आदि संबंधी विविध पद भी इस पदावली में संकलित हैं। एक किंवदंती के अनुसार स्वयं भगवान शिव इनकी भक्ति पर

प्रसन्न होकर सेवक के रूप में इनके पास रहते थे।

विद्यापति की राधा सृष्टि की अपरूप सुंदरी है। किसी अपूर्व विधाता ने सृष्टि के समस्त लावण्य-सार से उसकी रचना की है—

अपुरुब के बिहि आनि मिलाओल
खिति-तल लावनि-सार

राधा अभी वयः-संधि के द्वार पर है और यौवन की ओर बढ़ रही है। कवि कहता है—

पहिल बदरि कुच पुन नवरंग
दिन दिन बाढ़ए पिड़ए अनंग
से पुन भए गेल बीजकपोर
अब कुच बाढ़ल सिरिफल जोर

—बदरि (बेर), नवरंग (नारंगी), बीजकपोर (बड़ा नीबू) और फिर सिरिफल (बेल) के क्रम से विकसित होते कुचों के साथ राधा वयस की सीढ़ियां चढ़ रही है और उसी क्रम से अनंग की कसक की मृदुल पीड़ा भी दिन-दिन बढ़ रही है। एक ओर अपूर्व रूप और यौवन की संपत्ति लिए नायिका राधा है और दूसरी ओर नवयुवक चंचल किशोर नायक कृष्ण है। नंद का बेटा कदंब वृक्ष के नीचे संकेत-स्थल पर बैठा मुरली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तान छेड़कर राधा को मिलन के लिए बुला रहा है—

नंदक नंदन कदंबक तरुतर
धिरे धिरे मुरली बजाव
समय संकेत निकेतन बइसल
बेरि बेरि बोलि पठाव

और यहां से आरंभ होती है प्रणय की एक मादक गाथा, जो वयःसंधि, नख-शिख, सद्यःस्नाता, प्रेम, दूती नोक-झोंक, सखी-शिक्षा, मिलन, कौतुक, अभिसार, मान, विदग्ध-विलास और विरह आदि प्रसंगों से होती हुई मंदाकिनी की भांति छल-छल करती आगे बढ़ती है । इन प्रसंगों में काम-सूत्र के संकेतों के आधार पर राधा-कृष्ण का परिरंभन है, विलास है और केलि-क्रीड़ा है । राधा के रूप में मानो सुनहले स्वप्न अवतरित हुए हैं । जहां उसके पैर पड़ते हैं, वहां कमल खिल उठते हैं—**जहं जहं पग जुग धरइ, तहं तहं सरोरुह झरइ**

उसकी चितवन में कामदेव के बाण हैं, पांच नहीं, वरन सभी दिशाओं से छूटे शत-सहस्र बाण— **जहं जहं कुटिल कटाख, ततहि मदन सर लाख**

सृष्टि के समस्त उपमान राधा के शरीर में एकत्र हो गये हैं । हिरण, चंद्र, कमल, हीरक स्वर्ण और कोयल क्रमशः उसके नेत्र, मुख, देह-गंध, चाल, शरीर की कांति और मधुर वाणी के उपमान से जान पड़ते हैं—

हरिन, इंदु, अरविंद, करिनि हेम
पिक बूझल अनुमानी
नयन, बदन परिमल, गति, तन रुचि
अओ अति सुललित बानि

उसके सुंदर कपोल मणिजटित कर्णकुंडल से सुशोभित हैं । अधरों की लालिमा से बिंबाफल लज्जित होकर नीचे गिर रहा है, भौंह भ्रमर के समान काली हैं और सुंदर नासापुट देखकर कीर भी लज्जित हो जाता है—

लोल कपोल ललित मनि-कुंडल
अधर बिंब अध जाई
भौंह भ्रमर, नासापुट सुंदर
से देखि कीर लजाई

अपने मुख-चंद्र को धोकर राधा ने अंचल से पोंछकर आंचल निचोड़ा तो मुख-चंद्र से धुले हुए अमृत ने दसों दिशाओं में उजाला दिया—

अमिय धोय आंचर धनि पोछलि
दह दिसि भेल उंजोरे

विद्यापति के कृष्ण भी किसी से कम नहीं, वे करोड़ों ही कामदेवों का गर्वभंजन करते हैं—**मनमथ कोटि मथन करु जे जन से हरि. . .** । उन्हें देखकर एक बार तो राधा कह उठती है—

सखि पेखल एक अपरूप
सुनइत मानवि सपन सरूप

वे राधा के सद्यःस्नाता रूप को देख लेते हैं

कामिनी करए सनाने
हेरतहि हृदय हनए पंचबाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पयोधरों को छूकर झूलती हुई मोतियों की लड़ी देखकर शंभु के शीश पर ढरती हुई सुरसुरि गंगा की याद आती है—

गिरिवर-गरुअ पयोधर-परसति
प्रिम-गज-मोतिक हारा
काम-कंबु भारे कनक संभुपरि
ढारत सुरसरि धारा

पवन के स्पर्श से वस्त्र खिसक गया, बाला की देह दिखायी दे गयी, मानो बादलों के नीचे से बिजली की रेखा संचरण कर गयी—

ससन-परस खसु अंबर रे
देखल धनि देह
नव जलधर-तर संचर रे
जनि बिज़ुरी-रेह

लालच कौए को

समस्त पदावली में इसी प्रकार रमणी-सौंदर्य के स्निग्ध उन्मादक चित्र मिलते हैं । कहीं स्नान करती सुंदरी का, कहीं यौवन की छटा छिटकाती मुग्धा का, कहीं मानिनी के सरोष भ्रू-भंग का और कहीं विरहणि के म्लान मुख का सौंदर्य इन गीतों में सजीव हो उठा है । दोनों ओर से दूतियां परस्पर संदेश पहुंचाती हैं । सखियां मिलन की तैयारी करती हैं और अंत में मिलन होता है । रति-केलि की गुह्य से गुह्य चेष्टाओं की व्यंजना गीतों में मुखरित होती है—

अधर मंगइते अओंध कर माथ
सहए न पार पयोधर हाथ

आनंद की उमंग में कवि कहता है—

निबि बंध हरि किए कर दूर
रहो पए तोर मनोरथ पूर

ऐसे घोर श्रृंगारिक पदों में भी कहीं-कहीं अंतिम एक-दो पंक्तियों में ऐसी उक्तियां मिल जाती हैं, जो 'यदि हरिस्मरणे सरसं मनो' की

परंपरा में भक्ति के रहस्यमय संकेत देने लगती हैं, यथा—

धन्य धन्य तोर भाग गोक्षलिनी,
हरि भज हृदय हुलसिया

अथवा,

एहो विद्यापति भाने, गूजरि भज भगवाने

रस में पागल नायक को मधुर शब्दों में नायिका समझाती है—

हे हरि ! हे हरि ! सुनिए स्रवन भरि
अब न विलासक बेरा

क्रमशः अभिसार, मान, मानभंग आदि अवस्थाएं आती हैं । एक दिन कृष्ण चले जाते हैं । विरह में राधा व्याकुल होकर माधव-माधव रटते-रटते राधा-माधव का भेद भूलकर राधा-राधा ही रटने लगती है । वह चाहती है, कोई आकर कह दे कि उसके प्रीतम आ रहे हैं । पक्षी ही यह सूचना दे दे । एक कौए को देखकर वह कहती है—

काक भाख निज भाखह रे
पहु आवत मोरा
खीर-खांड भोजन देब रे
भरि कनक कटोरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर की गोपियां कौवे को स्वर्ण से चोंच मढ़वा देने का लालच देती हैं पर कौआ शायद, कटोराभर खांड मिले दूध को अधिक पसंद करेगा और यदि उसे स्वर्ण ही पसंद है तो विद्यापति की राधा उसे कनक-कटोरे में भोजन कराने का लालच देती है ।

विद्यापति की तुलना

परवर्ती साहित्य में भाव और कला की दृष्टि से विद्यापति की तुलना सूर से ही की जा सकती है । विद्यापति और सूरदास दोनों ने गीत-शैली में राधा-कृष्ण की लीला का गान किया है । विद्यापति के संयोग-श्रंगार में घोर ऐंद्रियता मिलती है पर वियोग वर्णन में विद्यापति की राधा प्रेम के उस उदात्त रूप को प्राप्त कर लेती है, जिसका पूर्ण विकास सूरदास की गोपियों में मिलता है, यथा—

जुग-जुग जीवहु, बसहु लाख कोस
हमर अभाग, हुनक नहि दोस

सूर का प्रसिद्ध पद 'अद्‌भुत एक अनूपम बाग' विद्यापति के एक पद 'माधव की कहब सुंदरि रूपे' का रूपांतर प्रतीत होता है । सूर की अनेक उक्तियों में विद्यापति से अद्‌भुत साम्य है ।

विद्यापति की रचनाएं संस्कृत, अवहट्ट और मैथिली में मिलती हैं, परंतु राधा-कृष्ण लीला उन्होंने मैथिली में ही गायी है । अन्य किसी रचना में उन्होंने राधा-कृष्ण का वर्णन नहीं किया । राधा-कृष्ण संबंधी अधिकांश पदों में राजा शिवसिंह और उनकी रानी लखिमादेई का उल्लेख है, यथा— **राजा सिवसिंघ रूपनारायन, लखिमादेई रमाने अथवा, रूपनारायन नागर रे, लखिमादेई कंत**

ऐसा प्रतीत होता है, कवि ने अपने राजा-रानी को ही राधा-कृष्ण के रूप में देख स्त्री-पुरुष की रति-भावना का विशद चित्र किया है । उनके पदों में जयदेव की कोमल-कांत पदावली, हरि-स्मरण कथा औ विलास-कला कौतूहल तो है ही, प्रेम की मिटनेवाली अमर साध भी है । उनकी राध कहती है—

सखि कि पूछसि अनुभव मोय
से हो पिरित अनुराग बखानिए तिल तिल नूत
जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपि
सेहो मधु बोल स्रवनहि सूनल स्रुति पथ परस

विद्यापति के पश्चात हिंदी गीति-काव्य में कबीर, तुलसी, सूरदास और मीरा के उल्लेखनीय हैं । कबीर आदि संत-कवियों गीतों में श्रृंगारिकता एक आवरण मात्र है । झीनी-झीनी भीनी चदरिया की भांति पारल तुलसी में इष्टदेव के प्रति लोक-मर्यादा की है । मीरा में विद्यापति का-सा छंद-वैभव और न भाषा का वह परिमार्जन । राधा-कृ की प्रणय-कथा का संस्कृत की नायिका-भे परिपाटी के अनुसार वर्णन हिंदी साहित्य विद्यापति की देन कहा जा सकता है । भक्तिकाल ने विद्यापति से शैली पायी, ने गाथा । एक ने अलंकार पाया, दूसरे ने अलंकार्य । विद्यापति ने आगे आनेवाले साहित्य को एक छोर से दूसरे छोर तक स्पर्श से प्रभावित कर दिया ।

—प्रोफेसर तथा
पूर्व एशियाई भाषा
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्
नयी दिल्ली—1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

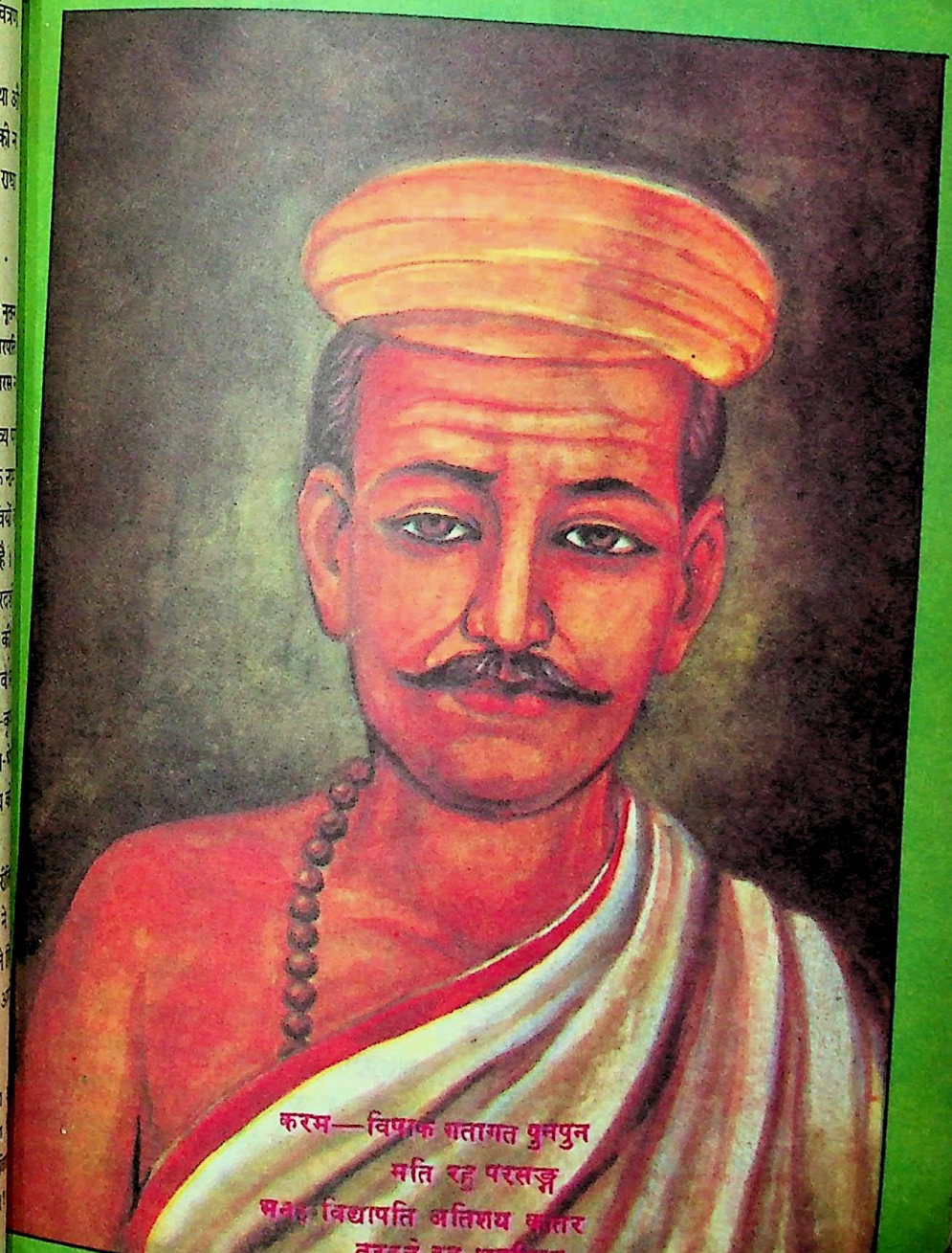

कविकुलभूषण विद्यापति

जन्म : विक्षपी (दरभंगा जिला)

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

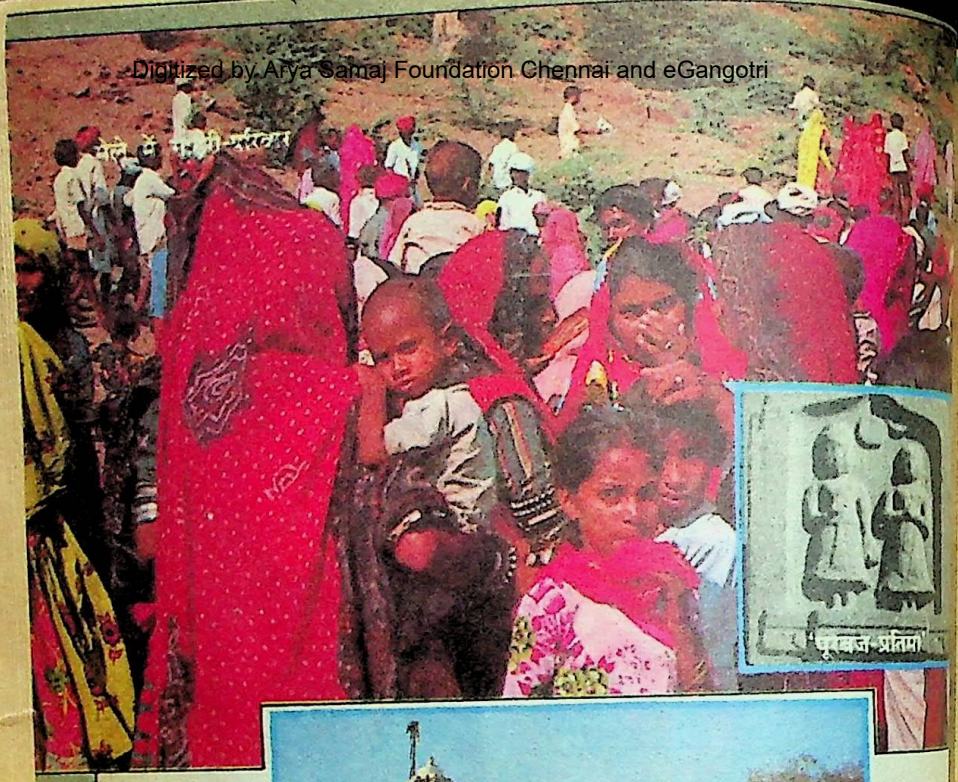

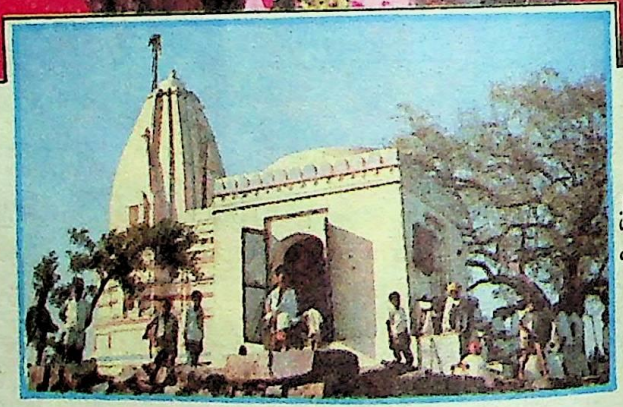

छाया : एन. पी. सिंह

ताणा पहाड़ पर स्थित चामुंडा माता का मंदिर—
जहां भैंसा भविष्यवाणियां करता है !

जिन्हें भेड़ें पालती हैं

● श्रीकृष्ण 'जुगनू'

सामान्यकद, माथे पर फेंटा बांधे, घुटने तक धोती पहने और बदन पर अंग पहने नाराण ने अपनी पत्नी नाराणी, जो घुटने कुछ नीचे तक एक ही वस्त्र का बिना सिला घाघरा और कांचली पहने हैं तथा हाथ की हुई ओढ़नी ओढ़े हैं को डांटा, 'अरे तुम्हें भूख-प्यास की पड़ी है, पहले भेड़ों को तो खिलाती-पिलाती...'

यह दृश्य है राजस्थान की प्रमुख पशु जाति गाडरी का। गाडरी, गायरी अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गडेरिया मुख्यतः राजस्थान के उदयपुर संभाग तथा मध्य प्रदेश के सीमावर्ती इलाकों में बसते हैं। सैकड़ों सालों तक खानाबदोश का जीवन बितानेवाली इस जाति ने १२वीं शताब्दी के आस पास बसना शुरू किया। आज चित्तौड़गढ़, उदयपुर, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, अजमेर आदि जिलों में इनके कई गांव हैं।

गाडरियों के बारे में लोकोक्ति है कि कहने को ये लोग भेड़ें पालते हैं वरना तो भेड़ें इनको पालती हैं। ये निपुण पशुपालक होते हैं और उनसे प्राप्त दूध, घी, ऊन आदि का व्यापार करते हैं।

गाडरियों की उत्पत्ति के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता किंतु इतना अवश्य है कि ये आर्येत्तर जाति के रूप में विकसित हुए। गाडरियों में यह किंवदंती प्रचलित है कि उनके आदि पुरुष सामो ऋषि थे। ये कृष्ण के भक्त थे। जब सामोऋषि गोकुल में थे तब कृष्ण ने गाडरों (भेड़ों) को प्रकट किया और उनकी देखरेख, पालन-पोषण आदि का जिम्मा उन्हें सौंपा गया। कालांतर में सामोऋषि की कई संतानें हुईं। सभी गाडरों (भेड़ों) को ही चराने का काम करते थे। इसी कारण वे गाडरी कहलाये।

ये लोग पहले समूह में चलते थे। टोली में स्त्री, पुरुष तथा बच्चों के अतिरिक्त बैलगाड़ियां, भेड़ बकरियां, कुत्ते आदि होते थे। जहां कहीं पशुओं को चरने योग्य जगह दिखायी देती, रुक जाते। खेतीहर लोग भेड़ों की मिंगणियों और खाद के लिए इनको खेतों में भी ठहराते थे। बदले में पैसा देते। जहां रुकते, वहीं बस्ती—जैसा वातावरण उपस्थित हो जाता था। चरागाह, पानी और कृषि योग्य भूमि देखकर ये बस भी जाते थे, जब तक जी लगता।

जहां जिसने खूंटी लगायी, उसी के नाम से गांव का नामकरण हो जाता, गाडरियों के गांवों के आगे प्रायः खेड़ा, खेड़ी, भागल आदि शब्द लगते हैं जैसे धन्ना की भागल, कानड़खेड़ा, गाडरियों की खेड़ी, ढाणी आदि। छोटे गांवों को मजरा भी कहा जाता रहा है।

गाडरियों की एक उपजाति भी होती है—पूरबीया। दोनों जातियों के बीच भोजन-व्यवहार होता है लेकिन 'बेटी-व्यवहार' नहीं होता। बेटी-व्यवहार शादी को कहते हैं। पूरबीया लोग भेड़ें नहीं पालते बल्कि भेड़ों से प्राप्त होनेवाले ऊन को कातकर उनसे कंबल बनाते हैं। आजकल वे प्रमुखरूप से खेती पर

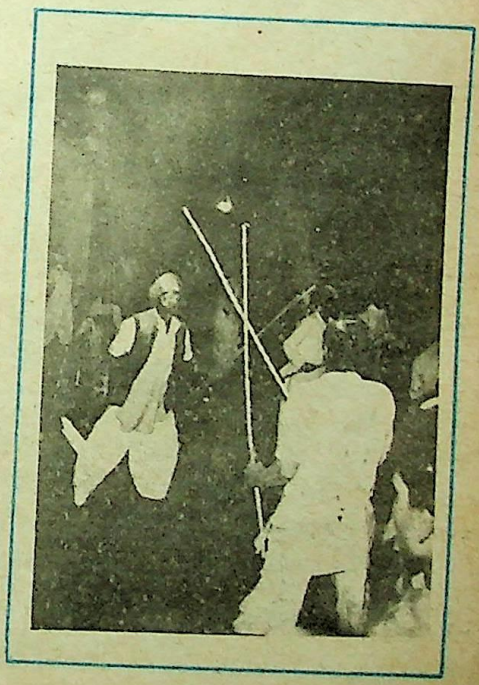

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही आश्रित रहने लगे हैं ।

गाडरी प्रायः झगड़ों से दूर रहनेवाली और भोली जाति हैं । मान्यता है कि इनके भोलेपन पर ही शिव के गण भैरव प्रसन्न हो गये । वचनबद्ध हो गये कि 'कहीं भी प्रस्तर-प्रतिमा पर सिंदूर-मालीपन्ना लगा देने पर वह मेरा स्वरूप हो जाएगा । कभी भी थोड़ा-सा धूप-दीप कर देंगे तो मैं आ जाऊंगा ?' वचनानुसार भैरव गाडरियों पर सहज ही आ जाते हैं, भले ही वह नहाया हुआ भी नहीं हो ।

इस जाति में ५२ गोत्र हैं, जिनके नाम बड़े विचित्र हैं, जैसे दगरता, चंडाल्या, दवाला, डीगा, नानकड़, चेची, खोड़, छड़ा, पाढोद, काबर्‌या, गूगली, चित्तमार, नाचण्या, रातड्या, भोगु आदि । प्रत्येक गोत्र की अपनी-अपनी गौरव-गाथाएं भी प्रचलित हैं ।

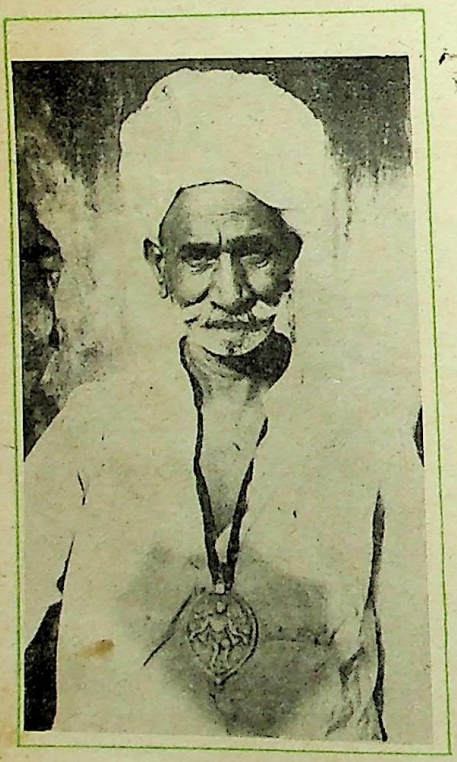

पूर्वजों में विश्वास

ये शगुन-अपशगुन पर बहुत विश्वास करते हैं । पितर तथा पितराणियों की भी इनमें मान्यता है । पितर परिवार के ही पूर्वज होते हैं, जो मृत्यु के मोक्ष अथवा पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त हुए । उन की स्मृति में गाडरी लोग पत्थर की प्रतिमा बनाकर घर अथवा खेत में स्थापित करते हैं । कई बार चांदी की पुतली बनाकर गले में पहनते हैं ।

गाडरियों की प्रत्येक बस्ती में भैरव (देवनारायण) के स्थान मिल जाएंगे । ये 'देवरे' कहे जाते हैं । शुक्रवार-शनिवार को भैरव की चौकी होती है । घर परिवार में कभी भी बीमारी होने पर ये लोग पहले भैरव से पूछते हैं कि यह दैहिक पीड़ा है या दैविक प्रकोप ? भैरव के अतिरिक्त ये लोग चामुंडा माता, ठाकुरजी, हनुमानजी, ताखाजी, गोगा को मानते हैं, भैरव और माताजी की सवारी जिस व्यक्ति पर आती है, वह भोपा कहलाता है । भोपा अपने गले में चांदी की पुतली जिसे 'नामा' कहते हैं धारण करता है । चित्तौड़ जिले के ताणा गांव में गाडरियों की चामुंडा माता का सबसे बड़ा मंदिर बना हुआ है । दशहरे पर भैंसे की बलि दी जाती है । बलि के बाद, भैंसे को पहाड़ से नीचे गिराते हैं । यदि पहाड़ से सीधा नीचे गिरता है अथवा सामने है या बीच में गिरता है— इन बातों के आधार पर ये लोग आनेवाले जमाने का शकुन लेते हैं । यदि शव पूर्णतः नीचे गिरता है, तो अगले साल सुकाल होगा, ऐसा माना जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रमशील महिलाएं

गाडरी महिलाएं प्रकृति से भोली और सुंदर होती हैं। मेहनती और हुनरमंद होती हैं। ये अपने वस्त्रों की सिलाई स्वयं करती हैं। इनके वस्त्रों का मुख्य रंग लाल होता है। महिलाएं प्रायः फेंटिया या नांदणा (लहंगे के वस्त्र), कांचली पहनती हैं और बंदेज की ओढ़नियां ओढ़ती हैं। ये वस्त्र आकोला के छीपा लोग तैयार करते हैं। गाडरी महिलाओं की वर्षभर की एक-सी पोषाक होती है, ये नाक में नथ, गले में हांसली, रामनामी, माला, हाथ में कांकण, बगड़ी, मामातो (चांदी की चूड़ियां), कानों में झूमरियां, टोप्स, पैरों में मोटे-मोटे कड़े, कमर पर कंदोरा (करधनी) व अंगुलियों में अंगूठियां आदि पहनती हैं।

होली, दीवाली, राखी, नौरात्रां, मकर संक्रांति आदि उत्सवों के अतिरिक्त एक और त्यौहार ये लोग मनाते हैं— 'खेंखरा'। यह त्यौहार दीपावली के दूसरे दिन आता है। इस दिन शाम को ये अपने बैलों को नहाते हैं। उन्हें सींग से लेकर पूंछ तक रंगते हैं। फूल-मालाओं से सजाते है, तदंतर मुखिया के हाथ से उसकी पूजा करवाते हैं। होली के दिनों में गाडरी लोग फाग तथा 'गैर' खेलते हैं।

इनमें शादियां बहुत पास-पास होती हैं। अर्थात अपने गांव से अधिक दूर न तो बेटी देते हैं और न बेटी लेते हैं। अपनी तथा ननिहाल का गोत्र छोड़कर विवाह-संबंध तय किया जाता है। ये लोग बाल-विवाह के पक्षधर होते हैं, किंतु पुत्री को यौवनावस्था में ही ससुराल भेजते हैं। यदि किसी कारणवश सगाई अथवा शादी टूट जाए तो मुआवजा देकर संबंध-विच्छेद कर दिया जाता है।

ये लोग अपनी उम्र बहुत कम मानते हैं। अधेड़ उम्र में ही गाडरियों के दांत गिर जाते हैं और वह वृद्ध और कृशकाय दिखायी देने लगते हैं।

मरने पर गाडरी शवदाह करते हैं, किंतु मरनेवाले के नाम पर शेष परिजन मुंडन नहीं करवाते हैं। इनकी यह परंपरा विचित्र है कि मरनेवाले के शवदाह के बाद बारह दिन तक शमशान में जाकर एक व्यक्ति (भाट) मृतक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का गुणगान करता है । दोहे पढ़ता है ।

गाडरी झगड़ों और समस्याओं की निवृत्ति के लिए जाति पंचायत का ही सहारा लेते हैं । पंच परमेश्वर का दिया गया फैसला पत्थर की लकीर मानते हैं । प्रायः पंचों के ही कहने पर विवाह-संबंध तय करते हैं किंतु उस पर भैरव की स्वीकृति लेना आवश्यक मानते हैं ।

संरक्षण की आवश्यकता

पिछले कुछ वर्षों से लगातार पड़े अकाल से जहां गाडरियों के कांकड (चरागाह) समाप्त हो गये हैं, वहीं इन्हें जन-सुविधाओं से वंचित भी कर दिया है । एक गाडरी मोतीजी ने बताया कि 'दिनों-दिन भेड़ों से घास मंहगी होती जा रही है,' तथाकथित सरकारी योजनाएं भी इनके लिए कारगर नहीं रही हैं । 'अंत्योदय योजना' के तहत भेड़ पालन के लिए दिया जानेवाला ऋण भी कमर तोड़ सिद्ध हुआ है । अकाल-दर-अकाल के बाद भी ऋण-किश्तों में ढील नहीं देकर 'पेनल्टी' के साथ रुपया वसूलने की नीतियों से गाडरी लोग ना खुश हो गये हैं ।

"आज एक भेड़ दो सौ से चार सौ रुपये में आती है किंतु एक भेड़ अपने जीवन में इतना मुनाफा भी नहीं दे सकती है कि वह उसके मूल्य के बराबर भी हो सके । भेड़ों की ऊन बीस-बाइस रुपये प्रति किलो के भाव से बिक है किंतु यह संभव नहीं कि एक भेड़ एक वर्ष एक किलो ऊन भी दे पाये ।"

यह बात कहनेवाले कुछ गाडरियों ने यह बताया कि दिनों-दिन आधुनिकता भी उनमें घ करती जा रही है कहना न होगा इस समय अन्यमनस्कता से भले ही गाडरी लोग भेड़ें च रहे हैं, किंतु स्वयं पेट भरने के लिए चिंतित है आवश्यकता है, सरकारी संरक्षण और समुचि मार्ग दर्शन की ।

'निहारिका', ८२५ सीमेंट रोड, आकोला-३१२२०५ जिला- चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

पर्यावरण को हानि पहुंचाए बिना कूड़े-कचरे के निपटान के लिए पश्चिम जरमनी की एक कंपनी ने दस करोड़ मार्क की लागत से एक विशाल भस्मीकरण संयंत्र स्थापित किया है। इस संयंत्र में एक हजार डिग्री तापक्रम पर बीस हजार टन गाढ़े कचरे को और नब्बे हजार टन अवमल को प्रतिवर्ष जलाकर भस्म किया जा सकता है । इसके साथ ही कचरे को जलाने से निकली गैस का उपयोग ऊर्जा के रूप में किया जा सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसाइयां

जूली और पामेला बचपन की सखियां थीं। विवाह के बाद भी दोनों में मैत्री बनी रही, कारण दोनों का विवाह एक ही नगर में हुआ था। अचानक एक दिन दोनों के बीच किसी बात को लेकर मन-मुटाव हो गया और फिर बातचीत बंद। महीनों बीत गये। उनकी तीसरी सहेली से यह देखा न गया। उसने अपने पति से कहा, "दोनों के बीच सुलह करा देनी चाहिए।"

पति ने उत्तर दिया, "बेकार है, कोशिश करना। दोनों ने आजीवन बात न करने की कसम खायी है।"

"तुम देखते तो रहो।" पत्नी ने जवाब दिया।

दूसरे दिन सुबह वह बारी-बारी से दोनों सहेलियों से मिली और दोपहर तक जूली और पामेला में फिर से दांत-काटी दोस्ती थी।

तीसरी सहेली के पति को यह देखकर आश्चर्य हुआ। उसने रात को अपनी पत्नी से पूछा, "तुमने ऐसा कौन-सा जादू किया?"

"जादू की जरूरत क्या थी? बस, दोनों को चटखारे ले-लेकर एक गप सुनायी, यह वचन लेने के साथ कि वे किसी और को उसे नहीं बताएंगी। बस, दोनों एक दूसरे को उसे बताने के लिए व्यग्र हो उठीं।"

बीट्रिस लिली की हाजिर-जवाबी के कई किस्से हैं। वे लेडी पील के नाम से भी जानी जाती थीं। उनका एक किस्सा:

एक बार वे किसी घाटी में चमचमाते मोतियों का हार पहनकर गयी थीं।

हार की ओर ईर्ष्या से देखते हुए एक महिला ने

कहा, "कितने सुंदर मोती हैं।"

लेडी पील मुसकरा दीं।

उसी महिला ने फिर कहा, "सच्चे मोती तो दांतों से चबा कर परखे जा सकते हैं। लाइए, जरा देखूं।"

"आप ठीक कहती हैं। पर एक बात ध्यान रखें, नकली दांतों से मोतियों की असलियत नहीं परखी जा सकती।"

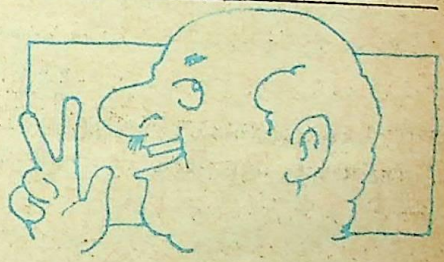

कहा जाता है कि कोई पुरुष तो केवल एक कारण से कोई वस्तु खरीदता है, पर एक स्त्री के पास उसे खरीदने के आठ कारण होते हैं। मसलन— १. पति ने उस वस्तु को खरीदकर देने से इनकार कर दिया है। २. उसे पहनने से वह छरहरी दिखायी देगी। ३. वह पेरिस की बनी है। ४. पड़ोसी उस वस्तु को नहीं खरीद सकते। ५. किसी के पास वह नहीं है। ६. सबके पास वह है। ७. वह दूसरों से भिन्न है। और आठवां अंतिम कारण 'इसलिए'।

स्कूल की परीक्षा में एक प्रश्न पूछा गया— 'मनुष्य के जन्म पर प्रकाश डालिए।'

एक नन्हीं बच्ची ने यह उत्तर लिखा— 'पहले ईश्वर ने आदम को बनाया। उन्होंने उसकी ओर ध्यान से देखा, और फिर सोचा कि दूसरी बार प्रयत्न करने से वह और बेहतर सृष्टि करेंगे। और तब उन्होंने हव्वा को बनाया।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्ताक्षर

● कमल कौल

आज जिस स्थान पर झरना खड़ी थी, कौन उत्तरदायी था उसके लिए ? वह स्वयं, बंधु समाज या उसके जन्मदाता । अतीत की सुखद स्मृतियां कभी की प्राणलेवा सर्पदंश का रूप धारण कर चुकी थी । विषैली स्मृतियों के दावानल में मन-प्राण भस्म हुए जा रहे थे । हां ! आज वे स्मृतियां अंतर्मन को किसी भी आनंदमयी अनुभूति से अभिभूत नहीं करती थी । देती थी तो केवल मर्मांतक पीड़ा । क्यों इतनी अबोध थी वह ! क्यों इतनी निरीह थी वह ? क्यों न जान पायी वह पितृजनित भाईयों का वास्तविक रूप ? क्यों नहीं परामर्श लिया उसने स्वयं के पति तथा शुभचिंतकों से ? आज मानस पटल पर अतीत की एक-एक स्मृति उदित हो, हृदय को असीम व्यथा सागर में डूबो नयनों को लक्ष-लक्ष-अश्रु धूली धूसरित करने पर विवश कर रही थी । कितनी असहाय है अब वह ।

आज भी वह श्रीहीन प्रातः झरना के चक्षुओं सम्मुख दामिनी-सा दमक जाता जब उसके पिता एक माह तक घोर यातना सह, इस नश्वर संसार से सर्वदा के लिए विदा हो गये । कैसा हृदय-विदारक दृश्य था वह ! एक ओर शुभ्र वस्त्र में लिपटी हुई हल्दी-सी पीताभ पिता की मृत देह और दूसरी ओर मूर्छित पड़ी दीन-हीन मां । बड़े भैया तो दिगभ्रांत-से कभी मां को उठाने की चेष्टा करते तो कभी पिता के मृत शरीर को इतनी सावधानी से ढांपने का यत्न करते मानो उनकी निद्रा भंग न हो जाए । हां निर्निमेष नेत्रों से हर क्रिया-कलाप को देख रहा था । शेष दूसरा, चौथा व पांचवा भाई अ करुण क्रंदन से धरती आकाश एक किये हु थे । और वह ! वह स्वयं तो अर्धविक्षिप्त चुकी थी, कहां मृत्यु हुई है ? पिताजी की तुम सब झूठ बोलते हो ? ये देखो ! नेत्र हैं इनके । उठो पिताजी, उठो ना, नहीं तो अपने घर चली जाऊंगी । और जब झरना लाख यत्न करने पर भी पिता निश्चल पड़े ना जाने कहां से तिमिराच्छादित झंझा-झंक गर्जन करते हुए आया कि वह चेतना शून्य होकर धरती पर गिर पड़ी । और जिस दि उसकी चेतना लौटी, उस दिन केवल बच तो पतझड़-रूपी राहु से ग्रसित उष्ण लू के खाता, श्रीहीन उपवन । पथिक तो कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

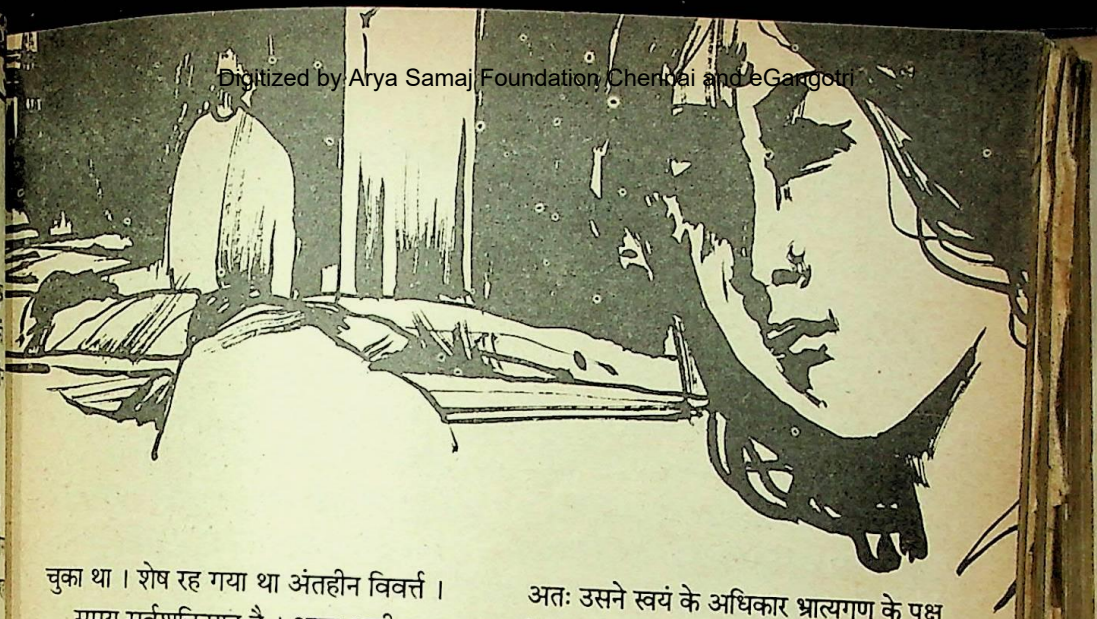

चुका था । शेष रह गया था अंतहीन विवर्त्त ।

समय सर्वशक्तिमान है । आज असीम वेदना की विद्युतवाहिनी हृदय में प्रवाहित नहीं हो रही थी । झरना के भ्रातागण अपने व्यवसाय में व्यस्त हो चुके थे । पिता द्वारा सुव्यवस्थित सुगठित व्यवसाय को वे सुचारु रूप से चला रहे थे । अधीर चित्त थी तो केवल मां-बेटी ।

यद्यपि झरना के पिता कृष्णकांत सेठ लाखों की चल अचल संपत्ति छोड़कर गये, परंतु समय रहते वसीयत न सके । अतः उनके पांचों पुत्र, पुत्री व पत्नी सभी उनकी समस्त संपत्ति में समान रूप से भागीदार थे । कृष्णकांत की मृत्यु के दो माह पश्चात ही उनकी अलिखित वसीयत को लेकर उनके पुत्र शंकित रहने लगे । उनके पांचों पुत्र सुधीर, दिवाकर, अनिल, सुनील व दिनेश में से अनिल अत्यधिक व्यवहारपटु था । भगिनी से जब उसने दीनहीन याचक बन याचना की कि वह स्वयं के अधिकार, पिता द्वारा छोड़ी गयी संपत्ति में से, भाईयों के नाम लिख दे तो असीम करुणा से भर उठा झरना का हृदय ।

अतः उसने स्वयं के अधिकार भ्रात्यगण के पक्ष में लिखने के लिए लवलेश मात्र समय भी नहीं लिया । काक दृष्टि भाई की कूटनीति को नहीं परख पायी अबोध भगिनी । उस समय तो पितृगृह पर वह अपनी मांस-मज्जा तक न्योछावर कर देती । झरना समझती थी कि भाई-भाभियों का वात्सल्यपूर्ण मधुर व्यवहार आयुपर्यंत बना रहेगा । जीवन में पुनः इंद्रधनुषी रंग लहराने लगे थे । नूतन प्रभात स्मित हास्य लिए क्षितिज पर उदित होता प्रतीत हो रहा था । तब क्या झरना जानती थी ? समय के उस मायावी रूप को ।

सात वर्ष के अंतराल में झरना की मां भी काल चक्र की परिधि में समा गयी । मां ने मृत्यु से केवल एक माह पूर्व झरना के त्रिया-हठ से विवश हो, अनिच्छापूर्वक अपने अधिकार की सगस्त संपत्ति अपने पुत्रों के नाम लिख दी । क्या कभी मां की करुणा दृष्टि विस्मृत कर सकती थी झरना । "क्यों मेरे हाथ कटवा रही है झरना ? क्यों मुझे स्वयं की संतान के सम्मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करतल पैमाने पर ''क्या कर रही है ?'' पर झरना न तो मां की मर्मांतक पीड़ा देख सकी और ना उसके विवशता के नयन बिंदु । भाईयों के निरंतर कान भरने के कारण उसे विश्वास हो गया कि अगर वसीयत किये बिना, मां संसार से प्रस्थान कर गयी तो भाईयों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा । अतः उनकी इच्छानुसार मां व बेटी कचहरी गयीं । मां ने अकथनीय वेदना सहन करते हुए हस्ताक्षर कर दिये व कुटिल अनिल ने भगिनी से गवाह के स्थान पर हस्ताक्षर करवा लिए । किसके लिए झरना ने यह सब किया ? क्या मूल्यांकन हुआ उसकी निःस्वार्थ भावना का ? क्या प्रतिदान दिया गया उसके निःस्वार्थ स्नेह का ? कहां लुप्त हो गयी जननी जनित भ्रातागण के वात्सल्यपूर्ण व्यवहार की मधुर छाया ! मां के अंतर्मन में जीवित अवस्था में ही स्वयं का अधिकार दूसरों को सौंपकर और स्वयं उनके दयापात्र बनकर जीने के दारुण दुःख ने उसे मृत्युद्वार पर ला खड़ा किया । मृत्यु शैय्या पर पड़ी हुई स्मृतिभृष्टा मां के मृत्यु पूर्व प्रलाप ने बंधु-बांधव, हर प्राणी के नयन अश्रुसिक्त कर दिये ''हाय ! मैंने अपने जीते-जी हाथ काटकर दे दिये ! इस छोकरी ने मुझे कहीं का न रहने दिया । अरे ! किसी को क्या पता कि बहुओं की दृष्टि में, मैं कितनी दीन-हीन और अनावश्यक बोझ हूं ! कितनी उपेक्षा ! कितनी प्रताड़ना ! अरे ! बेटे क्या करते हैं मेरे साथ ! कोई जानता ...'' और शेष शब्द अवरुद्ध कंठ में घुमड़कर रह गये । मन पंछी पंख फैला अनंत लोक की ओर उड़ गया । झरना का हृदय तार-तार होकर रह गया । अविरल अश्रुधार से मानो वह जननी के प्रति किये गये अन्याय का पश्चात्ताप करने का प्रयत्न कर रही थी । क्या उसका करुण क्रंदन जानेवाली को लौटाकर ला सकता था ? किस महाअण्य में विलीन हो गये स्नेही माता-पिता ? और आज जब पितृ जनित भ्रातागण के वास्तविक रूप प्रकट हुए तो क्यों क्षमा नहीं कर पा रही स्वयं को झरना ? क्यों अटूट विश्वास किया ? उसने इस स्वार्थी संसार में धन लोलुप भाईयों पर । मां के मृत्यु शैय्या पर पड़ते ही उनके मुखौटे उतर चुके थे । पितृगृह में मिली निरंतर उपेक्षा व उदासीनता ने झरना को सातवें आकाश से उठाकर पथरीले पथ पर पटक दिया था । मन प्राण पूर्ण रूप से भग्न हो चुके थे । तो भी झरना भाई-बहन के सामान्य संबंध के लिए प्रयत्नशील रहती थी ।

दिवंगत कृष्णकांत का तृतीय पुत्र अनिल संपूर्ण परिवार का मार्ग द्रष्टा बना हुआ था। उसके सम्मुख शेष परिवारजनों का केवल उसकी स्वयं की पत्नी को छोड़कर, सर्वांग व्यक्तित्व अस्तित्वहीन था, और वे सब धनलोलुप भाईयों को अनिल की आज्ञा थी वे कुछ न बोलें, बहन का हिस्सा तो उन सब मिलकर ही खाना चाहा था । उसी के तृतीय आकस्मिक आघात ने कुछ समय के लिए झरना को मूक व पंगु बना दिया था । वह आघात था पितृगृह के द्वार सदा के लिए बंद करना जननी द्वारा जनित भगिनी के लिए । भी झरना का अबोध मन मां के घर के लिए ललक उठता था । एक बार फिर मां के घर स्मृतियों से विभोर हुई झरना पितृगृह जाने विकल हो उठी । दूरभाष पर बात की अनि ने ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज तेरे भाईयों को यह भय है कि बहन कुछ मांग न ले । "अपने अधिकार के लिए उठ खड़ी हो और अगर तूने भी समान रूप से अपना अधिकार लिया होता तो संभवतः तेरे भाई तुझे इतना दीन-हीन न समझते । तब वह बहन का आदर-सत्कार करना जानते । भाई समस्त संपत्ति हड़प ले तो वह अधिकारी है बहन केवल अपना अधिकार भी जताना चाहे तो वह लोभी है । यह कहां का न्याय है ? तू अपने आप को इतना विवश क्यों समझती है ? प्रश्न धन का नहीं सम्मान और अधिकार का है" आवेशपूर्ण स्वर में विभा ने कहा ।

झरना, "भाई, मैं कुछ दिन के लिए यहां आना चाहती हूं ।"

अनिल, "तेरा आना मेरी समझ में नहीं आ रहा ।" अनिल ने रोषपूर्ण स्वर में कहा ।

"क्यों ? क्या मैं अपनी मां के घर नहीं आ सकती ?" झरना ने व्याकुल स्वर में कहा ।

"अब कौन-सी मां बैठी है जिसकी गोद में सर रखकर रोना है ? बैठी रह अपने घर में आराम से ।" अनिल ने कर्कश स्वर में उत्तर दिया ।

"आज तुम सबके मुखौटे उतर गये हैं । मां को गये अभी सात मास भी नहीं हुए थे कि मंझली भाभी ने कितना अपमानित किया था मुझे व मेरे बेटे को । विशेष कर उस समय जब मेरे पति विदेश में थे । क्या अब पितृगृह पर मेरा कोई अधिकार नहीं है ।" झरना ने आहत स्वर में कहा ।

"कौन-से अधिकार की बात कहती है तू ? तूने तो अपने हाथ स्वयं कचहरी में काटकर दे दिये हैं । क्या कर लेगी तू अब हमारा ? नहीं आने देते तुझे यहां । बड़ी आयी अधिकार की बात करनेवाली ! हमारे घर जगह ही नहीं है तूझे एक दिन भी रखने के लिए । क्रुद्ध नाग से फुंकारते हुए अनिल ने निर्लज्ज स्वर में कहा ।

"यह क्या कह रहा है ? अनिल !" झरना ने बुझे स्वर में कहा ।

"हां, हां मैं ठीक कह रहा हूं । यहां कभी मत आना ।" यह कहते हुए अनिल ने वार्तालाप बंद कर दिया ।

आज मां को गये दो वर्ष व्यतीत हो गये थे । झरना को अब सदा यही स्मरण करवाया जाता कि पितृगृह पर उसका कोई अधिकार नहीं । उसे वे दिन विस्मृति के गर्त में नहीं डाल चाहिए जब वह भिखारिन बनी भाईयों से दस-दस रुपये ग्रहण करती थी । कितने बड़े कुटिल खल थे उसके पितृगृहवाले । केवल एक बड़ी भाभी ममता की प्रतिमा थी । पर उसकी सुनता ही कौन था उस घर में । कितनी बार आहत हुआ झरना का तन व मन । क्या अपराध था उसका ? नेत्र मूंदकर अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

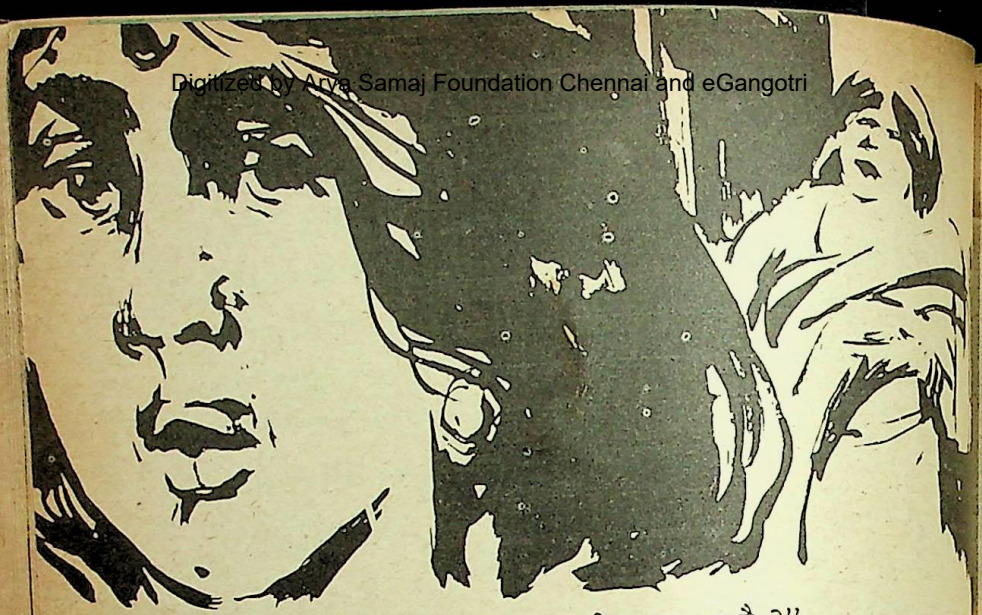

अधिकार की संपत्ति भाईयों के नाम करने का ! या बिना पढ़े कचहरी में जाकर कागजों पर हस्ताक्षर करने का । क्यों इतनी अबोध थी वह ! आज पिता की संपत्ति करोड़ों की है पर हृदयहीन भाईयों की दृष्टि में बहन के निस्वार्थ त्याग का कोई मूल्य नहीं । झरना को सम्मान देना तो दूर, उसे अपने पितृगृह में प्रवेश करने की अनुमति तक नहीं । उनके धनलोलुप मन डरते हैं कि अगर बहन को घर में आने देंगे तो वह पिता द्वारा छोड़ी गयी करोड़ों की संपत्ति में से कुछ मांग न ले । आज तो बहन सर्वसाधन संपन्न है अगर न भी होती तो... झरना की विचार श्रृंखला का कोई अंत न था ।

राखी की पूर्व संध्या को म्लान मुख, अश्रुसिक्त नेत्रों से निहार रही थी झरना राखियों को । सांकल बजने के स्वर ने उसकी तंद्रा भंग की । द्वार खोलने पर उसकी एकमात्र अंतरंग सखी विभावरी खड़ी थी उसके सम्मुख ।

विभावरी ने घर में प्रवेश करते हुए कहा, "क्यों झरना ? क्या हुआ ? तेरा चेहरा क्यों इतना पीला पड़ा हुआ है ?"

"नहीं विभा, कोई बात नहीं" झरना ने क्लांत स्वर में उत्तर दिया ।

इतने में विभावरी की दृष्टि राखियों पर पड़ी ।

"ओह ! तो यह बात है । क्या तेरे भाईयों ने नहीं बुलाया ? क्या राखी बांधने नहीं जाओगी ?" विभा ने अधीर स्वर में कहा ।

"नहीं बुलाया और स्वयं कैसे जाऊंगी । उनकी दृष्टि में जब राखी का महत्त्व इतना ही है कि बहन केवल पैसों के लिए राखी बांधती है। बहन केवल दस-दस रुपये लेनेवाली भिखारिन हैं उनके लिए " झरना के अश्रु कगार टूटी उफनती हुई सरिता सम बह निकले ।

"धीरज धर झरना । मेरी बातों को अन्यथा न लेना । आज समस्त स्थिति की तू स्वयं उत्तरदायी है । तेरा आज सब से बड़ा अक्षम्य अपराध यह है कि बिना विचारे नेत्र मूंदकर भाईयों के पक्ष में हस्ताक्षर कर दिये । आज तुमने हस्ताक्षर न किये होते तो भ्रातागण को तेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य प्रतीत होता। तेरे संपत्ति में तू भी लाखों की अधिकारिणी थी उसका अधिकार तुमने एक हस्ताक्षर द्वारा त्याग दिया । कैसे प्रतिदान से अनुग्रहित किया तेरी निःस्वार्थ भावना को तेरे अति बुद्धिमान भाइयों ने । मैं तो कहती हूं किसी भी भगिनी को कभी भी भाईयों को ऐसे हस्ताक्षर करके नहीं देने चाहिए । केवल मुखाश्वासन देना चाहिए कि समस्त संपत्ति उनकी है । और अगर भ्रातागण भगिनी को उचित मान-सम्मान न दे,— जैसे कि तेरे पितृगृह में तुझे धरा की धूल समझ लिया गया है । तुझे आज उस द्वार पर पग रखने के अधिकार से भी वंचित कर दिया गया है । जहां एक लड़की की अंतहीन स्मृतियां वास करती हैं । और जब भाई, बहन के सुख-दुःख के साथी न बने— जैसा कि तेरे साथ तेरे भाईयों व भाभियों ने तेरी प्राणलेवा शल्य चिकित्सा होने पर किया था । पांच-पांच भाईयों में से किसी एक ने भी झूठे मुख अपने घर जाने को नहीं कहा । हां, स्वयं का सेवक एक सप्ताह के लिए प्रति दिन तीन या चार घंटे के लिए तेरे पास भेजकर स्वयं की दृष्टि में तुझे कृतार्थ किया । उस समय तूने जो विवशता का गरलपान किया । क्या मैं उसकी साक्षी नहीं हूं ? तेरी अनकही वेदना को तेरे नेत्रों में उस समय भी मैंने दो के पहाड़े-सा पढ़ लिया था । ऐसी परिस्थितियां होने पर बहन को जनकगण द्वारा छोड़ी गयी संपत्ति में से अपने अधिकार की संपत्ति अवश्य लेनी चाहिए ।'' यह कहते हुए विभा का मुख रक्तिम हो उठा ।

अगर स्नेह ही नहीं, संबंध नहीं,तो क्या भाईयों का येन केन प्रकारेण बहनों से संपत्ति हथियाने का ही अधिकार शेष है ? यह उसी के कंधे से प्रत्यंचा पर बाण चलाते हैं और व्यथित भी उसी को करते हैं । क्या विडंबना है ! पुरुष प्रधान समाज की । पुत्र करोड़ों की संपत्ति हथियाये तो यह उसका अधिकार है । बहन अपना अधिकार जिव्हा ग्रह पर लाये तो उसे स्वार्थी, धनलोलुप इत्यादि अलंकारों से अलंकृत किया जाता है । अरे ! अगर तू धनलोलुप होती तो क्या ऐसे नेत्र मूंदकर बिना विचारे हस्ताक्षर कर देती । तुम्हारे स्वार्थांध भ्रातागण की विलक्षण प्रतिभा क्या इस तथ्य से अनभिज्ञ है ? नहीं ! नहीं ! यह सब उनकी मिली भगत थी । वह मधुरता, वह वात्सल्य मां के जीवित रहने तक ही क्यों सीमित था ? स्पष्ट है कि पहले उन्होंने तेरा अधिकार हथियाया और फिर तुझे मोहरा बनाकर मां का अधिकार हथियाया, तत्पश्चात मां के जाते ही अपना वास्तविक रूप दर्शा दिया । विभा ने आवेशपूर्ण स्वर में कहा ।

''समाज क्या कहेगा ? पुत्री के विवाह व शिक्षा-दीक्षा पर भी तो धन व्यय होता है ।'' झरना ने अपनी आशंका व्यक्त करते हुए कहा ।

''समाज किसने बनाया है ? यह मूक, बधिर, पंगु तो नहीं । उसे सब समझना होगा । क्या पुत्र के विवाह पर धन व्यय नहीं होता ? क्या पुत्र को जनने में जननी कोई कष्ट सहन नहीं करती ? क्या उसकी शिक्षा-दीक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता ? फिर यह पक्षपात क्यों ? सर्वप्रथम नारी जाति को ही दृढ़ निश्चय के साथ परिस्थितियों का सामना करना होगा । आज तेरे भाईयों को यह भय है कि बहन कुछ मांग न ले ।''अपने अधिकार के लिए उठ खड़ी हो और अगर तूने भी समान रूप से अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार लिया होता तो संभवतः तेरे भाई तुझे इतना दीन-हीन न समझते । तब वह बहन का आदर-सत्कार करना जानते । भाई समस्त संपत्ति हड़प ले तो वह अधिकारी है बहन केवल अपना अधिकार भी जताना चाहे तो वह लोभी है । यह कहां का न्याय है ? तू अपने आप को इतना विवश क्यों समझती है ? प्रश्न धन का नहीं सम्मान और अधिकार का है'' आवेशपूर्ण स्वर में विभा ने कहा ।

''अब मैं कैसे अपना अधिकार लूं ?'' झरना ने क्लांत स्वर में कहा ।

''क्यों ? कैसे ! क्या समस्त मार्ग तेरे लिए अवरुद्ध हैं ? अगर तेरे भाई तेरे को यह भय दिखाते हैं कि न्यायालय में उनकी स्थिति सुदृढ़ है तो क्या हुआ ? तेरे लिए भी न्याय का कोई न कोई मार्ग खुला होगा । कई समाजसेवी संस्थाएं हैं, नारी कल्याण केंद्र हैं तुम्हारी सहायता को । नाते-रिश्तेदारों को या पिता के ईष्ट मित्रों को मध्यस्थ बनाओ । नहीं तो न्यायालय के द्वार खटखटाओ । फल की इच्छा से नहीं अधिकार की रक्षा के लिए पग बढ़ाओ । त्रिभुवन प्रतिपालक तेरी भी सहायता करेंगे ।'' विभा ने झरना पर संधानी दृष्टि डालते हुए कहा ।

''तू ठीक कहती है विभा, मैं अपने अधिकार के लिए बढ़ूंगी ।'' झरना ने निर्णयात्मक स्वर में उत्तर दिया ।

''क्या ही अच्छा हो अगर जनकगण जीवन रहते ही अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति की वसीयत कर दें कि उनकी मृत्युपर्यंत उनकी संतान समान रूप से संपूर्ण चल-अचल संपत्ति की अधिकारिणी होगी तथा एक-एक वस्तु का विवरण व विभाजन स्पष्ट शब्दों में अपनी इच्छानुसार कर दें ताकि उनकी संतान में ''धन-संपत्ति किसी भी विवाद का कारण न बन सके ।'' उठने को प्रस्तुत विभावरी ने कहा ।

''तुम ठीक कहती हो विभा'', झरना ने कहा ।

''जब भाई बहन के अस्तित्व को ही ललकारता है । उसकी असहनीयावस्था में, उसको प्रतिवेशी समान भी नहीं पूछता तो बहन ही क्यों दयनीयावस्था में रहे । नारी को भी सम्मानपूर्वक जीवित रहने का अधिकार है अतः वह भी अपने अधिकारों का प्रयोग करे । माता-पिता को चाहिए कि बेटी को उचित शिक्षा दें । दहेज न दें अपितु बेटों के समान संपत्ति में अधिकार दें ।'' विभा ने जाते हुए कहा ।

एल-६७ए-मालवीय नगर
नयी दिल्ली-११

पश्चिम जरमनी ने कल-कारखानों से निकले गंदे जहरीले पानी के निपटारे के लिए जीव तकनीक प्रक्रिया का विकास किया है, जिसमें ऐसे सूक्ष्म जीवाणुओं का इस्तेमाल किया जाएगा, जो गंदे पानी में घुले फेनोल, एरोमेटिक्स और साइनाइड-जैसे जटिल संरचनावाले पदार्थों को विखंडित कर पानी को हानि-रहित बना देंगे । यह तकनीक सस्ती और बेहतर उपयोगी होगी ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

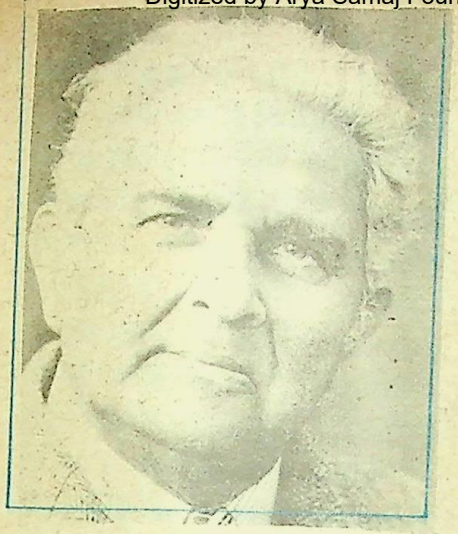

स्व. जयनारायण राय
मारिशस के प्रथम हिंदी साहित्यकार

जहां हिंदी धर्म का अंग बन कर जीवित है

● प्रहलाद रामशरण

श्री जयनारायण रायं देश-विदेश में एक शिक्षक, इतिहासकार, लेखक, नाटककार, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिज्ञ और एक उच्च कोटि के हिंदी आंदोलनकारी के रूप में विख्यात हैं। ऊपर उद्धृत स्वर्गीय पं. बनारसीदासजी चतुर्वेदी के पत्र से भी यही स्पष्ट होता है।

श्री जयनारायण रायजी बोशू निवासी खेमलाल सिंह के सुपुत्र थे। उनका जन्म ८ सितंबर १९०८ को हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय स्कूल में हुई। उनकी माध्यमिक शिक्षा पोर्ट लुई में प्रारंभ हुई थी किंतु १९२४ में वे भारत पहुंचे थे और उनका दाखिला बनारस के सेंट्रल हिंदू कॉलेज में हुआ था। इस संबंध में १० फरवरी १९२५ को एक पत्र में उन्होंने लिखा था—

"ईश्वर की कृपा से मैं सकुशल भारत पहुंच गया हूं। पं. बॉसी राम बी.ए. और पं. मदन मोहन मालवीयजी की कृपा से मैं बनारस सेंट्रल हिंदू कॉलेज में प्रवेश करके आठवीं कक्षा में पढ़ रहा हूं इसी विद्यालय के होस्टल में मैं रहता हूं। इन महापुरुषों की कृपा से विगत दिसंबर में

महाराज (स्वामी कृष्णानंद जी से) आपने जो मारिशस जाने का निश्चय किया है उससे मुझे अप्रत्याशित प्रसन्नता हो रही है। महात्माजी के देहावसान के बाद भारतीयों के लिए, मेरा मतलब है : गिरमिटिये मजदूरों के लिए कोई रोनेवाला भी नहीं रहा। आप वहां जा रहे हैं, तो मुझे विश्वास है आपके द्वारा अवश्य उन लोगों की सेवा होगी। वहां मैं केवल दो आदमियों को जानता हूं जो हिंदी की तुनतुनी उस देश में बजा रहे हैं : एक हैं सूरज प्रसाद मगर भगत और दूसरे हैं जयनारायण राय। आप उनसे अवश्य मिलें, उनको जागृत करें और प्रेरणा दें।

— बनारसीदास चतुर्वेदी
फिरोजाबाद, आगरा, १९६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए भारतीय नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन का दृश्य देखने में सफल हुआ । कांग्रेस का पंडाल करीब एक मील लंबा-चौड़ा था । अर्थात एक खास शहर बसा हुआ था । महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, सरोजनी देवी, अलीभाई, मिस्टर वास्वानी, सत्यदेव स्वामी, पं. मोतीलाल नेहरू, स्वामी श्रद्धानंद, स्वामी मंगलानंद पुरी तथा अन्य प्रभृति देश-सेवकों के व्याख्यान मैंने सुने । तदुपरांत पं. मदनमोहन मालवीयजी ने अपने मधुर शब्दों में कहा कि मैं मारिशस के हिंदू प्रवासी विद्यार्थियों को बहुसंख्या में भारत में पढ़ते हुए देखना चाहता हूं ।''

मारिशस में हिंदी यूरोपीय भाषाओं की तरह तलवार के बल पर नहीं आयी । यह यहां श्रमजीवियों की श्रद्धा और भक्ति के साथ आयी । यह उपनिषद, रामायण और गीता की बेटी बनकर आयी । इसी से तो हमारे पूर्वजों को बल मिला...

बिहार के भूकंप सेवा-दल में कार्य

श्री जयनारायण राय का भारत-प्रवास १३ लंबे वर्षों का था । इस बीच उन्होंने इतिहास और राजनीति शास्त्र में एम.ए. किया और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से कानून की एल.एल.बी. डिग्री हासिल की । सन १९३६ में बिहार में भयानक भूकंप आया था । भूकंप-पीड़ित लोगों के राहत-कार्यों में लगे भारतीय और यूरोपियनों का प्रभाव जयनारायणजी पर इतना तीव्र पड़ा था कि उन्होंने भारत में रहकर ही सेवा कार्य करने का लक्ष्य निश्चित कर लिया । इस आशय का उनका पत्र २७ मार्च १९३६ को 'ले राजिकाल और मारिशस आर्य पत्रिका' में छपा था । उन्होंने लिखा था :

''मेरा विद्याभ्यास समाप्त हो जाने पर बिहार भूकंप में विध्वंस ग्रस्त स्थानों को साफ करने की योजना में मैं स्वयं सेवक बनकर काम करने लगा । सरकार और कांग्रेस के मार्फत यह काम हो रहा था । भूकंप से नदियों का प्रवाह बदल गया था और बाढ़ से सैकड़ों गांव बह जाने का डर था । इसलिए बाढ़ से दूर रक्षित स्थानों पर नये गांव बसाने की योजना बनी थी । हमारी सहायता करने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रेम सेवक समिति के अध्यक्ष डॉक्टर पियरे सेरेलील अपने यूरोपियन साथियों के साथ आये थे । वे अपने पैसे से भारतीयों की सेवा करते थे... इस काम की ओर मैं आकर्षित हुआ । इसके भी अनेक कारण थे । कांग्रेस के झंडे के नीचे खड़े होकर काम करने की मेरी मनीषा थी ।

''यहां भूकंप पीड़ित, महा मुसीबत में फंसे हुए लोगों की सेवा करने का मौका मिला । यहां मुझे यूरोपियन मित्रों के साथ विचार-विनिमय करने का अवसर मिला । धर्म और जाति-पांति तथा रंग-रूप के दृश्य मुझे यहां नहीं मिले थे । मेरी इच्छा के मुताबिक उस काम में मुझे आनंद आया... मेरे पिताजी की मरजी थी कि मैं मारिशस लौटकर कोई सरकारी नौकरी करूं किंतु उनकी मृत्यु के बाद मेरे विचार ने जोर पकड़ा और अब नौकरी का विचार छोड़ना पड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।"

'केरिसवा' नामक स्टीमर से जयनारायण राय १५ मई १९३७ को मारिशस लौटे थे और उनके आते ही फूलक खियेरे जी रांयार और पोर्ट लुई के आर्य समाज में उनका भव्य स्वागत हुआ।

हिंदी आंदोलन के पुरोधा

जयनारायण राय के आगमन से देश के भारतीयों के विभिन्न जीवन क्षेत्रों में प्रतिक्रियाएं शुरू हो गयी थीं। रायजी के तीन-चार अंगरेजी लेख 'ले राजिकाल' में छपे थे कि 'मारिशस आदि पत्रिका' के संपादक पंडित आत्माराम ने निम्नलिखित टिप्पणी छापी थी—

जयनारायण राय और हिंदी—

आप मारिशस के लिए ऐतिहासिक व्यक्ति होते जा रहे हैं। यहां आते ही आपने फ्रेंच पत्रों में लिखना आरंभ कर दिया है। भारत के वर्तमान पोलिटिक्स पर भी आपने लिखा है किंतु मार्के की बात है कि आपने आज तक हिंदी में कोई लेख प्रकाशित नहीं किया है। हमें सुनने में आया है कि आप हिंदी के एक अच्छे लेखक और वक्ता हैं। हिंदी की नाड़ी को आपने पहचान लिया है ऐसा मालूम पड़ता है। हम कहते हैं कि मारिशस में हिंदी भाषा रोगग्रस्त है। आज नहीं तो कल उसको उचित स्थान मिलने का समय आता नजर आ रहा है। हिंदी विद्वान जयनारायण रायजी के लिए हिंदी भाषा का उद्धार एक कार्य क्षेत्र हो सकता है। भारत के आंदोलन की प्रतिध्वनि की अपेक्षा, मारिशस में स्थानीय भाषा आंदोलन उचित नहीं होगा ?"

इस टिप्पणी के छपने के एक सप्ताह बाद जयनारायण राय का निम्नलिखित उत्तर उसी पत्रिका में छपा था। आपने लिखा था—

"आपने मेरे ऊपर जो नोट लिखा है उसके लिए मैं कृतज्ञ हूं। आपका एतराज कुछ जायज है और सचमुच अंगरेजी के जरिए अपने हिंदुस्तानी भाईयों की सेवा करने की कोशिश करना हिमाकत और बेवकूफी है। खासकर जब मैंने सेवा ही अपने जीवन का लक्ष्य बना रखा है।

"आप खुद महसूस करते होंगे कि अंगरेजीदाओं को अंगरेजी में सोचने की आदत हो जाती है। कारण कि वह बहुत सरल है। हम आधुनिक नये-नये विज्ञानों को उसी भाषा में पढ़ सकते हैं और जो मनुष्य जरा भी शिक्षित होने का दावा करता है उसे नये-नये विज्ञानों को खूबी से जानना भी जरूरी है। ऐसा न करने से हम कई शताब्दी पहले की दुनिया में आंधड़ाते रहते हैं और वेग-सी चलती हुई दुनिया से पिछड़ जाते हैं।"

"दूसरी भाषा में सोचने की आदत हिंदुस्तान में सबसे बड़े लोगों में हैं और ऐसा होना स्वाभाविक है। मैं समझता हूं कि स्वराज्य के बाद भी हमें यह बीमारी सताती रहेगी। जब तक कि हम अपनी भाषाओं को सामयिक विषयों से मजबूत न बना दें।

*"इसके माने यह नहीं कि मैं हिंदी से नफरत करता हूं। आप कदाचित जानते होंगे कि मैं देश भक्ति के उस पवित्र जल में स्नान कर चुका हूं और भला कौन-सा देशभक्त होगा जो अपनी राष्ट्र भाषा और अपने राष्ट्र झंडे को अपनी जान से भी प्यारा नहीं समझता होगा। मेरा ख्याल है कि इस टापू की **सबसे भारी भूल** यह है कि हिंदुस्तानी होकर हम **हिंदुस्तानीपन से हिचकते हैं। क्यों ? कैसे, क्या सोचकर हम ऐसा करते हैं कुछ समझ में नहीं आता।"***

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंतु इसी उत्तर के बाद जयनारायण राय ने हिंदी में लिखना प्रारंभ किया ।

१९३७ की मजदूर-हड़ताल

भारतीय आप्रवासन का शताब्दी समारोह १९३५ में संपन्न हुआ था । उससे देश के भारतीयों में नव जागरण का आना स्वाभाविक था । उस समय उन्हें योग्य से योग्य नेताओं का मार्गदर्शन मिला था । उनमें डॉ. आच्या और डॉ. रामगुलाम-जैसे डॉक्टर थे । ओस्मान और निरंजन-जैसे बैरिस्टर थे । आर्य सभा, हिंदू महा सभा, गीता मंडा, हिंदी प्रचारिणी सभा-जैसी संस्थाएं थीं, जो उन्हें अपनी भाषा और संस्कृति की पहचान कराती थीं । 'मारिशस आर्य पत्रिका', 'आर्य वीर' और 'सनातन धर्मार्क'-जैसे साप्ताहिक और मासिक हिंदी में निकलते थे और पं. आत्माराम, पं. काशीनाथ और पं. नरसिंहदास-जैसे संपादकों के कार्यों से हिंदी-आंदोलन को काफी गति मिली थी । पं. लक्ष्मी नारायण चौबे, पं. देवदत्त शर्मा, पं. रामावध और पं. मुल्कानंद चटर्जी-जैसे हिंदी लेखकों के साहित्यिक कार्यों से हिंदी की नींव काफी मजबूत हो चुकी थी ।

जयनारायण राय के आगमन के बाद देश में जो सबसे जबर्दस्त घटना घटी थी, वह थी अगस्त का मजदूर-आंदोलन जिसमें देशभर में पांच मजदूरों की जान गयी थी । किंतु यह कितने आश्चर्य की बात है कि इस हड़ताल से केवल एक सप्ताह पहले जयनारायण राय ने 'अहिंसा पथ' शीर्षक से एक कविता प्रकाशित करके अपने भावी राजनीतिक मार्ग को निर्धारित किया था । इस कविता में उन्होंने 'गांधीवाद' के मार्ग पर चलकर इस देश को आजाद करने का संकल्प किया था ।

मारिशस का प्रथम हिंदी एकांकी

सन १९३७ के मजदूर आंदोलन के बाद सरकार ने मजदूरों की स्थिति में सुधार लाना चाहा और उसमें उसने जयनारायण राय की सहायता चाही । अतः अपने वायदे के विपरीत रायजी अपने स्वदेश-आगमन के एक साल बाद 'लेबर इंसपेक्टर के पद पर नियुक्त हुए और कोई दस वर्षों तक इस पद पर कार्य करते रहे । किंतु इस बीच उन्होंने हिंदी सेवा का कार्य कभी बंद नहीं किया ।

७ दिसंबर, १९४१ में जब हिंदू महासभा में प्रथम साहित्य सम्मेलन का आयोजन हुआ था तब रायजी ने एक पत्र लिखकर लोगों को उसमें सम्मिलित होने का आवाहन किया था । यह साहित्य सम्मेलन हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा संपन्न हुआ था । इसी मौके पर जयनारायण राय ने प्रथम हिंदी एकांकी 'जीवन संगिनी' का प्रकाशन करके मारिशस में हिंदी साहित्य की नींव को पुष्ट किया था । इसी पुस्तक को इस देश के प्रथम नाटक होने का सौभाग्य प्राप्त है।

जयनारायण रायजी हिंदी प्रचारिणी सभा के साथ भी संबद्ध हुए । सन १९५२ से १९७७ तक वे इस साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे । इन्हीं के प्रधानत्व में इस संस्था का पूरा विकास हुआ और इसके कार्यक्षेत्र में विविधता आयी । देश के विभिन्न भागों में इसकी शाखाएं खुलीं । हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की साहित्यिक परीक्षाएं परिचय प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा प्रथम और द्वितीय खंड कालक्रम से चालू होती रहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयनारायण राय की कृतियां

क्या हैं मारिशस के भारतीय (अंगरेजी-१९३०) जीवन संगिनी (हिंदी एकांकी-१९४१)
मारिशस इन ट्रांजिशन (अंगरेजी-१९६०) व्हेन द टीयर्स मिंगल (अंगरेजी-१९६२)
मारिशस में हिंदी भाषा का इतिहास (हिंदी-१९७०)

पत्रकार और राजनीतिज्ञ

जयनारायण राय ने सन १९४८ के सार्वजनिक चुनाव से एक साल पहले ही सरकारी नौकरी छोड़ दी और देश और समाज सेवा का व्रत ले लिया। सन १९४८ में उन्होंने 'जनता' अर्ध साप्ताहिक पत्र का संपादक पद संभाला। सच्चे अर्थों में यह हिंदी का पत्र था। रायजी १९५३ तक इस पत्र के संपादक रहे।

१९४८ से ही जयनारायण रायजी देश की राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगे और दक्षिण प्रांत के निर्वाचित सदस्य बनकर विधान परिषद में गये। इस तरह से वे देश की राजनीति में १९६७ तक सक्रिय रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वे राजनीति से सन्यास ले चुके थे।

सक्रिय लेखन कार्य में संलग्न

जयनारायण राय इस देश के सशक्त लेखक । उन्होंने अंगरेजी और हिंदी में अनेक विषयों र सैकड़ों लेख लिखे। उनका प्रथम लेख ारिशस मित्र' में सन १९३१ में छपा था, जो र्वजनिक चुनाव के संबंध में था।

जयनारायण राय मारिशस में हिंदी का पक प्रचार-प्रसार चाहते थे। उन्होंने आर्य मा और हिंदू महासभा के सहयोग से सन ५९ में 'हिंदी सप्ताह आंदोलन' का योजन किया था। इससे अनेक क-युवतियों को हिंदी सीखने की प्रेरणा ी। उन्होंने क्यूणीर्ण नगर में मारिशस कॉलेज की भी स्थापना की।

१९७६ में मारिशस में आयोजित द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन में 'हिंदी की अंतरराष्ट्रीय स्थिति' पर दिया गया उनका भाषण विचारोत्तेजक था। अपने भाषण में उन्होंने कहा था—

"हिंदी यहां यूरोपीय भाषाओं की तरह तलवार के बल पर नहीं आयी। यह यहां श्रमजीवियों की श्रद्धा और भक्ति के साथ आयी। यह उपनिषद, रामायण और गीता की बेटी बनकर आयी। इसी से तो हमारे पूर्वजों को बल मिला कि इस संघर्ष में सब लोगों का सामना कर सकें और हम लोगों ने अभी तक इसको जीवित रखा है। यह हमारे धर्म का अंग बनकर अभी तक जीवित है।

हम जिस दिन सबल हो जाते हैं, उसी दिन संस्कृति और भाषा को संभाल लेते हैं। जब हम गुलाम थे, हमारे बाप-दादे गुलाम थे, तब दासता की उस घड़ी में जब हिंदी नहीं मरी तो अब क्या मरेगी। ये सच है कि हम यहां के वातावरण में, यहां की धरती और जमीन के वातावरण में कुछ मुहावरे, नये मुहावरे बनाएंगे, नये विचार व्यक्त करेंगे और यहां की पत्नी और प्रपात की ध्वनि आपके भारत तक सुनाएंगे। हिंदी के इतिहास में हम एक नया अध्याय लिखेंगे। जिस अध्याय का रस और गंध आपको विचित्र-सी लगेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

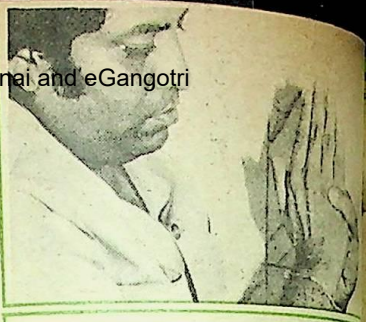

हाथ की अनामिका और कनिष्ठा अंगुलियों के मध्य स्थित बिंदु

बहरेपन, हाथ में दर्द, सिर में दर्द, मलेरिया, अंगुलियों में अकड़न होने पर इस बिंदु को दबाइए।

बगल के मध्य में स्थित बिंदु

हाथ में कंपन, कंधे के दर्द, कंधे के तनाव, कंधे के उतरने तथा हाथ में पक्षाघात होने पर इस बिंदु पर दबाव दें।

अद्‌भुत करिश्मे : अला

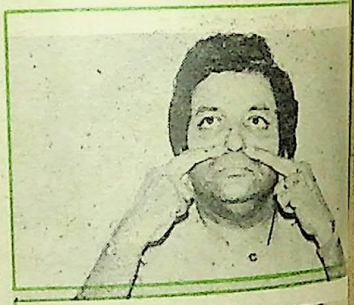

नाक के दोनों सिरों पर स्थित बिंदु

सरदी, जुकाम, दाढ़ दुखने, साइनस बेल्स पल्सी, चेहरे की झुर्रियों आदि रोगों में इन बिंदुओं पर दबाव लाभकारी होता है।

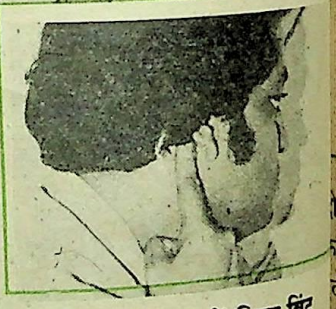

कान के पीछे मध्य में स्थित बिंदु

बहरेपन, चेहरे पर पक्षाघात होने, कान होने, कान के बहने, कान के सुन्न होने, आवाजें आने पर इस बिंदु को दबाइए

एक्यूप्रेशर चिकित्सा की एक प्राचीन विधि है। इस चिकित्सा पद्धति में शरीर के विभिन्न स्थलों को दबाकर रोगों का उपचार किया जाता है। पाठकों के लाभ के लिए इस अंक से हम शरीर में स्थित कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं एवं उन पर दबाव देने से दूर होनेवाले रोगों का परिचय दे रहे हैं। इन्हें प्रस्तुत कर रहे हैं डॉ. सुधीर खेतावत :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनिष्ठा के नाखून के भीतरी कोण पर स्थित बिंदु

सीने में दर्द, अनियमित धड़कन, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप या हृदय का दौरा पड़ने पर इस बिंदु को दबाइए ।

कनिष्ठिका से एक अंगुल नीचे हाथ की रेखा पर स्थित बिंदु

गैस वायु, हथेली के दर्द, अंगुलियों की जकड़न आदि होने पर इस बिंदु को दबाएं ।

अंदाज स्वयं कीजिए—१८

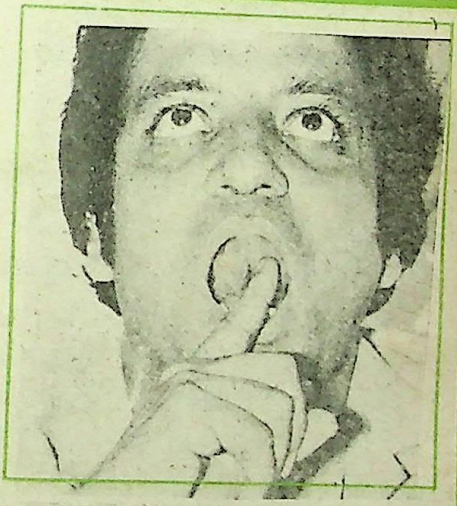

दोनों आंखों के नीचे मध्य में स्थित बिंदु

कंजक्टीवाइटिस, आंखों में जलन, आंखों में दर्द, आंखों में आयी लाली, मोतियाबिंद, कांच बिंदु, अंधत्व, पायोपिया, हाड़पट- मेट्रोपिया, रेटिक एट्राफी के लिए इन बिंदुओं को दबाएं ।

जीभ के नीचे बायीं ओर स्थित बिंदु

इसे प्यास नियंत्रित बिंदु भी कहते हैं । जीभ में दर्द, बोलने में कष्ट होने या अधिक थूक आने पर इस बिंदु को दबाइए ।

—एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण एवं उपचार केंद्र
नीलकमल सिनेमा परिसर, इंदौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा चित्र

अलग स्वभाव है ब्रह्मपुत्र क

● जसवंत सिंह विरदी

ब्रह्मपुत्र नद असम की जिंदजान है, उसकी शान है। वह संपूर्ण असम प्रदेश में अपने अस्तित्व को फैलाकर बहता है, बड़ी तेज रफ़्तार से। कहते हैं कि हमारे देश की पश्चिमी नदी सिंध में भी इतनी ही गति है परंतु वह ब्रह्मपुत्र की तरह रास्ता नहीं बदलता। मर्यादाबद्ध है। और ब्रह्मपुत्र की अपनी ही मर्यादा है, अपना ही विलक्षण स्वभाव। वह धरती पर इस तरह फैलकर खुश होता है, जिस प्रकार हिमालय पर बर्फ की परतें जमती हैं। मनुष्य के मन में मुहब्बत का सागर उठता है।

ब्रह्मपुत्र को कई लोग अविश्वसनीय नदी भी कहते हैं, परंतु मैं कहता हूं कि वह कभी भी किसी को धोखा नहीं देती।

ब्रह्मपुत्र को हमारे पूर्वज ब्रह्मा का पुत्र भी कहते हैं। जब हमने अपने दादा से इस बारे में पूछा तो उन्होंने कहा—

"बूढ़ों को तो सदा नहीं बैठे रहना। उनकी संतान ही उनका नाम रोशन करती है। परंतु ब्रह्मा तो स्वयं ही लोगों के लिए पूजनीय हैं..."

'तो भी वे लोगों को कोई चिरस्थायी वरदान देना चाहते थे...।'

'पर ब्रह्मपुत्र तो बहुत ही अक्खड़ [illegible] का नद है।'

'तो क्या तुमने ब्रह्माजी के स्वभाव के [illegible] नहीं कुछ सुना ?'

'सुना तो नहीं परंतु जिसका पुत्र इतना [illegible] हो, उसका पिता भी अवश्य ही...' दादा [illegible] पड़े।

'इंसानों के गुण और स्वभाव पीढ़ी-[illegible] चलते रहते हैं।'

'तो क्या ब्रह्मपुत्र का स्वभाव बदल [illegible] सकता ?'

'उसके लिए मेहनत और हिम्मत की [illegible] है।'

उनका संकेत था कि ब्रह्मपुत्र के पा[illegible] अनेक बांध बनाकर रोका और जनहि[illegible] इसके जल का प्रयोग किया जा सक[illegible] यह काम कौन करे ?

मैं खामोश हो गया। क्या करता, [illegible] पास हिम्मत नहीं या हम मेहनती नहीं [illegible]

ब्रह्मपुत्र के बारे में प्रसिद्ध है कि [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

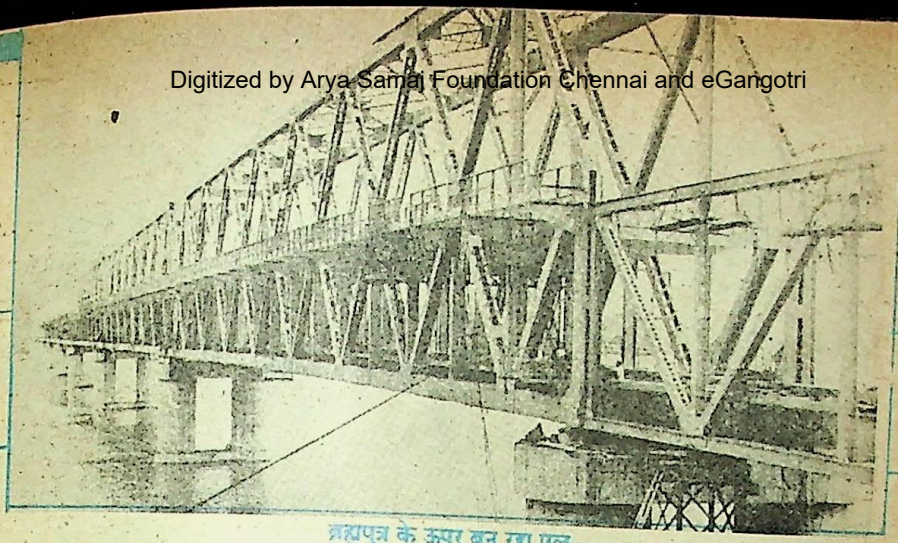

ब्रह्मपुत्र के ऊपर बन रहा पुल

की झील मानसरोवर के क्षेत्र में कुबीगंगा के बर्फीले तोदे में से पानी लेकर चलता है। उसके पाट में गिरनेवाले पानी का वेग इतना शक्तिशाली होता है कि वह सदैव रौद्ररूप धारण किये रहता है।

ब्रह्मपुत्र तिब्बत में से निकलकर असम के लिए वरदान ही नहीं लेकर आता अपितु वह चीन और मंगोल नस्ल के लोगों को भी इस देश के खुले वातावरण में बसने के लिए अपने साथ लाया है, —जैसे कि वह अकेला यहां आ ही नहीं सकता था।

असम देश की धरती पर वह इसी तरह ही अपनी साथी नदियों सहित जोर-शोर से पहुंचता है, —जैसे कि कोई बहुत बड़ा भक्त अपने अनुयायियों सहित इष्टदेवता के दर्शनार्थ पहुंचता है।

मैं कई बार सोचता हूं कि हमारी ये नदियां भी तो देश की धरती पर उसी तरह ही चलती हैं, —जैसे कि बच्चे अपनी माता की गोद में बैठकर मचलते हैं। कोई कम, कोई अधिक।

असम से ऊपर हिमालय की श्रंखला और उसकी चोटियों पर इतनी अधिक वर्षा होती है कि समस्त वादी जलथल हो जाती है। असम की नदियों में से ब्रह्मपुत्र सबसे अधिक शोर करता है। अन्य नदियां भी फुंकारती हैं पर ब्रह्मपुत्र तो लोगों की नींद ही हराम कर देता है।

कई बार नींद हराम करके भी आनंद मिलता है, परंतु जो आनंद दूसरों को बरबाद करके प्राप्त किया जाए, उसके बारे में क्या कहें ?

कई बार मन में आया कि इसके बारे में ब्रह्मपुत्र को पूछूं, परंतु वह तो इतनी तेजी से आगे बढ़ रहा है कि उसके साथ तो बात भी नहीं हो सकती। क्या कभी होगी ?

वैदिक कालोपरांत हमारा अपनी नदियों संग संवाद ही कब रहा है ?

ब्रह्मपुत्र के बारे में यह भी कहा जाता है कि यह नद तमिहोक खंबाला चोरटन के समीप चिमिडंगडंग के हिमकुंड में से आरंभ होता है, जिसकी शक्ल-सूरत घोड़े के मुंह-जैसी है। बर्फ का तोदा, घोड़े के मुंहवाला। वाह ! करनाली और सतलुज भी यहीं तिब्बत से इसके समीप से ही चलते हैं। ब्रह्मपुत्र का स्रोत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि ब्रह्मपुत्र हिमालय पर्वत से भी अधिक आयु का है । क्या कह सकते हैं ? ...वैसे यह सच है कि हिमालय से भी पहले तिब्बत में से भारत में एक नदी इंडो-ब्रह्म बहती थी । उसके कीचड़ में से ही असम और बंगाल की धरती सागर में से रूप ग्रहण किया है ?

१६,००० फुट ऊंचा है और तिब्बत में इसका नाम सांगपो है, जिसका अर्थ है शुद्ध करनेवाला, पवित्रता देनेवाला । मन का मैल धोनेवाला ।

लोग भी क्या चुन-चुनकर नाम रखते हैं ।

यदि हम पाप, लोभ, अहं और ईर्ष्या, वैरभाव से इतने कलंकित न हो गये होते तो ब्रह्मपुत्र भी शायद इतने रोष से बाढ़ की स्थिति पैदा न करता ।

पहले यह हजारों मील दक्षिण और पूर्व की तरफ दौड़ता है और फिर नामचा बरूआ के पास पहुंचकर केंद्रीय हिमालय के वक्ष पर थिरकने लगता है । आगे चलकर इसका नाम दिहोंग बन जाता है । सदीया के पास दिबोंग और लोहित पूर्व की तरफ से इसमें विभाग हो जाता है । यहां पर, ब्रह्मकुंड के पास इन दोनों नदियों की जलधारा एक हो जाती है, और इन दोनों नदियों के नाम अपना अस्तित्व खोकर ब्रह्मपुत्र का रूप हो जाते हैं ।

ब्रह्मकुंड शताब्दियों से हिंदुओं के लिए एक परम पवित्र तीर्थ रहा है । जब परशुरामजी की माता रेणुका ने उसको विद्वेष भूलकर पश्चाताप करने के लिए कहा था, तो उसने रक्त-रंजित अपना परुशा (कुल्हाड़ा) ब्रह्मपुत्र के पानी से ही धोया था ।

यहां से ब्रह्मपुत्र की दिशा भी पश्चिम ओर हो जाती है । अपने नाम की वादी ४५० मील की दूरी तक जोर-शोर से करके यह बंगला देश में प्रवेश कर सिक्किम की नदी तीस्ता और भूटान की टोरसा बंगलादेश में ही इससे मिलाप हैं ।

नदियों के लिए सभी देश और संप्रदायों और रंगों के देश एक समान

ब्रह्मपुत्र सभी के लिए एक समान

असम प्रदेश में ब्रह्मपुत्र का पाट कम साढ़े नौ कि.मी. तक फैला हुआ का पहला पुल देश के विभाजन समय पाकिस्तान (बंगलादेश) में रह गया कारण समस्त भारत का असम प्रदेश संपर्क समाप्त हो गया, परंतु सरकार हमारे बुजुर्गों (सरदार साहिब प्रेम सिं खेम सिंह) को यह काम सौंपा तो उ निश्चित समय से भी पहले सराय घाट बनाकर गाड़ी चला दी । गाड़ी की भी निरंतर रूप में जब नदी चलती है ही नजर आती है, रुकती नहीं ।

हमारे देश में ही ब्रह्मपुत्र बंगाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरने से पहले अपने कई नाम बदलता है ।

असम के ऊपरी क्षेत्र में इसे जमुना कह कर पुकारा जाता है ।

जब यह बंगला देश में गुआलंड़ों के स्थान पर गंगा से जा मिलता है, तो इसका प्यारा-सा नाम पझा है । परंतु जब यह बंगला देश की नदियों और विशेषतः मेघना के संग मिलकर बंगाल की खाड़ी की ओर बढ़ता है, तो लोग इसे मेघना नाम से पुकारते हैं ।

अधिक नामवाला व्यक्ति कहते हैं कि अधिक भाग्यशाली होता है । ब्रह्मपुत्र के बारे में क्या कहें ।

कहते हैं कि गोहाटी को पुरातनकाल में प्राक्ज्योतिषपुरा (दि ईस्टर्न सिटी ऑव लाइट्स) कहते थे । ब्रह्मपुत्र की जलधारा में जो चमक है, क्या उसी से तो नहीं चमकती थी कामरूप की राजधानी ?

नूरशाह कामरूप के कस्बे धानपुर की ही तांत्रिका थी, जो साधु और फकीर लोगों को अपने जादू से परेशान करती थी । परंतु गुरु नानक ने अपने साथी मर्दाना सहित उसके पास पहुंचकर उसकी तंत्र-विद्या के अभिमान को तोड़ा था और उसको कुल मानवता का आदर करने का उपदेश दिया था ।

ब्रह्मपुत्र हमारे देश का एक महान नद है परंतु इसके स्रोत से लेकर सागर में गिरने तक इसके सफर के बारे में सोचें, तो हमें ज्ञात होता है कि ब्रह्मपुत्र का अधिक भाग भारत खंड के बाहर ही है । क्या वह एक ऐसे योगी की देह तो नहीं, जो इर्द-गिर्द के देशों का रटन करता हुआ; कुछ समय के लिए हमारे देश में से गुजर जाता है । और हम लोगों के लिए सभी

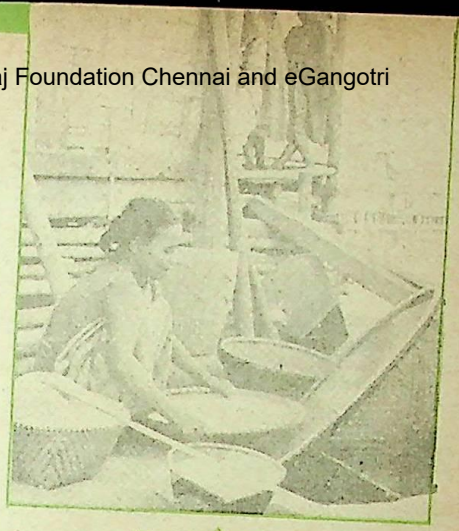

ब्रह्मपुत्र और मजदूर

बरकतें और नियामतें सौगात के रूप में लाकर बख्श कर खुशी से चलता हुआ आगे निकल जाता है ।

ब्रह्मपुत्र गंगा का ही एक भाग बन जाता है परंतु वास्तव में यह गंगा से भी चार सौ कि.मी. अधिक लंबा नद है । ब्रह्मपुत्र की कुल लंबाई २९०० कि.मी. है । परंतु फिर भी इसके भाग्य में शायद यह नहीं बदा था कि वह स्वयं ही स्वतंत्र रूप में समुद्र से जा मिलता ।

कहते हैं कि जब गंगा की धारा ब्रह्माजी के कमंडल में से निकली, तो शिवजी की जटाओं में ही गुम होकर रह गयी । हमारे देश की धरती के लिए तो शिवजी ने केवल एक बूंद ही निचोड़कर गिरा दी थी । आगे बढ़कर उस एक बूंद ने ही अपने कर्मयोग से फैलकर ब्रह्मपुत्र को भी अपने आंचल में समेट लिया ।

ब्रह्मपुत्र हमारे देश का बहुत ही अनुशासनरहित नद है । यह हर बार ही अपना रास्ता बदलकर नये रास्तों की रूपरेखा बनाकर और इच्छानुसार चलकर खुश होता है ।

जिंदगी में भी हमारे लोग इस तरह के लोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बर्दाश्त करते ही हैं । ब्रह्मपुत्र तो अपने साथ उपजाऊ मिट्टी भी लेकर आता है, जो हमारी धरती को सरसब्ज बनाती है और लोगों के चेहरों पर निखार लाती है ।

कहते हैं कि कामरूप प्रदेश के लोग भी ब्रह्मपुत्र के जल की तरह ही मीठे हैं ।

ब्रह्मपुत्र हमारा मधुर जलवाला नद है, शायद इसीलिए ही लोग इसके तेज तूफानों को भी बर्दाश्त किये जाते हैं ।

प्यार और मिठास से लोग क्या नहीं सह लेते ?

असम की अधिकतर आबादी मंगोल जाति की है परंतु उनके पूर्वजों ने सातवीं-आठवीं शती में ही हिंदु धर्म ग्रहण कर लिया था । उनकी भाषा भी असमियों की तरह ही संस्कृत की पुत्री है । मूल भाषा 'अहोम' को कुछेक धर्माचार्यों के सिवा और कोई नहीं जानता ।

ब्रह्मपुत्र नदी में वर्ष में लगभग ८५ इंच औसतन वर्षा होती है और यह उत्तर और दक्षिण की तरफ से लगभग ३५ अन्य सहायक नदियों को अपने में समाहित कर लेता है । इनमें से कई तो अपने आप में मुकम्मल नदियां हैं । जैसे कि उत्तर की नदियां —'सुबानसिरी, जीआभराली, मानस और बेकी । दक्षिण क्षेत्र की नदियों में से बुरी-दिहिंग और कापिली भी निरंतर बहती रहनेवाली नदियां हैं । इनके अतिरिक्त वर्षाकालीन नदियां —दिकरोग, रंगानाद, पगलादीया और अई भी नष्ट-भ्रष्ट करनेवाली नदियां ही हैं । शायद इसीलिए असम को बाढ़ और तूफान का प्रदेश कहा जाता है । पिछले वर्षों में तो वहां के राजनीतिक वातावरण में भी बाढ़ की-सी स्थिति बनी रही है ।

ब्रह्मपुत्र वादी की धरती बहुत ही उपर परंतु यहां के वातावरण में एक तरह का धुंधलापन और नमीवाला प्रभाव है, जि कारण लोग सुस्त और मनमौजी प्रतीत हो हैं भी ।

परंतु यह भी एक हकीकत है कि अ अधिकतर व्यापार और आवागमन ब्रह्म ही होता है । ब्रह्मपुत्र हमारे देश की धर वक्ष पर थिरकता है और हमारे लोग सं बेडी और किश्ती में बैठकर ब्रह्मपुत्र के मौज करते हैं । कलकत्ता से डिबरुगढ़ स्टीमर चलते हैं । असम में नदियों के से कम से कम ९६०० कि.मी. रास्ता है ।

जब मैं अपने पिताजी के साथ ब्रह्म ऊपर बन रहे सरायघाट के पुल के पा था, तब मुझे इसकी जलधारा से, इसक चाल से और इसके रास्ता बदलनेवाले से बड़ा डर लगता था । परंतु अब असम के नक्शे में इसके दर्शन करत मुझे महसूस होता है कि ब्रह्मपुत्र — की रीढ़ की हड्डी हो, असमी जन-ज सांसों की जिंदगी और उनकी खुशह जमानत ।

इनसानों की जमानतें तो केवल हैं ।

एक दिन तो मुझे यह विचार भी असम प्रदेश में से जो तेल निकलत वह भी ब्रह्मपुत्र के जल की ही ता क्योंकि जो लोग स्वभाव के मीठे हैं आंतरिक रूप से बहुत कड़वे होते है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालूम नदी भी अपने कडवेपन को धरती में जज्ब कर देती हो । ब्रह्मा का पुत्र ब्रह्मा से कम बली तो नहीं हो सकता ।

दुनिया की सभी नदियों में से ब्रह्मपुत्र का बहाव बिलकुल अलग और अनोखा है । यह डायमिट्रीकली विरोधी दिशा में बहता है ।

तिब्बत में यह पश्चिम से पूरब की ओर, पर फिर झट ही तिब्बत के दक्षिण की ओर और फिर असम में पूरब की ओर से पश्चिम की ओर चलता है । इसके बहाव में सहायक नदियों के सम्मिलित होने का तरीका भी अनोखा है ।

गिलगित नदी सिंध में मीनजी से ऊपर मिलती है, मारू वरदवान किश्तवार के समीप चिनाब में मिलती है । इस तरह ही सपिति सतलुज से और अरुण कोसी से मिलन करते हैं, परंतु ब्रह्मपुत्र अलग स्वभाव का मालिक है ।

कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि ब्रह्मपुत्र हिमालय पर्वत से भी अधिक आयु का है । क्या कह सकते हैं ? ...वैसे यह सच है कि हिमालय से भी पहले तिब्बत में से भारत में एक नदी इंडो-ब्रह्म बहती थी । उसके कीचड़ में से ही असम और बंगाल की धरती ने सागर में से रूप ग्रहण किया है ?

बाढ़ के समय में तो ऐसे प्रतीत होता है जैसे कि ब्रह्मपुत्र एक शेषनाग की तरह धरती पर फैल गया हो । लोग इससे डरते भी हैं और इसकी पूजा भी करते हैं । और क्या करें ।

कहते हैं कि दिल की बीमारी को दूर करनेवाली औषधि सांप के जहर से बनती है । जब जहर जहर नहीं रहता तो फिर त्रियाक् (अमृत) बन जाता है ।

ब्रह्मपुत्र का तूफानी पानी भी तो अब लोगों के लिए त्रियाक् का ही काम करेगा ।

शिवजी ने नृत्यकला इंडोनेशिया के लोगों में बांट दी और भारतीय लोगों को दी अपनी विभूति ।

भारतीय नृत्यकला उसी विभूति में से कुकनूस की तरह जन्मी है ।

यह विचार रविन्द्रनाथ टैगोर का है पर है हकीकी और सत्य ।

देश में अंगरेजों का राज्य स्थापित होने से पहले असम भी भारत का हिस्सा नहीं रहा । महान मुगल भी असम की स्वतंत्रता को तबाह नहीं कर सके । यहां तक कि औरंगजेब भी नहीं । मीर जुमला की मुगल फौजों का असम में वही हाल हुआ जो कि रूस में नेपोलियन का हुआ था । असम का महान शूरवीर पुत्र रुद्रसिंह यदि कम आयु में ही न मर जाता तो वह मुगलों के मैदान में ही उनसे टक्कर लेता । असम के लोग रुद्रसिंह को पूर्व का शिवाजी समझते थे ।

यह भी अजीब संयोग है कि पटना में जब सन १६६६ में गुरु गोविंदसिंहजी महाराज का जन्म हुआ, उस समय उनके पिता गुरु तेगबहादुर साहिब असम प्रदेश अर्थात कामरूप देश की यात्रा कर रहे थे ।

यदि हमारे पास —रुद्रसिंह जैसे अन्य भी शूरवीर होते तो... ?

कम से कम हमारे पास गद्दार तो न होते...

कामरूप प्रदेश के लोग अभी तक तो ब्रह्मपुत्र के अक्खड़ स्वभाव को वश में नहीं कर सके ।

कल के बारे में क्या कहा जाए ?

९६-गुरजीत नगर,
जालंधर-१४४०२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाइकू सत्रह अक्षरों की एक अत्यंत संक्षिप्त और गूढ़ कविता है जिसे ५+७+५ रूप में तीन पंक्तियों में लिखा जाता है । हाइकू जापान के ज़ेन बौद्धधर्म का विख्यात माध्यम है । ज़ेन का जन्म भारत की योग और तंत्र परंपराओं में हुआ । इसका मूल संस्कृत का 'ध्यान' है । चीन से होते हुए यह परंपरा जापान पहुंची और वहां लोकप्रिय हुई । ध्यान अथवा ज़ेन का ध्येय समाधि (जापानी में सम्माइ) है । यह धारणा है कि इस अवस्था में व्यक्ति साधारण यथार्थ को पार कर लेता है । इस अवस्था में

एक विशाल जुगनू हल्के-हल्के पार उतरता है...

● सुभाष काक

विरोधाभास नहीं होता पर यह विरोधाभास द्वारा ही अभिव्यक्त हो सकती है । एकत्व और सार्विकता का द्वंद्वात्मक तर्क ही इस अवस्था का आधार है । इसीलिए पहेलियों की भाषा ज़ेन के लिए अमूल्य है । यह भाषा ज़ेन के साधक के जीवन घटनाओं को भी बांधती है । इसीलिए ज़ेन के महत्त्वपूर्ण प्रतीक साधारण जीवन से लिए गये हैं— जैसे चायपान । इस क्रिया की मूल तुच्छता को उत्कृष्ट कर इसे जापानी सभ्यता का प्रमुख समारोह बनाया गया है । इससे अनुशासन, एकत्व, मैत्री, अनुष्ठान की भूमिका केंद्रित होती है । चायपान समारोह का वही लक्ष्य है जो यज्ञ का माना जाता है । हाइकू का कवि अपनी लोकोत्तर प्रज्ञा अत्यंत साधारण पर आश्चर्यजनक अनुभवों के माध्यम से सार्थक करता है । ज़ेन के अनुयायी कहते हैं : 'यदि बुद्ध मिले तो उसे मार दो । क्योंकि ज्ञान के लिए प्रतीकों से परे जाना अनिवार्य है ।'

आधुनिक हाइकू का प्रवर्तक : बाशो

बाशो को आधुनिक शैली के हाइकू का प्रवर्तक माना जाता है ।

बाशो के पहले हाइकू को लीजिए । क्या पुराना कुंड संसार है, मंडूक हम और हमारा शब्द, हमारे जीवन की अर्थवत्ता ? दूसरे दृष्टिकोण से मंडूक के शब्द पर ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाइकू का कवि चेतना का वर्णन इसके प्रवाह द्वारा करना चाहता है । ऐसा ही योग के आचार्य भी मानते हैं ।

देते समय वह शब्द ही ब्रह्म है ।

हाइकू का लक्ष्य चेतना के रहस्य का चित्रण करना है । चेतना के आश्चर्यजनक गुण हैं । इसके बारे में सीधे चिंतन नहीं किया जा सकता । साधारणतः हम चेतना को शरीर की इच्छाओं से समीकृत करते हैं । पर यदि यह उचित होता तो हम केवल यंत्रमात्र ही होते । हाइकू का कवि चेतना का वर्णन इसके प्रवाह द्वारा करना चाहता है । ऐसा ही योग के आचार्य भी मानते हैं ।

समग्र जाग्रति जरूरी

ज़ेन के गुरु तलवारबाजी की बहुत बात करते हैं । इसका कारण यह है कि संग्राम में तलवारबाज सिद्धांत के बारे में नहीं सोच सकता । उसे उस समय अपनी चेतना के प्रवाह के साथ जाना है यदि उसे अपने जीवन को बचाने की कुछ भी आशा हो । हाइकू से पाठक को यह अनुभव होना चाहिए कि उसका जीवन भी एक युद्ध है, अतः वह पूर्णरूप से जागृत हो ।

चीन और जापान में ध्यान (ज़ेन) परंपरा का संस्थापक बोधिधर्म को माना जाता है जो इसे वहां भारत से ले गया । एक कथा के अनुसार जब सम्राट वू (लिआंग वंश) ने बोधिधर्म से पूछा : "पवित्र परम सत्य क्या है ?" बोधिधर्म ने उत्तर दिया : "यह शून्य है, और पवित्रता का कोई अर्थ नहीं ।" तो सम्राट ने आगे पूछा : "फिर मेरे सामने यह कौन खड़ा है ?" "मैं नहीं जानता ।" उत्तर मिला । यहां यह उल्लेखनीय है कि बोधिधर्म का 'शून्य' एक बीज शब्द है जिसका अर्थ परम चेतना अथवा ब्रह्म अथवा शिव भी है ।

जापान की कला को भी ज़ेन की खिड़की से देखा जा सकता है । जापानी और चीनी चित्रों में ब्रश का बहुत हल्का स्पर्श और अल्पतम अभिव्यंजना मिलते हैं । हाइकू की ही भांति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमजि किते
ननियर युकशि
सुमिरे-गुस

पर्वत पथ पर
मुझे गूढ उन्माद मिला
उन नीलपुष्पों से ।

योकु मिरेब
नजुन हन सकु
ककिने कन ।

निकट निरीक्षण से
नजुन खिलता मिला
बाड़े के पास ।

नजुन : एक साधारण श्वेत पुष्प

किककु (सन १६६०-१७०७)

अमगएरु
बशो नि नोरिते
सोयोगि केरि ।

एक छोटा मंडूक
केला पत्ते सवार
कांप रहा ।

जोसो (सन १६६१-१७०४)

मिजु सोको नो
इव नि ओचित्सुकु
कोनो ह कन ।

पानी के नीचे
शिला पर पड़े
झड़े हुए पत्ते ।

बाशो (सन १६४३-१६९४)

फुरु इके या !
कवाजु टोबिकोमू
मिजु नो ओटो ।

पुराना कुंड हा !
मंडूक कूद रहा
जल का शब्द ।

हितोत्सु या नि
यूजो मो नेतरि
हगि तो त्सुंकि ।

एक छत तले
वेश्या सोये
पुष्प और चंद्रमा भी ।

हत्सु शिगुरे
सरु मो कोमिनो वो
होशिगे नरि ।

शरद् की प्रथम वर्षा
बंदर चाहता लगता है
तिनकों का वस्त्र ।

नोमि शिरमि
उम नो न्यो सुरु
मकुरमोतो ।

पिस्सू और जुएं—
घोड़ा मूत्र कर रहा
मेरे तकिये के पास ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यगत शिनु
केशिकि व मियेजु
सेमि नो कोये ।

तबि-बितो तो
वग न योबरेरु
हत्सु शिगुरे ।

करे एद नि
करसु नो तोमरि केरि
अकि नो कुरे ।

अकाल मृत्यु का
कोई बोध नहीं
चिश्चिर की आवाज में ।

एक पथिक—
मेरा नाम ऐसे स्मृत हो—
जैसे शरद् वर्षा ।

पर्ण रहित डाली
एक काक बैठा हुआ
इस शरत् संध्या ।

चियो (सन १७०३-१७७५)

होतोतोगिसु
होतोतोगिसु तोते
अकेनिकेरि !

कोयल कूक
कूक करे पूरी रातें
उषाकाल अंत में ।

इस्स (सन १७६३-१८२७)

ओ-बोतरु
युररि-युररि तो
तोरि केरि ।

एक विशाल जुगनू
हल्के-हल्के
पार उतरता है ।

शिकि (सन १८६९-१९०२)

कुस मुर य
ना मो शिरनु
शिरोकु सकु ।

तक [illegible]
हकनकि यमे वो
नत्सु ना त्सुकि ।

कुश में
एक अनजान पुष्प
श्वेत खिला ।

अष्टभुज पात्र में
अनित्य स्वप्न
ग्रीष्म चंद्रमा ।

कछ हिंदी हाइकु

बोलतीं नहीं
सच-सच कहतीं
अबोल आंखें

किसने सुने
आर्त्त स्वर वनों के
कहते रहे

बड़े सवेरे
सूरज उठ बैठा
हमें जगाने

सर्दी की रात
प्यासी धरा को नित्य
ओस चटाये

घना कोहरा
रास्ता टटोलती है
रात की ट्रेन

मर जाएंगे
हरियाली के साथ
हम सब भी

एक गठरी
सोयी पड़ी निश्चेष्ट
जगी, बुढ़िया

—कमलेश भट्ट 'कमल'
आर-१/३५, नया राजनगर, गाजियाबाद-२०१००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

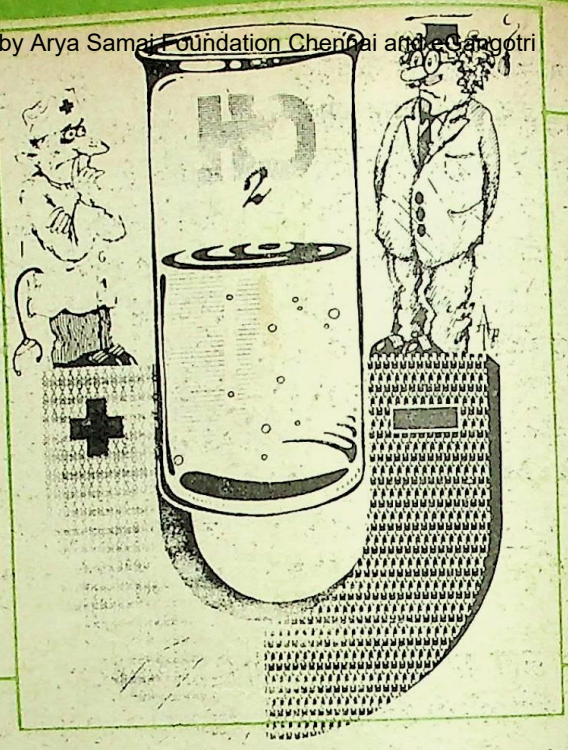

जल में स्मरण-शक्ति होती है

हम जल के बारे में क्या जानते हैं ? यह एक पारदर्शक, वर्णहीन, गंधहीन द्रव होता है जो शून्य डिग्री सेंटीग्रेड पर जम जाता है और सौ डिग्री सेंटीग्रेड पर वाष्प बन जाता है ।

जल के बारे में अब पता चला है कि इसमें 'स्मरण-शक्ति' भी होती है । कम से कम मास्को राज्य विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष, भौतिकी और गणित के डॉक्टर वूसेवोलोद किसेलेव और उनके शिष्या ल्युदमिला सेमिखिना यही सोचते हैं । उनको हाल ही में प्रकाशित लेख में, जिसमें उन्होंने जल और बर्फ के गुणों पर दुर्बल चुंबकीय क्षेत्रों के प्रभावों का वर्णन किया है दूसरी बातों के अलावा कहा गया है : "जि जल की चुंबकीय अभिक्रिया के बारे में स अधिक आश्चर्यजनक बात है इसकी अल्प लघु क्षेत्रों की क्रिया की दीर्घकालीन (५-६ घंटे) स्मृति" ।

"यह एक सुज्ञात तथ्य है", किसेलेव हैं, कि "क्रिस्टल, बर्फ के क्रिस्टलों समेत अपनी पहले की अवस्थाओं को याद रख सक्षम है । यह बात, सत्य लेकिन, विचि कि जल में भी ऐसी योग्यता होती है । व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि जल अणुओं की अधिसंख्य संरचनाओं में उसी तरह संबद्ध होती है जिस तरह बर्फ में। जल को "न्यूनताओं के विशाल संकेंद्रणवाली" बर्फ के तौर पर देखनेवाला भी एक सिद्धांत है।

या होम्योपैथी (सम चिकित्सा) को ही ले लीजिए। यह उस चिकित्सा पद्धति का नाम है जो ऐसी दवाओं की बहुत थोड़ी खुराकों को इस्तेमाल करती है जिन्हें बड़ी मात्रा में लेने से खुद बीमारी से मिलती-जुलती अवधारणा उत्पन्न हो सकती है। यह बात सिद्ध हो चुकी है कि घोल में पदार्थ के अत्यंत सूक्ष्म संकेंद्रण के बावजूद, जिसे अत्यधिक संवेदनशील उपकरणों से भी दर्ज नहीं किया जा सकता, औषध का रोगहर गुण बना रहता है। वैज्ञानिकों का विश्वास है कि जल की आणविक संरचनाओं में औषध द्वारा उत्पन्न परिवर्तन और भी अधिक समय तक कायम रहते हैं। इस प्रकार जल औषध को 'याद रखता है।'

नहीं, संशयी व्यक्ति कहते हैं, यह किसी चीज को 'याद' नहीं रख सकता, उस अवस्था को 'याद' रखने के लिए जिसमें यह या जल की आण्विक संरचना के पुनर्विन्यास का समय बहुत ज्यादा होना चाहिए।

प्रश्न है अणु का

"बेशक, अगर यह प्रश्न एक अकेले अणु का है तो इस मामले में मौलिक अवस्था में इसके प्रत्यावर्तन का समय अत्यंत सूक्ष्म हद तक थोड़ा होता है : १०-११ सेकेंड। लेकिन इन अणुओं की पारस्परिक क्रियावाले अंतःसंबद्ध कणों की विशाल मात्रा को इस रोशनी में देखते हैं। और तब यह प्रकट होता है कि वह समय जिसके दौरान पिछली अवस्था याद रहती है सेकेंडों या मिनटों तक भी पहुंच सकता है। जल का शिथिलीकरण समय तब बहुत बढ़ जाता है (कई घंटों तक) अगर जल को दुर्बल चुंबकीय क्षेत्र में रखा जाता है। हम यही कर रहे हैं।"

इस क्षेत्र में काम एल. सेमिखिना ने शुरू किया था। परिणाम प्रभावशाली रहे। उनमें एक यह रहा। प्रयोगकर्ता दो बार असवित जलवाला एक संपुटक एक परिनालिका काइल में रखते हैं और वाइंडिंग में करंट को इस तरह परिवर्तित करते हैं कि यह पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र की क्षतिपूर्ति कर सके— वे एक तरह से पृथ्वी के चुंबक को 'स्विच आफ' कर देते हैं। जल के सभी भौतिक प्राचल धीरे-धीरे

हां, जल की स्मरण-शक्ति होती है, सोवियत भौतिक-विज्ञानियों का कथन है, और यह सिद्ध करने के लिए उनके पास परिणाम है। प्राचीन लोग भी जल को एक गैर-मामूली पदार्थ मानते थे। पत्रिका युनी तेख्निक में प्रकाशित लेख, जिसका संक्षिप्त रूप यहां प्रस्तुत है, संभवतः प्रकृति के एक और रहस्य को उद्घाटित करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तित होने लगते हैं : इसकी शयनता, विद्युत चालकता, इत्यादि । पांच से छह घंटों तक के समय के बाद परिवर्तन रुक जाते हैं । लेकिन अगर आप पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को फिर से 'स्विच आन' कर दें तो मूल प्राचल फौरन नहीं लौटते, बल्कि वही पांच से छह घंटे तक का समय लंबे समय तक—कई दिनों तक—"याद रखती है ।' लेकिन बाहरी चुंबकीय क्षेत्र फिर छोटा होना चाहिए । नहीं तो सभी प्रभाव बंद हो जाएंगे ।

जल का चुंबकीय क्षेत्र

"इन प्रयोगों का पहले ही जीव विज्ञान और चिकित्सा-शास्त्र से कुछ संबंध है । मिसाल के तौर पर एक ऐसे ही प्रयोग के दौरान हमने दो बार आसवित जल में मानव रक्त सीरम से प्राप्त कुछ प्रोटीन घोल दी । नतीजे के तौर पर, हमें जल में मुक्त रूप से तैरते विशाल बृहत-अणु मिले । और जब इस घोल को उन आवृत्तियों पर चुंबकीय क्षेत्र के प्रभाव में डाला गया जिन आवृत्तियों पर जल अपने गुण बदल लेता है हमें प्रोटीन की संरचना में भी परिवर्तन मिले । ध्यान देने योग्य एक बात : अगर प्रोटीन अणुओं को उन्हीं क्षेत्रों के प्रभाव में जल की अनुपस्थिति में डाला जाता है तो प्रोटीन नहीं बदलता ।

यह पता चलता है कि जल चुंबकीय क्षेत्र की क्रिया के बारे में सूचना अंतरित करता है । फिर यह सूचना उसकी झिल्ली में से कोशिका तक पहुंचती है और फिर वहां से इस स्नायुतंत्र और मस्तिष्क में पहुंचती है । इस प्रक्रिया के दौरान क्या घटित होता है यह बात अभी भी प्रश्न के लिए खुली है । हमें इसका गहराई से अध्ययन करना चाहिए क्योंकि इस जैविक पदार्थों के बहुत से गुणों पर पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के प्रभाव के बारे में ढेर सारी रिपोर्टें आयी हैं ।

मकड़ियों के विष से बनेगी दवाएं

सी.एन.एस. रिसर्च की एक रिपोर्ट के अनुसार कुछ मकड़ियों के विष से मिरगी की दवाएं तैयार की जा सकती हैं । अमरीका में इस समय लगभग तीस लाख लोग इस रोग से प्रभावित हैं ।

लुइसियाना (अमरीका) में एक आदर्श पिस्तौल बनायी गयी है । आदर्श इस अर्थ में कि इस पिस्तौल का उपयोग केवल आत्मरक्षा के लिए ही संभव है । चलाने के पूर्व इस पिस्तौल का घंटों एक ही स्थान पर रखा जाना आवश्यक है । और इसके बाद भी उसे केवल कुछ मिनटों के लिए ही चलाया जा सकता है । इस पिस्तौल के निर्माता जॉन मार्टिन का कहना है कि इस पिस्तौल का उपयोग अपराधी नहीं कर पाएंगे क्योंकि इसे वे साथ लेकर नहीं घूम सकेंगे । हां, घर में एक ही स्थान पर रखी रहने के कारण यह पिस्तौल आत्मरक्षा के लिए तुरंत चलायी जा सकेगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

१. पांच-पांच अंकों की ऐसी दो-दो संख्याओं के दो जोड़े बनाइए जिनमें ० से ९ तक सभी अंक शामिल हों। इनमें (क) एक जोड़े का अंतर सबसे कम हो तथा (ख.) दूसरे जोड़े का अंतर सबसे अधिक हो।

२. क. प्राचीन यूनान (ग्रीस) का वह कौन प्रसिद्ध दार्शनिक था जो अपने जमाने का एक महान वैज्ञानिक भी था ?

ख. उसने दूर-दूर से शिक्षा प्राप्त करने के लिए आये व्यक्तियों के लिए जो शिक्षा-संस्था कायम की थी उसका क्या नाम था ?

३. नेहरूजी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'भारत की खोज' (मूल अंग. 'डिस्कवरी ऑव इंडिया') कहां और कब लिखी थी ?

४. क. विश्व बैंक रिपोर्ट, १९८९ के अनुसार भारत की प्रति-व्यक्ति वार्षिक आय कितनी रही ?

ख. निम्न आय वाले ४२ देशों में भारत का किन-सा स्थान है ?

५. क. देश की कुल कितनी भूमि कृषि-योग्य है ?

ख. इसमें कितनी भूमि केवल वर्षा पर आधारित तथा एक-फसली है ?

६. हिंदी साहित्य में 'छायावाद' का नामकरण किस साहित्यकार ने तथा कब किया था ?

७. क. विगत आम चुनाव में किस राज्य में लोकसभा तथा विधानसभा की सभी सीटें केवल एक ही पार्टी ने प्राप्त कर एक कीर्तिमान स्थापित किया ?

ख. किन व्यक्तियों ने लगातार पांचवीं बार चुनाव जीता ?

ग. सबसे कम उम्र का सांसद कौन चुना गया है ?

८. गत वर्ष नवम्बर में एशियाई ट्रैक और फील्ड प्रतियोगिता में किस महिला खिलाड़ी ने सबसे अधिक पदक अर्जित किये ?

९. शांति, निरस्त्रीकरण और विकास के लिए १९८९ का इंदिरा गांधी पुरस्कार किसे प्रदान किया गया है ?

१०. उच्चतम न्यायालय में प्रथम महिला न्यायाधीश कौन बनी हैं ?

११. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मराठी कहानी

बुद्ध की मूर्ति

● वि.वा. शिरवाड़कर

आखिर में राजेंद्र को आदमी के रहने की जगह दिखायी पड़ गयी । घने जंगल में रात की कालिमा में दूर पर टिमटिमाता दीपक देख उसे अपने प्राण बच जाने की आशा जान पड़ी । उस घने जंगल में रास्ता ढूंढ़ते चलते-चलते उसने अनुभव किया कि जीवन का अब शेष यहीं होगा । सेना में काम करनेवाले सिपाही कोप्रत्येक क्षण मरने के लिए तैयार रहना ही पड़ता है परंतु मौत की घड़ी इतनी नजदीक आती देख एक क्षणभर के लिए वह हड़बड़ा गया था । विगत जीवन की सारी घटनाएं उसकी आंखों के सामने आ खड़ी हो गयी थी । दूर देश में वह अपना छोटा-सा परिवार छोड़ आया था । उसका सुख, सौंदर्य उसके मन को पीड़ा देने लगा था । पत्नी के साथ किये मधुर वार्तालाप उसके कानों में गूंज रहे थे । अपने शिशुओं की नन्ही-नन्ही कोमल बाहें गले में झूलती-सी प्रतीत हो रही थीं । युद्ध क्षेत्र से वापस लौटने पर जिस सुखमय जीवन व्यतीत करने के मनसूबे बांधे थे —एक-एक चित्र सिनेमा की रील के समान एक के बाद एक-आंखों के सामने आ रहे थे । उसने मन जीवित रहने का निश्चय किया ।

अपने पैरों की ताकत पर नहीं, मन के निश्चय के बल पर वह आगे-आगे चल रहा था । शरीर पर पड़ी खाकी वरदी तार-तार हो गयी थी । पूरा शरीर जख्मों से भरा था । पर उसने अपनी वरदी फाड़कर ही उसकी पट्टियां आड़ी-तिरछी बांध दी थीं । खून के कारण बाहर की पट्टी गीली हो जाने का एहसास कर रहा था । बिना दाना-पानी के उसके प्राण छटपटा रहे थे ।

छावनी की सीमा छोड़कर वह बहुत चला आया था । रास्ता भटक गया था । ब्रह्मदेश की सीमा के पास का परप्रांत, जंगल और उसमें काली अंधेरी रात । कितनी दूरी चलकर आया हूं और कितनी दूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है—इसका उसे कुछ भी पता नहीं था। वह तो केवल इतना ही जानता था कि मैं मृत्यु से जीवन की ओर जा रहा हूं। कम से कम प्रयत्न तो वैसा ही कर रहा हूं। उसकी जेब में संगमरमर की एक छोटी-सी मूर्ति थी। गौतम बुद्ध की छोटी-सी प्रतिमा थी वह। बुद्ध को हम अपने देवों में शामिल करते हैं या नहीं इसका पक्का पता उसे नहीं था पर अब समय ही ऐसा बांका आ पड़ा था कि देवता के समान दिखनेवाली किसी भी प्रतिमा को वह देवता मानने के लिए तैयार था। भक्तिभाव से उसने उस मूर्ति को प्रणाम किया। प्रणाम करते समय उसके मन में एक सहज शंका उत्पन्न हुई कि जिस व्यक्ति के गले से उसने यह प्रतिमा छीन ली, उसका ही इस मूर्ति ने रक्षण नहीं किया। राजेंद्र के शस्त्र से घायल होकर उसकी प्राणज्योत बुझ गयी थी।

सब कुछ निःशेष हो जाने पर राजेंद्र को ज्ञात हुआ था कि वह व्यक्ति अपना शत्रु नहीं था। कम से कम शत्रुपक्ष का सिपाही तो निश्चित रूप से नहीं था। वह तो एक भोला-भाला निशस्त्र चरवाहा था। उसे अत्यंत दुःख हुआ। अपने किये पर पछताने लगा पर स्वयं के जीवन की रक्षा के लिए मरण का व्यापार करनेवाला सिपाही कितनी देर तक पश्चाताप करता रहता ? उसने उस व्यक्ति के गले में पड़ी सुंदर मूर्ति निकाल ली और अपनी खाली हुई बंदूक अपने कंधे पर डालकर आगे बढ़ गया। जो भगवान उस चरवाहे के काम नहीं आया, वह उसके क्या काम आएगा ? कुछ कहा नहीं जा सकता। भगवान की करनी का थाह पता मनुष्य को कभी नहीं लगा है। उसकी लीला तो अपरंपार है।

सामने के झुरमुट में से आती दीपक की लौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मद्धिम प्रकाश को देखकर उस प्रतिमा पर उसकी श्रद्धा बढ़ने लगी थी । मीलों चल कर पुनः मनुष्य बस्ती में जीवित पहुंचूंगा, इसकी उसे जरा भी आशा नहीं थी परंतु इस दीपक की मद्धिम रोशनी के रूप में अब उसे मनुष्य बस्ती दिखायी पड़ रही थी । यह शत्रु पक्ष की है या मित्र पक्ष की ? क्या पता ? मानव जाति को शत्रुत्व एवं मित्रत्व में विभाजित करनेवाले 'युद्ध' के प्रति उसके मन में खीझ उत्पन्न हुई । यह प्रदेश शत्रु का है, इसका मतलब है यह शत्रु का ही घर होगा परंतु शत्रु जीवसृष्टि का अलग जीव न होकर वह भी तो मनुष्य ही होता है न !...

दीपक की लौ की दिशा में आगे-आगे बढ़ते उसे एक कच्चा रास्ता मिला । उस कच्चे रास्ते से चलते ठीक वह उस झोपड़ी के दरवाजे के पास आ खड़ा हुआ । घर पुराना और छोटा था, बाहर का दरवाजा खुला ही था । कुछ सोच कर वह देहरी के पास खड़ा हो गया ।

सामने कमरे में एक दीपक टिमटिमा रहा था । कमरे में कोई दिखायी नहीं पड़ रहा था । कोने में एक टूटी खटिया पड़ी थी और उसके पास ही कुछ पुराने कपड़े बिखरे थे । दीवार से सटी गृहस्थी की कुछ चीजें पड़ी थीं । एक कोने में कुल्हाड़ी, हंसिया, आरी, छेनी आदि औजार पड़े थे ।

राजेंद्र उस देश में बोली जानेवाली भाषा टूटी-फूटी बोल सकता था । उसने उस भाषा में जोर से पूछा, "कौन है घर में ?"

अंदर के कमरे में से एक वृद्ध बाहर आया । उसने राजेंद्र के इस अजीब रूप को संदेह की दृष्टि से देखा । बूढ़ा शरीर से हट्टा-कट्टा था । मुड़कर उसने कोने में पड़ी कुल्हाड़ी उठायी और बाहर आकर पूछा, "हो तुम ? क्या चाहिए तुम्हें ?"

"मैं एक सिपाही हूं ।"—राजेंद्र ने कहा ।

"सिपाही ? यहां क्यों आये हो ? क्या है यहां ?"

"किसलिए ?"

"लड़ाई करने के लिए ?" एक साथ तीन प्रश्न ।

"यहां मुझे आश्रय चाहिए । दोपहर से भटक जाने के कारण अब तक चल नहीं भूख और प्यास से मेरे प्राण निकले जा आप यदि रातभर के लिए मुझे आश्रय बड़ा उपकार होगा ।" राजेंद्र ने कहा ।

"तुम यह सब सच कह रहे हो न ?" ने सशंकित होकर प्रश्न किया ।

"भगवान का नाम लेकर कहता हूं सच बोल रहा हूं ।"

"ठीक है आ जाओ भीतर"—बूढ़े कहा । अपने हाथ की कुल्हाड़ी कोने हुए बोला —"इसे अपना ही घर समझ

बूढ़े के पीछे-पीछे राजेंद्र ने घर में किया ।

बूढ़े ने खटिया पर एक चटाई बिछा एक गद्दे को मोड़कर उसका तकिया बना पर ठीक से धर दिया फिर राजेंद्र की हुए बोला, "बैठो ! जरा आराम करो गरीब के घर की नून-रोटी को मीठा लेना ।"

इसी बीच बाहर की आहट अंदर पहुंची । अंदर से एक स्त्री कंठ ने पूछा आया कि नहीं ?"

"बेटा नहीं आया अब तक"—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रु प्रदेश में भटक गये सिपाही ने अनजाने में एक चरवाहे को शत्रु समझकर गोली मार दी । और फिर वह आश्रय की तलाश में निकल पड़ा । चलते वक्त वह मृतक के गले में पड़ी बुद्ध की छोटी-सी मूर्ति निकालना न भूला । बाद में इसी मूर्ति के कारण उसे पश्चाताप की अग्नि में जलना पड़ा । क्यों ?
पढ़िए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित मराठी के यशस्वी कवि वि. वा. शिरवाडकर कुसुमाग्रज की इस मार्मिक कहानी में ।

रवाजे की ओर मुंह कर जरा जोर से कहा, लेकिन एक अतिथि आये हैं ।''

''अतिथि ?'' भीतर से स्त्री ने पूछा ।

''हां ! वह खाना खाएंगे ।'' बूढ़े ने उत्तर दिया ।

भीतर से ही प्रश्नोत्तर करनेवाली स्त्री रसोई की देहरी पर आ खड़ी हो गयी और बड़े कुतूहल से इस समय—बेमौके आनेवाले अतिथि को देखने लगी ।

राजेंद्र तुरंत बोला, ''माफ कीजिए, बेमौके आकर मैंने आपको बड़ी तकलीफ दी है पर...''

''तकलीफ की क्या बात है ?'' बूढ़े ने जरा ऊंची आवाज में कहा, ''अतिथि के रूप में साक्षात भगवान ही आते हैं ऐसा हम मानते हैं ।''

अपनी पत्नी की ओर देख बूढ़ा बोला, ''थाली तैयार है न ?''

''हां तैयार है पर... पर...''

''पर क्या ?''—बूढ़ा चिल्लाया ।

''वह मैंने बेटे के लिए परोस रखी है ।'' नीचा कर स्त्री ने कहा ।

''बेटा जैसा तेरा है, वैसा मेरा भी है''—बूढ़ ने कठोरता से कहा, ''जब वह आ जाएगा तब मैं खुद अपने हाथों रांधकर उसे खिलाऊंगा । जा, थाली ले आ ।''

स्त्री चुपचाप अंदर चली गयी ।

राजेंद्र बूढ़े-बूढ़ी के संवाद सुनकर मन ही मन लज्जित हुआ । वह बोला, ''मैं आपको तकलीफ देना नहीं चाहता । आप यदि मुझे केवल पानी ही पीने को दें तो भी मेरे ऊपर बहुत उपकार होगा ।''

''केवल पानी देने के लिए आदमी के घर की क्या जरूरत ? प्रत्येक झरने से, सोते से पानी गिरता है और नदी में से प्रवाहित होता है । इस घर में केवल पानी नहीं मिलेगा ।''

यह कहते-कहते बूढ़े की नजर राजेंद्र के घावों की ओर गयी । दीपक की मद्धिम रोशनी में उसे घावों से रिसते खून की बूंदें दिखायी दीं । वह एकदम चिल्लाया, ''तुम घायल हो गये हो ?''

''जी हां ।''

''यह तुमने पहले क्यों नहीं बताया ?''

रवरी, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूढ़ा तुरंत अपने काम में लग गया । अंदर जाकर वह पानी ले आया । आले में रखे सामान में से उसने एक बटुआ निकाला और एकदम पुराना महीन-सा धुला कपड़ा निकाल उसकी पट्टी फाड़ी । राजेंद्र को ओसारे पर बैठा बूढ़े ने घाव धोये । बटुए में से कुछ दवाइयां निकालकर लगायीं और पट्टी बांध दी ।

अपने एकलौते बेटे के लिए परोसकर रखी थाली घर-मालकिन ने अतिथि के सामने ला रखी और बड़े आग्रहपूर्वक उसे भोजन कराया ।

खाना खाते हुए राजेंद्र ने एक निगाह रसोईघर की ओर डाली । वहां सामान बहुत कम था । प्रतिदिन मजदूरी कर पेट पालनेवाला यह परिवार था । उस प्रदेश में जगह-जगह पर अपनी झोपड़ीनुमा मकान बनाकर अनेक परिवार बस गये थे । लड़ाई के आसार नजर आते ही कई परिवार जगह छोड़कर अन्यत्र चले गये थे । जिनमें कहीं और जाकर बस सकने की इच्छा और ताकत नहीं थी, केवल वे ही परिवार वहां बच गये थे । रोज मिलनेवाले शिकार और थोड़ी-बहुत मजदूरी पर ही इनकी गुजर-बसर हो रही थी । ऐसे थे ये परिवार । इनके घर में सामान ही क्या होगा ? पेटभर भोजन कर लेने पर मध्यरात्रि में वापस लौट आनेवाले बूढ़े के बेटे को आधा पेट ही खाना मिलेगा, यह राजेंद्र ने समझ लिया था । उसने भोजन किया । खाना खाने से उसके पेट की ऐंठती आंतों को राहत मिली थी । भूख से व्याकुल हो जो प्राण छटपटाकर बाहर ही निकलना चाहते थे उन्हें अब ताजगी मिली थी । उसका मन तृप्ति से उल्लसित हो उठा और मन कृतज्ञता से भर गया ।

राजेंद्र खाना खाकर बाहरवाले कमरे में बैठा । उसने बूढ़े से कहा, "जब तक मेरे में प्राण रहेंगे, मैं आपका एहसान कभी नहीं भूलूंगा क्योंकि आज आपके आश्रय से ही जीवित बचा हूं । आपने अपने बेटे के लिए परोसी थाली मेरे सामने रखी, मैं यह उपकार कभी नहीं भूलूंगा ।"

"इसी कारण तुम मुझे मेरे बेटे के समान हो ।" बूढ़े ने चट से उत्तर दिया । "यदि वह यहां होता तो वह भी यही करता । पता नहीं इतनी रात हो गयी अब तक क्यों नहीं वापस लौटा ? वह इतनी देर तो कभी नहीं करता । उसी के इंतजार में दरवाजा खुला छोड़ रखे हुए जला, हम दोनों बैठे हैं । एकलौता बेटा है हमारा । ऐसे तो मुझे जरा भी चिंता नहीं होती उस पार लड़ाई छिड़ी है न । हर समय भय बना रहता है । हालांकि उस लड़ाई से हमारा कोई ताल्लुक नहीं है । हम तो जंगल लकड़ी तोड़कर और पशुओं को चराकर अपनी गुजर करते हैं लड़ाई-भिड़ाई से कोई संबंध नहीं ।"

"भगवान करें आपका बेटा जल्द लौट आये"—राजेंद्र ने कहा ।

जेब में कहीं कोई सिगरेट पड़ी है क्या टटोलने के लिए राजेंद्र ने कमीज के अंदर जेब में हाथ डाला । बुद्ध की छोटी संगमरमर की मूर्ति उसके हाथ लगी । उसके मन में विचार आया । कृतज्ञता प्रदर्शित करने मूर्ति इस बूढ़े को दी जाए तो ? उसके पैसे तो ज्यादा थे भी नहीं और शायद स्वीकार भी न करे । परंतु बुद्ध की छोटी मूर्ति वह ले सकता है । राजेंद्र को पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रदेश के लोग बुद्ध की उपासना करनेवाले हैं ।

"आपने मुझ पर जो एहसान दिखाया है, उससे मैं कभी उऋण नहीं हो सकता पर मेरे पास एक चीज है जो भेंटरूप आपको देना चाहता हूं ।" राजेंद्र बोला ।

बूढ़े ने सोचा यह जवान जेब में से कोई चमकीला सिक्का या उस जैसी चीज ही बाहर निकालेगा इसलिए उसने जोर-जोर से सिर हिलाकर कहा, "नहीं, नहीं ।"

"अतिथि का आतिथ्य करने के बदले में कुछ लेने का मतलब पाहुनचार न करने के बराबर है —ऐसा मैं समझता हूं । तुम बहुत थके हुए हो, अभी शांत सो जाओ"—बूढ़े ने कहा ।

"लेकिन मैं उसका बदला नहीं दे रहा हूं, भेंट दे रहा हूं प्रेम की एक निशानी के रूप में ।"

"मुझे भेंट रूप में भी कीमती चीज नहीं चाहिए ।"

"चीज तो कीमती है पर उसकी बाजार में कीमत नहीं—आपको जरूर पसंद आएगी ।"

"क्या है वह चीज ?"

"बुद्ध की एक मूर्ति है ।"

"बुद्ध की ?" बूढ़े ने आतुरता से पूछा । "आपके लिए उसका ज्यादा उपयोग नहीं ।"

"मैं उसे अस्वीकार नहीं कर सकता ।" बूढ़ा बोला, "भगवान को कैसे नकारा जाए ? वह तो अपने पैरों आ रहा है । मेरे बेटे के पास भी बहुत बढ़िया बुद्ध की मूर्ति है ।"

"लेकिन इतनी अच्छी नहीं होगी"—राजेंद्र बोला । उसने अपनी जेब से वह मूर्ति निकाली और बूढ़े के हाथ पर धर दी ।

बूढ़ा उठा और हाथ की बुद्ध की मूर्ति को आंखें फाड़कर देखने लगा ।

"एकदम ऐसी ही है वह भी । नहीं ! बिल्कुल नहीं ! मूर्ति । यही है वह ।"

"यही है वह मूर्ति"—राजेंद्र ने आश्चर्य से पूछा और दूसरे क्षण उसके मन में एक भयानक शंका उत्पन्न हुई । अपने कलेजे पर सौ मन का पत्थर पड़ वह चूर-चूर हो गया है ऐसा उसे जान पड़ा ।

बूढ़े ने मूर्ति हाथ में ली और बड़े गौर से उसे देखने लगा ।

"मेरे बेटे के गले की मूर्ति है यह । शहर के बाजार से मैं लाया था उसके लिए । तुम्हें कहां से मिली यह ?"

राजेंद्र कुछ देर चुप रहा । क्या कहे कैसे कहे ? यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था उसने मन ही मन कहा कितना बड़ा अपराध हुआ है उससे । और उस अपराध के दंड रूप में मुझे यह आदरातिथ्य ही नहीं, प्राणदान भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिला है । किसी भी अपराध का इतना बड़ा दंड इसके पहले कभी भी, किसी को भी, नहीं मिला होगा । उसने मन ही मन सोचा, कुछ बात बनाकर इस संकट से छुटकारा कर ले । बूढ़े को तो कुछ भी पता नहीं है । उसकी बात को तो वह मान ही लेगा । परंतु दूसरे ही क्षण उसके मन ने उसे धिक्कारा । इस आदमी से मैं झूठ बोलूं ? अपने बेटे के समान समझ इसने मेरे घाव धोये, पट्टी बांधी, खाना खिलाकर जीवनदान देनेवाले के साथ झूठ बोलकर उसकी प्रताड़ना करूं ? झूठ बोलने और नीच व्यवहार करने के अनेक मौके जीवन में आते हैं और उनका वैसा उपयोग भी करता हूं परंतु मनुष्य के जीवन में कोई क्षण आता है जिस समय मनुष्य के अंतःकरण का सारा धैर्य, सारी सच्चाई, सारी सरलता, साकार रूप धारण कर खड़ी हो जाती है । ऐसे समय भी यदि वह क्षुद्रता की तमिस्रा से अपने आप को ढंक ले तो उसे मनुष्य कहलाने का क्या हक है ?

"कहां मिली यह तुम्हें ?"—बूढ़े ने पूछा ।

"एक लड़के के गले में पड़ी थी ।"

"मेरा ही वह बेटा है । कहां है वह ?"

"बहुत बुरी हकीकत है—वह ।"

"कहां है वह ?" तेज आवाज में बूढ़े ने प्रश्न किया ।

"वह... वह... जीवित नहीं है अब वह ।"

"जीवित नहीं है ? सच कह रहे हो तुम ? एकदम सच ?" बूढ़े ने अधीर होते हुए पूछा । "किसने ? किसने मारा है उसको ?" बूढ़े के मन का असीम दुःख, क्लेष, उद्वेग एवं व्याकुलता शब्द-शब्द से फूट रही थी ।

"कौन है वह हरामजादा ? नाम बताओ उसका । अभी इसी कुल्हाड़ी से उसकी बोटी-बोटी अलग कर दूंगा ।"

"वह हरामजादा तो आपके सामने है है ।"

"क्या ? तुम ?" बूढ़े के क्रोध का टूट गया था ।

वह कुल्हाड़ी लेकर राजेंद्र पर झपटा

"आप मुझे कोई भी दंड दे सकते हैं स्वीकारने के लिए तैयार हूं ।" राजेंद्र ने नीचा झुकाकर बड़ी विनम्रता से कहा ।

बूढ़ा खटिया के पास आ क्षणभर गया । उसके पैरों की सारी शक्ति जाती वह धम् से नीचे बैठ गया । कुछ देर बोला, न हिला-डुला, अचेत-सा हो एकटक देखता रहा ।

बाद में अपने आप से अस्फुट बुदबुदाया, "भगवान की मरजी । मैं नहीं दे सकता । तुम मेरे अतिथि हो आश्रय में आये हो । मेरे बेटे की खाना खाया है । नहीं-नहीं, मैं तुम्हें सकता ।"—यह सब कहते समय दोनों नेत्रों से अश्रु बह रहे थे । गला था ।

"लेकिन... लेकिन तुमने उसकी की ? क्या किया था मेरे बेटे ने ?"

"मैंने गलती से उसकी हत्या की के प्रदेश में मैं अकेला था । वह दूर दिखायी दिया । सायंकाल के बढ़ते मुझे लगा कि यह शत्रुपक्ष का कोई पीछा कर रहा है । इसलिए मैंने बंदूक दी ।"

"यह सब कहां घटित हुआ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यहां से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर एक टीला है, उसके पास ।"

"मुझे जाना चाहिए"—बूढ़े ने कहा ।

"मैं भी आता हूं ।"

"नहीं तुम मत आना, मेरे साथ । और हां, सुनो एक प्रार्थना है —मैंने तुमसे पहले कहा था कि रातभर यहीं टिकना पर अब तुम यहां न रहो तो ज्यादा अच्छा होगा । मैं शायद अपने मन पर काबू न रख सकूं । इसके अलावा उसकी मां है न । वह काबू न कर पाएगी । अभी तो चूल्हे के पास कंबल डालकर सोयी पड़ी है इसलिए खैर है । नहीं तो पता नहीं... ।"

"मैं जाता हूं । पर आप अकेले कैसे जाएंगे ?"—राजेंद्र ने पूछा ।

"मैं अकेला नहीं जाऊंगा । अगल-बगल दो-चार किसान हैं उन्हें साथ ले जाऊंगा ।"

राजेंद्र ने अपना ओवरकोट उठा बदन पर डाला । बूढ़े की शोकाकुल अवस्था और उसमें भी वह अपने मन को अपने काबू में रख आगे के कार्य के लिए सजग देख उसका हृदय भर आया । आगे बढ़कर वह बूढ़े के पैरों से लिपट गया । रो-रोकर कहने लगा, "मुझे माफ कर दो मुझे माफ कर दो।"

"माफ करनेवाला तो वह है ।" बूढ़े ने जमीन पर पड़ी बुद्ध की मूर्ति की ओर अंगुली दिखाकर कहा, "तथागत तुम्हारी रक्षा करें । जाओ ।"

राजेंद्र झोपड़ी से बाहर निकला और जिस दिशा से वह आया था, उसी दिशा की ओर उसने अपने पैर बढ़ाये । कुछ दूर चले जाने पर उसने पीछे मुड़कर देखा । बूढ़ा अपने हाथ में टिमटिमाता दीप ले अंधेरे में रास्ता टटोलते आगे चला जा रहा था ।

८ यमाई, अक्षर सोसाइटी
समर्थनगर, नासिक-५
हिंदी रूपांतर-डॉ. विद्या केशव चिटको

कैंसर की एक कारगर औषधि

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद की क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद के वैज्ञानिकों ने कैंसर की रोकथाम करनेवाले इटेपोसाइड नामक औषधि के उत्पादन की विधि ढूंढ़ निकाली है । यह औषधि फेफड़े और पुरुषों के वृषण में कैंसर के उपचार के लिए अत्यंत लाभदायक पायी गयी है ।

इस औषधि में पोडोफाइलो टॉक्सिन नामक प्राकृतिक उत्पाद का उपयोग किया जाता है, जो हिमालय के समीपवर्ती क्षेत्रों में उगनेवाले पोडोफाइलप एमोडी पौधे से निचोड़ा जाता है । इस औषधि के व्यावसायिक स्तर पर निर्माण के लिए इसकी तकनीक एक प्रतिष्ठान को दे दी गयी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रामीण पाठकों के लिए

कलाई दांव का अनूठा पहलव

● महावीर तोमर

उस पहलवान का वास्तविक नाम था बलवंत सिंह, पर कुश्ती-प्रेमी और साधारण जनता उसे बल्लम के नाम से जानती थी। उसके कलाई दांव का नाम भी था और आतंक भी। यहां तक कि उसे इस दांव को लगाने से मना कर दिया गया था।

बड़ौत-बागपत के बीच सरूरपुर गांव में निर्धन किसान जमनादास के घर जन्मे बलवंत सिंह को किशोर अवस्था में ही लोग बल्लम नाम से पुकारने लगे थे। कुश्ती लड़ने में उसकी ख्याति गंगा-जमुना के दो आबे से बाहर पंजाब व गुजरात पहुंच गयी थी। हर वर्ष गढ़मुक्तेश्वर के कार्तिक स्नान पर होनेवाले मेले में उसके सामने कोई टिक नहीं पाता था।

कभी बादाम नसीब नहीं

बल्लम के गुरु कैराना के नबिया थे। वैसे शुभराम भड़ीना को भी वह गुरु मानता रहा। कहीं कुश्ती तय होने से एक महीने पहले ही बल्लम अपना व्यायाम अभ्यास करता था। उसकी खुराक उस समय सवा किलो घी में उड़द पकाकर होती थी। उसके गुरु नबिया भी इतनी ही खुराक लेते थे। बल्लम को बादाम कभी नसीब नहीं हो सके।

बल्लम की सर्वप्रथम कुश्ती घटोरा-चटोरा के पहलवान से हुई थी। इस दंगल को देखने बिजनौर, मुरादाबाद, दिल्ली व पंजाब (हरियाणा) के दर्शक पैदल या घोड़ों पर सवार होकर आये थे। निश्चय ही अधिक दर्शक देशखाप के थे, क्योंकि इस खाप को अकेले पुंडीर राजपूतों के चौदह सौ चालीस गांवों का समर्थन है। देशखाप में जाट, गूजर, राजपूत रोड, खेचौहान, अहीर, सैनी आदि सभी हिंदू का समूह है तो वहां मुसलमान जाट, गूजर, राजपूतों, मेवों गाड़े, कसाई, सैयद व पठान आदि का भी समर्थन है।

इस दंगल में सर्वप्रथम कुश्ती शिकोहाबाद देशखाप के एक पहलवान की काठगांव के पहलवान से हुई। भाजू भनेड़े के जोगी ने घनौरा के धोबी को गिराया। ढिकाने के ने दरीशपुर के पहलवान को पटका। कुर्दि तो और भी बहुत हुईं लेकिन प्रमुख चार जो सभी देशखाप ने जीतीं। देर होती देख साधु ने बल्लम को खड़ा कर दिया। घटोरा-चटोरा का पहलवान दिल्ली अख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजेय व फुर्तीला पहलवान था । लेकिन बल्लम ने हाथ मिलाते ही बायें हाथ की कलाई मारी और प्रतिद्वंद्वी अखाड़े में औंधे मुंह गिरा और स्वयं चित हो गया ।

दूसरी महत्त्वपूर्ण खापी कुश्ती मु. नगर में दाताराम फुगानेवाले से हुई । बल्लम लंगर कसकर चादर ओढ़कर अखाड़े के कोने में पहले ही बैठ गया था । दाताराम लंगर कसकर अखाड़े में उछलने-कूदने लगा । दर्शकों में कलसान गूजरों ने बल्लम की हार की आशंका से कलक्टर मेहताजी से कुश्ती रद्द करने की मांग की क्योंकि उन्हें भय था कि दाताराम की गढ़वाली खाप के साथ बसे कलसान ही उनके व्यंग्य, मजाक से अपमानित होंगे । इस पर कलक्टर साहब ने बल्लम को कुश्ती से हटने की बात कही तो उसने कुश्ती लड़ने का अपना निर्णय बताया । मेहताजी स्वयं राष्ट्रीय विचारों के थे । उनकी पत्नी भी दर्शकों में साथ बैठी थीं उन्हें दुःख था कि एक मासूम किसान लड़का दाताराम से जोड़ करेगा । पर बल्लम की जिद थी । कुश्ती आरंभ करा दी गयी । बल्लम ने दाहिने हाथ से कलाई मारने को उठाया । दाताराम उसे बचाने की निगाह में था कि अचानक बायें हाथ की कलाई गरदन पर पड़ी और दाताराम अखाड़े में औंधे मुंह गिरा । दर्शक चकित रह गये ।

दाह-संस्कार की तैयारी

एक बार बल्लम शुभराम के भड़ीना गांव गया । वहां उसे शुभराम ने कुश्ती लड़ने को तैयार कर लिया । शुभराम ने उसे कलाई लगाने को कहा । बल्लम पहले तो कलाई करने को तैयार नहीं हुआ परंतु शुभराम के हठ

के कारण उसने बायें हाथ को तैयार किया । उधर शुभराम चौकन्ना था । यह देख बल्लम ने दायें हाथ की कलाई मारी तो शुभराम अचेत हो गया । गांववालों ने बल्लम को रस्सों से जकड़कर कोठे में बंद कर दिया कि यदि शुभराम मर गया तो बल्लम को भी मारकर उसके साथ ही दाह-संस्कार कर देंगे । कुछ देर बाद शुभराम को होश आया तो उसने बल्लम के बारे में पूछा गांववालों ने जब बल्लम के संबंध में उक्त बात बतायी तो वह बहुत दुःखी हुआ । उसने बल्लम को बुलवाकर उससे प्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराया कि वह कभी भी कलाई न मारेगा ।

बल्लम के बारे में कई प्रसंग आज भी लोग चाव से बताते हैं । कहा जाता है कि आज के हरियाणा के किसी गांव में बल्लम एक झगड़े के निपटारे के लिए गया था । कहा-सुनी हुई और गोली चल गयी । एक व्यक्ति भी मर गया । रिपोर्ट में बल्लम का नाम भी लिखा दिया गया ।

जब मेरठ के लोगों को इस बात का पता चला तो वे कलक्टर और कमिश्नर से मिले । उन्होंने उन्हें सुझाया कि बल्लम नामी पहलवान है । यदि उसकी कुश्ती रख दी जाए तो टिकट से सरकार को काफी आय हो सकती है । यह सुझाव मान लिया गया और बागपत में बल्लम और जयसिंह धांगड़ के बीच कुश्ती रख दी गयी । उसके लिए रखे गये टिकट बेचने की जिम्मेदारी नंबरदारों और मुखियाओं को सौंप दी गयी । दंगलवाले दिन काफी भीड़ एकत्र हो गयी । इसमें गवर्नर भी सपत्नीक आये । नवाब बागपत ने बावन जोड़ी बैलों से जुती गाड़ी में उन्हें बैठाकर जुलूस निकाला । कुश्ती का समय आ गया और गवर्नर एवं अन्य अफसर भी अपने-अपने स्थानों पर बैठ गये । जिला बोर्ड के तत्कालीन चेयरमैन मुंशीसिंह बावली भी गवर्नर के साथ बैठे । बल्लम पर कलाई दांव लगाने पर रोक लगा दी गयी थी ।

जयसिंह धांगड़ बलवान पहलवान था । वह आगे बढ़कर बल्लम पर आक्रमण कर रहा था । दर्शकों को प्रतीत हो रहा था कि बल्लम भयभीत हो गया है । नवम्बर की सरदी में वह पसीने से तर-बतर था । यह देख देशखाप के लोगों ने बल्लम को गालियां देनी शुरू कर दीं । उन्होंने उसे ललकारा कि वह भले हार जाए, पर पीछे न हटे ।

बेहद रोमांचक क्षण था । सहसा बल्लम आगे बढ़ा और उसने जयसिंह को जा दबोचा । जयसिंह चिल्लाया— 'अरे मार दिया' । अगले पल बल्लम ने जयसिंह को अखाड़े के बाहर फेंक दिया । गवर्नर ने बल्लम को विजेता घोषित कर दिया ।

सबकी सहायता

बल्लम के जीवन के दो प्रसंग और ।

एक बार की बात है । जेठ की दुपहरी में एक किसान की गेहूं से लदी गाड़ी का एक पहिया नाले में उतर गया । यह देखकर किसान ने सहायता के लिए लोगों को पुकारा । पास के बाग में कुछ लोग थे । उनमें बल्लम भी था । वे सब उस किसान की सहायता के लिए आये । बल्लम ने सबको ऊपरवाला पहिया थामने को कहा और स्वयं नाले में उतर गया । उसने पहिये के आरे नीचे से पकड़कर उसे उठा दिया । पर इसी बीच दूसरा पहिया दूसरी ओर के गड्ढे में चला गया । यह देखकर बल्लम ने पिछली ठिकानी में कंधा लगाकर उछाला दिया तो गाड़ी के दोनों पहिये लीक पर आ गये ।

यह देखकर किसी अपरिचित ने कहा, आदमी के सामने बल्लम क्या होगा । इतना ठाड़ा आदमी हो नहीं सकता । तभी किसी ने उसे बताया कि अरे यही बल्लम है तो वह बल्लम से क्षमा मांगने लगा । बल्लम ने भाव से कहा, 'भाई, तूने तो मेरी बढ़ाई की क्षमा किस बात की ।'

एक बार की बात है । बल्लम का बड़ा अपने खेत में नहर का पानी दे रहा था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों ने उसे पीटकर भगा दिया और अपने खेतों में पानी देने लगे । पिटे हुए भाई ने घर आकर बल्लम को धिक्कारा । बल्लम ने बेहद शांति से उत्तर दिया— 'मैं तो गांव और देश की संपत्ति हूं । उन्हें पानी की अधिक जरूरत है । हमारा काम दूसरी बार में हो जाएगा ।'

एक व्यक्ति छिपकर उनकी बातें सुन रहा था । उसने बल्लम के बड़े भाई को पीटनेवाले लोगों को यह वार्तालाप बताया । वे सब बेहद शर्मिंदा हुए । उन्होंने तुरंत बल्लम के खेत में पानी का बहाव कर दिया ।

बल्लम का कद छह फुट से अधिक था । वह अलग पहचाना जाता था । प्रसिद्धि उसे घमंडी नहीं बना पायी थी । वह सदैव विनम्रतापूर्वक व्यवहार करता । सन १९४७ में मैंने उसे बागपत तहसील में तहसीलदार की कचहरी में देखा था । नंगे पैर, धूल से भरी घुटनों तक धोती । तहसीलदार अपनी कुरसी छोड़कर तहसीली के चौक में खड़े होकर बल्लम से बात कर रहा था । बाद में तहसीलदार उसे छोड़ने द्वार तक आया । वह पुनः अपनी कुरसी पर बैठा था कि बल्लम फिर लौटा । तहसीलदार पुनः उठ खड़ा हुआ । ऐसा आदर था बल्लम के प्रति सबका ।

बल्लम का निधन सन १९५४ में हुआ । गढ़मुक्तेश्वर मेले में उसने सिंघाड़े अत्यधिक खा लिये थे । फलतः वह बीमार पड़ गया । और बाद में इसी बीमारी में वह चल बसा ।

—गांव व डाक. बरवली, पट्टी गोपी,
(जिला- मेरठ)

कुछ चीनी कहावतें

- ☐ *यदि आप भोजन करना चाहते हैं तो रसोइए को कभी अपमानित न करें !*
- ☐ *यदि आप सीधे खड़े हों, किंतु आपकी परछाईं आड़ी-तिरछी पड़ रही हो तो चिंता न करें !*
- ☐ *यदि आप किसी व्यक्ति को एक मछली देते हैं तो उसे एक समय का भोजन मुहय्या करते हैं । और यदि आप उसे मछली पकड़ना सिखाते हैं तो उसे पूरे जीवन के लिए भोजन का प्रबंध कर देते हैं ।*
- ☐ *यदि आप एक वर्ष की योजना बना रहे हैं तो बीज बोयें । और यदि दशक की योजना बना रहे हैं तो वृक्ष रोपिये । पर यदि आप शताब्दी की योजना बना रहे हैं तो जनता को सुशिक्षित कीजिए !*
- ☐ *यदि आप कोई मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछ रहे हैं तो केवल पांच मिनट के लिए मूर्ख सिद्ध होंगे । और यदि आप उसे नहीं पूछेंगे तो जीवनभर मूर्ख बने रहेंगे ।*

— *प्रस्तुति : क्षिप्रा शंकर*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

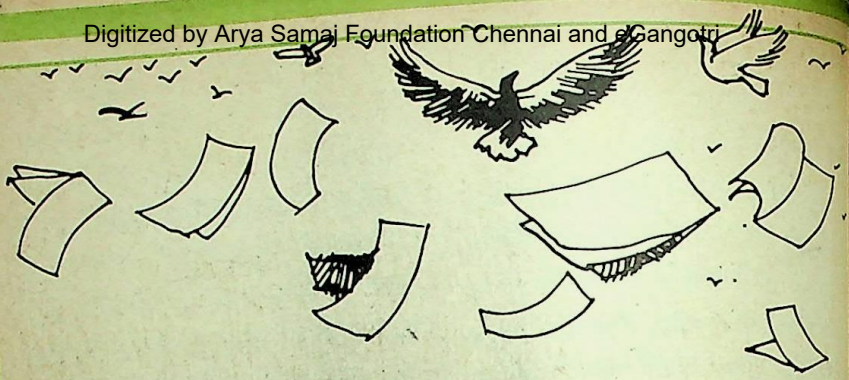

सपनों को पंख दिये होते

मुट्ठी-भर शंख दिये होते
आंखों की झीलों को संध्या
हिलकोर न देती पांवों से
पनियारा नहर जनेऊ-सा
बन लौट न जाता गांवों से
होता होठों पर इंद्रधनुष
अंजुरी-भर पंक पिये होते

मादा ख्वाहिशें धुएं का
मोटा कंबल ओढ़ बहकती हैं
घूंघट की धूप कटोरे में
सूरज की बांह पकड़ती है
होता न शील का हरण अगर
वादे निःशंक किये होते

शीशे पर छुरे उठाऊं तो
चेहरे खरोंच से भरते हैं
भीड़ों की घड़ियाली पीठें
पोछूं तो हाथ सिहरते हैं
रहते न अधूरे चित्र अगर
सपनों को पंख दिये होते

—राजमणि राय 'मणि'

बिहार टूरिज्म कनिष्क शॉपिंग प्लाजा,
१९, अशोक रोड, नयी दिल्ली-११०००१

संधि-पत्र

हां, तुम्हारा पिन-कुशन हूं
हर नुकीली बात तुम
मेरे हृदय में भोंककर
फासलों की फाइलें बढ़ाते हो
अर्दली से मांगते-से एक ठंडा ग्लास
कान में घंटी तुम्हारी चीखती है
रेत में प्यासे पड़े बच्चे-सी कितनी जोर

फिर तुम्हारे भी हृदय से
एक पेपरवेट-सा जब खिसकता है
जू की ही चिड़ियों-से
उड़ जाते हैं कितने पत्रे
कमरे की जालियों के भीतर ही
इधर-उधर

रोज मरी मौतों के
दस्तखत के नाम
संबंधों का पूरा त्यागपत्र
जेब में भिंचा करता है कभी तुम्हारी
कभी मेरी मुट्ठियों में कैद होता है

—अनामि

महिला

भारतीय कॉफी हाउस के पास
दिल्ली विश्वविद्यालय,

फरवरी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह के साथी

सुबह के साथी
अंधेरा बो रहे हैं
हम उजाले की फसल
कैसे उगायें

जो समय के भाल पर
इतिहास लिखते थे
जुल्म की हर चाल जो
नाकाम करते थे

सफर के साथी
चुभन अब बो रहे हैं
विजय का विश्वास हम
कैसे जगायें

अब किसी भी हादसे पर
कुछ नहीं होता
गांव हो या शहर चादर
तानकर सोता

प्यास के साथी
घुटन अब बो रहे हैं
तृप्ति का त्योहार हम
कैसे मनायें

हर अंधेरी रात को
सूरज उगाना है
हो कहीं भी रोशनी को
खींच लाना है

दर्द के साथी
उदासी बो रहे हैं
मिलन का मधुमास हम
कैसे खिलायें

—राधेश्याम 'बंधु'
सी-८/५१, यमुना विहार, दिल्ली-५३

जाला

मकड़ी जाला बुनती है
तुम भी जाला बुनते हो
मैं भी जाला बुनता हूं
हम सब जाले बुनते हैं

जाले इसलिए हैं
कि वे बुने जाते हैं
मकड़ी के द्वारा
तुम्हारे, मेरे
या हम सब के द्वारा

मकड़ी, तुम या मैं
या हम सब इसलिए हैं
कि अपने-अपने जालों में
या एक-दूसरे के बुने
जालों में फंसें

जब हम जाले बुनते हैं
तब चुप-चुप बुनते हैं
लेकिन जब उनमें फंसते हैं
तब बहुत शोर करते हैं

—रमेश कौशिक
बी/७८, मानसरोवर पार्क
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास्तान फतहखान और राबिया की

● एम.एस. बतरा

उसके पास किसी चीज का अभाव नहीं था। अल्लाह का दिया सब-कुछ था।... माल, दौलत, शान-शौकत, हकूमत और सरदारी, किंतु फिर भी उसके चेहरे पर हर समय उदासी छायी रहती थी। दिल पीड़ा से भरा रहता था। हीरे-जवाहरात तो थे, लेकिन कोई भी वस्तु उसके दिल को संतोष न दिला सकी। एक उत्तराधिकारी की कमी उसके लिए दुःख का कारण थी। वह सोचता था कि जब वह संसार से जाएगा, तो बेगाने लोग उसकी दौलत पर कब्जा कर लेंगे और अपना कोई उसका नाम लेनेवाला भी नहीं होगा। इन विचारों ने उसे जीवन से मायूस कर दिया था। उसने शासन का कार्यभार मंत्रियों को सौंप दिया, और शाही आवास छोड़कर एक कोठरी में खाट लेकर पड़ गया।

ईश्वर का चमत्कार देखिए, एक दिन एक फकीर ने आकर महल का दरवाजा खटखटाया। नौकरों ने उसके झोले में भीख डालनी चाही, लेकिन वह दरवेश कुछ और ढंग का था। उसे खैरात की आवश्यकता नहीं थी। वह तो सीधा राजा से मिलना चाहता था। अधिकारियों ने राजा की सेवा में इस फकीर का अनुरोध पहुंचाया, किंतु राजा ने मिलने से इनकार कर दिया। जब फकीर को मालूम हुआ, तो उसने ऊंचे स्वर में कहा कि उसे कोई पदार्थ नहीं चाहिए, वह केवल राजा से मिलना चाहता है, जिसका नाम असलम खान है। यह बात राजा तक पहुंची, तो वह बड़ा क्रोधित हुआ, "कौन गुस्ताख है, जो हमारा नाम लेकर पुकारता है। उपस्थित करो उस बेअदब को।" फकीर को झटपट हाजिर किया गया। बादशाह ने बड़े रोब से इस बेअदबी का कारण पूछा। फकीर बोला, "ऐ सरदार, मैं उन फकीरों में से नहीं हूं, जो माया की भीख मांगते हैं। न ही अपना पेट भरने आया हूं। मैं तुमसे कुछ लेने नहीं आया, बल्कि देने आया हूं। मैं तुम्हारी मायूसी का इलाज करने आया हूं। मैं तुम्हें जीवन देने और जीवित रहने की विधि सिखाने आया हूं। बताओ कि तुम क्या मांगते हो।"

राजा फकीर के इस साहस से बड़ा प्रभावित हुआ, और उसे बैठने के लिए कहा, किंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फकीर चीखकर बोला कि उसे बैठने की आवश्यकता नहीं है । फकीर तो आवाज देकर चल देते हैं । यह भूमि और देश अल्लाह के हैं, और जनता ही इनकी मालिक है । राजा को निराशावादी नहीं होना चाहिए । फकीर ने राजा को अपना खोंटा देते हुए कहा कि वह इसको एक बार सेबों के वृक्ष पर मारे और जितने सेब गिरें, उन सबको उठा लाये । उनमें से एक अपनी पत्नी को खिला दे और शेष चाहे किसी को भी दे दे । उसके मन की आशा पूरी हो जाएगी । यह कहकर फकीर चला गया । राजा थोड़ी देर बैठा सोचता रहा । आखिर फैसला किया कि वह फकीर के आदेश का पालन करेगा । कोई आश्चर्य नहीं कि खुदा उसके सूखे बाग को हरा कर दें । वह यह सोचकर उठा, खोंटा लेकर बाग में गया और जिस तरह फकीर ने कहा था, उसी प्रकार किया । साठ सेब नीचे गिरे । भवन में जाकर एक सेब अपनी रानी को खिलाया, दूसरा दासी को, तीसरा मंत्री की पत्नी को और शेष अपने सरदारों में बांट दिये ।

ईश्वर की कृपा से जिस-जिसने ये सेब खाये, उनकी आशा पूर्ण हुई । राजा यह सूचना सुनकर फूला नहीं समाता था । उसके जीवन में फिर से बहार आ गयी । वह राजकीय मामलों में फिर से दिलचस्पी लेने लगा और एक दिन ऐसा आया, जब सारे राज्य में एक ही समय साठ बच्चे पैदा हुए । राजा के घर पुत्र ने जन्म लिया, जिसका नाम फतहखान रखा गया । दासी के बच्चे का नाम हबीब खान और मंत्री की पत्नी की कोख से जो चांद-सी बच्ची पैदा हुई, उसका नाम राबिया चुना गया ।

इनके अलावा बाकी तमाम सरदारों के घर लड़के ही लड़के हुए । इस खुशी में सारे नगर में दीपमालाएं की गयीं और जश्न मनाये गये । राजा ने आदेश दिया कि सब बच्चों का पालन-पोषण राजकीय खजाने से किया जाए, और उनके लिए एक अलग पाठशाला खोली जाए । इस प्रकार इन सबकी शिक्षा और पालन-पोषण एक साथ होने लगा । यह सब एक ही स्थान पर रहते, घूमते-फिरते और खेलते । फतहखान को उनमें एक सरदार की-सी हैसियत प्राप्त थी । हबीब खान

फतहखान और राबिया में अटूट प्रेम था । फतहखान राजा का बेटा था और राबिया मंत्री की बेटी । दोनों आपस में विवाह करना चाहते थे लेकिन उनके मार्ग में बाधक बनकर खड़ा हो गया था हबीब खान, फतहखान का सौतेला भाई ! फिर क्या हुआ ? पढ़िए इस रोमांचक प्रणयकथा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फतहखान का सौतेला भाई भी था और वह बड़ा चंचल था। वह खतरनाक किस्म की शरारतें करता था। कई बार उसकी शरारतें राजकुमार और अन्य साथियों को बदनाम करती थीं।

एक दिन उसे जबरदस्त शरारत सूझी, जिसमें वह सबको सम्मिलित करना चाहता था। उसने सबके लिए गुलेलों का प्रबंध किया, और पनघट के निकट सबको छुपाकर बिठा दिया। जैसे ही कुंवारी लड़कियां पानी भरने आयीं उसने सबको गुलेलों में पत्थर जमाने को कहा। कुछ समय तो वह अल्हड़ जवान लड़कियां आपस में बातें करती रहीं। उनकी चूड़ियों के साज बजते रहे। एक-दूसरे पर पानी के छींटे डालती रहीं, और जब पानी भरकर उन्होंने घड़े सिरों पर रखे तो हबीब खान ने सबको आदेश दिया कि गुलेलों से घड़ों को लक्ष्य बनाओ। तड़ाक-तड़ाक करते हुए लड़कियों के घड़े टूट गये। वे पानी से भीग गयीं और उनके लाल और काले चमकीले वस्त्र उनके बदन पर चिपक गये। वह चीखती-चिल्लाती भाग निकलीं, जिससे हबीब को बड़ा मजा आया। शहर के लोगों ने राजा से शिकायत की। राजा बहुत नाराज हुआ, किंतु सिवाय चेतावनी के वह और कर भी क्या सकता था। लड़कियों को मिट्टी के घड़ों के बदले चमड़े के घड़े बनवा दिये। अब हबीब ने एक षड्यंत्र रचा। उसने अपने साथियों को गुलेलों के स्थान पर तीर-कमान उपलब्ध कराये और जब पनघट पर नौजवान लड़कियों के मधुर कहकहे फव्वारों की तरह फूटे और उन्होंने गीत गाये कि अब दुश्मन को मुंह की खानी पड़ेगी, और यदि इनमें शर्म हो, तो वह पनघट के पानी में डूब मरें, तो एकदम अनगिनत तीर घड़ों को चीर गये। लड़कियों की चीखों ने हबीब और उसके साथियों को बहुत प्रसन्न किया।

फतहखान और राबिया बचपन से ही घुल-मिल गये थे। वह एक पल भी एक-दूसरे से न बिछुड़ते। इनके इस गहरे मेलजोल के चर्चे हर एक की जुबान पर थे। एक बार राबिया अस्वस्थ हो गयी, तो फतहखान के होश उड़ गये। वह उसकी खाट की पाटी से जुदा न हुआ। हबीब ने बहुत ताने दिये। फतहखान का प्रेम चट्टान की तरह मजबूत था। वास्तव में प्रेम की आग दोनों तरफ सुलग रही थी। राबिया भी उसे देखे बिना एक पल न गुजार सकती। एक बार जब फतहखान ने शिकार से वापस आने में देर लगा दी, तो राबिया बेचैन हो गयी, और घोड़े पर बैठ फतहखान को ढूंढ़ने के लिए जाने लगी। इतने में दूर से धूल का एक बादल-सा उठा, तो थोड़ी ही देर में फतहखान का घोड़ा पसीने में डूबा हुआ नजर आया।

बचपन के भोले-भाले दिन वसंत ऋतु के हल्के-फुल्के क्षणों की तरह व्यतीत हो गये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शबाब की कयामत भरी ऋतु ने राबिया के आंगन में प्रवेश किया । फतहखान की उमंगों ने भी अंगड़ाइयां लीं । उनके दिलों में हजारों अफसानों ने जन्म लिया । रस्मोरिवाज की दीवार दोनों के मध्य में आ गयी । राबिया को परंपरा अनुसार परदे में रहना पड़ा । वह अब जवान हो चुकी थी, अतः उसका बेगाने मर्दों के सामने परदे के बिना आना उचित नहीं था । राबिया के साथ फतहखान के बढ़ते हुए संबंधों से न तो उसकी मां खुश थी और न ही बाप । मां अपनी भतीजी को बहू बनाकर लाना चाहती थी । राजा की अपने वजीर के साथ बनती नहीं थी । इसलिए वह नहीं चाहता था कि राबिया उसकी बहू बने । हबीब जब राबिया को देखता तो वह अपना संतुलन खो बैठता । वह इसको दिल और जान से चाहता था, किंतु उसमें अपने जज्बात प्रकट करने की हिम्मत नहीं थी । वह अंदर ही अंदर प्रेम के इन दो दीवानों को जुदा करने के लिए षड्यंत्र रचने लगा ।

फतहखान की माता ने हबीब की इस अवस्था का लाभ उठाना चाहा । वह हर हालत में अपनी भतीजी को ही बहू बनाकर लाना चाहती थी । इन दोनों ने मिलकर फतहखान और राबिया के रास्ते में गतिरोध पैदा करने शुरू कर दिये । फतहखान की माता ने अपनी भतीजी फरीदा को अपने घर बुलाया, और उसे अपनी भूमिका निभाने को कहा । यह षड्यंत्र का पहला कदम था । जब फरीदा अतिथि बनकर आयी तो हबीब ने फतहखान से कहा, "भाई जान, सुना है कि फरीदा लाखों में एक है । उसे एक नजर हमें भी तो दिखा दीजिए ।" लेकिन फतहखान किसी और की याद में मग्न था । उसने सुनी-अनसुनी कर दी । लेकिन हबीब हार माननेवाला नहीं था । एक दिन फतहखान और हबीब इकट्ठे पुष्प वाटिका की ओर गये । वहां फरीदा बड़ी नाजुक अदा के साथ फूलों से खेल रही थी । जैसे ही उसने फतहखान को देखा, तो बड़े अनोखे अंदाज से उसे सलाम किया, किंतु फतहखान ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया । वह उल्टे पांव लौटने वाला था कि इतने में फरीदा ने चीख मारी और फतहखान घबराकर दौड़ा-दौड़ा आया । फरीद ने बेहोशी का बहाना किया । फतहखान ने उसका सिर अपने घुटनों पर रख लिया ।

हबीब ने अपना षड्यंत्र सफल होते देखा, और वो चुपके से निकलकर सीधा राबिया के पास पहुंचा । फरीदा और फतहखान के प्रेम क मनघड़त किस्सा उसे जा सुनाया । उसे छत पर जाकर यह प्रेम-दृश्य देखने को कहा । और जब राबिया ने ऊपर जाकर देखा कि फतहखान फरीदा का सर पलोस रहा है तो राबिया ने इसको प्रेम का खेल समझ लिया । वास्तव में वह फरीदा को होश में लाने का प्रयास कर रहा था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फतहखान राबिया से मिलने आया, तो उसने मिलने से साफ इनकार कर दिया। फतहखान आश्चर्य में पड़ गया कि आखिर मामला क्या है। हबीब भला ऐसा अवसर कब हाथ से जाने देनेवाला था। उसने फतहखान को राबिया के बारे में भड़का दिया, कि वह घमंडी है, और तुम्हारी खुशामद से उसका सिर फिर गया है, और तुम्हारी जरा परवाह नहीं करती। हबीब की इस बदजुबानी ने फतहखान के दिल में राबिया की ओर से बदगुमानी पैदा कर दी, फिर भी उसके लिए राबिया को भुला देना अति कठिन था। हबीब की चतुराई रंग ला रही थी। उसने राजा को विश्वास दिला दिया कि फतहखान ने राबिया से अपना संबंध तोड़ लिया है और अब वह फरीदा से दिलोजान से प्रेम करता है। राजा ने फतहखान और फरीदा के विवाह की घोषणा कर दी। अब प्रत्यक्ष रूप से हबीब का रास्ता साफ हो चुका था। वह मंत्री से मिला और उसको फरीदा और फतहखान के प्रेम का मनघड़त किस्सा सुनाया। मंत्री ने फतहखान की इस हरकत को बेइज्जती माना। हबीब को अपनी सफलता का मार्ग दिखायी देने लगा। उसने फतहखान की माता को मंत्री के पास भेजा, और उसने राबिया और हबीब के विवाह की स्वीकृति दे दी।

फतहखान ने जब हालात को इतनी शीघ्रता के साथ बदलते हुए देखा, तो उसके मन को धक्का लगा। उसने फरीदा के साथ शादी करने से इनकार कर दिया। उधर हबीब ने यह बात फैला दी कि वह बहुत जल्दी राबिया से विवाह करनेवाला है। राबिया पर इस समाचार का बुरा प्रभाव पड़ा। वह हर समय आंसू बहाती या फिर धीमी आवाज में दिल की पुकार को टप्पों की जुबान देती। एक ओर राबिया और दूसरी ओर फतहखान जुदाई की भट्टी में जल रहे थे। उन्हें अब भी अपने सच्चे इश्क पर विश्वास था। दोनों के दिल एक-दूसरे की कल्पना करते रहते।

एक दिन सायंकाल राबिया ने अपनी दासी की जबानी फतहखान को संदेश भेजा, 'तुम्हारी गैरत कहां है ? तुमने सारी उम्र प्रेम निभाने का वचन दिया था। क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारी राबिया के शरीर को किसी अन्य पुरुष का हाथ लगे। याद रखो, अगर तुम्हारी गैरत मर चुकी है, तो मुझमें इतनी शक्ति बाकी है कि यदि कोई दूसरा हाथ मेरी ओर बढ़ा तो मैं हीरा चाट लूंगी। मनुष्य एक ही बार मरता है। सम्मान के साथ मृत्यु में ही एक पठान महिला की जिंदगी है।'

राबिया के इस संदेश ने फतहखान को एक नया जीवन दिया। उसने दासी से कहा कि राबिया से कह दो कि वह प्रातःकाल उसे अपने महल के पिछले द्वार पर मिले। जब फतहखान अपने वचन के अनुसार सुबह सवेरे पहुंचा तो उसने राबिया को कीमती वस्त्रों में लिपटा हुआ वहां खड़ा पाया। वह एक अप्सरा की तरह सुंदर लग रही थी। फतहखान और उसके [illegible] का एक सशस्त्र दस्ता राबिया को लेकर चल गया। हबीब हाथ मलता रह गया। उसने [illegible] से शिकायत की, लेकिन राजा का अपने इकलौते बेटे के बिछड़ने से बुरा हाल था। उसने सेना को आदेश दिया कि तत्काल राजकुमार को मनाकर वापस लाया जाए। सैनिकों के साथ हबीब भी था। सेना ने [illegible]

कादं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश का कोना-कोना छान मारा, लेकिन राजकुमार का कहीं पता न चला । अंत में तीन दिन के निरंतर सफर के बाद उन्होंने एक स्थान पर राजकुमार और उसके साथियों के तंबू देखे ।

फतहखान और उसके साथियों ने घोड़ों की टापों की आवाज सुनकर यह खयाल किया, कि शायद शाही सेना उन्हें गिरफ़ार करने आयी है । उन्होंने सेना पर हमला बोल दिया, लेकिन शीघ्र ही उनको मालूम हो गया कि वे तो उन्हें मनाने आये हैं । युद्ध रुक गया । आखिर फैसला हुआ कि रात यहीं विश्राम करके प्रातः वतन वापस जाएंगे । हबीब ने सोचा कि यदि राजकुमार वतन वापस पहुंच गया, तो मेरे दुष्कर्मों का दंड अवश्य मिलेगा । कोई ऐसी चाल चलनी चाहिए, कि राजकुमार वापस न जाए । उसने रात के अंधकार में सेना के तमाम घोड़ों को उस गांव के खेतों की ओर हांक दिया, और स्वयं तलवार लेकर चुपके से गांव में घुसा और दो चौकीदारों को कत्ल कर दिया । इस हंगामे से गांव में एक हुल्लड़-सा मच गया । बीसियों शस्त्रधारी लोगों ने हबीब का पीछा किया । वह एक तंबू के पीछे छुप गया, लेकिन क्रोध में ग्रामवासियों ने फतहखान के सैनिकों पर, जो सोये हुए थे, अचानक आक्रमण कर दिया । नींद में पड़े बहुत से सिपाही मारे गये । जो शेष बचे, उन्होंने डटकर मुकाबला किया, लेकिन कब तक ? हबीब ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए राबिया के हाथ-पांव बांध दिये । उसके मुंह में कपड़ा ठूंस दिया और उसे उठाकर भागने लगा । लेकिन फतहखान को पता चल गया, और उसने हबीब का पीछा करके तलवार के एक ही वार से उसका काम तमाम कर दिया । फतहखान के साथी एक-एक करके मारे जा रहे थे । जब फतहखान को अपना जीवन खतरे में नजर आया, तो उसने बड़ी हसरत से राबिया की ओर देखा । राबिया ने रोते हुए कहा, "फतहखान, मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकती । मुझे अपने हाथ से कत्ल कर दो ।" फतहखान रक्त से भरी तलवार लेकर आगे बढ़ा । राबिया के लबों पर एक लंबा विदाई चुंबन दिया, और फिर उसके नेत्रों को चूमा । फतहखान ने कहा, "मुझे संसार की किसी अन्य स्त्री की जरूरत नहीं । मैं तुम्हें अकेला नहीं जाने दूंगा, और तुम्हारे साथ ही इस खून में स्नान करूंगा ।" इन शब्दों के साथ ही फतहखान की तलवार राबिया के हलक से उतर गयी और यह सच्चा प्रेमी स्वयं दुश्मनों से लड़ता हुआ राबिया से जा मिला ।

असलम खान को जब यह सूचना मिली, तो उसका सिर चकराने लगा । वह अपने आसन से मुंह के बल गिरा । जब दरबारियों ने उसे उठाया, तो उसकी रूह उसके शरीर से दूर जा चुकी थी ।

एम. २११, ग्रेटर कैलाश भाग-२,
नयी दिल्ली-११००४८

सन १९८० में एकत्र किये गये आंकड़ों के अनुसार भारत से बाहर दुनिया के १३६ देशों में एक करोड़ दस लाख से अधिक भारतवंशी बसे हुए हैं । नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया और मारिशस में भारतवंशियों की संख्या काफी बड़ी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांप्रदायिक दंगों की चपेट में फंसे दो छात्रों की आप बीती

मौत के साये में एक रात

● हेमकांत झा

२४ अक्तूबर का दिन मुझे अच्छी तरह से याद है। कक्षा में प्राध्यापक वनस्पति विज्ञान पढ़ा रहे थे। मैं भूख से छटपटा रहा था क्योंकि शाम के चार बज चुके थे। मैंने सुबह आठ बजे नाश्ता ही किया था। महाविद्यालय की कक्षा समाप्त हो जाने के बाद मैं रोजाना की तरह अपने दो मित्रों के साथ घर लौट रहा था। महाविद्यालय गेट के पास मैंने कुछ भीड़ देखी। लोग रामशिला पूजन समिति के जूलूस में जा रहे थे। हम लोग काफी थके हुए थे इसलिए मैं और मेरा मित्र प्रकाश अपने एक अन्य मित्र जिया अहमद के घर चले गये। हम लोग कुछ आराम करने के बाद भीड़ के छंटने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

मुश्किल से आधा घंटा हुआ होगा कि मैंने बम फटने एवं गोली चलने की आवाज सुनी।

जिया अचानक चिल्लाया, "हेम, तुम क्या सोच रहे हो ? यह सोचने का वक्त नहीं है। भाग जाओ। नहीं तो वे लोग तुम्हें मार डालेंगे।"

लोग चिल्लाते हुए भागने लगे। हम लोगों ने इसे दो झुंडों के बीच का झंझट समझा एवं निश्चिंत हो गये। पर जिया को कुछ भनक हो चुकी थी। मुझे एवं प्रकाश को अपने घर के अंदर बैठाकर वह बाहर चला गया। कुछ देर बाद जब वह लौटा तो पता चला कि शहर में सांप्रदायिक दंगा शुरू हो गया है। हम लोग निश्चिंत थे। हम स्वयं को वहां उसी प्रकार सुरक्षित महसूस कर रहे थे, जैसे अपने घर में।

जिया गहरे सोच में डूबा था। सहसा वह हम लोगों से बोला, "चले जाओ। यहां से भाग जाओ। लोगों को पता चल गया है कि यहां पर तुम लोग छिपे हुए हो। तुम लोग तुरंत भाग जाओ वरना" वह आगे न बोल पाया।

हम लोग घबरा उठे। जिया हमारा दोस्त था। हम उसके घर अकसर जाया करते थे। उसके महल्ले को कभी हमने गैरों का महल्ला नहीं समझा। पर आज ! जिया भी विवश था। वह हमें अपने घर में पनाह देकर हमें संकट में नहीं डालना चाहता था। हम लोग बुत बने खड़े रहे।

तभी जिया अचानक फिर चिल्लाया, "हेम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम क्या सोच रहे हो ? यह सोचने का वक्त नहीं है। भाग जाओ, नहीं तो तो लोग तुम्हें मार डालेंगे।"

मैं और प्रकाश उसके घर से पीछे की तरफ की दीवार फांदकर बाहर निकले। तब तक वे लोग जिया के मकान का दरवाजा तोड़कर हम लोगों को खोजते हुए अंदर आ चुके थे। हम लोगों को भागता देख उन लोगों ने हमारा पीछा किया। उनके हाथों में घातक हथियार एवं आंख में खून की लहरें उफन रही थीं।

शाम के करीब सात बजे का वक्त था। वे लोग हमारे पीछे-पीछे अभी भी आ रहे थे। अंधेरा हो जाने के कारण वे हमारी ओर सही निशाना नहीं लगा पा रहे थे। तभी अचानक मैंने आगे की ओर से एक उग्र भीड़ को आते हुए देखा। हम लोगों ने अंदाजा लगाया कि वे लोग भी हमारे लिए काल सिद्ध होंगे। भय से हम लोग सहम गये। आगे और पीछे मौत को देखकर हम दोनों एक गड्ढे में बिना उसकी गहराई का अनुमान लगाये ही कूद गये।

सौभाग्य से गड्ढा सिर्फ चार या पांच फुट गहरा था। वह अनेक प्रकार के जलीय पौधों से भरा हुआ था। दोनों ओर से आते हुए झुंड आकर एक जगह मिल गये।

शिकार हाथ से निकल जाने के कारण वे एक-दूसरे के ऊपर नाराज दिखायी पड़ रहे थे। मैंने फिर एक बार भगवान को धन्यवाद दिया। अंधेरे के कारण वे लोग हम लोगों का सही अनुमान नहीं लगा सके और निराश होकर लौट पड़े। हम दोनों ने राहत की सांस ली। थोड़ी देर बाद वे दोनों झुंड गायब हो गये।

शहर में बम एवं गोलियां चलने की आवाजें लगातार हो रही थीं। घरों में आग लगायी जा रही थी। दुकानें लूटी जा रही थीं। प्रशासन इस पर काबू पाने में पूर्णतः असमर्थ था। पूरे शहर में कर्फ्यू लगाने के बाद भी लूटपाट का काम बंद नहीं हुआ था। सांप्रदायिकता के शिकार लोग एक-दूसरे को अधिकतम हानि पहुंचाने में लगे हुए थे।

सुबह के करीब साढ़े तीन बजे थे। वातावरण कुछ शांत दिखायी पड़ रहा था। हम लोग गड्ढे से बाहर निकले। चारों तरफ देखते हुए हम लोग हिंदु बहुल क्षेत्र की ओर बढ़ने लगे। तभी हम लोगों ने अनुभव किया कि

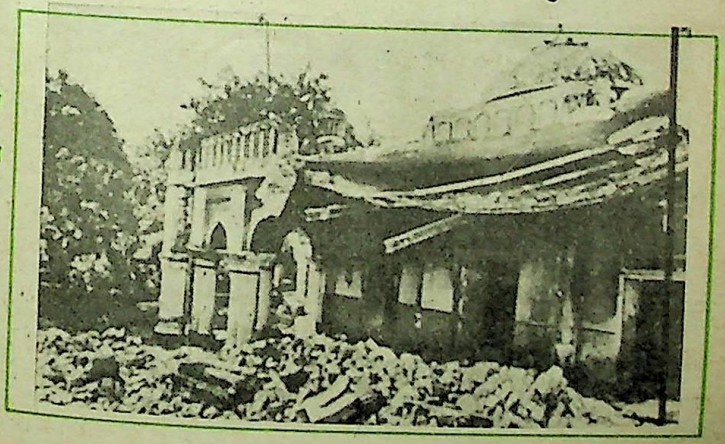

सांप्रदायिक दंगों में ध्वस्त एक मकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ लोग हमारी ओर देख रहे हैं । हमारी गतिविधियों से उन्हें शक हो गया कि हम लोग हिंदू ही हैं । एक आवाज आयी—'मारो ।' फिर एक गोली के चलने की आवाज सुनायी पड़ी । इसके बाद क्या हुआ, मैं नहीं जानता । मैं प्रकाश के साथ जान बचाकर सड़क की ओर दौड़ पड़ा । कुछ देर बाद हम लोग मुख्य सड़क पर आ गये । अब हम सुरक्षित थे । परंतु मेरा मन यहां भी शांत नहीं हुआ था । इधर खून के प्यासे हिंदू हम दोनों को मुसलमान समझ बैठे ।

हम लोग उस क्षेत्र के लिए नये थे । हमारे पास महाविद्यालय के परिचय पत्र के अलावा कुछ नहीं था । उसी से हमारे हिंदू होने का प्रमाण मिलता था । किसी तरह उसे दिखाकर हमने अपने प्राण बचाये ।

प्राणों पर से संकट टला तो भूख ने आ दबोचा । मैं चौबीस घंटों से भूखा था । प्रकाश का भी बुरा हाल था । हम लोगों ने एक पुलिस अधिकारी के पास जाकर अपनी सारी स्थिति बतलाकर सहायता मांगी, पर उन्होंने हमारी एक न सुनी । हमें भूख से परेशान देखकर विजय कुमार नामक एक व्यक्ति को सहानुभूति हो आयी । वह घर जाकर हमारे लिए भोजन ले आया । पर शायद हमारे संकट अभी खतम नहीं हुए थे ।

हम लोग भोजन कर ही रहे थे कि यह अफवाह फैल गयी कि इस क्षेत्र पर हमले के लिए कुछ लोग बढ़े चले आ रहे हैं ।

हम लोग पूरा भोजन भी न कर सके । अब फिर जान बचाने के लिए भागे । अब तक शाम घिर आयी थी । अतः वह रात हम लोगों ने एक मंदिर में बितायी ।

२६ अक्तूबर तक हम लोग पूरी तरह टूट चुके थे । मौत का आतंक, भूख से बेहाल । हम लोगों ने फिर पुलिस से सहायता का अनुरोध किया । इस बार भी निराशा हाथ लगी ।

हमें भयभीत और परेशान देखकर कुछ लोगों ने सलाह दी कि हम लोग दियारा क्षेत्र से होकर निकल जाएं । भागलपुर विश्वविद्यालय के पीछे से ही गंगा बहती है । हमें उनका उपाय जंच गया । हम लोग गंगा के किनारे-किनारे होते हुए शाम तक बरारी जा पहुंचे । अब तक सेना ने स्थिति संभाल ली थी । मैंने एक सैन्य अधिकारी को अपनी सारी दुर्दशा बतायी । वे बड़े हमदर्द निकले । उन्होंने फौजियों की सुरक्षा में हमें अपने-अपने घरों में पहुंचवा दिया ।

—आनंदगढ़ कॉलेज
तिलका मांझी, भागलपुर

साइंस डाइजेस्ट के अनुसार अमरीका में हर सोलहवें मिनट कहीं न कहीं कोई न कोई व्यक्ति गोली के कारण मरता है ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन की देवी के स्वरूप से जोड़ने का प्रमुख अभिप्राय यह है कि धन में पवित्रता का समावेश हो । अर्थात धन पवित्र तरीकों से कमाया जाए और पवित्र कर्मों पर खर्च किया जाए ।

दान कभी कुपात्र को नहीं देना चाहिए

● महेशचन्द्र शर्मा

हिंदु-तत्वज्ञानी अपनी प्रतीक-पद्धति के लिए प्रसिद्ध हैं । उन्होंने देवी-देवताओं को नये-नये प्रतीकों के रूप में लिया है । जिससे वह मानव-जीवन के साथ-साथ चलते हुए प्रतीत होते हैं । और उनके अभाव में भारतीय जीवन सूना-सूना और अधूरा प्रतीत होता है ।

सहस्त्रों देवी और देवताओं में प्रत्येक किसी-न-किसी तत्व या शाखा का प्रतीक है परंतु मानव इतिहास में तीन देवियां ऐसी हैं जो साथ-साथ रहते हुए भी तीन अलग-अलग मार्गों का पथप्रदर्शन करती हैं ।

यह तीन देवियां हैं— सरस्वती, दुर्गा और लक्ष्मी । यह हमारी तीन प्रतीक हैं । दुर्गा शक्ति का, सरस्वती विद्या और ज्ञान का तथा लक्ष्मी धन का प्रतीक है ।

देवी लक्ष्मी धन की शक्ति का प्रतीक है । भारतीय संस्कृति में यह मान्यता आम है कि उन्हीं की कृपा से आर्थिक संपन्नता प्राप्त होती है । परंतु वास्तव में धन को देवी के स्वरूप से जोड़ने का प्रमुख अभिप्राय यह है कि "धन में पवित्रता का समावेश हो ।" अर्थात धन पवित्र तरीकों से कमाया जाए और पवित्र कर्मों पर खर्च किया जाए ।

धन संपन्नता का आधार है

प्राचीन वेदों और ग्रंथों से इस बात की पुष्टि होती है कि सदैव ही धन समाज का एक प्रमुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी आमदनी से खर्च चलाओ । ऋण मत लो । संसार में वही व्यक्ति तरक्की करता है, जिसे अपनी कमाई पर भरोसा है ।

अंग माना जाता रहा है । वेदों में इस पर बहुत विस्तृत विवेचन हुआ है । प्राचीन काल से ही धन राज्य की संपन्नता का आधार है । इसलिए ज्ञान के शास्त्रियों के लिए यह आवश्यक हो गया था कि वह धन को समक्ष रखकर अपने विचार प्रस्तुत करें ।

इस पद्धति को प्रारंभ करने में कौटिल्य का नाम प्रमुख है । हालांकि प्राचीन वेदों में धन के विषय पर विस्तृत विवेचन किया गया था । परंतु राजनीतिज्ञों, आचार्यों व अर्थशास्त्रियों द्वारा धन की समीक्षा कौटिल्य से ही प्रारंभ हुई । उन्होंने अर्थशास्त्र लिखते समय धन को शासन का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना ।

उनके साथ ही एक नयी परंपरा का भी विकास हुआ कि राजनीति व धन को एक-दूसरे का आधार और पर्यायवाची बना दिया गया ।

कमाने और खर्च करने में पवित्रता

इतिहास साक्षी है कि मात्र धन के लिए ही कितने युद्ध हुए । अतः हिंदू तत्व शास्त्रियों ने तुरंत वेदों का अनुकरण किया और सर्वत्र धन को दैवीय शक्ति माना । हालांकि इससे वह धन के प्रति मनुष्य के मोह को रोक न सके ।

एक समय ऐसा आया जब धन कमाना ही मनुष्य का प्रमुख उद्देश्य हो गया । जिससे समाज में दुराचार फैलने लगा । धन कैसे कमाया जाए और कैसे खर्च किया जाए, इससे मनुष्य का संबंध नहीं था वह केवल लक्ष्मी चाहते थे । परंतु अपने कुकर्मों द्वारा लक्ष्मी को ज्यादा समय तक अपने पास नहीं रख सकते थे । तब ज्ञानियों ने संदेश दिया कि "धन कमाने और खर्चने में पवित्रता रखो ।"

परंतु यह पवित्रता कैसे बनी रहे तथा कैसे आये इस पर हिंदू-ज्ञानियों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये । वेदों में भी इस पर विस्तृत विवेचन किया गया है ।

धन की देवी लक्ष्मी

भारत की सभ्यता अपने उत्कृष्ट आचरण के लिए सदैव ही संसार प्रसिद्ध रही है । यहां मानव देवी-देवताओं के स्वरूप को स्वीकार करते हुए धर्म में विश्वास करते हुए उसकी नीतियों पर चलता है । अतः वेदों में धन को दैवीय स्वरूप से जोड़ा गया ।

समाज में, दुराचार न फैले, लोग सत्य की राह पर चलें पिछड़े लोग आगे बढ़ें, देश के उत्थान हेतु धन सत्कर्मों से प्राप्त हो तथा धन का दान गरीबों के हित में हो । इसलिए धन को देवी का रूप दिया गया ।

लक्ष्मी के पूजन का सच्चा तात्पर्य यही है कि सदैव धन हमारे परिवार, समाज और देश-विदेश के शुभ कर्मों में और तरक्की में लगे ।

धन का प्रयोग करते समय हमें कुछ तथ्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मी के पूजन का सच्चा तात्पर्य यही है कि सदैव धन हमारे परिवार, समाज और देश-विदेश के शुभ कर्मों और तरक्की में लगे ।

का स्मरण रखना चाहिए । भारतीय शास्त्रकारों के कुछ आधारभूत सिद्धांत इस संबंध में सदैव स्मरण रखने चाहिए ।

धन सत्य, न्याय, सेवा, कल्याण और परहित को ध्यान में रखते हुए पवित्र साधनों से कमाया जाए और जनता के कल्याण में व्यय किया जाए ।

उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति

(ऋग्वेद)

अर्थात दान देने से संपदा घटती नहीं अपितु दान की नींव पर निरंतर बढ़ती जाती है । सत्कर्मों में लगाया गया धन उसी प्रकार से सुरक्षित रहता है जैसे बैंकों में धन जमा रहता है । जो व्यक्ति अपना धन पिछड़े लोगों के कल्याण में लगाते हैं वह इससे उतना फल प्राप्त करते हैं, जितना कोई व्यक्ति जीवनभर भगवान की पूजा करके प्राप्त करता है । इस प्रकार दान की जड़ सदा हरी रहती है । इसी संदर्भ में कहा है

अदित्सन्तं दपयतु प्रजानन्

(अथर्ववेद)

अर्थात कंजूस व्यक्ति को भी दान देने के लिए प्रेरित करते रहना चाहिए । ज्ञानियों ने कहा है कि केवल अपना धन दान देने से ही मनुष्य को संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए, अपितु अपने मित्रों को भी निरंतर दान देने के लिए प्रेरित करना चाहिए ।

दान और पूजा समान हैं

दान देना और पूजा करना वेदों में समान बताया गया है । परंतु दान किसे दें ? इस पर वेद मौन नहीं हैं और उन्होंने इस बारे में स्पष्ट लिखा है कि दान सुपात्र को दें । कुपात्र दान के योग्य नहीं होता । यदि उसकी सहायता की भी तो वह समाज में अनाचार ही फैलाएगा, और भी अधिक उत्पाती होगा । दान खूब परखकर जांचकर ही अच्छी मनोवृत्तिवाले गरीब किंतु सज्जन पुरुष को ही देना चाहिए ।

धन का आगमन कैसे हो ? वह धन किस प्रकार का हो जो सामाजिक और पारिवारिक कार्यों में लगे । इसके लिए तत्वशास्त्री कहते हैं कि धन पुरुषार्थ का हो, मेहनत का हो । चोरी का धन तथा हेराफेरी का धन न हो । चोरी व हेराफेरी का धन सत्कर्मों में लगाने पर भी उसका फल नहीं मिलता ।

इमां मात्रां मिमीमहे यथा-परंमासातै

(अथर्ववेद)

वेद कहते हैं, 'चोरी मत करो ।' चोरी-चुपके से किसी के घर से सामान उठाकर ले आना ही नहीं है ! अपितु नाप-तौल, लेनदारी आदि में की गयी गड़बड़ी भी चोरी है । तराजू एक बेजान वस्तु है । और ग्राहक अज्ञान । यदि तराजू में यंत्र लगाकर उसे वस में कर लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ग्राहक के सामान का सही नाप-तौल नहीं किया तो पाप तराजू और ग्राहक को नहीं तुम्हें लगेगा। अतः नाप-तौल ठीक हो।

व्यापार में यदि किसी भी प्रकार की बेईमानी हो, वह व्यापार को जड़मूल से नष्ट कर देती है। कालेधन से शुरू व्यापार और काला धन देनेवाला व्यापार थोड़े दिन तो चमकता दिखायी देता है पर धीरे-धीरे वह सारा धन ही नष्ट कर देता है।

प्र पतेतः पापि लक्ष्मि

(अथर्ववेद)

अर्थात पाप की कमाई छोड़कर मेहनत व मजदूरी की कमाई पर भरोसा रखो। सच्ची मेहनत व लगन से कमाया हुआ धन ही अंत तक मनुष्य का साथ देता है।

वेदों में एक महान संदेश दिया गया है। ऋण से मुक्ति का संदेश। जहां ज्ञानियों ने लोगों को दान देने के लिए प्रेरित किया, बेईमानी की राह छुड़ायी वहीं उन्हें ऋणग्रस्त होने से भी सचेत किया।

अनृणो भवामि

(अथर्ववेद)

अर्थात अपनी आमदनी से खर्च चलाओ। ऋण मत लो। जितनी चादर हो उतने ही पांव पसारो। ऋण लेकर जो जीवन जिया वह हमारा नहीं अपितु उसका है जिससे ऋण लिया।

संसार में वही व्यक्ति तरक्की करता है जिसे अपनी कमाई पर भरोसा होता है।

अनृणाः स्याम

(अथर्ववेद)

संसार में सुखी व महान बनने के लिए ऋण मत लो।

सर्वान् पथोअनृणाः आक्षियेम

(अथर्ववेद)

कहते हैं जो ऋणमुक्त है वही तरक्की करता है। ऋणग्रस्त व्यक्ति घुल-घुलकर ही जीवन नष्ट कर देता है।

आज के युग में धन का उपार्जन और उत्सर्जन करने के लिए धन को देवी से जोड़ना नितांत आवश्यक हो गया है।

आज के वैज्ञानिक युग में मानव इन प्रतीकों को भूलता जा रहा है। इसलिए जरूरत है कि इन प्रतीकों को याद रखकर अपना आचरण शुद्ध किया जाए। धन को लक्ष्मी का प्रतीक मानकर मानव अपना तथा संसार का भला तथा तरक्की कर सकता है।

ए-१/१७७बी लारेंस रोड, दिल्ली-३५

ध्रुव प्रदेशों में अनुसंधान करनेवाले विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आर्कटिक प्रदेश में बर्फ उतनी ठोस नहीं है, जितना कि अनुमान किया जाता है। इस प्रदेश की बर्फ में बड़ी-बड़ी दरारें हैं, जिनमें से सागरतल की गरमी बाहर निकलकर ध्रुवप्रदेशों को गरम कर रही है। इन प्रदेशों में स्थापित प्रयोगशालाओं और मानवीय गतिविधियों के कारण यह गरमी और बढ़ेगी, फल यह होगा कि विश्व का तापमान पूर्वानुमान की अपेक्षा अधिक गरम होगा।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकर संक्रांति पर

प्रथम अंतरराष्ट्रीय पतंग-उत्सव

भारतीय पतंगबाजी की शौकीन अमरीकी अभिनेत्री

● मीता संघवी

वीनू की विशालतम आकार की पतंग ने जब आकाश की ऊंचाइयों को सीधे ऊपर उठकर स्पर्श किया, तो उसकी आकाश में ऊंचे उड़ने की आकांक्षा का स्वप्न साकार हो गया।

मौसम में परिवर्तन स्पष्ट परिलक्षित हो रहा था। दिन लंबे और रातें छोटी होती जा रही थीं। इस तरह पतंगबाजी का दिवस तेजी से पास आता जा रहा था।

'के पो जा ची' (आखिर हमने पतंग काट ली) अर्थात 'वो काटा' की आवाजों से आकाश गूंज रहा था। विशालकाय बहुरंगी पतंगों से पटा आकाश सभी के मन को मोहित किये हुए था। प्रत्येक वर्ग, जाति और धर्म के लोग एक जगह एकत्र थे। अवसर था पतंगबाजी के उत्सव का और स्थल था गुजरात का शहर अहमदाबाद। उत्तरायण और मकर संक्रांति से मौसम के परिवर्तन को रेखांकित किया जाता है। गुजरात में मकर संक्रांति का विशेष महत्त्व है। मकर संक्रांति १४ जनवरी को अहमदाबाद में यह पतंग-उत्सव आयोजित होता है। विश्व के कोने-कोने से पर्यटक इसके आकर्षण में बंधे अहमदाबाद चले आते हैं। इसलिए अब यह प्रतिवर्ष नियमित रूप से इसी स्थल पर हुआ करेगा।

अंतरराष्ट्रीय पतंग-उत्सव का आयोजन भारतीय पर्यटन विकास निगम तथा गुजरात पर्यटन विकास निगम के संयुक्त तत्वावधान में किया गया था। इसमें १५० प्रतियोगियों ने भाग लिया जिनमें सात राज्य स्तरीय उत्सवों के विजेता भी सम्मिलित थे। अमरीका, इंगलैंड व जापान के आठ प्रतियोगियों ने पतंग-निर्माण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

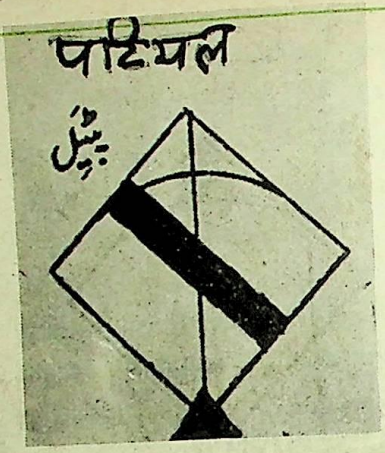

पतंग उड़ाने तथा पतंग काटने के कौशल का प्रदर्शन इस उत्सव में किया । शामीबाग पुलिस स्टेडियम को 'पतंग नगर' का नाम देकर उत्सव के लिए सजाया गया था । पतंगबाजी के सामान, गुजराती हस्तशिल्प के सामान, गुजरात खाद्य पदार्थों तथा समकालीन भारतीय हस्तशिल्प— वस्तुओं की दुकानें सजी हुई थीं । लोग तेज ठंडी हवा की भी परवाह न करते हुए सुबह-सवेरे ही से उत्सव-स्थल पर एकत्र हो जाते थे ।

एक-से-एक विचित्र पतंग वहां दिखायी और उड़ायी जा रही थी । कोई बीस फुट लंबी पूंछवाली पतंग थी तो कोई किसी जानवर की आकृति में बनायी गयी थी ।

कपड़े की पतंग

विदेशी प्रतियोगियों द्वारा पतंग उड़ाने के लिए मुख्यतः नाइलॉन के धागे की डोर चुनी गयी थी । पतंगें भी कपड़े और नाइलॉन से निर्मित थीं । पांच विदेशी प्रतियोगियों में जापान के मासाला मोदेगी, मातासोतोनी, जुज्सोचिप, सेनोवाम्बरे तथा टैक्सास टेकनीकल यूनिवर्सिटी अमरीका के मानद प्रोफेसर बिल लॉक हार्ट (जो विगत बीस वर्षों से पतंग निर्माण तथा पतंगबाजी के क्षेत्र में सक्रिय हैं) सम्मिलित थे । श्री लॉक हार्ट बच्चों तथा बड़ों को पतंग निर्माण के क्षेत्र में प्रशिक्षित करने के लिए अपने देश में एक कार्यशाला चलाते हैं । यहां के वातावरण तथा लोगों की गहन रुचि को देखकर उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि वे बार-बार इस उत्सव को देखने अहमदाबाद आना चाहेंगे, जिससे और अधिक नयी तकनीकें सीख सकें श्री लॉकहार्ट अपने साथ सात विशाल आकार की पतंगें तथा बारह नाइलॉन के कपड़े से बनी हुई विशेष प्रकार की पतंगें लेकर आये थे । अमरीका में पतंगबाजी के उत्सव प्रतिवर्ष सामान्यतः सितम्बर से दिसम्बर के मध्य आयोजित किये जाते हैं ।

पंद्रह वर्षों से पतंगबाजी

लंबे, छरहरे, खुशमिजाज और आत्मविश्वास से परिपूर्ण जॉर्ज पीटर्स अमरीकी हैं, वह १५ वर्षों से पतंगबाजी से जुड़े हैं । मेरी उनसे भेंट गत माह अहमदाबाद में आयोजित अंतराष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतंगबाजी उत्सव में हुई थी । पतंगबाजी उनका पूर्णकालिक व्यवसाय है । उन्होंने बड़े सहज भाव से बताया कि इस उत्सव में भाग लेने से उन्हें लोगों तथा उनकी सांस्कृतिक परंपराओं को जानने-समझने का नया अवसर प्राप्त हुआ है । वह रविवारीय अवकाश के क्षणों में वाशिंगटन के पूर्वी समुद्र तट, बालू तटों पर पतंगबाजी करने का आनंद लेते हैं । किंतु इसे खेलकूद के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता ।

जापान में पतंग-उत्सव

मासाला मोदेगी जापान के एक विख्यात पतंग निर्माता हैं । उन्होंने बताया कि पतंगबाजी से उन्हें बचपन से ही बेहद लगाव रहा है और वे विश्वभर की पतंगबाजी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहते हैं । जापान में ऐसे उत्सवों का आयोजन प्रत्येक नव-वर्ष दिवस के उपलक्ष्य में किया जाता है । पतंगबाजी को वंश परंपरा को आगे बढ़ाने के प्रतीक के रूप में माना जाता है । पितामह अपने पौत्र (पुरुष) के नाम पर पतंग उड़ाता है तथा लंबी परिवार शृंखला और उसकी अनश्वरता (अमरता) के लिए प्रार्थना करता है ।

अमरीकी अभिनेत्री को भी शौक

प्रसिद्ध हॉलीवुड-अभिनेत्री बारबरा कारेरा इस उत्सव में भाग लेते समय लोगों के उत्साह और उतावलेपन को देखकर चकित थीं । उनका निश्चय है कि वह प्रतिवर्ष यह अनोखा उत्सव देखने भारत आया करेंगी । हॉलीवुड की २७ फिल्मों में काम कर चुकी यह चुलबुली अभिनेत्री रंग-बिरंगी पतंगों के आकर्षण में बंधी अहमदाबाद के आकाश को रंग-बिरंगा कर देनेवाला यह उत्सव देखने उड़कर भारत चली आयी थीं ।

अहमदाबादवासियों के पतंगबाजी के

किंवदंती है कि ऐरंटाइन के एक ग्रीक वैज्ञानिक ने पतंग का आविष्कार किया था लेकिन यह विश्वास भी प्रचलित है कि एशिया में चौथी शती के पूर्व ही पतंगबाजी का प्रचलन हो गया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्साह को देखकर वह प्रमुदित थीं और एक साथ इतनी बड़ी संख्या में उड़ती पतंगों को देखकर विभोर । इससे पूर्व उन्होंने रंग-बिरंगी पतंगों से इस प्रकार आच्छादित आकाश नहीं देखा था । उनका कहना है कि भारतीय संस्कृति तथा उसकी परंपराओं से वह अत्यधिक प्रभावित हुई हैं । वह भारतीय संस्कृति को अधिक से अधिक जानना-समझना चाहती हैं ।

रोचक है पतंगों का इतिहास

भारत में मारुति कार के प्रचलन का श्रेय जापान को जाता है । किंतु ऐसा माना जाता है कि भारत ने पतंगबाजी की परंपरा जापान से ग्रहण की जिसे जापान ने चीन से ग्रहण किया था । पतंगों का रोचक इतिहास काफी पुराना है । जिसे भानुशाह अपने संग्रहालय में बताते हैं । किंवदंती है कि चौथी शताब्दी में ऐरंटाइन के आरकाइटिस इरपुल नामक ग्रीक वैज्ञानिक ने सर्वप्रथम पतंग का आविष्कार किया था । यद्यपि ऐसा भी विश्वास प्रचलित है कि इससे भी पूर्व एशिया के निवासियों में पतंगबाजी का खेल पर्याप्त लोकप्रिय था । इस प्रकार चीन को इसका आविष्कारक माना जाता है और यह भी मान्यता है कि भारत में यह खेल जापान से आया । विश्वभर में धार्मिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक कारणों से पतंगबाजी प्रचलित है । इसके अलावा पतंगबाजी शुभ शकुन के रूप में प्रयुक्त होती है । युद्ध के समय मछली मारने के लिए तथा अन्य अनेक रीति-रिवाजों तथा प्रथाओं में इसका उपयोग होता है ।

पतंगें बांस, गोल लकड़ी, धातु के हलके पाइपों, कागज, कपड़ा, पत्तियों आदि से बनायी जाती हैं । इन्हें पॉलिथीन पंख, शंख-सीपी, मनकों आदि से सजाया जाता है तथा पेंटरों द्वारा इन पर विभिन्न प्रकार के नये-नये प्रतीक चिह्न अंकित किये जाते हैं । यद्यपि इस सबका उद्देश्य अपने मौलिक दृष्टिकोण, सौंदर्यपरकता तथा तत्परक प्रशंसाभाव की अभिव्यक्ति ही होता है तथापि कुछ लोगों का विश्वास है कि पतंग पृथ्वी और स्वर्ग के मध्य संपर्क की एक कड़ी होती है ।

पतंगों का संग्रहालय

अहमदाबाद में भानुशाह का पतंग संग्रहालय है जिसमें विश्व स्तर की अनेक दुर्लभ पतंगें संग्रहीत हैं । चीन में वसंत ऋतु में पतंगें नहीं काटी जातीं । जापान में नरुता के तट पर कागज की ३०००शीटों से बनी २५०० कि.ग्र. वजनी पतंग को १०० लोगों द्वारा एक साथ डोरी पकड़कर उड़ाया गया था ।

इंडोनेशिया, काइकोनेशिया, मलयेशिया, पॉलिनेशिया इत्यादि में पतंगों को मछली पकड़ने के काम में प्रयोग में लाया जाता है । इन्हें कश्तियों पर से उड़ाया जाता है । पत्तियों से बनी बड़े आकार की पतंग में फंदेनुमा कांटा लटकाकर उड़ाया जाता है । इसके द्वारा एक समय में १० मछलियां एक साथ फंसायी जा सकती हैं ।

अहमदाबाद की भांति ही पतंगबाजी की लोकप्रियता विश्वभर में बढ़ती जा रही है । और दिनोंदिन इसका आकर्षण अधिकाधिक लोगों को अपनी ओर खींच रहा है ।

१०-ए, सुजान सिंह पार्क
नयी दिल्ली

— प्रस्तुति : अभिमन्यु सि
कादम्बि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

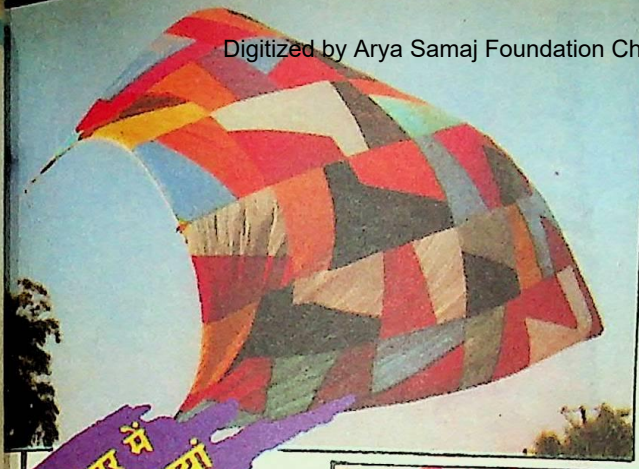

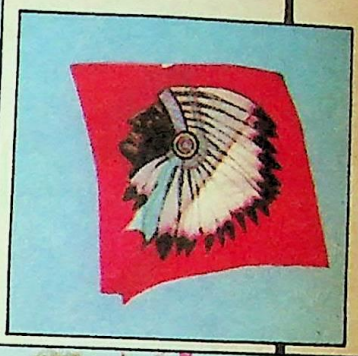

...ाश के सागर में
...ा पतंगों की किश्तियां

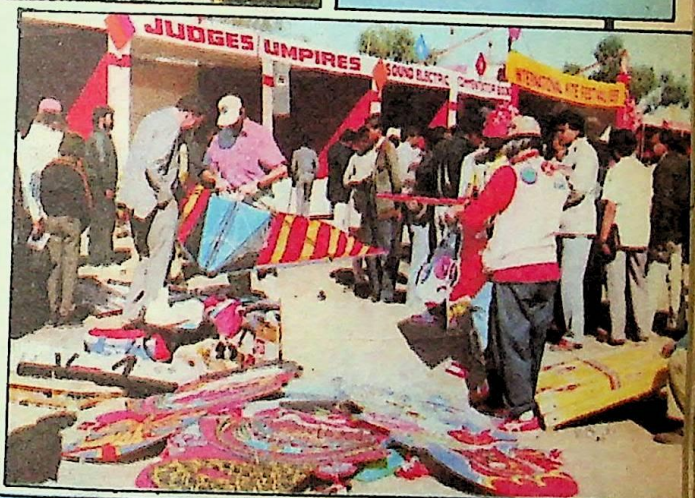

पतंग उड़ाने की तैयारी

अमरीकी अभिनेत्री बारबरा कोरिया :
डोर तो हाथ में है, उड़ कर कहां जाएगी ?

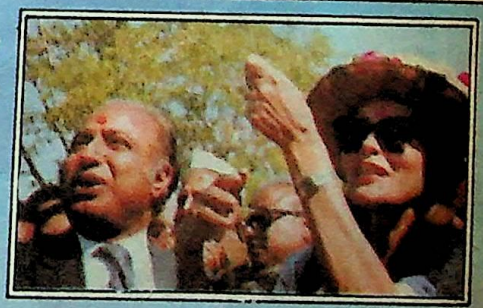

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थाईलैंड स्थित अयोध्या के भग्नावशेष

बौद्ध स्थापत्य कला का प्रभाव
अयोध्या स्थित एक स्तूप

आक्रमणों के शिकार अयोध्या के मंदिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थाईलैंड स्थित अयोध्या का गौरव ही उसका दुर्भाग्य बन गया। उसकी स्वर्ण-जटित एवं आभूषण-मंडित प्रतिमाओं के कारण अनेक आक्रामकों ने लूट-खसोट के लिए उस पर बार-बार आक्रमण किये।

एक अयोध्या थाइलैंड में

● अमरेन्द्र नारायण

सरयू तट पर स्थित भारतीय अयोध्या से करीब दो हजार कि.मी. दूर लोपबुरी नदी के किनारे बसी है एक और अयोध्या जिसे चार सौ वर्षों तक स्याम देश की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। रामायण और रामचरित मानस में वर्णित अयोध्या की भांति ही, इस अयोध्या को भी थाई रामायण 'रामाकिन' अथवा (रामकृति) में श्रद्धास्थली के रूप में वर्णित किया गया है। रामाकिन के अनुसार इस अयोध्या की सृष्टि भगवान शिव ने चार ऋषियों द्वारा निर्देशित भूमि पर इस उद्देश्य से की थी कि नारायण के सुपुत्र वहां के प्रथम शासक बन सकें।

थाई इतिहास में अयोध्या को एक शक्तिशाली साम्राज्य की राजधानी होने का श्रेय मिला है। यद्यपि स्याम देश के कई ऐतिहासिक आलेख आक्रमणों, अग्नि और अन्य आपदाओं की भेंट चढ़ चुके हैं तथापि पिछले सौ वर्षों में, इतिहासकारों ने अथक परिश्रम द्वारा इधर-उधर बिखरे तथ्यों को ढूंढ़ने एवं उन्हें एकत्र करने में सफलता पायी है।

सन १३५० में राज्य की स्थापना

इतिहासकारों के अनुसार अयोध्या राज्य की स्थापना सन १३५० में, नरेश रामाथिबोदि प्रथम जिसे (उथौंग के नाम से भी जाना जाता है) ने की थी। अयोध्या राज शीघ्र ही काफी शक्तिशाली हो गया और इसने चतुर्दिक प्रगति की। सन १४४८ में बोरोम्मात्त्यलोक्कानत नामक नरेश ने अपने आवास के लिए नये महल बनवाये और पुराने महलों को मंदिर बनाने के लिए रिक्त कर दिया। बाद में अन्य राजाओं ने वहां कई मंदिर और स्तूप बनवाये जिनमें उनके पूर्वजों के अवशेष रखे हैं।

महल के साथ लगी प्रशस्त भूमि का उपयोग राज्याभिषेक, सैनिक परेड एवं अन्य राजकीय समारोहों के आयोजन के लिए किया जाता था। अन्य स्थानों एवं विदेशों से आनेवाले सम्मानीय व्यक्तियों के स्वागत समारोह भी यहीं आयोजित किये जाते थे।

थाईलैंड की वास्तुकला के विकास में अयोध्या का विशिष्ट स्थान है। सन १३५० से सन १४८८ तक के बीच के काल में वर्गाकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

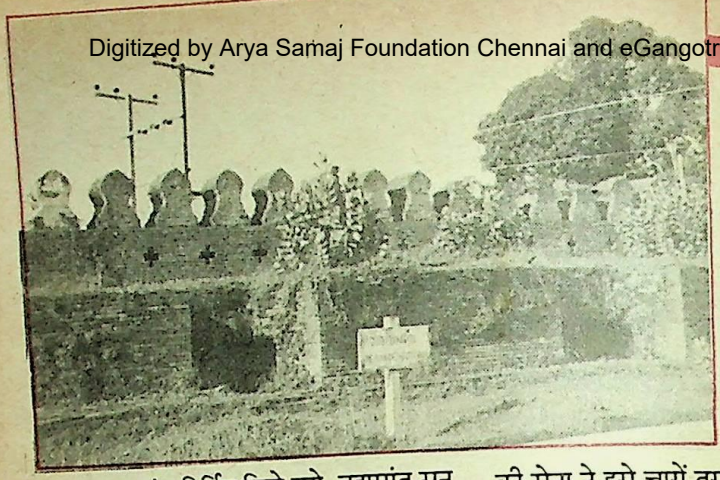

अयोध्या स्थित एक परकोटा

आधार पर प्रांग निर्मित किये गये, तदुपरांत सन १४८८ से सन १६२९ तक की अवधि में वर्गाकार के अलावा सिंहल शैली पर आधारित गोलाकार स्तूपों का निर्माण किया गया । इन स्तूपों में आकर्षक अलंकरण भी किये गये । इसके बाद बने भवनों पर कंबोडिया के शिल्प का भी प्रभाव है ।

५ राजवंशों की राजधानी

सन १३५० से सन १७६७ तक की ४१७ वर्षों की अवधि में, अयोध्या को ५ राजवंशों के ३३ नरेशों की राजधानी बने रहने का गौरव प्राप्त हुआ है । इस काल में विभिन्न भवन, मठ एवं मंदिर बनाये गये थे । भगवान बुद्ध की वृहदाकार प्रतिमाएं इसी अवधि में बनायी गयीं जिनमें दो प्रतिमाएं काफी प्रसिद्ध हैं । 'लुआंगफो थो' नामक विशालकाय प्रतिमा में भगवान बुद्ध को बैठने की मुद्रा में तथा अयोध्या की एक अन्य मूर्ति में लेटे हुए आराम की मुद्रा में दिखलाया गया है ।

कई प्रतिमाओं पर सोने की परतें जड़ी थीं एवं अन्य आभूषण मंडित थे, जिन्हें आक्रामकों ने लूट लिया । अयोध्या का गौरव ही उसके दुर्भाग्य का कारण बना और इस पर लगातार आक्रमण होते रहे । अप्रैल, १७६७ ई. में बर्मा की सेना ने इसे चारों तरफ से घेर लिया और तीन महीने तक वहां विनाश तथा लूट का तांडव होता रहा । कई महत्त्वपूर्ण आलेख एवं अन्य धरोहर अग्नि की भेंट चढ़ गये सोने की परतों को निकालने के लिए कई मूर्तियां तोड़ और जला दी गयीं । अयोध्या का पुराना नगर करीब-करीब पूरी तरह से बरबाद हो गया । अयोध्या की तबाही पर आज भी इतिहासकार को बेहद अफसोस होता है । कुछ महत्त्वपूर्ण आलेख वहां से बचाये जा सके थे जो थाई इतिहास के आधार स्तंभ हैं । बाद में स्याम की राजधानी को अयोध्या से करीब ७० कि दूर बैंगकॉक ले जाया गया ।

प्राचीन भग्नावशेषों के पार्श्व में निर्मित नगर अयोध्या एक आधुनिक नगर है जो श्री अ प्रांत की राजधानी है । इस नगर को देखकर जापान के क्योटो, नारा और भारत के पटना याद आ जाती है । अयोध्या के इन भग्नावशेषों में जगह-जगह पर भारतीय संस्कृति की छाया दिखलायी पड़ती है ।

—उप महा प्र
तकनीकी एवं विकास प
संचार विकास भवन, लेनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीलकंठ : कहां है राम की अयोध्या

● भगवती प्रसाद डोभाल

सामाजिक बुराईयों को जज्ब करना बड़ी महानता है। वास्तविकता जो भी रही हो, लेकिन समाज को मर्यादित करने के लिए बुद्धिजीवियों ने समय-समय पर अपने अनुभवों को सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया है।

इसी परंपरा में राम के चरित्र को भी मर्यादित ढंग से समाज के सामने रखा है। राम जन्म की कथा अयोध्या में भले ही ऐतिहासिक रही हो, पर कल्पनाओं के पुट से उसमें निखार आता रहा। ई. पू. और ईसा के बाद तक यह कथा श्रुतियों से पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ती रहीं। लेकिन महाकाव्य का रूप वाल्मीकि और तुलसी— जैसे काव्यकारों ने दिया। वाल्मीकि की रामायण संस्कृतनिष्ट थी। समय के साथ धीरे-धीरे संस्कृत बुद्धिजीवियों की भाषा के मार्ग पर बढ़ी, जनसाधारण से इसका नाता कम होता चला गया। इस कमी को तुलसी ने पहचाना, फिर साधारण व्यक्ति की भाषा में इसे रामचरितमानस के रूप में उतार कर उच्छश्रृंखल होते समाज को रसमयी ढंग से मर्यादित करने में सहयोग दिया।

जहां-जहां तुलसीकृत रामायण नहीं पहुंच पायी, वहां-वहां प्रांतीय स्तर की भाषाओं में मूल रामकथा की रचना हुई। यह स्थिति सिर्फ भारत में ही नहीं रही। भारत की सीमाओं को लांघकर सुदूर पूर्व से लेकर उत्तर में तिब्बत तक पहुंची। यही नहीं रामायण का विस्तार पश्चिम की ओर भी हुआ। और पुरुषोत्तम राम स्थान विशेष की भावनाओं के साथ वहां-वहां की अयोध्याओं में जन्म लेते रहे। और मूल राम कहां पैदा हुए, वह नीलकंठ की तरह विश्व दर्शन के झोंकों में तैरने लगे।

सुरों और असुरों के समुद्र मंथन से १४ रत्न प्राप्त हुए थे। इन रत्नों का भी बंटवारा हुआ था। यह सुरों और असुरों के बीच बंटा। देवताओं के हिस्से विष भी मिला। इसका उपभोग भी करना आवश्यक था। देवताओं में शिव ने विष-पान स्वीकार किया। विष पीते ही शिव यदि उसे कंठ से नीचे उतारते तो पाताल लोक भस्म होता, इस विकट स्थिति से बचने के लिए शिव ने विष-पान तो किया, पर उसे दूसरे की भलाई के लिए कंठ से नीचे नहीं उतारा। इस स्थिति में वे विष को कंठ में ही थामे रहे।

इसके कारण शिव का कंठ नीला पड़ गया। कथा है तब से शिव नीलकंठ से जाने जाते हैं। यह कथा हमें संकेत देती है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

श्रमदान

● जितेन ठाकुर

मास्टर भगवानदास गरमियों की छुट्टियां पड़ते ही परेशान हो गये थे। यूं तो ग्राम पंचायत के स्कूलों के मास्टर ऐसी लंबी छुट्टियों में अकसर परेशान ही रहते हैं, क्योंकि इस अवधि में छात्रों के घर से आनेवाली साग-सब्जी और छाछ-दही की लड़ियां टूट जाती हैं। फिर या तो मन को मसोसना पड़ता है या नगद रुपये देकर चीज खरीदनी होती है। इसलिए परेशानी छुट्टियों का प्रयाय बनकर स्वयं चली आती है। परंतु मास्टर भगवानदास की परेशानी का कारण कुछ और ही था। वर्षों से नालायक और कामचोर बच्चों के साथ सिर-खपाई करते-करते मास्टरजी को लगने लगा था कि उनका दिमाग पिलपिलाने लगा है। एक ही पाठ को तोते की भांति रटने और रटाने के साथ-साथ ठोक-पीटकर किसी प्रकार खड़ी की गयी कुरसी पर वर्षों से पसरे रहने से होते तो यह दुर्गंध एकाएक बढ़ जाती।

मास्टर भगवानदास शाम को टहलने निकलते तो थककर चूर हुए, अपने-अपने को लौटते खेतीहर मजदूरों को देखकर, उनका मन हुलस पड़ता। उनकी इच्छा होती कि इस प्रकार दिनभर के श्रम के बाद शाम होने पर थककर चूर होकर घर लौटे तो फिर इतना आराम करे कि अगली सुबह तक कोई सपना भी उनकी नींद में खलल न डाल सके। वे अकसर स्कूल से लौटते समय मास्टरजी थककर इतना टूट जाते थे कि पांव, गांव की कच्ची सड़क पर घिसटने लगते थे। परंतु वास्तव में यह थकान मानसिक होती थी जो को लिब-लिबा देती थी। मास्टर भगवानदास इस दिमागी थकान से बेहद ऊब चुके थे अब शारीरिक थकान चाहते थे जो जिस्म चरबी को मोम की भांति गला दे और

मास्टर भगवानदास एक विचित्र-से मानसिक तनाव से ग्रस्त थे। कभी-कभी उन्हें लगता कि जैसे उनकी देह की चरबी से विचित्र सी गंध उठने लगी है—ठीक सड़ रहे मांस की दुर्गंध की भांति। जब भी मास्टर भगवानदास अकेले को हरिया दे।

गरमियों की छुट्टियां आरंभ होते ही भगवानदास चौधरी के यहां जा धमके और जो प्रस्ताव उन्होंने चौधरी के समक्ष रखा सुनकर चौधरी ने मास्टरजी को कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में घूरा था जैसे बाईसवीं सदी का मानव बारहवीं सदी के जमूरे को देख रहा हो । मास्टरजी ने अपने उद्देश्य को बिना किसी विशेष भूमिका के दाग दिया था ।

"चौधरी साहब ! क्यों न हम लोग मिलकर श्रमदान करें और गांव की सड़क को पक्का कर दें । अब देखिए न बरसात— बरसात में कितनी दिक्कत हो जाती है— कीचड़ ही कीचड़ !"

"श्रमदान !" चौधरी चौंक गये थे "कौन करेगा श्रमदान भला !"

"आप, और हम सब गांववाले मिलकर करेंगे ।" मास्टरजी कुछ उत्साहित हुए थे । "अपने झंझटों-टंटों से तो फुरसत मिलती नहीं मास्साब ! ऊपर से यह फालतू का रोग कौन सिर मढ़ेगा । वैसे जिस सड़क की बात आप कर रहे हैं, उसका टेंडर हो चुका है और पांच-सात रोज में काम भी शुरू हो जाएगा ।" चौधरी ने मास्टरजी को धारदार दृष्टि से छील दिया था ।

चौधरी की दृष्टि की छीलन मास्टर

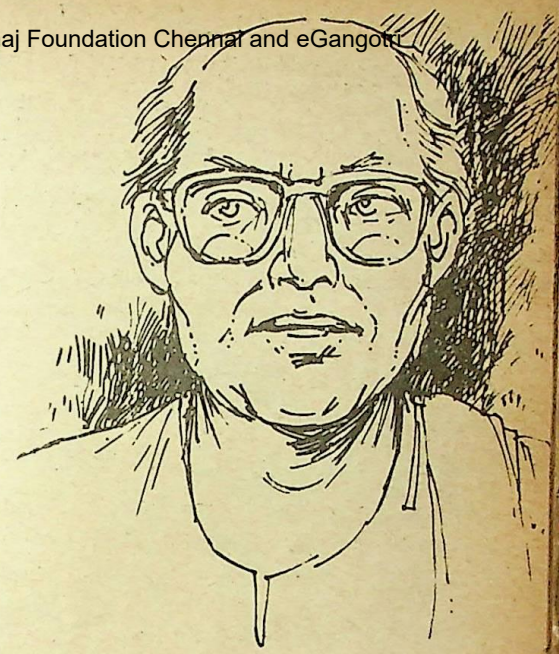

शाम को अचानक मास्टरजी के दिनभर का उत्साह फीका पड़ गया था । ठेकेदार ने लगभग जबरन ही उन्हें नौ रुपये पकड़ा दिये थे । उन्होंने लाख मना करना चाहा और समझाना चाहा कि वह अपनी इच्छा से श्रमदान करने आये हैं— इस पर ठेकेदार भड़क उठा था ।

भगवानदास के लिए कुढ़न बन गयी । कई दिनों की सोच के बाद मास्टरजी को देह खपाने के लिए एक युक्ति सूझी थी परंतु चौधरी ने उसे भी मरोर दिया था । मास्टरजी के पास अगर अपना खेत होता तो उसे फोड़ कर बदन से

पसीना चुआ लेते । परंतु गांव में रहते हुए भी उनके पास शहरी हदबंदी से घिरा हुआ महज एक मकान था, जिसके आंगन में एक ओर चूल्हा था— जहां मिट्टी का छोटा-सा चबूतरा बनाकर रसोई का काम लिया जाता था । एक हैंड पंप था जहां नहाने-धोने से लेकर बर्तन मांजने तक का काम निपटाया जाता था और शेष रहे आंगन की कुछ फुट जमीन में अनार का एक पेड़ और अंगूर की बेल थी । यहीं पर दो खाटें बिछाकर बैठक का काम भी लिया जाता था । अब यह तो संभव नहीं था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

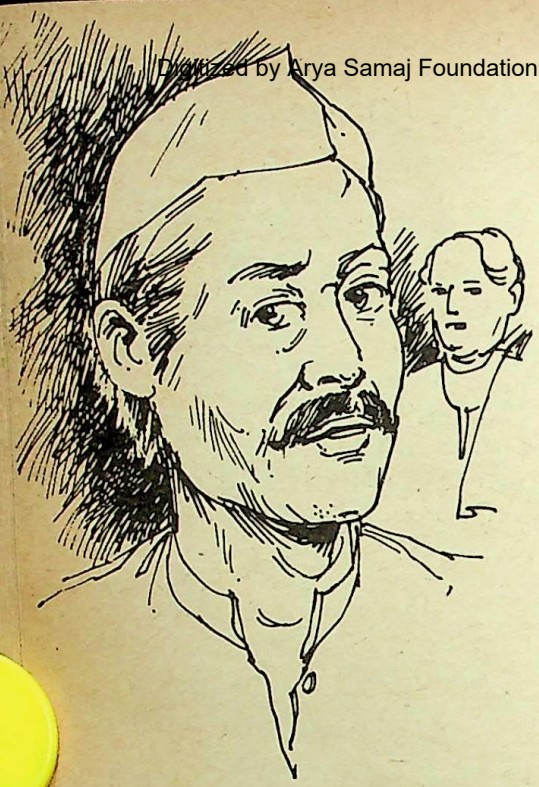

मास्टर भगवानदास दूसरे खेतीहर मजदूरों की भांति फावड़ा, कुदाल अथवा हल उठाये हुए किसी की जमीन में महज इसलिए काश्त करें क्योंकि उन्हें अपनी देह की चरबी से गंध आने लगी थी। अतः मास्टर भगवानदास लगभग निराश होकर केवल सुबह-शाम टहलनेभर से संतोष करने लगे थे। फिर भी उनके अंदर एक फांस थी, जो उन्हें बैल की भांति जुतकर धूप में तपने और देह को पसीने से तर-बतर करने को उकसाती रहती।

एक शाम जब मास्टर भगवानदास सैर के लिए निकले तो उन्हें कच्ची सड़क के दोनों ओर पत्थरों के ढेर दिखायी दिये। मास्टरजी को एक झटका-सा लगा। जिस सड़क पर वह श्रमदान की सोचते थे, उस पर ठेकेदार का मुनाफा बकाया हुआ जा रहा था। अगली सुबह ही छोटी-छोटी हथौड़ियों से पत्थर तोड़ते हुए कई आदमी— औरतें, मास्टरजी ने देखे। मास्टर भगवानदास का मन पत्थर तोड़ती कतारों को देखकर निराला की भांति द्रवित नहीं हुआ, बल्कि उल्लसित हो गया। पत्थरों के ढेर पर बैठकर पत्थर फोड़ते हुए और उनके नन्हे नोकीले टुकड़ों को एक लंबी ढेरी के रूप में करीने से सजाते हुए मजदूरों की छवि मास्टर भगवानदास के मन में अंकित हो गयी थी।

कुछ ही दिनों में सड़क के दोनों ओर ऐसे कई ढेरियां लग गईं। मजदूर जिस सधे हुए ढंग से पत्थर पर चोट करके उसे कई टुकड़ों में विभाजित कर देते थे उसमें हर चोट के साथ पत्थर के अंदर से चमकीले कणों का जो एक सैलाब उठता था, वह मास्टरजी को सम्मोहित कर देता था और मास्टरजी का मन भी पत्थर फोड़ने को ललक जाता। मास्टरजी उस कर्म में सम्मिलित भी हो जाते, परंतु पत्थर तोड़ने में भी जो एक समझ और अभ्यास होता है, वह मास्टर भगवानदास के पास नहीं था और उनकी अंगुलियां हथौड़ी की चोट से जख्मी हो सूज गयी थीं। कई दिन तक मास्टर भगवानदास सड़क के उसी छोटे-से टुकड़े पर चहलकदमी करते हुए इन मेहनतकश लोगों को ईर्ष्या की दृष्टि से देखते रहे। वह अपने अंदर निरंतर बलवती होती, देह तोड़कर पसीना बहाने की आकांक्षा को समझ नहीं पा रहे थे। वह स्वयं ठीक से नहीं जानते थे कि क्यों अपना सुख-चैन और जीवन खोकर इस प्रकार की अनर्गल इच्छा अपने अंदर पलने दे रहे हैं। शायद तंगहाली के बावजूद भरपूर आराम ने मास्टर भगवानदास को कुंठित कर दिया था और उनके मन में

कादं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात घर कर गयी थी कि बेहद थका देनेवाले काम के बाद शरीर को जो आराम और मन को जो शांति मिलती है वह अपनी मास्टरी के पेशे में उससे वंचित रह गये थे ।

सड़क के किनारे-किनारे अब रोड़ी का खासा जमाव हो गया था और कच्ची सड़क को खोद-खोदकर उस पर रोड़ी बिछायी जाने लगी थी । मास्टरजी को लगा कि वह यह काम कर सकते हैं । रोड़ी की टोकरी भर-भरकर किनारे से सड़क के बीचों-बीच डालने का काम कोई विशेष अनुभव नहीं मांगता था और इसमें देह की कसाई भी भली प्रकार हो जाती थी । झुक कर रोड़ी भरी हुई टोकरी उठाना, सिर पर लादना और फिर कुछ पग जाकर उसे बिखेर देना— शरीर की समस्त मांसपेशियों के लिए कसरत ही थी । मास्टर भगवानदास को यही काम सबसे अधिक जंचा और रात देर तक सोचने के बाद सुबह ही वह एक मैला-सा कुरता-पाजामा पहनकर मजदूरों की जमात में शामिल हो गये । भरसक कोशिश के बाद भी मास्टरजी मजदूर नहीं लग रहे थे । परंतु ठेकेदार ने उनकी छंटनी नहीं की थी— और काम शुरू हो गया था । रोड़ी की टोकरी ढोते और उढेलते हुए मास्टर भगवानदास अपने शरीर से चुह-चुह जाते पसीने को बड़े चाव और हसरत की नजरों से देखते रहे । दोपहर के खाने की छुट्टी होने तक थकान से उनके पैरों में कंपन शुरू हो चुकी थी । शरीर के सारे जोड़ जैसे मद्धम-मद्धम पीड़ा से रिस रहे थे । परंतु मास्टरजी अपनी अधेड़ावस्था को नकारते हुए नौजवान हो गये थे और फुर्ती से काम करते जा रहे थे ।

दोपहर के खाने के समय बाकी मजदूर

अपनी-अपनी खाने की पोटलियां खोलकर बैठ गये तो मास्टरजी को अपनी गलती का अहसास हुआ । सुबह तो काम करने के नशे में घर से ऐसे निकल आये मानो आज दोपहर तो भूख लगेगी ही नहीं । थोड़ा भी ध्यान रहता तो चार रोटी और साग बंधवा कर पोटली ले आते और दूसरे मजदूरों की भांति पेड़ की छांव में खाना खाते । परंतु अब तो जो होना था सो हो चुका था— गलती को सुधारने की गुंजाइश ही नहीं

मास्टर भगवानदास शाम को टहलने निकलते तो थककर चूर हुए, अपने-अपने घरों को लौटते खेतीहर मजदूरों को देखकर, उनका मन हुलस पड़ता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी । अब यदि इतनी दूर घर खाना-खाने जाएंगे तो थकान के मारे लौटना भी दूभर हो जाएगा, और मास्टर भगवानदास अपने मकसद को अधूरा छोड़ना नहीं चाहते थे । मास्टरजी पास ही एक चाय के 'खोखे' में चले गये और चाय के साथ बंद के लिए कहकर, अपनी गरदन, बांह और जिस्म के दूसरे हिस्सों का पसीना पोंछने लगे ।

शाम को अचानक मास्टरजी के दिनभर का उत्साह फीका पड़ गया था । ठेकेदार ने लगभग जबरन ही उन्हें नौ रुपये पकड़ा दिये थे । उन्होंने लाख मना करना चाहा और समझाना चाहा कि वह अपनी इच्छा से यहां श्रमदान करने आये हैं— इस पर ठेकेदार भड़क उठा था । 'ये दान-पुन कहीं और जाकर करना । हमारे सिर क्यों पाप मढ़ता है— राजा भोज बन रहा है ।'

रुपये हाथ में लिए मास्टर भगवानदास कुछ क्षण तो सन्न-से खड़े रह गये, परंतु फिर दूसरे पहलू से पूरी घटना का विश्लेषण करके कुछ प्रसन्न भी हुए । आज के जमाने में भी ऐसे लोग है जो दूसरों का हक नहीं मारते । रुपये लिए तो फिर श्रमदान कैसा ? रुपये-पैसे के लिए तो मास्टर भगवानदास यह सब कर नहीं रहे थे । आज दिनभर के परिश्रम के बाद जितना पसीना बहा था और श्रम से थकी और तपी हुई देह को हवा की शीतल-शीतल लहरें जिस प्रकार छू-छू जाती थीं, उससे मास्टर भगवानदास को अपने बचपन के दिनों की याद हो आयी थी । उन दिनों जब वह फुटबाल खेलते-खेलते पसीने से सरोबार हो जाया करते थे, तब गीले बदन को छूते गरम हवा के थपेड़े भी बहुत आनंदप्रद लगते थे । मास्टर भगवानदास को लगा कि जैसे एकाएक वह दिन लौट आये हैं और वह आयु की भूमि पर तीस वर्ष पीछे छलांग लगा गये हैं । उन्हें एक-एक अनुभव हुआ कि जैसे तीस वर्ष की बंजर जमीन पर अचानक नयी कोंपलें फूट आयी हों । मास्टरजी घर की तरफ बढ़ते हुए सारे रास्ते यही सोचते रहे कि इन रुपयों का सदुपयोग कैसे किया जा सकता है— यह उन्होंने तय कर लिया था कि इन रुपयों को अपने ऊपर खर्च नहीं करेंगे ।

मास्टरजी के गांव की हद में घुसने से पहले ही उनके पत्थर ढोने की खबर पंख लगाकर गांव में फैल चुकी थी । यहां-वहां बैठे हुए आते-जाते लोग मास्टरजी को विचित्र दृष्टि से देख रहे थे । परंतु मास्टरजी इस परिवर्तन से बेखबर थे । उन्हें जीवन के यह थकानभरे क्षण अद्भुत लग रहे थे और वह इनसे रिस रहे रस को धीमे-धीमे संजो रहे थे । मास्टर भगवानदास को चेतावनी का पहला झटका घर की दहलीज लांघते हुए लगा । उनकी पत्नी ने उन्हें देखते ही हाथ में पकड़ा हुआ कोई बर्तन जमीन पर पटक दिया था । मास्टरजी इस अपने आनंद में किसी प्रकार का व्यवधान चाहते थे । अतः टाल गये । परंतु पत्नी मास्टरजी के पीछे-पीछे कमरे में पहुंच गयी थी ।

"उम्र से पहले ही सठिया गये लगते हो" पत्नी ने सीधा मोरचा खोल दिया । "क्या हो गयी— क्यों नाराज हो रही हो ?" बात को हल्का बनाने की गरज से मुसकरा दिये । परंतु पत्नी का चेहरा पहले से भी कठोर हो गया था ।

"ये लो....ये लो ! बेच दो सब ! तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादा है क्या ये ? तुम हमेशा मुझसे बात को छुपाते हो— मुझसे दुराव रखते हो मगर मैं तो तुम्हारे भले की ही चेतती हूं न ! ऐसी कौन सी परेशानी थी जो तुम मुझसे भी नहीं कह सके और मजूरी करने चले गये ।'' बातें करते-करते ही मास्टरजी की पत्नी रोने लगी थी और रोते-रोते ही उसने अपने हाथ की दोनों पतली-पतली सोने की चूड़ियां और कान के टॉपस उतार कर चारपाई पर फेंक दिये ।

''हैं...हैं ! क्या करती हो ये ।'' यह स्थिति मास्टरजी की कल्पना से बाहर थी और वह हतप्रभ-से खड़े हुए कभी फेंके गये गहनों को और कभी अपनी पत्नी के रौद्र-करूण स्वरूप को देख रहे थे ।

''सड़कों पर मजूरी करके बड़ा नाम रौशन कर रहे हो... ।'' सुबकते हुए पत्नी ने फिर नश्तर चुभो दिया ।

''ओह !'' मास्टरजी संभलें ''पगली मैं कोई रुपये-पैसे के लिए मजूरी नहीं कर रहा हूं ।'' कहते-कहते मास्टर भगवानदास को एकाएक पत्नी पर स्नेह उमड़ आया । उन्होंने ...वर चारपाई से उठाकर वापस पत्नी के हाथों में ...मा दिये । ''तो क्यों करते हो मजूरी । सब ...ड़ौसी बारी-बारी से आकर मुझे जलील कर ...ये हैं । कहते हैं तंगहाली की वजह से ...म.... ।'' पत्नी फिर सुबकने लगी थी । ''वो ...ब तो अनपढ़ हैं....जाहिल हैं ।'' मास्टरजी ...क्रोध आया ''मैं तो श्रमदान करने गया था, ...गवान ! रुपया-पैसा कमाने नहीं गया था ।'' ...स्टरजी ने थोड़े शब्दों में श्रमदान का बड़ा ...त्व पत्नी को समझाया और कुरता उतारने ...।

''मजूरी करने में भी कोई दान होता है क्या ?'' धैर्य से मास्टरजी का प्रवचन सुनकर पत्नी ने शंका प्रकट की तो मास्टरजी झल्ला उठे, परंतु स्वयं पर नियंत्रण रखकर बोले ''हां ! यह भी पुण्य का ही काम है ! देख ! रोज आते-जाते हुए न जाने कितने लोगों को कच्ची सड़क पर ठोकर खानी पड़ती थी, परंतु सड़क पक्की हो जाएगी तो सबको आराम होगा रात-विरात चलने पर ठोकर नहीं खानी पड़ेगी— बरसात में सड़क पर ताल-तलैया नहीं बनेंगे ।'' मास्टरजी ने अपने उद्देश्य का सरलीकरण किया तो पत्नी के चेहरे पर कुछ समझ पाने की चमक कौंध गयी । मास्टरजी ने संतोष का सांस लिया और कुछ क्षण पहले थम गयी आनंद की लहर फिर से बहने लगी । बदन की एक-एक मांसपेशी चटक रही थी और हिलने-डुलने में भी मास्टरजी का बदन पीड़ा की लहरों पर तैर-तैर जाता था ।

मास्टरजी ने हैंडपंप पर नहाकर कपड़े बदले— तेल चुपड़ा और ताजा होकर चौके में आ डटे । सुबह से रुकी हुई भूख का उबाल बह निकला । पत्नी ने थाली परोस कर आगे की तो मास्टरजी चावल की गंध से अभिभूत हो गये । सब कुछ कितना शुद्ध— कितना सात्विक और कितना आनंदप्रद लग रहा था आज । मास्टर भगवानदास मन ही मन मुसकराये । खाते हुए एक बार फिर मास्टरजी अपने श्रम और थकान की पुलक में डूबने-उतरने लगे ।

खाना खाकर बिस्तर पर लेटे तो शरीर की फूली हुई नसों को कुछ आराम मिला और तुरंत झपकी आ गयी । परंतु तभी पत्नी ने आकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगा दिया "इतनी जल्दी सो गये तुम ! बाहर चौधरी और वैद्यजी आये हैं।" मास्टरजी तंद्रा से हड़बड़ा कर जाग उठे और आंगन की तरफ लपके जहां चौधरी और वैद्यजी खाट पर बैठे हुए थे। मास्टरजी ने अभिवादन किया और दूसरी खाट डालकर बैठ गये।

"मुझे ही बुलवा लिया होता— आपने नाहक तकलीफ की।"

"बस इधर से जा रहे थे सोचा मास्टरजी का कुशल-मंगल पूछते चलें।" चौधरी ने उन्हें गहरी दृष्टि से देखा और मुसकराये।

"बड़ी मेहरबानी आपकी।" मास्टर भगवानदास गदगद हो गये।

"स्वास्थ्य कैसा है मास्टरजी।" वैद्यजी ने बातचीत का सूत्र थामा।

"बिलकुल ठीक हूं आज थोड़ा थक गया था सो...।" मास्टर जी कुछ इस अंदाज में बोले जैसे इस समय लेट जाने की माफी मांग रहे हों।

"रात को नींद तो भली प्रकार आती है न !" वैद्यजी ने हकीमी अंदाज में रोगी का जायजा लिया।

"बिलकुल आती है और आज तो बहुत मेहनत की है तो..."

"कोई मानसिक तनाव इत्यादि तो नहीं है न !"

"नहीं जी, परंतु आप यह सब क्यों पूछ रहे हैं ?" अब मास्टरजी को आश्चर्य हुआ।

"बस यूं ही पूछ लिया। दरअसल ऐसे मामलों में रक्तचाप बढ़ जाता है और आदमी...खैर छोड़िए। सब ठीक है, तो है ही।" वैद्यजी हंसे मास्टरजी को कुछ समझ आया, तो स्वयं भी बेवजह मुसकरा दिये।

"मास्टरजी अगर कभी रुपए-पैसे की किल्लत हो तो हमें हुक्म करना। हम अपने ही हैं..." चौधरी कहते हुए उठ हुए तो वैद्यजी और मास्टर भगवानदास गये।

"भले-बुरे में आप ही लोगों का है।" मास्टरजी ने हाथ जोड़े, परंतु अब बेचैन होने लगे थे।

"यदि आवश्यकता है तो ले लीजिए हूं।" चौधरी ने जेब से कुछ रुपये निकाल उन्हें मास्टरजी की ओर बढ़ाया।

"नही...नहीं। सब आपकी दया है आवश्यकता होगी तो मांग लूंगा...।" ने अपने अंदर उबलते गुस्से को किसी जज्ब किया और विनम्रता से हाथ जोड़ दोनों को विदा दी। एक उन्हें पागल था तो दूसरा कंगाल— मास्टरजी मन हंसे। क्षोभ की छाया चेहरे पर तैर गई

"सुनो भागवान ! अब कोई आये कहना मजूरी करके थके हुए थे— सुबह फिर जाना है। कल खाने की भी ध्यान रखना।" किवाड़ बंद करके से जाते हुए मास्टर भगवानदास ने कर रही पत्नी को पुकार कर कहा और घुस गये। उनका चेहरा पत्थर की और भावहीन हो चुका था।

४ ओल्ड सर्वे रोड, देहरादून

अपने मित्रों को एकांत में नसीहत दो किंतु प्रशंसा खुलेआम करो। —साइरस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य ही आयु आरोग्य का प्रदाता है— जीवन का दाता है । चिर-यौवन एवं दीर्घायु के साथ व्यक्ति को निरामय बनाता है । पंच तत्वों से निर्मित यह देह है । वायुतत्व के अधिकर्ता आदित्य हैं ।

आदित्य : आयु आरोग्य का अक्षय कोष

● ब्र.ना. कौशिक

समग्र सृष्टि में चर एवं अचर जीवन के प्राण, पोषक, रक्षक एवं संचालक हैं— आदित्य । यह वैज्ञानिक एवं वैदिक सत्य है । आदित्य से ही जनजीवन उद्‌बुद्ध होता है ।

(आदित्यो वै प्राणः (प्र. ३. १. ५)

रोगोत्पादक कीटाणु नाशक

संपूर्ण जगत में आदित्य से ही प्राणतत्व का संचार होता है । इस प्राण तत्व का वर्णन अथर्व वेद में— इसी तत्व से वायु एवं जल के प्रवाह का उल्लेख है । रोगोत्पादक कीटाणुओं को नष्ट करने एवं शुद्ध प्राण तत्व को प्रसारित करने का अक्षय कोष आदित्य ही है । ऋतु परिवर्तन, वनस्पति, जीवन, समय, गणना आदि आदित्य से ही संभव और निश्चित हैं ।

अथादित्य उदयन् यत्प्राचीं दिशं प्रविशति
तेन प्राच्यान् प्राणान् रश्मिषु संनिधते ।

आदित्य के उदय से ही समस्त दिशाओं में किरणों द्वारा प्राणों को प्रतिष्ठित किया जाता है । प्रकाश किरण ही प्राण है ।

अथर्ववेद में इन किरणों की उपस्थिति को कृमि नाशक कहा गया है । समस्त चर्मरोग, गठिया, चक्षुरोग, रक्त-चाप विकार में सूर्य प्रकाश अत्यंत लाभकारी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

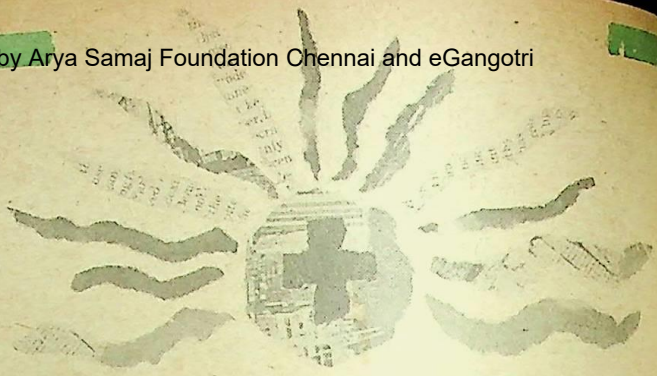

भानु कृसानु संर्व रस खाहीं' । (तुलसी)
रोगोत्पादक कृमियों के विनाश से आगे बढ़ कर रोग निरोधक शक्ति का संचय और इससे आगे पूर्ण आरोग्य । वैज्ञानिक दृष्टि स्पष्ट है— जीव में जीवन ही आदित्य है।

सामवेद ने प्रसंग क्रम में आदित्य को रोग विनाशक, ऋतुओं में होनेवाले रोगों से मुक्ति और इन्ही प्रकाश किरणों को दीर्घायुष्य प्रदाता कहा है ।

तु चे तुनाय तत्सुनोद्राघीय आयुर्जीवसे ।
आदित्यासः सुमहसः कृणोतन ।(साम)।

पूर्ण निरोग करनेवाला

कुष्ठग्रस्त मयूर भट्ट द्वारा रचित सूर्यशतकम् कुष्ट से मुक्त होने पर ही रची गयी कृति है । अथर्ववेद में हृदय, कपाल, मस्तक, हाथ, पैर, श्रोणि, त्वचा के रोग सूर्य की रक्त किरणों से दूर करनी की स्थिति है । वर्तमान आयुर्विज्ञान में अल्ट्रा वायलेट किरणों का उपयोग सर्वोपरि हो रहा है ।

प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में प्रकाश किरणें यक्ष्मा, टी. बी. — जैसे रोगों पर कारगर प्रभाव दिखा रही है । पद्मपुराण में **सर्वरोगात् प्रमुच्यते ।''** कहकर आदित्य को पूर्ण नीरोग को देनेवाला कहा है । पाश्चात्य चिकित्साविद् हिप्पोक्रेट्से सूर्य प्रकाश किरणों द्वारा बीमार को ठीक करते थे । आयुर्वेद आदित्य को आयु आरोग्य प्रदाता मानता है।

अथर्वा ऋषि का कथन—

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन् हंतु निम्रोचन
हंतु रश्मिभिः । ये अन्तः क्रिमयो गवि (अर्थ २-३२-१)

रवि किरणें उन सभी कृमियों को नष्ट करती हैं जो रोग फैलाती हैं । वे देह में व्याप्त कृमियों को समाप्त कर मित्र कृमियों को शक्ति प्रदान करती है । डा. सोलेने का कथन कि— सूर्य में जितनी रोगनाशक क्षमता है उसे कैंसर-जैसे दुस्साध्य रोग, पोलियो-जैसे विकृतियां एवं लंबी बीमारियां दूर हो जाती हैं । प्रस्तुत प्रसंग में आदित्य की उपस्थिति ही नेत्र देखना क्रिया करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो समग्र विश्व को उसके द्वार पर जाकर आरोग्य देने को उत्सुक है, रोगी को नीरोग करने को लालायित है, दीर्घ जीवन का अक्षय कोष बांट रहा है, उससे हम अभिमुख क्यों हैं ?

प्राविशादित्यश्चक्षुभूत्वाक्षिणी (एत. १२.४)

आदित्य ही आयु आरोग्य का प्रदाता है— जीवन का दाता है । चिर यौवन एवं दीर्घायु के साथ व्यक्ति को निरामय बनाता है । पंच तत्वों से निर्मित यह देह है । वायुतत्व के अधिकर्ता आदित्य हैं । रक्त विकार वायुतत्व का असंतुलन है । आदित्य नैरोग्य देने में सक्षम है । आदित्य ऋषियों से वर्तमान वैज्ञानिक ऋषियों तक सूक्ष्मातिसूक्ष्म गवेषणा ने सूर्य को— 'सर्वेषां देवानां आत्मा'— स्वीकार किया है ।

मत्सय पुराण में— 'आरोग्यं भास्करादिच्छेद्' कह कर आरोग्य की घोषणा की है ।

यह अक्षय कोष

उपर्युक्त क्रम में शारीरिक अर्थात दैहिक स्वास्थ्य की बात कही गयी है । सृष्टि के उदय के साथ आदित्य की आरोग्य शक्ति को अन्वेषण के निकष पर अंगीकार किया गया । क्या व्यक्ति के सूक्ष्म जीवन पर, विचार सृष्टि पर, आचार दृष्टि पर, अंतस चेतना पर भी आदित्य का प्रभाव है ? उत्तर आएगा— है । तो फिर क्यों आयु आरोग्य के इस अक्षय कोष की ओर हम अभिमुख नहीं हो रहे हैं ?

संपूर्ण आर्यव्रत में सूर्य मंदिर रहे हैं— कोणार्क का सूर्य मंदिर मात्र दर्शन या भ्रमण नहीं, आदित्य के चमत्कारी प्रभाव अपने कोणों में समेटे है । ईरान, मिश्र, नेपाल, बेबीलोन, ग्रीक में सूर्य मंदिरों की अतिप्राचीन परंपरा रही है । इस परंपरा में मात्र आरोग्य ही नहीं, दिव्य साधना भी रही है । जो समग्र विश्व की उसके द्वार पर जाकर आरोग्य देने को उत्सुक है, रोगी को नीरोग करने को लालायित है, दीर्घ जीवन का अक्षय कोष बांट रहा है, उससे हम अभिमुख क्यों हैं ?

यजुर्वेद के अनुसार—

आप्रा द्यावा पृथिवी अंतरिक्ष सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

भू लोक से द्यु लोक तक प्रकाश किरणों द्वारा जीवन देनेवाला सूर्य ही सबका आत्मा और जीवनदाता है । योग के अनुसार शरीर में अष्टचक्र सक्रिय हैं— इनमें मणिपूरक चक्र ही सूर्य चक्र है, जो शरीर, मन एवं आध्यात्मिक जागरण का प्रमुख केंद्र है । इंद्रियों का स्वभाव विष-यौन्मुख है, दैहिक सुख आयु को ग्रसनेवाला एवं रूग्णता को देनेवाला है । मन को शब्द, स्पर्श एवं स्वाद से मोड़कर अंतर्मुखी बनाना ऊर्ध्वगामी चैतन्य (आध्यात्मिक) शक्ति प्रदाता है । मन का संस्कार ही मणिपूरक चक्र से है । इसमें सूर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

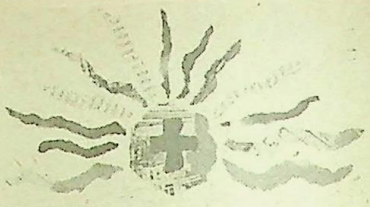

तत्व (अग्नि) प्रधान है । मानवीय प्राण नाभि केंद्र से स्पंदित हैं । सूर्य रश्मियों के साथ रंग ही उद्वेलित होकर मानसिक ध्यान मात्र से शरीरस्थ व्यष्टि ऊर्जा को समष्टि चेतना से जोड़ देते हैं । यहीं मणिपूरक वांछित ऊर्जा को सहज श्वासोच्छ्वास से फेफड़ों और पेट में भर देगा । धीरे-धीरे ऊं. ध्वनि को पूरे शरीर में ले जाए । जिससे बाह्य प्रकाश तरंगों का अंतः तरंगों से संबंध स्थापित होते ही अनंत ऊर्जा स्वतः प्रवाहित होने लगेगी ।

सूर्योपासना कैसे ?

प्रातः ब्रह्म वेला में शैया त्याग के पश्चात ताम्रपत्र में रखे शुद्ध जल से मुख को शुद्ध करके शेष जल, लगभग एक लीटर, पीकर साधारण टहलने के पश्चात दैनिक कार्यों से निवृत हो सूर्योदय से सात मिनट पूर्व ऐसे स्थान पर ताड़ासन की स्थिति में खड़े हो जाएं जहां से आदित्य दर्शन बिना अवरोध के हों । शरीर में रक्ताल्पता की स्थिति में लाल ऊनी आसन एवं शांत चित्त के लिए श्वेत ऊनी आसन रखा जाए । ऊँ ओ इ उ इ इ इ म्— के दीर्घातिदीर्घ ध्वनि में उच्चारण करें और 'म' के साथ श्वास को रोकें एवं पूर्ण रूपेण पुनः श्वास को धीरे-धीरे बाहर निकाल दें, फिर ऊँ का दीर्घ उच्चारण करें— यह क्रिया पांच-सात बार पर्याप्त है ।

(आप जिस भी दीन, धर्म, राम, रहीम, गुरु को मानते हों, उसके बीजमंत्र (मूल मंत्र) को इस प्रक्रिया में अपना सकते हैं । घेरंड संहिता में कहा गया है— जब तक सोद्देश्य कार्य नहीं होगा, मनुष्य पशुवत् है ।

यावत सा निद्रिता देहे तावज्जीवः पशुर्यथा । (घे. सं. ३. ५०) सा- अंतस्थ ऊर्जा (कुंडलिनी ही है । सत्य तो यह है कि आदित्य के भाग्य के साथ हम एवं पृथ्वी जुड़ी हुई है । सूर्योपनिषद के अनुसार—

सूर्यादिं भवन्त भूतानि सूर्येण पालितानि तु
सूर्ये लयं प्रापनुवंति यः सूर्यः सोऽहमेव च ।

निःशुल्क चिकित्सक

शारीरिक आरोग्य से मानसिक आरोग्य एवं मानसिक आरोग्य से आदित्य स्वास्थ्य ओर उन्मुख होने में एक मात्र आदित्य ही सत्य है, जिसे हर कोई, हर अवस्था में निःशुल्क प्राप्त कर सकता है । संयम, यम, नियम एवं संकल्प शक्ति से यह अनंत ऊर्जा ग्रहण की जा सकती है । सूर्योपनिषद् में त्रयतापों से मुक्ति के लिए आदित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जप का वृत्तांत है—

ॐ आदित्याय, विद्महे
सहस्त्रकिरणाये धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।।

हम आदित्य को जानते हैं, उसकी पूजा करते हैं, सहस्त्र किरणों से युक्त आदित्य का ध्यान करते हैं । वे हमें प्रेरणा शक्ति प्रदान करें जिससे त्रयतापों से मुक्त हों, सौ वर्ष रोग रहित जीवें । अभीष्ट की प्राप्ति आदित्य दर्शन से है ।

प्रकाश की गति १,८६,००० मील प्रति सैकंड है अतः स्पष्ट है कि इतनी तीव्र गति से प्रवाहित प्रकाश किरण हमारे शरीर को अंदर तक ऊर्जा प्रदान करने की शक्ति रखती है ।

आदित्य पांच कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों के विषय हैं— वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ एवं शव्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध । यही कारण है कि आदित्य ज्ञानमय विज्ञानमय आनंदमय हैं । अथर्वांगिरस मंत्र में आधि व्याधि दूर कर सौभाग्य प्रदायिनी शक्ति है— इसका जप सूर्य रश्मियों को और अधिक प्रखर करता है । यह दारिद्रय को दूर कर यशःश्री को विकसित करता है— अष्ठाक्षर मंत्र इस प्रकार है—

ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम्

आदित्य स्वयं निदान करता है— उपचार करता है एवं साधक को सौभाग्य देता है । आइए, अपने ही परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्वकल्याण की दृष्टि से नमन करें, आदित्य के नियमित दर्शन करें ।

नमः सूर्याय शांताय सर्वरोगविनाशिने
आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देव जगत्पते ।।

—बिहानी शिक्षा महाविद्यालय श्री गंगानगर-३३५००१ (राज.)

भगवान बुद्ध कहते हैं 'आरोप सबसे बड़ा लाभ है और संतोष सबसे बडा धन—विश्वास सबसे बड़ा बंधु है और निर्वाण परमसुख ।'

शरशैया पर लेटे हुए भीष्म पितामह ने कहा था 'झूठे आरोप लगाये जाने पर रुदन करते हुए दीन-दुर्बलों की आंखों से जो आंसू गिरते हैं वे मिथ्यादोष लगाने के कारण उन अपराधियों के पुत्रों और पशुओं का नाश कर डालते हैं ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकटा : पेड़ की बत्तख

नकटा : आम तौर पर जलाशयों और तालाबों के पास रहनेवाला पक्षी । शायद इसीलिए इसे 'पेड़ की बत्तख' कहा जाता है । इस पक्षी का सिर और गरदन सफेद होती है । इन पर चमकीली काली चित्तियां बहुत भली लगती हैं । इसके पंख बैंगनी रंग के होते हैं— चमकीले । यह पक्षी पेड़ पर ही बसेरा करता है ।

इस पक्षी का मुख्य भोजन है— पानी के पेड़ों की नरम जड़ें, घोंघे, बीज, सेवार और पानी के कीड़े-मकोड़े । इस पक्षी की चोंच पर एक गुंबद-सा होता है । इसी कारण इसके दो नाम पड़ गये हैं— 'नकटा' और नंदीमुखी ।

आइए चलें जंगलों की ओर

संस्कृति से अटूट संबंध है वट वृक्ष का

मद्रास स्थित थियसाफिकल सोसाइटी के केंद्रीय कार्यालय में स्थित प्राचीन वट वृक्ष जब आंधी-तूफान के कारण धराशायी हो गया तो अनेक लोगों की आंखों में आंसू आ गये । यह वटवृक्ष न एक पेड़ नहीं, इतिहास का मूक साक्षी था । इसीलिए मद्रास के लोगों ने अथक परिश्रम कर इस उखड़े हुए वृक्ष को पुनः अपनी जगह पर खड़ा कर दिया ।

वटवृक्ष का भारतीय संस्कृति से अटूट नाता है । उत्तर भारत में हिंदू महिलाएं ज्येष्ठ में एक दिन वट सावित्री का व्रत रखकर इस वृक्ष की पूजा करती हैं । उसके तने के ओर हलदी से रंगा पीला कच्चा धागा बांधती हैं ।

वटवृक्ष अपनी डालियों से निकलनेवाली जड़ों के कारण ही वर्षों केवल फलता-फूलता है, वरन अपने को भी विस्तृत करता जाता है । वटवृक्ष की एक शाखा जब काफी मोटी हो जाती है तो उसमें से एक जड़ या जटा नीचे आ जाती है । यह जटा धीरे-धीरे धरती तक पहुंचकर उसमें धंस जाती है । कालांतर में पुष्ट होकर यह उस डाल को संभालने वाले स्तंभ के रूप में कार्य करती है ।

बरगद के दूध से की फटी बिवाइयों में आराम मिलता है । इसके पत्तों को तेल से चुपड़कर सेंककर फोड़ों और सूजे हुए अंग पर बांधने से आराम मिलता है । हिंदू धर्म में वट वृक्ष को अत्यंत पवित्र माना गया है । अनेक धार्मिक अनुष्ठानों से इस वृक्ष का संबंध है । इसकी सूखी शाखाएं पवित्र समझी जाती हैं और यज्ञाग्नि में समिधा के रूप में काम आती हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधा जीवन सोकर गुजार देता है रेगिस्तानी चूहा

चूहा : विघ्नहर्ता गणेश की सवारी । महाराष्ट्र में प्रतिवर्ष आयोजित किये जानेवाले गणेशोत्सव में गणेशजी की प्रतिमाओं के साथ चूहे की भी मूर्ति होती है । राजस्थान में तो एक मंदिर में चूहों को बाकायदा भोग लगाया जाता है । लेकिन राजस्थान में कुछ वर्षों पूर्व चूहों पर संकट-सा आ गया था । थार मरुस्थल की सीमा पर रहनेवाले लोगों ने चूहों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया था । उनकी शिकायत थी कि चूहे उनका अनाज खा जाते हैं । उन्होंने चूहों को विष देकर, उनके बिलों में पानी डालकर या आग लगाकर उन्हें कष्ट देना शुरू किया । इससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया ।

यहां प्रकाशित थार मरुस्थल में पाये जानेवाले चूहे का है । यह गिलहरी और चूहे की मिली-जुली आकृतिवाला जीव होता है । इसके बीस दांत होते हैं और आधा जीवन यह सोकर गुजार देता है !

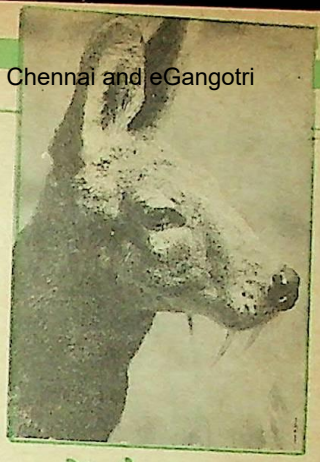

संकट में है कस्तूरी मृग

कस्तूरी मृग जिसके सींग नहीं होते लेकिन हाथियों की तरह दो नुकीले दांत नीचे की ओर झुके होते हैं । किसी समय यह जीव मध्य-उत्तरी एशिया, तिब्बत और शिवालक को छोड़ समूचे हिमालय-क्षेत्र में पाया जाता था ।

कश्मीर में कस्तूरी मृग २,३०० से ३,२०० मी. की उंचाई पर आज भी मिलता है । उत्तरप्रदेश में केदारनाथ, बद्रीनाथ हरसिल और टोंस के वनों में तथा हिमाचल प्रदेश में किन्नौर और राजगढ़ क्षेत्र में कस्तूरी मृग पाया जाता है । नेपाल, भूटान तथा सिक्किम में भी यह मृग मिलता है । इसका भोजन है ओक की पत्तियां, कोंपलें, फल तथा जड़ी-बूटियां । ठंड में कस्तूरी मृग को भोजन की तलाश में दर-दर भटकना पड़ता है ।

शरीर में पायी जानेवाली कस्तूरी के कारण कस्तूरी मृग को सदैव स्वार्थी शिकारियों द्वारा मारे जाने का खतरा बना रहता है । इसी कारण इस मृग की संख्या भी तेजी से घटी है ।

भारत में कस्तूरी मृग को बचाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं । श्रीनगर, कुफरी, दार्जिलिंग के प्राणि संग्रहालयों में कस्तूरी मृगों को पाला जा रहा है । अलमोड़ा जिले में मेहरुरी में एक कस्तूरी मृग अनुसंधान केंद्र भी स्थापित किया गया है । लेकिन कस्तूरी मृगों के जीवन पर आया संकट अधिक गंभीर है । उन्हें बचाने के लिए व्यापक पैमाने पर प्रयत्न किया जाना आवश्यक है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पॉजिट्रान इलेक्ट्रॉन का ऐंटिकण है— बिलकुल इलेक्ट्रॉन के दर्पण-बिंब जैसा । प्रश्न उठता है, यदि ऐंटिइलेक्ट्रॉन का अस्तित्व संभव है, तब तो ऐंटिप्रोटॉन और एंटि न्यूट्रॉन की संभावना भी तर्कसंगत है । अब ऐंटिप्रोटॉन और ऐंटिन्यूट्रॉन का अस्तित्व भी प्रायोगिक रूप से सिद्ध किया जा चुका है ।

ऐंटिविश्व की खोज

● डॉ. रमाकांत पांडेय

श्रुतियां कहती हैं 'वह' जो आदिपुरुष था, निपट अकेला था । सुदूर अनंत तक कोई 'दूसरा' नहीं था, जिससे जुड़कर वह अपने एकत्व को विपुल सत्ता के विस्तार में विकीर्ण कर देता । किसी अन्य के साथ मिलकर बाहुल्य में बिखर जाने की करुण लालसा ने उसे स्वयं को विभक्त करने के लिए विवश कर दिया । उसने अपने को पूर्ण-पूरक भाव से विभाजित कर दिया, फिर सृष्टि की और स्वयं अपनी रचना में समाहित हो गया । इस अथाह अर्थ को बड़ी प्रांजल शब्दावली में व्यक्त किया गया है— "**स वै एकाकी नैव रेमे । सोऽकामयत्, एकोऽहं बहुस्याम । स आत्मानम् द्वेधा पातयत्... । तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत् ।**" तभी से प्रत्येक कण, जीवाणु किसी दूसरे में अपना प्रतिबिंब देखने के लिए और नितांत स्व की प्रतिभा को अनेकांत सर्व की अतिमा में विसर्जित करने के लिए विकल रहता है ।

विज्ञान नये मोड़ पर

सत्य के अन्वेषण में मानव को दर्शन की अंधगुहा से विज्ञान के चकाचौंध तक की कठिन यात्रा करनी पड़ी है । सामान्य द्रव्य के परमाणुओं के नाभिक मूलतः धनात्मक आवेश वाले प्रोटान और आवेशहीन न्यूट्रान से बने होते हैं तथा उस नाभिक (न्यूक्लियस) के चारों ओर विभिन्न कक्षाओं में ऋण आवेशवाले इलेक्ट्रॉन परिभ्रमण करते रहते हैं । परमाणु की आंतरिक संरचना की जानकारी से विश्व की भौतिक घटनाओं की संतोषजनक व्याख्या की जाने लगी । लेकिन वैज्ञानिकों ने पूरी तरह संतोष की सांस भी नहीं ली थी कि १९३० में पी.ए.एम. डिराक ने इलेक्ट्रॉन के दो रूपों— धन और ऋण आवेश के साथ— की संभावना व्यक्त की । एंडर्सन ने थोड़े ही समय बाद धन-इलेक्ट्रॉन या 'पॉजिट्रान' की वास्तविक उपस्थिति भी प्रयोगशालाओं में प्रदर्शित कर दी और विज्ञान की यात्रा एक नये मोड़ पर आ गयी ।

पॉजिट्रान इलेक्ट्रॉन का ऐंटिकण है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीहारिका और ऐंटिनीहारिका के आपसी टकराव का दृश्य

बिलकुल इलेक्ट्रॉन के दर्पण-बिंब जैसा । प्रश्न उठता है, यदि ऐंटिइलेक्ट्रॉन का अस्तित्व संभव है, तब तो ऐंटिप्रोटान और ऐंटिन्यूट्रॉन की संभावना भी तर्कसंगत है । पिछले कुछ वर्षों में शक्तिशाली त्वरितों की सहायता से ऐंटिप्रोटॉन और ऐंटिन्यूट्रॉन का अस्तित्व भी प्रायोगिक रूप से सिद्ध किया जा चुका है । स्वाभाविक रूप से वैज्ञानिकों के मन में ऐंटिपरमाणु और फिर ऐंटिद्रव्य की भी बात उठने लगी । ऐंटिद्रव्य के परमाणु सामान्य द्रव्य के परमाणुओं के ही संगत और सममित होंगे, लेकिन इन ऐंटिपरमाणुओं के नाभिक ऐंटिप्रोटॉन और ऐंटिन्यूट्रॉन से बने होंगे और उनके चारो ओर धनात्मक आवेशवाले पॉजिट्रॉन चक्कर काटते रहेंगे । ऐंटिद्रव्य की संभावना अब कोरी कल्पना का विषय नहीं है । १९६६ में कोलंबिया यूनिवर्सिटी के प्रो. एल.एम. लिडरमैन ने प्रयोगशाला में भारी हाइड्रोजन के ऐंटिद्रव्य, ऐंटिड्यूट्रॉन, की रचना की और अभी हाल ही में सोवियत वैज्ञानिकों ने ऐंटिहीलियम् तैयार किया है । हाइड्रोजन सृष्टि का सरलतम तत्त्व है और जब उसके प्रतिरूपों के ऐंटिद्रव्य प्रयोगशालाओं में बनाये जा सकते हैं, तब शायद वह दिन दूर नहीं जब अन्य जटिल तत्त्वों ऑक्सीजन, लौह और यूरेनियम के भी ऐंटिद्रव्यों का निर्माण किया जा सके ।

ऐंटिद्रव्यों के द्वीप

वैसे, हमारी धरती पर ऐंटिद्रव्य की उपस्थिति नैसर्गिक रूप में संभव नहीं है, क्योंकि पृथ्वी सामान्य कणों से बनी है और यदि कोई ऐंटिकण उत्पन्न भी हो तो वह सामान्य कणों से टकराकर पूरी तरह विनष्ट हो जाएगा, अर्थात प्रकाश कणों में रूपांतरित हो जाएगा । पृथ्वी पर ऐंटिद्रव्य की उपस्थिति प्रायोगिक दृष्टि से विशेष महत्त्व नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखती, लेकिन संपूर्ण ब्रह्मांड के संदर्भ में यह धारणा वैज्ञानिक चिंतन का एक नवीन आयाम प्रस्तुत करती है । ब्रह्मांड के असीम विस्तार में ऐंटिद्रव्य के अनेक एकांत द्वीपों के अस्तित्व की संभावना व्यक्त की गयी है जिनकी गवेषणा को मात्र शैक्षणिक विलास कहकर नहीं टाला जा सकता । हमारी अपनी आकाशगंगा में ही कर्कट नीहारिका (क्रैब नेबुला) से उत्सर्जित तीव्र रेडियो-तरंगों के आधार पर कल्पना की जा सकती है कि उसका रेडियो उत्सर्जन ऐंटिद्रव्य के विनष्टीकरण से उत्पन्न होता है । हमारी आकाशगंगा से बाहर भी कुछ ऐसी नीहारिकायें हैं जो ऐंटिद्रव्य से बनी प्रतीत होती हैं ।

यदि किसी सामान्य नीहारिका और ऐंटिनीहारिका के बीच टक्कर हो तो हम पूर्णतः ऐंटिद्रव्य से बनी नीहारिका का पता लगा सकते हैं, क्योंकि ऐसे भीषण विस्फोट की स्थिति में असाधारण ऊर्जा उत्पन्न होती है । कुछ खगोलवेत्ताओं की मान्यता है कि वह असाधारण पिंड, जिसे हम 'सिग्नस-ए' के नाम से जानते हैं, ऐसी ही दो नीहारिकाओं का युग्म है । इसकी दूरी २७०० लाख प्रकाश वर्ष से भी अधिक है । फिर भी, इससे पृथ्वी पर आनेवाली रेडियो-तरंगों की ऊर्जा अत्यंत प्रबल होती है । आपस में टकरानेवाली ये दोनों नीहारिकायें (चित्र में) द्रव्य और ऐंटिद्रव्य का निकाय हो सकती है ।रेडियो खगोलज्ञों के परिकलनों के अनुसार 'सिग्नस-ए' की उत्सर्जित ऊर्जा, द्रव्य और ऐंटिद्रव्य से बनी नीहारिकाओं की टकराहट से उत्पन्न ऊर्जा (१०४४ अर्ग प्रति सेकेंड) के बराबर पायी गयी है । एक सामान्य आकार की असाधारण रूप से दीप्त नीहारिका 'एम-८७' से भी संकेत मिलते हैं कि उसके तीव्र रेडियो-विकिरण किसी ऐंटिनीहारिका से निःसृत ऐंटिद्रव्य के प्रग्रहण द्वारा उत्पन्न होते हैं । वैज्ञानिकों को कुछ ऐसे प्रमाण मिलने लगे हैं जो ब्रह्मांडीय स्तर पर ऐंटिद्रव्य से बने आकाशीय पिंडों के अस्तित्व की ओर संकेत करते हैं ।

दो विश्वों की कल्पना

इस संदर्भ में प्रसिद्ध वैज्ञानिक मॉरिस गोल्डहेबर की कल्पना बड़ी रोचक है जो वैदिक ऋषियों की सृष्टि संबंधी धारणा के समानांतर प्रतीत होती है । गोल्डहेबर ने आदि-परमाणु (प्राइमेवल एटम) के सिद्धांत के आधार पर संभावना व्यक्त की है कि संपूर्ण विश्व एक विराट कण 'यूनिवर्सन्' से उत्पन्न हुआ । यह यूनिवर्सन् किन्हीं अज्ञात कारणों से शीघ्र ही 'कॉस्मन' और 'ऐंटिकॉस्मन्' नामक कणों में विभक्त हो गया और फिर दोनों कण अत्यधिक गतिज ऊर्जा के साथ एक-दूसरे से पृथक हो गये । इनमें पहले से 'विश्व' और दूसरे से 'ऐंटिविश्व' की उत्पत्ति हुई । विश्व में ऐंटिकणों की उपस्थिति संभवतः ऐंटिविश्व के कुछ अवशिष्ट अंश के कारण हो सकती है । मूलकणों की सममिति के सिद्धांत को अमान्य घोषित कर देने के बाद कुछ खगोल शास्त्रियों को दो पृथक विश्वों की कल्पना काफी आकर्षक लगने लगी है । ऋषियों के 'को अद्धा वेदः', 'कुतः इयं विसृष्टिः' जैसे प्रश्न आज भी वैज्ञानिकों के मन में गूंज रहे हैं । जो भी हो, ऐंटिविश्व की कल्पना ने तत्त्व-दर्शन के नये आयाम खोल दिये हैं । क्या पता, किसी ऐंटिविश्व के एकांत कोने में बैठा कोई ऐंटिपाठक एक ऐंटिलेखक की रचना पढ़ रहा हो !

— ५ नंदनगर, बी.एच.यू., वाराणसी-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना मुआवजा दिये जमीन पर अधिकार

रामजन्म राय, बरहल गंज (आजमगढ़) : लोक निर्माण विभाग द्वारा बनायी जानेवाली सड़क में मेरी एक जमीन जा रही है। सड़क निर्माण के पूर्व ठेकेदारों ने कहा था कि जमीन का मुआवजा मिलेगा, पर अब कार्य शुरू होने के बाद अधिकारी कहते हैं कि मुझे कोई मुआवजा नहीं मिलेगा। मैं चाहता हूं कि मुझे जमीन का मुआवजा दिया जाए या उसके बदले जमीन दी जाए। क्या सरकार बिना मुआवजा दिये जमीन का अधिग्रहण कर सकती है ?

सड़क निर्माण के लिए आपकी जमीन का उपयोग करने से पूर्व सरकार जमीन का अधिग्रहण करती है तथा नियमानुसार मुआवजा देती है। आपकी जमीन पर सड़क का निर्माण करते समय भी मुआवजा दिया जाना चाहिए था। बिना मुआवजा दिए जमीन अधिग्रहीत नहीं की जासकती। आप भूमि अधिग्रहण अधिकारी के कार्यालय से संपर्क कर वस्तुस्थिति की जानकारी ले लें। यदि अधिग्रहण की कार्यवाही नहीं की गयी तो आप सरकार के विरुद्ध न्यायालय में जा सकते हैं तथा अपनी जमीन वापस लेने या उसका मूल्य प्राप्त करने के लिए कार्यवाही कर सकते हैं।

चाचा के प्रति श्रद्धा और अधिकार

सुखलाल विश्वकर्मा, बिलासपुर : जब मैं पांच वर्ष का था, तब मेरे पिताजी का निधन हो गया था। मेरे चाचा मां को बेदखल कर और मुझे अनाथ कर देना चाहते थे पर मां ने समझदारी से काम लिया। अब मैं बड़ा हो गया हूं। मैं चाहता हूं कि मेरे चाचा मेरे पास आकर रहें। वे ८५ वर्ष के हैं तथा उन्होंने अपनी सारी संपत्ति अपनी सेवा करनेवाले के नाम कर दी है। क्या मैं चाचा-भतीजा का संबंध सिद्ध कर उन्हें अपने घर वापस ला सकता हूं। मुझे उनकी संपत्ति का कोई मोह नहीं।

आपका प्रश्न काफी दिलचस्प है। आपको चाचा की संपत्ति का लोभ नहीं है। आपके चाचा आपके साथ रहें, यह आपका आग्रह है। आपके चाचा की सेवा अन्य कोई व्यक्ति कर रहा है। वह उससे संतुष्ट हैं तथा उन्होंने अपनी वसीयत भी उनके नाम कर दी है। आपकी इच्छा कितनी ही बलवती क्यों न हो, आप अपने चाचा को अपने साथ रहने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। यह विषय कानून से अधिक मनुष्य की अपनी इच्छा का है। आप अपना पारिवारिक जीवन खुशहाल करने के नाम पर किसी अन्य व्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन नहीं कर सकते। आपके पिताजी की निजी संपत्ति पर आपका अधिकार है। उस अधिकार में चाचा के अलग रहने से कोई कमी नहीं आती।

मां का दुर्व्यवहार

आशा, बरेली : नौ वर्ष पूर्व करुणाधार (कंपशेटरी ग्राउंड) पर मुझे रेलवे में नौकरी भी मिली और सरकारी आवास भी। मेरी मां मेरे विवाह के प्रति उदासीन थीं। मैं अपना सारा वेतन उन्हें देती थी। दो वर्ष पूर्व मैंने अपनी इच्छा से विवाह कर लिया। अब मेरे प्रति मां का व्यवहार बदल गया है। वह मुझसे लड़ती हैं। झूठी शिकायत करने की धमकी देती हैं। क्या मां की शिकायत पर मेरी नौकरी जा सकती है। मेरे पति कलह के वातावरण में रहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं चाहते । कृपया सलाह दें ।

आपकी माताजी का आपके विवाह से उदासीन रहना उचित नहीं कहा जा सकता । यह तो ठीक है कि शादी से पूर्व आपका वेतन उनके उपयोग में आता था और आपके विवाह कर लेने के उपरांत उसमें कुछ अंतर अवश्य पड़ गया होगा । नौकरी आपको करुणाधार पर मिली होने के कारण नौकरी पर आपका पूरा अधिकार सुरक्षित है । मां की शिकायत के आधार पर आपको नौकरी से नहीं निकाला जा सकता । मकान भी अब तक आपके नाम हो चुका होगा । इसलिए आपको मकान से भी नहीं निकाला जा सकता । कानून आपके साथ है । अपनी स्वयं की इच्छा से आप अपनी मां, भाई और बहन को जब तक चाहें अपने साथ रख सकती हैं, अन्यथा उन्हें मकान छोड़कर जाना होगा ।

किरायेदारी का प्रश्न

ए.के. गुप्ता, उज्जैन : हम तीस वर्षों से एक मकान में बतौर किरायेदार रह रहे हैं । यह मकान अब मेरे स्वर्गीय पिता को उनके विभाग ने दिया था । हमने काफी रुपया खर्च करके मकान को ठीक भी करवा लिया है । मकान-मालिक का सुझाव है कि मैं किराया-चिट्ठी में अपना नाम डलवा लूं । क्या ऐसा करना उचित होगा ?

मकान की किरायेदारी उस विभाग की है जिसमें आपके पिताजी कार्यरत थे । इस विभाग ने किस आधार पर मकान आपके पिताजी को दिया तथा आपके पिताजी का स्वर्गवास कब हुआ, इसका उल्लेख आपके पत्र में नहीं है । वह विभाग किरायेदारी में अपना अधिकार आज भी मानता है या नहीं । यदि वह विभाग आपको अनुमति दे तो आप मकान मालिक से

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ — रामप्रकाश गुप्त

सीधी किरायेदारी अपने नाम करवा सकते हैं । मकान में मरम्मत करवाते रहने से आपके अधिकार पर कोई अंतर नहीं पड़ता । आपसे समझौते के आधार पर मकान का किराया बढ़ाया जाना भी उचित नहीं माना जा सकता । यदि आप तीनों के समझौते के आधार पर मकान की किरायेदारी अपने नाम करवा लेते हैं तो आप को वह सभी अधिकार प्राप्त हो जाएंगे जो नियमित किरायेदार को प्राप्त होते हैं तथा मकान-मालिक को भी आपके क्षेत्र के किरायेदारी अधिनियम के अंतर्गत मिलनेवाले सभी अधिकार एवं कर्त्तव्यों का पालन करना पड़ेगा ।

पत्नी होने से ही इनकार

भारतभूषण भारद्वाज, यमुनानगर : पहली पत्नी से तलाक के बाद मैंने एक तलाकशुदा लड़की से दुबारा शादी की । शादी सादगी से लड़की के माता-पिता के घर पर ही हुई । शादी करने मैं अकेला ही गया था, क्योंकि मेरे मां-बाप गुजर चुके हैं । शादी के बाद वह लड़की दस दिन मेरे पास यमुनानगर रही । हमें इस दौरान सभी लोगों ने पति-पत्नी की तरह देखा । वह लड़की हरियाणा में अध्यापिका है अतः दस दिन की छुट्टी खत्म होने पर वह अपने शहर चली गयी और फिर नहीं लौटी न ही उसने मुझे पत्र लिखा । हां, उसके पिताजी के जरूर कई पत्र आये ।

बाद में मैंने दांपत्य संबंधों के अधिकारों की पुर्नस्थापना हेतु हिंदू विवाह एक्ट धारा ९ के अंतर्गत जिला व सत्र न्यायाधीश को प्रार्थना-पत्र दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर लड़की ने लिखित रूप में शादी होने से ही इनकार कर दिया । मैंने अपने वकील के कहने पर मुकदमा वापस ले लिया । क्या मैं अब पुनः शादी कर सकता हूं क्योंकि उस लड़की ने किसी और से शादी कर ली है ।

जिला व सत्र न्यायाधीश के न्यायालय में आपके साथ विवाह से इनकार कर देने के बाद, आपकी तथाकथित पत्नी अपने को आपकी विवाहित पत्नी नहीं कह सकती । उनके इनकार करने तथा आपके मुकदमा वापस लेने का मतलब तो यह ही माना जाएगा कि आपके द्वारा मुकदमे में वर्णित विवाह की बात सच नहीं थी । यह निष्कर्ष निकलने के बाद आपके विवाह करने पर भी कोई रोक नहीं रहती । वैसे भी आपके मामले में तो वह महिला पहले ही अन्य व्यक्ति से विवाह कर चुकी है, अब वह आपकी पत्नी होने का दावा किस प्रकार कर सकती है ।

मकान मालिक की अनुमति

विजयकुमार साहू, विदिशा : हम चौदह वर्ष से एक मकान में किरायेदार हैं । दो वर्ष पूर्व मकान-मालिक ने डाक द्वारा हमें मकान खाली करने की सूचना दी थी । इसके बाद कोई सूचना नहीं दी ।

मकान में हमने अपने खर्चे से लाइट लगवायी है और अब नल लगवाना चाहते हैं, लेकिन नगरपालिका और पी.एच.आई. मकान-मालिक की लिखित अनुमति मांगते हैं, जिसे मकान-मालिक देने को तैयार नहीं है । बताइए, हम नल का कनेक्शन कैसे ले सकते हैं ?

मकान-मालिक इस मकान को बेचना चाहता है और हम खरीदना भी चाहते हैं, लेकिन वह उसकी वास्तविक कीमत से अधिक कीमत चाहता है ।

पानी मानव जीवन के लिए प्राथमिक आवश्यकता है, इसलिए नगरपालिकाएं मकान-मालिक अथवा किरायेदार दोनों को ही नल-कनैक्शन लेने का अधिकारी मानती हैं । किराये की रसीद लगाकर नगरपालिका में जल कनेक्शन लेने हेतु आवेदन करें । नगरपालिका मकान-मालिक से यह जानकारी लेना चाहेगी कि आप किरायेदार हैं या नहीं । अगर उसके बाद भी नगरपालिका आपको पानी का कनेक्शन नहीं दे, तो आपको नगरपालिका तथा मकान-मालिक दोनों को विपक्ष बनाकर दावा कर देना चाहिए तथा न्यायालय से आवश्यक आदेश देने की प्रार्थना करनी चाहिए ।

जहां तक मकान खरीदने का प्रश्न है, मकान-मालिक को मकान बेचने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता । मकान मालिक कितना मूल्य प्राप्त करके मकान बेचना चाहता है, इसका निर्णय मकान मालिक स्वयं ही करेंगे ।

अमरीका की पत्रिका 'परेड' सबसे अधिक बिकनेवाली पत्रिका है, जिसकी प्रसार संख्या दो करोड़, तीस लाख है । दूसरे नंबर पर 'रीडर्स डाइजेस्ट' है, जो एक करोड़ अस्सी लाख छपती है और तीसरा नंबर है 'टी. वी. गाइड' पत्रिका का, जो एक करोड़ सत्तर लाख छपती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने पक्षियों की विभिन्न जाति-प्रजातियों की लगभग १३ सौ बोलियों व संकेत अभिप्रायों को रिकॉर्ड किया है । इनमें कुछ पक्षी तो ऐसे हैं, जो अपनी जातिगत ध्वनि तो निकालते ही हैं, साथ में दर्जनों अन्य प्रकार की आवाजें भी पैदा करते हैं, जिनमें पशु-पक्षियों की बोलियों से लेकर मशीनों की आवाजों की नकल भी सम्मिलित है ।

क्या पशु-पक्षियों का भी अपना संकेत है ?

● अरूण कुमार पांडेय

मानव बुद्धिमान है, पर यह नहीं कि उसकी बुद्धिमानी की कहानी किसी और की जुबानी नहीं कही जा सकती है ।

यदि प्रेम-सद्भाव, सहयोग-सहकार जैसे गुणों की दृष्टि से देखा जाए तो पशु-पक्षी इस संदर्भ में मनुष्य से भी आगे हैं । भगवान ने उनमें जितनी क्षमता का समावेश किया है, वह अपने आप में एक आश्चर्य है । सुख के समय वे प्रसन्नता जाहिर करते हैं एवं विषाद के समय दुःख व्यक्त करते हैं । संसार में जितने भी जीव-जंतु हैं, वे सब अपनी-अपनी तरह से अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करते हैं, जिस प्रकार हमारे बीच के गूंगे-बहरे अपने संकेतों के द्वारा बात-चीत कर लेते हैं, इसी प्रकार जीव-जंतु भी अपनी बात अपने ढंग से एक दूसरे के पास पहुंचाते हैं । आजकल शोध कर्मी इस क्षेत्र में कार्यरत है । स्मरण, संकेत और विशेष गुणों की प्रचुरता पक्षियों में अधिक होती है । वैज्ञानिक पक्षियों के इसी विशिष्ट ज्ञान को समझने की कोशिश कर रहे हैं ।

पक्षियों के हाव-भाव में जानकारियां

मिशिगन विश्वविद्यालय के पक्षी विशेषज्ञ डॉ. ब्राडाक ने अनेक वर्षों तक इनके व्यवहार का अध्ययन किया है । उनका विचार है कि ये भी परस्पर विचारों को उसी प्रकार आदान-प्रदान करते हैं, जैसे मनुष्य । उनकी चहचहाहट,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

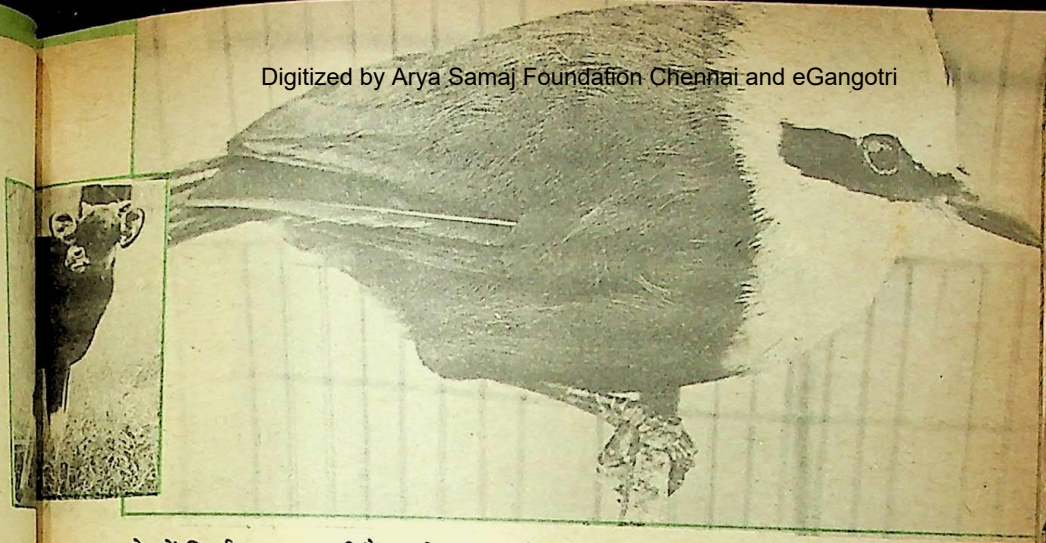

फुदकन, जो हमें निरर्थक जान पड़ती हैं, उनमें अनेकानेक प्रकार की सूचनाएं व जानकारियां होती हैं। इसके अतिरिक्त उनकी नाना प्रकार की भाव-भंगिमाएं होती हैं, जो पृथक्-पृथक जानकारियां प्रकट करती हैं। यदा-कदा ऐसी सूचनाएं अपने समुदाय के अन्य पक्षियों को देने के लिए वे विशेष प्रकार की सांकेतिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं, जिन्हें सुनकर साथी सावधान हो जाते हैं। डॉ. ब्राडाक का कहना है कि मनुष्यों की तरह पक्षियों में भी भाव-संवेदनाएं होती हैं। वे कहते हैं कि यदि ऐसा नहीं होता, तो विपत्ति के समय वे किसी प्रकार की ध्वनि अथवा भाव प्रदर्शन करने की आवश्यकता नहीं समझते। उड़कर अपनी जान बचा लेने तक में ही इसकी इतिश्री मानते, पर ऐसा नहीं होता। संभवतः इसका कारण यह हो कि शत्रु के चंगुल में फंस जाने के उपरांत की कठिन स्थिति का उन्हें ज्ञान रहता हो। ऐसी स्थिति में पड़कर कोई साथी जान गंवा न बैठे, इस हेतु मोह उमड़ पड़ने के कारण प्रेम-सहानुभूति के प्रतीक सूचना प्रकट होती हो। भारत के मूर्धन्य पक्षिविद् डॉ. सलीम अली जीवन पर्यंत चिड़ियों के व्यवहार और विशेषताओं का अध्ययन करते रहे। अपने लंबे अध्ययन और अनुभव के आधार पर उन्होंने बताया कि पक्षियों में यदि विभिन्न प्रकार की मुद्राओं, हावभावों, संकेतों द्वारा विचार-संप्रेषण की क्षमता प्रकृति ने न दी होती, तो संभव था वे अपने अस्तित्व की रक्षा न कर पाते। वे आगे कहते हैं कि अस्तित्व-रक्षा का एक अन्य आधार उनका चंचल जीवन है। इसमें जहां एक के सावधान रहने पर पूरे समूह की रक्षा हो जाती है, वहीं दूसरी ओर उनकी संगठित शक्ति शत्रु पक्ष का मुकाबला करने में सक्षम होती है।

समय और ऋतु के हिसाब से

इस प्रकार के अध्ययन विश्व के अनेक वैज्ञानिकों ने भी किये हैं। फ्रांस स्थित 'लेबोरेटरी ऑव बर्ड्स एंड इट्स विहेवियर' के मूर्धन्य वैज्ञानिक जे. सी. ब्रेमोइट लंबे समय से चिड़ियों की बोलों व संकेतों का सतत् अध्ययन करते आ रहे हैं। उन्होंने पक्षियों की विभिन्न जाति-प्रजातियों को लगभग १३ सौ बोलियों व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेत अभिप्रायों को रिकॉर्ड किया है । इनमें कुछ पक्षी तो ऐसे हैं, जो अपनी जातिगत ध्वनि तो निकालते ही हैं, साथ में दर्जनों अन्य प्रकार की आवाजें भी पैदा करते हैं, जिनमें विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी की बोलियों से लेकर मशीनों की आवाजों की नकल भी सम्मिलित हैं । इनमें ऐसी विशेषता क्यों पायी जाती है और इसका उद्देश्य क्या है ? इस बारे में ब्रेमोझउ का विचार है कि संभवतः शत्रु पक्ष को भ्रमित करने के प्रयोजन से ही प्रकृति ने उन्हें यह विशिष्टता प्रदान की । अपनी 'बर्डस एंड नेचर' पुस्तक में एक यूरोपियन रोबिन का विवरण देते हुए वे लिखते हैं, इस चिड़िया की समय-समय पर टेप की गयी ध्वनियों को जब बसंत ऋतु में नर रोबिन उड़-उड़कर आक्रमण करने के लिए एकत्रित होने लगे, किंतु कुछ समय पश्चात जब उन्हें यह आभास मिला कि यह आवाज किसी शरारती रोबिन द्वारा की गयी है, तो निर्भय होकर वे सभी अपनी उदरपूर्ति में पुनः जुट पड़े । इसी प्रकार का प्रयोग जब पतझड़ ऋतु में दोहराया गया, तब रोबिन पक्षियों की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखायी पड़ी । वे निर्द्वंद विचरण करते रहे ।' इस आधार पर उसने निष्कर्ष निकाला कि पक्षियों की ध्वनियों में विभिन्न प्रकार के आशय प्रकट करने वाले संकेत रहते हैं जो समय और ऋतु के हिसाब से कभी संघर्षात्मक कभी रागात्मक स्वरूप ग्रहण कर लेते हैं ।

बागीचे की रखवाली

आजकल पशु-पक्षियों द्वारा व्यक्त इन संकेतों का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में उन्हीं को डराने-भगाने के लिए किया जा रहा है । जरमन स्थित 'शराब का नगर' कहे जाने वाले शहर आपेन हम में पतझड़ के दौरान अंगूर की खेती जोरों पर होती है । जब अंगूर परिपक्व हो जाते हैं, तब आकाश में तैनिपियर जाति के पक्षियों के झुंड-के झुंड इन खेतों के ऊपर मंडराने लगते हैं और मौका पाकर जैसे ही किसी कुंज में उतरना चाहते हैं वैसे ही मचान पर बैठा चौकीदार टेप रिकॉर्डर का बटन दबा देता है, जिससे त्रस्त एवं क्षुब्ध पक्षी अपनी जान बचा कर आकाश में ऊंचे उड़ जाते हैं । वहां से उड़कर किसी दूरस्थ कुंज पर टूटते हैं, तो पुनः उनके साथ वहां बैठा रक्षक वैसा ही व्यवहार करता है ।

विमान दुर्घटना से बचा

इसी प्रकार की तरकीब अब हवाई अड्डों पर भी उपयोग में लायी जा रही है । घटना सन १९६६ की है । न्यूयार्क सिटी के हवाई अड्डे पर उतरते हुए एक परिवहन विमान पर 'गल' जाति के एक विशालकाय पक्षी ने विध्वंसक झपट्टा मारा । चालक ने किसी प्रकार उसके आक्रमण को बचा कर विमान सुरक्षित हवाई पट्टी पर उतार लिया, मगर अभी दो और विमान वहां उतरने वाले थे और गल पक्षियों का झुंड उन पर मंडरा रहा था । विमान कहीं दुर्घटनाग्रस्त न हो जाए — यह सोच कर अधिकारियों ने पक्षी ध्वनि-संकेत विशेषज्ञ जॉन कैडलेक को बुलाया, जो इस प्रकार की दुर्घटनाओं को रोकने, में दक्ष माने जाते थे और उन्होंने उन पक्षियों की संकट सूचक ध्वनि बजाकर उन्हें को भगाकर संभावित दुर्घटना से बचा लि

— अरुण कुमार
नवरतनपुर, पोस्टल पार्क, चिरैयाटांड,
पटना-८०००००१

फरवरी, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंधा और बंदूक

● कुंदनसिंह परिहार

एक दिन दर्पणजी ने अखबार में एक लेख पढ़ा। लेख उज्ज्वल भाई पर था, और लिखनेवाले थे कोई मक्खनलाल। मक्खनलाल ने उज्ज्वल भाई के पिछले दस वर्ष के सार्वजनिक जीवन का लेखा-जोखा किया था और उन्हें महान समाज-सेवी, भारी ईमानदार और परम परदुःखकातर सिद्ध किया था। मक्खनलाल के हिसाब से उज्ज्वल भाई की चुनरी बिलकुल बेदाग थी।

इस लेख को पढ़कर दर्पणजी भड़के, क्योंकि उज्ज्वल भाई उन्हीं के वार्ड के पार्षद थे। उज्ज्वल भाई ने वार्ड को भगवान-भरोसे छोड़ रखा था। सब तरफ कचरे के ढेरों की शोभा थी। सड़कों पर चलनेवालों को अपनी गोद में लेने को आतुर बड़े-बड़े गढ्ढे थे। शहर का सुपरिचित और सर्वव्यापी नाला साफ न होने के कारण बरसात में स्वच्छ, सुगंधित पानी घरों में घुस जाता था। खबर यह थी कि जैसे कुछ भाग्यशाली लोग स्विस बैंकों में धन जमा करके विदेश में बसने का जुगाड़ कर लेते हैं, वैसे ही उज्ज्वल भाई शहर के एक 'पॉश' मुहल्ले में मकान खरीद कर वहां खिसक लेना चाहते थे।

इसलिए मक्खनलालजी की मक्खनबाजी पर कुपित होकर 'दर्पणजी' ने अखबार को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने उज्ज्वल भाई की खासी पोल खोली। उन्होंने वार्ड की दुर्दशा का हृदयविदारक चित्र खींचा और लिखा कि उज्ज्वल भाई वार्ड की फिक्र करने के बजाय अपने निजी कल्याण और गोटियां बैठाने में ज्यादा व्यस्त रहते हैं। अखबार वालों ने उनका पत्र बिना कतर-ब्योंत के छाप दिया।

पत्र छपा तो दर्पणजी के पड़ोसी शर्माजी बोले, "आप भी पॉलिटिक्स में पड़ने लगे ?"

'दर्पणजी' चकित हुए, बोले, "इसमें कौन सी पॉलिटिक्स है ?"

शर्माजी बोले, "भाई, पॉलिटिक्स वाले ही जनसेवकों पर टीका-टिप्पणी करते हैं। यह तो

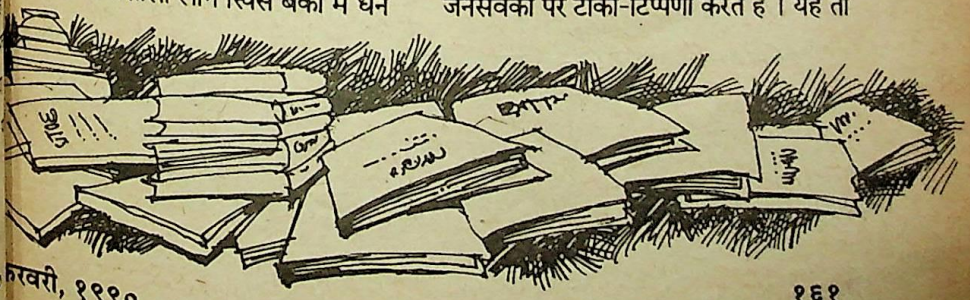

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी जानते हैं कि कोई आदमी सेवा करने के लिए पार्षद या विधायक नहीं बनता । फालतू टांय-टांय करने से क्या फायदा ? भगवान का भजन करो और अपने काम से काम रखो ।''

दर्पण जी चिढ़कर बोले, ''हम तो बोलेंगे । आपको चुप रहना है तो चुप रहिए ।''

शर्माजी बोले, ''बोलोगे तो पॉलिटिक्स में पड़ोगे । समझाना हमारा काम है, बाकी तुम्हारी मरजी ।'

पत्र प्रकाशित होने के दो दिन बाद ही धमाका हुआ । एक दिन 'दर्पणजी' के घर एक सफेद कार में पांच-छह खादीधारी आ धमके । उनके आगे-आगे एक सांवला, मोटा आदमी था जिसके होंठों के कोनों पर पान की पीक अंटी थी । वे सब के सब 'दर्पणजी' की बैठक में घुस आये । सब के सब मुग्धभाव से इधर-उधर देख रहे थे । सांवला आदमी दर्पणजी से बोला, ''दर्पण जी यहीं रहते हैं ?''

दर्पणजी हड़बड़ाये, बोले, ''कहिए ! मैं ही हूं ।''

सांवले आदमी ने प्रसन्न होकर अपने साथियों की तरफ देखकर दर्पणजी की तरफ हाथ उठाया, कहा, ''यही हैं ।''

सब खादीधारी गद्‌गद् भाव से दांत निकाले दर्पणजी को देखने लगे । सांवला आदमी बड़ी विनम्रता से बोला, ''सेवक को बकुलचंद्र कहते हैं । कई साल तक इस वार्ड का पार्षद रह चुका हूं ।''

दर्पणजी बोले, ''मैं आपको जानता हूं । आपसे परिचय हो चुका है ।''

बकुलचंद्र कुछ झेंपे, बोले, ''मेरी याददाश्त कुछ कमजोर है । क्षमा करें ।''

फिर लज्जा के इस हल्के-से दौर से उबरकर बोले, ''हम आपको बधाई और धन्यवाद देने आये हैं ।''

दर्पणजी आश्चर्यचकित हुए, बोले, ''किस बात के लिए ?''

बकुलचंद्र होंठ फैलाकर बोले, ''आपने अखबार में उज्ज्वल भाई के बारे में जो पत्र लिखा है, उसके लिए । वाह, क्या पत्र लिखा है ! सच्चे सत्यसाधक हैं आप । जी करता है आपके हाथ चूम लें । लगता है हमारी वाणी आपके मुंह से फूटी है । जो हम नहीं कह सके वह आपने कहा । आपने अभी तक इस प्रतिभा को कहां छिपा रखा था ?''

दर्पणजी कुछ प्रसन्न हुए, बोले, ''चलिए, मुझे खुशी है कि आपको पसंद आया । मैं तो समझता था कि यों ही बकवास कर रहा हूं ।''

बकुलचंद्र ने अपने दोनों हाथ उठाये, बोले, ''अजी क्या बात कर रहे हैं ? आपको क्या पता आपने कितना बड़ा काम किया है । सच्चाई पर से परदा खीच दिया आपने । कितने लोग ऐसा करने की हिम्मत करते हैं ? क्या जजबा है आपका !''

''अजी क्या बात कर रहे हैं ? आपको क्या पता आपने कितना बड़ा काम किया है । सच्चाई पर से परदा खींच दिया आपने । कितने लोग ऐसा करने की हिम्मत करते हैं ? क्या जज़बात है आपका ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

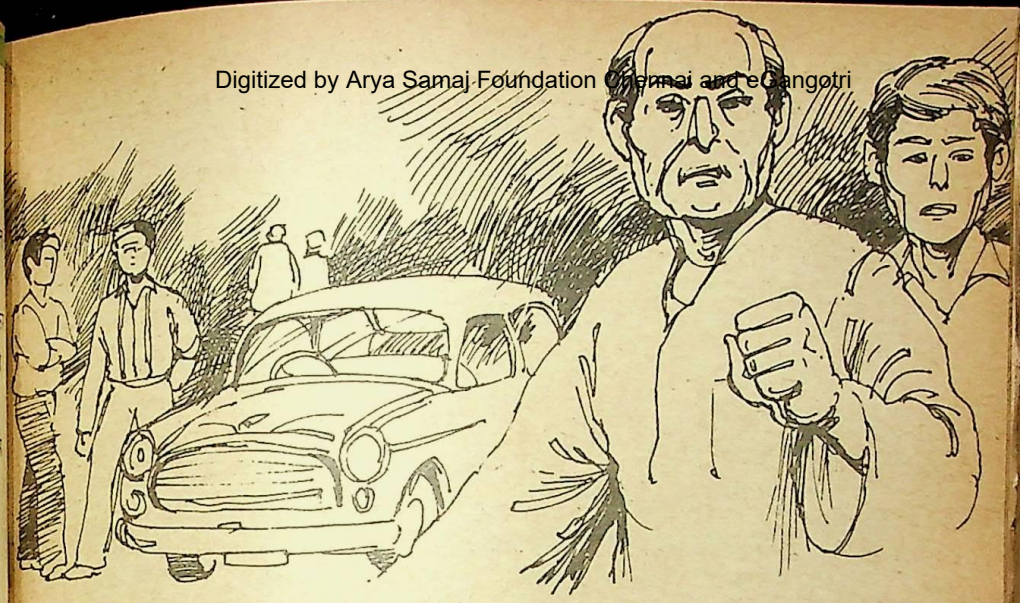

दर्पणजी ने कृतज्ञ भाव से हाथ जोड़े । बकुलचंद्र बोले, "लेकिन यह काफी नहीं है । आप तो उज्ज्वल भाई के भ्रष्टाचार का एक कोना ही पकड़ पाये हैं । बहुत-सी ऐसी बातें हैं जो आपकी जानकारी से बाहर हैं । हम यह कहने आये हैं कि आप कहें तो हम आपकी मदद करें ।"

दर्पणजी बोले, "कैसी मदद ?"

बकुलचंद्र बोले, "उज्ज्वल भाई की सारी करतूतों की जानकारी हमको है । सबूत भी हैं । आप कहिए तो हम आपकी सेवा में प्रस्तुत करें । अब जब आपने भ्रष्टाचार साफ करने का बीड़ा उठाया है, तो उसे पूरा कीजिए ।"

दर्पणजी सोच में पड़कर बोले, "दीजिए । हम देखेंगे !"

बकुलचंद्र बोले, "हम तो आपको इतनी जानकारी देंगे कि आपसे संभालते नहीं बनेगी । निष्ठा से अपना काम कीजिए ।"

बकुलचंद्र दल-बल सहित प्रसन्न भाव से चले गये ।

दूसरे दिन उनका एक खादीधारी लेफ्टिनेंट दर्पणजी के घर एक बोरा छोड़ गया । दर्पणजी ने देखा, उसमें पुराने अखबारों की फोटो कापियां थीं । सभी में उज्ज्वल भाई के ऊपर कोई न कोई आरोप लगाया गया था । कुछ अखबारों में उनके खिलाफ बैठायी गई जांच का विवरण था ।

दूसरे दिन वह फिर एक बोरा छोड़ गया । इसमें बहुत सी कापियां और डायरियां थीं । कापियों में हाथ से लिखे, उज्जवल भाई के द्वारा विभिन्न व्यक्तियों से रिश्वत और उपहार लेने के कई विवरण थे । व्यक्तियों के नाम, तारीखें, सब दिया हुआ था । डायरियों में भी इसी तरह की प्रविष्टियां थीं ।

अब दर्पणजी हर तीन-चार दिन में उज्ज्वल भाई के खिलाफ पत्र ठोकने लगे । बकुलचंद्र बीच-बीच में आकर उन्हें शाबाशी दे जाते ।

तीन-चार पत्र छपने के बाद एक दिन उज्ज्वल भाई उनके घर अवतरित हो गये । जाहिर था कि वे बहुत क्रुद्ध थे, लेकिन एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन एक कार दर्पणजी के घर पर रुकी । उसमें से उज्ज्वल भाई और बकुलचंद्र उतरे । भीतर आकर बकुलचंद्र दर्पणजी से बोले, "हम लोग आपसे यह कहने आये हैं कि हमने समझ लिया है कि आप एक ब्लैक-मेलर हैं ।"

माहिर राजनीतिज्ञ की तरह वे अपने गुस्से को दबाये हुए थे ।

बैठकर बोले, "दर्पण जी, आपकी मुझसे कौन-सी दुश्मनी है ?"

दर्पणजी ने उत्तर दिया, "कोई दुश्मनी नहीं है । न्याय की बात है । मुझे झूठी तारीफ बर्दाश्त नहीं होती ।"

उज्ज्वल भाई बोले, "अब मक्खनलाल ने वह पत्र लिख दिया तो मैं क्या करूं ? लेकिन अब जो ये पत्र आप लिख रहे हैं उनकी सामग्री आपको कहां से मिल रही है ?"

दर्पणजी बोले, "कहीं से भी मिल रही हो । मेरे पास ठोस सबूत हैं ।"

उज्ज्वल भाई बोले, "वही तो मैं भी कह रहा हूं । आप मेरे विरोधियों के हाथों में खेल रहे हैं । मुझे पता है कि आपको सामग्री बकुलचंद्र से मिल रही है ।"

दर्पणजी विस्मित हुए, बोले, "तो क्या हुआ ? है तो सब सच ही ।"

उज्ज्वल भाई उनकी आंखों में झांककर बोले, "मैं आपको बकुलचंद्र की करतूतों के सबूत देता हूं । उसके खिलाफ लिखेंगे ?"

दर्पणजी बोले, "क्यों नहीं लिखेंगे ? हम तो न्याय के पक्षधर हैं ।"

उज्ज्वल भाई 'ठीक है' कह कर चले गये ।

दूसरे दिन एक दूसरे स्वयंसेवक एक बोरा पटक गये, कह गये, "उज्ज्वल भाई ने भेजे हैं ।"

दर्पणजी ने देखा, उसी तरह की सामग्री जैसी उज्ज्वल भाई के खिलाफ प्राप्त हुई थी । सामग्री देखने से पता चला कि बकुलचंद्र भूत भी उतना ही समृद्ध था जितना उज्ज्वल का ।

तीसरे दिन सबेरे बकुलचंद्र के खिलाफ एक पत्र छप गया । थोड़ी देर बाद ही बकुलचंद्र अपने लाव-लश्कर के साथ फनफनाते हुए आ गये । अखबार हिलाकर दर्पणजी से बोले, "यह क्या है ?"

दर्पणजी बोले, "आपके खिलाफ पत्र है ।"

बकुलचंद्र बोले, "यह सब झूठ है ।"

दर्पणजी बोले, "मैंने सबूतों के आधार पर लिखा है ।"

बकुलचंद्र आंखें निकालकर बोले, "कहां है सबूत ?"

दर्पणजी बोले, "मेरे पास है ।"

बकुलचंद्र बोले, "कहां से मिले तुम्हें सबूत ?"

दर्पणजी ने जवाब दिया, "वैसे ही मिले जैसे उज्ज्वल भाई के खिलाफ मिले थे ।"

बकुलचंद्र एक क्षण मौन साध गये । फिर बोले, "तुम पतित हो गये हो । तुमने उज्ज्वल भाई से पैसा खा लिया । तुम बेपेंदी के लोटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो।''

दर्पणजी शांत भाव से बोले, ''जैसा आप समझें।''

बकुलचंद्र गुस्से में— ''देख लेंगे'' कह कर चले गये।

दूसरे दिन एक कार दर्पणजी के घर पर रुकी। उसमें से उज्ज्वल भाई और बकुलचंद्र उतरे। भीतर आकर बकुलचंद्र दर्पणजी से बोले, ''हम लोग आपसे यह कहने आये हैं कि हमने समझ लिया है कि आप एक ब्लैकमेलर हैं। आपका काम लोगों पर झूठे आरोप लगाकर उनसे पैसे और नाजायज फायदा लेना है। इसीलिए आप उज्ज्वल भाई जैसे सच्चरित्र और ईमानदार आदमी पर आरोप लगाते रहे। बाद में आपने मेरे जैसे सीधे-सादे कार्यकर्ता पर भी दोष लगाये। आपने उज्ज्वल जी से कहा कि उनके खिलाफ मैंने आपको सामग्री दी और मुझसे कहा कि उज्ज्वल भाई ने दी। हमने आपकी चाल को पकड़ लिया है। हम दोनों पुराने मित्र हैं और आप हमारे बीच गलतफहमी पैदा नहीं कर सकते। भविष्य में आप ऐसे गैरजिम्मेदारी के पत्र छापेंगे तो हम आप पर मानहानि का दावा करेंगे। हम अखबार वालों से भी यह कहने जा रहे हैं कि वे इस तरह के खुराफाती पत्रों को अपने अखबारों में स्थान न दें। चलते-चलते आपसे यही कहना है कि आप भले आदमियों पर कीचड़ उछालना बंद नहीं करेंगे तो आप जैसे दुष्टों से निपटने के लिए हमारे पास बहुत-से तरीके हैं।''

५९, नव. आदर्श कॉलोनी, गढ़ा रोड,
जबलपुर-४८२००२

मलेशिया का मेंग्रोव समाप्ति की ओर

यदि भूमि सुधार के नाम पर मेंग्रोव का विनाश इसी गति से जारी रहा तो मलेशिया के मेंग्रोव आगामी दस वर्षों में समाप्त हो जाएंगे। इस प्रायद्वीप के लगभग ६५ हजार हेक्टर क्षेत्र में मेंग्रोव आच्छादित है। ये पश्चिमी किनारे के अधिकांश हिस्सों को आश्रय प्रदान करते हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से परती भूमि के अंतर्गत आनेवाले ये मेंग्रोव पर्यावरण के लिए अति आवश्यक हैं। ये किनारे के हिस्सों का भूक्षरण रोकते हैं, झींगा मछली और अन्य मछलियों के लिए नरसरी के रूप में कार्य करते हैं व स्थानांतरण कर आनेवाले पक्षियों के लिए उपयुक्त विश्राम स्थल भी प्रदान करते हैं। साथ ही ये स्थानीय लोगों के लिए लकड़ी और चारकोल का मुख्य स्रोत हैं।

एनवायरनमेंट न्यूज डाइजेस्ट के अनुसार भूमि पर बढ़ते दबाव व कृषि और कृषि पर आधारित परियोजना के लिए हाल ही के वर्षों में भारी मात्रा में मेंग्रोव के जंगलों को नष्ट कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

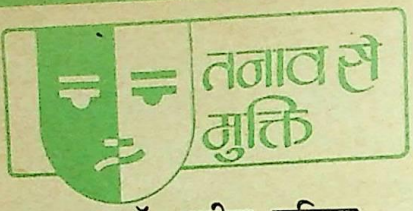

● डॉ. सतीश मलिक

मनुष्यों से रुचि समाप्त

व.प्र. : जबलपुर, मेरी आयु २५ वर्ष है । बचपन में आर्थिक तंगी और माता-पिता से स्नेह न मिलने के कारण १२-१३ वर्ष की आयु से ही पुस्तकों की तरफ अधिकाधिक झुकता गया । लगभग १६ वर्ष का होते-होते ही प्रेमचन्द व शरतचन्द्र का संपूर्ण साहित्य पढ़ डाला । उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवती चरण वर्मा, थोमस हार्डी के भी कई उपन्यास पढ़े । पिछले ४ वर्षों से कृष्णामूर्ति व रजनीश की पुस्तकें पढ़ रहा हूं । इन दोनों को पढ़ने से तथा वैसे भी पुस्तकों से इतना अधिक जुड़ाव होने से मनुष्यों से रुचि खो बैठा हूं । किसी भी व्यक्ति को अधिक समय तक सहन नहीं कर पाता हूं । जरा-सा अपमान हो जाने पर उस व्यक्ति की हत्या तक करने की इच्छा होती है । कभी-कभी यह इच्छा इतनी प्रबल होती है कि रातों-रात सो नहीं पाता । कभी-कभी कुछ विचार मस्तिष्क में आते ही हृदय जोरों से धड़कने लगता है, जिसके फलस्वरूप सिर में भी दर्द होने लगता है । मुझे ऐसा भी लगता है कि मैं तो सारी दुनिया को प्यार करता हूं और मुझे कोई नहीं चाहता । मैं बेरोजगार हूं । बी.काम तक शिक्षा ली है, कृपया कोई सुझाव दें ।

यह सब पुस्तकें मनुष्यों को अपने बारे में समझाने में सहायक सिद्ध होती हैं । साथ ही लोगों से अलगाव कदापि पैदा नहीं करतीं । आप नाहक ही इन्हें दोषी ठहरा रहे हैं । आप वास्तव में निजी समस्या से पीड़ित हैं तथा अपनी कमी न महसूस करने के लिए पुस्तकों के चरित्रों तथा इनमें चित्रित सिद्धांत व आदर्शों से अपनी पहचान करने लगे हैं । इस प्रकार आम जन से ऊपर अपने को समझने लगे हैं । दोष इसमें पुस्तक का नहीं आपका है, क्योंकि आप इस प्रकार अपनी दिनचर्या की कमी व दुःखों से ऊपर उठ जाते हैं । आपको चाहिए कि धरातल पर उतर कर अपनी समस्याओं को समझें, ढूंढ़ें, खून-पसीना बहाएं, दाल-रोटी जुटाएं, अपनी पारिवारिकता जिम्मेदारी समझें । तो व्यावहारिकता तभी आएगी, आप उन्हें अपने छोटा न समझे । जब यह सब आप कर लेंगे आपको उन पुस्तकों का दर्शन समझ में आएगा । आपकी सेहत संबंधी समस्याएं तब स्वतः समाप्त हो जाएंगी ।

आत्महत्या करने की सोच

व.कु.प्र., जमशेदपुर : मैं १९ वर्ष का एक युवक हूं । पिताजी जूनियर इंजीनियर हैं । मैं भाइयों में सबसे छोटा हूं । सभी पढ़ रहे हैं । मां कैंसर हो गया है तथा उनका इलाज चल रहा है । उनका वेतन भी बंद हो गया है । केवल पिता वेतन से ही चार भाइयों की पढ़ाई एवं मां का इलाज चल रहा है । जमीन थी वह भी बिक

मैं बचपन से ही पैसा चुराने की आदत के कारण धूम्रपान करने लगा हूं । संगीत से अ लगाव के कारण कैसेट आदि ले आता हूं, के बाद भी डांट-फटकार सुनता हूं, पर असर होता । कभी सोचता हूं दूर कहीं चला जाऊं । व्यापार करने की सोचता हूं, पर पैसा नहीं । आत्महत्या करने की सोचता हूं । पढ़ाई में मन लगता । मेरे चले जाने पर मां भी शायद बि रहे । कृपया उचित सलाह दें ।

आपका परिवार आर्थिक एवं बीमारी परेशानियों की वजह से ही तनाव में है । समय सबको साथ मिलकर माता-पिता सहयोग देना चाहिए । साथ ही कार्यशील चाहिए । आप तनावपूर्ण स्थिति में जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागना चाहते हो । यह अच्छे लक्षण नहीं हैं । व्यक्ति को हर आपात स्थिति सहन करने के लिए तैयार रहना चाहिए । आप तो केवल सोचते ही हैं कि व्यापार कर लूं । क्या आपने इस ओर कोई कदम उठाया । सरकार से ऋण भी लिया जा सकता है । आपमें क्षणिक सूख त्यागने की क्षमता का विकास होना बाकी है । उसकी तरफ बढ़ें । इसकी शुरुआत चोरी न करने, धूम्रपान न करने से कर सकते हैं ।

चित्र उभरने पर

फौजिया बेगम, मेरठ : मैं बी.ए. की छात्रा हूं । कुछ समय से गश खा कर गिरने के दौरे पड़ने लगे हैं । ऐसा तब होता है जब मन में मार-काट, मुर्दे एवं खून के चित्र उभरने लगते हैं तथा हटाये नहीं हटते । यों ठीक रहती हूं । ऊपरी साए के लिए इलाज सयानों से करवा लिया, परंतु तकलीफ बनी हुई है । कृपया उपाय सुझाएं ।

आपके दौरे न तो मिर्गी के लगते हैं न ही ऊपरी साया के । हो सकता है दंगों में हुई मारकाट इसके पीछे हो । आमतौर पर होता यूं है कि बाहरी वातावरण से अकसर मन में छिपे द्वंद व समस्याएं उभर कर फिर से सामने आने लगती हैं । इस तरह के चित्र इस बात का द्योतक हैं कि आप अपनी तीव्र संवेदनाओं को दबाये रखती हैं तथा आपके मन में उदासीनता भी है । उदासीनता आजकल दवा लेने से सही हो सकती है तथा तीव्र संवेदनाओं के बाद में सामाजिक मेल-जोल व स्वस्थ स्पर्द्धा के द्वारा नियंत्रित कर सकती हैं । इनमें खेल आदि भी सम्मिलित किये जा सकते हैं ।

क्या वातावरण का असर ?

दर्शन कौर, अंबाला :मेरा पुत्र जो ८ साल का है दिन पर दिन जिद्दी होता जा रहा है । उसे रोज

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें । —संपादक

वीडियो की एक फिल्म देखनी होती है । दूरदर्शन के सारे सीरियल भी देखेगा । फिर वह जितने पैसे मांगता है देने पड़ते हैं, नहीं तो घर में रोना-धोना, छोटी बहन को मारना तथा मुझे भी मारने लगता है । मेरे विचार में उसके मन पर बुरा प्रभाव मेरे पति के संयुक्त परिवार के भाइयों के आपसी झगड़े देख कर हुआ है । रोज तू-तू, मैं-मैं के अतिरिक्त हाथापाई तक की नौबत आ गयी थी । मैंने अपने बच्चों को बहुत सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया, परंतु कुछ लाभ नहीं हुआ ।

ऐसा प्रतीत होता है कि आप के पति बच्चों की देखभाल में आप के साथ नहीं रहते हैं— या तो समय के अभाव से या रुचि न होने के कारण कई बार मर्द इस ओर ध्यान नहीं देते । वास्तव में लड़का पिता को अपना आदर्श मानकर अपने आपको ढालता है । इसलिए पिता के अनुशासन का आपके घर में अभाव प्रतीत होता है । बच्चे के मानस-पटल पर अवश्य ही इन सब झगड़ों को लेकर बुरी छाप तो पड़ी है ही, परंतु इसका अभिप्राय कदापि नहीं कि अब कुछ नहीं हो सकता । आपके बच्चे को सीमा निर्धारण की भी आवश्यकता है, जिससे उसे पता रहे कि कितना पैसा मिलेगा, कितना समय खेल आदि में बिताएगा । उसकी नाजायज मांगों को कदापि नहीं मानिए, क्योंकि यदि आप बात मानती जाएंगी तो उसकी मांगें भी बढ़ती जाएंगी । ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिविल ओवरसियर्स/ इंजीनियर्स और निर्माण कार्य पर्यवेक्षको

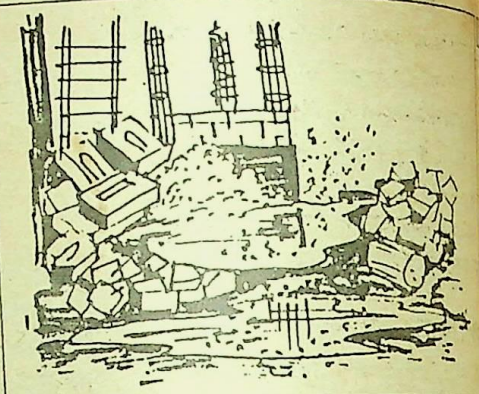

आप अपने निर्माण कार्य के प्रति पूरा ध्यान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं - यह ठीक है।

परन्तु

आपको अपने निर्माण स्थल के आस-पास के पर्यावरण की ओर भी ध्यान देने की जरूरत है।

पानी भरे उन गड्ढों को देखें जो मच्छरों के फैलने का कारण बन जाते हैं, जिनसे मलेरिया रोग फैलता है, जो किसी भी प्राणी के जीवन को निरन्तर नष्ट करता रहता है और कभी-कभी मृत्यु का कारण भी बन जाता है।

यह सुनिश्चित करें कि :

* सभी खुदाई गड्ढे आदि मिट्टी से ऊपर तक भरे हैं।
* निर्माण स्थल के छेदों, गड्ढों, खाइयों आदि से पम्प द्वारा पानी को बाहर निकाल कर नाली में बहा दिया गया है।
* जहां कहीं भी एक सप्ताह से अधिक पानी रुका है, उस पर डीजल तेल की हल्की-सी परत का छिड़काव कर दिया है।

मच्छर को फैलने से रोकें

* पानी से भरे सभी पात्र [illegible] रूप से ढके हैं।
* सभी निरर्थक गड्ढों [illegible] पानी के संचय होने की [illegible] हो, समुचित रूप से [illegible] कर दिया गया है।

स्वयं, अपने परिवार के सदस्यों और निर्माण स्थल पर कार्यरत श्रमिकों को मलेरिया के आक्रमण से बचायें। यदि किसी व्यक्ति को रुक रुक कर बुखार आता है, तो मलेरिया का पता लगाने के लिए नज़दीकी स्वास्थ्य कार्यकर्ता से रोगी के खून की जांच करायें या स्वास्थ्य केन्द्र या सरकारी अस्पताल में रिपोर्ट करें।

मलेरिया की रोकथाम में सहायता करें

राष्ट्रीय मलेरिया निवारण कार्यक्र[illegible]
22-शामनाथ मार्ग, नई दिल्ली-[illegible]

davp 89/860

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

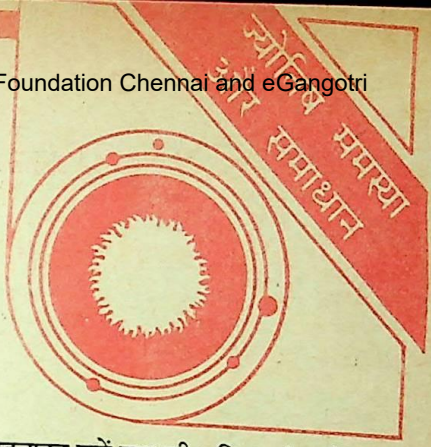

ज्योतिष : समस्या और समाधान प्रविष्टि ९४ के लिए काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए। सभी पाठकों के प्रश्नों का उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं— कंप्यूटर-ज्योतिषी अजय भाम्बी। कृपया पाठक हमें बताएं कि यहां दिये गये उत्तर कहां तक ठीक थे और उनमें दिये गये परामर्शों से उन्हें कितना लाभ हुआ।

रामानन्द त्रिपाठी, सरगुजा

प्रश्न : आत्म निर्भरता कब प्राप्त होगी ?

उत्तर : शनि की साढे साती बीस मार्च को समाप्त हो रही है। निस्संदेह आप आत्म निर्भर बनेंगे मार्च और अक्तूबर के मध्य।

अश्विनी कुमार, नौगवां

प्रश्न : संतान सुख कब मिलेगा ? कृपया अवश्य बतायें ?

उत्तर : संतान योग १९९१ में है।

टेकनाथ सिंह ठाकुर, दरभंगा

प्रश्न : आजकल मैं निलंबित हूं। मेरा निलंबन कब तक समाप्त होगा ?

उत्तर : २० जून १९९० से पूर्व।

डॉ. सुन्दर लाल दीक्षित, मुरादनगर

प्रश्न : अपनी प्राइवेट प्रैक्टिस (क्लीनिक) कब शुरू होगी ?

उत्तर : मई १९९० के बाद प्रारंभ होगी।

प्रहलाद कुमार अरोड़ा, अजमेर

प्रश्न : क्या मैं संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता हूं या गायक बन सकता हूं ? मैं कौन-सा रत्न धारण करूं जिससे यह काम बन सके ?

उत्तर : संगीत के क्षेत्र में बहुत प्रगति करेंगे। छह रत्ती का अच्छी किस्म का पन्ना स्वर्ण में जड़वाकर दायें हाथ की कनिष्क अंगुष्ठ में बुधवार प्रातः धारण करें।

पुष्पा देवी, बागेश्वर (कुमायूं)

प्रश्न : मंगली दोष-परिहार का उपाय क्या है ?

उत्तर : आपकी कुंडली में मंगल दोष का परिहार हो चुका है। मंगल कुंभ में होने से हानि कारक नहीं होता और दूसरा गुरु की मंगल पर दृष्टि भी है। वर्तमान में चतुर्थ शनि व्यथित कर रहा है, जो २० मार्च से अनुकूल हो जाएगा।

सत्य प्रकाश, आरा

प्रश्न : उच्च शिक्षा योग है या नहीं ? उपाय बताएं ?

उत्तर : उच्च शिक्षा योग है लेकिन रुकावटों के साथ।

राजलक्ष्मी, दिल्ली

प्रश्न : विवाह कब होगा ? विवाह-उपरांत जीवन सुखमय है या नहीं ?

उत्तर : विवाह इसी वर्ष संभावित है। प्रारंभ में सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई संभावित है।

राजेन्द्र कुमार नागोरी, खंडवा

प्रश्न : जीवन में क्या अभूतपूर्व परिवर्तन आ सकता है ?

उत्तर : निकट भविष्य में संभावना नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग
केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

प्रकाशकों के सहयोग से प्रत्यक्ष कर विषयों से संबंधित पुस्तकों को हिन्दी में अनूदित और प्रकाशित करने की योजना—

प्रकाशकों के सहयोग से प्रत्यक्षकर विषयों अर्थात आयकर, धनकर, दानकर और कंपनी लाभ अतिकर से संबंधित विविध विषयों पर अंग्रेजी पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद करवा कर उनके प्रकाशन को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड एक योजना चला रहा है । इस योजना की मुख्य बातें निम्नलिखित हैं :—

1. इस योजना में प्रत्यक्षकर विषयों से संबंधित हिन्दी में अनूदित पुस्तकें स्वीकार की जाएंगी ।
2. हिन्दी अनुवाद के लिए पुस्तकों का चयन स्वयं प्रकाशक कर सकता है या विभाग द्वारा स्वयं चुनी हुई पुस्तकों का अनुवाद करने के लिए कहा जा सकता है ।
3. यह योजना प्रकाशकों के सहयोग से कार्यान्वित की जाएगी ।
4. अनूदित पुस्तकों के प्रकाशनाधिकार को प्राप्त करने का दायित्व प्रकाशक का होगा ।
5. इस योजना के अंतर्गत प्रकाश्य पुस्तक के हिन्दी अनुवाद और पुनरीक्षण की व्यवस्था करना प्रकाशक का ही दायित्व होगा तथा प्रकाश्य पुस्तक के आकार, टाइप, मुद्रण विधि आदि के संबंध में विभाग का परामर्श लेना अपेक्षित होगा ।
6. योजना के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों की 1,000 प्रतियां विभाग खरीद लेगा । प्रकाशक के लिए यह अपेक्षित होगा कि वह पुस्तक की कम से कम 2,000 प्रतियां अवश्य मुद्रित करवाए ।
7. इस योजना के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों को खरीदने के लिए चयन का काम एक विशेषज्ञ समिति द्वारा किया जाएगा तथा योजना के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों के मूल्यों का निर्धारण विभाग के परामर्श से किया जाएगा ।
8. जो प्रकाशक योजना की विहित शर्तों पर हिन्दी में प्रत्यक्ष कर विषयों से संबंधित पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए तैयार होंगे उन्हें प्रारंभिक कार्यवाहियां तय होने के बाद विभाग के साथ एक अनुबंध करना होगा जिसमें अनुवाद और मुद्रण संबंधी विभिन्न शर्तों का उल्लेख होगा ।
9. इस योजना की शर्तों के संबंध में विस्तृत जानकारी डाक द्वारा या स्वयं आकर "श्री राम सिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा प्रशासन), केंद्रीय प्रत्यक्षकर बोर्ड, राजभाषा प्रभाग, आयकर निदेशालय (गवेषणा, सांख्यिकी, प्रकाशन व जन संपर्क), छठी मंजिल, मयूर भवन, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001" (टेलीफोन नं. 3313823) से प्राप्त की जा सकती है ।

प्रकाशकों से आवेदन पत्र प्राप्त होने की अंतिम तारीख

28 फरवरी, 1990 है ।

डीएवीपी 89/937

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमेश चन्द्र, नरवाना (जींद)

प्रश्न : आर्थिक स्थिति में सुधार कब तक संभव है ?

उत्तर : जुलाई '१९९० के पश्चात् सुधार संभावित है ।

मीरा कुमारी, लखीमपुर

प्रश्न : विवाह कब होगा ?

उत्तर : जून ' १९९० तक ।

सुरेन्द्र सक्सेना, अलवर

प्रश्न : पदोन्नति कब तक व स्वास्थ्य कैसा रहेगा ?

उत्तर :पदोन्नति इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में तथा स्वास्थ्य भी उत्तरार्द्ध से ही बेहतर रहेगा ।

वीरेन्द्र कंसल, मेरठ

प्रश्न : वैवाहिक जीवन व संतान योग कैसा रहेगा ?

उत्तर : वैवाहिक जीवन थोड़ा मानसिक तनाव देता है लेकिन भविष्य में संतान पक्ष ठीक रहेगा ।

रामनरेश, काछोला (भीलवाड़ा)

प्रश्न : आर्थिक व मानसिक परेशानी से छुटकारा कब ?

उत्तर : अपने व्यय पर अंकुश लगायें और स्वयं को व्यवस्थित करने से ही कष्टों से मुक्त हो सकते हैं ।

ओमप्रकाश, कलकत्ता

प्रश्न : सुख-समृद्धि कब से ?

उत्तर : मई '१९९० से ।

—भाम्बी कंसलटेंसी डी-२/२, जनकपुरी, नयी दिल्ली-११००५८

१६

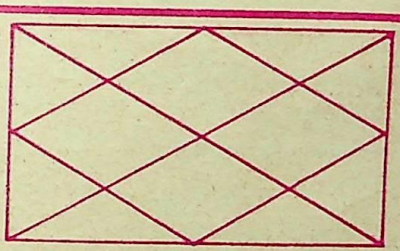

नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना..... सन.....

जन्म-स्थान..... जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा ..... वर्तमान .....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

.....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १६) 'कादम्बिनी',
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

अंतिम तिथि : २० फरवरी, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतिम सच

किन लोगों से कहूं मैं
किन शब्दों में
कि अंधेरों के समंदर में
रोशनी के शापग्रस्त टुकड़े मत डूबने दो
अन्यथा
किस विश्वास को हम पूजेंगे कब तक
सूर्य की अर्चना कौन करेगा
वह दिन किसी कयामत का दिन
जब हम अंधेरों के गुलाम कहे जाएंगे

सुख-दुःख

बस्ती-बस्ती दरवाजे-दरवाजे
चेहरे-चेहरे
जिस सुख के लिए
झोलियां फैलायीं
कहीं नहीं मिला
परंतु,
बिन कहे, बिन बुलाये, बिन चाहे
ये जो दुःख अपना संगी हो गया है
उसकी उपलब्धियों को देखो
और कहो, मित्र
अमृत-सुख, निर्दोष प्यार, गुलजार हंसी
क्या सचमुच
जिंदगी के लिए जरूरी हैं

स्वीकारोक्ति

तुमने, जो कुछ सुना है
पराये होठों से मेरे खिलाफ
झूठ नहीं है
और मैं स्वीकार कर लेता हूं अपराध
पर, यकीन करो
थोड़े-से झूठ यदा-कदा
सच को बे आबरु होने से बचाते हैं
अपराध यदा-कदा
अस्तित्व-संघर्ष के कवच बन जाते हैं
फिर
सच जब इतना पतित हो
कि झूठ को शर्म आये
और अस्तित्व इतना मुश्किल
कि मुर्दे को तरस आये
तुम कहो, मेरे मित्र
मेरा अपराध क्या है

रिश्ते

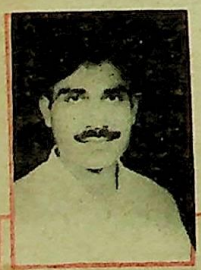

आकांक्षाओं का मरघट
मैं
और तुम कोई निर्दोष लाश
कैसा अजीब है ये रिश्ता अपना
जो कभी टूटता नहीं

नवीन प्रकाश तिवारी

पता : जे.जे.एम. मेडिकल हॉस्टल, कमरा नं. ३३३, दावणगिरी (कर्नाटक) -५७७००४

आत्म-कथ्य : कविता मेरे लिए आत्म-साक्षात्कार का एक ढंग है । कविता की दुनिया में जीने का मतलब जिंदगी को गहराई और विस्तार से देखने और जानने का एक अच्छा मौका पा लेना है ।

संप्रति : अध्ययनरत (एम.बी.बी.एस.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता : लिटिल फ्लावर लेप्राजी वेलफेयर एसोसिएशन, सुंदरपुर, पो.-रक्सौल, उत्तरी बिहार-८४५३०५

आत्मकथ्य

मेरी रचनाओं का उद्देश्य ईश महिमार्थ, अपने अपंग जीवन के कार्य व विचार से तमाम उपेक्षित, दीन दुःखी, रोगी, पीड़ित व अपंग भाइयों में ईश्वर का विश्वास जगाकर जीवन के प्रति एक जागृति पैदा करना है कि 'हम लाचार तो हैं, पर बेकार नहीं।'

सम्प्रति छोटा फूल कुष्ठ कल्याण संस्था में महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई, बुनाई का मुफ़्त प्रशिक्षण देने में संलग्न

संकल्प

संकल्प की भूमि पर
कर्म के बीज उग आये हैं
आशा के
चिकने, कोमल पल्लव
सुंदर फल देने का
विश्वास जगाये हैं

कांटा

कुछ लोग
कहते हैं
कोढ़ एक पाप है
मानव से
ईश्वर की अप्रसन्नता है
मानव के
जीवन का कठोरतम अभिशाप है
मानव से
भाग्य का क्रूरतम मजाक है
पर
सच तो यह है
कि
यह सिर्फ रोग है
यह मात्र संयोग है
जो मुझे नहीं उसे हो गया
और
किस्मत में काटा बो गया

चिंता

धरती के
टुकड़े कर
आकाश में
राकेट उड़ा
ये लो
चिंता का
एक नया
अध्याय
जुड़ा

जीवन

दूर क्षितिज में
रंग बदलता आसमान
मुझको
कर रहा आह्वान
ऐसे ही रंग बदलते हैं
जीवन के भी
मुझे देख
मत हो हैरान
परेशान

छल

कुछ लोग
जो काम से जी चुराते हैं
निठल्ले-सा जीवन बिताना चाहते हैं—
पांवों में बांध कर पट्टियां
कोढ़ी का स्वांग भरते हैं
मानवीय करुणा का शोषण कर
भीख से पेट भरते हैं
वे
नहीं जानते
कि उनका यह दुष्कर्म
विकलांगों के साथ
कितना बड़ा विश्वासघात है
उनका
यह छल
सच पर एक कुठाराघात है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

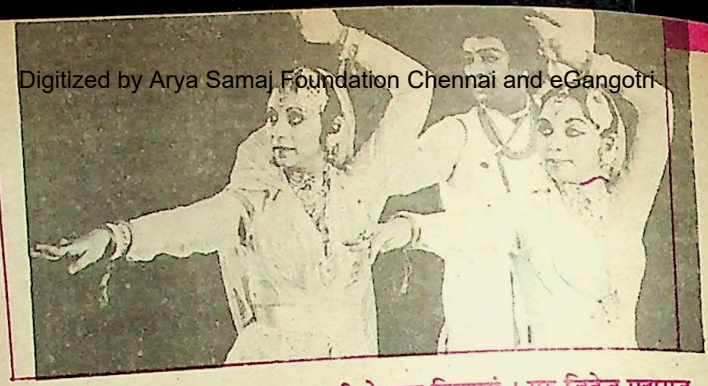

नलिनी-कमलिनी : गुरु जितेन्द्र महाराज की दो युवा शिष्याएं । गुरु जितेन्द्र महाराज के नेतृत्व और निर्देशन में इन दोनों बहनों ने देश के प्रमुख नगरों के अतिरिक्त विदेशों में भी अपनी नृत्यकला का प्रदर्शन कर प्रसिद्धि प्राप्त की । यहां प्रस्तुत है— उनसे चर्चा

कला को चारदीवारी में नहीं बांधा जा सकता

नलिनी : आप जानते ही हैं कि हमने अपनी नृत्य शिक्षा प्रारंभ से ही बनारस घराने के सुविख्यात नृत्यकार गुरु जितेन्द्र महाराजजी से ली है इसीलिए हमारे नृत्य में मंदिर नृत्यशैली की शुद्धता है । जीवन में सही समय पर मार्गदर्शन के रूप में यदि गुरु मिल जाए तो बहुत-सी कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता ।

नृत्यकला से संबंधित अनेक संस्थानों और सरकारी अनुदान के विषय में आपकी राय ?

कमलिनी : मैं विश्वास के साथ कह सकती हूं कि नृत्य-संगीत कला को (खासकर कथक नृत्य) को हम किसी भी संस्थान की चारदीवारी में नहीं बांध सकते । कितने ही विद्यालय दिल्ली में और बाहर भी खुले हैं तथा लाखों रुपये का सरकारी अनुदान भी ग्रहण कर रहे हैं । आप ही बताइए, कोई ऐसा कलाकार सामने आया है इन २० सालों में जिसने डिग्री प्राप्त करने के लिए नृत्य-संगीत सीखा हो और आज सफल प्रदर्शन कर रहा हो ? हां, यह मानती हूं नृत्य-नाटिकाएं बनने से इन संस्थाओं के माध्यम से विद्यार्थी थोड़े समय में ही दर्शकों के सामने आ जाता है किंतु ज्ञान सीमित रह जाता है । और जब इनका प्रयोग 'सोलो' प्रदर्शन किया जाता है तो ज़ेब नहीं खाता । हालांकि कहलाते वे भी नृत्यकार ही हैं । खेद इस बात का है कि इस शास्त्रीय कथक नृत्य की एक इमेज खराब कर रहे हैं । देखिए आज भी वही नाच-गा-बजा रहे हैं जिसे गुरु की से विधिवत सीखा । झुककर ली हुई शिक्षा से विनम्रता और विनम्रता से ज्ञान मिलता है डिग्री सर्टिफिकेट से नहीं ।

कथक में हो रहे नये प्रयोगों के संबंध में विचार ?

कमलिनी : किसी भी प्रयोग, निर्माण के लिए आधार की आवश्यकता होती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल तो निराधार प्रयोग किये जा रहे हैं। कथक नृत्य रचनाओं में घुंघरूओं का प्रयोग ही बंद कर दिया है। जब घुंघरूओं से बोल काटे ही नहीं जा रहे तो रियाज किसका किया जाए ? सीखनेवालों को मेहनत नहीं करनी पड़ती और सिखानेवालों को अपने संचित ज्ञान से बांटना नहीं पड़ता जबकि कथक नृत्य का संबंध सबसे पहले पांव और घुंघरूओं की सफाई से है उसके बिना तो केवल अभ्यास ही रह जाता है।

आपके नृत्य में लोगों को एक नयापन लगता है। क्या आप की कथक नृत्यशैली दूसरी नृत्य-शैलियों से भिन्न है ?

नलिनी-कमलिनी : लोगों को नयापन लगता है किंतु हमने कुछ नया नहीं किया केवल मुगल साम्राज्य की सभ्यता में लुप्त हुई प्राचीन नृत्यशैली को अपने प्रयास से सामने लाये। भिन्नता है ही जितनी दो सभ्यताओं में होती है। जैसे बोलों की शुद्धता, भाव-भंगिमाएं, पोशाक, प्रस्तुतिकरण आदि में।

युवा पीढ़ी और कथक के भविष्य के बारे में आप क्या सोचती हैं ?

नलिनी : भविष्य निर्भर करता है आनेवाली पीढ़ी पर, वर्तमान सुधार लें तो भविष्य अवश्य उज्ज्वल होगा ही। सहनशीलता और कर्मनिष्ठता दोनों ही पहलुओं को जीवन में अपनाना होगा।

—संजय गोठवाल

२९ झिनिरेत गली, उदयपुर, राजस्थान-१

इनके भी बयां जुदा-जुदा

नफरतों ने हर तरफ से घेर रखा है हमें
जब ये दीवारें गिरेंगी रास्ता हो जाएगा

—अली अहमद जलीली

आयु घटती जाय है बढ़ती जाय उमंग
फीका पड़ के और भी भाये माया रंग

—कृष्ण मोहन

माना की जिंदगी है मुसलसल सफर का नाम
लेकिन मुसाफिरों को कोई घर भी चाहिए

—बशर नवाज

क्या इरादे हैं वहशते दिल के
किससे मिलना है खाक में मिलके

—मौलाना नातिक

ख्माब हाल मेरा उनसे जुबानी कहना
बात न देना वो गैरों को दिखा देते हैं

—अज्ञात

आ पड़े काम जिंदगी में बहुत
वरना हम तेरी आरजू करते

—साबर दत्त

तेरज तमाम रात के गम मुझको दे गया
चले से रह गये थे दरीचे खुले हुए

—खाबर एजाज

(प्रस्तुति : कुलदीप तलवार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामसेवक, समस्तीपुर

प्रश्न : उम्र पैंतीस साल । गुदा मार्ग से कृमि निकलते रहते हैं । एक साल से परेशान हूं । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : 'कृमि मुदगर रस' एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें 'विडगारिष्ट' दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

जमनादेई, अंबाला

प्रश्न : उम्र साठ साल । कब्ज रहती है । कुछ बवासीर की शिकायत मालूम पड़ती है । परहेज पूरा करती हूं । हलकी दवा बतायें ।

उत्तर : 'अभयारिष्ट' दो-दो बड़े चम्मच भोजन बाद पीयें । नियमित तीन माह लें ।

हसन, सुल्तानपुर

प्रश्न : उम्र तीस साल । अभी शादी नहीं की है । अपने आपको शादी के लायक नहीं समझता । कुछ अपनी ही गलतियां हैं । राय दें ।

उत्तर : विशेष चिंता न करें । यह ऐसा रोग नहीं जो ठीक न हो । 'वृ. पूर्णचंद्र रस' छह ग्राम 'स्वर्ण वंग' छह ग्राम साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । 'अश्वगंधारिष्ट' दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें । 'च्यवनप्राश अवलेह' एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

रामदेव त्रिपाठी, गोंडा

प्रश्न :पत्नी की उम्र २७ साल है । दो बच्चे पिछले एक साल से सहवास के समय दर्द महसूस करती है । जांच कराने पर कोई कि भी नहीं बताया गया । उपचार लिखें ।

उत्तर : 'अशोकारिष्ट' दो चम्मच 'दशमूलारिष्ट' दो चम्मच भोजन बाद पीं 'चंद्रप्रभावटी' —एक-एक वटी रात को लें ।

नलनी गुप्ता, जालंधर

प्रश्न : उम्र चालीस साल । हाथ-पैरों में रहता है । कमजोरी मालूम पड़ती है । सर्व की जांच करायी । सभी कुछ ठीक है । के कारण बताते हैं । साधारण दवा बतायें

उत्तर : 'चंद्रप्रभा वटी' एक-एक वटी सुबह-रात दूध से लें ।

उर्मिला, दौराला

प्रश्न : उम्र तीस वर्ष । कान में हल्की-सी आवाज आती रहती है, कभी-कभी खाज है ।

उत्तर : 'सारिवादि वटी' एक-एक सुबह-शाम पानी से ।

'क्षार तेल' एक-एक बूंद कान में

प्रकाश, रायपुर

प्रश्न : लगभग एक वर्ष से दोनों अंड सूजन व दर्द रहता है । एलौपैथी इलाज विशेष लाभ नहीं हुआ । उचित परामर्श

उत्तर : 'चंद्रप्रभा' एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । 'वृद्धि वटी' एक-एक वटी दोपहर-रात गरम लें । तीन माह नियमित दवा लें ।

रीता नेगी, नयी दिल्ली

प्रश्न : पच्चीस वर्षीय अविवाहित वर्ष की आयु से मासिक स्राव शुरू हु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सप्ताह स्राव रहता था, अब धीरे-धीरे कम होकर दो दिन रह गया है वैसे भी बहुत कम है । पेट दर्द हल्का-हल्का रहने लगा । पढ़ाई करनेवाली लड़की हूं, चिंताएं घेरे रहती हैं । डायटिंग करती हूं । शरीर वजन ७५ किलो है ।

उत्तर : 'चंद्रप्रभा वटी' एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से 'काकायन वटी' एक-एक वटी भोजन बाद पानी से लें ।

एन. के. द्विवेदी, राऊकेला

प्रश्न : उम्र ४० वर्ष । पेट में बायीं तरफ दर्द, गैस अत्यधिक बनती है । पेट फूला रहता है । मल के साथ सफेद चिकना पदार्थ निकलता है । दस्त साफ नहीं होता । चिड़चिड़ापन रहता है । बहुत परेशान हूं ।

उत्तर : 'लवण भास्कर चूर्ण' एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से । 'चित्रकादि वटी' एक-एक वटी भोजन बाद पानी से लें ।

रेणु, पानीपत

प्रश्न : पेट बढ़ गया है । हर समय नाभि के नीचे दर्द होता रहता है । मासिक धर्म कई महीने से नहीं आता है । शरीर बेडौल होता जा रहा है । आने-जाने में भी शरम महसूस करती हूं । इलाज लिखें ।

उत्तर : 'तारामंडूर' आधा-आधा चम्मच सुबह-शाम गरम पानी से लें । 'दशमूलारिष्ट' दो-दो बड़े चम्मच भोजन बाद पीयें ।

रामप्रवेश, सिवान

प्रश्न : उम्र तेरह वर्ष । हाथ के साथ पूरा शरीर सुन्न हो जाता है । अंगरेजी दवा बहुत ले चुका हूं । दवा लिखें ।

उत्तर : 'रस राजरस' दो ग्राम तीस मात्रा बनायें एक मात्रा सुबह शहद से लें । 'अश्वगंधारिष्ट' एक-एक चम्मच भोजन बाद पीयें । 'त्रयोदशांग गूगल' एक वटी रात दूध से लें ।

एम. वानखेडे, बंबई

प्रश्न : उम्र तीस वर्ष । स्तन बहुत छोटे हो गये हैं । इससे मन में एक कुंठा-सी पैदा हो गयी है—चिड़चिड़ापन और तनाव भी—सात महीने से बहुत परेशान हूं ।

उत्तर : 'अश्वगंधा चूर्ण' एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । सरसों के तेल से आहिस्ता-आहिस्ता मालिश दिन में २ बार करें ।

कविराज वेदव्रत शर्मा

बी. ५/७ कृष्णनगर,
दिल्ली-११००५१

नाम..... आयु.....

रोग के लक्षण..... कब से है.....

अब तक क्या इलाज किया

वैद्य की सलाह

द्वारा— संपादक —'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, नयी दिल्ली—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : मास उत्साह तथा उल्लासपूर्वक होगा। परिवार सहयोग से कर्म-क्षेत्र का विस्तार होगा। संपत्ति कार्यों में अनपेक्षित प्रगति होगी। १ से ७ के मध्य शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से लंबित कार्य पूर्ण होगा। आर्थिक लाभ मिलेगा। ७ से १५ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी। धन-संपत्ति कार्यों में आकस्मिक रूप से प्रगति होगी। विशिष्ट लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता रहेगी। प्रियजन से भेंट होगी। १६ से २४ के मध्य नवीन स्थान की यात्रा होगी। विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा। नये संपर्क लाभदायी होंगे। मासांत में धर्म, आध्यात्म, रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों के प्रति रुझान बढ़ेगा। मानसिक अस्थिरता होगी। महिलाओं की स्वजनों से भेंट होगी। उपहार, पुरस्कार भेंट मिलेगी। आजीविका संबंधी प्रयास सार्थक होंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा-परीक्षा प्रतियोगिता के लिए अनुकूल समय होगा। आमोद-प्रमोद से बचाव हितकर होगा।

वृषभ : मास में कीर्ति तथा सफलता मिलेगी। उच्च वर्ग के सहयोग से विपरीत परिस्थितियों पर नियंत्रण होगा। स्वास्थ्य संबंधी चिंता होगी। १ से ७ के मध्य नवीन स्थान की यात्रा होगी। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यय होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। ८ से १५ के मध्य लंबित योजनाओं में उल्लेखनीय प्रगति होगी। राजकीय कार्यों में प्रगति होगी। पारिवारिक अस्वस्थता से चिंता तथा व्यय बढ़ेगा। १६ से २४ के मध्य शत्रु पक्ष से हानि होगी। स्वास्थ्य-संबंधी अस्थिरता रहेगी। संयम से कार्य करना हितकर होगा। रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मासांत में आमोद-प्रमोद पर व्ययाधिक्य होगा। रक्त संबंधियों से विवाद टालना हितकर होगा। विशिष्ट कार्य की पूर्ति से सामाजिक सम्मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी समस्या का सामना करना होगा। रोजगार संबंधी कार्यों में धीमी प्रगति होगी सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों से यश वृद्धि होगी।

विद्यार्थियों को सामाजिक सम्मान मिलेगा। शिक्षा-कार्यों में शिथिलता रहेगी।

गृह स्थिति—सूर्य १२ फरवरी से कुंभ में, मंगल धनु में, बुध ७ से मकर, २७ से कुंभ में, गुरु मिथुन में, शुक्र २० से मकर में, शनि धनु में, राहु मकर में, केतु कर्क में, हर्षल नेपच्यून धनु में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व और त्योहार

२ फरवरी रथ सप्तमी, अचला सप्तमी, आरोग्य सप्तमी, ४ महानंदा नवमी, ५ जयाएकादशी स्मार्तों की, ६ जया एकादशी वैष्णवों की, ७ प्रदोष व्रत, ९ माघी पूर्णिमा, भक्तरविदास जयंती खग्रास चंद्रग्रहण, १३ संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, २१ विजया एकादशी, २३ प्रदोष व्रत, महाशिवरात्रि, २५ स्नानदान श्राद्ध की दर्श अमावस्या, २७ चंद्र दर्शन, श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती, २८ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, श्री राजेंद्र प्रसाद निर्वाण दिवस

मिथुन : मास में व्यर्थ विरोधाभास तथा प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक प्रयासों में श्रम की अधिकता होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। १ से ७ के मध्य शत्रु पक्ष के कारण विषम स्थितियों का सामना करना होगा। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी। नवीन कार्यों में विलंब होगा। ७ से १५ के मध्य दौड़-धूप की अधिकता रहेगी। अस्वस्थता तथा व्यर्थ तनाव रहेगा। आकस्मिक धन लाभ से समस्या होगी। १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी। पारिवारिक सहयोग उत्साहवर्धक होगा। शत्रुपक्ष से सावधानी रखें। मासांत में रुका हुआ धन मिलेगा। पारिवारिक अस्वस्थता पर व्यय होगा। सामाजिक एवं पारिवारिक कार्यों की पूर्ति होगी।

महिलाओं को पारिवारिक सहयोग मिलेगा। आजीविका संबंधी नवीन स्त्रोत उदय होगा, सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

विद्यार्थियों को शिक्षा कार्यों की अधिकता रहेगी। उत्साहवर्धक वातावरण रहेगा।

कर्क : आर्थिक प्रयासों में सफलता मिलेगी। पारिवारिक सहयोग उत्साहवर्धक होगा। मित्रों अथवा स्वजनों का उल्लेखनीय सहयोग रहेगा। १ से ७ के मध्य नवीन योजनाओं में राजकीय सहयोग मिलेगा। शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे। संपत्ति-संबंधी सुखद समाचार मिलेगा। ८ से १५ के मध्य धार्मिक रुझान बढ़ेगा। शासन-सत्ता में प्रभाव बढ़ेगा। व्यवसाय में मैत्री-संबंध सहायक होंगे। स्वास्थ्य संबंधी सावधानी हितकर होगी। १६ से २४ के मध्य शत्रु पक्ष से सुलह होगी। कार्यों की अधिकता होगी। पारिवारिक अस्वस्थता से चिंता होगी। मासांत में आजीविका संबंधी विस्तार होगा। रक्त संबंधियों अथवा प्रियजनों से वांछित सहयोग मिलेगा। यात्रा लाभदायी होगी।

महिलाओं के अधिकार क्षेत्र का विस्तार होगा। आर्थिक लाभ मिलेगा। आमोद-प्रमोद पर व्यय बढ़ेगा।

विद्यार्थियों को सम्मान, पुरस्कार का योग होगा। शिक्षा कार्यों में वांछित प्रगति होगी।

सिंह : आर्थिक योजनाओं में उल्लेखनीय प्रगति होगी। भावुकता पर नियंत्रण रखें। अस्वस्थता रहेगी। शत्रु पक्ष से सावधानी रखें। १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से आर्थिक योजनाएं पूर्ण होंगी। नवीन पदाधिकार मिलेगा। ८ से १५ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी। भावुकता अथवा जल्दबाजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कष्ट होगा । यात्रा टालना हितकर होगा । लेखन सृजन संबंधी कार्यों के लिए अनुकूलता रहेगी । १६ से २४ के मध्य संपत्ति कार्यों में सफलता मिलेगी । नवीन योजनाओं में प्रगति होगी । प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी । मासांत में आकस्मिक धन-लाभ होगा । यात्रा धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों के लिए सार्थक होगी ।

महिलाओं को आजीविका संबंधी व्यस्तता अधिक होगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक रहेगा । नवीन वस्त्राभूषण पर व्यय होगा ।

विद्यार्थियों को शिक्षा कार्यों की अधिकता होगी । पारिवारिक सुख मिलेगा । आमोद-प्रमोद से बचें ।

कन्या : आर्थिक दिशा में चले आ रहे प्रयास सार्थक होंगे । पारिवारिक विवाद टालना हितकर होगा । व्यर्थ मानसिक तनाव का सामना करना होगा । १ से ७ के मध्य विपरीत स्थितियों में उच्चाधिकारियों के सहयोग से लाभ मिलेगा । संपत्ति-संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी । ८ से १५ के मध्य नवीन स्थान की यात्रा होगी । पारिवारिक विवादों से मानसिक पीड़ा होगी । धैर्य तथा संयम से कार्य करें । १६ से २४ के मध्य लेखन सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी । विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी । मासांत में शत्रु पक्ष से सावधानी रखें । कार्यों की अधिकता होगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यय होगा । सुखद समाचार मिलेगा ।

महिलाओं को आत्मशक्ति से लाभ मिलेगी । आजीविका के क्षेत्र में परिवर्तन होगा । स्वजनों से भेंट होगी ।

विद्यार्थियों को उत्साहवर्धक वातावरण मिलेगा । नवीन दिशा के प्रयास सार्थक खेलकूद में उल्लेखनीय सफलता का योग होगा ।

तुला : मास में आध्यात्मिक तथा सृजन-संबंधी कार्यों में रुचि बढ़ेगी । संपत्ति-विवाद का अनुकूल समाधान होगा । व्यर्थ विरोधाभास तथा वाद-विवाद का सामना करना पड़ेगा । १ से ७ के मध्य मनोवांछित स्थान की यात्रा होगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । संपत्ति-संबंधी प्रयास संतोषजनक होगी । ८ से १५ के मध्य आध्यात्म के प्रति रुझान बढ़ेगा । राजकीय कार्यों में विलंब होगा ।

महिलाओं की अध्ययन अथवा कार्यों में रुचि बढ़ेगी । पारिवारिक सुख मिलेगा । वाद-विवाद टालना हितकर होगा ।

विद्यार्थियों को शिक्षा कार्यों में सफलता मिलेगी । स्वास्थ्य संबंधी सावधानी रखें ।

वृश्चिक : नवीन योजनाओं से लाभ होगा । शत्रु पक्ष से सावधानी रखें । वैचारिक विषमता पीड़ादायी होगी । मध्य आर्थिक दिशा में किये जा रहे प्रयास सार्थक होंगे । कार्यों की अधिकता का सहयोग उत्साहवर्धक रहेगा । ८ से मध्य यात्रा का योग उपस्थित होगा । वातावरण प्रतिकूल रहेगा । व्यर्थ भ्रमण एवं मानसिक पीड़ा का सामना करना

महिलाओं को आजीविका संबंधी सफलता मिलेगी । पारिवारिक चिंता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदर अथवा रक्त विकार से पीड़ा होगी ।

विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी । वाहनादि का प्रयोग सावधानी से करें ।

धनु : साहस तथा पराक्रम से प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय मिलेगी । शत्रु पक्ष का पराभव होगा । संपत्ति कार्यों में धीमी उन्नति होगी । १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनुकूल निर्णय होंगे । साहस तथा पराक्रम से इच्छित कार्य पूर्ण होंगे । ८ से १५ के मध्य पारिवारिक सुख एवं सहयोग उत्साहवर्धक होगा । शत्रु पक्ष का पराभव होगा ।

मन प्रसन्न रहेगा ।

महिलाओं को वस्त्राभूषण लाभ मिलेगा । स्वजनों से भेंट होगी । आजीविका संबंधी प्रयास सफल होंगे ।

विद्यार्थियों की शिक्षा कार्यों में प्रगति होगी । स्वजनों का मार्गदर्शन लाभदायी होगा । यात्रा का योग उपस्थित होगा ।

मकर : मास में आर्थिक उन्नति तथा सफलता मिलेगी । पारिवारिक सहयोग लाभदायी होगा । १ से ७ के मध्य राजकीय कार्यों की पूर्ति से आर्थिक सुदृढ़ता होगी । पारिवारिक सहयोग महत्त्वपूर्ण होगा । यात्रा लाभदायी होगी । ८ से १५ के मध्य नवीन पद प्रतिष्ठा एवम् अधिकार प्राप्ति का योग होगा । कार्यों की अधिकता होगी ।

महिलाओं को मास उपलब्धिदायक होगा । विशिष्ट लाभ अथवा सम्मान मिलेगा । पारिवारिक सुख उत्तम होगा ।

विद्यार्थियों की शिक्षा-दीक्षा में व्यवधान होगा । पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी । मासांत में सुखद समाचार मिलेगा ।

कुंभ : अकारण विरोधाभास तथा तनाव बढ़ेगा । नवीन स्थान की यात्रा होगी । गुप्त साधनों से धन लाभ होगा । १ से ७ के मध्य राजकीय कार्यों में शत्रु पक्ष के प्रभाव की अधिकता होगी । उच्चाधिकारी वर्ग से व्यर्थ विवाद टालना हितकर होगा । ८ से १५ के मध्य नवीन कार्यों की अधिकता होगी । साहस तथा पराक्रम से उच्च वर्ग प्रभावित होगा । राजकीय कार्य विलंब सहित पूर्ण होंगे ।

महिलाओं को धार्मिक अथवा सामाजिक कार्यों से प्रतिष्ठा मिलेगी । मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी । आजीविका की दिशा में उदासीनता रहेगी ।

विद्यार्थियों को शिक्षा-संबंधी व्यस्तता रहेगी । लेखन-सूजन संबंधी सफलता मिलेगी ।

मीन : मास में आत्मविश्वास से प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय मिलेगी । नवीन योजनाओं पर धन व्यय होगा । प्रियजनों का सहयोग मिलेगा । १ से ७ के मध्य पारिवारिक सुख एवं सहयोग उत्साहवर्धक होगा । साझेदारी के कार्य हानिकारक होंगे । यात्रा तथा दौड़-धूप की अधिकता से धन लाभ होगा ।

विद्यार्थियों की शिक्षा कार्यों में व्यस्तता रहेगी । पारिवारिक सुख अनुकूल होगा । मित्रों का सहयोग मिलेगा । सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सफलता मिलेगी ।

ज्योतिषधाम पत्रिका
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर गोविंदपुरा,
भोपाल (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मविश्वास की दस्तक

घटना अगस्त १९७८ की है । गढ़वाल मंडल का उत्तरकाशी जिला भागीरथी में आयी भयंकर बाढ़ की चपेट में था । पौड़ी से बाढ़ की स्थिति को देखने गये पत्रकार दल में मैं भी था ।

उत्तरकाशी से गंगनानी तक की सड़क नदी में समा चुकी थी । हम लोग निर्जन पहाड़ियों और दुर्गम रास्तों को पार करते हुए, कंचनजंघा की गोद में बसे सीमांत के आखिरी गांव सुनार से आगे एक पहाड़ी गुफा में फंस गये ।

दल नायक कैप्टेन चंद्र सिंह बिष्ट द्वारा मुझे व मेरे दो अन्य साथी श्री कुलदीप नैथानी व श्री धीरेन्द्र रावत को नीचे नदी के किनारे-किनारे रास्ता देखने हेतु भेजा गया । वहां सड़क के एक टुकड़े को बचा देख हम उस पर बैठ गये व कुछ ही देर में सो गये ।

हम भूल गये कि रास्ता मिलने पर दलनायक को जैकेट हिलाकर इशारा देना है । हमारे पास ही से कुछ गुर्जर भी गुजरे थे । उनकी भैंसें बह गयी थीं व वे उत्तरकाशी की तरफ जा रहे थे ।

ऊपर गुफा के दलनायक अपने दो अन्य साथी श्री गणेश काला व श्री अनसूया प्रसाद चमोली को लेकर नीचे आये व मुझ पर [illegible] पड़े— "क्या कहा था तुम्हें ? ये भी देखो कोशिश न की कि गुर्जर कहां से गये ?

"आओ यहां से गये गुर्जर" कहकर [illegible] सड़क से नदी किनारे की रेत पर छलांग [illegible] दी । सभी ने अनुसरण किया और नदी [illegible] धीरे-धीरे धंस रहे एक भयंकर भू-स्खलन [illegible] पार कर हम सड़क के शेष बचे दूसरे [illegible] पहुंचे । यहां सभी एक-दूसरे के गले [illegible] सभी की आंखों में बाढ़ की चपेट से [illegible] खुशी के आंसू थे ।

आज भी निर्जन मार्ग पर चलते [illegible] आत्मविश्वास की यह 'दस्तक' सुनायी [illegible]

— सूर्यप्रकाश [illegible]

द्वारा : उषा एजेंसी [illegible]

पौड़ी (गढ़वाल) उ. प्र. [illegible]

प्रेरणा स्त्रोत

बात उन दिनों की है जब मैं, एम. [illegible] उत्तरार्द्ध में प्राइवेट परीक्षार्थी के [illegible] समाज शास्त्र की परीक्षा में शामिल हो [illegible] जीवन में परीक्षा देना, एक अत्यंत कष्ट [illegible] होता है, चाहे वह स्कूल, कॉलेज अथ [illegible] नौकरी के लिए ही परीक्षा क्यों न हो । [illegible] छोड़ने के बाद पारिवारिक आर्थिक [illegible] के कारण मैं, प्राइवेट परीक्षा देने [illegible] बाध्य थी । सामान्यतः प्राइवेट परीक्ष [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरीपेशा लोग अथवा अन्य कारणों से लोग बैठते हैं, जो उम्र में काफी बड़े होते हैं ।

समाजशास्त्र के प्रथम प्रश्नपत्र के दिन ही परीक्षा हाल में मैं, सहमी-सी, डरी हुई-सी, दो चोटियां डाले एक भयभीत छात्रा के रूप में, नन्ही-सी बालिका के समान परीक्षा हाल में दाखिल हुई और अपनी सीट पर बैठ गयी । पत्र बंट चुके थे और मैं, प्रश्नपत्र पढ़कर उत्तर लिखने की मनोदशा बना ही रही थी कि पीछे से एक भारी आवाज आयी "कौन-सा प्रश्न कर रही हो" मैंने उसकी आवाज को अनसुना करके फिर लिखने का प्रयत्न किया, तो दूसरी तरफ से आवाज आयी "प्रश्न का उत्तर थोड़े जोर से बोलना, जिससे हम भी लिख लें ।" अब मेरा सब्र टूट चुका था, तभी परीक्षक महोदय जो काफी वृद्ध थे मेरे पास आये और मेरी समस्या सुनकर उन्होंने मेरी सीट बदल दी । इसी के साथ उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखते हुए कहा : "बेटी समाज-शास्त्र में एम.ए. कर रही हो, समाज में हर तरह के लोगों से सामना करना पड़ेगा, हिम्मत किसी भी परिस्थिति में नहीं हारना ।"

इस बात को घटे हुए बहुत समय गुजर गया और आज मैं, समाज कल्याण विभाग में वरिष्ठ अधिकारी के पद पर कार्यरत हूं, जिसमें मुझे समाज के हर प्रकार के लोगों से वास्ता पड़ता है, परंतु परीक्षा के समय परीक्षक महोदय के शब्द आज भी मेरे लिए प्रेरणा के स्त्रोत बने हुए हैं ।

—श्रीमती नूतन श्रीवास्तव,
अधीक्षक, (किशोर गृह, बालिका)
समाज कल्याण विभाग
एच-१/२२७ (११००) अरेरा
कॉलोनी, भोपाल-४६२०१६

हंसिकाएं

चुनाव हारा तो
मनाये न माने...
लंबी तानें...लंबी तानें

बेटी के लिए
वर देखने जो पहुंचा
संगीतज्ञ ने लड़के का
'घराना' पूछा

घर में उसके
बेटा हुआ पैदा,...
आलाप लेने लगा,...
...ग...धा...ग...धा...

संगीतज्ञ...पहलवान का मामा
उसे प्रतीत हुए
सा-रे-गा-मा (सारे गामा)
(स-रे-ग-म...)

देखी वसंत की ऋतु सुहानी
अंचरा...धा-नी...धानी
ध...नी...

देखी जो बाढ़...तो
तान...तानी...
प...नी..प..नी...
पानी...पानी....

भैंस हुआ अक्षर...
तो पढ़ने की ठानी
बंद इन भैसों की
सानी...पानी...
स...नी...पऽऽनीऽ...

संगीतज्ञ की बेटी उदास
पाऽपाऽ माऽऽमा (पापा मामा रेरे...सास)
रेऽऽरेऽऽ
सा...ऽ स...

संगीतज्ञ प्रेमी के अचानक
पापा...पधारे...
प्रेमिका को देख-देख आलाप लेने लगा
म...रे...म...रे

— डॉ. सरोजनी प्रीतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

मुक्तिपथ : प्रस्तुत कृति में श्रीमती ललिता नारायण ने एक कथानक के माध्यम से भारतीय स्वाधीनता संघर्ष एवं स्वाधीनता के बाद घटी घटनाओं का सिलसिलेवार ब्यौरा प्रस्तुत किया है । यह कृति एक तरह से उपन्यास भी है और इतिहास भी ।

लीला ऐश्वर्यशालिनी एक राष्ट्रभक्त जमींदार की बेटी है । प्रथम भाग में लीला के बचपन से लेकर विवाह तक की कहानी है । बचपन में लीला माता-पिता के साथ मसूरी जाती है और वहां उसे विलियम नामक एक आंग्ल भारतीय किशोर, एवं एंड्रूज नामक सज्जन से अंगरेजों के भारत-आगमन का इतिहास, उनकी स्वार्थपरक नीतियों इत्यादि की जानकारी मिलती है । विलियम भारतभक्त है और बड़ा होकर मानवता की सेवा करना चाहता है । उपन्यास के भाग दो में लीला के विवाहोपरांत जीान और उसकी समाज सेवाओं के प्रसंग हैं । लीला के पति सुधीश एक कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी हैं और एक बनावटी दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो जाती है । इसी बीच पति से अनबन हो जाने के कारण लीला लेक्चरार की नौकरी भी कर लेती है, लेकिन बाद में पति-पत्नी के बीच संबंध पुनः बन जाते हैं ।

उपन्यास की नायिका के रूप में लेखिका ने एक आदर्शवादी एवं कर्मठ चरित्र की रचना की है । उपन्यास में ऐसे अन्य सामान्य पात्र भी हैं, जिनका त्याग मन छू लेता है ।

इस कृति का कथानक वाला अंश जहां रोचक है, वहां इतिहास की घटनाओं और प्रसंगोंवाला अंश जानकारी पूर्ण । लेखिका ने कथा कहने की यह नयी शैली बनायी है।

मुक्तिपथ
लेखिका— श्रीमती ललिता नारायण ।
प्रकाशक— ललित प्रकाशन, ३६(३७)
पाटलीपुत्र कालोनी, पटना । मूल्य— साठ रुपये।

अमृत कविताओं की एक महत्त्वपूर्ण श्रृंखला : डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र द्वारा संपादित 'अमृत कविताएं' नामक संकलन में क्रम से श्री गिरिजाकुमार माथुर, डॉ. प्रभाकर माचवे, श्री त्रिलोचन शास्त्री, श्री लक्ष्मीकांत वर्मा, डॉ. जगदीश गुप्त, डॉ. विपिन कुमार अग्रवाल, श्री जगदीश चतुर्वेदी, श्री रमेशचंद्र शाह, श्री दूधनाथसिंह, श्री सोमदत्त, डॉ. श्रीराम वर्मा, श्री

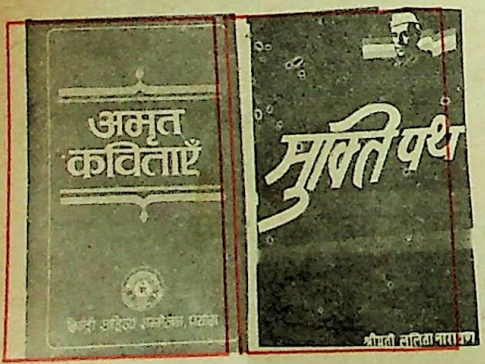

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवकुटीलाल वर्मा, श्री चंद्रकान्त देवताले, श्री नीलाभ, श्री लीलाधर जगूडी, श्री राजेश जोशी, श्री इब्बार रब्बी, श्री मंगलेश डबराल, श्री विष्णु नागर, श्री अरुण कमल तथा श्री आचार्य पंकज आदि २१ कवियों की अमृत कविताएं संकलित हैं, जो 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के अमृत महोत्सव वर्ष के अवसर पर पढ़ी गयीं । इन कविताओं में पाठक एवं श्रोता को संप्रेषण करने की क्षमता है । ये समकालीन है, सामयिक नहीं । इनमें मानवीय चिंतायें एवं बेचैनी तथा स्मृति का दर्द और यातनादायक वर्तमान को बदलने की गुहार भी है । इनमें पाठक को हिंदी कविता के मुहावरे के बदलाव के साथ-साथ उसके होने और बने रहने की शर्तों और स्थितियों को समझा जा सकता है ।

प्रकाशक : डॉ. प्रभात मिश्र शास्त्री, प्रधानमंत्री हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग १२, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : १९८८, मूल्य ५० रु.

आकाश मेरे आइने में : जिंदगी का अनोखा आईना :

शंभुनाथ की २४ कविताओं का संग्रह है । ये उनका प्रथम काव्य संग्रह है । इन कविताओं में न फूलों की घाटी की सुकुमारता है और न शहद की नदी की मिठास । यहां है एक डरावना-मशीनी संसार, जिसमें कवि छटपटाता हुआ अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच संघर्ष कर रहा है । उसे महसूस होता है कि वह पूर्व पीढ़ियों के बोझ को कंधों पर उठाये-पाप-बोध पर टिकी दायित्व-चेतना की पीड़ा को धारण किये, डगमगाते कदमों से आगे बढ़ रहा है । यथार्थ की डरावनी छायाएं उसकी, भावनाओं, और आस्थाओं को झकझोरती अवश्य हैं, किंतु उसके मूल्य पर वह कोई समझौता करने को तैयार नहीं । वह अपने परिवेश की जटिलताओं के बीच स्वयं को पाना चाहता है । उसमें स्थितियों के प्रति समझौता नहीं, बल्कि एक विस्फोटक विद्रोही भाव है । ये कविताएं भयानक अजगर की भांति पाठक को इस प्रकार जकड़ लेती हैं, कि उसे निरंतर आहत होने तथा नुचते रहने का अहसास बना रहता है । पाठक इस दुनिया में मानसिक रूप से कभी थर्राता है, कभी सहमता और कभी चीखता है, लेकिन विभिन्न मनःस्थितियों, में उसे अपने अस्तित्व और जिजीविषा का अहसास बराबर बना रहता है, यही इस संकलन की महत्ता है ।

प्रकाशक— अनुराधा प्रकाशन, फूलबाग कॉलोनी, मेरठ—२५०००१ प्रथम संस्करण— १९८८, मूल्य : पच्चीस रु. पृ. ७८,

—डॉ. अर्चना चतुर्वेदी

ऐसा शासन, शासन ही नहीं है, जो शांति न बनाए रख सके और जो शांति नहीं रख सकता उसे धन (कर) देना व्यर्थ है ।

—टॉम पेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताज़गी आई, रौनक़ छाई हमाम से!

हमाम जादू जगाए पहले से कहीं ज़्यादा
ताज़गी और रौनक़ लाए ताज़गी भरी
खुशबू तन-मन में बस जाए.
भरपूर मुलायम झाग सदाबहार हमाम
ताज़गी और रौनक़ के एहसास के लिए.

हमाम
सारे परिवार का साबुन

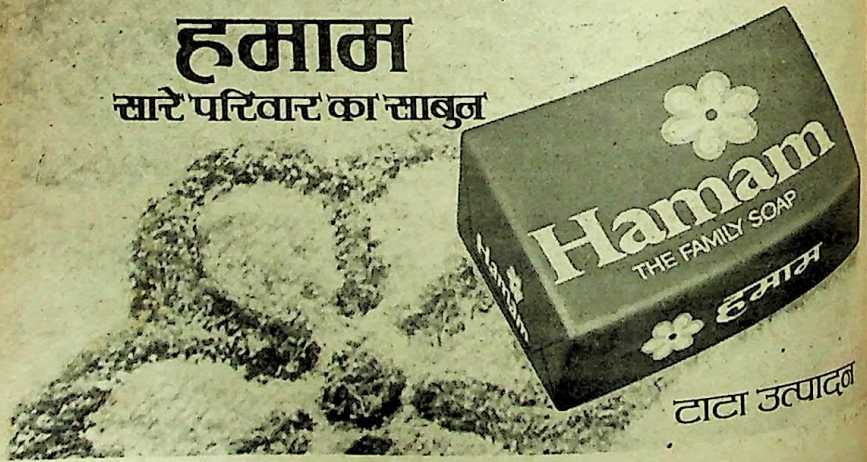

टाटा उत्पादन

CLARION/B/T/23/173 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमिल भाषा का एक अविस्मरणीय महाकाव्य

चिलप्पदिकारम्

● इलडगो अगिल

चिलप्पदिकारम : एक दुर्लभ तमिल महाकाव्य । तमिल में प्राचीन कवियों ने आभूषणों को माध्यम बनाकर अनेक महाकाव्यों की रचना की है । 'चिलप्पदिकारम' भी एक ऐसा ही महाकाव्य है । इसके रचयिता थे युवा संन्यासी इलङ्गो अगिल । सौभाग्य से इस महाकाव्य की एक अखंडित प्रति प्राप्त हुई है । सार-संक्षेप में प्रस्तुत है— इसी महाकाव्य की कथा प्रस्तोता : टी. वी. पद्मावती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमिल भाषा कानन में अपनी मधु गुंजार बिखेरते हुए तमिल-कवि मधुकरों ने मां सरस्वती का श्रृंगार अनेक काव्याभूषणों से किया है । तमिल के पंच महाकाव्यों का नामकरण शरीर के किसी न किसी आभूषण के नाम पर ही किया गया है । चिंतामणि (सिर का आभूषण), कुंडलकेशि (कर्णाभरण), मणिमैकलै (कटि प्रदेश का आभूषण), वडयापति (हाथ की चूड़ियां, तथा चिलप्पदिकारम् (पैर के नूपुर) सभी आभूषणों के नाम पर आधारित हैं ।

'चिलप्पदिकारम्' ग्रंथ की पूरी कथा नूपुर को केंद्र मानकर विकसित हुई है । इसलिए इसका नाम चिलप्पदिकारम् पड़ा । (चिलम्बु-नूपुर) यह ग्रंथ प्राचीन संघकालीन साहित्य एवं आधुनिक साहित्य के मध्य प्रकाश स्तंभ रूप में काम करता है । अनेक प्राचीन तमिल ग्रंथों की अनेक कारणों से खंडित प्रतियां ही उपलब्ध हुई हैं, किंतु सौभाग्य की बात है कि 'चिलप्पदिकारम्' अपने अखंडित रूप में प्राप्त हुआ है ।

इस महाकाव्य की कथा-योजना सुनियोजित है । कथा का विस्तार तमिलनाडु के तीन प्रदेशों— चेर, चोल तथा पांड्य- में हुआ है । घटनाएं तीनों प्रदेशों में घटित हुईं, अतः यह ग्रंथ तीन राजवंशों से संबंधित है । काव्य की तीन विधाएं— गद्य, पद्य एवं नाटक—इसमें सन्निहित हैं । इसी कारण इसे 'मुत्तमिल काप्पियम्' (गद्य, पद्य, नाटक) नाम से भी अभिहित किया जाता है । यह महाकाव्य तीन कांडों—पुकारकांडम्, मदुरैकांडम् तथा वंजीकांडम्—में विभक्त है । पुकार चोल राज्य की राजधानी, मदुरै पांड्य राज्य की राजधानी तथा वंजी चेरनाडु की राजधानी थी । इस प्रकार संख्या तीन को आधार बिंदु मानकर इस ग्रंथ की कथा-योजना बनायी गयी है । प्रथम कांड में दस अध्याय, दूसरे में तेरह तथा तीसरे में सात अध्याय हैं । इस ग्रंथ का रचना-काल लगभग दूसरी शताब्दी के आस-पास आंका गया है । कवि सुब्रह्मण्यम् भारती ने 'नेंजे अक्कुम् चिलप्पदिकारम्' कहकर इस ग्रंथ की प्रशंसा की है, जिसका आशय होता है कि जो इस ग्रंथ को पढ़ता है, यह ग्रंथ पढ़नेवाले का मन चुरा लेता है । इस ग्रंथ के लेखक युवा संन्यासी इलङ्गो अग्गिल् हैं ।

हिमालय तक अपनी राज्य सीमा बनानेवाले चेर राजा नेडुम्चेरलादन् और उनकी पत्नी नर्चोरणे से उत्पन्न पुत्ररत्न महाकवि 'इलङ्गो अडिगल्' हैं । इस राज-दंपत्ति के ज्येष्ठ पुत्र 'चेरन् चेङ् गुट्टवन' थे ।

एक दिन चेर राजा नेडुम्चेरलादन अपनी पत्नी तथा दोनों पुत्रों के साथ राजदरबार में बैठे थे । उस समय एक ज्योतिषी राजदरबार में आया । उसने दोनों पुत्रों के सामुद्रिक लक्षणों को देखकर भविष्यवाणी की कि छोटा पुत्र इलङ्गो ही चेर सिंहासन को सुशोभित करेगा। यह सुनकर बड़े पुत्र को बड़ा दुःख हुआ । इसे देखकर छोटे पुत्र इलङ्गो ने ज्योतिषी से कहा— 'आपकी भविष्यवाणी मैं झूठी कर दूंगा । इसी समय हम राज्य को त्यागकर सन्यास लेकर मठ में रहने जा रहे हैं ।' ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहकर तुरंत सिंहासन से उतरकर वह राजदरबार से बाहर चला गया । तत्पश्चात् गेरुआ वस्त्र धारणकर सन्यासी के समान अपना जीवन व्यतीत करने लगा । इसीलिए उसका नाम अडिगल (दास) पड़ा ।

इस महाकाव्य का उद्देश्य तीन शाश्वत सत्य की स्थापना करना है—

१. अनीति करनेवाले से धर्मराज स्वयं बदला लेते हैं ।

२. पतिव्रता को सारा संसार नमन करता है ।

३. भाग्य को कोई मिटा नहीं सकता ।

आचार्यों द्वारा स्थापित रूढ़ियों के अनुसार महाकाव्य का नायक कोई देवता, उच्च कुल में उत्पन्न धीरोदात्त गुण संपन्न कोई क्षत्रिय, इतिहास प्रसिद्ध कोई राजा या महात्मा हो सकता था या यदि काव्य की नायिका स्त्री है तो वह अपरूपवती, ऐश्वर्यशालिनी, उच्चकुलोद्भूत एवं पतिव्रता होनी चाहिए । पारंपरिक रूढ़ियों को तोड़ कर इलङ्गो ने अपने महाकाव्य की नायिका एक सामान्य व्यापारी की पुत्री 'कण्णगि' को बनाया है ।

× × × ×

चोलनाडु उस समय 'अनाज के भंडार' के नाम स जाना जाता था । इसकी राजधानी कावेरी पूमपट्टिनम् थी, जिसका उपाख्य 'पुकार' था । चोल राज्य इतना संपन्न था कि यहां के निवासी किसी भी चीज के लिए राज्य के बाहर नहीं जाते थे । इसी प्रभावशाली चोलनाडु में 'मात्तात्वुवान' नामक एक व्यापारी रहता था । उसके एक पुत्र था जिसका नाम 'कोवलन्' था । उसी नगर में एक अन्य व्यापारी 'मानायिक्कन' के एक पुत्री थी जिसका नाम 'कण्णगि' था । दोनों व्यापारियों की सामाजिक स्थिति समान थी, एवं लड़का-लड़की भी एक-दूसरे के योग्य थे, अतः कोवलन एवं कण्णगि का परिणय बड़े धूमधाम से हो गया । शादी के समय सब लोगों ने नव-दंपत्ति को आशीर्वाद दिया । उन लोगों के आशीर्वचन के माध्यम से कवि आगे होनेवाली घटनाओं की ओर संकेत करता है । आशीर्वचन में लोगों ने कहा— 'तुम लोगों के मन, विचार एवं वाणी में सामरस्य रहे तथा स्वप्न में भी अलग न हों और बहुत काल तक सुखी जीवन व्यतीत करो ।'

× × × ×

चोलराजा की राजनर्तकी का नाम माधवी था । एक बार माधवी के नृत्य का आयोजन चोलराज के राज-प्रासाद में हुआ । उसके नृत्य पर मुग्ध होकर चोलराज ने माधवी को एक मोतियों का हार पुरस्कार स्वरूप दिया । माधवी ने यह हार अपनी परिचारिका को देकर कहा कि जो इस हार का सर्वाधिक मूल्य देने को तैयार हो, उसे हमारे पास लाओ ।

× × × ×

नव-दंपत्ति कोवलन एवं कण्णगि अत्यंत प्रसन्न थे । कोवलन कण्णगि के सौंदर्य की प्रशंसा करते हुए कह रहा था कि तुम्हारा वर्ण तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्व श्रेष्ठ ज्योतिष साहित्य

(पुस्तकें संस्कृत श्लोक, हिन्दी व्याख्या सोदाहरण शैली में)

- **जैमिनि सूत्रम् (सम्पूर्ण)** महर्षि जैमिनि की कालजयी रचना अनोखे व निराले फलित सिद्धान्त 1100 सूत्रों में व्याख्या सहित मूल्य 100 रु.
- **जातक तत्व — पं. महादेव पाठक रतलामकृत** फलित में अचूक ग्रंथ 100 रु.
- **आयुर्निर्णय — (आचार्य मुकन्द दैवज्ञ 'पर्वतीय')** महर्षि पाराशर, जैमिनि, बादरायण मणित्थ, सत्याचार्य सहित सभी आचार्यों के मतों का सारभूत विवेचन 200 रु.
- **अष्टकवर्ग महानिबंध** — " " अपने विषय पर पूर्ण एवं अनूठा ग्रंथ (सर्व प्रथम प्रकाशित) 150 रु.
- **भाव मंजरी** — " " द्वादश भावों का विस्तृत फलादेश 40 रु.
- **नष्ट जातकम्** — " " जन्म पत्र न होने पर भी बनाने का प्रकार 40 रु.
- **प्रसव चिन्तामणि** — " " ज्योतिष समर्थ है जो बतला सके कि गर्भस्थ जीव मुन्ना है या मुन्नी ? 40 रु.
- **उत्तर कालामृत — (कवि कालीदास)** फलित सिद्धान्तों के लिए प्रसिद्ध 50 रु.
- **दैवज्ञ वल्लभा — (आचार्य वराहमिहिर)** प्रश्न विषय पर दुर्लभ पुस्तक 50 रु.
- **हस्त संजीवन — जैन मुनिश्री मेघ विजयगणी** सामुद्रिक शास्त्र पर प्राचीन 40 रु.
- **रत्न प्रदीप — (गौरी शंकर कपूर)** नवरत्नों एवं उपरत्नों का पूर्ण विवरण 60 रु.
- **प्रश्न विद्या — (आचार्य बादरायण)** बादरायण संहिता का एक भाग 40 रु.

भावार्थ रत्नाकर 25 **लघुपाराशरी** 20,
आपकी राशि भविष्य की झांकी 40 रु.

- **महामृत्युंज्य — (साधना एवं सिद्धि)** डा. रुद्रदेव त्रिपाठी 40 रु.
- **मंत्रशक्ति** 20 **तंत्रशक्ति** 25, **यंत्रशक्ति** दो भाग 40, **रुद्रयामलतंत्र** 80 रु.
- **भविष्य वक्ता कीरो (CHEIRO) लिखित — सर्वप्रथम प्रकाशित पुस्तकें :**

1. **हस्तरेखाएं बोलती हैं** 40, 2. **अंकों में छिपा भविष्य** 40,
3. **भाग्य त्रिवेणी** 40 रु.

- ज्योतिष साहित्य की संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी एवं विदेशी पुस्तकें भी उपलब्ध
- अधिक जानकारी के लिए विस्तृत सूचीपत्र अलग से मंगाएं।
- डाक व्यय पुस्तक मूल्य के अतिरिक्त लगेगा

रंजन पब्लिकेशन्स, 16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्ण के समान है, तुम्हारी बात गन्ने के रस से भी अधिक मीठी है । तुम माणिक्य के समान हो । समुद्र में न पैदा हुई अमृत हो, तुम्हारा स्वर वीणा के समान मोहक है । इस प्रकार आमोद-प्रमोद में समय बीतता रहा । भाग्य के जाल ने कोवलन को खींचा । एक दिन कोवलन बाजार गये । वहां माधवी का हार उसकी परिचारिका बेचने आयी थी । अपने वैभव के प्रदर्शन के लिए कोवलन ने वह हार परिचारिका से क्रय किया । हार क्रय करने के पश्चात् उसे क्रय करने के साथ लगी शर्त का ज्ञान हुआ । तनदनुसार उस हार के साथ वह माधवी के घर गया । वहां जाने पर माधवी के अप्रतिम प्रगत्म सौंदर्य एवं नाट्य, संगीत तथा वीणा-वादन की अद्‌भुत कला पर मोहित होकर वहीं का हो गया । कोवलन स्वयं एक कलाकार था, वह कला की प्रशंसा कर सकता था । संध्या वेला धीरे-धीरे जगती पर अपना आधिपत्य स्थापित कर रही थी । समुद्र वसना भूमि देवी अपने नायक सूर्य देव के विछोह में पीली पड़ कर धीरे-धीरे काली होती जा रही थी ।

× × × ×

शाम का समय स्त्रियों के लिए प्रसन्नता का समय होता है । सभी वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर दीप जलाकर अपने पतियों के आने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थीं । किंतु कण्णगि का चंद्र-ललाट तिलक-शून्य था । आश्रवण नयन काजल विहीन थे तथा बादल के समान लंबे काले केश तेल रहित थे । कोवलन भी इस सरल एवं स्वाभाविक मुस्कराहट का रस लेने से वंचित था । कण्णगि की यह विदग्धावस्था ही इस बात की सूचक थी कि कोवलन से विछोह हो गया है ।

जिन नायिकाओं के नायक उनके साथ होते हैं, उन्हें संध्या वेला छाया के समान शीतल एवं सुखदायक लगती है । दूसरी ओर जिन नायिकाओं के नायक उनसे विलग रहते हैं, उनके लिए संध्या वेला अग्नि के समान दाहक होती है । माधवी एवं कण्णगि का क्रमशः यही हाल था ।

× × × ×

चोलनाडु में हर वर्ष इंद्र मेला का आयोजन होता है । उसमें कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं । राजनर्तकी माधवी के नृत्य के लिए भी राजाज्ञा हुई । माधवी के साथ रहते हुए कोवलन ने उसे अपनी समझ लिया था । वह यह भूल गया था कि माधवी अंततः कुल से वेश्या है, वह राजाज्ञा का निषेध नहीं कर सकती । माधवी को मेले में जाकर नाचना पड़ा । दर्शक उसका नाम ले— लेकर उसकी प्रशंसा करने लगे । दर्शकों द्वारा माधवी की प्रशंसा कोवलन के दग्ध मन पर घृत का काम कर रही थी । लेकिन कोवलन कुछ कह नहीं सका । वह मन ही मन कण्णगि एवं माधवी की तुलना कर रहा था । मेले के समापन के साथ ही साथ कण्णगि का वामांग एवं माधवी का दक्षिणांग फड़कना प्रारंभ हुआ ।

इंद्र मेले के पश्चात माधवी, उसकी सहचरियां तथा नाटक में भाग लेनेवाले अन्य लोग नाटक के आभूषण उतारकर सामान्य परिधान पहनकर खुशी मनाने के लिए अपनी मनपसंद जगह अपने वाद्यों के साथ निकल गये । यहां कवि ने माधवी के अपने अंतिम अभिनय के बाद अभिनय में प्रयुक्त आभूषणों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उतारकर सामान्य परिधान धारण करने के लिए लिखा है— 'आडेपुम अणियुम कडै कोल।' यही जीवन में अंतिम बार था, जब माधवी ने नृत्य के समस्त आभूषण पहनकर नृत्य किया था। यही उसके जीवन के आमोद-प्रमोद का अंतिम दृश्य भी था। कवि भविष्य का संकेत देता है, किंतु पढ़ते समय ऐसा नहीं लगता कि वास्तव में कवि किसी वास्तविकता का संकेत दे रहा है।

माधवी, कोवलन एवं अपनी सखी वसंतमालै के साथ समुद्र के किनारे एक शामियाना के नीचे बैठी है। उसके हाथ में वीणा है। कोवलन का अंतःकरण ईर्ष्या से जल रहा है। लेकिन वह बाहर प्रकट नहीं करता। कोवलन वीणा पर एक गीत गाता है, जिसमें वह कण्णगि को ऊंचा उठाता तथा माधवी को नीचे गिराता है। गीत में वह अपने को धोखा खाया हुआ कहता है, किंतु इसे वह अपनी गलती न मानकर अपने देशवासियों का भोलापन मानता है। अपने कथन को एक उदाहरण के माध्यम से समझाता है। उसने कहा— 'तालाब के किनारे बैठी एक सुंदरी के मुख की छाया तालाब के जल में पड़ रही थी मुख के प्रतिबिंब में दो कमल पुष्प (आंखें) तालाब में खिले हुए थे। मधुकर तालाब के जल में सुंदरी के मुख का प्रतिबिंब देखता है और तालाब के किनारे बैठी स्त्री के दोनों कमल-नयन। वह संशय में दोनों ओर झूले की तरह झूल रहा है और यह सुनिश्चित नहीं कर पा रहा है कि कौन वास्तविक है? जब प्रकृति ही संशय ग्रस्त है, तो साधारण मनुष्य की कौन कहे?

इन्द्रप्रस्थ भारती

हिन्दी अकादमी की त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

सम्पादकः डा. नारायणदत्त पालीवाल

यदि आप चाहते हैं कि बेहतर पढ़ने को मिले तो आपकी इस जरूरत को

''इंद्रप्रस्थ भारती''

हिन्दी अकादमी की साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका पूरा करती है, जो महज़ एक पत्रिका नहीं पूरी किताब है।

जिसमें वर्ष भर में लगभग आठ सौ पृष्ठों की साहित्यिक सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। ''इंद्रप्रस्थ भारती'' का अप्रैल '90 अंक ''समकालीन हिन्दी कहानी विशेषांक'' होगा, जिसमें देश के जिम्मेदार रचनाकारों का सहयोग सुलभ होगा।

यह पत्रिक. समकालीन साहित्य का रचनात्मक मूल्यांकन और गतिविधियों की झलक प्रस्तुत करती है। इस पत्रिका के एक अंक का मूल्य पांच रुपए तथा वार्षिक बीस रुपये है। आपका सहयोग हमें बेहतर सेवा के लिए और अधिक प्रोत्साहित करेगा।

वार्षिक शुल्क, मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर द्वारा इस पते पर भेजें :

सचिव हिन्दी अकादमी, दिल्ली
ए-26/27, सनलाइट इंश्योरेंस बिल्डिंग,
आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002.
दूरभाष : 733950, 730274.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वंडु ऊचला डुम पुगारे यम ऊर ।'

माधवी ने इसका अर्थ समझकर गीत ही में उत्तर दिया । कोवलन कुछ न कहकर माधवी को छोड़कर वहां से चला गया । माधवी 'मान' समझ कर अकेले घर वापस आयी । वह सोच रही थी कि 'आज नहीं तो कल' वह वापस अवश्य आएगा । अंत तक माधवी को नहीं मालूम कि कोवलन उसे छोड़कर क्यों चला गया ? माधवी ने वसंतमालै के द्वारा उसके पास पत्र भेजा, लेकिन कोवलन ने बिना पढ़े ही पत्र वापस कर दिया ।

इधर कण्णगि को उसकी सहेली देवंती बिछुड़े हुए पति को प्राप्त करने के लिए एक पूजा के अनुष्ठान के लिए परामर्श दे रही थी, जिसे कण्णगि ने 'पीडु अंड्रे' (यह उचित नहीं है) कह कर निषेध कर दिया । उसने कहा— कोई भी परिणीता अपने पति के अतिरिक्त दूसरे भगवान को नहीं मानती । अन्य भगवान को अपने पति की खुशी (संतोष) लुटा कर बदले में अपने लिए सुख (संतोष) लेकर आना पतिव्रता का लक्षण नहीं है । वे स्वयं अपने आप आयें, किंतु उनको बुलाने के लिए अन्य देव की पूजा घृण्य है । फिर कण्णगि ने देवंती को अपने स्वप्न के बारे में बताया ।

पिछली रात कण्णगि ने एक स्वप्न देखा था । कण्णगि बता रही थी— 'मैं और मेरे पति यह शहर छोड़कर कहीं चले गये । वहां उनके ऊपर एक झूठा अभियोग लगाकर उनके साथ बहुत बुरा हुआ । मैंने राजा के सामने जाकर नीति स्थापित कर, राजा के साथ उसके शहर को भी जला दिया । यह देखकर हम बहुत डर गये । ऐसा बोलते समय ही किसी ने आकर बताया कि कोवलन की तरह कोई आ रहा है । कोवलन आकर कण्णगि से बोला—'मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गयी ।' कण्णगि ने सोचा— माधवी को देने के लिए उसके पास कुछ न बचा होगा, इसलिए मेरे पास आया है । ऐसा सोचकर उसने अपने पैर से एक नूपुर निकालकर उसे दिया । कोवलन ने शरमाते हुए उसे लेकर बताया कि हम दोनों यह शहर छोड़कर बाहर चलेंगे और इस नूपुर को बेचकर व्यापार प्रारंभ करेंगे ।

कण्णगि के स्वप्न को सच करने के लिए तथा माधवी की प्रतीक्षा को बेकार करने के लिए भाग्य को भुलावा देकर दोनों अर्ध रात्रि में मदुरै जाने के लिए निकल पड़े ।

कोवलन और कण्णगि उषा वेला में कौदि अडिगल नामक भिक्षुणी के साथ मदुरै पहुंच गये । कौदि अडिगल ने दोनों को एक ग्वाला के घर में शरणागत करके रखा । प्रातः कण्णगि पहली और अंतिम बार कोवलन को खाना बनाकर खिला रही थी । खाना खिलाने के लिए जमीन पर पत्तल रखने के पहले उसने पानी छिड़का । जमीन पर पानी छिड़ककर पोछते समय उसके हाथ की मृदुलता को देखकर भूमि देवी यह सोचकर मूर्छित हो गयी कि इतने मृदु हृदय की स्त्री आगे आनेवाले आघात को कैसे सहन करेगी ? कण्णगि द्वारा पानी का छिड़काव मानों बेहोश भूमि देवी को होश में लाने के लिए किया जा रहा है । कवि-कल्पना अप्रतिम है ।

'मन्नग मडंदै मयक्क ओलिप्पनल् पोल ।'

कोवलन भोजन करके कण्णगि का एक नूपुर लेकर उसे बेचने के लिए मदुरै शहर चला गया । मदुरै पांड्यनाडु की राजधानी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांड्य राजा की रानी का नूपुर खो गया था। उसको राज्य के एक सोनार ने चुरा लिया था। सोनार समय की प्रतीक्षा में था। वह समय कोवलन को उसके पास लेकर आया। सोनार ने कहा कि यह नूपुर जन-सामान्य की क्रय शक्ति के बाहर है। इसे राजा ही खरीद सकता है। अतः तुम बैठो। हम राजा के पास इसे ले जाकर बात करके आते हैं।

भाग्य उसके जाल के तागे को मजबूत बना रहा था। नूपुर न मिलने के कारण पांड्य रानी मान करके राजा को छोड़कर दरबार से बाहर चली गयी थी। उसे समय सोनार राजा के पास नुपूर के साथ पहुंचा। उसने बताया कि महाराज ! नूपुर चोर भी पकड़ लिया गया है। राजा ने बिना किसी जांच-पड़ताल के चोर (कोवलन) का सिर काटने की आज्ञा दी। सोनार के हाथ से नूपुर लेकर राजा रनिवास में चला गया और उधर सोनार के साथ जल्लादों ने जाकर कोवलन का सिर काट दिया।

× × × ×

कोवलन ने माधवी से अपने अलग होने का कारण नहीं बताया, कोवलन को भी जल्लादों ने उसके सिर काटे जाने का कारण नहीं बताया। यही कहते हैं कि सब चीज 'चक्रीय गति से चलती हैं।' ग्वाले के घर में कण्णगि को कुछ अपशकुन दिखायी पड़े। गाय के आंख से आंसू बह रहा था। दूध अपने आप फट गया था। दही नहीं जमा था। यह सब देखकर ग्वाले घबरा गये। इसलिए कृष्ण-पूजा के लिए तैयारी करने लगे। उन लोगों ने कीर्तन में गाया कि उन नयनों से क्या लाभ जिनसे कृष्ण का रूप नहीं देखा ? उस जिह्वा से क्या लाभ जिसने नारायण, नारायण नहीं कहा—

'नारायणाएं ड् चोल् लाद नावेन्न नावे।'

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. (५०१२३-४९८७६=२४७); ख. (९८७६५-१०२३४=८८५३१), २. क. अरस्तू, ख. लाइसियम, ३. अहमदनगर किला बंदीगृह में (१९४४ ई.), ४. क. ३०० डॉलर (१९८७), ख. २१वां स्थान, ५. क. १४३० लाख हेक्टेयर, ख. ९०० लाख हेक्टेयर, ६. मुकुटधर पांडेय ने वर्तमान सदी के दूसरे दशक के अंतिम वर्षों में जबलपुर की 'श्रीशारदा' पत्रिका में 'छायावाद' शीर्षक से लेखमाला लिखी थी (नवंबर १९८९ में ९५ वर्ष की आयु में निधन), ७. क. सिक्किम में सिक्किम संग्राम परिषद ने सभी सीटें जीतीं, ख. श्री मधु दंडवते (जनता दल) महाराष्ट्र से तथा श्री पी.एम. सईद लक्षद्वीप से, ग. फूलबनी (उड़ीसा) सुरक्षित लोकसभा सीट से निर्वाचित जनता दल के श्री नकुल नायक (२७ वर्षीय), ८. भारतीय उड़नपरी पी. टी. उषा ने चार स्वर्ण तथा दो रजत पदक अर्जित किये, ९. राष्ट्रसंघ संगठन 'यूनिसेफ' को, १०. न्यायाधीश मीरा साहिब फातिमा बीबी, ११. 'पेंटर्स पैलेट'। यह लाल रंग का एक खूबसूरत पौधा है। लोग इसे चाव से घर के भीतर लगाते हैं।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजा समाप्त होते ही एक आदमी शहर से दौड़ता आकर कोवलन की मृत्यु की सूचना देता है। यह सुनकर कण्णगि आठों दिशाओं से पूछती है— 'मेरे पति चोर हैं ?' उत्तर आता है— 'नहीं।'

वह आंखों में आंसू भर कर, बाल खोलकर एक हाथ में दूसरा नूपुर लेकर राजमहल में पहुंची। पहले द्वारपाल से कह रही है— "अनीति-राज के यहां द्वारपाल की क्या आवश्यकता ?, राजा से बताओ कि एक नारी हाथ में एक नूपुर लेकर आयी है। द्वारपाल उसका काली का रूप देखकर सहम गया और राजा से जाकर बताया। राजा ने तुरंत उसे दरबार में बुलाया।

कण्णगि के दरबार में आने पर राजा ने पूछा—हे नारी ! आपकी आंखों से आंसू बह रहे हैं। क्या दुःख है ? बताइए ! तुम कौन हो ? कण्णगि ने कहा— 'मैं मनु और शिवि के वंशजों से शासित एवं पालित चोल राज्य से आयी हूं। मैं नूपुर बेचने के लिए आये कोवलन— जिसे तुम्हारी आज्ञा से मृत्यु-दंड दिया गया— की पत्नी हूं। राजा ने कहा— 'चोर का वध अन्याय नहीं है। कण्णगि तुरंत अपना दूसरा नूपुर तोड़ती हुई बोली— 'हमारे नूपुर के अंदर माणिक होगा।' राजा ने कहा— 'हमारे नूपुर के अंदर मोती होगा।'

कण्णगि के नूपुर तोड़ते समय नूपुर से एक माणिक निकलकर राजा के मुंह पर जा गिरा। कवि कहता है कि 'मानो यह माणिक जाकर राजा को कहता है कि तुमने कितना अन्याय किया, अपनी नीति देखी।' तुरंत राजा ने अपनी गलती महसूस की और सिंहासन से गिरकर प्राण त्याग दिये। यहां कवि कहता है— "दुर्भाग्य से टेढ़ी हुई राजा की नीति को उसके (राजा) प्राण ऊपर जाते हुए ठीक करके चले गये।"

'वलुविनै वलैच्त चिंकोलै मन्नन चेल्लुयिर निगिरत्तति चेन्रतु।'

अपने पति की मृत्यु को देखकर रानी ने उसी की लाश पर गिरकर प्राण त्याग दिया। कवि कहता है—

'कणवनै इलन्दोरक्कुक काट्टवदुइलयन।'

(पति की मृत्यु के पश्चात उसके समान अन्य वस्तु दिखाकर पति के बराबर मानने के लिए इस संसार में कुछ नहीं है। यह सोचकर उसकी मृत्यु हो गयी।)

इसके बाद भी कण्णगि का क्रोध शांत नहीं हुआ। पशु-पक्षी, पतिव्रता एवं बूढ़े-बच्चों को छोड़कर सारे मदुरै को अपने तेज से भस्म कर दिया। स्वयं मदुरै छोड़कर चेरनाडु चली गयी। वहां उस समय कोवलन एक पर्वत के ऊपर एक रथ सहित कण्णगि की प्रतीक्षा कर रहे थे। कोवलन कण्णगि को रथ में बिठाकर उड़ गये। इस घटना को पहाड़ी लोगों ने साक्षात देखा।

एक बार चेरनाडु के राजा चेरन्चिगुट्टवन अपनी पत्नी तथा भाई इलङ्गो एवं दरबारी कवि चात्तनार के साथ उस पहाड़ का सौंदर्य देखने के लिए गये। वहां के निवासियों ने राजा को इस घटना के बारे में बताया। चात्तनार को कण्णगि-कोवलन की कहानी पहले से ही मालूम थी। चात्तनार ने पूरी कहानी राजा को सुनायी। उस अवसर पर उपस्थित इलङ्गो ने उस कहानी के आधार पर 'चिलप्पदिकारम्' नामक एक महाकाव्य की रचना कर डाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक समाचार

महिला पत्रकारों का सम्मेलन

नयी दिल्ली । यहां महिला-संपादक संघ द्वारा आयोजित द्विदिवसीय सम्मेलन में पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की विभिन्न समस्याओं पर विचार किया गया । इस सम्मेलन में देश के विभिन्न स्थलों से आयीं महिला संपादकों एवं पत्रकारों ने भाग लिया । सम्मेलन में मणिपुर की एक महिला-संपादक श्रीमती सनाबम ओंगबी को 'वर्ष की महिला-पत्रकार' के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया । सम्मेलन को दिल्ली के भूतपूर्व उपराज्यपाल श्री रोमेश भंडारी, 'हिंदुस्तान टाइम्स' की कार्यकारी निदेशक श्रीमती शोभना भरतिया, सामाजिक कार्यकत्री श्रीमती प्रमिला दंडवते, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी श्रीमती किरण बेदी आदि ने संबोधित किया ।

सम्मेलन के प्रथम दिवस में महिला संपादक संघ की अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा पंड्या ने अपने स्वागत-भाषण में इस बात पर खेद व्यक्त किया कि देश के सामाजिक-राजनीतिक जीवन में महिलाओं को दिये गये वायदे के अनुसार प्रतिनिधित्व नहीं मिला । श्री रोमेश भंडारी ने ग्रामीण स्त्रियों की समस्याओं की ओर ध्यान देने का आग्रह किया ।

सम्मेलन के दूसरे दिन की अध्यक्षता श्रीमती शोभना भरतिया ने की । उन्होंने कहा कि

महिला पत्रकारों के सम्मेलन में बायें से श्रीमती पुष्पा पंड्या, श्रीमती शोभना भरतिया, केंद्रीय पेट्रोलियम रसायन मंत्री श्री एम. एस. गुरुपाद स्वामी एवं श्रीमती प्रमिला दंडवते ।

महिला-पत्रकार इस व्यवसाय के शीर्ष स्थान तक पहुंचने में सफल हुई हैं तथा उनमें और अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचने की संभावना है ।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री एम. एस. गुरुपाद स्वामी ने श्रीमती बेल्क को 'वर्ष की महिला-पत्रकार' का पुरस्कार दिया ।

हिंदी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार

लखनऊ । यहां आयोजित उत्तर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री अमृतलाल ने राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए उत्तर क्षेत्र के २६ कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों आदि को पुरस्कार प्रदान किये । सम्मेलन की अध्यक्षता भारत सरकार के हिंदी सलाहकार तथा सचिव—राजभाषा, श्री आर. के. ग्रोवर ने की । इस अवसर पर प्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री ने सम्मेलन की सफलता के लिए शुभकामना संदेश भेजे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

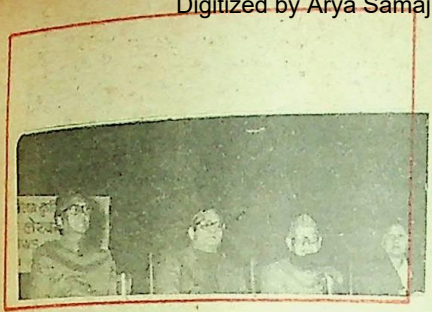

नयी पत्रकारिता और समाचार लेखन

नयी दिल्ली । त्रिवेणी सभागार में पिछले दिनों श्रीमती सविता चड्ढा की पांचवीं पुस्तक 'नयी पत्रकारिता और समाचार लेखन' का लोकार्पण सांसद एवं अध्यक्ष अखिल भारतीय समाचार-पत्र संपादक सम्मेलन श्री विश्व बंधु गुप्ता ने किया । इस समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार श्री राजेन्द्र अवस्थी ने की । अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री राजेन्द्र अवस्थी ने अपने पत्रकार-जीवन से संबंधित महत्त्वपूर्ण अनुभव बताते हुए इस कृति की सराहना की और इसे इस क्षेत्र में पदार्पण करनेवाले पत्रकारों/लेखकों के लिए उपयोगी बताया । इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार एवं पत्रकार श्री विष्णु प्रभाकर ने लेखिका को इस कृति के लिए बधाई दी एवं प्रारंभिक दौर के प्रशिक्षणार्थियों के लिए इसे उपयोगी बताया । श्री विश्व बंधु गुप्ता, श्रीमती आशारानी व्होरा, श्रीमती उर्मिल सत्यभूषण, श्री डी. राज कंवल, श्री महेन्द्र खन्ना सभी वक्ता इस बात पर एकमत रहे कि यह पुस्तक इस क्षेत्र में पदार्पण करनेवाले पत्रकारों/लेखकों के लिए लाइट हाऊस का काम करेगी ।

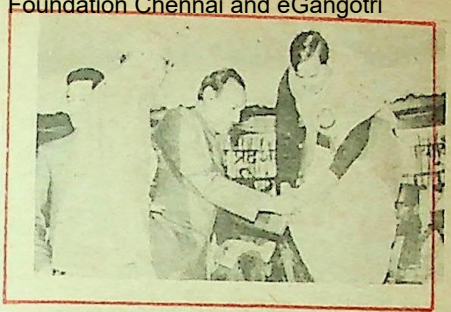

मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव हास्य-व्यंग्यकार प्रेम किशोर 'पटाखा' के नये हास्य कैसेट 'वाह भई वाह' का विमोचन करते हुए ।

हास्य कैसेट 'वाह भई वाह' का विमोचन

इटावा : जनपद में आयोजित प्रदर्शनी के पंडाल में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव द्वारा हास्य-व्यंग्य के प्रख्यात कवि प्रेम किशोर 'पटाखा' के नये हास्य-कैसेट 'वाह भई वाह' का विमोचन किया गया । समारोह की मुख्य अतिथि ग्राम-विकास एवं पंचायत राज्य मंत्री श्रीमती सुखदा मिश्रा थीं एवं अध्यक्षता गीतकार श्री गोपाल दास 'नीरज' ने की ।

डॉ. बशीर बद्र सम्मानित

न्यूयार्क । स्थानीय अदबी संगम द्वारा आयोजित एक समारोह में भारतीय राजदूत डॉ. कर्णसिंह ने सुप्रसिद्ध शायर डॉ. बशीर बद्र को 'पोयट-आंव द् ईयर' की उपाधि से अलंकृत किया । डॉ. बशीर बद्र अमरीका-यात्रा पर आये थे । उन्होंने वाशिंगटन शिकागो, डेट्राइट, मियामी, डलास, क्लीवलैंड, हूस्टन लास एंजेल्स तथा अटलांटा में आयोजित अनेक संगोष्ठियों में भी भाग लिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अंत में...

वात्सल्य नहीं थाती मात्र मनुजता की

दी हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में
मुद्रित तथा प्रकाशित
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रैपिडेक्स" इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

प्रिय अभिभावक,
आपका बच्चा अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता है,
अंग्रेजी अच्छी तरह लिख-पढ़ लेता है;
उसकी एकमात्र समस्या.....
वह इसे बोलने में हिचकता या अटकता है !

इसका समाधान बता रहे हैं
उसके प्रिय खिलाड़ी कपिल देव—

"अंग्रेजी बोलचाल सीखने का एकमात्र सोर्स
रैपिडेक्स इंगलिश स्पीकिंग कोर्स"

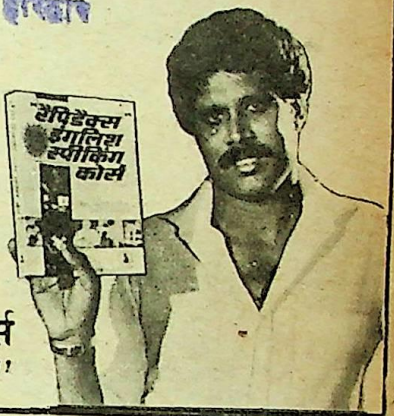

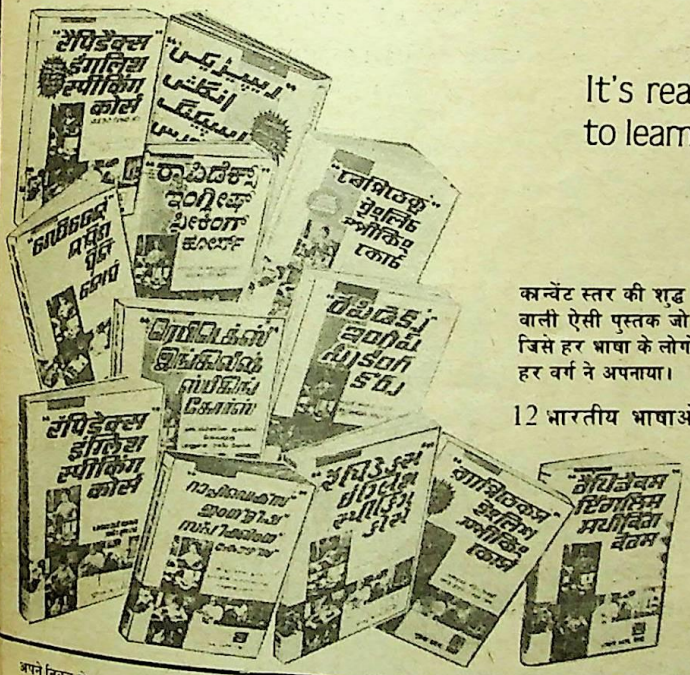

It's really a good book
to learn spoken English
—Kapil Dev

कान्वेंट स्तर की शुद्ध व फर्राटेदार अंग्रेजी सिखलाने वाली ऐसी पुस्तक जो भारत के कोने-कोने में फैली, जिसे हर भाषा के लोगों ने पसंद किया तथा समाज के हर वर्ग ने अपनाया।

12 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित

बड़े साइज के
400 से अधिक पृष्ठ
मूल्य : 36/- प्रत्येक
डाकखर्च : 5/- प्रत्येक

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टालों पर मांग करें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता.

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006
नया शो रूम : 10-B नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये मुस्कान रहेगी कायम

जिस दिन से मिल गया उसे अनचाहे गर्भ से छुटकारा,
उसकी खुशियों का झिलमिलाया सितारा।
अपने परिवार को छोटा रखने के लिए आज
संसार में साढ़े छः करोड़ से भी ज्यादा औरतें ओरल पिल्स यानि
गर्भ निरोधक गोलियां खा रही हैं।
उन्हीं की तरह उसने भी माला-डी-नई छोटी
खुराक वाली गोलियां खाना शुरु कर दी हैं।
ये गोलियां खारातौर से भारतीय महिलाओं
, के लिए अनुकूल हैं।
पहला बच्चा जल्दी नहीं,
दूसरा उसके तीन साल बाद
और इसके लिए हर समझदार औरत खाती है गर्भ निरोधक
गोलियां
माला-डी गोलियों के सेवन से श्रोणि शोथ रोग, अस्थानिक गर्भाधान, अंतर
गर्भाशय कैंसर, डिम्ब ग्रन्थी कैंसर, सुसाध्य वक्ष जैसे रोगों का खतरा
काफी हद तक कम हो जाता है।

डाक्टर की सलाह लीजिए,

वह आपको **माला-डी** की राय देंगे।

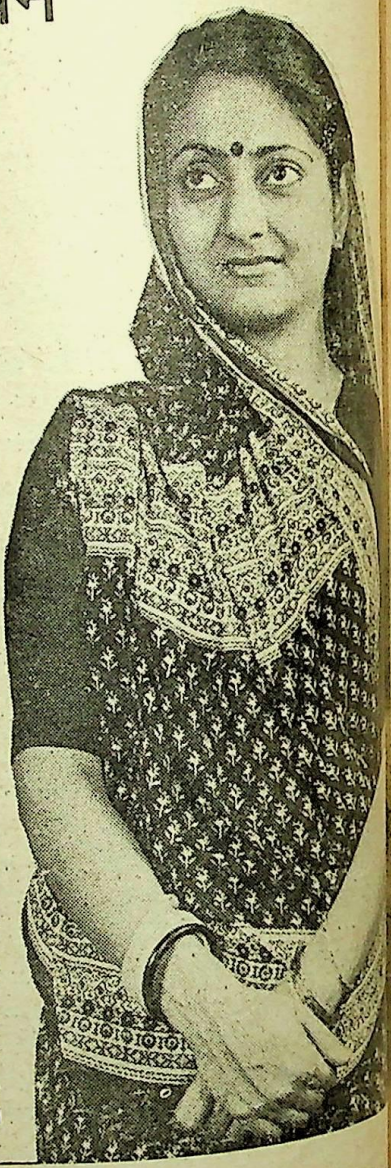

माला-डी, बच्चों के जन्म में अन्तर के लिए
सुरक्षित, सरल और शर्तिया उपाय
नई खाने की गर्भ-निरोधक गोलियां,
रियायती दामों पर,
सिर्फ 2 रु. में एक पैकेट।

डी ए वी पी 89/692

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

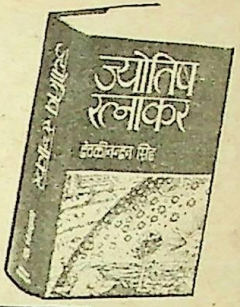

श्रेष्ठ ज्योतिष साहित्य

सुगम ज्योतिष (सिद्धांत, जातक, दशा, तांत्रिक, संस्कार, मुहूर्त और प्रश्न संबंधी सहस्त्राधिक विषयों का अपूर्व संग्रह)—देवीदत्त जोशी सं. जर्नादन शास्त्री पाण्डेय (स.) 250 (अ.) 175

वैवाहिक विलम्ब के विविध आयाम एवं मंत्र—मृदुला त्रिवेदी (स.) 65 (अ.) 45

ज्योतिष रत्नाकर—देवकीनन्दन सिंह रु. मूल्य (सजिल्द) 190 (अजिल्द) 150

वी.एल. ठाकुर:
सचित्र ज्योतिष शिक्षा
ज्ञान खण्ड 55, **गणित खण्ड** (दो भाग) 140, **फलित खण्ड** (तीन भाग) 185, **वर्षफल खण्ड** 45, **प्रश्न खण्ड** 40, **मुहूर्त खण्ड** 16, **संहिता खण्ड** 30

मुकुन्द वल्लभ मिश्र:
अर्घमार्तण्ड (तेज मंदी का अनुपम ग्रन्थ) 16
कर्मठगुरु 32
फलितमार्तण्ड (हिंदी टीका) 50

गोपेश कुमार ओझा:
अंक विद्या (ज्योतिष) 18
जातकपारिजात (हिंदी व्याख्या सहित) दो भागों में (स.) 250 (अ.) 175
फलदीपिका—भावार्थबोधिनी (स.) 85 (अ.) 55

हस्तरेखा विज्ञान (शरीर-लक्षण सहित) (स.) 70 (अ.) 45

केदारदत्त जोशी:
मुहूर्तचिन्तामणि (स.) 95 (अ.) 65
बृहज्जातकम् (स.) 100 (अ.) 70
सिद्धांत शिरोमणे गोलाध्याय (स.) 100 (अ.) 120
ताजिक नीलकण्ठी— (स.) 100 (अ.) 70

चन्द्रदत्त पन्त:
चन्द्रहस्त विज्ञान (स.) 100 (अ.) 75

मुरलीधर चतुर्वेदी:
सारावली—श्रीमत्कल्याण वर्मा विरचित (हिंदी व्याख्या सहित) (स.) 110 (अ.) 70
होरारत्नम् दो भागों में (स.) 330 (अ.) 230
वृहद-देवज्ञरण्जनम् (हिंदी व्याख्या सहित) दो भागों में (स.) 280 (अ.) 220
मुहूर्तगणपति (स.) 85 (अ.) 55

दीवान रामचन्द्र कपूर:
लघुपराशरी भाष्य (स.) 60 (अ.) 45

रामचन्द्र पाण्डेय:
ज्योतिर्विदाभरणम् (स.) 160 (अ.) 120

ब्रजविहारी शर्मा:
चमत्कार चिन्तामणि— हिंदी व्याख्या (स.) 140 (अ.) 90

वी.पी.पी. द्वारा उपलब्ध संपूर्ण सूची के लिए लिखें:—

मोतीलाल बनारसी दास
41-यू ए, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007.
शाखाएं: अशोक राजपथ, पटना • चौक, वाराणसी • 120 रायपेटा हाई रोड, मैलापुर, मद्रास • 24, रेसकोर्स रोड, बंगलौर

VANM 185

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. **यथाचित्त**—क. ठीक-ठीक, ख. अपनी इच्छा के अनुसार, ग. मनमाने ढंग से, घ. युक्ति के साथ।

२. **निरालंब**—क. बिना देर के, ख. गृह हीन, ग. जिसे सहारा न हो, घ. मुक्त।

३. **धूलिका**—क. मिट्टी, ख. धुंध, ग. गहनता, घ. भोंडापन।

४. **काकनिद्रा**—क. हल्की नींद, ख. गहरी नींद, ग. हल्कापन, घ. आलस्य।

५. **कष्टकर**—क. भारी, ख. जिसे साधने में कष्ट हो, ग. दुःखों से भरा, घ. पीड़ित।

६. **कर्णधार**—क. चालक, ख. सबकी सुननेवाला, ग. सुनकर चुप रहनेवाला, घ. प्रबंधक।

७. **गोधूलि**—क. मटमैला, ख. पुनीत वेला, ग. प्रातः, घ. संध्या।

८. **चित्तवृत्ति**—क. चिंता, ख. वेदना, ग. मन की दशा, घ. आदत।

९. **तारुण्य**—क. शीघ्रता, ख. युवावस्था, ग. ताजगी, घ. अनोखापन।

१०. **विषयांतर**—क. व्यर्थ विषय, ख. अनर्गल वार्त्ता, ग. विषय बदल जाना, घ. दोहरी बात।

११. **निर्निमेष**—क. अविलंब, ख. बिना पलक झपकाये, ग. आशारहित, घ. निर्दय।

१२. **ज्ञानात्य**—क. बुद्धि, ख. बुद्धिमान, ग. महात्मा, घ. सदाचारी।

१३. **पापहर**—क. पाप से दूर रहनेवाला, ख. निर्दोष, ग. पाप दूर करनेवाला, घ. पवित्र।

उत्तर

१. ख. अपनी इच्छा के अनुसार। **यथाचित्त** जीवनयापन का अवसर कम ही लोगों को मिलता है। (यथा+चित्त)

२. ग. जिसे सहारा न हो। जो **निरालंब** हैं उनकी सहायता करना समाज का दायित्व है। (निर्=बिना+आलंब=सहारा)

३. ख. धुंध। गहन **धूलिका** में मार्ग भी दिखायी नहीं देता।

४. क. हल्की नींद, उचटती नींद। विद्यार्थी का एक गुण **काकनिद्रा** भी बताया गया है। (काक अर्थात कौए के समान अल्प तथा सावधानीपूर्ण निद्रा)

५. ख. जिसे साधने में कष्ट हो, जिससे कष्ट हो। यह यात्रा बड़ी **कष्टकर** है।

६. क. चालक, नाव खेनेवाला। जो समाज के **कर्णधार** हैं उनका जीवन निष्कलंक होना चाहिए। (कर्ण=पतवार+धार=संभालनेवाला)

७. घ. संध्या, सांझ का समय। **गोधूलि** में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर ही वह घर लौटता है । (शाब्दिक अर्थ— गायों के खुरों से उड़नेवाली धूल । शाम को गायों के चरकर लौटने से होनेवाली धूलि संध्या का प्रतीक है ।)

८. ग. मन की दशा । अस्थिर चित्तवृत्ति मनुष्य की प्रगति में बाधक होती है ।
(चित्त=मन=वृत्ति=दशा)

९. ख. युवावस्था, जवानी (संज्ञा) ।
तारुण्यकठिनाइयों से भरा होने पर भी उसने साहस और धैर्य से काम लिया ।
(विशेषण-तरुण)

१०. ग. विषय बदल जाना । उसकी वार्त्ता में **विषयांतर** हो गया । (विषय+अंतर)

११. ख. बिना पलक झपकाये, टकटकी लगाये हुए । मैं उस दृश्य को **निर्निमेष** देखता रहा ।
(निर्=बिना+निमेष=आंख का झपकना)

१२. ख. बुद्धिमान, जिसकी आत्मा ज्ञान से परिपूर्ण हो । उसे उपदेश देने की धृष्टता मत करो कि स्वयं**ज्ञानात्म** है । (ज्ञान+आत्म)

१३. ग. पाप दूर करनेवाला । सच्चे मन से तीर्थयात्रा **पापहर** होती है । (पाप+हर)

पारिभाषिक शब्द

=विसरण	Diffusion
=अंतर्भेदन	Intrusion
=बाह्य, बाहरी	Extrinsic
=आंतरिक, भीतरी	Intrinsic
=अंतःप्रज्ञा	Intution
=विलयन	Merging
=एकाधिपत्य/इजारा	Monopoly
=स्वायत्तता	Autonomy
=प्रज्ञेय	Cognizable
=अज्ञात/गुप्त रूप से	Incognito

वचन-वीथी

जितना ही हम अध्ययन करते जाते हैं, उतना ही हमें अपने अज्ञान का आभास होता जाता है ।

— शेली

अनुभव बताता है कि आवश्यकता-काल में दृढ़ निश्चय पूरी सहायता करता है ।

— शेक्सपियर

आपकी सबसे बड़ी अभिलाषा यह होनी चाहिए कि आप अपने मनुष्यत्व का विकास करें ।

— स्वेट मार्डेन

अवसर बुद्धिमान के पक्ष में लड़ता है ।

— यूरीपिडीज

दूसरों का जो आचरण तुम्हें पसंद नहीं है वैसा आचरण दूसरों के प्रति मत करो ।

— कंफ्यूशस

जो अपने आप को चाहने लगता है, उसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं होता ।

— बेंजामिन फ्रेंकलिन

समस्या-पूर्ति

जनवरी अंक में समस्या-पूर्ति स्तंभ के प्रकाशित न होने के कारण इस अंक में पुरस्कृत समस्या-पूर्ति नहीं दी जा रही है । फरवरी अंक में प्रकाशित समस्या-पूर्ति की पुरस्कृत प्रविष्टियां अगले अंक में पढ़िए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

तुमने मुझे बेटा कहा है !

दीन-दलितों के देवता थे महाप्राण निराला । एक बार वह अपने एक प्रकाशक से पैसा लेने गये जीरो रोड और वहां से उन्हें तकरीबन तीन सौ रुपये मिले । उन्होंने रुपये अंटी में बांधे और चल पड़े दारागंज की ओर, जहां वह रहते थे । रास्ते में अलोपीबाग चौराहे के पास एक भिखारिन सामने पड़ गयी । बोली, "बेटा, इस भूखी-प्यासी भिखारिन को कुछ दे दो ।"

निरालाजी ठिठककर खड़े हो गये और उन्होंने उससे पूछा, "बताओ, तुम्हें कितने पैसे मिल जाएं तो तुम भीख मांगना छोड़ दोगी ।"

भिखारिन ने सोचा, बाबूजी मजाक कर रहे हैं । सो बोली, "बेटा, क्यों हंसी करते हो ?"

निरालाजी गंभीर हो उठे— "तुमने मुझे बेटा कहा है और निराला की मां भीख नहीं मांग सकती ।"

इतना कहकर निरालाजी ने अपनी अंटी खोली और पूरे के पूरे रुपये उसे देकर आगे बढ़ गये ।

—शुकदेव प्रसाद

—('विश्वप्रसिद्ध प्रेरक प्रसंग' से)

मैं तो जीवित रहूंगा लेकिन...

वीर सावरकर के जीवन की एक घटना। ब्रिटिश हुकूमत ने उन्हें कालेपानी की सजा देकर अंदमान भेज दिया । उन्हें चालीस वर्षों के सश्रम कारावास की सजा सुनायी गयी थी ।

उनके गले में 'चालीस वर्ष का कारावास' का पट्टा देखकर जेलर ने उनसे पूछा, "क्या तुम चालीस वर्ष की सजा काटने तक जीवित रह सकोगे ?"

वीर सावरकर ने बिना विचलित हुए बेसाख्ता कहा, "मैं तो जरूर जीवित रहूंगा पर यह भी तय है कि ब्रिटिश हुकूमत की जड़ें इस अवधि के पहले ही भारत से नष्ट हो जाएंगी ।"

इतिहास साक्षी है, वीर सावरकर की भविष्यवाणी अक्षरशः सच हुई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य नरेन्द्र देव, प्रसिद्ध स्वाधीनता-सेनानी, समाजवादी विचारक और शिक्षाविद । उनके जीवन का एक प्रसंग :

एक बार की बात है । आचार्य नरेन्द्र देव को आर्थिक संकट ने आ घेरा । वे कुछ बचाते तो थे नहीं, जो भी आय होती, उसका बड़ा हिस्सा समाजसेवा पर व्यय कर देते ।

सामने आये आर्थिक संकट से वे किंचित परेशान हो उठे । अंत में उन्होंने इस संकट के निवारण के लिए मुगल राग-रागनियों की एक सुंदर चित्रावलि को बेचने का निश्चय किया । यह चित्रावलि उनकी पैतृक संपत्ति थी । लंका के एक प्रसिद्ध कला विशेषज्ञ को जब यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने इस चित्रावलि के लिए आचार्यजी को पच्चीस हजार रुपये देने चाहे ।

आचार्यजी ने उनके प्रस्ताव का कोई उत्साहवर्धक उत्तर नहीं दिया । बाद में उन्होंने वह चित्रावलि इलाहाबाद विश्वविद्यालय को मात्र ढाई हजार रुपयों में बेच दी । कारण : आचार्यजी नहीं चाहते थे कि राष्ट्र की यह अमूल्य संपत्ति देश के बाहर जाए, अतः उन्होंने पच्चीस हजार रुपयों का प्रस्ताव ठुकरा, मात्र ढाई हजार रुपयों में उसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय को बेच दिया ताकि यह धरोहर देश में ही रहे ।

ज्ञान-गंगा

तथा चैवाभिमानस्य दुरन्तस्यापसारणम् ।
कर्त्तव्यं प्रथमं तावन्मन्यते तत्त्वदर्शिः ।।

(अमृत-मंथन ७/५)

आत्मा की स्वस्थता के लिए सदा प्रयत्नशील रहो । इसके लिए तत्त्वदर्शियों के मतानुसार पहला कर्त्तव्य यह है कि मनुष्य अपनी हीन भावना छोड़ दे और परिणाम में दुःख-दायी अभिमान को भी भगा दे ।

बुद्धौ कलुषभूतायां विनाशे प्रत्युपस्थिते ।
अनयो नयसंकाशो हृदयान्नावसर्पति ।।

(विदुर-नीति : २/८२)

बुद्धि के मलिन हो जाने पर और विनाश के उपस्थित होने पर अनीति नीति के समान प्रतीत होती हुई हृदय से नहीं निकलती ।

न साम्परायः प्रतिभाति बालं,
प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम् ।

(कठ उपनिषद् २/६)

—वैभव के मोह में पड़े हुए प्रमादी व्यक्ति को परलोक की बात नहीं सूझती, उसे तो वर्तमान प्रत्यक्ष लोक ही सत्य प्रतीत होता है ।

अन्यायेन तृणशलाकाऽपि गृहीता
दुःखायते ।

(सोमदेवनीतिवाक्यामृतम्)

अन्याय से यदि किसी का तिनका भी ले लिया जाए तो वह दुःखद होता है ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

मैं गत-१० दिसम्बर को ही शिमला कुल्लू-मनाली की यात्रा से लौटा हूं। दिसम्बर अंक में लेखिका ने अपने लेख 'जहां अर्जुन ने शिव की आराधना की' में शिमला व हिमाचल का जो वर्णन किया है वह सही है। लेकिन फिर भी भूलवश या अज्ञानवश लेखिका ने शिमला की एक बेहतरीन और मेरे विचार में भारत की एकमात्र विचित्र जगह मनीकर्ण का उल्लेख नहीं किया है, जिसके अभाव में हिमाचल का वर्णन अधूरा है।

मनीकर्ण कुल्लू से भुंतर होते हुए २५ कि.मी. की दूरी पर बहुत ही दुर्गम पहाड़ियों के बीच बसा एक छोटा-सा और प्राकृतिक सुंदरता अपने आंचल में समेटे गांव है, जहां के मुख्य आकर्षण हैं गुरुद्वारा, श्री राम मंदिर और गरम पानी के सोते। यहां पर्यटकों के ठहरने के लिए कोई होटल या गेस्ट हाऊस नहीं है। मोटर, रिक्शा, तांगा भी नहीं है। बस या तो गुरुद्वारा या श्री राम मंदिर। इन दोनों में खाना और रहना मुफ़्त है। आप अपनी इच्छा से कुछ देना चाहें तो दे सकते हैं। श्रीराम मंदिर में जैसा लिखा था। उसके अनुसार, "पांडव अपने बनवास में यहां भी रहे थे और यहीं पर अर्जुन ने भगवान शिव से युद्ध किया था तथा पाशुपास्त्र प्राप्त किया था।"

एक और विशेष बात मनीकर्ण में यह है कि वहां जगह-जगह गरम पानी निकलता है, जिसमें गंधक भी होती है। वैज्ञानिक आज तक पता नहीं लगा पाये कि गंधक मिला गरम पानी आता कहां से है ? इस बारे में श्री राम मंदिर में जो लिखा है, वह इस प्रकार है— "एक बार भगवान शिव व पार्वती वहां क्रीड़ा कर रहे थे तब पार्वती की बाली की मणि कहीं गिर पड़ी। बहुत ढूंढ़ने पर भी जब मणि नहीं मिली तो भगवान शिव को क्रोध आ गया और उन्होंने अपना तीसरा नेत्र खोल दिया। जहां-जहां उनकी नजर पड़ी वहां गरम पानी के सोते फूट पड़े।" इसी से शायद उस का नाम मनीकर्ण पड़ा होगा। मनीकर्ण में कोई प्रदूषण, हल्ला-गुल्ला, शोर-शराबा नहीं है। संसार में ऐसे शांत स्थल बहुत ही कम होंगे। ऐसे स्थ का जिक्र न करना हिमाचल और पाठकों के साथ ही नाइनसाफी है।

—नवल किशोर

बैंक ऑव बड़ौदा, सहाड़ा (रा

कादं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरणाप्रद विचार

मैं 'कादम्बिनी' का लगभग दस वर्षों से नियमित पाठक हूं । मुझे पत्रिका सर्वश्रेष्ठ लगती है । 'कादम्बिनी' का हाल ही का जनवरी अंक मिला । कवर साज सज्जा के साथ अच्छी सामग्री देखकर सात्विक आह्लाद हुआ ।

'काल चिंतन' में विचारों की प्रस्तुति प्रेरक, विचारोत्तेजक ढंग से थी । मुनिश्री किशनलाल द्वारा लिखित लेख 'कैसे करें विचार और मनन' बेहद पसंद आया । यह लेख बेहद ज्ञानवर्द्धक और रोचक लगा । विशेषकर मानव जीवन में कल्पना आवश्यक है । उसी के आधार पर मानव अपना भविष्य देखता है । कोई भी कल्पना तभी सार्थक चिंतन का आधार बन सकती है, जब वह तथ्यों पर आधारित हो न कि मात्र कल्पना ।

मानव विचार ही समस्त कार्यों को प्रेरणा प्रदान करते हैं और विचार ही गतिविधियों की रूप रेखा भी निर्धारित करते हैं, जैसे हमारे विचार होते हैं, हम वैसे ही बन जाते हैं, वैसी ही हमारी शारीरिक स्थिति होती है । यदि हम चाहें कि हमारी स्थिति उसके विपरीत हो यह असंभव है ।

मनोवैज्ञानिकों ने विचार और उनके प्रभाव संबंधी प्रयोग और परीक्षण करके इस तथ्य की पुष्टि कर ली है कि विचार व्यक्ति के स्वास्थ्य एवं व्यवहार पर गहरा प्रभाव डालते हैं ।

आस्ट्रेलिया निवासी बिशप लैंड वीटर ने विचारों एवं मन के रूप रंग और प्रभाव को लक्षित करके एक पुस्तक लिखी है— 'थॉट फॉर्म्स' । उसमें उन्होंने लिखा है कि "कौन-सा विचार मनुष्य के सूक्ष्म शरीर को किस प्रकार प्रभावित करता है ? संपर्क में आनेवाला व्यक्ति बिना कुछ कहे भी हमारे ऊपर कुछ प्रभाव डाल देता है क्यों ? इतना ही नहीं विचारों द्वारा सृजित पर्यावरण पशु-पक्षियों को भी प्रभावित करता है ।"

—राजकुमार चोपड़ा
द्वारा— लिखमीचंद चौपड़ा, पो.- नोखा ३३४८०३, जिला. बीकानेर (राज.)

(इस लेख पर बीकानेर से श्री जयसिंह पगारिया, लाडनू से श्री विजयसिंह कोठारी, मंडला से सुशील शर्मा, धारवाड़ से कुमारी रत्ना और विजयवाड़ा से सुश्री साधना जैन के भी उपयोगी पत्र मिले हैं ।— सं.)

मैंने कुतूहल-वश कुछेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित चुनाव भविष्यवाणियों का संकलन कर रखा था १. 'कादम्बिनी' नवम्बर ८३, २. इलसट्रेड वीकली अगस्त २१-२७, ८९ ३. साप्ताहिक हिन्दुस्तान— २०-२६ अगस्त ८९, ४. इंडिया टुडे नवम्बर १५, ८९ तथा ५. हिंदुस्तान दैनिक, रविवार, १९-११-८९ ।

इनमें से २२ ज्योतिषियों ने राष्ट्रीय स्तर पर भविष्यवाणियां की थीं । चुनाव परिणामों के बाद जब मैंने २२ का विश्लेषण किया तो पाया कि १५ ने स्पष्ट कांग्रेस का बहुमत एवं राजीव गांधी को प्रधानमंत्री, ४ ने कांग्रेस का बहुमत नहीं पर राजीव गांधी के प्रधानमंत्री बनने की भविष्यवाणी की थी । एक ने राष्ट्रीय मोर्चा और भारतीय जनता पार्टी की सम्मिलित सरकार, एक ने राजीव गांधी के पराजय की आशंका, तथा एक ने वी. पी. सिंह के प्रधानमंत्री होने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्यवाणी की थी । इस प्रकार बहुमत श्री गांधी के पक्ष में था, मात्र एक ने सिंह को प्रधानमंत्री पद की भविष्यवाणी की थी और २१ ने लगभग स्पष्ट ही सिंह के प्रधान मंत्री नहीं होने की भविष्यवाणी की थी ।

—गिरीशचन्द्र चौधरी
मधुबनी

('ज्योतिषियों से सावधान' के अंतर्गत हमें अनेक पत्र मिले हैं, जिनमें ज्योतिष को एक शास्त्र बताकर कई उदाहरण दिये गये हैं । विशेष उल्लेखनीय पत्र हैं श्री शकुनचन्द गुप्त, लालगंज (रायबरेली), श्री रमेशचन्द्र उज्जैन, श्री प्रभाकर जोशी, देव प्रयाग, आर. व्यंकटेश तलकड़ (कर्नाटक), मंजु कपूर दिल्ली, पी. शर्मा पटना, संतकुमार टंडन इलाहाबाद, भंवरलाल जोशी रींगस सीकर और अन्य ।— सं.)

सावधान :— ज्योतिषियों से

'कादम्बिनी' जनवरी ९० अंक में समय के हस्ताक्षर— 'सावधान इन ज्योतिषियों से' पढ़कर आपकी साफगोई से बेहद प्रभावित हूं, बधाई !

निकट विगत में लोकसभा चुनाव के दौरान ज्योतिषियों द्वारा की गयीं थोथी भविष्यवाणियों के पुनर्विलोकन हेतु इनकी बानगी पेश करते हुए आपने इनकी बेलौस, बेबाक लानत-मलामत की है । मसलन-ज्योतिष विद्या को नजर अंदाज कर तत्कालीन स्थितियों के आधार पर भविष्यवाणियां करनेवाले ज्योतिषियों के बारे में बकौल संपादकजी, "ऐसे ज्योतिषी व्यापारी नहीं तो क्या हैं ! एक मजे की बात यह है कि व्यापार में भी सचाई और ईमानदारी होती है, इन ज्योतिषियों में मात्र अवसरवादिता है ।" साथ ही साथ आपने पूज्य ग्रंथ 'गीता' के अनुकरणीय उपदेश 'कर्म ही प्रधान है' का उल्लेख करते हुए ज्योतिष, पूजा-पाठ, तांत्रिक-सिद्धियों एवं भाग्य के पीछे भागनेवालों को अंधविश्वासियों की कतार में ला खड़ा किया है, जिससे कि संबंधित लोगों के दिलोदिमाग पर गहरी चोट लगेगी ।

—डॉ. सतीशचन्द्र जैन 'सुदर्शन'
जवेरा (जिला दमोह म.प्र.)

('ज्योतिषियों से सावधान' इस पर हमें सैकड़ों पत्र मिले हैं, एकदम विरोध करनेवाले पत्रों की संख्या लगभग आधी है । सबके नाम छापना संभव नहीं है । हमारे आभार । सं.),

नववर्ष में आपकी पत्रिका और भी आकर्षक बने ! 'समय के हस्ताक्षर' के अंतर्गत आपने ज्योतिष-विज्ञान की सत्य—संपृक्त भूमि को अपनी व्यावसायिक बुद्धि की कुटिलता से रौंदनेवाले ज्योतिमर्विदम्मन्यों का पर्दाफाश कर श्लाघनीय कार्य किया है ।

तथापि मैं आपसे एक मुद्दे पर असहमत हूं । आपका यह मानना कि विश्व के घटना-क्रम का आकलन ज्योतिष द्वारा संभव नहीं, पूर्वाग्रहग्रस्त मालूम पड़ता है । डॉ. बी. व्ही. रामन व अन्य कई ज्योतिर्विद विश्व के घटना-क्रम की भविष्यवाणियां वर्षों से करते रहे हैं । इन भविष्यवाणियों की सत्यता का प्रतिशत उत्साहवर्धक रहा है । शत-प्रतिशत सत्यता की अपेक्षा करना इसलिए उचित नहीं क्योंकि हम मौसम विज्ञानियों व चिकित्सकों के निष्कर्षों की शतप्रतिशत अचूकता की अपेक्षा नहीं करते ।

यदि सरकार इस विद्या को विश्वविद्यालय

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुचित प्रतिष्ठा दिलवायें व इस क्षेत्र में शोध-कार्यों की निरंतरता बनी रहे तो भारतवर्ष का विश्व को योगदान अनुपमेय हो सकता है ।

अंत में मेरा नम्र निवेदन है कि मात्र आलोचना से ज्योतिषविद्या का स्तर ऊंचा नहीं उठ सकता । आप सही ज्योतिषियों को पुरस्कृत व सम्मानित क्यों नहीं करते जिनकी भविष्यवाणियां सच के अत्यंत निकट पहुंच चुकी हैं ?

—नरेन्द्र दीक्षित
इंदौर

विश्लेषण फितूर है

'मुजरिम हाजिर है' शीर्षक से प्रकाशित शिवप्रसाद सिंह की कृति यथार्थपरक थी । वस्तुतः स्वप्न या कल्पना सदैव यथार्थ का प्रतिबिंब नहीं हो सकती क्योंकि 'एडिशनल फैक्टर्स' पर हम समवेत रूप से कभी विचार ही नहीं कर पाते । ये तो अतिथियों की मानिंद कभी भी व्यवस्था के द्वार पर दस्तक दे जाते हैं । 'मॉस बिहैवियर' के संबंध में कोई भी पूर्वोक्ति व्यर्थ ही होती है विशेषकर अशिक्षा से ग्रस्त लोगों का समूह तो व्यवहारतः उच्छृंखल होता है । अब स्त्रियों की स्थिति के बेहतरी की परिकल्पना एक स्वप्न थी मगर व्यवस्था कुछ इस कदर गतिशील हुई कि राजनीति और समाज में सकारात्मक तादात्म्य स्थापित न रह सका और स्व की बुनियाद ने दोनों क्षेत्रों को समस्याओं से ग्रस्त अकेला बनाकर छोड़ दिया ।

व्यवस्था आज विश्लेषण के आधार पर तो कम से कम नहीं ही चल रही है और असंभावनाओं का घटन ही यथार्थपूर्ण बन चुका है । साहित्य व्यवस्था को प्रतिबिंबित करता है । अतः व्यवस्था की ही मानिंद साहित्य में यदि कोई संदेशवाहकता या सकारात्मकता नहीं रह गयी तो कदाचित यह कोई हैरतअंगेज बात नहीं ।

—जयंत चक्रवर्ती,
पटना

मैं पाठक बना

मेरे बड़े भाई 'कादम्बिनी' के नियमित पाठक और ग्राहक हैं लेकिन मैंने इसे पढ़ने की कभी जरूरत नहीं समझी क्योंकि मेरी धारणा 'कादम्बिनी' के प्रति सौ प्रतिशत प्रतिकूल थी । एक दिन यूंही जनवरी माह की 'कादम्बिनी' के पन्ने को पलटने लगा । पन्ने पलटते-पलटते मेरा मन 'कादम्बिनी' की रचनाओं में लगने लगा ।

स्थायी स्तंभों में, शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए, धरोहर, गोष्ठी और प्रवेश का मैं प्रशंसक हो गया हूं । ऐसी परिस्थिति में जबकि किसी विद्वान-लेखकों कवि की पुण्य-तिथि पर भी उनकी तसवीर कहीं नहीं छपती है । चित्रालय में साहित्यकारों का चित्र तो नदारद रहता ही है । आपने 'धरोहर' के अंतर्गत विद्वानों की तसवीर छापने की शुरूआत कर साहसिक परंपरा आरंभ की है ।

मुख्य रूप से कहानी का पाठक होने के कारण मैंने जनवरी माह की सभी कहानियों को पढ़ा, कई बार पढ़ा । सभी कहानियां पसंद आयीं, इसलिए अब मैं 'कादम्बिनी' का नियमित पाठक बन रहा हूं ।

—कला कौशल, बरौनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवा रचनाकारों के लिए

कादम्बिनी

अखिल भारतीय कहानी-प्रतियोगिता

आयु-सीमा पैंतीस वर्ष

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी हम अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता आयोजित कर रहे हैं। यह प्रतियोगिता गत वर्षों से एकदम भिन्न है। पिछले दो दशक में बदलते हुए प्रतिमानों और परिवेश में युवा वर्ग ने हिंदी कहानी के कथानक और शिल्प में कितने नये प्रयोग किये हैं, इसकी खोज करने का हमारा प्रयास है। इसीलिए यह प्रतियोगिता पैंतीस वर्ष की आयु तक के लेखक। लेखिकाओं के लिए घोषित की जा रही है।

इस प्रतियोगिता में निम्नलिखित पुरस्कार होंगे।

प्रथम पुरस्कार : २०००.०० रुपये

द्वितीय पुरस्कार : १५००.०० रुपये

तृतीय पुरस्कार : १०००.०० रुपये

आगामी अंक में

आश्रय के लिए भटकता एक तानाशाह
शाह के अंतिम दिन

ईरान के दिवंगत शाह की जिंदगी पर नया प्रकाश डालनेवाली रचना

नये जीवन की तलाश में
वे अपने को पिशाच मानते हैं !

अमरीका में कुछ लोग ऐसे हैं, जो नये जीवन और आनंद की तलाश में मानव रक्त पीने के आदी हो गये हैं। एक रोमांचक लेख

यादों के दायरे
लेखक : जो अब राष्ट्रपति हैं !

चेकोस्लोवाकिया के परिवर्तनों की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालनेवाला दिलचस्प यात्रा-वृत्त

यही नहीं और भी अनेक दिलचस्प रचनाएं

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. कहानी तीन हजार शब्दों से बड़ी न हो ।
२. कहानी सफेद कागज के एक ओर हाशिया छोड़कर टाइप की हुई हो ।हाथ से लिखी अथवा टाइप की कारबन प्रति वाली कहानी स्वीकार नहीं की जाएगी ।
३. प्रत्येक कहानी के साथ अपना पूरा पता अवश्य लिखें । और यदि वह वापस चाहिए तो उसके साथ पर्याप्त डाक टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा अवश्य रखिए ।
४. प्रतियोगिता के लिए भेजी गयी कहानियों के संबंध में किसी तरह का पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा और निर्णय के पश्चात जिन कहानियों के साथ वापसी के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा नहीं होगा, वे नष्ट कर दी जाएंगी ।
५. इस प्रतियोगिता के लिए एक उच्च स्तरीय निर्णायक मंडल का गठन किया जाएगा लेकिन संपादक का निर्णय अंतिम और मान्य होगा । उसके संबंध में न तो कोई दावा किया जा सकता है और न कारण पूछे जा सकते हैं ।
६. प्रतियोगिता में भाग लेनेवालों की आयु सीमा पैंतीस वर्ष रखी गयी है । इसके लिए कहानी के साथ आयु का प्रमाण-पत्र भेजना आवश्यक है । यह प्रमाण पत्र स्कूल सर्टिफिकेट हो सकता है अथवा जिस कार्यालय में कार्यरत हों, उसके अधिकारी का । जिन रचनाओं के साथ यह प्रमाण-पत्र नहीं होगा, उन्हें प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा ।

निर्णायक मंडल कुछ सांत्वना-पुरस्कार भी दे सकता है । हमारा प्रयत्न होगा कि ये पुरस्कार दिल्ली में आयोजित एक सादे समारोह में प्रमाणपत्र सहित पुरस्कृत रचनाकारों को भेंट किये जाएं ।

प्रतियोगिता में भेजी जाने वाली कहानियों के कथानक को हमने किसी एक विषय में बांधना उचित नहीं समझा है ।

कहानी भेजने की अंतिम तिथि : ३० अप्रैल १९९०

इटलीवासियों का नया शौक
वे चौकीदारी के लिए पालते हैं चीते और तेंदुए

इटली में इन दिनों एक नया शौक शुरू हुआ है । लोग मनोरंजन के लिए ही नहीं, घरों-दुकानों की रखवाली के लिए सिंह, चीते और तेंदुए पाल रहे हैं ।

सोवियत पुरातत्वविदों की खोज
हड़प्पा में भारतीय पंचांग मिला

सोवियत पुरातत्वविदों ने अपनी खोज द्वारा सिद्ध किया है कि मोहनजोदड़ो-हड़प्पा के लोग तिथियों की गणना के लिए पंचांग का प्रयोग करते थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

वर्ष ३०, अंक ५
मार्च १९९०

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

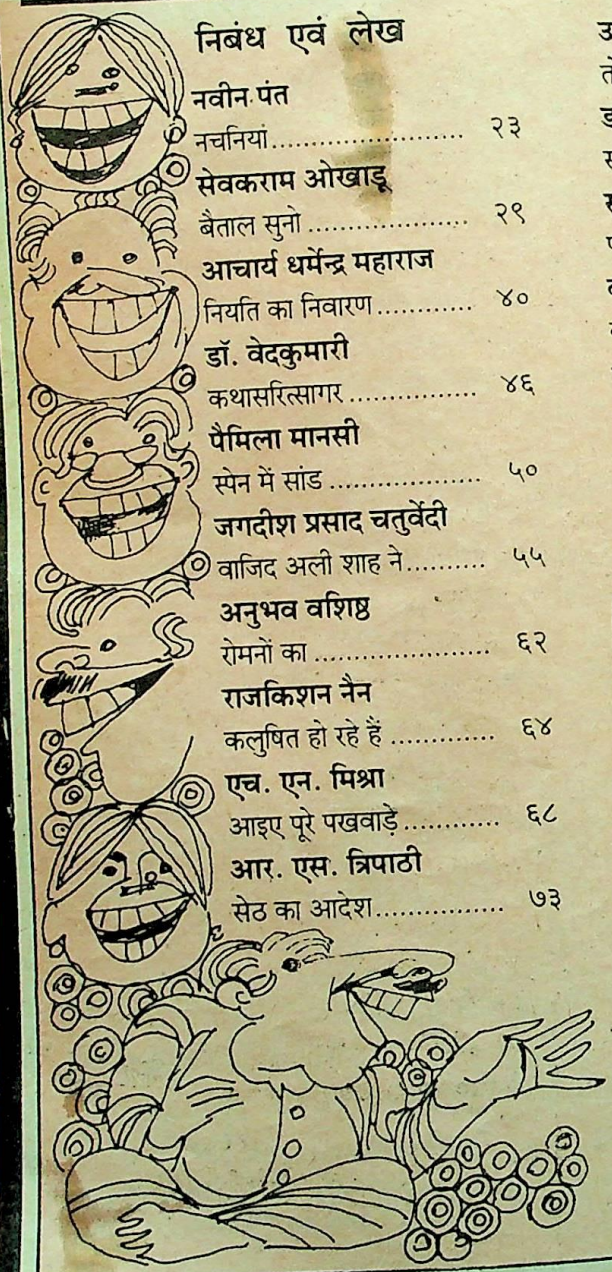

निबंध एवं लेख

नवीन पंत
नचनियां २३

सेवकराम ओखाड़ू
बैताल सुनो २९

आचार्य धर्मेन्द्र महाराज
नियति का निवारण ४०

डॉ. वेदकुमारी
कथासरित्सागर ४६

पैमिला मानसी
स्पेन में सांड ५०

जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
वाजिद अली शाह ने ५५

अनुभव वशिष्ठ
रोमनों का ६२

राजकिशन नैन
कलुषित हो रहे हैं ६४

एच. एन. मिश्रा
आइए पूरे पखवाड़े ६८

आर. एस. त्रिपाठी
सेठ का आदेश ७३

उमाशंकर चतुर्वेदी
तोरौ हंसना स्वभाव ७८

डॉ. रेखा रस्तोगी
संस्कृत साहित्य में फाग ८७

सुधारानी श्रीवास्तव
पत्र एक जगत भौजी का ९२

बी. आर. पद्म
बुल्लेशाह यूं बोले ९४

डॉ. सुधीर खेतावत
अद्‌भुत करिश्मे १०६

सुभद्रा मालवी
पूरे दरबार ने १०८

स्थायी स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए—६, वचन विथी—७, आस्था के आयाम—८, ज्ञान-गंगा—९, प्रतिक्रियाएं—१०, काल चिंतन—१८, बुद्धि विलास—१०१, आइए चलें जंगल की ओर—११८, विधि-विधान—१२५, इनके भी बच्चे जुदा-जुदा—१४१, गोष्ठी—१५०, तनाव से मुक्ति—१५७, दस्तक—१८०, प्रवेश—१८४, ज्योतिष समस्या और समाधान—१८६, सांस्कृतिक गतिविधियां—१८८, नयी कृतियां—१९०, यह महीना और आपका भविष्य—१९३, और अंत में—१९७

आवरण : वी.एन. एस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह
गदर के बाद बेगम.....११०
जगदीश किंजल्क
रंग की फुहारन में.....१२०
अशोक मिश्र
जो घर फूंके आपना.....१२९
कमलेश
जाने कहां गये वो दिन.....१३४
नेमिशरण मित्तल
तानाशाहों के क्रूर कारनामे.....१४२
राज बुद्धिराजा
अमरीकी डॉक्टर की.....१५४
दामोदर अग्रवाल
लंदन की चुड़ैलें.....१६२
डॉ. रामजी पांडेय
लघु हृदय तुम्हारा.....१६७
रमेशचंद्र राजा चौबे
फागुन में रसिया.....१७१
सुरेश धींगड़ा
इनकी सनक का.....१७६

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

अश्विनी कुमार दुबे
जब तक सूरज चांद..... ३५
डॉ. देवराज
ऐसे आयी रोशनी..... ६०
गोपाल चतुर्वेदी
दूरदर्शन और दर्शन शुल्क.... ८२
डॉ. संसार चंद्र
लाख रुपये की बात.....१०२

कविताएं

डॉ. उपेन्द्र रैणा/खोज.....११६
डॉ. उर्मिला शुक्ल/ एकता ११६
हरि जोशी/ वटवृक्ष.....११६
उमा श्रीवास्तव/ पड़ोसी.....११७
श्रीकृष्णराय हृदयेश/ पागलपन
११७

संपादकीय परिवार

सह संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक प्रभा भारद्वाज
भगवती प्रसाद डोभाल,

उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश,
सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त

प्रकाशक : संपादक
'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

मूल्य
वार्षिक : ७५ रुपये;
द्विवार्षिक : १४५ रुपये;
विदेशों के लिए : २९० रुपये वार्षिक
वायु सेवा से, समुद्री जहाज से : १३५ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-चिंतन

परिवर्तन !

हां परिवर्तन निश्चित नियति है !

□

—सैकड़ों वर्ष पुराना वृक्ष अचानक धराशायी हो गया !

—सूखी धरती और रेत के बीच से अचानक एक अंकुर फूटा और देखते-देखते बढ़ गया !

—सामने के वृक्ष से एक सूखी पत्ती टूटकर नीचे गिरी; जिंदगी का एक काल-क्षण क्षीण हुआ और पागल हम कि धूमधाम से मनाने चले : हमारा जन्मदिन है यह !

□

—सत्य विपरीत है !

—जन्मते ही मृत्यु का अध्याय लिखना शुरू हो जाता है !

—जन्म क्रंदन से होता है; आज तक कोई हंसते हुए पैदा नहीं हुआ, पैदा होते ही रोना उसकी आवश्यक परिणिति है !

—सोचना होगा, रोते हुए हम जन्म लेते हैं और जाते समय सभी को रुलाकर जाते हैं— हंसते हम कब हैं ? हंसता कौन है ? हंसता कैसे है ?

—जीवन की बृहत्तर यात्रा में सुखदतम क्षण भी आयें तो भी हम खुलकर, फूटकर, मनभर हंस नहीं सकते । इसलिए शायद कि हमारे 'परम हितैषी' ही हमें हंसने नहीं देते । जो कुछ हम उस क्षण का भोग करते हैं वह मात्र हमारा आंतरिक संतोष है ।

—तब ?

—सत्य यह है कि जन्म लेने के बाद अपने क्रिया-कलापों से और अंतिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

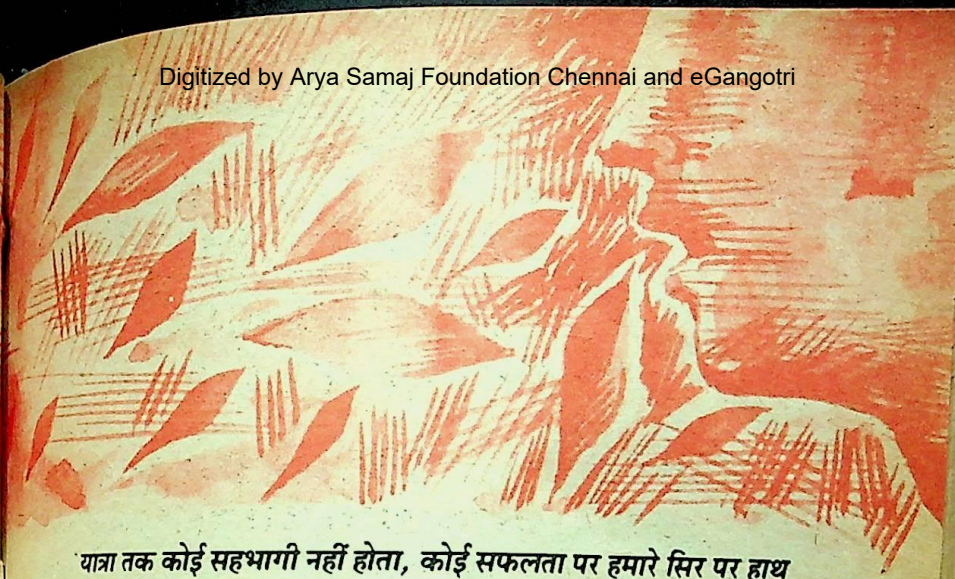

यात्रा तक कोई सहभागी नहीं होता, कोई सफलता पर हमारे सिर पर हाथ नहीं रखता ।

—इसके ठीक विपरीत मृत्यु होते ही हम परम श्रेष्ठ, आदरणीय, अनुकरणीय, अध्येता बन जाते हैं और कई बार जड़-पत्थर के रूप में चौराहों पर अवश-विवश दिन-रात पहरा देते हुए, हर क्षण हर दृश्य के दृष्टा होते हैं । पुष्पहारों से आच्छादित किया जाता है और गुणगानों के अपरिमित स्वर हमारे भोगताओं के लिए कर्ण प्रिय मधुर संगीत बनते हैं ।

—यहीं अनुभव होता है : सत्य का जन्म— विरोधाभासों से ही होता है ।

—संज्ञाहीन मिथक सार्थक होकर श्वासों के उच्छवास बनते हैं ।

□

—शांति एक ऐसा पक्षी है जो न कभी जन्मा और न कभी जन्मेगा, लेकिन अपने नाम की निस्सार्थकता के साथ सदैव जीवित रहेगा । संभवतः इसीलिए यह सोचने के लिए विवश होना पड़ता है कि जीवनदाता कौन है ?

—इस प्रश्न का विचित्र-सा किंतु सत्य उत्तर किसी ने दिया : जीवन तो एक बोतल में जन्म ले सकता है, मात्र चाहिए ब्रांडी का एक गिलास जिसमें वे सब वायुतत्व हों जो विश्व में और वातायन में व्याप्त हैं ।

—अर्थ हुआ जीवनी-सृष्टि का नियंता अपनी महानता का दंभ नहीं भर सकता । उर्वर मस्तिष्क ब्रांडी के गिलास में भी प्राणवायु पैदा कर सकता है । और गहराई में जाइए तो फलों को सड़ने के लिए छोड़ दीजिए, वहां प्राणतत्व दृष्टिगोचर हो जाएंगे । पृथ्वी में व्याप्त दो-तीन अवयवों को मिलाकर काल-खंड के स्पर्श की प्रतीक्षा कीजिए, प्राण तत्व जन्म ले लेंगे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

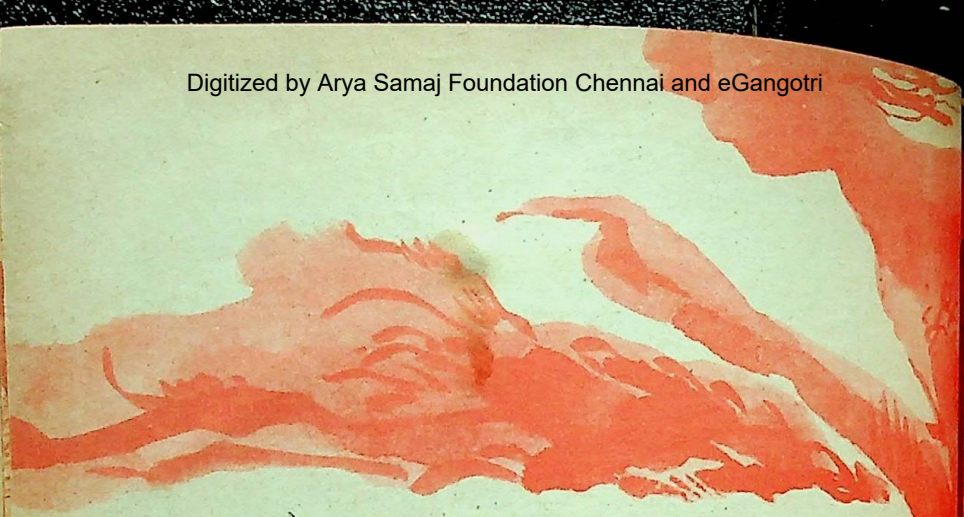

भले ही वे विषधर क्यों न हों ?

—विषधर कौन नहीं हैं मनुष्य से बड़ा विषैला जानवर सभ्यता के आदिकाल का मिथक डायनासोरस भी नहीं रहा ।

—कहा जाए तो; हम सब विषधरों से व्याप्त विश्व के स्वयं विषधर प्राणी हैं ?

—यह सत्य है तो समस्त विश्व चेतना विष-चेतना है; स्वीकारना होगा इसे इसलिए कि रोगी में व्याप्त आंतरिक विष, दूसरे विष से ही दूर होता है और विष को विष काटकर नये चेतना के द्वार खोलता है ।

□

—प्रसंग विवादास्पद हो सकता है, अनेक पहलुओं में विभाजित भी परंतु जो सत्य है उसका अस्वीकार कहां ?

—विज्ञान को ही लें : विज्ञान अंतिम सत्य नहीं है । विज्ञान अपनी आस्थाओं पर ही स्थिर नहीं रहता । विज्ञान निरंतर अपने को ही नकारता हुए नये प्रतिमान बनाता है, उन्हें तोड़ता है और फिर फिर-फिर गढ़ता है । नन्हें बच्चे-सा खेल नहीं है यह— तोड़ना, गढ़ना, तोड़ना, जोड़ना, फेक देना और फिर उसी को पाने के लिए नन्हें पैरों से सरकना !

—तब यह भी कहा जा सकता है कि विशाल प्रभा—मंडल नियमित और संचालित प्रक्रिया नहीं है ।

—प्रभा मंडल विडंबनाओं और उलकाओं का शिकार है ।

—प्रभा मंडल संघर्ष का केंद्र है ।

—संघर्ष से ही विध्वंस होता है और विध्वंस से ही निर्माण !

—निर्माण यानी आविष्कार : आविष्कार के लिए महान मस्तिष्क चाहिए । बिना महान मस्तिष्क के महान आविष्कार हो ही नहीं सकते ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—इन विपरीत प्रक्रियाओं और प्रतिभाओं के बीच ही सारे परिवर्तन होते रहते हैं; इनसे कभी हम विज्ञ और अधिकांश अविज्ञ ही होते हैं !

—ऐसी उलझनपूर्ण सृष्टि के हम विवश प्राणी बेबस नहीं है, यही हमारी महानता और सार्थकता है :

ज्ञात भी है, अज्ञात भी
ज्ञान भी है, अज्ञान भी
खुले चक्षुओं के ऊपर द्वार
प्रकाश भी है, अंधकार भी

—पंक्तियां देखिए : सार्थक ध्वनि क्या है ? सर्वत्र हम हैं, सर्वज्ञ हम हैं, ज्ञान के बीच जीते हैं, अंधकार में भी हैं, महानता के गीत रचते हैं, महान बनाते हैं, परापेक्षियों को, हम स्वयं क्या बनते हैं, जानना चाहा है कभी ?

—'नेति नेति' !

—हां, एक विचारक ने कह दिया 'नेति नेति'; ठहर क्यों गये हम ?

—अनादिकाल से आज तक उच्चरित हर शब्द क्या अंतिम सत्य है ?

—नहीं, कह चुके हैं हम अंतिम सत्य कुछ भी नहीं है ! कुछ भी नहीं है तो 'नेति नेति' हमारी चुनौती का पात्र है !

—आविष्कार किये हमने विकसित हुए कुछ, हुए कुछ तिरोहित; संचालित किये हमने सृष्टि के भोग-तंत्र, प्राप्त हुए कुछ अप्राप्त रहे अनेक; और जीते-जन्मते, घिसटते-रोते, हंसते-उछलते हम कब आये, कब गये हिसाब है किसी श्रेष्ठिजन के बही खाते में ?

—मनुष्य कभी ठहरा नहीं

—मनुष्य कभी मोहताज हुआ नहीं

मार्च, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—मनुष्य अपने विशेषण को सार्थकता देता रहा है हमेशा

—तो ?

—चुनौती है; स्वीकार कीजिए, सामने आइए : हमारा स्वर है, नहीं है कुछ 'नेति नेति !

—आगे बढ़ना लक्ष्य होगा; स्वर का संधान स्वर से करना होगा, मनुष्यता की शक्ति को महाशक्ति से जोड़ना होगा और मनुष्यता की कमजोरी को उसी तरह पैरों तले रौंदना होगा, जैसे रोज हम 'महा वैभवशाल' धरती को निर्ममता पूर्वक रौंदते हैं ।

□

—यही है परिवर्तन

—देख रहा हूं सामने वृक्ष से फिर एक सूखी पत्ती हिली, लड़खड़ाई और नीचे गिरी !

—कोपल से लेकर सूखने और गिरने तक का इतिहास वेद और पुराणों से प्राचीन है !

—इतिहास : वेद और पुराणों का मात्र लेखा-जोखा है !

—इतिहास : हमारे जीवन का आरंभ और अंत है

—इतिहास : तब भी मनुष्य की निरंतरता का अपराजेय पृष्ठ है

—तब ?

—किसका जन्मदिन और किसका मृत्युकाल ?

—चरैवेति चरैवेति : इसी में परिवर्तन आवृत्त है !

—हंसने के लिए हम जन्मदिन मना लें यह जानते हुए भी कि जीवन का एक पत्ता आज टूट गया !

—रोने के लिए हम शोक गीत लिख लें कि जहां से पत्ता टूटा है, वहीं फिर एक नयी कोपल फूटेगी और संघर्ष का यह क्रम अनवरत चलता रहेगा।

—अपनी मानसिक चेतना को तब व्यतीत की गिरवी हम स्वीकार नहीं करेंगे; नया इतिहास हमारा लक्ष्य होगा, भले कोई और उसे घटा दे या मिटा दे !?

—अपने ही पैरों के सधे चित्र गीली मिट्टी में देखने के सुख से हम अपने आपको वंचित नहीं करेंगे, परिवर्तन का सार्थक स्वर यही प्रतिध्वनि है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

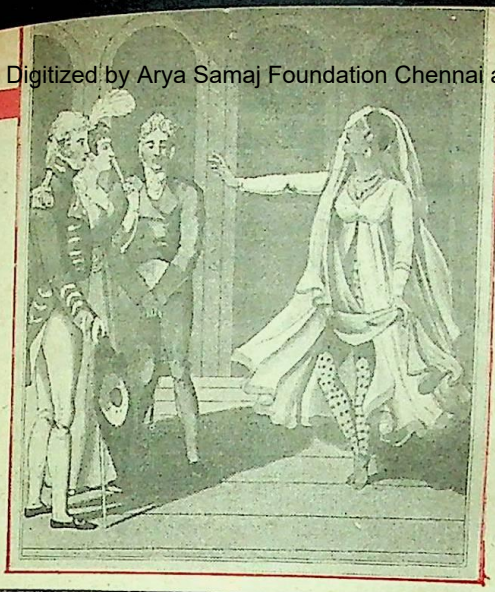

साहिबों का मनोरंजन करती हुई लखनऊ की नर्तकी

नचनियां
अंगरेज साहिबों के मनोरंजन

● नवीन पंत

वह भी एक जमाना था, जब चाहे राजा हो या सुलतान अथवा बादशाह, राजदरबार में एक से एक कमसिन नचनियों के नाच होते थे। थके-हारे राजा, महाराजा, बादशाह, जमींदार और जागीरदार निहायत खूबसूरत नचनियों के साथ रंगमहल में रंगरेलियां करते थे। आनंद विभोर होकर उनके रास-रंग में डूब जाते थे। धरती पर ही स्वर्ग की अप्सराओं और हूरों की महफिल सजाते थे।

राजा के साथ नर्तकियों के एक दल का होना हमारी संस्कृति का आवश्यक हिस्सा रहा है। प्राचीनकाल में यह मानकर चला जाता था कि वीर भोग्या वसुंधरा—पृथ्वी वीर पुरुषों के भोगने के लिए है। धरती पर जन्म लेनेवाली सभी सुंदर वस्तुएं वीरों के लिए हैं।

थिरकती सुंदरियां और इतिहास के अंधेरे

प्रचलित कथा के अनुसार बारहवीं शताब्दी में उत्तर भारत के एक हिंदू राजा को हर सुंदर लड़की से विवाह करने का खप्त था। उसके अंतःपुर में हजारों औरतें थीं। राजा वैद्यों, कविराजों और रसायन विशेषज्ञों से घिरे रहते थे— नवयौवन, शक्ति और स्फूर्ति की लालसा में।

चारण, दरबारी अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए राजा को धार पर चढ़ाये रहते थे। राज दरबार में रोज 'इंद्र-सभा', लगती थी। एक से एक सुंदर नर्तकियां राजा को रिझाने में लगी रहती थीं। आयु के बोझ से दबे थके राजा के मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

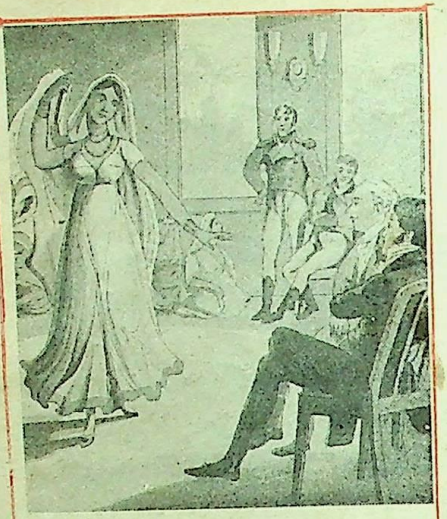

सर चार्ल्स डी ओयली (१८१३) द्वारा चित्रित रेखांकन के आधार पर छापा चित्र

सुंदर षोड़शी कुमारियां भी स्फूर्ति और लालसा उत्पन्न नहीं कर पाती थीं । एक दिन राजा ने अपने अंतरंग दरबारियों से कहा, "अब मैं साठ वर्ष का हो गया हूं । मुझे परलोक सुधारने की ओर ध्यान देना चाहिए ।"

राजा की बात सुनकर दरबारियों के पैरों तले जमीन खिसकने लगी । उनको दिन में ही तारे दिखायी देने लगे । उनको लगा कि अगर राजा ने यह सब बंद कर दिया तो उन्हें कौन मुफ़्त में मालपुए उड़ाने देगा ।

दरबारियों ने एक स्वर से कहा, "साठा तो पाठा होता है महाराज । जहां तक परलोक सुधारने की बात है राजा तो स्वयं विष्णु के अवतार होते हैं । उन्हें पूजा-पाठ करने की क्या जरूरत ?"

दरबारियों की बात सुनकर राजा को लगा कि 'साठा तो पाठा' वाली कहावत सच है । उन्होंने अगले तीन महीनों में ताबड़ तोड़ एक दर्जन विवाह और रचा लिए । राग-रंग में कुछ दिन और बीत गये । फिर मुहम्मद गोरी ने राज पर हमला किया । ११९३ में चंदवार की लड़ाई में राजा मारे गये और इतिहास के गुमनाम अंधेरे में खो गये ।

सुंदरियों के नेत्रों के कटाक्ष सभी को समान रूप से घायल करते हैं । हिंदू—मुसलमान या कोई भी अन्य धर्मावलंबी इससे बच नहीं सकता । इल्तुमिश का पुत्र रुकनुद्दीन फ़ीरोज़ शाह नवयौवनाओं की सुंदर बांकी चितवन से इतना घायल हुआ कि उसका इलाज ही नूपुरों की झंकार बन गया । वह नूपुरों की झंकार से उठता था और उसी के मधुर संगीत में निद्रा देवी की गोद में जाता था ।

इतिहास में धड़कता सौंदर्य का जादू

आमोद-प्रमोद और नाच का आकर्षण यौवन में कितना प्रबल होता है इतिहास में उसके अनेक किस्से हैं । कैकूबाद, जो सात वर्ष की उम्र में कुछ ही समय के लिए दिल्ली की गद्दी पर बैठा । जहांदार शाह, जिसने अपनी प्रेमिका और उसके रिश्तेदारों और दोस्तों को शाही फौज में बड़े-बड़े ओहदे दिये । मुहम्मद शाह रंगीला जिसे राज-काज से बढ़कर नाच-गाना पसंद था । जो एक बाई के नाच पर हजारों अशर्फियां न्यौछावर कर देता था । मोहम्मद शाह को गद्दी क्या मिली उसे लगा उसके लिए जन्नत का द्वार इसी धरती पर खुल गया । मोहम्मद शाह को जन्नत की हूरों से मिलने का सब्र न था । उसने अपने दरबार में ही एक से एक बढ़कर हूरें इकट्ठी करनी शुरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर, सुकोमल और सुनयना भारतीय नचनियां अपने मधुर संगीत और मोहक नृत्य से अंगरेज साहिबों का मन मोह लेती थीं। कुछ बाइयां अपनी बातचीत, शेरो-शायरी, हास-परिहास और लतीफों से सभी को आकृष्ट कर लेती थीं। इस काल के अधिकांश अंगरेजों की राय थी कि भारतीय नाच यूरोपीय नृत्य-नाटक, ओपेरा से अधिक श्रेष्ठ है।

कर दीं। मुहम्मद शाह का बेटा अहमद शाह भी धरती को जन्नत बनाने में अपने पिता से पीछे नहीं था। उसे विद्वानों की नहीं, साजिंदों, और तवायफों की संगत पसंद थी।

नाच देखने के मामले में अंगरेज भी किसी से पीछे नहीं थे। अठारहवीं शताब्दी के अंत में जब मुगलिया सल्तनत कमजोर हो गयी और बंगाल, बिहार और उड़ीसा के सूबे की दीवानी कंपनी सरकार को मिली तो उसके कर्मचारियों ने मुगलों और देशी राजा-रजवाड़ों के नक्शे-कदम पर चलना शुरू किया।

कंपनी के सैनिक अफसरों, अधिकारियों और कर्मचारियों को भी मनोविनोद और दिल बहलाने के लिए तवायफों और बाइयों के साथ की जरूरत होने लगी। कंपनी के अधिकारी नाच की महफिलें आयोजित करने लगे, नाजो—अदा से हुक्का पीने लगे, पालकी, हरम, कनीजें, बाईजी तथा साजिंदे रखने लगे। इसका कारण खोजने के लिए बहुत अधिक सिर खुजलाने की जरूरत नहीं है। अठारहवीं शताब्दी में बहुत ही कम अंगरेज औरतें भारत आ पाती थीं। ब्रिटेन से भारत आने का टिकट बहुत अधिक था। कंपनी के नौकरों की तनख्वाहें इतनी अधिक नहीं होती थीं कि वह आराम के साथ अपना परिवार अपने साथ रख सकें। अतः कुछ अंगरेज स्थानीय औरतें रख लेते थे और कुछ नचनियों के साथ स्वर्ग सुख प्राप्त करते थे।

नाच के बिना हर आयोजन अधूरा

सुंदर, सुकोमल और सुनयना भारतीय नचनियां अपने मधुर संगीत और मोहक नृत्य से अंगरेज साहिबों का मन मोह लेती थीं। कुछ बाइयां अपनी बातचीत, शेरो-शायरी, हास-परिहास और लतीफों से सभी को आकृष्ट कर लेती थीं। इस काल के अधिकांश अंगरेजों की राय थी कि भारतीय नाच यूरोपीय नृत्य-नाटक, ओपेरा से अधिक श्रेष्ठ है। उन्हें नाच देखने का व्यसन था। युद्ध, शिकार, दावत और मनोविनोद का कोई भी कार्यक्रम नाच के बिना अधूरा समझा जाता था।

देशी राजा-रजवाड़े कंपनी बहादुर के सैनिकों-अफसरों के लिए जब कभी दावत या स्वागत समारोह का आयोजन करते थे तो उसके साथ की ये व्यवस्था अवश्य की जाती थी। भारत में आनेवाले हर अंगरेज के लिए नाच का आयोजन अवश्य किया जाता था और उसे एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

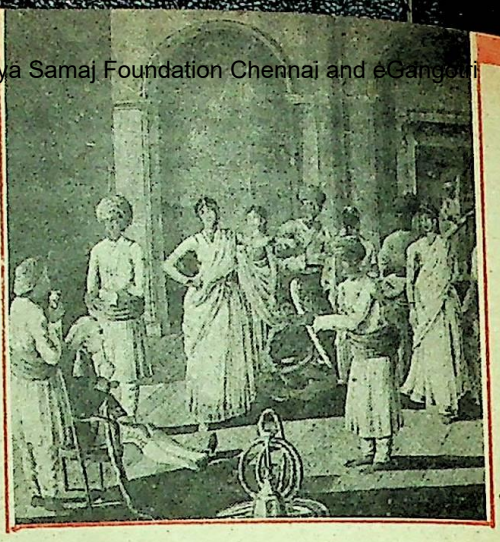

लेख में प्रयुक्त चित्र : इंडिया आफिस लाइब्रेरी लंदन में

बहुत बड़ी घटना समझा जाता था । अंगरेज स्त्री-पुरुष दोनों बड़ी दिलचस्पी और धैर्य से नाच देखते थे ।

नाचनेवालियां उत्कृष्ट नाच और संगीत का प्रदर्शन करती थीं । उन्हें बहुत छोटी उम्र से नाचने-गाने और संगीत की शिक्षा दी जाती थी । जब वह अपनी कला में प्रवीण हो जाती थीं तभी उन्हें महफिल में लाया जाता था ।

नाचनेवालियां श्रृंगार के लिए अपनी अंगुलियों के सिरों, हथेली, पैर के तलुओं में मेंहदी लगाती थीं । पैर में कभी-कभी तेज लाल महावर भी लगाया जाता था । उनकी होंठ पान से रंगे होते थे । वे आंखों में काजल या सुरमा लगाती थीं । जन्म के समय ही उनकी आखों की दोनों ओर की थोड़ी—थोड़ी चमड़ी निकाल ली जाती थी ताकि उनकी आंखें बड़ी दिखायी दें और वह अधिक तेजी से आंखों के बाण चला सकें ।

सांचे में ढला सौंदर्य

अठारहवीं शताब्दी में भारत आये एक अंगरेज, जेम्स फोरबस ने नचनियों के बारे में लिखा है, "नचनियों का शरीर अत्यधिक सुकुमार होता है । उनका चेहरा-मोहरा बहुत ही आकर्षक तथा अंग-प्रत्यंग सांचे में ढला लगता है । यद्यपि उन्हें बचपन से ही अपने पेशे का प्रशिक्षण दिया जाता है, तथापि उनकी चाल-ढाल, हाव-भाव और व्यवहार में शालीनता और मर्यादा होती है । उनके हाव-भाव में गुस्ताखी की नहीं, मन को मोह लेने की अदा होती है । उनके नाच के लिए संपूर्ण एकाग्रता आवश्यक होती है । उनके पैर में छोटे-छोटे नूपुर बंधे होते हैं । नृत्य के दौरान नूपुरों की ध्वनि संगीत के साथ पूरी तरह मिल जाती है ।"

अंगरेज छावनियों में नचनियों की बहुत मांग रहती थी । उन दिनों इन छावनियों का जीवन अपेक्षाकृत सुरक्षित था । अतः नचनियों के अनेक दल सैनिक छावनियों में रहते थे । अंगरेज सैनिक अफसर इन नचनियों को पूरा संरक्षण प्रदान करते थे ।

बंगाल के नव संपन्न जमींदार, भद्रलोक दुर्गापूजा, विवाह, जनेऊ-जैसे मांगलिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसरों पर नाच का आयोजन करते थे। नाच और बाईजी के आगमन के बिना ये सब कार्य अधूरे समझे जाते थे। नाच के अवसर पर कंपनी बहादुर के अफसर, कर्मचारी और गुमाश्ते अति विशिष्ट अतिथि होते थे।

नाच के, लिए दूर-दूर से 'बाईजी' बुलायी जाती थीं। इनमें से कुछ सुसंस्कृत, मेधावी और व्युत्पन्नमति भी होती थीं और अपनी हाजिर-जवाबी, शेरो शायरी की जानकारी और लतीफों से लोगों को मंत्र मुग्ध और निरुत्तर कर देती थीं। वे अपने शारीरिक सौंदर्य, नाच की कला, संगीत, सुंदर कीमती वस्त्रों एवं आभूषणों के साथ अपने वाक चातुर्य और ज्ञान का पूरा उपयोग करती थीं।

इन नर्तकियों की पोशाकें बहुत कीमती, उस समय के पचास हजार रुपये तक की होती थीं। उस पर सोने चांदी का काम होता था। वे रत्न जड़ित कीमती सुंदर कलात्मक आभूषण पहनती थीं। उनकी वेणी, कमर तथा अन्य स्थानों से फूलों की झालरें लटकती रहती थीं। उनकी चोली को रत्नों और जरी के काम से सजाया जाता था।

नर्तकियों के प्रशंसक समाज के सभी वर्गों में होते थे। अनेक अंगरेज सैनिक अफसर भी उनके प्रेम में दीवाने हो जाते थे। इस काल में दिल्ली की तबायफ अलफीना और कौनम की ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। अलफीना की आवाज बहुत ही सुरीली थी और कानों में रस घोलती थी। अपनी कला, सौंदर्य और तहजीब के कारण उसने अंगरेज सेनापति लार्ड कांबरमीयर का मन भी मोह लिया था।

अप्रतिम नृत्य मुद्राएं

नाचनेवालियों का शरीर सांप की-सी तेजी और चपलता से घूमता था। उसकी मुद्राएं नृत्य की कथा फिर गीत के अनुसार प्रेम आराधना, श्रद्धा और के अनुसार भय, श्रद्धांजलि, अनुराग, घृणा और अन्य प्रबल भावों को प्रकट करती थीं। नाचनेवाली अपनी कथा कहते हुए आंसू बहाती थीं। दर्शकों को यह विश्वास दिलाने के लिए कि आंसू नकली नहीं हैं, मशालची अपनी मशाल नर्तकी के चेहरे के समीप कर देता। तालियों की गड़गड़ाहट और वाह-वाह की आवाज के साथ नृत्य समाप्त हो जाता था। अब न ऐसी नर्तकियां हैं और न दर्शक हैं। केवल उनकी याद भर रह गयी है। (लेख के कुछ अंश 'इंडिया मेगजीन', जनवरी ९० से साभार)

—२२ मैत्री एपार्टमेंट्स ए/३ पश्चिम विहार,
नयी दिल्ली

मूर्ख, मित्र, गुरु और स्वजनों के साथ बुद्धिमान व्यक्ति को व्यर्थ विवाद नहीं करना चाहिए।

—चाणक्य

पाठक उस जगत को बड़ी उत्सुकता से खोजता है, जिसकी रचना लेखक उसके लिए करता है।

—जॉन गाल्सवर्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बॉस के २२ गुण • निकोलाई मात्वियेव

बॉस हमेशा सही होता है । सभी बॉसों को सेवा उचित ढंग से की जानी चाहिए ।

हर बॉस कभी बच्चा भी रहता है ।

एक महिला भी बॉस बन सकती है ।

अधीनस्थ महिला और पुरुष कर्मचारी यदि विवाहित हैं तो किसी अधीनस्थ कर्मचारी या बॉस को जन्म दे सकते हैं ।

अधीनस्थ कर्मचारी के बिना बॉस दुःखी हो सकता है और गंभीर रूप से बीमार हो सकता है ।

अधीनस्थ कर्मचारी नहीं रहने पर बॉस कुछ वस्तुओं को आदेश दे सकता है ।

यदि बॉस आपका अभिनंदन नहीं करता है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि उसके दिमाग में कोई बात है ।

यदि बॉस आपका अभिनंदन करता है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि उसके दिमाग में कोई बात नहीं है ।

बॉस बहुत ज्यादा सोचता है ।

वे बॉस खराब हैं जो जनरल बनने का सपना नहीं देखते हैं ।

बॉस को गाली देने के लिए मछली मारने का बहाना नहीं चल सकता है ।

भावुक बॉस अपने चतुर्दिक लोगों के लिए खतरनाक होता है ।

हर बॉस को वैसा ही अधीनस्थ कर्मचारी मिलता है जैसा वह स्वयं होता है ।

जितनी संख्या में अधीनस्थ कर्मचारी होते हैं तो उन पर हुक्म चलाना उतना ही आसान होता है ।

अच्छे बॉस के लिए जरूरी नहीं है कि वह हर रोज ऑफिस आये ।

कभी-कभी बॉस आपस में मिलते हैं और देर तक बातें करते हैं ।

बॉस होने का मतलब काम बिगाड़ना है पर उसके लिए बॉस की तनख्वाह अच्छी होती है ।

कोई पैदायशी बॉस नहीं जन्म लेता पर भाग्य के किसी खेल से वह बॉस बन जाता है ।

यदि कोई बॉस पेंशन लेकर अवकाश ग्रहण करता है या स्वास्थ्य के कारण अवकाश ग्रहण करता है तो वह बॉस नहीं रहता है ।

यह देखना अधीनस्थ कर्मचारी का पुण्य कर्त्तव्य है कि बॉसों की संख्या पारिस्थितिकी के संतुलन को बिगाड़ न दे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैताल सुनो—२१

हे सिपहिया ऐसा ही बोलें : बदनाम नहीं होगी चाणक्य नगरी

'बैताल सुनो, जो पीढ़ी एक शव को अब तक कांधे पर ढोती आयी है, मैं उनमें नहीं हूं और अब यह स्थिति नहीं चलने दूंगा।''

मार्च, १९९०

राजा विक्रम आज बहुत सहज नहीं थे। उनके मस्तिष्क में लगातार यादों के घेरे बन रहे थे। बैताल ने ऐसी ही हालत में दूध का गिलास लाकर दिया तो विक्रम बोले, 'नहीं बैताल, आज कुछ खाने-पीने का मन नहीं है ?'

'सो क्यों ?' बैताल का पूछना सहज था।

महाराज विक्रम अनमने तो थे ही, कुछ बोले नहीं। बैताल दूध का गिलास लिये खड़ा रहा। लगता था; विक्रम अपलक किसी और लोक को देख रहे हैं।

अचानक वे उठ खड़े हुए। यहां-वहां घूमने लगे। बैताल दूध का गिलास रखकर वापस आया। वह भी विक्रम के आगे-पीछे घूमने लगा।

तभी विक्रम बोले, 'सुनो बैताल, आज मुझे बहुत-कुछ याद आ रहा है। धारा नगरी, महाकाल की नगरी उज्जैनी, जोगनियों के देश, राक्षसों की लीलाएं और अनगिनत प्रेम प्रसंग... ।'

'महाराज' बैताल बोला, 'चाणक्य नगरी में क्या कमी है। आज तक जो हाल आपने बताये बेहाल करने योग्य नहीं हैं ? यहां भी जोग-जोगनियां हैं, भूत-प्रेत हैं, चुड़ैले हैं, प्रेम के ढेर से किस्से हैं। महाराज, गुस्ताखी न हो तो बताऊं, चाणक्य नगरी में चाणक्य नगरी राजा के राज्य में प्रेम और प्रेम में हत्याएं आम बात है। यहां तो बड़े-बड़े अखबार निकलते हैं। हमारे यहां अखबारों की दुनिया नहीं थी। यहां के अखबारों में रोज बड़ी-बड़ी सुर्खियां होती हैं— बलात्कार, हत्याएं, लूट-पाट और पुलसिया के कारनामे। मैं तो कान पकड़ हूं, महाराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां जैसी पुलसिया हमने कहीं, नहीं देखी । देखती है तो पकड़ती है पकड़ती है तो डांटती है, डांटती है तो खाने को दौड़ती है । पिटाई कर है तो हाथ-पैर तोड़े है या जान लेवे है । महाराज, एक किस्सा सुनाऊं सुनने पड़ो है :

उज्जैन में राजा शतबुद्ध का राज्य था । पुलसिया और सादे वेष वहां घूमते थे । रात को एक चोर ने सेंध लगायी । सेंध तो लग गयी पर तभी सादे वेष में घूम रही पुलसिया वहां पहुंच गयी । चोर ने देखा तो पहले गुर्राया । जिधर पुलसिया के डंडे देखे तो समझा ये हमसे तेज सेंधमार है ।

बोला, 'भई, चलो दोनों मिल जाएं । यहां राजा को खजाना है मिलकर सोना लूट लें । कोई पुलसिया तो है नहीं ।' उस आदमी ने भरी बोला, 'इससे अच्छी बात क्या है ? अरे, जिसका खावे उसी नमक हरामी करे । शतबुद्ध के राज्य में सारी परजा सुखी है । से संतुष्ट है, तो तब भी उसकी नमक हरामी करेंगे, ठीक है न ?'

चोर भला ये मर्म का जाने है, सो सिर हिला के बोले, 'चलो शुरू करें । मेरे पास या तेज धार की सांभल है, हथौड़ा ऐसो कि में कितनो पीटो आवाज न होय । सारको काम चुपचाप... !'

बात पूरी नहीं हुई थीं कि छद्मवेषधारी आदमी ने सीटी बजा दी दो-चार वरदीधारी पुलसिया इकट्ठे हो गये । सबने मिलकर उस सेंध पर कब्जा किया और हाथ में रस्सी बांध के ले गये । बोले, 'नालायक तेरी समझ में नहीं आता कि नमकहरामी से बड़ा कोई पाप नहीं है ।'

सेंधमार चुप । पुलसिया ने उसे न मारा, न पीटा, हवालात में बंद कर दिया । दूसरे दिन राजा शतबुद्ध के दरबार में उसे पेश किया गया । राजा रोज दोपहर एक घंटे अपराधियों से आमना-सामना करते थे । किसी को छोड़ दें तो किसी की गरदन कत्ल ।

बड़े सिपहिया ने बताया, 'महाराजधिराज, ये आदमी नमकहराम है ! सेंध लगा रहा था, खजाना लूटना चाहता था ।'

महाराज बोले, 'खजाना तो जनता का है, सुरक्षित रखे या लूटे लेकिन नमकहरामी पाप है ।' महाराज ने हुक्म दिया कि सेंधमार में बंधी रस्सी छोड़ दी जाए । रस्सी छोड़ दी गयी ।

महाराज ने पूछा, 'तेरा नाम ?' वह रोने लगा, खूब गिड़गिड़ाए हुए ही, बोला, 'ययाति !'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो ययाति सुन, ये खजाना तो तेरा अपना है, सेंध क्यों लगा रहा था ?'

सेंधमार पसीने से तर । आवाज बंद । थोड़ी देर में पागलों की तरह चिल्लाया, 'मैं नमक हराम, मैं नमक हराम ।'

उसने राजा के पैर पकड़े । बोला, 'सरकार, मेरा सर कल्ल होना चाहिए । मेरे पास सब कुछ था तब भी सोना चुराने की बात मैंने सोची । धिक्कार है मुझे, मैं पापी हों, महाराज !

सेंधमार फूट-फूटकर रोता रहा । राजा के पैर आंसुओं से गीले हो गये । राजा ने हाथ पकड़कर उसे उठाया । उसकी ओर देखकर बोले, 'तूने पाप कबूल किया सो तेरी सजा पूरी हुई ।' फिर एक अशर्फी निकालकर महाराज ने सेंधमार को दी, 'ले, तुझे जरूरत थी, तभी तूने सेंध लगाने की सोची ।'

राजा सिंहासन से उठकर चले गये । सेंधमार पश्चाताप से परेशान पुलसियों के हाथ जोड़ता दरबार से बाहर । किसी ने कुछ नहीं कहा, कोई छेड़छाड़ नहीं ।'

राजा विक्रम चुपचाप बैताल की कहानी सुन रहे थे । बोले, 'कहां की बात करता है तू, ये चाणक्य नगरी के राजा का राज्य है । यहां तो पुलसिया भी चोरों, सेंधमारों और हत्यारों से मिल जाती है । और ऐसा न किया तो इतना पीटती है कि उसकी लाश नजर आती है । उसे लावारिस फेंक दिया जाता है । अखबारों में सुर्खियां कुछ और होती हैं । यहां के राजदरबार तक पहुंचना भी आसान नहीं है ।'

'महाराज' बैताल ने पूछा, 'अब तो राजा बदल गया है ।'

'सो क्या', विक्रम बोले, 'बाकी कुछ नहीं बदला, बैताल । सब वही है, वही पुलसिया है, वही अफसर ।'

राजा विक्रम यह कहकर कमरे में भीतर चले गये । भीतर से उन्होंने दरवाजा बंद कर लिया । बैताल ने दरवाजे पर कान लगाये तो सुना, विक्रम भजन कर रहे हैं । फिर उसने सुना, कुछ उठापटक हो रही है । कुछ-चहां का सामान शायद बदला जा रहा है ।

दो घंटे बाद वे बाहर आये । बैताल ने झांककर देखा, सारा सामान पेटियों में बंद था ।

उसने पूछा, 'यह क्या महाराज ?' विक्रम जोर से हंस पड़े । उन्होंने हंसना शुरू किया तो हंसते गये । फिर बोले, सेंधमारों से डर लगता

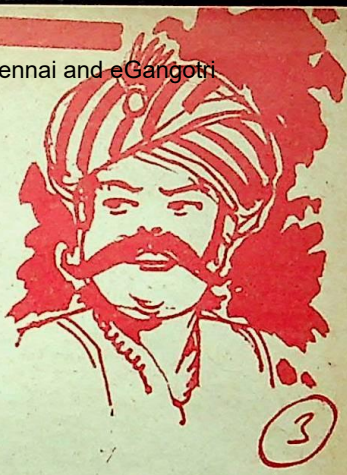

'ये चाणक्यनगरी के राजा का राज्य है । यहां तो पुलसिया भी चोरों, सेंधमारों और हत्यारों से मिल जाती है । और ऐसा न किया तो इतना पीटती है कि उसकी लाश नजर आती है ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ।'

विक्रम सीढ़ियां उतरने लगे । बैताल उनके पीछे हो लिया । दोनों सड़क पर आये और चाणक्य नगरी की गलियों पहुंच गये । वहां का तमाशा और अजीब था । लोग झुंडों में घूम रहे थे । उनके चेहरे रंगे थे । हाथ में पिचकारियां थीं । कुछ लोगों की काली हथेलियां साफ दिख रही थीं । हुल्लड़...धूमधड़ाका...भोंपू की आवाजें ।

विक्रम और बैताल एक किनारे से चुपचाप चलते हुए यह सब देख रहे थे । उन्हें लगता था, सारे लोग बौरा गये हैं । पुलसिया यहां-वहां खड़ी है, पर कुछ बोल नहीं रही । बैताल एक चपल बच्चे की तरह पुलसिया के पास पहुंचा । उसने पूछा, 'सिपाही जी ये क्या हो रहे है पहले तो सिपाही ने डांटा, कहा, 'दारोगा साहब कह !' फिर लगा पूछताछ करने, 'तू कोई विदेशी है क्या ? हिंदोस्तानी नहीं है ।'

उसी समय विक्रम को लगा, बैताल मुश्किल में पड़ सकता है पास गये । उन्होंने पुलसिया के हाथ जोड़े, 'बोले, यह नासमझ है, छोड़ दो, मेरे साथ है ।'

पुलसिया जोर से बोला, 'क्या पकड़ रहे हैं हम इसे ? दिखता नहीं तुझे ? आज सब माफ है । लोग होली मना रहे हैं । रंग खेल रहे हैं पर ये तो बता तुम दोनों कोई वेश बनाकर कहीं विदेश से तो नहीं आये ? कुछ तोड़-फोड़ करने का इरादा तो नहीं है ।'

पुलसिया पास पहुंचकर विक्रम की तलाशी लेने लगा । बैताल में आ गया, 'अरे पुलसिया, राजा विक्रम को नहीं पहचानता ?' । पुलसिया ने कहा, 'यहां राजा-वाजा कोई नहीं है । शराब तो नहीं रखी ।'

पुलसिया ने मुंह सूंघा । कोई गंध नहीं । 'अच्छा' उसने कहा, दोनों ने भंग पी रखी होगी !'

बैताल गुस्से में लाल हो गया । बोला, 'देख सिपहिया, हमसे महाराजा से मजाक न कर । होगी यह चाणक्य नगरी, होता तेरा जिसका तू चाकर है । महाराज विक्रम को सारी दुनिया जानती है तू ही है अनपढ़, मूर्ख कि जगत शिरोमणि राजा विक्रम से बात नहीं जानता ।'

इस बार सिपहिया का व्यवहार अजीब था । वह मुसकराया, आज होली सो सब माफ । कल मिलोगे तो तुम दोनों को देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई राजा ऐसे खुले आम सड़कों पर चलता है ?' चाणक्य नगरी के महाराज जब इन सड़कों से गुजरते हैं तो एक साथ कई कारें चलती हैं। एक कार भोंपू बजाती रहती है। कार के ऊपर लाल रोशनी होती है। सारे रास्ते बंद। मजाल है जनता की जो हिले अपनी जगह से। जब राज साहब की सवारी निकल जाती है तभी जनता को रास्ता मिलता है। तू ने देखा नहीं !'

पुलसिया अब भी क्रोध में नहीं था। राजा विक्रम ने दोनों हाथ जोड़े, 'धन्य हैं न आप, राजा की देखभाल करनेवाले हों तो ऐसे सेवादार लोग। दीखिए महामना, हम सचमुच इस लोक के बासी नहीं हस। दर्शक हैं, घूमने आये हैं, चले जाएंगे ?'

सिपहिया और विनम्र हो गया, बोला, 'कहां से आये हो ? किस देश के ? स्विटजरलैंड से, रूस से, अमेरिका से, कहां से ?'

राजा विक्रम ने अपने जेब से रुद्राक्ष की माला निकाली। उनकी उंगलियां माला में चलने लगीं। बोले, 'नहीं, महामना, हमने उन देशों का नाम नहीं सुना। हम तो चाणक्य नगरी को ही महान देश मानते थे सो चले आये। आये हैं तो चले भी जाएंगे। महानुभाव, इस कीचड़, रंग, गोबर से हमें बचा लीजिए तो आपकी कृपा होगी।'

सिपहिया ने कहा, 'आज का अखबार नहीं पढ़ा। उसमें साफ लिखा है बिना मरजी के किसी पर रंग डालना जुर्म है। तुम जा सकते हो, पर इस भीड़ में मत जाओ, कोई भी मनचला रंग फेंक देगा तो क्या करेंगे ?'

'हम पुलिस में शिकायत करेंगे'— बैताल बोला।

'नहीं' विक्रम ने बैताल को डांटा, 'महानुभाव ठीक सलाह दे रहे हैं, हम भीड़ में नहीं जाएंगे।'

विक्रम ने सिपहिया के सामने हाथ जोड़े, 'प्रणाम महोदय, आप प्रतिदिन इसी तरह बोलें तो चाणक्य नगरी का नाम बदनाम नहीं होगा। नमस्तुं !'

सिपहिया खड़ा देखता रहा। विक्रम बैताल के साथ थोड़ा आगे चले, फिर विक्रम ने कहा, 'बैताल, पवन शक्ति हमें प्रयोग करना चाहिए।' दोनों देखते-देखते हवा में उड़ गये।

सिपहिया आंखें मल-मलकर देखता रहा। उसकी समझ में कुछ नहीं आया, कौन थे ये ? दूसरे दिन अखबारों में हेडलाइन छपी, 'होली

मार्च, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दिन स्वर्गलोक से दो आदमी चाणक्य नगरी आये। विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि ये उड़न तश्तरियां थीं और पहली बार आदमी के देखे में देखी गयीं।'

आगे का किस्सा लंबा है। सार यही कि दूसरे दिन राजा विक्रम ने अखबारों में यह समाचार पढ़ा तो दंग रह गये। बोले, 'बैताल, मालूम है मैंने सामान क्यों बांधा था ?'

'समझ गया, महाराज' बैताल ने सिर हिलाया।

विक्रम ने कहा, 'बहुत कुछ देख लिया हमने चाणक्य नगरी में। अब अपने देस चलें। कभी फिर आएंगे तो चाणक्य नगरी के राज से पहले मिलेंगे, फिर चलेंगे खेत-खलिहान और गरीब जनता को देखने।

बहुत सबेरे वायु शक्ति का प्रयोग कर राजा विक्रम और बैताल अपने लोक को चल पड़े। 'फिर आएंगे' बार-बार उन्होंने कहा। सोते हुए चाणक्य नगरी को उन्होंने प्रणाम कर अपनी सद्भावना का परिचय दिया। अथ कथा अंश एक यहीं समाप्त।

सेवकराम ओझा

शबनम के लिए छाता

लखनऊ के एक नवाब बहुत ही अच्छी तंदुरुस्ती और भारी भरकम जिस्म के, दिलचस्प इनसान थे। एक बार वह बाजार में छाता लगाये चले जा रहे थे। रात हो रही थी, धूप का सवाल ही क्या था ! आसमान भी साफ था, बादलों का कहीं नाम न था फिर भी छाता ? लोगों ने आखिर पूछ ही लिया, "भला नवाब साहब, ये छतरी किस गरज से लगायी गयी है ?"

"अजी, शबनम तो गिरती है", नवाब साहब ने सादगी से जवाब दिया और आगे बढ़ गये।

वफादार कबूतर-तोते

लखनऊ के शीशमहल के एक दरोगा थे—[illegible] साहब। उनके लिए मशहूर है कि उन्होंने [illegible] बेमुरब्बत पक्षी को भी कबूतर की तरह [illegible] बना लिया था। वह बारादरी की छत पर [illegible] तीस तोतों की टुकड़ी उड़ाकर एक ही [illegible] उन्हें उतार लिया करते थे। वह अपने इस [illegible] पहले और आखिर उस्ताद थे। मीरन साहब [illegible] इमामबाड़ा मुफ्तीगंज की पुरानी प्रसिद्ध [illegible] से एक रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

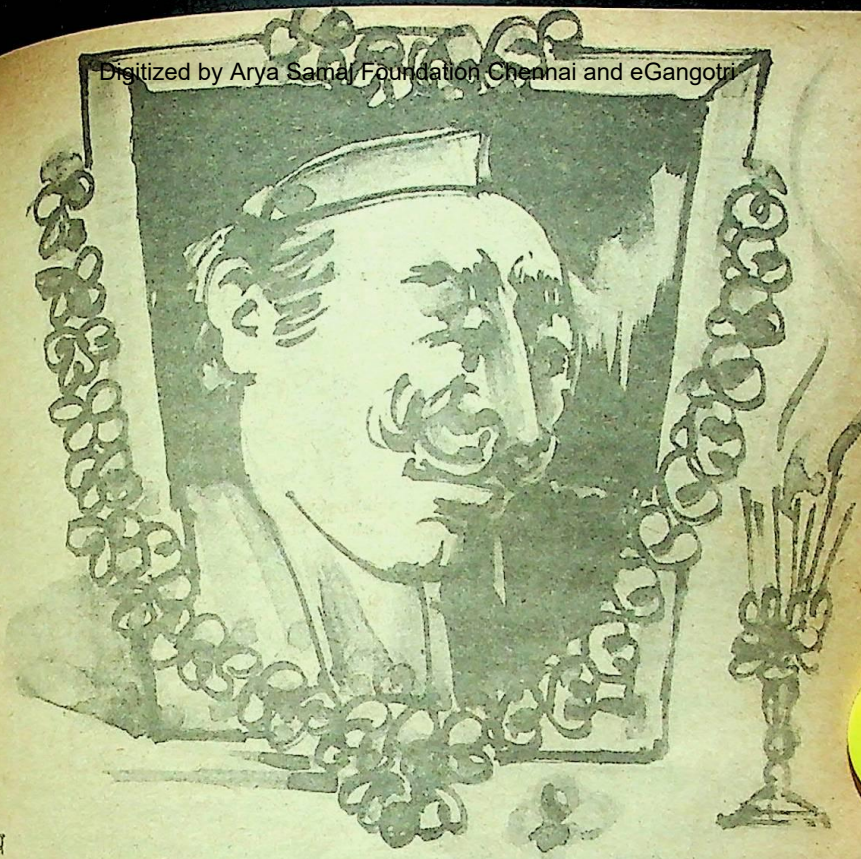

व्यंग्य

जब तक सूरज चांद रहेगा : कालिया तेरा नाम रहेगा

● अश्विनी कुमार दुबे

बचपन में लोग उसे कल्लू कहते थे। मिडिल तक पढ़ाई पूरी करके उसने अपना सार्थक रास्ता पकड़ लिया। जल्द ही उसने तस्करी का सामान बाजार में गलाने से लेकर सुपारी (ठेका) लेकर हत्याएं करने की दिशा में आशातीत प्रगति कर ली। अब वह तस्कर सम्राट के. कालिया के नाम से विख्यात था। हथियारों की तस्करी, जमीनों पर जबरन कब्जा, प्लैटो की मनमाने ढंग से बिक्री और होटलों में अवैध धंधों से लेकर सत्ता की शतरंज में अपने मोहरे बिठाने तक, सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों में के. कालिया की केंद्रीय भूमिका हुआ करती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र की प्रगति में कालियाजी का विशिष्ट योगदान देखते हुए लोग उन्हें प्यार से कालिया साहब कहा करते थे ।

इसे दुर्भाग्य ही कहें कि नगर में नये-नये आये युवा पुलिस अधिकारी की गोली से, कल रात कालिया साहब शहीद हो गये । पहले तो कालिया साहब की मौत पर किसी को विश्वास ही न हुआ, लोग बराबर यही कहते रहे कि जरूर इस खबर में कालिया साहब का कोई कमाल होगा । परंतु सुबह के पूरे अखबार में कालिया साहब की संघर्षमय जीवनगाथा और उनके जीवन की झलकियों के रंगीन चित्र देखकर लोगों को भरोसा हो गया कि अब सचमुच कालिया साहब इस दुनिया में नहीं रहे ।

उनकी मौत पर पूरे शहर ने शोक मनाया । बड़े उद्योगपतियों ने शोक संतप्त होकर अपनी दुकानें बंद रखीं । कुछ लोगों ने लूट-पाट और दंगे-फसाद के डर से अपनी दुकानों के शटर गिरा दिये । शेष लोगों की दुकानें जबरन बंद करा दी गयीं । राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने कालियाजी के घर जाकर शोक प्रकट किया । नेता, अभिनेता, पार्षद, व्यापारी, अधिकारी समेत कई महत्त्वपूर्ण लोगों ने शाही शवयात्रा में हिस्सा लिया ।

दूसरे दिन कालिया साहब की भव्य कोठी के बड़े हॉल में शोकसभा आयोजित हुई । उसमें सैकड़ों गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए । सर्वप्रथम नगर पालिका अध्यक्ष, कालियाजी के आदमकद चित्र पर माल्यार्पण करते हुए बोले—'भाइयो, कालियाजी के आकस्मिक निधन से यह नगर अनाथ हो गया है । इस नगर के विकास के लिए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी । वे इस नगर के, इस बस्ती के सच्चे सपूत थे । उन्हें हमेशा गरीबों की, मजदूरों की और पिछड़े वर्ग की बहुत चिंता रहती थी । इसलिए इस बस्ती में शराब का ठेका, उनके रहते कोई माई का लाल, कभी नहीं ले पाया । कालियाजी को सोते-जागते सदा अपने नगर के उत्थान की चिंता लगी रहती थी । नगर में उन्होंने कई आलीशान होटल बनवाये । बड़े पुल के पास वाली सरकारी जमीन, जो बहुत दिनों से खाली और बेकार पड़ी थी, उस पर कई लोग अपनी गिद्ध निगाहें गड़ाये हुए थे परंतु मैंने वह कालियाजी को दे दी । कालियाजी ने तो उस बेकार जमीन का उद्धार कर दिया । वहां एक विशाल डिस्कोथिक खोलकर कालियाजी ने युवा पीढ़ी के नैराश्यभरे जीवन में उमंग और तरंग की नयी थिरकन पैदा कर दी । सही माने में वे एक स्वप्न द्रष्टा थे । उनकी महानता और त्याग के किस्से अनंत हैं । आज वे हमारे बीच नहीं हैं । मुझे हार्दिक दुःख है कि नगर की बेकार और खाली पड़ी जमीनों का उद्धार अब कौन करेगा ?' इतना कहते-कहते उनकी आंखें गीली हो गयीं । अपने नेत्रों को रुमाल से पोंछते हुए वे एक ओर बैठ गये ।

खादी का सफेद झकाझक कुर्ता-पाजामा पहने हुए 'भैयाजी' आगे बढ़े । अंजुरीभर फूल कालियाजी की तसवीर में चरणों के निकट अर्पित करते हुए, भरे गले से वे कहने लगे—'कालियाजी गरीबों के मसीहा थे । मुझ पर उनके बड़े एहसान हैं । राजनीति के पावन क्षेत्र में आज मेरी जो स्थिति है, उसके निर्माण में कालियाजी का अमूल्य योगदान है । पिछले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आम चुनाव में मुझ-जैसे मामूली आदमी को पार्टी का टिकट दिलवाने से लेकर येन-केन-प्रकारेण चुनाव जितवाने तक, कालियाजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका को मैं कभी नहीं भुला सकता । मैं उनके एहसानों के बोझ तले दबा हुआ हूं । उन्होंने मेरे लिए इतना किया और मैं चंद परमिट, कुछ ठेके, और थोड़े से लायसेंस आदि दिलवाने के अलावा उनके लिए कुछ न कर सका । हाय ! मेरा तो दिल बैठा जा रहा है । चुनाव सर पर आ गये हैं । इस संकट की घड़ी में हमारे प्यारे कालियाजी हमें छोड़कर बहुत दूर चले गये । उनके अभाव से सक्रिय राजनीति में जो शून्य उभरा है, उसे कभी नहीं भरा जा सकता ।' भैयाजी अभी आगे और बोलते परंतु उनके गले में कफ अटक गया । इसलिए वे खंखारते हुए उदास-से अपने स्थान पर बैठ गये ।

वातावरण में महंगी अगरबत्ती और ताजे फूलों की भीनी खुशबू तैर रही थी । सहसा प्रसिद्ध समाजसेवी पंडित राम खिलावनजी अपना मुंह लटकाये हुए सामने आये । तसवीर के सम्मुख हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए वे बोले—'भाइयो, मेरी बहुत उमर हो गयी है । मैंने अब तक बहुत जमाना देखा है परंतु कालियाजी-जैसा सच्चा समाजसेवी मैंने आज तक नहीं देखा, अपने देश में होली एवं दीवाली की भांति हर साल कहीं-न-कहीं सूखे और बाढ़ का आगमन जरूर होता है । ऐसे अवसरों पर कालियाजी कभी पीछे नहीं हटे । वे दिल खोलकर दान करते थे । हम जब-तब किसी भी प्रकरण के लिए उनके पास चंदे के लिए गये, तो उन्होंने हमें कभी निराश नहीं किया । नगर में जो एकमात्र 'नारी कल्याण केंद्र' पिछले वर्ष खुला, उसके पीछे उन्हीं की प्रेरणा थी । वे सदा निराश्रित नारियों की समाज में दुर्दशा पर चिंता व्यक्त किया करते थे । उन्होंने अपने जीवन में हमेशा नारी जाति का भरपूर सम्मान किया । उनके-जैसे रहमदिल और नेक इनसान दुनिया में बहुत कम पाये जाते हैं । ऐसे महान व्यक्ति को मेरा शत, शत प्रणाम !'

बस्ती के शिक्षित-अशिक्षित बेकार युवकों को कालियाजी ने लाइन पर लगा दिया था । अब कोई जुए का अड्डा चला रहा है और कोई शराब बेच रहा है ।

ऐसे 'समाजसेवी' कालियाजी की एक हादसे में मौत हो गयी तो एक शोकसभा का आयोजन किया गया ।

जिला व्यापारी संघ के अध्यक्ष सेठ चंदूलालजी एक भारी-भरकम पुष्पहार लेकर प्रकट हुए । कालियाजी की तसवीर पर वह पुष्पहार पहनाते हुए वे शुरू हो गये—'भाइयो, सारा नगर जानता है कि कालियाजी हमारे परिवार के सर्वाधिक जिम्मेदार सदस्य थे । उद्योग और उद्योगपतियों को बढ़ाने में उनके असाधारण योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता । नयी दिशाएं और बृहद संभावनाओं के साथ उन्होंने व्यापार-जगत में प्रवेश किया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा शहर जानता है कि बहुत कम समय में कालियाजी ने व्यापार के क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित कर दिखाये । हम सबने जल्द ही उन्हें अपना पथ-प्रदर्शक मान लिया । उन्होंने उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में जो नये आयाम स्थापित किये, वे अद्वितीय हैं । बड़े दुःख की बात है कि ऐसे परम प्रतिभाशाली और महान व्यक्ति कालियाजी आज हमारे बीच से उठकर चले गये । वे हमारे आदर्श थे । उनकी प्रेरणा हमें सदा आगे बढ़ने में सहायक होगी ।'

युवा बेरोजगार संघ के अध्यक्ष ने कालियाजी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—'आज कालियाजी को अपने बीच न पाकर हमें ऐसा लग रहा है जैसे हमारे रक्षक, हमारे अभिभावक, हमें बीच मंझधार में छोड़कर कहीं खो गये हैं । उनके पास जो भी बेरोजगार युवक काम मांगने गया, उन्होंने कभी किसी को निराश नहीं किया । भले ही वह कार्य वैध या अवैध, कैसा भी रहा हो परंतु कालियाजी ने सबका उद्धार किया । कालियाजी ने इस बस्ती के सभी पढ़े-लिखे और गैर पढ़े-लिखे युवकों को काम दिलाने में महत्त्वपूर्ण पहल की । कुछ दिनों पहले तक इस बस्ती के कितने बेरोजगार युवक दर-दर भटक रहे थे । कालियाजी से उनका दुःख-दर्द नहीं देखा गया । उन्होंने सबको लाइन पे लगा दिया । अब कोई जुए का अड्डा चला रहा है, कोई शराब बेच रहा है तो कोई बड़े होटल में लगा है । कालियाजी की दया से आज सब अपना पेट पाल रहे हैं । कोई भूखों तो नहीं मर रहा । परंतु आज उनकी मौत के साथ ही हमारा सुरक्षित भविष्य भी मर गया है । अब हमें कौन पालेगा ? कौन सहारा देगा इन बेचारे बेरोजगारों को ? सचमुच आज हम अनाथ हो गये । कालियाजी बहुत महान थे । वे आदमी के रूप में देवता थे । भगवान ऐसी पवित्र आत्मा को शांति दे ।'

इस शोकसभा में कई पत्र-पत्रिकाओं के मालिक, संपादक और तथाकथित पत्रकार भी पधारे हुए थे । कालियाजी की मौत पर अखबारों ने विशेषांक निकाले और पत्रिकाओं ने अपने मुख पृष्ठ पर उनकी रंगीन तसवीरें छापीं । स्थानीय प्रेस क्लब के अध्यक्ष महोदय ने आगे बढ़कर कालियाजी की तसवीर के सम्मुख अगरबत्ती सुलगायी और गंभीर मुखमुद्रा बनाकर कहने लगे—' कालियाजी एक कुशल व्यापारी, शक्तिशाली राजनीतिज्ञ, गरीबों के मसीहा और प्रसिद्ध समाजसेवी होने के साथ ही प्रखर बुद्धि के धनी थे । आये दिन समाचार पत्रों में उनके वक्तव्य, तीखी टिप्पणियों और साक्षात्कारों में उनकी प्रतिभा साफ झलकती थी । प्रेस जगत से सदा उनके मधुर संबंध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे। क्योंकि वे प्रेस के महत्त्व को भली-भांति जानते थे। कभी शुभकामनाएं, कभी बधाई, कभी किसी मंत्री का स्वागत, कभी किसी का अभिनंदन, इस प्रकार आये दिन वे हर छोटे-बड़े अखबार को पूरे पृष्ठ का विज्ञापन देते ही रहते थे। ऐसी विलक्षण प्रतिभा के धनी कालियाजी का नाम इस शहर के इतिहास में अमर रहेगा।'

कई गणमान्य नागरिकों की भावभीनी श्रद्धांजलि के पश्चात शोकसभा के अंत में किसी ने प्रस्ताव रखा कि नगर के प्रसिद्ध चौक में, बीचोंबीच कालियाजी की एक भव्य प्रतिमा स्थापित की जानी चाहिए। इससे उनके महान गुणों और आदर्शों से भावी पीढ़ियां भी प्रेरणा पाती रहें। आनन-फानन में प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया। कालियाजी की तसवीर जहां रखी थी, वहां से ऊंचे स्वर में आवाज गूंजी—"जब तक सूरज चांद रहेगा, कालिया तेरा नाम रहेगा।"

—रेस्ट हाउस के पीछे, यादव निवास
जांजगीर (म. प्र.)-४९५६६८

आम के आम...

विश्व के किसी भी अन्य देश में पाल हैनसन का दावा फौरन खारिज कर दिया जाएगा। लेकिन अमरीका की बात दूसरी है।

पाल हैनसन एक धनी अमरीकी की संतान हैं। उनके पिता उनके लिए २५ लाख डॉलर छोड़ गये। उन्होंने पिछले दस वर्षों के दौरान अपनी समस्त विरासत उड़ा दी।

अब ३० वर्षीय पाल ने इओवा के बैंकर्स ट्रस्ट और वकील रिचर्ड मिनेट पर मुकदमा चलाया है।

किस आधार पर ? यह जानते हुए कि वह (पाल) कितना फिजूलखर्च और पैसे की बरबादी करनेवाला है, बैंक और वकील दोनों ने उसे पैसा मिलने पर रोक लगा देनी चाहिए थी।

पहली सुनवाई के दौरान न्यायाधीश रोनाल्ड शैचमैन ने गरजकर कहा, "आलस्य और लापरवाही ऐसे अधिकार नहीं है जिनकी अदालतें रक्षा करें।" लेकिन पाल ने न्यायाधीश के इस फैसले के खिलाफ अपील की है। सुनवाई वर्ष के अंत में होगी।

मिटाया जा सकेगा गोदना

क्या आपने अपने शरीर के किसी भाग पर गोदना गुदाया था ? क्या आप उससे तंग आ गये हैं और उसे हटा देना चाहते हैं ? पहले ऐसा करना मुश्किल, कष्ट-साध्य, खर्चीला और लगभग असंभव था।

लेकिन अब ऐसा नहीं है। मैसाच्यूसैट्स जनरल अस्पताल में गोदना हटाने की एक नयी लेसर विधि विकसित की है। इसमें तनिक भी पीड़ा नहीं होती और कोई दाग, निशान नहीं छूटते। चमड़ी पहले की तरह स्वाभाविक दिखायी देने लगती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपनिषद : मातृ-दर्शन

हिंदू-धर्म के उद्धारकर्त्ता आचार्यों में जगद्गुरु भगवान आदिशंकराचार्य का स्थान सर्वोच्च और सर्वोपरि है । परमहंस मुनियों के परमाराध्य देवाधिदेव महादेव भगवान नीलकंठ शिव एवं आदिशंकराचार्य के रूप में धराधाम पर अवतीर्ण हुए थे । परम वीतराग भगवान शुकदेव के समान वे जन्म से ही तत्त्वज्ञान-संपन्न थे । अल्पायु में ही उनका अंतर्निहित तेज दशों-दिशाओं को प्रकाशित करने लगा था । संसार में उनका रंच मोह न था, संसार-बंधनों से मुक्त होकर अज्ञान-मोहग्रस्त मानव समुदाय को ब्रह्मज्ञान का अमृत पिलाने के लिए वे आतुर थे । इसीलिए ब्रह्मचर्यव्रत से सीधे संन्यास-धर्म को अंगीकार करने को वे कृत-संकल्प थे ।

जन्म से ही आत्माराम परम कैवल्य-धन-संपन्न वीतराग शंकर के श्रेयोमार्ग में कोई प्रत्यक्ष बाधा भी न थी । फिर वे संन्यास-दीक्षा और गृह-त्याग के निश्चय को क्रियान्वित करने में स्वयं को स्वतंत्र अनुभव नहीं कर रहे थे । रोकनेवाला एक बंधन था । मोह का नहीं, श्रद्धा का । भोग का नहीं, भक्ति का । कातरता का नहीं, कर्त्तव्य का । अपनी जन्मदात्री जननी की आज्ञा प्राप्त किये बिना वे गृह-त्याग नहीं करना चाहते थे ।

"मां की अनुमति के बिना मैं गृह-त्याग नहीं करूंगा । संन्यास प्राप्त हो या न हो । मां की आज्ञा की अवहेलना शंकर नहीं करेगा ।" शिशु शंकर का यह दृढ़ निश्चय था ।

सामान्य पुत्रों के प्रति भी मातृ-मन में अगाध ममता होती है । शंकर तो साक्षात शिव-स्वरूप थे । ऐसे पुत्ररत्न को मां भला कैसे छोड़ सकती थीं ? आदि शंकराचार्य को संन्यास की अनुमति नहीं मिली । अनुमति प्राप्त करने के लिए तब उन्होंने अपने योगबल से एक जटिल स्थिति का सृजन किया । सरिता में स्नान करते हुए बालक शंकर का चरण एक हठी ग्राह ने ग्रस लिया और वह उन्हें गहरे जल में खींचने लगा ।

शंकर ने तट पर खड़ी जननी को पुकारकर कहा— "मां ! यह ग्राह मुझे खींच रहा है ।"

मां आकुल हो उठीं । अपने पुत्र की क्षमता को वह जानती थीं । कातर कंठ से बोलीं— "बेटा ! तुम चाहो तो ग्राह से तुरंत मुक्त हो सकते हो । यह जलजंतु तुम्हारा बलपूर्वक अनिष्ट नहीं कर सकता । तुम मुक्त क्यों नहीं हो जाते ?"

नियति का निवारण

शंकर ने कहा— "मां ! यह जलजंतु नहीं है । मेरी नियति है । नियति का निवारण मैं कैसे करूं ? मेरा जन्म जगत के उद्धार के लिए हुआ है । मैं वह नहीं कर पा रहा हूं, इसलिए मेरी नियति मुझे यहां से खींच रही है । मेरा यह जन्म

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यर्थ है, तो मुझे वापस वहीं जाना होगा, जहां से मैं आया हूं।"

मां समझ गयीं बोलीं— "बेटा ! तुम जगत का ही उद्धार करो। उसके साथ-साथ मैं भी तर जाऊंगी। तुम बाहर आ जाओ पुत्र ! अब मैं तुम्हें घर में नहीं रोकूंगी। मैं जान गयी हूं कि तुम एक के नहीं हो सब के हो।" और भगवान शंकराचार्य को संन्यास की अनुमति मिल गयी।

आज जो वैदिक धर्म सुरक्षित है, वह भगवान आदिशंकराचार्य के तपस्तेज का प्रसाद है, भगवान शंकराचार्य ने २८ वर्ष की अल्पायु में ही अपनी लीला का संवरण किया था, किंतु इतनी अल्प अवधि में ही उन्होंने आसेतु हिमाचल— संपूर्ण आर्यावर्त में आर्य-संस्कृति और वैदिक धर्म की विजय-पताका फहरा दी। नास्तिकों को निर्मूल किया। धर्म का उद्धार किया। चारों दिशाओं में चार दिव्य मठों की स्थापना की और रक्त का एक बिंदु गिराये बिना

दूसरे की सत्ता को कभी स्वीकार नहीं किया। निर्मल वैराग्य और विशुद्ध संन्यास धर्म के वे सर्वोच्च प्रतीक पुरुष हैं। सांसारिकता से कोई संबंध न रखनेवाले ऐसे जगद्गुरु भगवान शंकराचार्य ने संसार के सारे संबंधों का त्याग तो किया, किंतु मातृ-भक्ति का त्याग वे भी न कर सके।

मैं कैसे करूं ?

● आचार्य श्री धर्मेन्द्र महाराज

महान सांस्कृतिक क्रांति को साकार किया। भगवान शंकराचार्य का दर्शन एक ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य किसी की प्रभुता स्वीकार नहीं करता।

एको ब्रह्म : द्वितीयो नास्ति

सृष्टि का नियंता एक ब्रह्म है। दूसरा कोई नहीं। इस शुष्क और शुद्ध वेदांत की स्थापना करनेवाले भगवान आदिशंकराचार्य ने किसी

संन्यासी प्रत्येक सांसारिक ऋण और दायित्व से मुक्त होता है। देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण— इन तीन ऋणों की स्मृति दिलाने के लिए ही ब्रह्मचारी को यज्ञोपवीत के तीन सूत्र धारण कराये जाते हैं। यज्ञोपवीत ब्रह्मचारी का व्रत-बंध है, तो गृहस्थ धर्म का कवच है और वानप्रस्थ के लिए पवित्र धरोहर है। किंतु इन क्रमशः तीनों ऋणों से मुक्त होकर वानप्रस्थ पुरुष

४१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब संन्यास धर्म अंगीकार करता है, तब यज्ञोपवीत को विसर्जित कर देता है। संन्यासावस्था ऋण-मुक्ति की अवस्था है। भगवान शंकराचार्य तो जन्मजात संन्यासी थे। नैष्ठिक ब्रह्मचारी से वे सीधे संन्यास में प्रविष्ट हुए थे। संसार का कोई ऋण उनपर नहीं था। उन्होंने अपना ही क्या संपूर्ण जाति का ऋण उतार दिया था। ऐसे भगवान शंकराचार्य ने भी संसार को तो छोड़ा, किंतु मातृ-ऋणानुबंध का त्याग वे नहीं कर सके।

अपनी जन्मदात्री को निर्वाण के निकट जानकर वे अपनी दिग्विजयिनी शिष्य मंडली के साथ मां के द्वार पर आ खड़े हुए। अपने विश्वविजयी परमयशस्वी ईश्वरस्वरूप जगद्गुरु-पदासीन पुत्र को द्वार पर खड़ा देख माता के निस्तेज दृष्टिदीप प्रसन्नता से चमक उठे। 'मेरा जगज्जयी पुत्र, मेरा शंकर, सारे संसार का वंदनीय जगद्गुरु, मेरा प्राणप्रिय वत्स मुझे मेरे अंतिम समय में दर्शन देने आया है।' जननी की ममता का अमृतकोष नयनों के मार्ग से छलकने लगा। भगवान शंकराचार्य ने, परम वंदनीय जगद्गुरु ने, आगे बढ़कर जननी के चरणों पर अपना महिमामंडित ज्योतिर्मय मस्तक रख दिया। संन्यासी भगवान के अतिरिक्त किसी के सम्मुख नतमस्तक नहीं होता। भगवान शंकराचार्य तो सामान्य संन्यासी नहीं थे। वे तो संन्यास धर्म के उद्धारक और प्रतीक पुंज थे। कैवल्य की साक्षात प्रतिमा। वैराग्य के अकलुष ज्योतिस्तंभ भगवान शंकराचार्य को अपनी जन्मदात्री के चरणों में झुकते देख उनके परम प्रतापी शिष्यों की आंखें सजल हो गयीं। माता के बुझते हुए प्राणदीप में ज्योति का अंतिम ज्वार उठा। उन्होंने हाथ बढ़ाकर पुत्र के मस्तक को हृदय से लगा लिया और ब्रह्मस्वरूप आत्मज को आलिंगन में आबद्ध करके स्वयं भी ब्रह्म में लीन हो गयीं।

मातृदेवो भव ! (तैत्तिरीय उपनिषद् १/११/२)

माता में ईश्वर को देखो, माता ही प्रथम गुरु है। उसकी वंदना करो। अपने शिशु के मूक कंठ को वही भाषा का बोल प्रदान करती है। अपनी भाषा को हम अपनी मां के मुख से सुनकर ही सीखते हैं। इसीलिए संसार के प्रत्येक कोने में अपनी भाषा को 'मातृभाषा' कहा जाता है। कोई कितनी ही भाषाओं का प्रखर पंडित क्यों न बन जाए, उसे प्राणाधिक प्रिय वहीं भाषा प्रतीत होती है, जिसमें उसकी जननी ने उससे सर्वप्रथम बोलना प्रारंभ किया था। मातृभाषा कितनी भी असंस्कृत क्यों न हो, निरपवाद रूप में विश्व के सभी मानव-समुदाय अपनी मातृभाषा को ही मधुरतम मानते हैं और अपनी मातृभाषा के वर्चस्व के लिए राष्ट्रों के भूगोल तक बदल डालते हैं। मूक मानवता के कंठ को भाषा प्रदान करनेवाली माता ही मानव-सभ्यता की प्रथम गुरु है। जीवन में सबसे बड़ा संस्कार जननी के दूध के साथ प्राप्त जननी की भाषा का, मातृभाषा का, पड़ता है। मातृभाषा से बढ़कर मानव-जीवन को प्रभावित करनेवाली दूसरी कोई शक्ति नहीं है। इस प्रकार माता मानवता की प्रथम गुरु है। इसीलिए उपनिषद का आदेश है— माता में ईश्वर को देखो, उसके पश्चात पिता में ईश्वर को देखो।

पितृदेवो भव ! (तै. उ. १/११/२)

हिंदू-धर्म ईश्वर को सर्वप्रथम मां के रूप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखता है। फिर पिता के रूप में। शिशु गणेश को मां पार्वती ने द्वार पर खड़ा कर दिया था। प्रहरी शिशु ने अपने पिता साक्षात भगवान सदाशिव को भी अंतःपुर में प्रविष्ट नहीं होने दिया। वह अड़ गया। प्राण रहते उसने भगवान को प्रवेश की अनुमति नहीं दी। भगवती ने ही पुनर्जीवित शिशु गणपति को परिचय दिया— "बेटा ! ये तुम्हारे पिता हैं। इनसे क्षमा मांग लो !" निरुपाय शिशु ने कोई तर्क नहीं दिया। उठकर भक्तिभाव से अपने जगद्वंद्य पिता के चरणों में मस्तक टिका दिया। भगवती जगज्जननी विदेहनंदिनी के दोनों शिशु भी अपने पिता को नहीं जानते थे। अग्निपरीक्षोत्तीर्ण, सतीशिरोमणि का त्याग करनेवाले 'हृदयहीन सम्राट' का यज्ञाश्व रोककर जब वे अपने पिता के सामने युद्ध-संकल्प से कटिबद्ध होकर डट गये, तो जगज्जननी हाहाकार करती हुई बीच में आ खड़ी हुई। कातर कंठ से पुत्रों को पुकार उठीं— "अभागे ! किस पर बाण चला रहे हो ? ये तुम्हारे पिता हैं। ये मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। ये मूर्तिमान धर्म हैं। ये अयोध्या के राजाधिराज रघुकुलभूषण सम्राट भगवान श्री राम ही तुम्हारे पिता हैं। इन्हें प्रणाम करो।"

और दोनों क्षुब्ध शिशुओं ने अपने धनुष-तूणीर फेंक दिये। रोष का त्याग करके दोनों अपने पिता के चरणों में लोट गये।

हिंदू-धर्म ने देखा है कि ईश्वर सर्वत्र मातृरूप में विराजमान हैं। परम पुरुष ने प्रकृति बनकर ही सृष्टि का सृजन किया है, उसे धारण किया है और वही उसके संहार की भी भूमिका रचती है।

माता में ईश्वर को देखो, माता ही प्रथम गुरु है। उसकी वंदना करो। अपने मूक शिशु को वही भाषा का बोल प्रदान करती है। इसीलिए संसार के प्रत्येक कोने में अपनी भाषा को 'मातृभाषा' कहा जाता है।

तहि दुर्गा दशप्रहरण धारिणीम्
कमला कमलदल विहारिणीम्
वाणी विद्या दायिनीम्
नमामित्वां... मातरम्

(बंकिमचन्द्र)

हिंदुओं ने संसार की संपूर्ण शोभा को खुली आंखों से देखा और अनुभव किया कि यह तो मां का दिव्य सौंदर्य है, उन्होंने कहा— "तुम शोभा हो ! द्युति हो ! कांति हो ! छटा हो ! श्री हो ! मां हो !"

हिंदुओं ने संपदा को देखा और अनुभव किया, यह भी हमारी मां का रूप है। यह हमारा पोषण करता है। वे बोले— "तुम संपदा हो ! लक्ष्मी हो ! श्री हो ! मां हो !"

हिंदुओं ने साक्षात्कार किया विद्या का, ज्ञान का और कहा— "तुम प्रज्ञा, मेधा, वाणी और विद्या हो ! तुम अनुभूति भी हो ! अभिव्यक्ति भी हो ! तुम्हीं भाषा हो ! अभिधा हो ! लक्षणा हो ! व्यंजना हो ! तुम सरस्वती हो ! अजस्र रसवंती हो ! मां हो !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदुओं ने भाषा में भी मातृशक्ति के दर्शन किये भक्तिभाव से पुकारा— "हिंदी माता ! संस्कृत माता ! बंगला माता ! तमिल माता !"

हिंदुओं ने बल का साक्षात्कार किया और अनुभव किया, यह भी हमारी मां का स्फूर्त स्वरूप है । उन्होंने वंदना की— "तुम्हीं तो हो मां ! हमारी शक्ति, हमारी स्फूर्ति, हमारी ऊर्जा, हमारी विजय और हमारी सफलता ! तुम्हीं कीर्ति हो ! विजयदात्री हो ! विजयिनी हो ! जया हो ! जयंती हो ! मंगला हो ! भद्रकाली हो ! दुर्गा हो ! मां हो !"

हिंदुओं ने जीवनदायिनी पयस्विनी सरिताओं में भी अपनी मां के ही दर्शन किये— "तुम गंगा मैया हो ! यमुना मैया हो ! सरयू मैया हो ! नर्मदा मैया हो !"

नर्मदेहर ! नर्मदेहर ! नर्मदेहर पाहिमाम् !
नर्मदेहर ! नर्मदेहर ! नर्मदेहर रक्षमाम् !

कोटि-कोटि धाराओं में प्रवाहित होकर जगत में जीवन का रस-संचार करनेवाली तुम हमारे करुणामय की करुणा हो । हमारे पाप, ताप, अभिशापों को हरनेवाली तुम हमारी मां हो !

हिंदुओं ने पशुदेहधारिणी ईश्वरीय करुणा को गो के रूप में देखा और गद्‌गद् होकर बोल उठे— "अरे ! तुम पशु नहीं हो ! तुम तो मूर्तिमयी करुणा हो, कल्याणी हो, हमारी जन्मदात्री से भी बढ़कर हमारा मंगल करनेवाली गो-माता हो !"

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्व सुखप्रदा ।

"हे गैया मैया ! तुम तो हमारी ही नहीं, जगत के सब भूतों की, सब प्राणियों की वंदनीया मां हो !"

हिंदुओं ने तुलसी को देखा तो हाथ जोड़ लिये— "तुलसी मैया ! हमारा रोग हरो ! शोक हरो ! हमें सुख-सौभाग्य का अक्षय वर दो !"

हिंदुओं को अपने तीर्थ भी पतितपावनी जननी की गोद-जैसे आत्मीय प्रतीत हुए । वे भक्तिभाव से पुकार उठे— "हे काशी मैया ! अयोध्या मैया ! मथुरा मैया ! द्वारिका मैया !"

तीर्थ ही क्यों, हिंदुओं ने तो अपने नगर, ग्राम और खेड़ों को भी मातृभाव से ही देखा है । करोड़ों निरक्षर ग्रामीण हिंदू भाव से विभोर होकर पुकारते हैं— "बोलो, बस्ती माता की जय !"

अपनी जाति को (बिरादरी को) तो हिंदू सदा से अपनी माता के रूप में देखते रहे । "कोई हमें हमारी जातिमाता से पृथक न कर दे ।" हिंदू-हृदय में सनातन काल से सबसे बड़ा भय यही रहता है । आज के यांत्रिक युग में जब लौह-यंत्रों की निरंतर संगति में मानव-मन भी लौहवत जड़ हो गये हैं, जब कोई जाति, बिरादरी और 'बस्ती' तो दूर, 'देशमाता' की भी परवाह नहीं करता, तब जग के कण-कण में मातृ दर्शन करने और उसका हार्दिक सान्निध्य पाने की, हिंदू-हृदय की प्यास को कोई कैसे समझेगा ?

बंगाली हिंदू अपनी बेटी का लाड़-लड़ाता है, तो विभोर होकर बोल उठता है— "तुमि आमार लॉक्खी मां !"

"तुमि आमार दुर्गा मां !"
"तुमि आमार सरस्वती मां !"
तुम मेरी लक्खी मां हो ! तुम मेरी दुर्गा मां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो ! तुम मेरी सरस्वती मां हो ! हिंदुओं का स्वाधीनता-संग्राम भी मातृ-पूजा का बृहद अनुष्ठान रहा है । उसे सफलता ही तब हुई, जब उसने मातृपूजा के उपक्रम का स्वरूप ग्रहण किया । हिंदू पृथक-पृथक जयघोषों के साथ पृथक-पृथक समूहों में विदेशी दासता के विरुद्ध संघर्ष करते रहे और असफल होते रहे । उन्हें सफलता तब मिली, जब उन्होंने सभी उद्घोषों और जय-उद्घोषणाओं को 'वंदेमातरम्' महामंत्र में विलीन कर दिया । उनकी देशभक्ति, धर्मनिष्ठा, राष्ट्रप्रेम और स्वातंत्र्य चेतना को यथार्थ अभिव्यक्ति देनेवाला महामंत्र 'वंदेमातरम्' विश्वभर में देशभक्ति की सर्वोत्कृष्ट और सार्थकतम अभिव्यक्ति है और यह अभिव्यक्ति हिंदू-चेतना में समायी मातृभक्ति का उज्ज्वल उदाहरण है ।

कल्याण के सुमति का सूचित करनेवाली परम सुंदरी षोडशी कन्या को सामने समर्पिता देखकर छत्रपति शिवाजी महाराज ने मुक्त कंठ और मुग्ध मन से कहा— "अहा ! कैसा दिव्य सौंदर्य ! देवि ! शोक ! मैं जीजाबाई के गर्भ से उत्पन्न हुआ, तेरे गर्भ से नहीं । यदि तेरे गर्भ से मेरा जन्म हुआ होता, तो मैं भी तेरे ही समान सुंदर हो जाता ।" और इन अलौकिक वेदमंत्रोपम पवित्र शब्दों को सुनकर यवन कन्या शिवाजी महाराज के चरणों में लिपट गयी तथा छत्रपति को जन्म देनेवाली परम पूजनीया मां जीजाबाई का मुख सात्विक गौरव से उद्दीप्त हो उठा । सभा विह्वल होकर पुकार उठी —

"छत्रपति शिवाजी महाराज की जय !"
"राजमाता जीजाबाई की जय !!" ●

मनुष्य वही होते हैं जो उनकी माता उन्हें बनाती है ।

—इमर्सन

माता का हृदय बच्चे की पाठशाला है ।

—बीचर

मातृत्व दीर्घ तपस्या है ।

—प्रेमचन्द

मातृभाषा का अनादर भी मां के अनादर के बराबर है । जो मातृभाषा का अपमान करता है, वह स्वदेश-भक्त कहलाने लायक नहीं है ।

—महात्मा गांधी

मातृभाषा, मातृसभ्यता और मातृभूमि तीनों सुखकारिणी स्थिर रूप देवियां हमारे हृदयासन पर विराजती रहें ।

वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथासरित्सागर संस्कृत का नहीं पैशाच

कथासरित्सागर—विद्वान ब्लूमफील्ड ने इसे विश्व का सर्वोच्च एवं अद्वितीय कथा साहित्य माना है। उसके अनुसार यह ग्रंथ कथा संपत्ति एवं कथा कहने की प्रणाली में अद्वितीय है।

गुणाढ्य द्वारा पैशाची भाषा में रचित बृहत्कथा का संस्कृत रूपांतर कथासरित्सागर कश्मीर नरेश अनंत के सभाकवि सोमदेव की कृति है। बृहत्कथा की कथाओं को काव्यरूप में नये ढंग से सजाकर रखने का कार्य कवि ने किया है। अपने को संकलनकर्ता बताते हुए सोमदेव स्वयं स्पष्ट कहते हैं कि 'मूल ग्रंथ में तथा कथासरित्सागर में अंतर नहीं है। जहां ग्रंथ का विस्तार था वहां संक्षेप कर दिया गया है। भाषा अलग है। औचित्य परंपरा की रक्षा की गयी है। मूलकथा के रस को बचाते हुए कुछ नये काव्यांशों की योजना की गयी है। यह सब मैंने अपनी निपुणता की ख्याति के लिए नहीं अपितु विशाल कथासमूह को स्मरण करना सान बनाने को किया है।' इस कथासंग्रह का उद्देश्य कश्मीरनरेश अनंत की महारानी सूर्यमती का मनोविनोद करना भी था। अनंत का राज्यकाल १०४२ ई. से १०७७ ई. तक रहा। १०७७ ई. में वह अपने पुत्र कलश को राज्य सौंपकर जंगल को चला गया। वहां भी उसके दुष्ट पुत्र कलश ने उसका पीछा न छोड़ा तथा उसके शिविर में आग लगवा दी। दुःखी होकर अनंत ने १०८१ ई. में आत्महत्या कर ली। रानी सूर्यमती भी पति के साथ सती हो गयी। पुत्र के दुर्व्यवहार से चिंतित रानी का मनोरंजन करने को सोमदेव ने बृहत्कथा की कथाओं को अपने समय की मान्यताओं के अनुरूप ढालकर कथाओं का एक विशाल सागर प्रस्तुत कर दिया।

कथासरित्सागर के कथापीठ में गुणाढ्य के जीवन तथा इन कथाओं के उद्गम के बारे में विवरण मिलता है जिसके अनुसार ये कथाएं शंकर ने पार्वती को सुनायी थीं। शिव के दो गणों माल्यवान तथा पुष्पदंत ने छिपकर इन कहानियों को सुन लिया। पार्वती ने इन्हें पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप दिया तथा ये वररुचि तथा गुणाढ्य के नाम से कौशाम्बी नगरी में उत्पन्न हुए। गुणाढ्य राजा सातवाहन का प्रधानमंत्री बना। राजा ने उसे छह महीने में संस्कृत सिखाने को कहा जो वह न कर सका तथा तिरस्कृत होने पर संस्कृत न लिखने-बोलने की प्रतिज्ञा करके वन में चला गया। वहां उसने पिशाच काणभूति से पैशाची भाषा में कथाएं सुनीं जो काणभूति को पुष्पदंत ने सुनायी थीं। गुणाढ्य ने पैशाची में लिखकर वे कथाएं राजा सातवाहन के पास भेजीं, परंतु राजा ने अवहेलना कर दी। दुःखी गुणाढ्य पशु-पक्षियों को सुना-सुनाकर एक-एक पन्ना जलाने लगा। कथाओं को सुनने में तल्लीन पशु-पक्षियों ने खाना-पीना छोड़ दिया। राजा को सूचना मिली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसने क्षमा याचना की । तब तक केवल एक लाख श्लोक शेष बचे थे जिन्हें बृहत्कथा कहा गया ।

मूल बृहत्कथा तो उपलब्ध नहीं होती परंतु बृहत्कथा पर आधारित चार ग्रंथ अभी तक मिले हैं । नेपाल से उपलब्ध बृहत्कथाश्लोकसंग्रह में बुधस्वामी ने गुप्तकालीन संस्कृति की झलक दी है । संघदासगणि ने वसुदेवहिंडी में नरवाहनदत्त की कहानियों को वासुदेव पर आरोपित कर इन्हें जैनधर्म के अनुरूप बनाने का प्रयास किया है । कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र ने बृहत्कथामंजरी में ७,५०० श्लोकों में बृहत्कथा का संक्षिप्त रूप दिया है । सोमदेव का कथासरित्सागर २२ हजार श्लोकों में लिखित रोचक कथाओं का विशाल समुद्र है । ग्रंथ १८ लंबकों में विभक्त है । लंबक शब्द का मूल लंभक है । विवाह द्वारा स्त्री की प्राप्ति लंभक कही जाती थी । प्रत्येक लंभक में नायक को स्त्री की प्राप्ति होती है । मुख्यकथा के भीतर अनेक प्रकार की कथाएं पिरोयी हुई हैं । देवों, अप्सराओं, मानवों,

विद्वान पैंज के शब्दों में—कथासरित्सागर भारतीय कल्पना-जगत का दर्पण है, जिसे सोमदेव भविष्य की पीढ़ियों के लिए छोड़ गये हैं ।

हद तक सोमदेव के कथासरित्सागर पर निर्भर है । इस ग्रंथ से भारतीय धर्म एवं प्राचीन भारत में स्त्रियों के स्थान के बारे में जानकारी मिलती है । इससे हमें जाति व्यवस्था, नृवंशविद्या, कला, कलाकार एवं शिल्पी, द्यूत, मद्यपान एवं भारतीय जनजीवन से संबद्ध अन्य सूचनाएं भी मिलती हैं ।" ब्लूमफील्ड ने इस ग्रंथ को विश्व का सर्वोच्च एवं अद्वितीय कथासाहित्य माना है । उनके मतानुसार यह ग्रंथ कथासंपत्ति एवं कथा कहने की प्रणाली में अद्वितीय है । कथाओं की विविधता इसकी प्रमुख विशेषता है । कहीं साहसी प्रेमियों की प्रेमकथाएं हैं, तो कहीं दूर-दूर के देशों की यात्राएं करनेवाले यात्रियों की साहसभरी कहानियां हैं । कहीं हंसानेवाली मूर्खकथाएं मिलती हैं, तो कहीं चकित कर

पैशाची भाषा का ग्रंथ है

• डॉ. वेद कुमार

असुरों, वेतालों सभी से संबंधित कथाएं एक से दूसरी, दूसरी से तीसरी निकलती चली आती हैं । अधिकांश कहानियों में स्त्री पात्रों का चरित्र वर्णित है । कुलटा, दुष्टा, पतिघातिनी, अभिचार करनेवाली, कृतघ्न स्त्रियों की कथाएं अधिक हैं यद्यपि सती, पतिव्रता, धर्मपरायण नारियों का वर्णन भी मिलता है । विंटरनित्ज के शब्दों में—"हमारा भारतीय संस्कृति का ज्ञान बहुत

देनेवाली बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण कथाएं हैं । कहीं छोटी-छोटी कथाओं को गूंथा गया है तो कहीं पद्मावतीकथा या विक्रमादित्यकथा—जैसी लंबी कथाओं को सम्मिलित कर लिया गया है । पंचतंत्र तथा वेतालपंचविंशतिका इस विशाल ग्रंथ का भाग बन गये हैं । बौद्ध, जैन तथा पौराणिक कथाओं का बहुत बड़ी संख्या में इस ग्रंथ में समावेश हुआ है । अलिफलैला की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक कहानियों के मूलरूप कथासरित्सागर में मिलते हैं ।

मूर्खों की कहानियां कथासरित्सागर का विशेष मनोरंजक पक्ष है । एक गंवार ग्वाले की गाय प्रतिदिन पच्चीस सेर दूध देती थी । उसके यहां कोई उत्सव होना था । उसने सोचा कि एक ही बार में उत्सव के लिए इकट्ठा दूध दोह लेना ठीक रहेगा । उसने एक महीने तक गाय नहीं दुही । उत्सव के दिन जब दुहने बैठा तो दूध की एक बूंद न मिली ।

एक धनी सेठ का मूर्ख पुत्र व्यापार करने को कटाहद्वीप गया । उसने बिक्री के लिए अगुरु भी साथ लिया । उसका बाकी माल तो बिक गया परंतु अगुरु का ग्राहक कोई न मिला । सेठ के पुत्र ने देखा कि लोग लकड़हारों के पास आकर कोयला खरीदकर ले जाते हैं । उसने भी अगुरु लकड़ी को जलाकर कोयले बनाकर बेच डाले और अपने घर वापस आ गया । जब वह अपनी बुद्धिमता की डींग मारने लगा, तो लोग उसकी मूर्खता पर हंसने लगे ।

धूर्तों की कहानियां तत्कालीन समाज की बुराइयों को सामने लाने में सक्षम हैं । मानव स्वभाव जैसा है उसे वैसा दिखाने में सोमदेव झिझकते नहीं ।

एक बार एक धूर्त मौनी साधु ने भिक्षा मांगते-मांगते किसी वैश्य के घर में सुंदरी कन्या को देखा और काम के वशीभूत होकर 'हाय मर गया' यह वचन कहे । उस वैश्य ने साधु के मठ में जाकर मौन भंग करने का कारण पूछा तो साधु ने उसकी कन्या को अशुभ बताते हुए वैश्य को सुझाया कि वह कन्या को काठ के संदूक में बंद करके उस पर दिया जलाकर नदी में बहा दे । भीरु वैश्य ने वैसा ही कर दिया । साधु ने अपने चेलों को नदी पर भेजा कि यदि कोई दियेवाला बहता हुआ संदूक मिले तो मेरे पास ले आओ । जब तक चेले गंगातट पर पहुंचे, उससे पूर्व ही कोई राजपुत्र वहां स्नानार्थ आया । उसने उत्सुकतावश संदूक खुलवाकर देखा और उस सुंदर कन्या से विवाह कर लिया । पेटी में एक भयानक बंदर को बंद करके उसे फिर बहा दिया । पेटी को खोजते हुए साधु के शिष्यों ने उस पेटी को देखा और गुरु के पास ले आये । प्रसन्न हुए गुरु ने उनसे कहा—"अकेले ही इस पेटी पर बैठकर मैं मंत्र सिद्ध करता हूं, तुम सब नीचे जाकर रात में सोओ ।" संन्यासी ने रात्रि में एकांत में सुंदर कन्या की आशा से पेटी को खोला तो एक भयानक बंदर उस पर टूट पड़ा और अपने दांतों और नाखूनों से उसके नाक-कान काट लिये ।

इस प्रकार की सैकड़ों कहानियां कहने में सोमदेव को अद्भुत सफलता मिली है । पैंज के शब्दों में कथासरित्सागर भारतीय कल्पनाजगत का दर्पण है जिसे सोमदेव भविष्य की पीढ़ियों के लिए छोड़ गये हैं ।

सांस्कृतिक दृष्टि से कथासरित्सागर एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है । गुप्तकाल के पूर्व काल से लेकर ग्यारहवीं शताब्दी तक के भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण इसमें मिलता है । भारत के व्यापारी, नाविक, धर्मप्रचारक समुद्र यात्रा की कठिनाइयों की परवाह न करते हुए दूर-दूर के देशों में जाकर समृद्धि लाते थे तथा अपनी संस्कृति की अमिट छाप उन देशों में छोड़ आते थे । इन कथाओं में कई द्वीपों जैसे सुवर्णद्वीप (सुमात्रा), कटाहद्वीप (केडा), नारिकेलद्वीप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जैसे दीवार पर फेकी हुई गेंद लौटकर फेकनेवाले की ओर आती है, वैसे ही दूसरे का बुरा चाहनेवाले का अपना बुरा होता है।'

—कथासरित्सागर की एक उक्ति

(निकोबार), कर्पूरद्वीप (बोर्नियो), मलयद्वीप (मलाया) आदि का वर्णन मिलता है। उत्तर पश्चिम की ओर अपरगांधार की राजधानी पुष्कलावती का उल्लेख मिलता है। उस समय के भारतीय उत्तर में नेपाल, अलका, मानसरोवर आदि को लांघकर चीन देश के साथ संबंध स्थापित कर चुके थे।

सामाजिक दृष्टि से कथासरित्सागर की कहानियां उथल-पुथल का वातावरण प्रकट करती हैं जिसमें पुरानी मान्यताएं टूटती दिखायी देती हैं। आध्यात्मिकता के स्थान पर भौतिकता की प्रधानता दिखायी देती है। वर्णव्यवस्था में पर्याप्त लचीलापन दिखायी देता है। अंतरजातीय विवाहों के कई उल्लेख मिलते हैं। अनंगारवती के विवाह में विभिन्न वर्णों के युवक भाग लेते हैं। परोपकारी राजा की पुत्री ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय युवक से विवाह करना चाहती है। राजा महावराह की पुत्री पद्मरति से विवाह के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र युवक आते हैं परंतु वह किसी को भी स्वीकार नहीं करती।

व्यवसायचयन के क्षेत्र में भी स्वतंत्रता दिखायी देती है। श्रीदत्त ब्राह्मण होने पर भी मल्लयुद्ध में निपुणता प्राप्त करता है। पंचपट्टिका शूद्र होने पर भी कपड़े का व्यापार करता है। सामान्यतया शूद्र उपेक्षित होकर बौद्धधर्म ग्रहण करते दिखायी देते हैं।

स्त्रियों में परदा प्रथा दिखायी नहीं देती। यद्यपि बार-बार पातिव्रत्य धर्म की प्रशंसा की गयी है परंतु सैकड़ों कुलटा स्त्रियों की कहानियां तत्कालीन नैतिक पतन और अमर्यादित उच्छृंखलता की ओर संकेत करती हैं। कई कथाओं में सासों द्वारा बहुओं पर किये गये अत्याचारों का उल्लेख है। देवदासीप्रथा का उल्लेख मिलता है।

राजनीतिक क्षेत्र में अस्थिरता दिखायी देती है। युद्धों में कूटनीति का प्रचुर प्रयोग है। आमोद-प्रमोद के कई साधनों, नृत्यगोष्ठी, संगीतगोष्ठी, पानगोष्ठी, जलक्रीड़ा, उद्यानक्रीड़ा, मृगया, गुलिकाक्रीड़ा, दोलाक्रीड़ा आदि का वर्णन मिलता है।

इस प्रकार कथासरित्सागर, कथाओं की विविधता, रोचकता तथा सांस्कृतिक सामग्री की विपुलता के कारण एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। काव्यसौष्ठव की दृष्टि से भी यह सरस सुंदर शैली में रचित महाकाव्य कहा जा सकता है। प्रसादमयी शैली में मनोरम सूक्तियां सहृदय के हृदय तथा बुद्धि दोनों को प्रभावित करती हैं। कितनी सुंदर उक्ति है 'जैसे दीवार पर फेकी हुई गेंद लौटकर फेकनेवाले की ओर आती है, वैसे ही दूसरे का बुरा चाहनेवाले का अपना बुरा होता है।' ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन और रात । काम और विश्राम । सृष्टि की रचना करते समय शायद विधाता ने समय का विभाजन ही इस प्रकार किया कि जीवन में संतुलन बना रह सके । दिन का एक बहुत बड़ा भाग मनुष्य अपने जीवन तथा आजीविका संबंधी कार्यों व समस्याओं के साथ जूझने में ही व्यतीत कर देता है । श्रम के बाद विश्राम अनिवार्य है परंतु अवकाश की घड़ियों को केवल सोकर नहीं बिताया जा सकता । इनको भरने के लिए चाहिए मनोरंजन ।

सभ्यता का विकास और मनोरंजन

स्पेन में सांड : इंगलैंड में मुरगे

● पैमिला मानसी

आदिकाल से ही मनुष्य ने मनोरंजन के महत्त्व को स्वीकारा है और उसके लिए खोजे हैं कई प्रकार के ढंग और साधन । कोई भी देश, काल रहा हो, मनोरंजन के तरीके सदा प्रचलित रहे, हालांकि बदलती परिस्थितियों तथा सभ्यता के विकास के साथ-साथ उनमें रूप-परिवर्तन भी हुआ तथा नये तरीकों का आविष्कार भी ।

धर्म से संबंध

प्राचीन काल में मनोरंजन का धर्म से सीधा संबंध रहा । भारत, चीन, जापान-जैसे पूर्वी देश हों अथवा रोम, इंगलैंड या फ्रांस, सामूहिक नृत्यों, संगीत और नाटकों का आयोजन धार्मिक उत्सवों पर ही किया जाता था । यूनान के नृत्य-नाटक, इंगलैंड के 'मारेलिटी प्लेज' तथा हमारे यहां रामलीला एवं कृष्णजन्म, शिवरात्रि तथा रमजान की समाप्ति पर निकाली जानेवाली झांकियां, सब एक ही प्रथा के रूप-भेद हैं । आधुनिक युग में यह तीनों कलाएं 'संगीत, नृत्य और नाटक' अपने अत्यंत विकसित रूप में आज भी उतनी ही लोकप्रिय हैं ।

आखेट : आदिम मनोरंजन

मन बहलाव का सबसे पुराना तरीका आखेट है, जो प्राचीन रोम, यूनान, इंगलैंड तथा भारत-जैसे देशों में अत्यधिक लोकप्रिय रहा है । आखेट केवल मनोरंजन का ही नहीं, पुरुषों को अपनी शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन करने का अवसर भी देता है । परंतु ऐसा नहीं है कि पशु-पक्षियों का केवल आखेट ही किया जाता है, पशु-पक्षी पालन भी प्राचीन काल से मनोरंजन का साधन समझा जाता है । पशु-पक्षियों की लड़ाई मनोरंजन का एक अन्य तरीका है । स्पेन में सांडों की लड़ाई आज भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े पैमाने पर आयोजित की जाती है तथा एक अत्यंत लोकप्रिय क्रीड़ा है। भारत तथा इंगलैंड में मुर्गों की लड़ाई इसी भांति आरंभ से ही लोकप्रिय रही है। इंगलैंड में तो लड़ाई से पहले मुर्गे को 'बियर' पिलायी जाती है ताकि वह अपने प्रतिद्वंद्वी को हरा सके।

रथ-यात्राएं

यदि एक ओर भारत में जन-साधारण के मनोरंजन के लिए रथ-यात्राएं आयोजित की जाती थीं तो प्राचीन रोम और चीन में रथ-प्रतियोगिताएं। मनोरंजन का एक प्रकार अस्त्रयुद्ध भी है जो आज से पांच हजार वर्ष पूर्व मिस्र में आरंभ हुआ। भारत के महाकाव्यों में भी इसका वर्णन मिलता है और जापान में आज भी यह लोगों को आकर्षित करता है। धनुर्विद्या का प्रदर्शन और प्रतियोगिताएं केवल रामायण और महाभारत के समय में ही नहीं होती थीं, अपितु रोम और यूनान तथा आज इटली में भी लोगों का मनोरंजन करती हैं।

शतरंज और ताश

शतरंज एक अन्य खेल है जो बहुत पुराना है तथा विश्व को भारत की देन है। महाभारत में भी इसका उल्लेख है। असुर राजा रावण की रानी मंदोदरी ने यह खेल राक्षस योद्धाओं को सिखाया था ताकि वे अपने अवकाश के समय में कोई उत्पात न खड़ा करें। आजकल यह रूस का राष्ट्रीय खेल है तथा वहां अत्यधिक लोकप्रिय है। एक और आधुनिक खेल भी जो पश्चिमी देशों में बहुत प्रचलित है, वास्तव में भारत से ही विश्व को मिला— पोलो।

ताश का प्रारंभ मिस्र या चीन में हुआ। इंगलैंड में यह तेरहवीं शताब्दी में आया। उस समय बाईस ताश के पत्तों से खेला जाता था जिसे 'टैरट काड्स' कहते थे। इन 'टैरट काड्स' की सहायता से कुछ लोग भविष्यवाणियां भी किया करते थे। प्रत्येक पत्ते पर भिन्न चित्र बना होता था जो आज के ताश के पत्तों से स्वरूप में बिलकुल अलग था। आज ताश के कई प्रकार के खेल प्रचलित हैं, कुछ दांव लगाकर खेले जाते हैं, कुछ बिना दांव के।

ताश के खेलों के अतिरिक्त द्यूत अथवा जुआ और भी कई प्रकार से खेला जाता है जैसे चौसर, घुड़दौड़ या फिर पश्चिम में अधिक प्रचलित मशीनों की सहायता से खेले जानेवाले विभिन्न प्रकार के जुए। लॉटरी भी जुए का ही एक रूप है। जुआ युगों से मनोरंजन के तरीकों में अपना स्थान आज भी वैसे का वैसे बनाये हुए है क्योंकि यह खेलनेवालों में उत्तेजना का

मनोरंजन को आवश्यकता से अधिक महत्त्व देना समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। जो समाज मनोरंजन को अपने आप में एक ध्येय समझने लगता है, वह विलासिता की ओर बढ़ने लगता है। और अतिशय विलासिता विनाश की ओर ले जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचार करता है । आधुनिक युग ने कुछ एकदम हानिरहित खेल-कूद भी दिये हैं— जैसे टेनिस, क्रिकेट,फुटबाल, हॉकी इत्यादि । यह खेल अधिक स्वस्थ मानसिकता के प्रतीक हैं और आज इनके श्रेष्ठतम खिलाड़ी विश्वभर में प्रसिद्धि पाते हैं । पश्चिमी देशों में मनोरंजन-पार्क बनाये जाते हैं, जहां मशीनी खिलौने तरह-तरह से दर्शकों का मनोरंजन करते हैं जैसे कि अमरीका में डिसनी लैंड । पूर्व में जापान में इस तरह के मनोरंजन पार्क बनाये गये हैं । दिल्ली का 'अप्पू-घर' बनाकर कुछ इसी प्रकार का प्रयास किया गया है ।

खतरनाक मनोरंजन

उत्तेजना प्रदान करनेवाला एक अन्य मन-बहलाव का ढंग है मदिरापान जो पूर्व और पश्चिम में सदा समान रूप से जनप्रिय रहा । मदिरा के अतिरिक्त और कई प्रकार के नशीले पदार्थ लोगों को लुभाते हैं— तंबाकू, अफीम, चरस, गांजा इत्यादि और अब ब्राउन-शुगर जिसे स्मैक के नाम से भी जाना जाता है । क्षणिक उत्तेजना के अतिरिक्त यह नशीले पदार्थ व्यक्ति को जीवन की जटिल समस्याओं और कुंठाओं को भी कुछ पल के लिए भूलने में सहायक होते हैं । जीवन की कठोर वास्तविकता से पलायन की इच्छा ही मनुष्य को इन मादक पदार्थों की ओर धकेलती है और उसकी मानसिक दुर्बलता को दर्शाती है ।

खेल-कूद, मादक द्रव्यों के सेवन तथा जुए के अतिरिक्त मनोरंजन का एक और ढंग सदियों से केवल चला ही नहीं आ रहा, दिन-पर-दिन और भी घिनौना होता जा रहा है— वेश्यागमन । प्राचीन भारत में नगर वधुओं का अपना एक स्थान होता था और उनका धर्म था उस व्यक्ति को प्रसन्न करना था जो उनके पास आता था । फिर भी आम्रपाली तथा बसंतसेना-जैसी वेश्याओं को उस समय के नागरिकों ने भरपूर आदर भी दिया क्योंकि वे अपनी सीमाओं में बंधी भी सच्चरित्र थीं । फ्रां की नगरबधू, जापान की गीशा तथा नयी दुनि की कॉल-गर्ल, सब एक ऐसी व्यवस्था की शिकार हैं जहां दुर्बल का शोषण सामान्य धर्म और कर्म बन चुका है । वेश्याओं को आंरभ समाज को स्वस्थ तथा विकार-रहित रखनेवा एक दवा के रूप में स्वीकारा जाता था, परंतु आधुनिक मशीनी सभ्यता में, जहां केवल भौतिक और इंद्रिय सुख ही श्रेष्ठतम समझ जाता है, वे स्वयं समाज का एक विकार बन चुकी हैं । पश्चिम से पूर्व पर छायी हुई यह विकृति बढ़ते हुए वेश्याओं, नाइट-क्लबों, बड़े-बड़े होटलों में उत्तेजक कैबरे तथा 'स्ट्रिप-टीज शो' से स्पष्ट है ।

मनोरंजन की चाह से उपजा साहि

सभ्यता का प्रारंभ होते ही जब मनुष्य ने टोलियों में घूमना और रहना शुरू किया तो सबसे पहले वह अपना तथा अपने साथियों मन बहलाने लगा गीतों से, जिनमें कहानी का पुट भी रहता था । गीत, कहानी और उपन्यास-जैसी साहित्यिक विधाओं ने इसी प्रकार जन्म लिया । यूनान के महाकाव्य इलि के बैलेड तथा हमारी लोक-कथाओं का जन्म और विकास इसी प्रकार हुआ । धीरे-धीरे मनुष्य ने जब पढ़ना-लिखना सीखा, तब वह कहानी, कविता लिखकर कहने लगा और जीवन के सुंदरतम अनुभव 'साहित्य' का उ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

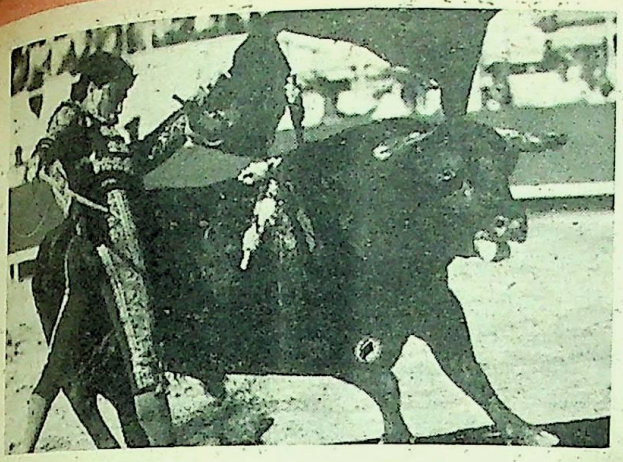

हजार को मिला। बुद्धि तथा विद्या के विकास के साथ मनुष्य रचनात्मक कार्यों, साहित्य, कला तथा दर्शन में रुचि लेने लगा। प्राचीन भारत में विविध प्रकार की गोष्ठियां आयोजित की जाती थीं जहां समान विद्या, बुद्धि तथा चित्त वाले मनुष्य एक स्थान पर एकत्रित होते थे और विचारों के आदान-प्रदान, काव्य रचना, पुस्तक पठन तथा बौद्धिक चिंतन से अपना मनोरंजन भी करते थे तथा मानसिक विकास भी। ब्रह्म-ज्ञान पर भी प्रायः बहस हुआ करती थी। कविता पाठ तथा नाटकों के उत्सव भी मनाये जाते थे जहां इन विधाओं से संबंधित प्रतियोगिताएं भी की जाती थीं, जैसे यूनान में।

सिनेमा— सस्ता मनोरंजन

विज्ञान के आविष्कारों ने आधुनिक संसार को मनोरंजन के नये साधन प्रदान किये हैं, जिनमें सिनेमा या चलचित्र प्रमुख है। मनोरंजन का कोई अन्य साधन शायद ही उतना लोकप्रिय रहा हो जितना सिनेमा है, विशेषकर भारत में। इसका कारण भी है। एक निर्धन देश होने के कारण यहां का सामान्यजन और किसी प्रकार मनोरंजन प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि उसके लिए खुले धन की आवश्यकता है। फिल्में मनोरंजन का सबसे सस्ता साधन हैं और तीन घंटे तक दर्शक अपनी परेशानियां भूलकर एक काल्पनिक संसार में विचर सकता है, अपने दैनिक संघर्षों से मुक्ति पा सकता है— पलायन का एक और रास्ता। इसी कारण यथार्थवादी फिल्में इतनी लोकप्रिय नहीं होतीं, जितनी रूमानी या हिंसा का प्रदर्शन करनेवाली क्योंकि उनको देखते समय दर्शक के अपने अंदर दबे आक्रोश को एक अभिव्यक्ति मिलती है।

सिनेमा की तरह ही, मनोरंजन का एक और साधन अत्यंत लोकप्रिय है— रेडियो। इस पर विभिन्न रुचियोंवाले व्यक्तियों के लिए अलग-अलग कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं— जैसे कि शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, नाटक, कविता, वार्ता तथा समाचार इत्यादि। वैसे रेडियो पर भी फिल्मी संगीत की ही प्रधानता है क्योंकि अधिकाधिक लोग यही सुनना चाहते हैं। पहले रेडियो 'सीलोन' और अब 'विविध भारती' की विज्ञापन सेवाओं की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकप्रियता इस बात की पुष्टि करती है ।

अब तो टेलीविजन तथा वी.सी.आर. ने मनोरंजन को एक नया आयाम दे दिया है । कभी जो बात मात्र कल्पना की उड़ान लगती थी— कि काश रेडियो पर बोलने या गानेवालों को देख भी सकते— टी.वी. का आविष्कार करके वैज्ञानिकों ने उसे सत्य बना दिया है । भारत में दूरदर्शन की शुरुआत उन्नीस सौ उनसठ में हुई ।

मनोरंजन की अनिवार्यता को जहां एक ओर नकारा नहीं जा सकता, वहीं उसे आवश्यकता से अधिक महत्त्व देना भी मानव समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है । जो समाज मनोरंजन को अपने आप में एक ध्येय समझने लगता है, वह विलासिता की ओर बढ़ने लगता है, बिना यह समझे कि क्या हो रहा है । विलासिता में डूबे व्यक्ति, देश, समाज का अंत होते देर नहीं लगती । कई समृद्ध प्राचीन सभ्यताएं इसी प्रकार नष्ट हुई हैं । उदाहरणार्थ प्राचीन रोम जो कि बहुत विकसित था और जिसकी सत्ता काफी फैली हुई थी । परंतु एक समय आया जब वहां के लोग मनोरंजन के नाम पर ऐश्वर्य में इतने लीन हो गये कि जुआ, सुरा और सुंदरी के अतिरिक्त और कुछ भी उन्हें नहीं सूझता था । परिणाम— पतन और फिर सर्वनाश । जो समाज अपने अवकाश का उपयोग कला, साहित्य अध्ययन तथा ज्ञानोपार्जन— जैसे रचनात्मक कार्यों में करता है, उसका सदा उत्थान होता है और उसकी सभ्यता व संस्कृति का विकास । परंतु जिस समाज में केवल मनोरंजन के अस्वस्थ तथा विकृत साधनों और तरीकों में जीवन की वास्तविकताओं को डुबोने का यत्न किया जाता है उसके लिए पतन की खाई और महाकाल का खुला मुंह रह जाता है ।

ए. ई.-२२,टैगोर गार्डन, नयी दिल्ली-२७

सौर साइकिल चल पड़ी

पश्चिम जरमनी में एक ऐसी साइकिल को हाल ही में सड़कों पर दौड़ते देखा गया जो सौर ऊर्जा से चलती है । इस मशीन के आविष्कारक जग्रेन ब्रैमर उनके सहयोगी, उत्तरी जरमनी स्थित कील विश्वविद्यालय के पॉल कांस्टमैन के अनुसार यह साइकिल ४५ किलोमीटर प्रति घंटे की गति से भाग सकती है । इसके कैरियर पर दोनों ओर सोलर मोड्यूल लगे हैं, जो मोटर को ऊर्जा प्रदान करते हैं । यह ऊर्जा फिर विद्युत में परिवर्तित हो जाती है । इसके बाद यही बिजली साइकिल के पेडल घुमाते सवार द्वारा उत्पन्न की गयी ऊर्जा को अपना योगदान देकर इस साइकिल की रफ़्तार को बढ़ा देती है ।

आकाश में बादल छाये होने की स्थिति में भी यह साइकिल अपना काम करती रहती है । सीधे सूर्य से शक्ति न मिलने पर सौर ऊर्जा से चार्ज हुई इसकी बैटरियां काम करने लगती हैं । इनकी शक्ति से साइकिल सवार बिना पैडल चलाये तीन घंटे तक चलता रह सकता है ।

—अ.रा. शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाजिदअली शाह ने जोगिया कपड़ा पहना

● जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी

अंगरेज इतिहास कारों, प्रशासकों और सेनापतियों ने अवध के अंतिम नवाब वाजिदअली शाह के बारे में यह धारणा फैलायी है कि वे अत्यंत विलासी थे, जिस कारण अवध का खजाना खाली हो गया था और जनता उनके विलास से इतनी तंग आ चुकी थी कि जब अंगरेज फौज बिना एक गोली चलाये उन्हें गिरफ्तार कर कलकत्ता ले गयी तो उनके किसी भी वफादार सिपाही ने इसका विरोध नहीं किया। साथ ही अब जब हम यह पढ़ते हैं कि सन १८५७ के भारतीय स्वाधीनता के प्रथम संग्राम के अवसर पर लखनऊ निवासियों ने अंगरेजों का अत्यंत सक्रिय विरोध किया और सिकंदर बाग की लड़ाई में तो एक-एक मकान पर एक-एक सीढ़ी पर चढ़ने के लिए अंगरेज सैनिकों को वहां के निवासियों का सशस्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवाब वाजिद अली शाह के संबंध में अंगरेजों इतिहासकारों और प्रशासकों ने अनेक प्रकार के भ्रम फैलाये थे । उन्हें एक विलासी राजा के रूप में चित्रित करने की पूरी कोशिश की थी ।

सामना करना पड़ा और वह लड़ाई जनता के प्रतिरोध की दृष्टि से स्टालिनग्राद में हिटलर की सेनाओं के विरोध से किसी प्रकार कम तेजस्वी नहीं थी । यद्यपि वह सफल नहीं रही, तो सहसा यह आश्चर्य होता है कि क्या कारण थे कि एक वर्ष के अंदर लखनऊ की जनता अंगरेजों के शासन से इतनी उकता गयी थी कि वह उनके विरुद्ध खड़ी हो गयी ।

यूरोपीय इतिहासकारों ने यह दिखाने की कोशिश की है कि बंगाल में बारकपुर और बहरामपुर की हिंदुस्तानी पलटन के सिपाही जो ब्राह्मण और क्षत्रिय थे, जब अप्रैल में १८५७ में मंगल पांडे के विरोध के बाद सेना से निकाल दिये गये और वह प्रायः अवध क्षेत्र के थे, तो उन्होंने लखनऊ और अपने पड़ोस के क्षेत्रों में आकर विरोध किया और गदर को हवा दी । भारतीय इतिहासकारों ने इन कथाओं को ज्यों-का-त्यों मान लिया और वाजिद अली शाह भारतीय मानस में एक विलासी राजा के रूप में चित्रित हुए । यहां तक कि लखनऊ के वीर सरदार वाजिदअली शाह के गद्दी से हटाये जाने से कितने उदासीन थे, इसका मार्मिक चित्रण श्री प्रेमचंद ने अपनी प्रसिद्ध कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी' में किया है ।

'उम्दातुल अखबार' में छपा विवरण

लेकिन किसी ने यह अध्ययन करने की कोशिश नहीं की कि किन परिस्थितियों में उस समय लखनऊ के निवासी अपने लोकप्रिय दयालु और धर्मनिरपेक्ष शासक वाजिदअली शाह की रक्षा नहीं कर सके और उनके जाने के बाद लखनऊ में क्या हुआ । परंतु इसका विवरण हमें उन समाचारपत्रों में मिलता है जो उस समय भारत के उस भाग में जिसे उत्तर प्रदेश कहते हैं प्रकाशित हुए । परंतु जिनका प्रसार काफी दूर तक था । ऐसा ही एक पत्र 'उम्दातुल अखबार' था, जो १८४६ में बरेली में प्रकाशित हुआ था । उस समय बरेली में सरकारी सहायता से एक स्कूल चलता था, जिसके सुप्रिंटेंडेंट एक अंगरेज महोदय ट्रेगर थे । उनका अपना प्रेस था, जिसमें यह पत्र छापा गया । इसके संपादक लछमन प्रसाद थे । अगस्त, १८५३ तक इसके संपादक रहे । वे बरेली के मदरसे में अध्यापक भी थे । उनके बाद लाला कल्याण राय दो वर्षों तक ४ जून १८५५ तक इसके संपादक रहे और १० जून १८५५ से श्री मिट्ठूलाल इसके संपादक हो गये । यद्यपि पत्र बरेली से निकलता था, परंतु इसके ग्राहक बनारस से लेकर वजीराबाद तक थे और उनमें रामपुर और फरुक्काबाद के नवाब बनारस के राजा शिवप्रसाद और राजा शिवप्रसाद सिंह तथा वजीराबाद के अंगरेज अधिकारी डी. इंगलिश-जैसे अनेक हिंदू-मुसलमान व अधिकारी थे । इस प्रकार यह ऐसा पत्र था जिसे आज की भाषा में उत्तरदायी पत्र कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन १८४६ में बरेली से एक अखबार छपता था— 'उम्दातुल अखबार'। इस अखबार से हमें नवाब वाजिद अली शाह के संबंध में नयी जानकारी मिलती है !

...है और कम-से-कम अंगरेजों के बारे में ...कोई अनुचित रिपोर्ट नहीं छप सकती थी, ...कि बरेली अंगरेज सरकार के अंतर्गत था। ...प्रदेश की सरकार उसकी छह प्रतियां ...थी और बनारस, बरेली, फरुक्काबाद ...इलाहाबाद के रईस लोग या बड़े अधिकारी ...प्रकार के समाचारों को नापसंद करते थे। ...इंगलिश के अलावा जबलपुर के मिस्टर ...आदि भी उसके ग्राहक थे। इस पत्र में ...इंडिया कंपनी और अवध के नवाब के ...के बारे में काफी विस्तार से समाचार ...थे। प्रत्येक अंक में, जो सोमवार को ...होता था, अवध के संबंध में ...मोटी घटनाएं छापी जाती थीं। अन्य ...पत्रों में भी इस संबंध में जो छपता था, ...भी हवाला दिया जाता था।

इस पत्र ने एक समाचार दिया कि लखनऊ ...१६३ मील दक्षिण कपरेडी में कैप्टन स्टोक्स ...नेतृत्व में जो फर्स्ट इंफेंटरी की टुकड़ी थी, ...विद्रोह कर दिया था और अवध के नवाब ...अंतर्गत एक अन्य राज्य तुलसीपुर के ...कुमार ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर ...था। इन घटनाओं के कारण ये अफवाहें ...रही थीं कि अब कंपनी अवध को अपने ...में मिला लेगी। अवध का रेजिडेंट ...बावनवीं रायल बटालियन (गोरों की सेना) ...दो भारतीय पदाति रेजिमेंटों और तोपों के साथ आ पहुंचे थे। उनके बाद कानपुर से लखनऊ के लिए सेना की कुमुक रवाना हुई। जनरल आउट्रम कानपुर से आये और ३१ जनवरी, १८५६ को उन्होंने लार्ड डल्होजी का वह पत्र नवाब वाजिदअली शाह को दिया, जिसमें यह कहा गया था कि तीन दिन के अंदर इस पर हस्ताक्षर कीजिए या इस्तीफा दीजिए। नवाब की माता ने कोशिश की कि कंपनी यह निर्णय न ले, लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं हुआ और तीन दिन बाद यह घोषणा निकाली गयी कि अवध की सल्तनत ईस्ट इंडिया के राज्य में मिला ली गयी है। जनरल आउट्रम ने वाजिदअली शाह के सभी मंत्रियों अली नकी, राजा बालकिशन और शरफुद्दौला को बुलाकर आदेश दिया कि वे अधीनस्थ अधिकारियों को आवश्यक आदेश निकालें। कोतवाल को आदेश दिया गया कि पुलिस थानों की सूची कैप्टन वैस्टन को सौंपी जाए जिन्होंने एक-एक थाने का चार्ज लेना प्रारंभ किया।

संपत्ति की अंधाधुंध नीलामी

नवाब वाजिदअली शाह ने अपनी माता और अपनी बेगमों तथा राजकुमार बिरजिस कद्र के साथ और अपने कर्मचारियों के साथ महल छोड़कर केसरबाग में आकर अपना डेरा डाला।

पत्र में लिखा गया है कि प्रतिदिन जो घटनाएं हो गयीं और नवाब वाजिद अली शाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाजिद अली का बेशकीमती सामान और उनकी संपत्ति रोज मंगोल कोठी और दिलाराम कोठी से नीलाम की गयी ।

ने अपने मुसाहिबों और दरबारियों से जो बातें कीं और उनसे जो मदद मांगी, उसका तो जिक्र नहीं किया जा सकता जैसे कि अली नकी और राजा बालकिशन ने यह कहा कि वह कोई मदद नहीं कर सकते, लेकिन दाब्रूदौला मौलवी अब्दुल लतीफ ने चार लाख रुपये और चौदह हजार अशर्फियां नवाब के सामने भेंट कर दीं । इसी तरह दयानुत्दौला, बशीरुद्दौला और बिहारीलाल शाह ने (जिन्होंने वृंदावन में शाह बिहारी का मंदिर बनवाया, जो लखनऊ की तत्कालीन स्थापत्य प्रणाली पर बना है) अपने पास जो भी नगदी और आभूषण थे, सभी नवाब के सामने भेंट कर दिये ।

नवाब वाजिदअली शाह आखिरी बार अपना खजाना देखने गये, जिसमें उन्होंने अपने हीरे-जवाहरात, आभूषण और सोने के बने एक हाथी, एक घोड़े और एक गाय को देखा, जिनमें से प्रत्येक का वजन सैकड़ों तोले था ।

वाजिदअली शाह का यह बेशकीमती सामान और उनकी सारी संपत्ति रोज मंगोलसराय कोठी और दिलाराम कोठी से नीलाम की गयी । बंदूकें और तोपें भी नीलाम की गयीं और हरेक को छह-छह रुपये के भाव से बेंच दिया गया । इनमें वे बंदूकें और तलवारें भी थीं, जिन पर सोने से पच्चीकारी की गयी थी और जिनको बनवाने में नवाब का बहुत-सा धन लगा था । घोड़े और भैंसे पंद्रह रुपये चार आने छह पाई और बारह रुपये तीन आने के भाव बेचे गये । हाथी ७६ रुपये और १०० रुपये प्रति हाथी के हिसाब से बेचे गये । बाद में अक्तूबर, १८५६ से जब खरीदार नहीं मिले उन जानवरों को और भी सस्ता बेच दिया गया यहां तक कि एक भैंस चार आने में नीलाम दी गयी । फिर भी नवाब साहब के जो जानवर नहीं बिक सके, उन्हें मार डाला गया ।

स्पष्ट है कि ये सब इसलिए किया गया कि नवाब की याद दिलानेवाली कोई वस्तु न बचे मोती महल भवन को फौजदारी अदालत के लिए सेना ने अपने कब्जे में ले लिया और इस तरह अन्य भवनों पर भी कब्जा कर लिया गया । ये वो कारण थे, जिससे लखनऊ की जनता अंगरेजी राज से एक वर्ष के अंदर ही घृणा करने लगी और उसके नागरिकों ने अंगरेजी राज में रहने की अपेक्षा मर जाना अधिक श्रेयष्कर समझा ।

इतिहासकारों की रहस्यमय चुप्पी

इस अखबार में संपादक ने यह भी लिखा कि १४ जुलाई, १८५५ को अवध के तख्ते द्वारा हमेशा याद किया जाएगा क्योंकि उस नवाब वाजिदअली शाह ने एक जोगी की पोशाक पहनी और अपने दरबारियों से भी कि वे भी जोगी की तरह गेरुआ वस्त्र पहन उनके साथ हिंदुओं के एक मेले में जाएं । संपादक की राय थी कि इस घटना से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४ जुलाई, १८५५ : इस दिन नवाब वाजिद अली शाह ने एक जोगी की पोशाक पहनी और अपने दरबारियों से भी कहा कि वे भी इसी रंग के वस्त्र पहनें ।

मुसलमानों में नवाब के प्रति कुछ दुर्भावना पैदा हो गयी क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि उनका नवाब इस तरह के कपड़े पहने । शायद यही कारण था कि हनुमानगढ़ी में दंगा हो गया, जिसमें मौलवी अमीर अली मारे गये ।

ये सारी घटनाएं न तो मेजर जनरल सर एफ. जे. गोल्डस्मिड की पुस्तक 'लाइफ आफ जेम्स आउट्रम' में मिलती हैं और न कमालुद्दीन हैदर द्वारा लिखित 'तारीखे अवध' में मिलती हैं । पर उससे भी ज्यादा आश्चर्य की बात यह है कि जब भारत के आजाद होने के बाद सिकंदराबाद के श्री के.ए. सजनलाल ने ये सारे समाचार 'इंडियन हिस्टोरिकल रेकार्ड कमीशन' के चौंतीसवें अधिवेशन में, जो २१ फरवरी,१९४८ से जयपुर में प्रारंभ हुआ, एक पत्रक के रूप में पढ़े, तब भी किसी इतिहासविद ने अवध का इतिहास लिखते हुए या १८५७ के तथाकथित सैनिक विद्रोह का इतिहास लिखते हुए प्रयोग नहीं किया । उस बैठक में लखनऊ विश्वविद्यालय के डॉक्टर एस.एन. दासगुप्ता, कलकत्ता के डॉक्टर आर.सी. मजूमदार, पुणे के महामहोपाध्याय दत्तोवामन पोद्दार, आगरा के श्री जे.सी. ताल्लुकदार, लखनऊ के डॉ. नंदलाल चटर्जी और इलाहाबाद के डॉ. विश्वेश्वर प्रसाद-जैसे इतिहासज्ञ उपस्थित थे ।

इतिहासकारों ने साहित्य और पत्रकारिता के आधार पर इतिहास लिखने का भारत में अभी तक प्रयत्न नहीं किया है । पहले यूरोप में भी साहित्य और लोक-परंपरा को इतिहास लेखन में कोई महत्त्व नहीं दिया जाता था । यद्यपि यात्री विवरणों, शिलालेखों, ताम्रपत्रों तथा पुरातत्व के प्रमाणों के आधार पर इतिहास लिखा जाता था । अब समकालीन इतिहास लिखने के लिए यूरोप और अमरीका में वैयक्तिक मेमोयर्स यानी आत्मकथ्य और पत्र-संग्रहों तथा कार्यालय की पुरानी पंजिकाओं का भी उपयोग होने लगा है । परंतु भारतीय इतिहासज्ञ समाचारपत्रों को इतिहास का स्रोत नहीं मानते । इसकी हानि समाज को भी उठानी पड़ती है और प्रशासन को भी । वर्ष १८५९ में पादरी लौंग ने १८५७ के विद्रोह से पहले प्रकाशित समाचारों की एक समीक्षा में यह लिखा था कि यदि १८५६ और १८५७ के बीच में उत्तर-पश्चिमी प्रांतों में प्रकाशित समाचारपत्रों को ध्यान से पढ़ा गया होता, तो जो बड़ा विद्रोह हुआ, उसकी कल्पना की जा सकती थी । ब्रिटिश सरकार तो कल्पनाहीन थी ही, समाचारपत्रों की सामग्री पर भरोसा न कर हम भी अपने को कल्पनाहीन घोषित कर रहे हैं ।

— ५५, काकानगर, नयी दिल्ली—११०००३

मनश्चिकित्सक की सलाह—
यदि आप स्वयं को पागल समझते हैं तो आप पागल नहीं लेकिन आप यदि दूसरों को पागल समझते हैं तो आप पागल हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोग से तीर सूर्य के भाई को लगा । सूर्य का भाई आकाश से नीचे आ गिरा । संसार में अंधेरा हो गया । सूर्य घबराकर कहीं जा छिपा

सूर्य के चार भाई थे । इनमें से दो बचपन में ही काल-कवलित हो गये और एक किसी दुर्घटना में (किसी के हाथों) मारा गया । सूर्य

मणिपुरी लोककथा

ऐसे आयी रोशनी

● देवराज

और उसका एक बड़ा भाई बच गये । सूर्य का बड़ा भाई भी उसी की तरह चमकदार और ऊर्जावान था । दोनों भाई बारी-बारी से संसार को प्रकाशित करते थे । दिनभर सूर्य चमकता था और जैसे ही वह अस्त होता था, उसका भाई आकाश के पूर्वी छोर पर उदित हो जाता था । उनके इस प्रकार चमकने से संसार में कभी भी रात्रि नहीं होती थी ।

वैसे तो दिन-रात प्रकाश रहने के कारण सभी लोग परेशान थे, किंतु ख्राईनोङ् जेङ् पीबा नामका एक आदमी सबसे अधिक परेशानी अनुभव करता था । उसे इस बात से अत्यंत क्षोभ था, कि न तो वह अपनी संतान को लाड़-प्यार कर पाता है और न अपनी पत्नी को प्यार करने के लिए समय निकाल पाता है, क्योंकि उसे हर समय दिन रहने के कारण अपने काम में जुटे रहना पड़ता है । जब उसका क्रोध सीमा से बाहर हो गया, तो उसने एक दिन अपनी पत्नी से कहा, कि वह नोमाइजिङ् पहाड़ पर रहनेवाले लोगों के पास जाकर एक लंबा बांस मांग लाये । उसकी पत्नी उन लोगों के पास गयी, किंतु वहां से उसे बांस नहीं मिला । तब पति ने उसे उसके मामा के यहां से बांस लाने का आदेश दिया । वहां से बांस लाकर पत्नी ने पति को थमा दिया ।

ख्राईनोङ् जेङ् पीबा ने बांस से तीर और कमान तैयार किया । तीरों को उसने विष में बुझाया और निशाना लगाने का अभ्यास करने का निश्चय किया । इसमें उसकी पत्नी ने पूरा सहयोग किया । उसने अपने सिर पर पानी से भरा घड़ा रखा और ख्राइनोङ् जेङ् पीबा ने निशाना लगाया । फिर उसने अपनी पत्नी के कुंडल पर निशाना लगाया और कान को बिना कोई नुकसान पहुंचाये, उसे काट डाला । इस प्रकार अभ्यास करते-करते वह इतना कुशल हो गया कि एक दिन उसने दूर धान के पौधे पर बैठी छोटी चिड़िया को मार गिराया । उसके मुंह से निकला, "अब उसे अवश्य मार दूंगा ।"

एक दिन ख्राइनोङ्-जेङ् पीबा ने धनुष संभाला और घर से बाहर निकलकर दूर चला गया । एक स्थान पर जाकर वह शाम होने की प्रतीक्षा करने लगा । शाम हुई, सूर्य अस्ताचल की ओर गया...सूर्य का बड़ा भाई प्रकाश फैलाने के लिए आकाश में चढ़ आया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख्वाइनौङ् जेङ् पीबा इसी समय की प्रतीक्षा में था । उसने विष-बुझा तीर धनुष पर चढ़ाया और पूरी शक्ति के साथ सूर्य के भाई पर चला दिया । संयोग से तीर सूर्य के भाई के घोड़े को लगा । सूर्य का भाई आकाश से नीचे आ गिरा । संसार में अंधेरा हो गया । सूर्य अपने भाई के साथ घटी इस दुर्घटना से घबराकर कहीं जा छिपा । वह दिन में भी प्रकाश फैलाने नहीं आया । बहुत दिनों तक सारा संसार अंधेरे में डूबा रहा । तब भगवान ने देवी पान्थोइबी को सूर्य के पास भेजा, जिसने समझा-बुझाकर उसे फिर से संसार में प्रकाश फैलाने को राजी किया.....

एक था राजा । राजा ने देखा एक छिपकली सरपत के डंठल को मुंह में दबा अपनी पूंछ को पतवार की तरह चलाते हुए नदी पार कर रही है । इससे राजा के मन में नाव की कल्पना ने जन्म लिया । उसने वाङ् मितखु और वाङ् मनाचो नाम के दो भाइयों को एक सीधा-लंबा पेड़ काट कर लाने और उससे नाव बनाने का आदेश दिया । उन्होंने कुछ अन्य सहयोगियों के साथ इङ्गेल पर्वत के जंगल में उनिङ् थौ का श्रेष्ठ पेड़ खोज निकाला । इसके बाद उन्होंने माइबा (ओझा-जैसा एक व्यक्ति) के माध्यम से फल, फूल, कच्चे चावल, सोना-चांदी, अंडे और मुरगे आदि को अर्पित करके पेड़ की पूजा की । पूजा समाप्त करके उन्होंने पेड़ को संबोधित करके कहा, 'आज तुम्हारा मूल्य चुकाकर पूजा की है, कल तुम्हें काट ले जाएंगे ।' जब रात होती है और सब सो जाते हैं तो पेड़ की मां इरोक लाइचम लेमा और उसका

उन्होंने पेड़ को समझाया था कि यदि वह श्रेष्ठ पेड़ बनेगा तो कोई उसे काट डालेगा किंतु उसने न सुनी और....

पिता ईरोक निङ.थौ विलाप करते हैं । वे सिसक-सिसककर कहते हैं कि अब वे किसका मुंह देख कर जिएंगे । उन्होंने पेड़ को बचपन में ही समझाया था कि यदि वह श्रेष्ठ पेड़ बनेगा तो कोई उसे काट डालेगा, किंतु उसने एक न सुनी और उनिङ् थौ बन गया । इसी कारण उसे अब जान से हाथ धोना पड़ रहा है । इसी प्रकार पेड़ के माता-पिता विलाप करते हैं । अंततः वे उसे राजा की सवारी बनने का आशीर्वाद देकर पुत्र वियोग का दुःख मन में लिये रोते रह जाते हैं ।...."

—हिंदी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय,
कांचीपुर, इंफाल (मणिपुर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोम और रोमन सभ्यता ने विश्व को बहुत-कुछ दिया है। रोमनों का आमोद-प्रमोद और मनोरंजन भी प्रसिद्ध है। पर सभ्य और उन्नत होने का दावा करनेवाले रोमनों का एक रक्तरंजित मनोरंजन था— हिंस्र पशु और निहत्थे व्यक्ति के बीच लड़ाई या ग्लेडिएटरों का पारस्परिक द्वंद्व युद्ध !

रोमनों का रक्तरंजित मनोरंजन

योद्धाओं का प्राणघातक युद्ध ही उनका मनोरंजन था!

● अनुभव वशिष्ठ

रोम और रोमन सभ्यता ने विश्व को बहुत कुछ दिया है। बहुत-कुछ ऐसा भी दिया जो अजीबोगरीब है। इन्हीं अजीबोगरीबों में एक है— 'ग्लेडिएटर।' ग्लेडिएटर वे योद्धा होते थे, जो मनोरंजन के लिए लड़ाये जाते थे। घायल योद्धा की चीत्कार में, उसकी मृत्यु में लोगों को अजीब आनंद मिलता था।

यूं तो रोमनों के मनोरंजन के बहुत-से साधन थे, लेकिन उनका सबसे प्रिय साधन था खूंख्वार जंगली जानवरों के साथ निहत्थे आदमी को लड़ता देखना। पशु और आदमी के इस युद्ध से भी अधिक रोमांचक होता था— दो सक्षम सशस्त्र योद्धाओं को द्वंद्व युद्ध करते देखना। इन योद्धाओं के पास प्रायः तलवारें होती थीं। तलवार को रोमन भाषा में 'ग्लेडिअस' कहा जाता है। इसीलिए इन्हें 'ग्लेडिएटर' कहा जाता था। ग्लेडिएटर अधिकतर तो युद्ध में बनाये गये बंदी सैनिक होते थे। लेकिन इनमें अपराधी भी होते थे, [illegible] अपराधी भी जो तलवार चलाना तक नहीं जानते थे। इन अपराधी और शत्रु-सैनिकों को मौत की सजा देने का भी यह एक सार्वजनिक तरीका था। बड़े-से मैदान में चारों ओर आम नागरिक और विशिष्ट लोग जमा हो जाते थे। दो बंदियों को मैदान में तलवार देकर उतार दिया जाता था। वे अंतिम सांस तक परस्पर लड़ते, घायल होते और मरते थे। इसे देखकर आम जनता मनोरंजन करती थी।

आगे चलकर रोमनों ने इस खेल में सुधार किया और मैदान में उतारे जानेवाले दोनों

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लेडिएटर द्वंद्व युद्ध कला में प्रशिक्षित किये जाने लगे, क्योंकि, प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित के बीच युद्ध देखने में क्या मजा, जबकि टक्कर बराबर की न हो ? इसलिए इनके प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण केंद्र बनाये गये ।

ग्लेडिएटर के प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य उन्हें अच्छी तरह लड़ना और उतनी ही अच्छी तरह लड़ते-लड़ते मरना सिखाया जाना होता था । ग्लेडिएटर को अपने बचाव के लिए केवल हाथों और पैरों में कवच-जैसे सुरक्षात्मक उपकरण बांधने की अनुमति थी, लेकिन वक्ष, कमर, गरदन, सर आदि जहां लगा प्रहार प्राणघातक होता है, वहां पर किसी प्रकार के रक्षक का प्रयोग वर्जित था । हां, उन्हें ढाल अवश्य दी जाती थी ।

वैसे तो अकसर इन द्वंद्वयुद्धों में दो में से एक अवश्य ही मारा जाता था, तभी खेल समाप्त होता था, फिर भी कभी-कभी ऐसा भी होता था कि दोनों ही ग्लेडिएटर बराबर की टक्कर के होते । जब उन्हें लड़ते-लड़ते बहुत समय हो जाता और दोनों ही अपने पैरों पर खड़े रहते, कोई भी न गिरता, तो ऐसी स्थिति में खेल खत्म कर दिया जाता तथा दोनों को मैदान से वापस, जीवित ही बुला लिया जाता । लेकिन ऐसा कम ही होता । यदि दर्शकों में उपस्थित विशिष्ट अधिकारी व नागरिक यह पाते कि हारनेवाला ग्लेडिएटर बहुत बहादुरी और दक्षता से लड़ा है, जिससे वे प्रभावित हैं, तो सफेद रूमाल हिला देते । इसका मतलब होता कि हारे हुए ग्लेडिएटर को जान से न मारा जाए, बल्कि उसे क्षमा देकर छोड़ दिया जाए । यदि ऐसा न होता तो सफेद रूमाल की बजाय मुट्ठी बांधकर

स्पार्टाकिस : जो पहले ग्लेडिएटर था और बाद में जिसने गुलाम ग्लेडिएटरों का नेतृत्व कर उन्हें मुक्त कराया ।

अंगूठा नीचे की ओर कर दिया जाता, जिसका मतलब होता कि उसे जान से मार दिया जाए । कुछ ग्लेडिएटर तो बहुत ही प्रसिद्ध हुए हैं । ऐसे ग्लेडिएटर को दासता से मुक्त कर दिया जाता था ।

यह खेल आगे चलकर इतना लोकप्रिय हुआ कि रोम के अनेक स्वतंत्र और सामान्य नागरिकों ने ग्लेडिएटर होना पसंद किया । ऐसे ग्लेडिएटरों में सामान्य नागरिक ही नहीं, बल्कि सामंत वर्ग के युवक भी रहे । इतना ही नहीं, इस खेल ने महिलाओं को भी इतना आकर्षित किया कि वे भी ग्लेडिएटर बनीं । महिला ग्लेडिएटर महिला ग्लेडिएटर से ही लड़ती थी । लेकिन इनका दौर अधिक दिनों तक नहीं चला । ईसा की दूसरी सदी के आस-पास महिला ग्लेडिएटरों पर प्रतिबंध लगा दिया गया ।

—१५७८, चन्द्रावल रोड, सब्जीमंडी, दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलुषित हो रहे हैं त्यौहार

● राजकिशोर नैन

'फागुन' मस्ती का महीना है। गंवई-गांव में इस अवसर पर बौर से लदे आम के दरख्तों पर कोयल की कूक मन को मुग्ध और तन को बेसुध करती है। यौवन मदमाता है। ललनाओं का नूर सवाया होता है। प्रकृति और प्राणी दोनों के मन एक हो जाते हैं। इस मास सरसों के पीले फूलों द्वारा मंडित खेतों में लहलहाती फसलें सोने का बाना बदलती हैं। गांवों में चारों ओर एक अनकही मादकता और उल्लास का वातावरण होता है। किसानों व मजदूरों के घरों में नये अन्न के ठेके लगते हैं। वे खुशी से झूमते हैं।

बदल गया है सब कुछ

'वसंतोत्सव' का दुर्लभ पर्व किसानों की इसी खुशी का प्रतीक है। 'होली' के रूप में मनाया जाने वाला यह त्यौहार जाड़े को विदाई और ग्रीष्म ऋतु को खुला आमंत्रण देता है। प्राचीनकाल से देशभर में इस पर्व की परंपरा चली आती है, किंतु समय की करवट के साथ इस रंगीले त्यौहार की शालीनता और सौम्यता में अत्यधिक बदलाव आ गया है। हर्षोल्लास और आनंद के इस पर्व की मौज-मस्ती अब वैसी नहीं है। असली अबीर-गुलाल और केसरयुक्त टेसू के रंगों के लोप होने के साथ ही चुहुल और हुड़दंगभरी भावनाओं का भी लोप हो गया है। स्वार्थपरता और लोभ-लालच की काली छाया ने ठिठोलियों को परे धकेल दिया है। आपस की दूषित होती भावनाओं ने होली के उठाकों को ग्रस लिया है।

अभिजात वर्ग की, शहरी पारंपरिक होलियों में बेहूदा, अभद्र हरकतों एवं फूहड़ जुमलों का समावेश हुआ है। शहरी युवा या तो होली की मस्ती शराबखानों, जुआघरों व होटलों तथा क्लबों में तलाशते हैं या फिर खोटी नीयत से कमसिन लड़कियों और युवा महिलाओं के संवेदनशील अंगों पर गुब्बारे तोड़ने-जैसी बेहूदा हरकतें करते हैं। बुरी नीयत वाले ऐसे युवा

कादंबिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

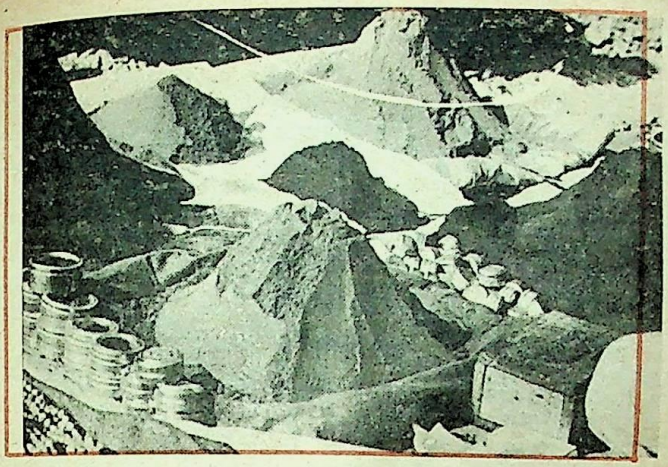

पराई औरतों से छेड़खानी करते हैं तथा अश्लील फिकरे कसते हैं । पहले शहरी स्त्री-पुरुष बिना दुर्भावना के होली खेलते थे, अब ऐसा करते हुए डर लगने लगा है ।

वायुमंडल शुद्धि के लिए 'डांडा'

गांवों की होली भी अब सिमटी-सिमटी नजर आती है । मात्र एक-दो दशक पहले तक बसंत पंचमी के दिन हर गांव में 'डांडा' गाड़ने का रिवाज था, अब यह सर्वत्र न होकर कहीं-कहीं ही दीख पड़ता है । इस डांडे के आसपास होली आने तक कुछ खास तरह की लकड़ियां एकत्र की जाती थीं तथा मुख्य पर्व वाले दिन वायु प्रदूषण समाप्त करने हेतु इन्हें जलाया जाता था । किंतु भौतिकता की चकाचौंध में डूबी शहरी सभ्यता ने गांवों व कस्बों की इन सुदृढ़ परंपराओं और भोली सुविधाओं को लील लिया है । बढ़ती महंगाई, भुखमरी और गरीबी ने भी लोगों को उदासीन बना दिया है ।

पहले की बात और थी । गोबर-मिट्टी से लिपे-पुते कच्चे घरों के आंगन त्यौहार से पूर्व ही फागुनी मस्ती में झूम उठते थे । देर रात तक अल्हड़ किशोरियों की एड़ियों की दलक से घर की दहलीज दहलती थी । डफ, झांझ, ढोल, घड़ुवे, मंजीरे और चंग की मीठी ताल पर लोकगीतों और लोक-नृत्यों की धूम मचती थी । रात-रातभर बारी व खेतों में देसी संगीत ६८ हफिलें जमती थीं ।

रंगों की जगह कीचड़, तारकोल ने ले ली

उपर्युक्त ठाठ अब गांवों में दुर्लभ हो गये हैं । पर्यावरण की दृष्टि से नरक बन चुके गांवों में अब बारहों महीने कीचड़ सड़ता है । रंगों की जगह इस कीचड़, गोबर, तेल, तारकोल व गंदले पानी से होली खेली जाती है । पुराने लोग धुलेंडी से एक-दो दिन पूर्व ढाक और टेसू के मनभावन सुर्ख फूलों को हौद में डाल कर, पानी भर देते थे । पूरी रात फूलों का रंग पानी में घुलता था । अगले दिन इस रंग में केसर घोलकर आयु, स्तर और वर्ण के भेदभाव को भूलकर, विभिन्न पोशाकें पहनकर औरत-मर्द फाग खेलते थे तथा अवर्णनीय समां बंधता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

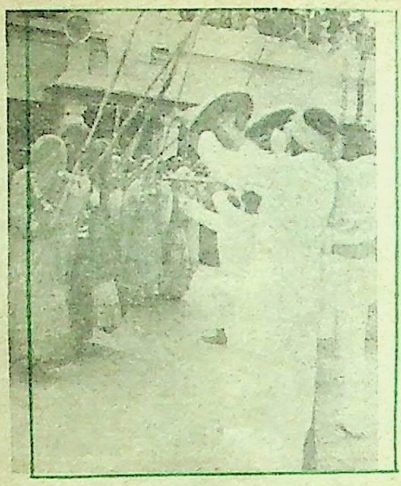

श्रीकृष्ण जन्मभूमि में प्रसिद्ध लठामार होली

था । लोग भेदभाव भूलकर रंग के छिड़काव द्वारा प्रसन्नता बांटते थे । भाभियां निहत्थे देवरों पर कोड़े बरसाकर अपनी भड़ास निकालती थीं तथा देवर पीतल की बनी पिचकारियों में रंग भरकर उंडेलते थे । यह पानी शीतल होने के साथ ही चर्म रोगों के लिए हितकारी होता था । गांवभर के नर-नारी एक खास जगह एकत्र होते थे । हमउम्र देवर-भाभियों में खूब जमकर हंसी-ठिठोली होती थी । मनों की तादाद में रंग खपता था । अब टेसू ढूंढ़ना और उससे रंग बनाना 'झंझट' का काम हो गया है तथा इसकी जगह नुकसानदेह कृत्रिम रंगों ने ले ली है तथा पुराने जमाने के अबीर-गुलाल अब देखने को भी नहीं हैं ।

खो गयी है शालीनता

यह इस कारण हुआ है—पुराने लोगों की देह जर्जर और बूढ़ी हो गयी है और युवा पीढ़ी आधुनिकता की अंधी दौड़ में फंसी हुई है । नयी हवा ने इस त्यौहार को बेहद कलुषित कर दिया है । पहले-जैसा हंसी-ठट्ठा भी अब नहीं है । तब, लोग हंसी-हंसी में सोते हुए आदमी को खाट समेत कुएं में धकेल देते थे और वह उफ तक नहीं करता था क्योंकि यह सब विशुद्ध हास-परिहास और मौज-मस्ती हेतु होता था । अश्लील मजाक और गाली-गलौज भी होते थे किंतु उनकी एक सीमा होती थी । किंतु अब जीजा-साली और देवर-भाभी के रिश्तों में भी उच्छृंखलता और अश्लीलता अपनी हद पार करती दीख पड़ती है । इन रिश्तों की आड़ में गलत परंपराएं पनप रही हैं ।

हास्य-व्यंग्य और जिंदादिली की जो मिसालें बड़े-बूढ़ों के समय होती थीं, अब वैसी नहीं हैं । ग्रामीण लोगों के हृदयों में आत्मीयता का लोप होने व आपसी रंजिश के कारण होली के प्रति भले मानसों की अरुचि बढ़ रही है । ज्यादातर लोग शराब अथवा नशीले पदार्थों का सेवन कर फाग खेलते हैं । ऐसे भंगेड़ियों व नशेड़ियों के कारण अच्छे लोगों का घर से निकलना दूभर हो गया है । ऐसे मुसटंडों के कारण ही गाली-गलौज और मारपीट की घटनाएं आम हो गयी हैं ।

होली

पहले होली पर गुड़-घी के मोदक व मीठे पकवान हर घर में चाव से बनाये जाते थे, अब उनकी जगह शहरी घटिया मिठाई ने ले ली है । पारंपरिक व्यंजनों का स्थान इनमें कहां ?

हां, बच्चों का हुड़दंग अब भी यथावत लगता है । किलकारी भरकर भागते हुए नंग-धड़ंग बच्चे मिट्टी के साथ मिट्टी होकर खूब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

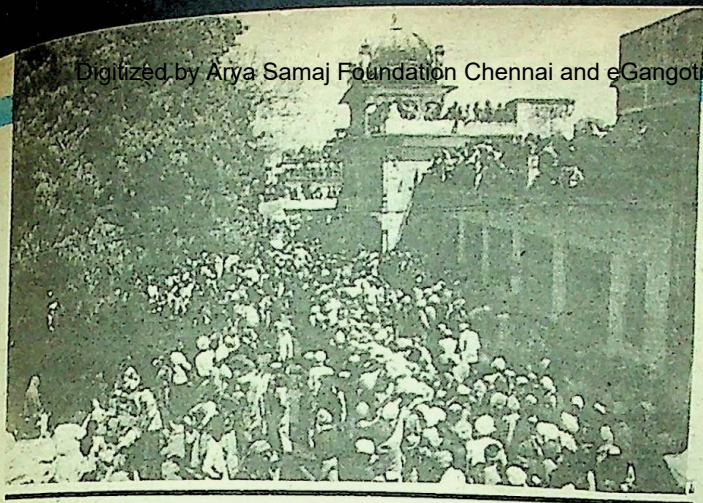

आइए पूरे पखवाड़े लंगर करें !

लेख व छाया : डॉ. एच.एन. मिश्रा

प्राकृतिक छटा से भरपूर हिमालय और शिवालिक पहाड़ियों के बीच बसे देहरादून के संस्थापक गुरु रामराय के पावन स्मृति में झंडा उत्सव उनकी पावन जन्म तिथि पर चैतकृष्ण पंचमी (होली के चौथे दिन) को हर वर्ष बड़े ही धूम-धाम से मनाया जाता है ।

देहरादून रेलवे स्टेशन से उत्तर-पश्चिम में केवल पांच मिनट पैदल चलकर हमें दिखायी पड़ती है किलेनुमा प्राचीर, जिसके चारों तरफ चार प्रवेश द्वार और उसके ऊपरी भाग में बनी झरोखेदार मीनारें इसकी भव्यता का परिचय देते हैं । यही है— दरबार गुरु रामराय । इसी गुरुद्वारे के पूर्व के चारदीवारी के अंदर है एक छोटा-सा जलाशय, उसी के समीप है गुरु रामराय का ऊंचा चबूतरा, जिस पर बैठकर वे प्रवचन करते थे । और उसी के सामने है वह कमरा जिसमें बैठकर उन्होंने अंतिम समाधि ली थी । प्राचीर के अंदर के एक भाग में है गुरु रामराय की संगमरमरी गुंबदवाली विशाल समाधि और उसके दूसरे भाग में है एक दो मंजली बनी इमारत जिसके निचले हिस्से में गुरु रामराय की गद्दी है । वहीं हैं उनके और पिछले आठों महंतों के तैल रंग से बने आदमकद भव्य चित्र, जो चारों तरफ की दीवारों पर लगे हैं । ऊपरी मंजिल में वर्तमान महंत की गद्दी है । इसके अलावा है अतिथियों के रहने के लिए होस्टलनुमा कमरे, कर्मचारियों के आवास, कार्यालय, लंगर आदि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरबार के पश्चिम के अंतिम छोर पर है एक तीन मंजिली इमारत जिसमें है सुंदर भित्ति चित्रों से सुसज्जित एक विशाल द्वार । और इसी के आगे खड़ा है संगमरमरी सीढ़ीनुमा गोल चबूतरे के बीच रुपहले, सुनहले गोटों से सजा, लाल, हरे, पीले, केसरिया रंगों के छोटे-बड़े झंडों से लदा लगभग सौ फुट ऊंचा अहर्निष लहराता झंडा । यह झंडा मात्र केवल झंडा नही है—यह है गुरु रामराय के आध्यात्मिक चमत्कारिक शक्तियों से प्राण प्रतिष्ठित झंडा । यह है उस ऐतिहासिक सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक जिसकी पृष्ठभूमि में इस नगर का विकास हुआ । आज यह देहरादून के जनमानस के प्रतीत में है—'झंडा साहब' ।

ऐतिहासिकता

१७ वीं सदी के उत्तरार्ध में सिखों के सातवें गुरु हरराय के ज्येष्ठ पुत्र गुरु रामराय ने गुरु गद्दी से वंचित होकर, तत्कालिन गढ़वाल नरेश फतेहशाह के नाम मुगल बादशाह औरंगजेब का फरमान लेकर इस घाटी में आकर खुड़बुड़ा में अपना डेरा डाल दिया । गढ़वाल नरेश से मिले सात गांव—धामावाला, चामासारी, खुड़बुड़ा, धुरतावाला, कौवली, पंडितवाणी और राजपुर की जागीरें पाकर गुरु रामराय यहां के उदासीपंथ के अध्यक्ष जागीरदार के रूप में स्थापित हुए । धीरे-धीरे गुरु रामराय के अनुयायी बढ़ने लगे और उनका डेरा गुरुद्वारे के आस-पास ही बनने लगा । क्रमशः भीड़ बढ़ती गयी ! और इस प्रकार उदय हुआ—डेरा-दून, कालांतर में देहरादून ।

निःसंतान मरे गुरु रामराय (१६८७) के बाद उनकी जागीर की प्रबंधक बनीं उनकी चार पत्नियों में से सबसे छोटी पत्नी माता पंजाब कौर । उन्होंने ही दरबार में महंती की परंपरा डाली । साथ ही यह नियम बनाया कि दरबार का महंत आजीवन अविवाहित, ब्रह्मचारी होगा । और पदासीन महंत का मनोनीत व्यक्ति ही उसका उत्तराधिकारी बनेगा ।

माता पंजाब कौर ने अपने जीवन काल में ही इस विशाल गुरुद्वारे को वर्तमान स्वरूप दिया था । गुरुद्वारे के चारों ओर किलेनुमा प्राचीर का उन्होंने निर्माण करवाकर उसके बीच में स्थापित किया मुगल वास्तुकला से मिलती-जुलती गुरुरामराय की विशाल समाधि । बाद में चलकर उसके चारों कोनों में बने उनकी चारों पत्नियों के चार देहरे । बाद के महंतों ने भी गुरुद्वारे के साज-सज्जा, रख-रखाव, नये-नये भवन निर्माण में कोई कमी नहीं की । महंत नारायणदास ने पश्चिम के विशाल फाटक का निर्माण कराकर उसमें सुंदर भित्ति चित्रों की रचना करवायी, जो आज झंडा गेट के नाम से जाना जाता है । वर्तमान महंत ने भी गुरु रामराय के समाधि को संगमरमर के पत्थरों से जड़ने का कार्य प्रारंभ किया है ।

आज भी आती है पंजाब से संगत

इस झंडे मेले में आने के लिए पंजाब के चंडीगढ़ के पास खराड़ तहसील के बहलोलपुर में महंत के द्वारा भेजे गये हुक्मनामे के आधार पर एक संगत जुड़ती है । जो पैदल चलकर बड़े गांव, गोपाल मोचन, खिजरावाद आदि गांवों में रुकती हुई फाल्गुन के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देहरादून से पैंतालीस किलोमीटर दूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुद्वारे के आस-पास बाहर से आनेवाली मिठाई, खाजा, लकड़ी से बने सामानों, लोहे के बर्तनों, औजारों, स्त्रियों के सौंदर्य प्रसाधनों आदि की दुकानें, छोटे-मोटे सर्कस, डांसपार्टी, घूमंतू फोटो स्टूडियो, जादूगरी दिखानेवालों की तंबू कनातें झंडारोहण से कुछ दिन पहले ही आकर अपना डेरा डाल देती हैं । एक पखवारा चलनेवाला यह मेला यद्यपि धार्मिक मेला है पर इसका देहरादून के जीवन में अपना एक सामाजिक सांस्कृतिक महत्त्व है ।

हरियाणवी गांव राइयांवाला पहुंचती है । यहां पर महंत स्वयं उनका अभिवादन स्वीकार करने पहुंचते हैं । वहीं पर एक छोटा झंडारोहण समारोह होता है । गुरु रामराय अपने जीवनकाल में स्वयं वहां पहुंचते थे । गुरु का दर्शन करने के बाद बहुत से संगत के लोग पंजाब वापस चले जाते थे और कुछ लोग झंडा उत्सव में भाग लेने के लिए गुरु रामराय व संगत के साथ पैदल चलते हुए फाल्गुन शुक्ल के त्रयोदशी को दरबार पहुंचते थे । कहा जाता है कि यह संगत उसी रास्ते से देहरादून पहुंचती है जिस रास्ते से माता पंजाब कौर का डोला देहरादून आया था ।

इस परंपरा को गुरु के स्वर्गवास के बाद दरबार के गद्दीनसीन महंतों ने भी कायम रखा । पहले के महंत हाथी-घोड़ों, लाव-लस्कर के भव्य जलूस के साथ फागुन माह शुक्ल नवमी को ही दरबार से प्रस्थान करते थे और रामपुर, टौंगरी (हिमाचल) नवाशहर आदि गांवों में रुकते हुए एकादशी को राइयांवाला पहुंचते थे । और वहां पर संगत की आगवानी तथा झंडा चढ़ाकर उनके साथ पैदल दरबार वापस लौटते थे ।

आज सैकड़ों साल से चली आ रही परंपरा में समय के चक्र ने बहुत-से परिवर्तन कर दिये हैं । अब पंजाब से आनेवाली संगत की संख्या मात्र आठ-दस रह गयी है । वर्तमान महंत भी उनकी आगवानी करने अपने दल-बल के साथ पैदल नहीं जाते । बस, जीप या कार का उपयोग करते हैं । और उसी दिन राइयांवाला में संगत के साथ झंडा चढ़ा वापस दरबार लौट आते हैं । दूसरे दिन पुनः सहसपुर और तीसरे दिन पैदल अपने भक्तों के साथ कांवली गांव जाकर वहां पर टिकी संगत को एक जलूस के रूप में दरबार लाते हैं । संगत दर्शनी गेट से गुरुद्वारे में प्रवेश करके सबसे पहले गुरुरामराय की समाधि पर मत्था टेकती है और उनकी जय के साथ गुरुद्वारे में ही अपना पड़ाव डाल देती है । दरबार द्वारा उनके भोजन व रहने की समुचित व्यवस्था होती है । संगत दरबार में ही होली का त्योहार मनाती है । और झंडारोहण के सभी कर्मकांड में हिस्सा लेती है ।

झंडारोहण

वैसे तो रोज ही देहरादून का आम नागरिक झंडे पर मत्था टेकने, प्रसाद चढ़ाने, मनौतियां मानने आता है जो आज यहां के सांस्कृतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन का अंग बन गया है । पर झंडारोहण के दिन इसकी छठा ही और होती है । प्रातः से ही महंत की आज्ञा से हजारों श्रद्धालु भक्तों द्वारा पुराना झंडा उतारने तथा उसकी परंपरा के तहत उसको दही, हल्दी, चंदन, गंगाजल का लेप लगा व स्नान कराके उस विशाल झंडे को अपने कंधे पर रखे हुए उसमें सुनहले-रुपहले गोटों से सुसज्जित मैरून रंग के खोल को पहनाते हैं । उसके अंतिम सिरे पर दो तिकोनेवाले गहरे हरे रंग के झंडे को बांधते हैं । पुराना झंडा उतारने और नया झंडा लगाने के बीच में जो धार्मिक अनुष्ठान होते हैं उसमें पूरा दिन लग जाता है । संध्या होते-होते लाखों की भीड़ यहां एकत्रित हो जाती है ।

अंत में प्रारंभ होती है झंडे को खड़े करने की प्रक्रिया । झंडे में बंधे लंबे-लंबे रस्सों को लोग पकड़कर कई दिशाओं में खड़े हो जाते हैं । धार्मिक आस्था और विश्वास लिए हर भक्त झंडे के रस्से को पकड़कर उसे ऊपर उठाने में अवश्य ही सहयोग करना चाहता है । इस कारण भी भीड़ बहुत हो जाती है । लाखों लोगों द्वारा विभिन्न रस्सीयों को खींचने तथा लकड़ी की बड़ी-बड़ी बल्लियों से बने कैंचे द्वारा झंडे को खड़ा करने का जो दृश्य होता है उसे देखकर ही उसकी महत्ता को समझा जा सकता है । झंडा गेट के सामने के सूखे तालाब, आस-पास के मकान जहां तक से झंडा दिखायी पड़ सकता है वहां तक लोग जमीन से छतों तक पट जाते हैं । बीच-बीच में होता रहता है भक्तों द्वारा गुरु नानक, गुरु गोविंद, गुरु रामराय, झंडा साहब की जय का उद्घोष । और इसी के बीच धीरे-धीरे खड़ा होता है झंडा ।

सामाजिक सांस्कृतिक महत्त्व

अपने तीन सौ वर्षों के अस्तित्व में दरबार ने अनेक अंगड़ाइयां लीं । गंगा, यमुना तथा पंजाब के मैदानों में समय-समय पर उठनेवाले सामाजिक ऐतिहासिक बवंडरों की लहरों से उद्वेलित परतों के जमाव से बने दून घाटी के सामाजिक संगम में नानक पंथ की आत्म विच्छेदी लहर एक नये रूप में पनपी और बढ़ी । दरबार के अनुयायियों का दायरा पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली तक फैलता गया । जहां से आज भी लाखों की संख्या में लोग अपने परिवार बाल-बच्चों के साथ गुरुरामराय में श्रद्धा व आस्था लिए झंडारोहण से दो-तीन दिन पूर्व ही आकर दरबार में अपना डेरा डाल देते हैं । पूरे दरबार की धर्मशालाएं, अतिथि गृह, बरामदे और उनके लिए अलग से लगाये गये टेंट भर जाते हैं । प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि दरबार में आनेवालों की भीड़ पहले की अपेक्षा कई गुना बढ़ गयी है ।

हर भक्त दरबार में ही रुकना, दरबार के लंगर में भोजन करना, वहां पर धार्मिक परंपरागत कर्मकांडों के होनेवाले कार्यक्रमों में भाग लेना अपना धार्मिक कर्त्तव्य समझता है । गुरुद्वारे के आस-पास बाहर से आनेवाली मिठाई, खाजा, लकड़ी से बने सामानों, लोहे के बर्तनों, औजारों, स्त्रियों के सौंदर्य प्रसाधनों आदि की दुकानें, छोटे-मोटे सर्कस, डांसपार्टी, घूमंतू फोटो स्टूडियो, जादूगरी दिखानेवालों की तंबू कनातें झंडारोहण से कुछ दिन पहले ही आकर अपना डेरा डाल देती हैं ।

३४/१, पुराना सहस्त्रधारा रोड देहरादून-२४८००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नसरुद्दीन अवंती जिसके किस्से मध्य एशिया में आज भी लोकप्रिय हैं। चीन में नसरुद्दीन लोक साहित्य का ऐसा नायक है, जो अपनी विनोदप्रियता और प्रत्युत्पन्नमति से सबको चकित कर देता है । प्रस्तुत हैं उसके कुछ किस्से

नसरूद्दीन अवंती के रोचक किस्से

सेठ का आदेश

● आर. एस. त्रिपाठी

नसरूद्दीन अवंती चीन के शिनच्याङ प्रदेश के लोक-साहित्य का एक ऐसा पात्र/नायक है जो अपनी साहसिकता, तुरतबुद्धि, सूझबूझ और विनोद प्रियता से सबको चकित कर देता है । अवंती संभवतः तुर्की का निवासी था । उसका जीवन-काल तेरहवीं शताब्दी के आसपास माना जाता है । तुर्की लोक—साहित्य में वह नसरूद्दीन होजा के नाम से विख्यात है । पर अन्य देशों के लोक-साहित्य में उसके पृथक-पृथक नाम हैं जैसे— अवंती (नसरूद्दीन), आफंती, अतेंती, आपंती, रूमेलिया का जोहा तथा नसरदीन आदि । 'आफंती' वस्तुतः नसरूद्दीन की उपाधि है, जिसका अभिप्राय है 'साहब' । उइगुर लोक-साहित्य के ये अनमोल किस्से मोती हैं । अतः इन मोतियों के कुछ दाने आपके समक्ष मनोरंजनार्थ इत्यादि रूप में प्रस्तुत हैं ।

जामा बादशाह का

एक बार किसी बादशाह ने एक शानदार दावत दी । इस दावत में सभी नगर के अमीर—उमराव, हाकिम—हुक्मरान निमंत्रित थे । अतः इस सुअवसर पर बादशाह नसरूद्दीन अवंती को भी निमंत्रण देना न भूले । दावत के बाद बादशाह ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक मेहमान को एक बढ़िया पोषाक भेंट की । लेकिन अवंती का अपमान करने की नियत से उसे गधे की पीठ पर रखा यानी बैठाये जाने के लिए एक सन का जामा थमा दिया । अवंती ने बड़े अदब के साथ बादशाह के हाथ से यह जामा ले लिया और अनेक बार झुककर शुक्रिया अदा किया । इसके-बाद वह बुलंद आवाज में बोला; "माननीय मेहमान सज्जनो, बादशाह सलामत ने आप लोगों को रेशम-साटन के कपड़े सप्रेम भेंट किये हैं । पर ये सब बाजार में आसानी से मिल सकते हैं । जरा गौर फरमाइए, बादशाह सलामत मेरी कितनी इज्जत करते हैं ! उन्होंने अपना स्वयं का जामा खासतौर पर मुझे भेंट किया है !"

सच और झूठ

जब अवंती काजी बन गया, तो उसके साथ दोस्ती बढ़ानेवालों में होड़ होने लगी । किसी ने अवंती से कहा, "तुम कितने मजे में हो, अवंती ! अब तुम्हारे इतने सारे दोस्त हो गये हैं ! और कुछ तो तुमसे दोस्ती का हाथ बढ़ाने को उत्सुक हैं ।"

अवंती ने बड़ा सीधा-सा जवाब दिया, "आपका कहना ठीक है मगर मेरे कितने सच्चे दोस्त हैं, इसका पता लगाना काफी मुश्किल है । इसका सही जवाब तभी मिल सकता है जब मैं काजी नहीं रहूंगा ।"

"कब आऊं ?"

अवंती ने एक छोटी-सी रंगाई वर्कशाप खोली और गांववासियों के लिए कपड़ा रंगना शुरू कर दिया । सब लोग उसकी रंगाई की प्रशंसा करने लगे । धीरे-धीरे उसकी दुकान चल निकली । अवंती की प्रशंसा सुनकर एक सेठ को बहुत ईर्ष्या, जलन महसूस होने लगी और अवंती को परेशान करने के ध्येय से वह सेठ एक कपड़े का टुकड़ा लेकर अवंती की वर्कशाप में जा पहुंचा । दरवाजे के अंदर घुसते-ही सेठ बुलंद आवाज में बोला, "अवंती, जरा यह कपड़ा तो अच्छी तरह से रंग दो । मैं देखना चाहता हूं तुम्हारा हुनर कैसा है । तुम्हारी काफी तारीफें सुनकर आया हूं ।"

"सेठजी आप किस रंग में इस कपड़े को रंगवाना चाहते हैं ?" अवंती ने सेठजी से पूछा ।

"रंग ? रंग के बारे में मेरी कोई खास पसंद तो है नहीं, पर मुझे हरा, पीला, सफेद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल, नारंगी, नीला, आसमानी, काला और बैंगनी रंग कतई अच्छा नहीं लगता । समझे कि नहीं ?''

''समझ गया हूं, अच्छी तरह समझ गया हूं ! मैं जरूर आपकी पसंद की रंगाई कर दूंगा !'' अवंती ने सेठ का मंसूबा भांपते हुए उसके हाथ से कपड़े के टुकड़े को ले लिया ।

''अच्छा, तो इसे लेने मैं किस दिन आऊं ?'' सेठ ने खुश होकर कहा ।

अवंती ने कपड़े को आलमारी में बंद करके उसमें ताला लगा दिया और सेठ से बोला, ''आप इसे लेने सोमवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार को छोड़कर किसी भी दिन आ सकते हैं !''

सेठ ने समझ लिया मेरी चाल फेल हो चुकी है अतः भलाई धीरे से खिसक लेने में ही है । फिर उससे सेठ ने दोबारा अवंती की दुकान में घुसने की हिम्मत नहीं की ।

नीति वचन

नसरूद्दीन अवंती कुछ धन कमाने के इरादे से एक रस्सी उठाकर बाजार में कुलियों की कतार में खड़ा हो गया । इतने में एक धनाढ्य सेठ उसके पास आया और उसने अवंती से कहा, ''मेरे इस संदूक में चीनी-मिट्टी के बढ़िया बरतन हैं । अगर कोई इसे मेरे घर तक पहुंचा देगा, तो मैं उसे तीन नीतिवचन सुनाऊंगा ।''

उसकी बात की किसी कुली ने भी परवाह नहीं की । केवल अवंती उसकी बातों से प्रभावित हुआ । उसने सोचा— 'पैसे तो हर जगह मिल सकते हैं, पर नीतिवचन आसानी से नहीं सुने जा सकते । अतः क्यों न इस का सामान उठाकर तीन अमूल्य नीतिवचन सुन लूं और अपनी बुद्धि की धार को क्यों न तेज कर लूं ।'

यही सोचकर अवंती संदूक उठाकर सेठ के साथ चल पड़ा ।

रास्ते में अवंती ने सेठ से नीतिवचन सुनाने का आग्रह किया ।

सेठ बोला, ''पहला नीतिवचन यह है : यदि कोई कहे कि भूखा पेट भरे पेट से ज्यादा अच्छा है, तो उस पर कभी विश्वास न करो !''

''वाह ! कितनी बढ़िया बात है, सेठजी ।'' अवंती बोला । ''अब दूसरा नीतिवचन सुनाइए ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अगर कोई कहे कि पैदल चलना घोड़े की सवारी से ज्यादा सुविधाजनक व आरामदेह है, तो उस पर कभी-भी भूलकर भी विश्वास न करना ।"

"बिलकुल सही कहा आपने, सेठजी । इससे बढ़िया नीतिवचन और क्या हो सकता है ?" अवंती बोला । "अब आप तीसरा व अंतिम नीति वचन भी सुना दीजिए ।"

"अगर कोई कहे कि दुनिया में तुमसे बड़ा बेवकूफ कुली मिल सकता है, तो उस पर कदापि यकीन न करो ।"

सेठ का यह तीसरा व अंतिम नीति वचन सुनते-ही अवंती ने अपने हाथ का संदूक यकायक छोड़ दिया और वह धम्म की आवाज के साथ जमीन पर गिर पड़ा । संदूक की ओर इशारा करते हुए अवंती ने सेठ से कहा, "अगर कोई कहे कि इस संदूक में रखे चीनी मिट्टी के बरतन टूटे नहीं हैं, तो उस पर हरगिज यकीन न करो ।"

इतना कहकर अवंती आगे की ओर बढ़ चला । और सेठ अवाक् हो देखता-ही रह गया ।

सेठ का आदेश

जब अवंती छोटा था, तो वह किसी एक गांव के एक धनी सेठ के यहां साफ-सफाई का काम किया करता था । सेठ उसे साल के अंत में वेतन देता था । और प्रायः वेतन न देने या उसमें कोताही करने का बहाना ढूंढ़ता रहता था । एक बार जब साल का अंतिम दिन आ गया तो सेठ ने सुबह-सबेरे ही अवंती को बुला भेजा और बोला, "अवंती, आज तुम आंगन की सफाई करोगे मगर ध्यान रहे सफाई-धुलाई करते समय एक भी बूंद पानी नहीं छिड़कोगे । पर सफाई-धुलाई के बाद आंगन गीला-सा लगना चाहिए । यदि तुम ऐसा न कर पाये, तो तुम्हारी इस साल की पूरी तनख्वाह काट ली जाएगी, समझे, और अगले साल तुम्हें मेरे यहां काम नहीं मिलेगा !" यह कहकर सेठ नये साल के लिए कुछ आवश्यक चीजें खरीदने शहर चला गया ।

अवंती ने चुपचाप सेठ के आंगन की सफाई कर डाली और फिर गोदाम से तेल की सभी तुंबियां बाहर निकालकर सारा तेल पूरे आंगन में छिड़क दिया । जब यह काम पूरा हो गया, तो वह सीढ़ी पर बैठकर वेतन के लिए सेठ की बाट जोहने लगा ।

शाम को सेठ शहर से वापस लौटा । उसने देखा कि अवंती ने उसका सारा तेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंगन में छिड़क दिया है, तो वह आपे से बाहर होते हुए चिल्लाया, "अरे ओ उल्लू की औलाद ! मेरा सारा तेल तूने आंगन में क्यों फैला दिया ? तुझे इसका मुआवजा देना होगा !"

"गुस्सा क्यों हो रहें हैं, सेठजी ?" अवंती खड़ा होकर बोला, "क्या मैंने आपके आंगन में एक भी बूंद पानी छिड़का है ? क्या आप का आंगन गीला-सा नहीं लग रहे है ? क्या मैंने आपके आदेशानुसार काम नहीं किया है ? इस साल की तनख्वाह कृपया कर मुझे आप दे दें । अगले साल हजार मिन्नत-खुशामद करने पर मैं भी आप के पास कदापि काम नहीं करूंगा !"

सेठ अवाक् रह गया । अवंती को पूरा वेतन देने के अलावा सेठ के सामने अब और कोई चारा नहीं रह गया था ।

आपकी दुआ से.....

एक दुष्ट मंत्री गंभीर रूप से बीमार था । एक दिन अवंती उसके घर के सामने से गुजर रहा था । उसने देखा कि मंत्री का बेटा दरवाजे पर खड़ा है । अवंती ने बड़ी अन्यमनस्कता से पूछा, "तुम्हारे अब्बाजान की अब कैसी तबीयत है ?"

"शुक्रिया, अवंती चाचा, आपकी दुआ से..."

"मेरी दुआ से ?" अवंती उसकी बात काटता हुआ बोला, "मेरी दुआ से तो तुम्हारे परिवार के लोगों को इस समय मातम मनाना चाहिए था !" इतना कहकर अवंती आगे की ओर बढ़ चला ।

सी. २/३३, काली महल, वाराणसी-२२१००१०

सन १७५७ में लॉर्ड क्लाइव ने सबसे पहली हिंदुस्तानी पलटन बनायी, जिसे पहली बंगाल नेटिव इंफैंट्री कहा जाता था । इस पलटन की वरदी लाल थी, जिससे इसे 'लाल कुर्ती वाली पलटन' या 'लाल पलटन' कहा जाने लगा । आज भी शहरों में 'लाल कुर्ती' मुहल्ले हैं, जो पहले 'लाल पलटन' के सिपाहियों के बाजार होते थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोरौ हंसना स्वभाव, मोरे करेजे में ठट गयौ

उमाशंकर चतुर्वेदी

वर्ष में सावन और फागुन, ये दो ही सरस महीने होते हैं जिनमें आदमी का मन मुदित होता है, मुसकराता है, गुदगुदाता है, रमता है, सरसता है। होली के मस्तीभरे माहौल में मन की कली खिल जाती है, हृदय हर्षित हो उठता है और अंदर की सरसता हंसी के रूप में बाहर निकलने लगती है। फागुन की भंगीली, रंगीली फिजा में आदमी स्वयं अपने ऊपर हंसता है, दूसरों पर भी हंसता है। वह स्वयं भी हंसता है और दूसरों को भी हंसाता है। लोककवि ने ऐसे ही खुशनुमा माहौल में अपनी भाभी के हंसना स्वभाव को लक्ष्य कर फाग का एक मुखड़ा मुखरित कर दिया—**"भौजी तोरौ हंसना सुभाव, मोरे करेजे में ठट गयौ।"** अर्थात अरी भाभी तेरा हंसना स्वभाव बड़ा गजब का है, मेरे कलेजे में फांस की तरह फंस गया है। फिर होली की हुड़दंग में भाभी के साथ चुहलबाजियां करते हुए भौजी के लल्ला अपनी प्यारी भौजी से कहते हैं—**मोरौ हंसना सुभाव, भौजी बुरौ जिन मानियौ, अर्थात "अरी भाभी, हमारा भी हंसना स्वभाव है, इसलिए कहे-सुने का बुरा मत मानना।"**

भाभी और देवर दोनों ही हंसना स्वभाव के हैं इसलिए हंसी-खुशी में समय निकल जाता है। वैसे लोकगीत की पंक्तियां हमारे लोक-जीवन के हालातों पर बड़ी खरी उतरती हैं। एक मधुर मुसकान किसी के भी कलेजे में उतरकर वो काम कर जाती है जो बड़े-बड़े प्रयासों से भी संभव नहीं है। कहावत है कि 'हंसे सो फंसे' और इसी हंसन, मुसकान पर आदमी मरता है, मुसकान पर लट्टू होता है। आदमी की इस स्वभावगत कमजोरी का फायदा चतुरजन और चतुर बालाएं उठाती हैं। होली तो हंसी-खुशी का त्योहार है। वैसे तो दुनिया में हजार गम हैं लेकिन, दिल में एक खुशी है कि जितना भी हंसते हैं अपनी ही हंसी हंसते हैं, वो किसी की मांगी हुई हंसी नहीं है, एक शायर ने ठीक ही कहा है—

हजार गम सही दिल में, खुशी मगर यह है
हमारे होंठों पर मांगी हुई हंसी तो नहीं।

होली तो हंसने, मुसकराने, रंग खेलने और मन की निकालने का मस्तीभरा पर्व होता है, इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जितना हंसता, मुसकराता है वह उतना ही सफल और समयानुकूल नेता समझा जाता है ।
हंसिए तो दूसरों का भी ध्यान रखिए । हंसकर बोलने से किसी का कुछ नहीं बिगाड़ता

समय रस के मौके पर रिस करने की बात ही कहां होती है ? राधा-कृष्ण की नोंक-झोंक में कृष्णजी कहते हैं कि ये तो समय हंसने-खेलने का है ।

लौटे चतुर ब्रजनारि रोस जिन कीजौ गोरी
बरस दिना की है फाग जिए सो खेलेगो होरी ।

संसार में दो ही प्राणी हंसने-मुसकराने में माहिर हुआ करते हैं—एक तो बालाएं और दूसरे नेता । बालाओं की बांकी मुसकराहट पर तो बड़े-बड़े वायदे और फायदे हुआ करते हैं । अपनी मुसकान से वे अच्छे अच्छों को ठिकानें लगा देती हैं । लोक कवि ईसुरी की नायिका की हंसन और मुसकान तो देखिए जो दुनियांभर में कहर ढा देती है—

ऐसी हंस हरेन मुनियां की, मौत भई दुनिया की
डारें बात गरे में फांसी, गगरें धरें पनियां की ।

लोक कवि ईसुरी की 'रजऊ' सब को हंसकर प्रसन्न कर देती हैं और यह उनकी बड़ी अच्छी आदत है । हंसने से मुख की सुंदरता भी बढ़ जाती है । ऐसी हंसन मुसकान मुंह बाली पूरे गांव में भी खोजने से नहीं मिलेगी—

हंस के कर देतीं मन राजी, जा ढव इनकी साजी
ढूढ़े मिलै ना गांव भरे में, ऐसी मुइयां बाजी ।

जो रोज ही हंसती रहे और हर बात में 'हां' कर दे तो ऐसी मुसकानभरी हंसी पर 'कौन न मर जाए ए खुदा ?' ईसुरी कहते हैं कि उनके मुख से कभी किसी बात के लिए मनाही नहीं हुई सबसे हां जी, हां जी कहती हैं—

रोजऊं हंसती सी वे रातीं, बोलें से कऐं हां जी
'ईसुर' कबहु काहु पै ना भई, ई मौं सें इतराजी ।

उनकी नायिका हंस-हंसकर जान लेने पर तुली है । हंसकर आग सी लगा देती है । हंस-हंस कर 'लाला' कहती है । आंखें नयच-नचाकर कटाक्ष करती है और भौंहों की तलवार घुमाकर मारती है—

जी लेंय रजऊ दाउनी दैकें, हंस हंस लाला कै कें ।
नचा-नचा नैनन खों मारें, भौंय भामिनी भैंकें ।

ऐसी हंसनेवाली बाला से बचने के लिए लोककवि सब छैलाओं को सावधान करते हैं कि उसकी हंसी युक्त नजर से बचकर रहना क्योंकि वो काजल की छुरी, केशों के मांग के मौष्टिक और भौंहों की तलवारें मारती है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंस कें नजर छैल पै डारें, कढ़ियौ यार सम्हारें
काजर छुरी बगुरदा पटियां, भौंहन की तरवारें ।

हंस के परदेशी न मारौ, दै कैं काजर कारौ
बीच गली में चले जात ते, घायल न कर डारौ ।

हंसी और मुसकराहट का मजा ही कुछ और होता है । हंसकर मन राजी किया जाता है, हंसकर लोगों को टरकाया जा सकता है । महिलाएं हंसकर टरकाने में बहुत माहिर होती हैं । गोपिकाओं ने कृष्णजी से हंसकर कहा कि होली खेलने फिर आना—

नैन नचाय कही मुस्काय,
लला फिर आइयौ खेलन होरी ।

फिर कहती हैं कि—

खेलन अइयो घरै फाग, लला तुम्हें तर कर दैहों
छुअन न दै हों शरीर, नजरिया से मन भर दैहों ।

लोक कवि ईसुरी भी अपनी 'रजऊ' से इसी बात पर परेशान रहा करते थे कि वे हंसकर मन भर देती थीं, टरका दिया करती थी और कभी ईसुरी के मन की नहीं करती थी—

रोजऊं हंस हंस कें मन भरतीं
कबहूं ना मन की करतीं ।

वैसे हंसने में रजामंदी हो तो अच्छा है । आप हंसे और दूसरा बुरा मान जाए अथवा दूसरा हंसे और आप गलत समझ बैठें । इसलिए हंसिए तो दूसरों का भी ध्यान रखिए । ईसुरी ने सबको सबसे हंस बोलने की सलाह दी है । हंसकर बोलने से किसी का कुछ नहीं बिगड़ता है—

सबसें बोलौ हंस मुसक्याकें, रजऊ जगत में आकें
मीठे वचन बोलतन कब तौ, कीकौ गयौ नसाकें ।

अब नेताओं को देखिए जो हर हाल में हंसते हैं, मुसकराते हैं । उनकी माधुरी मुसकान देखकर लगता है कि उन-जैसे प्राणी दुनिया में मिलना मुश्किल है । नेताजी से मिलिए तो मुस्कराएंगे, हाथ मिलाइए तो मुसकराकर हाथ मिलाएंगे । हार या गुलदस्ते से स्वागत कीजिए तब भी प्रसन्न और गाली दीजिए तो भी प्रसन्न । गालियां, आलोचना सहर्ष स्वीकार करते हैं । जनता के सेवक होने के नाते जनता की दी हुई हर चीज मुसकराहट के साथ स्वीकार करना उनका परम धर्म है । जनता के बीच मुस्कराना उनका कर्म है और हंसकर हाथ जोड़ने में मर्म रहता है । वोट मांगते समय झुककर नमन करती हुई अदा पर तो त्रिभंगीलाल कृष्ण जी भी मात खा जाएंगे । वे हमेशा इतना अधिक मुसकराते हैं कि दूसरों को मुसकराने की जरूरत ही नहीं पड़ती है । चाहे फगुनौटी फिजा हो या सावन की सरसता, पतझड़ की उरयानी हो या ठंड की ठिठुरन, गरमी की तपन हो या बूंदों की बरसन, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता है । नेतागण अपने इसी गुण की वजह से वोटरूपी अमूल्यनिधि जनता से प्राप्त कर लेते हैं । स्वागत में वे कनखियों से देखते हैं, मुसकराते हैं और सोचते हैं कि जनता कितनी भोली है । किन्हीं के मुख पर स्थायी मुसकराहट होती है तो किन्हीं के मुखों पर समयानुकूल मुस्काहट । जो जितना हंसता, मुसकराता है वह उतना ही सफल और समयानुकूल नेता समझा जाता है । मुसकराने से सारे ऐब और दुर्गुण दब जाते हैं ।

काव्य मर्मज्ञों ने हंसी के कई भेद किये हैं । अब हंसी की बात को गहरे और गंभीर काव्यात्मक भेदों में न ले जाकर अपने मतलब के भेद हम यों कर सकते हैं—एक व्यंग्यात्मक हंसी होती है जो किसी पर व्यंग्यपूर्वक बिखरायी जाती है । दूसरी स्वाभाविक हंसी होती है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल बहुत कम हंसी जाती है, इसका टोटा पड़ गया है। तीसरी फंसने और फंसानेवाली हंसी होती है जिसमें अच्छे-अच्छे फंस जाते हैं। चौथी बनावटी हंसी होती है जो नेता हंसते हैं और ऊपरी मन से हम लोग भी कभी-कभार हंस लेते हैं, मसलन आप कहीं जाने को तैयार हैं और कोई आपसे मिलने आ जाए तो उस समय उसका स्वागत बनावटी हंसी से होता है। पांचवें प्रकार की सखेद हंसी होती है जो संपादकगण हंसा करते हैं। रचनाएं सखेद लौटाते-लौटाते उनका हंसना-मुसकराना भी सखेद हो जाता है। अंगरेज लोग खेद का समाचार देने में भी हंसते हैं। पहले किसी को नौकरी से निकालने के आदेश में भी प्रसन्नता व्यक्त की जाती थी और अंगरेजी में आदेश निकलता था—"गवर्नमेंट इज प्लीन्ड टु डिसमिस यू"—अर्थात "सरकार आपको नौकरी से निकालने में प्रसन्नता व्यक्त करती है।" अब बताइए ऐसी हंसी पर किसको हंसी न आएगी ?

हमें हंसना-मुसकराना तो फूलों से सीखना चाहिए जो हर मौकों पर मुसकराते रहते हैं—

वो शाखे गुल पै रहें या किसी की मैयत पर
बदन के फूल तो आदी हैं मुसकराने के।

फिराक गोरखपुरी तो विरह की रात में भी हंसते हैं। उन्हें इतना दर्द उठा कि वे मुस्करा दिए—

गर्वेहिज्र थी यूं तो मगर पिछली रात
वो दर्द उठा 'फिराक' कि मैं मुस्करा दिया।

हंसकर बात करना अच्छा होता है, सुननेवाला भी प्रसन्न हो जाता है। हंसते हुए चेहरे को देखकर हमें भी खुशी होती है बकौल एक शायर—

तुम्हारी शान घट जाती कि रुतबा घट गया होता।
जो गुस्से में कहा तुमने वही हंसकर कहा होता।

कुछ लोग गर्दिश के दिन भी हंसकर निकाल देते हैं क्योंकि जिंदगी तो चार दिन की है हंसकर निकाल दो या फिर रोकर। दुःख में भी हमें हंसना चाहिए—

हर मुसीबत का दिया एक तबस्सुम से जवाब
इस तरह गर्दिशे-दौरां को रुलाया मैंने।

रंज की घड़ियां भी खुशी से निकाल देना चाहिए क्योंकि आप रोएंगे तो कोई नहीं रोएगा, आप हंसेंगे तो सब हंसेंगे अतः—

दिल दे तो इस मिजाज का परवरदिगार दे।
जो रंज की घड़ी भी खुशी से गुजार दे।

भले ही अकेले में रो ले लेकिन सबके सामने हंसना ही बेहतर है—

ऐ दिल हो सके तो लुत्फ-ए-गम उठा ले।
तन्हाइयों में रो ले, महफिल में मुस्करा ले।

दुनिया में इतनी त्रासदियां और दुःख हैं कि आदमी रोता ही रहेगा अतः हंसिए, मुस्कराइए और जीवन को आनंद से भोगिए। हंसने से दिल साफ होता है, हंस-खेलकर समय निकल जाता है—

हंसि खेल बखत कट जाय बारे रसिया।
को कित कों रम जाय रसिया।

हंसी और हंसना स्वभाव हमेशा सबको याद रहता है—

हमखों बिसरत नहीं बिसारी
हेरन हंसन तुम्हारी।

एफ ४९/९ साउथ टी. टी. नगर, भोपाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आप रंगों में रंगे, डूबे होली के हुड़दंग में मौज और मनमानी पर आमादा हैं और बिना किसी रोक-टोक, भदरंग चेहरे आपका स्वागत करते हैं तो आपको समझ लेना चाहिए कि खतरा नहीं है !

दूरदर्शन और दर्शन-शुल्क

● गोपाल चतुर्वेदी

धीरे-धीरे हमें यकीन होता जा रहा है कि जिंदगी में दाल-रोटी की जद्दोजहद महत्त्वपूर्ण नहीं है । पिछले बड़े नेता कंप्यूटर और इक्कीसवीं सदी की गुहार लगाते चले गये । अब माहौल खुली सरकार और आजाद खबर का है । रोटी, कपड़ा और मकान घिसी-पिटी पुरानी फिल्म की रूमानी थीम है । 'गरीबी हटाओ' लुभावने नारे की । नयी पीढ़ी के नेता समझदार हैं । उनकी एकमात्र पूंजी उनकी विश्वसनीयता है । वह जानते हैं कि न पत्थर फेककर आसमान में छेद करना मुमकिन है, न सबको रोटी, कपड़ा, मकान का आश्वासन देकर उसका पालन । जो कर सकते हैं वही कहेंगे । यों भी प्रजातंत्र में स्वतंत्र समाचार की अपनी अहमियत है । जनता को ऐसे ही तो आटे-दाल का भाव पता लगेगा । अखबारों में आतंक और दूरदर्शन की स्वायत्तता की सुर्खियों में खौफ खाकर हमने टी.वी. के एक अधिकारी से पता लगाने की जुर्रत की—

"सर ! क्या आप अब तक गुलाम थे ?"

"हमारे गुलाम तो आप जैसे कलम-घिस्सू हैं । हम क्यों गुलाम हों !"

"पर सरकार बार-बार आपको स्वायत्त बनाने का ऐलान क्यों कर रही है ?"

"यह समझने की बात है । पिछली सरकार हम पर बैताल-सी हावी थी । हम उसे किस्से-कहानी सुनाकर ऐसे छलावे में डाले रहे कि वह आसपास के सही हाल-चाल और सामान्य बुद्धि के सुर-ताल तक से कट ली । इस सरकार पर हम हावी हैं । जाहिर है कि वह स्वायत्त बनाकर जल्दी से जल्दी हमसे छुटकारा पाये ।"

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्वायत्तता के शोर में जरूर कोई राज है क्योंकि हमारे ऐसे दर्शकों को पता है कि अपना दूरदर्शन शुरू से आत्म-प्रशंसा और अनियंत्रित आजादी का आदी रहा है। वर्ना हास्य के नाम पर अपनी शान में लिखी गयी टी.वी. और बीबी— जैसी उलजलूल रचनाएं कैसे प्रसारित करता। हमें एक अधिकारी बताते हैं—

"जो काम पहले राजा-महाराजा करते थे, मजबूरी में अब हमें करना पड़ता है।"

दूरदर्शन के कर्मचारी काम करें ! इससे बड़ी त्रासदी संभव है क्या ? हमने सहानुभूति जतायी, "कौन-सा काम !"

"यही कलाकारों-साहित्यकारों को प्रश्रय देने का। अपने मुल्क की परंपरा है कि गवैये-नचइये दरबारों-सरकारों की कृपा पर पलें। लेखकों का हाल कौन बेहतर है ? छपते रहें ! कोई घास तक नहीं डालता। एक बार हम परदे पर दिखा दें तो करोड़ों जान जाते हैं।"

जो सौभाग्य से दूरदर्शन के संपर्क में आया है, वह इस आधिकारिक दावे से जरूर सहमत होगा। टी.वी. के किसी भी अधिकारी या छोटे से छोटे सहायक का व्यवहार बेताज के शहंशाह— जैसा होता है। एक चित्रकार ने अपने चित्रों की प्रदर्शनी के अवसर पर दूरदर्शन की कैमरा टीम को निमंत्रित करने की हिमाकत की। उनके अनुरोध के उत्तर में प्रश्न आया—

"आप में कौन से सुर्खाब के पर लगे हैं कि आपके कार्यक्रम में हम आएं।"

"मेरा खयाल है कि आप चहल-पहल में उसे शामिल कर सकते हैं।"

"उद्घाटन राष्ट्रपति कर रहे हैं ?"

"जी नहीं !"

"उप राष्ट्रपति ?"

"प्रधानमंत्री या सूचना मंत्री ?"

"जी नहीं।"

"नहीं।"

"उदघाटन के बाद किसी पांच-सितारा होटल में डिनर कॉकटेल है क्या !"

"नहीं तो !"

"आप ऐसे कला के दुश्मन हर दिन शहर में हजारों नागवार हरकतें करते रहते हैं। अगर हम हर ऐसी हलचल को चहल-पहल में लेंगे तो हमारे दर्शक अपना टी.वी. तोड़ देंगे। हमारी भी तो उनके प्रति जिम्मेदारी है। आप मेहरबानी कर अपना रास्ता नापिए।"

पर चित्रकार भी धुन के पक्के थे। जब मनुहार-पुकार से काम न चला तो उन्होंने आमरण अनशन की धमकी दी। सौ-डेढ़ सौ

मार्च, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

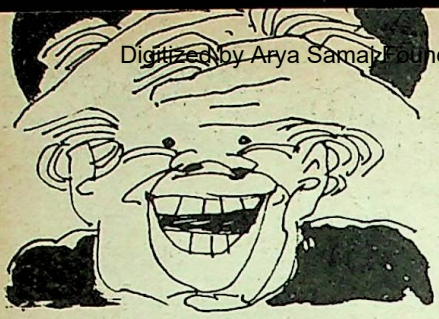

चक्कर लगाने के बाद उन पर यकायक भगवत-कृपा हो गयी । एक दिन दूरदर्शन के एक सहायक के सिर में दर्द था । चित्रकार ने उसके चंपी की । वह खुश हुआ । यह अलग बात है कि कार्यक्रमों की भीड़ में चित्रकार की नुमाइश का दृश्य एक सैकंड के सौवें हिस्से में गायब हो गया ।

जन-हित की जानकारी के प्रचार में दूरदर्शन का अहम योगदान रहा है । इसी के चलते दूरदराज के गांवों तक के लोग टूथ-पेस्ट, साबुन तथा एड्स के विशेषज्ञ हो गये हैं । यही कारण है कि टी.वी. के अपने नियोजित कार्यक्रमों से उसके प्रायोजित प्रोग्राम अधिक लोकप्रिय हैं । दूरदर्शन के अपने कार्यक्रम के समय का उपयोग दर्शक चाय-नाश्ता या रात के भोजन में करते हैं और बेसब्री से यूरिया या साड़ी के ज्ञानवर्धक विज्ञापन का इंतजार करते हैं । उपभोक्ता संस्कृति के जनोपयोगी प्रचार का प्रभाव टी.वी. की मानसिकता पर भी पड़ा है । दूरदर्शन के अधिकारी हमें बताते हैं—

"हम एक-एक मिनट में लाखों कमाते हैं । वह तो विवशता है कि इश्तहार के अलावा भी हमें कुछ कार्यक्रम करने पड़ते हैं । उस पर तुर्रा यह है कि लोग प्रोग्राम पेश करने के पैसे भी लेते हैं !"

"आपके अनुसार आदर्श स्थिति क्या होगी ?"

"होना तो यह चाहिए कि लोग हमें पैसे दें और कविता पढ़ें या अन्य कार्यक्रम करें । आप तो जानते ही हैं कि हमारी 'न्यूज' तक दूसरे स्पांसर' करते हैं !"

"आपने वर्तमान व्यवस्था के खिलाफ आवाज नहीं उठायी ।"

"मौखिक विरोध से फायदा क्या ! हमें जो करना था हमने कर के दिखा दिया ।"

"क्या किया आपने ?"

"क्या नहीं किया ! किसी भी सीरियल के निर्माता से पूछ लीजिए । सीरियल यों ही तो स्वीकृत नहीं हो जाते ।"

उनके चेहरे पर सीरियल पास करने की प्रक्रिया का स्मरण कर मधुर मुसकान बिखर गयी । अब अपने पल्ले पड़ा कि दूरदर्शन का निर्माता क्यों कलाकारों को प्रजातंत्र के समतावादी युग में राजा की रिआया तक से गया-बीता समझता है । दूरदर्शन में जो आते हैं पैसा देकर आते हैं । यह कलाकार साहित्यकार सम दूरदर्शन में जाते हैं तो पैसा लेकर जाते हैं । एक आला निर्माता शिकायत करते हैं—

"यही तो सरकार की गलत नीति है । बस हमें पूरी तरह 'कमर्शियल' हो जाने दे । हम बजट का पूरा घाटा चुटकियों में दूर कर देंगे । यों हमने निजी सुधार किये हैं पर वह काफी नहीं हैं ।"

"कैसे सुधार !"

"हम कोशिश कर अपने रिश्तेदार-मित्रों को कार्यक्रम देते हैं । फिर भी हर बार यह संभव नहीं हो पाता है । अपना तो सिर्फ एक ही उसूल है कि घी जाए घर की खिचड़ी में । पर क्या करें !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इससे आपके कार्यक्रमों के स्तर पर [illegible] तो नहीं पड़ता है ?" हमने चिंता [illegible]।

"कौन सा अस्तर, कैसा कोट । लोग [illegible] और इश्तहार के लिए टी.वी. देखते हैं, [illegible] और सुधार-बुधार के लिए नहीं । [illegible] कविता पढ़ें या कागा । कोयल गाये या [illegible] । फर्क क्या पड़ता है ? इतने दिनों तक [illegible] भारत महान का बखान किया । कुछ भी [illegible] क्या ?"

हम जान गये कि दूरदर्शन के कार्यक्रमों की लेकर ही सही, पढ़ तो लेते थे । अब यह कष्ट भी नहीं करते । बच्चे चलचित्र और चित्रहार की तड़क-भड़क पर ध्यान देते हैं, उनके बुजुर्ग 'महाभारत' और चटपटे धारावाहिकों की सौगात पर । दूरदर्शन की अपनी अलग दुनिया है जिसका अस्तित्व सबेरे के नाश्ते से लेकर आधी रात तक के वास्ते है । शुरूआती दशक में टी.वी. को 'ईडियट बॉक्स' के नाम से यों ही नहीं पुकारा गया । अच्छे-खासों को बेवकूफ बनाना टी.वी. की बुनियादी सिफत है ।

इसी विश्वास के तहत कुछ विद्वानों की

जन-हित की जानकारी के प्रचार में दूरदर्शन का अहम योगदान रहा है । इसी के चलते दूरदराज के गांवों तक के लोग टूथ-पेस्ट, साबुन तथा एड्स के विशेषज्ञ हो गये हैं । यही कारण है कि टी.वी. के अपने नियोजित कार्यक्रमों से उसके प्रायोजित प्रोग्राम अधिक लोकप्रिय हैं । दूरदर्शन के अपने कार्यक्रम के समय का उपयोग दर्शक चाय-नाश्ता या रात के भोजन में करते हैं और बेसब्री से यूरिया या साड़ी के ज्ञानवर्धक विज्ञापन का इंतजार करते हैं । उपभोक्ता संस्कृति के जनोपयोगी प्रचार का प्रभाव टी.वी. की मानसिकता पर भी पड़ा है । दूरदर्शन के अधिकारी हमें बताते हैं—

[illegible] में इसीलिए उतार-चढ़ाव नहीं आता [illegible] वह भोर के हों या संध्या के, समान रूप से [illegible] होते हैं ।

यह निर्विवाद है कि दूरदर्शन देश में एक [illegible] सामाजिक क्रांति का सूत्रधार है । जबसे [illegible] आया है, पढ़ाई का स्थान 'तकाई' ने ले [illegible] है । अब लोग जादुई डिब्बे को सूनी [illegible] और खाली दिमाग से हाथ पर हाथ धरे [illegible] हैं । पहले अखबार और मैगजीन, उधार

मान्यता थी कि टी.वी. पर लगातार नेता को मुस्कराते दिखाकर जनता की भेड़ को इच्छित दिशा में हांका जा सकता है । दूरदर्शन की सफलता इसी से जाहिर है कि उसने एक पूरे दल और नेताओं की लंबी जमात को मूर्ख साबित कर दिया । जो छोटे परदे पर जितनी बार, जितना बड़ा दिखा, वह पिछले आम चुनाव में उतनी ही बुरी तरह हारा । जो दूरदर्शन पर अधिक नहीं दिखे, भाग्यशाली थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलैक्शन जीतकर सत्ता में आ गये । टी.वी. के अधिकारियों ने उनसे रोना रोया, "वह तो हम सरकार के शिकंजे में जकड़े थे, नहीं तो आपको भी छोटे परदे पर मुस्कराते दिखाते (और मन में सोचा कि चुनाव हरवाकर खूब मजा चखवाते ?) अब तो हमें आजाद कर दो जिससे आगे गिला न रहे ।" हमने अपने टी.वी. के परिचित से जिज्ञासा व्यक्त की—

"स्वायत्त होने से आपके कार्यक्रम सुधरेंगे ?"

"आपको ऐसी गलतफहमी क्यों है कि हममें सुधार की भी गुंजाइश है", उन्होंने उलटे हमसे प्रश्न किया ।

"आप अपने को 'परफैक्ट' समझते हैं ?"

"हम कैसे भी हों, आपसे क्या ! आपने यह सोचने की हिमाकत कैसे की कि हम स्वायत्त होकर अधिक पेशेवर हो जाएंगे ।" सूरदास की कारी कांबर, चढ़ै न दूजो रंग ।"

"इस स्वायत्तता का नतीजा क्या होगा ?"

"हम भी कारपोरेशन बन जाएंगे ।"

"फिर !"

"कारपोरेशन का मतलब पता है आपको ? कार और करप्शन का मिश्रण याने कारपोरेशन । पहले सरकार ने हमारे दुम लगा रखी थी । जब उसका इशारा होता, हम दुम हिलाते । अब हमारे पास दुम के स्थान पर क होगी । अब तक हम जिस तौर-तरीके से सीरियल पास करते थे, उसी तरकीब से मंत्रि को आस-पास फटकने देंगे । जो भी हमारे जरिये जनता के सामने जाना चाहे, उसे निर्धा दर्शन-शुल्क अदा करना होगा अन्यथा जै हि की ।"

"दर्शन-शुल्क क्या ?"

आप हिंदुस्तान में रहते हैं कि उजबेकिस्तान में । आपका किसी सरकारी कार्यालय से साबका पड़ा है कि नहीं ! सरकार के दफ्तर में किसी काम को करवाने में जो बोझ देना होता है, उसे सुविधा-शुल्क कहते हैं । इसी बोझ का दूरदर्शनीय नाम दर्शन-शुल्क है ।"

आजादी के बाद से सरकारी सेवकों ने जन सेवा के सिद्धांत से सुविधा-शुल्क तक तरक्की की है । स्वायत्त होकर बेहतर कार्यक्रमों की जगह दूरदर्शन भी दर्शन-शुल्क लगा दे तो हर्ज ही क्या है !

डी-१,२१०,- विनय मार्ग, चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली-२१

आवारा भी, गर्द भी

गोपीनाथ 'अमन' और सिकंदर बख्त को एक बार 'मजाज' मिले । दुआ-सलाम के बाद हाल-चाल पूछे गये । सिकंदर बख्त बोले, 'भई, मैं तो आजकल आवारा हूं ।'

'मजाज' ने जवाब दिया—'आप फिर भी अच्छे हैं । मैं तो आवारा भी हूं और गर्द भी ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुतः फाग क्या है ? मात्र प्रेम रस में सराबोर होने का मौसम, जो वसंत पंचमी से आरंभ हो फाल्गुन पूर्णिमा तक विभिन्न आमोद-प्रमोद के साथ मनाने का उपक्रम । इस उत्सव के दृश्यों को यदि मूर्तिकारों ने पत्थरों पर उत्कीर्ण किया है, तो चित्रकारों ने अपनी तूलिका से रंगा है ।

संस्कृत-साहित्य में फाग

● डॉ. रेखा रस्तोगी

जैसे कोई चतुर चितेरा अपने विविध रंगों से किसी आकृति को रंगकर उसे रूप, रस और गंध में डुबो दे तो उसकी मादकता में और निखार आ जाता है । वैसे ही धरती पर यह अनुपम सौंदर्य बिखरता है ऋतुराज के आने पर । ऋतुराज वसंत के उल्लासमयी काल में वसुंधरा वनस्पतियों के माध्यम से सहज ही सजीव और यौवनित हो उठती है । समस्त प्रकृति पुष्पों, किसलयों की श्रृंगार-सज्जा से आनंद-पुलकित हो जाती है । आम की मधुमती मंजरियों का झूम-झूमकर सृष्टि के प्राणों में मादकता का संचार करना, कोयल का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बागों-वाटिकाओं में पंचम राग से कूकना, मधूक का धरती पर रसभार से चू-चू पड़ना, सरसों का वासंती फूलों के द्वारा इठलाना, खेतों में तृप्ति का उपहार लिए गेहूं की फसल का समर्पित होना, खिले हुए फूलों पर भ्रमरों का मंडराना आदि की प्राकृतिक चेष्टाएं चतुर्दिक उल्लास और राग-रंग छिटका देती हैं । तब यही आनंद और उल्लास का पर्व फाग-राग की सरस स्निग्ध तरंगों में तरंगित होने लगता है । कुमकुम, अबीर, चंदन और सुगंधित अंग रागों से धरती-आकाश अनुरंजित हो जाते हैं । हृदयों में विलसित श्रृंगारिक इंद्रधनुषी विचारों का उद्याम वेग मर्यादा के बांध को तोड़ झूम उठता है । होली के हुड़दंग के रूप में फूट पड़ता है ।

इसी राग-रंग समय क्रीड़ा के मंगल और हर्षोल्लसित दिवसों को संस्कृत काव्यकारों ने अपने वैदग्ध्यपूर्ण कल्पना के अनूठे रंगों से रंगा है और फाल्गुन और चैत्र की कमनीय सुषमा के अनेकानेक आकर्षक बिंबों को प्रस्तुत किया है ।

आनंद की अभिव्यक्ति

धरती की मध्यरेखा का सूर्य के बिल्कुल सामने पहुंच जाने का समय है वसंत यानि सूर्य का ज्योतिष के अनुसार दक्षिणायन से उत्तरायण हो जाना । केवल इतनी-सी बात और राजमहलों उपवन वाटिका में ढेर-सारा उल्लास । तभी तो कालिदास वसंत अभिनंदन करते हैं—

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं स्त्रियः सकामाः
पवनः सुगंधिः
सुखाः प्रदोषादवसाश्च रम्याः सर्वं प्रिये चारुतरं वसंते ।।

और इसी के साथ महारानी इरावती लाल कुरबक के फूलों को राजा के लिए भेंट में भिजवाकर प्रमदवन में रंग-बिरंगे पुष्पों के बने पड़े झूले पर राजा के साथ झूलने संदेशा भेजती हैं । समूचे वसंत का आनंद मुखर हो उठता है नृत्य, संगीत और रंग की बौछारों के साथ । अशोक का वृक्ष अपनी नन्हीं-नन्हीं कोंपलों के साथ रमणियों के पांवों के प्रहार से फूट पड़ता है । इसी प्रसन्नता में कामदेव की पूजा करके होता है 'मोदक वितरण' । अशोक के प्रस्फुटित होने की सर्वप्रथम सूचना देनेवाले को भी पुरस्कार और अशोकवृक्ष पर पद प्रहार करनेवाली नवयौवना को भी पुरस्कार । प्रेम का सागर आलोड़ित हो उठता है चहुं ओर । इसी वासंतिक आनंदाभिव्यक्ति को संयुक्त कर दिया है 'सुवसंतक' पर्व के रूप में, यह फाल्गुन पूर्णिमा में संपन्न किया जाता है । 'मानसोल्लास' में सोमदेव ने कहा है कि इस दिन राजप्रासादों में रूपसियों और ललनाओं को राजा के साथ पुष्प छड़ी से खेलने के लिए आमंत्रित किया था । रूपांगनाएं कंडरु तरु की शाखाएं लाल धागे से बांधकर अपनी अनुरागमयी भंगिमा के साथ राजा पर वार करती थी, जिसे राजा बड़े प्रेम के साथ झेलता था । संभवतः वहीं परंपरा अब ब्रज की लट्ठमार होली में परिणत हो गयी है ।

'कामसूत्र' में वात्स्यायन ने वर्णन किया है 'इस दिन फाल्गुन पूर्णिमा पर नागरिक श्रृंग से एक दूसरे पर रंगीन जल छोड़ते हैं और सुगंधित चूर्ण बिखेरते हैं । यह पर्व 'होलाका' के नाम से प्रसिद्ध था, जो बीस क्रीड़ाओं में से एक है । लिंग पुराण में उल्लेख है फाल्गुन पूर्णिमा को 'फाल्गुनिया' कहा जाता है । यह बाल क्रीड़ा से पूर्ण है और नागरिकों को विभूति देनेवाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

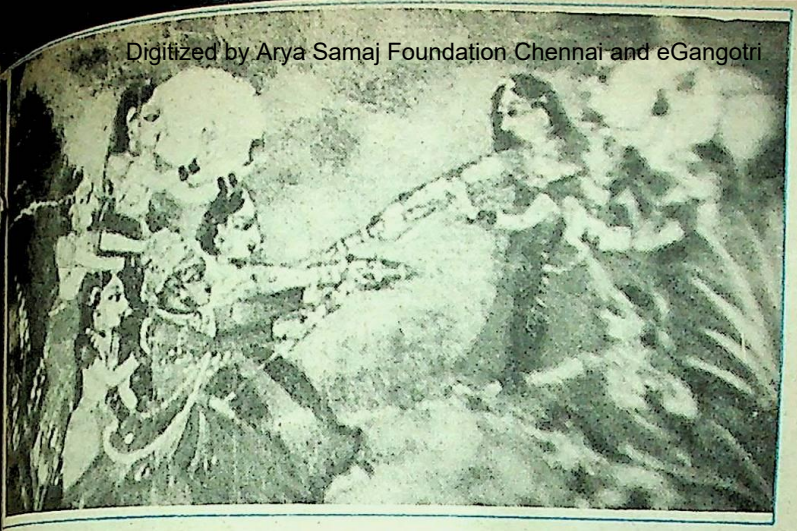

मनोविकार से मुक्ति

भविष्यपुराण में ढूंढ़ा राक्षसी के उपद्रव की [illegible] के रूप में फाग मनाने का संदर्भ मिलता [illegible] वस्तुतः ढूंढ़ा क्या है ? मन की कुरुचि या [illegible] । एक ही मन से यह सब निकालकर [illegible] शांत करने और उसे प्रफुल्लित करने का [illegible] मनोवैज्ञानिक तरीका था । ढूंढ़ा को प्रसन्न [illegible] के लिए बांस एवं चमड़े की बनी [illegible] से रंगोत्सव मनाया जाता । चंदन [illegible] अगरु से सुवासित वस्त्रों को धारण किये [illegible] मुख में ताम्बूल लिये हुए अबीर और [illegible] उड़ाते हुए चमड़े तथा बांस से बने [illegible] (पिचकारियों) से रंग खेला जाता । [illegible] नृत्य करती हुईं हास-परिहास कर रही है [illegible] अपशब्दों का प्रयोग कर मन के पाप को [illegible] निकाल रही हैं ।

[illegible] रंगमयैर्वस्त्रैश्चंदना गरू मिश्रितैः
[illegible] च गुलालं च मुखे ताम्बूल भक्षणं
[illegible] जलयंत्रम् च चर्मयंत्रं करे धृतं।
[illegible] तथा हास्यं ललनानर्तन स्फुटं....।

मन स्वच्छ हुआ तो फाग की कमनीयता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गयी । जहां राजा, सेवक, रानी, महारानी, दासियां और सामान्य नागरिक सब रंगों में सराबोर हो रहे हैं । मृदंग का शब्द मधुर गीतों के साथ चहुंओर गूंज रहा है । रत्नावली में हर्ष ने कौशांबी में खेले गये फाग का कितना सुंदर वर्णन किया है— ''राजा वसंतोत्सव के अनुरूप वस्त्र धारण किये हुए है । विदूषक कहता है 'मकरंदोद्यान में मदनोत्सव की शोभा देखिए महाराज । यहां उन्माद से युक्त कामनियां अपने हाथों से पिचकारी लेकर नागरिकों पर रंग डाल रही हैं । पुरुषगण कौतुहल से नृत्य कर रहे हैं । चारों ओर बजते हुए डफ और ताली के शब्दों से गलियां मुखरित हो गयी हैं । उड़ाये गये गुलाल से दशों दिशाओं का मुख पीत वर्ण का हो गया है ।

यही नहीं, नगरविासियों का प्रमोद चरम सीमा पर पहुंच गया है ।

उड़ता रंग और गुलाल

'रत्नावली' के वर्णन के अनुसार इस उत्सव में इतना अधिक सुगंधित अबीर उड़ता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी दिशाएं रंगीन हो उठी हैं । केशर मिश्रित अबीर से राजपथ भर जाते हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि समस्त नागरिक सुनहरे रंग में डुबो दिये गये हैं । रंगीन फौव्वारे चल रहे हैं । धारायंत्र से निकाला पानी चारों ओर फैल रहा है । उस पर नागरिकों के चलने से प्रांगण में कीचड़ हो गयी है । उद्यत स्त्रियों के कपोलों से उस कीचड़ पर गुलाल इतनी अधिक मात्रा में गिर रहा है कि वह कीचड़ भी लाल हो गयी है । पुरवासियों के पैरों में लगी वह लाल कीचड़ प्रासादों के फर्श को भी रक्ताभ बना रही है । 'रत्नावली' में वारविलासनियों का भी फाग खेलने का उल्लेख मिलता है । ''नगर की वारविलासनीयां भी इस दिन नागर जनों के साथ होली खेल रही हैं । उनके हाथों में रंगीन जल फेंकने के लिए सर्प के फन की आकृति के सदृश पिचकारी है जिनमें भूषणमणि जड़ी हुई है । गुलाल और अबीर इतनी अधिकता में उड़ रहा है कि ये पिचकारी भूषणमणि की प्रभा से कभी-कभी दीख जाती है ।''

सुंदर पिचकारियों का संदर्भ भागवत पुराण में भी मिलता है । ये पिचकारी सींग के आकार की होने के कारण 'श्रृंगक' कहलाती थी, ये पिचकारी अर्द्ध चंद्र के समान दीखती थी रंगीन जल फेंकने के कारण इन्हें 'उदकक्ष्वेडिका' भी कहा गया है । रघुवंश में स्त्रियां, राजा कुश पर सोने की पिचकारियों द्वारा रंगीन जल फेंककर मनोरंजन करती दर्शायी गयी हैं ।

इंद्रधनुषी रंगों का त्योहार

वाण ने 'कादम्बरी' में भी राजा तारापीड के फाग खेलने का सुंदर वर्णन किया है— राजा कभी-कभी स्वर्ण की पिचकारियों से अपनी प्रिय युवतियों के साथ बहुत देर तक जलक्रीड़ा करता था । उस समय किसी रूपांगना की पिचकारी से निकले कामदेव के स्वर्णमय की पंक्ति के समान केसरिया जल की रंगीन धाराओं से राजा का समस्त तन पीतमय हो जाता था, तो किसी अन्य युवती की पिचकारी से निकले कामदेव के स्वर्णमय वाणों की के समान केसर के रंग— जैसी जलधाराओं राजा का शरीर केसरिया रंग का हो जाता था किसी, अन्य युवती की पिचकारी से निवृत लाक्षारस की जल की धारा के प्रवाह से राज का वस्त्र लाल हो जाता था । किसी स्त्री की स्वर्णमय पिचकारी से निकले कस्तूरी युक्त की बूंदों से राजा का शरीर ऐसा लगता था— जैसे कि लाल चंदन का लेप लगा दिया गया हो ।

प्रसन्नता बांटने का पर्व

रघुवंश में स्वर्णमय पिचकारी का उल्लेख आया है । इन पिचकारियों से रंगीन जल रथ के ऊपर छोड़कर स्त्रियां राजा के साथ मनोरंजन कर रही हैं । भवभूति के 'मालती माधव' नाटक में पुरवासियों द्वारा रंगोत्सव अर्थात मदनोत्सव मनाने का वर्णन मिलता है । वहां एक स्थल पर नायक माधव मनोहर नेत्रोंवाली मालती के कपोलों पर लगे कुंकुम के फैल जाने से उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो जाता है । राजशेखर ने अपनी काव्यमीमांसा' में मदनोत्सव के अवसर पर झूला झूलने का भी उल्लेख किया है । राजशेखर की ही अन्य कृति 'कर्पूरमंजरी' में कर्पूरमंजरी के गालों पर पीला रंग और कुंकुम लगाने का मनोरम दृश्य उपस्थित करता है । इसी नाटक में राजशेखर ने 'वट सावित्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

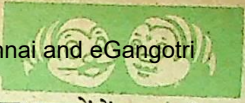

...लोत्सव' के अवसर पर रंग खेलने का विवेचन ...किया है वस्तुतः एक-दूसरे पर रंगीन जल ...कना परस्पर हर्ष और प्रसन्नता बांटने का ...क्रम है। यह आपसी द्वेषभाव भुलाता है।

उपरोक्त प्राचीन काव्यकारों के अतिरिक्त ...अनेक ऐसे काव्यकार हैं, जिन्होंने फाग के ...को 'मदनोत्सव' या 'वसंतोत्सव' के पटल ...बड़े राग और प्रेम से उतारा है। इस अवसर ...वाद्य भी होती थी। परमार नरेश भोज ने ...मंजरी' में 'मदन यात्रा महोत्सव' का ...किया है। इस समय संपूर्ण धारा नगरी ...हो जाती थी। नृत्य-संगीत और नाट्य से ...वातावरण रसमय और आनंदमय रहता ...।

फाग के रंग-हास परिहास के संग

...फाग के समय सुरा या आसव— पान भी ...था। विभिन्न पुष्पों के रस से बने आसव ...स्वादन स्त्रियां भी करती थीं। धनपाल ने ...मंजरी' में लिखा है कि मदनोत्सव का ...व्यय सम्राट वहन करता था। उस दिन ...के उद्यान में सभी को आने की आज्ञा थी। इस उद्यान में विशाल मटकों में सुरा रखी रहती थी, जिन्हें सामान्य नर-नारी छककर पीते थे। इस अवसर पर हास-परिहास करने की भी परंपरा थी। बाणभट्ट ने 'हर्ष चरित' में एक वृद्धा के विवाह का चित्रण करके मनोविनोद का उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस वृद्धा के सिर के सभी बाल सफेद हो गये हैं और सभी दांत टूटे हैं। एक टूटी चारपाई पर एक वृद्ध पुरुष के साथ विवाह कराया गया है। सबसे आनंद की बात यह है कि दोनों वृद्ध-वृद्धा ने इस अवसर पर हंसकर इस परिहास का आनंद उठाया।

वस्तुतः फाग क्या है ? मात्र प्रेम रस में सराबोर होने का मौसम, जो वसंत पंचमी से आरंभ हो फाल्गुन पूर्णिमा तक विभिन्न आमोद-प्रमोद के साथ मनाने का उपक्रम। इस उत्सव के दृश्यों को मूर्तिकारों एवं चित्रकारों ने भी पत्थरों पर उत्कीर्ण किया है, तो चित्रकारों ने अपनी तूलिका से रंगा है।

९/२०९ सैक्टर-३ राजेन्द्रनगर साहिबाबाद

कैदी बनाम पहरेदार

डेविड लारेंट नामक एक कैदी ने पहरेदार डायने मिडकिफ से रोशनी करने के लिए कहा तो उसने उसे माचिस की डिबिया दे दी। अब डेविड ने मिडकिफ पर दस लाख डॉलर के हरजाने का दावा कर दिया है। उसकी दलील है कि मिडकिफ द्वारा दी गयी माचिस की डिब्बी की सहायता से उसने अपने कपड़ों में आग लगा ली, इससे उसे भयंकर पीड़ा हुई। प्लास्टिक सर्जरी पर उसे काफी धन भी खर्च करना पड़ा। मिडकिफ को इस सबका हरजाना इसलिए देना चाहिए कि वह जानता था कि वह (लारेंट) पहले भी आत्महत्या की कोशिश कर चुका है और इस बात के आदेश भी दे दिये गये थे कि उसे कोई हानि पहुंचानेवाली चीज नहीं देनी चाहिए फिर भी मिडकिफ ने उसे माचिस की डिब्बी दी। उसी डिब्बी के कारण उसे अपने वस्त्रों में आग लगाने की 'प्रेरणा' मिली। लारेंट का यह दावा आइओआ की स्काऊट काउंटी की एक अदालत में विचाराधीन है !

मार्च, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और राज का परदाफाश कर दूं । यह नायिका-वर्णन जो रीतिकाल का आधार था, पत्नी के लिए नहीं, वरन प्रेमिका के लिए था....

हमाये प्रिय लाला,

राम-राम,

सुनो लाला, हमने अपनी जिंदगी में संविधान घोर लओ है । चाहे बाम्हन हो, जैन हो, सिख हो, मुसलमान हो, कोई भी जात को हो, जे ललाइन के सबरे लाला ।

पत्र एक जौजी

अब तुम्हें का बताएं, जबसे हम जगत भौजी बने, हमने तुम औरों की पोल खोलने को बीड़ा-सो उठा लओ है । बाहर तो तुम ओरे कैसे मीठे मधभरे हो जात हो, औ घर में देखो, रूप बाहर की पूरी कसर अपनी लुगाइन पे निकारत हो । हमें तुम औरे कैसे लगत हो जे फाग पे हम जेई लिखकर भेज रये हैं । तुमाओ मन हो छापो न मन हो तो ने छापो । पर जान लइयो अब हमें भी आजादी मिल गयी है । जब हम अपनी पत्रिका निभा रहें तो चुन-चुनकर गरयाहें । हमाई लिखी सुनो की बुराई ने मानियो, ''झाई माघ की पांचे सूढ़ी डुकरिया नाचें। सीत लहर में में जब बू ध्यान आओ तो हम फगुवाम लगे ।

बाल बच्चों औ देवरानी को आसीरवाद

तुमाई
भौजी

जब से हमने वकालत का व्यवसाय अपनाया, हर क्षण हम यह महसूसते रहते हैं कि अब हम स्वतंत्र हैं । वाणी तो मुखर थी ही, किंतु सार्वजनिक नहीं थी । बरसों पुरुष ने औरतों पर बेलन चलाये और साहित्य में पत्नी की छवि बेलनवाली उभार दी । कहीं कोई भैंस कहता, कहीं झगड़ालू कहता....एक और राज का परदाफाश कर दूं यह नायिका-वर्णन जो रीतिकाल का आधार था, पत्नी के लिए नहीं वरन प्रेमिका या लिए था । प्रेमिका का दूसरे की पत्नी, चाहे— जैसी हो सर्वांग सुंदरी दिखती है और पत्नी हाथ में बेलन, मुंह में कटु वचन, स्थूल काया-सी ही दिखे है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो कवियों ने तो अपने दृष्टिकोण से पत्नी और प्रेमिका के रूप का वर्णन अंतर स्पष्ट करते हुए लिखा ही है, और खूब लिखा है, किंतु नारी के लिए पुरुष चाहे वह पति हो या प्रेमी एक-सा ही लगता है । नारी भी अपनी कुढ़न लोकगीतों के माध्यम से निकालती रही है । अभी आज उसका वर्णन नहीं करूंगी, पहले मैं अपने मन की भंडास तो निकाल लूं....

पुरुषों ने प्रेमिका वर्णन किया है—

रूप रंग विधु बदन, बचन अमृत, बिख चितवत

क जौजी का

● **सुधारानी श्रीवास्तव**

भौंह धनुष, गलशंख, उमासम जिमि पतिव्रत
है घूंघट, गज चाल, काम तरु, लाज नयनभर
मणि सुदंतिपंक्त, उदित सील, कवि राज धेनुधर
सुरगण सिंधु वृथा मथ्यो तिय तन चौदह रतन

अब हमारी (हम महिलावर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं) दृष्टि में पुरुष क्या है—

दृढ़ तन, कठोर मन, बिख बचन, कसाई सों
चितवत
भौंहें कुटिल, गलवज्रसम, कृष्ण सम बहु पत्नि व्रत
कुरू पान, मत्त चाल, कामपेड़ निर्लज्ज भर नयन
ऊबड़-खाबड़ दंत अश्लील मूरत, कवयित्री 'सुधा'
सुरगण सागर वृथा मथ्यो, गरल बिरमन पुरुष तन

—२०८/२ गढ़ा फाटक, जबलपुर

जनता को उसकी बोलचाल की भाषा में शिक्षा दो—उसको संस्कृति का बोध दो ।

—स्वामी विवेकानंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुल्ले शाह यूं बोले

बी.आर. 'पदम'

भक्ति और इबादत यह अद्धय तत्व है । इसी प्रकार इश्क और प्यार भी अद्धय तत्व हैं । ब्रह्म, अर्थात चराचर जगत जो हमें दिखायी देता है, वह ब्रह्म है । जो हमें दिखायी नहीं देता, जिसे हम खोजते हैं वह परब्रह्म और हुस्न, सौंदर्य अद्धय है । परब्रह्म अर्थात हुस्न को जिसने देखा उसे आशिक या परमभक्त कहा गया है । तालिब और मतलूब याने उपासक और उपास्य की भी दो श्रेणियां हैं । पहली श्रेणी है इश्क मिजाजी जिसका भाव सांसारिक व क्षणिक उपलब्धि है, दूसरी है इश्क हकीकी जिसकी उपलब्धि हिज्र या विछोह में ही सुख देती है । भक्ति और इश्क में कोई अंतर नहीं है । इश्क अर्थात प्यार इस दिल में स्थापित किया गया है । जब यह जागृत होता है तो इसकी दो प्रक्रियाएं होती हैं सांसारिक रूप की आसक्ति द्वारा उस परमानंद को पाना या फिर अलौकिक प्रणय में खो जाना । जब इस दिल में इश्क रूपी खुदा आदमी से दूर होता है तब वहां पंचविचार उभरते हैं जो कि शास्त्रों के अनुसार मानवता के लिए भयंकर हैं किंतु एकला इश्क ही इन पांचों को मार गिराता है । यही यौगिक-शमन क्रिया है । इस इश्क को हृदय में स्थापित करने के लिए यौगिक क्रियाएं निभानी पड़ती हैं — जैसे कि अष्टांग योग या हठयोग तथा पंचाग्नि में प्रवेश करना आदि । इसी प्रकार सूफियों का चिल्ला काटना भी यौगिक प्रक्रिया है । यह सब कर्म ईश्वर को बलात् हृदय में पाने के लिए हैं परंतु जो किसी की निगाह से घायल होकर उसी के चिंतन में खो जाता है वो आशिक भी परम भक्ति की श्रृंखला में आता है ।

यदि हम संस्कृत वाङमय, उर्दू व फारसी अदब के पुरातन व मध्यकालीन जनकवियों सूफी-संत कवियों के व्यक्तित्व की परख करें तो उनके विगत जीवन में कहीं न कहीं इश्क की छेड़छाड़ जरूर हुई है । जो तो इश्क में मसलूब रहकर सफल हुआ उसको आशिक का दर्जा मिला । जो इश्क में नाकामयाब रहा वह पुनः कवि या संत कवि बनकर अपने दिलबर, उस उपासक के लिए वंदना करने लगा । इश्क का यह सिलसिला एक ही सतह पर है किंतु हर तरह का सुख और आनंद अवर्णनीय है । फारसी के फिरदौसी हों या संस्कृत भाषा के कवि म्यूर हों अथवा भास व कालिदास या फारसी के मध्ययुगीन कवि ख्वाजा दिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहम्मद हों। अवधी के तुलसीदास और ब्रजभाषा के सूरदास सभी अपने अतीत में इश्क के बाण खाकर ही अच्छे कवि और भक्त हुए हैं। सूरदास का यह पद विरह की पुरानी पीड़ा को उकेरता हुआ गोपियों के विरह में जा समाया है :—

निस दिन बरसत नैन हमारे
अंजन धर न रहे अखियन में
कर कपोल भये कारे

यह कथानक कई जगह वर्णित है कि सूरदास वेश्या के रसिक थे। तुलसीदासजी तो अपनी पत्नी पर ही रीझ चुके थे। इसलिए उनकी कविता में नारी पीड़ा को काफी स्थान मिला है। केशव कवि तो बुढ़ापे में भी जवानी को अनुभव करते थे।

प्रेम का दर्द बनाता है संत

सूफियों के वली सैय्यद बुल्लेशाह भी इश्क की मार से बचे नहीं। हुस्न और इश्क की इस जंग में बुल्लेशाह को जो दर्द मिला उसने उन्हें वो सूफी तत्व प्रदान किया जिसने उन्हें बहुत बड़ा संत बना दिया। जब-जब इस दिल में किसी की याद लिए विरह की टीस उठी है तब ही यह संसार अपना लगा है क्योंकि संसार का प्रत्येक प्राणी आशिक को माशूक-सा लगता है क्योंकि जब भी कभी भक्ति के आलम में वसल की वो बीती हुई घड़ियां याद आयीं तब वे रो उठे और उस प्रेमी को ईश्वर का रूप मानकर तड़पते भी रहे और काफी भी गुनगुनाते रहे होंगे —

देखों नीं ! की कर गया माही
लैंदा ही दिल हो गया राही

इन दो पंक्तियों को पढ़ने से यह अनुभव होता है कि मानो बुल्लेशाह की फकीरी और पीरी का मर्कज इसी में छुपा है अर्थात इन दो पंक्तियों में उनकी पहली मुहब्बत की कोई टीस छुपी हुई है जो कि रह-रहकर उनको पीड़ा के पास लिए जाती है। वास्तव में तालिब मतलूब का नाम दुनिया के सामने नहीं ले सकता इसलिए मतलूब को इबादत में पाया जाता है। बुल्लेशाह अपने उस महरम की बात यूं उठाते हैं —

अंबड़ झिड़के, मैनूं बाबल मारे
ताने दे दे वीर प्यारे
उस दी गल्ल ओहा नितारे
हस देयां गल्ल विच पै गई फाही

वो अदम्य निवर्चनीय, अवर्णनीय सौंदर्य का

इश्क विश्व रूपी रणक्षेत्र में घमासान है जोकि मनुष्य को एक तरफ खींच लेता है जिसमें भौतिकता, संबंध, धर्म-कुल और जीवन तक तुच्छ हो जाते हैं। इस इश्क के पास कांटे और पीड़ाएं ही हैं, लेकिन आशिक इश्क में निमग्न होकर मंसूर बन जाता है तथा मुहब्बत के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाह उसका प्रियतम इतना बेदर्द निकला कि उसका दिल मोहकर फिर कभी नजर ही नहीं आया इसी निगाही के आलम में हिज्र की कहानी रुहानी होती जाती है । वो उस साजन के ... ख्यालों में ... इतना मसरूफ, तल्लीन है कि मां-बाप, भाई-बहन सब उसको झिड़की देते हैं पूछते हैं कि तुझे क्या हुआ है । पर वो कैसे कहे । उसका जानी ही इस बात को जानता है जिसने इश्क रूपी फंदा उसके गले में डाल दिया है ।

इशक होरां दे पये पुवाड़े
कुछ सूलां कुछ करमां साढ़े
मंसूर होरां चा बुरके साड़े
असां वी मूंह तो लोई लाही

इश्क विश्व रूपी रणक्षेत्र में घमासान है जोकि मनुष्य को एक तरफ खींच लेता है जिसमें भौतिकता, संबंध, धर्म-कुल और जीवन तक तुच्छ हो जाते हैं । इस इश्क के पास कांटे और पीड़ाएं ही हैं, लेकिन आशिक इश्क में निमग्न होकर मंसूर बन जाता है तथा मुहब्बत के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देता है । बुल्लेशाह भी अपने बारे में यही सोचते हैं कि उस दिलवर के वसल के लिए सांसारिक बंधन त्यागना ही परम श्रेष्ठ है ।

बुल्ला शाह दे इश्क रंजाणीं
डंगीआं मैं किसे नाग अयाणी
अज अजोकी प्रीत न जाणीं
लगी रोज अजल दी आणी

यह इश्क धारा तो युग-युग से प्रवाहित है, सतत अविरल है । प्रणय रूपी सांप जिसे छू जाता है वो मौत से भी नहीं डरता । प्रणय सभी विषयों को काटता है । किंतु इस पुरातन प्रणय को जोकि सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुआ था किसी ने नहीं पहचाना । बस, वासना के चक्र में अपने-आप को धोखे में रखते आये हैं । प्रायः गौण रूप से हिंदू शास्त्रों, नबियों की पुस्तक बाइबल, क्राइस्ट की नयी बाइबल सेंट जोजफ द्वारा प्रणीत कुरान, गर्ग संहिता व ब्रह्मांड पुराण आदि में सृष्टि संरचना का हेतु उस ईश्वर का दो रूपों से दो रूपों में बंटकर अर्ध नारीश्वर हो जाना अथवा भगवान व भगवती बनकर महारास करना सृष्टि उत्पन्न करता है । ईश्वर तथा देवों का आह्लाद ही इश्क बनकर संसार में व्याप्त हो गया । यही खुदा है यही धर्मसूत्र है जिसकी निगाह में शरीयत अर्थात मर्यादाएं तुच्छ हैं ।

शक्ति का प्रतीक : प्रेम

यूनान के पुरातन साहित्य और धर्म के अनुसार भी इश्क व सौंदर्य को विश्व की दैवी शक्ति माना गया है । भारतीय प्रज्ञा व यूनानी प्रज्ञा बहुत पुरानी है दोनों में अलौकिक विधाओं की निधि सुरक्षित है । जिसने इस इश्क को समझा वो कुल कायनात और आसमान के कुशाप तोनों में धड़कते दिल की पीड़ा को समझा और उसने सभी को प्यार की नज़र से देखा । जो दिल इस रहस्य से वंचित हैं और स्त्री-पुरुष के आकर्षण को भोग का साधन मानते हैं वह जिन्न और दानव ही हैं । वास्तव में इश्क व हुस्न के रूप में कुदरत व कादिर ही स्त्री-पुरुष हैं ।

इसी नासमझी को देखते हुए साई बुल्लेशाह ने कहा था कि —

फूक मुसल्ला भन्न सुट लोटा
न फड़ तसबी कासालोटा
आलिम कहिंदा दे दे होंका
तरक हल्लाओं खा मुरदार
इश्क दी नवीओं नवीं बहार ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इश्क अर्थात प्यार ही वास्तविक जीवन है यह मार्खंड बाजी वाद-विवाद सब व्यर्थ की बातें हैं

जा मैं सबक इश्क दा पड़ेया
मस्जिद कोलों जीउड़ा डरेया
भज-भज ठाकुर द्वारे वड़ेया
पर विच पाया महरम-यार
इश्क दी नवींओं नवीं बहार

मस्जिद व ठाकुरद्वारे में सिवाये ताऊस्सुब के कुछ नहीं है, वो इश्क रूपी खुदा तो दिल में रहता है। इस दिल को उसकी ओर लगाना ही सच्ची वंदना-पूजा है।

इश्क अर्थात सच्चे प्यार का दर्द गुरु गोविंदसिंहजी के शब्दों में भी उभरा है तभी तो किसी अनबूझ पीड़ा का जिक्र उन्होंने किया है —

मित्र प्यारे नूं हाल मुरीदां दा कहिणा
सुख-सुराही खंजर प्याला
नाग-निवासां दे रहिणा
मित्र प्यारे नूं हाल मुरीदां दा कहिणा

खुदा और राम एक है, कहने को तो हम कह देते हैं लेकिन लोक का आचरण कुछ अद्भुत है, कहता कुछ है, निभाता कुछ है। बात को पूरी करने का काम इश्क ही सिखाता है। बुल्लेशाह इस दुरुहता के बारे में यह स्पष्टीकरण इस काफी में करते हैं —

मक्के गेयां गल मुकदी नाहीं
जिचर दिलों न आप मुकाइए
गंगा गेयां गल्ल मुकदी नाहीं,
भावें सौ-सौ गोते लाइए
'गया' गेयां गल्ल मुकदी नाहीं.
भावें कितने पिण्ड भराइए
बुल्लाशाह गल्ल मुकदी नाहीं,
जद मैंनू खड़े लुटाइए

मक्का यात्रा, गंगा स्नान, गयाजी में पिंड दान आदि क्रियाएं सब व्यर्थ हैं। जब तक हम मानवीय पीड़ा को निज की पीड़ा नहीं मानते, उस परमात्मा रूपी प्यार को परस्पर अनुभव नहीं करते।

ए-८७, सैक्टर १४
चंडीगढ़-१६००१४

अमरीका में इस समय वृद्धावस्था को रोकने और वृद्धावस्था के रोगों का उपचार करनेवाली लगभग दो सौ दवाओं पर काम चल रहा है। दवा निर्माताओं की शीर्ष संस्था फार्माक्यूटिकल मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन ने अमरीकी कैंसर सोसाइटी और अर्थ्राइटिस फाउंडेशन-जैसी स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से किये एक सर्वेक्षण में पाया है कि ७७ कंपनियां वृद्धावस्था के २३ रोगों की २२१ दवाओं पर शोध कार्य कर रही हैं। ये दवाएं वृद्धावस्था के प्रमुख रोग— हृदय रोग, हड्डियों के कमजोर करनेवाले रोग— अस्थि-भंगुरता के रोग, मानसिक क्रियाओं को धीरे-धीरे नष्ट कर असहाय व अपंग बना देनेवाले रोग-अल्झामीर्स डिसीज तथा पेशियों में कंपन पैदा करनेवाले रोग— पार्किंसंस रोग आदि से संबंधित हैं। इन दवाओं के बाजार में आने पर निश्चित तौर पर वृद्धावस्था पर काबू पाया जा सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ रोचक प्रसंग

नाटी गर्ल ऑव इंडिया

भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू अपने जीवन में घटा एक मनोरंजक अकसर सुनाया करती थीं ।

हुआ यह कि असहयोग आंदोलन के दौरान उन्हें प्रवासी भारतीयों से संपर्क करने के लिए पूर्वी अफरीका भेजा गया । वहां भारतीय मूल के प्रवासी खोजा संप्रदाय के लोगों ने उनके स्वागत का आयोजन किया । सभा के प्रमुख वक्ता थे एक समृद्ध खोजा व्यवसायी । उनका अंगरेजी ज्ञान अधिक नहीं था, अतः उनके लिए एक शिक्षक ने अभिनंदन पत्र लिख दिया । उसमें श्रीमती नायडू को 'द् फेमस नाइटेंगिल ऑव इंडिया' कहकर संबोधित किया गया था ।

सभा शुरू हुई और प्रमुख वक्ता ने अभिनंदन पत्र पढ़ना शुरू किया । लेकिन एक स्थल पर पहुंचकर वे रुक गये । शब्द था— 'दि फेमस नाइटेंगिल आव इंडिया' । वे सही अर्थ नहीं लगा पाये तो प्रत्युत्पन्न मति से काम लिया और बोले— 'द् फेमस नॉटी गर्ल ऑव इंडिया'

क्षणभर के लिए तो समझदार श्रोता हक्का-बक्का रह गये पर सहसा उन्हें असलियत का पता चल गया और सभा कहकहों से गूंज उठी ।

वो तो दो सौ ले गये

अकबर इलाहाबादी : एक जिंदादिल शायर । वृद्धावस्था में आंखों की रोशनी कमजोर हुई तो ऑपरेशन करवाना पड़ा । ऑपरेशन के बाद डॉक्टर ने आंखों पर पट्टी बांधी और फीस लेकर चल दिया ।

थोड़ी देर बाद उनके पुत्र कमरे में आये और हालचाल पूछा । अकबर इलाहाबादी ने उत्तर दिया—

रोशनी आये तो हम देखें कहाँ अपना हिसाब
वो तो दो सौ ले गये आंखों पे पट्टी बांध के !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद से लंगड़ा चला

...के मसीहाई का यह सब असर अकबर ...हाबाद से लंगड़ा चला और लाहौर तक पहुंचा ...शेर डॉ. इक्बाल का है और उसकी ...भूमि में है एक रोचक प्रसंग । एक बार जब ...इकबाल लाहौर में थे तो अकबर ...हाबादी ने उनके लिए बनारस के 'लंगड़ा' ...का पार्सल भेजा । और डॉक्टर इकबाल ...उनका शुक्रिया अदा किया, उपरोक्त शेर ...!

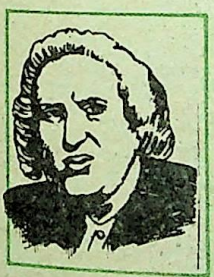

एक तरफ धुआं दूसरी तरफ

अंग्रेजी के शब्दकोशकार डॉ. जॉनसन के अनुसार सिगरेट का अर्थ—

"सिगरेट कागज में लिपटा हुआ तंबाकू है, जिसके एक तरफ धुआं होता है और दूसरी तरफ एक बेवकूफ !"

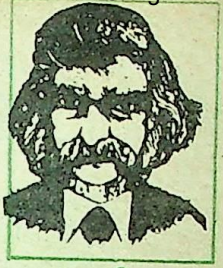

ईश्वर ने कृपा की

मार्क ट्वेन के एक प्रशंसक को उनका पता न मालूम था । वह उनके जन्म दिन पर शुभकामना संदेश भेजना चाहता था । अंत में उसने लिफाफे पर यह लिख दिया—

श्रीयुत मार्क ट्वेन
पता नहीं मालूम
ईश्वर करे, यह पत्र उन्हें
मिल जाए ।

कुछ दिनों बाद उस प्रशंसक को मार्क ट्वेन का पत्र मिला । लिखा था—

ईश्वर ने कृपा की

और नीचे मार्क ट्वेन के हस्ताक्षर थे ।

सलाह और अमल

"तुम रात-दिन काम में लगे रहते हो । जब देखो तब प्रयोगशाला में । कभी तो छुट्टी ले लिया करो ।" काम में व्यस्त वैज्ञानिक पति से पत्नी झुंझलाकर बोली ।

"लेकिन मैं छुट्टी लेकर जाऊं कहां ?" पति ने उत्तर दिया ।

"जहां तुम्हारा मन चाहे ।"

"सही सलाह दी । मैं वहीं जाता हूं ।" और यह कहकर महोदय पुनः प्रयोगशाला में घुस गये ।

ये थे ग्रामोफोन के आविष्कारक थामस एल्वा एडीसन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताज़गी आई, रौनक़ छाई
हमाम से!

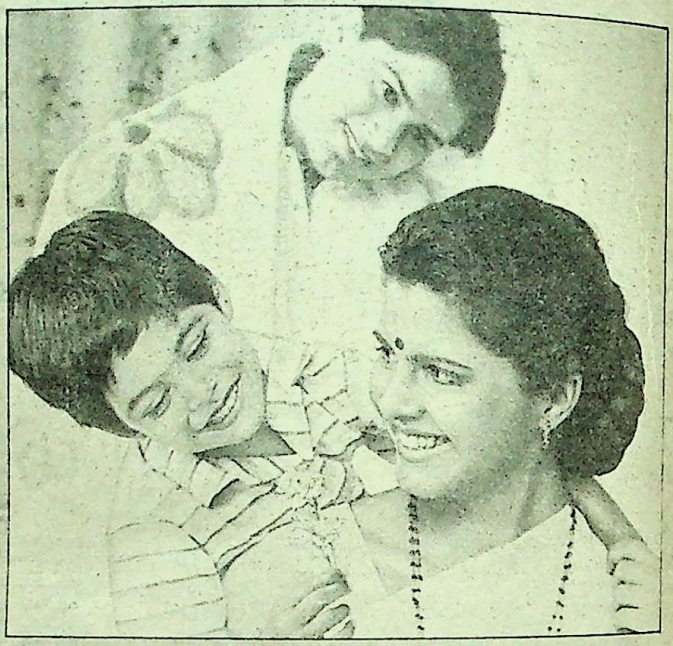

हमाम जादू जगाए. पहले से कहीं ज़्यादा
ताज़गी और रौनक़ लाए ताज़गी भरी
खुशबू तन-मन में बस जाए.
भरपूर मुलायम झाग सदाबहार हमाम
ताज़गी और रौनक़ के एहसास के लिए.

हमाम
सारे परिवार का साबुन

टाटा उत्पाद

CLARION/B/T/23/173 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि विलास

१. एक मेले में भीड़ का तिहाई भाग पुरुष, उसका आधा औरतें तथा शेष बच्चे हैं। बताइए, बच्चे कुल भीड़ का कितने प्रतिशत हैं ?

२. किन विदेशी भाषाओं में 'महाभारत' फिल्म का निर्माण हुआ है ? उसके निर्माता-निर्देशक तथा पटकथा-लेखक कौन हैं ?

३. क. किस भारतीय समुद्री यान से पहली बार पृथ्वी की परिक्रमा की गयी है ? यह किसके सम्मिलित सहयोग से आयोजित की गयी ?

ख. इसमें कुल कितनी दूरी की यात्रा कितने दिनों में तय हुई।

४. अंटार्कटिका के लिए अब कौन-सा अन्तर्राष्ट्रीय अभियान-दल गया है ? उसके नेता कौन हैं ?

५. गत वर्ष के अंत में कौन-से संविधान-संशोधन विधेयक संसद द्वारा पारित किये गये। उनमें क्या प्रावधान हैं ?

६. क. केंद्रीय मंत्रिमंडल में किस व्यक्ति को सदस्य-सदस्य न होते हुए भी शामिल किया गया है ? कौन-सा मंत्रालय सौंपा गया है ?

ख. किस व्यक्ति को केंद्रीय मंत्रिमंडल का सदस्य न होते हुए भी कैबिनेट मंत्री का दरजा दिया गया है ?

ग. वर्तमान लोकसभा में विपक्ष के किस नेता को केंद्रीय कैबिनेट मंत्री के बराबर वेतन, भत्ता तथा कुछ अन्य सुविधाएं दिये जाने का प्राविधान है ?

७. गत वर्ष के अंत में पूर्वी यूरोप के किस देश में भारी रक्तिमय क्रांति के बाद वहां की सत्ता पलट दी गयी ?

८. क. देश में सर्वाधिक साक्षर राज्य कौन-सा है ?

ख. वह कौन-सा एकमात्र शहर है जहां शत-प्रतिशत साक्षरता है ?

९. निम्नलिखित पुरस्कार किसे मिले हैं ?—

क. १९८५ का भारत-भारती पुरस्कार

ख. १९८९ का साहित्य अकादमी पुरस्कार (हिंदी)

ग. छठे अंतरराष्ट्रीय बाल-फिल्म समारोह (भारत) में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए स्वर्ण-गज पुरस्कार

१०. क. दुनिया का सबसे ऊंचा युद्ध-क्षेत्र कहां रहा है ?

ख. वहां किन देशों के बीच लड़ाई हुई है ?

११. भारत का सबसे छोटा संसदीय निर्वाचन-क्षेत्र कौन-सा है ?

१२. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

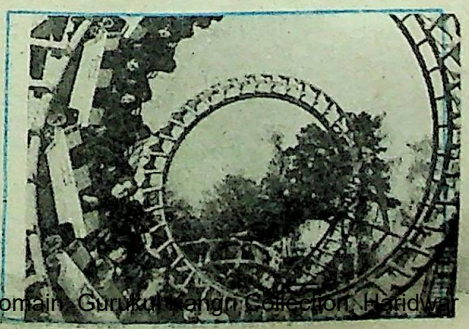

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

मार्च, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाख रुपये की बात है !

● डॉ. संसार चंद्र

'लाख रुपये की बात है !'—दरअसल, तकिया कलाम ही बन गया था हमारे पंडितजी का। घड़ी-दो घड़ी जब भी उनसे मेल-मुलाकात का अवसर मिलता, यह पेटेंट फिकरा प्रायः उनकी जुबान पर थिरक उठता था। वस्तुस्थिति यह थी कि किसी प्रकार की दलीलबाजी, जिसमें बात के तूल पकड़ जाने का अंदेशा होता, उनको हरगिज गवारा न थी। बल्कि मित्रों के साथ राय मिलाने में उनको एक विशेष राहत महसूस होती थी। मसला कितना गंभीर हो, उस पर लंबी-चौड़ी बहस भी हो सकती हो, झट 'लाख रुपये की बात है' कहकर अपना दामन छुड़ा लेते थे। यदि संयोगवश कोई खास ही खतरनाक किस्सा दरपेश हो जाए, जिसको वाज्या करने के लिए इस मुहावरे की चूलें उस पर ठीक न जमतीं हों, तो उनके पास एक और विकल्प भी था, जो उनका अंतिम अस्त्र था, मानो उनके तरकस के सभी तीर चुक गये हों—'देखते चलो, राम भली करेंगे।'

एक दिन प्रातः सैर से लौटने पर छोटे बेटे ने बताया कि पंडितजी चक्कर काट गये हैं। मेरे पूछने पर कि सुबह-सुबह कौन-से पंडितजी ने हमारी कुटिया पवित्र की है, बोला, "और कौन ? वही लाख रुपयेवाले पंडितजी।" मैं लड़के की सूझबूझ पर रीझ गया और सोचने लगा कि लड़का क्या ही पते की बात कह गया है। इसने अनजाने में ही पंडितजी को कितना ऊंचा खिताब दे डाला है। इसी प्रसंग में संयोगवश मुझे एक काफी पुरानी घटना भी याद हो आयी, लगभग चालीस-बयालीस वर्ष पहले की। हमारे एक पड़ोसी की लाख रुपये की लाटरी निकल आयी थी। बेचारा मेहनत-मजदूरी से पेट पालता था परंतु पलक झपकते ही लक्ष्मी का कृपापात्र बन गया। चंद दिनों में ही लोग उसका असली नाम, जो अब मेरे दिमाग से भी पूरी तरह उतर चुका है, भूलभाल गये और उसे 'लखपतिया' कहकर पुकारने लगे। पंडितजी तो लाटरी जीतने के बिना ही 'लखपतिये' घोषित हो चुके थे।

एक दिन पंडितजी की 'लाख रुपये की बात है' की रट से मेरे सब्र का पैमाना भी छलक उठा और मैंने लगे हाथों एक हलकी-सी फुलझड़ी छोड़ दी, "पंडित महोदय ! अब लाख को कौन पूछता है ? अब तो करोड़ों का जमाना है बल्कि मुद्रास्फीति की कृपा से हिसाब-किताब का दायरा अरबों तक जा पहुंचा है। आप भी अपने स्टैंडर्ड में कुछ इजाफा कीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास एक और
म अस्त्र था,
र चुक गये
करेंगे ।'
ने पर छोटे बेटे ने
गये हैं । मेरे
-से पंडितजी ने
ला, "और
ंडितजी ।" मैं
ा और सोचने
ी बात कह गया
जी को कितना
ी प्रसंग में
नी घटना भी याद
यालीस वर्ष पहले
ख रुपये की
ारा
था परंतु पलक
बन गया । चंद
ी नाम, जो अब
र चुका है,
तिया' कहकर
टरी जीतने के
ी चुके थे ।
ख रुपये की बात
ा भी छलक उठा
ी-सी फुलझड़ी
ब लाख को
ड़ों का जमाना है
हिसाब-किताब
ा है । आप भी
ीजिए ।"

कादम्बिनी

पंडितजी ने तत्काल अपना दाहिना हाथ ऊपर की ओर उठा लिया, जैसे वह वर देने की मुद्रा में हों, परंतु क्या देखता हूं कि उसी क्षण अपने उसी पुराने अंदाज में उनके मुख से वही परिचित वाक्य पहाड़ी चश्मे की तरह अकस्मात फूट पड़ा, "लाख रुपये की बात है ।"

पंडितजी 'अपनी भाषा है भली, भलौ पुराने देश' नीति के समर्थक जरूर हैं, मगर उन्हें अंगरेजी से किसी प्रकार की चिढ़ हो ऐसी बात नहीं है । हां, एक गलती उनसे जिंदगी भर हुई और आखिरी बार जरूर हो गयी थी । उन्हें हिंदी के राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर आरूढ़ होते ही अंगरेजी के 'टोटल बाईकाट' की घोषणा कर दी थी । उनका दृढ़ विश्वास था कि अंगरेजों के भारत से कूचकर जाने के साथ ही अंगरेजी का बिस्तर भी स्वतः ही गोल हो जाएगा, परंतु जब उन्होंने देखा कि अंगरेजी की उन्नति का सितारा सातवें आसमान पर चमकने लगा है, तो वह हाथ मलकर रह गये । इस आत्मनिर्मित संकट का मुकाबला करने के लिए वह अंगरेजी का प्राइमर भी खरीद लाये थे, परंतु उन-जैसे बूढ़े तोते के लिए एक नयी भाषा में कुछ भी अंगरेजी सीख लेना बड़े जोखिम का काम था । पंडितजी बेचारे निरुपाय एवं लाचार थे । उनके लिए 'जेहि विधि राखे राम तेहि विधि रहिये' वाली स्थिति बन गयी थी । निराश पंडितजी को आखिरकार, अचानक आशा की एक क्षीण-सी किरण दिख गयी थी । उन्होंने सोचा कि अंगरेजी पढ़-लिख लेना कुछ मेरे बस का रोग नहीं । क्यों न साहिबी ठाठ-बाट वाले अंगरेजी के प्रेमी अहलकारों से ही मेलजोल बढ़ाया

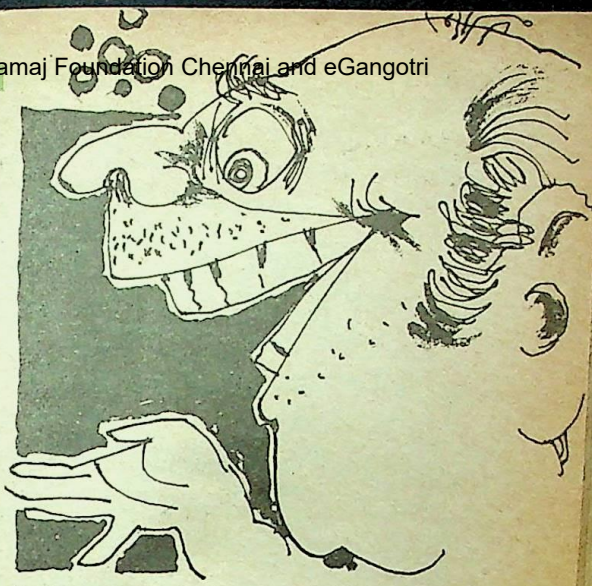

'लाख रुपये की बात है !' पंडितजी का तकिया कलाम था । और उनका अंतिम अस्त्र था — 'देखते चलो, राम भली करेंगे ।' लेकिन एक दिन पंडितजी की 'लाख रुपये की बात' की रट से मेरे सब्र का पैमाना भी छलक उठा और...

जाए । खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है । किसी कवि की यह उक्ति 'जो गंधी कछु दे नहीं, तो भी वास सुवास' भी तो झुठलाई नहीं जा सकती । चलो, अंगरेजी न सही, अंगरेजी की सुगंध ही सही । फूल न सही, पत्ती ही सही । कुछ न कुछ तो हाथ लग ही जाएगा ।

पंडितजी शनैः शनैः इस नये संप्रदाय में दीक्षित होने की रिहर्सल करने लगे । उनका अफसर-हाकिमों के साथ कभी-कभी सैर-सपाटे का प्रोग्राम भी बन जाता था । तब वह फ्लीट बूट पहन, हाथ में छड़ी लेकर उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों के साथ हो लेते थे । सैर में अफसर लोग ज्यादातर अपने-अपने महकमे की बातें ही करते थे । कौन कहां जा रहा है ? किसकी प्रोमोशन हो रही है ? कमिश्नर साहिब दौरे पर आनेवाले हैं । अब महंगाई भत्ते की तीसरी किस्त रिलीज हो रही है, आदि-आदि । कभी-कभी उनमें हंसी-मजाक का दौर भी चलता था । उस समय बेचारे पंडितजी को कभी-कभी उलटी-सीधी भी सुननी पड़ जाती थी । कभी-कभी अफसर लोग पंडितजी की अंगरेजी न जानने की कमजोरी का फायदा उठाते हुए उन पर अंगरेजी में ही छींटाकशी करने लगते थे । एक बार किसी ऐसे ही प्रसंग में अपनी 'हां' में 'हां' मिलाने की आदत से मजबूर होकर पंडितजी भी अफसरों-जैसे अंदाज में ही खिलखिलाकर हंस पड़े थे । यह देखते ही एक मनचला अफसर कह उठा था, 'लुक एट दिस फूल, ही डज नाट नो इंग्लिश बट ही इज लाफिंग सो हार्टीली ।' इस टिप्पणी पर सभी अफसर और भी ज्यादा-जोर से हंसने लगे थे और लुत्फ की बात तो यह थी कि पंडितजी 'लाख रुपये की बात है' कहकर केवल हंसे ही नहीं, बल्कि उनका कहकहा अपने सभी साथियों की बनिस्बत ज्यादा बुलंद था ।

यद्यपि आपको पंडितजी में क्षमा, सहनशीलता, विनय आदि गुणों का अद्‌भुत संयोग सहज ही दिखायी दे जाएगा, परंतु उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी उपलब्धि उनकी क्रोध पर अखंड विजय प्राप्त कर लेने में है । विद्वानों का कई बार दुर्वासा रूप भी देखा जाता है, परंतु पंडितजी निश्चय ही इसके घोर अपवाद हैं । कभी कोई किस्मत का मारा इनका कोपभाजन बना हो, मुझे सहज ही विश्वास नहीं होता । राष्ट्र-विरोधी, समाजघातक तथा मानवीयता का गला घोंटनेवाले प्रतिक्रियावादी तत्वों का जिक्र आने पर वह अवश्य ही तिलमिला उठते हैं अथवा किंचिन्मात्र ताव में आ जाते हैं, परंतु यह आवेश भी कभी-कभार और दूध के उबाल की तरह क्षणिक होता है । वास्तव में उनके चरित्र एवं स्वभाव का सच्चा और यथार्थ विश्लेषण यही है कि वह किसी भी कड़े से कड़े विरोधी की अप्रिय से अप्रिय वाणी को भी 'लाख रुपये की बात है' कहकर टाल देते हैं । मुझे याद है, एक दिन पांच-सात साहित्यकार मित्रों में गरमा-लड़ रही थी । प्रसंगवश पंडितजी का जिक्र आ गया । मैंने उनकी मिलनसारी, प्रेमभाव, सौहार्द और मैत्री-निर्वाह की अटूट लगन की तारीफ की । यद्यपि मंडली के प्रायः सभी सदस्यों ने मुक्तकंठ से मेरी भावनाओं का अनुमोदन किया, परंतु दुर्भाग्यवश उस सभा में एक सनकी साहित्यकार भी मौजूद थे, जो किसी दूसरे की तारीफ करना तो दूर, किसी दूसरे की तारीफ का एक शब्द सुनना भी अपनी शान के खिलाफ समझते थे । उन्होंने न मौका देखा, न मंजर, झट अपनी तकरीर शुरू कर दी, "किसकी बात करते हो । यह पंडित भी कोई इनसान है ! हां ऐरे-गेरे नत्थू-खैरे की दोस्ती का दम भरता है, मैं तो इसे हरजाई मानता हूं । तुम क्या जानो, घर-घर की बिल्ली है यह पंडित ।"

सारी मंडली में आक्रोश फैल गया । सभी साहित्यकार मित्र 'निंदा निंदा के लिए' जीवन-दर्शन के प्रबल पक्षधर, इस अहमक पर पिल झाड़कर पिल पड़े । महफिल का नरम-नाजुक माहौल ज्वालामुखी का विकराल रूप धारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाद बनाम हास-परिहास

सिनसिनेटी की पुलिस मियां-बीबी के झगड़ों से संबंधित मामलों का निपटारा अद्भुत ढंग से करती है । वह ऐसे घर में पहुंच कर, मियां-बीबी के चीखने-चिल्लाने और गिले-शिकवे पर ध्यान नहीं देती । वह वहां पहुंचकर रेफ्रीजरेटर से आइसक्रीम निकालकर खाने लगती है अथवा सैंडविच बनाने लगती है ।

जब मियां-बीबी पुलिसवालों को अपना माल साफ करते देखते हैं तो उनकी बोलती बंद हो जाती है । पुलिस मनोवैज्ञानिक रॉबर्ट रैमन का कहना है कि किसी भी तर्क-वितर्क को समाप्त करने के लिए विनोद सर्वोत्तम साधन है । एक अन्य अधिकारी का कहना है कि आप हास-परिहास से किसी भी झगड़े को शांत कर सकते हैं ।

पुलिस अफसरों की विनोदप्रियता

सभी पुलिस कर्मचारी भाव शून्य, पत्थर दिल और विनोद भाव से शून्य नहीं होते हैं । उटाह में जिम ओल्सन और स्टीव हुले नामक पुलिस अफसरों की एक शरारत से नगर प्रमुख के हाथ लाल हो गये और अन्य अनेक लोगों को भयंकर परेशानी हुई ।

ओल्सन और हुले ने यह स्वीकार किया कि उन्होंने मेयर (नगर प्रमुख) की डेस्क और टाउन हाल के शौचालय में एक अदृश्य रंग छिड़क दिया । यह रंग बैंक नोटों पर छिड़का जाता है । ऐसे नोट मनुष्य शरीर अथवा कपड़ों के संपर्क में आने पर बैंगनी हो जाते हैं ।

उन्हें दो दिन की स्थगित कैद की सजा दी गयी ।

...था । अभी युद्ध का बिगुल बज ही रहा ...कि इतने में पंडितजी स्वयं घटना स्थल पर ...पहुंच गये । मैं सहम गया कि अब खैर ...। अब तो एक अच्छा-खासा महाभारत ...कर ही रहेगा, परंतु मेरे आश्चर्य की कोई ...न रही जब पंडितजी स्वयं उस निंदक की ...के लिए कमर कसकर मैदान में उतर ...और कहने लगे, "यार तुम लोग भी परले ...के तमाशबीन हो । एक मामूली-सी घटना ...तूल दे रहे हो । आखिर, इस बेचारे ...क्या है ? इसने 'लाख रुपये की बात है' की है । मुझे बिल्ली ही तो कहा था, चूहा तो नहीं कहा । आप बिल्ली की सीधी और स्पष्ट नीति की बात नहीं समझते । बिल्ली तो अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़कर सीधा पंजा मारती है, चूहे की तरह पीठ पीछे कुतर-कुतर नहीं करती ।"

पंडितजी की 'लाख रुपये की बात है' सुनते ही चारों ओर हंसी का एक फव्वारा फूट पड़ा और गोष्ठी में पहले-जैसा स्निग्ध व शांत वातावरण लौट आया ।

—१३०७, सेक्टर १९ बी चंडीगढ़-१६००१९

...र्च, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

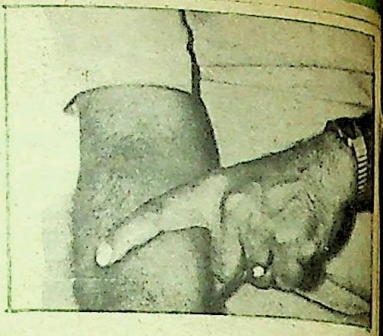

कोहनी की मूल सिलवट से तीन अंगुल नीचे बाहर की ओर स्थित बिंदु

हाथ के सुन्न होने, झुनझुनी आने, कंपन होने की स्थिति में इस बिंदु को दबाइए।

अद्‌भुत करिश्मे : अपना

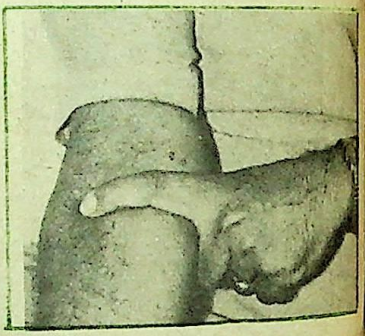

कोहनी की मूल सिलवट से दो अंगुल दूर बाहर की ओर स्थित बिंदु

पक्षाघात, कंपन, आर्थराइटिस, कंधे-हाथ के दर्द, पेट के दर्द और सिर दर्द के अलावा दस्त आने पर इस बिंदु को दबाइए।

एक्यूप्रेशर चिकित्सा की एक प्राचीन विधि है। इस चिकित्सा पद्धति में शरीर के विभिन्न स्थलों को दबाकर रोगों का उपचार किया जाता है। पाठकों के लाभ के लिए इस अंक से हम शरीर में स्थित कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं एवं उन पर दबाव देने से दूर होनेवाले रोगों का परिचय दे रहे हैं। इन्हें प्रस्तुत कर रहे हैं—डॉ. सुधीर खेतावत

कान के सामने मध्य में स्थित बिंदु

बहरेपन, कान में आवाजें आने, चेहरे पर पक्षाघात, दाढ़ के दर्द, ट्रिगमिनल एवं न्यूरोलाजिया में इस बिंदु पर दबाव लाभदायक होता है।

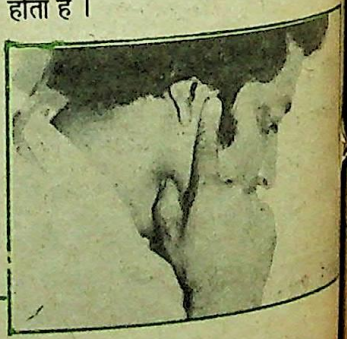

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

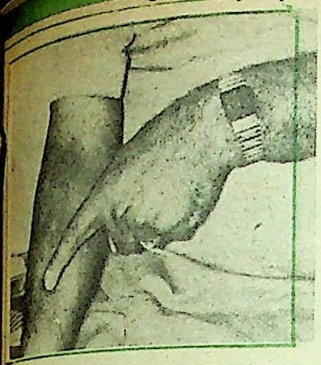

कोहनी की मूल सिलवट एवं कलाई के मध्य में स्थित बिंदु

दुर्बलता, कंधे के दर्द, पित्ती उभरने, मधुमेह, हाथ में पक्षाघात, चर्मरोग एवं हाइपरटेंशन आदि रोगों में इस बिंदु को दबाइए।

इलाज स्वयं कीजिए-१९

भौंहों के भीतरी सिरों के नीचे स्थित बिंदु

सिर दर्द, सायनस, नेत्र रोग, धुंधलापन, नाक की बीमारियों में इस बिंद को दबाइए।

भौहों के ऊपरी सिरे पर स्थित बिंदु

नेत्र रोग, चेहरे पर पक्षाघात, सिर दर्द, सायनस आदि में इस बिंदु पर दबाव दीजिए।

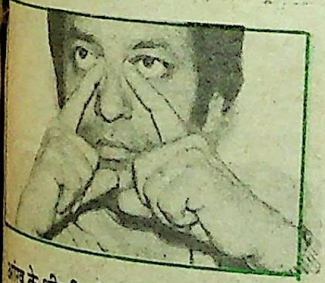

आंख के भीतरी कोनों के मध्य में स्थित बिंदु

कंजेक्टीवाइटिस, मायोपिया, कमज़ोर नजर, आटोक एट्रॉफी, अंधत्व, चेहरे पर पक्षाघात की स्थिति में इस बिंदु को दबाइए।

भौहों से एक अंगुल मध्य में स्थित बिंदु

सिर दर्द, सायनस, रात्रि में अंधत्व, कांच बिंदु बेल्स पल्सी आदि रोगों में इस बिंदु को दबाइए।

—एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण एवं उपचार केंद्र
नील कमल परिसर, इंदौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य-सम्राट उद्धवराव शेलके

पूरे दरबार ने उसे महाराजा समझा

● सुभद्रा मालवी

"दुष्ट, तेरे ये रंग-ढंग देखकर तो मुझे लगता है कि बड़ा हो कर तू जरूर बहुरूपिया बनेगा।" लंबी टोपी, लाल-काले रंगों में रंगा मुंह और विचित्र पोषाक। इस सज-धज में अपने चिरंजीव-उद्धव को देखकर दुःख और संताप से मां चिल्ला उठी,जबकि आसपास के लोग उसके स्वांग को देखकर हंसते-हंसते लोट-पोट हो रहे थे।

मां के संताप का कारण और लोगों को हंसानेवाला आठ वर्ष का यह बालक ही आगे चलकर हास्य-सम्राट की उपाधि से विभूषित हुआ।

उद्धव का जन्म सन १८९७ में अहमद नगर के एक गरीब शिक्षक के घर में हुआ। जन्म से ही उद्धव की प्रवृत्ति चंचल थी। बचपन में तो उसके नटखटपन से माता-पिता आनंदित होते रहे, किंतु यही जब सीमा पार करने लगा तो उन्होंने उद्धव को पाठशाला में भरती कर दिया। पाठशाला में भी उद्धव ने अपनी करामात दिखानी शुरू कर दी। वह शिक्षकों की भी नकल उतारने लगा। इसी गुण के कारण वह पढ़ने में कमजोर होते हुए भी सबका प्रिय रहा।

एक बार देवी जात्रा के मेले में छोटी बहन सुमित्रा के खो जाने पर उसकी बहुत पिटाई हुई क्योंकि, सुमित्रा का हाथ उसी ने पकड़ रखा था। उसे कोठरी में बंद कर दिया गया। लेकिन किसी प्रकार निकलकर वह घर से भाग गया और बिना टिकट पुणे जा पहुंचा। वहां उस समय कार्लेकर सर्कस चल रहा था। उद्धव ने वहां पोस्टर चिपकाने की नौकरी कर ली। यहां भी उसने अपना कमाल दिखाया। विदूषक के कपड़े पहन वह तरह-तरह की नकल करता, जिससे सर्कस का खूब प्रचार होता। प्रसन्न होकर सर्कस के मालिक शंकरराव ने उद्धव को विदूषक का काम दे दिया। विदूषक बनने के साथ ही साथ उसने सर्कस के दूसरे करतब भी सीख लिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्धवराव शेलके : प्रसिद्ध कार्लेकर सर्कस के लोकप्रिय विदूषक । उनके रूप बदलने की कला से बड़ौदा के महाराजा भी प्रभावित हुए थे । और एक दिन...

सर्कस में रहते ही सामान्य जन को स्वप्न में भी न मिलनेवाला राज सिंहासन पर बैठने का अपूर्व मान उद्धव को मिला । यह बड़ी मजेदार घटना है । एक बार बड़ौदा के तत्कालीन महाराज सयाजी राव गायकवाड़ सपरिवार सर्कस देखने आये । वे गुणीजनों, कलाकारों का बड़ा मान करते थे । अपने विदूषकी अभिनय और स्वांग से उद्धव ने उन्हें उतना हसाया कि उनका पेट दुखने लगा । महाराज ने खुश होकर उससे मिलने की इच्छा व्यक्त की । उद्धव ने तुरंत ग्रीन रूम में जाकर ठीक महाराज का सा वेष-भूषा बनायी, मेकअप किया । उसका चेहरा और कद महाराज से काफी मिलता था । जब वह महाराज के सामने जाकर खड़ा हुआ तो महाराज उसे देखकर दंग रह गये । उनके मन में भी कौतुक करने की इच्छा हुई । उन्होंने उद्धवराव के कान में कुछ कहा । दूसरे दिन दरबार लगते ही चोबदार ने महाराज के पधारने की घोषणा की । सभी सभासद उठ कर खड़े हुए । महाराज मुजरा लेते हुए राजसिंहासन पर बैठ गये । सभी दरबारी भी बैठने लगे, किंतु तभी क्या एक बार फिर से चोबदार ने आवाज लगायी कि महाराज पधार रहे हैं । सभी चकित हुए कि क्या क्या है ? वे पुनः खड़े हो गये तो क्या देखते हैं कि महाराज चले आ रहे हैं । वे कभी-कभी कभी सिंहासन की ओर देखते, कभी सिंहासन पर बैठे महाराज की ओर । तभी सिंहासन पर बैठे महाराज ने उतरकर आनेवाले महाराज के चरणस्पर्श किये । महाराज ने उसे गले लगाकर अपने पास एक ही आसन पर बैठाया । जब महाराज ने सबको बताया कि यह हास्य-सम्राट उद्धव राव है । फिर क्या था सारा दरबार तालियों से गूंज उठा ।

सन १९४३ में बर्मा प्रवास के दौरान जापान के हमले के कारण सर्कस को भारत वापस लौटना पड़ा । इसी बीच उद्धव ने बर्मी और नागा भाषा, उनके तौर-तरीके सीख लिये । लौटते समय रास्ते में नागाओं ने हमला कर दिया । उद्धव ने उनसे नागा भाषा में कहा कि 'बर्मी फौज आ रही है ।' बस इतना सुनना था कि नागा भाग खड़े हुए ।

सबको हंसानेवाले हास्य-सम्राट का अंत भी विचित्र ही हुआ । एक दिन रास्ते से जा रहे थे कि उन्हें किसी का जोरदार धक्का लगा और गिरते ही तत्काल उनकी हृदयगति बंद हो गयी ।

—द्वारा आर.एम. गौमत
एफ.ई. ११, नया कवि नगर गाजियाबाद

दिल्ली की फसील सन १६५० में शाहजहां ने बनवायी थी । यह ६६६४ गज लंबी, ४ गज चौड़ी और ९ गज ऊंची थी । इसमें तीस फुट ऊंची २७ बुर्जियां थीं । शहर की फसील में १८ फाटक और १४ ही खिड़कियां थीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गदर के बाद बेगम हजरत महल मुजफ्फरपुर में छिपी रहीं

● राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह

बिहार के दक्षिण भाग यानी दक्षिण बिहार में मुसलमान काफी पहले पहुंच गये थे, लेकिन उत्तर बिहार में वे तेरहवीं सदी के आरंभ में ही पहुंच पाये । वह भी उस समय जबकि मुर्शिदाबाद के नवाब गयासुद्दीन ने अपनी फौज भेजकर यहां के राजाओं से कर वसूला । मुसलमानों में पठानों की संख्या का बाहुल्य था । इनमें से कई पठान सरदारों ने शहर बसाये थे । उन शहरों में दरभंगा और मुजफ्फरपुर मुख्य हैं ।

कुछ पुराने सरकारी दस्तावेजों के अनुसार मुजफ्फरपुर शहर को एक बड़े किसान मुजफ्फर खां ने बसाया था । उसने इसे चार गांवों की साढ़े सात बीघे जमीन उपलब्ध करके बूढ़ी गंडक के तट पर बसाया और उसका नाम मुजफ्फरपुर रखा । धीरे-धीरे इसका रकबा छह वर्ग मील हो गया । जिला के गजेटियर में भी इसकी चर्चा है और वे चार गांव हैं—एक-कन्हौली, दो—सैदपुर, तीन—सौदागर चौथा—सिकंदपुर । वैसे इस शहर का वास्तविक विकास अंगरेजों के शासन काल में ही हुआ । मुजफ्फर खां का मजार अभी तक विद्यमान है, जो शहर के पुराने बाजार के बीचोबीच में है । मजार पर यहां के मुसलमान चादर चढ़ा दिया करते हैं तथा हर शाम अगरबत्ती जलाते हैं । इस मजार को मुजफ्फर शाह का मजार कहा जाता है । ऐसा लगता है कि मुजफ्फर खां जीवन के पिछले हिस्से में शायद, फकीर हो गये और इसीलिए उन्हें के बदले शाह कहा जाने लगा ।

बक्सर की लड़ाई के बाद शाह आलम ने बिहार, बंगाल और उड़ीसा की दीवानी ईस्ट इंडिया कंपनी को देनी पड़ी । कालांतर में मुजफ्फरपुर जिले और चंपारण के जिलों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

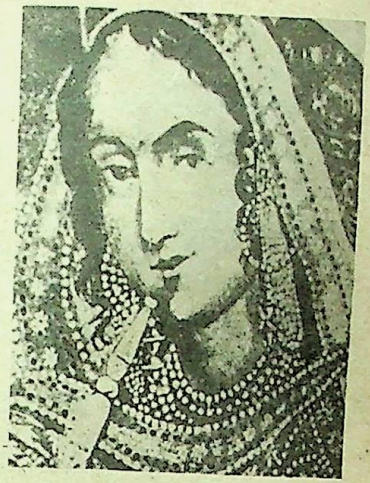

बेगम हजरत महल : जिसके बिना 'गदर' का इतिहास अधूरा है । अवध के बहुचर्चित नवाब वाजिद अली शाह की इस सबसे बड़ी बेगम का अपने जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखने पड़े ।

बगीचे से भागे हुए निहलों ने नील की कोठियां बना लीं और कलकत्ते से आये अंगरेजों ने यहां कुछ बनाकर इसे एक बढ़िया शहर का रूप दे दिया ।

मुजफ्फरनगर से जुड़ी एक महत्त्वपूर्ण घटना यह है कि इसी मुजफ्फरपुर में अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह की बड़ी बेगम हजरत महल ने कुछ समय के लिए शरण ली थी । बेगम ने लखनऊ से भागकर नेपाल जाते हुए बंदर बगीचे में बने हुए एक स्थानीय मुसलमान नवाब के घर पर कुछ दिन छिपकर बिताये थे । नवाब के परम योग्य दीवान राजा महेश्वर दयाल जी उस समय बेगम के साथ थे । बंदर बगीचा मुजफ्फरपुर झील के किनारे पड़ता था और बगीचा बना था । पर अब न तो वह बगीचा है और न वह कोठी हां, उस जगह दो-चार पेड़ जरूर बचे हैं । नेपाल के राणा जंग बहादुर ने बेगम को नेपाल में शरण दे दी थी । बेगम ने नेपाल में भाड़े के एक मामूली मकान में अपनी सारी जिंदगी बितायी और यहीं वह मरीं । दरअसल, मुजफ्फरपुर नेपाल की तलहटी में बसा हुआ शहर है और उस समय नेपाल व उत्तर बिहार का यह हिस्सा एक ही क्षेत्र माना जाता था ।

बेगमों ने टक्कर तो ली

वाजिद अली शाह पर झूठे आरोप लगाकर अंगरेजों ने गद्दी से उतार दिया और अवध को अपने कब्जे में कर लिया । अंगरेजों ने वाजिद अली शाह को कलकत्ता ले जाकर मटियाबुर्ज में कैद कर दिया । नवाब के साथ उनकी बेगमों को अंगरेजों ने कलकत्ते नहीं जाने दिया, तो वे लखनऊ में ही रह गयीं । गदर के समय बेगमों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवाब वाजिद अली शाह

ने एक बड़ी फौज बनायी जिसने रेजिडेंसी को चारों ओर से घेर लिया और अंगरेजों को रेजिडेंसी के अंदर ही रहने के लिए मजबूर कर दिया । पर कुछ दिनों में ही ईस्ट इंडिया कंपनी की एक मजबूत फौज कानपुर से लखनऊ पहुंच गयी, जिसका बेगमों की फौज से कड़ा मुकाबला हुआ, पर बेगमों की फौज हार गयी । इससे लखनऊ में आतंक छा गया । सभी बेगमें लखनऊ से भाग निकलीं । जिसे जो राह मिली, वह उधर ही चली गयी । बेगम हजरत महल ने नेपाल की राह पकड़ी । नेपाल भागते हुए ही वह कुछ दिनों के लिए मुजफ़रपुर में रहीं ।

उस समय हजरत महल के पास लाखों, अतिश्योक्ति न होगी यह कहना कि वे करोड़ों में भी जा सकती थी, रुपयों के जेवरात थे । इस बात से राणा जंगबहादुर वाकिफ हो चुके थे कि बेगम हजरत महल को अपना शेष जीवन नेपाल में ही बिताना पड़ेगा । लखनऊ लौटकर जाना उनके लिए संभव नहीं क्योंकि, कंपनी सरकार उनके पीछे पड़ी हुई थी, जो उन्हें आजन्म कैदी बनाकर मटियाबुर्ज में रखना चाहती थी । कंपनी सरकार ने कई बार दूत भेजकर बेगम को कहलाया कि वह लखनऊ लौट आएं, उन्हें कुछ नहीं कहा जाएगा । पर उनकी बातों पर कहां ऐतबार किया जा सकता था क्योंकि, इससे पहले भी कंपनी सरकार बहुत लोगों को धोखा दे चुकी थी । राजा महेश्वर दयाल को भी संदेश भेजा गया कि वह लखनऊ लौट आएं, उनकी सारी संपत्ति उन्हें लौटा दी जाएंगी और वे राजा बने रहेंगे । उनसे यह भी अनुरोध किया गया कि वे बेगम को भी अपने साथ ले आयें । पर कंपनी सरकार के इस फरेबी प्रस्ताव की उन दोनों ने उपेक्षा कर दी । हारकर कंपनी सरकार ने राजा महेश्वर दयाल से जमींदारी और राजा का खिताब उनके छोटे भाई को दे दिया । ये छोटे भाई तब तक राजा रहे, जब तक कि जमींदारी का उन्मूलन नहीं हो गया । उनकी जमींदारी लखनऊ के पास ही सीतापुर में पड़ती थी । उनके उत्तराधिकारी बाद में लखनऊ चले आये । वे अब भी वहीं रहते हैं । अंगरेजों के जमाने में जब कौंसिल बनी, तो उनमें से एक उसके अध्यक्ष भी चुने गये थे । उनकी पुत्र-वधू अब दिल्ली में रहती हैं और उन्होंने दिल्ली के कई पांच सितारा होटलों में फूल की दुकानें कर रखी हैं । पालम हवाई अड्डे के पास उन्होंने एक बड़ा फार्म बना रखा है, जहां ग्लोडियोलस और गुलाब की खेती करती हैं ।

बेगम हजरत महल और राजा महेश्वर दयाल दोनों का स्वर्गवास नेपाल में ही हुआ । उनकी सारी दौलत यानी जेवर-जेवरात, जो वे अपने साथ ले गये थे, उनके मरणोपरांत नेपाल के राणा जंगबहादुर की संपत्ति बन गये । बेगम हजरत महल ने मुजफ़रपुर में रहते हुए दैनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाजिद अली शाह : एक कुशल और सुसंस्कृत शासक, संस्कृत, फारसी, अंगरेजी और फ्रेंच के जानकार । ब्रिटिश कूटनीति के कारण उन्हें नाना कष्ट झेलने पड़े ।

...के लिए कुछ छोटे-मोटे गहने स्थानीय उन ...मुसलिम सामंतों के घर की औरतों के हाथों भी ...थे जो छिपकर उनसे मिलने आयी थीं । ये ...गहने आजकल हमारे कुछ स्थानीय मित्रों के ...हैं । वे एक खास प्रकार के और बहुमूल्य ...हैं, हालांकि इन गहनों का बेगम के गहनों ...अतिशय नगण्य स्थान था ।

वाजिद अली शाह की वैसे तो बहुत-सी ...थीं, पर तीन ही ऐसी थीं, जो बड़े घराने ...थीं और उन्हें ही वाजिद अली शाह ने प्रमुख ...दिया हुआ था । लड़ाई हारने के बाद सभी ...डरकर तितर-बितर हो गयीं, सबसे बड़ी ...हजरत महल नेपाल चली गयीं, मझली ...फैजाबाद चली गयी । और तीसरी सबसे ...बेगम—अख्तर महल लखनऊ में ही रह ...वह सीतापुर जिले के मछरहट्टा गांव के ...नकी खां की पुत्री थी । नकी खां को ...ने यह लालच देकर अपने में मिला ...था कि उसे वाजिद अली शाह की गद्दी ...बैठा दिया जाएगा । छोटी बेगम को इस ...की कतई जानकारी नहीं थी । वह उस ...गर्भवती थी । वाजिद अली शाह अपनी ...बेगम को बेहद प्यार करते थे, इसका ...उन्होंने अपने एक कलाम में इस प्रकार ...है—

...सिन की गुजरी है तैंतीस साल
...कैद में सह रहा हूं मलाल

फिर इस कैदखाने में पहुंची खबर
कि अख्तर महल से हुआ है पिसर
वो मनकूह दोयम मेरी बीबी है
अली-ए-नकी खां की वो बेटी है
अवध की है वो मकए-नेकनाम
वो गुल मिस्ल ताउस है खुश-खराम
चमन आरिजै सुखिएं शमशार
वो जीवन है गुलशन की जैसे बहार
सरै मुंह नहीं फर्क इस बात में
वो महपारा है सतरह साल की
निराली फबन पायी है चाल की
मगर जब से वालिद हुए कैद आह
महीनों से जिंदा मैं हूं, तबाह
उसी मह से ताले हुआ यह कमर
नहीं हमको सूरत से उसकी खबर
कि गोरा है या सांवला रंग है
वो मां पर है या बाप का ढंग है
छुड़ाये अगर कैद से किर्दगार
सुनाऊंगा वो हाल भी तुझ को यार
खुदाया हो इकबाल उसका बुलंद
मुसन्निक के साय में हो अंजुमंद

अफसोस, वाजिद अली शाह की यह इच्छा पूर्ण नहीं हो पायी ।

लार्ड डलहौजी ने वाजिद अली शाह को गद्दी से उतारकर शासन की बागडोर अपने हाथों में यह कहकर ले ली थी कि वह रियाया में बहुत बदनाम है । उनसे शासन ठीक तौर पर नहीं चल रहा । जबकि सचाई यह है कि वाजिद अली शाह ने अपने शासन को अंगरेजों के शासन-सूत्र से भी अधिक सुगठित बना डाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था । वह धूप में खड़े होकर घंटों फौज की कवायद लिया करते थे और हर एक रियाया की बात स्वयं सुनते और शिकायतों पर तत्काल उचित कारवाई करते । वाजिद अली शाह एक कुशल शासक ही नहीं, वरन एक बड़े सुसंस्कृत और विद्वान व्यक्ति भी थे, अंगरेजी और फ्रेंच भाषा दोनों में ही पूरा दखल रखते थे, तथा संस्कृत और फारसी के भी विद्वान थे । फ्रांसीसियों को वे अंगरेजों से अधिक योग्य मानते थे और अपने दरबार में उन्हें उचित स्थान देते थे । दरअसल, यह भी एक कारण था, जिससे अंगरेज उनसे कुढ़े हुए और भयभीत थे ।

अवध का राज्य उन दिनों बड़ी फूलती-फलती अवस्था में था और वाजिद अली शाह की दौलत की कोई इनतहा नहीं थी । उदाहरणार्थ, एक फ्रेंच महिला जो भारत भ्रमण पर आयी थी, ने लिखा है, 'मैं छोटी बेगम से मिलने गयी । उन्होंने फौरन मुझे महल के अंदर बुला लिया । मैं गयी । वे एक खाट पर बैठी हुई थीं । परियों—जैसी सुंदर और अतिशय मृदुभाषिणी । वह देर तक मुझसे बातें करती रहीं और आते वक्त काफी पुखराज, नीलम, हीरा, फिरोजा आदि से मेरी गोद भर दी । दूसरे दिन मैंने एक बड़े जौहरी से इनकी कीमत कुतवायी, तो वह लाखों में थी ।

डलहौजी ने पंजाब की तरह ही अवध को हड़पा था । उसने वाजिद अली शाह की जगह किसी और को नवाब नहीं बनाया । अवध को हथियाने के बारे में कंपनी के एक अधिकारी हेनरी लारेंस ने लिखा था कि अवध को हथिया लेना अंगरेजी शासन के ऊपर एक काला धब्बा लगाता है । जब महारानी विक्टोरिया के पुत्र जो प्रिंस आफ वेल्स कहे जाते थे और जो आगे चलकर किंग एडवर्ड सेवेंथ हुए, वाजिद अली शाह से मटियाबुर्ज में मिले, तो नवाब साहब ने उन्हें जाते समय विदाई के रूप में फिरोजा का बना हुआ चाय का एक सेट उपहारस्वरूप प्रदान किया, जिसे उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से ले लिया था ।

विक्टोरिया कुछ न कर सकी

उस समय वाजिद अली शाह की मां जिंदा थीं । वह एक बड़े स्टाफ को साथ लेकर इंगलैंड गयीं । लंदन में महारानी विक्टोरिया की ओर से बंदरगाह पर उनका शाही स्वागत किया गया । महारानी ने उन्हें अपने साथ ही बकिंघम पैलेस में ठहराया । कई दिनों तक महारानी और उनके बीच दुभाषिये के जरिये बातचीत होती रही । बेगम ने सारी बातें सफगोई के साथ बतलायी कि पलासी की लड़ाई के बाद अवध के नवाब द्वारा जिस लीज (ठेका) के द्वारा गंगा और यमुना नदियों के बीच की जमीन (दोआबा) ईस्ट इंडिया कंपनी को दी थी, उस लीज का समय समाप्त होने पर था । वाजिद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगरेजों के खिलाफ संघर्ष में असफलता के बाद बेगम हजरत महल नेपाल चली गयीं और वहीं उनका प्राणांत हुआ ।

...शाह इस लीज (ठेका) का समय आगे ...ने को तैयार नहीं थे । इसीलिए कंपनी ने ...पर अयोग्यता आदि के तरह-तरह के झूठे ...लगाकर उन्हें गद्दी से उतार दिया है । ...द्वारा डलहौजी इस काम के लिए ही रखा ...है । पंजाब और बर्मा को वह पहले ही ...तरह हड़प चुका है ।

बेगम ने उनसे अनुरोध किया कि वे ईस्ट ...कंपनी को आदेश दें कि वह उनके पुत्र ...अवध का राज्य वापस करे । विक्टोरिया ...लिए राजी हो गयीं । उन्होंने तत्कालीन ...के प्रधानमंत्री को कहा भी, पर वह कंपनी ...ऐसा आदेश देने को राजी नहीं हुआ । ...रानी विक्टोरिया इच्छा रखते हुए भी, ...न कर सकीं और बेगम को बड़ी मायूसी के ...खाली हाथ लौटना पड़ा । रास्ते में उन्हें ...के कारण फ्रांस में ठहरना पड़ा । वहीं ...इंतकाल हो गया ।

इसके बाद तो ईस्ट इंडिया कंपनी के ...कारियों का दिमाग सातवें आसमान को ...लगा । लार्ड डलहौजी अब दिल्ली के ...शाह आलम को अपने हाथ का ...बनाने में जुट गया । उधर मराठा अपनी शक्ति बढ़ने में लगे हुए थे और दिल्ली की बादशाहत को अपने प्रभाव-सूत्र में बांध रखना चाहते थे तथा दक्षिण में पिंडारियों ने काफी शक्ति-संचय कर लिया था । स्वाभाविक था कि ईस्ट इंडिया कंपनी की उनकी मुठभेड़ हो और यही हुआ । असेई के मैदान में पिंडारी और अंगरेजी सेनाओं के बीच घोर युद्ध हुआ । युद्ध क्षेत्र में पिंडारियों की ओर से मराठों की एक बहुत बड़ी सेना आ जुटी । पिंडारियों की संख्या खुद ही काफी थी । इस सम्मिलित सेनाओं को देखकर अंगरेजों का जनरल फौज लेकर कलकत्ता भागने की सोच ही रहा था तभी कलकत्ता से अंगरेजों की एक बड़ी सेना आ पहुंची, जिसे देखते ही पिंडारियों की सेना में खलबली मच गयी और वह भाग खड़ी हुई । इस लड़ाई में भाग ले रहे एक अंगरेज अधिकारी ने लिखा है कि यह हमारे जीवन और मरण का प्रश्न था, यदि हम हार जाते तो शायद हमें हिंदुस्तान ही छोड़ देना पड़ता । जहां तक वाजिद अली शाह का संबंध है, वे ब्रिटिश कूटनीति का शिकार हो गये ।

—बी-२, महारानी बाग, नयी दिल्ली

मित्रता और विवाह समान धन और समान कुल वालों में ही अच्छा होता है । बलवानों और निर्बलों के बीच न मित्रता ठीक होती है और न विवाह ।

—चाणक्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोज

तुम चाहते यदि/उसी वक्त
कोई भी सवाल पैदा होने से पहले
पहचान की पहली चिंगारी को
जबरदस्त आग में तबदील कर सकते थे
और उसी वक्त/यदि आग की शिनाख्त कर पाते
तो इस वक्त/इस आग में न झुलसते हम

तुम्हारे चाहने और न-चाहने के
नतीजे में ही/अब हम/आज पहली चिंगारी को
मशाल में तबदील करने की कोशिश में
अपने ही देश में/अपने ही देश के लिए
दौड़ते नजर आते हैं

ऐसा भी न था कि उस वक्त तुम/
पहली चिंगारी की मौजूदगी से दूर थे
इसके लिए/न तुम्हें जरूरत थी/किसी भी मुल्क की
सीमा की/भूगोल की/फिर भी तुम
जमीन को उधार में ही बांटते रहे/और
'सत्य की ही जीत होती है'/साबित करने के लिए
विरासत में हमारे लिए छोड़ गये— 'दौड़'
इसके बावजूद कि
तुम्हारे पास पहली चिंगारी थी

उस वक्त तुम चाहते
तो जरूर उसे आग की पहचान दे सकते थे
उसे कुछ शब्द देते/उसे कुछ अर्थ देते
अपने तुलसी से ही उधार लेते
अपने कबीर से ही मांग लेते
किंतु/तुम मौन रहे/और हम दौड़ रहे हैं
सत्य की खोज में/हाथों में मशाल लेकर
और हम/दौड़ रहे हैं
अपने ही देश में/अपने ही देश की खोज में

— डॉ. उपेन्द्र रैणा
एफ-१/९ (दूसरी मंजिल)
मालवीय नगर, नयी दिल्ली-११००१७

एकता

सांप्रदायिकता की आंच
राजनीति की रोटियां
देश है शतरंज
स्वार्थ की गोटियां

हर एक दे रहा
एक दूसरे को मात
आप कर रहे हैं
एकता की बात !

— डॉ. उर्मिला शुक्ल
जीवाजी राइस मिल के
२७-खोली चौक, बिलास

वटवृक्ष रोपे जाएंगे

आयोजकों को चिंता नहीं
कि रोपा हुआ पौधा
फल देता, मुरझाता या
ठूंठ बन जाता है
मुख्य-अतिथि, आयोजकों के लिए
ठूंठ न बने रहें

आगामी वर्षों में जब और प्रगति होगी
क्रेन से बड़े-बड़े पेड़ लाये जाएंगे
छोटे-छोटे पौधे क्यों लगाएं ?
सीधे-सीधे वटवृक्ष ही लगाएंगे

— हरि
३७७, न्यू सुभाषनगर, रायसेन मार्ग,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ोसी के संग

इस बार तुमने किया तो तंग
खेलूंगी होली पड़ोसी के संग

नूपुर अनंग के बाज रहे कब से
अंग भी गुलाल हुआ छू लिया जब से
मदहोश कर गयी भंग की तरंग

मल गये जब से सखि प्रीत का गुलाल
गुलमोहर—जैसी हो गयी मैं लाल
वासंती मौसम में बिगड़ गये ढंग

चितवन ने उनकी मारी पिचकारी
भीग-भीग रंग से भरूं सिसकारी
कंगना जो खनका तो जागा अनंग

— उमा श्रीवास्तव
सदर बाजार, होशंगाबाद

पागलपन

मोतियाबिंद, धुंध, अंधापन
तीन शब्दों में हमारा जीवन
भीड़ इसमें जुटा रहे श्रीमन्
है न मैदान, हमारा आंगन
रोज सूरज को अर्घ्य देता हूं
याद रखता हूं इस तरह बचपन
प्रार्थना-पत्र दे के क्या होगा
एक मुद्दत से यही विज्ञापन
मैं समझता हूं इसे चरणामृत
आप कहते हैं पैर का धोवन
लाश ढोयी है दर्द कंधों में
चूं-चपड़ में न हिलायी गरदन
वक्त को बांधने की कोशिश की
दूर अब हो गया वह पागलपन

— श्रीकृष्ण राय हृदयेश
हृदयेश पथ, नखास, गाजीपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आइए चलें जंगलों की ओर

पूंछ थी हथियार

डायनासोर तो जाने कब के समाप्त हो चुके, पर उनकी भिन्न नस्लों के बारे में आज भी नयी-नयी जानकारी मिल रही है । लाखों वर्ष पहले उत्तरी अमरीका में अंकिलोसारस नामक एक डायनासोरस विचरता था । यह अपनी पूंछ को हथियार के रूप में इस्तेमाल करता था । दस मीटर अंकिलोसारस की पूंछ पर छोटे-छोटे मजबूत गोले होते थे । अंकिलोसारस पूंछ घुमाकर प्रतिपक्षी पर इन्हीं गोलों से चोट करता था ।

बुलबुल : उर्दू शायरों ने अपनी शायरी में बुलबुल को खूब स्थान दिया है ।

बुलबुल कद में गौरैया से थोड़ी बड़ी चिड़िया है । इसके सिर पर एक छोटा-सा तुर्रा होता है । यह होती तो काली है पर देखने में बेहद सुंदर लगती है । आमतौर पर बुलबुल फल-फूल की ही शौकीन है, पर छोटे-छोटे पतंगों से भी इसे कोई परहेज नहीं ।

इसे पाला भी जाता है और यह पिंजरे में भी 'खुश' रहती है, अपनी अदाओं और आवाज से परिवारवालों का मनोरंजन करती है । बुलबुल की कई किस्में होती हैं । तुर्रे की बनावट और शरीर के रंग की भिन्नता के कारण ही इनकी अलग-अलग पहचान की जा सकती हैं, यों तो देखने में सारी बुलबुलें प्रायः एक-सी नजर आती है ।

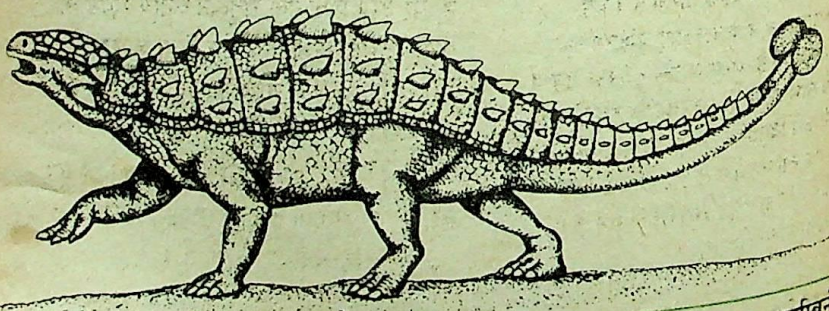

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति से अटूट संबंध है वट वृक्ष का

मद्रास स्थित थियसाफिकल सोसाइटी के केंद्रीय कार्यालय में स्थित प्राचीन वट वृक्ष जब आंधी-तूफान के कारण धराशायी हो गया तो अनेक लोगों की आंखों में आंसू आ गये । यह वटवृक्ष मात्र एक पेड़ नहीं, इतिहास का मूक साक्षी भी था । इसीलिए मद्रास के लोगों ने अथक परिश्रम कर इस उखड़े हुए वृक्ष को पुनः अपनी जगह पर खड़ा कर दिया ।

वटवृक्ष का भारतीय संस्कृति से अटूट नाता है । उत्तर भारत में हिंदू महिलाएं वर्ष में एक दिन वट सावित्री का व्रत रखकर इस वृक्ष की पूजा करती हैं । उसके चारों ओर हल्दी से रंगा पीला कच्चा धागा बांधती हैं ।

वटवृक्ष अपनी डालियों से निकलनेवाली जड़ों के कारण ही वर्षों न केवल फलता-फूलता है, वरन अपने घेरे को भी विस्तृत करता जाता है । वटवृक्ष की एक शाखा जब काफी मोटी हो जाती है तो उसमें से एक जड़ या जटा नीचे लटक जाती है । यह जटा धीरे-धीरे धरती तक पहुंचकर उसमें धंस जाती है । कालांतर में पुष्ट होकर यह उस डाल को संभालनेवाले स्तंभ के रूप में कार्य करती है । यह विशाल वृक्ष न केवल पशु-पक्षियों को आश्रय देता है, वरण उसके दूध का मनुष्य भी लाभ उठाता है । बरगद के दूध से पैरों की फटी बिवाइयों में आराम मिलता है । इसके पत्तों को तेल से चुपड़कर सेंककर फोड़ों और सूजे हुए अंग पर बांधने से आराम मिलता है ।

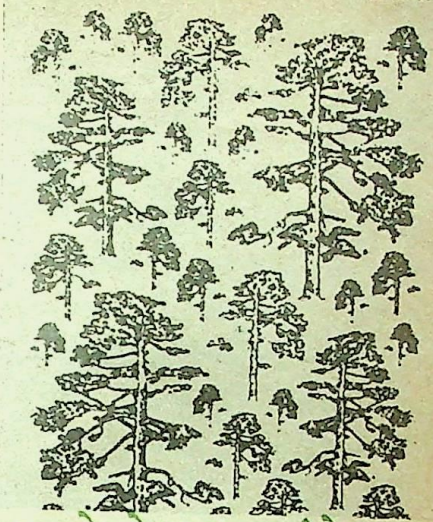

कटने से बच जाएंगे वृक्ष

इस वर्ष लगभग डेढ़ लाख वृक्ष कटने से बच जाएंगे । ऐसा इसलिए कि हिमाचल प्रदेश की एक कंपनी ने सेबों को लकड़ी की पेटियों में 'पैक' करने की बजाय गत्ते के डिब्बों में रखकर भेजने का निर्णय किया है । हिमाचल प्रदेश में कोटकी क्षेत्र में गिरि घाटी है । अब इस घाटी का नाम प्रगति घाटी कर दिया गया है । यहां सेबों की फसल खूब होती है । ये सेब बाहर भी भेजे जाते हैं । पहले इन सेबों को लकड़ी की पेटियों में बंद कर भेजा जाता था । इससे पेड़ कटते थे । यों अभी भी यह प्रचलन है, पर अब प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने के लिए पेड़ों को बचाने पर जोर दिया जा रहा है और इसीलिए सेबों को गत्ते के डिब्बों में बंद कर भेजने का फैसला किया गया । इसके लिए कंपनी ने ब्रिटेन से ५ लाख पौंड की कीमत की एक मशीन मंगायी है । यह मशीन एक घंटे में १८,००० डिब्बे तैयार करती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समूचे विश्व में रहनेवाले समस्त 'घरवाले' अपनी-अपनी घरवालियों को बखूबी और मुकम्मिल तौर पर पहचानते हैं, जानते हैं। सामान्य तौर पर, इस बात पर शंका वही करेगा, जिसका सिर फिर गया हो, पर होली के माहौल में रंग और भंग की तरंगों के बीच वाकई सभी के सिर फिर जाते हैं अथवा जबरन 'फिरवा' दिये जाते हैं। न अपनी घरवाली की पहचान रह जाती है, न दूसरे की घरवाली की। ब्रज सम्राट कन्हैया को तो सदैव दूसरे की घरवालियां अपनी ही नजर आती रही हैं। संभव है जिंदगी के ऐसे महत्त्वपूर्ण और चिरस्मरणीय हादसे आपके साथ भी घटित हुए हों। यदि न घटित हुए हों तो ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि इस वर्ष अवश्य घटित हों और आप कुछ क्षण को कन्हैया होने का सुख प्राप्त कर सकें। इन रूमानी हादसों का जो सुख होता है वह अनिर्वचनीय और अविस्मरणीय होता है। मेरी बात की पुष्टि कर रहे हैं देश के कुछ प्रख्यात व्यंग्यकार व साहित्यकार।

परिचर्चा

रंग की फुहारन में न दिखे-तेरी है कि मेरी घरवाली है...?

परिचर्चा आयोजक : जगदीश किंजल्क

घरवाली में अंतर वल्लभाचार्य-विरोधी को ही नजर आएगा...

—डॉ. विश्वंभर नाथ उपाध्याय (जयपुर)

यह ब्रज और ब्रजाधीश की महान परंपरा रही है कि दूसरे की घरवाली को किसी पटी-पटायी के जरिये पटाया जाए और ऊपर से भंग के ऊपर रंग की तरह विषय है। अब बोलिए, आ गये न असलियत पर ! ऊपर से ओढ़ा नैतिकता/मर्यादा का पाखंड। होली आते ही समाप्त। महाप्रभु वल्लाभाचार्य ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमद्भागवत की टीका 'सुबोधिनी' में कहा है कि 'प्रेम में मर्यादा नहीं रह सकती ।' इसलिए अपनी और दूसरे की घरवाली में अंतर उसी के मन में आएगा जो वल्लभाचार्य का विरोधी हो, भेदभाव से भरा हो, जो सामूहिक 'सत्य' को मन के 'तथ्य' से बड़ा मानता हो... ।

लोग प्रसिद्धि का ही तो आयोजन कर रहे हैं पर सिद्धि ही अंत में रह जाती है, प्रसिद्धि गायब हो जाती है । होली पर भंग से चटकती खोपड़ी पर रंग की घोंट पड़ते ही, गुलाल आंख में कतराते ही यह यथार्थ ज्ञान उदित हो जाता है कि यह जो तेरी घरवाली है, वह मेरी है पर मेरी घरवाली

आयोजक : जगदीश किंजल्क

डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय

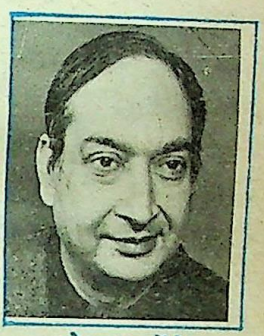

गोपाल चतुर्वेदी

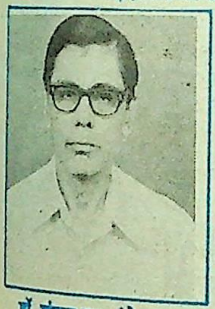

डॉ. शंकर पुणतांबेकर

डॉ. श्याम सुंदर घोष

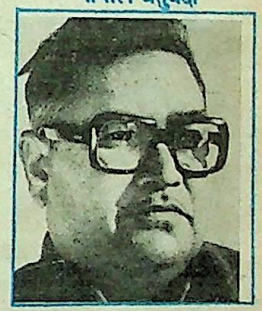

डॉ. शंकर दयाल सिंह

और महाकवि देव ने जो यह कहा था कि, **जोग हू ते कठिन संजोग परनारी को'**, सो यह उन्होंने भोगे हुए यथार्थ के आधार पर ही कहा था, अन्यथा कहते **जोग हू ते कठिन संयोग घरवाली हो** ।

यानि 'स्वनारी' से संयोग योग से भी कठिन है । जो स्वनारी से संगम-संजोग होता है वह 'संयोग' होता ही नहीं है । उसकी मात्र प्रसिद्धि है कि संयोग होता है और प्रसिद्धि से कुछ भी सिद्ध नहीं होता । आजकल अधिकतर यार तेरी नहीं है ।

योग में चित्त वृत्ति का विरोध करना पड़ता है । बस,सांस साध ली, हो गया मनोवृत्ति का अवरोध । पर अपनी और परायी घरवाली के बीच जो भेदभाव है, उस भ्रांति को दूर करने के लिए कितनी साधना करनी पड़ती है और जब कोई चीज शुद्ध मिलती नहीं है (बाजार के बेईमान हो जाने के कारण) तब यह तो होगा ही कि आपको संदेह पैदा हो जाए कि यह मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरवाली है या तेरी ! यदि भंग शुद्ध हो, मिठाई विशुद्ध,तो यह तय है कि आपको हरगिज यह संदेह न होगा और आप 'महाभाव' में आकर सहज समाधि में परनारी को स्वपत्नी समझेंगे और तदनुकूल आचरण करेंगे । शास्त्र में संयोग को हठतः और प्रियतः दो प्रकार का कहा गया है । अर्थात आपको रंगों की फुहार और भंग की बहार में जब संशय न रहे, यह वास्तविक संवेदनात्मक ज्ञान हो जाए कि तेरी घरवाली मेरी ही है, तो आप या तो प्रियतः विधि अपनाइए और यदि वह क्रोध करे, तो आप भारतीय संस्कृति के आवेश में आकर उसे हठपूर्वक कुंज या क्लब की ओर ले चलिए । कोई रोके, हमला कर दे, चिल्लाये तो कहिए कि दोष मेरा नहीं, परिचर्चाकार और संपादक महोदय का है । मैं तो इस प्रतीति की पहचान कर रहा था

रंग की फुहारन में,
भंग की बहारन में.
नाहिं दिखे तेरी है कि मेरी घरवाली है

मुझे संसार सिर्फ पत्नीमय नजर आता है...

—गोपाल चतुर्वेदी (दिल्ली)

साधारण परिस्थितियों में भी आदमी विविध मुखौटे लगाकर असलियत को अंगूठा दिखाने की कला में माहिर है । होली के रंगों में परिचितों का गुम जाना स्वाभाविक है, पर पत्नी की पहचान की बात पर परिचर्चाकार गच्चा खा गये । सफल वैवाहिक जीवन के लिए अनिवार्य शर्त है कि पत्नी की उपस्थिति पति किसी भी शक्ल में पहचान ले । यही बात पत्नियों पर भी समान रूप से लागू है । होली ही एक अकेला ऐसा त्योहार है, जिसमें इधर-उधर ताकने, झांकने, छेड़छाड़ करने और मन भाये गाल पर गुलाल मलने की थोड़ी-बहुत छूट है । जरूरी है कि इस एक दिवसीय उन्मुक्त, माहौल का पूरा सुख भोगने के लिए मर्यादा और रोजमर्रा के अनुशासन का बंधन न हो । सावन के अंधे को हरा-ही-हरा सूझता है । मुझे भी संसार सिर्फ पत्नीमय नजर आता है, जब तक कि पत्नी की अनुपस्थिति साबित न हो जाए । यदि आप रंगों में रंगे, डूबे होली के हुड़दंग में मौज और मनमानी पर आमादा हैं और बिना किसी रोक-टोक, भदरंग चेहरे आपका मुसकराकर स्वागत करते हैं, तो आपको समझ लेना चाहिए कि खतरा नहीं है । यदि किसी अनजाने कोने से सलाह मिले कि, 'बहुत हो गया, बीमार न पड़ जाना,' तो तत्काल आपको मुखालफत की मौजूदगी ताड़ लेनी चाहिए । जाहिर है कि पूरी प्रक्रिया 'जंगली' रहकर भी सफलतापूर्वक अपना पालतूपन सिद्ध करने की है । यदि किसी ने मानसिकता के इस महत्त्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक तथ्य को नकारा तो अपनी घरवाली के सामने दूसरी को अपना समझने पर झाड़ और झाड़ू पड़ने पूरी की गुंजाइश है । वरना फिर चांदी ही चांदी है । जब कहीं जरा-सा भी खटका लगे तो— बुरा न मानो होली है की दुहाई तो दी ही जा सकती है । मैं अभी तक इसी तरह काम चलाता आ रहा हूं ।

रंग के हंडे ऐसे भरे हुए थे कि मंत्रीपद खुले हों...

—डॉ. शंकर पुणताम्बेकर (जलगांव)

रंग की फुहारों में सचमुच कुछ नहीं दिखायी देता । होली के घमासान रंग क्या किसी एशियाड, चोगम, नाम, फिल्मोत्सव,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतोत्सव, बोफोर्स के रंगों से कम होते हैं, जो दिखायी दें। खेलनेवाला भांग पिये हो तो क्या पूछने ? आदमी ऐसा नशांध बन जाता है, जैसे उसने सत्ता ही पी रखी हो।

मेरे साथ एक होली पर ऐसा ही कुछ एक वाक्या बीता। गांव में होली खेलने के लिए रंग के हंडे ऐसे भरे हुए थे कि मंत्रीपद खुले हों। किसी भी मंत्रीपद से भरो पिचकारी और चलाओ मजे-से। यह आयोजन गांव के पटेल की ओर से उसी के बाखर के प्रशस्त आंगन में था। गांव की चुनी हुई (बल्कि छंटी हुई) कोई पंद्रह-बीस जोड़ियां आमंत्रित थीं। रंग की धमा-चौकड़ी के लिए पुरुषों को भंग पीने को दी गयी। भंग स्त्रियों के लिए भी थी, पर उन्होंने नहीं ली। पिचकारियां चलने से पहले मैंने मन में ठान लिया— जोड़ियों में से किन-किन औरतों पर रंग चलाऊंगा। रंग ही नहीं चलाऊंगा, उनके साथ नाचूंगा भी। पर जब पिचकारियां चलनी शुरू हुईं तो रंग की फुहारों में कहां कुछ दिखता है। रंग क्या उड़ रहे थे जैसे चारों ओर से रिश्वत की वर्षा हो रही थी। और फिर उसमें पटेल के आंगन की भंग चढ़ी हो, उच्च घराने की छूट-सी, तब रंग आदमी को अंधा न बनाए तो आश्चर्य....?

मैं रंग के घमासान में पिचकारी चलाने से कहीं अधिक सामने अनुभव होती स्त्री को पास खींच लेता और उसके साथ नृत्य करने लग जाता। मुझे लगता, मैं जैसे किसी परी के साथ नाच रहा हूं। और जब फुहारों का परदा टूटा तो परदा नहीं, मैं भी जैसे टूट गया। मैंने देखा जिन औरतों के साथ हम रंग खेल रहे थे और नाच रहे थे, वे जोड़ियों की औरतें नहीं थीं, गांव की बूढ़ी औरतें थीं। रंग की फुहारें शुरू होते ही पटेल ने जोड़ी की औरतों को अंदर बैठा दिया और इन बूढ़ी औरतों को दाखिल कर दिया। खुद भी अलग रहा। उस दिन पटेल खूब हंसा। हंसे तो हम लोग भी, पर हमारी हंसी बुझी-बुझी थी, खासकर मेरी।

नायाब नमूनों में से एक....

—डॉ. श्याम सुंदर घोष (गोड़)

परम भाग्यवान हैं वे लोग, जिन्हें आज भी होली के अवसर पर रंग की फुहारन में दिखे कि तेरी है कि मेरी घरवाली है। आज व्यंग्य की बहुतायत भले ही हो, रंग की नहीं है। फुहार की तो कुछ पूछिए ही मत। पहले रंग प्राकृतिक तत्वों से बनते थे, इसलिए तन-मन को सुहाते थे, सहलाते थे। अब वे रासायनिक यौगिकों से बनते हैं, इसलिए तन-मन को अखरते हैं। अब तो रंग जानलेवा, प्राणलेवा हो गये हैं। रंग तो अब पृष्ठभूमि में चले गये हैं और रंगबाजों के रंग दिखाने के दिन हैं। वे साधारण दिनों में तो रंग दिखाते ही हैं, खास-खास मौके पर विशेष रंग दिखाते हैं और इस ढंग से कि हम दंग रह जाते हैं और फुहारों के रूप में नहीं दिखाते, बौछारों की शक्ल में दिखाते हैं। अब तो होली, दीवाली उन्हीं के लिए हैं।

जहां तक घरवाली का सवाल है, कोई भी पर्व-त्योहार उसके लिए अतिरिक्त मेहनत-मशक्कत का काम है। होली में तो बेचारी को चूल्हे से फुरसत ही नहीं मिलती, रंग की फुहारन में भींगना तो कल्पना से परे है। हां, जिनके मियां नंबर दो की अटूट कमाई करते हैं या जिनके घर सरकारी नौकर-चाकर या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगुए-भगुए हैं, उनकी न पूछिए । वे तो अनेक रंगों का प्रदर्शन करती हैं । होली के रंगों का भी, रईसी, फैशन, कालेधन और भ्रष्टाचार के रंगों का भी । बाकी हिंदुस्तान की घरवालियां तो एक दिन पहले से ही तैयारी करने लगती हैं कि कैसे चुस्त ड्यूटी दें कि बेटियों, भतीजियों, बहुओं को कुछ रंग खेलने का अवसर मिले ।

जब हर घरवाली का यही हाल है, तो तेरी और मेरी घरवाली का सवाल कहां उठता है ? यदि कहिए कि बात मस्ती की है, जिसमें तेरी-मेरी का भेद नहीं रहता, तो कहना चाहूंगा कि निगोड़ी मस्ती इतनी सस्ती न रही कि सभी उसे अपने पहलू में ले सकें । मस्ती के लिए आजकल 'मस्तान' चाहिए, चाहे वह हाजी हो या कोई अन्य । लेकिन आज के ब्रह्माजी ने हर किसी की किस्मत में एक-एक मस्तान नहीं लिखा है । इसलिए हर कोई मस्ती से मरहूम है । बस्ती-की-बस्ती मस्ती से सूनी है ।

होली दिन-दिन सिमटती-सिकुड़ती जा रही है । रंगों का टोटा पड़ता जा रहा है, उस पर सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता न जाने किन-किन तत्वों का दबाव बढ़ता जा रहा है । लेकिन मुझे खुशी है कि ऐसे माहौल में भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो सोच सकते हैं कि रंग की फुहारन में न दिखे तेरी है कि मेरी घरवाली है ।

गलती इस पागल मौसम की है

—डॉ. शंकर दयाल सिंह

वास्तव में होली बहुत चुहलबाज है । पता ही न चले कि कौन क्या है ? जब रंग की पिचकारी और भंग की खुमारी का योग होता है, तो पता ही नहीं चलता कि कौन है घरवाली और कौन है साली ! इसी प्रकार रंग गुलाल में गुलाबी गाल जब सतरंगें हो उठते हैं, तब तो पता ही नहीं चलता कि कौन मेरी है और कौन किसकी है ? तभी तो प्रचलन है कि **भर फागुन बुढ़ऊ देवर लागे** , तथा **अर.. र.. सर.. र.. र..कबीर, भइया, बुरा न मानो होली है** ।

याद है आज से बीस साल पहले की होली, जब उमंगों की झोली भरकर ससुराल पहुंचा । वहां, साले-सालियों ने ऐसी दुरगत बनायी कि कौन हनुमान है और कौन जामवंत कहना कठिन हो गया । औरतों की टोली का भी यही हिसाब-किताब । ऐसे में मैंने जिन्हें कसकर दबोचा, वह थी मेरे साले की पत्नी, मेरी सलहज, लेकिन मेरे साले साहब ने उसी ताव के साथ मेरी पत्नी को भी जकड़ लिया, जिसे लोगों ने हाय-तौबा करके छुड़ाया—अरे यह क्या करते हैं, वह तो आपकी बहन है ! मेरे साले पर भूत सवार था । जब वह मेरी पत्नी को पकड़े हुए हैं, तो मैं भी इनकी पत्नी को नहीं छोड़ूंगा ।

हाय रे होली, तू करती है ऐसी-ऐसी ठिठोली कि बहन भी कभी-कभी अपने भाई से ही कसमसा जाए और जमाने की रफ़्तार देखकर शरमा जाए । गलती किसी की नहीं, इस पागल मौसम की है । इसी बहाने इस छूट को कितने लोग सौभाग्य सुख मानकर वर्षों की मुराद पूरी कर लेते हैं । ईमानदारी से स्वीकार कर लूं कि ऐसे क्षणों को मैंने भी हाथ से खाली नहीं जाने दिया है ।

—आकाशवाणी
छतरपुर-४७१००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मामला हाउस टैक्स का

मनोज, फर्रुखाबाद : मैं एक दुकान में किरायेदार की हैसियत से मैडीकल स्टोर चला रहा हूं। किराया प्रति माह नियमित देता आ रहा हूं। मकान-मालिक का कहना है कि मैं हाउस टैक्स की रकम भी अदा करूं। क्या ऐसा कोई नियम है ? क्या मकान-मालिक की मांग जायज है ?

मकान लेते समय किराया देने के बारे में आपस में निर्णय हुआ होगा। आप उस निर्णय के अनुसार किराया देते चले आ रहे हैं। मकान-मालिक उस निश्चित रकम के अतिरिक्त हाउस टैक्स की मांग नहीं कर सकता। मकान मालिक की मांग का कोई औचित्य नहीं है।

विश्वासघात किया है

रवि जैन, भीलवाड़ा : मेरे पिताजी करीब पंद्रह वर्ष पूर्व भीलवाड़ा के पास एक छोटे से कस्बे में नौकरी करते थे। वहां उनकी पहचान एक ऐसे व्यापारी से हुई, जो पिताजी से ब्याज पर पैसा ले जाता था व समय पर ब्याज सहित लौटा देता था। इसी दौरान पिताजी का स्थानांतरण भीलवाड़ा हो गया। यहां भी वह व्यापारी पिताजी से पूर्ववत लेन-देन करता रहा। सन ८० में वह कुछ चांदी व सोने के आभूषण पिताजी के पास रखकर लगभग १०-१२ हजार रुपये ले गया व ब्याज सहित निश्चित समयावधि में पैसा चुकाकर आभूषण छुड़ा लेने का वायदा कर गया, लेकिन जब छुड़ाने नहीं आया तो शंका हुई। जांच कराने पर आभूषण नकली पाये गये। अब वह व्यापारी पैसा मांगने पर न तो पैसे देता है और न पैसा देने से मना करता है। बताइए, क्या किया जाए ?

आपने यह तो लिखा कि सन ८० में वह व्यापारी रुपया लेकर आभूषण आपके पिताजी के पास रख गया तथा निश्चित समयावधि में आभूषण छुड़वाने की कह गया—यह निश्चित समयावधि क्या थी ? इसका विवरण आपने अपने पत्र में नहीं किया। रुपया वापस लेने के लिए साधारणतयः तीन वर्ष में कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए। इस समयावधि के बाद आपका रुपया वापस करने के लिए कानूनी कार्यवाही करने का अधिकार समाप्त हो जाता है।

सोना-चांदी के कहकर नकली आभूषण आपके पास रखकर उक्त व्यापारी ने आपके पिताजी के साथ विश्वासघात किया है। इस आधार पर आपके पिताजी पुलिस में रिपोर्ट लिखवा सकते हैं तथा धोखा देने के लिए व्यापारी के विरुद्ध कार्यवाही की मांग कर सकते हैं। भारतीय दंड संहिता के अंतर्गत आप उक्त व्यापारी को धोखाधड़ी के अपराध में दंडित करवा सकते हैं।

कमरा हड़पने की नीयत

अरविंद, वाडमेर : बत्तीस साल पहले पिताजी ने हमारा एक कमरा गिरवी रखा था। तब हम छोटे थे और पिताजी ने इस बारे में किसी को कुछ बताया भी नहीं। पिताजी का स्वर्गवास हो गया। बाद में हमें यह बात किसी तरह पता चली तो हम रजिस्ट्री की नकल ले आये। प्रतिवादी कमरे को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हड़प जाना चाहता था क्योंकि तीस साल होते ही उसका कब्जा पक्का हो जाता । हमें संदेह है कि हमारे कुछ स्वर्ण जड़ित शस्त्र भी उसके पास गिरवी हैं, इसलिए वह हमें असली रूका नहीं दिखा रहा ।

गिरवी रखे कमरे में शुरू से ही प्रतिवादी का बचेरा भाई रह रहा है । प्रतिवादी दबदबेवाला है, इसलिए उसने हमारे विरुद्ध अशांति फैलाने का झूठा केस दायर कर रखा है, जिसमें हम दस हजार रुपये की जमानत पर हैं । बताइए, हम क्या करें ?

गिरवी रखते समय आवश्यक प्रलेख लिखे गये थे तथा उनका पंजीकरण भी हुआ था । उसमें किस कमरे या सामान को गिरवी रखा गया था, उसका पूरा विवरण मिल सकेगा । उन प्रलेखों का पूरी प्रकार से अध्ययन करने के बाद ही वस्तुस्थिति की सही जानकारी मिल सकती है तथा आपके प्रश्न का पूरा उत्तर भी । इसलिए आप अपने नजदीक में किसी कानूनी जानकार को प्रलेख दिखा कर सलाह लें तथा कानून सम्मत कार्यवाही करके रहन समाप्त करवाने के लिए कदम उठाएं ।

चैकों का भुगतान

सरयू नारायण सिंह, गया : मैंने कुल १,९४६ रुपये के दो क्रास्ड चैक एक राष्ट्रीयकृत बैंक की शाखा—गया (बिहार) में ९ दिसंबर, ८८ को जमा किये थे । इन दोनों चैकों का भुगतान एक दूसरी राष्ट्रीय बैंक की शाखा—नवादा (बिहार) को करना था । जुलाई, ८९ तक, सात महीने बीत गये पर चैकों की राशि मेरे खाते में जमा नहीं हुई । गया स्थित बैंक का कहना है कि नवादा स्थित बैंक ने उक्त चैकों की राशि का बैंक ड्राफ्ट बनाकर हमें अभी तक नहीं भेजा है ।

इस संबंध में मैंने सेक्रेट्री बैंकिंग, वित्त मंत्रालय, दिल्ली को भी पत्र लिखा लेकिन, वहां से कोई जवाब नहीं आया । बताइए, मुझे क्या करना चाहिए जिससे उक्त राशि सूद सहित जल्दी मेरे खाते में जमा हो जाए ।

आपने वित्त मंत्रालय के अधिकारियों को अपनी परेशानी से अवगत कराकर उचित कार्यवाही की है । मेरे विचार से चैक की राशि आपके बैंक तक पहुंचने में इतना विलंब किसी भी हालत में नहीं होना चाहिए । विलंब को साधारण नहीं माना जा सकता । इसलिए उचित यह रहेगा कि आप अपने बैंक तथा दूसरे बैंक जिसका चैक था, दोनों को नोटिस देकर उनसे वह रकम अपने खाते में जमा करने का आग्रह करें । इसमें बैंक अधिकारी सचेत हो जाएंगे और आपकी रकम प्राप्ति का मार्ग आसान हो जाएगा ।

माताजी का अधिकार

वीरसिंह पंवार, देहरादून : हम चार भाई हैं । मरने से पहले पिताजी एक वसीयत कर गये थे । वसीयत रजिस्टर्ड है । वसीयत का मुख्य आधार यह है— 'जब तक मैं जिंदा रहूंगा अपनी चल व अचल संपत्ति का मालिक तथा स्वामी रहूंगा । मेरे मरने के बाद मेरी पत्नी जमीन की मालकिन व काबिज होगी । मेरी पत्नी के मरने के बाद निम्न तरीके से व विवरण के साथ दी जाए, ताकि संपत्ति के मालिक चारों लड़के हों ।'

मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या पिताजी के मरने के बाद इसमें दाखिल-खारिज माताजी के नाम होगा ? और यदि होगा, तो क्या माताजी को अपने जीते-जी संपत्ति किसी को बेचने का अधिकार है ? यदि माताजी ने सारी संपत्ति बेच दी, तो क्या लड़के बाद में एतराज कर सकते हैं ?

वसीयत द्वारा पिता को अपनी संपत्ति का स्वामित्व किसी को भी देने का अधिकार है। उन्होंने अपनी मृत्यु के बाद पूर्ण स्वामित्व अपनी पत्नी को दे दिया । यह अधिकार देते समय उन्होंने किसी प्रकार का निषेधादेश उन्हें नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। उन्हें अपने जीवनकाल में पूरे कब्जे व मालिक के अधिकार प्राप्त हैं। वास्तव में तो पूरी वसीयत पढ़कर ही वस्तुस्थिति समझी जा सकती है, परंतु जैसा मुझे प्रतीत होता है, मां अपने जीवनकाल में संपत्ति का उपयोग तथा हस्तांतरण कर सकती हैं, जो कि साधारणतया वैध ही होगा। ऐसी स्थिति में मां के स्वर्गवास के बाद आप मां द्वारा किए गये हस्तांतरण पर एतराज नहीं कर सकते।

गोद लेना चाहता हूं

धनप्रकाश मिश्र घायल, इलाहाबाद : मैं ३६ वर्षीय एक व्यवसायी युवक हूं और अभी तक अविवाहित हूं। मेरे पड़ोस में एक विधवा ब्राह्मण पहिला गत आठ-नौ साल से एक यादव परिवार में रह रही है। उसके तीन बच्चे हैं एक पुत्र और दो पुत्रियां हैं, तीनों नाबालिग हैं। यादवजी के सात पुत्र-पुत्रियां हैं, जिनकी मां का देहांत हो चुका है। यादवजी को सहयोग देने की भावना से मैंने तीनों ब्राह्मण बच्चों की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है और दो साल से तीनों को शिक्षा दिला रहा हूं तथा अन्य खर्च भी स्वयं वहन कर रहा हूं। तीनों बच्चे भोजन यादवजी के यहां ही करते हैं। मैं इनमें से अब एक बच्चे को गोद लेना चाहता हूं। बच्चों की मां की नीयत मुझे ठीक नहीं लगती। क्या यादव परिवार कोई रुकावट डाल सकता है ?

मुझे क्या करना चाहिए, ताकि इन तीनों मासूमों की अच्छी तरह परवरिश हो सके ?

ब्राह्मण महिला के तीनों नाबालिग बच्चों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर आपने नेक काम किया है। निराश्रित को सहायता देकर, शिक्षा दिलाना एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। बच्चे को गोद लेने के लिए आवश्यक है कि बच्चे के माता-पिता उसे गोद देने को तैयार हों। बच्चों की मां की नीयत ठीक न होने से आपका क्या

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

आशय है ? यादव परिवार तो बच्चे के गोद लेने में रुकावट नहीं डाल सकता, परंतु बच्चों की मां की स्वीकृति तो अनिवार्य है। मां स्वयं की इच्छा से या यादव परिवार के कहने में आकर बच्चे को गोद देने या न देने का निर्णय ले सकती है।

नौकरी से हटा दिया

गुरुदेव सिंह मेहरा, श्रीगंगानगर : मैंने सन १९८१-८८ में वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से बी.एड. किया। इसके पश्चात मैंने राजस्थान में पांच माह तक अस्थायी अध्यापक पद पर कार्य किया है, लेकिन अब पंचायत समितिवाले कहते हैं कि राजस्थान में इस विश्वविद्यालय को मान्यता नहीं है। अगर राजस्थान में इसे मान्यता प्राप्त नहीं है, तो हमें अस्थायी नौकरी क्यों दी गयी ? कृपया, बताएं कि इस संबंध में हम क्या कर सकते हैं ?

आपकी शैक्षणिक योग्यता आवश्यक नियमों के मापदंड पर पूरी नहीं उतरती, तो आपको नौकरी नहीं दी जा सकती। आपकी शैक्षणिक तथा अन्य योग्यता भर्ती नियमों के अनुसार है या नहीं, यह देखकर ही आपकी नियमित नियुक्ति की जाती है। इसके लिए आपके विश्वविद्यालय तथा आपके प्रमाण-पत्र की मान्यता का प्रश्न भी उठेगा ही। पंचायत समिति आपको बी.एड. नहीं मान सकती। इसलिए कानूनी आधार पर आपकी नियुक्ति के अधिकार को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाली कराना है

क. ख. ग. दिल्ली : मेरे पांच भाई हैं । और प्रत्येक के हिस्से में अलग-अलग घर आया है । मेरे हिस्से में करीब ढाई हजार गज जमीन आयी है । उसमें अलग-अलग चार मकान व कुछ कमरे बने हुए हैं । उन मकानों में पिछले तीस वर्षों से किरायेदार रहते हैं । कुछ कमरे हमारे कब्जे में हैं । मैं किरायेदारों से मकान खाली कराना चाहता हूं, लेकिन वे खाली करने के लिए बड़ी-बड़ी रकम मांगते हैं, जिसे देना मेरे बूते से बाहर है । उन्होंने पानी व बिजली के कनैक्शन अपने नामों से ले रखे हैं । मकान खाली कराने का कोई उपाय बताएं ।

मकान में रहनेवाले किरायेदार को बिजली-पानी अपने नाम से लगवाने का अधिकार है । मकानों में किरायेदारों को रहते काफी लंबा समय हो चुका है । आप ये मकान किसलिए खाली कराना चाहते हैं ? आपके पास कुछ कमरे तो हैं ही । आप आजकल कहां रहते हैं तथा आपके परिवार में कितने सदस्य हैं, इसका उल्लेख आपके पत्र में नहीं है । यदि आपको स्वयं के परिवार के रहने के लिए जगह की आवश्यकता है, तो आप उतनी जगह, जितनी आपको आवश्यकता हो, खाली करा सकते हैं । अन्यथा मकान खाली कराने के लिए दिल्ली किराया नियंत्रण अधिनियम में वर्णित अनेक कारणों में से कोई भी कारण होने की स्थिति में ही मकान खाली कराया जा सकता है ।

पत्रिका नहीं मिलती

मुकेश त्यागी, मद्रास : मैंने एक पत्रिका के वार्षिक सदस्य बनने हेतु आवश्यक राशि भेजी थी, उसकी प्राप्ति की रसीद भी मेरे पास आ गयी । कुछ अंक तो मुझे मिले पर फिर पत्रिका आनी बंद हो गयी । अब जबकि काफी प्रतीक्षा करता हूं और फिर पत्र लिखता हूं तो पत्रिका आ जाती है, परंतु इस तरह एक अंक वे नहीं भेजते हैं । इस प्रकार मुझे देय मूल्य की आधी मूल्य की पत्रिका ही प्राप्त होगी । कृपया, बताइए कि क्या मैं इसके विरुद्ध कुछ कर सकता हूं ? क्या मुझे बची रकम वापस मिल सकती है ?

पत्रिका आपको डाक द्वारा ही प्राप्त होती होगी ? यह साधारण डाक से आती है या पंजीकृत डाक से ? देखना यह होगा कि क्या पत्रिका भेजी ही नहीं गयी या पत्रिका डाक में कहीं खो गयी । अगर प्रकाशक ने पत्रिका भेजी ही न हो तथा प्रकाशक के कार्यालय से ही भूल हो गयी हो, तब तो आप बची रकम वापस मांग सकते हैं या उस रकम की पत्रिकाएं भविष्य में भेजने का आग्रह कर सकते हैं । परंतु यदि पत्रिका प्रकाशक द्वारा भेजी जाने के बाद डाक में कहीं खी गयी हो तो, उस स्थिति में आपका प्रकाशक से रकम वापस मांगने का अधिकार नहीं बनता ।

'' 'हेमलेट' में मेरे मृत्यु के अभिनय ने समूचे हॉल को रुला दिया था । महिलाओं की तो हिचकियां बंध गयी थीं ।'' एक अभिनेता ने आत्मप्रशंसा में कहा ।

दूसरे अभिनेता ने जवाब दिया—

''अरे यह तो कुछ भी नहीं । मंच पर मेरे मृत्यु के अभिनय का प्रभाव तो इससे कहीं ज्यादा था ।''

'कैसे ?'

''दर्शकों की प्रथम पंक्ति में मेरा इंश्योरेंस एजेंट भी बैठा था । मंच पर मेरी मृत्यु देखकर वह सीधे मेरे घर पहुंचा और मेरे बीमे की सारी राशि उसी समय मेरी पत्नी को दे आया ।''

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

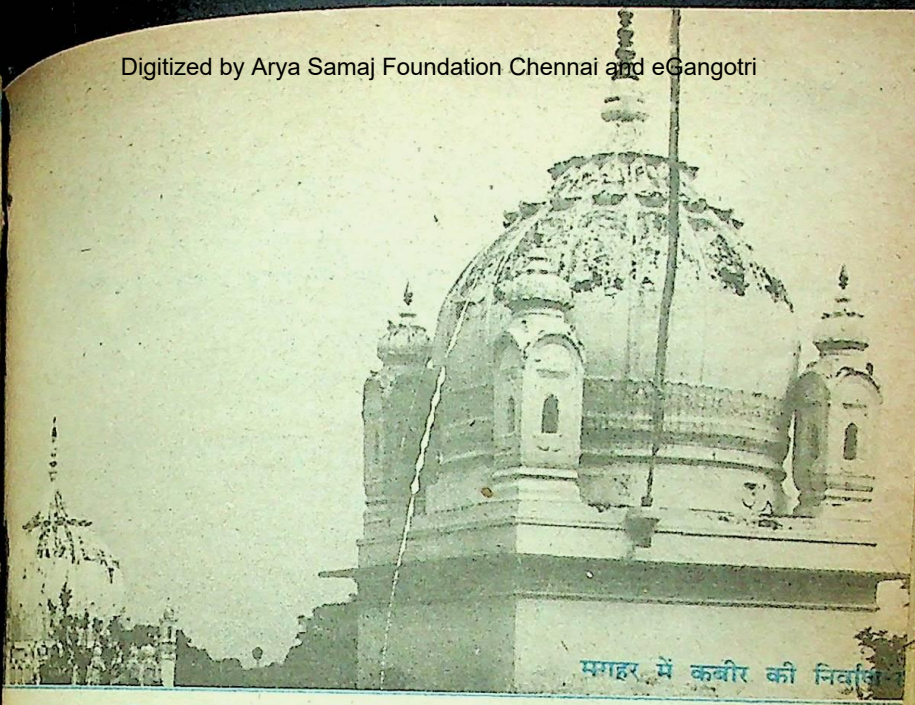

मगहर में कबीर की निर्वाण-

जो घर फूके आपना चलै हमारे साथ

● अशोक मिश्र

कबीर सत्य के जिज्ञासु थे । कोई मोह-ममता उन्हें अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकती थी ।

युग की कठोर आवश्यकताएं महात्माओं को जन्म देती हैं । कबीर का जन्म भी समय की विशेष आवश्यकताओं के लिए हुआ था । किंतु मसि कागद कलम छुयो नहीं कहनेवाले कबीर का व्यक्तित्व इतना क्रांतिकारी कैसे बना ? और जिसने वेद-कतेब (कुरान) के दार्शनिक गूढ़-रहस्यों को पढ़ा नहीं, फिर भी उसने परमसत्ता के रहस्य को जाना कैसे ?

डॉ. श्याम सुंदरदास ने लिखा है कि कबीर का तत्वज्ञान दार्शनिक ग्रंथों के अध्ययन का फल नहीं, वह उनकी अनुभूति और सार-ग्राहिता का प्रसाद है । यह सच भी है कि कबीर— जैसा व्यक्तित्व किसी अध्ययन-अध्यापन का परिणाम नहीं होते वरन युग विशेष की परिस्थितियों और सामाजिक अंतः प्रक्रियाओं के मंथन के परिणाम होते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ ही ऐसा व्यक्तित्व अपने समकालीन युग में सामान्य जनता की इच्छाओं का प्रतिबिंब भी होता है । इसलिए कबीर के क्रांतिकारी व्यक्तित्व को समझने के लिए मध्य युग की तत्कालीन परिस्थितियों पर दृष्टिपात करना प्रासंगिक होगा ।

संघर्ष का युग

कबीर साहब का आविर्भाव काल दो विभिन्न संस्कृतियों के संघर्ष का युग था । एक ओर थे इसलाम को माननेवाले शासक और दूसरी ओर था हिंदू धर्म की रक्षा के लिए भक्ति आंदोलन । सामान्य जनता की नजर दोनों धर्मों के मतावलंबियों की दुर्बलता और भूलों की ओर लगी थी । दोनों ही धर्मों में अतिवादी मान्यताओं को लेकर धार्मिक विद्रोह के स्वर मुखर होने लगे । मुसलमानों में यह कार्य सूफियों द्वारा हुआ । हिंदू धर्म में विद्रोह के बीज बहुत पहले बौद्धों-जैनों ने डाल दिये थे । मध्ययुग में योगमार्ग के साधक संप्रदाय नाथपंथियों ने हिंदुओं के कर्मकांड और भक्ति भावना पर चोट की । किंतु नाथपंथी कालक्रम से योग क्रिया को ही सर्वस्व समझने लगे ।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की मान्यता है कि इन्हीं नाथपंथी योगियों के आश्रम भ्रष्ट शिष्य, जिन्हें हिंदू समाज में सम्मानपूर्ण स्थान न था, धीरे-धीरे मुसलमानी मत की ओर झुकते गये, परंतु इनके पूर्व संस्कार बहुत दिनों तक बने रहे । जब वे इस प्रक्रिया से गुजर रहे थे, उसी समय कबीर का आविर्भाव हुआ था । इसी समय संपूर्ण उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन प्रसिद्ध वैष्णव संत रामानंद ने चलाया । प्रसिद्ध है कि ये ही कबीर के गुरु थे । **काशी में हम प्रकट भये रामानंद चेताए** कबीर की इस उक्ति से यह प्रमाणित किया जा सकता है । इस प्रकार कबीर का उद्भव एक धार्मिक संक्रमण के युग में हुआ, जिसके कारण उन्हें सभी संप्रदायों, धर्मों, विचारों और सभी तरह के अच्छे लोगों से सत्संग करने का अवसर मिला । वे स्पष्ट समझ गये कि इस समय समाज धार्मिक रूप से दिग्भ्रमित है और इसे एक सही दिशा देने की आवश्यकता है । तत्पश्चात कबीर अपनी साधना, अपनी काव्यमयी वाणी और एक विशिष्ट जीवन दर्शन से युग प्रवर्तन की ओर अग्रसर हो गये ।

कबीर दास ने अक्खड़ता योगियों से विरासत में पायी थी इसलिए वे संसार में भरमाते हुए लोगों को देखकर अपनी कठोर वाणी से प्रहार करते थे –

ज्ञान का गेंदकर सुर्त का डंड कर
खेल चौगान मांही
जगत का भरमना छोड़ दे बालके
आया जा भेष-भगवंत पाहीं

उनका मानना था संसार में भरमनेवालों पर दया कैसी, मुक्ति के मार्ग में अग्रसर होनेवाले को आराम कहां, करम की रेख पर मेख न मार सका तो संत कैसा ?

विरोधी के अस्त्र से विरोधी को घायल करने की कला में कबीरदास निष्णात थे । कुंडलिनी जाग्रत कर गगन और पवन के बल पर आतंक जमानेवालों से उनका यह छोटा-सा प्रश्न कितना सहज और तिलमिला देनेवाला है –

गगना-पवना दोनों बिनसैं कहं गया जोग तुम्हारा

कबीरदास किसी विषय पर अनाधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर्चा करनेवालों में से नहीं थे । वे स्वयं कुंडलिनी जाग्रत कर समाधिगम्य परमपुरुष का साक्षात्कार कर चुके थे ।

स्वभाव से फक्कड़

वे स्वभाव से फक्कड़ थे । वे अपना घर जलाकर हाथ में मुराडा लेकर निकल पड़े थे और उसी को साथी बनाने को तैयार थे जो उनके हाथों अपना भी घर जलवा सके ।

हम घर जारा आपना, लिया मुराडा हाथ
अब घर जारों तासुका, जो चलै हमारे साथ

इस प्रकार वे सत्य के जिज्ञासु थे और कोई मोह-ममता उन्हें अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकती थी ।

कबीर प्रेम के मतवाले थे । मगर अपने को उन दीवानों में नहीं गिनते थे, जो माशूक के लिए सिर पर कफन बांधे फिरते हैं, जो बेकरारी और तड़पन में इश्क का चरमफल पाने का भान करते हैं । कबीर का कहना है कि बेकरारी उस वियोग में होती है जिसमें प्रिय दूर हो । पर जहां प्रिय से एक क्षण का भी बिछोह नहीं, वहां तड़पन कैसी ? जो गगरी भरी है उसमें छलकन कहां ? जहां द्वैत भावना ही मिट गयी हो उस अजब मस्ती में बेचैनी कहां ?

कबीर योगियों की ब्रह्म संबंधी धारणा को नहीं मानते कि वह केवल भीतर ही है । कबीर का कहना है कि यदि ऐसा ही है तो क्या यह बाह्य जगत व्यर्थ है, झूठ है । और इसी तरह परमतत्व केवल बाहर में ही नहीं मनुष्य के भीतर भी है । जो 'पिंड में है वही ब्रह्मांड में है' कहकर भी ब्रह्म का निरूपण किया जाता है । परंतु केवल वाक्य के आश्रय से बननेवाले

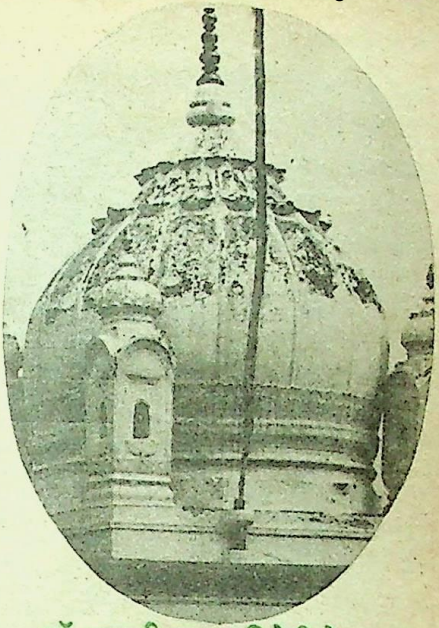

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार कबीर 'वाणी के डिक्टेटर' थे । उन-जैसा व्यंग्यकार हिंदी साहित्य में आज तक पैदा नहीं हुआ ।

ज्ञानियों को इससे भ्रम हो सकता है कि पिंड और ब्रह्मांड ब्रह्म की अवस्थिति के लिए आवश्यक हैं । ऐसे लोगों के लिए कबीर कहते हैं—

प्यंड ब्रह्मांड कथै सब कोई
वाकै आदि अरु अंत न होई
प्यंड ब्रह्मांड छाड़ि जे कथिए
कहै कबीर हरि सोई

बुद्ध के 'दुःख का सत्य' सिद्धांत के समान ही कबीर का भी सिद्धांत है कि यह संसार दुःख का ही घर है । किंतु इस दुःख का ज्ञान उन्हीं लोगों को हो सकता है जिन्होंने मायात्मक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्ञानावरण हटा दिया है । माया में पड़े हुए लोग तो दुःख को सुख ही समझते हैं—

सुखिया सब संसार है
खावे अरु सोवै
दुखिया दास कबीर है
जागै अरु रोवै

यहां कबीर का दुःख अपने लिए नहीं है, वे अपने लिए नहीं रोते, संसार के लिए रोते हैं क्योंकि उन्होंने साईं के सब जीवों के लिए अपना अस्तित्व समर्पित कर दिया था । कबीर मानते हैं कि माया ही विषय-वासनाओं को जन्म देती है—

इक डाइन मेरे मन बसै
नित उठ मेरे जिय को डसै
या डाइन के लरिका पांच रे
निसि दिन मोहिं नचावै नाच रे

और माया के ये पांच पुत्र हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर । आत्मा की परमात्मिका को यही व्यवधान डालते हैं । अतः कबीर सचेत करते हैं कि परम तत्वार्थियों को इनसे सावधान रहना चाहिए

पंच चोर गढ़ मंझा
गढ़ लूटै दिवस अरु संझा

कबीरदास मानते हैं, कोई भी जन्म से ही द्विज या शूद्र अथवा हिंदू या मुसलमान नहीं । यह बात कबीर ने कितने सीधे मन से किंतु मन में जम जानेवाले ढंग से कही है—

जौ तूं बभन बंभनी जाया
तौ आन बाट ह्वौं क्यों नहीं आया
जौं तूं तुरक तुरकनीं जाया
तौं भीतर खतना क्यों न कराया

यह है कबीर की भाषा का चमत्कार कि सुननेवाला तिलमिला भी जाए किंतु प्रतिक्रिया में कुछ कह भी न सके । डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ठीक ही उन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहते हैं । उनके अनुसार कबीर – जैसा व्यंग्यकार हिंदी साहित्य में आज तक पैदा नहीं हुआ । कबीर ज्ञानी थे किंतु ज्ञान का कोई अहम उनके भीतर नहीं था । स्वयं आजीवन जुलाहे का व्यवसाय करते रहे । अपने को जुलाहा कहने में भी संकोच नहीं किया । वे उन ज्ञानियों में से नहीं थे जो हाथ-पांव समेटकर पेट भरने के लिए समाज के ऊपर भार बनकर रहते हैं । कबीर का गर्व उच्चतम मनुष्य का प्रेममय गर्व है, जिसकी आत्मा विनय है । सच्चे भक्त की भांति उन्होंने परमात्मा के महत्त्व और अपनी हीनता का अनुभव किया है—

कबीर कूत्ता राम का, मुतियां मेरा नाऊं
गलै राम की जेवड़ी, जित खैंचे तित जाऊं

उनकी विनय यहां तक पहुंची है कि वे बाट का रोड़ा होकर रहना चाहते हैं जिस पर सबके पैर पड़ते हैं । परंतु रोड़ा पांव में चुभकर बटोहियों को दुःख देता है, इसलिए वह धूल के समान रहना उचित समझते हैं । किंतु धूल भी उड़कर शरीर को मैला करती है, पानी की तरह होकर रहना चाहिए, जो सबका मैल धोये । पर पानी भी ठंडा और गरम होता है जो अरुचि का विषय हो सकता है । इसलिए भगवान की तरह होकर रहना चाहिए । कबीर का गर्व और दैन्य दोनों मनुष्य को परमात्मा की अनुभूति करानेवाले हैं ।

कबीर – जैसे संत किसी जाति के नहीं होते, वे धर्म से परे होते हैं, यद्यपि इसी को लेकर कबीर विवाद के केंद्र आज भी बने हैं ।

—आई.आई.एम.सी. छात्रावास कं. नं. १
शहीद जीत सिंह मार्ग नयी दिल्ली-६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

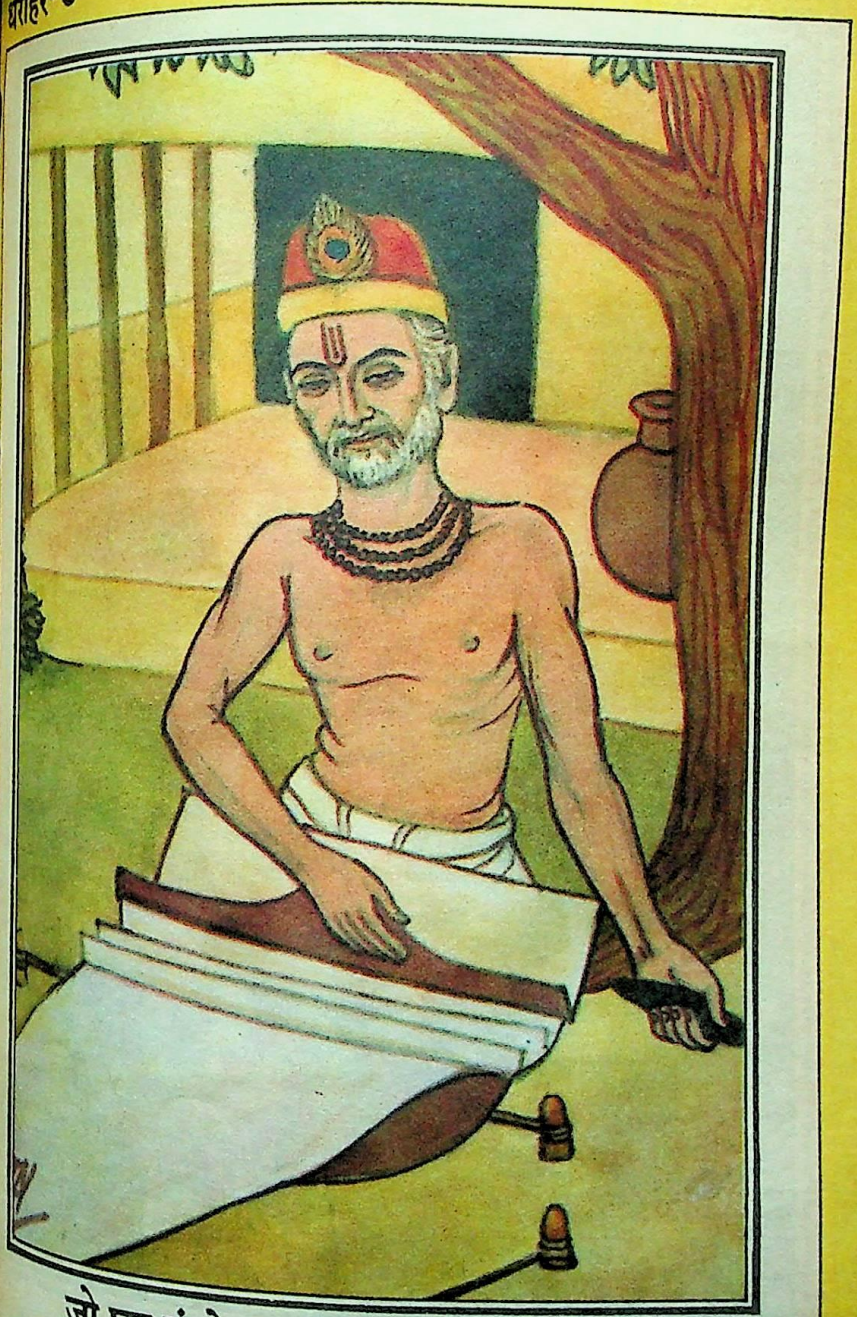

जो घर फूंके आपना चले हमारे साथ

संत कबीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकपूर : मात्र विदूषक नहीं, नायक, निर्देशक,
निर्माता भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक समय था जब हिंदी फिल्मों में चार्ली, गोरी, दीक्षित, गोप, वी. एच. देसाई—जैसे हास्य-अभिनेताओं के बिना कोई फिल्म पूरी नहीं समझी जाती थी। तब हास्य फिल्मों का एक अनिवार्य अंग था। आज की फिल्मों में भी हास्य है, लेकिन दूसरे रूप में

जाने कहां गये वो दिन...

चार्ली, राजकपूर से टुनटुन तक

—कमलेश

...कहां गये वो दिन. . .'

...कपूर की प्रसिद्ध किंतु व्यावसायिक दृष्टि ...आंशिक सफल फिल्म 'मेरा नाम ...' का लोकप्रिय गीत। इस गीत का ...एक साथ कई यादें दिलाता है। गीत की ...पंक्ति सुनते ही राजकपूर का दर्दभरा चेहरा ...के सामने घूम जाता है और फिर याद ...है मुकेश, जिन्होंने यह गीत गाया था। ...तो राजकपूर फिल्म—निर्माता, निर्देशक, ...संक्षिप्त में कहें तो एक संपूर्ण फिल्मकार ...उन्हें 'ग्रेटेस्ट शो मैन' कहकर भी ...किया गया, पर जनमानस में राजकपूर ...'आवारा' और 'श्री चार सौ बीस' के ...के रूप में ही बसी है। राजकपूर ने ...जीवन सही रूप में 'आग' से शुरू किया ...उनकी पहली फिल्म थी। उसके ...निर्देशक और नायक वही थे। उसमें ...एक 'ट्रेजिक हीरो' के रूप में ही सामने आये थे। लेकिन बाद की फिल्मों में उनका दूसरा रूष उभरता चला गया—विशेषकर 'आवारा' और 'श्री चार सौ बीस' से। इसमें वे एक हंसोड़ नायक के रूप में आये और सब पर छाप छोड़ गये। राजकपूर के अभिनय पर विश्वविख्यात अभिनेता चार्ली चैप्लिन का

...१९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबरदस्त असर था और यह बात स्वयं राजकपूर भी मानते थे । वे चार्ली चैप्लिन के प्रति श्रद्धाभाव रखते थे और अपनी अमरीका यात्रा में वे उनसे मिलने भी गये थे । चार्ली चैप्लिन की तरह ही राजकपूर ने कुछ विशिष्ट भाव-भंगिमाएं अपना ली थीं, जो एक तरह से उनका 'ट्रेड मार्क' हो गयी थीं ।

एक और चार्ली

चार्ली चैप्लिन ने केवल राजकपूर को ही नहीं प्रभावित किया । उनके पूर्व वे अनेक भारतीय हास्य अभिनेताओं को प्रभावित कर चुके थे । इनमें से एक ने तो अपना नाम ही 'चार्ली' रख लिया था । सन १९३५ और उसके बाद बननेवाली हिंदी फिल्मों में इस 'चार्ली' ने महत्त्वपूर्ण भूमिकाएं निभायीं । 'बैरिस्टर्स वाइफ', 'देवदासी', 'रात की रानी', 'मतलबी दुनिया', 'रंगीला राजा', 'दिल फरोश', शमा-परवाना', 'शराफी लूट', 'जमीन का चांद'—उनकी कुछ फिल्मों के नाम हैं । इन फिल्मों के अलावा भी चार्ली ने कई फिल्मों में काम किया ।

चार्ली का वास्तविक नाम था—नूर मोहम्मद । प्रसिद्ध हास्य-अभिनेता, फिल्म-निर्माता-निर्देशक भगवान के शब्दों में—"पृथ्वीराज, ईश्वरलाल, वास्ती-जैसे नायकों के होते हुए भी चार्ली अपनी हास्य भूमिकाओं के लिए इन नायकों से अधिक पारिश्रमिक लिया करते थे । पूरे पच्चीस हजार ।"

भगवान के जीवन पर चार्ली का गहरा रंग पड़ा था । दरअसल चार्ली की सफलता ने ही भगवान को हास्य-अभिनेता बनने के लिए प्रेरित किया । चार्ली की तरह भगवान की भी कुछ अपनी विशिष्ट अदाएं थीं ।

चार्ली फिल्मों में ही नहीं, निजी जीवन में अपने हास-परिहास से लोगों का मनोरंजन किया करते थे । उनके जीवन की एक घटना—

एक बार चार्ली लखनवी लिबास में ट्राम से सफर कर रहे थे । वे लखनऊ के किसी नवाब से कम नहीं लग रहे थे । उस दिन ट्राम के कंडक्टर ने उनसे कहा, 'टिकट प्लीज !'

चार्ली ने कोई जवाब नहीं दिया । ऐसा चार-पांच बार हुआ । कोई उत्तर न पाकर कंडक्टर चीखा, 'टिकट किधर है ?'

'अरे तो ऐसा कहो न ! यह 'प्लीज', 'प्लीज' क्या लगा रखा है ।' यह कहते हुए उन्होंने शेरवानी की जेबें टटोलने के बाद ट्राम टिकटों का पूरा बंडल निकालकर सामने कर दिया ।

कंडक्टर परेशान होकर बोला, 'यह क्या है ?'

'ट्राम के टिकट !'

'इस ट्राम का टिकट कहां है ?'

'देख लीजिए, नहीं होगा तो ले लूंगा ।'

'लेकिन इन बेकार टिकटों का बंडल ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभालकर रखा है ?' कंडक्टर ने पूछा ।

'देखो भई, लखनऊ से बंबई घूमने आया हूं । चलते वक्त वालिद ने कहा था, बंबई में जो भी खर्चा करोगे, उसका हिसाब रखना । इसलिए इन्हें संभालकर रखा है ।' चार्ली ने मासूमियत से जवाब दिया ।

बेचारा कंडक्टर ! चार्ली की बात सच मानकर उस बंडल में ट्राम का टिकट खोजने लगा । जब वह नहीं मिला तो चार्ली ने कहा, 'नहीं है टिकट ? तो यह लो दुअन्नी ! मेरा और मेरे दोस्त का टिकट दे दो ।'

यह दोस्त और कोई नहीं हास्य अभिनेता भगवान थे ।

'पतंगा' में याकूब

चार्ली के ही समकालीन हास्य अभिनेता थे—गोप, गोरी, दीक्षित, भूडो आडवाणी, वी.एच. देसाई । इन्हीं के साथ थे याकूब—एक प्रसिद्ध चरित्र-अभिनेता । याकूब की पहली फिल्म 'औरत' में उन्होंने अविस्मरणीय भूमिका निभायी थी । याकूब कभी-कभी हास्य अभिनय भी कर लेते थे । १९४९ में वर्मा फिल्मस् की एक लोकप्रिय फिल्म बनी थी—'पतंगा' । श्याम नायक थे और निगार सुलताना नायिका । इसमें गोप के साथ याकूब भी थे । इस फिल्म का एक दृश्य मुझे नहीं भूलता । इसमें ज्योतिषियों पर भी अच्छी-खासी चोट की गयी थी ।

दृश्य एक : ज्योतिषी को एक बच्चे का हाथ दिखाते हुए उसके अभिभावक पूछ रहे हैं—'यह बड़ा होकर क्या बनेगा ?'

ज्योतिषी उत्तर देता है—'अरे यह बड़ा भाग्यवान है । इसके आगे-पीछे, दायें-बायें

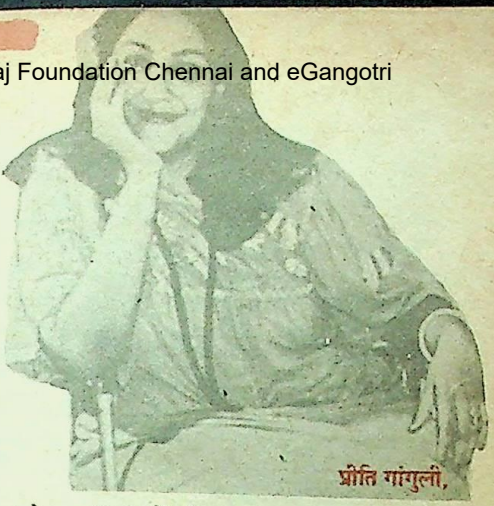

प्रीति गांगुली,

मोटरगाड़ियां दौड़ेंगी ।'

दृश्य दो : एक चौराहा । बीच में ट्रेफिक कांस्टेबल बने खड़े हैं याकूब और उनके आगे-पीछे, दायें-बायें मोटर गाड़ियां दौड़ रही हैं ।

याकूब कहते हैं, 'देखो, पंडित का कहना सच हुआ न ! मेरे आगे-पीछे, दायें-बायें गाड़ियां दौड़ रही हैं ।'

याकूब जबलपुर के रहनेवाले थे और अपने जमाने के मशहूर अभिनेता थे—उनकी ख्याति किसी हीरो से कम नहीं थी । फिल्मों के विज्ञापनों में, पोस्टरों में, होर्डिंग में उनका नाम प्रमुखता से छपता था ।

सन तीस-चालीस के दौर में हिंदी फिल्मों में एक से बढ़कर एक हास्य कलाकार थे । चार्ली, गोरी, गोप, दीक्षित, वी.एच. देसाई, भूडो आडवाणी के अलावा मिर्जा मुसर्रफ, आगा, भगवान, मुकरी आदि कई हास्य अभिनेता ऐसे थे, जिनका किसी फिल्म में होना अनिवार्य माना जाता था ।

स्वाधीनता के पूर्व की हिंदी फिल्मों में गोरी, चार्ली, दीक्षित, गोप आदि का बोलबाला था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

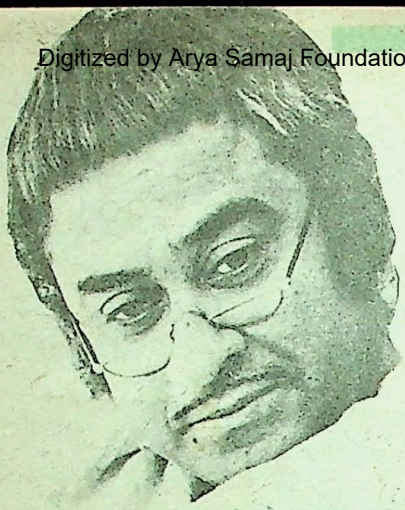

किशोर कुमार

हास्य अभिनेता महमूद के पिता मुमताज अली, जो कत्थक-नर्तक भी थे, अपने समय के प्रसिद्ध हास्य अभिनेता थे । सन १९४७ की एक प्रसिद्ध फिल्म थी—'शहनाई' । निर्देशक थे पी.एल. संतोषी और नायिका थीं रेहाना । हास्य-अभिनेता थे—मुमताज अली । इस फिल्म का एक गीत तो आज भी लोकप्रिय है—'आना मेरी जान, मेरी जान, संडे के संडे ।'

उन दिनों के हास्य-अभिनेताओं का हास्य शिष्ट और गुदगुदानेवाला होता था, आज-जैसा फूहड़ नहीं । एक फिल्म थी 'पगड़ी', जिसमें बंबई में प्रचलित पगड़ी के रिवाज पर चोट की गयी थी । दरअसल इस फिल्म में प्रेम-कहानी गौण थी और पूरी फिल्म गोप और दीक्षित के अभिनय पर टिकी थी । इसी फिल्म में शशिकला ने भी एक प्रेम-दीवानी किशोरी की हास्यपूर्ण भूमिका निभायी थी ।

'पगड़ी' में दिलदार बेकार दीक्षित अपने कुत्ते के साथ एक विशाल बंगले पर कब्जा जमा लेते हैं, क्योंकि उसके मालिक गोप बाहर गये हैं । स्थिति कुछ इस तरह बनती है कि गोप को अपने ही मकान में नौकर की तरह रहना पड़ता है । यह उनके लिए एक नया अनुभव होता है । अंत में राज खुलता है पर तब तक गोप अपने घर में अनधिकार रूप से कब्जा जमाये लोगों से स्नेह करने लगते हैं । 'पगड़ी' एक हास्य प्रधान फिल्म थी ।

हिंदी में शुद्ध हास्य को लेकर बहुत कम फिल्में बनीं । हां, मराठी में एक लोकप्रिय हास्य फिल्म बनी थी—'लाखा ची गोस्ट' (लाख रुपये की बात) निर्देशक-नायक थे राजा परांजपे और उनके साथ थे राजा गोसाठी एवं धुमाल । यह फिल्म हंसा-हंसाकर लोटपोट कर देनेवाली थी । बाद में धुमाल हिंदी फिल्मों पर छा गये । मद्रासी नौकर 'मुंडू' के रूप में उनका अभिनय बेहद हंसाता ।

स्वाधीनता के बाद चार्ली अर्थात नूर मोहम्मद पाकिस्तान चले गये । गोरी और दीक्षित को लोग भूल से गये पर गोप बरकरार रहे । हंसोड़ अभिनेताओं में आगा, भगवान, मुकरी को प्रमुखता मिलने लगी । सन ५० के आसपास किशोरकुमार आये । वे नायक थे, पर उनकी भंगिमाएं हास्य ज्यादा उत्पन्न करती थीं । यही कारण है कि उन्होंने 'चलती का नाम गाड़ी' शीर्षक से एक बेहद सफल हास्य प्रधान फिल्म बनायी ।

ओमप्रकाश ने भी एक चरित्र-अभिनेता से अधिक हास्य अभिनेता के रूप में अपनी छाप छोड़ी ।

'शराबी' के अभिनय ने अभिनेता बनाया

और फिर इसी अवधि में आये जॉनी वाकर । यों जॉनी वाकर ने के. आसिफ की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म हलचल में भी कार्य किया था, पर सही मायनों में उनकी प्रतिभा को उजागर किया गुरुदत्त ने। जॉनी वाकर का वास्तविक नाम है बदरुद्दीन। स्वर्गीय बलराज साहनी से उनकी अच्छी मित्रता थी और बलराज साहनी ने ही उन्हें गुरुदत्त से मिलवाया था। गुरुदत्त से जॉनी वाकर की भेंट नाटकीय परिस्थितियों में हुई।

बलराज साहनी ने उनसे कहा कि गुरुदत्त के कमरे में एक शराबी का अभिनय करते प्रवेश करें। जॉनी वाकर ने यही किया। उनका शराबी का अभिनय इतना सजीव था कि गुरुदत्त परेशान हो उठे। वे अपने सहायक को बुलाकर, जॉनी वाकर को धक्के देकर बाहर निकालनेवाले ही थे कि बलराज साहनी ने उन्हें वास्तविकता से अवगत करा दिया। जॉनी वाकर के अभिनय से गुरुदत्त इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने 'बाजी' में उन्हें काम दे दिया। फिर तो जॉनी वाकर वर्षों तक फिल्म जगत पर छाये रहे। यही नहीं, उन्हें नायक बनाकर एक हास्य फिल्म भी बनी 'छूमंतर' जिसका एक गीत बेहद लोकप्रिय हुआ—'तुम्हीं ने दर्द दिया है, तुम्हीं दवा देना।'

इसके बाद तो हिंदी में नये हास्य अभिनेताओं की बाढ़-सी आ गयी। पर इनमें छाप छोड़ी केवल महमूद ने। महमूद वर्षों तक फिल्मों पर छाये रहे। किसी प्रसिद्ध स्टार की भांति किसी फिल्म में उनकी उपस्थिति भी अनिवार्य समझी जाती थी। 'प्यार किये जा' में महमूद द्वारा अपने पिता (ओमप्रकाश) को फिल्म का दृश्य समझानेवाले प्रसंग आज भी गुदगुदा कर देते हैं।

महमूद के बाद हिंदी फिल्मों में पुराने पाये के

हास्य-अभिनेताओं का अभाव-सा हो गया है। राजेन्द्र नाथ, देवेन वर्मा, मोहन चोटी, जगदीप, जलाल आगा, पोलसन, केस्ट्रो मुखर्जी, असरानी, पेंटल-जैसे कुछ अच्छे हास्य-अभिनेता जरूर हुए, पर वे चार्ली, याकूब, गोप—आदि की ऊंचाइयों को न छू सके।

पुरुष हास्य अभिनेताओं की तरह महिला हास्य-अभिनेत्रियां भी थीं, पर वे अपनी विशेष छाप न छोड़ सकीं, सिवाय टुनटुन के।

टुनटुन का वास्तविक नाम उमा देवी है और वे अच्छी गायिका भी हैं। 'अफसाना लिख रही हूं'-जैसा लोकप्रिय गीत उन्हीं का गाया हुआ है। पर संयोग कि गायिका की बजाय वे हास्य-अभिनेत्री के रूप में ज्यादा सफल रहीं। इसकी पृष्ठभूमि में एक घटना या 'दुर्घटना' है। गायिका के रूप में सफल होने के बाद उमा देवी 'लवेरिया' (प्रेम) का शिकार हो शादी कर बैठीं। उनके पति का नौशाद साहब से झगड़ा हो गया तो गाना बंद। कहीं और भी काम नहीं मिला। रोटियों के लाले पड़ने लगे। हारकर वे पुनः नौशाद के पास पहुंची। नौशाद ने गाने तो नहीं गवाये पर कारदार साहब से कहकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

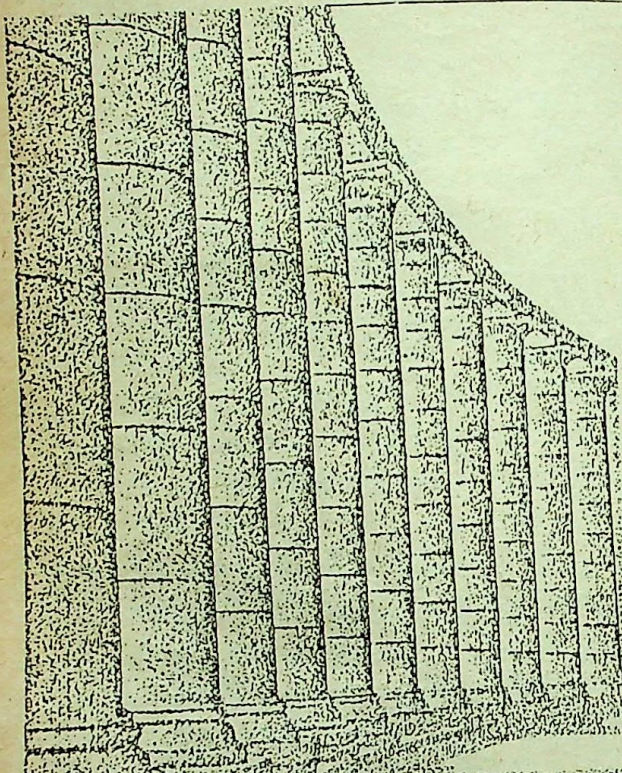

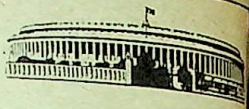

आज़ादी के स्तम्भ

नवम्बर के तीसरे हफ्ते में
भारत के लाखों स्त्रियों व पुरुषों ने,
युवाओं और वृद्धों ने
अपने मताधिकार का प्रयोग किया।
यहां सत्ता-परिवर्तन कई
अन्य देशों की तरह नही,
बल्कि लोकतांत्रिक तरीके से,
निर्बाध रूप से पर बड़ी तेजी से हुआ।
इस चुनाव से हमने एक बार फिर
सारी दुनिया को दिखा दिया कि
स्वतंत्रता और लोकतंत्र में
हमारी कितनी आस्था है,
और इससे हमें कितनी ताकत मिली है।
हमने आजादी व आस्था की
जो मशाल जलाई है,
उसे हम सदा प्रज्ज्वलित रखेंगे।

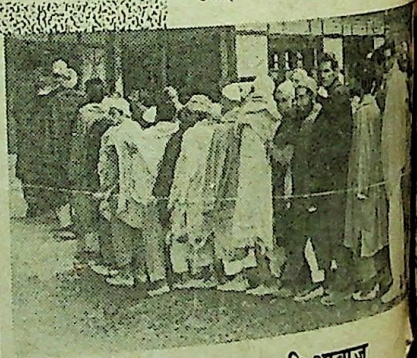

जनता की आवाज़
राष्ट्र की आवाज़

डीएवीपी 89/968

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...बुल' फिल्म में काम दिलवा दिया और नया ...भी रख दिया टुनटुन । टुनटुन की मान्यता ...कि हिंदी फिल्मों में कामेडी में कोई खास ...र्वर्तन नहीं हुआ है । द्विअर्थी संवाद तब भी ...और अब भी हैं ।

टुनटुन के बाद अपने शरीर के आकार से ...वाली हास्य-अभिनेत्री थीं—प्रीति ...। अशोक कुमार की इस बेटी में एक ...हास्य अभिनेत्री के लिए आवश्यक सभी ...थे । यों एक समय नायिका रह चुकी ...ने भी हास्य-प्रधान भूमिकाएं निभायीं, ...विशेष छाप नहीं छोड़ सकीं ।

जब हम विदेशी हास्य-अभिनेताओं से ...विशेषकर हिंदी फिल्मों के ...-अभिनेताओं की तुलना करते हैं तो पाते हैं ...कोई भी हास्य अभिनेता उनकी ऊंचाइयों को ...छू पाया । हालीवुड के रेड स्केल्टन, डेनी ...बॉब हॉप, जेरी लुइस आदि कुछ ऐसे ...-अभिनेता थे, जो हालीवुड के किसी अति ...'स्टार' से कम न थे । उन्हें ही नायक ...फिल्में बनती थीं । पर हिंदी फिल्मों में ...-अभिनेताओं की स्थिति केवल 'पूरक' की ...रही । किशोर कुमार, महमूद आदि ने ...कुछ हास्य फिल्में बनायीं और वे चली ...पर कोई भी शुद्ध हास्य अभिनेता अकेला ...फिल्म का कर्णधार नहीं बन पाया और ...की हिंदी फिल्मों से तो पुरानी शैली का ...-परिहास जैसे लुप्त हो रहा है । अपनी ...हास्य-फिल्मों की सफलता के बाद दादा ...ने कुछ हास्य फिल्में बनायीं पर वे अपने ...संवादों और भाव-भंगिमाओं के कारण ...छाप न छोड़ पायीं ।

इनके भी क्यों जुदा जुदा

जब मैं भी वही चाहूं जब तू भी वही चाहे
फिर गम का सबब क्या है क्यूं रोने को जी चाहे

—शाज तम्कनत

बच्चों ही सी फितरत है हम अहले मुहब्बत की
ज़िद करना मचल जाना फिर खुद ही बहल जाना

—सागर आज़मी

तोड़कर देखोगे तो खुद टूटकर रह जाओगे
आइना तो टूटकर भी आइना रह जाएगा

—सीमाब सुल्तानपुरी

फाड़ मत इनको कि जब अपनों से दिल घबराएगा
हौसला देंगी तुझे यह चिट्ठियां रहने भी दे

—राजगोपाल सिंह

आइन नहीं कि चाहिए जब मोड़ दीजिए
शीशा हूं झुक तो सकता नहीं तोड़ दीजिए

—दामक जौनपुरी

रास्तो ! क्या हुए वे लोग जो आते-जाते
मेरे आदाब पे कहते थे कि जीते रहिए

—अज़हर इनायती

शायद मैं एक नया मोती निकाल लूं
तौफीक दे जो डूबने की नाखुदा मिले

—सागर निज़ामी

कोई पाबंदे मोहब्बत ही बता सकता है
एक दीवाने का जंज़ीर से रिश्ता क्या है

—फना कानपुरी

इक जरा-सी बात पर बरसों के याराने गये
लेकिन इतना तो हुआ कुछ लोग पहचाने गये

—अहमद फराज़

तेरा दीवाना गुजरा है जिधर से
खुली हैं खिड़कियां सारे घरों की

—कमाल अहमद सिद्दिकी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तानाशाहों के क्रूर मनोरंजन

ईवान 'भयंकर', पीटर महान, हेनरी अष्टम, मुसोलिनी, इदी अमीन दादा, ज्यां बेदोल बोकासा— संसार के कुछ कुख्यात तानाशाह शासक । पत्रकार-लेखक नेमिशरण मित्तल ने अपनी कृति 'विश्व प्रसिद्ध सनकी तानाशाह' (प्रकाशक— फेमिली बुक्स प्रा. लि., अंसारी रोड, नयी दिल्ली) में ऐसे ही तानाशाहों के जीवन और शासन के कुछ क्रूरतापूर्ण प्रसंगों का विवरण दिया है । प्रस्तुत है, इसी कृति से कुछ अंश ।

हत्याएं करवाने के बाद मृतकों के लिए प्रार्थना

ईवान 'भयंकर' का शौक

ईवान चतुर्थ अपने पिता वासिली तृतीय की मृत्यु के पश्चात मात्र तीन वर्ष की आयु में रूस के राज सिंहासन पर बैठा । किशोरावस्था में ही ईवान के चरित्र में निर्दयता, बर्बरता और दूसरों को पीड़ा पहुंचाकर प्रसन्न होने की प्रवृत्ति प्रकट होने लगी थी । लोगों को जिंदा जलवाने, शिकारी कुत्तों से नुचवाने डुबोकर मरवाने में उसे बहुत आनंद आता था ।

ईवान अजीब ढंग का सनकी सम्राट था । वह जिन लोगों की हत्या करता उनकी सूची और उनके लिए प्रार्थना करने का खर्च दान स्वरूप मठों को भेज देता और उसके साथ यह लिख भेजता :

'हे प्रभु । ऑर्थोडॉक्स ईसाई धर्म में विश्वास करनेवाले उन पुरुषों, महिलाओं और बालकों की आत्मा को शांति प्रदान कीजिए, जिनके नाम और उपनाम इस सूची में दिये गये हैं तथा जो मर चुके हैं ।'

कभी- कभी ऐसा भी होता कि उसकी ओर से मृतकों की सूची न भेजी जाती और तब वह ईश्वर के नाम अपने पत्र में यह पंक्ति जोड़ देता, 'हे प्रभु ! उनके नाम आप स्वयं जानते ही हैं ।' अथवा यह कि 'उनके नाम ईश्वर को ज्ञात हैं ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हदी अमीन

पीटर महान

ईवान भयंकर

सर एडवर्ड ए. बांड ने अपनी पुस्तक '१६वीं शताब्दी के अंत में रूस' में जेरोम हॉर्से के हवाले से लिखा है कि ईवान असहाय, निर्धन, भूखे और अपंग लोगों पर भी अत्याचार करने से नहीं चूकता था । सन् १५७५ में रूस में भयंकर अकाल पड़ा । गांवों से स्त्रियां, पुरुष, बच्चे और अपंग लोग भीख मांगने के लिए शहरों में उमड़ पड़े । मास्को में भी भिखमंगों की भीड़ लग गयी । ईवान ने आदेश जारी किया कि वे सब लोग मास्को छोड़कर अपने गांव लौट जाएं । लेकिन उनके पास खाने को कुछ भी न था, इसलिए उन्होंने जार के आदेश की अनदेखी कर दी । अंततः ईवान गंभीर संकट के उन क्षणों में भी अपनी प्रजा के साथ बर्बर मजाक करने से नहीं चूका । उसने ढिंढोरा पिटवाया कि बाहर से आये हुए समस्त लोग क्रेमलिन चौक में इकट्ठे हो जाएं, जहां जार की ओर से दान बांटा जाएगा । हजारों भूखे लोग निश्चित स्थान पर एकत्र हो गये । और तब, ज़ार के सैनिकों ने हर ओर से उनकी हत्या शुरू कर दी । लोग जान बचाकर भागने लगे, फिर भी इस हत्याकांड में ७०० निरपराध स्त्री, पुरुष, बच्चे और अपंग मारे गये तथा उनके शवों को ईवान के आदेश पर झील में फेंक दिया गया । ईवान ने अपने आदेश में कहा कि 'ज़ार का हृदय भूखी मछलियों के प्रति करुणा से भर उठा है । अतः समस्त लाशों को झील में फेंक दिया गया, जिससे कि मछलियां दावत मना सकें ।' हजारों अन्य भिखारियों को पकड़कर मठों और अस्पतालों में भेज दिया गया, जहां उनकी हत्याएं कर दी गयीं ।

साधुओं का वेश और यातना गृह

ईवान के शेष शासनकाल में अलेक्सान्द्रोवस्किया स्लोबादा उसकी दूसरी राजधानी बन गया था । उसके आदेश पर इस स्थान को एक दुर्गनुमा मठ में बदल दिया गया, जिसका संचालन मठों— जैसे नियमों के अनुसार होता था । ये नियम स्वयं ईवान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने बनाये थे । वहां इवान और उसके प्रमुख दरबारी साधुओं-जैसा वेश धारण करते थे । वहां खूब देर तक गिरिजाघर-जैसी प्रार्थना होती थी । उसके बाद वे भोग-विलास में निमग्न हो जाते और अंत में यातना-गृहों में सताये जा रहे बंदियों की पीड़ा देखकर आनंदित होते ।

शव से बदला
पीटर महान के कारनामे

पीटर महान : निर्ममता, व्यभिचार एवं शराबखोरी की जीती-जागती मूर्ति । वह रूसी शासक जार एलेक्सिस मिहलोविच की दूसरी पत्नी नथाली नरिश्किन का पहला पुत्र था । पिता की मृत्यु के समय वह केवल तीन वर्ष का था । अंततः एक दिन वह रूस की गद्दी पर बैठा ।

पीटर शराब का शौकीन था । उसने अपने मित्रों का एक गिरोह बना लिया था, जिसे वह 'मूर्खों, विदूषकों और शराबियों का गिरोह' कहता था । यह सन् १६९० के आसपास की बात है । पीटर के अतिरिक्त इसमें दो अन्य प्रमुख व्यक्ति थे— पीटर का भूतपूर्व शिक्षक निकिता जोटोव, जिसे 'पोप' के नाम से पुकारा जाता था और दूसरा पीटर की सुरक्षा-पुलिस का मुखिया तथा यातना-गृह का सर्वोच्च अधिकारी प्रिंस फेदोर रोमोदानोवस्की, जिसे 'किंग ऑव प्रेसबरी' की उपाधि दी गयी थी ।

इस क्लब के दो देवता थे— एरेमका और ईवाश्का । एरेमका का अर्थ है— कामदेव और ईवाश्का का वारुणी अर्थात् शराब का देवता । पीटर इस क्लब का उप-पुरोहित था । कल्ब की ओर से सार्वजनिक उत्सवों का आयोजन होता, जिनमें भाग लेना उन लोगों के लिए अनिवार्य था, जिन्हें उसमें बुलाया जाता । अनुपस्थित रहने पर वे दंड के भागी बनते थे । इस अवसर पर कई दिनों तक सार्वजनिक जुलूस निकाले जाते, जिनमें बड़े-बड़े लोग मुखौटे लगाकर विचित्र प्रकार के वाद्य-यंत्र बजाते हुए शोभा-यात्राओं में भाग लेते ।

पीटर कभी-की पशुओं जैसा व्यवहार करता था । उसने अपनी सौतेली बहन सोफी के मामा ईवान मिलोस्लावस्की के रक्तरंजित ताबूत को उसकी कब्र से खुदवाकर निकलवा लिया । फिर उसे एक ऐसी गाड़ी पर लदवाकर, जिसे सूअर खींच रहे थे, फांसी पर भिजवा दिया । उसने सैकड़ों लोगों की हत्याएं करवायीं और अपने दरबार के प्रमुख लोगों की दाढ़ी को, जो उन दिनों पवित्र समझी जाती थी, अपने हाथों से काट डाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरमांस का शौकीन
ईदी अमीन दादा की सनक

ईदी अमीन दादा : यूगांडा का क्रूर तानाशाह । वह एक साधारण सार्जेंट से यूगांडा का सेनाध्यक्ष बना और एक दिन अवसर पाते ही उसने सत्तापहरण कर राष्ट्रपति मिल्टन ओबेटे की जगह स्वयं को यूगांडा का शासक घोषित कर दिया । अमीन अशिक्षित, असभ्य और मानसिक रूप से सनकी तो था ही, वह नरमांस भक्षी और बर्बर हत्यारा भी था ।

सन् १९७२ के अगस्त में अमीन ने तंजानिया के राष्ट्रपति जूलियस न्येरेरे के नाम एक तार भेजा, 'मैं आपको यह आश्वासन देना चाहता हूं कि मैं आपसे बहुत प्रेम करता हूं। यदि आप स्त्री होते तो मैं आपके साथ विवाह करने के बारे में सोचता हालांकि आपका सिर सफेद बालों से भरा हुआ है । परंतु आप पुरुष हैं इसलिए अब यह संभावना ही उत्पन्न नहीं होती ।' इसी प्रकार जब अमरीका के राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन वाटरगेट संकट के दौर से गुजर रहे थे, तब अमीन ने उनके नाम एक बेहूदा तार भेजा, 'भगवान आपको वाटरगेट की बीमारी से शीघ्र ही अच्छा करें ।'

वह इतना बर्बर था कि दूसरों को चोट पहुंचाते समय उनका अपमान भी करता था । अगस्त, १९७३ में जब उसे यूगांडा के एशियाई नस्ल के ४० हजार नागरिकों को बाहर खदेड़ना और उनकी संपत्ति को हथियाना शुरू किया, उस समय उसने अपने एक भाषण में लोगों के साथ एक क्रूर व्यंग्य किया, 'यूगांडा में बसे एशियाई नस्ल के कुछ लोग अपने बदन को जूते की पॉलिश से काला कर रहे हैं । एशिया के लोग हमारे भाई-बहन हैं तथापि उनमें से किसी को काले पॉलिश से अपना चेहरा पोतते हुए पाया गया तो उसके विरुद्ध अनुशासन की कार्रवाई की जाएगी ।'

अमीन ने सत्ता हथियाने के तुरंत बाद यूगांडा में जघन्य हत्याओं का एक युग ही शुरू कर दिया । उसकी सूची में सबसे पहला नाम थलसेनाध्यक्ष ब्रिगेडियर हुसैन का था । अमीन के वफादार सैनिकों ने ब्रिगेडियर हुसैन को गिरफ़्तार कर लिया और वे उसे एक ऐसी जेल में ले गये, जहां सुरक्षा का अत्यधिक प्रबंध था । उन्होंने जेल के वार्डनों के सामने ही राइफलों के कुंदों और बूट की ठोकरों से हुसैन को कूटना-पीटना शुरू कर दिया । यह देखकर वार्डन आतंकित हो गये । इसके बाद सैनिकों ने मरणासन्न ब्रिगेडियर हुसैन को एक बख्तरबंद सैनिक-गाड़ी में डाला और बंदूक के कुंदों से उनकी धुनाई करते हुए जेल से चले गये ।

इस जघन्य दुर्व्यवहार के कारण हुसैन का दम निकल गया । उनका सिर धड़ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अलग कर दिया गया और उसे ले जाकर अमीन के सामने उसकी मेज पर रख दिया गया। अमीन उस सिर को काफी देर तक खरी-खोटी सुनाता रहा। उसके बाद उसने उस सिर को उठाकर फ्रिज में रख दिया।

अमीन को जिन लोगों की वफादारी में शंका थी, उनमें से कुछ को तो मार्किडाय जेल में डाल दिया। शाम पड़ते ही अमीन के वफादार सैनिक अफसर उन बंदियों की बैरक में घुसे और उन्होंने उनकी निर्दयतापूर्वक पिटाई शुरू कर दी। उनका पेट हंसिए-जैसे चाकुओं से चीर डाला गया और दिन निकलने से पहले उनके शव सैनिक गाड़ियों पर लादकर विभिन्न स्थानों पर पहुंचा दिये गये। दिन निकलने पर पास की कोठरी के कैदियों को लोहे के तारों वाले ब्रुश दिये गये तथा उनसे कहा गया कि तुम उस बैरक का फर्श खुरचकर और पानी से धोकर साफ करो। उनमें से एक ने बाद में बताया, 'फर्श पर खून की चौथाई इंच मोटी परत जमी हुई थी, बीच-बीच में खोपड़ी के टुकड़े, दांत, मस्तिष्क के तंतु और दर्जनों कारतूसों के खोल पड़े हुए थे।'

अमीन ने निर्दोषों की हत्या लकड़बग्घों की तरह करवायीं। उसके आदेश पर सेना के ३२ वरिष्ठ अधिकारियों को एक ऐसे कमरे में बंद किया गया, जिसके चारों ओर बारूदी सुरंग बिछायी गयी थी। बाद में सुरंग को आग लगा दी गयी, जिससे वे सब अफसर मारे गये। विस्फोट से इतनी तेज आवाज हुई कि लोग चौंक गये, तब घबराये हुए लोगों को बताया गया कि क्षतिग्रस्त बमों का विस्फोट किया गया है।

एक बार अमीन को एक पूरी बटालियन की वफादारी पर संदेह हो गया। उस बटालियन के समस्त जवानों और अफसरों को कर्टुमा जल प्रपात पर पहुंचने का आदेश दिया गया। जहां उनकी हत्या कर उनके शव जलप्रपात में फेंक दिये गये। उनके संबंधियों की भी उसी प्रकार हत्या की गयी। अमीन के गुंडों ने स्त्रियों की हत्या करने से पहले उनका शील भ्रष्ट किया। बाद में अमीन ने अपने खुशामदियों से हंसकर कहा, 'मैंने बड़े पुण्य का कार्य किया है, उस प्रपात के मगरमच्छ बहुत भूखे थे, इनसान की लाशें खाकर उन्हें तृप्ति मिली होगी। वे निश्चित ही मुझे दुआएं देते होंगे।'

अमीन का स्वभाव इतना बर्बर था कि दूसरों को कष्ट पहुंचाकर उसे खूब सुख मिलता था और यह सुख प्राप्त करने के लिए वह किसी भी सीमा तक जा सकता था। उसने प्रथम इंफ्रेंट्री ब्रिगेड के कमांडर मेसेरा अराक को तरह-तरह की तंत्रणाएं दिलवायीं और पीट-पीटकर मरवा डाला।

इदी अमीन बर्बर हत्यारा ही नहीं नरमांस-भक्षी भी है। उसके भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि जब अमीन के भूतपूर्व थलसेनाध्यक्ष ब्रिगेडियर चार्ल्स अरुबे की अस्पताल के शव-गृह में लायी गयी, तब अमीन अकेला ही शव-गृह में गया। उसने अस्पताल के अधीक्षक से कहा कि वह बाहर ठहरे और शव-गृह का दरवाजा मजबूती से बंद कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे। अमीन चंद मिनट शव-गृह में रहा, उसने जब से एक चाकू निकाला, उसे अरुबे की लाश में गाड़ दिया फिर उसका रक्त चखा और उसके एक मांस का एक लोथड़ा कच्चा ही सटक गया। वह नरमांस का बहुत शौकीन था। एक बार वह कुछ सरकारी अधिकारियों के सामने यह बता रहा था कि जब वह जायरे की राजकीय यात्रा पर गया तो उसे बंदर का मांस परोसा गया। जब उसने देखा कि उसके श्रोता यह सुनकर स्तंभित हो गये हैं, तब उसने यह कहकर उन्हें सन्न कर दिया, 'बंदर के गोश्त का तो कहना ही क्या मुझे तो नरमांस भी बहुत स्वादिष्ट लगता है।' इसे भाग्य की विडंबना ही कहा जाएगा कि वहां जितने लोग उपस्थित थे, उनमें से एक को छोड़कर सभी अमीन की बर्बरता का शिकार हुए, मारे गये और उनका मांस अमीन ने खाया। अमीन को नरमांस के साथ चीते के मांस का भी शौक था लेकिन उसकी अपेक्षा उसे नरमांस का नमकीन स्वाद अधिक पसंद था।

फरवरी, १९७४ में अनपढ़ अमीन को मकरेरे विश्वविद्यालय में दीक्षांत भाषण के लिए आमंत्रि किया गया। वहां यूगांडा के विदेश मंत्रालय की एक वरिष्ठ अधिकारी एलिजाबेथ बगाया भी मौजूद थी। एलिजाबेथ बगाया तरुणी तो थी ही, सुंदर भी थी। अचानक अमीन की निगाह उस पर पड़ गयी और उसने उसे मंच पर बुला लिया। कुछ समय पूर्व ही वानुम किबंडी के स्थान पर अमीन ने मिचेल ओन्गोगा को विदेश-मंत्री बनाया था। ओन्गोगा भी मंच पर उपस्थित था। अमीन ने माईक हाथ में लेकर ओन्गोगा को विदेश-मंत्री के पद से हटाने और उसके स्थान पर एलिजाबेथ बगाया की नियुक्ति की घोषणा कर दी।

इसके कुछ घंटे बाद ही अमीन के गुंडों ने ओन्गोगा की हत्या कर दी। अब अमीन ने एलिजाबेथ की ओर हाथ बढ़ाना शुरू किया किंतु एलिजाबेथ ने उसका प्रतिरोध किया। अमीन ने उसका हृदय जीतने के लिए उसे संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा में यूगांडा के प्रतिनिधिमंडल की नेता बनाकर भेज दिया। जिस समय वह न्यूयॉर्क में थी, अमीन ने उसे यूगांडा का सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया। राजधानी कंपाला लौटकर वह अमीन से मिलने उसके कार्यालय में गयी और जैसे ही वहां से बाहर निकली, उसे यह आरोप लगाकर पद से हटा दिया गया कि न्यूयॉर्क से लौटते समय पेरिस के चार्ल्स द गाल हवाई अड्डे के शौचालय में उसने किसी पर-पुरुष के साथ अनैतिक संबंध स्थापित किये। एलिजाबेथ इसका अर्थ समझती थी। वह तुरंत यूगांडा से भाग निकली और उसने अपने जीवन तथा अपनी मर्यादा की रक्षा कर ली।

मार्च, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपेदिक के विरुद्ध अभियान

1. यदि आपको लगातार दो हफ्तों से भी अधिक समय से खांसी है या थूक में खून आता है, तो हो सकता है, आपको फेफड़ों की तपेदिक हो।

2. अपने नजदीकी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, औषधालय या तपेदिक केन्द्र पर स्वयं की, विशेष कर अपने थूक की, जांच कराएं।

3. तपेदिक का इलाज किया जा सकता है, बशर्ते डाक्टर द्वारा बताई गई दवाइयां नियमित रूप से निर्धारित अवधि तक ली जाएं।

4. बचाव हमेशा इलाज से बेहतर है। इसलिए अपने बच्चे को बी.सी.जी. का टीका लगवाएं।

केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय)
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय,
कोटला रोड, नई दिल्ली- 110002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपोलियन की नकल

बोकासा का पागलपन

जीन बेदेल बोकासा : मध्य अफरीकी गणतंत्र का तानाशाह शासक । विश्वासघात द्वारा ही वह देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचा था । १८ अप्रैल १९७९ को उसने सौ विद्यार्थियों की निर्मम हत्या करवा दी थी । वह बेहद क्रूर था ।

बोकासा ने अपने देशवासियों की घोर निर्धनता और उनके बीच व्यापक भयानक आर्थिक विषमताएं दूर करने के बजाय यह आदेश जारी कर दिया कि पहली बार चोरी करने पर चोर का एक कान काटा जाएगा, दूसरी बार दूसरा, तीसरी बार एक हाथ और चौथी बार दूसरा हाथ । यह कठोर और अमानवीय दंड-विधान भी देश में चोरी को नहीं रोक सका क्योंकि लोगों के पास पेट भरने को कुछ न था । यह देखकर बोकासा पाशविक बर्बरता पर उतर आया और उसने उन तमाम लोगों को जो चोरी के आरोप में पकड़े गये थे, जेल के आंगन में अपने सामने इकट्ठे करवाया । उसके आदेश पर सैनिकों ने १० मिनट तक डंडों और राइफलों के कुंदों से बंदियों की पिटाई की । उनमें से तीन की तत्काल मृत्यु हो गयी और ४३ के हाथ-पांव टूट गये । उसकी बर्बरता यहीं समाप्त नहीं हुई, उसने अपनी सनक के शिकार मृतकों और घायलों का सार्वजनिक प्रदर्शन आयोजित किया ।

बोकासा ने राज्याभिषेक की तैयारियों के सिलसिले में सबसे पहले एक समिति का गठन किया, जिसे यह काम सौंपा गया कि वह सन् १८०४ में हुए नेपोलियन के राज्याभिषेक-समारोह का पूरा विवरण तलाश करे । उसके बाद फ्रांस के डूएज नगर की एक ऐसी फर्म से दो टन भार का सोने से मढ़ा हुआ सिंहासन तैयार कराया गया जो विशेष तौर पर समारोहों से संबंधित सामग्री तैयार करने में विशेषज्ञ मानी जाती थी । यह सिंहासन उड़ती हुई चील के आकार का था । अब राजमुकुट की बारी थी । उसकी तैयारी का काम फ्रांस की उसी प्रसिद्ध जौहरी की फर्म को सौंपा गया, जिसने नेपोलियन के राजमुकुट के नमूने पर बोकासा का मुकुट तैयार किया । मुकुट में ८ हजार हीरे और असंख्य मोती तथा पन्ने जड़े गये थे तथा ठीक सामने की ओर १३८ कैरेट का हीरा था । बोकासा ने पोशाकें तैयार कराने वाली उसी फ्रांसीसी फर्म से १३ पोशाकें तैयार करायीं, जिसने सन् १८०४ में नेपोलियन की पोशाकें तैयार की थीं । राज्याभिषेक के समय पहनी जाने वाली पोशाक का वजन १.५ किलोग्राम था और उसमें ७ लाख ८५ हजार मोती तथा १२ लाख २२ हजार मनके जड़े हुए थे । यों उसकी अन्य पोशाकें भी जड़ाऊ थीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

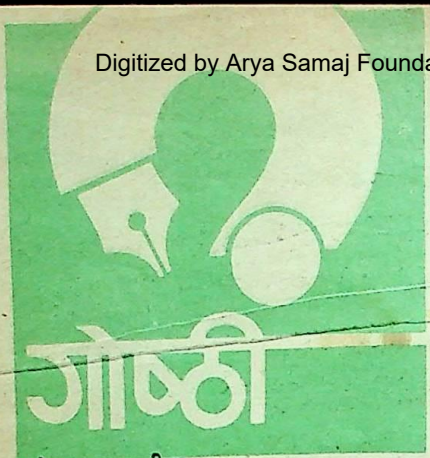

ब्रह्मदेव झा, समस्तीपुर

प्र. क्या अन्य किसी देश में भी जनप्रतिनिधियों (सांसदों) को सेवानिवृत्ति पेंशन देने का प्रावधान है; यदि हां, तो कितनी सेवाकाल के बाद ?

☐ ब्रिटेन में ही है । कम से कम दस वर्ष सदस्य रहने के बाद १४८८ पौंड वार्षिक पेंशन दी जाती है । उसकी विधवा को भी आधी पेंशन मिलती है ।

रवीन्द्र सिंह, लखनऊ

प्र. स्वतंत्रोत्तर भारत में अब तक कौन-कौन उप-प्रधानमंत्री हो चुके हैं ?

☐ सरदार वल्लबभाई पटेल, श्री मोरारजी देसाई, श्री चरण सिंह, श्री जगजीवन राम (दोनों एक ही समय में), श्री यशवंतराव बलवंत राव चव्हाण और अब श्री देवीलाल ।

दीपिका कुकरेजा, बरेली

प्र. सबसे पहले विश्व कोश किस देश में संकलित किया गया था ।

☐ अब तक ज्ञात रिकॉर्ड के अनुसार प्लैटो के शागीजे स्पेसयस ने ईसा पूर्व ३७० में एथेंस में एक विश्व कोश का संकलन किया था ।

संजय लाल कपरदार, गिरिडीह

प्र. भारत का प्रथम हिंदी दैनिक समाचारपत्र कौन था ?

☐ समाचार सुधावर्षण [illegible] १८५४ में प्रारंभ होकर १९०० तक छपता रहा । यह हिंदी और बंगला दोनों में एक साथ प्रकाशित होता था । श्री श्याम सुंदर सेन इसके संपादक थे । 'उदंत मार्तंड' को पहला समाचार पत्र माना जाता है, परन्तु वह दैनिक नहीं था ।

शिवनारायण गुप्त, एकदिल (इटावा)

प्र. संसार में सबसे अधिक समय तक राज करनेवाले राजाओं का भी कोई रिकॉर्ड है ?

☐ प्राचीन मिस्र के छठे फिराउन वंश का राजा पेपी द्वितीय ईसा पूर्व २२८१ में ६ वर्ष की अवस्था में सिंहासन पर बैठा था और उसने ९४ वर्ष राज किया । अराकान (बर्मा) के राजा मिन्हटी ने १२७९ और १३७४ के बीच ९५ वर्ष तक राज किया । पश्चिमी टेंगानायिका (अब तंजानिया का एक भाग) के एनजेवा जिले के सरदार मुसोमा केनिजो ने १८६४ में ८ वर्ष की अवस्था से २ फरवरी १९६३ को अपनी मृत्यु तक ९८ वर्षों से भी अधिक राज किया ।

सुमनलता प्रधान, दुर्गापुर

प्र. भारतीय रियासतों के विलीनीकरण के बाद अधिकतम और न्यूनतम प्रिवी पर्स किन राजाओं को मिले थे ?

☐ हैदराबाद के निजाम को ४२ लाख ८५ हजार ७१४ रु. और कटोदिया के राजा को १९२ रु. प्रति वर्ष दिये जाते थे, लेकिन निजाम के उत्तराधिकारी का प्रिवी पर्स २० लाख रु. वार्षिक निश्चित किया गया था ।

गुड़िया, हाजीपुर

प्र. 'ब्रेन ट्यूमर' क्या होता है, इसके लक्षण, कारण तथा बचने के उपाय क्या हैं ?

☐ मस्तिष्क के किसी भी भाग में उत्पन्न रसौली को 'ब्रेन ट्यूमर' कहते हैं । सिर दर्द, चक्कर, बेहोशी तथा मिर्गी के दौरे इसके लक्षण हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारणों की खोज अब भी पूरी नहीं हुई ।

के. पी. बरमैया, जमनीपाली (कोरबा, म. प्र.)

प्र. विभिन्न प्राणियों के रक्त में सभी तत्वों की मात्रा तथा प्रकार एक रहते हैं या भिन्न ?

☐ प्रायः भिन्न-भिन्न ।

उदयवीर चौहाण, प्रतापगढ़

प्र. उत्तर और दक्षिण भारत की नदियों में क्या अंतर है ?

☐ उत्तर भारत की नदियों का जल स्त्रोत बारहमासी है जिसका उपयोग सिंचाई तथा बिजली के उत्पादन के लिए किया जाता है । इन नदियों से उपजाऊ मिट्टी प्राप्त होती है, जबकि दक्षिण की अधिकतर नदियों को वर्षा से जल प्राप्त होता है और वर्ष में अधिकतर वे लगभग सूखी रहती हैं ।

माणक चंद सुथार, कोलायत (राज.)

प्र. रग्बी खेल की शुरूआत कब और कहां हुई थी और इसके खिलाड़ी क्या आपस में धक्का-मुक्की भी करते हैं ?

☐ यह खेल ही धक्का-मुक्की का है । इसका गेंद अंडाकार होता है, जिसे खिलाड़ी हाथों में पकड़ कर भागता है और दूसरे पक्ष के खिलाड़ी उससे गेंद छीनने का प्रयास करते हैं । इसमें प्रत्येक पक्ष में १५ खिलाड़ी होते हैं । इसकी शुरूआत इंगलैंड की वारिकशायर काउंटी में इसी नाम के शहर में १८२३ में हुई थी ।

अशोक अय्यर, जैसलमेर

प्र. गलगंड या घेंघा रोग क्यों होता है ?

☐ आयोडीन की कमी से थायरॉयड ग्रंथि बढ़ जाती है, जिसे घेंघा कहते हैं ।

पंकज गोयल, नयी दिल्ली

प्र. हमारे पैर के सो जाने पर हरकत क्यों नहीं होती ?

☐ हमारी मांसपेशियां शरीर के विभिन्न भागों को हरकत में लाती हैं, लेकिन वे स्नायु-तंत्र के आदेश पर ही काम करती हैं । स्नायुतंत्र और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांसपेशियों का संबंध बहुत ही सूक्ष्म रक्तवाहनियों से जुड़ा होता है । लेकिन स्नायु-तंत्र द्वारा आदेश दिये जाने के पूर्व उसे संवेदी स्नायु नामक एक भिन्न स्नायुतंत्र से आदेश मिलता है । हमारे शरीर का प्रत्येक भाग हमारे मस्तिष्क से इन स्नायुओं द्वारा जुड़ा होता है । पैर पर अत्यधिक दबाव पड़ने पर रक्तवाहनियों में रक्त का संचार न हो पाने से बाधा पड़ जाती है और वह मस्तिष्क से आदेश नहीं ले पाती हैं । इसी को हम पैर का सोना कहते हैं ।

पूर्णचंद्र गोस्वामी, वाराणसी

प्र. शेक्सपियर का स्मारक कहां है, उसे किसने बनवाया था ?

☐ स्ट्रेटफर्ड-अयॉन-एवन (इंगलैंड) में शेक्सपियर का घर ही उसका स्मारक है । इसका रख-रखाव शेक्सपियर ट्रस्ट करता है ।

रुद्र प्रताप संखवार, हजारीबाग

प्र. अंटार्कटिका की जलवायु किस प्रकार की है और उसकी पर्यावरणीय रक्षा हमारे लिए क्यों जरूरी है ?

☐ संसार में सबसे ठंडा महाद्वीप अंटार्कटिका है जहां मुख्यतया बर्फ से ढके पठार पाये जाते हैं । एक अनुमान के अनुसार संसार की लगभग ९० प्रतिशत बर्फ यहां है और यदि यह बर्फ पिघल जाए तो समुद्र की सतह २०० फुट से अधिक बढ़ जाएगी जिससे पृथ्वी का एक बड़ा भूभाग डूब जाएगा ।

रमाकांत श्रीमाली, मंदसौर

प्र. भारत में पुलिस व्यवस्था की शुरूआत कब, किसने की थी ?

☐ ईस्ट इंडिया कंपनी ने ७ दिसंबर १७९२ को जिस पुलिस बल का गठन किया था, वह आधुनिक पुलिस है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

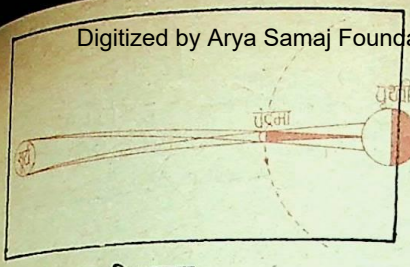

बुद्ध प्रकाश मुराहरि, नागपुर

प्र. क्या पूर्ण सूर्य ग्रहण पूर्ण चंद्र के अवसर पर ही होता है ?

☐ जी नहीं । पूर्ण सूर्य ग्रहण केवल कृष्ण पक्ष में ही होता है ।

ब्रजदत्त कंडपाल, रानीखेत

प्र. आखिर जीभ में ऐसा क्या है जो स्वाद बता देती है ?

☐ जीभ के ऊपरी भाग पर बहुत छोटे-छोटे 'टेस्ट बड' दाने होते हैं, ये स्वाद बताने के लिए सक्रिय रहते हैं । हमारी जीभ चार तरह के स्वाद बताती है— मीठा, कड़वा, खट्टा और नमकीन । जबान का अगला भाग मीठे और नमकीन के प्रति संवेदनशील है, पिछला भाग कड़वे के प्रति और दोनों किनारे खट्टे के प्रति । बीच के भाग में स्वाद कोशिकाएं न होने के कारण इससे कुछ पता नहीं चलता । कब्ज या बदहजमी की स्थिति में नि कणिकाओं पर जमाव आ जाने से स्वास बताना कठिन होता है ।

पूर्णिमा बनर्जी, देहरादून

प्र. गर्भाशय का कैंसर न हो इसे रोकने के लिए क्या करना चाहिए ?

☐ शिशु जन्म से संबंधित सभी घावों का इलाज छह माह के अंदर करा लीजिए, योनि के सभी अप्राकृतिक स्रावों की जांच अच्छे क्लिनिक में तुरंत करा लीजिए । ३५ वर्ष की अवस्था की स्त्रियां प्रति वर्ष डॉक्टरी जांच कराती रहें, इसके बाद अर्ध-वार्षिक । रजोनिवृत्ति (मेनोपॉज) के बाद रक्त स्राव की जांच तुरंत आवश्यक है ।

भगवती पासवान, धनबाद

प्र. संसार में सबसे अधिक अवस्था के प्रधान मंत्री कौन हुए ?

☐ 'लिमका बुक ऑफ रिकार्ड्स' के अनुसार श्री मोरारजी देसाई सबसे अधिक आयु में प्रधानमंत्री बने । २४ मार्च १९७७ को वे प्रधानमंत्री बने थे । तब उनकी आयु ८१ वर्ष थी । विश्व में दूसरा नाम नहीं मिलता ।

रूलिया राम, मुजफ्फरपुर

प्र. संसार में किस बैंक की सबसे अधिक शाखाएं हैं ?

☐ स्टेट बैंक ऑव इंडिया की, १०,९७६ शाखाएं हैं जिनमें इसके सहायक बैंकों की शाखाएं (३,४३९) भी शामिल हैं ।

आशुतोष जैन, जबलपुर

प्र. क्या यह सही है कि अमरीका के पॉप सिंगर माइकेल जैक्सन, स्त्रियों के हारमोन लेते हैं ?

☐ वह एक बार इसको स्वीकार कर चुके हैं और दो बार इसका परोक्ष रूप से खंडन कर चुके हैं ।

चलते-चलते

शिकायत

एक चोर : दिन में चोरी करने गया पर मैं खाली हाथ लौटा, क्यों ?

दूसरा आदमी : अजी, मैं तो रात में चोरी करने गया था, तब भी खाली हाथ लौटा था ।

—सूत्रधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीकी डॉक्टर की विदेश-यात्रा

प्रस्तुति : राज बुद्धि राजा

इटली में

एक डॉक्टर इटली की यात्रा करने गया । कई जगह घूमने के बाद, "सर ! अब मैं आपको ऐसी चीज दिखाता हूं जो अपने आप में अद्‌भुत है", गाइड ने रहस्यपूर्ण मुद्रा में कहा, "यह देखिए । यह कोलंबो का लिखा पत्र है । उसने खुद अपने हाथ से लिखा था !"

"कौन कोलंबो ?"

"वही जिसने अमरीका की खोज की थी ।"

"झूठ बोलता है ? अजनबी समझकर उल्लू बनाता है ? अमरीका में रहता है, पर वह आज तक हमारे पास कभी नहीं आया ।"

= = =

"यह देखिए । इजिप्ट की हजारों साल पुरानी राजसी ममी ।"

"इसमें रहनेवाले आदमी का क्या नाम है ?"

"मालूम नहीं ।"

"क्या वह यहीं पैदा हुआ था ?"

"मालूम नहीं ।"

"क्या वह यहीं मरा था, इसी घर में ?..."

... ... ।

"कैसे मरा था ? हैजा, जुकाम, बुखार, पीलिया या चेचक से ?"

"बीमार था तो मेरे पास क्यों नहीं लाया ?"

"पहले मेरा इलाज कीजिए सर ।"

पस्त होते गाइड ने कहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान में

'हम कितने भाग्यशाली हैं कि अमरीका में हिरोशिमा-नागासाकी नहीं हैं ।' डॉक्टर ने सोचा ।

टोक्यो टॉवर के इर्दगिर्द पर्यटकों का झुंड ।

"खेद की बात है कि इस टॉवर को बनानेवाले अब इस दुनिया में नहीं हैं । आइए उनकी याद में एक-एक आंसू बहाएं ।' गाइड ने उदासी-भरे स्वर में कहा ।

"बाहों में बाहें डाले, रंग-बिरंगी पोशाकें पहने लोगों की आवा-जाही । खेद की बात क्यों है ? बेवकूफ है ।"

"माफ कीजिएगा, हमने अपने भाई-बंधु के लिए भी कभी आंसू नहीं बहाए ।" डॉक्टर ने कहा ।

महिलाओं के लिए

श्रीमती पारटिंगटन उधेड़बुन में थी कि ग्यारह डॉलर लेने के लिए वह बैंक खुद जाए या अपने पति को भेजे । कहीं वह पैसा लेकर चंपत न हो जाए । रुपये-पैसे के मामले में तो किसी पर भी विश्वास नहीं करना चाहिए । यहां तक कि अपने आप पर भी नहीं । और वह आराम से आराम कुरसी पर बैठ गयी ।

= = = =

पालतू बिल्ली ने खाने-पीने का सामान चौपट कर दिया था ।

"इसे ठंडे पानी के टब में डुबो दूंगी ।" गुस्से से कांपती महिला ने कहा ।

पशुओं के प्रति इतना निर्मम नहीं होना चाहिए । इसलिए "खौलते पानी के टब में ।"

= = = =

प्रेमी-प्रेमिका

प्रेमी-प्रेमिका आत्महत्या करने नदी के पुल पर पहुंचे ।

"पहले तुम डार्लिंग ।"

"खाते वक्त तो तुमने कभी नहीं कहा," प्रेमिका ने कहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शार्ट ड्रेस

"महिलाओं के लिए 'नये कास्टयूम' 'नये कस्टम' ।" गाता-बोलता फुटपाथिया ।

"पुरानीवाली कस्टमों का क्या हुआ ?"

"मैडम कास्टयूम कास्टयूम यानि ये शार्ट ड्रेस ।"

"हम अपनी लांग ड्रेस को शार्ट कर लेंगे ।"

आत्महत्या

'आत्महत्या के तरीके', 'अमरीकी लेखिका ने अपनी डायरी में लिखा ।'

'नस काट कर' । 'नहीं, जख्म भरने में वक्त लगेगा ।'

'नदी में कूदकर ।' (किसी के हाथ में हाथ डालकर)

'नहीं, जुकाम हो जाएगा ।'

'जहर खाकर' । 'नहीं, जिस्म नीला पड़ जाएगा ।'

'छोड़ो जी । जिसे करनी होगी वह खुद ही सोच लेगा ।'

लिंकन का अंधेरा कोना

ऊंचे-ऊंचे पेड़ों से घिरा सफेद बंगला, चहचहाते पक्षी, हरी-हरी घास, फूलों की रंगत, संगीत की धुन पर ताल देते फव्वारे ।

प्रवेशद्वार पर लिखा था, 'लिंकन का अंधेरा कोना ।'

× × × ×

दराज

आदरणीय,

अपना त्यागपत्र भेज रहा हूं । आशा है तब तक आप भी त्यागपत्र दे चुके होंगे । यदि नहीं तो मेज की दराज खोलते-खोलते दे देंगे । अलमारी की चाबी इस दराज में रखी है । उसके कोड नंबर हैं '३३' '६६' '९९' । नहीं जानता कि पहले कौन-सा नंबर घुमाना है । मैं पिछले पांच वर्षों से ये नंबर घुमा रहा हूं लेकिन दराज नहीं खुली । आप कोशिश कीजिए ।

आपका..... ।

× × × ×

लोमड़ी

प्रिय संपादकजी,

आपको मुझे चिट्ठी लिखनी चाहिए थी और मुझसे पूछना चाहिए था कि मेरा काम-धंधा कैसे चल रहा है ? नहीं लिखी तो मैं बताता हूं कि किसी जमाने में सर्कस दिखाता एक जगह से दूसरी जगह तंबू गाड़ता रहता । अब सभी ताकतवर जानवर भागकर 'जंगल के राजा' बन गये हैं । मेरे पास सिर्फ एक लोमड़ी और दो गीदड़ बचे हैं । लोमड़ी सो रही है और गीदड़ आपको सौंपे जा रहा हूं । प्राप्ति सूचना नहीं चाहिए, क्योंकि मेरा अपना कोई तंबू नहीं है । धन्यवाद !

आदरणीय आपका

.... ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● डॉ. सतीश मलिक

शीघ्र पतन

व., गाजियाबाद : मेरी शादी हुए ३ मास हो गये हैं। परंतु मुझे संभोग का सही सुख प्राप्त नहीं हुआ क्योंकि मुझे वीर्य शीघ्र स्खलन का रोग है। मैं एक बार भी अपनी पत्नी को संतुष्ट नहीं कर सका। अब तो मुझे डर पड़ गया है कि कहीं पत्नी मायके में जाकर मेरी कमजोरी के बारे में न बता दे। कुछ तेल या खाने की गोली आदि लिख दें तो अति कृपा होगी।

आपका इलाज वास्तव में केवल दवा से नहीं किया जा सकता। आपकी पत्नी का सहयोग भी आवश्यक है। आपको इसके इलाज के लिए मास्टर्ज व जॉनसन द्वारा बतायी विधि का प्रयोग करना चाहिए :

१. सर्वप्रथम आप अपनी पत्नी व आपके बीच यदि कोई मनोवैज्ञानिक दीवार है तो उसे ह्यायें। साथ ही यदि कोई आपकी प्राइवेसी ही नहीं तो भी यह इलाज असंभव है।

२. आपकी यह हालत इस वजह से भी है क्योंकि आपको परफारमेंस एंजाइटि है— यानि कि आपकी हर रात पत्नी के सामने परीक्षा होती है और आपको चिंता खाये जाती है कि आज भी मैं उत्तीर्ण हूंगा या नहीं ? वास्तव में मानसिक तनाव, चिंता, उदासीनता का दुष्चक्र ही इसका अब मूल कारण बन गया है।

३. आप दोनों मस्तिष्क के आराम की अवस्था में तनावरहित मनोस्थिति में पति-पत्नी के रूप में सोयें, परंतु संभोग न कर एक-दूसरे के बदन को छुएं तथा आनंद प्राप्त करें।

४. जब कुछ दिन आप तीसरी अवस्था में पहुंच कर आत्मविश्वास उत्पन्न कर लें, तब संभोग करें, परंतु स्खलन होने से पूर्व ही आप अपनी इंद्री यौनि से बाहर निकाल लें।

५. इस प्रकार की क्रिया द्वारा आप अपनी समस्या पर शीघ्र ही विजय पा लेंगे।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

कुत्ते ने काटा

संजय त्रिवेदी, सागर : २१ वर्ष का एम.ए. का छात्र हूं। ४ साल पहले कुछ लोगों से बातचीत कर रहा था कि मुझे १० साल पहले एक साधारण कुत्ते ने काटा तथा कुछ साल बाद वह पागल होकर मर गया। इस पर एक व्यक्ति ने कहा—वह कुत्ता पागल हो या सामान्य, उसके काटने से मनुष्य कभी न कभी पागल होकर ही रहता है। तब से मैं पागलपन की बातें सोचने लगा। पागलों के बारे में सोचता रहता हूं तथा काम लगन से न कर दिनभर तनावग्रस्त रहता हूं। अपने ऊपर से विश्वास हटने लगा और इस प्रकार अपना भविष्य बिगाड़ने लगा।

कुत्ता एक वफादार जानवर है—मनुष्य का वह मित्र है। परंतु जब उसे रेबीज नामक रोग हो जाए, तब वह अपने मालिक को भी काट सकता है। इसलिए उसे पागल कुत्ता कहा जाता है। इस कुत्ते के काटने से मनुष्य को रेबीज हो जाती है, परंतु पागलपन की बीमारी नहीं। यदि आपको रेबीज होनी होती तो अब तक हो चुकी होती तथा आप जीवित न होते। पागलपन के लक्षण और होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षात प्रतिमा का ध्यान

कु.अ.पा., मथुरा : मेरी आयु २३ वर्ष की है । अकस्मात सिर में खुजली की शिकायत हुई, बाल उड़ने लगे । खुजली की दवाएं लीं जिससे मन में उलझन होने लगी । ३-४ साल बाद मानसिक स्तर ठीक हुआ, पर अब पढ़ नहीं पाती । पढ़ते समय मंदिर की साक्षात प्रतिमा मन में ध्यान आने लगती है । ईश्वर की ओर ध्यान खिंच गया है । पढ़ाई का क्रम भी छूट गया । अथक परिश्रम करने पर भी निराशा ही हाथ लगी है । मन में यह लगता है कि भगवान गोदी में बिठाये हुए हैं । घंटों इसी प्रकार का अनुभव होता है । स्वप्न में कई बार अपने को मरा हुआ देखती हूं तथा आत्मा अलग खड़ी शरीर को देख रही होती है । दवाई ५ साल से चल रही है । मानसिक स्तर पूर्णतयः स्वस्थ है । पर यह 'आध्यात्मिक' शक्ति प्रबल होने लगी है । कभी हम आकाश में उड़ रहे होते हैं । पहले भी पत्र लिखा था, परंतु निराशा ही हाथ लगी ।

कई बार बिना सही डॉक्टरी नुस्खे के ऐसी दवाएं नुकसान भी कर सकती हैं । परंतु यह सब कुछ केवल दवा का ही कुप्रभाव है, ऐसा मानना कठिन है । वास्तव में आपको पढ़ाई व प्रतियोगिता के क्षेत्र में समस्याएं हैं । आप में कल्पना शक्ति प्रबल है । कई बार जीवन की समस्याओं से भाग कर लोग धर्म का आश्रय लेते हैं । आपको दवा के अतिरिक्त किसी ऐसे मनोचिकित्सक की आवश्यकता है, जिससे आप अपनी व्यक्तिगत समस्याएं भी बता सकें ।

स्मरण शक्ति कमजोर

प्र.गु., शेखपुरा : १७ वर्षीय कला का छात्र हूं । बात कुछ ऐसी है कि लिखते शर्म आती है । परंतु रोग छिपाने से बढ़ता है, घटता नहीं । हिम्मत बांधकर पत्र लिख रहा हूं । करीब डेढ़ या दो वर्ष से कुछ लड़कों से निजी संबंध हो गया तथा बाद में मुझे अप्राकृतिक मैथुन की आदत पड़ गयी थी । अब दो माह से यह आदत छोड़ दी है, स्मरण शक्ति कमजोर हो गयी है । दिमाग तनावग्रस्त हो गया है । पढ़ाई में मन नहीं लगता । तरह-तरह के गंदे विचार मन में आने लगे हैं । कुछ समय से अपने अंडकोष में परिवर्तन देख रहा हूं । पहले की अपेक्षा काफी छोटा हो गया है । मुझे अब ऐसा लगता है कि मैं शादी योग्य नहीं रहा । कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि मैं आत्महत्या कर लूं । परंतु फिर विचार आता है कि यह बुजदिली होगी । मैं किसी से यह भी नहीं कह पाता कि मेरा परीक्षण करवा दो । घरवालों से शर्म करता हूं । कहीं परीक्षण की रिपोर्ट देखेंगे तो क्या सोचेंगे— घबरा जाता हूं । क्या इसके लिए कोई खास डॉक्टर होता है । आशा है आप हंसी नहीं उड़ाएंगे व समाधान में किसी पंसारी की दुकान से उपलब्ध जड़ी-बूटी के सेवन के बारे में बता देंगे ।

ऐसे ही पत्र हमारे पास रोज अनगिनत आते हैं । आपकी समस्या है सैक्सुअल एंजाइटी जो कि सैक्स के विषय पर सही जानकारी न रहने के कारण ही मूलतः उत्पन्न होती है । इसी कारण दिमाग तनावग्रस्त हो जाता है, तनाव में स्मरण शक्ति अस्थाई तौर पर क्षीण हो जाती है । ऐसा इसलिए भी होता है क्योंकि समाज में यह प्रचलित विश्वास है । आप अपने अंडकोष की जांच स्वयं करना बंद कर दें । आपको चाहिए कि बिना झिझक व शर्म के किसी बड़े अस्पताल के सर्जन से अपने अंडकोष को दिखा कर तसल्ली करा लें । किसी सड़क छाप वैद्य, डॉक्टर आदि जो कि और बीमारियों का भ्रम बैठा, अपना उल्लू सीधा करने हेतु लोगों को गुमराह कर देते हैं, उनसे बचें । आप विवाह के योग्य हैं— हंसी के पात्र कदापि नहीं— ऐसा मेरा विश्वास है ।

सफाई का भय

क. ख. ग. काठमांडू, नेपाल : मैं ३८ वर्ष की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिला हूं। घर का काम-काज, बच्चा व पति की देखभाल अच्छी तरह करती हूं। जब से बच्ची हुई (१० वर्ष पूर्व) तब से एक रोग से पीड़ित हूं। मैं हर काम गिनती रहती हूं। उदाहरण के तौर पर मैं गिनती हूं कि मैंने कल भी १० कपड़े धोकर संभाल कर रखे तथा कल क्या दिन था ? ऐसे ही यह वहम रहता है कि रात के कपड़े जो मैंने सोते समय पहने थे, कहीं वही पहनकर भगवान के कमरे में पूजा करने न बैठ जाऊं। शक रहता है कि मैंने शायद भगवान को भ्रष्ट किया ही है। इसलिए पति से व जेठानी आदि से तसल्ली कराने हेतु पूछना पड़ता है। कभी-कभी यह लोग झल्ला उठते हैं तथा उल्टे-सीधे जवाब देते हैं तो मेरी बेचैनी बढ़ जाती है। तब बार-बार पूछती हूं। अब बहुत गलत विचार भी आने लगे हैं— जैसे मेरे पति वास्तव में कहीं मेरी १० साल की बेटी के साथ गलत संबंध रखते हैं। मुझे पता है कि वह देवता समान हैं, इसलिए ऐसे विचारों को मैं रोकती हूं— रुक भी नहीं सकती। परंतु कभी-कभी सारा दिन सफाई, हाथ धोने व ऐसे सवाल पूछने में ही निकल जाता है। यह रोग केवल मुझे ही है या आपने कभी और भी ऐसा रोगी देखा है ?

आप का रोग ऑवसेसिव कंपलसिव न्यूरोसिस है। यह रोग मनोचिकित्सक बहुत देखते हैं। वास्तव में आपके इलाज में आपके पति को भी शामिल करना आवश्यक है। जब भी उनसे या फिर घर के किसी और सदस्य से आप अपनी तसल्ली कराने हेतु सवाल पूछें तो उसे यह कह कर मना करना होगा कि ऐसा करने को डॉक्टर ने मना किया है। फिर अपने हाथों को रात के कपड़े आदि से गंदा कर घर की सभी वस्तुओं को छू लें तथा भगवान के कमरे में भी अवश्य जाएं। हाथ केवल एक बार ही धोकर बैठ जाएं चाहे कुछ हो जाए। बेचैनी तो अवश्य होगी, परंतु यही बिहैवियर थैरेपी का तरीका है। भगवान ऐसे भ्रष्ट नहीं होते। आप यदि अश्लील विचारों से डरेंगी नहीं तथा उन्हें हटाने का भरसक प्रयत्न भी नहीं करेंगी तो यह विचार भी आपको छोड़ेंगे नहीं। वास्तव में यह डर तथा उनको हटाने का प्रयत्न ही उन्हें अत्यंत महत्वपूर्ण बनाकर आपके ऊपर हावी करवा देते हैं।

हर युवती आकर्षक लगती है

संजीव कुमार मित्तल, सीतामढ़ी : १८ वर्ष का १२वीं कक्षा का छात्र हूं। महाविद्यालय शिक्षा के क्रम में नारीय सौंदर्य व युवतियों में इतना रुचि लेने लगा कि मेरा मन पढ़ाई में नहीं लगता। मैं कभी सुंदरियों को देखकर या सुमधुर आवाज या गायन को सुनकर अतिशय भावुक हो उठता हूं। मैं रातभर जागा रहता हूं। किसी काम में मन नहीं लगता। पिताजी सरकारी नौकर हैं तथा मैं उनके साथ ही रहता हूं। उनके द्वारा कुछ कहने पर काफी बुरा लगता है। लैंगिक विषयों में रुचि अधिक हो गयी है। परंतु मैंने आज तक शारीरिक संपर्क नहीं किया। दिन-रात कल्पना में ही डूबा रहता हूं। व्यंग वाणी सुनकर मर जाने का जी करता है। कृपया सलाह दें।

आप किशोरावस्था से गुजर रहे हैं तथा इस अवस्था में पुरुष हारमोन की वजह से मर्द बनने में शारीरिक व मानसिक परिवर्तन होने लगता है। सैक्स की इच्छा व विपरीत लिंग की ओर रुचि भी इसी कारण होती है। यह एक प्राकृतिक व स्वाभाविक क्रिया है। संयम रखना मनुष्य के लिए आवश्यक है। यदि मनुष्य संयम नहीं रख सकता तो भटक सकता है। अब बच्चे से आप वयस्क बन रहे हैं। इस स्थिति में आप चाहते हैं कि आपके साथ कोई बच्चे की भांति व्यवहार न करे। तभी पिता का या किसी और का कहना-सुनना बुरा लगने लगा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली है !!

"क्या बात है ? आप होली नहीं खेलते।"

"जरूर खेलता हूं। लेकिन क्या कहूं ? आजकल रंग में इतनी मिलावट है कि रंग लगता ही नहीं !"

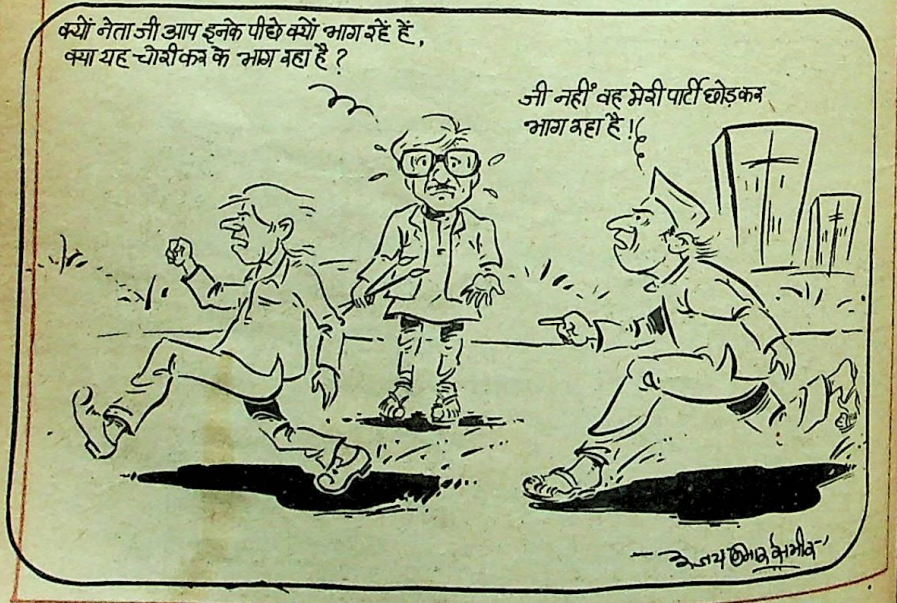

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज होली है।"

यह मेरा ग्राहक है। दस साल से मेरी दुकान में ही बाल कटवाता है! वर्ष में एक बार जरूर आता है!

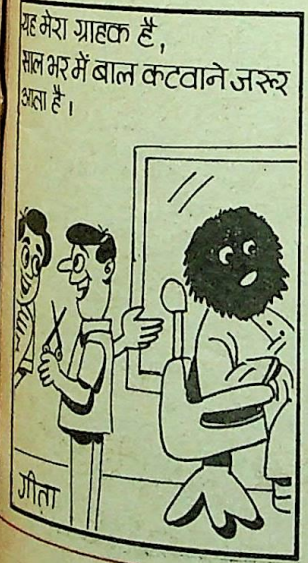

कमला, घर चलें। तू अपने छोटू को ले और मैं अपने राजू को लेती हूं।"

"लेकिन यह तो नहलाने के बाद ही पता चलेगा कि कौन राजू है और कौन छोटू।"

"मां, मैं होली खेलने बाहर जाऊं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

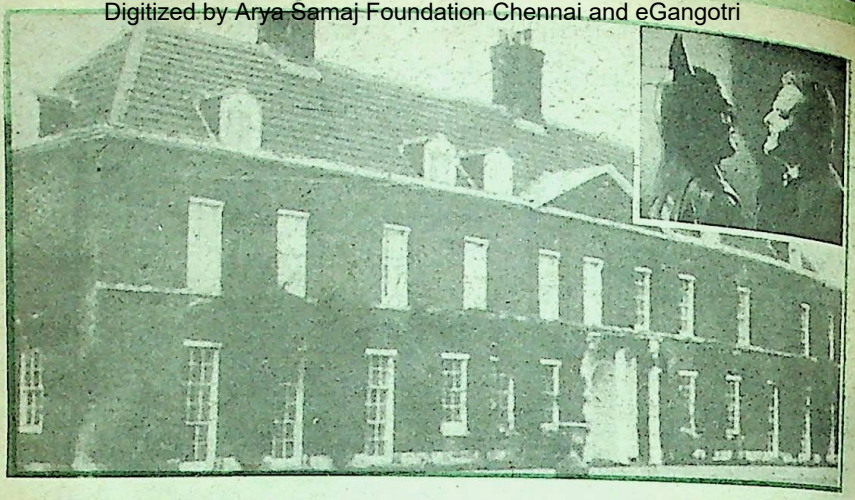

लंदन की चुड़ैलें

● दामोदर अग्रवाल

इंगलैंड में चुड़ैलें अब चाहे न हों, पर एक समय था जब वे लंदन की गलियों में ही नहीं घूमती थीं, राजमहलों में भी घुसकर राजघरानों की राजनीति को प्रभावित करती थीं। अति प्राकृतिक जीवों के अस्तित्व में मध्ययुगीन यूरोपीय समाज का यह विश्वास इंगलैंड की महारानी एलिजाबेथ तथा राजा जेम्स के शासन-काल (सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दियों) में भी इतना व्यापक था कि राजा को चुड़ैलों की धर-पकड़ के लिए अध्यादेश जारी करने पड़ते थे।

लंदनवासियों का शैतान पर विश्वास

उस समय लंदनवासियों को जितना विश्वास ईश्वर में नहीं था, उससे ज्यादा शैतान में था, क्योंकि ईश्वर केवल क्षमा कर सकता था, जबकि शैतान को आत्माओं को खरीद लेने की शक्ति भी हासिल थी।

१६०० ई. के आसपास महारानी के सिपाही भी चर्चों में सबसे पहले यही प्रार्थना करते थे कि उनकी तैनाती किसी ऐसी जगह न हो-जहां चुड़ैलों का डेरा हो।

चोरी-डकैती और हत्या करनेवालों को तो वे आसानी से पकड़ लेते थे, पर मायावी जीवों को हिरासत में लेना कोई हंसी-ठट्ठा न था! ये जंतु (चुड़ैलें) उन्हें तरह-तरह से चिढ़ातीं और तंग करती थीं— उनके दूध और गोश्त उड़ा लेने से लेकर घरों की दीवारों पर काला खून फेंकने तक का काम करते थे।

लार्डों, ड्यूकों के शयन-कक्षों की पहरेदारी ऐसे सिपाहियों द्वारा की जाती थी जो चुड़ैलों की कार्यशैली और गतिविधि से परिचित समझे जाते थे। कहा जाता है कि वे उनकी आवाजें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

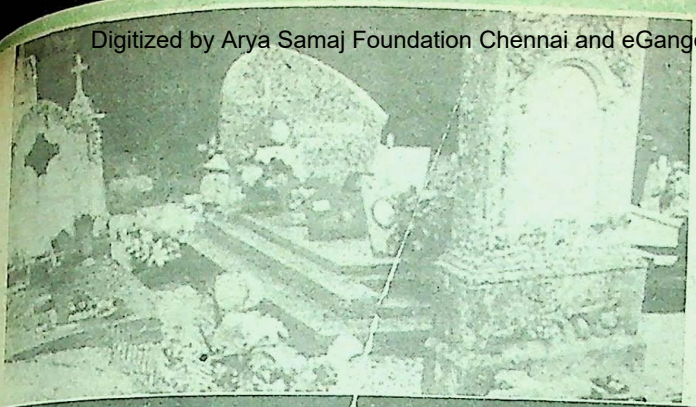

थियेटर में जाकर नाटक देखनेवाले लंदनवासी मंच पर जो कुछ सब होता देखकर खुश होते थे । इसलिए शेक्सपीयर को ही नहीं, उस समय के दूसरे नाटककारों को भी नाटकों की सफलता के लिए इन्हीं अति-प्राकृतिक घटनाओं का सहारा लेना पड़ता था ।

...करते थे, और जादुई सामग्री के उपयोग से ...छाया तक को बांध लेने में माहिर थे । ...कारों के अनुसार उनके इस हुनर को ...नौकरी और तरक्की की एक अनिवार्य ...माना जाता था ।

लंदन में राजा जेम्स के काल (१६०३ ई. से ...) में ही चुड़ैलों का आतंक एक बार जब ...बढ़ गया, तब राजा ने आदेश दिया कि ...छाया-जगत में विचरण करने वाले मायावी ...या प्रेतात्माएं न मानकर अपने ही देश की ...मानसिकता वाली बूढ़ी औरतें समझा ...इस आदेश का परिणाम यह हुआ कि ...की गलियों में पागलों-जैसी घूमने और ...कुछ बड़बड़ाती रहनेवाली उन तमाम ...को चुड़ैल समझकर पकड़ा जाने लगा जो चुड़ैल नहीं थीं । इससे समस्याएं कम होने की जगह बढ़ गयीं, और चुड़ैलों में लंदनवासियों का विश्वास ज्यों का त्यों बना रहा ।

भटकती छायाएं

कुछ अंगरेजों का विश्वास है कि किसी भौतिक लाभ के लिए शैतान को अपनी आत्मा बेचने या बंधक रखनेवाले उसे न छुड़ा पाने के कारण दंड-स्वरूप चुड़ैलों में बदल दिये जाते हैं । ये भटकती छायाएं ही जब इनसान के संपर्क में आती हैं, तब उसके स्थूल भौतिक आकार को सहन न कर पाने के कारण टकराव से पैदा हुई आग की 'फुलझड़ियां, भयानक आवाजें और शक्लें पैदा करती हैं । इंगलैंड में इस विषय को लेकर लिखा गया साहित्य इतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचुर है कि उससे एक पूरा पुस्तकालय बन सकता है ।

आश्चर्य सिर्फ यह है कि इस प्रचुर साहित्य का शायद पांच फीसदी भी चुड़ैलों के अस्तित्व को नकारता नहीं, उसे वैज्ञानिक अथवा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से साबित करने की कोशिश ही करता है । उदाहरण के लिए इंगलैंड के जाने-माने सामाजिक इतिहासकार ट्रेवेलियन को ही लीजिए । उसने अपनी पुस्तक में सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दियों के लंदन के चुड़ैलों का बड़ा रोचक वर्णन किया है, और यह कहीं नहीं कहा है कि चुड़ैलें नहीं थीं, या कौन थीं ।

बहरहाल, लंदन की चुड़ैलें भी लगभग वे ही छल-छद्म करतीं और कपट-रूप धारण करती हैं, जिनमें हमारे देश के ग्रामवासियों का भी पूरा विश्वास है । किसी को बकरी, मुरगा या बिल्ली बना देने से लेकर किसी अनजान एकाकी स्थल पर ले जाकर अभिसार के लिए बाध्य करने तक वे वह सब कुछ करती हैं, जिनमें हमारे गांवों के लोग आज भी विश्वास करते हैं । फर्क सिर्फ इतना है कि हमारे यहां की चुड़ैलें जंतर-मंतर और झाड़ू-फूंक से काबू में आ जाती हैं, जबकि लंदन की चुड़ैलों को रास्ते पर लाने के लिए हंटर और कानून का सहारा लेना पड़ता था । घोड़े पर चढ़कर उनका पीछा करके उन्हें शहर के बाहर खदेड़ भगाने के भी अनेक किस्से मिलते हैं । कभी-कभी उनके घोड़े लेकर रफूचक्कर हो जाने का भी उल्लेख मिलता है । कप्तानों को अकसर वे पहले ही बता भी देती थीं कि लड़ाई में किस दल की जीत होगी, या कौन-सा राजा मारा जाएगा ।

शेक्सपीयर की सफलता में चुड़ैलें

उपलब्ध आलेखों के अनुसार लंदन की चुड़ैलों को प्रभाव पैदा करने के लिए एक बड़े जलते हुए कढ़ाहे के हवन-कुंड में तरह-तरह के जंतुओं और कीड़ों-मकोड़ों के छिले-कटे अंगों का होम चढ़ाकर अपने पिशाच-गीत गाते हुए उसके चारों ओर नाचना पड़ता था । इससे जो काली लौ पैदा होती थी, उसमें किसी को भी चाहे जैसा भी हानि-लाभ हो, वह पहुंचाने की शक्ति पैदा हो जाती थी । शेक्सपीयर के समय इसकी 'आंखों-देखी कानों-सुनी' चर्चा घर-घर थी । थियेटरों में जाकर नाटक देखनेवाले लंदन-वासी मंच पर भी यही सब होता देखकर खुश होते थे । इसलिए शेक्सपीयर को ही नहीं, उस समय के दूसरे नाटककारों को भी नाटकों की सफलता के लिए इन्हीं अति-प्राकृतिक घटनाओं का सहारा लेना पड़ता था ।

रानी एलिजाबेथ के समय में भी जब इंगलैंड में सांस्कृतिक और बौद्धिक पुनर्जागरण का मशाल जल चुका था, तब भी चुड़ैलों के अस्तित्व पर रानी की सरकार का ही नहीं लेखकों और बुद्धिजीवियों का भी परम विश्वास था । वे मानते थे कि इंगलैंड की चुड़ैलें साल में एक रात किसी निर्जन स्थल पर एकत्र होकर अपनी मुखिया की खुशी के लिए जश्न मनाती हैं । अनेक लेखकों का उस समय दावा था कि उन्होंने उन्हें जश्न के दौरान अपनी आंखों से देखा है ।

एलिजाबेथ के शासनकाल में ही नहीं उसके बाद जब जेम्स प्रथम गद्दी पर बैठा, तब भी अंगरेजी चुड़ैलों के अस्तित्व को स्वीकार ही नहीं किया जाता रहा, उसे नकारनेवाले को नादान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझा जाता था। और यह तथ्य इस बात के बावजूद था कि जेम्स का शासनकाल अपेक्षाकृत अधिक प्रगतिशील था, और इंगलैंड में वैज्ञानिक युग की शुरुआत हो चुकी थी।

रात में चुड़ैलों का राज

कहा जाता है कि लंदन में चुड़ैलों की एक व्यापक रात्रीय सरकार थी जो पूरे शहर पर रातभर छायी रहती थी। नगर के किस कोने में किन चुड़ैलों का समूह सक्रिय होगा, इसका निश्चय यह रात्रीय सरकार ही करती थी। रात में ये चुड़ैलें पालतू पशुओं और बच्चों को उठा ले जाया करती थीं। कौन-सी चुड़ैल कौन-सा काम करेगी, यह उनकी नेता 'हिकेट' तय करती थी। किस पुराने घर, महल, खंडहर, जंगल या पेड़ पर किस रात किन चुड़ैलों का वास होगा, कौन रौशनी पैदा करेगा, कौन डरावनी आवाज में बोलेगा, कौन किस जानवर का रूप धरेगा और मनुष्य के आने की चेतावनी देने के लिए पहेदारी करेगा, यह सब भी तय हो जाता था।

राजाओं के व्यक्तिगत जीवन और राजनीति में भी लंदन की चुड़ैलें काफी घुसपैठ करने की कोशिश करती थीं। किस लार्ड या ड्यूक को हटाना या जिताना है, किसका मान-सम्मान करना है, और किसको डराना-धमकाना है, यह सब भी उन्हें मुखिया द्वारा पहले ही बता दिया जाता था।

ताज्जुब की बात है कि इन बातों की चर्चा उस समय के साहित्य में ही नहीं आज के इतिहासकारों की पुस्तकों में भी है। इंगलैंड के एक प्रख्यात इतिहासकार के अनुसार एक बार राजा जेम्स के शासनकाल में लंदन की चुड़ैलों का आतंक इतना बढ़ गया कि उसने लंदन पुलिस के नाम एक अध्यादेश जारी कर छह सौ चुड़ैलों को पकड़वाया और उन्हें टैम्स नदी में फिकवा दिया।

लंदन शहर के, या शहर के किसी बड़े आदमी के भविष्य में क्या लिखा है, इसकी छानबीन और चर्चा करना लंदन की चुड़ैलों का विशेष शगल था। शेक्सपीयर के नाटक मैकबेथ के अनुसार चरित्र नायक मैकबेथ जन विद्रोहियों को दबा कर अपने मित्र बैंकों के साथ स्काटलैंड लौटता है, तब उसे रास्ते में एक उजड़ी और सुनसान जगह पर तीन चुड़ैलें मिलती हैं, जो उसके बारे में तीन भविष्यवाणियां करती हैं, जिन्हें शेक्सपीयर सच साबित करता है।

उस समय लंदन ही नहीं पूरे इंगलैंड और निकटवर्ती देशों में चुड़ैलों में विश्वास की संस्कृति इतनी व्यापक हो गयी थी कि लोगों को वह कोई भी नाटक रास नहीं आता था, जिसमें चुड़ैलों का जिक्र न हो। यह और बात है कि शेक्सपीयर-जैसे बड़े नाटककारों ने चुड़ैलों को जहां एक ओर वास्तविक बताया, वहीं यह भी साबित करने की कोशिश की कि वे किसी व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक विचार की बाहरी स्वरूप मात्र हैं।

चुड़ैलों के खिलाफ रपट

सवाल यह है कि क्या उस समय के लंदन के तरक्कीशुदा लोग भी चुड़ैलों के अस्तित्व के इस सूक्ष्म विश्लेषण को स्वीकार करने को तैयार थे ? चुड़ैलों का अंधविश्वासी रूप ही शायद उन्हें अधिक भाता था और जब वे उन्हें तंग करती थीं, तब वे पुलिस में उनके खिलाफ रपट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्ज कराने से भी नहीं चूकते थे । जाहिर है कि छानबीन भी होती ही थी और चुड़ैलों को पकड़कर दंडित भी किया जाता था । यह कोई नहीं बताता कि ये चुड़ैलें कौन थीं, जबकि पुराने साहित्य और लंदन पुलिस की पुरानी फाइलों के आधार पर शायद सभी लेखक यह बात जोर और जोश के साथ कहते हैं कि उस समय लंदन में चुड़ैलों का अस्तित्व और प्रकोप दोनों था ।

बहुत से कामों में लंदन की चुड़ैलें लंदन के नागरिकों और धनिकों की सहायिका भी होती थीं । उदाहरण के लिए, मिडिल्टन के 'चुड़ैल' नामक नाटक को ही लीजिए । इस रचना में एक राजसी पति अपनी राजसी पत्नी को अपने पिता की खोपड़ी में शराब पीने को बाध्य करता है, जिसके लिए उसे एक चुड़ैल की मदद मिलती है । चुड़ैलें कभी-कभी प्रेमी-प्रेमिका को मिलाने के कार्य में भी सहायक होती थीं । अकसर जहां सामाजिक जीवन में कभी घोर अन्याय होता था, तब वे अपने छल-कपट और जादू-टोना से निर्णय को बदलवा देती थीं ।

उन्नीसवीं सदी के पहले चरण में रोमानी कवि शैली की एक रचना में भी एक चुड़ैल की अवतारणा हुई है । वह चुड़ैल लंदन की बाकी चुड़ैलों से बिलकुल अलग थी । वह सत्य, शिव और सुंदर के अवतार के रूप में प्रस्तुत की गयी थी । कवि शैली के अनुसार वह यूनान के सूर्य देवता अपोलो की पुत्री थी, जिसका काम था जंगली जानवरों को पालना और अपनी जादुई नौका पर बादलों की सैर करना । वास्तव में इस कृति के माध्यम से शैली मध्य-काल से चले आ रहे इंगलैंडवालों के इस विश्वास को चुनौती देता है कि चुड़ैलें अंधकार की द्योतक हैं । कवि के अनुसार वे तो सब का भला चाहने और घर-घर में उजाला लाने वाली संभ्रांत नारियां हैं । वैसे शैली ने भी इनके अस्तित्व को नकारा नहीं । उसने सिर्फ यही कहा है कि वे भली होती हैं ।

—१३-बी, पॉकेट ए सुखदेव विहार फ्लैट्स, नयी दिल्ली-११००२५

उर्दू शायरी पर अहसान

मौलाना ताजवर नजीबाबादी के एक रईस शागिर्द बड़े 'बोर' थे । दिन में तीन-चार अधकचरी गजलें ले आते और अपने उस्ताद मौलाना ताजवर को सुना देते ।

एक दिन वे बहुत ही परेशान होकर मौलाना के पास आये और बोले, 'हजरत अल्लामा, गजब हो गया । मेरी गजलों की बयाज (कॉपी) किसी ने चुरा ली ।'

मौलाना इत्मीनान से सांस छोड़ते हुए बोले—'अजीजम, जिसने भी ये नेक काम किया है उसने पूरी उर्दू शायरी पर अजीम एहसान फरमाया है ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली जन्म दिन पर विशेष

लघु हृदय तुम्हारा अमर छंद

● डॉ. रामजी पांडेय

अपने देश की जो सांस्कृतिक परंपरा रही है, महादेवी सच्चे अर्थों में उसकी प्रतिनिधि थीं। वे छायावादी, रहस्यवादी कवयित्री से ऊपर उठकर सांस्कृतिक कवयित्री थीं, जिसमें भावनात्मक काव्य की सरसता और चिंतनात्मक ज्ञान की गंभीरता दोनों तत्व समान रूप से मिलते हैं। वैदिक ऋषियों ने जिस आध्यात्मिक अनुभूति के महत्त्व की स्थापना करते हुए भारतीय संस्कृति का सूत्र संचालन किया, इस युग में महादेवी ने वह कार्य किया है। उनका कृतित्व और व्यक्तित्व इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उन्होंने लिखा है कि— इस बुद्धिवाद के युग में भी मुझे जिस अध्यात्म की आवश्यकता है, वह किसी रूढ़ि, धर्म या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संप्रदायगत न होकर उस सूक्ष्मता की परिभाषा है, जो व्यष्टि की समग्रता से समष्टिगत एक प्राणता का आभास देती है । इस प्रकार वह मेरे संपूर्ण जीवन का एक ऐसा सक्रिय पूरक है, जो जीवन के सब रूपों के प्रति मेरी ममता समान रूप से जगा सकता है । सब रूपों के प्रति समान रूप से ममता जगानेवाले भाव को ही समात्मभाव कहा गया है । महादेवी इसी भावोन्मेष की सांस्कृतिक कवयित्री हैं ।

एक नया आकलन

आज की परिस्थिति में जब मूल्यों का इतना विघटन हो रहा है, तब महादेवी की रचनाओं को बिलकुल नये ढंग से देखने—पढ़ने की आवश्यकता हो गयी है । यदि भारत की धरती को भारत की ही धरती बने रहना है, जिसकी एक अत्यंत विकसित, समृद्ध परंपरा, मूल्यवत्ता रही है, तो उनकी रचनाओं का अध्ययन-मनन, उनका प्रचार-प्रसार व्यापक पैमाने पर आवश्यक है । साहित्य के इतिहास में महादेवी के समान मौलिक चिंतन-शीलता और विशद कल्पना के उदाहरण कम ही मिलेंगे । भावना, विचार और चिंतन के क्षेत्र में उन-जैसी प्रौढ़ और आत्मविश्वासी नारी का मिलना भारतीय साहित्य में ही नहीं विश्व साहित्य में भी कठिन है । वे आस्था, आनंद और सौंदर्यमय जीवन की गायिका रही हैं । दर्शन, अध्यात्म तथा काव्य एकरस होकर जिस महारस की रचना करते हैं, वही रस उनके काव्य की अपनी उपलब्धि है । उनकी कविता का मुख्य गुण संभवतः उसकी कोमलता, उसका भोलापन है । उनकी कविताओं को पढ़ते हुए बार-बार ऐसा लगता है कि अगर कहीं ये गीत छुये जा सकते, तो वे निश्चय ही बिखर जाते, झर जाते— हरसिंगार के फूलों की तरह । उनके गीतों की पहली और अंतिम पंक्तियां तो अपने संकेतों से एक इतिहास कह देती हैं । इन गीतों का कला पक्ष भी उतना प्रबल है जितना भाव पक्ष । गीत के छंद और लय पर इतना सहज अधिकार कम मिलता है । उसमें कहीं भी प्रयास नहीं दीख पड़ता । समूचा गीत सांचे में ढला-सा लगता है । गेयता उनमें इतनी है कि पढ़ते समय व्यक्ति बरबस गुनगुनाने लगता है और बार-बार गुनगुनाने का मन होता है ।

बहुमुखी प्रतिभा

उनकी अद्‌भुत प्रतिभा को देखकर चमत्कृत रह जाना पड़ता है । कितना बहुआयामी व्यक्तित्व था उनका । कवि, गद्यकार, आलोचक, संस्मरण लेखिका, चित्रकर्ती, प्रबुद्ध वक्ता, शिक्षाविद आदि इतने सारे गुणों का समन्वय एक साथ उनमें विचित्र रूप से समाहित था । उनका व्यक्तित्व समात्मभाव की साधना से जितना सरल, मधुर, करुण और कोमल था उनका कृतित्व उतना ही उदात्त, व्यापक, विराट और महान है । हिमालय को संबोधित करते हुए उन्होंने जैसे अपने व्यक्तित्व और कृतित्व का अनायास ही परिचय दे दिया हो—

हो चिर महान
मेरे जीवन का आज मूक, तेरी छाया से हो मिलन
तन तेरी साधकता छू ले मन ले करुण की
थाह-नाप,
उर में पावस दृग में विहान

महादेवी का संपूर्ण साहित्य आस्था, उपासना और उत्सर्ग का साहित्य है । नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्य-गीत, और दीपशिखा तथा उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

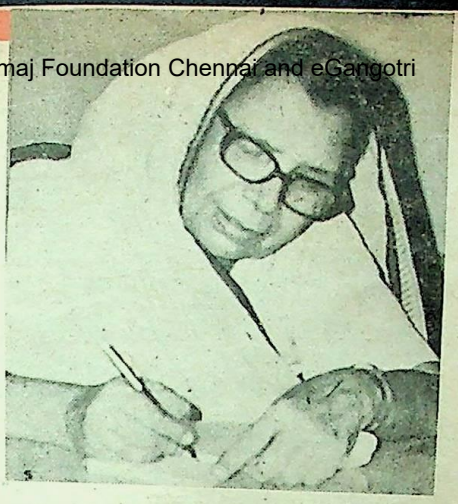

है, चमत्कारी बुद्धि का उतावलापन नहीं, भावावेश को स्पंदित कर देनेवाली हार्दिकता का विश्वास है, संकोच, संदेह तथा भय-पराजय का भाव नहीं, विजय की वह विनम्रता और उदारता है, जिस पर साधना का पानी चढ़ा हुआ है। विद्रोह की मंगलमुखी भावना पर ही इनकी आस्था है।

महादेवी अपनी विराट संवेदनशीलता के उन्मेष में लोक-कल्याण की भावना को व्यक्तिगत मोक्ष से कई गुना अधिक महत्त्व देती जान पड़ती हैं। वे संसार से विषाद, क्लेश और ताप को दूर करके उल्लास, आनंद और शीतलता की रचना करने को उत्सुक हैं—

मैं उन मुरझाये फूलों पर संध्या के रंग जमा जाती
मैं पक के संगी फूलों को, सौरभ के पंख लगा जाती।

अपने को गलाकर पृथ्वी को शीतलता देनेवाले— "उस घन की हर कंपन पर मैं शत-शत निर्वाण लुटा जाती।" केवल इतना ही नहीं यदि कवयित्री में क्षमता होती, तो वह विश्व को इतना रम्य, साधनापीठ और आनंदमय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बना जातीं कि इसका सृष्टा भी इसके प्रति आकर्षित हो उठता—

सुधि विद्युत की तूली लेकर
मृदु मोम फलक सा उर उन्मन
मैं घोल अश्रुओं में ज्वाला कण
चिर मुक्त तुम्हीं को जीवन के
बंधन हित विकल दिखा जाती

तुलसी ने लोक मंगल की भावना के जिस बल पर आत्म-विश्वास के साथ कहा था— "संभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी, रामचरित मानस कवि तुलसी ।" उसी अकंप विश्वास के साथ महादेवी ने भी कहा है—

विद्युत घन में बुझने आती
ज्वाला सागर में घुल जाती
मैं अपने आंसू में बुझ, घुल देती आलोक विशेष रही ।
जो ज्वारों में पलकर न बहे,
अंगार चुगें जल जात रहें
मैं गत आगत के चिर-संगी सपनों का कर उन्मेष रही

एक ही चैतन्य कहीं दीप बनकर जल रहा है, तो कहीं फूल बनकर खिल रहा है—

"लघु हृदय तुम्हारा अमर छंद, स्पंदन में स्वर लहरी अमंद
हर स्वप्न स्नेह का चिर निबंध, हर पुलक तुम्हारा भाव बंध निज सांस तुम्हारी रचना का लगती अखंड विश्वास मुझे

समन्वय, सामंजस्य और सापेक्षताओं के साथ समत्व की भावना का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत है—

हो गयी आराध्य मैं विरह की आराधना ले
विरह का युग आज दीखा मिलन के लघु पल सरीखा
दुःख-सुख में कौन तीखा मैं न जानी औ न सीखा
मधुर मुझको हो गये सब मधुर प्रिय की भावना से

महादेवी की समात्मभावना, रागात्मक अनुभूति की तीव्रता से सर्वव्यापक होकर इदं प्रत्यक्ष और जीवंत हो उठती है कि सर्व भूत हितरत क्रियाओं में उसका स्वरूप परिलक्षित होने लगता है । भाव, क्रिया और बोध का समन्वय अध्यात्म की चरम परिणति और की की उच्चतम उपलब्धि है—

महादेवी ने लिखा है— "इस युग का हृदयवादी हो चाहे बुद्धिवादी, स्वप्नदृष्टा हो चाहे यथार्थ का चित्रकार, अध्यात्म से बंधा हो या भौतिकता का अनुगत, उसके निकट एक ही मार्ग शेष है कि अध्ययन से मिली जीवन की चित्रशाला से बाहर आकर जड़ सिद्धांत का पाथेय छोड़कर अपनी संपूर्ण संवेदना-शक्ति के साथ जीवन में घुल-मिल जाए । उसकी केवल व्यक्तिगत सुविधा-असुविधा आज गौण है, उसकी केवल व्यक्तिगत हार-जीत आज महत्व नहीं रखती, क्योंकि उसके सारे व्यक्तिगत सुख की आज समष्टिगत परीक्षक है ।

उनकी कविता की निम्नलिखित पंक्तियों के साथ उनकी स्मृति को प्रणाम ।

घिरती रहे रात
न पक रूंधतीं ये गहनतम शिलायें
न गति रोक पातीं पिघलं मिल दिशायें
चली मुक्त मैं, ज्यों मलय की मधुर वात
न आंसू गिने औ न कांटे सजोये
न पग-चाप दिग्भ्रांत उच्छावास खोये
मुझे भेंटता हर पलके-पात में प्रात
घिरती रहे रात

१७सी, अशोकनगर, इलाहाबाद-२११००१

हिंदुओं को संरक्षण एवं धार्मिक स्वतंत्रता देने पर बीजापुर के इब्राहीम आदिल शाह को प्रजा 'जगतगुरु' कहती थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

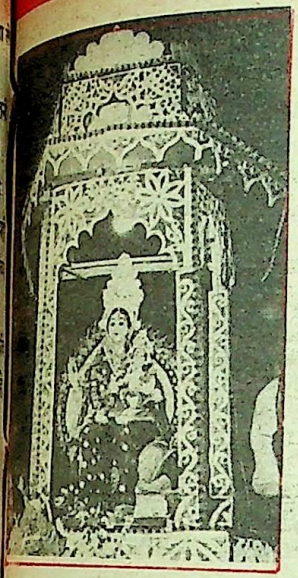

होलिका और प्रहलाद की एक झांकी

फागुन में रसिया घरवारी

• रमेशचन्द्र राजा चौबे

हमारी संस्कृति आनंद वाहिनी और उल्लास-सलिला हैं । हमारे संपूर्ण पर्व मंगल माधुर्य से ओत-प्रोत है । शोक, दुःख और रोदन हमारी जीवनलीला का स्पर्श अवश्य करते हैं, किंतु लयताल पर थिरकते उसके आनंद को वे विगलित नहीं कर सकते । कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने फाल्गुन के सूरज की आभा को प्रियालिंगन मधु-माधुर्य स्पर्श बताते हुए इस प्रकार कहा है— सहस्त्र-सहस्त्र मधु-मादक, स्पर्शों से आलिंगित कर रही सूरज की इन किरणों ने फाल्गुन के इस वासंत प्रात को सुगंधित स्वर्ण में आह्लादित कर दिया है ।

मुसकराते, हंसते-हंसाते लोगों का यह देश है । सूत्रों-मनहूसों और मातमी चेहरो की यहां खिल्लियां ही उड़ायी गयी हैं । होली मुक्तल स्वछंद हास-परिहास का पर्व है ।

होली के रूप— होली विभिन्न रूपों में सारे भारत का मंगलोत्सव है । प्रतीत होता है कि नवान्न की बालियों को प्रज्वलित अग्नि में भूनने की सदियों से आ रही परंपरा के कारण इस त्योहार का नामकरण 'होली' हो गया । अनाज की बालियां संस्कृत में 'होला' कहलाती हैं । देश में अधिकांश भाग में आज भी चने की सिकी बालियों को 'होला' कहते हैं । वेदों का मुख्य अन्न जौ (यव) था । फाल्गुन शुक्ला-पूर्णिमा को प्राचीन आर्य जौ की बालियों के हवन से अग्निहोत्र का प्रारंभ करते हैं । कर्मकांड परंपरा में इसे 'यवाग्रयण—यज्ञ' का नाम दिया गया है । वसंत में सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायन में आ जाता है एवं फल-फूलों को नयी सृष्टि के साथ ऋतु भी अमृतप्राण, हो जाती है । इसलिए होली के पर्व को 'मन्वन्तराम्भ' भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होरी पर जलते हुए दीप सिर पर रखकर चरकुल नृत्य

कहा गया है । वात्स्यायन के कामसूत्र में होली के त्योहार का 'होलका' के रूप में वर्णन है ।

ब्रज में होली के त्योहार को 'होरा' के रूप में माना जाता है । टेसू के फूलों से बने रंग से पिचकारियों द्वारा एक-दूसरे को रंगमय करने की प्रथा का रोचक उल्लेख है । पुष्टिमार्गीय मंदिरों में तो ठाकुरजी विभिन्न फूलों एवं रंगों से होरी खेलते हैं ।

इस ब्रज की होरी का ब्रजभाषा के गुमान कवि ने वास्तविक रूप में सुंदर चित्रण किया है—

कैसा है यह देश निगोरा, सब जग होरी ब्रज होरा
मैं यमुना जल भरन जात हो, देख रूप मेरा गोरा
मोते कहत चलों कुंजन में, तनक-तनक से छोरा,
परे नैनन में डोरा।
मेरो मन हर्षो नंदके नें सजनो, चलत लगावत चोरा ।
कहा बूढ़े कहा लोग लुगाई, एक ते एक ठठोरा, न
काहू कौ काहू को जोरा
हियरा देख डरत है सजनी, आयो लाज को ओरा
कहै गुमान सिखाय सखन कों, सब मेरा अंग
टटोरा, न मान्यों एक निहोरा

पुराणों के अनुसार भी फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन ढूंढ़ा राक्षसी को गांव से निकालने के लिए रंगोत्सव और हास्य-विनोद के पर्व मनाने का रिवाज था । स्वछंद हास-परिहास और गाली-गलौज को भी इससे छूट थी । 'भविष्येतर पुराणों' में इसका सुंदर उल्लेख है :—

नानारंग मयैर्वस्त्रै श्चश्रन्नागरू मिश्रितैः
अबीर च गुलालं च मुखे तांबूल यक्षताम्
वंशोत्थं, जलयंत्रं च चमयंत्रं करेधृतम् ।
गलिदानं तथा हास्य ललनार्तनं स्फुटम्

इस पर्व को मनाने के लिए तरह-तरह के सुंदर रंगीन वस्त्र पहनें । अबीर गुलाल और चंदन लेकर एक-दूसरे के घर जाएं और रंग डालें । गालियां दें, हास्य-विनोद में जुट जाएं पुरुषों के साथ स्त्रियां भी इस हंसी-मजाक में शामिल हों और नाचरंग के साथ हंसे एवं हंसायें ।

ऐसा प्रतीत होता है कि होली का वर्तमान विकृत रूप इसी परंपरा की देन है, किंतु रंग भरे, आनंदोल्लास को स्वर्ण-सुगंध संस्कृति स्वस्थ अनुकरण नहीं है ।

मुगल बादशाहों की होली फागुन मास में होरी अपनी घरवारी से खेलने की कहावत मुगलकाल से चरितार्थ चली आ रही है । अकबर बादशाह अत्यंत विनोदप्रिय एवं धर्मपरायण था । उसने अपनी प्रजा को स्वतंत्रता दे रखी थी । अकबर का हरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अवसर पर रंग-गुलाल से रंग जाता था । बेगमें और सुंदरियां बादशाह अकबर को हरम में बुलाकर उसे रंग-गुलाल से सराबोर कर देती थीं ।

अकबर बादशाह की बेगम 'ताज' बल्लभ संप्रदाय के आचार्य गो. १०८ श्री विट्ठलनाथजी (गुसाई) की सर्वप्रथम मुसलिम बेगम शिष्य बनीं । इसी कारण 'ताज द्वारा रचित होरी की धमार आज भी पुष्टिमार्गीय मंदिरों में एवं ब्रज के मंदिरों में गायी जाती हैं—

बहोरि डफ बाजन लागे हेलो
खेलत मोहन सांवरे हो, किहि मिस देखन जाए
सास-ननद बैरिन भई, अब कीजै कौन उपाय
सूरत आवत 'ताज' के प्रभु, गावत होरी गीत
जहांगीर, औरंगजेब, फरूखसियर और बहादुरशाह होली खेलते थे

जहांगीर के शासनकाल में होली मनाने का सविस्तार वर्णन 'मुल्क-ए-जहांगीर' में हुआ है । बेगम नूरजहां के साथ परस्पर सुंदरियां पिचकारियों से रंग छोड़ती थीं । औरंगजेब बेगमों के साथ खूब उल्लास के साथ होली खेलता था । औरंगजेब का पुत्र शाह आलम होली खेलने में चूकता नहीं था । उसने अपनी एक कविता में होली का सुंदर वर्णन किया है—

बतरंग भरी पिचकारी सुहाई, खेलत है सब रंग भरी
कहा आपस में करिके चतुराई, रीझी रही सब ही सुनि के
अब बासुरी कान्ह बजायी
देखत लाल को फाग ही खेलियो, थाल अबीर गुलाल ले धाई
रंग गुलाल चहुं ओर राजत, फूलन गेंद ले खेलत आयी

'कादम्बिनी' अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता

अंतिम तिथि : ३० अप्रैल, १९९०

प्रतियोगिता के लिए कहानी भेजते समय यहां प्रकाशित कूपन लिफाफे पर अवश्य चिपकाएं

संपादक
'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन लि.
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-१

फरुखसियर अपनी बेगम एवं दासियों के साथ गुलाल और गुलाब जल के साथ होली खेलता था । होली खेलते समय कुछ सुंदरियां मृदंग सितार आदि बाजों के साथ नृत्य भी करती थीं ।

अंतिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर ने सन १९५७ में होली वर्णन के साथ-साथ देश की हालत का सुंदर वर्णन किया है :—

हिंद में कैसो फाग, मचो जोरा जोरी
फूल का तख्त हिंद बना, केसर की सी क्यारी
कैसे फूटे भाग हमारे, लूट गयी दुनिया सारी
गोलन के गुलाल बनायो, तोपन की पिचकारी

होरी में फागुन मास का वर्णन— एक सखी दूसरी सखी से ब्रज की होरी में फागुन मास के आगमन का सुंदर वर्णन कर रही है :—

आय गयो फागुन मास उमस तेरे मन की दूर जायगी
सामन सरिता फाग की कौ बाधे मरजाद । मरकी रसिया जानहों
कहा फाग में स्वाद, गांठ रेशम की धुर जायगी ।।
निंदा नंनदी
कहा करैं तू लै फाग मचाय । फागुन जोवन तीस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक पूर्ति विभाग से संबंधित मौलिक हिंदी पुस्तकों पर नकद पुरस्कार

नागरिक पूर्ति विभाग से संबंधित विषयों अर्थात उपभोक्ता संरक्षण, उपभोक्ता सहकारी समितियां, सार्वजनिक वितरण, विधिक माप-विज्ञान आदि पर हिंदी में श्रेष्ठ मौलिक अथवा अनूदित हिंदी पुस्तकों के लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए नागरिक पूर्ति विभाग, खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नकद पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार
रु. 5000

द्वितीय पुरस्कार
रु. 2500

पुरस्कारों से संबंधित सभी मामलों पर विभाग का निर्णय अंतिम होगा और इस विषय पर कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा।

पात्रता

यह पुरस्कार 1988-89 और 1989-90 की दो वर्षों की अवधि के लिए हैं। पहली अगस्त, 1987 से 31 दिसम्बर, 1989 तक लिखे गए सभी प्रकाशित ग्रन्थों या पाण्डुलिपियों को विचारार्थ स्वीकार किया जाएगा।

भेजने का पता और अंतिम तारीख

पुस्तकों या साफ-साफ टाइप की गई पाण्डुलिपियों की पांच-पांच प्रतियां निर्धारित प्रपत्र के साथ सचिव, नागरिक पूर्ति विभाग, कृषि भवन, नई दिल्ली-110001 को मुहरबंद लिफाफे में 31 मार्च, 1990 तक उपर्युक्त पते पर अवश्य पहुंच जाएं। निर्धारित प्रपत्र और अन्य शर्तें भी उपर्युक्त पते से प्राप्त की जा सकती हैं।

डीएवीपी 89/1...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...होरी संग जरबाग,
...दिन उड़ि जायगी

...गोपी फागुन के आने पर अपने को ...मानती हुई श्याम के संग होरी खेलने को ...रही है—

...भागन तें फागुन आयो मैं तो खेलूंगी फाग
...भिजोई मेरी फूलन की अंगिया, मैं भिजवोंगी ...

...फागुन की रसिया घरवारी ने अपने बालम ...) के बारे में जोगी ओर अवधूत होने का ...वर्णन किया है ।

...जोगी भये ये जोगी भये अवधूत
...महीना में जोग लियो, कौन से रमाय लई ...

...महीना में जोग लियो, फागुन में रमाय लई ...

...लुगैया पे जोग लियो, कौन सौ पै रमाय ...

...लुगैया पै जोग लियो, गोरी पे रमाय लई ...

...होरी :— ब्रजमंडल-मथुरा, वृंदावन, ...बरसाना, काम-वन, गोवर्धन, दाऊजी ...गोकुल, जांव— बठेन आदि में होरी संग ...होती है ।

...होली को देखने देश-विदेश से ...नारियां आते हैं, उस ब्रज की गाय, मोर, ...रसिया एवं गोरी नारी का इस रसिया में ...वर्णन किया है—

...मंडल देश दिखाओ रसिया
...मंडल में मोर बहुत है, कूकत मोर फटत छतियां
...मंडल में रसिक बहुत है, गोरी गोरी नारि चतुर ...

...सखी चरनन की चेरी, सुखी रहौ ब्रज के ...

...आजु मची होरो

...१९९०

बाजत बीन मृदंग झांझ डफ, गावत चन्द्रमुखी गोरी
ग्वाल बाल लिये पिचकारी, अबीर गुलाल भरे झोरी
हिलमिल फाग परस्पर खेलत, रंग चलाय मलत रोरी

गोवर्धन में रंगीली होरी— मथुरा से २२ कि.मी. दूरी पर गोवर्धन पर्वत स्थित है । यहां पर ५ वर्ष की आयु में भगवान श्रीकृष्ण ने अपने नरखों पर सात दिन तक विशाल गिरिराज पर्वत को धारण किया था और इंद्र देवता का मान भंग करके गोवर्धन की पूजा करके अन्नकूट प्रारंभ कराया था । उसी स्थान पर एक गिरिराजजी का मुखारबिंद जतीपुरा में हैं उस पर ठाकुरजी का होरी का श्रृंगार होता है । कुंज एकादशी फागुन शुक्ला से चैत्र कृष्ण २ डोल तक । विशेष होरी के दर्शन, होरी धमार एवं रसिया होते हैं ।

मदमाता फागुन मास में अपनी पत्नी अर्थात घरवारी का ही रसिया बताया गया है और इस रसिया में गलियों में डोलकर गारी देना, लाज न करना, ग्वालों द्वारा हंसी करने का मार्मिक चित्रण किया है—

फागुन में रसिया घरबारी
हो हो बोलें गलियन डोलैं, गारी दे दे मतवारी
लाज धरी, छपरन के ऊपर, आय भये है अधिकारी
'पुरुषोत्तम' प्रभु की छबि निरखत, ग्वाल करे सब किलकारी

हनुमान गली, छत्ता बाजार, मथुरा

अभिनेत्री : परदे पर मेरी मृत्यु पर समूचा सिनेमा हॉल फूट-फूटकर रो पड़ा था ।
निर्माता : वे इसलिए रोये कि जानते थे, तुम वास्तव में नहीं मरी हो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकी सनक का क्या कहना !

● सुरेश धींगड़ा

मानव-इतिहास में ऐसे शासकों की भी कमी नहीं है, जिन्होंने धर्मांधता के कारण 'विधर्मियों' को यातना देने में ही अपने लिए मनोरंजन की तलाश की । 'धर्मयुद्धों' ने तो सहस्त्रों सैनिकों की बलि ली ही है, उन शिकारों की संख्या भी कम नहीं है, जो तानाशाह शासकों की धार्मिक खब्त का शिकार हुए । सन ८४५ में बु-सुंग चीन का शासक बना । वह ताओ-धर्मी था । उसे बौद्धों को सताने में बहुत आनंद आता था । उसने अपने अत्यल्प शासन-काल में ४६०० विहारों को ध्वंस करवाया, ४०,००० मंदिर गिरवा दिये, संघों की संपत्ति छीन ली, मूर्तियों और घंटों को गलवा कर सिक्के ढलवा दिये, २,६०,००० भिक्षु-भिक्षुणियों को गृहस्थ बनने पर बाध्य किया । प्रकृति ने भी उसके साथ ऐसा न्याय किया जो स्मरणीय है । उसे अमर बनने की लालसा थी । इसके लिए उसने सुधा-पान प्रारंभ कर दिया । परंतु, शीघ्र ही वह गूंगा हो गया और सन ८४६ ई. में मृत्यु को प्राप्त हुआ ।

बौद्ध भिक्षुओं को पीड़ित करने में सु

रॉकहिल अपनी पुस्तक 'लाइफ ऑव बु में तिब्बत के शासक 'लङ्-दर-मा' का उल्ले करते हुए लिखते हैं कि उसने बहुत-से भिक्षु का बलपूर्वक विवाह करवाया, उन्हें धनुष-ब देकर जंगली पशुओं का शिकार करने भेज और आना-कानी करने पर उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया । उसने मंदिरों के द्वारों पर दीवारें चिनवा दीं और उन पर शराब पीते हु बौद्ध भिक्षुओं के चित्र बनवा दिये । कुछ भिक्षुओं को उसने कसाई का काम करने के बाध्य किया । लेकिन, 'लङ्-दर-मा' का म मनोरंजन अधिक दिन नहीं चला । शासन के तीसरे वर्ष में 'पल्-दोर-जो' नामक भिक्षु ने उसकी हत्या कर दी ।

स्पेन के कैथोलिक शासकों ने भी इसी प्रकार नीदरलैंड के हजारों कैल्विन-अनुय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तानाशाहों की सनक औरों के लिए जानलेवा सिद्ध होती थी । चीन के एक शासक वु-सुंग ने सनक में आकर बौद्ध भिक्षु-भिक्षुणियों का बलात विवाह करवाया तो तुर्की के एक सुलतान ने अपने विरोधियों को समुद्र की खाड़ी में फिकवा दिया । प्रस्तुत हैं कुछ तानाशाहों की सनक के प्रसंग

को मौत के घाट उतार दिया ।

मध्य-युगीन यूरोप में राजाओं का सबसे बड़ा मनोरंजन द्वंद्व-युद्ध होता था, जो उनके लिए दो बख्तरबंद घुड़सवार लड़ते थे । इन्हें ग्लैडिएटर्स कहा जाता था । इन द्वंद्व-युद्धों से राजाओं के बीच हार-जीत का निर्णय भी हो जाता था— अर्थात एक ग्लैडिएटर की पराजय का अर्थ था उसके स्वामी राजा की पराजय ।

जिस समय जूलियस सीजर रोम का प्रमुख था, उस समय राज्य लगभग ३,२०,००० निवासियों का भरण-पोषण करता था, क्योंकि कुलीन मध्यवर्ग आलसी और काम-चोर बन गया था । इस वर्ग के सदस्य विलासिता के साधनों से पूर्ण हमामों में पड़े रहते या प्रीतिभोजों में व्यस्त रहते । इनके अतिरिक्त वे ग्लैडिएटर-प्रतियोगिताओं और रथ-दौड़ों का आयोजन भी करते थे । इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से वे लोग लोकप्रियता प्राप्त कर उच्च पदों पर पहुंचने का प्रयास करते थे । इस संदर्भ में यह बात ध्यान देने की है कि पराजित ग्लैडिएटर का जीवन मनोरंजन के लिए आयी जनता की दया पर निर्भर करता था । लोग चिल्ला-चिल्लाकर विजयी को उत्तेजित और प्रोत्साहित करते कि वह अपने प्रतिद्वंद्वी को मार डाले । यह बात भी ध्यान देने की है कि प्रजातांत्रिक रोम में शासक यद्यपि 'जन-प्रतिनिधि' या 'प्रिंसेस' होता था, फिर भी उसकी स्थिति किसी पूर्ण-स्वामित्व प्राप्त शासक से कम नहीं थी ।

गुलामों का शौकीन

भारत में भी दिल्ली सल्तनत के दौर में फिरोजशाह एक ऐसा बादशाह हुआ है, जिसका सबसे बड़ा शौक गुलामों को भेंट में पाना था । अमीरों और सरदारों से गुलामों की भेंट पाकर वह खुशी से फूला न समाता था । इसमें संदेह नहीं कि वह इन गुलामों की पूरी देख-रेख करता था और उन्हें कारीगरी और हुनर सिखाने की भी पूर्ण व्यवस्था करता था— यहां तक कि उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सल्तनत में लगभग १२,००० गुलाम कसीह (कारीगर) बन गये थे ।

कुछ भारतीय रियासतों के राजा-महाराजाओं की सनक के किस्से भी मशहूर हैं ।

जंगली शेर और पालतू चीते के बीच लड़ाई

भूतपूर्व रियासत संगरूर के महाराजा रनबीर सिंह चीते के शिकार के शौकीन थे, लेकिन उनका तरीका अन्य शिकारियों से अलग था । वे अपने पालतू चीतों को जंगली शेरों से लड़वाते थे । पिंजड़ों में बंद इन प्रशिक्षित चीतों को जंगल में शेरों के क्षेत्र में छोड़ दिया जाता था और महाराजा चीतों और शेरों के द्वंद्व का आनंद लेते थे । हिरनों का शिकार करने के लिए भी इन चीतों का उपयोग किया जाता था । इन द्वंद्वों और शिकार के बाद चीते अपने पिंजड़ों में लौट आते थे । ये चीते किसी भी दृष्टि से नंद-वंशीय राजाओं के 'अहेरी चीतों' से कम नहीं रहे होंगे ।

प्रतियोगिता—चिड़ियों के शिकार की

पटियाला-नरेश भूपिंदर सिंह अपने मनोरंजन के लिए विविध 'मदनोत्सवों' के अतिरिक्त खुले मैदानों में चिड़ियों के शिकार की प्रतियोगिताएं आयोजित करवाते थे, जो दो से तीन सप्ताह तक चलती थीं । शिकार हुए पक्षियों को उठाकर लाने के लिए प्रशिक्षित कुत्ते साथ रखे जाते थे । पुरस्कार का आधार भी यही होता था कि गोली चलने के बाद कितने समय में कुत्ते शिकार को उठाकर लाते हैं, उसे किस ढंग से पकड़ते हैं, केवल मुंह का प्रयोग करते हैं अथवा दांतों का । वर्तमान में लुधियाना के आस-पास के ग्रामीण-क्षेत्रों में प्रशिक्षित शिकारी कुत्तों द्वारा खरगोशों को पकड़ने की प्रतियोगिता का वार्षिक आयोजन इसी परंपरा का अवशेष जान पड़ता है ।

ऊंटों की निराली दौड़

मध्य एशिया के रेगिस्तानों में एक क्रूरता-भरा खेल खेला जाता है । वहां ऊंट-दौड़ प्रतियोगिता होती है । ऊंटों की पीठ पर पांच-पांच सात-सात साल की आयु के बच्चे बांध दिये जाते हैं । ऊंटों के दौड़ने पर ये बच्चे भय से चीखने लगते हैं । चीखें सुनकर ऊंट और भी तेज गति से भागने लगते हैं । इस खेल ने एक सुनियोजित अपराध का रूप धारण कर लिया है । वह है बच्चों की तस्करी । भारत और पाकिस्तान से, जहां मध्य एशिया में नौकरियां पाने का लालच चरम सीमा को छूने लगा है, बच्चों को अगवा कर लिया जाता है या उनके माता-पिता से खरीद लिया जाता है । फिर उन्हें अवैधानिक रूप से 'निर्यात' कर ऊंट-दौड़ों के आयोजक शेखों के हाथ बेच दिया जाता है ।

मनोरंजनों के कुछ उदाहरण ऐसे भी मिलते हैं, जिनके मूल में पर-पीड़ा में सुख पाने की इच्छा ही थी ।

कुछ शासकों को दूसरों को असमंजसभरी स्थिति में डालने में आनंद आता था । उदाहरण के लिए—

भूतपूर्व रियासत अलवर के नरेश जयसिंह अपने यूरोपीय और अमरीकी अतिथियों के सामने अपने मंत्रियों, अधिकारियों और भारतीय अतिथियों का अपमान करने में अपार आनंद का अनुभव करते थे । कहा जाता है कि एक बार उन्होंने एक पार्टी के दौरान यह आदेश दिया कि शेंपेन और बढ़िया मदिरा केवल विदेशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिथियों को पेश की जाए, भारतीय मेहमानों को केवल सादा पानी पिलाया जाए।

हैदराबाद के निजाम सर उस्मान अली खां बहादुर मालखाने की चाबियां हमेशा अपने ही पास रखते और अपनी संपत्ति को देख-देख कर निहाल होते रहते थे। पैसा इकट्ठा करने की उनकी विधियां भी काफी अजीब थीं। उनका आदेश था कि चाय के साथ केवल दो बिस्किट ले जाएं—एक स्वयं उनके लिए और एक मेहमान के लिए। उनकी दावतें भी अनूठी होती थीं। दावत के समय वे किसी विशेष रईस के पास शैंपेन का गिलास भिजवा देते, जिससे लगे कि वह रईस निजाम का विशेष कृपापात्र है। लेकिन, दस्तूर यह था कि उस रईस को दावत में एक गिलास शैंपेन का मूल्य लगभग एक लाख रुपयों की कीमत की भेंट से चुकाना पड़ता था। इस प्रकार एक-एक दावत में इस तरह छह-सात लाख रुपये एकत्र हो जाते थे। दावत का व्यय सरकारी खजाने से किया जाता था।

जल समाधि देने में ही सुख

तुर्की के सुलतान अब्दुल हमीद और उसके वजीर इज्जत पाशा को अपने विरोधियों को बास्फोरस की खाड़ी में फिंकवाने में आनंद मिलता था। पाशा ने सैकड़ों अधिकारियों और राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं को जल-समाधि दिलवा दी थी। स्वयं सुलतान के हरम में लगभग ३५० स्त्रियां थीं, जो उसकी क्रूरता का निरंतर शिकार होती थीं। उन्हें नियमानुसार सुलतान की सेज तक पेट के बल रेंग कर पहुंचना पड़ता था। यदि सुलतान किसी पत्नी या उपपत्नी से क्रोधित हो जाता था, तो उसे बोरे में सिलवा कर समुद्र में फिंकवा देता था। ●

हंसिकाएं फागुनी

विश्लेषण

बहार में हार क्यों ? बयार में यार क्यों ?
बसंत में संत क्यों ? हाय बस अंत क्यों

* * * *

अभियान

कामदेव का साक्षरता अभियान नया
ढाई आखर जिसने पढ़े, पंडित वह बन गया

* * * *

बोझ

पोथियां पढ़ीं तो हाय देह हुई ठठरी
ढाई आखर पढ़े, हुई लाज की गठरी

* * * *

ठूंठ

ठूंठ क्यों हो गया (प्रेम) पत्र सारे
कहां कहां भिजवाये कुछ तो बता रे

* * * *

कुसुम

मौसमों में मौसम—मौसम महागुनी
कई गुल खिलाएगा—मौसम यह फागुनी

* * * *

शब्दकोष

मूक बधिर अंध लोग, शब्दकोष खाली
संकेतों को कैसी भाषा दे डाली

* * * *

पाणिनी

फागुन ने व्याकरण सभी फाड़ डाले
कोई वैयाकरण भाषा संभाले

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्ची श्रद्धांजलि

सन १९८१, मैं हायर सेकंड्री बोर्ड (कक्षा-ग्यारहवीं) परीक्षा की तैयारी कर रहा था। २५ जनवरी को जीवविज्ञान की प्रायोगिक परीक्षा हुई तथा ३०-३१ जनवरी को रसायन और भौतिक विज्ञान की परीक्षाएं होनेवाली थीं। इसी बीच एक घटना घटी। उनतीस जनवरी को पिताजी के आफिस जाने के लगभग दो घंटे बाद खबर मिली कि 'हृदय-गति रुक जाने के कारण उनकी मृत्यु हो गयी है।' हम लोग कुछ समझ पाते कि थोड़ी ही देर में उनका मृत-शरीर भी घर लाया जा चुका था।

परिचित-अपरिचित लोगों का तांता लग गया। लोग आते थे संवेदना व्यक्त करने, परंतु जैसे ही मालूम होता कि कल मेरी परीक्षा है, वे पूछते— "तुम परीक्षा दोगे ?" लेकिन मन का झंझावत मेरी आंखों को सूना एवं वाणी को अवरुद्ध कर गया था।

अगले दिन परीक्षा देने के लिए मैं निश्चित समय पर विद्यालय पहुंचा। घटना की खबर वहां भी पहुंच गयी थी। जीवविज्ञान के शिक्षक, जो सामने खड़े थे, ने मुझे दोस्तों की भीड़ में से ले जाकर प्रयोगशाला में बैठाया। उस घटना के संबंध में बातचीत की। फिर वे कुछ देर तक शांत भाव से बैठे रहे। मुझको समझाया— "जो होना था हो चुका। अब परेशान होने से कोई लाभ नहीं है।" एक क्षण रुककर वे बोले— "थ्योरी की परीक्षा मार्च में होगी। अब तुम्हें किसी कीमत पर यह परीक्षा पास करना है। यही तुम्हारे लिए पिताजी की आत्मा को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अतः दोहरे उत्साह से परीक्षा की तैयारी में लग जाओ।"

उनकी सांत्वना मेरे ज्योतिहीन जीवन हेतु उस समय प्रकाशपुंज बन गयी। मानसिक परेशानियों के बावजूद मैंने परीक्षा दी। जब परिणाम घोषित हुआ तो मेरी खुशी का ठिकाना न था। मैं काफी अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण हुआ था। विद्यालय जाने पर वे शिक्षक मेरी पीठ थपथपाकर बोले— "मैं तुमसे बहुत खुश हूं। तुम्हारा साहस सचमुच प्रशंसनीय है।"

मेरे सजल नेत्र उनकी ओर उठकर श्रद्धा से झुक गये। होठों से 'धन्यवाद' भी नहीं निकला। वे सिर्फ हिलकर रह गये।

आज भी जब कभी अपनी हायर सेकंड्री परीक्षा की अंक-सूची देखता हूं, तो उन शिक्षक द्वारा मेरे मानस-पटल पर दी गयी दस्तक की याद ताजी हो जाती है।

— राजनारायण वर्मा
द्वारा अभिसारिका साड़ी सेंटर
अमलाई कालरी (जि. शहडोल) म.प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरती के फरिश्ते

सन १९४७ की एक रात । लगता था दूसरे दिन का सूरज देखना नसीब न होगा । बाहर और धार्मिक नारे गूंज रहे थे । थोड़ी-थोड़ी देर के बाद गोलियों की आवाज कानों में पड़ती और हम लोग कांप उठते । दरवाजे के बाहर कुछ आवाजें सुनायी दीं । दरवाजा खटखटाना । कुछ बातें । कदमों की आवाज । कुछ लोग खिड़की की तरफ भी हैं । हम सबकी सांस चलनी रुक-सी गयी है । लगता है अंतिम क्षण आ पहुंचे हैं । सब एक-दूसरे की तरफ खामोश, प्यारभरी निगाहों से देख रहे हैं । तभी एक आवाज सुनायी देती है— "खिड़की खोलो । बात सुनो । हम आपकी मदद को आये हैं ।" हम सब परेशान हैं । हैरान हैं । चेहरों पर हवाइयां उड़ रही हैं । एक-दूसरे का मुंह तक रहे हैं । सोचते हैं जो होगा देखा जायेगा । साहस बटोर एक ने खिड़की खोल दी, बाहर आठ-दस आदमी खड़े थे । सभी के हाथों में कोई न कोई हथियार था । उनमें से एक बोला— "हालात बहुत खराब हैं । आपका यहां रहना ठीक नहीं । मौत को बुलावा देना है । हम जानते हैं कि आप लोग यहीं हैं । हम कपड़े भी साथ लाये हैं । उन्हें पहन लो और हमारे साथ गांव चलो ।" सलाह करते हैं । कोई भी कपड़े पहन गांव नहीं जाना चाहता । सुन चुके हैं कि अब भी ऐसा हुआ है बचानेवाला खुद मारा गया पर किसी को बचा नहीं सका । यही बात सुनी जाती है । साथ ही कहा गया— "यहीं रहते आप जो भी मदद कर सकते हैं करें ।" कुछ लोग छत पर आकर बैठ गये । कई बार मौत द्वार तक आयी और लौट गयी, लोगों की टोलियां आतीं । ऊपर से वे लोग चिल्लाते "अंदर सब परदेवाले हैं, हिंदू यहां से चले गये हैं ।"

सारी रात छत पर बैठकर मुसलमान ही हमें बचाते रहे और मौत हमसे आंख-मिचौली खेलती रही । किसी को शक हो जाता, राज खुल जाता तो हमारे साथ-साथ वे लोग भी मारे जाते । उस समय माहौल ही ऐसा था ।

सुबह हुई । पुलिस की देख-रेख में हमें कैंप भेज दिया गया । हम बच गये और भारत पहुंच गये । जिंदगी के वे फरिश्ते याद आते रहते हैं । कई बार ऐसा होता है, दूसरे को मुसीबत में देख मुझे उनकी याद आ जाती है, और मैं खुद को भुलाकर दूसरों की मदद में जुट जाता हूं ।

— के. एल. दिवान

ज्ञानोदय अकादमी
१३२, दया-निकेतन
श्रवणनाथ नगर, हरिद्वार

महान आदर्श महान मस्तिष्क की सृष्टि करते हैं ।

— इमर्सन

आलस्य जीवित मनुष्य की कब्र है ।

— कूपर

तीन सबसे बड़ी उपाधियां जो मनुष्य को दी जा सकती हैं, वे हैं शहीद, वीर और संत ।

— ग्रेंडस्टन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या करेंगे आप ?

'क्या करेंगे आप' स्तंभ के लिए आप हास्य के रंग और व्यंग्य की तरंग में डूबी अपनी खिलखिलाती हुई, गुदगुदा देनेवाली रचनाएं भेजें, और हां 'देखन में छोटी लगें घाव करें गंभीर' की उक्ति को चरितार्थ करती हुई आपकी रचना आठ-दस पंक्ति की ही हो, ताकि अधिक से अधिक रचनाकार इस रोचक 'काव्य-चर्चा' में सम्मिलित हो सकें, काव्य-चर्चा का विषय है—हों बहनजी या हों अंकलजी

सिद्धक दल से ज्यादा
साधक दलों की स्थिति दूभर
ज्यों सांप के मुख में छछूंदर
न निगली जाए
न उगली जाए
नये-नये तंबूवाली
या, पांच-पांडवों की पांचाली
जिसकी सब करें रखवाली
बन गयी एक सरकार निराली।

—राकेश बाजपेयी
क्षेत्र-३, आंचलिक कार्यालय, भारतीय स्टेट बैंक, गोरखपुर

'बन गयी एक सरकार निराली'

किसी धर्मशाला में ठहरे
यात्री जगह-जगह के
तरह-तरह विषयों पर चर्चा
छिड़ गयी बिना वजह से
समय कटेगा चर्चा से
पर भूख मिटेगी कैसे
सभी मिले और लगे बनाने
खिचड़ी बड़े जतन से
किसी न चावल, किसी ने हल्दी
दाल किसी ने डाली
डाला पानी, नमक किसी ने
बन गयी एक सरकार निराली

—कौशल कुमार दुबे
ग्रा. शांतिपुर, पत्रा. चांदन, जि. भागलपुर

डमरूबाला कहता आया
ओ दिल्ली दिलबाली
मगन भई जनता यूं गावै
सुन लै री घरबाली
ताऊ नाचै ठुमक ठुमक कै
दोऊ हाथ बजा कै ताली
भानुमति का चंद्रेश पिटारा
कभी रहा न खाली
रह गये यूं राजीव देखते
बन गयी सरकार निराली

—रमेशचन्द्र भट्ट 'चंद्रेश'
चंद्रेश सदन मोह. नीमघटा, पो-डीग ३२१२०३, जिला-भरतपुर (राजस्थान)

संपर्क 'क्या करेंगे आप', द्वारा : संपादक, 'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली-१
अंतिम तिथि : २० मार्च १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक जी अब आप भी बदल जाओ
हमारी रचनाओं के विमान मत उड़ाओ
अब हमारी रचनाओं को एम.पी. — सा मान दो
नहीं तो जनमत संग्रह करवा लो
हमारी एक सील ने बदली रीत पुरानी
लाखो मतों से बनी एक सरकार निराली ।

—शीतला प्रसाद गुप्ता

बैंक ऑफ बड़ौदा, शाखा—बुरहानपुर, जिला- पूर्व निमाड़ (म.प्र.) ४५०३३१

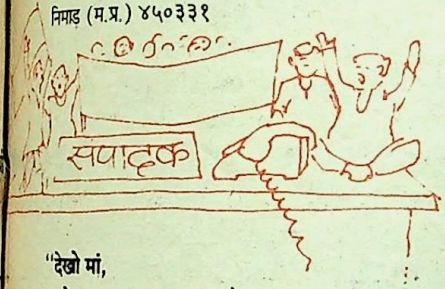

"देखो मां,
हमारे हाथ आज क्या लगा है"
देवी के मंदिर में जाकर
वे जोर से बोले
खीझकर मां ने नैन खोले
और
झुंझलाते स्वर में कहा—

"अरे कुछ पा गये हो
तो ऐसे मत चीखो
बदली हुई परिस्थितियों से
कुछ तो सीखो
जाओ पांचों मिलकर
एक पार्टी बना लो
और जो भी मिला है
उसे मिल बांटकर खा लो"

तो मां का वचन न जाए खाली
सो बन गयी एक सरकार निराली

—नेमी जैन

एस टी-१२ म.प्र. विद्युतमंडल कॉलोनी, जबलपुर

बंद करो करतूतें काली
नहीं चलेगी कहीं दलाली
एक नजर मैंने भी डाली
मिले कहीं तो कुरसी खाली
सबके भाग्य बदलने वाली
बस, चक्के पर चलनेवाली
देखो, सोचो, समझो प्यारे
बन गयी एक सरकार निराली ।

—चंद्रप्रकाश 'माया'

हिंदी विभाग, दी बिहार जर्नल्स, पटना-८००००१

आलू की सब्जी खाते
मन गया जब ऊब
व्याकुल देख 'ताऊ' ने
दी अनोखी सूझ
बैंगन, गोभी, घीया, कद्दू
मटर, टमाटर, गाजर, मूली
पके सब संग बने स्वादिष्ट
भाजी-जैसी मिली जुली
बनी एक सरकार निराली

—पवन शर्मा

भारतीय कला साहित्य परिषद, भादरा जि. श्रीगंगानगर (राजस्थान)

फैल गयी देखो हरियाली
रंग-बिरंगी बगिया-क्यारी
बड़ा निराला इसका माली
बन गयी एक सरकार निराली
दे भई अब ताली पर ताली
वार न जाए कोई खाली
सिर चढ़ बोली बोफोर्स दलाली
बन गयी एक सरकार निराली ।

—डॉ. अत्रि भारद्वाज

७३८, प्रेम नगर, यमुनानगर, हरियाणा-१३५००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

फूल, कांटे और मैं

जब भी
गुजरता हूं
इस पुराने
परिचित बाग से
क्षणभर की है
यह खुशबू
घबराता, इस अहसास से

ठिठक जाते
पांव

कहीं से कांटे की
भीगी आवाज आती
उम्रभर साथ दोगे

आंसू

द्रवित हुआ मन
उठी पीड़ा
आह
स्वर उठा
सह न पाये
जख्म अपनों के
छिपा न पाये
दिल में दर्द को अपने
शब्दों में भी कह न पाये
मन के किसी कोने से
ये मासूम आंसू
अनायास ही छलक आये

जख्म

पत्थर फेका किसी
अनजाने ने
सिर से आ टकराया
समय बीता
घाव भर गया

दिल तोड़ डाला किसी
अपने ने
जख्म गहरा हुआ
मगर भर न पाया

स्मृति

ताजी हो गयी स्मृति
वही चिर-परिचित
अश्रु मिश्रित मुसकान के साथ
विदाई के उन क्षणों में
छुए थे जब चरण तेरे
फूट पड़ी थी अश्रु धारा
ममता के अगाध
सागर के किसी कोने से

छलक पड़े हैं दो आंसू
आज इस अकेलेपन में
मां ! तेरी स्मृति में

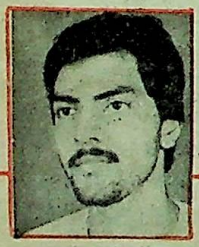

अरविंद दरमोड़ा

आत्मकथ्य

कुछ दृश्य और घटनाएं हृदय में एक शीतल उफान-सा ले आती हैं । जो शब्दरूपी साज-उद्‌गार बनकर आ जाते हैं, इसे ही कविता मानता हूं ।

— वीर चंद्रसिंह गढ़वाली मार्ग, श्रीनगर-गढ़वाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रा भटनागर

आत्म-कथ्य

शिक्षा : स्नातकोत्तर (प्राचीन इतिहास) व बी.एड., रुचि : पठन-पाठन व लेखन, जो स्वयं को संतुष्टि दे।

अत्यंत संवेदनशील होने के साथ-साथ पग-पग पर फैली विसंगतियां ही मुझे मजबूर करती हैं— कुछ कहने के लिए। हां, प्रकृति मेरा सहारा है— रास्ते चलते मैं प्रकृति से बहुत कुछ बिना बताये अपनी झोली में डाल लेती हूं। और कुछ भी कह पाने का साहस मुझमें 'जिंदा' रहता है। प्रयोगवाद में विश्वास करती हूं।

८९०-बी, एम. डब्लयू., पुरानी रेलवे कॉलोनी कोटा— ३२४००२ (राज.)।

मौत भी उदास है

मौत आज बहुत उदास है
रो रही है
किसी के कंधे पर नहीं बैठ
लड़खड़ाये कदमों से
अपना बोझ उठाये
अपने पैरों चल रही है
सच
मौत भी उदास है।

कविता की यात्रा

खंडहरों में लिखी कविता
झील का किनारा कब छू पायी

पत्थरों की संदों में
दबी गरम, सूखी श्वासें—
मौत और जिंदगी के बीच झूलती
कटीली झाड़ियों के टूंठों को देख
कितना मुसकरा पायीं

पत्थरों के दरकने पर
कभी हवा ठंडी नहीं चली
कोई नहीं जानता
पत्थरों के टूटते टुकड़े कब
सिसकते-सिसकते रो पाये

कविता अभी भी
झुकती, मुड़ती
पत्थरों के टुकड़ों से भरी
संकरी पगडंडी पर चल रही है
शायद खंडहर खत्म हों
और कोई झील
झील का किनारा मिल जाए

लुटा कर्ज

वह हंसा
हंसता रहा
अब उसे कोई भय नहीं था

उधार रेत से
जो घरौंदा उसने बनाया था
खड़ा नहीं
कुचला गया था

गये देर तक
अलसायी रेत
गीली बनी रही
नीचे पर्त दर पर्त
रेत ही थी
आधार रेत, प्रासाद रेत

उसने कुचले घरौंदे को सहलाया
फिर घरौंदा बनाया
जिंदा घरौंदा

वो फिर हंसा—
रेत तो रेत ठहरी

फिर आधार कहां
प्रासाद कहां

डूबती-सी हवा में
नोंचकर उसने
मुट्ठीभर रेत
हवा में लहरा दी
सूखकर रेत
बिना आवाज पसर गयी

वो हंसकर दौड़ता चला गया
अभी भी दौड़ रहा है
हंस रहा है
बिना निशान और परिवर्तन के

अंक में प्रकाशित 'प्रवेश' स्तंभ में पृष्ठ
प्रकाशित कविताओं की रचनाकार हैं
लिंक डिक्रूज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' प्रविष्टि ९५ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए। सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं—पाठकों के सुपरिचित पं. के.ए. दुबे 'पद्मेश'।

● के. ए. दुबे पद्मेश

मदनमोहन खुराना, नयी दिल्ली

प्रश्न : नौकरी का योग कब तक ?

उत्तर : २० मार्च से जून १९ के मध्य अथवा १६ दिसम्बर ९० से २७ जुलाई ९१ के मध्य नौकरी का योग है।

पद्मा शुक्ला, लखीमपुर-खीरी

प्रश्न : पुत्र का योग कब तक ?

उत्तर : आपकी कुंडली में पुत्र का योग नहीं है, चार कन्याएं हो सकती हैं, यदि परिवार नियोजन का पालन न किया गया।

अंजली शर्मा, लुधियाना

प्रश्न : मेरा विवाह किस प्रकार का होगा ?

उत्तर : आपका जन्म २१ सितंबर १९५१ को मेष लग्न में हुआ, प्रेम विवाह का योग बनता है। विदेश में बसे युवक से विवाह होगा।

अतुल टंडन, पटना

प्रश्न : क्या मुझे राजनीति में सफलता मिलेगी ?

उत्तर : नहीं, आपकी कुंडली में राजनीतिक सफलता के योग नहीं हैं।

सिद्धार्थ दुबे, लखनऊ

प्रश्न : शिक्षा में सफलता के लिए क्या करें ?

उत्तर : आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है, मंगल दसम भाव में है, मूंगा धारण करें, तथा कठोर परिश्रम करें। जिससे उच्च अधिकारी बन सकते हैं।

रमेश कटियार, इटावा

प्रश्न : क्या मैं विदेश जा सकता हूं ?

उत्तर : आपकी कुंडली में विदेश जाने का योग है, निश्चित रूप से विदेश जाएंगे।

प्रेम सिंह रावत, नैनीताल

प्रश्न : नौकरी का योग कब तक ?

उत्तर : २१ जुलाई ९० से १९ जून ९१ के मध्य।

विवेक शुक्ला, कलकत्ता

प्रश्न : नौकरी का योग कब तक है ?

उत्तर : आप व्यापार करें, और वह भी साझे में न करें, १९९० का वर्ष आपके लिए उपलब्धि पूर्ण होगा।

रंजन भट्टाचार्या, नयी दिल्ली

प्रश्न : राजनीतिक भविष्य क्या है ?

उत्तर : आगामी चुनाव में सफलता मिलेगी, उससे पूर्व संगठन में कोई पद।

राजेश सिंह सोलंकी, विलासपुर

प्रश्न : विवाह का योग कब तक ?

उत्तर : २६ वें वर्ष में विवाह का योग बनता है।

राजेन्द्र इंदौरिया, जयपुर

प्रश्न : नौकरी या व्यापार किससे प्रगति होगी ?

उत्तर : आपकी कुंडली में व्यापार का योग नहीं, आप नौकरी के लिए प्रयत्नशील रहें, सफलता मिलेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरमीत कौर, अमृतसर

प्रश्न : मेरा विवाह कब होगा ?

उत्तर : २३ वर्ष की आयु में विवाह का योग बनता है।

सीमा देशमुख, नागपुर

प्रश्न : नौकरी में चल रहा विवाद कब समाप्त होगा ?

उत्तर : २० मार्च से १९ जून के मध्य आपको विवाद से मुक्ति मिलेगी।

गोविन्द बिहारी अग्रवाल, आगरा

प्रश्न : कर्ज से मुक्ति कब मिलेगी ?

उत्तर : २ मार्च १९९० से उत्तम समय प्रारंभ हो रहा है, व्यावसायिक प्रगति होगी, कर्ज से मुक्ति मिलेगी।

मेहुल देसाई, बड़ौदा

प्रश्न : मेरा विवाह कब होगा ?

उत्तर : २४ वर्ष की आयु में।

प्रभाकर मिश्र, धनबाद।

प्रश्न : कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : आपका जन्म वृष लग्न में हुआ है, शनि दशम भाव में है, नीलम धारण करें।

अनूप सक्सेना, इंदौर

प्रश्न : धन का संकट कब समाप्त होगा ?

उत्तर : २७ वर्ष तक आर्थिक संकट के योग हैं, २८ वर्ष से आर्थिक प्रगति के योग प्रारंभ होंगे।

हेमन्त यादव, बरेली

प्रश्न : नौकरी का योग कब से ?

उत्तर : १९९० का वर्ष आपके लिए सभी तरह से लाभप्रद होगा, नौकरी भी मिलेगी।

'नक्षत्रिका'
१८, रतनलालनगर, कानपुर-२०८०२२

१७

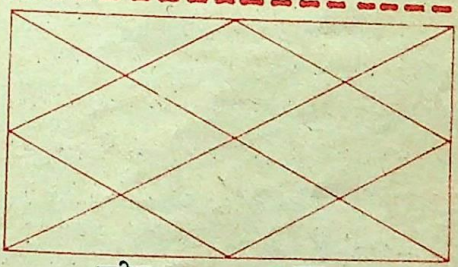

नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना..... सन.....

जन्म-स्थान..... जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा ..... वर्तमान.....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

.....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १७ 'कादम्बिनी',
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

अंतिम तिथि : २० मार्च, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक समाचार

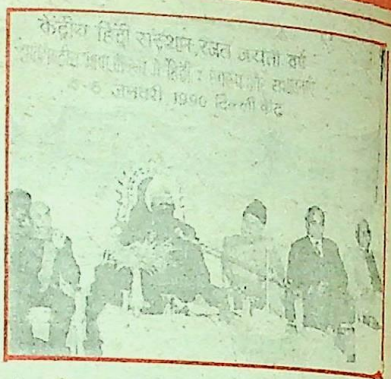

अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी

नयी दिल्ली । केंद्रीय हिंदी संस्थान के रजत जयंती के उपलक्ष्य में संस्थान के दिल्ली केंद्र में 'अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी : स्वरूप और संभावनाएं', विषय पर त्रिदिवसीय संगोष्ठी संपन्न हुई ।

संगोष्ठी का उद्घाटन श्रम एवं कल्याण मंत्री श्री रामविलास पासवान ने किया । उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के अध्यक्ष डॉ. पी.एल. मल्होत्रा ने की और संस्थान के उपाध्यक्ष ने आरंभिक वक्तव्य दिया । इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. बालगोविन्द मिश्र ने संस्थान का परिचय दिया । डॉ. मा. गो. चतुर्वेदी ने आधारपत्र प्रस्तुत किया । उन्होंने हिंदी को उभरती हुई अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में बताया और कहा कि पंजाबी, मलयालम, गुजराती, हिंदी आदि कई ऐसी भाषाएं हैं, जिनके बोलने, समझनेवाले संसार के अनेक राष्ट्रों में बसे हुए हैं ।

अंत में संयोजक डॉ. मोहनलाल सर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया ।

इस संगोष्ठी में देश के अनेक विद्वानों/विदुषियों ने अपने प्रपत्र दिये । सभी प्रपत्र सूचनाप्रद, ज्ञानवर्द्धक सिद्ध हुए । श्रोताओं ने भी व्यक्त विचारों पर सटीक प्रतिक्रियाएं प्रस्तुत कीं ।

भारतीय ज्ञानपीठ नाट्य प्रतियोगिता

नयी दिल्ली । भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा आयोजित नयी पीढ़ी नाट्य प्रतियोगिता में श्री विवेकानन्द के नाटक 'अंततः' को सर्वश्रेष्ठ करार दिया गया । निर्णायक मंडल के सदस्य थे—डॉ. पांडुरंग राव, श्री बिशन टंडन और श्री बालस्वरूप राही।

यह प्रतियोगिता-क्रम भारतीय ज्ञानपीठ ने युवा प्रतिभा की खोज कर उसे आगे लाने के लिए चलाया है । प्रत्येक वर्ष किसी एक साहित्य-विधा में प्रतियोगिता आयोजित की जाती है । इस प्रतियोगिता में कोई नकद पुरस्कार न देकर विजयी प्रतियोगी की पांडुलिपि प्रकाशित करने का दायित्व भारतीय ज्ञानपीठ स्वीकार करता है, जो उस विधा में उसकी पहली प्रकाशित पुस्तक होती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

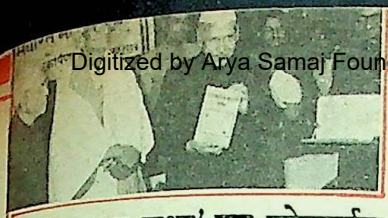

'रामचरितमानस-सुधा' का लोकार्पण

नयी दिल्ली। उपराष्ट्रपति भवन में प्रो. विजयेन्द्र स्नातक की अध्यक्षता में आयोजित एक समारोह में उपराष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने श्री रामचन्द्र गुप्त द्वारा संपादित 'रामचरितमानस-सुधा' का लोकार्पण किया

महिलाओं को भारत निर्माण पुरस्कार

नयी दिल्ली। 'भारत निर्माण' संस्था ने एक समारोह का आयोजन कर दस महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'भारत निर्माण वर्ष १९८९ का पुरस्कार' प्रदान कर सम्मानित किया। पुरस्कृत महिलाओं में शामिल थीं—श्रीमती इंदु जैन (आध्यात्म), सुश्री रीता सिंह (उद्यम), श्रीमती इंदिरा गोस्वामी (साहित्य), श्रीमती पामेलासिंह (संगीत), श्रीमती शहनाज हुसैन (सौंदर्य संस्कार), श्रीमती उमा तुली (समाज सेवा), श्रीमती मीरा रामचंद्रन (शिक्षा), श्रीमती चंद्रप्रभा निर्वाण (नृत्य), सुश्री सीमा किरण (पत्रकारिता) तथा श्रीमती रीता मुखर्जी (बैंकिंग)। समारोह के मुख्य अतिथि थे मानव संसाधन मंत्रालय के सचिव श्री वीर राघवन।

प्रारंभ में भारत निर्माण के संस्थापक-संयोजक श्री एम. सी. भंडारी ने संस्था के उद्देश्यों तथा पुरस्कृत महिलाओं की उपलब्धियों का संक्षिप्त परिचय दिया।

—प्रस्तुति : क्षमा मिश्रा

वीरेन्द्र भट्ट पुरस्कार

वीरेन्द्र भट्ट पुरस्कार : सुश्री मयूरी भारद्वाज द्वारा अपने पति की स्मृति में इस वर्ष से आरंभ किया गया पहला वीरेन्द्र भट्ट पुरस्कार लेखक श्री हिमांशु जोशी को दिया गया। एक सादे समारोह में पुरस्कार की राशि दस हजार रुपये, शाल एवं ताम्रपत्र श्री राजीव गांधी ने प्रदान किये।

श्री गोयल का सम्मान

पिलखुवा। भारतीय साहित्य मंच के तत्वावधान में महामना पं. मदन मोहन मालवीय जयंती के अवसर पर पत्रकार तथा लेखक श्री शिवकुमार गोयल का अभिनंदन किया गया।

वयोवृद्ध हिंदी सेवी श्री हर प्रसाद शास्त्री ने श्री गोयल को शाल भेंट किया। पिलखुवा नगरपालिकाध्यक्ष श्री नरेश माहेश्वरी ने उनका तिलक कर, नारियल भेंट कर नगर की ओर से अभिनंदन किया। —ब्रज शुक्ल 'घायल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

खंडित राग : डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना का प्रथम उपन्यास है । प्रथम उपन्यास होते हुए भी यह लेखक के परिपक्व लेखन और गहन दृष्टि का प्रमाण प्रस्तुत करता है । उपन्यास की कथा रोचक है । किसी भी स्थल पर लेखक ने यथार्थ का आंचल नहीं छोड़ा । कभी-कभी तो उपन्यास पढ़ते हुए यही अहसास होने लगता है कि सभी पात्र लेखक की कल्पना के नहीं, जीवन के अंग हैं । उपन्यास की सफलता का श्रेय इस बात पर भी है कि पचास अध्यायों में बंटे उपन्यास का प्रत्येक अध्याय छोटे हैं फलतः लेखक मुख्यकथा, उपकथा तथा मुख्य पात्रों और गौण पात्रों सभी को साथ लेकर चल सका है । उपन्यास का अंत भी एक विलक्षणता लिये हुए है । यदि अंत में नायक नायिका विवाह-बंधन में बंध जाते, तो उपन्यास एक साधारण त्रिभुजों-चतुर्भुजों वाली प्रणय कथा बनकर रह जाता ।

उपन्यास में दर्शाये विभिन्न तथ्य ऐतिहासिकता के धरातल पर हैं । उदाहरण के लिए १९६२ में अष्टग्रह पर होनेवाले यज्ञ आदि, वास्तव में सारे भारत में किये गये थे । अर्थात काल तथा उसके अनुरूप तथ्य और वातावरण की ओर लेखक का पूरा-पूरा ध्यान रहा है ।

इस उपन्यास के प्रस्तुतिकरण में लेखक की विचारधारा कहीं-कहीं फ्रायड से प्रभावित जान पड़ती है । यही कारण है कि इस चित्रण में लेखक की दृष्टि मनोवैज्ञानिक और निर्भीक रही है ।

— कामिनी बाली

खंडित राग :
डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना, प्रकाशक : सामायिक प्रकाशन, ३५४३, जटवाडा, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२, मूल्य—नब्बे रुपये ।

न्याय के धाम पर : अदालतें अब पहले—जैसी आस्थाएं नहीं जगा पातीं । न्याय के लिखित सिद्धांतों पर ही सत्य-असत्य की परख, मुकदमों के निर्णयों में विलंब और वकीलों की कार्यशैली के कारण अदालतों के प्रति मोहभंग की स्थिति हो गयी है । प्रस्तुत कृति में एक कथानक के माध्यम से न्यायिक प्रक्रिया, उससे संबंधित विभिन्न पक्षों पर अच्छी-खासी चुटकी ली गयी है । उपन्यास के मुख्य पात्र मुंशीजी के प्रस्तुत कथन में लेखक की वेदना झलकती है—

गुस्ताखी माफ, हुजूर ! यदि कानून की डाल पर कोई काला कोट ही इस डाल को कमजोर करे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

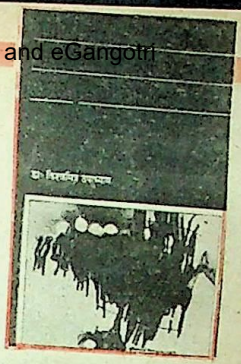

उन्हें काटने के लिए जाने-अनजाने कोई काम करे में कमल का यह बगीचा कब तक बगीचा बना रहेगा ? आज नहीं तो कल क्या यह कूड़ेदान नहीं बनाएगा ?

न्याय के धाम पर

लेखक—मनमौजी, प्रकाशक—विधि सेवा
I-३१, मानसरोवर गार्डन, नयी दिल्ली-१५,
मूल्य—पचास रुपये

भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन और हिंदी साहित्य : कोई भी साहित्य अपने समय के प्रभावों से अछूता नहीं रहता । उसमें युग-विशेष की विभिन्न प्रवृत्तियां, परिस्थितियां प्रतिभाति व्यक्त होती हैं ।और कभी-कभी तो साहित्य अपने समय का मात्र प्रतिबिंब न बनकर युग का निर्देशक, मार्गदर्शक बन जाता है । हिंदी साहित्य भी समय के प्रभाव से अछुता नहीं रहा है । उसने भी न केवल अपने समय के दर्शन की भूमिका निभायी है, वरन जन-जन में चेतना भी उत्पन्न की है, विशेषकर राष्ट्रीयता-संघर्ष के दौरान । सुपरिचित पत्रकार एवं क्रांतिकारी आंदोलन विषयक इतिहास के अधिकारिक विद्वान डा. विश्वमित्र उपाध्याय ने हिंदी साहित्य का इसी दृष्टि से अध्ययन-विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया है । यह महत्त्वपूर्ण कृति ग्यारह अध्यायों में विभाजित है, जिनमें लेखक ने स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न पक्षों, क्रांतिकारियों की भूमिका एवं उनके आंदोलन की हिंदी साहित्य में अभिव्यक्ति आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की है । उनका निष्कर्ष है कि राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष और हिंदी साहित्य में तीन विचारधाराएं साथ-साथ बही हैं । ये विचारधाराएं थीं — गांधीवाद से प्रभावित राष्ट्रीय विचारधारा, राष्ट्रीय क्रांतिकारी विचारधारा एवं मार्क्सवाद से प्रभावित प्रगतिशील विचारधारा । ये राजनीति के क्षेत्र में भी थीं और साहित्य के क्षेत्र में भी । वे एक दूसरे की विरोधी नहीं पूरक थीं । यह शोधपूर्ण कृति अनेक अज्ञात एवं उपेक्षित तथ्य भी सामने लाती हैं ।

भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन और हिंदी
लेखक — डॉ. विश्वमित्र उपाध्याय,
प्रकाशक—प्रगतिशील जन प्रकाशन, बी-५५, गुलमोहर पार्क, नयी दिल्ली-४८, मूल्य—ढाई सौ रुपये ।

भूत विद्या : भूत-प्रेतों के अस्तित्व के प्रति एक ओर अंध-विश्वास है तो दूसरी ओर गहरी शंका । आज के वैज्ञानिक युग में भूत-प्रेतों की चर्चा मानसिक पिछड़ेपन की निशानी मानी जाती है । प्रस्तुत कृति में भूत-प्रेत की शास्त्र-सम्मत परिभाषाएं देकर, उनसे पीड़ित लोगों के उपचारादि के लिए मंत्र एवं अन्य उपाय बताये गये हैं । लेखक की मान्यता है, 'मनोविज्ञान की जिस शाखा को आज 'साईकेयट्री' कहा जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, उसी का प्राचीन नाम भूतविद्या है । लेकिन आज के मनश्चिकित्सक भूत-प्रेतों के अस्तित्व को नकारते हैं, जबकि लेखक का उन पर विश्वास है ।

भूत विद्या
लेखक— डॉ. माहेश्वर उमानाथ बहादुर,
प्रकाशक—सहज आनंद कार्यालय, बी ५/२६३, यमुना विहार, दिल्ली-३२, मूल्य—पचास रुपये

विश्व-प्रसिद्ध मांसाहारी तथा अन्य विचित्र पेड़-पौधे : प्रस्तुत कृति पेड़-पौधों की विचित्र दुनिया से हमारा साक्षात्कार कराती है । पेड़-पौधों का अपना एक विचित्र संसार होता है । स्वर्गीय डॉ. जगदीश चंद्र बसु ने अपने प्रयोगों से यह सिद्ध कर दिया था कि पेड़-पौधों में भी अनुभूति होती है । लेखक ने अपनी इस कृति में संसार के कुछ ऐसे विचित्र पेड़-पौधों के बारे में विस्तृत जानकारी दी है, जो मांसाहारी होते हैं । सत्रह अध्यायों में बंटी इस रोचक और ज्ञानप्रद कृति से पाठकों को पेड़ पौधों के संबंध में नयी जानकारी मिलती है । यह जानकारी वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है । पेड़-पौधे मनुष्य के लिए कितने उपयोगी हैं, यह भी दर्शाया गया है । यदि चीन का गिन्सेंग नामक पौधा रोगमुक्ति का अच्छा साधन सिद्ध हुआ है तो कुछ पेड़- ऐसे हैं जो टी.वी. के एंटीना का कार्य भी बखूबी करते हैं । अंतिम अध्याय में लेखक ने भारत के कुछ विश्व-प्रसिद्ध प्राचीन वृक्षों के बारे में भी जानकारी दी है ।

विश्व-प्रसिद्ध मांसाहारी तथा अन्य विचित्र पेड़-पौधे
लेखक—डॉ. जगदीश सक्सेना,
प्रकाशक—फैमिली बुक्स प्रा. लि. एफ २/१६, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली,
मूल्य—अठारह रुपये । (अजिल्द)

बुद्धि विलास के उत्तर

१. ५० प्रतिशत, २. फ्रांसीसी तथा अंगरेजी में, निर्माता-निर्देशक— पीटर ब्रुक, पटकथा-लेखक— जीन-क्लाड केरियर, ३. क. 'समुद्र' नामक जलयान द्वारा पृथ्वी-परिक्रमा, सेना के तीनों अंगों—जल-सेना, थल-सेना, नभ-सेना—द्वारा आयोजित, ख. ४७,००० कि. मी. दूरी ३७७ दिनों में संपन्न, विगत ४ दिसं. को विशाखाप्तनम बंदरगाह पर वापस, ४. ९वां भारतीय वैज्ञानिक अभियान-दल, नेता रस्क रवीन्द्र, ५. ६२वां संविधान-संशोधन (लोकसभा तथा विधानसभाओं में अनु. जाति/अनु. जनजाति के लिए आरक्षण की अवधि १० वर्ष बढ़ी); ६३वां संविधान-संशोधन (पंजाब में आपातकाल लगाने का अधिकार देनेवाला कानून वापस, ६. क. वैज्ञानिक एम.जी.के. मेनन, विज्ञान तथा तकनालाजी मंत्री, ख. योजना-आयोग के उपाध्यक्ष रामकृष्ण हेगड़े, ग. कांग्रेस (इ) के नेता राजीव गांधी को ७. रोमानिया में राष्ट्रपति चाऊशेस्यू तथा पत्नी को गोली से उड़ाने के बाद कम्युनिस्ट सत्ता का अंत, लगभग १० हजार व्यक्ति मारे गये, ८. क. केरल (६३.८ प्र.श.), ख. केरल राज्य का कोट्टायम शहर, ९. क. अमृतलाल नागर, ख. केदारनाथ सिंह (काव्य-संग्रह 'अकाल में सारस' पर), ग. ग्रीस की पर्यावरण-संबंधी फिल्म 'दि ट्री वी हर्ट' पर, १०. क. सिआचिन हिमखंड (ग्लेशियर)—१८ हजार से २१ हजार फुट ऊंचा, ख. भारत तथा पाकिस्तान के बीच, ११. लक्षद्वीप (आबादी-४५,०००), १२. अमरीका में मनोरंजन का एक लोकप्रिय साधन— रोलर कोस्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● पंडित शिव प्रसाद पाठक

मेष : मास अभीष्ट फलदायी होगा । इच्छित कार्यों की पूर्ति होगी । यश वृद्धि से उत्साह बढ़ेगा । १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेंगा । इच्छित पद परिवर्तन होगा । ८ से १५ के मध्य भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी । १६ से २४ के मध्य व्यस्तता अथवा यात्रा से तनाव बढ़ेंगे । संपत्ति विवाद का वांछित समाधान होगा । शत्रु पक्ष पर विजय मिलेंगी ।

महिलाओं को भेंट सम्मान अथवा उपहार मिलेगा । आजीविका संबंधी कार्य पूर्ण होंगे ।

विद्यार्थियों को शिक्षा कार्यों में व्यस्तता रहेगी । सुखद समाचार मिलेगा ।

वृष : मास सफलतादायी रहेगा । राजकीय सुख मिलेगा । १ से ७ के मध्य पराक्रम में वृद्धि होगी । आकस्मिक यात्रा लाभदायी होगी । ८ से १५ के मध्य संभाषण पर नियंत्रण रखें । १६ से २४ के मध्य शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से सफलता मिलेगी । आकस्मिक धन लाभ से प्रसन्नता रहेगी ।

महिलाओं को नवीन कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी । आर्थिक पक्ष सबल रहेगा । सामाजिक नेतृत्व से प्रसन्नता होगी ।

विद्यार्थियों को शिक्षा परीक्षा कार्यों की अधिकता होगी । श्रम साध्य प्रयास सार्थक होंगे ।

मिथुन : मास में आपके धैर्य तथा संयम की परीक्षा होगी । शत्रु पक्ष से सावधानी रखें । पारिवारिक अस्वस्थता रहेगी । उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा । १ से ७ के मध्य आर्थिक दिशा में लंबित योजनाओं में अकारण विलंब होगा । लेखन सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेंगी । ८ से १५ के मध्य यात्राओं का योग उपस्थित होगा । १६ से २४ के मध्य पारिवारिक अस्वस्थता अथवा दुर्घटनादि से पीड़ा का सामना करना होगा । मासांत में आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी । शत्रुओं के षड्यंत्रों का भंडाफोड़ होगा ।

महिलाओं को व्यर्थ विवाद टालना चाहिए । उदर तथा रक्त-विकार का सामना करना होगा ।

ग्रह स्थिति— सूर्य १४ मार्च से मीन में, मंगल ३ से मकर में, बुध १६ से मीन में, गुरु मिथुन में, शुक्र मकर में, शनि २० से मकर में, राहु मकर में, केतु कर्क में, हर्षल नेप्च्यून धनु में, प्लेटो तुला राशि में ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों को शिक्षा संबंधी कार्यों की अधिकता होगी । कुसंगति से बचाव हितकर होगा । वाहनादि से सावधानी रखें ।

कर्क : मास मिश्रित फलदायी होगा । प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद पुरुषार्थ से पराक्रम बढ़ेगा । पारिवारिक चिंताएं रहेंगी । १ से ७ के मध्य आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी । प्रियजन अथवा विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा । लेखन सृजन संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी । पारिवार में अस्वस्थता के कारण व्यय होगा । १६ से २४ के मध्य जोखिमभरे कार्यों में आकस्मिक सफलता मिलेगी । संपत्ति संबंधी कार्यों में शत्रु पक्ष प्रभावी रहेगा ।

महिलाओं को आर्थिक अस्थिरता के बावजूद पारिवारिक अथवा सामाजिक सुख मिलेगा । अस्वस्थता पर व्यय होगा ।

विद्यार्थियों को शिक्षा कार्यों में सफलता मिलेगी । पारिवारिक चिंताएं बढ़ेंगी ।

सिंह : मास अभीष्ट फलदायी होगा । आर्थिक कार्यों में उल्लेखनीय सफलता मिलेगी । रक्त संबंधियों से पीड़ा होगी । १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से आर्थिक योजना पूर्ण होगी । रुका हुआ धन मिलेगा । आकस्मिक यात्रा लाभदायी होगी । संपत्ति संबंधी समस्या का समाधान होगा ।

महिलाओं का रचनात्मक अथवा आध्यात्मिक कार्यों में उल्लेखनीय योगदान होगा । आजीविका संबंधी प्रयास सार्थक होंगे ।

विद्यार्थियों को परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी । विशिष्ट उपहार या पुरस्कार मिलेगा ।

कन्या : मास अनुकूल एवं श्रेष्ठ फलदायी होगा । रोजगार संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी । नवीन परिवर्तनों से लाभ मिलेगा । १ से ६ के मध्य यात्रा लाभदायक होगी । शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा । ८ से १५ के मध्य आर्थिक दिशा में व्यवधानों के बावजूद सफलता मिलेगी । १६ से २४ के मध्य नवीन योजनाओं में तीव्रगामी प्रगति होगी ।

महिलाओं को धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी । वरिष्ठ जनों के सहयोग से प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।

विद्यार्थियों को कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का सामना करना होगा । शिक्षा कार्यों में श्रम साध्य सफलता मिलेगी ।

तुला : मास में धैर्य तथा संयम से कार्य करें । पारिवारिक एवं आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना होगा । अदूरदर्शिता पूर्ण निर्णय हानिकारक होंगे । १ से ७ के मध्य आर्थिक प्रयास में शत्रु पक्ष से परेशानी होगी । मानसिक खिन्नता रहेगी । ८ से १५ के मध्य वाणी पर नियंत्रण रखना हितकर होगा । १६ से २४ के मध्य उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग सम्मानदायी होगा । मासांत में शत्रु पक्ष पर नियंत्रण होगा ।

महिलाओं को स्वल्प उदर अथवा रक्त विकार होगा । आजीविका संबंधी प्रयासों में व्यर्थ विरोधाभास रहेगा । विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग उत्साहवर्धक रहेगा ।

विद्यार्थियों को सुखद समाचार मिलेगा । मानसिक खिन्नता तथा उद्वेग से बचें ।

वृश्चिक : मास उपलब्धि पूर्ण होगा । शत्रु पक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व और त्योहार

४ मार्च दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णाष्टमी होलाष्टकारंभ, ७ आमलकी एकादशी ८ गोविन्द द्वादशी प्रदोष व्रत, १० पूर्णिमा, होलिका दहन, ११ धुरैंडी, १३ संत तुकाराम जयंती, १५ श्रीगणेश चतुर्थी, १६ रंगपंचमी, २० शीतलाष्टमी, २३ पापमोचनी एकादशी, २४ शनि प्रदोष, २६ सोमवती अमावस्या, २७ वसंत नवरात्रारंभ, गुडी पड़वा, संवत २०४७ प्रारंभ, २९ गणगौरी व्रत, ३० वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, ३१ श्री पंचमी।

पर विजय मिलेगी। आकस्मिक धन लाभ होगा। राजकीय कृपा उपलब्धि पूर्ण होगी। १ से ७ के मध्य लेखन सृजन तथा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। सामाजिक यश तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी। ८ से १५ के मध्य व्यर्थ तनाव तथा अस्वस्थता का सामना करना होगा। अवांछित यात्रा होगी। संपत्ति विवाद का समाधान होगा। मासांत में उन्नति के नवीन पक्ष का उदय होगा।

महिलाओं को नूतन कार्यों की व्यस्तता रहेगी। आजीविका की दिशा में प्रभाव बढ़ेगा।

विद्यार्थियों को शिक्षा कार्यों की अधिकता रहेगी। वरिष्ठ जनों का सहयोग उत्साहवर्धक होगा।

धनु : मास में सावधानी तथा संयम से कार्य करें। १ से ७ के मध्य कार्यों की अधिकता रहेगी। उच्चाधिकारी वर्ग से व्यर्थ विवाद होगा। शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र करेंगे। पारिवारिक वातावरण से खिन्नता रहेगी। १६ से २४ के मध्य लेखन सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों से लाभ होगा। प्रियजनों के सहयोग से आर्थिक समस्या हल होगी। संपत्ति विवाद टालना हितकर होगा। उच्चाधिकारी वर्ग पर प्रभाव बढ़ेगा।

महिलाओं को आत्म-विश्वास तथा साहसिक प्रयासों से प्रतिष्ठा मिलेगी। नवीन कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी।

विद्यार्थी वर्ग के लिए शिक्षा-संबंधी सफलता मिलेगी, प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी।

मकर : मास उत्तम फलदायी होगा। उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से आर्थिक सफलता मिलेगी। नवीन मित्रों के समागम से प्रसन्नता तथा उत्साह रहेगा। १ से ७ के मध्य विद्यमान समस्याओं का समाधान होगा। शत्रु पक्ष का पराभव होगा। ८ से १५ के मध्य आध्यात्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की संपन्नता से प्रसन्नता होगी। नवीन मित्रों का सहयोग उत्साहवर्धक होगा। १६ से २४ के मध्य संपत्ति विवाद का समाधान मध्यस्थों से होगा। सुख साधनों की वृद्धि होगी। मासांत में इच्छित स्थान की यात्रा होगी।

महिलाओं को कार्यों की अधिकता तथा अस्थिरता रहेगी। आर्थिक प्रयास पूर्ण होंगे। स्वजनों से भेंट अथवा उपहार मिलेगा।

विद्यार्थियों को पारिवारिक सहयोग उत्साहवर्धक होगा। शिक्षा कार्यों में एकाग्रता बढ़ाएं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंभ : प्रतिकूल वातावरण में साहसिक प्रयासों से सफलता मिलेगी । व्ययों पर नियंत्रण रखना हितकर होगा । रक्त संबंधियों से कष्ट होगा । १ से ७ के मध्य शत्रु पक्ष से परेशानी होगी । प्रतिकूल वातावरण में व्यक्तित्व का विकास होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । ८ से १५ के मध्य रक्त संबंधियों से पीड़ा होगी । कार्यों में व्यवधान होंगे । मित्रों के सहयोग से आर्थिक समस्या का समाधान होगा ।नवीन योजनाओं में अधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा ।

महिलाओं को अधिकारी वर्ग से लाभ होगा । पारिवारिक वातावरण तनावपूर्ण होगा । सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी ।

विद्यार्थियों को शिक्षा कार्यों में व्यवधान आएंगे । अति उत्साह, भ्रमण एवं मनोरंजन से बचें ।

मीन : नवीन योजनाओं में प्रगति व नवीन दायित्व से प्रसन्नता होगी । भौतिक उपलब्धियों के प्रयास सार्थक होंगे । १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग की समीपता का लाभ मिलेगा । शत्रु पक्ष के प्रयास निष्फल होंगे यात्रा लाभदायी होगी । १६ से २४ के मध्य संपत्ति कार्यों में सफलता मिलेगी । प्रियजन के समागम से प्रसन्नता होगी । विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग उपलब्धिपूर्ण होगा ।

महिलाओं को पारिवारिक उत्तरदायित्व की अधिकता होगी । सामाजिक नेतृत्व में सफलता मिलेगी, स्वजनों का सहयोग मिलेगा ।

विद्यार्थियों के लिए अभीष्ट पूर्ति हेतु अनुकूल समय होगा । पारिवारिक वातावरण अनुकूल होगा ।

—ज्योतिषधाम पत्रिका, १२/४, ओल्ड सुभाष नगर, गोविन्दपुरा, भोपाल म.प्र.

डा. कुसुम अंसल का नया उपन्यास

रेखाकृति

- मानवीय संबंधों के अंतर्द्वन्द्व का सजीव चित्रण
- आज के जीवन के यथार्थ के एक अछूते प्रसंग पर आधारित प्रेम-कथा
- नई ताजगी लिए चुस्त दुरुस्त भाषा, जीवंत चरित-चित्रण और अंत तक बांधे रखने वाली रोचकता

कलापूर्ण आवरण ● डिमाई साइज ● सजिल्द ● मूल्य केवल 35 रुपये मूल्य मनिआर्डर द्वारा भिजवाकर घर बैठे रजिस्टर्ड डाक द्वारा पुस्तक प्राप्त करें

राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अंत में

बोझ नहीं हैं, सींग लदे

© हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फार्म-4
(नियम 8 देखिये)

कादम्बिनी

1.	प्रकाशन स्थान	: नई दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: राजेन्द्र प्रसाद
	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
	पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
4.	प्रकाशक का नाम	: राजेन्द्र प्रसाद
	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
	पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
5.	सम्पादक का नाम	: राजेन्द्र अवस्थी
	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
	पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001

मैं, राजेन्द्र प्रसाद, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह०/- (राजेन्द्र प्रसाद)
प्रकाशक

दिनांक : **28 फरवरी, 1990**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोतीलाल बनारसीदास

भारतीय धर्म, दर्शन, इतिहास, संस्कृति, कला, साहित्य, भाषा विज्ञान, आयुर्वेद तथा ज्योतिष आदि विषयों पर उत्कृष्ट तथा प्रामाणिक साहित्य के प्रकाशक

★ हमारे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन ★

धर्म व दर्शन

वाल्मीकि रामायण: काव्यानुशीलन—शिव बालक राय (सजिल्द: रु. १३०); (अजिल्द: रु. ९०)

वैदिक धर्म एवं दर्शन (२ भागों में)—मूल ले. कीथ अनुवादक सूर्यकान्त (रु. ३००)

भारतीय दर्शन की रूपरेखा—हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा (सजिल्द: रु. ७०); (अजिल्द: रु. ४०)

इतिहास व संस्कृति

भारतीय श्रृंगार—कमल गिरी (रु. ९०)

वीर विनोद: मेवाड़ का इतिहास (२ भागों व ४ जिल्दों में) —श्यामल दास (रु. ८००)

प्रेय्य युग (Hindi Translation of Classical Age) सं. रमेशचन्द्र मजूमदार (सजिल्द: रु. १५०); (अजिल्द: रु. १२०)

साहित्य

आधुनिक नाटक का अन्वेषण: कुछ पश्चिमी दस्तावेज—कुँवर जी. अग्रवाल (रु. ६०)

कालिदास और उनकी काव्यकला—वागीश्वर विद्यालंकार (सजिल्द: रु. १००); (अजिल्द: रु. ७०)

कालिदास—चन्द्रवली पाण्डेय (सजिल्द: रु. १००); (अजिल्द: रु. ७५)

भरत और भारतीय नाट्यकला—सुरेन्द्रनाथ दीक्षित (रु. २००)

भवभूति और उनकी नाट्यकला—अयोध्या प्रसाद सिंह (सजिल्द: रु. १००); (अजिल्द: रु. ७५)

आयुर्विज्ञान

अपक्वव भोजन (अथवा रोगों, व्यसनों तथा विषों से मुक्त एक नया संसार)—अशार्विरतेर हॉवानैसियन (रु. ३५)

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र—धर्मदत्त वैद्य (सजिल्द: रु. १७५); (अजिल्द: रु. १३०)

भारत भैषज्य रत्नाकर (५ भागों में)—रसवैद्य नगीनदास छगन लाल शाह (रु. ५००)

मानव शरीर रचना (On the pattern of Grey's Anatomy) ३ भाग—मुकुन्द स्वरूप वर्मा (सजिल्द: रु. ३८०); (अजिल्द: रु. २६५)

ज्योतिष व गणित

आप और आपकी राशि—केवल आनन्द जोशी (रु. २८)

वैवाहिक विलम्ब के विविध आयाम एवं मन्त्र—मृदुला त्रिवेदी (सजिल्द: रु. ६५); (अजिल्द: रु. ४५)

सचित्र हस्तरेखा सामुद्रिक शिक्षा—एन.पी. ठाकर (रु. २०)

वी.पी.पी. द्वारा भी उपलब्ध। संपूर्ण सूचीपत्र के लिये लिखें:—

मोतीलाल बनारसीदास

41-यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007

शाखाएं: ★ अशोक राजपथ, पटना ★ चौक, वाराणसी ★ 120, रायपेटा हाई रोड, मैलापुर, मद्रास ★ 24, रेसकोर्स रोड,, बंगलौर

VANMB17

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

के प्रकाशन

त्रैमासिक 'भाषा'

भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य की विशिष्ट पत्रिका। हिंदी साहित्यकारों की रचनाओं के साथ-साथ भारत के संविधान में स्वीकृत सभी भाषाओं के प्रतिष्ठित साहित्यकारों की सृजनात्मक उपलब्धियों की झाँकी – हिंदी भाषा के माध्यम से। साथ ही प्रसिद्ध भाषाविदों के व्याकरण एवं भाषाविज्ञान-संबंधी लेख भी। इस प्रकार भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि पत्रिका 'भाषा'। भारतीय साहित्य का दस्तावेज 'भाषा'।

'भाषा' के अंक मार्च, जून, सितंबर और दिसंबर में प्रकाशित होते हैं। इसका प्रत्येक अंक ए-4 साइज में लगभग 100 पृष्ठ का होता है। एक प्रति का मूल्य तीन रुपए और वार्षिक चंदा मात्र दस रुपए। ग्राहक बनने के लिए कृपया निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करें :–

नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, सिविल लाइन्स, दिल्ली-110 054

मासिक 'यूनेस्को दूत'

संयुक्त राष्ट्रसंघ के 'यूनेस्को' की ओर से प्रकाशित मासिक 'यूनेस्को कूरियर' का विश्व की तैंतीस भाषाओं में संस्करण। विश्व के प्रतिष्ठित विद्वानों के शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति, मानविकी आदि विषयों पर लेखों से समृद्ध, बहुरंगे चित्रों से सज्जित इस पत्रिका का हिंदी-संस्करण 'यूनेस्को दूत' केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से प्रकाशित होता है। विश्व की समस्याओं पर सजग दृष्टि रखने वाले हर जागरूक पाठक के लिए अत्यंत बहुमूल्य एवं पठनीय – विश्व दर्शन की पत्रिका – यूनेस्को दूत। एक प्रति का मूल्य मात्र चार रुपए तथा वार्षिक शुल्क मात्र चालीस रुपए।

सदस्य बनने के लिए संपर्क करें :– **सहायक निदेशक (बिक्री), केंद्रीय हिंदी निदेशालय, पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110 066.**

कोश

भारतीय भाषाओं को हिंदी के माध्यम से परस्पर जोड़ने के लिए केंद्रीय हिंदी निदेशालय वर्षों से तत्पर है। भारतीय भाषाओं के बीच सेतु का निर्माण करने के लिए निदेशालय ने एक बहुभाषी कोश तथा अनेक द्विभाषी एवं त्रिभाषी कोशों का निर्माण किया है। हिंदी से अन्य भारतीय भाषाओं में और भारतीय भाषाओं से हिंदी में भी।

क्र. सं.	प्रकाशित कोश	मूल्य
1.	**भारतीय भाषा कोश**	316.00
2.	**व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश**	(मुद्रणाधीन)
3.	**तत्सम शब्दकोश**	323.00
	द्विभाषी कोश	
4.	हिंदी-गुजराती व्यावहारिक लघुकोश	91.00
5.	हिंदी-सिंधी व्यावहारिक लघुकोश	88.00
6.	हिंदी-उर्दू व्यावहारिक लघुकोश	88.00
7.	हिंदी-तमिल व्यावहारिक लघुकोश	88.00
8.	हिंदी-तेलुगु व्यावहारिक लघुकोश	88.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

9. हिंदी-मलयालयम व्यावहारिक लघुकोश	88.00
10. हिंदी-उड़िया व्यावहारिक लघुकोश	88.00
11. हिंदी-मराठी व्यावहारिक लघुकोश	69.00
12. हिंदी-असमिया व्यावहारिक लघुकोश	88.00
त्रिभाषा कोश	
13. हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-I)	199.00
हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-II)	169.00
हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-III)	96.00
14. हिंदी-तमिल-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-I)	199.00
हिंदी-तमिल-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-II)	169.00
हिंदी-तमिल-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-III)	96.00
15. हिंदी-मलयालम-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-I)	199.00
हिंदी-मलयालम-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-II)	169.00
हिंदी-मलयालम-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-III)	96.00
16. हिंदी-कन्नड़-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-I)	199.00
हिंदी-कन्नड़-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-II)	169.00
हिंदी-कन्नड़-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-III)	96.00
17. हिंदी-कश्मीरी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-I)	295.00
हिंदी-कश्मीरी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-II)	222.00
हिंदी-कश्मीरी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-III)	124.00
18. हिंदी-बंगला-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-I)	296.00
हिंदी-बंगला-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-II)	222.00
हिंदी-बंगला-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-III)	124.00
19. हिंदी-पंजाबी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-I)	285.00
हिंदी-पंजाबी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-II)	222.00
हिंदी-पंजाबी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-III)	124.00
20. हिंदी-मराठी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-I)	285.00
हिंदी-मराठी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-II)	222.00
हिंदी-मराठी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-III)	124.00
21. हिंदी-असमिया-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-I)	285.00
हिंदी-असमिया-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-II)	222.00
हिंदी-असमिया-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-III)	------
22. हिंदी-सिंधी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-I)	285.00
हिंदी-सिंधी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-II)	222.00
हिंदी-सिंधी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश (जिल्द-III)	------
संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य विदेशी भाषा कोश	
23. हिंदी-स्पेनी कोश	83.00
24. हिंदी-अरबी कोश	110.00
25. हिंदी-चीनी कोश	156.00
26. हिंदी-फ्रांसीसी कोश	90.00
27. चैक-हिंदी कोश	275.00

davp 89/1144

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

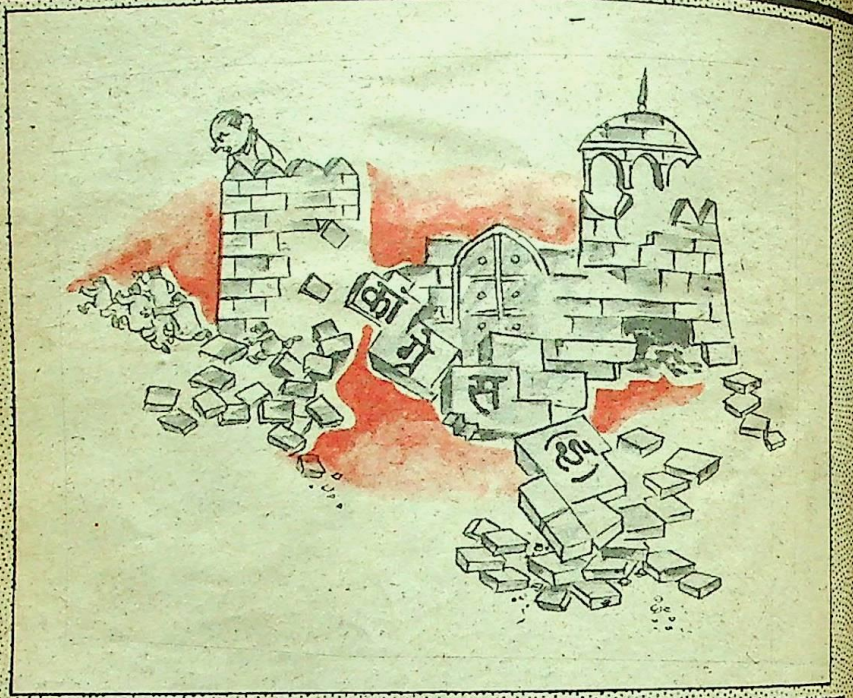

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. तन्मय— क. व्यस्त, ख. अकेला, ग. तल्लीन, घ. बेखबर।

२. दिशांतर— क. अलग क्षेत्र, ख. भिन्न दिशा. ग. विभिन्न दिशाएं, घ. मतभेद।

३. तारतम्य— क. सहानुभूति, ख. संबंध, ग. सिलसिला, घ. तनाव।

४. देदीप्यमान— क. स्पष्ट, ख. जगमगाता हुआ, ग. देखने योग्य, घ. दिखावटी।

५. दुंदुभि— क. बाजा, ख. तुरही, ग. नगाड़ा, घ. शंखध्वनि।

६. झंझावात— क. झगड़ा, ख. वाद-विवाद, ग. तूफान, घ. वर्षा के साथ तेज हवा।

७. ज्ञानगम्य— क. समझदारी से जानने योग्य, ख. जिसमें अथाह ज्ञान हो, ग. ज्ञान से परिपूर्ण, घ. जो आसानी से समझ में आ जाये।

८. परिशीलन— क. शोध, ख. प्रयोग, ग. शिष्टता, घ. प्रगाढ़ अध्ययन।

९. धारणा— क. सिद्धांत, ख. समझ, ग. आस्था, घ. रूप।

१०. बलिष्ठ— क. अखाड़िया, ख. निडर, ग. अत्यंत बलशाली, घ. अडिग।

११. निरुद्यम— क. बेरोजगार, ख. निरर्थक, ग. आलसी, घ. जो सतर्क न हो।

१२. आद्य— क. शुरू का, ख. वगैरा, ग. पूजनीय, घ. सच्चा।

१३. पुरातन— क. पूरा, ख. गंदा, ग. पुराना, घ. दकियानूसी।

१४. परिपालन— क. पुष्टि, ख. संकल्प, ग. निभाना, घ. अच्छी तरह पालना।

उत्तर

१. ग. तल्लीन, लगा हुआ। वह स्वाध्याय में इतना **तन्मय** हो गया है कि अन्य किसी बात की उसे सुध ही नहीं रही है। (तत्+मय)।

२. ख. भिन्न दिशा। दोनों के जीवनक्रमों में **दिशांतर** हो गया है। (दिशा+अंतर)।

३. ग. सिलसिला, क्रमांकन। एक पीढ़ी का दूसरी पीढ़ी से कुछ वैचारिक **तारतम्य** तो होना ही चाहिए। (मूल=तरतम्)।

४. ख. जगमगाता हुआ। महापुरुष मानवता के लिए **देदीप्यमान** नक्षत्र की भांति होते हैं। (मूल=दीप)।

५. ग. नगाड़ा, डंका। वह अपनी विजय **दुंदुभि** बजा रहा है।

६. घ. वर्षा के साथ तेज हवा। इस **झंझावात** में बाहर निकलना कठिन है। (झंझा=हवा चलने या वर्षा होने की आवाज, वात=हवा)।

७. क. समझदारी से जानने योग्य। वेद, उपनिषद आदि **ज्ञानगम्य** हैं। (ज्ञान+गम्य=जानने योग्य)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. घ. प्रगाढ़ अध्ययन, निरंतर अभ्यास या प्रयोग। विश्वविद्यालय प्रत्येक विषय के **परिशीलन** तथा खोज के केंद्र हैं। (परि=अत्यंत, शीलन=अध्ययन)।

९. ग. आस्था, विश्वास, समझ, बुद्धि। सांप्रदायिकता सहअस्तित्व की मूल **धारणा** के विपरीत है। (मूल=धारणा)।

१०. ग. अत्यंत बलशाली। जो **बलिष्ठ** हैं उन्हें क्षमाशील भी होना चाहिए।

११. ग. आलसी, जो किसी कार्य में प्रयत्नशील न हो। **निरुद्यम** होने से मनुष्य समाज में अपना स्थान नहीं बना पाता। (निर+उद्यम)।

१२. क. शुरू का, पहला। रामायण **आद्य** महाकाव्य माना जाता है। (मूल=आदि)।

१३. ग. पुराना। जो **पुरातन** है वह सदैव त्याज्य नहीं होता।

१४. घ. अच्छी तरह पालना। समाज में बच्चों के **परिपालन** की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। (परि+पालन)।

पारिभाषिक शब्द

Adjourn	= स्थगित करना
Sine die	= अनिश्चित काल के लिए
Ad infinitum	= निरवधि
Adhoc	= तदर्थ
Breach of privilege	= विशेषाधिकार-भंग
Cash in hand	= हाथ रोकड़ा
Provident fund	= भविष्य-निधि
Gratuity	= उपदान/आनुतोषिक
Manifesto	= घोषणा-पत्र
Mandate	= अधिदेश

समस्या-पूर्ति—१२७

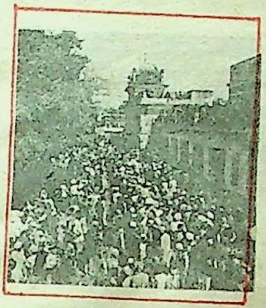

भीड़ भरा मेला

प्रथम पुरस्कार

भीड़ भरा मेला है टूटना-बिखरना है
तने हुए चेहरों के बीच से गुजरना है
कल भी अकेला था आज भी अकेला
जिंदगी ये लगती है भीड़ भरा मेला

—जगदीश श्रीवास्तव

गुप्तेश्वर मंदिर, अंदर किला
विदिशा (म.प्र.)—४६४००१

द्वितीय पुरस्कार

दुनिया है खेल-घर, माटी के पुतले
रंगभरी सज्जा, मुखड़े ये उजले
मन में उल्लास लिये, पर्वों की बेला
जीवन की हलचल है, भीड़ भरा मेला

—डॉ. जयश्री

मंगलम्, नया रामनगर, उरई (उ.प्र.)—२८५००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

वासुदेव गोस्वामी पर निगरानी

स्वाधीनता के पूर्व नौगांव से पोलीटिकल एजेंट बुंदेलखंड की रियासतों का निरीक्षण करने के लिए आये थे । नवंबर १९३१ में उन्हें दतिया रियासत का दौरा करना था । उनके स्वागतार्थ दतिया के लॉर्ड रीडिंग हाई स्कूल के हेडमास्टर को आदेश मिला कि वे समस्त छात्रों से ब्रिटिश शासन का राष्ट्रगीत (नेशनल एंथम) का गायन करायें । अंगरेजों के राष्ट्रगीत की शब्दावली एवं संगीत सिखलाने के लिए रियासत के तत्कालीन मद्रासी बैंड मास्टर को आदेशित किया गया । ४ नवंबर, १९३१ को मद्रासी बैंड मास्टर हाई स्कूल में आये । लगभग २५० छात्र इस निमित्त पंक्तियों में खड़े हुए । उन दिनों सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री वासुदेव गोस्वामी इसी विद्यालय में कक्षा १० के छात्र थे । जब इस शिक्षण के लिए विद्यार्थियों को सूचना दी गयी, तभी से उन्होंने अपनी कक्षा के छात्रों में इस बात पर जोर दिया कि हम लोग अंगरेजों के राष्ट्रगीत का गायन नहीं करेंगे । उनसे कक्षा के सभी छात्र सहमत हो गये ।

राष्ट्रगीत की शिक्षा पाने के लिये छात्रों की जो पंक्ति बनी थी, उसमें गोस्वामीजी अपनी कक्षा के समूह में सबसे पहले नंबर पर खड़े हुए । मद्रासी बैंडमास्टर ने राष्ट्र-गीत का पहला चरण गाया— 'गॉड सेव्ह दी किंग' । अन्य छात्रों ने अनुकरण के स्वर में इसे दुहराया । किंतु दसवीं कक्षा के सभी छात्र मौन खड़े रहे । संयोग से उस दिन हैडमास्टर श्री के.आर. चिकटे ग्वालियर छुट्टी पर गये हुए थे । स्थानापन्न हैडमास्टर श्री हरिमोहन लाल ज्युत्शी ने जब देखा कि दसवीं कक्षा के सब छात्र मौन खड़े हैं, तो उन्होंने समीप आकर सिरे पर खड़े हुए गोस्वामीजी से ही प्रश्न किया, 'बोलते क्यों नहीं ?' गोस्वामीजी ने उत्तर दिया, 'हमारी क्लास यह निर्णय ले चुकी है कि हम लोग अंगरेजों के इस नेशनल एंथम को नहीं गायेंगे ।' गोस्वामीजी के गाल पर एक तमाचा पड़ गया । दूसरे नंबर पर खड़े सूरज नारायण श्रीवास्तव ने भी पूछे जाने पर जब यही उत्तर दिया, तो ज्युत्शी साहब ने आगे बढ़ना उचित नहीं समझा । उस दिन का कार्यक्रम यहीं ठप्प हो गया ।

दूसरे दिन इस निमित्त ग्यारह राज-कर्मचारियों के पुत्रों का चयन किया गया और केवल उन्हें ही नेशनल एंथम के गायन का अभ्यास कराया जाने लगा । इस एकादश में दसवीं कक्षा का कोई छात्र न था ।

निर्धारित तिथि को पोलीटिकल एजेंट आये किंतु उनके स्वागत के कार्यक्रम में से नेशनल एंथम का गायन निरस्त किया जा चुका था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस संबंध में सरकारी जांच प्रारंभ हुई । ठीक एक माह बाद हैडमास्टर श्री चिकटे द्वारा गोस्वामीजी का लिखित बयान लिया गया, जिसमें उन्होंने कहा कि हम लोग दतिया के राजा की प्रजा हैं, उनके लिए कोई गीत गाने में हमारा विरोध नहीं है । किंतु ब्रिटिश नेशनल एंथम से हमारा कोई सरोकार नहीं ।

इसके बाद एक तिथि सूचित की गयी । जिस दिन गोस्वामीजी तथा उनके अभिभावक को इस प्रकरण में दीवान साहब के सम्मुख उपस्थित होने को कहा गया । वे दोनों तथा हैडमास्टर साहब दीवान साहब के पास पहुंचे । गोस्वामीजी के पिता को तो दीवान साहब ने नहीं बुलाया । केवल हैडमास्टर साहब तथा गोस्वामीजी बुलाये गये । सर काजी अजीज उद्दीन दीवान ने गोस्वामीजी को देखते ही कहा, 'यह तो बहुत सीधा लड़का मालूम पड़ता है ।' प्रारंभिक पूछताछ करने के बाद दीवान साहब ने कहा, 'अच्छा, तुम भी अपना माफीनामा पेश कर दो ।'

गोस्वामीजी ने कहा, 'मैंने कोई कुसूर किया ही नहीं, फिर मैं माफी किस बात की मांगूं ।'

—प्रभुदयाल गोस्वामी

ज्ञान-गंगा

सुखमध्ये स्थितं दुःखं दुःखमध्ये स्थितं सुखम् ।
द्वयमन्योऽन्यसंयुक्तं प्रोच्यते जलपंकवत् ।।

(अध्यात्म रामायण, अयोध्याकांड ६/१४)

सुख के भीतर दुःख और दुःख के भीतर सुख सर्वदा वर्तमान रहता है, ये दोनों ही जल और कीचड़ के समान परस्पर मिले हुए रहते हैं।

यदतप्तं प्रणमति न तत् सन्तापयन्त्यपि ।
यच्च स्वयं नतं दारु न तत् सन्तापयन्त्यपि ।।

(विदुर-नीति २/३६)

जो व्यक्ति बिना पीड़ा पहुंचाये ही झुक जाता है, नम्र हो जाता है उसको कोई पीड़ा नहीं देता । जैसे स्वयं झुके हुए काष्ठ को नहीं तपाया जाता है।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः ।

(कठ उपनिषद १/२७)

मनुष्य की कभी धन से तृप्ति नहीं हो सकती ।

न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् ।

(कुमारसंभव ५/४५)

रत्न किसी को नहीं ढूंढ़ता प्रत्युत वह दूसरों के द्वारा ढूंढ़ा जाता है ।

अत्यन्तरमणीयानां सुचिरस्थायिता कुतः ।

(राजतरंगिणी १६)

अत्यंत रमणीय वस्तुओं में चिरकाल तक स्थायित्व नहीं रहता ।

उपायं चिन्तयन् प्राज्ञो ह्यपायमपि चिन्तयेत् ।

(हितोपदेश ४/११)

विद्वान को किसी काम के लिए उपाय सोचते समय अपाय की भी चिंता करनी चाहिए ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

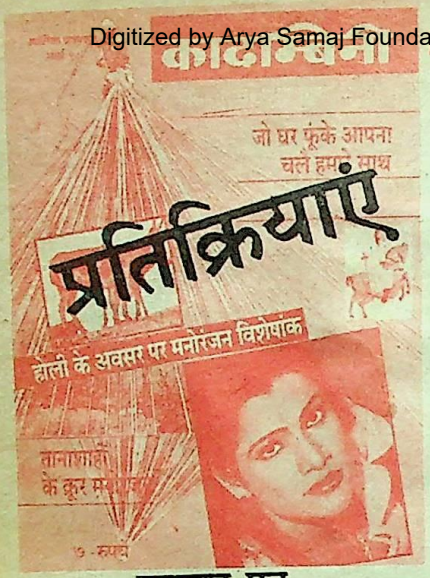

पुरस्कृत-पत्र

फरवरी अंक में 'विजयी जनतंत्र : ढ़ह रहा साम्यवाद' लेख सारगर्भित होने के कारण पसंद आया । बहरहाल, वर्ष १९८९ कम से कम पूर्वी यूरोप के लिए 'परिवर्तनों का वर्ष' था । इन परिवर्तनों की पृष्ठभूमि चीन में गत वर्ष मई-जून में ही लिखी जा चुकी थी । चीनी साम्यवादी दल के पूर्व महासचिव हू माओ यांग के निधन पर आयोजित शोक-सभा को चीनी छात्रों ने जिस प्रकार विशाल जनतंत्रीय आंदोलन में परिणत कर दिया, उससे ऐसा लगा मानो 'लाल झंडा-लाल सलाम' वहां से मिट ही जाएगा; किंतु अंततः जून के प्रथम सप्ताह में इस आंदोलन का सैनिक दमन कर दिया गया । बावजूद इसके साम्यवादी तंत्रों के विरुद्ध बयार बहती रही और वर्षांत से पूर्व इस बयार ने प्रचंड झंझावात का रूप धारण कर लिया । पूर्वी यूरोप के साम्यवादी गढ़ क्रमानुसार ढहते चले गये । लोकतांत्रिक बुल्डोजर चलने की प्रक्रिया का श्रीगणेश पोलैंड से हुआ, और वह हंगरी, चैकोस्लोवाकिया, बुलगारिया तथा पूर्वी जरमनी के साम्यवादी दुर्गों को ध्वस्त करता हुआ रूमानिया जा पहुंचा । स्मरण रहे कि ११ नवंबर को पूर्वी एवं पश्चिमी जरमनी को बांटनेवाली 'बर्लिन की दीवार' तोड़ दी गयी । अमरीकी सिनेटर जार्ज निचेज मैयने ने प्रतीकात्मक रूप से इसे बर्लिन की दीवार का ढ़हना और साम्यवाद का विफल होना कहा है ।

वारसा संधि के देशों से इतर युगोस्लाविया में भी उथल-पुथल मची, वहां के साम्यवादी दल का विभाजन हुआ और अब बहुदलीय प्रणाली की तैयारी है । अलबत्ता, नन्हें-से अल्बानिया के अतिरिक्त सोवियत संघ के किसी मित्र-राष्ट्र में साम्यवादी दल का एकाधिकार नहीं रहा । इन देशों में साम्यवाद का नाम लेना भी एक शर्म-सा बनता जा रहा है, इसलिए कुछ देशों के साम्यवादी दल नाम तक बदल रहे हैं ।

बहरहाल, यदि हम साम्यवादी-प्रसार के संपूर्ण इतिहास का सिंहावलोकन करें, तो पाएंगे कि प्रत्येक देश में अल्पसंख्यक साम्यवादी तत्वों ने ही हावी होकर सत्ता हथियायी है । किंतु यदि स्वयं को थोपने के बाद भी कोई अर्द्ध-शताब्दी तक जनसामान्य को अपना दर्शन समझाकर अपने प्रति निष्ठावान न बना सके, तो संदेह होता है कि कहीं मार्क्सवाद में ही कोई त्रुटि तो नहीं है ?

जो भी हो, सोवियत संघ में पेरेस्त्रोइका (पुनर्निर्माण) और ग्लासनोस्त (खुलेपन) की हवा चलने के बाद खान-श्रमिकों की राष्ट्र-व्यापी हड़ताल तथा अन्य श्रमिकों की स्थानीय हड़तालें देखकर इस ढकोसले की पोल खुल गयी है कि 'साम्यवादी राष्ट्र श्रमिकों के स्वर्ग होते हैं ।' इसी तरह गत मई-जून में चीन के विभिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगरों में जो विराट प्रदर्शन हुए और ४ जून को राजधानी पेइचिंग के थ्यान-अन-मन चौक में प्रदर्शनकारी छात्रों पर जिस बेरहमी से टैंक और बख्तबंद गाड़ियां चढ़ाकर सड़कें लहू से लथ-पथ कर दी गयीं, उससे साम्यवादी देशों की सरकारों के जनाधार का खोखलापन स्पष्ट हो गया। और अब पूर्वी यूरोप में साम्यवादी सरकारों के भूलुंठन से उस खोखलेपन पर पक्की मुहर लग गयी है।

वस्तुतः साम्यवाद से मोह-भंग होने के आधार तो आरंभ से ही विद्यमान थे। साम्यवादी शासन की स्थापना से पूर्व रूमानिया पूर्वी यूरोप का अन्न-भंडार था, किंतु चाउशेस्कू-शाही में लोगों को 'पॉव रोटी' तक के क्रयार्थ लंबी लाइनें लगानी पड़ती थीं। ऐसी स्थिति में असंतोष के उमड़ते अम्बुधि में साम्यवादी तानाशाहों का डूब जाना और साम्यवादी दलों का बह जाना एक अनिवार्यता बन गयी थी। किमधिकम्।

—कुमार निर्मलेंदु
द्वारा श्री वाई.पी. सिंह
केंद्रीय विद्यालय, उर्वरक नगर, बरौनी

इस लेख पर हमें निम्नलिखित पाठकों के भी पत्र मिले हैं—

डॉ. विभूति पाठक, इंदौर; गणेशदत्त अमोला, इंजनगर; जयंत चक्रवर्ती, पटना सिटी; मंजु खेरा, हल्दवानी; मनीष तिवारी, बरेली; फुलिकुमार मिश्र, कानपुर; वनिता सिन्हा, पटना; विजयप्रकाश जैन, जयपुर आदि।

प्रोत्साहन-पत्र

फरवरी अंक में प्रकाशित 'प्रवेश' सहित अन्य कविताओं को पढ़कर कविता के पाठक होने का सुख प्राप्त हुआ। कविता, जिसे आज दोयम दर्जे का साहित्य समझा जाता है और जिसे मंच के कथित कवियों ने सड़कों पर बिक रहे फुटपाथी साहित्य की श्रेणी में ला खड़ा किया है; उस कविता का कितना प्रभाव हो सकता है, कादम्बिनी की उक्त कविताओं ने सिद्ध कर दिया है।

शायद, कुछ लोगों को यह पढ़ते हुए बुरा लग रहा हो कि कविता दोयम दर्जे का साहित्य मानी जाती है किंतु यह सत्य है और जिसे किसी भी तरह झुठलाया नहीं जा सकता। कविता के पाठक हैं कहां ? ढूंढ़ने पर भी मिल जाए, तो गनीमत होगी।

कवि-सम्मेलन का अर्थ तुकबंदीकारों का जमावड़ा और श्रोताओं की भीड़ का मतलब कविता को छोले और चाट के स्वाद में चखनेवालों का मेला हो गया है। भला हो पत्र-पत्रिकाओं का, जो कविता को जनता के बीच किसी तरह रखे हुए हैं अथवा कविता पढ़ने के लिए सपने ही देखने पड़ते और तब भी शायद कविता नजर नहीं आती।

कविता को उसका अधिकार दिलाने के लिए न केवल मंच के उन तुक्कड़ों का विरोध करना होगा, जो कविता के नाम पर चुटकुले सुनाकर जनरुचि बिगाड़ते हुए कविता के गौरव को धूल-धूसरित कर रहे हैं, बल्कि कविता लिखनेवालों को पूरा सम्मान देना होगा। कादम्बिनी से हम ऐसी सार्थक पहल की विनम्र अपेक्षा करते हैं।

—राजकुमार प्रियदर्शी
पाली मारवाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसार-भारती विधेयक

फरवरी अंक में 'समय के हस्ताक्षर' के अंतर्गत 'प्रसार भारती विधेयक-१९८९' की चर्चा पढ़ी । इस विधेयक के बारे में कई ऐसे प्रश्न मन में थे और हैं, जिन्हें मैं सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से पूछना चाहता था । 'कादम्बिनी' का बहुत आभारी हूं, जिसने मेरे मन की भावनाओं को व्यक्त किया ।

—खिलपति बावा, ज्योतिपुरम

प्रेरणाप्रद 'श्रमदान'

फरवरी अंक में प्रकाशित कहानी 'कागज का देश' ने हृदय को झकझोर दिया । कहानी 'श्रमदान' भी उच्चकोटि की है । मैं अपने घर में सिर्फ खाना बनाने का कार्य करती हूं । यह कार्य सिर्फ सुबह और शाम होता है । बाकी पूरा दिन सोकर या किताबें पढ़कर ही गुजारती थी । फिर भी अपने आप को थकी-थकी-सी महसूस करती थी । 'श्रमदान' कहानी पढ़ने के बाद मैंने महरी के साथ-साथ स्वयं भी गृह-कार्य करना शुरू कर दिया । इससे सफाई आदि का कार्य भी मन-माफिक होता है, व शरीर में स्फूर्ति भी रहती है । सबसे खुशी की बात तो यह है हमारी महरी भी खुश रहती है ।

—उषा साहू, बंबई

मूल्य खटकता नहीं

पत्रिका का पुराना पाठक हूं । फरवरी का अंक आद्योपांत पढ़ा, कादम्बिनी के विविध-मुखी स्तंभ, कहानियां व लेख मन को प्रेरणा से भर देते हैं, इसलिए इसका मूल्य खटकता नहीं है।

—राकेश पांडे, पिथौरागढ़

डा. कुसुम अंसल का नया उपन्यास

रेखाकृति

- मानवीय संबंधों के अंतर्द्वन्द्व का सजीव चित्रण
- आज के जीवन के यथार्थ के एक अछूते प्रसंग पर आधारित प्रेम-कथा
- नई ताजगी लिए चुस्त दुरुस्त भाषा, जीवंत चरित-चित्रण और अंत तक बांधे रखने वाली रोचकता

कलापूर्ण आवरण • डिमाई साइज • सजिल्द • मूल्य केवल 35 रुपये मूल्य मनिआर्डर द्वारा भिजवाकर घर बैठे रजिस्टर्ड डाक द्वारा पुस्तक प्राप्त करें

राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेताल सुनो !

कादम्बिनी का फरवरी अंक बेहद पसंद आया। आपके सभी स्तंभ भूरि-भूरि प्रशंसा के योग्य है। व्यंग्य 'बेताल सुनो' — 'चाणक्य नगरी में जिसकी इज्जत बच जाए, बहुत है।' बहुत अच्छा लगा। 'कौन थे विद्यापति' यह लेख भी प्रशंसनीय है। कादम्बिनी अपने ही देश के साहित्य से ही नहीं, वरन विदेशी साहित्य से भी परिचित कराती है। जापान की हाइकू कविता व चीन की लोकोतियां भी किसी से कम नहीं। —पंकज सकसेना, बड़ोदरा

चालकहीन विमान

फरवरी अंक में लेख 'ऋग्वेद में वर्णित एक चालकहीन विमान' पढ़ा। यह जानकर आश्चर्य हुआ कि जो विषय आज स्कूलों-कॉलेजों में पढ़ाये जाते हैं, उनका आविष्कार बहुत पहले हो चुका था। इस लेख से अन्य विषयों के बारे में भी ज्ञान प्राप्त हुआ। हम चाहते हैं कादम्बिनी में ऐसे ही ज्ञान-विज्ञान संबंधी लेख छपें।

—दिलीपकुमार राय, गिरडीह

और अंत में. . . .

फरवरी अंक में 'और अंत में...' स्तंभ के अंतर्गत प्रस्तुत चित्र—'वात्सल्य नहीं थाथी कोई मनुजता की' शीर्षक के साथ देखने को मिला, चित्र में मूक परंतु बहुत कुछ कहती सूचनाएं निमिष मात्र के लिए नेत्रों के सामने से नहीं हटीं, और मुझे असरजी की कुछ पंक्तियां याद हो आयीं—

कहीं पे बहता है, इंसानियत का खून 'असर'
और आसमां पे बैठा हुआ खुदा चुप है

—अवधेश श्रीवास्तव, कानपुर

आगामी अंक

विशेषांक की भांति आकर्षक, पठनीय एवं संग्रहणीय

विशिष्ट रचनाएं

- *वेदांत और इक्कीसवीं सदी*
- *बौना दो लाख में*
- *चौकीदारी के लिए चीते और तेंदुए*
- *भूत-प्रेतों का आतंक*
- *सूचना पाने का अधिकार*
- *आदिवासी और जड़ी-बूटियां*
- *कहां है विराट नगर*
- *गांव में जी रहा है साहित्य*
- *मंत्र विज्ञान और योग*
- *मिथिला की नारियां*

- यही नहीं और भी कई बेहद दिलचस्प रचनाएं। सभी लोकप्रिय स्तंभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

वर्ष ३०, अंक ६
अप्रैल, १९९०

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

श्रद्धांजलि : अमृतलाल नागर
हम तो कभी रोये नहीं. २३

रे विलकिंसन
पानी को लेकर युद्ध होगा २७

दिनेशचंद्र दुबे
किस्सा निर्भीक विधायक का ३१

शिव बचन चौबे
राजा रामचंद्र की जय..... ४३

युवाचार्य महाप्रज्ञ
किसी ने आकाश को..... ५२

स्थायी-स्तंभ

पैनी नजर—६, शब्द-सामर्थ्य—८, समस्या-पूर्ति—९, आस्था के आयाम—१०, ज्ञान-गंगा—११, प्रतिक्रियाएं—१२, काल-चिंतन—१८, गोष्ठी—४९, आइए चलें जंगलों की ओर—५६, बुद्धि-विलास—१०१, विधि-विधान—१५६, तनाव से मुक्ति—१६१, प्रवेश—१६४, वैद्य की सलाह—१७०, सांस्कृतिक गतिविधियां—१७४, इनके बयां—१८७, ज्योतिष समस्या और समाधान—१८९, यह महीना और आपका भविष्य—१९२, और अंत में—१९८

आवरण : ज्ञान दीक्षित

राजेन्द्र अवस्थी
लेखक जो अब राष्ट्रपति.... ६१

सैन्नी अशेष
अब भोजपत्रों से चूल्हे..... ६८

विवेकी राय
सारा कमाल देखनेवाली ७८

मार्गरिता अल्बेदिल
हड़प्पा में भारतीय पंचांग ८३

कैथरीन रैम्सलैंड
वे अपने को पिशाच ८८

अखिलेश अरुण
हम तो अचल रहेंगे ९६

डॉ. सुधीर खेतावत
अद्‌भुत करिश्मे १०८

डॉ. भगवतीशरण मिश्र
ज्ञान गूदड़ी है यह..... ११०

सुरेशचंद्र शुक्ल
सब महात्मा गांधी की देन ११६

एम.एल. वरहाड़पांडे
पुराणों से प्रेरित तैरता रंगमंच १२२

हरीशचंद्र पांडेय
'प्लीज स्पीक' फाइलों के ... १२६

बाला दुबे
होते हैं शुभ लोमड़ी के १२८

कृष्णकुमार शर्मा
कविता उन पर निछावर..... १३०

सुभद्रा मालवी
गीत गाया पत्थरों ने १३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

डॉ. गौरीशंकर राजहंस
मेरी मौत प्रेरणा का स्रोत.... १५०
विजया
भारत मेरे जन्म का देश है १५८
देवीशंकर अवस्थी
कहानी अच्छी और नयी १६६
नरेंद्र कोहली
अक्लांत साहित्य-साधक १७२

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

कांति देब
त्रिशंकु..... ३५
कमल कुमार
औरत और पोस्टर..... ७१
सीतेश आलोक
गुत्थी..... ८७
डॉ. अर्चना चतुर्वेदी
हाय बीवी !..... ९३
डॉ. रश्मि मल्होत्रा
अपना-अपना मोर्चा..... १०२
चंद्रमौलि
इस देश का क्या होगा..... १२०
कृपाल वर्मा
प्रसंग..... १४४

सार-संक्षेप

विलियम शा क्रॉस
शाह के अंतिम दिन..... १७५

कविताएं

मनोहर बंद्योपाध्याय/स्वराज्य शुचि
धूल के निशान/शोषण का.... ५८
ओम प्रभाकर/मोहिनी वाजपेयी
लौट आये/एक बूंद..... ५९
शीला गुजराल/त्रिभुवन कौल
उपहार/प्यार..... ६०

संपादकीय परिवार

सह संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज
भगवती प्रसाद डोभाल
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश,
सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त
पता : संपादक
'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि.,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१

मूल्य :
वार्षिक : ७५ रुपये,
द्विवार्षिक : १४५ रुपये,
विदेशों के लिए : २९० रुपये वार्षिक
वायु सेवा से, समुद्री जहाज से : १३५ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-चेतना

—एक श्वेत युवती ने अश्वेत युवक का वरण किया। जब वे दोनों चर्च से बाहर आये, तब युवती को भर्त्सना का शिकार होना पड़ा। किसी ने अश्वेत युवक को गोली से उड़ा दिया।

—श्वेत और कृष्ण रंग के बीच तीसरा रंग उभरा—लाल रंग।

—रंग कोई भी हो, भेद पैदा करता है, क्योंकि रंगों की उपस्थिति सरलता नहीं है और बिना सरल हुए संवेदनशील नहीं बना जा सकता।

●

—रंग खतरनाक होते हैं, लेकिन बदरंग दुनिया और भी खतरनाक है।

—प्रत्येक रंग का अपना प्रभाव है।

—प्रत्येक रंग की अपनी भाषा है।

—प्रत्येक रंग की अपनी पहचान है।

—रंग आंखों से पहचाने जाते हैं और आंखें मस्तिष्क से देखती हैं।

—मस्तिष्क यानी ज्ञान।

—ज्ञान से कभी कष्टों का अंत नहीं होता।

—आज से कभी कष्टों का अंत नहीं होता।

—आज भी प्रकाश और प्रगति का दम भरनेवाला ज्ञानी नितांत अज्ञानी है।

●

—रंगों का अनुभव इस अज्ञान के परे है।

—रंग मानसिक चेतना का उद्‌बोधन है और उसके प्रति रुचि,

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

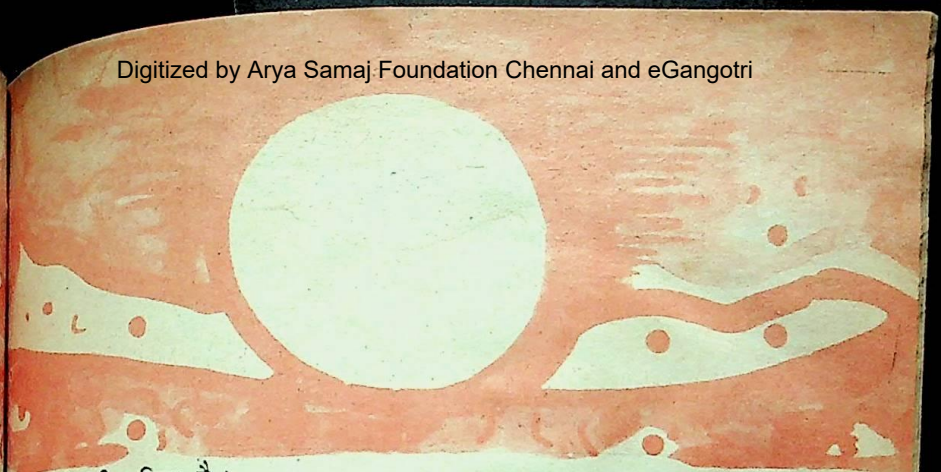

परंपराओं की प्रतिष्ठा है।

–भान का रंग हरा हो या सुनहरा—विभिन्न स्थितियों में अलग तरह से दोनों स्वीकार्य हैं।

–उदित बाल-रवि और अस्त होता हलदी-सा सूरज—दोनों का अपना अस्तित्व है।

–रात की सिहरन का एक रंग होता है, भोर की अंगड़ाई का दूसरा।

–नितांत ध्रुव-प्रदेशों में लोग कभी प्रकाश का एक क्षण पाने को, तो कभी अंधकार का मात्र अनुभव करने के लिए तरसते हैं।

–पश्चिम में चर्च से निकलती दुल्हन का श्वेत परिधान और पूर्व में कंधों पर जाते हुए शव का वही रंग अलग अर्थ देता है।

–खून और पान की पीक, दोनों लाल हैं, परंतु एक नहीं हैं।

–जीवन का रंग, मृत्यु के रंग से बहुत भिन्न है।

•

–रंग एक मिथ है।

–कई बार वह धोखे में डालता है।

–इंद्रधनुष में दिखायी देनेवाले सात रंग क्षितिज की तरह शून्य हैं। वह मात्र दृष्टिभ्रम है।

–पर्वतों का काला होना, पानी का नीलापन, महासागरों से उठनेवाले झाग की सफेदी और अनंत आकाश का स्थिर नील वर्ण—रेगिस्तानी मरीचिका से कम नहीं हैं।

–न होकर भी जो होने का मजबूत भान दे, उससे बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविश्वास और धोखा क्या हो सकता है ?

—अर्थ यह हुआ कि रंग चाहे जो हो, विश्वास नहीं दे सकता।

—अविश्वास की धरती पर खड़े रहना अपने अंत को आमंत्रण देना है।

—लेकिन रंगों की ही माया है, जो खड़ा भी रखते हैं और मिटाते नहीं।

—सांप के केंचुल की तरह ये रंग भी अपना रंग बदलते हैं।

—नीला और पीला रंग धोखे से भी मिल जाए, हरा बन जाता है।

—रंगों पर आस्था रखना इसलिए नीम की बौर में मिठास पाने की लालसा है।

●

—इसके बावजूद रंगों से मुक्ति नहीं है।

—पानी के रंग को देखकर ही रहीम कवि के मन में विचार उपजा होगा—

रहिमन पानी राखिए
बिनु पानी सब सून !

—मानव-चेतना के ऐसे ही किसी ज्ञान-क्षण में रंग कहीं चुपके से चला आया और परंपरा के संघर्ष में वह स्थिर हो गया।

—इसलिए फूलों में आकर्षण है।

—टेसू के फूल जंगल में आरती करते हैं।

—आम की मंजरियां मधुमक्खियों का जीवन हैं।

—कोंपलों में प्यार होता है, जैसे कोयल में पहला नाम लेकर पुकारा जानेवाला दुलार भरा है।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

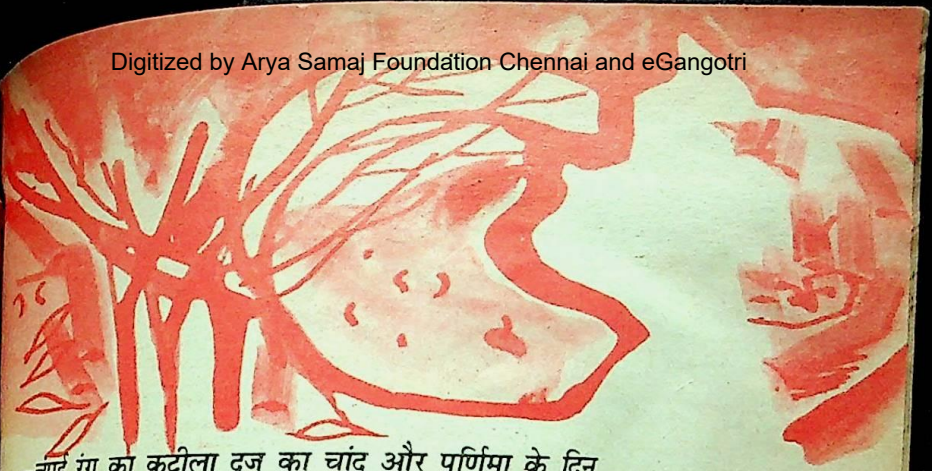

—चपई रंग का कटीला दूज का चांद और पूर्णिमा के दिन उतरती फेनिल धवल दुग्ध-सी सफेदी : एक चितवन है, दूसरा संपूर्ण यौवन।

—बहती हुई रेत, काले रंग का कछार, लाल मिट्टी से भरी धरती, भूरे पत्थर और संगमरमर की सफेदी—कोई अर्थहीन नहीं है, क्योंकि इन्हें अर्थ हमने ही दिए हैं, हम यानी मानव-चेतना ने।

—मानव-चेतना आस्था का चरम-केंद्र है। उसने निर्माण की अटूट श्रृंखला में नये प्रतिमान स्थापित किये हैं।

—हम सब कुछ कर सकते हैं, अपने-आपको झुठला नहीं सकते।

—अपने को सार्थक बनाने के लिए ही हमने रंगों का मेला लगाया और रंगों का त्योहार बनाया।

—रंग की पहचान सत्य नहीं है, सत्य है वह शक्ति जो शून्य के भीतर भी सौंदर्य देखती है, उसे पकड़ लेती है।

—यानी जो पकड़ लिया है, वही सार्थक है।

—यह रंगीन पर्व हमारी ही पकड़ है, अपनी सृष्टि में आइए हम खो जाएं, अपने आपको बदरंग लें और दूसरों को भी रंग दें—कोई अनबिंधा न छूटे, कोई बदरतंग न जाए।

राजेंद्र अवस्थी

पाठकों के आग्रह के कारण हम यह सूचना दे रहे हैं कि काल-चिंतन पुस्तक रूप में राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६, से उपलब्ध है)। मूल्य : पैंतालिस रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धांजलि

जन्म : १७ अगस्त १९१६ देहावसान : शिवरात्रि, २३ फरवरी १९९२

स्वर्गीय श्री अमृतलाल नागर

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृतलाल नागर : श्रद्धांजलि

हम तो कभी रोए नहीं तुम क्यों रोते हो भाई

अमृतलाल नागर नहीं रहे। उनके साथ ही लखनवी शामों की संध्या और एक त्रिभुज की संज्ञा भी समाप्त हो गयी। यशपाल, भगवतीचरण वर्मा और अमृतलाल नागर-जैसे दिग्गज कथाकार शायद ही किसी शहर में रहे हों। तीनों की अपनी मस्ती थी और तीनों अलग-अलग आयामों में जीकर भी एक-जुट थे।

नागरजी का व्यक्तित्व इन सबमें निराला था। यशपाल बागी सिपाही की तरह दिखते रहे तो भगवतीचरण वर्मा ठेठ सांसारिक प्राणी की भूमिका में रचे-बसे। नागरजी 'चौक' निवासी रहे हैं और एक जमाने में लखनऊ का चौक पायलों की रुनझुन और स्वरों के सरगम से ओतप्रोत रहता था। लखनवी कुर्ता-पायजामा पहने और मोंगरे की सुगंध के हार हाथों में बांधे रसिक बांकुरे सुंदरियों की तलाश में निरंतर चौक आते रहे हैं। स्पष्ट है कि नागरजी-जैसे रस-सिद्ध कथाकार इससे अछूते नहीं रहे। 'सुहाग के नूपुर' और कई अन्य रचनाओं का उद्गम-स्रोत चौक ही रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बार नागरजी के साथ चौक घूमने का अवसर मिला। जैसे ही हम पहुंचे एक अधेड़-सी महिला पान की गिलोरी भरे पालथी मारे बैठी थी। वहीं से बोली, 'आओ, भइया नागर, कई दिनों में आये।'

नागरजी ने चुटकी ली, 'लिखने-पढ़ने में लगा था, बस। हमारे और तुम्हारे धंधे में अंतर ही क्या है ? हम रोज कुछ नया लिखते हैं और तुम रोज कोई नया चेहरा सामने पेश करती हो।'

उसने ठेठ लखनवी अदा से पान बनाते हुए कहा, 'सो तो है नागर, आज भी एक कमसिन आयी है !' उसने आवाज दी, 'सलमा, ओ सलमा !'

बीस बरस की गोरी-चिट्टी सलमा हलके नीले रंग की सलवार और दुपट्टे के साथ सामने आ खड़ी हुई।

'देखा नागर, कली है, एकदम कली, मलाई-सी।' फिर बोली, 'अरी छोकरी, ये नागर भइया हैं, पान खिला इन्हें।' चांदी के छल्ले में प्यार के साथ बनायी हुई पान की गिलोरियां उसने नागरजी को पेश कीं। फिर मेरे सामने लेकर आयी तो मैं उसकी खूबसूरती तो देखता रहा, परंतु पान नहीं लिये, 'मैं पान नहीं खाता।'

सलमा एकदम ताजी और नयी-नयी थी। छुईमुई की तरह वह पीछे चली गयी तो उस महिला ने कहा, 'अरे नागर, ये कौन सरकार हैं, ऐसे हाथों से गिलौरियां लेते-लेते इन्हें तो अंगुली भी काटनी चाहिए थी।'

मैं चुप रहा। नागरजी जोर से हंसे, 'लखनवी नहीं है ये बहन, हां, हैं ये भी लेखक !'

'तो यहां कैसे चले आये ?' उसने पूछा तो नागरजी ने बताया कि 'आज की रात पूरा चौक घुमाऊंगा प्यारे को।'

नागरजी बेहद रसीले आदमी थे, उनके रग-रग में रस पगा था पर डूबे नहीं। लेखक अपना परिवेश अपने आसपास से खोजता है। नागरजी की साहित्यिक यात्रा का मुख्य पड़ाव चौक रहा। कुछ समय बंबई में भी उन्होंने बिताये और फिल्मी दुनिया में खूब गोते लगाये। रेडियो में काम किया, परंतु हर जगह से टकराकर 'जहाज को पंछी पुनि जहाज पे आवै' नागरजी को लखनऊ ही रास आया।

उनकी भाग्य-रेखा भी लखनऊ की हवेली ने लिखी। किसी नवाब की बहुत बड़ी हवेली थी। बस, नागरजी के हाथ लग गयी। किराये के नाम पर दस की गिनती भी नहीं। वे हवेली के लगभग मालिक रहे और यहीं उनका अंत हुआ।

हवेली में बैठक होती है। नागरजी उसी बैठक में पालथी मारकर छोटी-सी चौकी को सामने रखकर लिखा करते थे। लिखने के पहले घोर परिश्रम करना उनकी आदत थी। एक-एक घटना की सचाई को पहचानना उनके लेखन के पहले की शर्त थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

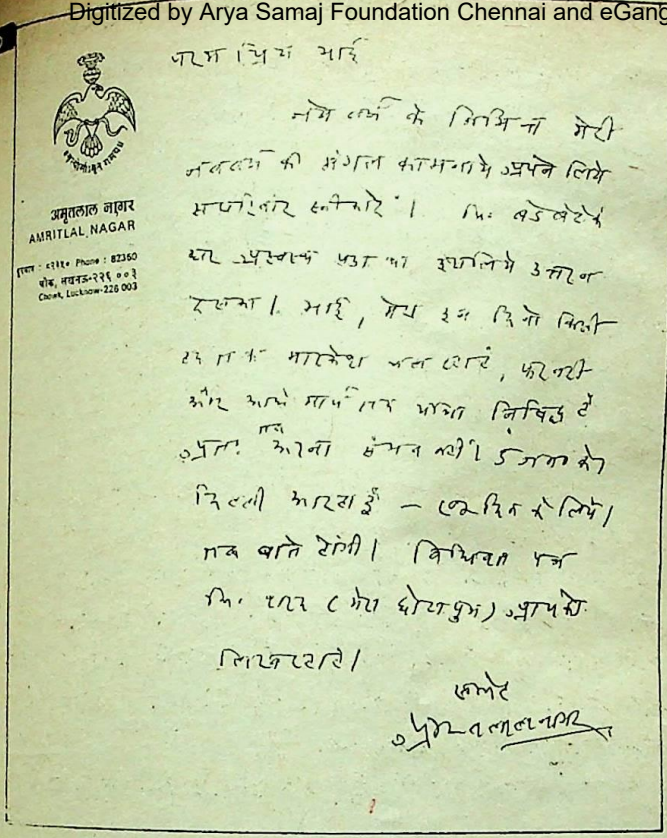

अमृतलाल नागर
AMRITLAL NAGAR

फोन : ४३१६० Phone : 87360
चौक, लखनऊ-२२६ ००३
Chowk, Lucknow-226 003

जय श्री राम

नये वर्ष के लिए मेरी मंगल कामनाएं अपने लिए स्वीकारें। कि. खड़ेलेटे का प्रस्ताव अच्छा था इसलिये स्वीकार रहना। भाई, मेरा इस दिनों बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा, फिरनी और आसे सार्थक भला निश्चिंत हो [illegible] आना संभव नहीं। [illegible] दिल्ली आरहा हूँ — [illegible] सब बातें होंगी। किश्किंधा कांड कि. पर (मेरा धोखा हुआ) आपको लिख रहे।

स्नेह
अमृतलाल नागर

नागरजी का पत्र : संपादक के नाम

युवा नागर प्रौढ़ावस्था के बाद वृंदावन में घूमे और सूर तथा तुलसी पर ऐसे उपन्यास लिखे कि हिंदी-जगत उन्हें कभी भूल नहीं सकता। 'नाच्यो बहुत गोपाल' एक बार हाथ में ले लीजिए, पूरा किये बिना नहीं रहेंगे।

नागरजी के साथ बैठना और किस्सागोई की उनकी आदत में साथ चलना अलभ्य क्षण रहे हैं। नवाबों के जितने किस्से उनकी जबान में थे, शायद ही किसी और को पता हो। धारा-प्रवाह बोलते थे वे और लगता था उनमें सम्मोहन है कि आप बिना समय का ध्यान रखे सुने जा रहे हैं। वो लुफ़्ती और वो मस्ती आजतक न दोबारा देखी और न देखी जाएगी।

नागरजी रोज भंग पीते थे। पान की गिलौरी से कभी मुंह खाली नहीं रहा। तंबाकू की चुटकी उनकी विवशता थी। उनसे कहा भी कि नागरजी इतनी तंबाकू मत खाइए, तो वही अलमस्ती— फिर जी कर क्या करेंगे, अरे—

यहां तंबाकू खाय लो
वहां तम्बाकू नाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरजी का कहना था—
मेरी जिंदगी में जो कुछ आया, वह किसी न किसी रूप में, कहीं न कहीं मेरी रचनाओं में भी आ ही गया है। बाकी क्या कीजिए जानकर ? प्रसादजी के शब्दों में 'अभी समय भी नहीं, थकी सोयी है मेरी मौन व्यथा।'

समाज या तो पार्टियों से जुड़ा है या फिर व्यक्तिवादी फुट्टलों का समूह भर ही रह गया है। अखबारी वक्तव्यों और सुविचारकों के मंतव्यों की बात यदि पल भर के लिए छोड़ दें तो तसवीर यही नजर आती है कि तीन लड़ाइयों के समय के अलावा इन वर्षों में देश-समाज अमली तौर से अधिक एक नहीं बना। यदि मैं संगठनकर्त्ता बन सकता तो एक देशव्यापी सांस्कृतिक आंदोलन का सूत्रपात अवश्य करता। काई की परत जमे हुए तालाब के स्थिर पानी में हलचल लाने के लिए उसे किसी न किसी तरह मथना या हिलाना ही पड़ता है।

नागरजी को कभी बेरुखा, हताश और परेशान मैंने कभी नहीं देखा।

पहले विश्व हिंदी सम्मेलन में वे मारीशस गये थे। नागरजी के कमरे में भीड़ केवल इसलिए लगी रहती थी कि पान खाने केवल वहीं मिलेंगे। हम एक ही होटल में ठहरे थे। कोई परेशानी सामने आ जाए तो मेरी ओर इशारा कर कहते थे, 'अरे, राजेन्द्र से कहो। हमारा नेट है वो।' मैं नहीं जानता कैसे क्या हो जाता था, लेकिन नेट लड़ाकू विमान के नाम से मैं छा गया था और नागरजी से उसके बाद जब भी मिलता था, कहते थे, 'आओ भाई, नेट, कब आये ? कैसे हो ?' इत्यादि।

नागरजी की जिंदगी पर ही एक महान उपन्यास लिखा जा सकता है। यह, लेकिन, वह अवसर नहीं है। कुछ दिनों से वे बीमार थे। कुछ महीने पहले दिल्ली आये थे वे और उसके बाद उनकी हवेली में मैं लखनऊ में मिला था। लखनऊ जाकर नागरजी से जो न मिले, उसका तीर्थ कभी हुआ ही नहीं। अचानक नागरजी चले गये। नागरजी चले गये यह बड़ी बात नहीं है। सचाई तो यह है कि हम सब जन्म लेते ही मृत्यु का इतिहास लिखना शुरू कर देते हैं, इसलिए नागरजी ही को क्या, हम सबको जाना है। नागरजी के जाने से हिंदी कथा-साहित्य का वह अक्खड़ साधु-पुरुष चला गया, जिसके भीतर न जाने कितने 'कथा सरित सागर' थे और न जाने कितनी 'बेताल कथाएं' थीं।

कादम्बिनी परिवार की ओर से अमृतलाल नागर-जैसे दिग्गज सम्राट कथाकार को प्रेम-पूर्वक विदाई। जिसे हम प्यार करते हैं उसे प्रेम से ही बिदा करते हैं, आंसू स्वयं पी जाते हैं, ताकि जानेवाला रससिद्ध कथाकार कोई कालिख न छोड़ जाए— 'हम तो कभी रोए नहीं, तुम क्यों रोते हो भाई !'

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरात : संसार की एक प्राचीनतम नदी । टर्की में बननेवाले अतातुर्क बांध के कारण यह नदी मरणासन्न अवस्था में पहुंच रही है। फलतः सीरिया के लिए गंभीर जल-संकट पैदा हो गया है । दूसरी ओर इथियोपिया नीली नील के शीर्ष जल का उपयोग करना चाहता है । इस कारण मिस्र चिंतित हो उठा है । नील नदी के पानी की सुरक्षा के लिए वह युद्ध तक छेड़ने के लिए तैयार है ।

अब पानी को लेकर युद्ध होगा

● रे विलकिंसन

अस्सी वर्षीय किसान मोहम्मद हुसैन अपने ट्रैक्टर के पास मुंह लटकाये उकड़ूं बैठा हुआ फरात नदी की ओर टकटकी बांधे देख रहा था। 'मैं यहां नदी को मौत की गोद में जाते हुए देखने प्रति दिन आता हूं ।' वह बुदबुदाता है, 'मैं कुछ भी नहीं कर सकता ।' पृथ्वी की उत्पत्ति के समय जन्नत से उतरी चार नदियों में से एक, फरात ने संसार की प्रथम सभ्यता को विकसित किया । अब टर्की की सीमा पर अवस्थित सीरियाई गांव जरब्लौस के पास यह

अतातुर्क बांध के निर्माण-स्थल पर तैनात तुर्की सैनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

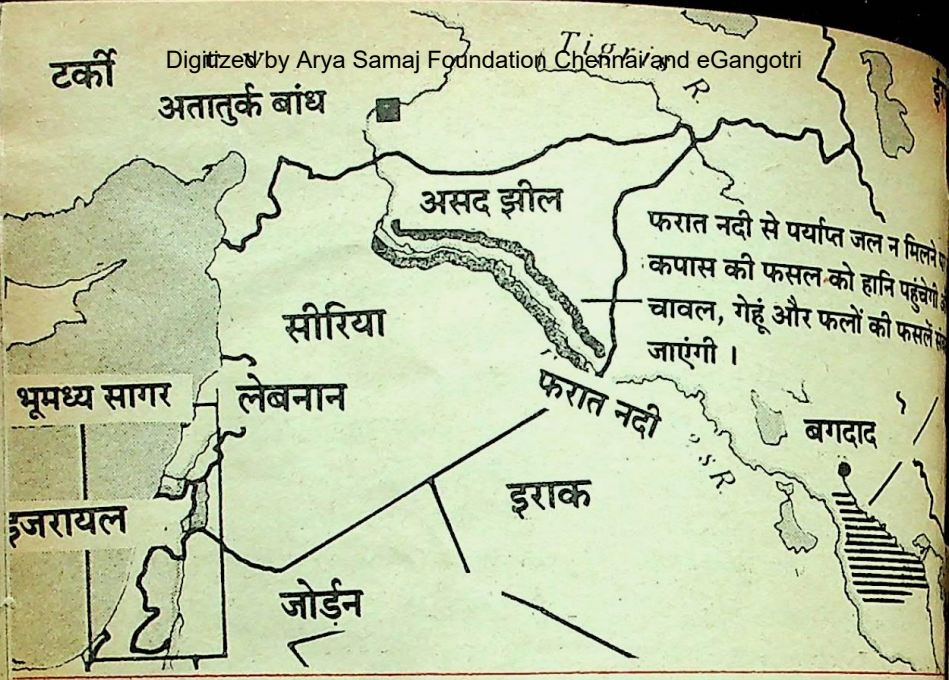

नदी अवरुद्ध पोखर-पोखरियों की शृंखला मात्र है । मल-जल के कारण इसका पानी हरा-नीला-गंदला दिखायी देता है । यदा-कदा एकाध मछली दिखायी दे जाती है । 'हम हताश तथा क्रुद्ध हैं', हुसैन ने कहा । तुर्कीवालों ने कहा था कि पानी फिर से उपलब्ध हो जाएगा । किंतु, शायद ही उपलब्ध हो । और तब यह भूमि भी मृत्यु को गले लगा लेगी ।

इस वर्ष जनवरी में अतातुर्क बांध के पीछे बने हुए अपने विशाल नये जलाशय को भरने के लिए सीमावर्ती राज्यों—सीरिया तथा इराक की ओर जाती हुई फरात नदी की धारा को तुर्की ने उस जलाशय में पानी पहुंचाने के लिए धारा मोड़ दिया था । उसने एक महीने के अंदर नदी की धारा को खोल देने का वादा किया था । किंतु तुर्की के पड़ोसी देश अत्यंत क्षुब्ध हैं । सीरिया के प्रायः नब्बे प्रतिशत पेयजल की आपूर्ति इस नदी के जल से होती है और सीरियाई अधिकारियों को तुर्की के इस वादे पर कोई भरोसा नहीं है । उनका कहना है कि तुर्की कभी भी इस नदी की जलधारा को सामान्य स्थिति देना नहीं चाहेगा ।

युद्ध की धमकियां

मध्य-पूर्व एशियाई देशों के बीच आये दिन पानी के लिए झगड़ा-फसाद होता रहा है । इस क्षेत्र के लिए यह कोई नयी बात नहीं है । हाल की दशाब्दियों में, इस क्षेत्र की तीन प्रमुख नदी-व्यवस्थाओं—नील, दजला-फरात तथा जोर्डन नदियों के जल वितरण को लेकर कई बार युद्ध की धमकियां इस क्षेत्र के देश एक दूसरे को देते रहे हैं । फरात नदी के जल को लेकर सातवें एवं आठवें दशक में सीरिया तथा इराक लड़ने-भिड़ने को कई बार तैयार हो गये थे । नील नदी की सुरक्षा की बातें मिस्र अक्सर दिन करता रहता है । सुरक्षा के लिए वह जंग लगा देने की बातें करता है । और तो और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जॉर्डन के शाह हुसैन ने अपने मिलनेवालों को
स्पष्ट रूप से कहा बताते हैं : 'इसराइल के साथ
अब ही मुद्दे पर युद्ध की संभावना दिखायी देती
है — जोर्डन नदी के जल को लेकर ।'
ज्यों-ज्यों जनसंख्या बढ़ती जा रही है,
सिंचन की मांग भी बढ़ती जा रही है । और
परिणामस्वरूप इन मध्य-पूर्वी देशों के बीच तनाव
बढ़ता जाना स्वाभाविक है । महत्त्वाकांक्षापूर्ण
सिंचित तथा औद्योगिक योजनाओं का जाल
जैसे-जैसे विस्तृत होता जा रहा है, पानी का
संकट भी वे देश अपनी योजनाओं की
कार्यान्विति में ज्यादा से ज्यादा करते जा रहे हैं ।
एक भविष्यप्रतिवेदन की भविष्यवाणी के
अनुसार इस दशक अर्थात बीसवीं सदी के अंत
तक स्थात नदी के जल प्रवाह से तिगुनी जल
राशि के बराबर जल का प्रति वर्ष अभाव पूरे
मध्य-पूर्व देशों में हो जाएगा । वाशिंगटन स्थित
विश्व राजनैतिक तथा अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्र के
सन् १९८२ के एक प्रतिवेदन के समापन का
एक अंश उद्धृत करना इस प्रसंग में समीचीन
होगा — 'इक्कीसवीं सदी के आगमन से पहले
संचित तथा संकटापन्न जल-साधनों का
उपयोग करने के लिए इस क्षेत्र के देशों के बीच
युद्धों के फलस्वरूप आज का कमजोर आपसी
संतुलन भी तार-तार हो सकता है और सारे क्षेत्र
में क्रांतिपूर्ण क्रांति संभावित है ।'

खेती में जुटा एक मिस्री किसान

पानी के कारण बिगड़ते संबंध

पानी की समस्या को लेकर इसरायल तथा
उसके अरब पड़ोसियों के बीच का तनाव और
अधिक कटुतापूर्ण होता जा रहा है । जोर्डन और
इसरायल अपने-अपने ज्ञात जल-साधनों का
उपयोग आपूर्ति से करीब पंद्रह प्रतिशत ज्यादा
प्रतिवर्ष करते आ रहे हैं । कतिपय प्रेक्षकों के
अनुसार पैंतीस करोड़ डॉलर लागत से अप्रयुक्त
यारमुक नदी पर एक 'एकता बांध' बनाने की
जोर्डन द्वारा प्रस्तुत योजना इसलिए खटाई में पड़
गयी, क्योंकि मात्र इस कारण कि उसकी जमीन
का एक टुकड़ा यारमुक नदी से लगा हुआ है,
इसरायल ने बढ़ा-चढ़ाकर हिस्से का दावा प्रस्तुत
किया । जोर्डन तथा इसराइल एक दूसरे विवाद
को लेकर विगत दो वर्षों से अमरीका की
मध्यस्थता में, जोर्डन नदी के जल पर
अपने-अपने अधिकारों का दावा गुप्त बैठकों में
प्रस्तुत करते रहे हैं । किंतु, छोटे-मोटे मसलों पर
मतभेद होने पर ही ये वार्ताएं टूट जाती हैं ।
इसराइल ने अधिक जल प्राप्त करने के लिए
जोर्डन नदी के तट से एक बहुत बड़ा शिलाखंड
हटा दिया है, ऐसा आरोप जोर्डन के
अधिकारियों ने कई वर्ष पहले लगाया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोर्डन वासियों ने खोजबीन करने का अथक प्रयास किया, किंतु वृहद शिलाखंड का आज तक पता नहीं चला ।

अधिकृत क्षेत्रों पर विवाद के समाधान में भी पानी प्रमुख व्यवधान रहा है । पश्चिमी तट तथा गाजापट्टी के नीचे स्थित नदी के ताजा पानी का चालीस प्रतिशत जल इसराइल ले लेता है । पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तथा मध्य-पूर्व नदी घाटियों के एक अधुनातन अध्ययन के अध्यक्ष टॉम नैफ के अनुसार, 'इस समय इसराइल स्थानीय महाशक्ति के रूप में अपनी ताकत के बल पर जहां से, और जितना पानी चाहता है, ले लेता है ।'

मिस्र की समस्या

मिस्र नील नदी के जल पर निर्भर रहता आया है, किंतु इस नदी की एक शाखा, नीली नील का उद्गम इथियोपिया में है । हाल में ऐसी रिपोर्ट मिलने पर कि नीली नील के शीर्ष जल को उपयोग में लाने के लिए इसराइल इथियोपिया के साथ समझौता वार्ता तथा सहयोग चाहता है । एक सरकारी कर्मचारी के अनुसार 'मिस्र के अधिकारियों को इसकी कल्पना से ही ठंडा पसीना आ गया । इथियोपिया ने यदि नीली नील के जल का अंततोगत्वा उपयोग शुरू कर दिया, तो काहिरा स्थित भूगोलवेत्ता हबीब अयाब के अनुसार, 'मिस्र अपनी जल-आपूर्त्ति का प्रायः बीस प्रतिशत गवां देगा ।' काहिरा स्थित पश्चिमी देश के एक वरिष्ठ राजनयक के अनुसार, 'यदि आवश्यक हुआ तो नील नदी के पानी की सुरक्षा के लिए मिस्र युद्ध छेड़ सकता है, इसमें संशय की कोई गुंजाइश नहीं ।'

फरात नदी के जल को लेकर नवीनतम समस्याएं उत्पन्न होती जा रही हैं । टर्की में अतातुर्क बांध का निर्माण कार्य पूरा होते ही फरात नदी की जलधारा आज के मुकाबले एक तिहाई रह जाएगी और वह एक नमकीन और नगण्य धारा में रूपांतरित हो जाएगी ।' एक अधिकारी के अनुसार, 'फरात नदी की मृत्यु हो चुकी है ।'

मध्य-पूर्व में गहराते हुए जल संकट के समाधान के लिए कतिपय प्रस्तावित समाधान असंभव लगते हैं । यथा, हिमशैलों को खींचकर इन देशों में लाना अथवा यूरोप से टैंकरों में पानी जहाज पर लादकर लाना । फलतः पानी के कारण उपरोक्त देशों में एक तनाव बना हुआ है । और यह तनाव कब युद्ध का कारण बन जाए, कोई नहीं कह सकता ।

प्रस्तुति :

कविता जीवन की समालोचना है । —मैथ्यू आरनोल्ड

गरीबी विनम्रता की परीक्षा और मित्रता की कसौटी है । —हैजलिट

चरित्र केवल एक स्थायी स्वभाव है । —प्लूटार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस बनाम न्याय प्रक्रिया : कुछ ज्वलंत प्रश्न

किस्सा 'निर्भीक' विधायक और 'विख्यात' थाना प्रभारी का

● दिनेश चंद्र दुबे

१९७१ के आसपास का समय । मुरैना (म.प्र.) के एक छोटे-से थाने का, किसी कस्बात में हरी-लाल झंडियों से सजा-संवरा था । अपने समय के 'विख्यात' थाना प्रभारी ने इधर उत्सुक व्यवस्था में भाग-दौड़ कर थाने के सींखचों से कुछ 'अपराधी' कई पुलिस हिरासत में बिना मजिस्ट्रेट की के बंद हैं ।

इंतजार अंततः खतम । गांववालों की थाने के पुलिस-कर्मी उस इलाके के विधायक के स्वागत के लिए दौड़ पड़ते भाषण—

माननीय विधायक महोदय, भाईयो और आप सबके सहयोग के बिना न तो डाकुओं से निपट सकती है और न पर नियंत्रण कर सकती है । एस. पी. ने मुझे इसलिए नियुक्त किया है कि हमें का सहयोग मिले । आप सबका मिले इसीलिए आज विधायक महोदय बुलाया है ताकि.....'

इसके बाद खुश-खुश विधायक खड़े होते हैं । उनका भाषण होता है । फूलों के हार उतारकर वे टेबुल पर रखकर तालियों की गड़गड़ाहट में बोलते जाते हैं—

'मैं तो जनता का निर्भीक सेवक हूं । आपकी कोई भी तकलीफ होती है तो मैं हमेशा, आपकी बात सही जगह तक पहुंचाता हूं और पहुंचाऊंगा भी । विश्वास रखें आपका नेता बिकाऊ नहीं है ।'

तालियों की गड़गड़ाहट । निर्भीक विधायक के भाषणोपरांत भीड़ छंट जाती है । लॉकप में बंद मुलजिमान मजिस्ट्रेट के सामने पेश करने के लिए भेज दिये जाते हैं । रह जाते हैं तो थाने में बस थाना प्रभारी और विधायक ।

एकाएक दृश्य बदलता है ।

'क्यों बे कुत्ते तेरी यह मजाल है कि हम लोगों की शिकायत तक ऊपर करता है । एस. पी. तक को लेकर तूने विधान सभा में सवाल उठाया । आज तेरी मूंछे उखाड़कर तुझे दुरुस्त नहीं किया तो मेरा नाम नहीं ।'

अप्रैल, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थानेदार नशे में न्यायालय में गवाही देने आता है !
पुलिस-कर्मी पर सम्मन तालीम होने से एस. पी. की त्योरियां चढ़ जाती हैं ।
न्यायाधीश से अप्रसन्न पुलिस अधिकारी उसके घर चोरी करवा देते हैं ।
एक न्यायाधीश की व्यथा-कथा कि किन परिस्थितियों में उन्हें फैसले लिखने पड़ते हैं ।

विधायक इस हैरत अंगेज परिवर्तन के लिये तैयार नहीं थे । स्थिति के संबंध में वे कुछ सोच पाते कि थानेदार जूता उतारकर उन पर टूट पड़ते हैं ।

गले के फूल खून में सन गये हैं । हतप्रभ विधायक के भीतर का 'निर्भीक विधायक' पिट-पिटकर गिड़गिड़ाता है, माफ कर दो थानेदार, अब कभी....'

'रिपोर्ट डालो दीवानजी,रोजनामचे में कि अब कर लेना शिकायतें और सवाल विधान सभा में । गांवभर और लॉकप के मुलजिमान तक गवाही देंगे कि दरोगाजी ने तो उलटे स्वागत किया था । कौन मानेगा अब तेरी शिकायत, करा लेना जांच !'

अखबार में नडियाड (गुजरात) के मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी श्री पटेल के साथ हुई घटना पढ़ते-पढ़ते अनेक वर्षों पूर्व घटी यह घटना एकाएक चित्र की तरह आंखों के सामने घूम गयी । मुझे याद है, तब मैं पुलिस विभाग में पुलिस प्रॉसीक्यूटर, अम्बाह जिला मुरैना के रूप में पदस्थ था । थानेदार (थाने और थानेदार का नाम लिखना उचित नहीं) ने कहा कि हर काम में टांग अड़ानेवाले विधायक से त्रस्त होकर आखिर एस. पी. ने उन्हें 'पोस' किस तरह यह समस्या हमेशा के लिए हल थी ।

नडियाड सी. जे. एम. के अनुसार वे किन्हीं मामलों में पुलिस रिमांड नहीं देते थे फलतः त्रस्त पुलिस ने अंततः 'सुयोग्य' उस थानेदार को यह काम सौंपा होगा और....

नाराज एस. पी.

कुछ वर्ष पूर्व एक न्यायिक दंडाधिकारी (जी.एन. गोयल) ने नियमानुसार एक सिपाही व्यक्तिगत कृत्य के लिए अनेक बार सम्मन तामील होकर न लौटने पर उसके विरुद्ध इस्तगासा पेश होने पर जमानती वारंट निकला था । फिर बमुश्किल आने पर उससे जमानत मांगी थी । बस एस.पी. नाराज हो गयी अविवाहिता एस. पी. । मजिस्ट्रेट को तब गिरफ़्तार करने के लिए उसके खिलाफ कायम किया गया । उन्हें भी श्री पटेल की अग्रिम जमानत करानी पड़ी थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस का बदला

म. प्र. के एक जिले मंदसौर में, नडियाड डी. जे. एम. श्री पटेल की ही तरह एक मजिस्ट्रेट द्वारा कुछ लोगों का पुलिस रिमांड मंजूर न करने पर अंततः मजिस्ट्रेट के घर चोरी करवा दी गयी। संबंधित थानेदार ने खुद यह घटना मुझे सुनायी थी।

सन १९७२ में, मैं टीकमगढ़ म.प्र. में मजिस्ट्रेट के रूप में, पदस्थ था। न्यायालय के एक लिपिक के, सपत्नीक सिनेमा देख रहे एक स्कूलटीन डी.एस.पी. द्वारा थाने ले जाकर हाथ-पैर तोड़ दिये गये थे। किसी का साहस नहीं हुआ कि उन आतंक वाले वरिष्ठ पुलिस अधिकारी द्वारा किये गये इस्तगासे को दर्ज करता। पर मैंने यह मुकदमा दर्ज किया था— कानूनी असुरक्षा की कीमत पर। असुरक्षा यह कि कचहरी जाते या लौटते किसी गुंडे से वे पुलिस अधिकारी मुझे या मेरे परिवार के किसी सदस्य पर कोई आक्रमण करा दें तो हम सुरक्षा के लिए किसके पास जा सकते थे ?

एक और घटना : थानेदार जतारा (जिला टीकमगढ़ म.प्र.) न्यायालय में एक बार शराब के नशे में धुत गवाही देने आये। मैंने सख्त रुख अपनाया। थानेदार के डंडे के आतंक से हमारा कांपता था। उस दिन मन में किसी कोने में मुझे लगा था यदि न्यायालय कक्ष के बाहर घर जाते में यही थानेदार चार अपराधी मेरे पीछे लगाकर मुझे पिटवा दें तो मैं क्या कर सकूंगा ?

सबसे बड़ा सवाल जो हमें कई बार महसूस करना पड़ता है वह यह कि मान लीजिए स्वयं पुलिस अधिकारी पर कोई मुकदमा चल रहा है, मैं सजा देता हूं पर यदि पुलिस आज्ञा मानने से इनकार कर दंड निष्पादित न होने दें तो ? हम क्या कर सकते हैं !

नया इतिहास

नडियाड के प्रकरण में माननीय सुप्रीम कोर्ट ने जो रुख लिया है, वह अपने आप में अप्रतिम होकर एक नया इतिहास है। अब तक ऐसा सख्त रुख कहीं देखने को नहीं मिला। देशभर के न्यायाधीशों ने संतोष की एक सांस-सी ली है। अनुभव कहता है कि यह हमारा व्यावहारिक विवेक भर है जिसके वशीभूत हम न्याय की कुरसी की इज्जत बचाये रखते हैं। विचारणीय है कि आखिर हमारे पास इन सारी स्थितियों के प्रति सुरक्षा है तो किस तरह की। अपने आदेश क्रियान्वित कराने हेतु अंततः हम पुलिस पर ही तो निर्भर हैं। यदि पुलिसकर्मी दोषी है तो उसके विरुद्ध निर्भीकता और निडरता से हम आदेश देकर उसे क्रियान्वित कैसे कर पाते हैं, यह केवल हम ही जान सकते हैं।

विवेक का आश्रय

इस क्रम में यहां एक पल और चित्र की तरह दिख गया है। एक अपराधी को मैंने तीन साल की सजा दी। अपराधी मेरे गृह निवास का ही रहनेवाला था। नौ बार का सजा याफ़ा वह व्यक्ति यह मानकर चला था कि वह दोषमुक्त हो जाएगा क्योंकि,वह मेरे ही घर शहर दतिया (म.प्र.) का निवासी था। यह घटना जतारा की है। उस वक्त वे ही थानेदार थे, जिनकी पहले मैंने चर्चा की है। सोचता हूं पुलिस नाराज ही थी। यदि ऐसी स्थिति में निर्णय सुनाने के बाद व्यक्तिगत साहस से मैं मुझे जान से मार डालने की धमकी देनेवाले और भरे न्यायालय

अप्रैल, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सैकड़ों गालियां देनेवाले अपराधी से न निपटा होता, तो ?

सुसनेर जिला शाजापुर म.प्र. में दंडाधिकारी के रूप में कुछ अफीम तस्करों ने मुझे सजा देने पर मार डालने की धमकी दी थी । मांडेर दंडाधिकारी के रूप में, देवीसिंह डाकू के फरार हो जाने पर जब मैंने जमानतदार की जमानत जब्त की थी तब भी गुमनाम पत्र आये थे कि मुझे या मेरे लड़के को अपहरण कर लेंगे या मेरे घर की खड़ी फसल में आग लगा देंगे । इन स्थितियों में यदि पुलिस की आकांक्षानुरूप उन्हें सहयोग न दिया गया होता तो क्या मैं सुरक्षित रहता ।

अनेक प्रश्न हैं जो नडियाड की घटना ने आज हमारे समक्ष खड़े कर दिये हैं । न्यायिक अधिकारी संघ के हम आभारी हैं कि उन्होंने माननीय सुप्रीम कोर्ट का ध्यान इस सबकी ओर आकर्षित किया । ऐसी अनेक घटनाएं हैं, जो कभी प्रकाश में नहीं आतीं । सच कहा जाए तो हम वस्तुतः पुलिस पर निर्भर हैं न्याय लिखते वक्त ।

पर सवाल यह है कि क्या यह उचित है । लेकिन सवाल यह भी है कि फिर क्या इसका कोई हल है ?

अकसर एक प्रश्न दिमाग में उठता है कि हमारी तुलना में पुलिस करती क्या है । केवल गुंडा तत्वों, हत्यारों और डाकुओं को पकड़कर हमारे सामने ला खड़ा करती है । अपराधियों को अंततः दंड तो न्यायालय ही देते हैं । न्यायाधीश खुद भी इनसान होते हैं । उनके भी दायित्व होते हैं । सुरक्षा का प्रबंध उनके पास क्यों नहीं होता ? सुरक्षा-कर्मी उनके अधीन उनके ही विभाग में क्यों नहीं होते ? मुंतजिर क्यों रखे गये हैं किसी दूसरे विभाग पर ।

इस वक्त कई मुकदमे पुलिस लॉकप में किसी व्यक्ति की हत्या कर देने के संदर्भ में, मेरे समक्ष चल रहे हैं । कई बार मेरे समक्ष यह प्रश्न उठा हुआ है कि क्या हम उनके निर्णय ऊपर वर्णित सारी स्थितियों को ध्यान में रखकर लिखें ? भारतीय संविधान के तहत तब क्या यह हमारा न्याय कर्म होगा ? नहीं, तो आखिर दोषी कौन होगा ? हम कायर नहीं हैं लेकिन क्या यह स्थिति पुनः समीक्षा के योग्य नहीं !

—अपर सत्र न्यायाधीश,
एफ-१२/न्यू कॉलोनी, सागर, (म. प्र.)

अस्पताल की अमरीकी परिभाषा

अस्पताल वह स्थान है, जहां आपको सुबह पांच बजे उठाकर नींद की गोलियां खिलायी जाती हैं ।

* * *

विवाह लॉटरी नहीं है— लॉटरी में तो फिर भी एक चांस होता है ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिशंकु

● कांति देब

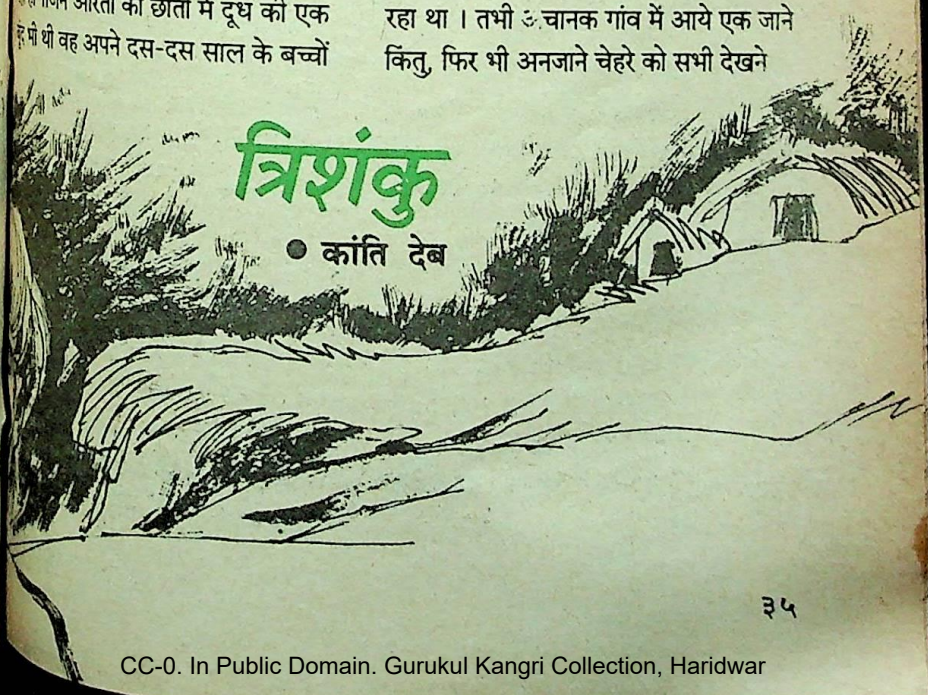

जमीन की सतह से उचकती हुई फूस की झोंपड़ियां। तमाम ठूंठ पेड़ों के बीच ठूंठे-दुबले हरे पेड़, शरीर के हाड़ को पतले चमड़े में लटकाये स्त्रियां- पुरुष, कुछ गाय-बकरियां और अगिनत नंगे बच्चे, यही कुल अमानत थी पथरा गांव की।

'घर में अन्न का दाना नहीं है' से अकसर औरतें दिन की शुरुआत करतीं और मर्द जरूरतों की ढेर-सारी लकीरें माथे पर समेटे, बिना खाये-पिये, काम की तलाश में निकल पड़ते। 'भूख लगी है', 'भूख लगीहै' की गुहार लगाते हुए बच्चे ऐसे उठते थे जैसे सारी रात उनके शरीर में खून की जगह यही शब्द तैरता रहा हो। जिन औरतों की छाती में दूध की एक बूंद भी थी वह अपने दस-दस साल के बच्चों को उसी से बहलाती थीं। बाकी बच्चे अनधिकार, संभ्रांत घरों के बगीचों के फल खाकर, ठीकरों-कंकड़ों और पेड़ की डंडियों से गुल्ली डंडे के खेल खेलने लगते थे। और तब तक अपने घर का रुख नहीं करते थे, जब तक उन्हें फिर से भूख न लग जाए।

गांव में इतवार-सोमवार का कहां पता लगता था। लेकिन राम कैसे भूल सकता था कि वह इतवार का ही दिन था। उस दिन वह स्कूल न जाकर सुबह से ही गुल्ली डंडे का खेल खेल रहा था। कुछ बच्चे साइकिल के रिम के पीछे दौड़-दौड़कर अपनी सांस चुका रहे थे। कंचों का खेल झुंड-झुंड में जोर-शोर से चल रहा था। तभी अचानक गांव में आये एक जाने किंतु, फिर भी अनजाने चेहरे को सभी देखने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे और खेल रुक गया ।

दस साल की उम्र तक नंगा घूमनेवाला झलुआ एकाएक लंबा हो गया था । उसकी हड्डियों पर चढ़ आये मांस ने उसका चेहरा अपरिचित बना दिया था । जिसको शादी-ब्याह में ही लोगों ने बनियान और जांघिये से ज्यादा पहने कभी नहीं देखा था, उसे सिर से पैर तक कपड़ों से ढंका देखकर सबको बड़ा अटपटा लग रहा था । फिर इस समय तो उसने न सिर्फ पैंट कमीज-पहनी थी बल्कि उसके पैर में जूते-मोजे, आंख में काला चश्मा और हाथ में घड़ी भी बांध रखी थी । हाथ में अटैची लिये, सिर से पैर तक आत्मविश्वास का ओवरकोट पहने वह पूरा साहब लग रहा था ।

बच्चे तो बच्चे झलुआ के बदले स्वरूप से गांव के कुत्ते भी भ्रमित हो भौंकने लगे । गांववालों की बरछीली नजर से उकताकर झलुआ रुक गया ।

''क्यों कभी आदमी नहीं देखा क्या ?''

''भई क्या कभी आदमी नहीं देखा ''

झलुआ के बोलते ही मंगू के वाक्य के साथ-साथ सबकी हंसी फक्क से फूट पड़ी । झलुआ खिसियाकर जल्दी-जल्दी घर की ओर भागने लगा और उसी के साथ उसके पीछे लग लीं शरारती बच्चों की भीड़ ।

इतने बदलाव के बाद भी झलुआ की मां ने उसे दूर से ही पहचान लिया था और राख सने हाथों से उसने झलुआ की बांह पकड़ ली । ''अं हां हां...क्या करती हो अम्मा ? सारी कमीज ही खराब कर दी ।''

बच्चे झलुआ की बात पर फिर एक-दूसरे को देखने लगे ।

''क्यों तू खड़ा ही रहेगा क्या ? बैठ न'',कहकर सुखना ने कील पर से पीढ़ा उतारकर नीचे रख दिया ।

''बाबू कहां हैं ?''

''साहूकार ने कहीं भेजा है । आता ही होगा । तू बैठ न'', झलुआ बैठने के बजाय खड़े-खड़े ही अपना संदूक खोलने लगा । खुले संदूक ने चुंबक-सा बच्चों को खींच लिया और वह सब बक्से के चारों तरफ तसवीर के फ्रेम में जड़ गये । संदूक के ऊपर ही एक लाल रंग की साड़ी थी ।

''अम्मा यह तुम्हारे लिए है ।''

सुखना ने साड़ी को बच्चे की तरह छाती से लगा लिया ।

''तेरे लिए फिराक'', झलुआ ने संदूक पर झुकी नूनी के कंधे पर फ्राक को रखते हुए कहा ।

नूनी फ्राक को पताका की तरह थामकर कूदने लगी । सबको कपड़े बांटने के बाद बक्से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिस्कुट, नमकीन, टॉफी आदि निकाल उसने बच्चे के बगल में रख दिया । सामान के साथ आयी झलुआ की फोटो पर विभोर होते हुए सुखना ने तुरंत उसे दीवाल पर टांग दिया । इस बीच सारी सीमाएं टूट गयी थीं और सारे बच्चे झलुआ से चिपके कभी उसकी घड़ी छूने लगे तो कभी उसकी बेल्ट । झलुआ का छोटा भाई सावना चश्मा लगाकर घूमने लगा । नंगे बदन पर मात्र चश्मा देखकर झलुआ काफी देर तक नकली शहरी हंसी हंसता रहा ।

"तुझे क्या खिलाऊं ?" सुखना ने झलुआ से कम, अपने से ज्यादा सवाल किया ।

"अभी भूख नहीं है", कहकर झलुआ ने अपने पेट पर हाथ रक्खा तो गांव के बच्चे अजनबी की तरह उसकी तरफ देखने लगे । उस गांव के लिए यह अनजाना वाक्य जो था ।

चिराग बुझ जाने के बाद अंधेरे में शहर की बातों की बत्ती जलाये झलुआ ने देर तक सबको जगाये रखा । लेकिन जल्दी ही झलुआ की शहरी कहानियां खतम हो गयीं और तब उसे दातून करके जहां-तहां थूकते मां-बाप से घिन, और तालाब में नंगे नहाते बच्चों को देखकर शरम आने लगी ।तेज धूप से उसका सिर दर्द करने लगा और गांव की पथरीली जमीन से पांव में फफोले पड़ने लगे ।

झलुआ की शहरी बातों का रामू पर सबसे ज्यादा असर हुआ । वह उसकी बातें सुनकर अकसर कल्पना किया करता था कि वह चांदी की सड़क पर सोने का मुकुट लगाये दौड़ता चला जा रहा है ।

एक दिन रामू को घर के चितकबरे दर्पण में टूटी कंघी से देर तक बाल संवारते देखकर उसका बाप भांप गया था कि शहर की जहरीली हवा ने उसके बेटे को डस लिया था । उसका नशा उतारने का जब उसे कोई उपाय नहीं सूझा तो उसने खेतिहर का खुरदरा लोहे-जैसा हाथ जमाया और सीधा घसीटकर खेत में ले जाकर पटक आया । लेकिन वहां भी खुरपी से जमीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोदते-खोदते रामू कई दिनों सोचता रहा कि वह कैसे खेत से सुरंग निकालकर शहर पहुंच जाए ।

झलुआ के साथ जो भटकावनी शहरी हवा आयी थी उसने कुछ को मदमत्त कर दिया और कुछ में एक भय का बीज बो दिया था । झलुआ के उम्र के बच्चों के माता-पिता को लगता था कब शहर जाने का रोग किसके बच्चे को ले जाए और तब किसी घर में मरणासन्न रोग के मरीज की मृत्यु की प्रतीक्षा-जैसा शोक होने लगे ।

शायद रामू सारी जिंदगी गांव की मिट्टी में खेलकर उसी में आत्मसात हो जाने को ही अपनी नियति मान लेता, अगर पथरा गांव की एकमात्र बाजरे की खेती उस साल ठूंठ होकर न रह गयी होती । बरसात की प्रतीक्षा करते-करते गांववालों की आंखें पथरा गयीं । बच्चे जो मां-बाप की डांट-फटकार गांव के ताल में धोकर भुलाया करते थे । प्रकृति ने उनका यह सुख भी उनसे छीन लिया । सारे गांव के ताल-तलैया इस कदर सूख गये कि कुत्तों को अपनी जीभ गीली करने तक का पानी दुश्वार हो गया । रोज जहां-तहां प्यास से छटपटाकर कोई-न-कोई चिड़िया मर जाती थी, जिसे गांव के बच्चे चील-गिद्धों के साथ होड़ लगाकर उठा लाते थे और रात को उसी को रांधकर कई दिनों की भूख मिटायी जाती थी । बाजरे की रोटी तो गयी पर भीख में मांगकर लाये भात को गीला करने के लिए इमली का रस भी न रहा । न पेड़ पर इमली रही न तालों में पानी । फाके जब असह्य हो गये, तो गांव-का-गांव शहर की ओर काम की तलाश में भागने लगा ।

उसी सूखे में रामू के घर झलुआ की चिट्ठी बरसात की तरह आयी थी उसने काम का वायदा करके रामू को शहर बुलाया था । रेल में बैठते समय रामू के छोटे-से मन में एक बात आयी थी जो जीवन का बहुत बड़ा सत्य साबित हुई, वह यह कि कुछ पाने के पहले हर किसी को निराशा और नाउम्मीदी की अथाह खोह में दफन होना पड़ता है ।

शहर की भीड़ गांव के उस मेले-सी लगी जिसमें वह एक बार खो गया था । शहर में अजूबे-ही-अजूबे थे । चौड़ी-चौड़ी सड़कें मशीन से फिट रिक्शा, बड़ी-बड़ी इमारतें, सैकड़ों गाड़ियां और तमाम लोग । शहर की जिन बातों ने उसे सबसे ज्यादा चकाचौंध किया था, वह थी कुतिया का मखमल के गद्दे पर सोना, एअर कंडीशन से ठंडी और हीटर से निकलती गरम हवा, नलों में बहता गरम-ठंडा पानी, मोटर की सवारी और टेलीफोन के माध्यम से दूर-दूर तक बात करने की सुविधा । इन सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात थी मेम साहब का बच्चों को न खाने पर पीटना ।

रामू की शहरी जिंदगी की शुरुआत उसके मैले-कुचैले कपड़ों के बदले में नये कपड़े और खाली पेट को भरकर हुई थी । निराश और दुःखी माता-पिता की जगह ऐश्वर्य से लबलबाते मम्मी-डैडी मिले । उसे अल्मूयुनियम की थाली की जगह शीशे की प्लेट मिली थी और मनोरंजन के लिए दिन-रात नाच-गाने की बौछार करता टी. वी. ।

तन ढंकने और पेट भरने की प्रक्रिया शुरू होते ही रामू को लगा कि उसके बाल भूरे हैं और उसके चेहरे का रंग बहुत काला है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

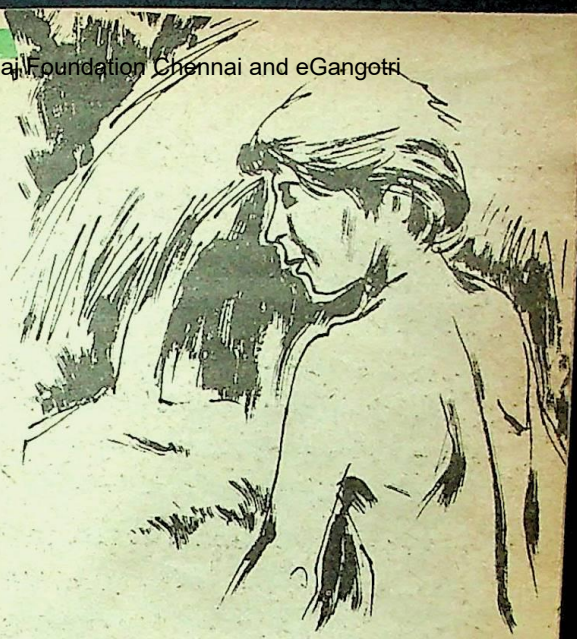

रहा था । बड़ी देर बाद बड़ी चिरौरी-बिनती के बाद एक ठेलेवाला उसे घर तक छोड़ गया था । घर पहुंचते ही उसकी चोट को तरजीह देते हुए पहले साइकिल की मिजाज पुरसी हुई । किसी ने कहा, "और दो इनको साइकिल, दो महीने में दो टुकड़े करके ले आये ।" मेम साहब ने कहा, "इसे तो मरम्मत लायक भी नहीं छोड़ा ।" साहब ने कहा, "यही होता है नौकरों को सिर पर चढ़ाने से ।" साइकिल के एक-एक हिस्से को हाथ में उठा-उठाकर सबने साइकिल टूट जाने का मातम किया ।

धीरे-धीरे शहर की चमक धुंधलाने लगी और कठोर सत्य सामने आने लगा । अब उसे बात-बात पर टोका जाता था । उसकी हैसियत उसे समझायी जाती थी । पैंट में साहब की तरह हाथ डालकर खड़े होने पर साहब नाराज होते, तो पान से रंगे होंठ देखकर मेम साहब बिदक जाती थीं । बेटा टी. वी. वाले कमरे में घुसते ही धड़ाक से दरवाजा उसके मुंह पर भेड़ देता था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके कपड़ों, खानें के बरतनों से अछूतों का-सा परहेज किया जाने लगा ।

बहलाने-फुसलानेवाली भाषा, अब झिड़की और डांट-फटकार की भाषा में बदल गयी । भइया को स्कूल पहुंचाते समय वह उससे आगे निकल जाए तो उसे बेवजह दिखावा करने पर डांट पड़ती थी और पीछे रह जाए तो सुस्त कहा जाता था । उसके बराबर वह यूं भी चल नहीं सकता था । एक समय में कई हुक्म दिये जाते थे । 'हाथ फंसा है' कहने पर जबानदराजी का दोष लगाया जाता था ।

जिंदगी भीगी रस्सी के कसाव-सी दिन-पर-दिन कठिन होती जा रही थी कि बच्चों के मामाजी ईश्वर के अवतार-से घर में उतरे थे । सुबह से शाम तक में विदेशी चीजों से घर भर गया । बच्चों के साथ-साथ रामू के लिए भी विदेशी कपड़े आये थे । मामा के आने से रामू के जीवन में एक विशेष परिवर्तन आ गया था । उसे डांटना तो दूर अगर कोई उसे जोर से बुला भी दे तो मामाजी विदेश में नौकरों की स्थिति का बयान करके सबके मालिकाना जोश पर ठंडा पानी डाल दिया करते थे । उनके आने के बाद उसे बाजार से खरीद-फरोख्त के लिए एक नयी साइकिल भी मुहैया करा दी गयी थी । अब तो उसके नक्शे ही बदल गये थे । वह विदेशी ब्रश पर विदेशी मंजन लगाकर सुबह की शुरुआत करता तो रात में विदेशी ब्रश से बाल संवारकर घंटों शीशे में अपनी शक्ल पर रीझकर गहरी नींद सोता था । अब उसके घर से बाहर जाने की अलग और घर में पहनने की अलग चप्पल आ गयी थी । अब वह झाड़ू फटकारने के बजाय सीना ताने मामाजी द्वारा लाये गये विदेशी वैक्यूम क्लीनर से कमरा साफ करता था । हो में ग्लब्स लगाकर बरतन धोता था । उसने अ में अपने लिए एक कुरसी रख ली थी जिस प बैठकर वह राजसी सिंहासन का आनंद भोग था । एक दिन साहब के बेटे ने उसे कुरसी प बैठे देख लिया तो तूफान मचा दिया । हल्ला-गुल्ला सुनकर मामाजी अपनी शराब छोड़कर हादसे का मुआयना करने आये । घ की वजह जानते ही वह बेहद भावुक हो गये भानजे को समझाते हुए बोले, "तुम क्या सम इसके दर्द को । यह अपना गांव छोड़कर आ है । यह उनके लिए तो पराया हो ही गया अ अगर तुम भी इसे नहीं स्वीकारोगे तो यह कह जाएगा ?"

मामाजी अपनी बहन की ओर देखते हु बोले, "कल ही तुम कह रही थीं कि भइया हमने तो तुम्हें राइट ऑफ कर दिया । भाई-ब का संबंध रहा ही कहां ! न तुम हमारे सुख भाग ले सकते हो न हम तुम्हारे । पर तुम ने कभी सोचा है कि मैं वहां कितना अकेला हूं । तुमने हमें यहां राइट ऑफ कर दिया लोग हमें वहां अपनाते नहीं । हमने तो एक तरह से दोनों को ही खो दिया न । पुराना हो गया नये ने स्वीकारा नहीं । हम और रामू-जैसे लोग त्रिशंकु हो गये । न यहां के न वहां के ।"

बहन ने जवाब देने को मुंह खोला भी लेकिन भाई की आवाज का दर्द महसूस क ही उसने कुछ न कहना ही उचित समझा । बात को आधा-तीहा समझते हुए मामाजी भावुकता को शराब का असर जान नारा रहे थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई के विदेश के एकाकी जीवन का अहसास होते ही उनके रहते बहन ने एक भी दिन ऐसा नहीं जाने दिया जब भाई के स्वागत में छुट्टियां न होती हों, जैसे उसे यह अहसास कराया जाता हो कि उसके देश में उसका सदैव स्वागत है। सारे भूले-बिसरे संबंधियों और दोस्तों को न बुलाया जाता हो। बहन ने भाई की विदेशी जिंदगी का भयानक अंधेरा देख लिया था। लेकिन कितने असहाय और मजबूर थी वह। गड्ढे के असल स्थान को पाटने के बजाय वह तो कहीं ओर मिट्टी का ढेर लगा रही थी।

रामू का उसके गांव में कोई सुरक्षित स्थान था या नहीं उसकी उसे परवाह नहीं थी क्योंकि शहर की जहरीली हवा ने उसे डस लिया था और उसी के वश हो वह मस्त था। उसका अपने ऊपर रहा-सहा संयम भी गायब हो गया था। वह जान गया था कि अपने नियम-स्थान पर बने रहने के लिए पैसों की सबसे ज्यादा जरूरत थी। तनख्वाह की एक दमड़ी भी घर न भेजने के बावजूद उसके पैसे पाउडर, तेल, मंजन और सिनेमा में खर्च हो जाते थे। नतीजन वह हर मौके को पैसा बनाने का मौका बना लेता था। सब्जी खरीदने जाए तो सस्ती चीजों के दाम बढ़ाकर बता देता। जहां मालिकों से रसीद लाने को कहने में चूक हो जाती वहीं दो की चार कर लेता था। घर पर आनेवाले अखबार और बारदाने के पैसों पर उसके अधिकार को किसी ने कभी नकारा नहीं था। मालिक बड़े अफसर थे उनसे मिलनेवालों से चिकनी-चुपड़ी बातें कर पैसे ऐंठ लेता था। साहब के पर्स से दस-बीस रुपये निकाल लेना कोई बड़ी बात नहीं होती थी। जिंदगी आसमान में तैरते उड़नखटोले की तरह खुशनुमा हो गयी थी। रामू ने अब निश्चित रूप से मान लिया था कि वह जहां पहुंच गया था वहां से नीचे जाने के सारे रास्ते बंद हो गये थे।

महीनेभर के लिए आये मामाजी के जाने में जब सिर्फ एक दिन रह गया तो सबके मुंह पर एक उदासी-सी छाने लगी। खासतौर से इकलौती बहन को लगने लगा कि अब का गया उसका भाई पता नहीं कब आएगा ? आएगा भी या नहीं ? आएगा भी तो समय की दूरी जाने क्या-क्या बदल दे।

भाई भी सोच रहा था कि अब जाने कब आना हो। दोबारा लौटने पर सब-कुछ वैसा रहे कि न रहे। फासले से पैदा हुई औपचारिकता कहीं संबंधों के माइने ही न बदल दे।

घरभर में सबसे ज्यादा उदास था रामू। बहुत दिन बाद उसने अपने उड़नखटोले से बाहर झांककर देखा था और पहली बार उसे अंदेशा हुआ था कि वह भारहीन हो कभी नीचे भी गिर सकता है।

घरभर की उदासी में मुंह लटकाये देखकर बहनोई साहब को जब कोई चारा नहीं दिखायी दिया, तो बिना किसी को बताये उन्होंने एक आखिरी दावत का इंतजाम कर डाला। पार्टी से विदा होते वक्त हरेक के मुंह से यही सुनायी देता था—'भई ज्यादा खा गये। भई ज्यादा खा गये।'

घर में मेहमानों के साथ रामू ने भी पेट से कुछ ऊपर ही खा लिया था। उसने तो आज काम को हाथ भी नहीं लगाया था फिर भी एक अजीब-सी थकान उसका बदन तोड़ रही थी। मुश्किल से वह पीने का पानी कमरे में रखने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिम्मत जुगाड़ पाया । वह जग और पानी का गिलास सबके कमरे में रखने के बाद मेम साहब के कमरे में गया । उसने देखा कि मेम साहब अपने कमरे में बदहवास सो रही थीं । वह पानी का गिलास रखकर लौटने लगा, तो उसे दूसरे कमरे से अपने साहब और मामाजी की बात करने की आवाज सुनायी दी । वह उदासी जो पार्टी के शोर-गुल में क्षणभर को खो गयी थी एकाएक दुगने वेग से उठ रामू की छाती दबोचने लगी । मोटर से उसकी टक्कर, अस्पताल में उसका पड़ा रहना । बात-बात पर मेम साहब और बच्चों का डांटना । फिर वही रूखी-सूखी । साइकिल होते हुए दूर-दूर की पैदल यात्रा । उसके दर्पण में देखने और टी. वी. देखने पर रोक-टोक । क्या वह जहां पहुंच गया है वहां से वापस जा सकेगा ? पानी में डूबते व्यक्ति को जैसी अफरन होती है वैसी ही रामू को होने लगी । आगे आनेवाले दिनों का अंधेरा उसे लीलने लगा । वह अंधेरा मौत के अंधेरे की तरह था जो तिल-तिलकर उसके प्राण लिये जा रहा था । वह घबराकर कमरे से बाहर जाने को हुआ तो उसका ध्यान नींद में बदहवास लेटी मेम साहब के गले में पड़े भारी हार पर चला गया । अंधेरे में एक रोशनी झलकी । वह लौटकर मेमसाहब के कमरे में गया और चारपाई के पास चोरों की तरह बैठ हार का कब्जा तलाशने लगा । उसे जब हार का कब्जा दिखायी नहीं दिया तो उसने हार को मेमसाहब के गले से उतारने की कोशिश की । उस प्रक्रिया में मेम साहब चौंककर उठ बैठीं । 'चोर', 'चोर' चिल्लाने लगीं ।

मेम साहब के मुंह से 'चोर', 'चोर' शब्द निकलना था कि रामू के पैर में मशीनी गति भर गयी । भूत को पिछियाते जानकर कपड़ा-लत्ता छोड़कर जैसे कोई भागता है वैसे ही रामू दरवाजे खिड़कियों से टकराता, मिनटों में घर से रफू चक्कर हो गया । आखिरकार स्टेशन पर ही जाकर रुका । एक गाड़ी से दूसरी गाड़ी बदलता टिकट कलेक्टरों से बचता-बचाता अपने गांव के स्टेशन तक जब पहुंचा तो वह अधमरा हो चुका था । इसी कारण स्टेशन पर ही काफी देर तक लेटा रहा । ताकत आने पर लड़खड़ाता हुआ वह अपने गांव की ओर चल पड़ा । काफी देर तक तो थकान के मारे उसकी आंखें बंद रहीं, लेकिन जब आंखें खुली तो उसने पाया कि उसका गांव तो गांव ही नहीं रहा बल्कि एक मरघट में बदल गया था । उसने गले और छाती में उबलते पानी की तरह 'माई कहां है, बाबू कहां है, बहिना कहां है' बुदबुदाने लगा । वह परेशानी और थकान से मृतप्रायः होने को हुआ कि उसे एक बैलगाड़ी आती दिखायी दी । बैलगाड़ी में पच्चीस के करीब लोग थे । कुछ जिंदा कुछ मुर्दा । गाड़ी रोककर उसने अपने बाबू के बारे में पूछा और जवाब में जो कुछ सुना उसे सुनकर वह जहां खड़ा था वहीं गिर पड़ा । गांव में हैजा फैल गया था, उसकी मां को लेकर उसका पिता शहर गया था ।एक बहुत लंबी यात्रा करने चला था वह, पर मंजिल पर पहुंचने से पहले ही उसे उल्टी यात्रा करनी पड़ी थी । अब तो अपनी यात्रा के शुरुआत और अंत के बीच त्रिशंकु बना लटक गया था वह । अपना कह पाने लायक कुछ भी तो नहीं बचा था उसके पास ।

काका नगर, नयी दिल्ली-११०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

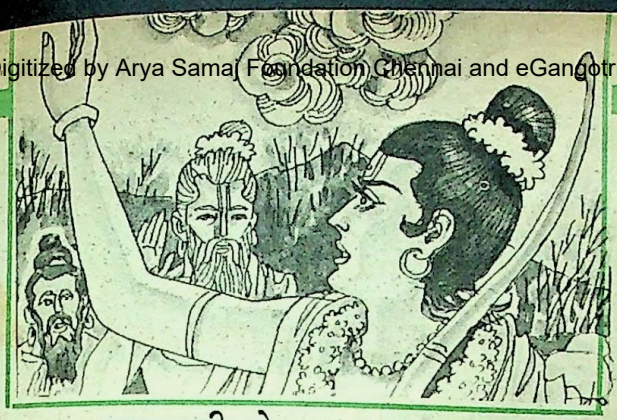

रामनवमी के अवसर पर

राजा रामचंद्र की जय

● शिव बचन चौबे

"एक बार बोलिए, प्रेम से बोलिए, राजा रामचंद्र की जय"—यह एक बोली थी, जो राम के राज्य में राम की प्रजा बोलती थी। अयोध्या की प्रजा का राजा और राजतंत्र के पक्ष में इतना प्रबल नारा तथाकथित आधुनिक प्रजातंत्र की समस्त उद्घोषणाओं और गगनचुंबी आदर्शों को ध्वस्त कर देता था। यह नारा जितना चमत्कारी था, उतना ही विस्मयकारी, लेकिन यह मात्र स्वीकृति ही नहीं एक सत्य था। और, सत्य कभी व्यंग्य का आधार नहीं बनता। उसे भूत, भविष्य या वर्तमान की काल सीमा में नहीं बांधा जा सकता। सत्य तो केवल सत्य होता है न आधुनिक, न पुरातन।

यह अवश्य है कि जो सत्य सापेक्षता की कसौटी पर खरा न उतरे, वह सत्य विश्वसनीय नहीं होता। सत्य तर्क की वस्तु है, धर्म विश्वास की। माता की ममता और भक्त की श्रद्धा में, न कहीं किसी तर्क की गुंजाइश है, न ही किसी सापेक्षता या निरपेक्षता की।

लेकिन 'सत्य' एक वैज्ञानिक शब्द है जिसे बार-बार तर्क के गणित से गुजरना पड़ता है।

सो, मेरी दृष्टि में इस बोली का सत्य एक सापेक्ष सत्य था, निरपेक्ष नहीं। कम-से-कम अयोध्या-राज्य की सीमा में बसी समकालीन प्रजा के लिए यह सत्य शत-प्रतिशत सापेक्ष था, कृष्णकाल तक आते-आते जिसका संपूर्ण स्पष्टीकरण हो चुका था।

राम ने जनहित में संकटों का आकंठ गरलपान करके भी अपना कंठ गीला नहीं होने दिया। अपने समस्त सुखों की बलि देकर भी प्रजा को दुःखों से दूर रखना केवल 'राजा राम' के लिए ही संभव था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्‌भव का मूल विवादग्रस्त होकर भी, यह बोली इतनी शाश्वत और सनातन बन गयी कि उसकी अनुगूंज त्रेता और द्वापर के युगों को लांघती हुई आज भी हमारे मध्य उसी स्फूर्त्त संचेतना के साथ विद्यमान है । इसमें संपूर्णता की वह सनातन शक्ति है, वह उत्स है, जो न कभी मिटती है, न कभी मरती है, अपितु हर बोलनेवाले की धमनियों में एक सात्विक झनझनाहट और नैसर्गिक रक्त संचालन की अबाध प्रक्रिया प्रारंभ कर देती है ।

त्रेता में राम अवतार के बाद, द्वापर में उतना ही बड़ा एक और अवतार हुआ था—कृष्णावतार । शास्त्र साक्षी है कि यह बोली कृष्ण के लीलाकाल में भी बोली गयी । स्वयं कृष्ण ने यह बोली बोली थी । सुखद आश्चर्य यह कि 'राजा राम' की जय बोलते हुए, उन्हें गर्व का अनुभव होता था । 'गीता' के दसवें अध्याय में विभूतियोग का प्रकरण उठाते हुए, वे सगर्व और सहज ही कहते हैं—"*रामः शस्त्रभृतामहम्* । अर्थात मैं शस्त्रधारियों में राम हूं ।

कोई युग-पुरुष या कोई अवतार युगों के सत्य को, उनके संस्कार और संचेतना को अपने व्यक्तित्व या आत्मबल से दबाकर या खंडित कर ऊपर नहीं उठता । कदाचित कोई ऐसा करता है तो वह युग-पुरुष हो ही नहीं सकता । हमारे समस्त अवतारों में, किसी भी अवतार-पुरुष का यह स्वभाव नहीं रहा । यह स्वभाव तो उस वंचक का है जो अपने पूर्ववर्ती पुरुष (संस्कार) के किंचित ऋणात्मक अवशेषों में अपनी धनात्मक उपलब्धि ढूंढ़े । किसी युग-पुरुष का यह आचरण हो ही नहीं सकता । यही कारण है कि कृष्ण ने रामधर्म का गुण-दोष विवेचन नहीं किया, अपितु उसकी सहजात व्याख्या और प्रयोग पद्धति बताकर एक शांतिदूत के रूप में प्रबल प्राख्याता बने रहे ।

प्रश्न यह उठता है कि राम और कृष्ण दोनों को अपना भगवान मानकर भी, जनमानस ने आज तक यह क्यों नहीं कहा—"एक बार बोलिए, प्रेम से बोलिए, राजा कृष्णचंद्र की जय" ? दोनों अवतारों के प्रति जनमानस की श्रद्धा और भक्ति समान होकर भी, संबोधन-शैली और जय-विधान भिन्न क्यों हैं ? अगर राम अयोध्या के राजा थे तो कृष्ण भी द्वारकाधीश कहलाये । तो, फिर यह अंतर क्यों ? प्रश्न जितना रोचक है, उतना ही विचारणीय ।

किसी प्रश्न का समुचित उत्तर, प्रश्न से जुड़े संदर्भ में ही खोजना न्यायसंगत होता है । राम विवश और संकट ग्रस्त अवश्य होते हैं, किंतु असमर्थ और असहाय कभी नहीं । राम की विशाल लीलाकथाओं में, एक कथा सुग्रीव से उनकी मित्रता की भी है । स्तरीय तौर पर हम कह सकते हैं कि राम और सुग्रीव की मित्रता वैयक्तिक कारणों पर आधारित और स्वच्छ राजनीति से प्रेरित दो समान पक्षों के बीच थी । इस मैत्री से संबंधित दोनों ही पक्ष किन्हीं राजवंशों से जुड़े राज्य-विहीन लोग थे । मित्रता के इस पाठ में 'देत-लेत मन शंक न धरई' का द्विपक्षीय सिद्धांत समाहित था, यद्यपि सुग्रीव के व्यवहारों से यह सिद्धांत निरुद्देश्य-सा लगता है । यह समुपदेश समान स्तर के पक्षों में ही संभव है । राम और सुग्रीव दोनों ही भिन्न-भिन्न काल और परिस्थितियों के चलते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य-पत्नी-विहीन थे। राम को सुग्रीव की और सुग्रीव को राम की आवश्यकता थी। अस्तु, यह मैत्री न अहैतुक थी, न अकारण।

ऐसा ही एक मित्रता का प्रसंग कृष्णकाल में भी आता है जो दो असमान पक्षों के बीच अहैतुक होकर उच्चकोटि की उदात्तता प्राप्त कर लेता है। एक तरफ द्वारकाधीश कृष्ण थे, तो दूसरी तरफ साधन-विहीन, दरिद्र सुदामा। यहां सुदामा को 'देना' कुछ नहीं, 'लेना' सब कुछ था। न ही मित्रता का कोई पाठ पढ़ाया गया और न ही कोई शर्त-सौगंध। सब-कुछ मित्रवत और प्रेमवत चला।

"देखि सुदामा की दीन दशा
करुणा करि के करुणानिधि रोये"
(सुदामा चरित)

लेकिन इसके ठीक विपरीत, वहां समर्थ और महत्त्वाकांक्षी सुग्रीव शर्त-पर-शर्त रख रहा था। उसने राम की शक्ति परीक्षा तक लेने में संकोच नहीं किया। राम की विवशता उस सीमा तक थी कि सुग्रीव से दोस्ती का हाथ स्वयं उन्हीं को बढ़ाना पड़ा। अगर भगवान अपने भक्त के घर पधारे, तो यह उसकी उदारता है, किंतु कोई बलवान किसी दुर्बल से मित्रता की मिन्नत करे, अपनी शक्ति और निष्ठा की परीक्षा दे, तो यह उसकी विवशता या कूटनीति के सिवा और कुछ नहीं है।

अगर हम राम की लीलाओं का व्यावहारिक विश्लेषण, उनके नररूप के संदर्भ में करें, तो एक बात स्पष्ट दिखती है—राम के समस्त संकटों के मूल में उनके 'राजा' स्वरूप का होना। प्रथम राज्याभिषेक के अवसर पर विपत्ति की जो शृंखला प्रारंभ होती है, वह कहीं रुकती नहीं। राम के राजा-स्वरूप ने जब-जब

राम के समस्त संकटों के मूल में था उनके 'राजा' स्वरूप का होना।

अयोध्या से जुड़ने का प्रयास किया, उसे हानि के सिवा कुछ भी हाथ न लगा।

वनवासकाल हो या उसके पश्चात राज्यकाल, संकट कभी उनका पिंड नहीं छोड़ता। अंतर इतना ही है कि वनवासी राम अपने व्यापक दायित्वों के अलौकिक निर्वाह से सर्वस्तुत्य हैं, जबकि 'राजा राम' का दायित्व अयोध्या की सीमा में बंधकर उनके व्यक्तित्व को ही विवश और संकटग्रस्त कर देता है।

चौदह बरस बाद, वनवासकाल के समापन पर उसी राज्याभिषेक की दुःखद पुनरावृति में एक और 'वनवास' होता है—सीता-वनवास। यह वनवास किसी कैकेयी की इच्छा से नहीं, विवश राम की इच्छा से होता है। अवश्य, उन्हें यह चाहना पड़ता है।

लगता है—एक नारी ने पुरुष को वनवास दिलाकर जिस वृत्तचित्र का उपक्रम किया था, अब एक पुरुष ने नारी को निर्वासित वनवास देकर उस वृत्तचक्र को अनिच्छित ही सही, किंतु पूरा कर दिया। सृष्टि में नारी और पुरुष के संबंध-संतुलन की यह विडंबना कालातीत है। एक प्रश्न के उठते ही उसके साथ अनेक प्रश्नों का जुड़ जाना सहज और स्वाभाविक है।

अगर पहला वनवास एक माता-पिता ने अपने पुत्र को दिया था, तो दूसरा उसी पुत्र को, राजा का दायित्व निभाने के लिए, अपनी पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को देना पड़ा । राम के वनगमन की दुःखद घड़ी में, सीता ने स्वयं को उसमें सहर्ष शामिल कर दिया था । लेकिन, सीता-वनगमन के समय 'राजा राम' की मनःस्थिति क्या थी ? पूरी रामकथा में, अगर राम कहीं भीतर से सबसे अधिक रिक्त दिखते हैं, स्वयं को अत्यंत असहाय, अवश और अकेला महसूस करते हैं, तो वह स्थिति सीता-विहीन 'राजा राम' की ही है । क्योंकि, सीता राम की पत्नी ही नहीं, उनकी शक्ति, संवेदना और सम्मान भी थी ।

सीता-विहीन राम का राज्याभिषेक होता है । वे राजा बनते और रामराज्य का प्रतिपादन करते हैं । ऐसा रामराज्य, जहां 'मांगे वारिद, देहि जल' । और प्रजा बोलती है—'एक बार बोलिए, प्रेम से बोलिए, राजा रामचंद्र की जय !' लेकिन राम ही जानते हैं, यह बोली उनको कितनी महंगी पड़ी थी ।

प्रजा के बीच से, जब-जब यह उद्घोष उठता, राम का पति-हृदय वेदना से कराह उठता था । लेकिन, उन्हें तो चुप रहने की राजनीतिक विवशता थी । क्योंकि—

जासु राज प्रिय प्रजा दुःखारी
सो नृप अवशि नरक अधिकारी
(मानस)

परंतु जिस राज्य में स्वयं 'राजा' ही दुःखी हो, क्या उस राज्य की प्रजा नारकी नहीं है ? अगर रामराज्य की स्थापना 'राजाराम' की लौकिक नैतिकता थी, तो सीता निर्वासन उनकी विवशता । इस नैतिकता और विवशता के बीच धर्मात्मा और धनुर्धर राम कहीं नहीं थे । उनकी व्यक्तिगत हानि ही सर्वसाधारण का लाभ बनकर रह गया था । उस राज्य में सब खुश थे, केवल राम और सीता को छोड़कर । वस्तुतः रामराज्य राम के सुखों की समाधि पर बना था । और स्वर्ग-नरक के इस सिद्धांत के अनुसार, अयोध्या की प्रजा को नरक का भागी होना चाहिए था । किंतु प्रजा नारकी हो ही नहीं सकती, क्योंकि वह राजा की तरह व्यक्ति नहीं, समूह होती है । दोषी या नारकी तो व्यक्ति होता है । समूह की यही विशेषता है और व्यक्ति की यही विवशता । प्रजा को सदा समूह का लाभ मिलता है और रामराज्य की प्रजा इसका अपवाद नहीं हो सकती । राम का व्यक्ति ही नहीं, राजा भी 'मर्यादा पुरुषोत्तम' था जिसका लाभ अयोध्या की प्रजा को मिला, राम को कदापि नहीं । व्यक्ति और समाज के बीच की यह विडंबना कालातीत है । यह दुर्भाग्य-बेलि उसके पद और कद के अनुसार बढ़ती और घटती है । दायित्व की विडंबना व्यक्ति की स्थिति के समानुपाती और समूह की स्थिति के विलोमानुपाती होती है ।

जब राम 'राजा' नहीं थे तो सीता हरण के दोषी रावण-जैसे शूरवीर को सपरिवार समाप्त ही नहीं, अभेद्य गढ़ लंका को नष्ट-भ्रष्ट करके सीता को ससम्मान वापस लाये थे । लेकिन, उसी सीता को राम का 'राजा' स्वरूप, प्रजा-समूह की मात्र आशंका पर वनवास से रोकने में सर्वथा असहाय और असमर्थ हो उठा था । पावन सीता को अकारण लांछित कर वन भेजते समय राम की अंतरात्मा विलखती रही और अयोध्या की प्रजा अपने राजा की तथाकथित न्यायप्रियता से प्रसन्न कहती रही—"एक बार बोलिए, प्रेम से बोलिए राजा रामचंद्र की जय" ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुतः इस बोली का यही उद्‌गम-स्थान था और उसके साथ जुड़ा यही दुःखद सत्य ।

अहल्या, शबरी, जटायु इत्यादि के उद्धार राम ने 'राजा' के रूप में नहीं, एक व्यक्ति की हैसियत से किये थे । ताड़कावध से लेकर रावणवध तक राम का रूप 'राजा' नहीं था ।

"कोशलेश दशरथ के जाये
हम पितु बचन मानि वन आये"
(मानस)

वस्तुतः समस्त अवतार-पुरुषों और युग-पुरुषों में जितना शोषण राम का हुआ, उनकी सरलता और उदारता का जितना लाभ जनमानस ने उठाया, उतना कभी किसी का नहीं हुआ । आश्चर्य यह कि राम समर्थ होकर और सब-कुछ जानकर भी स्वयमेव ठगे जाते रहे और अधिकांशतः जनमानस उन्हें ठगता रहा । शरभंग ऋषि के आश्रम में इंद्र का (राम से) मिलने तक से मना कर देना, सुग्रीव का मैत्री के समय (राम की) शक्ति परीक्षा लेना, अयोध्या की प्रजा को उनकी (राम की) भावनाओं के विपरीत सीता को लांछित कर वन भेजने को बाध्य करना इत्यादि ऐसे साक्ष्य हैं जो इस तथ्य की दुःखद संपुष्टि करते हैं ।

लेकिन कृष्ण ? वस्तुतः कृष्णावतार रामावतार का आभारी था । कृष्ण राम-जीवन के समस्त अनुभवों का समीकरण समेटे राजकाज से कोसों दूर रहते हैं । न ऊधो का लेना, न माधो का देना । वे जानते हैं कि कुछ चाहने का मोह बड़ा प्रबल होता है । संकटों की शुरुआत वहीं से होती है । कृष्ण तो मंडली के पुरुष हैं । वे समूह के मध्य एक वर-पुरुष की तरह प्रतिष्ठित होकर भी, उसके स्थायी प्रतिनिधित्व को अस्वीकार कर देते हैं । राजमोह के पचड़े में पड़कर, कृष्ण कभी अपनी सुख-शांति गंवाने को तत्पर नहीं दिखते । उनका नेतृत्व या तो सामूहिक होता है या समाज को निमित्त बनना पड़ता है । कृष्ण परोक्ष-पद्धति के पक्षपाती हैं । वे मंत्रिमंडल के अतिविशिष्ट और सक्षम सलाहकार हैं और आपातकालीन परिस्थितियों में सामूहिक प्रतिनिधित्व की बागडोर अवश्य संभालते हैं । वे जिस भीड़-समूह के मध्य वर-पुरुष की तरह खड़े हैं, वह भीड़ भी उनकी 'जय' बोलती है । शायद भीड़ का यह स्वभाव है—अनादिकाल और अविकल रूप से ! किंतु उस जयघोष में राजत्व की चाटुकारी गंध नहीं, अपितु व्यक्तित्व की मनोहारी विशेषता है—'एक बार बोलिए, प्रेम से बोलिए, वृंदावन विहारी लाल की जय' । राम चौदह बरस का घनघोर वनवास काटकर भी 'दंडक वन विहारी लाल' नहीं कहला सके, क्योंकि एक राजपुत्र के लिए संबोधन अनुपाततः अश्रेष्ठ, अशोभनीय और असंगत था । लेकिन चतुर कृष्ण को यह जय ध्वनि ही स्वीकार थी । जिस वृंदावन में एक ग्वाला गायें चराता हो, उसे उस वन का 'विहारी लाल' कहना समुचित सम्मान के सिवा और क्या हो सकता है ? लेकिन कृष्ण का विवेक उन्हें वहां भी नहीं बंधने देता । राज्य की ही तरह, वन की सीमा भी उन्हें नहीं छू सकी थी । क्या गोकुल, क्या मथुरा,क्या वृंदावन और द्वारका—कृष्ण के लिए सब बराबर ।"जहां बसे तहं, सुंदर देसू ।"

'श्याम बिना बैरिन भई कुंजें', से लेकर 'अंखियां हरि दर्शन की प्यासी' तक कृष्ण अबंध हैं, वे कहीं बंधते नहीं । वे मातृभूमि की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्षा अवश्य करते हैं किंतु भावनात्मक ममता में बंधकर अपना और स्वयं मातृभूमि का अहित नहीं करते । उन्हें गोकुल और मधुवन छोड़कर द्वारका जाना भी स्वीकार है ।

कृष्ण तो वहीं रहते हैं, जहां उन्हें आवश्यकतानुसार रहना चाहिए । समूह के सत्य की सापेक्षता का उन्हें पूर्ण अनुभव है । यही कारण है कि कृष्ण सदा जनमानस पर भारी पड़ते हैं । उन्हें 'राजा रामचंद्र की जय' की उद्घोषणा में छिपे सत्य की सापेक्षता का ही नहीं, रामराज्य की प्रजा के मानसिक संकुचन का भी भरपूर अंदाज था । इस बोली का भावार्थ रामराज्य के दिनों, अयोध्या के राज्य में वह नहीं था जो अयोध्या के बाहर या रामराज्य के परवर्ती कालखंडों से लेकर आज तक होता आया है । रामराज्य की प्रजा और उसके बाहर के जनमानस की इस बोली में शब्दों की एकरूपता होकर भी, अर्थ की भिन्नता थी और है । राम ने जनहित में संकटों का आकंठ गरलपान करके भी अपना कंठ नीला नहीं होने दिया । अपने समस्त सुखों की बलि देकर भी, प्रजा को दुःखों से दूर रखना केवल 'राजा राम' के लिए ही संभव था । अयोध्या की प्रजा इन कारणों से, किंतु अयोध्या के बाहर का जनमानस राम की प्रीति की रीति—'बिनु कारण जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोऊ नाहीं' के अलौकिक कारणों से सभक्ति बोलती थी—'एक बार बोलिए, प्रेम से बोलिए, राजा रामचंद्र की जय ।'

—डी-१८, यमुना विहार
एन.टी.पी.सी. कॉलोनी
पो.-जमनीपाली
जि.-बिलासपुर (म.प्र.)-४९५४५०

एक कानूनी समस्या

न्यूयार्क नगर के अधिकारी और नागरिक इन दिनों एक कानूनी समस्या से परेशान हैं । इसका संबंध जिला सहायक सरकारी वकील डेनियल पेनोफस्की से है ।

किसी ने उसकी योग्यता की जांच की और पाया... उसने कोई परीक्षा पास नहीं की है । यह आदमी पिछले १५ वर्षों से सरकारी वकील के रूप में काम कर रहा था ।

लेकिन अब यह पता लगने के बाद कि वह इस पद का अधिकारी नहीं था, अराजकता की स्थिति पैदा हो गयी है ।

हर मामला, जिसमें ४७ वर्षीय पेनोफस्की सरकारी वकील था, पलट दिया जाएगा । दोषी पाये गये लोगों के वकील मांग कर रहे हैं कि नगर न केवल उनका अदालती और अपील का खर्च अदा करे बल्कि उनके मुअक्किलों को 'गलत सजा के लिए मुआवजा दे ।'

कैसी विचित्र स्थिति है ? केवल इसलिए कि नगर अधिकारियों ने पेनोफस्की की नियुक्ति से पहले उसकी जांच नहीं की ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

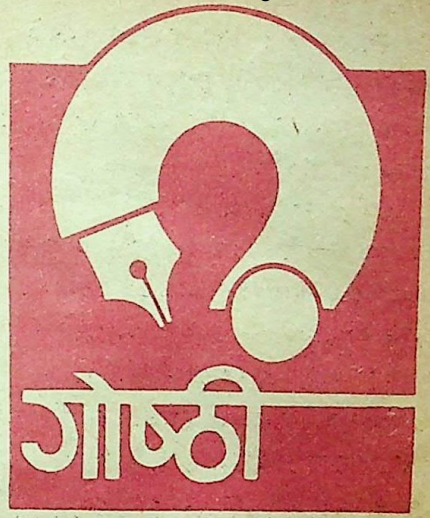

ललिता जैन, मंदसौर

प्रश्न : भारत में व्यवस्थित डाक वितरण प्रणाली कब शुरू हुई ? पहला डाक टिकट कौन था ?

दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने डाक वितरण की हरकारा प्रणाली १२९६ में प्रारंभ की थी । एक डंडे में घुंघरू बांधकर हरकारे एक मील तक जाते थे, वहां से दूसरा हरकारा आगे बढ़ता था । 'सिंदे डाक' (प्रांतीय) पहला डाक-टिकट १ जुलाई, १८५२ को जारी किया गया था । पहला अखिल भारतीय डाक-टिकट (दो पैसे और एक आना मूल्य) १ अक्तूबर, १८५४ को जारी हुआ था ।

उदयपाल सिंह, तेजगढ़ (उ.प्र.)

प्रश्न : संसार की सबसे लंबी नदी नील है या अमेजन ?

मैक्मिलन एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार संसार की सबसे बड़ी नदी नील है जिसकी लंबाई ६७४१ किलोमीटर है । इसमें अमेजन को संसार की दूसरी बड़ी नदी, लेकिन 'सबसे बड़ी नदी प्रणाली' बताया है । इसकी लंबाई ६४४० किलोमीटर है । गिनेस बुक ऑव वर्ल्ड रेकॉर्ड्स का कहना है कि दोनों नदियों में से कौन बड़ी है यह विषय परिभाषा का अधिक तथा मात्र माप का कम है । इसके उद्गम के संबंध में भूगोलवेत्ताओं में विवाद है ।

अनिल राय, पाथाखेड़ा (बैतूल)

प्रश्न : गत ३१ दिसंबर और १ जनवरी, १९९० की अर्द्धरात्रि को विश्व की प्रत्येक आणविक घड़ी एक सेकेंड रोककर फिर चलायी गयी, क्यों ?

क्योंकि कहते हैं कि पृथ्वी के घूमने की गति इसी अनुपात में धीमी हो गयी है ।

एम.ई. हक, बोकारो

प्रश्न : वेदों के रचयिता कौन थे ? क्या ये पुस्तक रूप में आरंभ से ही लिखित हैं ? इनका रचनाकाल क्या है ?

वेदों के रचनाकाल को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद है । एक ओर इन्हें अनादि बनानेवाली भारतीय परंपरा है तो दूसरी ओर पाश्चात्य विद्वान उसका समय ई.पू. चार हजार से लेकर एक हजार वर्ष मानते हैं । सच कहा जाए तो वेदों का रचनाकाल निर्धारित करना कठिन है ।

महेंद्र सिंह गौतम, शुजालपुर मंडी (शाजापुर)

प्रश्न : विश्व का सबसे ऊंचा बांध कहां है ?

विश्व का सबसे ऊंचा बांध, ताजिकिस्तान (रूस) में १९७३ से बख्श नदी पर बन रहा, रोगन्सकी बांध होगा जिसकी ऊंचाई अंततः १,०९८ फुट होगी । तदनंतर अब तक रूस में ही निर्मित नरेक बांध उच्चतम है । इसकी ऊंचाई ९८४ फुट है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

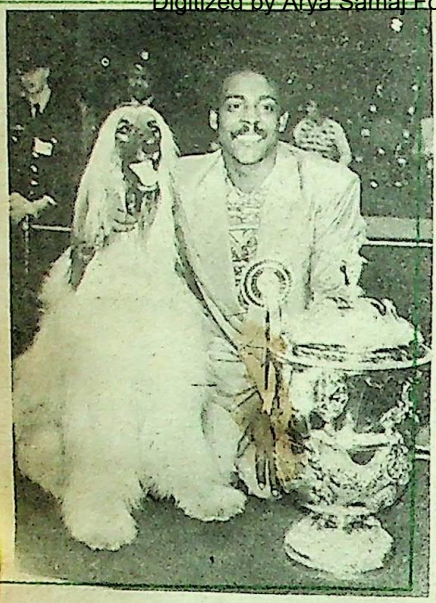

ब्रजेश सिंह, नालागढ़

प्रश्न : कुत्ते किस वंश के होते हैं तथा इनकी नस्ल कितनी पुरानी है ? ये कितने प्रकार के हैं ?

मैक्मिलन एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार भेड़िया, गीदड़ और लोमड़ी से लगभग १० हजार वर्ष पूर्व कुत्ते की नस्ल प्राप्त की गयी थी । इनकी किस्में तीस से भी अधिक हैं । कुत्ते की एक नस्ल अफगान हाउंड इस चित्र में देखी जा सकती है ।

सुदेश अहलूवालिया, भटिंडा

प्रश्न : आयोडीन की कमी से शरीर को क्या हानि हो सकती है ?

आयोडीन की कमी से घेंघा, गूंगापन, बहरापन, मानसिक विकृति, अनेक शारीरिक बाधाएं हो सकती हैं । गर्भवती स्त्री के शरीर में आयोडीन की कमी से जन्म लेनेवाला बच्चा शारीरिक और मानसिक रूप से विकृत हो सकता है ।

मुकुंद माधव बिसारिया, अलवर

प्रश्न : क्या पशुओं से भी दवाएं प्राप्त की जाती हैं ? वे कौन दवाएं हैं ?

हारमोन संबंधी अधिकतर औषधियां पशुजन्य हैं । हृदय-रोग और दमे के लिए काम आनेवाली औषधि 'इपिनेफेरिन' बिल्ली और सुअर की अधिवृक्क (ऐडरीनल) ग्रंथियों से निकाली जाती है । थायरायड ग्रंथियों की चिकित्सा के लिए थिरोक्सीन दवा बिल्ली की थायरायड ग्रंथि से मिलती है । मधुमेह के रोगियों को दी जानेवाली इंसुलीन भी बिल्ली और सुअर की अगन्याशय ग्रंथियों के स्राव से बनायी जाती है । पोलिओ वैक्सीन की प्राप्ति का साधन बंदर के गुर्दे हैं । ऐसी ही कई अन्य औषधियां भी हैं ।

सत्येन्द्र प्रसाद सिंह, पटना

प्रश्न : स्क्वैश कोर्ट किस प्रकार का होता है कि इसे बहुत सीमित संख्या में दर्शक देख पाते हैं ?

स्क्वैश का परंपरागत कोर्ट एक कमरा-जैसा होता है जिसमें गेंद को सामने की दीवार पर रैकेट से फेंका जाता है । इसके दर्शक इस कमरानुमा कोर्ट के चारों ओर बनी बालकनी, या छज्जों, पर बैठ सकते हैं जिससे इनकी संख्या सीमित रखनी होती है । अब इस कोर्ट में सुधार हुआ है । चित्र देखिए, इस कोर्ट की दीवारें पारदर्शी हैं । दर्शक भी अधिक बैठ सकते हैं ।

राकेश शर्मा, बहराइच

प्रश्न : मनुष्य जम्हाई लेता है, पशुओं को भी ऐसा करते देखा गया है । क्या पक्षी भी जम्हाई लेते हैं ?

तोता एक मात्र ऐसा पक्षी है जो जम्हाई लेता है ?

लक्ष्मी कुलश्रेष्ठ, जयपुर

प्रश्न : हरी खाद किसे कहते हैं, और इसकी उपयोगिता क्या है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेगयुमिनस, अर्थात दलहनी पौधों, जैसे चना, मूंग आदि को फसल की हरी अवस्था में ही हल चलाकर जमीन में दबा दिया जाता है। इसे को हरी खाद कहते हैं। उक्त पौधों की जड़ों में नोड्यूल (ग्रंथिका) पाये जाते हैं जिनके अंदर बैक्टीरिया होते हैं। ये बैक्टीरिया वातावरण से नेत्रजन लेकर मिट्टी में पहुंचाते हैं जिससे मिट्टी की नेत्रजनीय उर्वरकता बढ़ती है।

वीरेन्द्र वीर सिंह पिमोली, गोपेश्वर (गढ़वाल)

प्रश्न : ज्ञानपीठ पुरस्कार की स्थापना कब हुई, और हिंदी के कौन-कौन साहित्यकार इसे प्राप्त कर चुके हैं।

इसकी स्थापना १९६५ में की गयी थी, और सुमित्रानंदन पंत (१९६८), रामधारी सिंह दिनकर (१९७२), सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (१९७८) तथा महादेवी वर्मा (१९८२) हिंदी के साहित्यकार इसे प्राप्त कर चुके हैं।

मनोरंजक बिहारी पाठक, बलिया

प्रश्न : चाय-पान कब से और कहां से शुरू हुआ ? भारत में यह कब आयी ?

चाय-पान ४ हजार वर्ष पूर्व चीन से प्रारंभ हुआ था। यूरोप में इसका प्रचलन ३०० वर्ष से अधिक पुराना नहीं है। भारत में आकर अंग्रेजों ने चाय-जैसे पौधे असम में जंगली रूप की तरह उगते देखे थे। इसके बाद उन्होंने व्यवस्थित ढंग से इसकी खेती प्रारंभ की। संसार में सबसे अधिक चाय ब्रिटेन में पी जाती है। एक अंगरेज औसतन चार किलोग्राम चाय की पत्ती का प्रति वर्ष उपयोग करता है।

राजेश्वर कुमार सक्सेना, रूरकेला

प्रश्न : हवा से बिजली किस प्रकार बनती है ? इसकी जरूरत भी क्या है ?

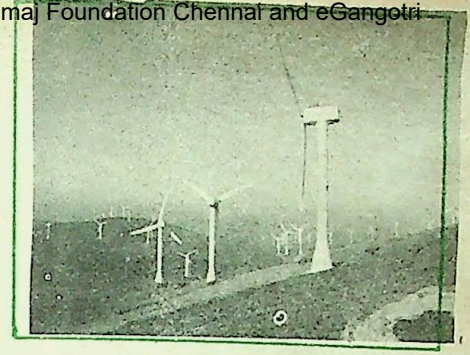

चित्र में देखिए, तीन परों वाले ये पंखे कैलिफोर्निया के एक ऐसे स्थान पर लगाये गये हैं जहां हवा तेज चलती है। इनको टरबाइन कहते हैं। इन पंखों के चलने से जेनरेटर चलता है जिससे बिजली बनती है। इस विधि से लगभग ३० मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है। एक अनुमान के अनुसार इस प्रकार विद्युत उत्पादन से प्रति वर्ष एक लाख बैरल तेल की बचत की जा सकती है। तेल की बचत आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

अंजना बजोरिया, सीतामढ़ी

प्रश्न : नाखून काटते समय दर्द क्यों नहीं होता ?

क्योंकि हमारे नाखून मृत कोशिकाओं से निर्मित होते हैं।

मरण शैया पर पड़े व्यवसायी ने वसीयत लिख रहे वकील से कहा, "वसीयत में एक धारा यह भी जोड़ दें कि मेरे साथ बीस वर्षों तक कार्य कर रहे प्रत्येक कर्मचारी को ५० हजार डॉलर मिलेंगे।"

"पर आपने तो अपना व्यवसाय दस-बारह वर्ष पहले ही शुरू किया था।" वकील ने टोका।

"तो क्या हुआ ? मैं भी यह जानता हूं। पर प्रचार और विज्ञापन के लिए तो यह धारा काम आएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी ने आकाश को बनाया नहीं है !

● युवाचार्य महाप्रज्ञ

विचार और विचार, दोनों का समीकरण कभी नहीं हो सकता । ऐसा कोई भी विज्ञान का फार्मूला अभी सामने नहीं आया जो विचारों का समीकरण करे । विचारों में हमेशा तोड़ और जोड़ रहता है । यह तोड़ और जोड़ की बात सारे विश्व के संचालन की बात है । आचार्य उमास्वामी ने एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण सूत्र लिखा है— **'संघातदेजेभ्यस्तदुत्पत्तिः ।'** यह सारी सृष्टि न केवल समुदाय से संचालित होती है और न केवल भेद से संचालित होती है । संघात और भेद—ये दोनों साथ-साथ चलते हैं । हम कहते हैं, टूटता जा रहा है, बिखराव हो रहा है, यह हमारा एक दृष्टिकोण है । कुछ नहीं बिखर रहा है । इस अनंत आकाश में हम जहां जन्मे थे पचास वर्ष हो गये, क्या यह पृथ्वी वहीं है ? बहुत आगे सरक गयी है । हमें पता नहीं चलता है किंतु बहुत आगे सरक गयी है । समय का सारा सौरमंडल आगे सरकता चला जा रहा है । ये नीहारिकाएं आगे सरकती चली जा रही हैं । हम अनंत आकाश में जहां थे, वहां कल नहीं होंगे । और जहां कल थे, वहां परसों नहीं होंगे । आगे-से-आगे अनंत की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं । यह पुरानी धारणा थी और आज यह विज्ञान-सम्मत धारणा भी हो चुकी है ।

समुदाय और अलगाव साथ-साथ

आगम कहते हैं, 'एक केवली है । उसने अपनी अंगुली किसी स्थान पर रखी, क्या दूसरी बार वह अंगुली वहां रख सकता है ?' नहीं रख सकता । चाहे वह सर्वज्ञ है किंतु उन्हीं आकाश-प्रदेशों में अपनी अंगुली को नहीं रख सकता । अपने पैर को नहीं रख सकता । आज विज्ञान ने इस बात की घोषणा कर दी कि हमारी पृथ्वी जहां थी, कल वहां नहीं रहेगी । परसों वहां नहीं रहेगी । एक समय में जो वस्तु जहां थी, वहां रह ही नहीं सकती । अनंत और असीम में वह आगे-से-आगे बढ़ती और चलती जाती है । यह बिखराव आखिर एक

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज के धार्मिक पर इतनी राख आ गयी है कि एक बार बिना क्रांति के उस राख को हटाया नहीं जा सकता ।...धर्म ने शायद इतने अनर्थ दुनिया में किये हैं, जितने अधर्म के नाम पर शायद ही हुए हों ।

...रूप में होगा । तो यह समुदाय और ...ज—दोनों बातें साथ-साथ चलती ...।

...हजारों वर्षों से आत्मा के अस्वीकार की ...आत्मा और धर्म के अस्वीकार की ...हिंदुस्तान में होती आ रही है । हमारे ...अनेक आचार्य हुए हैं । आपने बृहस्पति ...सुना होगा । वे चार्वाक दर्शन के बहुत ...आचार्य हुए हैं । एक ओर श्रामणिक ...दिक उपनिषदों का उद्घोष हो रहा था तो ...और बृहस्पति उनकी उत्थापना कर रहे ...धारणाएं साथ-साथ चलती थीं । मैं ...हूं कि यह सारा दृष्टिकोणों का अंतर ...भूमिकाओं का अंतर है । यदि कोई भी ...वात्स्यायन होगा और कामशास्त्र लिखेगा ...कामशास्त्र की स्थापना को मुख्यता देगा, ...बातें उसके सामने गौण होंगी । कौटिल्य ...सुझा सकता है कि शत्रु की विशाल ...यदि परास्त करना हो तो इस प्रकार के विषैले पदार्थों का समायोजन किया जाए कि जिससे हजारों-लाखों सैनिक एक साथ हतप्रभ हो जाएं या मर जाएं । कौटिल्य यह सुझा सकता है, क्योंकि यह उसकी भूमिका है । समाजशास्त्री यदि अपनी बात कहेगा तो उसके सामने मुख्य दृष्टिकोण यही रहेगा कि जहां धर्म से समाज का विघटन होता हो, वहां धर्म को हमें तिलांजलि दे देनी चाहिए ।

भूमिकाओं के भेद को समझना आवश्यक

एक समाजशास्त्री की भूमिका है, एक राजनीति-शास्त्री की भूमिका है और एक कामशास्त्री की भूमिका है । एक वैज्ञानिक की भूमिका है और एक धर्माचार्य की भूमिका है । अपनी-अपनी भूमिका से सारे लोग बात करते हैं । इसमें कोई उलझन नहीं है । यह संसार नाना रुचियों, नाना धारणाओं और नाना विचारों का एक पिंड है । सब ठीक है । अपने-अपने दृष्टिकोण से सब ठीक हैं । भूमिकाओं के जो भेद हैं, उन्हें हम ठीक से नहीं समझेंगे तो बहुत

...१९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उलझन में पड़ जाएंगे ।

धर्म शब्द इतना जटिल बन गया है कि वह आज हमें बड़ी उलझन में डाल देता है । वह धर्म है—हमारे समाज की धारणा । जो समाज की धारणा के लिए धर्म है, उसका मूल 'अर्थ' होगा । वहां अगर अर्थ की उपेक्षा की जाएगी, अर्थ को गौण किया जाएगा तो धर्म नष्ट होगा, समाज नष्ट होगा और जाति नष्ट हो जाएगी । किंतु इस धर्म का कानून से अधिक कोई मूल्य नहीं है । मनुजी ने जो लिखा वह धर्मशास्त्र है । बृहस्पति ने जो लिखा वह भी धर्मशास्त्र है, नारद ने लिखा वह भी धर्मशास्त्र है, कौटिल्य ने लिखा वह भी धर्मशास्त्र है । यह है अर्थमूलक धर्म की धारणा ।

मनुष्य कृत सब-कुछ परिवर्तनीय है

विचार के स्तर पर जो भी चिंतन हुआ है, लिखा गया है, वह सारा-का-सारा कानून का शास्त्र है, विधि-विधान है । संविधान को बदला जा सकता है, धर्म की धारणाओं को भी बदला जा सकता है, कोई कठिनाई नहीं है, और मैं तो यह मानता हूं कि जो भी मनुष्य ने कहा, वह वाणी के द्वारा कहा गया, वाणी के बिना कोई प्रतिपादन नहीं किया जा सकता और वाणी के द्वारा कहा, वह कुछ भी अपरिवर्तनीय नहीं होता । जो बात चाहे महावीर ने कही, बुद्ध ने कही, कृष्ण ने कही, ईसा ने कही या दुनिया के किसी भी महापुरुष ने कही, और अपनी वाणी के द्वारा कही, वह कभी अपरिवर्तनीय नहीं होता । कोई भी शास्त्र अपरिवर्तनीय नहीं हो सकता । तर्कशास्त्र का यह नियम है कि जो-जो कृत होता है— किया जाता है, वह अनित्य होता है, जैसे कि घड़ा । घड़ा कभी नित्य नहीं हो सकता । क्यों नहीं हो सकता ? इसका तर्कशास्त्र ने उत्तर दिया—जो-जो मनुष्य के द्वारा कृत है, वह अनित्य होता है । कृतक कभी नित्य नहीं हो सकता, जैसे कि घड़ा जैसे कि कपड़ा और जैसे कि शास्त्र । कोई अंतर नहीं है । मनुष्य का किया हुआ अनित्य होगा । किंतु क्या हम इस बात को अस्वीकार करें कि इस सृष्टि में कुछ ऐसा भी है, जो कृत नहीं है । आकाश अकृत है । वह किया हुआ नहीं है । किसी ने आकाश को बनाया नहीं है और जो बनाया नहीं गया है, वह नित्य होगा । उसमें कोई परिवर्तन नहीं कर सकता ।

आप धर्म की धारणाओं को दो भागों में बांट दीजिए, दो दृष्टिकोणों से देखिए । एक धर्म की धारणा वह है जो नियमबद्ध, व्यवस्थाबद्ध है और संगठनबद्ध चलती है । उसका निर्माण मनुष्य ने किया है । वह कभी शाश्वत नहीं हो सकती । आचार्य श्री तुलसी जो बार-बार धर्मक्रांति की बात कहते हैं, उनका यदि अर्थ आशय समझें, हृदय समझें तो यह समझें कि हम धार्मिकों ने यह मान लिया कि जो नियम एक बार बन गया, वह लोहे की लकीर हो गया । यह कभी सत्य नहीं हो सकता । नियम बनानेवाला व्यक्ति है, फिर चाहे भगवान महावीर हों, चाहे आचार्य भिक्षु हों और फिर चाहे आचार्य तुलसी हों, कोई भी हों, बनानेवाले आदमी हैं, व्यक्ति है और व्यक्ति जो बनाता है वह कभी त्रैकालिक नहीं हो सकता, शाश्वत नहीं हो सकता । वह हमेशा परिवर्तनशील होता है ।

दृष्टिकोण सर्वांग नहीं होता

किंतु एक बात और है । वह अकृत तत्त्व जिसे मनुष्य ने नहीं बनाया है, जिसका निर्माण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने नहीं किया है। सही अर्थ में धर्म की
वहीं उत्पन्न होती है। जिस धर्म को
से संबंध मानते हैं, उसमें बहुत कुछ
होगा, मनुष्य के जीवन में बहुत
होगा। और मनुष्य के किये हुए में
परिवर्तन नहीं होता है, वहां दुनिया के
का इतिहास भी नहीं होता है।
के नाम पर भी बहुत कठिनाइयां हैं।
परमात्मा, धर्म और ईश्वर के नाम पर भी
में कम कठिनाइयां उत्पन्न नहीं हुई हैं।
हुई हैं। धर्म ने शायद इतने अनर्थ दुनिया
है, जितने अधर्म के नाम पर शायद ही
का हमारा आग्रह असत्य की ओर चला
हम धर्म के नाम पर असत्य को पोषण
है। जो परिवर्तनशील थे उन्हें शाश्वत का
ले रहे।

हम अनंत धर्मों का प्रतिपादन कर
है? कभी नहीं कर सकते। हम जो कुछ
करते हैं, एक भूमिका से, एक दृष्टि से करते
एक दृष्टिकोण को आप एक दृष्टिकोण ही
उसे सर्वांग न मानें। हमारे जीवन में अगर
क्रांति लाएगी तो यही बात ला सकती
क्रांति की बात सुनते हैं तो हम क्रांति की
करने लग जाते हैं। हमें यह पता नहीं कि
कैसे होती है? और क्रांति के पीछे फिर
क्या चाहिए। कुछ लोग एक बात को
ले लेते हैं और उसके पीछे चलते जाते हैं।

धर्म में जाते हैं तो फिर यह चिंता नहीं रहती कि कमाने की आवश्यकता है या नहीं? पुरुषार्थ को भी भुला देते हैं। हमें स्याद्वाद की दृष्टि से सोचना चाहिए। हमने काल को ही महत्त्व नहीं दिया, क्षेत्र को भी महत्त्व दिया है। कर्म को भी महत्त्व दिया है, आत्मा और परमात्मा को भी महत्त्व दिया है। दूसरी ओर से चलें तो हमने सबको अस्वीकार किया है। काल का कोई महत्त्व नहीं, आत्मा का कोई महत्त्व नहीं, धर्म का भी कोई महत्त्व नहीं, अगर भूमिका-भेद से न सोचें तो। हम दोनों दृष्टियों से चलें, एक ओर स्वीकार की भाषा में चलें तो दूसरी ओर अस्वीकार की भाषा में चलें। हम मोक्ष की बात को भी अस्वीकार कर सकते हैं, कोई कठिनाई नहीं है।

आज आत्मा, परमात्मा और धर्म के अस्वीकार की बात क्यों आ रही है? आज के धार्मिक पर इतनी राख आ गयी है कि एक बार बिना क्रांति के उस राख को हटाया नहीं जा सकता। हमारे निकट के श्रावकों ने भी कभी-कभी हमें नास्तिक और साम्यवादी कहा है। एक दृष्टिकोण से इसे मैं शुभ मानता हूं परंतु परिपूर्ण नहीं मानता। अध्यात्म की भूमिका का तिरस्कार नहीं किया जा सकता। सूक्ष्म रहस्यों को कभी भी मिटाया और भुलाया नहीं जा सकता।

(प्रस्तुति : ललित गर्ग)

आवश्यकता कभी मुनाफे का सौदा नहीं करती। —बेंजामिन फ्रेंकलिन

जत्तरदायित्व से शिक्षा प्राप्त होती है। —बेंडेल फिलिप

उस कर्त्तव्य का पालन करो जो तुम्हारे निकटतम है। —गेटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आइए चलें जंगलों की ओर

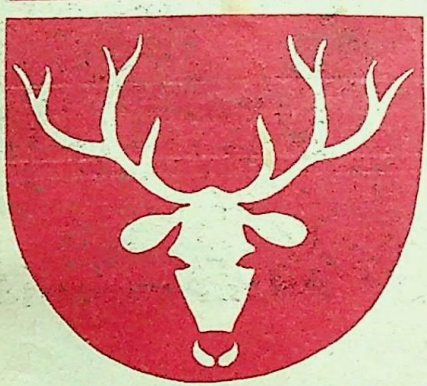

राह से भटका यूरोपीयन पक्षी

गरमी के मौसम में हिमालय की सैर के लिए आनेवाले कबूतर के आकार के और बाज के समान दिखनेवाले यूरोपीयन पक्षी को बेंगलोर से १७ कि. मी. दूर केलेवर संरक्षित वन क्षेत्र में कुछ उत्साही पक्षी निरीक्षकों द्वारा देखा गया । पक्षी निरीक्षक सर्वश्री जी.एस. आदित्य, जे. हेमंत और एम.एस. जयंत ने इसे गत वर्ष जून में पक्षी निरीक्षण अभियान के तहत जंगल में देखा था । स्पष्ट रूप से अपने मार्ग से भटके हुए इस यूरोपियन पक्षी ने दक्षिणी भारत के हिस्से से लेकर कर्नाटक के बेलगाम क्षेत्र का भ्रमण सितम्बर से मार्च-अप्रैल के बीच किया । यह पक्षी अभी तक के इतिहास में पहली बार बेंगलोर और दक्षिणी भारत में देखा गया ।

जंगल का छोटा चौकीदार : काकड़

जैसे ही जंगल में सांध्यकाल का धुंधलका लगता है, निगाहों से ओझल बाघ अपने शिकार की तलाश में चुपके से दबे पांव निकल पड़ता है । और अनायास ही हवा में अत्यंत तीखी शृंखलाबद्ध आवाज वलयों में गूंजने लगती है जिसे सुनकर ऐसा प्रतीत होता है मानो कोई कर्कश आवाज में भौंक रहा हो । एक कुत्ता और वह भी बिलकुल जंगल के मध्य में ? है न चौंकाने वाली बात । किंतु यह मात्र भ्रांत धारणा है। आवाज तो काकड़ की है, जो बाघ के आगमन की सूचनात्मक घोषणा कर रहा है ।

भारतीय उपमहाद्वीप में पाये जानेवाले अन्य हिरणों की अपेक्षा काकड़ सबसे छोटा है । हिरण की पांच जातियां और तकरीबन बीस उपजातियां भारत-मलाया, सुमात्रा और जावा, टापुओं, चीन और जापान के जंगलों और अर्द्ध आच्छादित सघन पर्वतीय क्षेत्रों में पायी जाती

काकड़ नाम से प्रसिद्ध इस भारतीय प्रजाति हिरण की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि अन्य स्तनपायियों की अपेक्षा वर्णसूत्र या क्रोमोसोम की मात्रा सर्वधिक कम होती है। में यह संख्या छह होती है व नर में सात ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वर्ष बहुत कम आये

भरतपुर स्थित केवलदेव राष्ट्रीय उद्यान में साइबेरिया से आनेवाले सारसों की संख्या में इस वर्ष काफी कमी आयी है । पर्यावरण के क्षेत्र की स्थिति को अच्छा नहीं माना जा रहा है । लाल चोंच, लंबी टांगों वाले ये सारस रूस की ओब नदी के पर्यटक हैं, जिनकी गिनती इस साल के मौसम में केवलदेव राष्ट्रीय उद्यान में की गयी थी । वे केवल सत्रह पाये गये । शेष की मार्ग में मृत्यु हो गयी या उन्होंने कहीं और जाने का निर्णय कर लिया ।

भरतपुर में गत कुछ वर्षों से इन पक्षियों के कम संख्या में आने का कारण अफगानिस्तान युद्ध का होना है । इस वर्ष सारसों की कम संख्या होने के कारण यह हो सकता है कि उन्होंने इस वर्ष अन्यत्र जाने का निश्चय कर लिया हो । १९८८ में इरान में सारस देखे गये थे, जो हो सकता है, भरतपुर आनेवाले सारसों की ही एक टुकड़ी हो ।

भरतपुर में संख्या कम होने का कारण क्या है निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता । गत पांच वर्षों से लगातार कम वर्षा के कारण केवलदेव के जल क्षेत्र बुरी तरह से सूख गये हैं । उद्यान के अधिकारियों का कहना है कि इस समस्या से निपटने के लिए इस क्षेत्र को कुछ समय के लिए चंबल या यमुना नदी-जैसे बड़े जल स्त्रोतों से जोड़ना होगा ।

संकट में है उआकारी का अस्तित्व

काले सिरवाला उआकारी, जिसकी आंखों में है भविष्य के प्रति भय ! उआकारी का अस्तित्व संकट में है । मनुष्य के संरक्षण में ऐसे केवल चार प्राणी बचे हैं !

बांस को उपचारित करने की सस्ती विधि

वैज्ञानिक और औद्योगिक शोध परिषद्, बंगलादेश द्वारा हाल ही में बांस के उपचार की एक प्रक्रिया विकसित की गयी है, जिसमें स्थानीय रूप से उपलब्ध रसायनों का उपयोग किया गया है ।

अब बांस का संरक्षण सस्ती और सामान्य प्रक्रिया को अपनाकर किया जा सकेगा । इस प्रक्रिया में ८ प्रतिशत कॉपर सल्फेट, ५ प्रतिशत सोडियम डाइक्रोमेट, १.५ प्रतिशत कास्टिक सोडा और ३.५ प्रतिशत ऐसेटिक एसिड का उपयोग होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूल के निशान

छोड़ जाते हैं पद-चिह्न
सभी
युवक, युवतियां
बच्चे और बूढ़े
वाहन और पशु

कहीं घिसटने के चिह्न हैं
कहीं लड़खड़ाने के
इन्हीं चिह्नों का अपना है
रचना-संसार
एक की पहचान
दूसरा मिटा देता है
कोई नहीं करता प्रतिरोध किसी से

हजारों वर्ष से
सभी छोड़ते आये हैं
अपने-अपने निशान
धूल की स्लेट उतार लेती है
सभी के पांव की इबारत
और निस्पंद सो जाता है
वर्तमान अतीत में
मूल में समा जाती है
प्रतिलिपि की परछाईं जैसे

● मनोहर वंद्योपाध्याय
२०३, सेक्टर ३७, फरीदाबाद (हरियाणा)

शोषण का लेप

मानव को अमानवीय
बनाने का श्रेय किसको है
हमारी सभ्यता और संस्कृति को
जिनमें अधर्म के संस्मरण हैं
लिखे हुए धर्म के नाम पर
जब कि सत्य तो यह है
कि इन कथाकारों को
धर्म की परिभाषा का भी
पूर्ण ज्ञान न था
धर्म केवल
शतरंज का खेल था उनके लिए
आज वह लेप बन गया है
शोषण की ही बातों को
सुदृढ़ करने का

● स्वराज्य
२९७, सिविल
सालवेशन, अम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौट आये बीच से ही

कहीं कोई है
हमें
हर क्षण गलत करता हुआ
हम
दूसरों पास आने को
अपने घर से
लौट आये बीच से ही
काँपते डर से

कौन था
वह अमंगल संकेत
मन में निराशा भरता हुआ

शांत मन से
रह सकें घर में
यही मुमकिन
कौंचता रहता
अदेखा प्रेत
हमको रात-दिन

और दिखता
रक्त में असहाय
कोई पंखधर मरता हुआ

● ओम प्रभाकर
७, किला रोड, भिंड (म.प्र.)

एक बूंद

मैं केवल एक बूंद हूं
कहां, किधर जाऊं कुछ होश नहीं
कौन स्वीकार करेगा
मैं केले के वृक्ष में गिरती, समुद्र में... सीप में...
सीप में गिरती तो अपना गौरव समझती
मैं सोच ही रही थी कि हवा का वेग आया
और अपने में समेट ले गया
मैं कुंठित-सी ठिठुरी-सी अस्तित्वहीन-सी
बालू में जा मिली
मैं दुःखी असहाय थी...
बालू... मंदिर के निर्माण
और मूर्ति की स्थापना में गयी
उस बालू में मैं हूं
उस ईश्वर की प्रतिमा में ईश्वर मेरे में हैं
अब मैं स्वयं को एक बूंद की संज्ञा हूं या पृथक
अस्तित्व की

● मोहिनी वाजपेयी
डी-५, मॉडल टाउन,
दिल्ली-११०००९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

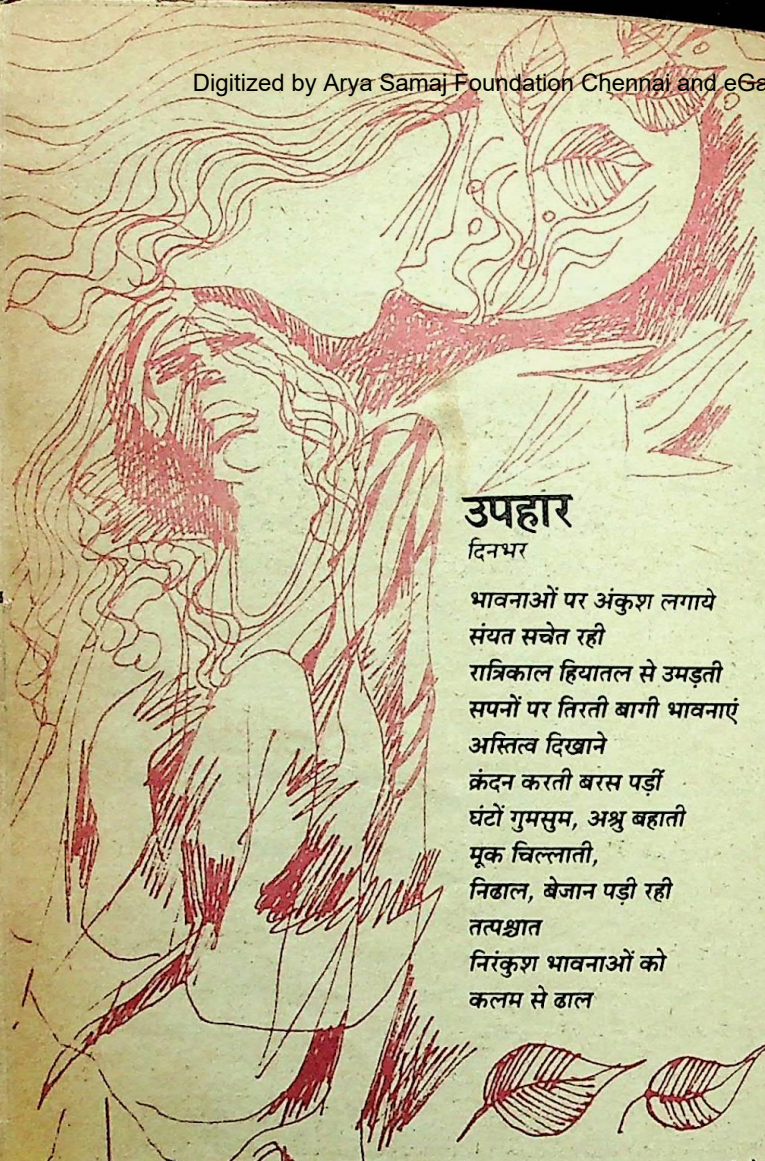

उपहार

दिनभर
भावनाओं पर अंकुश लगाये
संयत सचेत रही
रात्रिकाल हियातल से उमड़ती
सपनों पर तिरती बागी भावनाएं
अस्तित्व दिखाने
क्रंदन करती बरस पड़ीं
घंटों गुमसुम, अश्रु बहाती
मूक चिल्लाती,
निढाल, बेजान पड़ी रही
तत्पश्चात
निरंकुश भावनाओं को
कलम से ढाल
कागज पर उतार
काले अक्षरों में
कैद कर
स्वयं
निंदिया के आलिंगन में
आबद्ध हुई
आंख खुली
कागज पर सवार
बागी बंदियों की
कतार दर कतार
तेवर दिखाती
लड़ने को तैयार
करती मुझ पर वार
मैंने उन्हें
सावधानी से समेट
लिफाफे में लपेट
सादर किया समर्पित
अब करिये इन्हें स्वीकार
ताकि
पाठकों का सान्निध्य पा
वे भूलें मेरा द्वार

—शीला गुजराल
जी-१३ महारानी बाग
नयी दिल्ली—११००६५

प्यार

प्यार न वासना है न तृष्णा है
न है किसी चाहत का नाम
प्यार एक कशिश है
भावनाओं का महल है
जिसमें
एहसास की ईंटें हों
विश्वास की नींव हो
संवेदना का गारा हो
गरिमा का जाला हो
तब
प्यार की बेल
आकाश को छूती
पनपती है
यही सृजन है
और सृजन
सृष्टि का जन्मदाता है

—त्रिभुवन कौल
ब्लाक आई-फर्स्ट, क्वाटर—५२ ए,
लाजपत नगर, नयी दिल्ली—२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

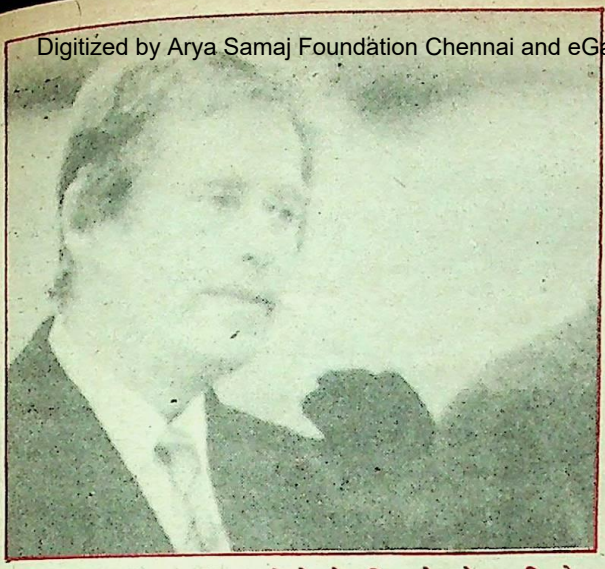

चेकोस्लोवाकिया के नये राष्ट्रपति हवेल

यादों के दायरे—१

लेखक जो अब राष्ट्रपति हैं !

● राजेन्द्र अवस्थी

नवम्बर का अंतिम सप्ताह । इस बार यात्रा अजीब रही । दशहरा के दिन मैं लेनिनग्राद में था और दीवाली के दिन प्रहा में । दीपावली यानी २९ नवम्बर । चेकोस्लोवाकिया के लिए यह विशेष दिन वैसे भी है— यहां का गणतंत्र दिवस ।

होटल याल्टा की बालकनी से मैं गणतंत्र की परेड और लाल झंडों से सजे उस समूचे माहौल को देख रहा हूं । होटल याल्टा वास्लाव स्के नामेसटनी स्ट्रीट के बीच में स्थित है । (यहां प्रकाशित चित्र में वह दिखायी दे रहा है) । दोनों और पत्थरों की आलीशान इमारतें और

धूपकाड़ियां जलाकर प्रहा के माल्टा होटल में दीपावली मनायी । वह उस देश का गणतंत्र दिवस था और गुस्ताव उसाक की सत्ता के विरोध में बुद्धिजीवी नारे लगा रहे थे । चेकोस्लोवाकिया को स्वतंत्रता इसी के बाद मिली और देश के शीर्षस्थ नाटककार हवेल राष्ट्रपति बने । प्रस्तुत हैं 'कादम्बिनी' संपादक के रोचक और अविस्मरणीय अनुभव ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

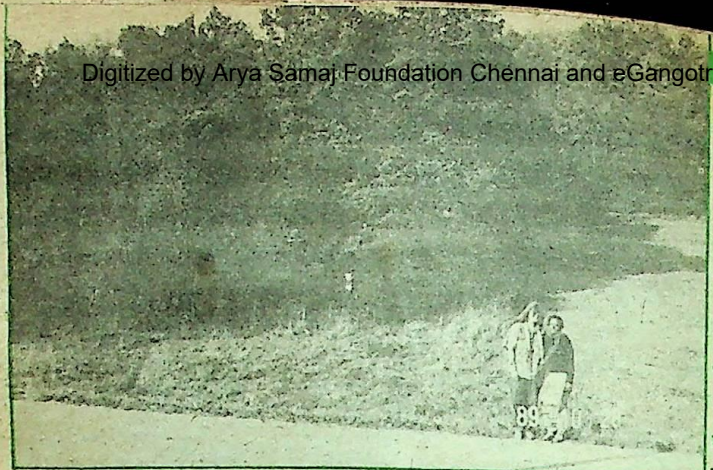

प्रहा के सुंदर घने जंगल मन मोह लेते हैं।

बीच में बना हुआ शानदार केंद्रीय पुस्तकालय। केंद्रीय पुस्तकालय की इमारत से दोनों ओर की इमारतें देखी जाएं तो पुस्तकालय मध्य में स्थित एक त्रिकोणात्मक प्रतीक-सा दिखायी देता है।

चेकवासी पढ़ते बहुत हैं। मेरा अपना ही अनुभव है— मेरे उपन्यास 'जंगल के फूल' का चेक में अनुवाद विख्यात भाषाविद और मेरे परम मित्र डॉ. ओदोलेन स्मेकल ने किया था। यह मेरे यहां आने के पूर्व ही प्रकाशित हो चुका था और उसकी एक लाख प्रतियां दो महीने में बिक गयीं। इसका प्रमाण तुरंत मिल गया। डॉ. स्मेकल ने प्रिंस चार्ल्स विश्वविद्यालय में मुझे आमंत्रित किया था। उनकी कक्षा में हिंदी और तमिल पढ़नेवाले छात्र थे। डॉ. स्मेकल चाहते थे कि प्रत्येक छात्र मेरे उपन्यास के अनुवाद को खरीदकर लाये और उन पर मेरे 'आटोग्राफ' प्राप्त करे। पता चला कि मुश्किल से चार छात्रों को चार प्रतियां बाजार में मिल सकी हैं।

दूसरा प्रमाण यह था कि मैं प्रहा के लेखक संघ में गया तो वहां अनेक लेखकों से भेंट हुई। मेरे लिए यह सुखद आश्चर्य का विषय था कि सभी लेखकों ने वह उपन्यास पढ़ा था। कुछ विख्यात लेखकों ने तो उसकी कहानी ही मुझे सुना दी। मुझे लगा काश ! ऐसा मेरे देश में हो सकता ! वहां लेखक केवल लेखक है और लेखन के बल पर ही अपनी जीविका अर्जित कर सकता है। केंद्रीय पुस्तकालय का ऐसे महत्त्वपूर्ण स्थान में बनाया जाना अपने आपमें पुस्तक-प्रेम का परिचायक है।

उस दिन हलकी-सी बूंदा-बांदी हो रही थी और तापमान ठंडा था। मैं याल्टा होटल के 'टेरेस' से गणतंत्र दिवस का नजारा देख रहा था। वह हमारे यहां की तरह तो नहीं होता, लेकिन चेक और स्लोवाकिया दो देश मिलकर एक राष्ट्र के रूप में बने इसकी प्रसन्नता कई तरह से व्यक्त की जाती है। सन १९९८ से यह दिवस मनाया जाता है।

थोड़ी देर में मैंने देखा कि हलचल बढ़ गयी है। पुलिस का जमघट गहरा गया है और एक ओर तो पुलिस ने लंबी कतार बनाकर आने-जाने में रोक लगा दी है। मैंने अपनी दुभाषिए से कहा, 'चलिए, देखें क्या हो रहा है !' हम वहां पहुंचे। देखा, बुद्धिजीवी राष्ट्रपति गुस्ताव उसाक के विरोध में नारे लगा रहे थे। नारों का अर्थ था— हमें आजादी चाहिए ?...साम्यवादी सत्ता को हम उखाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेंकेंगे, इत्यादि ।

नारे लगानेवालों में केवल उस देश के बुद्धिजीवी ही नहीं थे, कुछ विदेशी लेखक भी शामिल थे । चेकोस्लोवाकिया वास्तव में यूरोपीय हिस्से में पड़ता है, इसलिए स्वतंत्रता-प्रेमी लेखक वहां पहुंचे थे ।

नारों के बाद की स्थिति एकदम अलग थी । पुलिसवालों ने उन्हें रोका । एक टेबल पर रजिस्टर रख दिया गया था । उनसे कहा गया कि वे अपने विरोध स्वरूप इस रजिस्टर में हस्ताक्षर कर दें और पता लिख दें । इसके बाद छुट्टी । किसी को गिरफ़्तार नहीं किया गया । मैंने देखा नारे बहुत समय तक लगाये जाते रहे । मैं पंक्तिबद्ध पुलिस के पास तक पहुंचा तो उन्होंने समझा मैं भी विरोध करने के लिए आया हूं । उन्होंने इशारा किया कि मैं आगे चला जाऊं और अपने हस्ताक्षर कर दूं ।

स्थिति विचित्र थी । मैंने अपना पासपोर्ट दिखाया तो न जाने कितने पुलिसवालों के चेहरे खिल उठे ।

एक बोला, 'इंडी ?'

मैंने स्वीकारोक्ति में सिर हिला दिया । उसने ज़ोर से कहा 'जे हिंद' ।

बाद में मैंने अपनी दुभाषिए के माध्यम से पता लगाया तो उनका कहना था कि निश्चय ही वे हस्ताक्षर करने नहीं आये हैं । भारत स्वतंत्र देश है, हमें भी वही स्वतंत्रता चाहिए ।

स्वतंत्र होने के लिए चेकोस्लोवाकिया को बहुत संघर्ष नहीं करना पड़ा, कम-से-कम रोमानिया और अन्य देशों की तरह वहां वैसा कुछ नहीं हुआ । थोड़े ही दिनों में गुस्ताव हवेल को राष्ट्रपति पद छोड़ना पड़ा ।

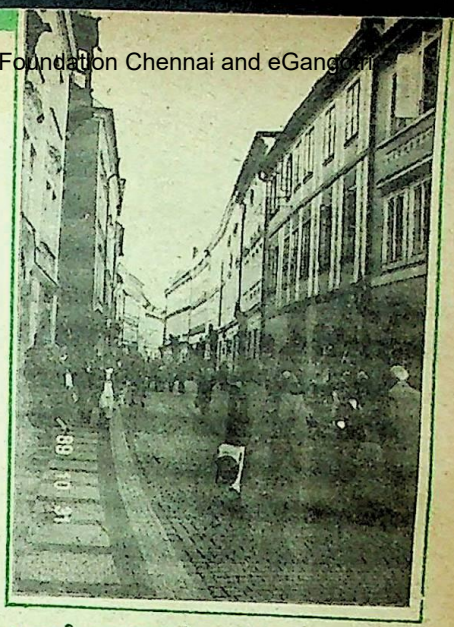

प्रहा की एक सड़क जो पत्थरों से बनी है । प्रतिदिन सुबह प्रहा की सड़कें धोयीं जाती हैं ।

चेकवासी पढ़ते बहुत हैं । ... वहां लेखक केवल लेखक हैं और लेखन के बल पर अपनी जीविका अर्जित कर सकता है ।

मेरे लिए महत्त्वपूर्ण बात यह नहीं है कि गुस्ताव ने राष्ट्रपति पद छोड़ दिया, महत्त्वपूर्ण है कि नये राष्ट्रपति बने— वासलाव हवेल ! हवेल चेक भाषा के श्रेष्ठ नाटककार हैं । उनके नाटक देशभर में खेले जाते हैं । इतना ही नहीं फ्रांस, जरमनी और अन्य यूरोपीय देशों में हवेल के नाटकों के अनुवाद हुए हैं और एक नाटककार के रूप में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है । शायद विश्व का यह पहला देश है जहां का राष्ट्रपति इतना विख्यात लेखक और बुद्धिजीवी हो ।

यह एक संयोग ही है कि अपनी पिछली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिंस चार्ल्स विश्वविद्यालय में : राजा की प्रस्तर प्रतिमा के सामने ओदोलेन स्मेकल और लेखक

यात्रा में (मैं चेकोस्लोवाकिया कई बार जा चुका हूं) मुझे लेखक वासलाव हवेल से मिलने का अवसर मिला था । उनका मन साम्यवाद की पराधीनता से खलबला रहा था और विश्वास था कि एक दिन उनका देश साम्यवाद से मुक्त होकर स्वतंत्र होगा । हवेल का सपना साकार हुआ और विश्वभर के बुद्धिजीवियों के बीच एक संदेश छोड़ गया— कब सारी दुनिया में सत्ता बुद्धिजीवियों के हाथ आएगी !

आज का चेक निवासी एकदम स्वतंत्र है । स्वतंत्र होने का जो व्रत उसने लिया था, पूरा हुआ । कुछ दिन पहले ही मुझे डॉ. स्मेकल का पत्र मिला है—

'स्वतंत्र प्रहा से नववर्ष की शुभकामनाएं । श्री फ्रूदेक के हाथ मुझे आपके दिये हुए दोनों 'ओम' और 'हरिओम' प्राप्त हुए हैं । अनेकानेक धन्यवाद । मेरा दूरदर्शन का भारत कार्यक्रम बनकर तैयार हुआ है, अब आखिरकार संतुष्ट हूं । तब ठीक है । जब आजादी मिली तब सब-कुछ ठीक है । सब-कुछ मिला है । हम प्रसन्नतापूर्वक काम करने लगे हैं । आगे क्या होगा ?'

डॉ. स्मेकल का पूरा पत्र उनकी भावनात्मक प्रसन्नता का द्योतक है । मैं यहां बैठकर अंदाज लगा सकता हूं कि हर चेकवासी आजादी पाकर कितना खुश होगा । मैं अपने को भी—सौभाग्यशाली मानता हूं कि एक ऐतिहासिक अवसर पर मैं प्रहा में था । □

गणतंत्र दिवस चेकवासियों के लिए, मेरे लिए दीपावली का पावनपर्व । पहली बार इस अवसर पर मैं भारत से बाहर रहा । निरंतर भारत की याद आती रही । याल्टा होटल के कमरे से मैं पूरे दिल्ली शहर, अपने महल्ले और उन सारे मित्रों के चेहरे उभरते हुए देखता रहा, जिनके साथ हम दीपावली मनाते रहे हैं और रात्रिभर ताश खेलते रहे हैं । मन को शांत रखने के लिए मैंने उस शाम मित्र डॉ. स्मेकल, मेरी मित्र लेंका डुफकोवा और भारत से गयी शारदा यादव के साथ ढेर-से धूपकाड़ियां जलाकर दीवाली मनायी । धूपकाड़ियां मैं भारत से ले गया था । बाद में एक बड़े होटल में मैंने सबको

तारकोल की छोटी सड़कें और मीलों तक फैला जंगल जैसे अपने सदाबहार यौवन और परिधान से हथेलियों में लेकर खुशियां बांट रहा है । सब कुछ शांत, एकांत, निर्भय और आकर्षक !

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

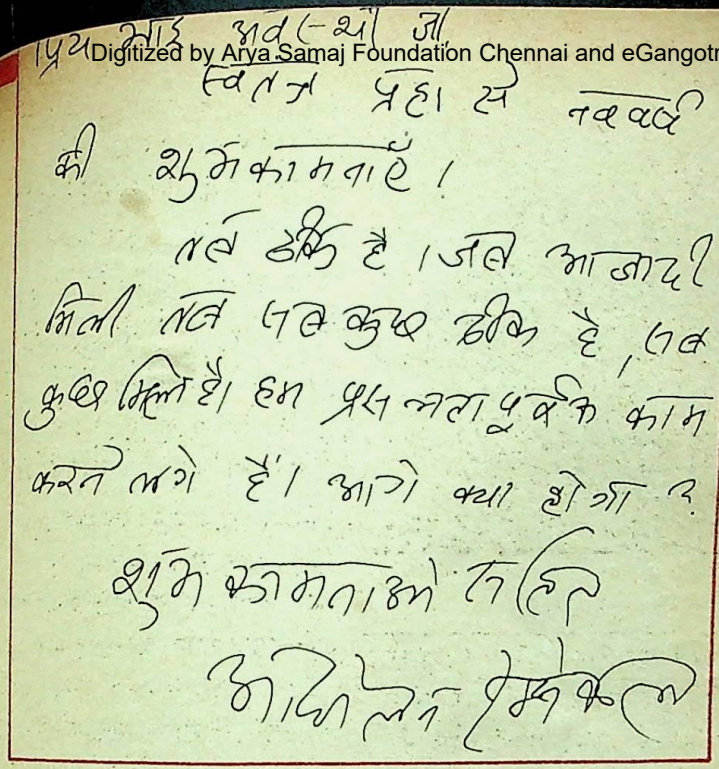

प्रिय भाई अवस्थी जी,
स्वतंत्र प्रहा से नववर्ष
की शुभकामनाएँ।
तब ठीक है। जब आजादी
मिली तब सब कुछ ठीक है, सब
कुछ मिला है। हम प्रसन्नतापूर्वक काम
करने लगे हैं। आगे क्या होगा?
शुभ कामनाओं सहित
आयोलन ह्मेकल

प्रो. स्मेकल का पत्र

रात्रि का भोज दिया और अपने अकेलेपन के अहसास को मिटाने का प्रयत्न किया। सचमुच अपने देश से दूर रहकर ही महत्त्व का पता चलता है। एक बार मैं १५ अगस्त के दिन ओसलो में था। तब बार-बार मुझे लालकिला और तिरंगा ध्वज दिखायी दे रहा था। पिछली २६ जनवरी को मैं मारीशस में था, तब बहुत सुबह मैं भारतीय दूतावास चला गया और राष्ट्रपति के अभिभाषण तथा भारतीय समूह के बीच बहुत देर तक अत्यंत उत्साह के साथ रहा। भारत में जब रहता हूं तो विजय चौक या राजपथ जाने का मन नहीं होता, भीड़ से भय लगता है और आराम से दूरदर्शन पर ही सब-कुछ देख लेते हैं। अपनी धरती का सुख अपनी धरती से दूर रहकर ही मिलता है।

□

प्रहा में अकेलापन कतई नहीं रहा। दूसरे दिन लेंका और शारदा के साथ मैं कारोस्तेन चला गया। कारोस्तेन प्रहा से ४०-५० किलोमीटर दूर है। उस दिन धूप निकल आयी थी। ऐसी धूप निकले तो चेकवासी पागल होकर घर से बाहर धूप में नहाने लगते हैं। इसलिए कारोस्तेन में खासी भीड़ थी।

कारोस्तेन का ऐतिहासिक महत्त्व है। यह पहले प्रहा की राजधानी था। चार्ल्स यहां के राजा थे और चार्ल्स-द-फोर्थ का बनवाया किला अब भी आकर्षण का केंद्र है। इसी किले में प्रहा के महाराजा रहते थे। कहा जाता है कि किले में महिलाओं का प्रवेश— निषिद्ध है।

हमने किला देखा। उसके आलीशान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपादान अब भी इस बात के गवाह हैं कि चार्ल्स के समय यह कितना भव्य रहा होगा ।

किले से लौटकर लेंका अपनी कार में आसपास के घने वनों में ले गयी । लाल और हरे रंग के परिधानों से सज्जित ऐसा नैसर्गिक वातावरण कहां मिलेगा । तारकोल की छोटी सड़कें और मीलों तक फैला जंगल जैसे अपने सदाबहार यौवन और परिधान से हथेलियों में लेकर खुशियां बांट रहा है । सब-कुछ शांत, एकांत, निर्भय और आकर्षक । फिर खिलती हुई धूप और धूप के पहले हलकी फुहार से नहाया हुआ वन । शांति का यही सौभाग्यशाली वन-प्रांतर होता है ।

मनभर हमने जंगलों को देखा । उनकी तसवीरें लीं और फिर एक झील के किनारे आराम से जा बैठे । तब कुछ भी याद नहीं आ रहा था, कोई सोच मन में नहीं था, समूचे सौंदर्य को पी लेने की बलवती इच्छा थी । इसी झील के किनारे हमने भोजन किया; भोजन जो हम साथ लाये थे । इस भोजन का अपना स्वाद था ।

लगभग पूरा दिन हमने यहीं व्यतीत किया । शाम लेंका अपने घर ले गयी । उसका घर प्रहा शहर के बाहर एक गांव में था । गांव का नाम—ब्रेंडीसेक । कहने के लिए गांव, हमारे शहरों से बेहतर । खूबसूरत ईंटों और पत्थरों के घर । चारों ओर बगीचा और सुंदर-सपाट सड़कें । लेंका का तीन मंजिला मकान—सबसे नीचे तल पर उसकी मां रहती है, दूसरे तल पर उसकी छोटी बहन और तीसरे तल पर वह स्वयं । संयुक्त परिवार होते हुए भी तीनों तलों का एक-दूसरे में दखल नहीं है ।

लेंका के घर पहुंचे तो उसकी मां और बहन ने हमारा अभिवादन किया । बहन उस दिन बीमार थी, तब भी वह हमारे साथ रही । भोजन मां ने बनाया था । हम सबने एक साथ भोजन किया— अत्यंत स्वादिष्ट और चेक-व्यंजनों का शब्दकोष । लेंका के यहां लगभग आधी रात हो गयी । बाहर बेहद कुहरा था और चढ़ाईदार सरपीली सड़क । लेंका ऐसे मौसम में भी होटल याल्टा तक आयी और हमें वहां छोड़कर अकेले वापस चली गयी । उसकी दिलेरी की दाद कितनी दी जाए, शायद उस मौसम में मैं भी अकेला वापस नहीं आता ।

(अगले अंक में—अविवाहित मां नया शब्द नहीं)

सामने के पृष्ठ पर प्रकाशित चित्रों का परिचय

१ **कारोस्तेन—चार्ल्स द् फोर्थ का किला,** प्राहा से चालीस किलोमीटर दूर । पहले यही **चेकोस्लोवाकिया की राजधानी था ।**

२ **प्रिंस चार्ल्स विश्वविद्यालय के भाषा-विभाग में हिंदी पढ़नेवालों के बीच विभाग के अध्यक्ष प्रो. ओदेलेन स्मेकल और लेखक**

३ **२८ नवम्बर १९८९ : चेकोस्लोवाकिया का गणतंत्र दिवस । बुद्धिजीवियों ने पहली बार प्रदर्शन कर अंततः आजादी पा ली । सामने है, प्राहा का केंद्रीय पुस्तकालय । और सड़क है वास्लोव स्केनामेसटीनी स्ट्रीट, इसी सड़क पर है याल्टा होटल, जहां से लेखक ने आजादी के दृश्य देखे ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

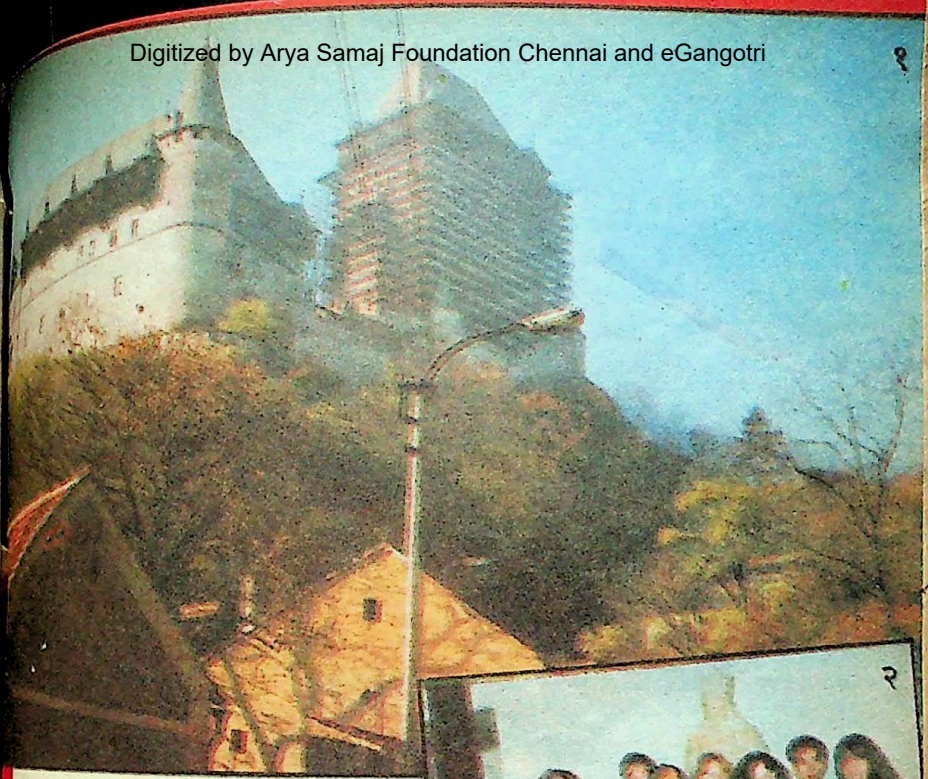

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

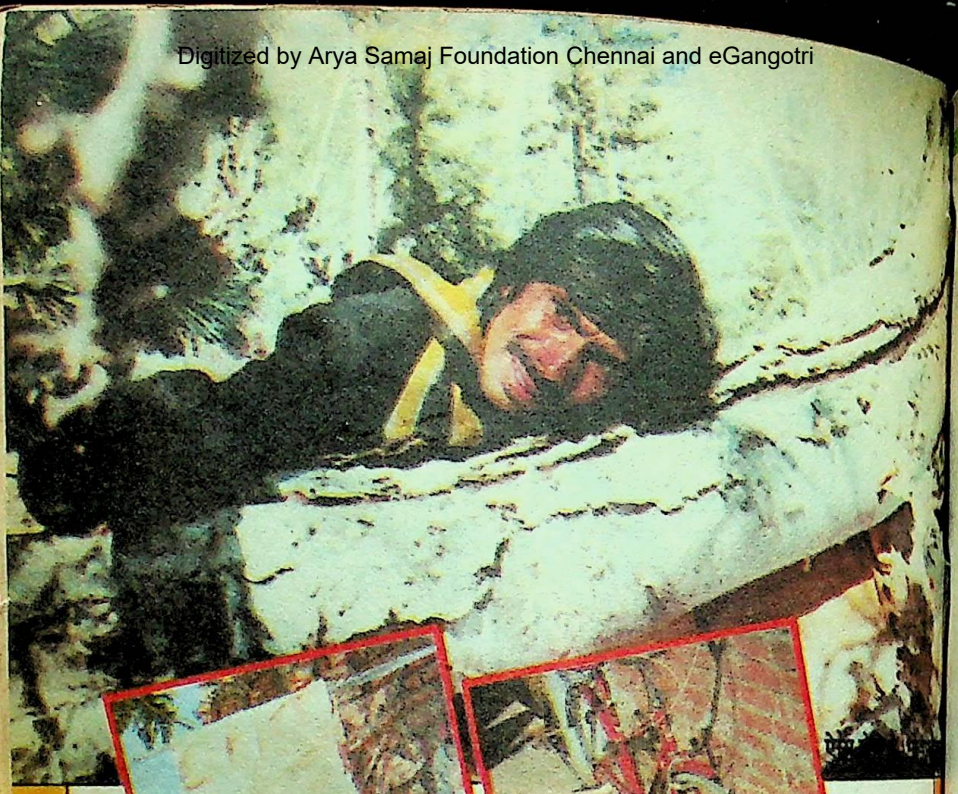

अलगनी पर टंगा भोजपत्र ! जलेगा या छत पर लगेगा

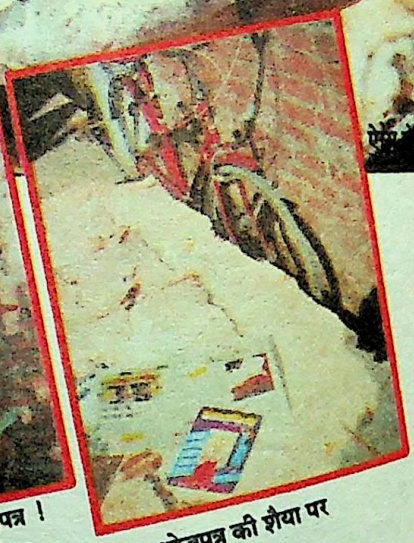

भोजपत्र की शैया पर

चीड़ और देवदारों का साम्राज्य जहां समाप्त होता है, वहीं से प्रायः भोज-पत्रों की दुनिया प्रारंभ होती है ।

भोज-पत्र की कहानी कोई पुराने युग की भूली-बिसरी कहानी नहीं है । आज भी हिमालय में भोज-पत्र के जंगल खड़े हैं । आज भी उनकी छाल मनुष्य उपयोग में ला रहा है ।

दिसंबर, १९८९ में भारी हिमपात होने से पहले यह लेखक हिमाचल प्रदेश के जिला किन्नौर के दुर्गम पहाड़ों की चोटियों के आसपास फैले कुछ भोजपत्रीय इलाकों में घूमकर आया, तो भोज-पत्र की आज की दुनिया की कहानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब भोजपत्रों से चूल्हे जलाए जाते हैं !

● सैन्नी अशेष

सब को बताने का मन हुआ ।

कहा जाता है कि भोज-पत्र का उपयोग प्राचीनकाल में कागज के रूप में किया जाता था। ऋषि-मुनि अपनी रचनाओं और अपने अग्रजों के उपदेशों के प्रकाशन व सुरक्षा के लिए भोज-पत्र की कागजनुमा छाल का प्रयोग करते थे । लेकिन भोज-पत्रों के जंगलों के निकट बसे हुए लोगों का कहना है कि कागज के तौर पर भोज-पत्र का इस्तेमाल मुट्ठीभर लोग ही करते थे । उसका अधिकांश इस्तेमाल तो स्थानीय निवासी घर की छतों, बिछौनों, पकवान के आवरणों और चूल्हों को सुलगाने में ही करते आये हैं । छतों पर स्लेटों के नीचे, लकड़ी या मिट्टी के तलों में रखकर लोग अपने कमरों में तीखी हवा को आने से रोकते हैं ।

आकार भोज-पत्र का

भोज-पत्र का एक औसत 'पृष्ठ' एक बड़े समाचार पत्र के पूरे फैलाव जितना होता है । अगर सावधानी से किसी मोटे पेड़ की छाल उतारी जा सके, तो भोज-पत्र का आकार एक 'डबल बैड' पर आसानी से बिछाया जा सकता है ।

'भोज-पत्र' का प्रथम व शाब्दिक अभिप्राय ऐसे पत्ते या छाल से है जिस पर भोजन रखा व खाया जा सके । वास्तव में प्राचीन काल में जिन थोड़े-से लोगों ने भोज-पत्र का प्रयोग लिखने के लिए प्रारंभ किया था, वे भी दुर्गम इलाकों में इसका इस्तेमाल भोजन करने और भोजन

भोजपत्र : जिनमें कभी सुरक्षित था प्राचीन ऋषि-मुनियों का साहित्य । आज प्रदूषण के कारण इसके पेड़ों का आकार छोटा होता जा रहा है । कागज की सुविधा के कारण भोजपत्रों का उपयोग चूल्हे में आग जलाने या छतों पर बिछाने के लिए किया जाने लगा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लपेटकर रखने के लिए ही ज्यादा करते थे । इसमें पकवान सुरक्षित, साफ और गरम रहते ही हैं, यही नहीं, एक बड़ा परिवार चाहे तो इसे बिछाकर आराम से भोजन कर सकता है ।

किसी युग में भोज-पत्र अनेक ऊंचे क्षेत्रों के लोगों में ओढ़ने-बिछाने के लिए बहुत प्रयुक्त होता था । भोज-पत्र की छाल लपेटकर एक आदमी न केवल छिप सकता है, बल्कि कपड़ों या बिछौनों के अभाव में उसे अनेक प्रकार से प्रयोग में ला सकता है ।

देखने में बादामी, सुनहरा और भूरा भोज-पत्र मात्र एक परत नहीं होता, ध्यान से देखने पर एक 'कागज' में दसियों परतें नजर आती हैं । इन परतों को अलग करके अनेक कागज बन जाते हैं । इन्हें काट-छांटकर अपने मनपसंद आकार तैयार किये जा सकते हैं । इससे सजावटी वस्तुएं उसी प्रकार सरलता से बनायी जा सकती हैं, जिस प्रकार कागज से ।

भोज-पत्र का औसत पेड़ आज पीपल के औसत पेड़ जितना दिखायी देता है । पुराने ठूंठों को देखकर पता चलता है कि इस पेड़ का आकार अब छोटा हो गया है । कारण यह है कि मनुष्य ज्यों-ज्यों चीड़, देवदारों के साम्राज्य में हस्तक्षेप करता जा रहा है, त्यों-त्यों भोज-पत्र का मजबूत आधार कमजोर हो रहा है । प्रदूषण तो प्रमुख कारण है ही । हरियाली के निकट निरंतर बढ़ रही मशीनें सभी प्रकार के पेड़ों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से चोट पहुंचा रही हैं ।

यदि हिमालय के भोजपत्रीय क्षेत्रों में बढ़ रहा प्रदूषण और जंगलों का कटाव बढ़ता ही गया, तो एक दिन लोग कहेंगे कि भोज-पत्र सोमलता की ही तरह कोई काल्पनिक कहानी है ।

—साहित्य निदेश,
पांवटा साहिब (हिमाचल प्रदेश)

शहर को बीवर ने बचाया

उत्तरी अमरीका के ग्रांट सिटी, मिसौरी में जब सन १९८७ में सूखा पड़ा तो त्रस्त निवासियों को बीवर जंतु ने बचाया । बीवर उत्तरी अमरीका में पाया जानेवाला एक स्तनधारी जीव है । ऊद से मिलता-जुलता यह जीव जलचर है और नदियों-झीलों में बांध बनाकर अपना घर बसाता है । बीवर को स्थानीय कृषक लोग पसंद नहीं करते क्योंकि, इनके बांधों के कारण कृषि योग्य भूमि जलमग्न हो जाती हैं । किंतु ग्रांट सिटी के निवासियों को इसी पीड़क माने जानेवाले जीव ने बचाया ।

जब छोटी नदियां सूखे के कारण बहना बंद हो गयीं तो सारे क्षेत्र के बीवर ग्रांट सिटी से १.६ किलोमीटर पूर्व बहनेवाली ग्रांट नदी पर आ गये और उस पर बांध बना डाले । इन बांधों के कारण नदी का जलस्तर ऊंचा बना रहा और नदी के पास के इलाके में भूमिगत जलस्तर भी बहुत नहीं गिरा । इससे कुओं में पानी बना रहा और सूखे के बावजूद नगरवासियों को पानी की कमी नहीं हुई, जबकि अन्य शहरों को प्यासे नागरिकों को राहत पहुंचाने के लिए बाहर से पानी मंगाना पड़ा ।

: कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

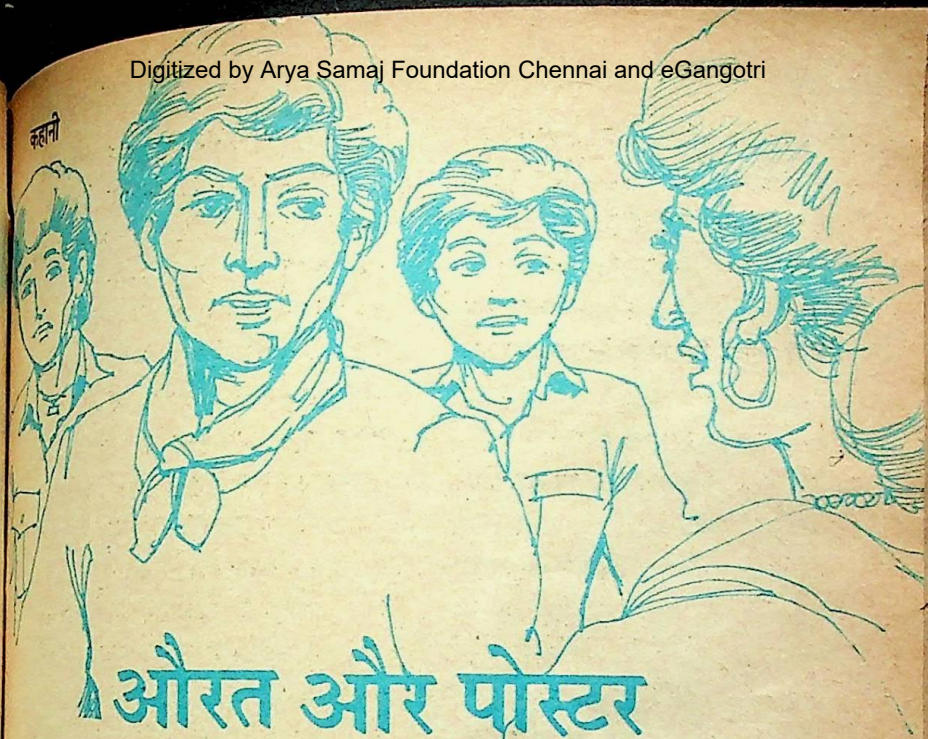

औरत और पोस्टर

● कमल कुमार

वह दफ़्तर से बाहर निकली तो रात-सी घिर आयी थी। सरदी की शामें छोटी होती हैं। दिन रहते ही अंधेरा छा जाता है। उसने घड़ी देखी, समय ज्यादा नहीं हुआ था। वह स्कूटर लेगी और दस मिनट में घर पहुंच जाएगी।

वह काफी देर तक स्कूटर के इंतजार में खड़ी रही पर कहीं कोई स्कूटर आता दिखायी नहीं दे रहा था।

"मैडम, आप ! गयी नहीं अभी ?" बाबूराम था, दफ़्तर का चपरासी।

"स्कूटर का इंतजार कर रही थी। जरा देखो, चौराहे तक जाकर, वहां जरूर मिल जाएगा।"

"आज तो स्कूटर-टैक्सीवालों की हड़ताल है।"

"ओह !" उसे याद आया था।

"आप कहो तो ऊपर चलकर दफ़्तर खुलवा दूं। आप साहब को फोन कर लें।" उसने उसका असमंजस भांप लिया था।

इस वक्त अमर को आने के लिए कहना अटपटा लगा था। "पास में ही तो रहती हूं। बस से चली जाऊंगी। तुम जाओ।"

वह साइकिल के पैडल मारता निकल गया था।

वह बस स्टाप की तरफ चल पड़ी थी। दक्षिणी दिल्ली की पॉश कॉलोनी थी। भीड़-भड़ाका नहीं था। सड़कें चौड़ी और निर्जन थीं। यूं, कारें, दोपहिए, बसें, ट्रक वगैरा आ-जा रहे थे। वह मोड़ घूमी और मुख्य सड़क पर आ गयी थी। सामने सिनेमा हॉल था। शाम का शो शुरू हो चुका था, पर बाहर अभी भी भीड़ थी। कोई फिल्म थी, जो पिछले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई हफ़्तों से खूब भीड़ ले रही थी । 'हाउस-फुल' की तख्ती टंगी रहती थी । इस वक्त भी फिल्म के बेहूदे पोस्टरों को देखते झुंड के झुंड लोग खड़े थे । ब्लैक के टिकट लेने और देनेवाले आसपास की दुकानों या इधर-उधर कोनों में मंडरा रहे थे । खाकी वरदी में कुछ आकृतियां बेखबर-सी सब अनदेखा करतीं इधर-उधर देखती खड़ी थीं ।

सिनेमा के सामने से सड़क बायीं ओर घूम गयी थी । थोड़ा-सा सीधे जाकर बस स्टॉप है । वहां से वह बस लेगी और घर चली जाएगी । चौराहे की भीड़-भाड़ से यह सड़क एकदम अछूती थी । वाहनों की आवाजाई भी कम थी । पैदल चलनेवाला कोई इक्का-दुक्का ही था ।

उसे लगा उसके पीछे कोई है, जो थोड़ी दूरी रखकर उसके साथ-साथ चल रहा है । सिनेमा के सामने से मोड़ मुड़ते ही उसे यह आभास हुआ था । सड़क पर रोशनी कम थी । कोई आसपास आता-जाता भी नजर नहीं आ रहा था । एक सिहरन-सी उसके भीतर दौड़ी थी । उसने साड़ी के पल्लू को कसकर कंधों के गिर्द लपेट लिया था और अपना पर्स कंधे से उतारकर पल्लू के नीचे बगल में कसकर दबा लिया था । घूमकर पीछे देखने की इच्छा हो रही थी, पर बुद्धिमानी इसी में थी कि वह इस स्थिति से अनजान दीखते हुए ही पहले से अधिक सचेत होकर चले । अब उसे साफ लग रहा था कि उसके पीछे एक जोड़ी नहीं, कई जोड़ी पैर हैं, जो उसका पीछा कर रहे हैं । उसकी चाल धीमी होते ही वे रुक जाते और चाल तेज होते ही गति तेज कर लेते । उसे धीमे-धीमे की गयी बातों की फुसफुसाहट भी सुनायी पड़ रही थी ।

रोज ही अपने आसपास हिंसा की अनेक घटनाएं देखते-सुनते और पढ़ते रहने से, उसे लगा था जैसे वह किसी जाल में फंस गयी है । फिल्मों में प्रदर्शित और पोस्टरों में उजागर हिंसा और अश्लीलता के अनेकों दृश्य उसके जहन में तैरने लगे । दिनों-दिन बढ़ता जाता हिंसा का आकार । हिंसा,जो जिंदगी की लय के साथ जुड़ गयी है, देश के नक्शे पर फैल गयी है । हिंसा,जो धीमे जहर की तरह फिल्मों में परोसी जा रही है । उस झुटपुट अंधेरे में चाकू, छुरियां, तमंचे, रिवाल्वर लिए अनेकों लोग अपने करीब आते और उसे घेरते प्रतीत होने लगे । एकाएक उसने अपनी चाल तेज कर दी । वह जल्दी से जल्दी सड़क पार कर जाना चाहती थी । सड़क निर्जन थी । मदद के लिए चिल्लाएगी भी तो कौन सुनेगा ? लेकिन, सुनकर भी क्या कोई उसकी मदद को आएगा ? उसे विचार आया कि वह अपनी घड़ी, कान के बुंदे, गले की चैन वगैरा निकालकर पर्स में डाल ले । पर फिर सोचा, कौन जाने पीछेवाले की मंशा क्या है । इन चीजों का महत्त्व इस वक्त है ही कितना ? असली डर तो उसे उस भदेस स्थिति का था, जिसका ख्याल ठंडी सिहरन बनकर उसकी हड्डियों में घुसता जान पड़ा था । उसने अपनी गति और तेज कर दी थी, तभी पीछे से कोई तेजी से आया था और उससे जानबूझकर टकराया । एक गंदी फब्ती कसी और आगे निकल गया । भय से उसकी चीख निकल गयी ।

उसे अपने पीछे हंसी सुनायी दी थी । टकरानेवाला आदमी क्या पीछेवालों में से ही एक था या कोई दूसरा ? कुछ कहा नहीं जा

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता था। पीछे चल रहे पैरों की आवाजें अब और पास आ गयी थीं। उसने देखा सड़क के किनारे मोड़ पर ढिबरी जलाकर मूंगफली के ढेर के सामने एक व्यक्ति बैठा था। वह लगभग दौड़कर उसके पास पहुंची थी। मूंगफलीवाला उसे खरीदार समझ कर उचका था। पूछ रहा था कितनी मूंगफली दे। उसने अनिच्छा से एक रुपये का सिक्का उसके सामने रख दिया था और मूंगफली का लिफाफा बिना पकड़े ही वह आगे बढ़ गयी थी। उसके वहां रुकते ही तीन आकृतियां सड़क के किनारे बिजली के खंभे की ओट में हो गयी थीं, ताकि रोशनी उनके चेहरों पर न पड़े। जैसे ही वह आगे बढ़ी उसके पीठ मोड़ते ही वे फिर उसके साथ हो लिए। बस स्टॉप पर कोई नहीं था। खंभे की बत्ती मद्धम उजाला फेंक रही थी। बस या कोई सवारी आती ही होगी, उसने अपने को धीरज बंधाया था। तभी एक साइकिल उसके करीब आकर रुकी। वह डर से सुन्न हो गयी थी।

"यह स्टाप कैंसल हो गया है। आगे जइए, उस तरफ से मिलेगी बस।"

अब तक वह संभल गयी थी, "उस तरफ कहां?"

"आगे जाकर चौराहे से दायें।"

"शुक्रिया"। वह चला गया था। उसने सोचा, हो सकता है वह उन्हीं में से एक हो, जो उसका पीछा कर रहे हैं। इसमें उसकी कोई चाल हो। वह असमंजस में खड़ी सोच ही रही थी क्योंकि, स्टाप पर कैंसल किए जाने का कोई चिह्न नहीं था। लेकिन बस नहीं ही आ-जा रही थी। अब तक जो भी बसें सामने से आती दिखायी दी थीं, वे मोड़ से घूमकर साथवाली

सड़क पर हो लेती थीं। यहां खड़े रहना व्यर्थ है। उसने सोचा और आगे बढ़ी थी। इसके सिवा इस वक्त दूसरा रास्ता ही क्या था। एक निरीह भाव से घिरी वह सोच रही थी कि अभी कुछ समय पहले दफ़्तर में पूरी विद्वता और विश्वास के साथ वह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर बहस कर रही थी। उसके निर्णय को पूरा विद्वत समाज सम्मान दे रहा था। अब वह इतनी असहाय क्यों ? उसकी चिंता का सरोकार क्या आज की खुरदरी फिल्मी व्यवस्था की नब्ज को नहीं छूता ? हिंसा के उस आतंक के बीच और उसके आसपास है, जिसे हम सभी और विशेषकर औरत भोगने के लिए अभिशप्त है।

वह चौराहे से दायीं ओर मुड़ी तो देखा सड़क के किनारे ने निकल कर तीन छोकरे-से सड़क के दूसरी तरफ आ गये हैं। क्या अब तक यही उसका पीछा कर रहे थे। इतने बित्ते-भर के लड़के। अब वे तीनों उसके साथ-साथ कुछ फासले पर दायें-बायें चल रहे थे। कभी वे उसकी तरफ देखकर संकेत करते, फिल्मी गीतों की टूटी पंक्तियां गाते, फिल्मी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नायक-नायिकाओं के नाम लेते— फिल्मी संवाद दोहराते, उसके साथ-साथ चलने लगे थे। उसने ध्यान दिया ये वही छोकरे थे, जो सिनेमा हॉल के बाहर पोस्टर देखते खड़े थे। उसे लगा कि वह सिनेमा हॉल के बाहर लगे किसी अश्लील और उत्तेजक पोस्टर में तबदील हो गयी है। यह पोस्टर सुबह के शो के किसी अंगरेजी या मलयाली वयस्क फिल्म का पोस्टर है। जिसमें उत्तेजक सूत्र-वाक्यों के साथ निर्वस्त्र की सीमा तक स्त्री शरीर की नुमाइश है। झुंड के झुंड छोटे-बड़े, हर वर्ग के लड़के, नारी अंग-प्रत्यंगों को आंखों से पलोसते लंबी कतारों में खड़े हैं और खिलखिलाकर हंसते, तालियां पीटते और सीटियां बजाते खड़े हैं। तभी वहां किसी नारी संस्था की औरतों ने आकर पोस्टर पर तारकोल पोत दिया। तारकोल के उस घने आवरण में सुरक्षित वह नीचे उतर आयी है। सोच रही है कि ये तारकोल इन फिल्मों के निर्माता, वितरक और बनिया वृत्तिवाली सरकार के मुंह पर पोतना चाहिए, जिन्होंने सिनेमा के अर्थतंत्र को हिंसा और सेक्स के साथ जोड़कर अपने लिए काला धन कमाने का जरिया बनाया और नयी पीढ़ियों की धमनियों में इस धीमे जहर को घोल दिया। देश के राजनीतिक, सामाजिक परिदृश्य में घुलती हिंसा की बदबू और मध्यम वर्ग के पिटते युवक की आंखों के सपनों की पूरी क्षतिपूर्ति करती चमचमाती फिल्मी दुनिया का कड़वा यथार्थ एक तीखा सवाल बनकर खड़ा है।

वे तीनों छोकरे अब बहुत ही कम फासले पर उसके साथ-साथ चलने लगे थे। एक ने जेब से बीड़ी निकाली थी और दूसरे ने माचिस। वे बीड़ी सुलगाकर बारी-बारी कश खींच रहे थे और झूलते-लटकते फबतियां कसते उसके साथ-साथ चले आ रहे थे। माचिस की रोशनी में उसने साफ देखा था तेरह-चौदहों साल के दो ठिगने-से लड़के थे और तीसरा लंबा, तगड़ा था। वे कभी चलते-चलते रुक जाते फिर तेज कदमों से या भागकर उसके साथ-साथ चलने लगते। वे रुके थे। अब वे तीनों जोर-जोर-से हंस रहे थे। उसकी तरफ देखकर इशारा कर रहे थे। अचानक उसके भीतर गुस्से का हड़कंप-सा मच गया। डर कहीं काफूर हो गया। उसके दिमाग में जंगली संगीत-सा गूंजने लगा। उसे लगा पलभर में वह आगे बढ़ी है और उसने झपट्टे से उन्हें दबोच लिया है। तड़ातड़ उन्हें तमाचे जड़ती गयी है। उन्हें प्रतिरोध का मौका दिये बिना उन्हें पीटती गयी है। पीटते-पीटते उसे लगा पिटनेवाला लड़का उसके बेटे में बदल गया है। वह उसे वैसे ही पीट रही है जैसे उसने बिट्टु को गाली सीख आने पर मारा था। उसका ध्यान टूटा। गुस्से से उसकी मुट्ठियां बंध गयी थीं, वह उसी त्वरा से उनकी ओर लपकी। बीचवाले छोकरे की बांह उसके हाथ में आ गयी थी और उसने उसे कसकर पकड़ लिया था। इधर-उधरवाले दोनों छोकरे छिटककर भाग गये थे। वह कुलबुला रहा था, पर मजबूत पकड़ से छूट नहीं पा रहा था। उसके सिर के ऊपर उठा हाथ वहीं थम गया। खंभे की रोशनी में उसने देखा, एक मासूम चेहरा डर से पीला पड़ गया था। उसकी टांगें कांप रही थीं और धीरे-धीरे अपनी बांह छुड़ाने की कोशिश कर रहा था। दूसरी बांह अपनी सुरक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए उठे हाथ से बचने की प्रक्रिया में चेहरे के सामने आड़ी फैला ली थी। 'गुंडागर्दी करते हो अभी पुलिस चौकी ले चलती हूं।' उसके मुंह का वाक्य और उठा हाथ उसके मासूम चेहरे के ताव से पिघल गये।

"क्या नाम है तेरा मुन्ने ?"

इतनी मजबूत पकड़, सिर के ऊपर उठा हाथ और ऐसे कोमल संवाद की अपेक्षा उसे नहीं थी। अपने को छुड़ाने के लिए बिलबिलाना उसने बंद कर दिया था। वह टुकुर-टुकुर उसकी तरफ ताक रहा था।

"क्या नाम है तेरा ?"

वह झेंपा था और अटकते-अटकते बोला था, "अंटी जी— बीरू — !"

"कहां जा रहे हो ?"

"घर !"

"घर कहां ?"

"ये पीच्छे अंटी जी। साब लोगों की कालोनी के पीच्छे झुग्गियों में," उसने हाथ उठाया था, "वो-ऽ सीदे जाके अगले चौराहे से सज्जे हाथ मुड़कर बंगलों के पीच्छे।"

वह समझ गयी थी ये लोग भी वहीं जा रहे थे। उसने बस में जाने का इरादा छोड़ दिया था, "मैं भी उसी तरफ जा रही हूं।"

"जी, अच्छा अंटी जी।" उसे इतमीनान हो गया था कि अब खतरे की कोई बात नहीं।

"स्कूल पढ़ने जाते हो ?"

इनकार में उसने गरदन हिलायी थी।

"स्कूल पढ़ने नहीं जाते, आवारागर्दी करते घूमते हो—है अ— ।"

"ना- तोऽ। पैले जाता था अंटी जी। तीसरी ज़मात तक पढ़ा था। अब छोड़

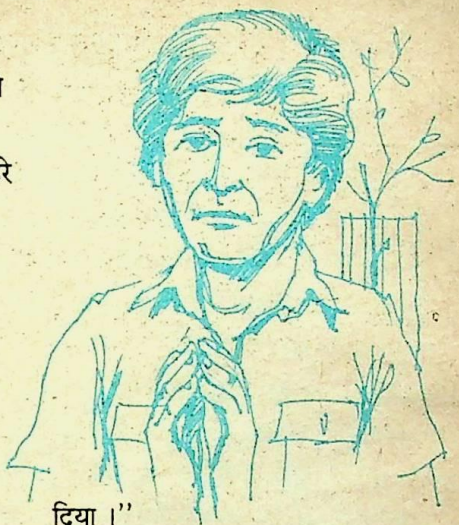

दिया।"

"क्यों, क्यों छोड़ दिया ?"

"अब तो मैं नौकरी करता हूं।"

"नौकरी !" उसने सिर से पैर तक देखा था। गंदे फटे पैर, सूखी पतली टांगें, उस पर कागडोरना-सा ढीले कुरते में झूलता धड़। छोटे गोल चेहरे में भोलेपन से लबालबभरी दूध कटोरें-सी आंखें।

"इत्ते छोटे से हो— क्या नौकरी करते हो ?"

"पिच्चर हॉल के सामने पंजाबी के होटल में अंटी जी।"

"तुम्हारे पिता क्या करते हैं ?"

"हमारा बाप आंटी जी। वो ऽ तो कुछ बी नहीं करता। बैठा-ठाला शराब पीता है और मां को मारता है। मां की कमाई के पीसे बी झटक लेता है। मेरी कमाई से मां हम छह जनों का पेट भरती है।"

वह निरुत्तर हो गयी थी। "अच्छा वो तुम्हारे साथी कहां भाग गये ?"

वह नीचे मुंह करके लजाया था। फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिम्मत करके बोला था, "यहीं होवेंगे—बुलाऊं अंटी जी— ऽ ।" उसने आवाज दी थी "ओ बिशना— ऽ —ओ— ऽ राजे— ओ —ऽ आ जाओ । डर की कोई बात नहीं । अपनी बंगलेवाली अंटी जी हैं ।" उसकी आवाज के साथ ही वे दोनों छोकरे गली के अंधेरे से एकदम प्रकट हो गये थे । उसे बीच में कई बार लगा था कि छिप-छिपकर सड़क के किनारे आगे-पीछे होकर वे साथ ही आ रहे हैं । उसने उनका परिचय कराया था, "अंटी जी— यह बिशना है । यह भी पैले स्कूल में पढ़ता था ।" बीरू की ही उम्र का था पर कद काठी में उससे अच्छा था ।

"कौन-सी क्लास में पढ़ते हो ?"

"जी— ऽ पांचवी में था ।"

"सबसे ज्यादा अंक कौन-से विषय में आते हैं ?"

"जी— ऽ हिसाब में ।"

"अच्छा ?"

"जी— ऽ छमाही की परीक्षा में सौ में से छायानवे अंक मिले थे ।"

"यह तो बहुत अच्छे अंक हैं । आगे भी ऐसे ही होशियारी से पढ़ना ।"

"नहीं जी— ऽ अब तो स्कूल छोड़ दिया ।"

"तभी ! इधर-उधर आवारागर्दी करते घूमते हो । पुलिस चौकी ले चलना चाहिए तुम लोगों को ।" उसके भीतर रुंधा हुआ गुस्सा था और वह अनायास ही उत्तेजित हो उठी थी ।

"नहीं अंटी जी", बीरू बोला था, "काम से आ रहे हैं हम तो । बिशना की मां मर गयी । बापू नहीं पढ़ाता । कैता है काम कर और पीसे कमा । पढ़कर क्या करेगा ? पैले तो ये तांबा और लोहा इकट्ठा करता था कूड़े में से बेचने के वास्ते । लेकिन अब इसकी नौकरी लग गयी । ढाबे में बरतन मांजता है । लेकिन अंटी जी यह राजू है न— इसको आप पुलिस चौकी ले जाओ ।"

वह हैरान हुई थी, "क्यों ?"

वे दोनों हंस रहे थे और राजू कोहनियां मार-मारकर उन्हें बोलने से रोक रहा था ।

"यह राजू है न अंटी जी । इसकी मां कहती है पढ़ । पर ये पढ़ता ही नहीं । इसकी मां बंगले में काम करके पीसे कमाती है । इसको किताबें, फीस, कपड़ा-लत्ता सब देती है, पर ये स्कूल जाने की बजाए पिच्चर देखने घुस जाता है । एक ही किलास में तीन साल से पड़ा है ।"

उसने देखा वह इन दोनों से बड़ा था और सड़क छाप हीरो-सा दीख रहा था । बुशर्ट के अगले बटन खोल रखे थे । गरदन के गिर्द गहरे रंग का रूमाल लपेट रखा था । तंग पेंट और जूते पहन रखे थे । पहले वह झिझका था, फिर अपने को बटोरा था उसने— "तुम सब भी तो देखते हो फिलम । आज नहीं गये थे देखने ?"

"हम तो अंटी जी हफ़े में एक बार देखते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन यह तो हर रोज देखता है । आज भी हमने फिलम नहीं देखी । अंदर जाने ही नहीं दिया ।"

"अच्छा हुआ, नहीं जाने दिया । इस तरह की फिल्में तुम्हें देखनी ही नहीं चाहिए ।"

"क्यों जी— ऽ फिलम तो सभी देखते हैं," बिराना बोला ।

"सभी नहीं देखते । मैं भी नहीं देखती ।"

"आपके घर में बीडुआ है न । इसी वास्ते ।"

"नहीं, मेरे घर में वीडिओ भी नहीं है ।"

"सच्ची अंटी जी । आप फिलम नहीं देखती ।" हैरत से उसका मुंह खुला का खुला रह गया था, "मेरी मां के बंगलेवाली आंटियां तो रोज देखती हैं । आप क्यों नहीं देखती ?"

"दिमाग खराब हो जाता है । समझे ! अब तुम जाओ । मैं भी यहां से अंदर जाऊंगी ।"

"आपको घर तक छोड़ आते हैं अंटी जी । यहां बड़ा अंधेरा है और आप डरती भी हैं ।"

वह हतप्रभ हुई थी, पर सख्ती से बोली थी, "नहीं ! मैं तो नहीं डरती । डर कैसा । तुम जाओ अब ।"

"जी अंटी जी—ऽ । बाई-ई-बाई ।

"फिल्मी तरीके से तीनों हाथ हिला-हिलाकर आगे बढ़ गये थे । वह उनके चले जाने का इंतजार कर रही थी । अविश्वास की धुंध में सारा हादसा डूबता जान पड़ रहा था । क्या पता कल कौन-सी फिल्म का कौन-सा प्लाट उनके मन में हो ।

तभी बीरू मुड़ा था, "अंटी जी । आपका पैकट । आप मुंगफलीवाले के पास ही छोड़ आयी थीं ।" उसने लिफाफा आगे बढ़ाया था और निद्वंद्व-सी हंसी हंसा था ।

"तुम खा लेना— रखो ।"

वह झेंपी-सी हंसी हंसा था और भागकर अपने साथियों के साथ जा मिला था ।

ताजे दूध में अगर कोई जहर मिला दे, तो दूध का क्या कसूर । उसने सोचा था और गेट खोलकर भीतर चली गयी थी ।

— डी-३८, प्रेस इंक्लेव, साकेत, नयी दिल्ली

अंतिम हिम-युग पृथ्वी पर

जरमनी के हेम्बुर्ग मौसम संस्थान द्वारा किये गये एक अध्ययन के अनुसार पिछले दस लाख वर्षों में लगभग प्रति एक लाख वर्ष के अंतराल से पृथ्वी पर हिम-युग आते रहे हैं । अंतिम हिम-युग लगभग अठारह हजार साल पहले आया था । और जब यह हिम-युग अपनी चरम सीमा पर था, उस समय उत्तर अमरीका, यूरोप और साइबेरिया के अधिकांश भाग चार हजार मीटर तक की बर्फ की परत से ढंक गये थे । हिम कोषों में इतना अधिक पानी जम गया था कि समुद्र की सतह आज की तुलना में लगभग सौ मीटर नीचे थी । उत्तरी और दक्षिणी— दोनों गोलार्धों में सागर-हिम भूमध्यरेखा के लगभग दस डिग्री के निकट पहुंच गया था । इसके बाद फिर पैदा हुआ आज के हरित गृह प्रभाव (ग्रीन हाउस एफैक्ट) — जैसा वातावरण, जिसमें विश्वव्यापी तापमान कई डिग्री बढ़ गया । फलतः बर्फ पिघली और पृथ्वी पर सामान्य जीवन संभव हो सका ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा कमाल देखनेवाली आंखों का है !

● विवेकी राय

कुछ चीजें होती हैं कि उन्हें देखने के बाद कुछ कहने को जी मचलने लगता है । मन जो तरंगित होने लगता है, तो फिर मौन के तटबंध रोक नहीं पाते हैं । एक काल की सीमा में आबद्ध होकर भी वह तरंगाकुल भावधारा वास्तव में कालातीत होती है । आज एक ऐसे ही 'देख' की रपट आपके सामने 'अदेख' वाणी में रखने की कोशिश कर रहा हूं । 'गिरा अनयन' कहकर तुलसी ने कुछ झूठ नहीं कहा, परंतु 'नयन बिनु बानी' वाली बात मुझे शत-प्रतिशत सच नहीं लग रही है । कारण यह है कि पतझड़ के बाद वाले कलकिशलयकुल संबंधी मेरी यह रपट नयनों की बानी में ही संभव हो पायी है । अब जो मैंने देखा है, उसे आप भी देखिए—

—और देखिए, केलि में, कली में और कूलों आदि में पद्माकर के 'बगरयौ बसंत' की मोहिनी पूर्ण रूप से प्रभावी हो गयी है । बोल में नयी खुनक, तेवर में अनजानी तुनक और मन में कोई सनक लिये सारा जीव-जगत अनायास कुछ से कुछ हो गया है । कोपलों की चोलों में जैसे नहीं अंटती-सी बसंतिका जवानी सारे संसार को मदमस्त बना रही है । नयी-नयी टटकी कोपलें वृक्ष-वनस्पतियों की दुनिया में ही नहीं, मनुष्य के मनोजगत में भी उठ-उकस रही हैं । उनकी सूक्ष्म आभा, ऊर्जा और स्पंदनशीलता से बाहर की दुनिया एक नये रस में, नये रंग में और नयी गंध में डूब गयी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस नये रस-गंध में पतझड़ की चुनौतियां हैं, दुःख पर सुख की और विरसता पर रस-विजय की परंपरा है।

तब ऐसा लगता है, ये कोपलें नहीं, जीवन की विजय के नैसर्गिक दस्तावेज हैं और साथ ही, उसकी सुंदरता के चारु चंद्रलेख हैं। इन्हें प्रकृति-पुरुष के परिणय की लग्न-पत्रिका भी कहने को मन हो रहा है। सांसारिक हानि-लाभ से रहित शाश्वत सौंदर्य-चेतना की निरंतरता का संदेशवाहक बसंत इन खुलती कोपलों में आंखें नहीं खोल रहा है, वह सारे संसार को आंखें खोलकर जीने के लिये न्यौत रहा है। आप तनिक सुनें तो कि वह क्या कह रहा है—

अरे, पीड़ा में डूब बिलबिलाते लोगो, तनिक सोचो तो, और फिर एक बार अट्टहास कर हंसो तो, तुम किसलिए दुःखी हो ? तुम्हारे क्लेश का कारण क्या है ? क्या कोई मनुष्य ? नहीं, वह तो स्वयं किसी अपनी पीड़ा में डूबा है। फिर, क्षण-क्षण क्षीण होता मरणशील है। तो क्या कहें दुःखदायी-यह जगत है ? नहीं, वह तो माया है। वह है ही नहीं। जो दिखायी पड़ रहा है वह स्वप्न है, ऐसा ज्ञानी-जन कहते हैं। शायद, यह सारा प्रपंच-उपद्रव सपने में चल रहा है। अब इस दृष्टि से पूरे संदर्भ को देखें। कुछ सपनोंवाले सत्य का यह साक्षात्कार आपको उत्साहित कर सकता है।

किरणों के चमकीले कोमलकांत राजपथ पर, सौरभ सने इठलाते मंद पवन की अठखेलियों के बीच ऋतुराज का राज-रथ आगे बढ़ रहा है। उस पर आसीन ऋतुपति के चतुर्दिक बिखरी नवोल्लासभरी टटकी-टटकी शोभा और विशेषकर भौरों की गुंजार, चिड़ियों

पतझड़ था झाड़ खड़े थे
सूखी-सी फुलवारी में
किशलय नवकुसुम
बिछाकर
आये तुम इस क्यारी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये मुस्कान रहेगी कायम

जिस दिन से मिल गया उसे अनचाहे गर्भ से छुटकारा,
उसकी खुशियों का झिलमिलाया सितारा।
अपने परिवार को छोटा रखने के लिए आज
संसार में साढ़े छः करोड़ से भी ज्यादा औरतें ओरल पिल्स यानि
गर्भ निरोधक गोलियां खा रही हैं।
उन्हीं की तरह उसने भी माला-डी-नई छोटी
खुराक वाली गोलियां खाना शुरु कर दी हैं।
ये गोलियां खासतौर से भारतीय महिलाओं
के लिए अनुकूल हैं।
पहला बच्चा जल्दी नहीं,
दूसरा उसके तीन साल बाद
और इसके लिए हर समझदार औरत खाती है गर्भ निरोधक
गोलियां
माला-डी गोलियों के सेवन से श्रोणि शोथ रोग, अस्थानिक गर्भाधान, अंतर
गर्भाशय कैंसर, डिम्ब ग्रन्थी कैंसर, सुसाध्य वक्ष जैसे रोगों का खतरा
काफी हद तक कम हो जाता है।

डाक्टर की सलाह लीजिए,
वह आपको **माला-डी** की राय देंगे।

**माला-डी, बच्चों के जन्म में अन्तर के लिए
सुरक्षित, सरल और शर्तिया उपाय
नई खाने की गर्भ-निरोधक गोलियां,
रियायती दामों पर,
सिर्फ 2 रु. में एक पैकेट।**

डी ए वी पी 89/692

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की वह चहक और फूलों की महक को देखते बीता 'दीरघ-दाघ-निदाघ'—जैसे कल का एक स्वप्न रहा, तो रिमझिम परत फुहार अथवा बुखार काढ़ता-सा सेनापति का शिशिर-तुषार भी एक दिलचस्प स्वप्न रहा । कल के इन सारे-सारे सपनों के बीच मेरे देखते सत्य है यह कोपलोंवाला आज !

क्या अर्थ है इस आज का ? इसका अर्थ है सामने फैली साक्षात अनंत ऊर्जा के अक्षय स्रोत-सी नूतन कोपलों, नवकिशलयों और वारे वारों की दुनिया, बहुत ही रहस्यमय ! वह पतझड़ को तो एकदम खाद बनाकर रख देती है। उसकी समष्टि-चेतना व्यष्टि-चेतना में किसी नवागत का स्वागत भी करती है तो इसी पृष्ठभूमि पर—

पतझड़ था झाड़ खड़े थे
सूखी-सी फुलवारी में
किशलय नवकुसुम बिछाकर
आये तुम इस क्यारी में

प्रसाद का यह बसंत-सुंदर प्रिय अनंत सौंदर्यशाली है । उसकी सुंदरता पहाड़ की कोई खड़खड़ सुंदरता नहीं जो स्वयमेव घोषित करे, दूर से ही मनहरण मैं । उसकी कोपलकांत सुघराई मतिराम की किसी नायिका-जैसी है । जिसके लिए दो टूक भाषा में संशय-रहित घोषित किया जा सकता है, **ज्यों-ज्यों निहारिये नेरे ह्वै नैननि, त्यों-त्यों खरी निकरै-सी निकाई ।**

मैं आपको आमंत्रित कर रहा हूं । आइये, इस निकाई को निकट से निहार-निहार कर देखें । लेकिन किन आंखों से ? क्या मस्तक में जड़ी दो जड़ आंखों से ? नहीं, इससे सूक्ष्म और-और आंखों को भी विधाता ने इस शरीर में प्रतिष्ठित कर छोड़ा है । उदाहरणार्थ, अंगुलियों की आंखें, उनके पौरों पर लगीं ।

आप चौंकिये मत ! अंगुलियों की आंखों की संवेदनशीलता ग़जब की अचूक ग्राहकता से परिपूर्ण होती है । उन अंगुलियों के पोरों से बसंत के विराट् सौंदर्य-संभार के प्रतीक एक कोपल को छू कर देखें । फिर मानें, यह कोपल साधारण नहीं । अपनी असाधारणता में पूर्ण साहस और शक्ति के साथ द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र का घोषणा-पत्र बन अवतरित यह कोपल कोमल-काय है तो क्या ? इसकी आत्मा बहुत कठोर और क्रांतिधर्मी है ।

बेशक, यह किशलय-क्रांति एक सुंदर सत्य है, बाहर प्रकृति और जीव-जगत की, भीतर भाव-जगत की । संभवतः इसीलिए इसका रंग लाल अर्थात ललछहूं है । ग्रीष्म सम्राट के शोषण-चक्र में सूखी नंगी डाल में नयी आशा, नयी उमंग, नयी संभावना और नूतन अक्षय-अदम्य जीवनी-शक्ति की विजय वैजयंती फहरातीं ये कोपलें, ये कल्ले सचमुच चुपचाप एक युगांतर बन जाते हैं । हमारे सामने कुछ ऐसा बदल गया संसार है और इस बदलाव में कोपल की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है ।

कोपल कुछ कह नहीं रही है, लेकिन हम देख रहे हैं कि राजपाट बदल गया । बहुत दिनों तक किसी गुलाब के मूल में अटके महाकवि बिहारी के अलि की आशाओं को पूर्ण करते हुए अपत कटीली 'इन' जैसी डालों में 'उन' जैसे फूल आ गये । इतने पर भी यह कोपल ऐसी है कि इससे कुछ हथियाना या लेना नहीं है । इसे तो बस देना ही देना है । यही कारण है कि यह इतनी मनमोहक लगती है । बारंबार छूने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा हो रही है । छूकर मन नहीं भरता है । अंगुलियों की आंखों में रूप-सुंदरता अंट नहीं रही है । उस रूप में जो अदेख-तत्व है वह स्पर्श से आस्वाद के घेरे में आते-आते भी छिटक कर छूट जाता है ।

एक पूर्ण सौंदर्य का कैसे मात्र एक या दो ज्ञानेंद्रियों से आस्वादन हो सकता है ? इस पुनीत कार्य में पांचों ज्ञानेंद्रियों की भागीदारी चाहिए । लेकिन हमारी रुचि का विकास निसर्ग-सुषमा के संदर्भ में इतनी ऊंचाई पर कहां हो पाया है ? हम तो प्रकृति को प्रायः मात्र जड़ पदार्थ के रूप में चित्रित कर छुट्टी पा लेते हैं । ऐसी भौतिकवादी दृष्टि में क्या आश्चर्य कि ये नव पल्लव कामदेव के बालक बसंत का बिछौना बन गये ।

डार द्रुम पलना, बिछौना नव पल्लव के
सुमन झंगूला सोहै तन छवि भारी है

कवि देव आचार्य और महाकवि हैं तो क्या, उनके कहने से मैं नहीं मान रहा हूं कि ये कोपलें अथवा नव पल्लव बसंत के बालक का बिछौना हैं । कवि देव चूक गये । इस संदर्भ में मैं यह भी कहना चाहूंगा कि एक अर्थ में यह चूक प्रसाद में भी है । यदि प्रिय में स्थूलभाव है तो फिर किशलय-नवकुसुम का पांवड़ा उसके पैरों के नीचे पड़ना कुछ वैसा ही है जैसे उसका बिछौना बन जाना । कोंपल साक्षात बसंत है, उसका सर्वश्रेष्ठ प्रतीक । इस पुण्यशील पवित्र प्रतीक को भर आंख देख हृदय जुड़ा लें । नाना प्रकार के प्रपंच-दाह में दग्ध मनुष्य का हृदय धन, सत्ता और प्रभुत्व से नहीं जुड़ा सकता है । इसे तो वही जुड़ा सकता है जो रसो वै सः की अनुभूति के आस्थान की तरह निसर्ग-कला का चरमोत्कर्ष है ।

मैं कोपल में इसी कला को देख रहा हूं । यह कला कालातीत है । कोपल का कोई कल नहीं । जो है वह आज है । इसीलिए वह निर्द्वंद्व है और उसे देखनेवाले भी क्षीण अहं हो निर्द्वंद्व हो जाते हैं । इसका दर्शन योग समाधि है । इसके आगे संसार की सर्व प्रशंसित वास्तुकलाएं रानी के आगे उसकी दासी-जैसी बन जाती हैं । यह किसी पत्थर पर नहीं, समय की शिला पर उत्कीर्ण संपूर्ण कला है । इनमें प्रलय के बाद की नयी सृष्टि-प्रक्रिया है । इनके रूप में लगता है, पवित्र वैदिक ऋचाएं लीला-रत हैं । इनका दर्शन धर्म-दर्शन है । इनमें एक दिव्य संदेश भरा है ।

कानों नहीं, आंखों के रास्ते यह संदेश सीधे अंतस्तल में उतर जाता है । सारा कमाल बस देखनेवाली आंखों का है । वे खुली होकर भी यदि मुंदी-जैसी हों तो यह कितने दुर्भाग्य की बात है । मुझे लगता है साक्षात सौभाग्य की भांति सालों साल यह बसंत हमारी मुंदी आंखों को खोलने के लिए उतर आता है । इस साल भी उतर आया है, भरपूर शोभा, सौंदर्य और श्रृंगार के साथ उतर आया है । कल्ले फूट पड़े हैं, लाल-लाल लुचलुच किशलयों की निर्विकार बाल-जिह्वा से प्रकृति जीने की सहज लालसा को भीतर से उकसाने लगी है और कोपल-कोपल ऋतुपति की पाती बन मन-मन में शुभकामनाओं की गुदगुदी बोने लगी है । आइये, इस महान उल्लास-पर्व को हम जी भर कर जी लें ।

—प्रोफेसर कॉलोनी,
सकलानाबाद, गाजीपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर्मुखे बाघ— तीन मौसम : वर्ष का प्रतीक

हड़प्पा में भारतीय पंचांग मिला है !

● मार्गरिता अल्बेदिल

लेनिनग्राद के विद्वान हड़प्पा में पायी गयी लिपियों के अध्ययन में १९६४ से संलग्न हैं। ये थोड़े से अभिलेख उस शक्तिशाली सभ्यता के संदेश हैं जो तीसरी और दूसरी सहस्राब्दि ई.पू. हिंदुस्तान के उत्तर-पश्चिम में फूली-फली थी।

हर सभ्यता के समान हड़प्पा के लोगों के काल गणना के संबंध में अपने विचार थे, जिस पर उनकी सभ्यता आधारित है। इसकी अभिव्यक्ति काल के मापने के उपायों और रूपों में होती है जिसे अंततः एक शानदार पंचांग के रूप में ढाला जाता है, जो उनकी सभ्यता के विशिष्ट अवशेष के रूप में आज भी कायम है।

ये पंचांग उस जमाने में ईंटों पर अंकित किये गये थे जिनके अंश लंबा अरसा हुआ नष्ट हो गये, कुछ ईंटों का लोगों ने अनजाने रूप में

हाल में सोवियत विद्वानों ने नये सिरे से सिंधु घाटी के पंचांग को पढ़ा, जिसे पांच हजार वर्ष पहले तैयार किया गया था। यह एक पेचीदा प्रणाली है तथा सही खगोलीय पर्यवेक्षण पर आधारित है। माया लिपि को विश्वविख्यात डॉ. क्नोरोजोव ने पढ़ने का काम संपन्न किया, जो सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी की लेनिनग्राद शाखा में नृवंश विज्ञान संस्थान में काम करते हैं। उन्होंने प्राक्-भारतीय भाषा का गहन अध्ययन कर उसकी चित्रलिपियों को गणितीय प्रतीकों में अनूदित किया, जिससे उसकी प्रक्रिया को कंप्यूटरीकृत करना संभव हो गया। हम यहां पर नृवंश विज्ञान संस्थान की शोधकर्मी मार्गरिता अल्बेदिल द्वारा लिखित 'लेनिनग्राद परिकल्पना' का विवरण प्रकाशित कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्तेमाल कर लिया । यह तो बहुत बाद में अनुभव हुआ कि ये दरअसल,पंचांग हैं तथा भारत के बाद के ऐतिहासिक कालों में निर्मित पंचांग से इनका अद्भुत साम्य है ।

प्राक्-भारतीय पंचांग की शुरू से ही कालक्रमानुबद्ध प्रणाली नहीं थी । इसने भारतीय संस्कृति को सर्वांगरूप में अभिव्यक्त किया है । पंचांग एक साथ ही प्रकृति के सार्वजनिक पैटर्न को और दैनंदिन मानवीय मामलों को अभिव्यक्त करते हैं । अर्थतंत्र, घरेलू जीवन और उत्सव । लेनिनग्राद की जो टोली इनका अध्ययन कर रही है वह इन्हें फिर से तैयार करने की कोशिश कर रही है जिनमें बलि देने के अभिलेखों की तिथियों से और चित्रों एवं प्रतीकों से अर्थ निकालने की बात शामिल है ।

सौर पंचांग का प्रादुर्भाव

आदिम अर्थतंत्र में सिंधु घाटी में यह प्रणाली जीवंत थी । चूंकि पुरातन पाषाण काल में चांद्र प्रणाली के प्रादुर्भाव की संभावना है क्योंकि उस जमाने में शिकारियों को शिकार करने, मूल संग्रहीत करने, अनाज और फल जमा करने के लिए, चांद्र दशा पर निर्भर करना पड़ता था ।

आज भी भारत में अमावस्या और पूर्णिमा को ही अधिकांश धार्मिक कृत्य संपन्न किये जाते हैं । चांद्र पंचांग अधिकांश धार्मिक उत्सवों के लिए उपयुक्त है एवं जीवन के धार्मिक पक्ष से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है ।

उत्पादक अर्थतंत्रों और कृषि के विकास के साथ और पंचांग का प्रादुर्भाव हुआ क्योंकि ऋतु परिवर्तन सूर्य के चतुर्दिक पृथ्वी के घूमने से संबद्ध है जिसका काल निर्धारण कृषि के लिए अत्यावश्यक है ।

मोहनजोदाड़ो में प्राप्त पुरोहित की प्रतिमा

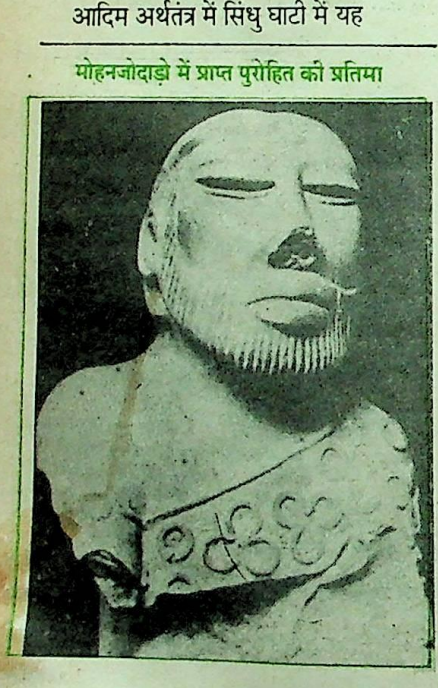

वर्ष का प्रारंभ

शारदीय विषुवत से वर्ष का प्रारंभ होता था । तीसरी सहस्राब्दि ईस्वी पूर्व में सिंधु घाटी में उस दिन सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में प्रवेश कर गया । प्राकृतिक महीनों को चार-चार में ऐक्यबद्ध कर तीनों ऋतुओं में बांट दिया गया तथा उनके नाम, सजीव चित्र और प्रतीक पशु निश्चित किये गये । इसी प्रकार वर्ष के दूसरे मौसम— फरवरी-मई— को गरमी या सूखा नाम दिया गया जिसका प्रतिनिधित्व लिपि में एक केंद्र वाले दो वृत्त करते हैं जबकि पहले मौसम का प्रतिनिधित्व एक वृत्त करता है और तीसरे मौसम का तीन । इस मौसम का प्रतीक मछली थी जिसे क्षैतिज रूप से व्यवस्थित कर शीर्षस्थ मत्स्य प्रतीक से लिपि में बनाया गया है ।

साठ वर्षीय बृ
बैल

मनुष्य ने
दिया है कि प्रा
श निर्भर करत
काल की माप
उपयोग करना
लिए मौसम पर
पंचांग की जरू
लिए सिंधु नदी
के प्रारंभ के पह
पड़ता होगा ।
खगोलीय
विभाजित किया
लंबाई के प्राकृति
चार स्तंभ होते है
मकर) तथा दो
संक्रांतियां होती
इस्तेमाल मुख्य
था । विषुवत रे
वर्ष को दो भागों
इसका संकेत क
गया है । शारदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

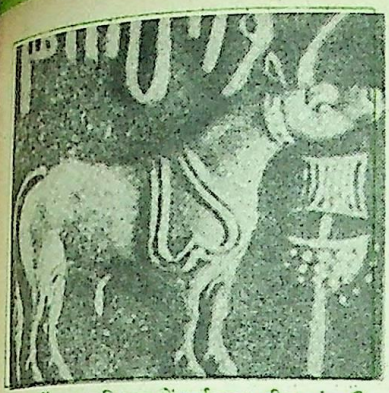

साठ वर्षीय बृहस्पति चक्र में वर्ष का प्रतीक जंगली बैल

वर्ष का स्पष्ट सिर : छह सिरोंवाला पशु

मनुष्य ने लंबे अरसे से इस बात पर ध्यान दिया है कि प्राकृतिक घटनाएं खगोलीय पैटर्न पर निर्भर करती हैं। सिंधु घाटी के लोगों ने काल की माप के लिए ग्रहों के पर्यवेक्षण का उपयोग करना सीख लिया होगा। कृषि कार्य के लिए मौसम परिवर्तन की भविष्यवाणी करनेवाले पंचांग की जरूरत बहुत होती है। उदाहरण के लिए सिंधु नदी में बाढ़ आने के पहले या वर्षा के प्रारंभ के पहले सिंचाई कार्य पूरा करना पड़ता होगा।

खगोलीय पंचांगों में वर्ष को समान हिस्सों में विभाजित किया गया है जबकि पहले असमान लंबाई के प्राकृतिक महीने होते थे। सौर वर्ष के चार संभ होते हैं, दो संक्रांतियां (कर्क और मकर) तथा दो विषुवत रेखा पार करनेवाली संक्रांतियां होती हैं। हड़प्पा पंचांग में उनका इस्तेमाल मुख्य तिथि के रूप में किया जाता था। विषुवत रेखा पार करनेवाली संक्रांतियां वर्ष को दो भागों में विभाजित करती थीं जो इसका संकेत करती थीं कि खेती का मौसम आ गया है। शारदीय विषुवत जब सूर्य वृश्चिक राशि में होता है, यह निर्धारित करता था कि सिंचित खेतों में बुवाई शुरू की जानी चाहिए। इसी कारण चित्र में वृश्चिक के वर्तमान चित्रों के चतुर्दिक कई पशु और पूजा करनेवाले मानव हैं।

वर्ष का प्रारंभ मकर संक्रांति से होता है, इसका कारण संभवतः यह है कि उस समय तक फसल कटाई का मुख्य काम समाप्त हो जाता होगा। इसी कारण मकर संक्रांति के लिए व्यापक रूप में जंगली वृषभ के रूप में चित्रित है जो वर्ष के प्रारंभिक मौसम का, समग्र रूप में वर्ष का प्रतिनिधित्व करता है।

पंचांग का विकास

जिस प्रकार हड़प्पा पंचांग में चांद्र और सौर लय का समायोजन किया गया उस रूप में उसका दायरा सार्वजनिक हो जाता है।

जिस प्रकार नये राज्यत्व का उद्भव हो रहा था उसके कारण पंचांग का विकास तेजी से हुआ क्योंकि नयी राजनीति और विचारधारात्मक संरचना रूपायित हुई जिससे नये पंचांग का जन्म हुआ जो सरकारी पंचांग के रूप में जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मांड वृक्ष दो अर्धवर्ष के प्रतीक : धनुषाकार गरदन सहित दो जंगली बैलों के सिर

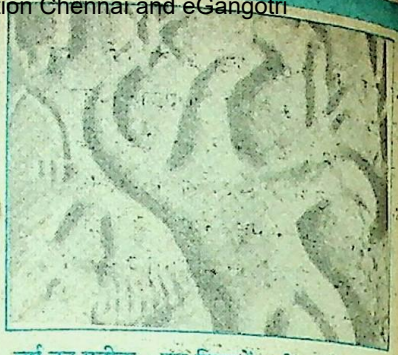

वर्ष का प्रतीक : छह किरणोंवाली आकृति

जाता था और उसने चांद्र और सौर प्रणाली के अलावा तीसरी प्रणाली को जन्म दिया ।

अब वर्ष का प्रारंभ कर्क संक्रांति से होने लगा हालांकि संक्रांतियों के आधार पर वर्ष का दो भागों में विभाजन जारी रहा । कर्क संक्रांति कमोबेश दक्षिण-पश्चिम मानसून के समय होती है जिसके फलस्वरूप वर्षा ऋतु का प्रारंभ होता है । इस पर फसल और जनता का मंगल-कल्याण निर्भर करता है अतः कर्क संक्रांति विराट उत्सव के रूप में मनायी जाने लगी तथा बैल की बलि देने और वर्षा देवता का पूजन करने का उत्सव प्रारंभ हुआ । नये वर्ष का समारोह कभी-कभी राजनीतिक कारणों से बंद कर दिया जाता था जिसके बारे में यहां लिखना समीचीन नहीं होगा ।

नयी प्रणाली में वर्ष को छह ऋतुओं— प्रत्येक ६० दिन— में विभाजित किया गया जिसमें पहले से तीसरा तक वर्ष के पूर्वार्द्ध में ग चौथे से छठा तक वर्ष के उत्तरार्द्ध में मनाया जाता था । पहले का प्रतीक कोई वनस्पति या पशु था ।

सबसे अंत में हड़प्पा पंचांग में कर्क कांडीय प्रणाली का आविर्भाव हुआ जिसमें पूरे वर्ष धार्मिक कृत्य करने की व्यवस्था की गयी । इसमें वर्ष को तीन भागों में विभाजित कर प्रत्येक मौसम के लिए चार महीने की अवधि तय की गयी जिसका विवरण हम सौर पंचांग की पृष्ठभूमि में दे चुके हैं । प्रत्येक माह के लिए एक बलि-पशु के रूप में निर्धारित किया गया और १ से ४ अंक तक किये गये ।

प्राक् भारतीय पंचांग में इन चार बुनियादी प्रणालियों की खोज विशेषज्ञों ने की है । ये चारों में मिलकर काम करती थीं तथा प्रत्येक जीवन के किसी विशिष्ट क्षेत्र के लिए उपयुक्त थीं ।

प्राकृतिक ढांचे के अनुसार वर्ष बुनियादी पार्थिव चक्र है । इसे छह आरे वाले पहिये के रूप में माना गया जिसे काल चक्र कहा जाता है जो आदिम भारतीय संस्कृति के लिए मौलिक है

वर्ष का विभाजन

वर्ष को छोटे चक्रों में विभाजित किया गया । संभवतः दो अर्द्ध वर्ष एक प्रकाश और दूसरा अंधकार का द्योतक माना गया जैसा कि बाद में ईश्वरीय और पुरुखों के तरीकों के रूप में मान्य हुआ । अर्द्ध वर्ष में मौसम आये, इन्हें चांद्र माहों में बांटा गया जिनके शुक्ल और कृष्ण पक्ष हुए । दिन और रात निर्धारित किये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ली आकृति

या की गयी।
भाजित कर
हीने की अवधि
हम सौर पंचांग
येक माह के लिए
रित किया गया
ाये।
चार बुनियादी
ने की है। ये चारों
ा प्रत्येक जीवन
उपयुक्त थीं।
वर्ष बुनियादी
वाले पहिये के
चक्र कहा जाता है
लिए मौलिक है
जन
जित किया
एक प्रकाश और
ा गया जैसा कि
तरीकों के रूप में
म आये; इन्हें
शुक्ल और
निर्धारित किये

गये तथा और अधिक छोटी इकाइयों की खोज की जिसमें क्षण तक को भी विभाजित किया गया। सप्ताह के दिनों के नाम चांद्र ग्रहमंडल के नाम पर रखे गये। इस प्रकार हम देखते हैं कि बुनियादी संरचनात्मक विभाजन जो प्राक् भारतीय पंचांग में थे, बाद में भारतीय पंचांग में मान्य हो गये :

१ अर्द्ध वर्ष=तीन मौसम
१ मौसम = दो माह
१ महीना = दो पक्ष
१ पक्ष = पंद्रह दिन आदि।

सरकारी तंत्र जितना पेचीदा होता गया वे कालानुक्रम की व्यवस्था पंचांग के नमूने पर की गयी। मानव-वर्ष देवता का एक दिन माना गया। इसीलिए सम्राट की सत्ता सर्वदा रहेगी, और सभ्यता की प्रगति के साथ यह अपरिहार्य हो गया था। हड़प्पा के काल में बृहत्तर वर्ष : चंद्र-सौर समीकरण पर आधारित पांच वर्ष; बृहस्पति के चक्र पर आधारित १२ वर्ष, प्रथम दो को संबद्ध करते हुए बृहस्पति चक्र के आधार पर ६० वर्ष। उन्हें २३५ चांद्र मास पर आधारित १९ वर्षीय मीटनीय चक्र का भी ज्ञान था।

प्राक् भारतीय पंचांग संशोधित रूप से समग्रता में प्रभावशाली था जिसमें विभिन्न चक्र शामिल किये गये जो ब्रह्मांड की अनंतता के द्योतक हैं। खगोल विद्या और जीव विज्ञान से संचित अनुभव पर आधारित विशाल तथ्य समूह को सूक्ष्म रूप से व्यावहारिक उद्देश्य के लिए संग्रहीत किया गया और अपने सामूहिक ज्ञान को आगे बढ़ाने में कई पीढ़ियों की मदद की।

●

लघुकथा

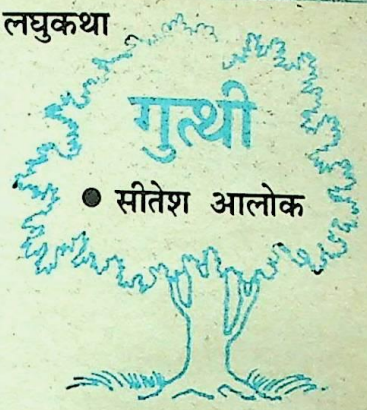

● सीतेश आलोक

तूफान थम चुका था....

जड़ से उखड़े हुए पेड़ के पास ही हरी-भरी घास हवा के मंद-मंद झोंकों में लहरा रही थी। दोनों के लिए ही, अपने-अपने ढंग से, बीता हुआ तूफान सपना बन चुका था।

तभी पास से निकलते हुए एक ज्ञानी ने रुककर, टूटे पेड़ की ओर संकेत करके, अपने शिष्यों से कहा, "वाह, शिक्षा लो इससे...यह टूट गया, पर इसने सर नहीं झुकाया। धन्य है..." कहते-कहते उनका मस्तक टूटे हुए पेड़ के आगे झुक गया।

कुछ देर बाद एक और ज्ञानी अपने शिष्यों के साथ उधर से निकले और रुककर हंसते हुए बोले, "देखो...देखो इस मूर्ख को। यह अपनी हठधर्मी के कारण मारा गया। और ये देखो..." उनकी तर्जनी लहराती हुई घास की ओर घूम गयी, "बुद्धि इसे कहते हैं, तूफान ने रौद्र रूप धारण किया तो कुछ देर के लिए झुक गयी...और अब निश्चिंत होकर डोल रही है।"

वहीं, पास ही पड़ा, चट्टान का एक टुकड़ा बरसों से पहेली सुलझाने में लगा है— दोनों में भला कौन ठीक था...क्या वास्तव में कोई ठीक था ? और यदि उनमें कोई ज्ञानी था भी तो उसने मुझे क्यों नहीं देखा ? मैं, जो तूफान में न तो कभी टूटा और न कभी झुका।

—बी-२, आवास परिसर, इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली-५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंप्यूटर युग में पिशाचों के प्रति सनक

वे अपने को पिशाच मानते हैं

● कैथरीन रैम्सलैंड

अमरीका में १९७६ में एनी राइस नामक एक लेखिका के तीन लेखों की श्रृंखला से पहले शायद ही कोई पिशाचों के बारे में इतना कुछ जानता था । उन्होंने 'वैंपायर लेस्टेट—द क्वीन ऑव द डेम्ड' शीर्षक से इस बारे में लेख लिखे । ये लेख एकाएक चर्चित हो नहीं हो गये, बल्कि लाखों में बिके भी । इन लेखों ने न केवल इस बारे में बल्कि कंप्यूटर युग की पॉप संस्कृति में जीने वाले लोगों की अतीत से लिपटने की अभिरुचि पर सवाल उठाये । उनका कहना था कि आखिर वे कौन-से कारण हैं, जिनकी वजह से लोग प्राचीन या पारंपरिक मोड़ों से जुड़े रहना चाहते हैं ।

पिनेकाल और वार्नर बुक्स ने पिशाचों की अभिरुचियों पर उपन्यासों की मासिक श्रृंखला निकाली है । अमरीका की टीवी नेटवर्क पर इसी आशय की एक फिल्म 'नाइट लाइफ' प्रसारित की गयी । वैसे इसी आधार पर और विषय पर 'लिव फ्रॉम ट्रांसिलवाकिया', 'डार्क साइड', केनन फिल्म्स की 'रोक्यूला'—जैसी फिल्में भी बनायी गयीं ।

पिशाचों की खोज

फिल्मों और लेखों की श्रृंखला से भी परिवेश को कुछेक पत्रिकाओं ने नया आकाश दिया । उनमें 'वेम्पायर जनरल' और 'डेड ऑन नाइट' उल्लेखनीय है ? इस काम में 'वेम्पायर रिसर्च सेंटर', 'काउंट ड्रेकूला फेम क्लब' का योगदान महत्त्वपूर्ण है । वेम्पायर रिसर्च सेंटर ने तो विश्वभर के पिशाचों और 'रुधिर शोषकों' के आंकड़े प्रकाशित किये । इतना ही नहीं उन्होंने पुरुष और महिला पिशाचों का वर्गीकरण भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एनी राइस नामक
लेखों की श्रृंखला
शाचों के बारे में
होंने 'वैंपायर
ड्मड' शीर्षक से इस
व एकाएक चर्चित हो
में बिके भी । इन
में बल्कि कंप्यूटर
ने वाले लोगों की
रुचि पर सवाल
कि आखिर वे
वजह से लोग
ये जुड़े रहना चाहते

क्स ने पिशाचों की
की
। अमरीका की
य की एक फिल्म
गयी । वैसे इसी
लिव फ्रॉम
ड्ड', केनन फिल्मस
में भी बनायी गयी।

खोज

श्रृंखला से भी
सों ने नया आकाश
त्ल' और 'डेड ऑफ
प काम में 'वेम्पायर
ा फेम क्लब' का
पायर रिसर्च सेंटर ने
'रुधिर शोषकों' के
तना ही नहीं उन्होंने
का वर्गीकरण भी

कादम्बिनी

हुआ । एक पुरुष पिशाच का जिक्र करते हुए लिखा गया, 'वह छब्बीस बरस के युवा की तरह दिखायी देता है । उसकी आंखें भूरी और बाल काले हैं । लगभग ५ फुट १० इंच ऊंचाई और १७० पौंड वजन । महिला पिशाच के बारे में बताया कि वह लगभग तेईस बरस की युवती है । करीब ५॥ फुट की । भूरी आंखों पर उसके काले गेसू, उसका वजन १२० पौंड है ।

तमाम किस्म का कोलाहल और तर्कों का शोरगुल भी इस तरह की खोजों को विराम नहीं दे सका । पिछले बरस लॉर्ड सुथवेन एसेंबली ने 'इंटरनेशनल एसोसियेशन ऑव द फेनटस्टिक' नामक संस्था बनायी । इसके सदस्यों में ५०

विज्ञापनों की दुनिया में पिशाच

पिशाच उत्पादों को बाजार भी देते हैं । विज्ञापनदाता इनका उपयोग ग्रीटिंग कॉर्ड्स, कैंडीबार्स, नेल पालिश वगैरह के विज्ञापनों में करते हैं । बच्चों के कार्यक्रम, रॉक वीडियो और कॉमिक पुस्तकों में भी ये छाये रहते हैं । केरेन इ. गोर्डस की 'द ट्रांसिरिव वेम्पायर : ए हेंडबुक ऑव ग्रामर फार इनोसेंट' के जरिए बच्चे अंगरेजी भी पढ़ सकते हैं । केलिफोर्निया स्टेट यूनीवर्सिटी की नोटीन ड्रेसर ने अपनी एक पुस्तक में बताया है २७ फीसदी स्कूल और कॉलेज के छात्र-छात्राएं निजी तौर पर मानते हैं कि पिशाचों का वाकई अस्तित्व होता है ।

अमरीका से प्रकाशित होनेवाली पत्रिका 'सायकालॉजी टू डे' में कैथरीन रैम्सलैंड नामक लेखिका का एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसके अनुसार अमरीका में तकनीकी और विज्ञान की अभूतपूर्व सफलताओं के इस कंप्यूटर युग में कुछ लोगों का प्रेतों और पिशाचों के प्रति झुकाव बढ़ रहा है । यही नहीं, कुछ लोग तो स्वयं को पिशाच भी मानने लगे हैं । प्रस्तुत है, इसी लेख का सार

ऐसे प्रोफेसर भी हैं, जो पिशाचों का साहित्य और कला के संदर्भ में अर्थ तलाशते हुए खोज कर रहे हैं । इनमें रेड्ड फलोरिस्कयू और वरेंमंड मकबली बोस्टन कालेज में ड्रेकूला पर कोर्स चला रहे हैं । हर साल उनके पास ७० ऐसे शोधार्थी जुट जाते हैं । लिटिल ब्राउन एंड कम्पनी नाम के प्रकाशक ने इनकी 'इन सर्च ऑव ड्रेकूला' नामक पुस्तक छापी, जिसने बिक्री का लगभग हर रेकार्ड तोड़ दिया । इस सिलसिले में एक और पुस्तक 'ड्रेकूला, प्रिंस ऑव मेनी फोर्सेस' पुस्तक भी आ रही है ।

एनी राइस

अप्रैल, १९९०

CC-0. In Public Domain. G[illegible]angri C[illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

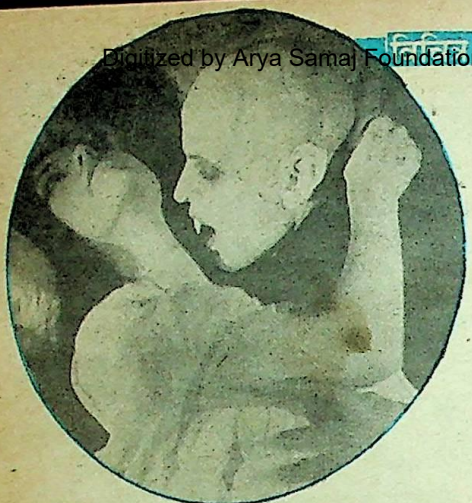

'नोसफेरातू' फिल्म का एक दृश्य

ड्रेसर ने ५७४ विद्यार्थियों से इस बारे में पूछताछ की थी। पिशाचों के बारे में एकाएक उपजी यह प्यास क्या दर्शाती है ? उनके क्रियाकलापों के बारे में जानने को क्यों उत्सुक हैं लोग ? इस सबके माने क्या हैं ?

एकाएक रुचि शायद इसलिए तो नहीं कि लोग विज्ञान और तार्किक न्याय युक्तियों से पूरी तरह से ऊब गये हैं। नये समाज की रहस्य और आध्यात्मिकता में बढ़ती रुचि पर परा-सामान्य अभिरुचि है। शिकागो विश्वविद्यालय के समाजशास्त्री धर्मप्रचारक एंड्रयू ग्रीन ले और सहयोगियों के एक सर्वे के अनुसार ४० फीसदी युवा अमरीकियों का मानना है कि उनका संपर्क अपने जीवनकाल में मृतकों से कम से कम दो बार हुआ है। तीन में से दो रिपोर्ट में लोगों ने अतिरेकी सांवेदनिक प्रत्यक्षीकरण की बात कही। उन्होंने उस अहसास को बताया भी। चार में से तीन की आस्था मृत्यु के बाद के जीवन में थी। उनका यह भी मानना था कि मृत्यु के बाद फिर से प्रेमी मिल जाते हैं। नयी उमर के लाखों युवकों ने पुनर्जन्म के सिद्धांत में अपना विश्वास जताया। फॉदर ग्रीन ले का मानना है कि जीवन की उत्तेजना और आनंद धीरे-धीरे लुप्त होता जाता जा रहा है। फिर से उसी आनंद की टोह में, उसी अद्भुत आनंद की अभीप्सा में आध्यात्मिकता की तरफ या प्रेतों-पिशाचों की तरफ लोगों का ध्यान बंटता है। ग्रीन ले का यह भी मानना है कि जीवन के दिव्य प्रकाश के लिए आध्यात्मिक कल्पना का होना जरूरी है।

'काड्रंट' नामक पत्रिका के संपादक स्टीफन मार्टिन ने पिशाचों संबंधी इस सोच को मनोवैज्ञानिक मोड़ दिया है। उनका कहना है, 'पिशाच हमारी मानवता के जीवित अंग हैं, जिन्हें तकनीकी युग में लोगों ने भुला दिया....प्रेत-पिशाच हमारी संस्कृति का दूसरा हिस्सा हैं, जिन पर ध्यान दिया जाना चाहिए।'

वेम्पायर रिसर्च सेंटर के १९७२ से निदेशक स्टीफन कापलान ने ९९ सवालों की सूची बनायी है। उन्होंने इस तरह के तत्वों या इनसे मुलाकात होने का दावा करनेवालों को यह प्रश्न तालिका भेजी। इस प्रश्न तालिका में इस तरह के प्रश्न किये गये— 'क्या आप कॉफिन (ताबूत) में सोते हैं ?', 'कितनी बार आप खून पीते हैं' ? वे अपने वेम्पायरों को तीन श्रेणियों में विभाजित करते हैं— १. कामुकता की हद तक जिनका झुकाव खून की ओर हो, २. जो प्रेत-पिशाचों का अनुसरण कर उन्हें कब्जे में करने को उद्यत हों, ३. सचमुच के प्रेत। कापलान द्वारा निर्धारित कसौटी पर केवल वे ही खरे उतरते हैं जो रक्त के प्रति शारीरिक भूख— जैसी ललक रखते हों, उसे जीते हों और जिन्हें इस परंपरा का निर्वाह करने में कोई सुख मिलता हो। कापलान का मानना है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस काम के सिलसिले में वे कई तरह के लोगों से मिले। उनका कहना है कि 'फिर भी पिशाच होने का दावा करनेवालों में सचमुच के पिशाच नहीं मिले। उनके अनुसार इसके बावजूद अकेले अमरीका में पचास पिशाच हैं। उनका मानना है कि विश्वभर में इस तरह के ५०० लोग हैं।

पिशाचों के साथ खेल-खेल में की जानेवाली हरकतें कई बार काफी खतरनाक होती हैं। कापलान और ड्रेसर ने इनकी गुप्त दुनिया का विवरण लिखा है। ऐसे लोग अपने शिकार का खून पीकर तृप्ति 'शक्ति और संतोष' का अनुभव करते हैं। खून पीने के लिए ये या इस तरह के लोगों में तब्दील हो रहे लोग किस्म-किस्म के उपायों का सहारा लेते हैं, जैसे सुई चुभाना, दांत काटना या चाबुक से पीटना। इनके कुछ शिकार पैसे या यौन-सुख के बदले अपने खून का सौदा करते हैं। लेकिन कुछ लोगों को आत्मपीड़न में चरम यौन-सुख मिलता है।

खून पीनेवाले हत्यारों की भयानक और अस्वाभाविक कहानियों से इतिहास भरा है। अठारवीं सदी की शुरुआत में इंगलैंड के एक कसाई फ्रिटज हारमैन ने कई दर्जन लड़कों की गरदन में दांत गड़ाकर हत्या करने के बाद उनका खून पी जाता था और तब उनकी बोटियां काटकर सॉसेज बनाकर खा जाता था या अपनी दुकान में उन्हें बेच देता था। लोग 'जैक द रिपर' को भी पिशाच ही मानते हैं।

अमरीका के टड बुंडी, डेविड बेकोवित्ज और रिचर्ड ट्रेंटन चैस—जैसे हत्यारों के बारे में कहा जाता है कि वे पिशाच ही थे। बुंडी तो

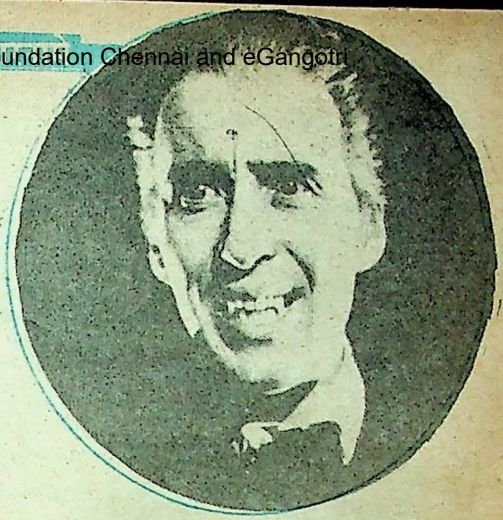

ब्रिटिश ड्रकुला : किस्टोफर ली

अपने शिकारों को जब काटता तो कहता था कि वह महसूस कर रहा है, जैसे वह पिशाच हो गया हो।

बेकोवित्ज के बेटे ने दावा किया उसे खून पीनेवाले राक्षसों ने जहर दे दिया है। इसी वजह से उसे हत्या करने की इच्छा होने लगती है। चेज तो अपने छह में से एक शिकार का खून यह सोचते हुए गटागट पी गया कि इससे उसके 'पाप धुल जाएंगे'।

१९८१ में जेम्स रीवा को मेसाचुसेट्स की अदालत ने आजीवन कारावास की सजा दी, क्योंकि उसने अपनी दादी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। जहां छर्रे लगे थे, उन्हीं में से रिसता लहू वह पी गया था। १९८२ में जेरीमूर ने शिकागो में अपनी गर्लफ्रेंड की हत्या कर दी ताकि उसमें अपार ताकत आ जाए। फ्लोरिडा में १९८५ में किसी युवती का एक व्यापारी ने अपहरण कर लिया और नस में घुसानेवाली सुई से उसका खून निकालने लगा और उसने उसे बताया भी कि वह पिशाच हो गया है। दो साल पहले तीन लड़कों ने मिन्नेसोटा के एक आदमी की हत्या कर दी। वे उसे पीटते जाते थे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके शरीर से निकले खून को चाटते जाते थे। एक लड़के ने तो कहा कि उसने चुड़ैलों पर आधारित फिल्म 'द लॉस्ट ब्वॉयज' से प्रेरणा ली है।

कुछ समय पूर्व कनाडा के एक जैव रसायन-शास्त्री ने चुड़ैलों के रहस्य को सुलझाने की कोशिश की, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। डेविड डोलीफिन ने १९८५ में यह कहा कि चुड़ैलों, पिशाचों की कहानियां शायद पोरफायरिया नामक रहस्यमय बीमारी के कारण चल निकली हैं। इसमें रोगी के खून में ऑक्सीजन ढोने वाली लाल रक्त कोशिकाओं का 'हीम' कम हो जाता है। डोलीफिन का कहना है कि इसके रोगियों ने अपने शरीर में हीम की कमी पूरी करने के लिए पागलों की तरह अपने 'शिकारी' का खून पिया होगा।

अब पोरफायरिया लाइलाज नहीं मगर पहले इसके रोगियों को सूरज की रोशनी पसंद नहीं आती थी। वे सिर्फ रात में निकलते थे क्योंकि दिन में उनकी त्वचा बदरंग हो जाती थी और उनके होंठ और दांत भिंच जाते थे।

एनी राइस कहती हैं, 'पिशाच एक रूमानी और आकर्षक खयाल है। पिशाच कभी नहीं मरता और जो जिंदा रहने के लिए दूसरों के खून पी जाता है...उसके सम्मोहन में लोग खिंचे चले आते हैं।' **—प्रस्तुति : प्रदीप पंडित**

एशियाई सिंह : 'दशक का प्राणी'

जूनागढ़ के ऐतिहासिक सक्करबाग चिड़ियाघर में वन्यजीवों के संरक्षण में चिड़ियाघरों की भूमिका पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें एशियाई सिंह को सर्वसम्मति से इस 'दशक का प्राणी' घोषित किया गया और इसकी संख्या वृद्धि को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी।

इस चिड़ियाघर को सन १८६३ में जूनागढ़ के नवाब ने गिर के सिंहों के प्रदर्शन एवं संभवतः प्रजनन के लिए छोटे पैमाने पर शुरू किया था। बाद में जब सिंहों की संख्या बहुत कम हो गयी तो इस चिड़ियाघर ने सिंह की नस्ल को बचाने के लिए प्रयास किया।

नीली ह्वेल विलुप्ता की कगार पर

पृथ्वी पर कभी भी जन्मे जीवों में सबसे बड़ा जीव नीली ह्वेल, आज अंतिम सांसें गिन रहा है। इंटरनेशनल व्हेलिंग कमिशन द्वारा आयोजित एक अध्ययन से पता चलता है कि इस महाकाय स्तनी जीव के केवल १२०० से १५०० प्राणी ही विश्वभर के महासागरों में जीवित बचे हैं। अंटार्क्टिका के चारों ओर के समुद्रों में दस वर्षों तक चले एक सर्वेक्षण में केवल इतनी ही नीली ह्वेले गिनी गयीं।

यह अध्ययन इस दृष्टि में निराला है कि इसमें ह्वेलों की संख्या ज्ञात करने के लिए ह्वेलों को गिना गया। इससे पहले, ह्वेलों का शिकार करनेवाले जहाजों द्वारा मारी गयी ह्वेलों के आधार पर उनकी संख्या का अनुमान किया जाता था। यह अनुमान सचाई के बहुत निकट नहीं होता था। नीली ह्वेलों की यह दयनीय स्थिति दो दशक से इसे कड़ाई से संरक्षित किये जाने के बावजूद है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाय बीवी !

• डॉ. अर्चना चतुर्वेदी

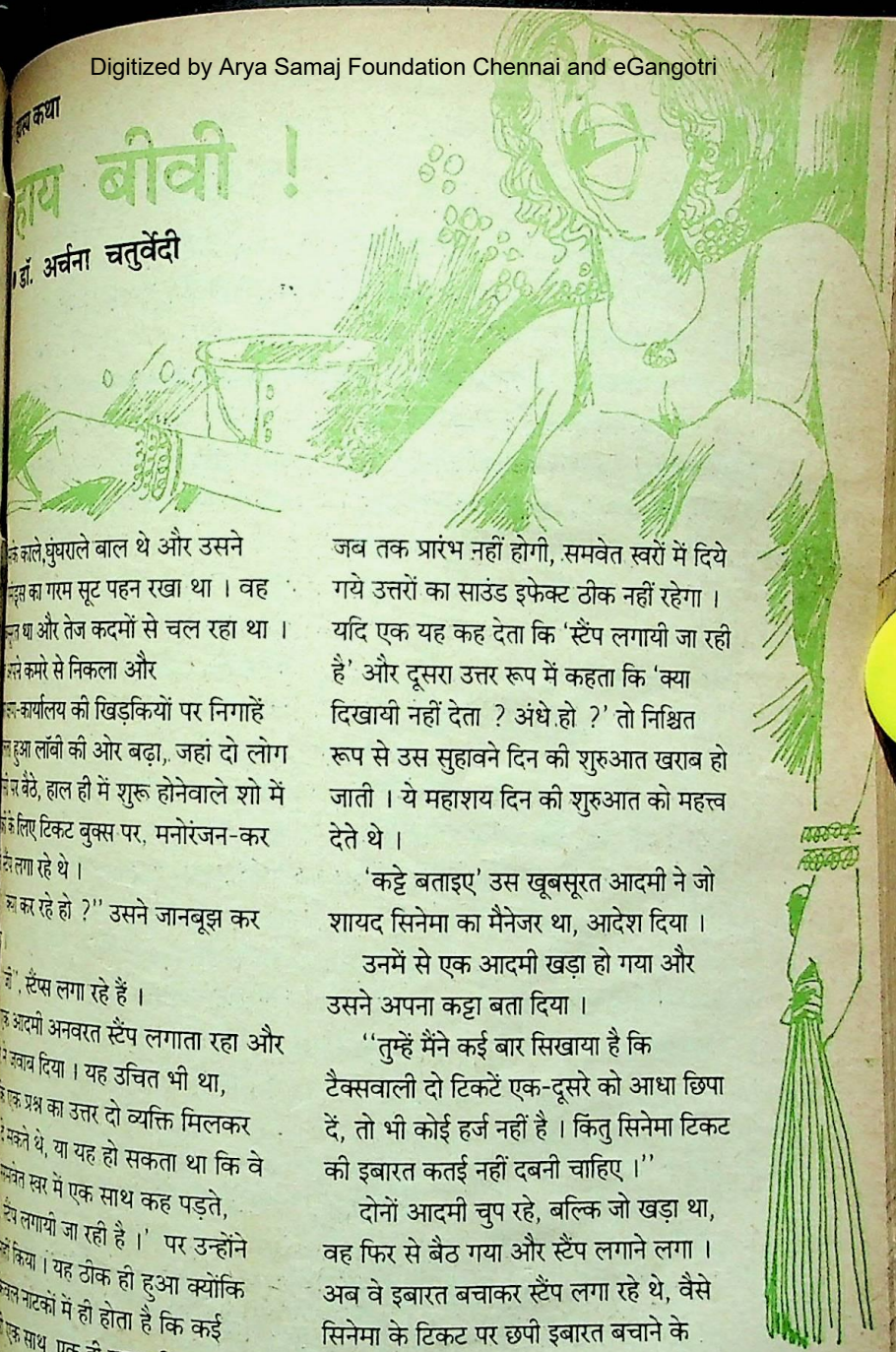

...के काले,घुंघराले बाल थे और उसने ...सूट का गरम सूट पहन रखा था । वह ...था और तेज कदमों से चल रहा था । ...अपने कमरे से निकला और ...कार्यालय की खिड़कियों पर निगाहें ...हुआ लॉबी की ओर बढ़ा, जहां दो लोग ...पर बैठे, हाल ही में शुरू होनेवाले शो में ...के लिए टिकट बुक्स पर, मनोरंजन-कर ...लगा रहे थे ।

"...कर रहे हो ?" उसने जानबूझ कर ...

"...", स्टैंप्स लगा रहे हैं ।

...आदमी अनवरत स्टैंप लगाता रहा और ...जवाब दिया । यह उचित भी था, ...एक प्रश्न का उत्तर दो व्यक्ति मिलकर ...सकते थे, या यह हो सकता था कि वे ...समवेत स्वर में एक साथ कह पड़ते, ...स्टैंप लगायी जा रही है ।' पर उन्होंने ...किया । यह ठीक ही हुआ क्योंकि ...नाटकों में ही होता है कि कई ...साथ, एक ही वाक्य चिल्ला पड़ते ...में डायलॉग रटकर बोलने की प्रथा जब तक प्रारंभ नहीं होगी, समवेत स्वरों में दिये गये उत्तरों का साउंड इफेक्ट ठीक नहीं रहेगा । यदि एक यह कह देता कि 'स्टैंप लगायी जा रही है' और दूसरा उत्तर रूप में कहता कि 'क्या दिखायी नहीं देता ? अंधे हो ?' तो निश्चित रूप से उस सुहावने दिन की शुरुआत खराब हो जाती । ये महाशय दिन की शुरुआत को महत्त्व देते थे ।

'कट्टे बताइए' उस खूबसूरत आदमी ने जो शायद सिनेमा का मैनेजर था, आदेश दिया ।

उनमें से एक आदमी खड़ा हो गया और उसने अपना कट्टा बता दिया ।

"तुम्हें मैंने कई बार सिखाया है कि टैक्सवाली दो टिकटें एक-दूसरे को आधा छिपा दें, तो भी कोई हर्ज नहीं है । किंतु सिनेमा टिकट की इबारत कतई नहीं दबनी चाहिए ।"

दोनों आदमी चुप रहे, बल्कि जो खड़ा था, वह फिर से बैठ गया और स्टैंप लगाने लगा । अब वे इबारत बचाकर स्टैंप लगा रहे थे, वैसे सिनेमा के टिकट पर छपी इबारत बचाने के योग्य नहीं थी । आनेवाले दर्शक अभी इन्हें खरीदेंगे और गेटकीपर इन्हें फाड़ देगा । कहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह एक खूबसूरत युवक था—एक सिनेमा हॉल का मैनेजर। साफ-सफाई पसंद, अनुशासन-प्रिय। सबको डांटने-फटकारनेवाला। लेकिन एक जगह उसे पराजित होना पड़ता था। कहां. . . ?

हैं कि बस की टिकटें और सिनेमा की टिकटें ऐसी ही नियति के लिए अभिशप्त हैं।

मैनेजर आगे बढ़ गया और गलतियां ढूंढ़ने के अंदाज में तेज निगाहों से इधर-उधर ताकने लगा। तभी उसकी निगाह आरक्षण कार्यालय पर गयी और वह उसमें घुस गया। एक टिकट इश्यू करनेवाले से उसने कहा, 'तुम अपनी चेयर विंडो से थोड़ी दूर क्यों नहीं रखते ?' दूसरे से उसने कहा, 'तुमने वह अलमारी खुली क्यों छोड़ रखी है ?' तीसरे से उसने कहा, 'जरा देखकर नोट लेना, कहीं कटे-फटे, खराब नोट ले लोगे, तो मैनेजमेंट जिम्मेदार नहीं होगा, तुम बहुत गड़बड़ काम करते हो।'

सभी टिकट बेचनेवाले चुप रहे और मैनेजर अपने प्रश्नों को लाजवाब समझकर बाहर निकल गया, उसने गेटकीपर को टोका, 'तुमने आज इतनी मैली वरदी क्यों पहन रखी है ?'

मैनेजर की यह खूबी थी कि वह प्रश्नों के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही प्रश्न पूछता हुआ आगे बढ़ रहा था। मुझे लगा कि अंत में यह आदमी लौटेगा और लौटते समय सारे सवालों के जवाब एकत्रित करता हुआ फाइल में टैग कर देगा। वह तेज कदमों से बढ़ रहा था। एकाएक तेज आवाज में माली पर गरजा, "क्यों भाई, इस गमले में फूल नहीं आ रहे हैं ? उसके पत्ते क्यों सूख रहे हैं। इतने गमले ख[illegible] क्यों पड़े हैं ? फलां कैक्टस का गमला बेतरतीब क्यों रखा है ?"

माली ने थोड़ी देर के लिए काम रोक दि[illegible] और प्रतीक्षा करने लगा कि इनका भाषण ख[illegible] हो, तो वह काम का सिलसिला आगे बढ़ाये [illegible] पर मैनेजर वहां खड़ा नहीं रह सका। जहां [illegible] हरियाली के रख-रखाव में इतनी गलतियां [illegible] वहां मैनेजर का रुकना नामुमकिन था। ऐसा लग रहा था कि यह मैनेजर आज कहीं से दिव्य-दृष्टि लेकर आया है और आज इस 'पिक्चर हॉल' की तमाम गलतियों का पर्दा[illegible] कर डालेगा।

स्वीपर से उसने कहा, "क्यों भई, टॉयले[illegible] से बदबू क्यों आ रही है ? फिनायल क्यों [illegible] डालते ? डी-ओडोए की टिकिया बदल दो [illegible] फर्श शीशे की तरह चमक क्यों नहीं रहा ?[illegible] . . . मैं अमरीका गया था वहां का फर्श इत[illegible] चिकना था कि वहां एक अमरीकन औरत [illegible] पर चारों खाने चित्त गिर पड़ी थी। फर्श [illegible] कम इतना चिकना तो होना ही चाहिए कि दो-चार लोग फिसलकर गिर पड़ें।"

स्वीपर से निपटने के बाद मैनेजर उस [illegible] में गया जहां बोर्ड और पोस्टर्स पेंट हो रहे [illegible] वह पेंटर पर बिगड़ा, "क्यों भई, इतनी [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ने स्पैलिंग्स गलत लिखी है और मैटिनी शो ...टाइम गलत लिख दिया है । आओ तुम्हें ...ताऊं कैसे लिखना है ।''

पेंटर को लेकर वह बाहर आया और पिछले ...र्ड एवं पोस्टर्स दिखाने लगा, तब तक बुकिंग ...डो पर इतना लंबा क्यू लग गया कि उसने ...टर को छोड़ा और क्यू में खड़ी औरतों और ...दमियों पर नजर फेंकी ।

''क्यों भई, क्या बात है ? बालकनी और ...क्स की लाइनें मिल क्यों रही हैं ? ठीक से ...ड़े होइए ।''

वह लगभग हर काम में गलतियां बताता ...ा एक तीर की तरह सबके कलेजों में चुभ ...ा था । चाय खराब बनाने के लिए उसने ...टीन इंचार्ज को डांटा । पानवाले से कहा, ...पना ट्रांजिस्टर जरा स्लो रखा करिए । 'ही ...' के स्थान पर श्रीदेवी और हेमामालिनी की ...वीर लगाओ ।'

कैंपस में जहां कुछ कंस्ट्रक्शन चल रहा था, ...ने रेत छाननेवाले मजदूर को घुड़का कि वे ...पने छननेवाली जाली का डायरेक्शन बदले, ...कि रेत न उड़ने पाये । यहां तक कि उसे ...ान की अकल पर भी तरस आने लगा कि ...ो पिक्चर हॉल के आकाश को बेमौसम ...दलों ने घेर लिया है ।

वह हर किसी को डांट-फटकार रहा था उसे ...मा घर के प्रबंध में गलतियां ही गलतियां ...र आ रही थीं । मुझे डर लगने लगा कि ...र यही हाल रहा, तो यह खूबसूरत यंगमैन ...िया से तंग आकर कहीं वैराग्य न ले ले । ...तु ऐसा नहीं हुआ । वैराग्य की स्थिति आने ...कुछ मिनट पूर्व ही उसे अपने घर की याद आ गयी और वह कैंपस में ही स्थित अपने फ्लैट में चला गया ।

उसकी पत्नी ब्लाउज-पेटीकोट पहने बाल्टी के पानी से किचन का फर्श धो रही थी ।

वह चीखा, ''रहीं न तुम गंवार की गंवार, इतने नौकर-चाकर हैं । तुम उनसे काम क्यों नहीं लेती ? क्या रूप बना रखा है तुमने ? सिर में कंघी नहीं है । पेटीकोट इतना गंदा है । ब्लाउज फटी है । देखती हो पड़ोसी की बीवी का पेटीकोट साफ-सुथरा, कढ़ा हुआ तथा फ्रिलवाला है और तुम्हारा. . . ? उसकी ब्लाउज कढ़ी हुई, शीशेवाली ।''

मैनेजर की पत्नी ने हाथ की बाल्टी जमीन में धर मारी और चिल्लायी—''पड़ोसी की बीवी का पेटीकोट । साफ-सुथरा । कढ़ा हुआ । फ्रिलवाला । बदतमीज । तूने कब देखा । उसकी ब्लाउज, कढ़ी हुई, शीशेवाली—तुझे कैसे पता ?''

मैनेजर की बोलती बंद हो गयी । मारे गुस्से के उसकी पत्नी ने बाल्टी का तमाम गंदा पानी मैनेजर के ऊपर उलीच दिया और उस खूबसूरत, यंगमैन को सूट सहित आपादमस्तक भिगो दिया । उसका रेमंड्स का सूट, घुंघराले काले बाल, चमचमाते जूते, यहां तक कि मुंह भी गंदा कर दिया ।

मैं हंसने लगी । वाह । क्या होली खेली ? सबकी गलतियां ढूंढ़नेवाले को कैसी मात दी ।

— ए-१७८ जे एंड के पॉकेट
दिलशाद गार्डन, दिल्ली—९५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

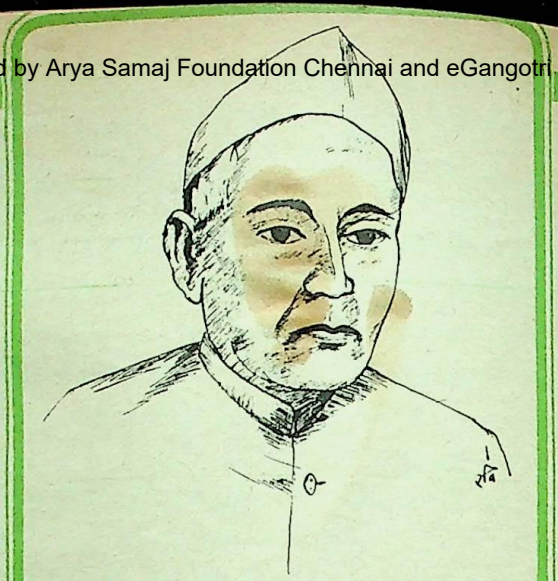

स्व. रामनरेश त्रिपाठी

हम तो अचल रहेंगे, तूफान में प्रलय में

● अखिलेश अरुण

पं. रामनरेश त्रिपाठी द्विवेदी युग के अग्रणी रचनाकार थे। उनका जन्म ४ मार्च, १८८९ को उत्तर प्रदेश के जौनपुर (संप्रति, सुलतानपुर) जिले के कोइरी पुर ग्राम में हुआ था। उन्होंने साहित्य की कई विधाओं में बहुमूल्य योगदान किया। 'कविता विनोद' और 'मानसी'-जैसे मुक्तक-काव्यों; 'मिलन', 'पथिक' और 'स्वप्न'-जैसे प्रबंध-काव्यों; 'तरकस' तथा 'आंखों देखी कहानियां'-जैसे कहानी-संग्रहों; 'वीरांगना', 'वीरबाला', 'सुभद्रा'-जैसे उपन्यासों; 'जयंत', 'प्रेमलोक', 'वफाती चाचा', 'पैसा परमेश्वर', 'बा और बापू'-जैसे नाटकों; 'स्वप्नों के चित्र'-जैसे व्यंग्य-रचना; 'पृथ्वीराज चौहान', 'पद्मावत', 'आल्हा रहस्य', 'सेठ जमनालाल बजाज'-जैसे चरित-ग्रंथों तथा 'मारवाड़ के मनोहर गीत', 'घाघ और भड्डरी', 'सोहर', 'हमारा ग्राम-साहित्य' तथा 'ग्राम-साहित्य' (तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...)-जैसे लोक-साहित्य की अमूल्य पुस्तकों ...विता के रूप में तो वे जाने ही जाते हैं, ...के साथ ही अपने महत्त्वपूर्ण संकलनों और ...दनों के लिए भी उन्हें सदा याद किया ...। उन्होंने कविता 'कौमुदी' (छह भाग), ...की विनय-पत्रिका', 'रहीम', ...', 'सुकवि कौमुदी'-जैसे ग्रंथों का ...दन तो किया ही 'कवि कौमुदी', 'बानर', ...'-जैसी पत्रिकाओं के संपादक के रूप में ...उन्हें याद किया जाता है । अतिरिक्त इसके, ...वाङ्मय, 'गांधी ताश : जवाहर पत्ता', ...प्राइमर'-(दो भाग), 'हिंदी ज्ञानोदय ...भाग), 'कन्या बोधिनी' (पांच भाग), ...कथा-कहानी' (बारह भाग), 'भय बिन ...न प्रीति', 'मौत के सुरंग की कहानी', 'नेता ...', 'बताओ तो जाने', 'हंसू की हिम्मत', ...इतिहास ('हिंदी का संक्षिप्त इतिहास', ...बोली की कविता का संक्षिप्त परिचय', ...जबान का संक्षिप्त इतिहास), समालोचना ...दास और उनकी कविता-(दो भाग), ...और उनका काव्य'), टीका ('भूषण ...वली', 'श्रीरामचरितमानस', ...-मंगल', 'सुदामा-चरित', 'शिवा ...'), भाषा ('पद्य प्रबोध', 'हिंदी शब्द-कल्पद्रुम', 'हिंदुस्तानी कोश', 'हिंदी मुहावरे'), संस्कृति ('हिंदी महाभारत', 'मानस के पांच पात्र', 'मिट्टी के सुखदायक घर और नमूने का गांव'), यात्रा-वृत्तांत (उत्तरी ध्रुव की भयानक यात्रा), संगीत (अभिनव संगीत) आदि के क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदानों के लिए उनका स्मरण किया जाना तो बहुत ही स्वाभाविक है ।

इस प्रकार अपने विपुल साहित्य-सृजन और संपादन-संकलन के आधार पर त्रिपाठीजी संपूर्ण आधुनिक हिंदी साहित्य के रचनाकारों में विशिष्ठ स्थानीय ठहरते हैं । प्रख्यात आलोचक पं. रामचंद्र शुक्ल ने इनकी कविता-धर्मिता के विषय में अपने प्रसिद्ध इतिहास ग्रंथ में लिखा है— **'त्रिपाठीजी का नाम भी खड़ी बोली के कवियों में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है । भाषा की सफाई और कविता के प्रसाद-गुण पर इनका बहुत जोर रहता है । काव्य क्षेत्र में जिस स्वाभाविक स्वच्छंदता (रोमैंटिसिज्म) का आभास पं. श्रीधर पाठक ने दिया था, उसके पथ पर चलने वाले द्वितीय उत्थान में त्रिपाठीजी ही दिखायी पड़े ।'—(पृ. ४२६)**

जिस समय त्रिपाठीजी ने हिंदी साहित्य-क्षेत्र में पदार्पण किया उस समय हिंदी खड़ी-बोली साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश ले रही थी और

स्व. रामनरेश त्रिपाठी : जिन्हें नेहरूजी 'स्वराज्य की लड़ाई का एक आला सिपाही' मानते थे । उन्होंने अपनी राष्ट्रभक्तिपूर्ण कविताओं के माध्यम से गांधीजी के सत्याग्रह को प्रबल बनाया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास के मार्ग ढूंढ़ रही थी । त्रिपाठीजी ने हिंदी का मार्ग प्रशस्त करने के ख्याल से साहित्य के साथ-साथ अन्य ज्ञान-विज्ञान और कला के अनुशासनों में कुछ ऐसी पाठ्य-पुस्तकें तैयार कीं, जिनकी तब घोर कमी महसूस की जा रही थी । 'देश का दुखी अंग' (राजनीति से संबद्ध), विज्ञान से संबंधित 'आकाश की बातें' और 'योग के आसन' इस दृष्टि से उनकी महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं । त्रिपाठीजी को अपने राष्ट्र और अपनी संस्कृति से बेहद लगाव था ।

एक आला सिपाही

पं. जवाहरलाल नेहरू तो उन्हें 'स्वराज्य की लड़ाई का एक आला सिपाही' ही मानते थे । उन्होंने अपनी राष्ट्रभक्तिपूर्ण कविताओं के माध्यम से गांधीजी के सत्याग्रह को प्रबल बनाया । एक तरह से उनका अधिकांश काव्य राष्ट्र की मंगल-भावना का उद्‌बोधक है । आचार्य रामचंद्र शुक्ल की उनके संबंध में उक्ति 'देशभक्ति को रसात्मक रूप त्रिपाठीजी द्वारा प्राप्त हुआ' अक्षरशः सत्य प्रतीत होती है । उनके गीत 'छूटे स्वदेश ही की सेवा में तन हमारा' और 'वह देश कौन-सा है ?' की पंक्तियां द्रष्टव्य हैं—

धुन एक ध्यान में है विश्वास है विजय में
हम तो अचल रहेंगे तूफान में प्रलय में
कैसे उजाड़ देगा कोई चमन हमारा ?

और—

विद्वान, वीर, योगी, गुरु राजनीतिकों के
श्रीकृष्ण थे जहां पर, वह देश कौन-सा है ?

इस प्रकार भारतवर्ष के गौरवशाली अतीत का चित्रण और पराधीन भारत में अंगरेजों के झुलसते वर्तमान तथा स्वतंत्र भारत के समृद्ध भविष्य के शब्द-चित्रों से त्रिपाठीजी का काव्य ओत-प्रोत है ।

त्रिपाठीजी गांधीजी के सत्य और अहिंसा से काफी प्रभावित थे । वे सांप्रदायिक सद्‌भाव और पारस्परिक प्रेम के हिमायती थे । सन १९२० में लिखी गयी 'गांधीजी कौन हैं ?' नामक अपनी पुस्तक में त्रिपाठीजी ने अपना एक प्रसिद्ध सत्याग्रह-गीत दिया है—

सत्य कहने से न रुकती जीभ है
कांपते क्यों हो ? इसे ही काट लो
मैं कलम हूं, एक मेरी जीभ से
क्या करोगे जब बढ़ेंगी सैकड़ों

यह बहुत कम लोगों को मालूम है कि 'हे प्रभो ! आनंददाता ज्ञान हमको दीजिए' नामक प्रसिद्ध प्रार्थना त्रिपाठीजी की ही लिखी हुई है ।

वे संकलन और संपादन के क्षेत्र की एक अद्वितीय हस्ती थे । उनके द्वारा संपादित 'कविता कौमुदी' हिंदी जगत की एक महत्त्व एवं अविस्मरणीय घटना मानी जाती है । उन्हें छह भागों में इसका संपादन किया—हिंदी (भारतेंदु पूर्व), हिंदी : आधुनिक, संस्कृत, ग्रामगीत और बांगला । इसमें उन्होंने अपने जीवन के कोई सत्रह साल खपा दिये थे । इस संपादन के पीछे त्रिपाठीजी के कई महत् उद्देश्य रहे—हिंदी साहित्येतिहास लेखन की दिशा एक विनम्र प्रयास, हिंदीतर कवियों से पत्रों का साक्षात्कार तथा कुल मिलाकर एक एतिहासिक अनुष्ठान की परिपूर्ति ग्राम्य संस्कृति के पुरोधा त्रिपाठीजी का मन गांवों में अधिक बसता था । वे सही अर्थों में गांवों को भारत की आत्मा मानते थे । त्रिपाठीजी ने ग्राम्य संस्कृति और भारतीय लोक-जीवन की संस्था के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

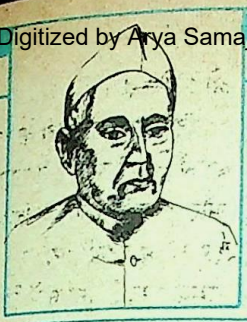

पंथ दुर्गम दूर मंजिल
तू अकेला क्या हुआ
राह चूमेगी चरण
अभियान करना चाहिए

...तपस्या और बलिदान किया उसी के ...स्वरूप 'कविता कौमुदी' का ग्राम-गीतवाला ...खंड, 'मारवाड़ के मनोहर गीत', 'घाघ ...घाघ घुड़ी', 'सोहर', 'हमारा ग्राम-साहित्य' ...ग्राम-साहित्य' (तीन भागों में) आदि हैं। ...वैदिकोत्तरयुगीन हिंदी साहित्य के अमूल्य ...है। इस कार्य में त्रिपाठीजी ने अपने ...के कोई पच्चीस-तीस वर्ष होम कर ...त्रिपाठीजी ग्रामीणों की संवेदना, उनकी ...सरलता, उनके भोलेपन, उनकी निश्छलता ...भावुकता को मानो साकार कर लेना चाहते ...गीतों में बिखरे मौखिक साहित्य को ...कर उन्होंने भारतीय आत्मा का एक समग्र ...उजागर किया। ग्राम-गीतों की ओर ...लोगों का ध्यान कैसे गया, इस संदर्भ में ...प्रसिद्ध वाक्या है, जिसे स्वयं त्रिपाठीजी ने ...कहकर भी किया है : सन १९२४ में एक बार ...ट्रेन से जौनपुर जाते हुए भन्नैर स्टेशन पर ...डिब्बे में कुछ ग्रामीण चढ़े। वे संभवतः ...देश के लिए कलकत्ता जा रहे थे। ...मर्दों को विदा करने जो स्त्रियां स्टेशन ...थीं, गाड़ी छूटने से कुछ पहले वे सब रोने ...। कुछ औरतें अपने मर्दों के साथ जा भी ...थीं, वे गाड़ी में गाने लगीं—

...घुड़ गड़ मोर सवतिया
...के लागि लेड़ गड़ हो

रेल की तुलना 'सौत' से होती सुनकर त्रिपाठीजी रस-सिक्त होकर सुदूर अतीत के कवि रहीम के 'बरवा' तक गोता मार गये, किंतु उन्हें वहां भी ऐसी कोई मार्मिक उपमा न मिली। वे ग्राम-गीतों की सहजता, मार्मिकता और काव्यमयता के कायल बन गये और फिर तो ग्राम-गीत संग्रह के लिए गांव-गांव की खाक छानी, धूल फांकी और 'बरसात के कीचड़ से कमल निकालने' जैसे इस कार्य में बिना अपनी तबीयत की चिंता किए जुट गये। त्रिपाठीजी ने ग्राम्य-गीत और ग्राम्य-जीवन पर तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में कई लेख भी लिखे।

त्रिपाठीजी ने 'ग्राम-गीत' की जगह 'लोक-गीत' के प्रयोग को अनुचित ठहराया। 'कविता कौमुदी' (ग्राम-गीत) में उन्होंने स्पष्ट लिखा है—'ग्रामीणों ने बिना किसी याचना और बिना किसी स्वार्थ की प्रेरणा से समाज को जो साहित्य प्रदान किया है, उसके साथ उसका 'ग्राम' शब्द अवश्य लगा रहना चाहिए। यह उनकी एक मधुर स्मृति है और हमारी कृतज्ञता की द्योतक भी है।'

त्रिपाठीजी ने **पंथ दुर्गम दूर मंजिल, तू अकेला क्या हुआ, राह चूमेगी चरण अभियान करना चाहिए,** के सिद्धांत के साथ यह लंबी गीत-यात्रा शुरू की। अपनी सच्ची लगन, निष्ठा, धैर्य और साहस के कारण वे उक्त महान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुष्ठान के पुरोधा बन गये ।

सन १९२५ में सुलतानपुर जिले में प्रचलित दो जौत के गीतों को 'सरस्वती' में अर्थ सहित छपवाकर त्रिपाठीजी ने अपनी यह महान यात्रा प्रारंभ की । वे सन १९२५ से १९२९ तक प्रयाग, जौनपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, मिर्जापुर, सुलतानपुर आदि जिलों में घूम-घूमकर गीतों का संग्रह करते रहे । इस बीच 'मधुमेह' के शिकार भी हुए, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी । गीत-संग्रह में उन्हें जो कष्ट झेलने पड़े, वे अनुमान करने मात्र से बदन सिहरा देनेवाले हैं । घर के पिछवाड़े गंदे में बैठकर गीत लिखना, रोपनी के समय खेतों की मेड़ों पर बैठकर गीत लिखना, रात में ईंख के कोल्हू के निकट बैठकर गीत लिखना आदि की दुष्करता समझी जा सकती है । कुछ साहित्यिक मित्रों तथा कुछ ग्रामीण-मित्रों ने भी उनके पास चंद गीत लिखकर भेजे । कतिपय ग्रामीणों ने तो गीत कम ही भेजे, पैसे ज्यादा ऐंठे और उनके कुछ मित्र भी वायदे करके उन्हें नचाते रहे । इस संदर्भ में बाबू जयशंकर प्रसाद को याद कराने हेतु लिखा गया त्रिपाठीजी का एक पत्र उल्लेखनीय है—

प्रिय प्रसादजी, आपसे मिले न अब तक गीत
डाक देखते थक गया, गये बहुत दिन बीत

ग्राम-गीत संग्रह के दौरान त्रिपाठीजी ने हिंदी प्रदेशों के अलावा महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रदेशों का भी भ्रमण किया और सैकड़ों मराठी, गुजराती ग्राम-गीत इकट्ठे किए । उन्होंने गुजरात के द्वारका, जामनगर, राजकोट, पोरबंदर, सोमनाथ, जूनागढ़, गिरनार, गोंडल, मांडवी आदि जगहों से ग्राम-गीतों का संचयन किया। राजस्थान में ग्राम-गीत-संग्रह के दौरान उन्हें पिलानी में घनश्यामदासजी बिड़ला से चार हजार रुपये की आर्थिक मदद भी मिली। उन्होंने कश्मीर जाकर वहां से भी गीत इकट्ठे किये । ग्राम-गीतों के संग्रह के दरम्यान उन्हें यह महसूस किया कि 'एक ही आत्मा भिन्न-भिन्न भाषाओं में बोल रही है ।'

त्रिपाठीजी द्वारा भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित विविध प्रकार के कोई दस-बारह हजार गीतों के संग्रह रूपी इस सांस्कृतिक कार्य के लिए देश के तमाम विद्वानों, विशिष्ट व्यक्तियों और साहित्यकारों ने उन्हें साधुवाद दिया । इनमें बापू और गुरुदेव सहित, महामना मालवीयजी, लाजपतराय, डॉ. गंगानाथ झा, राजेन्द्र बाबू, डॉ. सुनीति कुमार आदि विशेष उल्लेख्य हैं । त्रिपाठीजी के इस 'यज्ञ' की सुगंधि देश के बाहर भी गयी । उनके द्वारा संकलित ग्राम-गीतों पर आधारित एक अध्ययन रॉयल एशियाटिक सोसायटी में भी पढ़ा और विचारित किया गया । इस ग्राम-गीत संग्रह रूपी अनुष्ठान के लिए डॉ. सुनीति कुमार ने कहा कि यह 'निखिल भारत के साहित्य का गौरव

१२ जनवरी, १९६२ को प्रयाग में 'सरस्वती' के हीरक जयंती समारोह में उपस्थित होकर त्रिपाठीजी ने हिंदी जगत के सम्मान को प्रेमपूर्वक स्वीकार किया । इसके बाद वे कुछ अस्वस्थ हो गये । १६ जनवरी, १९६२ को प्रातः साढ़े छह बजे हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रांगण स्थित सत्यनारायण कुटीर में लोक-साहित्य और संस्कृति के इस महान साधक ने सदा के लिए विश्राम ले लिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प। —संपादक

१. यदि शिक्षक के पास ३०० संतरे और होते तो स्कूल के सभी छात्रों को १००० संतरे बांट दिये जाते और ३० संतरे बच रहते। बताइए, शिक्षक के पास कुल कितने संतरे थे?

२. **सौरमंडल** का कौन-सा ग्रह है जो पृथ्वी के सबसे निकट है और जो अन्य ग्रहों की अपेक्षा पृथ्वी से कुछ बातों में अधिक मिलता है? उसे 'भूमि पुत्र' भी कहा जाता है।

३. क. **भारत** के विदेशी मुद्रा कोष में सबसे अधिक गिरावट किस वर्ष आयी है?

ख. विगत दो वर्षों के अंत में विदेशी मुद्रा कोष के आंकड़े क्या रहे हैं?

४. क. **एशिया** की पहली भूगर्भीय पनबिजली परियोजना कहां चालू हुई है?

ख. इसकी विशेषता क्या है?

५. **जेट** विमान का संचालन करनेवाली विश्व की सबसे कम उम्र की महिला पायलट कौन है?

६. क. **किस** व्यक्ति ने राजधानी में चिल्ड्रेंस बुक ट्रस्ट तथा इंटरनेशनल डोल्स म्यूजियम की स्थापना की थी?

ख. उसने किस रूप में भारी ख्याति अर्जित की थी?

७. क. **देश** में गत वर्ष के अंत में किस जगह प्राकृतिक गैस का नया भंडार मिला है?

ख. विगत दिसंबर में भारत के किस नगर की हजारवीं वर्षगांठ मनायी गयी?

८. क. **भारत** तथा किस अन्य देश के बीच 'वीसा' व्यवस्था समाप्त करने पर हाल में सहमति हुई है?

ख. गत वर्ष के अंत में किस सिलसिले में 'जर्ब-ए-मोमिन' नाम का जिक्र हुआ था?

९. **अमरीका** के किस राष्ट्रपति ने कम्युनिस्ट चीन के साथ संबंध कायम रखने का सूत्रपात किया था?

१०. **देश** में किस मंदिर को 'चूहों वाला मंदिर' कहा जाता है, जहां सुबह-शाम आरती के समय चूहे दूध, अनाज, मिठाई आदि का भोग लगाते हैं?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

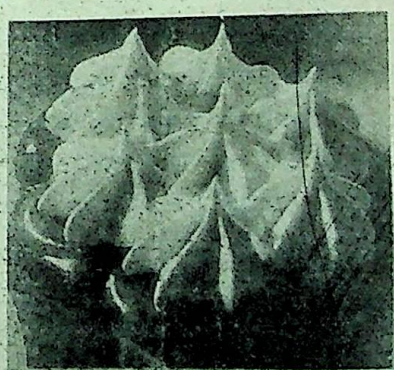

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

अपना-अपना मोर्चा

● डॉ. रश्मि मल्होत्रा

आज शुचि के पास क्या नहीं है ? दुनियाभर के सभी सुख तो ईश्वर ने उसकी झोली में डाल रखे हैं । पति-पत्नी की हर शाम महफिलों और कॉकटेल पार्टियों में गुजरने लगी है । जब भी वह तैयार होकर निकलती आसपास के फ्लैट्स से कई आंखें केवल उन्हीं पर होतीं । अच्छा फ्लैट, कार, सुख-सामग्री के सभी साधन सुमीत ने कितनी जल्दी अपनी घर-गृहस्थी के लिए जुटा लिये हैं, सभी की जुबान पर यही बात होती । शायद उन्हें शुचि की जिंदगी से रश्क होता होगा ।

मगर शुचि जब हर शाम सज-धजकर दहलीज के बाहर पांव रखती तो अपना एक मुखौटा उतारकर घर के किसी एक कोने में सम्हाल आती और दूसरा मुखौटा चढ़ा आती जो देखने में बेहद-खुशनुमा होता । बाहर के हंसते, मुसकराते चेहरे ही सजते हैं न ? कोई की नाईं, जिस्म पर रेशमी लिबास में अपने को लिपटा, अंदर से स्वयं को कितना घुटता हुआ महसूस करती शुचि । एक से एक बढ़ कर सुंदर लिबास हैं उसके पास । इसका उसे पता भी है कि उसके पति ने दो सालों में ही पिछले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर इसमें सुमीत का भी क्या दोष था ? वह तो शादी के बाद की दस वर्षों की कमियां पूरी करने में ही जुटा हुआ था । भौतिक सुख उसकी कमजोरी थी, जिनके पीछे वह भाग रहा था । इस दौड़ में उसे फुरसत कहां थी कि एक टूटती हुई, बीमार जिंदगी को बचा सके । उसके अहं को चोट पहुंचानेवाले, उससे आगे निकल जानेवाले हर व्यक्तित्व को टूटते देख कर ही तो उसे संतुष्टि होती । अपनी समझ से वह कुछ बुरा नहीं कर रहा था, वह तो केवल हिसाब मांग रहा था—अपनी सामर्थ्य का, अपनी लियाकत का और अपने द्वारा जुटायी गयी एक-एक सुख-सामग्री का ।

दस सालों का हिसाब चुकता कर दिया है । कई दर्जन, सैकड़ों साड़ियां अपने हाथों अपनी ही पसंद की ले लेकर दी हैं सुमीत ने । पूरे दस साल, वह भी तो शुचि के साथ-साथ तरसता रहा है अपने बीवी-बच्चों को अच्छा, नये-से-नये फैशन का कपड़ा और अच्छे से अच्छा खाना खिलाने के लिए । शुचि के मन में कहीं एक कसक-सी तो रहती पर प्रकट रूप में कभी उसने सुमीत को कोई उलाहना नहीं दिया कभी, कोई मांग नहीं रखी अपनी ।

सुमीत अपनी तरफ से पूरी कोशिश करता कि आर्थिक कमी को भरपूर-प्यार दे के पूरा कर दे । थोड़े में भी शुचि बहुत खुश थी, अपनी छोटी-पूरी गृहस्थी में । सुमीत बड़े प्यार से सम्हाले हुए था, समेटे हुए था । पति-पत्नी जैसे मिलते-जुलते, व्यावहारिकता निभाते । पर आज जब सब कुछ है उसके पास, तो सुमीत को अपने भौतिक सुखों से इतनी भी फुरसत नहीं है कि व्यावहारिक तौर-तरीके अपनाये । जब से उसे आफिस में ऊंचा ओहदा मिला है, उतनी ही व्यस्त हो गयी है उसकी जिंदगी । वह बेचारा सब से कटकर रह गया है । रिश्तेदारों से, मित्रों से, यहां तक कि शुचि से भी । कभी-कभी तो नौबत यहां तक पहुंच जाती है कि हफ्तों जरूरत के दो-चार वाक्यों के सिवा बात तक करने का समय नहीं होता उसके पास । कभी शुचि बच्चों की या घर की किसी समस्या को भी उसके सामने रखने के लिए जुबान खोलती तो उसी वक्त सुमीत समय की कमी का वास्ता देकर उसे चुप करा देता । बेचारी कटकर रह जाती । अब तो उसने घर-बाहर की सभी जिम्मेदारियां अपने ही सिर पर ले ली थीं ।

शुचि स्वयं को व्यस्त रखने का एक न एक बहाना ढूंढ़ती ही रहती । सुबह बच्चों के स्कूल जाने के बाद के ६-७ घंटे उसे अकेले ही व्यतीत करने होते । उसमें कितना भी काम करे, पुस्तकें पढ़े, फिर भी समय बच जाता और उधर शाम होते ही जब बच्चे खेलने निकल जाते तो शुचि फिर अकेली पड़ जाती । उसने स्वयं ही अपनी इस छटपटाहट से निजात पाने की कोशिश की । एक तो वह सप्ताह में एक-दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

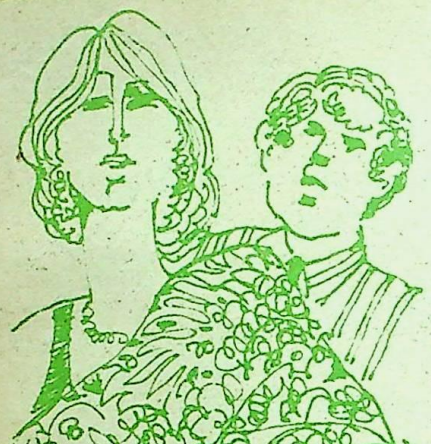

दिन अपनी कॉलेज की सहेलियों से मिलने के लिए निकल पड़ती, दूसरे उसकी रुचि काव्य रचना में जो पहले से ही थी थी उसको पुनः जीवित होने का अवसर मिल गया । जिंदगी की तपती दोपहरी में काव्य-संरचना के क्षण घनी छाया का कार्य करते । यथार्थ की कठोरता से घबराकर वह कल्पना की ममतामयी गोद में सिर रखकर थोड़ी राहत महसूस करती ।

लिखने का सिलसिला तो लगभग शादी से पहले ही शुरू हो चुका था (पर शादी के बाद उसने अपना संसार पति, बच्चों और घर तक ही सीमित कर दिया था । वह भूल ही चुकी थी एक तरह से कि वह भी कुछ रचनात्मक कार्य कर सकती है) दिन-रात, चुपचाप वह किसी कल्पनामयी दुनिया में ही खोयी रहती थी । कॉलेज की सभी फ्रेंड्स उसे स्वप्नमयी कहकर ही पुकारती थीं । यथार्थ के छोटे-मोटे झटके लगते भी थे तो उसे उतना दुःख न देते थे ।

और आज शादी के दस लंबे सालों के बाद फिर एकाएक कुछ-कुछ उमड़ने-घुमड़ने लगा था उसके विचारों में । अब तो जब तक वह कोरे पन्नों पर कुछ-न-कुछ उतार न लेती तब तक उसकी थकी-हारी जिंदगी को चैन न मिलता । संभवतः सुमीत की व्यस्तता ने ही उसे इतना अकेला बना दिया था कि गृहस्थी में डूबकर ताक पर रखी गयी शुचि की दबी महत्त्वाकांक्षाओं ने फिर से उसमें कुछ कर पाने का मोह जगा दिया । कुछ ऐसा जो साधारण कार्यों से हटकर हो । समय भी पर्याप्त था उसके पास । अब वह उस कैंचुली को उतार फेकना चाहती थी, जिसने बरसों से उसके अंदर की रचनात्मक प्रवृत्तियों को उभरने का मौका ही न दिया । वह लिखती और अपने मन की कुलकुलाहट को कभी कविता, कभी कहानी के रूप में उडेल देती । उसके बाद तो उसके मन को बेहद सुकून मिलता । सभी जानी-मानी पत्रिकाओं के वह धीरे-धीरे साहित्य जगत में प्रवेश पाने लगी । काव्य गोष्ठियों से उसे निमंत्रण आने लगे । ढेरों पाठकों के प्रशंसा-पत्र प्राप्त करके तो वह फूली न समाती थी । उसे जीवन का बहाना मिल गया था । अब उसे अकेलापन उतना न खलता था । उसका रोंगटे हुआ आत्मविश्वास पालथी मार कर बैठ चुका था और अब उठने की कोशिश करने लगा था । सामने मंजिल दिखायी नजर आ रही थी और आगे बढ़ने की आकांक्षा उसमें जाग उठी थी ।

जब भी कोई रचना किसी पत्रिका में अच्छी उसकी इच्छा यही होती कि उसे वह सुमीत को पढ़कर सुनाये या सुमीत उसे स्वयं पढ़े । वह बहाने ढूंढ़ती रहती कि कब सुमीत को उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमड़ने-घुमड़ने लगा
ब तो जब तक वह
छ उतार न लेती तब
जंदगी को चैन न
की व्यस्तता ने ही उसे
था कि गृहस्थी में
ी शुचि की दबी
ने उसमें कुछ कर पाने
छ ऐसा जो साधारण
मय भी पर्याप्त था
स कैंचुली को उतार
ने बरसों से उसके अंदर
को उभरने का मौका ही
और अपने मन की
कविता, कभी कहानी के
के बाद तो उसके मन
। सभी जानी-मानी
रि साहित्य जगत में
गोष्ठियों से उसे
पाठकों के प्रशंसा-पत्र
न समाती थी। उसे
या था। अब उसे
ता था। उसका रोंगटे
ी मार कर बैठ चुका
ोशिश करने लगा
यी नजर आ रही हो
कांक्षा उसमें जाग उठे

किसी पत्रिका में अपनी
क उसे वह सुमीत को
उसे स्वयं पढ़े। वह
ब सुमीत को उसके

कादम्बिनी

थोड़ा समय मिले तो वह अपने मन की उमंग को प्रकट करे। एक-दो बार तो उसने डाक से पत्रिका का वह पृष्ठ ही सामने रख दिया जिस पर उसकी रचना होती। सुमीत उसे पढ़ता और एक ओर को रख देता। उसके पास इतना समय ही कहां था कि वह उसकी आलोचना या प्रशंसा करता। कुछ शब्द सुनने को व्याकुल शुचि अपना-सा मुंह लेकर रह जाती। उसके बाद तो धीरे-धीरे शुचि ने उसे कुछ बताना ही छोड़ दिया था। पत्रिकाएं घर में आती ही रहतीं, पर उसमें मानो सुमीत को कोई लगाव ही न था। प्रशंसापत्र अब भी आते, जान-पहचान के लोग तारीफ करते पर शुचि को अंदर से कोई खुशी न होती। उसका हृदय तो अपने सुमीत के प्रशंसा के शब्दों को सुनना चाहता था।

सुमीत को शौक था तो होटलों में अच्छे से अच्छा खाना खाने का या महफिलों में कुछ खास-पसंद मित्रों के साथ बैठकर पीने के दौर के साथ-साथ गीतों, गजलों के सुर ताल में खो जाने का। उसके इन प्रोग्रामों में शुचि भी पूरा सहयोग देती, उसे भी गजलों-गीतों को सुनने का बहुत ही शौक था। किसी दिन कोई बीच में ही कह उठता था, 'अरे, आज शुचि से एक कविता सुनेंगे', 'भाभीजी, आज एक कविता हो जाए, थोड़ा चेंज ही सही।' और सुमीत जल्दी से बीच में ही बोल उठता, 'अरे यार अच्छा समां बंधा हुआ है, किस सड़ी-सी चीज का नाम ले दिया तुमने।' शुचि अंदर से तड़क सी हो जाती पर ऊपर से मुसकराने का प्रयत्न करती।

सुमीत के मन में यह बात घर कर चुकी थी कहीं उसके मित्र-गण उसे 'निगलेक्ट' न करना शुरू कर दें। शुचि को अधिक 'इंपोर्टेंस' न मिल जाए इसलिए अब उसने शुचि की भावनाओं को यदा-कदा कौंचना शुरू कर दिया। शुचि भी सुमीत की भावना को ठेस नहीं पहुंचाना चाहती थी इसलिए अब उसने स्वयं ही कहना शुरू कर दिया कि 'मुझे कोई भी अपनी कविता याद ही नहीं रहती, मैं तो केवल लिख भर देती हूं।' पर अंदर से उसका कुछ टूट-टूट जाता।

अब सुमीत ने एक नया दौर शुरू कर दिया। जब भी शुचि तैयार होकर किसी कवि गोष्ठी में जाने को तैयार होती, सुमीत की नसीहतें आड़े आ जातीं। 'भई घर बच्चे निगलैक्ट होते हैं।' इतने लोगों के बीच अपनी कविता पढ़ने का तुक भी क्या है। यह तो तुम्हारी पर्सनल चीज है, एकदम निजी। उसको तुम दूसरों के सामने रखोगी ?' उस समय वह यह भूल जाता कि यह एक कला है, एकमात्र कला। कला किसी की निजी धरोहर नहीं है। यदि वह किसी गोष्ठी में चली भी जाती तो प्रश्नों की बौछार हो जाती, क्षणों-पलों का हिसाब रखा जाता। क्या कमी है तुम्हें ? पैसों की, किसी सुख-साधन की ? सब कुछ तो मैंने तुम्हें दिया हुआ है। किसलिए घर से बाहर भटकती-फिरती हो ?

इन सब बातों के पीछे सुमीत नहीं, सुमीत का दर्प बोल रहा होता। अब उसका इतना बड़ा ओहदा था आफिस में, बेशुमार पैसा कमा सकता था वह कुरसी के बल पर। उन्नति करने के आढ़े-तिरछी सभी चालें चलने में तो महारत हासिल थी उसे। अब शुचि को वह क्यों अवसर दे कि वह अपना व्यक्तित्व निखार सके, उसके बराबर कंधे से कंधा मिलाकर चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

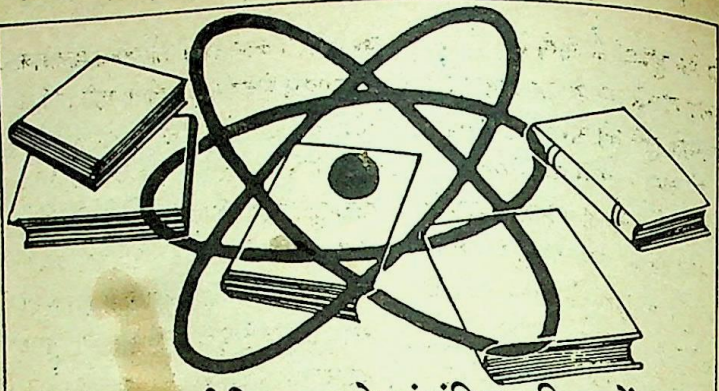

परमाणु ऊर्जा विभाग से संबंधित विषयों पर हिंदी में लिखी मौलिक पुस्तकों अथवा अन्य भाषाओं से हिंदी में अनूदित और प्रकाशित पुस्तकों के लिए डा० होमी भाभा पुरस्कार योजना

उपर्युक्त योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित नकद पुरस्कारों के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं:-

हिन्दी में लिखी मौलिक पुस्तकों/ पांडुलिपियों पर पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार	—	15,000/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार	—	10,000/- रुपये
तृतीय पुरस्कार	—	7,500/- रुपये

अन्य भाषाओं से हिंदी में अनूदित और प्रकाशित पुस्तकों पर पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार	—	10,000/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार	—	7,500/- रुपये
तृतीय पुरस्कार	—	5,000/- रुपये

वर्ष 1988 में प्रकाशित/लिखी पुस्तकें/पांडुलिपियों अथवा अनुदित और छपी पुस्तकों पर योजना के अन्तर्गत विचार किया जाएगा।

निर्धारित आवेदन-पत्र तथा योजना का विवरण श्री वेद कुमार जायसवाल, निदेशक (राजभाषा), परमाणु ऊर्जा विभाग, कमरा नम्बर 132-डी, साउथ ब्लाक, केन्द्रीय सचिवालय, नई दिल्ली-110 011 (दूरभाष 3016089) से 15.4.90 तक किसी भी कार्य दिवस में प्राप्त किए जा सकते हैं।

आवेदन-पत्र देने की अंतिम तारीख 30.4.1990 तक बढ़ा दी गई है।

davp 89/1089

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके। और फिर बुद्धिजीवी लोगों से मिलना-जुलना तो उसे बोर ही कर जाता था।

वह दिन-रात शुचि को नीचा दिखाने की योजनाएं बनाने लगा। घर में चिड़-चिड़ापन उसकी बात-बात में टपकता। मित्र-मंडली से उठकर फोन पर ठहाके लगा कर गुंजा देना भी उसे आता था पर शुचि और बच्चे मुंह बाये ही रह जाते और अपने साथ सुमीत के खिंचे-खिंचे रहने का कारण ढूंढ़ने का प्रयत्न करते। उनका मन भी होता कि सभी इकट्ठे बैठकर कभी हंसे, बोलें, खेलें, अपना समय बिताएं, पर ऐसा मौका कम ही मिलता। अब वे सुमीत को अकेले बाहर जाने में ही अच्छा लगता और कभी-कभी तो शुचि खाने की मेज पर उसकी प्रतीक्षा में ही बैठी रहती और सुमीत के आने पर उसे सुनना पड़ता कि 'तुम खा लेतीं करो मेरी प्रतीक्षा करने को तुमसे किसने कहा।' पर शुचि है कि कभी अकेले बैठ खाने का प्रयत्न भी करती तो एक गस्सा भी उसके गले से न उतरता। भूखे रहने की उसकी आदत-सी हो गयी। और तो और शुचि पर उल्टे-सीधे लांछन लगाने में भी अब उसे झिझक न होती। शुचि तो बेचारी छिल-छिलकर रह जाती। कुछ कहने-समझने की कोशिश में मुंह खोलती तो उसे 'लड़ाकू', 'झगड़ालू' और 'चालाक' आदि की उपाधियों से विभूषित किया जाने लगा। मानसिक, शारीरिक यंत्रणाओं के साथ-साथ उसमें हीन भावनाएं उपजा कर उसके व्यक्तित्व को कुचले जाने के प्रयत्न होने लगे।

शुचि के साथ-साथ उसके प्यारे-से बच्चे भी सहमे-छितरे से रहने लगे। उनके व्यक्तित्व का विकास रुकने लगा और शुचि मानसिक रोग का शिकार होकर खोयी-खोयी रहने लगी। धीरे-धीरे वह कई रोगों का शिकार हो गयी। अकेलेपन के बोझ से दबी रातों के अंधेरों को पीती हुई, कभी जीने और कभी मरने की छटपटाहट से घिरी रहती। उसे अब अपनी जिंदगी से तनिक भी मोह न रहा था। समय ने उसे असमय ही बूढ़ा बना डाला था। पर बच्चों की, बच्चों के भविष्य की चिंता ने उसे और भी घुला डाला। अकेली उन्हें बनाने में अब अपने को असमर्थ-सा पाने लगी थी वह। कमजोर पांव और भारी सांसें उसे उसकी जिम्मेवारियां भी पूरी तरह निबाहने न दे रही थीं। वह भी चिड़चिड़ी हो उठी थी और परिणाम भुगतना पड़ता बच्चों को। वह तो पूरी ममता भी बच्चों को न दे पाती।

पर इसमें सुमीत का भी क्या दोष था ? वह तो शादी के बाद की दस वर्षों की कमियां पूरी करने में ही जुटा हुआ था। भौतिक सुख उसकी कमजोरी थी, जिनके पीछे वह भाग रहा था। इस दौड़ में उसे फुरसत कहां थी कि एक टूटती हुई, बीमार जिंदगी को बचा सके। उसके अहं को चोट पहुंचानेवाले, उससे आगे निकल जानेवाले हर व्यक्तित्व को टूटते देख कर ही तो उसे संतुष्टि होती। अपनी समझ से वह कुछ बुरा नहीं कर रहा था, वह तो केवल हिसाब मांग रहा था—अपनी सामर्थ्य का, अपनी लियाकत का और अपने द्वारा जुटायी गयी एक-एक सुख-सामग्री का।

—बी-इ-१० डी,
डी.डी.ए. फ्लैट्स, मुनीरका
नयी दिल्ली-११००६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक्यूप्रेशर चिकित्सा की एक प्राचीन विधि है। इस चिकित्सा पद्धति में शरीर के विभिन्न स्थलों को दबाकर रोगों का उपचार किया जाता है। पाठकों के लाभ के लिए इस अंक से हम शरीर में स्थित कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं एवं उन पर दबाव देने से दूर होनेवाले रोगों का परिचय दे रहे हैं। इन्हें प्रस्तुत कर रहे हैं—डॉ. सुधीर खेतावत :—

हथेली के मध्य में स्थित बिंदु

कलाई का दर्द, कलाई में मोच, अनिद्रा, उच्च रक्तचाप, आर्थराइटिस लकवा, टांसिल, मिरगी, न्यूरोलॉजिया होने पर इस बिंदु पर दबाव दें।

अद्‌भुत करिश्मे : अप्लाज

आंख की पुतली के मध्य में दो अंगुल नीचे गालों पर स्थित बिंदु

चेहरे का लकवा, बेल्स पल्सी, दांतों का दर्द, नाक से खून आना, चेहरे की मांसपेशियों में तनाव, दाढ़ निकलवाते समय चेतना शून्य बिंदु, गालों में सूजन एवं दर्द आदि में इन बिंदुओं पर दबाव लाभकारी होता है।

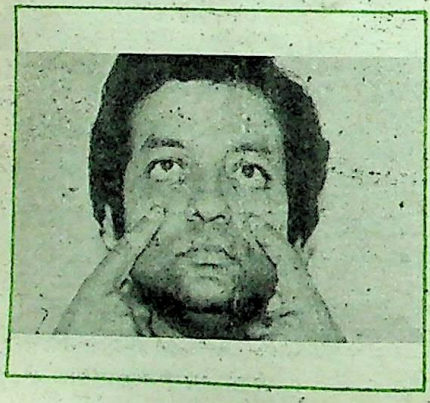

हाथ की तर्जनी के मूल से दो अंगुल दूर स्थित बिंदु

दाढ़ का दर्द, बेल्स पल्सी, आंखों में दर्द, अंगुलियों का दुखना आदि में इस बिंदु को दबाइए।

सिर के पीछे कान के पास मध्य में स्थित बिंदु

गरदन की अकड़न, सरदी, वर्टिगो सरवाइकल स्पॉन्डिलायटिस, सिर दर्द, टिनाइटस, इंफ़्लुएंजा, हाइपरटेंशन मेनिनजायटिस आदि होने पर इस बिंदु को दबाइए।

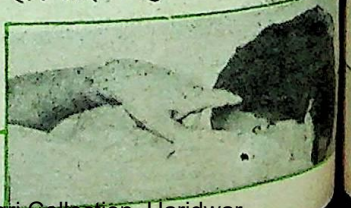

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

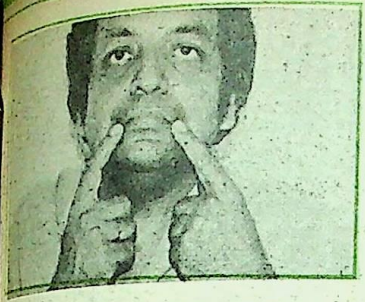

होंठ के कोने पर स्थित बिंदु

अधिक थूक आना, हकलाना, तुतलाना, गूंगापन, चेहरे का लकवा, ट्रिगमिनल न्यूरोलॉजिया होने पर इन बिंदुओं को दबाएं।

पैर के पंजे के बाहरी भाग पर कनिष्ठिका एवं अनामिका के मध्य टखने के पास स्थित बिंदु

साइटिका, आर्थराइटिस, ऐठनदार नसें, पुट्ठों में दर्द, टखने का दर्द होने पर इस बिंदु को दबाइए।

: अपना इलाज स्वयं कीजिए—२०

कान के सामने तीन अंगुल दूरी पर स्थित बिंदु

चेहरे का लकवा, दांतों का दर्द, बेल्स पल्सी, मुंह का न खुल पाना आदि में इस बिंदु पर दबाव दें।

पैर के पंजे के बाहरी भाग पर कनिष्ठिका से तीन अंगुल दूरी पर स्थित बिंदु

कंजक्टीवाइटिस, पैरों के पंजे में दर्द, बहरापन, टिनाइटस होने पर इस बिंदु को दबाइए।

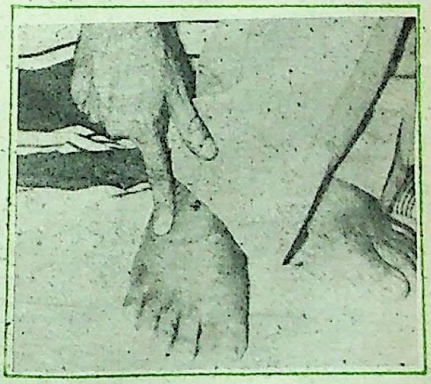

—एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण एवं उपचार केंद्र,
नीलकमल सिनेमा परिसर, इंदौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

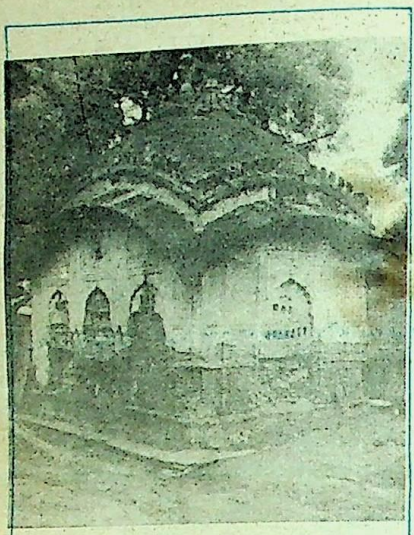

प्रसिद्ध तुलसी भवन कुटिया

ज्ञान गूदड़ी है यह आज भी

● डॉ. भगवतीशरण मिश्र

असंख्य बार सुनी और पढ़ी उपर्युक्त पंक्ति कभी मुझे उस स्थल तक भी ले जाएगी जहां संत कवि तुलसी के स्वाभिमान ने एक प्रस्तर-मूर्ति को मंदिर के तत्कालीन महंत परशुराम के साक्ष्य में, रूप-परिवर्तन को बाध्य किया था, यह बात मैंने स्वप्न में भी नहीं सोची थी । भक्त की एक आकुल दृष्टि, एक व्यग्र पुकार, एक हठधर्मिता की सीमा को छूनेवाले संकल्प पर सहसा युगों के अंतराल को नकारते हुए उस विग्रह ने अपने को उसकी इच्छानुसार ही ढाल लिया था और अपने हाथ की मनभावन मुरली को फेककर धनुष-बाण धारण कर लिए थे— जैसे वह मूर्ति पाषाण नहीं, मोम-निर्मित हो ।

हां, कालचक्र की गति को कौन जानता है ? जिस काल-देवता ने एक बार तुलसी को इस कृष्ण-मंदिर तक पहुंचाया और इस अद्भुत घटना का कारक बनाया और ऐसी पंक्ति को उनके होठों से निस्तृत कराया, उसी महाकाल की प्रेरणा ही मुझे वृंदावन के अपेक्षाकृत अन्य मोहक-आकर्षक स्थलों से लगभग अलग-थलग पड़े इस स्थान पर बरबस खींच ले गयी हो तो उसमें आश्चर्य क्या ?

जीर्ण-शीर्ण अवस्था में सांस लेते मंदिर के परिवेश ने सहसा प्रायः चार सौ वर्ष पूर्व के काल-खंड में मुझे ला पटका और प्रवेश-द्वार के समीप ही निर्मित मुगल-स्थापत्य की एक अद्भुत कलाकृति जिसे 'तुलसी की भजन-कुटी' के नाम से जाना जाता है (क्योंकि इस अद्भुत घटना के उपरांत कुछ दिनों तक इसी कुटी की दीवारें उनके भक्ति-भाव और नाम-जप की साक्षी बनी थीं) ने मेरी चमत्कृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालचक्र की गति को कौन जानता है ? जिस काल-देवता ने एक बार तुलसी को इस कृष्ण-मंदिर तक पहुंचाया और इस अद्‌भुत घटना का कारक बनाया और ऐसी पंक्ति को उनके होठों से निस्तृत कराया, उसी महाकाल की प्रेरणा ही मुझे वृंदावन के अपेक्षाकृत अन्य मोहक-आकर्षक स्थलों से लगभग अलग-थलग पड़े इस स्थान पर बरबस खींच ले गयी हो तो उसमें आश्चर्य क्या ?

...ओं को देर तक बांधे रखा ।

नष्ट होतीं धरोहरें

...मन दुविधाग्रस्त हो आया था । पहले इस कुटिया के बहिरंग और अंतरंग के दर्शन करने ...और चार सौ वर्षों के भजन-कीर्तन के अवशेष आध्यात्मिक तरंगों-स्पंदनों से अपने को सिक्त ...से अथवा इसके पूर्व मुख्य मंदिर के ही दर्शन ...जहां कभी मूर्तिमती श्रद्धा इस युग के एक अद्‌भुत चमत्कार की सृष्टि कर गयी थी— ...नहीं पा रहा था । तभी मेरे अंतर्द्वंद्व को ...किया वृंदावन के ही मेरे 'गाइड' और ...स्थान के 'मैनेजिंग ट्रस्टी' प्राण ...चार्यजी ने — इस कुटिया को अभी ...। इसका बहिरंग जितना आकर्षक है, ...उतना ही विद्रूप और अनाकर्षक । कुछ ...सामाजिक तत्वों का डेरा बन आया है यह । ...वे वह सब कुछ करते हैं, जिसे इस पवित्र ...में नहीं होना चाहिए । मन खिन्न हो ...— अपनी सांस्कृतिक-साहित्यिक धरोहरों ...समाज तो समाज, सरकार भी क्यों और ...निरपेक्ष है ? क्या कोई उपाय नहीं है इस ...को चंद असंतों-अश्रद्धालुओं के ...से मुक्त कराने का ? है क्यों नहीं, मन ने कहा । अभाव है तो इच्छा-शक्ति का, श्रद्धा का । यह अभाव सरकारों के मन में सदा ऐसे समस्त पुनीत और पुरा-महत्त्व के स्थानों के संबंध में सदा से रहा है । तुलसी-कुटिया के साथ यह कोई प्रथम और अंतिम घटना नहीं घट रही ।

विवश, मुख्य मंदिर की ओर ही मुंह करना

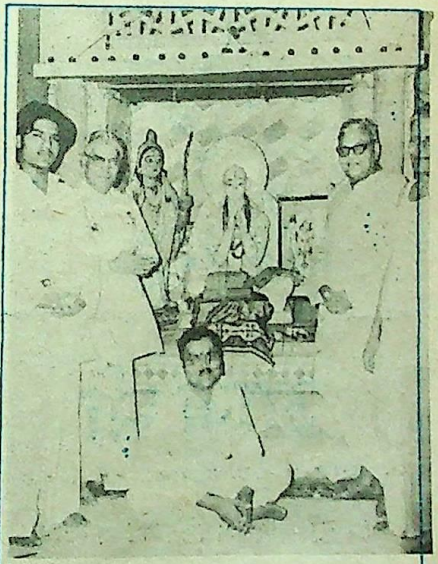

मंदिर का गर्भ गृह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

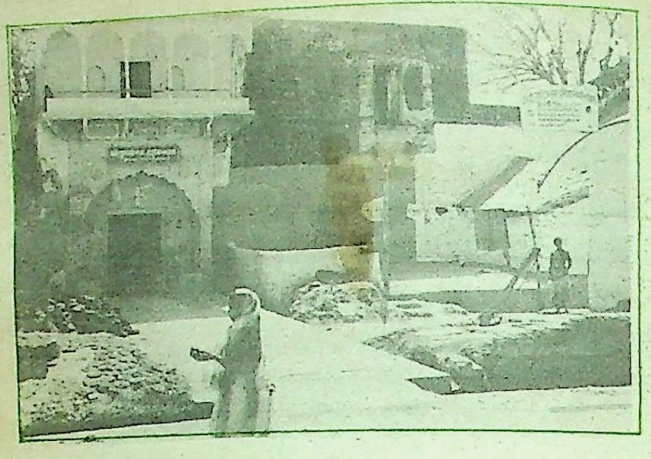

मंदिर का बाहरी दृश्य

पड़ा । तुलसी-प्रिय हनुमान के वंशजों (कपियों) के एक झुंड ने स्वागत किया प्रवेश-द्वार पर । क्यों न हो, किंवदंतियों के अनुसार कभी इन्होंने औरंगजेब की कारा से मुक्त किया था उस भक्त-कवि को । आज वे उसके एक अद्‌भुत स्मारक-स्थल की रक्षा में संलग्न थे तो इसमें आश्चर्य की क्या बात ? बांधा और कुछ ने मन को— प्रमुख मंदिर के पार्श्व की जीर्ण-शीर्ण दीवारों, विस्तृत प्रांगण और इसमें निर्मित कुछ कमरों ने भी; जिनमें एक में कभी वह बंगालन संन्यासिनी 'संध्या गिरि' भी रहती थी जिसे पहले-पहल अभिज्ञान हुआ था इस स्थान की प्राचीनता और इससे संबंधित उस अद्‌भुत घटना का । तब से छोड़ा भी नहीं उसने इस स्थान को और यहीं की माटी में मिल गयी उसकी माटी । इस स्थान के अन्वेषण का श्रेय वस्तुतः इसी समर्पित भक्तिनी को जाता है जो आज से मात्र कोई पंद्रह वर्ष पूर्व वृंदावन के एक श्रद्धालु भक्त-पंडित श्री बलरामजी मिश्र के पास इस प्रार्थना के साथ पहुंची थी— ''आपनि किछू कोरून, तारा स्थानेर विक्रय कोरे— आप कुछ कीजिए वे इस स्थान को बेचना चाहते हैं ।''

''किस स्थान को ?'' पं. मिश्र ने आश्चर्य से पूछा था ।

''आपनि किछू जानेन ना ? उसी स्थान को जहां हमारा कालो कृष्ण ने मुरली फेंक धनुष-वाण उठाया था ।''

स्थापत्य का अप्रतिम नमूना

पंडितजी स्थान पर गये । इसकी प्राचीनता से अधिक इसके स्थापत्य और परिवेश ने उन्हें बांधा । कोई चार सौ वर्ष प्राचीन जर्जर मंदिर के प्रवेश-द्वार पर एक ओर हनुमान की मूर्ति उत्कीर्ण है तो एक ओर गरुण की । यह क्या ? चार सौ वर्ष पूर्व वृंदावन में राम-भक्त हनुमान की क्या आवश्यकता ? वह भी कृष्ण-वाहन गरुण के आमने-सामने ? वह काल तो राम-भक्तों और कृष्ण-उपासकों के पारस्परिक वैमनस्य और वैर-भाव का था । विशेषकर वृंदा-विपिन में राम को किधर से प्रवेश मिलता था ? पुनः दृष्टि गयी उनकी, गर्भ-गृह के प्रवेश द्वार के ऊपर—मुगल कालीन भित्तिचित्रों की

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

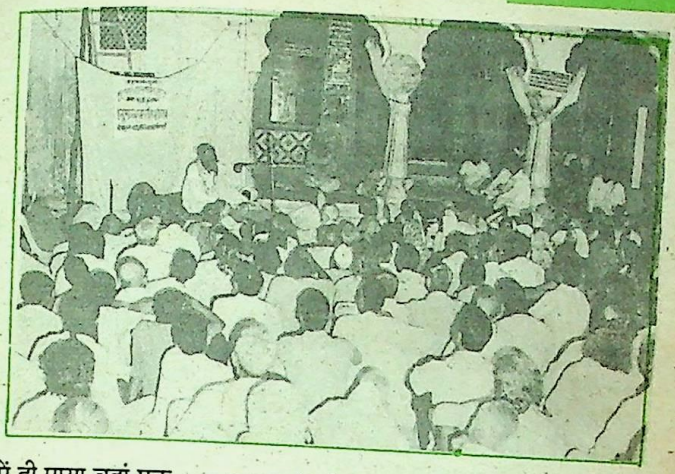

आयोजित
हनुमज्जयंती-समारोह
मंदिर के प्रांगण में

स्थापत्य के नमूने के रूप में ही पाया वहां एक
ही साथ उत्कीर्ण जांबवान, हनुमान, गरूण एवं
राम-कृष्ण से संबंधित कई लीला-क्रमों को ।
यदुवंशी श्री कृष्ण के प्रतीक-चिह्न चंद्र के ठीक
नीचे पाया सूर्यवंशी राम के प्रतीक सूर्य-बिंब को
भी । निश्चित हो गया, स्थान राम और कृष्ण को
सम्मिलित रूप में समर्पित था— आज से चार
सौ वर्षों से अधिक पूर्व ही । पर मंदिर के अंदर
था क्या ? कोई स्पष्ट मूर्तियां तो नहीं थीं । ये तो
खल, काल की कराल चोट से अपने को
बचाते हुए कुछ भग्न शिला-खंड जिन पर कहीं
कुछ अंगुलियां उत्कीर्ण थीं तो कहीं कुछ अन्य
चिह्न ।

इनके आधार पर ही इसे वह, वह
महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थली मान लें ? मिश्रजी
के मन को नहीं भाई यह बात और तब १९७४
में आयोजित 'मानस चतुःशति' के आयोजन के
अवसर पर उन्होंने उद्घोषित कर दिया—
यथार्थ है यह आयोजन यदि हम वह स्थान भी
वहीं सुनिश्चित कर पाते जहां गोस्वामी को गाना
पड़ा था—

कहा कहूं छवि आपकी, भले बने हो नाथ
तुलसी मस्तक तब नवै, धनुष-बाण लौ हाथ

और तब विधिवत अन्वेषण आरंभ हुआ
इस स्थान का—पूरी तत्परता के साथ पुराने
ग्रंथों और श्लोकों की खोज-बीन ।उसी क्रम में
मिली बेंकटेश्वर प्रेस, बंबई से मुद्रित ज्वाला
प्रसाद मिश्र के अनुवाद के साथ प्रकाशित
तुलसी कृत रामायण की एक प्रति, जिसके
परिचय-भाग में ज्ञान-गुदड़ी नामक स्थान में
घटी इस घटना का सांगोपांग वर्णन है ।

हां, आज भी ज्ञान-गुदड़ी ही कहते हैं इस
स्थान को । इस खोज ने स्थान को पर्याप्त
प्रामाणिकता प्रदान की । फिर मिला गीता प्रेस,
गोरखपुर की प्रसिद्ध पत्रिका 'कल्याण' के एक
विशेषांक का परिशिष्टांक, जिसमें स्पष्ट उल्लेख
है कि ज्ञान-गुदड़ी स्थित हृदय-राम का मंदिर ही
वह स्थान है जहां श्रीकृष्ण को तुलसी की टेक
पर राम बनना पड़ा था ।

बहुचर्चित ज्ञान गुदड़ी

वृंदावन में स्थित चार संप्रदायों— निंबार्क,
गौड़ीय, रामानंदी और रामानुजी— के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामंडलेश्वर श्री रामदास शास्त्री के अन्वेषण का भी यही निष्कर्ष निकला कि हृदयराम नामक ज्ञान-गुदड़ी का स्थान ही वह प्राचीन स्थल है । हां, हृदयराम के मंदिर के नाम से ही वर्षों से विख्यात था यह मंदिर, शायद तुलसीदास को लेकर ही— जिसके हृदय में राम हैं, वह हृदयराम ।

वृंदावन के एक और अत्यंत प्रसिद्ध संत श्री जगन्नाथ प्रसादजी भक्तमाली ने पं. बलरामजी मिश्र को इंगित किया कि इनकी अंतर्दृष्टि भी इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत करने को व्यग्र है कि यही वह प्राचीन स्थली है, जिसके अन्वेषण में आप सब लगे हैं ।

मंदिर में, इसकी प्रामाणिकता की पुष्टि के पश्चात कुछ आवश्यक परिवर्तन लाये गये हैं । गर्भगृह में अब राम के धनुर्धारी रूप के साथ तुलसी की एक प्रस्तर-मूर्ति भी विद्यमान है । थोड़ा नीचे है राधा-कृष्ण की युगल-मूर्ति । मुख्य द्वार के पार्श्व की दीवार में लगी है भक्तमाल के रचयिता प्रसिद्ध संत नाभादास की मूर्ति क्योंकि किंवदंती के अनुसार नाभादासजी ने अपने ग्रंथ की समाप्ति के उपरांत यहीं पर एक विशाल संत-भोज आयोजित किया था जहां तुलसीदासजी ने भी खीर खायी थी ।

गरिमामयी प्रयास आवश्यक

मंदिर में अभी बहुत कुछ करना शेष है । प्रथम आवश्यकता है उस 'तुलसी भजन कुटिया' को अवांछनीय तत्वों से मुक्त कराने की जिससे उसकी लुप्त गरिमा वापस आ सके । स्थान को, इसकी प्राचीनता को अक्षुण्ण रखते हुए, और भव्यता प्रदान करनी है । यह कार्य द्रव्य- साध्य है । संप्रति तो यहां जाते वही काल-खंड मानस-चक्षुओं के समक्ष उपस्थित हो जाता है, जिसमें गोस्वामी तुलसीदास श्री कृष्ण के प्रति श्रद्धानत हो झुकना ही चाहते हैं कि तत्कालीन महंत परशुरामजी ताना मार बैठते हैं— क्या कर रहे हो रामभक्त ? सभी तो अपने-अपने इष्ट के प्रति ही झुकते हैं तुम इस वंशीवाले के समक्ष कैसे....

अपने-अपने इष्ट को नमन करें सब कोय
इष्ट विहीन परशुराम नवै सो मूरख होय

और तब जागृत होता है तुलसी का स्वाभिमान, जिसके समक्ष फेकनी ही पड़ती है राधावल्लभ को अपनी मुरली और धारण करने पड़ते हैं हाथ में धनुष-वाण ।

— निदेशक, राजभाषा विभाग
बिहार सचिवालय,
पटना-१५

सर्वाधिक अनुवाद

आप समझते होंगे कि बाइबिल का अनुवाद सबसे अधिक भाषाओं में हुआ होगा । लेकिन अगर आप ऐसा समझते हैं तो आप गलत हैं ।

बाइबिल का अनुवाद २१९ भाषाओं में हुआ है । सबसे अधिक अनुवाद, २८४ भाषाओं में, मिकी माउस का हुआ है । इसके बाद अगाथा क्रिस्टी की रचनाओं का अनुवाद २८२ भाषाओं में हुआ है । लेनिन की रचनाओं का २७६ भाषाओं में अनुवाद किया गया है । बाइबिल का नंबर चौथा है ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

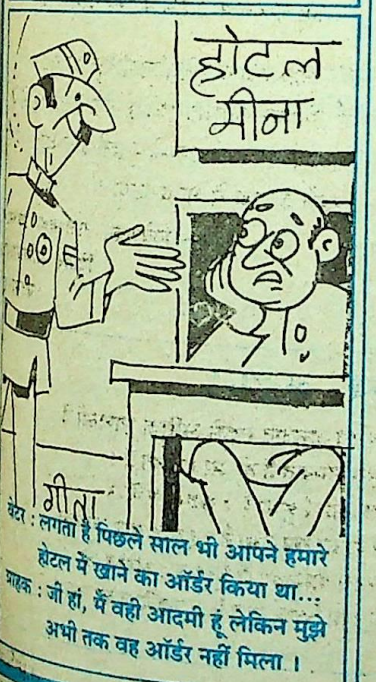

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओसलो से आंखों देखा हाल

दलाई लामा : सब महात्मा गांधी की देन है

● सुरेशचंद्र शुक्ल

जब तिब्बत को आजादी मिल जाएगी तब क्या आप उसके नेता बनेंगे ? पूछने पर दलाई लामा ने बताया कि तिब्बत में प्रजातंत्र की स्थापना होना सबसे आवश्यक है । मुझे नेता बनने में कोई दिलचस्पी नहीं है । नेता बनने में जबकि प्रसिद्धि मिलती है । उन्होंने पुनः चुटकी लेते मुस्कराते हुए कहा कि नेता पांच या चार वर्ष में बदल जाते हैं परंतु मैं वर्षों से दलाई लामा हूं ।

अभी ओसलो में तीन दिन पूर्व अपार बर्फ गिरी थी । हर सड़क पर, भवनों की छतों पर बर्फ आसानी से देखी जा सकती है । ओसलो नगर की शान को रौशन करता यूनिवर्सिटी अउला विशाल चहल-पहल से भरा हुआ था । आज नार्विजन झंडों के साथ ही तिब्बती झंडे भी वायु में लहरा रहे थे । अउला के बाहर विदेशों में बसे तिब्बतवासी बड़े उत्साह और लगन के साथ अपने धार्मिक एवं स्वतंत्रता संग्रामी नेता चौदहवें दलाई लामा के स्वागत में ठंडक में खड़े थे । इसी ऐतिहासिक यूनिवर्सिटी अउला में विश्व का सुप्रसिद्ध शांति नोबेल पुरस्कार दलाई लामा को दिया जाएगा । इसी विशाल भवन के सामने नेशनल थिएटर नार्वे की अतीत की साहित्य एवं नाट्यकला की याद दिलाता गर्व से खड़ा है । अउला के सामने खड़े होकर ध्यान से देखा जाए तो सामने नेशनल थिएटर बायीं ओर दो सौ मीटर की दूरी पर नार्विजन पार्लियामेंट और दायें तरफ लगभग तीन सौ मीटर की दूरी पर स्थित यहां के राजा उलाव पंचम का महल आसानी से देखा जा सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों तरफ राजदूतों, नार्विजन लोकसभा के सदस्यों की कारें भरी पड़ी थीं । केवल स्विट्जरलैंड से १६० तिब्बतवासी अपने प्रिय नेता के स्वागत में आज यहां पधारे हुए हैं जो तिब्बती परंपरात्मक पोषाक पहने हुए हैं । स्वीडन और डेनमार्क से भी बहुत से तिब्बतवासी यहां आये हुए हैं । इन लोगों की सजी-धजी पोषाक को देखकर बरबस हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में रहनेवाले भोले-भाले भारतवासियों की याद ताजा हो जाती है ।

तभी दलाई लामा एक काली कार से निकलते हैं । तिब्बती बैंड की तरंगित ध्वनि स्वागत में थिरक उठती है । तिब्बती झंडे सैकड़ों की संख्या में हवा में लहरा उठते हैं । दलाई लामा मेहरून कत्थई रंग एवं पीले रंग के वस्त्र धारण किये हुए कार से निकलते हैं । सभी को सिर झुका-झुकाकर नमस्कार एवं अभिवादन कर रहे हैं । मामूली-से ग्रीष्मकालीन के समान दिखनेवाले कपड़ों में दलाई लामा के ऊपर कोई असर नहीं पड़ रहा था ।

धमकी का प्रभाव नहीं

हालांकि चीन ने दलाई लामा को १९८९ का शांति नोबेल पुरस्कार दिए जाने का सख्त विरोध किया था और नार्वे के साथ आर्थिक संबंध तोड़ने की धमकी दी थी तथा नार्वे के राजा और मंत्रियों को नोबेल पुरस्कार वितरण समारोह में भाग न लेने की सलाह भी दी थी । परंतु चीनी सरकार की प्रार्थना और सलाह का किसी पर कोई असर न पड़ा । संपूर्ण हाल खचाखच भरा था । यहां राजा उलाव पंचम, पार्लियामेंट के प्रेसिडेंट यू बेंकोव, इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार

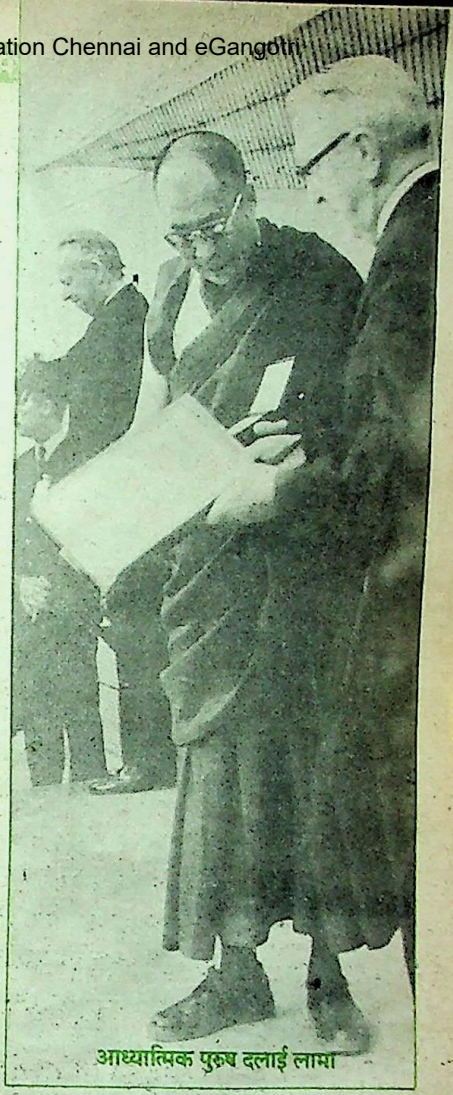

आध्यात्मिक पुरुष दलाई लामा

विजेता तथा नार्वे की भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती ग्रू हार्लेम ब्रुतलांद, विदेशमंत्री शेल मांग्रे बोंदेवीक स्पष्ट दिखायी दे रहे हैं ।

इस कार्यक्रम में भाग लेने भारत से भी प्रतिनिधि आये थे जिनमें मेरी मुलाकात दिल्ली के प्रो. डॉ. एस. एस. महापात्र एवं महाराष्ट्र के श्री तुलसीदास एस. जादव (दोनों भूतपूर्व लोकसभा सदस्य हैं) से हुई । भारतीय राजदूत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

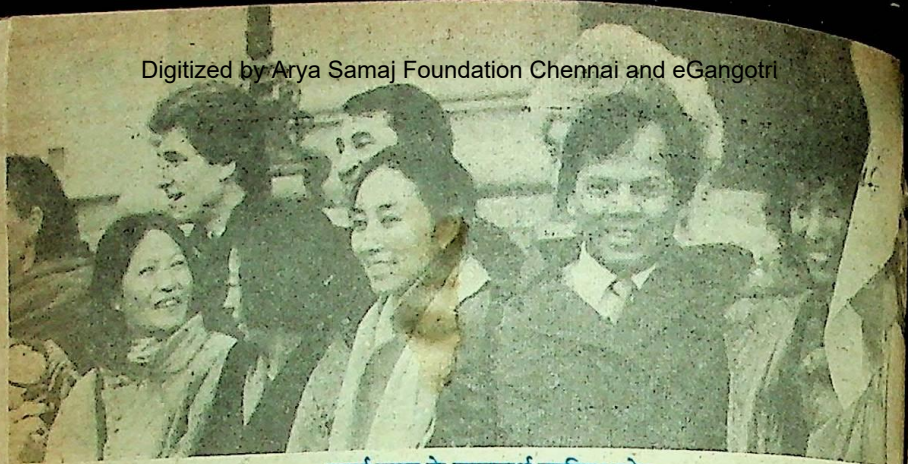

दलाई लामा के स्वागतार्थ उपस्थित लोग

एल. एन. रंगाराजनजी भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे ।

ठीक दो बजे नार्विजन आरकेस्ट्रा के संगीत के साथ कार्यक्रम आरंभ हुआ । नार्विजन शांति नोबेल समिति के अध्यक्ष ने अपने भाषण में जोर देते हुए कहा कि इस वर्ष का नोबेल शांति पुरस्कार महात्मा गांधी के दर्शन को जाता है । महात्मा गांधी ने अहिंसा के मार्ग पर चलकर विश्व में शांतिपूर्ण ढंग से अन्याय और दमन का सामना किया और मानवाधिकारों की रक्षा की । यह पुरस्कार प्रजातंत्र के आंदोलन में मर मिटनेवाले चीनी छात्रों की याद भी दिलाता है ।

गांधी दर्शन से प्रभावित

संत दलाई लामा ने अपने भाषण में कहा कि उन्हें सत्य और अहिंसा की शिक्षा महात्मा गांधी से मिली थी । और उन्होंने तिब्बतवासियों पर तिब्बत पर हो रहे चीनी अत्याचार, दमन और नृशंस उत्पीड़न की चर्चा की और आशा व्यक्त की कि आनेवाले पंद्रह-बीस वर्षों में चीन में भी नयी पीढ़ी प्रजातंत्र को लाने और तिब्बतवासियों के साथ संबंध सुधारने में योगदान देगी ।

संत दलाई लामा ने तिब्बत की आजादी के बारे में पूछने पर बताया कि सबसे पहले वह तिब्बतवासियों को आतंक से मुक्त करके उनको भय के वातावरण से छुटकारा दिलाना चाहते हैं । उन्होंने कहा कि तिब्बतवासियों पर उत्पीड़न जारी है ।

उत्तर नार्वे में सामी जाति के लोगों की नार्विजन पार्लियामेंट के अंतर्गत सामी थिंगे यानि सामी पार्लियामेंट है । दलाई लामा ने उनका आमंत्रण भी स्वीकार कर लिया है और वहां जाएंगे । इस समाचार से पूरे नार्वे में सरगरमी मची हुई थी कि यदि भविष्य में सामी लोग (जिनके पूर्वज भारतीय थे) अलग एक राज्य या देश की मांग कर दें तो क्या दलाई लामा उनका साथ देंगे ! आखिर दलाई लामा वहां क्यों जा रहे हैं ? यह पूछने पर उन्होंने बताया कि जिस तरह वह अन्य अनेक संस्थानों के आमंत्रण पर जाएंगे, वैसे ही वह सामी पार्लियामेंट का दौरा करेंगे । उन्होंने चुटकी लेते हुए आगे कहा कि सामी लोगों और उनके शक्ल-नक्श में बहुत समानता है ।

क्या दलाई लामा संस्थान या प्रथा आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलती रहेगी ? यह पूछने पर संत दलाई लामा ने बताया कि यह तो तिब्बती जनता पर निर्भर है। इसका चयन सीनियर्टी के आधार पर होगा। उन्होंने आगे कहा कि नोबेल पुरस्कार मिलने से उनके रहन-सहन या दिनचर्या पर कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा। वरन पुरस्कार के बाद ज़िम्मेदारी और बढ़ गयी है।

उन्होंने कहा कि प्रजातंत्र और स्वतंत्रता से प्रेम करो। कम्युनिज़्म मानव स्वभाव के विरुद्ध है। मनुष्य के जीवन में भय नहीं रहना चाहिए। भय और परतंत्रता के रहते आप कुछ नहीं कर सकते। वरना आदमी मौन बना बैठा देखता रहेगा। उन्होंने चीन की तरफ संकेत करते हुए कहा कि वहां सारे निर्णय एक व्यक्ति के पास से आते हैं। यह बहुत खतरनाक है।

उन्होंने तिब्बतवासियों के संघर्ष की चर्चा करते हुए कहा कि हम तिब्बतवासियों ने चालीस वर्षों से बहुत ऋणात्मक अनुभव किये हैं। हमें आतंक का पता है। दुनिया में बहुत से भागों में स्वतंत्रता की लड़ाई चल रही है। आपको पता है कि इन स्वतंत्रता के आंदोलनों में हिंसा का भी सहारा लिया गया है। परंतु हम तिब्बती लोग अहिंसा के माध्यम से अपना आंदोलन चला रहे हैं—जो गांधीजी की देन है।

चीन-तिब्बत के संबंधों पर पूछने पर उन्होंने कहा "हम चीन के जनतंत्र आंदोलन का समर्थन करते हैं जो कुचल दिया गया। हममें और उनमें बहुत समानता है। चीनी जनता से संबंध रखना बहुत आवश्यक है। बहुत से विवाह तिब्बती और चीनियों के मध्य हुए हैं। इसके विरुद्ध कई बार तिब्बतवासियों को आतंक का भी सामना करना पड़ा है। चीन और तिब्बत के मध्य बातचीत और बैठक आरंभ होनी चाहिए जिसकी पहल चीन को करनी चाहिए।

जब तिब्बत को आजादी मिल जाएगी तब क्या आप उसके नेता बनेंगे ? पूछने पर दलाई लामा ने बताया कि तिब्बत में प्रजातंत्र की स्थापना होना सबसे आवश्यक है। मुझे नेता बनने में कोई दिलचस्पी नहीं है। नेता बनने में जबकि प्रसिद्धि मिलती है। उन्होंने पुनः चुटकी लेते मुस्कराते हुए कहा कि नेता पांच या चार वर्ष में बदल जाते हैं परंतु मैं वर्षों से दलाई लामा हूं।

नोबेल शांति पुरस्कार का धन आप किस कार्य के लिए खर्च करेंगे ? यह पूछने पर अहिंसा के पुजारी महात्मा और तिब्बतवासियों के धर्म गुरु दलाई लामा ने बताया कि वह पुरस्कार का धन शांति एवं मानव सेवा के लिए खर्च करेंगे। पुरस्कार का एक भाग भारत में कोढ़ निवारण योजना के अंतर्गत करेंगे। विश्व में शांति के लिए बनी संस्थाओं के अतिरिक्त विश्व रक्षा के लिए तिब्बती संस्थान की स्थापना पर भी पुरस्कार का धन खर्च करेंगे।

तिब्बत का भविष्य क्या होगा ? इसके जवाब में उन्होंने कहा कि तिब्बत के द्वार विश्व में सभी शांतिप्रिय लोगों के लिए खुले रहेंगे। तिब्बत में प्रजातंत्र की स्थापना होगी। शांति खोजनेवालों और बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए एक शांतिमय केंद्र होगा।

संपादक, स्पेल
विवेरवियेन १९, एल-३१
०५९६ ओसलो ५, नार्वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

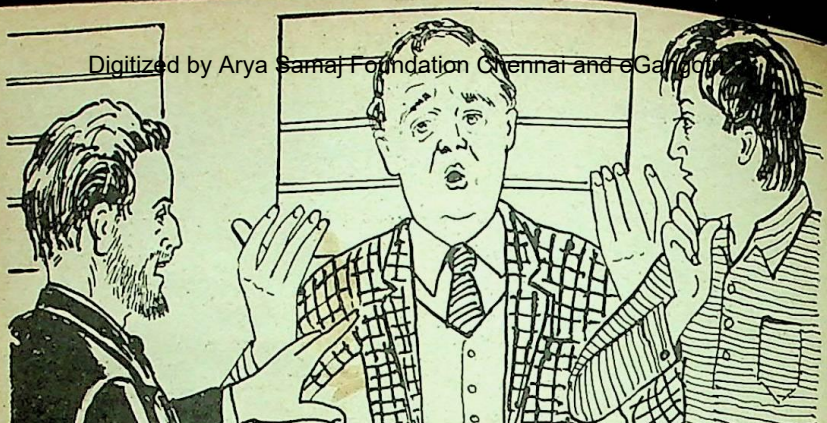

इस देश का क्या होगा

● चंद्रमौलि

"अब इस देश का क्या होगा ?" उस व्यक्ति ने आहें भरते हुए मेरी ओर मुड़कर कहा। अचानक उछला हुआ यह प्रश्न सुनकर मैं हड़बड़ा गया। वह आदमी मेरी तरफ ऐसे ही घूरता रहा मानो पूछ रहा है कि मैंने उसके प्रश्न का जवाब क्यों नहीं दिया ? मैं सोच रहा था कि यह प्रश्न अपने आप जवाब भी उगलेगा। लेकिन ऐसा भी कभी होता है। प्रश्न पूछनेवाले ने रुककर फिर से पूछा।

"श्रीमानजी आप बताइए ना कि इस देश का अब क्या होगा ?" उसने रुआंसा होकर फिर दोहराया।

अब मैं सकते में आ गया कि लगता है यह महाशय मेरे जवाब दिए बिना एक बूंद पानी तक नहीं पीनेवाला है। वैसे तो मैं राजनीति में कतई दिलचस्पी नहीं रखता, मगर ऐसे मौकों पर अपनी खाल बचाने के लिए दो टूक उत्तर अपने कोश में हमेशा संभाल कर रखता हूं। इसी वाक्य का इस्तेमाल करते हुए तपाक से कहा, "मियां ! अब तक इस देश का क्या हुआ। जो अब होनेवाला है ?" सवाल का जवाब सवाल में ही देना एक अजब तरीका है जो चंद लोग ही अपनी खासियत से उपयोग में ला सकते हैं। यह तरकीब जानना तो गद्दी पर आसीन राज नेताओं के लिए तो वाकई जरूरी है। जब-जब कोई 'कंप्यूटराइज्ड' संवाददाता मंत्रीजी से अटपटे सवाल पूछकर उनके लिए कुछ संकट खड़ा कर देते हैं यानि कि ऐसे ऊटपटांग सवाल पूछते हैं जिसका जवाब देने का मतलब अपनी या सरकार की नाक कटवाना होता है तो ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाजुक घड़ी में जनाब उल्टा सवाल दागकर ही अपनी आबरू बचा पाते हैं ।

"ये तो सवाल हुआ । जवाब कहां ?" उस पर वह शख्स फिर से अपने आपे खोते हुए बोला "मियां ! अब तक इस देश का क्या हुआ ? गरीबी रेखा नीचे थम गयी है । नेताओं द्वारा बोयी गयी भ्रष्टाचार की फसल बार-बार कट रही है । नयी-नयी इमारतें बन रही हैं, गगनचुंबी मंजिली इमारतें । शहरों में मकानों के बिक्री दर और किराया दर देख कर तो लगता है कि सब लोग अरबी शेख बन गये । दूसरी ओर हमारी क्रिकेट टीम शर्मनाक हारों के हार पहनकर स्वदेश लौटती है और ऊपर से खिसियाने की जगह दावत उड़ाती है । आस्तीन चढ़ाकर और कालर ऊपर कर क्रिकेट कंट्रोल बोर्डवालों से शीतयुद्ध कर रही है । मजे की बात है कि हार को भी मनाना क्या कम है । यही तो है खेल-भावना । अगर आप उधर देखें तो अपने देश के संगीत को आजादी की राह पर ले जाने के लिए वेस्ट्रन म्यूजिक का आयात जोरों से किया जा रहा है ।"

"भाई दुनिया में ऐसा कोई विकसित देश ही नहीं बचा जिससे हमने कोई ऋण नहीं लिया हो । आपसी संबंधों को प्रगाढ़ बनाये रखने के लिए वाकई यह एक अनोखा तरीका है जिसे हमारे देशवासी सदियों से अदाकारी से प्रयोग में लाते रहे हैं । किसी से संबंध कायम रखना हो तो बस मुस्कराते हुए उससे ऋण ले लो । वह आदमी आपसे संबंध तोड़ ही नहीं सकता । कैसे तोड़ेगा बेचारा ? मेरे गुस्से का पारा सातवें आसमान पर जा पहुंचा । ये कैसी मिसाल है । इस देश के भविष्य को लेकर यह आदमी आंसू बहा रहा है लेकिन कारण तो नहीं बता रहा है ।

अब मुझसे रहा नहीं गया । उसके आंसू पोंछना निहायत जरूरी है । वरना मैं इससे कैसे बच पाऊंगा भला । सो उठकर अंजलि घटाकर नम्रता से पूछा, "भैया मुझे समझाओ कि आखिर किस खतरे से आगाह कर रहे हो... ।"

"खतरे-वतरे की बात नहीं । मुझे इस रेल के सफर में समय काटने के लिए पत्ते खेलने हैं । चौथा आदमी नहीं मिल रहा है । यह हालत है इस देश की । इसका क्या होगा ।" कहकर वह एकदम चुप हो गया । हां, आप ही बताइए इस देश का क्या होगा ।

भाई दुनिया में ऐसा कोई विकसित देश ही नहीं बचा जिससे हमने कोई ऋण नहीं लिया हो । आपसी संबंधों को प्रगाढ़ बनाये रखने के लिए वाकई यह एक अनोखा तरीका है जिसे हमारे देशवासी सदियों से अदाकारी से प्रयोग में लाते रहे हैं । किसी से संबंध कायम रखना हो तो बस मुस्कराते हुए उससे ऋण ले लो । वह आदमी आपसे संबंध तोड़ ही नहीं सकता । कैसे तोड़ेगा बेचारा ?

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम
लाली चैंबर्ज, एस.सी.ओ. ७६-७९
(प्रथम मंजिल) सैक्टर १७-डी चंडीगढ़ १६००१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराणों से प्रेरित तैरता रंगमंच

ग्वालियर का बायजा ताल

● एम. एल. वरहाड़पांडे

ग्वालियर का क्षेत्र प्राचीन स्थापत्य, मूर्तिकला एवं संगीत परंपरा के लिए संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। भारतीय कला के परिप्रेक्ष में संगीत शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है। गायन नर्तन, वादन, नाट्य ये कलाएं संगीत के अंतर्गत आती हैं। ध्रुपद—जैसे संगीत का विकास—जैसा ग्वालियर क्षेत्र में हुआ वैसा नाट्य, नृत्यादि कलाओं का भी हुआ। इसलिए कुछ प्राचीन तथा अर्वाचीन नाट्यशालाएं इस क्षेत्र में आज भी देखने को मिलती हैं।

तैरता रंगमंच

हाल ही में ग्वालियर के बायजा-ताल का रुपांतर एक तैरते रंगमंच की भांति किया गया। यह प्राचीन रंग-परंपरा की ही एक कड़ी है, जिसमें जलपृष्ठ का उपयोग मंच के भीतर किया जाता है।

इस परंपरा का सूत्रपात शायद सर्वप्रथम रोमन साम्राज्य में हुआ। रोम में कुछ कटोरीनुमा प्रेक्षागृह बने थे, जिनके बीच में तालाब बने थे। इन तालाबों में युद्धपोत छोड़कर उनके दो दलों में युद्ध होता था, यह समुद्री युद्ध का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक था। उसे नौमाचिया कहते थे। इसमें नटों के रूप में गुलामों का उपयोग करते थे।

युद्ध करने के लिए गुलामों की विवशता

यह युद्ध लड़ने के लिए गुलामों को विवश किया जाता था। कई गुलाम मारे भी जाते। इस भीषण नाटक के बाद जब तालाब खाली किया जाता था, तब उसमें कई लाशें मिलतीं।

जल-रंगमंच का निर्माण

जुलियस सीजर ने इतनी विशाल जल-रंगशाला बनवायी थी, कि उसमें पचास युद्धपोत भाग ले सकते थे। ऐसा कहते हैं कि रोम के सुप्रसिद्ध कलोसियम में भी पानी भरकर जल-रंगमंच बनाने की व्यवस्था थी।

जलपृष्ठ का उपयोग रंगमंच की भांति करने की तरकीब भारतीय भी जानते थे, इसका प्रमाण हमें महाभारत का खिलपर्व कहलानेवाले हरिवंश पुराण में मिलता है।

जलपृष्ठ पर नृत्य

इस पुराण के अनुसार यादव लोग जब श्रीकृष्ण और बलराम के साथ द्वारका के पास के पिंडारक नाम के क्षेत्र में समुद्रविहार के लिए गये थे, तब उनके साथ आयी, कुछ नर्तकियों ने समुद्र के जलपृष्ठ पर नृत्य किया। जाहिर है वहां सागर में कोई विशाल समतल प्रस्तर होगा या तैरता रंगमंच!

भारत में जल से संबंधित रंगशालाओं के दो रूप देखने को मिलते हैं, एक तो वह रंगशालाएं हैं, जो जलाशय के किनारे बनवायी गयी थीं। और दूसरी जिसकी रंग-स्थली पानी में या जल से आवृत्त थी।

हरिवंश में दोनों ही प्रकार की रंगशालाओं का उल्लेख मिलता है। समुद्र-पृष्ठ पर नृत्य करने के बाद इन्हीं नर्तकियों ने बलराम और उनकी पत्नी रेवती का मनोरंजन सागर-किनारे बनी रंगशाला में भी किया, वह भी कृष्णलीला का अभिनय करके।

शीतल जल में क्रीड़ा रंगमंच

वैवर्त पुराण में रास-रंगमंच का वर्णन विस्तार से आता है। पुराण के अनुसार यह मंच सघन वन के बीच, तालाब के किनारे बना था। नृत्य के परिश्रम के बाद उसका परिहार करने के लिए तालाब के शीतल जल में क्रीड़ा होती और सभी अभिनेता तरोताजा होते।

शायद इसी वर्णन से प्रेरणा पाकर ग्वालियर नरेश मानसिंह तोमर ने (राज्यकाल : १४८६-१५१६) बरई गांव में तालाब के किनारे एक रास रंगशाला बनवायी।

यह खुली रंगशाला एक वर्तुलाकार परकोटे में है जिसका तालाब की ओर का भाग खुला है। परकोटे में एक बड़ा और कुछ छोटे द्वार बने हैं जिससे आप रंगशाला में प्रवेश कर सकते हैं। परकोटे से लगकर अंदर कमरे बने हैं, जो अभिनेताओं के लिए थे। भूमि के मध्य में एक वर्तुलाकार रास-मंडल बना हुआ है। वो जमीन से कुछ दो फुट ऊंचा है। रास-मंडल से लगकर कुछ सुंदर मीनार बने हैं।

ग्वालियर का बायजा ताल, जिसमें एक तैरते रंगमंच का निर्माण किया गया है। पुराणों में इस तरह के रंगमंचों का उल्लेख मिलता है। रोम में भी तालाबों के जल पर नाटक खेले जाते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

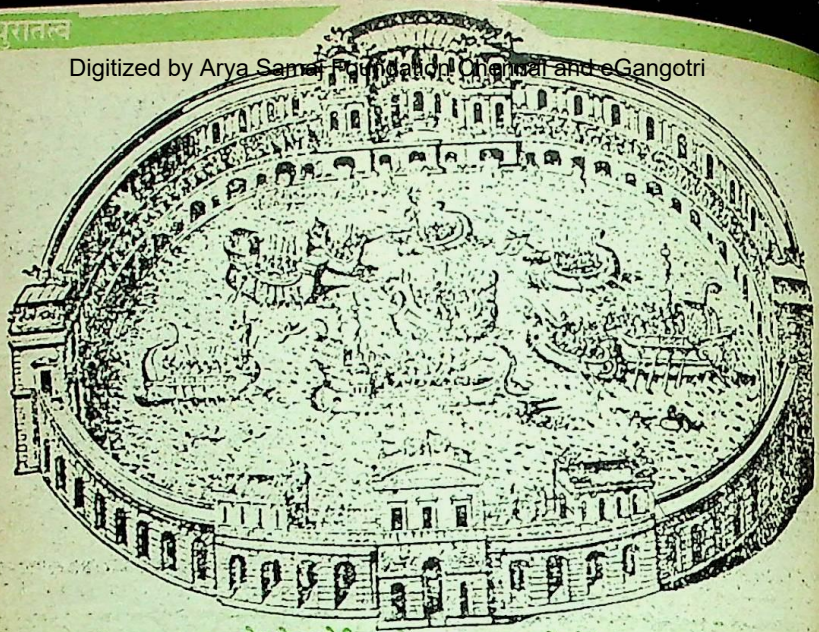

रोम के कटोरीनुमा प्रेक्षागृह इस तरह के होते थे

ऐसा लगता है कि रासमंडल और परकोटा इसके बीच जो खुली जगह है, वहां तालाब का पानी भर दिया जाता होगा । कमरों के उपर समतल जगह बनी है । यहां पहुंचने के लिए सीढ़ियां बनी हैं । प्रेक्षक—कमरों के इस समतमल छत पर बैठा करते थे । आज भी इस रंगशाला के खंडहर बरई में देखने को मिलते हैं ।

रामलीला में भी इसी रंगमंच का प्रयोग

जलपृष्ठ का उपयोग रंगमंच—जैसा करने की परंपरा रामलीला और कृष्णलीला नाटकों में भी देखने को मिलती है । अयोध्या छोड़ने के बाद चित्रकूट जाने के लिए राम नदी पार करते हैं । रामायण का यह कथा भाग किसी तालाब या नदी के किनारे अभिनीत किया जाता है । स्वरूपों को नाव में चढ़ाकर नदी पार करवायी जाती है । इस तरह जलपृष्ठ रंगमंच बन जाता है ।

नौका विहार

ब्रज के बरसाना-उंचागांव क्षेत्र में प्राचीन लीला होती है, जो बूढ़ी लीला नाम से प्रसिद्ध है । इस लीला नाटकों के कड़ी के रूप में पीली पोखर नाम के जलाशय में स्वरूपों को सजी हुई नौकाओं में विहार करवाया जाता है । कृष्णलीला नाटकों में केवट लीला नाम की एक लीला है, जिसमें कृष्ण केवट का रूप धारण करके राधा और उनकी सखियों को यमुनापार करवाते हैं । यह लीला भी जलाशय में या नदी में करने की प्रथा कुछ स्थानों में देखी जाती है ।

ग्वालियर शहर के बीचोंबीच बायजाताल नामका सुंदर तालाब है । यह तालाब सन १८७२ के आसपास बायजाबाई सिंधिया ने बनवाया था । इसकी लंबाई ६२५ फीट है और चौड़ाई मध्य में २५० फीट और दोनों छोरों पर ११४ फीट है । कीचड़ और मिट्टी भर जाने से और पानी गंदा होने से इस तालाब का सौंदर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट सा हो गया था। परंतु ग्वालियर के कमिश्नर और इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज के ग्वालियर चॅप्टर के अध्यक्ष श्री अजय शंकर जी ने, जो स्वयं एक नाट्यकर्मी हैं, ताल का रूपांतर खुले रंगमंच में करने की ठानी।

तालाब से मिट्टी, कीचड़ निकाला गया। उसकी चौड़ी बनायी गयीं, सीढ़ियों के बीचोंबीच एक पक्का रंगमंच बनवाया गया। तालाब में पानी भर जाने के बाद यह तैरते रंगमंच— जैसा दिखने लगेगा। तालाब में नाव छोड़कर उसपर भी नृत्य और नाट्य का मंचन किया जा सकेगा। तैरते रंगमंच का यह दूसरा रूप होगा।

तालाब के किनारे मेक-अप के लिए कमरे हैं और एक चित्रवीथी भी। तालाब के चारों ओर ग्रीनबेल्ट बनाने का काम भी शुरू हो गया है।

ग्वालियर का यह तैरता रंगमंच देश में अपने ढंग का एक अनोखा रंगमंच होगा।

एफ-४२, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-१६

केवल सिगरेट के कारण

'डॉ. कोटनीस की अमर कहानी' : एक कर्त्तव्यनिष्ठ चिकित्सक के जीवन पर बनी प्रसिद्ध फिल्म। निर्माता, निर्देशक और नायक थे सुप्रसिद्ध फिल्मकार व्ही, शांताराम।

पहले व्ही शांताराम नायक की भूमिका प्रसिद्ध अभिनेता मोतीलाल से करवाना चाहते थे। उनके प्रस्ताव को मोतीलाल ने स्वीकार भी कर लिया था। पर मोतीलाल ने शर्त रखी, वे पारिश्रमिक एक लाख रुपये लेंगे। व्ही शांताराम उन दिनों कई कठिनाइयों में फंसे थे। उन्होंने मोतीलाल से यह राशि कम करने का अनुरोध किया। पर मोतीलाल थे अक्खड़ स्वभाव के। न माने। अंततः व्ही शांताराम ने उन्हें उतना ही पारिश्रमिक देना स्वीकार कर लिया। वे चाहते थे कि यह भूमिका मोतीलाल ही करें। जब सारी बातें तय हो गयीं तो मोतीलाल ने अपना सिगरेट का सोने का केस निकाला और एक सिगरेट निकालने लगे।

व्ही शांताराम का एक नियम था। वे अपने स्टुडियो में किसी को सिगरेट पीने की अनुमति नहीं देते थे, चाहे वह कोई हो।

अनुशासन-प्रिय व्ही शांताराम ने मोतीलाल को अपना नियम बताया और सिगरेट पीने से रोका। पर मोतीलाल भी जिद्दी थे। बोले, 'सिगरेट तो मैं पिऊंगा। आपको अच्छा लगे या बुरा।' और यह कहते हुए वे बाहर चले गये।

व्ही शांताराम क्षुब्ध हो उठे। उन्होंने तय किया कि अब मोतीलाल को नायक की भूमिका नहीं देंगे, भले उन्हें ही वह भूमिका क्यों न करनी पड़े।

अंत में व्ही शांताराम ने ही उस फिल्म में डॉ. कोटनीस की भूमिका निभायी।

—सु.मा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

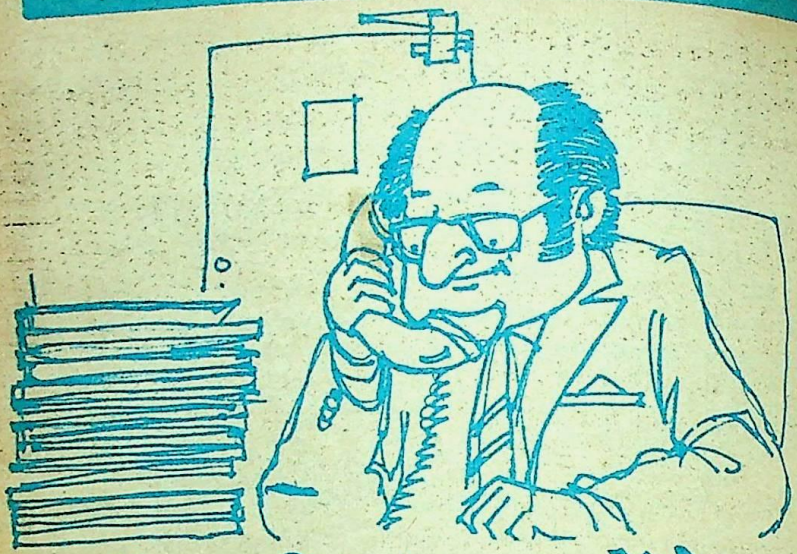

'प्लीज स्पीक' फाइलों के अर्थ

● हरीश चंद्र पांडेय

काफी दिन पहले जब मैं कॉलेज में पढ़ता था तो मोपासा की छोटी-छोटी कहानियां करीब-करीब सब मैंने पढ़ी थीं। अभी हाल में मैंने टी. वी. सीरियल में उनकी कहानियों पर आधारित कार्यक्रम देखे। मुझे बहुत अच्छा लगा। खासकर इसलिए कि इन छोटी कहानियों में मो पासा ने जीवन की समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

दूसरी चीज यह है कि एक बार जब कुछ लोग अब्राहम लिंकन को भाषण देने के लिए आमंत्रित करने गये तो उन्होंने पूछा कि मेरा भाषण लंबा होगा या छोटा होगा। यदि लंबा भाषण देना है तो मुझे पूर्व सूचना की आवश्यकता नहीं है लेकिन यदि छोटा भाषण देना है तो मुझे थोड़ा समय देना होगा, क्योंकि लंबा भाषण मैं कभी भी दे सकता हूं लेकिन छोटा भाषण देने के लिए मुझे तैयारी करनी होगी। मैंने अभी तक करीब-करीब १५-२० लेख लिखे हैं जो कि छप चुके हैं। लेकिन ये सब लेख लंबे-लंबे थे। ऐसा लगता है कि पढ़ने के बाद लोगों पर इन लेखों का असर नहीं पड़ा, क्योंकि जैसा मुझे लगता है, उन लेखों में मैंने बहुत-सी अनावश्यक बातें भी लिख दीं थीं जो उस लेख के विषय से संबंधित नहीं थीं।

जैसा अभी मुझे महसूस हो रहा है कि ऐसा मैंने इस डर से किया होगा कि लेख यदि लंबा नहीं हुआ तो प्रकाशक उसे छापेंगे ही नहीं। लेकिन अब मैंने निश्चित किया है कि मेरे लेख छपें या नहीं, मैं अपने लेख में विषय से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंधित ही अपने विचार लिखा करूंगा । ''तो आइए आज आप से एक खास तरीका जो काम में लाया जाता है, फाइल डिस्पोज करने के लिए, उस पर आप को अपने अनुभव किए हुए विचारों से अवगत करा दूं''—

१. मैंने देखा कि फाइल डिस्पोज करते समय लोग यदा कदा या कोई तो बराबर लिख देते हैं 'प्लीज स्पीक' । ऐसा इसलिए वे करते हैं कि निर्णय लेने के पहले वे प्रोपोजल भेजनेवाले से प्रोपोजल को डिस्कस करके ठीक से समझ लें।

२. लेकिन ऐसा भी होता है कि 'प्रोपोजल' को ठीक से पढ़ते नहीं हैं और जल्दी से फाइल को अपने मैदान से सब-आर्डिनेट के मैदान में फेंक देना चाहते हैं और लोगों को दिखाना चाहते हैं कि मैंने सब फाइल डिस्पोज कर दीं ।

३. ऐसा भी देखा गया है कि जब बॉस लिखकर प्रोपोजल को एप्रूव या रिजेक्ट नहीं करना चाहते हैं तो वे 'प्लीज स्पीक' लिख दिया करते हैं और सब-आर्डिनेट को अलग से बुलाकर या तो समझा देते हैं या डांट देते हैं कि ऐसा प्रोपोजल भेजने के पहले तुमने फोन से पूछ क्यों नहीं लिया ।

४. मैंने कुछ ऐसे भी आफिसर देखे हैं जो सभी फाइल में 'प्लीज स्पीक' लिख देते हैं उसके बाद निरंतर मिटिंग में व्यस्त रहते हैं और जब उनका सब-आर्डिनेट बात करने के लिए समय मांगता है तो उनका पी.ए. कह दिया करता है कि साहब बहुत व्यस्त हैं ।

५. मेरा सुझाव है कि यदि आप प्रोपोजल को अपने सब-आर्डिनेट से डिस्कस करना चाहते हैं तो 'प्लीज स्पीक' तो लिख दीजिए लेकिन साथ ही साथ अपने पी.ए. को कह दीजिए कि जल्दी से जल्दी समय देना है नहीं तो वह बेचारा अपना काम छोड़कर मुझसे मिलने के लिए फाइल लेकर मेरे पास दिनभर चक्कर काटता या निरंतर फोन करता रहेगा ।

मैं यह लेख लिखकर निर्णायकों से अनुरोध करूंगा कि 'प्लीज स्पीक' लिखने के पहले जरा सोचें कि क्या आप को प्रोपोजल सचमुच समझ में नहीं आया है, यदि प्रोपोजल में कुछ कमी रह गयी है तो वही लिख दीजिए । लेकिन यदि 'प्लीज स्पीक' लिखना ही है तो यह समझ लीजिए कि समय देना भी आपकी जिम्मेवारी है ।

प्रबंध विकास संस्थान,
टेलीफोन भवन [प्रथम तल्ला]
रांची (बिहार)

जमा-घटा

'तुम कितनी सुंदर हो । अपनी उमर से पांच वर्ष छोटी लगती हो ।' अमरीकी पति ने जापानी पत्नी से कहा ।

'तुम भी तो अपनी उमर से दस साल बड़े लगते हो', पत्नी बोली 'जमा घटा सब बराबर' ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं शुभ लोमड़ी के 'दर्शन'

● बाला दुबे

उस राग जयजयवंती की बंदिश भी कितनी अनूठी थी ।

'दामनी दमके डर मोहे लागे
सगुन बिचारौ रे मोरे बमना
शुभ दिन शुभ घड़ी आई आज'

हमारे जीवन में शकुन और अपशकुन अपने-अपने मापदंड बना चुके हैं । गोस्वामी तुलसीदासजी ने 'रामचरितमानस' में इनका वर्णन जगह-जगह किया है । जब सीताजी गौरी मां से राम को मन ही मन वरण करती हैं तब कहा है :—

'मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे'

स्त्री का वाम-अंग फड़कना शुभ सूचक है । पुरुष का वाम-अंग फड़कना युद्ध-प्रेरक है । अच्छे शकुनों का बखान करते हुए वे कहते हैं :—

'दाहिन काग सुखेत सुहावा । नकुल दरसु सब काहू पावा

दाहिने हाथ पर स्थित खेत में बैठे कौए का दर्शन शुभ है तो नेवला भी इस क्षेत्र में मान्य है । इसी प्रकार लोमड़ी का दर्शन और गाय के थनों से दूध पीता बछड़ा भी शुभ सूचक हैं । हिरन का झुंड और श्याम-चिरैया दिखायी देना भी सुलक्षण है । सामने दही, मछली और हाथ में पुस्तक लिये दो ब्राह्मण भी अत्यंत शुभ माने गये हैं । तुलसीदासजी कहते हैं :—

'लोवा फिरि फिरि दरस दिखावा । सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा मृगमाला फिरि दाहिनि आई ।....
सनमुख आयउ दधि अरु मीना : कर पुस्तक दुई बिप्र प्रबीना ।

इनके अतिरिक्त और भी कई अच्छे शकुन माने गये हैं । सामने से शव दिखायी देना बहुत शुभ माना गया है । हाथी का दर्शन होना भी अच्छा माना गया है । सामने जल से भरा पात्र या कूड़े से भरी टोकरी भी शुभ माने गये हैं । मंगलामुखी (वेश्या) का दर्शन भी बहुत अच्छा माना गया है ।

अपशकुन का बखान भी 'रामचरितमानस' में दिया है । त्रिजटा अपना स्वप्न सीता माता के सामने सब राक्षसियों को सुनाती है :—

खर आरूढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई ।....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकुन और अपशकुन भले नयी पीढ़ी को मान्य न हों, पर पुरानी पीढ़ी के लोग आज भी उन पर विचार करते हैं ।

गदहे पर सवारी बुरी मानी गयी है तो किसी को स्वप्न में नग्न दिखायी देना भी अशुभ है। कटा सर और बाहों को देखकर त्रिजटा को लंका के विनाश का आभास होने लगता है ।

इसी प्रकार जब रावण युद्ध के लिए चलता है तब

'भट गिरत रथ ते बाजि गज चक्करत भाजहिं साथ ते'

के अतिरिक्त उसे बुरे स्वर भी सुनायी पड़ते हैं :—

गोमाय गीध कराल खर रव स्वान बोलहिं अति घने
जनु कालदूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने'

हमारे यहां कुत्ते का रोना, सामने आते काने व्यक्ति का दर्शन, तेल से भरे पात्र का दिखायी देना, खाली बरतन सामने आ जाना और गधे को लोट लगाते देख लेना भी अपशकुन माना गया है । भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी यह विश्वास एवं अंध-विश्वास पनप रहा है । बतलाते हैं कि जब जूलियस सभा जाने के लिए देहरी पार कर रहा था तब किसी ने छींक दिया था । इस पर उसकी पत्नी ने उसे बार-बार रोका पर वह नहीं माना । फलस्वरूप इसी सभा में वह अपनी रखैल के पुत्र ब्रूटस के हाथों मारा गया । कट्टर मजहबी औरंगजेब शकुन-अपशकुन बहुत मानता था । कूच करने से पहले वह अपने नजूमियों (ज्योतिषियों) से 'साइत' निकलवाता था और उनके कहने पर ही कार्यवाही करता था ।

'स्वप्न विचार' नामक पुस्तक में स्वप्न में दिखायी देनेवाली वस्तुओं को भी शुभ-अशुभ संकेतों में बांटा गया है । उदाहरणार्थ स्वप्न में मल दिखायी देना धन आने का सूचक है । किसी को मरते देखना अच्छा माना गया है । सांप का दर्शन पुत्र-प्राप्ति का सूचक है । इसी प्रकार लाल रंग के वस्त्र पहनकर किसी को देखना, पानी की बाढ़ देखना, मरे हुए व्यक्ति को नाचते-गाते देखना— ये सब बुरे माने गये हैं ।

कथित शकुन-अपशकुन पर बीसवीं शताब्दी की जनता को कितना विश्वास है यह बहुत विवादास्पद हो गया है । नयी रोशनी के युवक इन बातों पर हंसते हैं तो उनके बुजुर्ग आज भी पुराने चलन मानते हैं ।

—एफ ४८ ग्रीनपार्क, नयी दिल्ली-११००१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीर खुसरो

कविता उन पर निछावर हो गयी

● कृष्ण कुमार शर्मा

"मैंने सुना कि पुराने जमाने में उनसरी कवियों का सम्राट था । जब उनसरी ने सिंहासन छोड़ा तो बड़ाई की टोपी फिरदौसी के सिर पर रखी गयी । जब फिरदौसी ने कफन में मुंह ढांपा तो रवाकानी कविता के मैदान में आया । जब रवाकानी इस संसार से चल बसा तो निजामी काव्य जगत का बादशाह बन गया । जब निजामी ने मौत का प्याला पी लिया तो बुद्धिमत्ता का मुकुट सादी के सिर पर रखा गया । जब सादी का तख्ता उलटा तो कविता खुसरो पर निछावर हो गयी ।"

नाजिम हिरवी ने एक कविता में फारसी के मुख्य कवियों का परिचय कराते हुए खुसरो का उपर्युक्त वाक्य में उल्लेख किया है ।

खुसरो का विस्तृत परिचय देते हुए श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग ने 'हमारे संगीत रत्न' में लिखा है :

अमीर खुसरो के पूर्वज खुरासान से भारत में आये थे । उनके पिता अमीर मोहम्मद सैफुद्दीन एटा जिले के एक छोटे-से कस्बे पटियाली में आकर बस गये । वे कला प्रेमी और प्रकृति पूजक के साथ-साथ काव्य रसिक भी थे ।

खुसरो का जन्म सन १२५३ ई. (६५१ हिजरी) में इसी स्थान पर हुआ । खुसरो अत्यंत चतुर और बुद्धिमान थे । पिता ने भी उन्हें भली प्रकार शिक्षा दी । पिता की मृत्यु के बाद अमीर खुसरो तत्कालीन गुलाम घराने के शाह गयासुद्दीन बलबन के आश्रय में रहे । वहां कलाकार और साहित्यकारों के संपर्क में रहकर उनकी प्रतिभा और भी प्रखर होती गयी और वे काव्य रचना में रुचि लेने लगे ।

इमामुल मुल्क द्वारा आयोजित संगीत-महफिलों में भाग लेने के कारण अमीर खुसरो का संगीत की ओर आकर्षण बढ़ा । बाद में उन्होंने संगीत के क्षेत्र में ऐसा काम कर दिखाया जिसके कारण इतिहास में उनका नाम अमर हो गया । कुछ समय बाद खुसरो ने बलबन के पुत्र शाहजादा मोहम्मद सुलतान की नौकरी कर ली और उनके साथ मुल्तान गये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

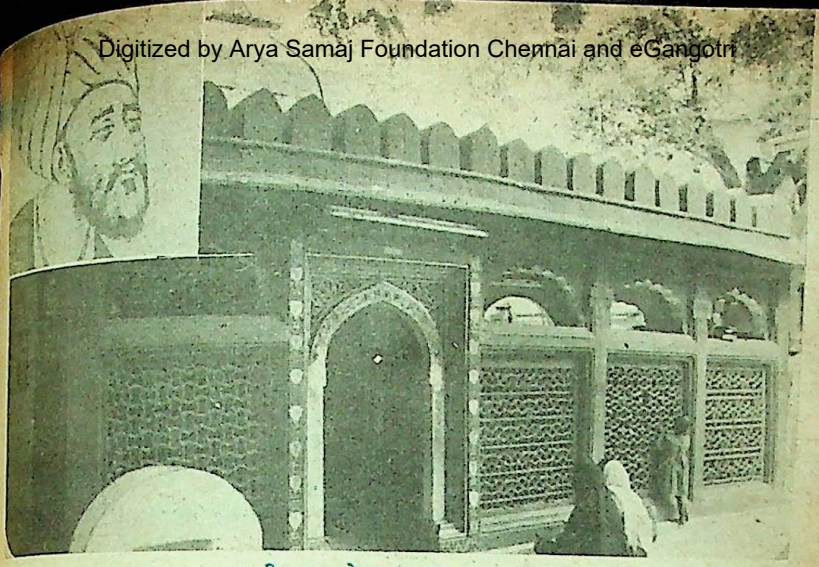

अमीर खुसरो का मकबरा

यहां शाहजादा की मृत्यु मंगोलों के हाथों हो गयी और खुसरो हताश होकर दिल्ली लौट आये। दिल्ली में उन्होंने बलबन के उत्तराधिकारी कैकोबाद के यहां नौकरी कर ली।

यद्यपि कैकोबाद शासन की दृष्टि से एक अयोग्य शासक ही साबित हुआ किंतु संगीत और कविता से उसे बेहद लगाव था, उसे अपनी रुचि के अनुकूल खुसरो— जैसा कलाकार भी मिल गया था। इसी समय खुसरो ने राजाज्ञा से 'किराम उस्सादेन' मसनवी लिखी, जिसमें कैकोबाद और उसके पिता की भेंट का वर्णन किया गया। जब कैकोबाद की मृत्यु हो गयी तब खुसरो ने अलाउद्दीन खिल्जी (१२९५-१३१६) के पास नौकरी कर ली। उसके यहां अमीर खुसरो राज दरबार में प्रत्येक रात्रि को एक नयी गजल गाते थे। उन दिनों वहां संगीतज्ञों के जल्से होते रहते थे जिनमें बूढ़ा सुल्तान संगीत और काव्य का आनंद लेता। इन कलाकारों में अमीर खुसरो का विशेष स्थान था।

अमीर खुसरो उच्चकोटि के संगीतज्ञ, गायक और कवि थे। उनके गद्य-पद्य के ग्रंथों का फारसी साहित्य में बहुत ऊंचा स्थान है। कहा जाता है कि खुसरो ने संगीत पर भी एक ग्रंथ लिखा था, किंतु उसके नाम और प्रकाशन का

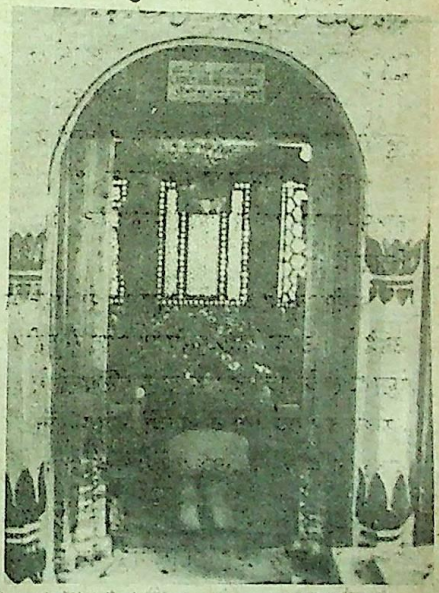

अमीर खुसरो की मजार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ पता नहीं लगता ।

अमीर खुसरो ने भारतीय और फारसी गानों के आधार पर अनेक रागों की सृष्टि की थी जिनमें साजगिरि, उश्शाक, ऐमन, जीलफ, सरपरदा, बाखर्ज, मुनम, निगार, वसीत शाहाना आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है ।

अमीर खुसरो में यह विशेषता थी कि वे भारतीय रागों को सुनने के पश्चात उसी तरह के फारसी राग फौरन तैयार करके सुना देते थे । अमीर खुसरो द्वारा भारतीय संगीत की देन का उल्लेख लाहौरी के बादशाहनामा में भी किया गया है । उसमें लिखा है कि मुसलमानों के उदय के पहले भारतीय संगीत में गीत, छंद, घुरू और अस्तुत होते थे । ये सब राग कर्नाटकी भाषा में होने के कारण उत्तर भारत के लोग उन्हें नहीं समझ सकते थे । अमीर खुसरो ने गाने के चार नये तरीके निकाले । (१) कौल, इनमें फारसी और अरबी के शब्द होते थे और गाने का ढंग भारतीय गीतों की तरह होता था । (२) एक प्रकार का तराना जिसमें फारसी के शेर होते थे जो प्रायः इकताला में गाये जाते थे । (३) कव्वाली, जो फारसी और भारतीय शैली मिश्रित एक गायन पद्धति थी । (४) ख्याल, एक प्रकार के गीत जो हिंदुस्तानी भाषा के होते थे । इस प्रकार ख्याल, तराने और कव्वाली के जन्मदाता होने का श्रेय अमीर खुसरो को दिया जाता है । इसके अतिरिक्त वाद्यों में भी उन्होंने क्रांति पैदा की । खुसरो ने दक्षिणी वीणा में परिवर्तन करके चार की जगह तीन तार लगाये तथा तारों का क्रम उलटकर चल परदे लगा दिये । और द्रुतलय में बजाने की सुविधा के लिए गतें बनाकर ताल में निबद्ध कीं । इससे वीणा की अपेक्षा यह परिवर्तित वाद्य अधिक लोकप्रिय हो गया । इस वाद्य में तीन तार होने से खुसरो ने इसका नाम सहतार (सितार) रक्खा । फारसी में सह का अर्थ है तीन ।

अमीर खुसरो के लिए फारसी और तुर्की के साथ-साथ हिंदी भी उनकी मातृभाषा थी । वे अरबी भी जानते थे और संस्कृत से भी उनका अच्छा-खासा परिचय था । सुप्रसिद्ध उर्दू शायर अर्श मलसियानी के अनुसार 'खुसरो के शेरों की संख्या २-३ लाख अवश्य रही होगी ।

इसके अतिरिक्त गद्य में उनकी तीन बड़ी-बड़ी पुस्तकें हैं । गद्य में उनकी पुस्तक 'ऐजाजे खुसनवी' कई सौ पृष्ठों की है । पद्य में उनके पांच दीवान और नौ मसनवियां हैं ।'

अमीर खुसरो निजामुद्दीन औलिया के परम भक्त थे । राजदरबारों की अपेक्षा उनका मन निजामुद्दीन औलिया के सानिध्य में ज्यादा रमता था ।

सन १३२४ ई. के लगभग उस्ताद निजामुद्दीन औलिया का देहांत हो गया । इस दुखद समाचार को जब अमीर खुसरो ने सुना तो उन्होंने गुरु की कब्र के पास पहुंचकर निम्नलिखित दोहा कहा :

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुं देस

इसके पश्चात अमीर खुसरो विरक्त होकर रहने लगे और इसी वर्ष इनका भी देहांत हो गया । इनकी कब्र भी इनके गुरु निजामुद्दीन औलिया के पायताने की ओर दिल्ली में मौजूद है, जहां प्रतिवर्ष उर्स मनाकर उनकी गजलें गाकर कव्वाल लोग जश्न मनाया करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

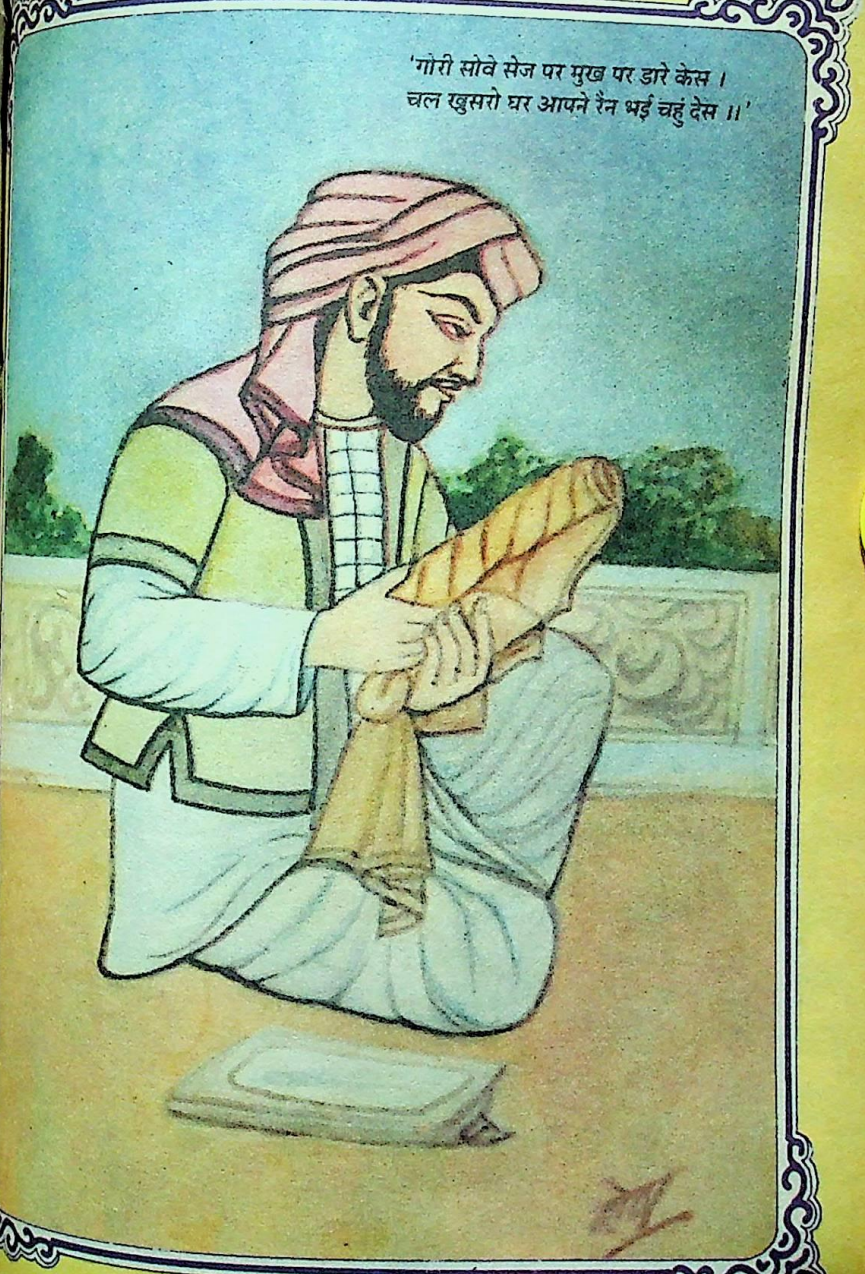

अमीर खुसरो

जन्म सन् १२५३ ई. (६५१ हिजरी) निधन सन् १३२५ ई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी दीक्षित :
नयी पहचान बनाने की कोशिश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म : अनभूले प्रसंग—२

वी. शांताराम

गीत गाया पत्थरों ने

● सुभद्रा मालवी

भारतीय सिनेमा के पुराने आधार स्तंभ, जिन पर आज के सिनेमा जगत का भव्य महल तैयार हुआ, उनमें वी. शांताराम का नाम, उनकी सोद्देश्य और सामाजिक चेतना को जगानेवाली फिल्में बनाने के लिए सदा स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा ।

शांताराम का जन्म उस घर में हुआ जहां दो संस्कृतियों की अर्चना साथ-साथ चलती थी । शांताराम के पिता जैन मतावलंबी थे और माता हिंदू रीति-रिवाजों से पूजा-अर्चना करती थीं । १९१६ में कोल्हापुर से तीस मील दूर नरसोबा की बाड़ी में इन दोनों का विवाह हुआ । उस समय जब जात-पात, धर्म, छुआछूत के दुष्प्रभाव समाज में गहरे तक जड़ें जमाये थे । इस प्रकार के आदर्श विवाह की तो कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था । किंतु वह विवाह हुआ । समाज भय के कारण पिता अपना भोजन स्वयं बनाकर खाते, किंतु बाद में यह भी छोड़ दिया और वे पत्नी के हाथ का बनाया भोजन ग्रहण करने लगे । शांताराम के पिता की मनिहारी की दुकान थी, जिससे दाल-रोटी तो चल जाती थी, किंतु स्कूल की आधी फीस माफ करवा कर ही उनकी पढ़ाई हो पाती । एक बार गांव में किर्लोस्कर नाटक मंडली आयी, जिसके फोटोग्राफर शांताराम के पिता के मित्र थे । ये सब उनसे आग्रह कर फोटो खिंचाने जा पहुंचे । कपड़े तो बच्चों के अच्छे वैसे ही पुराने थे । मित्र ने नाटक-मंडली के कुछ कलाकारों के जरीदार कपड़े पहनाकर उनके चित्र खींचे । स्कूल में गुरुजी ने एक बार एक कविता लय में गाकर सुनायी और फिर सब बच्चों से उसे लय सहित याद करके दूसरे दिन सुनाने को कहा । शांताराम ने सोचा किसी नयी लय में कविता सुनाने से गुरुजी प्रसन्न हो कर शाबाशी देंगे । किंतु शाबाशी तो दूर कुछ नया कर दिखाने के बदले मार ही पड़ी ।

पहलवानी का शौक

अब शांताराम के पिता ने कुछ पेट्रोमेक्स खरीद लिये जो शादी-ब्याह, नाटक आदि में किराये पर जाते थे । पिता इतने सीधे थे, कि लोग पैसा ही नहीं देते । इससे शांताराम के पिता को काफी नुकसान हुआ, किंतु इनकी बदौलत शांताराम ने काफी नाटक बचपन में ही देख लिये । इनके पिता को भी लोगों की नकलें उतारने में महारत हासिल थी । उनके अच्छे कलाकारों से संपर्क भी थे ।

छोटी-सी भूमिका

एक बार स्कूल के वार्षिक समारोह में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

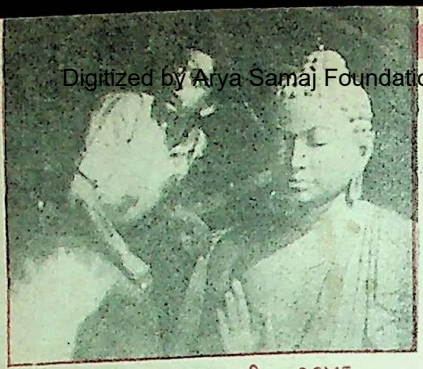

डॉ. कोटनीस की अमर कहानी : १९४६

शांताराम को पहरेदार की एक छोटी-सी भूमिका मिली । भूमिका काफी छोटी होने से खाली समय में शांताराम अन्य कलाकारों के अभिनय को बारीकी से देखते और उनकी नकल उतारते । एक दिन गुरुजी ने पकड़ लिया और उससे नकल करके दिखाने को कहा । उसने सबकी नकल करके दिखायी । उन दिनों गांव में एक फिल्म 'फूल्स हैड' आयी थी । (उस समय तक हैंडल से घुमाकर चलनेवाले चित्रों का प्रचलन हो गया था) । यह फिल्म शांताराम ने देखी थी, उन्होंने गुरुजी से पूछकर उसकी भी नकल करके दिखायी । गुरुजी बहुत प्रसन्न हुए । नाटक में भी उसके अभिनय की सबने बहुत प्रशंसा की । गांव में किन्हीं देवल नामक सज्जन ने देवल क्लब की स्थापना की थी, जहां सब कलाकार अपनी-अपनी कला दिखाते थे । अब तक पिता-पुत्र दोनों की नकलें उतारने में काफी प्रसिद्धि हो चुकी थी । गांव में एक बार गंधर्व नाटक मंडली अपने खेल दिखाने आयी । मंडली के गोविन्द राम टेंबे को जब शांताराम ने नकलें करके दिखायीं, तो उन्होंने उसे मंडली में भरती हो जाने के लिए कहा । शांताराम मान गये । वह मंडली के साथ पुणे चले आये । उनका पहला नाटक था 'मानापमान' । इसके लिए उन्हें नृत्य की तालीम भी लेनी पड़ी थी । छह महीने बाद उन्हें तीन रुपये वेतन मिलने लगा । किंतु सालभर बाद उन्होंने सब छोड़ कर फिर से स्कूल प्रारंभ कर दिया । उन्हीं दिनों जिस शिवाजी थियेटर में नाटक होते थे, उसमें कुछ परिवर्तन कर सिनेमा दिखाने का प्रबंध हुआ । वह अब सिनेमा परिवार का एक अंग ही बन गया था । पिता-भाई सिनेमा का प्रबंध देखने लगे थे ।

मैट्रिक की प्रवेश परीक्षा में संस्कृत में फेल हो जाने के बाद, २० जून, १९२० को बाबूराव पेंटर की महाराष्ट्र फिल्म-कंपनी से शांताराम फिल्मी जीवन में विधिवत जुड़ गये । वी. शांताराम नाम की भी एक कहानी है ।

मैकेनिक की नौकरी

पढ़ाई छोड़ने के बाद शांताराम ने हुबली (कर्नाटक) की रेलवे मरम्मत वर्कशॉप में १५ महीने पर नौकरी कर ली थी । माता-पिता भी वहीं जाकर रहने लगे थे । बचे हुए समय में वे स्थानीय सिनेमा गृह में लोगों को सीट तक पहुंचाने का काम करते थे । धीरे-धीरे उन्नति करके वे सिनेमा के साइन-बोर्ड पेंट करने तक पहुंच गये ।

महाराष्ट्र फिल्म-कंपनी उन दिनों दादा फाल्के की फिल्मों की सफलता से प्रेरित हो धार्मिक, पौराणिक फिल्में बना रही थी । युवक शांताराम जब इस कंपनी से जुड़ गये, तो पेंटर ने उससे हर प्रकार के काम लिये जैसे क्लीनर, कैमरा सहायक, सीन पेंटर, लैब सहायक, स्पेशल इफेक्ट देनेवाला, इधर-उधर से सामान लानेवाला और अभिनेता । शांताराम सब कुछ लगन और परिश्रम से सीखता और करता चला गया । उस समय कंपनी ने सुरेखाहरण फिल्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

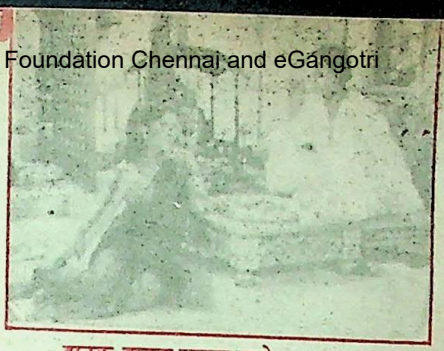

झनक-झनक पायल बाजे : १९५५

हीने बाद उन्हें तीन
किंतु सालभर बाद
से स्कूल प्रारंभ कर
वाजी थियेटर में
परिवर्तन कर सिनेमा
वह अब सिनेमा
न गया था।
व देखने लगे थे।
ा में संस्कृत में फेल
१९२० को बाबूराव
पनी से शांताराम
जुड़ गये। वी.
कहानी है।

नौकरी

शांताराम ने हुबली
मत वर्कशॉप में १५
ी। माता-पिता भी
बचे हुए समय में वे
ों को सीट तक
धीरे-धीरे उन्नति
बोर्ड पेंट करने तक

उन दिनों दादा फालके
प्रेरित हो धार्मिक
ी। युवक शांताराम
तो पेंटर ने उससे
ी क्लीनर, कैमरा
हायक, स्पेशल
र से सामान
शांताराम सब कर
ता और करता चला
सुरेखाहरण फिल्म

कादम्बिनी

बनायी थी। उसे लेकर बाबूराव पेंटर तथा
बाबूराव पेंढ़ारकर (शांताराम के मौसेरे भाई)
जब बंबई जाने की तैयारी कर रहे थे तब एक
दिन पेंढ़ारकर ने शांताराम को बुलाकर कहा
कि— "यहां आनेवाली हर चिट्ठी-पत्री को
गौर से पढ़कर उनके व्यवस्थित उत्तर अपने
दस्तखतों के साथ दे देना।"

नया नामकरण

इस पर शांताराम ने कहा— "मैं यह काम
कैसे कर पाऊंगा ?" तब पेंढ़ारकर ने कहा—
"क्यों नहीं कर पाओगे ? मैट्रिक पास हो,
समझ के सब कर लेना। अच्छा जरा दिखाओ
दस्तखत कैसे करते हो ?" शांताराम हुबली में
जैसे दस्तखत तनख्वाह लेते वक्त करते थे वैसे
करके दिखा दिये। 'एस.आर. वणकुद्रे'। इस
पर पेंढ़ारकर ने कहा कि "यह तो मुश्किल
होगा। वणकुद्रे नाम सब अपनी-अपनी तरह से
बोलेंगे। कोई वानकुद्रे कहेगा तो कोई
वंकुडरे।" फिर थोड़ी देर सोच कर कहा
कि— "ऐसा करते हैं तुम्हारे सरनेम का पहला
अक्षर वी. ले लेते हैं, और उसे शांताराम के
आगे लगा देते हैं। बन गया वी. शांताराम।
यह नाम उसने दो-तीन बार बुदबुदाया फिर
कहा— "एकदम ठीक है।" इसके बाद वी.
शांताराम नाम ही प्रचलित हुआ।

१९२३ में शांताराम को पचास रु. वेतन
मिलने लगा। अब माता-पिता विवाह की
तैयारी में लगे। फलटन रियासत के संगीतकार
मुधोपंत की बारह वर्षीय साली अंबू,
सौभाग्यवती विमल शांताराम बन गयी।
(महाराष्ट्र में विवाह के बाद पतिगृह में कन्या
का दूसरा नाम रखने की प्रथा है।) दिन अच्छे
से कट रहे थे। एक दिन संध्या समय श्रीमंत

नेसरीकर ने, जो फिल्म-कंपनी के आर्थिक
सहायक थे, शांताराम को बुलाकर कहा—
क्यों, शांताराम तुम और केशवराव मिलकर
किसी फिल्म का निर्देशन क्यों नहीं करते ?"
शांताराम की समझ में बात आयी नहीं। उसको
लगा नेसरीकर कहीं मजाक तो नहीं कर रहे !
वह चुप खड़ा रहा। इस पर नेसरीकर फिर
बोले— "इतने वर्षों से तुम पेंटर के मार्ग-दर्शन
में कार्य सीख रहे हो, फिर भी निर्देशन की
जिम्मेदारी उठाने से डरते हो ?" इस प्रश्न से
शांताराम जैसे बिलबिला उठे। जीवन की
पहली चुनौती सामने थी, किंतु मन उलझन में
था कि अगर हां कह दूं, तो पेंटर क्या सोचेंगे ?
उसे चुप ही देख नेसरीकर कुछ और ही समझे,
कहने लगे— "तुम चुप क्यों हो ? जवाब क्यों
नहीं दे रहे ? निर्देशन करने से डरते हो ?"

अब शांताराम ने कहा— "जी नहीं, डरने
की कोई बात नहीं। अगर सेठ अनुमति देंगे, तो
हम निर्देशन अवश्य कर सकते हैं।" पेंटर ने
सदा की तरह रुक-रुककर कहा— "अरे,
करो... ! निर्देशन करो.*.. । बना लो एक
चित्रपट... ।"

फिल्म थी 'नेताजी पालकर' जो शिवाजी के
एक वीर सेनानी पर थी। पेंटर अंदर ही अंदर
इस बात से कुढ़ रहे थे। जब फिल्म बंबई में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिलीज की गयी तो शांताराम और केशवराव धायबर को किसी ने बंबई जाने के लिए नहीं कहा । पेंढ़ारकर अकेले ही ब्रू प्रिंट लेकर गये । फिल्म आशा से अधिक सफल रही । किसी संस्था ने उसे स्वर्ण-पदक देने की घोषणा की । पेंटर ने स्वयं बंबई जाकर महाराष्ट्र फिल्म कंपनी की ओर से सम्मान-समारोह में पदक ग्रहण किया । इन दोनों के नाम का तो उल्लेख भी नहीं किया, यहां तक कि लाकर पदक दिखाया भी नहीं । ये दोनों निर्देशक बेचारे मन मारकर रह गये । इसके बाद दामले, फत्तेलाल खां और यादव ने मिलकर 'महारथी कर्ण' बनायी । इन लोगों को फिल्म की एडिटिंग नहीं आती थी । तब एक दिन पेंटर ने कहा— अरे, उस शांताराम को कहो, वह ठीक कर देगा । बंबई में इसे प्रदर्शित करके ये लोग जब लौटे तो पता चला कि मोटे वेतन पर किसी बी. गिडवानी नामक लंदन रिटर्न को निर्देशन तथा गुणे नामक व्यक्ति को तकनीकी विशेषज्ञ के रूप में लाकर इनके ऊपर नियुक्त कर दिया गया है । ये लोग अपमान की आग में झुलसने लगे । स्वाभाविक ही था । पेंटर ने इन लोगों की सफलता से जलकर यह कदम उठाया था । ये लोग अलग होने की योजना बनाने लगे । १ अप्रैल, १९२९ को दामले, फत्तेलाल, शांताराम और धायबर ने पेंटर के कमरे में जाकर कहा— "हम चारों ने मिलकर अपनी कंपनी बनाने का फैसला किया है । मई से हम काम पर नहीं आयेंगे ।" इस नयी कंपनी का नाम पेंढ़ारकर के सुझाव पर रखा गया 'प्रभात' और इसका प्रतीक चिह्न हुआ सूर्योदय का सूर्य और उसकी किरणें । आगे एक युवती खड़ी भेरी नाद कर प्रभात के आगमन की सूचना दे रही है । बाद में सीताराम पंत कुलकर्णी भी कंपनी में पैसा लगाकर इसके भागीदार बन गये । उस समय शांताराम केवल २७ वर्ष के थे ।

१ जून, १९२९ को नारियल फोड़कर प्रभात का मुहूर्त किया गया, स्थान था कोल्हापुर के ही मंगलवार पेठ की एक दलदली जमीन । दामले, फत्तेलाल तथा धायबर आरंभ से ही फोटोग्राफी, लेबोरेटरी इत्यादि संभालते थे । शांताराम निर्देशन तथा एडिटिंग के विशेषज्ञ थे । इनकी पहली मूक फिल्म 'गोपालकृष्ण' जब बनकर तैयार हुई, तो ये चारों बड़े आदर और श्रद्धा के साथ पेंटर को फिल्म देखने के लिए आमंत्रित करने पहुंचे । उस समय पेंटर एक्सीडेंट में घायल होकर अस्पताल में पहुंचे थे । इन चारों ने सादर निवेदन किया कि फिल्म बहुत सफलता से चल रही है, आप भी कृपया एक बार उसे देखने आयें । पेंटर ने कहा— "तो मैं क्या करूं"— बस इतना कहा और फिर बात ही नहीं की । जब ये लोग चले आये तो उन्होंने किसी से कहा— "जब मेरा एक्सीडेंट हुआ तो ये लोग देखने भी नहीं आये कि जीता है या मर गया और फिर पिक्चर अच्छी चली तो कौन-सी नयी बात हुई, मेरे साथ रहकर जो सीखा उससे एक फिल्म बना ली अब देखना आगे क्या कर पाते हैं ये लोग !"

सवाक फिल्मों का आरंभ

एक के बाद एक सफल फिल्में प्रभात में बनीं । धीरे-धीरे विश्व में सवाक् फिल्मों का युग आरंभ हो चुका था । १९३२ में इन्होंने पहली सवाक् फिल्म 'अयोध्या का राजा' हिंदी और मराठी दोनों में बनाने की सोची । संभ्रांत घराने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

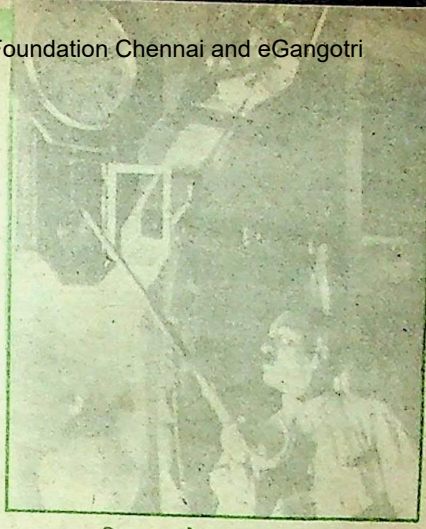

दुनिया न माने : १९३७

कंपनी का पुणे स्थानांतरण

फिल्म-कंपनी की सफलता के साथ-साथ भागीदारों में आपस में मन-मुटाव बढ़ने लगे। साथ ही कोल्हापुरवाला स्थान छोटा पड़ने लगा। बंबई के आसपास रहने से अधिक सुविधा होगी, यह सोचकर कंपनी को पुणे ले आया गया।

'पड़ोसी' फिल्म के लिए एक नयी तारिका जयश्री कामुलकर का चयन हुआ। उसके बारे में प्रभात के मैनेजर ने बताया कि उसे सब मनहूस समझते हैं। कहते हैं उसने जिस भी कंपनी में काम किया वह फेल हो गयी। इस पर शांताराम ने जवाब दिया कि अच्छी फिल्म न बनाओ तो कंपनी अवश्य फेल होगी। इसमें जयश्री का क्या दोष ? उसे कांट्रेक्ट दे दो।

यही पड़ोसी फिल्म जो सभी धर्मों को माननेवालों को प्रेम और सद्भावना से मिलजुलकर रहना सिखाती थी, बिहार के भागलपुर में रिलीज हुई। तब वहां दंगे भड़के हुए थे। फिल्म देखकर आश्चर्यजनक रूप से दंगे शांत हो गये।

है। बाद में सीताराम
पैसा लगाकर इसे
मय शांताराम के
रियल फोड़कर प्रफु
था कोल्हापुर के
दली जमीन।
बर आरंभ से ही
दि संभालते थे।
टिंग के विशेषज्ञ
ल्म 'गोपालकृष्ण'
चारों बड़े आदर
फिल्म देखने के
। उस समय पेंटर
स्पताल में पहुंचे
दन किया कि फिल्म
है, आप भी कृपया
पेंटर ने कहा—
इतना कहा और
ये लोग चले आये
"जब मेरा
खने भी नहीं आये
फिर पिक्चर अच्छी
हुई, मेरे साथ
फिल्म बना लो अब
ये लोग !"
ना आरंभ
फिल्में प्रभात में
क् फिल्मों का पु
में इन्होंने पहली
राजा' हिंदी और
ी। संभ्रांत घराने

की एक महिला दुर्गा खोटे को तारामति की भूमिका के लिए चुना गया, यह भी खूब चली।

एक और धार्मिक फिल्म की शूटिंग कर्नाटक में हुबली नामक स्थान पर होनी थी। बसों में सवार होकर ये लोग कर्नाटक की ओर चले, तब बड़ी मजेदार घटना हुई। हुआ यूं कि ये लोग गलत रास्ते पर जा निकले। फत्तेलाल ने एक जगह रुककर एक राहगीर से पूछा कि— "क्या, हम लोग किधर जा रहे हैं !" वह हैरान-सा चुप ही खड़ा रहा। फत्तेलाल ने फिर वही बात पूछी, तो उसने कुछ हैरत से जवाब दिया— "अजी, मुझे क्या मालूम कि तुम लोग किधर जा रहे हो ?" सब ठहाका मारकर हंस पड़े। वाकई वह क्या जाने कि वह किधर जा रहे हैं। पूछना तो यह चाहिए था कि यह रास्ता कहां जाता है ?

१९३७ में शांताराम ने 'दुनिया न माने' जैसे समय से आगे की विचारधारावाली फिल्म बनायी। एक युवती को जबरन एक बूढ़े से विवाह करने पर विवश किया जाता है। युवती उस बूढ़े को अपना पति मानने से इनकार कर देती है। इस फिल्म में शांताराम ने घड़ी के प्रतीक का अति सुंदर प्रयोग किया है।

१९३९ में भी शांताराम ने 'आदमी' के रूप में एक और चौंकानेवाली फिल्म दी। यह एक पुलिसवाले की कहानी थी, जो एक वेश्या से प्रेम तो करता है, किंतु उसे सबके सामने स्वीकार करने से डरता है।

ऐसे समय जब सभी फिल्म-निर्माता आम दर्शकों की रुचित नुस्खों पर फिल्म बना रहे थे, शांताराम ने सामान्य जन की चेतना को झंझोड़नेवाले विषय चुने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयश्री से विवाह

उसी दौरान शांताराम का जयश्री से प्रेम हो गया और शांताराम ने दूसरा विवाह कर लिया। इस विवाह के कारण भागीदारों से शांताराम की तनातनी और बढ़ गयी। शांताराम यहां से भी अलग हो गये। बंबई की उपनगरी परेल में जहां कामगारों की बस्ती थी, वहीं शांताराम ने अपनी कर्मभूमि का मंदिर खड़ा किया। माता और पिता के नाम का पहला अक्षर लेकर बना 'राजकमल'। चूंकि यहां कला की पूजा होने जा रही थी, अतः हुआ 'राजकमल कला-मंदिर', निशान था—प्रातः कालीन सूर्य की आभा में युवती द्वारा पुष्पांजलि अर्पण करते हुए।

फिल्म-सलाहकार समिति के जे.बी.एच. वाडिया के कहने पर उन्होंने लघु फिल्में भी बनायीं।

इसके बाद 'राजकमल कला—मंदिर' के बैनर तले बनायी शकुंतला। इसके रिलीज़ होने पर बहुत हंगामा हुआ कि फिल्म फेल हो गयी है। शांताराम को काफी निराशा हुई कि पहली ही फिल्म फेल हो गयी। गेट पर खड़े होकर लड़के डेढ़ रु. का टिकट बारह आने में बेच रहे थे। किंतु शांताराम को पूरा भरोसा था कि फिल्म अच्छी बनी है। उन्होंने स्वयं दर्शकों के साथ बैठकर फिल्म देखी थी। उनको लगा कि कहीं गड़बड़ जरूर है। बाहर आकर उन्होंने उन लड़कों को खिला-पिलाकर जब पूछताछ की तो पता चला कि यह सारी साजिश बाबूराव पेंटर की थी, जो प्रभात में इनके साथ था। परेशानी एक तो थी नहीं। उधर बड़ा लड़का प्रभात ग्वालियर सैनिक स्कूल में मौत के मुंह से जैसे-तैसे वापस निकल सका था। धीरे-धीरे शकुंतला जमने लगी। फिर इसका प्रिंट हाथ से रंगकर रंगीन किया गया। एक ही सिनेमा में लगातार सौ सप्ताह तक चलनेवाली भारत की यह पहली फिल्म थी।

फिल्म पर राशनिंग

सन १९४४ समाप्त होने को था, विश्व पर से द्वितीय महायुद्ध के काले बादल छंटने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे। इसका असर सभी क्षेत्रों में दिखायी दे रहा था। फिल्म-उद्योग भी इससे अछूता न रह सका। कच्ची फिल्म का आयात करना कठिन हो गया। सरकार ने फिल्म पर भी राशनिंग कर दी। इसके साथ ही कड़ी हिदायत भी दी कि हर फिल्म-निर्माता को तीन फिल्मों में से एक में ब्रिटिश युद्ध का प्रचार अवश्य हो।

देश में असंतोष की आग फैल रही थी। स्वतंत्रता सेनानियों को सींखचों के पीछे बंद कर दिया गया था। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने इन सेनानियों को एकत्र कर आजाद हिंद फौज का गठन कर लिया था। शांताराम ब्रिटिशों के आगे दुम हिला कर उनकी चमचागिरी करनेवाली फिल्में बनाने को तैयार नहीं थे, किंतु फिल्म-निर्माण के लिए कच्ची फिल्म भी आवश्यक थी। तभी उनको किसी ने शोलापुर के युवा डॉ. द्वारकानाथ कोटनीस के अमर बलिदान की कथा सुनायी। कुछ सोचकर उन्होंने डॉ. कोटनीस की पटकथा सरकार तक भिजवा दी साथ ही यह पत्र भी भेजा—

प्रेरक-फिल्म

—"डॉ. कोटनीस पर लिखी गयी इस कहानी पर सरकार को कुछ भिन्न तथा व्यापक दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महायुद्ध में जापान भी कूद पड़ा है । जापान के विरुद्ध चीन के सहायतार्थ भेजे गये डॉक्टरों के सद्भावना दल के एक सदस्य की कहानी है यह । मेरा विचार है कि डॉ. कोटनीस के द्वारा यह हिंदुस्तानी का ध्यान आज के विश्व संकट की ओर आकर्षित होगा और उनका मनोबल बढ़ेगा ।''

जैसी कि आशा थी सरकार शब्दों के जाल में फंस गयी । फिल्म को युद्ध प्रचार फिल्म घोषित कर बनाने की अनुमति मिल गयी । इस फिल्म के प्रदर्शित होने पर इसका आम जनता पर कैसा प्रभाव पड़ा, यह तो सब जानते ही हैं । फिल्म १९४६ में बनकर तैयार हुई । ४७ में भारत स्वतंत्र हो गया । 'डॉ. कोटनीस की अमर कहानी' फिल्म का नायक वास्तविक जीवन में उन्हीं में पं. जवाहरलाल नेहरू के भाषण को सुनकर ही अपनी सुख-सुविधा का जीवन छोड़कर त्याग से प्रेरित होकर सेवा-भावना से भर गया था । जहां उसने सेवा में ही अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया था । अतः दिल्ली में फिल्म के प्रिमियर के अवसर पर शांताराम ने पं. नेहरू को आमंत्रित करना चाहा । दिल्ली के शिष्टाचार को फोन पर पं. नेहरू के निजी सचिव से मिलने के लिए समय लेने के लिए कहकर शांताराम दिल्ली जाने की तैयारी करने लगे । किंतु वितरक ने फोन करके जो कुछ बताया उसे सुनकर शांताराम स्तब्ध रह गये । नेहरूजी ने समय तो दिया ही नहीं । उस पर सचिव ने यह भी कहा कि— ''आप अपने निजी लाभ के लिए पंडितजी को उद्घाटन के लिए आमंत्रित करना चाहते हैं, तथा उनके नाम का व्यावसायिक लाभ उठाना चाहते हैं, अतः वे आने में असमर्थ हैं ।''

१९५० में शांताराम ने दहेज की कुप्रथा और उसके दुष्परिणामों का मार्मिक चित्रण करते हुए एक और उद्देश्यपूर्ण फिल्म बनायी दहेज । इस फिल्म के कन्या के रौबदार पिता की भूमिका के लिए शांताराम को पृथ्वीराज ही उपयुक्त जान पड़े । शांताराम ने उनसे बात की, और कहा— ''मैं आपको दस हजार रु. रुपये दूंगा ।'' पृथ्वीराज बोले— ''बाहर मुझे ७५,००० रुपये पारिश्रमिक मिलता है ।'' इस पर शांताराम ने कहा— ''कलाकारों को तकनीकी कर्मचारियों से अधिक देना मैं अन्याय समझता हूं । तब पृथ्वीराज इस शर्त पर राजी हो गये कि—''मैं नाट्यकला की सेवा के लिए नये ढंग के नाटक, घाटा उठाकर भी मंचित करता हूं । अगर दहेज अच्छी चली तो नाट्य कला की सेवा के लिए सहायतार्थ इतनी ही रकम और दी जाए ।'' इस फिल्म का इतना भारी प्रभाव पड़ा कि इस कुरीति को मिटाने के लिए बिहार सरकार ने सबसे पहले दहेज प्रतिबंधक विधेयक पास किया । इसी प्रकार लोकसभा में भी महिला सांसद जयश्री राय ने इस फिल्म का प्रिंट मंगाकर सभी सदस्यों को दिखाया । लोकसभा में भी यह बिल सर्वसम्मति से पास हो गया ।

देश में भाषावार प्रांतों का निर्माण हो गया । शांताराम ने अंतरप्रांतीय सौजन्य और प्रेम पर आधारित कहानी पर 'तीन बत्ती चार रास्ता' फिल्म बनायी, जिसमें घर के पंजाबी मुखिया की बनारसी पत्नी और उसके पांच बेटों की अलग-अलग प्रांत की अलग-अलग भाषा बोलनेवाली बहुएं थीं । निजी जीवन में भी शांताराम के परिवार को अंतरप्रांतीय ही नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतरराष्ट्रीय ही कहना होगा । बड़ी लड़की का पति पारसी दंपत्ति द्वारा गोद लिया मराठी युवक है । मधुरा का पति पं. जसराज हरियाणवी है । तीसरी बेटी का पति बंगाली, छोटी का गुजराती और सबसे छोटी का अमरीकन पति है ।

इसके बाद शांताराम ने मजदूर समस्या को लेकर फिल्म 'सुरंग' बनायी तो विधवा के पुनर्विवाह की समस्या को लेकर 'सुबह का तारा' बनायी । दोनों ही नहीं चलीं ।

सरदार पटेल के आग्रह पर शांताराम फिल्म-उद्योग के लिए बनी जांच-समिति में शामिल हो गये ।

नये रंगीन चित्र की योजना बनने लगी । फिल्में अब रंगीन बनने लगी थीं । इसी बीच तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री डॉ. केसकर ने शांताराम से अनुरोध किया कि भारत सरकार के लघु-चित्र विभाग में काफी गड़बड़ी है उसे ठीक करने के लिए आप इसका काम अपने हाथों में ले लें ।

धन की आवश्यकता

रंगीन फिल्म 'झनक-झनक पायल बाजे' के भव्य सेटों और पोषाकों की रंगीन फिल्म बनाने के लिए शांताराम को पैसों की आवश्यकता अधिक पड़ने लगी । घर के गहनों पर बात गयी । पहली पत्नी विमला ने सहर्ष हां कह दी, किंतु जयश्री इस पर चुप ही रही । उसने तो एक बार यह भी कहा— "तुम्हारे बाद मेरा क्या होगा ?" फिल्म में संध्या ने नृत्य सीखकर बड़ी लगन तथा परिश्रम से नृत्य किये । एक नृत्य में सिर, तथा दोनों हाथों में दीपक लेकर पीछे झुकने के शॉट में उसकी रीढ़ की हड्डी में बड़ी चोट आयी । बाद में इसी कारण आगे चलकर उसको नाचना बंद कर देना पड़ा, नहीं तो अंधे हो जाने का खतरा था । इस फिल्म के निर्माण के दौरान शांताराम को काफी आर्थिक तथा मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ा ।

'राजकमल' में ग.दि. माडगूलकर पटकथा लेखन करते थे । वे बहुत अच्छे लेखक थे । माडगूलकर औंध रियासत के एक गांव के रहनेवाले थे । वहां के राजा ने एक नया प्रयोग किया था । एक दिन माडगूलकर अजीब-सी मनःस्थिति में आकर इस प्रयोग के विषय में शांताराम को बताने लगे । राजा ने एक आयरिश मनोवैज्ञानिक की सहायता से, गांव से दूर एक स्थान पर खुला कारागृह बनाया था, जहां न सींखचेवाली कोठरियां थीं, न जेलर, न पहरेदार, न वार्डन । इस कारागृह में ये लोग कुछ खूनी, क्रूर अपराधियों को मन-परिवर्तन द्वारा सुधारने का प्रयास कर रहे थे । इस राह में कौन-कौन सी मुसीबतें कैसी-कैसी रुकावटें आयीं और उन पर किस प्रकार विजय पायी गयी यही वे गद्‌गद् स्वर में वर्णन कर रहे थे । उन्हें भी राजा ने कैदियों के समक्ष भाषण करने के लिए बुलाया था । उस आयरिश के चले जाने के बाद इस काम को एक महाराष्ट्रीय व्यक्ति चला रहा है ।

एक अनोखी फिल्म : दो आंखें बारह हाथ

शांताराम तो मानो किसी अनोखी बात का इंतजार ही करते रहते हों । उन्होंने तुरंत इस विषय पर फिल्म बनाने का इरादा कर लिया और माडगूलकर से कहा कि वे पटकथा लिख कर लायें । माडगूलकर चक्कर में पड़े कि कैसे इतने नीरस और शुष्क विषय पर कहानी बनाई जाए और इस पर फिल्म बनेगी भी तो कैसे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हीं दिनों शांताराम को यह सुनकर अफसोस हुआ कि प्रभात कंपनी बिक गयी। एक इत्र तैयार करनेवाले ने इसे खरीद लिया। वे मन मसोस कर रह गये। पहले पता चलता तो वे अपने हाथों से गढ़े स्टूडियो को दूसरे के हाथ न जाने देते। अब तो फिल्मों की सफलता से कुछ पैसा भी हाथ में था।

कालांतर में इसी प्रभात फिल्म कंपनी की इमारत में आज का फिल्म और टेलीविजन इंस्टीट्यूट स्थापित हुआ।

बंदियों के उसी मन परिवर्तन के विषय को लेकर फिल्म बनी 'दो आंखें बारह हाथ' इसमें मुख्य जेलर की भूमिका भी शांताराम ने निभायी। इसी के एक दृश्य में बैलों से जूझते हुए शांताराम की बायीं आंख का रेटिना थोड़ा-सा फट गया, जिससे उन्हें चीजें टेढ़ी-मेढ़ी दिखायी देने लगीं। काफी दिन विश्राम और ऑपरेशन के बाद जाकर आंख ठीक हुई। फिल्म-निर्माण के दौरान जयश्री से तलाक और संध्या से तीसरा विवाह हुआ।

'दो आंखें बारह हाथ' को अपनी कथावस्तु के कारण अनेक राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले। सबसे पहले महाराष्ट्र सरकार ने इसे कर-मुक्त किया। १९५८ में इस फिल्म को राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक मिला। फिल्म क्रिटिक्स के चार अवार्ड्स भी इसे मिले। बर्लिन के अंतरराष्ट्रीय फिल्म-समारोह में इस फिल्म को दो पुरस्कार मिले। एक नेशनल फिल्म फैस्टिवल का, दूसरा इंटरनेशनल केथॉलिक ब्यूरो का। १९५८ में मुख्य समारोह में इसे 'गोल्डन बेयर' पुरस्कार मिला और इंटरनेशनल सिनेमेटोग्राफिक ब्यूरो ने 'सिल्वर प्लेक' देकर इसको पुरस्कृत किया। सारे विश्व के फिल्म-निर्माताओं ने इस फिल्म और इसके फिल्म निर्माता की प्रशंसा की। प्रसिद्ध हॉलीवुड फिल्म-निर्माता फ्रेंक काप्रा ने शांताराम के पुत्र प्रभात को, जो इसे समारोह में लेकर गया था, गले लगाकर कहा—तुम्हारे पिता ने चित्र नहीं, एक महाकाव्य का निर्माण किया है।

बाद में उन्होंने इसे 'गीत गाया पत्थरों ने' शीर्षक से हिंदी में बनाया। १९८५ में सरकार ने शांताराम की चलचित्र जगत को अनमोल देन और सेवा के लिए दादा साहब फालके अवार्ड प्रदान किया।

शांताराम ने सिनेमा, कला और तकनीक की उन्नति के लिए एक ट्रस्ट 'वी. शांताराम चलचित्र, शास्त्रीय कला अनुसंधान व सांस्कृतिक प्रतिष्ठान' की स्थापना की और अपनी समस्त संपत्ति इस ट्रस्ट को दे दी।

शांताराम ने अनेक नयी प्रतिभाओं को प्रोत्साहन दिया। वे कला-पारखी हैं। ग्लैमर को कभी उन्होंने कोई महत्त्व नहीं दिया। संध्या—जैसी श्यामल, नितांत सामान्य व्यक्तित्व लेकिन प्रतिभा संपन्न युवती ने उनकी अनेक फिल्मों में अविस्मरणीय भूमिकाएं कीं।

आज स्थिति काफी बदल गयी है। आज रूप-रंग और अंग-प्रदर्शन ही सर्वोपरि महत्त्व का हो गया है। माधुरी-दीक्षित— जैसी रूपसियां केवल एक फिल्म, या केवल एक दृश्य के कारण 'हिट' मानी जाने लगी हैं। यद्यपि माधुरी दीक्षित ने नयी पहचान बनाने की कोशिशें शुरू की हैं। पर वे कितनी सफल हो पाएंगी, यह समय ही बताएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

प्रसंग

—कृपाल वर्मा

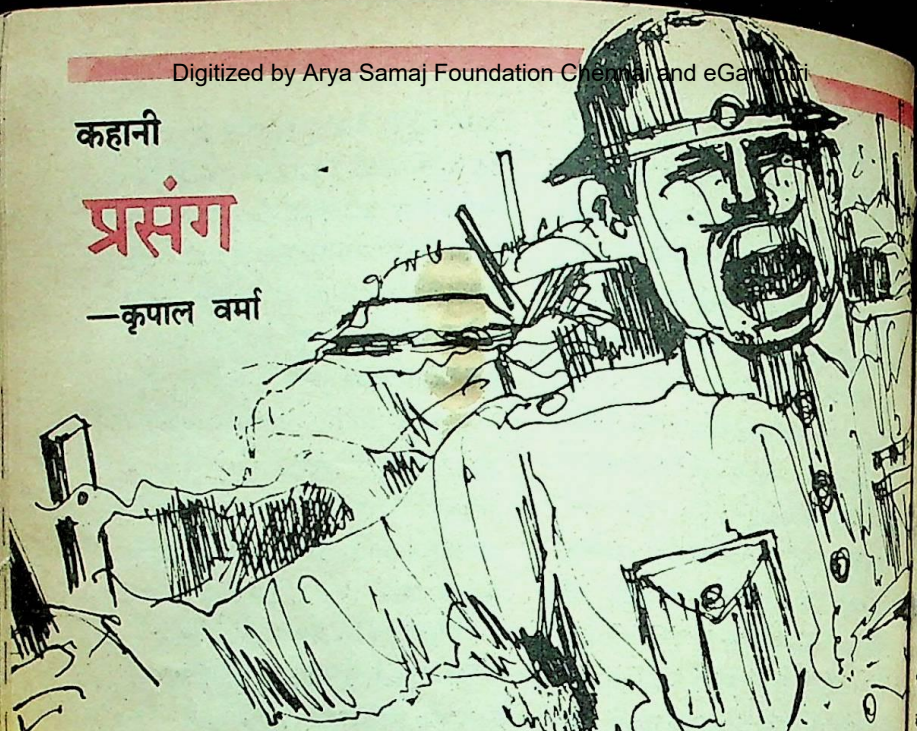

योगराज को देखते ही मुझे सब याद आ गया था। मैं अपनी पीड़ा भूल गया था। मुझे योगराज से कुछ पूछना था। जो प्रश्न मैं करना चाहता था, उसे पूछने से पहले मुझे सामर्थ्य जुटानी थी।

जिस दिन मैं योगराज के साथ अमीन वाहिनी पोस्ट पर पहुंचा था, हमला उसी दिन हुआ था। दिन-दहाड़े हमला करने का चलन तो नहीं था। लेकिन विंग कमांडर से लेकर बटालियन कमांडर तक उस दिन में होनेवाले हमले के हिमायती थे। उनका कहना था— दुश्मन कभी स्वप्न में भी नहीं सोचेगा कि... उस पर हमला हो रहा था। अतः हमारी विजय निश्चित थी।

दिन में हमला करने के लिए मेजर गुरुदेवसिंह की कंपनी को आदेश मिले थे। मेजर कुलभूषण कपूर को तीन ए.एम.एक्स. टैंक लेकर कंपनी के साथ हमले में जाना था। इस टीम के साथ तोपखाने का एक अदद ओ.पी. ऑफिसर- मैं नियुक्त हुआ था। योगराज मेरा वायरलैस ऑपरेटर था।

युद्ध का मैदान भी अजीब ही था। सतलुज के कछार में खड़ा सघन सरकंडा अपने भीतर सब कुछ समाये हुए था। दोस्त, दुश्मन...टैंक ...तोपें...और सैनिक-असैनिक सब उस महा-समुद्र की कोख में एक साथ छुपे थे। चोरों की तरह एक-दूसरे पर घात-प्रतिघात करने का यह तरीका मुझे अच्छा नहीं लगा था।

हम संगठित हुए थे। मेजर गुरुदेव सिंह हमारे कमांडर थे। मेजर कुलभूषण कपूर टैंकों पर केसरिया परचम लहराते उनके मददगीर थे...उनके हाथ की अमोघ शक्ति-से थे। और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं था उनके मुख का बीज-मंत्र— जिसका मात्र जाप करते ही बहत्तर तोपों का फायर एक साथ दुश्मन के सरों पर आ सकता था । तीन महा-शक्तियां सैनिक, टैंक और तोपें—एक जुट...एक जान...होकर विश्व-विजय करने जाते भारत के सपूत ही थे ।

हम सब इस महाशक्ति में शामिल न जाट थे न राजपूत । गोरखे थे न ईसाई । न मुसलमान थे न अहीर-गूजर । हम सब सैनिक थे— भारतीय थे । एक देश की संतान...हम...अपनी समूची आन-बान और शान के साथ जूझने को तैयार खड़े थे ।

दिन था...अतः सैनिकों के चेहरों पर खेलते भाव और भावनाओं को स्पष्ट देखा जा सकता था...आंका जा सकता था । जो उल्लास और उमंग मैंने युद्ध में जाते उन सिपाहियों के चेहरों पर देखा था— अकथनीय था । एक दैवीय दिव्यता थी जो उन रण-बांकुरों की आंखों के रास्ते उनमें प्रवेश कर चुकी थी । हम में से अब न कोई अधिकारी था न मातहत । हम सब सैनिक थे— एक जान...एक प्राण ।

मेजर गुरुदेव सिंह और मेजर कुलभूषण कपूर ने एक महत्त्वपूर्ण समझौता किया था । टैंक के भीतर बैठकर दुश्मन पर हमला करने के बेशुमार फायदे होते हैं । बंदूक और मशीनगनों की गोलियों की परवाह किये बिना हम दनदनाते दुश्मन के सरों को कुचलते हुए पोस्ट के आर-पार जा सकते थे । टैंकों को देखते ही दुश्मन का पानी हो जाना था और पोस्ट छोड़कर भागने से आगे उसके पास कोई अन्य विकल्प नहीं रह जाता ।

लेकिन यह संभव नहीं था । टैंक किसी कंजूस आदमी के दिमाग जितना छोटा था । टैंक के क्रू के अलावा उसके भीतर चार सिपाहियों के आने तक का स्थान न था । टैंकों के ऊपर बैठकर हमले में जाने का न्योता मेजर कुलभूषण कपूर ने मुझे और मेजर गुरुदेव सिंह को जरूर दिया था ।

"वीविल लुक लाईक...सिटिंग डक्स !" मेजर गुरुदेव सिंह ने तनिक रोष जाहिर करते हुए कहा था । "बेटर...वी गो ओनफुट ।" उनका निर्णय था ।

हां ! मेरा और योगराज का मेजर कुलभूषण ने जरूर स्वागत किया था । हमें टैंकों के भीतर बैठने का स्थान भी मिला था और तोपों से संपर्क बनाये रखने की भी तमाम सुविधाएं टैंक में मुहय्या थीं । लेकिन मुझे ही अच्छा नहीं लगा था । टैंक के भीतर रूह की तरह बंद हुआ मैं युद्धस्थल में घट रहे दृश्य को कैसे देख पाता ? मैं उस समूचे सुख से वंचित रह जाता, जो मुझे मेजर गुरुदेव के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हमला करने से मिलता । मैं खुले में आकर युद्ध में कूदकर भी बंदी न बनना चाहता था । मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखों के बदले में अपने भीतर के किसी भी भय को प्रश्रय देने के पक्ष में न था। मैं न चाहता था कि अपना बदन चुराकर टैंक के भीतर बैठा-बैठा अंधे धृतराष्ट्र की तरह होते महाभारत का सुख न लूं। मैं तो खोल-खुलकर लड़ना चाहता था।

मैं भी चाहता था कि मैं मेजर गुरुदेव सिंह के साथ जाऊं। सैनिकों को संगठित करता हुआ दुश्मन को सामने खड़ा होकर ललकारूं...और एक ऐसा इतिहास रचूं जो नये भारत के लिए नया उदाहरण बने और एक नया ही प्रेरणा-स्रोत हो। मैं चाहता था कोई ऐसी वीर-गाथा बनाना जो केसरिया झंडे से प्रेरित हो— जाट, सिक्ख, राजपूत, मुसलमान, अहीर—गूजर और ईसाई सबके लिए समान हो। एक ऐसे वीर-धर्म की स्थापना करने का मेरा मन था जो सर्वमान्य हो, सर्व ग्राह्य हो।

मुझे उस दिन लगा था कि हम केवल गुण और ज्ञान में भिन्न हैं...कद और काठी में भिन्न हैं...गोरे और काले हैं...वीर और बुद्धिमान हैं...लेकिन हैं एक। संस्कारगत हमें अलग-अलग सार्मथ्यों का धनी बनाया गया था, लेकिन हम सबका ध्येय एक ही था। हम सब मिलकर एक सर्वगुण संपन्न समाज की संरचना कर रहे थे। संगठित हुए हम हर क्षमता के धनी थे। हमारा अब अलग-अलग कोई वजूद नहीं था।

अतः सफलतापूर्वक लड़ने के लिए टीम के तौर पर हमने सब सुरत-बुरतकर तैयार किया था।

मैं मेजर गुरुदेव सिंह के साथ हमले में जा रहा था। मेजर कुलभूषण कपूर ने अपने टैंकों को दायें खंदक में ले जाकर झूठ-मूठ का हमला करना था। दुश्मन ने जैसे ही दायें मुड़ना था हमने बायें से हल्ला बोल देना था। मेजर कुलभूषण कपूर ने इसके बाद हमें लड़ते हुए देखना था। आहिस्ता-आहिस्ता हमारी ओर बढ़ना था और...देखना था कि हम कहीं हार तो नहीं रहे।

एक नदी की दो धाराओं की तरह हम बंटकर बीच में आये पहाड़ को बहा ले जाने की कोशिश कर रहे थे।

सब तुरत-फुरत तय हो गया था। न जाने कैसे हम सब दूर बजती रणभेरियों के स्वर सुनने लगे थे। हवा न जाने कैसे उत्प्रेरक संगीत बजाने लगी थी। हमारे पैर आप ही आप गंतव्य की ओर बढ़ रहे थे— तेज और भी तेज।

दुश्मन ने तोपों से वार किया था। लेकिन इसकी परवाह किसे थी। तोपों की वह गर्जन-तर्जन..हथगोलों की खौफनाक आवाज और बंदूकों की कड़कड़ाहट हमारे लिए शहीद होने के संकेत थे। मेरे कानों ने भी उस पवित्र पार्श्व संगीत को सुना था। संगीत-जिसमें सुर, ताल और लय सब देश-प्रेम और देश-भक्ति से ओत-प्रोत थे। एक ऐसा संगीत—जिसे सुनकर सैनिक अपनी सुध-बुध भूल जाता है। एक ऐसा मादक संगीत—जिसे सुनकर मर-मिटने का नशा हावी हो जाता है।

यही संगीत था, जो हमें हमारे गंतव्य की ओर लिए जा रहा था, निरंतर।

गंतव्य से तीन-सौ गज दूर रहते ही मैंने अपने तोपखाने के हिनहिनाते घोड़ों की रीलें ढीली कर दीं थीं। अब हम कुल सौ-गज ही

दूर थे। हमें धा
गुरुदेव सिंह ने
दी थी। योगराज
हुआ था। वह
छुड़े सैनिकों की
बे-तार का सैट
मैंने चाहकर भी
था। कारण—
साहस के खंजर
कर देती।

मैंने अपनी तो
आयी वह प्रशांत
अजीब लगी थी
अब एक और भू
उसी भूचाल के

सरकंडो के ते
को चीर-चीरकर
करता...निडरता...
टेंके-से लगाते ये
अपने ही लगे थे

मेजर गुरुदेव
हों 'जय दुर्गे' का
कांप था। चुप्पी
सैनिक जय-भवानी
कहिनी पोस्ट पर च
साफ-साफ सामने

धावा बोलते ह
थे।...मरने लगे थे
जाता वही पीछे रह

लेकिन जब यो
वह तड़पकर जमीन
धक्क-से धड़का था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर थे। हमें धावा बोलना था। मैंने और मेजर गुरुदेव सिंह ने अपने सैनिकों को अंतिम दीक्षा दी थी। योगराज पर इस दीक्षा का सीधा असर हुआ था। वह बंदूक पर संगीन चढ़ाये तैयार खड़े सैनिकों की कतार में जा मिला था। बे-तार का सैट अब मेरी कमर पर लदा था। मैं चाहकर भी उसे रोका नहीं था। टोका नहीं था। कारण—सैनिकों के चर्म पर पहुंचे उस साहस के खंजर को तनिक-सी टोक ही झूठा कर देती।

मैंने अपनी तोपों का फायर रोका था। लौट आयी वह प्रशांत खामोशी उन पलों में बेहद अजीब लगी थी। इतनी चुप्पी...इतना सन्नाटा। अब एक और भूचाल आना था। यह चुप्पी भी उसी भूचाल के आने से पहले की भूमिका थी।

सरकंडो के तेज धारदार पत्ते हमारी भुजाओं को चीर-चीरकर नश्तर-से लगा रहे थे। कांटा...निडरता...पराक्रम और पौरुष के टीके-से लगाते ये सरकंडे हमें अलविदा कहते अपने ही लगे थे।

मेजर गुरुदेव सिंह ने स्टार्ट-लाईन पार करते ही 'जय दुर्गे' का जय-घोष किया था। सन्नाटा कांपा था। चुप्पी टूटी थी और कंपनी के सभी सैनिक जय-भवानी की हुंकार के साथ अमीन कहिनी पोस्ट पर चढ़ बैठे थे। दिन था सब साफ-साफ सामने ही था।

धावा बोलते हम—घायल होने लगे थे।...मरने लगे थे। जो गोली खाकर गिर जाता वही पीछे रह जाता।

लेकिन जब योगराज को गोली लगी और वह तड़पकर जमीन पर गिरा तो मेरा कलेजा धक्-से धड़का था और मेरे गले में आ-अटका था। जमीन पर पलोटियां खाते...कांपते-कंपकंपाते योगराज के पास घुटनों पर बैठा मैं बहुत जल्दी में था— मरते योगसज की जेब से मैं अपनी फायर प्लान की कापी और अन्य जरूरी कागज बरामद कर लेना चाहता था। मैंने जल्दी से उसकी जेबें टटोली थीं और हड़बड़ी में सारे प्राप्त कागजों का जायजा लिया था।

उन कागजों के बीच से एक फोटो कूदकर रेत पर जा गिरी थी। मेरे हाथों में आया वह पत्र भी अजीब था। वह जिस सुंदर लड़की का चित्र था, पत्र भी उसी का था— शायद। गौर से लड़की का चित्र देखने पर मुझे लगा था कि उसकी आंखों में एक आग्रह था— योगराज को बचाने का आग्रह...योगराज को उससे मिलाने का आग्रह। जब मैंने हाथ में आये इस पत्र को खोला था और उसी लड़की के लिखे प्रथम संबोधन को पढ़ा था, तो मैं सन्न रह गया था। लिखा था— मेरे परम प्रिय- योगराज .... ।

पत्र से आंख उठाकर मैंने अपने साथियों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शूरता की उमंग की तरह गोलियों के सम्मुख आगे बढ़ते देखा था । किसी ने मेरे कान में कहा था— विमुख हो रहे हो...अपने कर्तव्य से...वर्मा । छोड़ो इन प्रेम-प्यार के चोंचलों को और चलो अपनी मनचाही उमंग के साथ । कोई अनिष्ट हो गया, तो सारा दोष तुम्हारे ही ऊपर होगा ।

सच भी था— लेकिन हाथ में आये उस प्रेम-पत्र को पढ़ने का मोह...वह ललक...वह लालच...न जाने कितना संगीन था कि मैं एक ही सांस में सब पढ़ता चला गया था— जब तुम जा रहे थे तो मैं देख रही थी । तुम्हारे सामने जाने का साहस मुझ में न था । लेकिन मैं मन ही मन भगवान से प्रार्थना करती रही थी कि...मेरा यह युद्ध में जाता पृथ्वीराज विजयी होकर ही लौटे...मेरा यह मेघनाद कभी न मरे । सच । मुझे लगा था कि साक्षात चेतक पर सवार तुम...महाराणा प्रताप थे और मैं ही थी आरती उतारती तुम्हारी....

मेरे बिलकुल पास गिरकर फटे हथगोले के भयंकर निनाद ने मेरे पढ़ने के क्रम को तोड़ मुझे जमीन पर लंबा लेट जाने के लिए विवश कर दिया था । घायल युवराज के पास पड़े उस सुंदर लड़की के चित्र को देखते हुए मैंने हाथ में पकड़े उस प्रेम-पत्र का अंत पढ़ा था...प्रतीक्षारत—तुम्हारी ब-ब-ली ।

न जाने कैसे मैंने फड़फड़ाते योगराज के होठों से बाहर आते सुना था— ब-ब-ली । ब-ब-ली...मैं आ रहा हूं... ।

मैंने योगराज को अपनी बांहों में भर लिया था । उसके शरीर से बहते गरमा-गरम लहू से मैं लहू-लुहान हो गया था । लेकिन क्या करता ? मुझे अब योगराज को बचाना ही था...जिलाना ही था । मैंने बबली के प्रेम-पत्र को पढ़ने का गुनाह जो किया था । मैंने उन दोनों के प्रेम-संबंधों को उजागर करने की धृष्टता की थी । अब उनके पवित्र-प्रेम को अमरता प्रदान करने का जिम्मा भी तो मेरा ही था ।

दूसरों की दुनिया झांक आने के बाद आदमी को अपनी दुनिया के दुःख और सुख साफ-साफ दिखायी देने लगते हैं । कौन किसे कितना प्रेम करता है...कितना चाहता है और...कौन कितनी नफरत करता है...आदमी उम्रभर यही नापता-तौलता रहता है । प्रेम और नफरत करने का बल तो बहुत बौना होता है । लेकिन आदमी की उम्र इसी एक पल की शिद्दत को झेलने में गुजर जाया करती है ।

बोये को काटने में ज्यादा समय लगता है— बोने में नहीं ।

योगराज अचेतन अवस्था में था । उस का चेहरा जर्द पीला पड़ गया था । अथाह पीड़ा को पीकर उसकी पलकें बंद हो गयीं थीं । उसने अपने होठों को काटना आरंभ कर दिया था । पीड़ा की मरोड़ उठती तो वह बुरी तरह ऐंठने लगता । उसने हिम्मत कर अपनी आंखें खोली थीं और सीधा मेरी आंखों में देखा था । "जाओ...साब...जाओ ।" उसने मुझे ललकारा था— "मरने दो मुझे ।" उसने जैसे मुझे जाने का आदेश ही दे डाला था ।

मैं उठा था । मैंने अपनी स्टेनगन संभाली थी । हमारे लड़ते-खपते सैनिकों की उमंग मुझसे कुल दो-सौ गज दूर थी । मुझे सांस रोककर एक गदबदी लगानी थी । मैं अब उतावली में था लेकिन ठठकर एक कदम लेने

के बाद ही मैंने
मार्मिक गुर्राहट
वह टकराहट
और जब
थी, तब उस
उजागर होकर
तरह डकराई थी
दुहत्तड़ मारकर
थी— मेरे पृथ्वी
बिना मेरा क्या
मेरा उठाया
था । न जाने क्य
झटके से उठाक
चेतक की भूमिक
युद्ध के मैदान से
हां मैं अपनी जूझ
वैसे ही मेजर गुरु
द्योतक हरा राउंड
फायर किया था
हमारी विजय
उपचार के लिए
चतुराई से दुश्मन
रात गुजारने के लि
उस रात मेरी
योगराज और बब
वह दोनों मिलते..
उन्हें अमर-प्रेम क
मनोदशा योगराज
ही हो रही थी । मैं
प्रयास के बावजूद
सूनी रह गयी तो..
आज जब योग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाद ही मैंने योगराज के होठों से निकली मार्मिक गुर्राहट सुनी थी । मर्मांतक पीड़ा की वह टकराहट मेरे मर्म को भेदकर रख गयी थी ।

और जब मैंने चलने के लिए दूसरी डग भरी थी, तब उस सुंदर लड़की ने रेत पर पड़े चित्र से उजागर होकर पछाड़ खायी थी । वह गाय की तरह डकराई थी । उसने योगराज की छाती पर दुहत्तड़ मारकर मुझे पुकारा था । वह कह रही थी— मेरे पृथ्वीराज...मेरे प्रताप... ! तुम्हारे बिना मेरा क्या होगा... ?

मेरा उठाया कदम आप ही आप रुक गया था । न जाने क्या हुआ था कि मैंने योगराज को झटके से उठाकर अपने कंधे पर पटका था और चेतक की भूमिका निभाता मैं घायल प्रताप को युद्ध के मैदान से लेकर भाग लिया था । जैसे ही मैं अपनी जूझती उमंग में शामिल हुआ था वैसे ही मेजर गुरुदेव सिंह ने सफलता का द्योतक हरा राउंड अपनी बैरेलाईट पिस्तौल से फायर किया था ।

हमारी विजय हुई थी । योगराज को तुरंत ही उपचार के लिए पीछे भेज दिया गया था । हमने चतुराई से दुश्मन के बने मोरचे संभाले थे और रात गुजारने के लिए नयी व्यूह-रचना की थी ।

उस रात मेरी आंखों के सामने बार-बार योगराज और बबली ही आते रहे थे । बार-बार वह दोनों मिलते...प्रणय-बंधन में बंधते और मैं उन्हें अमर-प्रेम का आशीर्वाद दे देता । मेरी यह मनोदशा योगराज की घातक अवस्था के कारण ही हो रही थी । मैं डर रहा था कि मेरे किये प्रयास के बावजूद भी अगर बबली की मांग सूनी रह गयी तो... ?

आज जब योगराज अचानक ही मेरे सामने आया था तो मेरी आंखों की चमक-सी लौट आयी थी । एक आशा-दीप-सा भक्क-से जल उठा था । एक सिपाही की सफल हुई मेहनत का प्रतीक-सा योगराज मुझे युद्ध में मिले किसी भी पुरस्कार से कम न लगा था । मैं आतुर था यह पूछने के लिए कि बबली कैसी है । लेकिन..."शादी हो गयी... ?" मैंने प्रश्न का पैना मुंह अपनी ओर मोड़कर चतुराई से तीर चलाया था ।

"नहीं, साब ।" योगराज ने झेंपते हुए उत्तर दिया था । "अपाहिज हो गया हूं न ।" उसने एक वीर की तरह अपनी खामियों का इजहार किया था । "लेकिन बबली अभी तक मेरा इंतजार कर रही है ।" उसने मेरे दूसरे संभावित प्रश्न का उत्तर स्वयं ही दिया था । "हम दोनों एक जाति के नहीं हैं न । हमारी बिरादरी का समाज हमारे विवाह के पक्ष में नहीं है ।" उसने टीसते हुए बताया था ।

हे, भगवान । ये जाति...पांति...ये ऊंच-नीच और छूत-अछूत हमें और कितने दिन सतायेंगी ? मानवीय रिश्तों के बीच और कब तक ये समाज और धर्म रोड़ो की तरह अटके रहेंगे । योगराज की देश-भक्ति, उसकी वीरता और दिये बलिदान के बदले अगर वह बबली का प्रेम भी प्राप्त नहीं कर सकता, तो हमारा ये समाज उसे और क्या देगा ?

जाति, धर्म, वर्ग, ऊंच-नीच और छूत-अछूत के ये निरर्थ;क प्रसंग क्या कभी समाप्त नहीं होंगे ?

—एच.-३१६, विकासपुरी.
नयी दिल्ली-१८,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

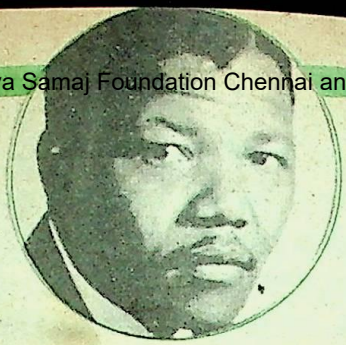

अफरीकी क्रांति के महापुरुष : नेलसन मंडेला

मेरी मौत प्रेरणा का स्रोत बनेगी

● डॉ. गौरीशंकर राजहंस

नेलसन मंडेला— एक अजीब-सा जादू है इस नाम में। मंडेला २७ वर्षों से दक्षिण अफरीका की विभिन्न जेलों में कठोर कारावास भुगतने के बाद रिहा हुए हैं। दक्षिण अफरीका के एक संपन्न जमींदार के परिवार में जन्मे इस प्रतिभाशाली युवक ने ऐशो-आराम की जगह अपने लिए कांटों की जिंदगी चुनी।

मंडेला ने अपनी आत्मकथा में लिखा है—

"मैं एक सीधा-सादा अनुशासनप्रिय छात्र था परंतु जब मैंने स्कूल में पढ़ा कि किस तरह हमारा देश पहले आजाद था और लोग शांतिप्रिय, सुखी और संपन्न थे और किस तरह गोरों ने आकर जबर्दस्ती हमारे देश पर कब्जा कर लिया और हमें गुलामी की जिंदगी जीने के लिए बाध्य किया, तो मेरा खून खौल उठा और मैंने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि मैं ऐशो-आराम की जिंदगी त्याग दूंगा और सारी जिंदगी अपने देश के लोगों को आजादी दिलाने के लिए संघर्ष में लगा दूंगा।"

कॉलेज के दिनों में मंडेला की जान-पहचान ओलीवर टेम्बो नाम के एक अश्वेत छात्र से हुई जो उनकी ही तरह आजादी का दीवाना था। दोनों छात्र नेताओं ने यह वायदा किया कि वे दक्षिण अफरीका से रंगभेद समाप्त करने के लिए और देश को आजादी दिलाने के लिए अपना सर्वस्व समर्पण कर देंगे।

संगठन और प्रदर्शन

१९४४ में इन दोनों छात्र नेताओं ने अफरीकी नेशनल कांग्रेस नामक संस्था की युवा शाखा की स्थापना की और उसके माध्यम से गोरी सरकार के अन्याय के खिलाफ देश में जगह-जगह प्रदर्शन करने शुरू कर दिये। मंडेला ने सुन रखा था कि दक्षिण अफरीका में महात्मा गांधी ने अहिंसक असहयोग आंदोलन छेड़ा था और उन्हें सफलता मिली थी। बाद में उसी माध्यम से उन्होंने भारत की आजादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंडेला राष्ट्रपति दू क्लार्क के साथ

हासिल की थी। अतः मंडेला ने भी शुरू में इस अस्त्र का प्रयोग करना उचित समझा।

१९५२ में अफरीकी नेशनल कांग्रेस ने मंडेला के नेतृत्व में देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन का नारा दिया और देश के अश्वेत लोगों से अपील की कि वे गोरी सरकार से असहयोग करें, रंग-भेद नीति का विरोध करें, अश्वेत लोगों को जो पास दिये गये हैं उन्हें जला डालें और यदि उन्हें गिरफ़ार किया जाता है तो उसका विरोध नहीं करें। यदि उन पर जुर्माना लगाया जाता है तो उसे कभी नहीं दें और उसके बदले जेल जाने के लिए तैयार रहें। परंतु यह सब काम वे अहिंसक तरीके से करें। मंडेला चाहते थे कि गोरी सरकार यह समझ जाए कि दमन और अत्याचार से वे करोड़ों अश्वेतों की भावनाओं को नहीं कुचल सकते हैं। दक्षिण अफरीका की गोरी सरकार पर इसका असर उल्टा हुआ। उसने रंगभेद नियम को और भी सख्त कर दिया और यह ऐलान किया कि जो भी व्यक्ति देश की रंगभेद नीति का विरोध करेगा उसे ३०० पौंड जुर्माना देना होगा और तीन वर्ष की कड़ी कैद होगी।

कारावास

सरकार के इस नियम का विरोध करने के कारण १९५२ में मंडेला को ९ महीने की कड़ी सजा सुनायी गयी। मंडेला अपनी सजा पूरी भी नहीं कर पाये थे कि उसी साल उनकी सजा और दो वर्ष के लिए बढ़ा दी गयी। मंडेला को यह आदेश हुआ कि वह अफरीकी नेशनल कांग्रेस से अपना नाता तोड़ लें और हर तरह की राजनीतिक गतिविधि से अपने को दूर रखें। अपनी आत्मकथा में मंडेला ने लिखा है,

"गोरी सरकार ने मुझे एक अपराधी घोषित किया इसलिए नहीं कि मैंने कोई अपराध किया था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीकी राष्ट्रपति बुश ने नेलसन मंडेला को व्हाइट हाउस आमंत्रित किया है, विडंबना यह है कि वर्षों पूर्व अमरीकी गुप्तचर संस्था सी.आई.ए. ने ही मंडेला की गिरफ़्तारी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी ।

बल्कि इसलिए कि मैंने अपने लोगों के लिए आजादी मांगी थी ।''

सजा काटने के बाद कुछ महीनों तक जब मंडेला जेल से बाहर रहे तो उन्होंने ओलीवर टेम्बो के साथ मिलकर वकीलों के एक दफ़्तर की स्थापना की और उन सभी पीड़ित काले लोगों का मुकदमा निःशुल्क लड़ने लगे जिन पर गोरी सरकार अत्याचार करती थी ।

१९६० का वर्ष अफरीका के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण वर्ष था । इस वर्ष एक तरफ जहां अधिकतर अफरीकी देश उपनिवेशवादी चंगुल से मुक्ति पा रहे थे वहीं दक्षिण अफरीका में रंगभेद नियमों को और कड़ा किया जा रहा था और लोगों पर हर तरह के जुल्म ढाये जा रहे थे । जब यह जुल्म हद से अधिक बढ़ गये तो मंडेला के नेतृत्व में शार्पविले में जून १९६० में एक शांतिपूर्ण प्रदर्शन हुआ । पुलिस ने बेरहमी से प्रदर्शनकारियों पर गोली चलायी फलस्वरूप ६९ लोग मारे गये और १७६ बुरी तरह जख्मी हुए । इस प्रदर्शन के तुरंत बाद दक्षिण अफरीका की गोरी सरकार ने देश में आपातकालीन स्थिति की घोषणा कर दी । अफरीकी नेशनल कांग्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया और रंगभेद नीति का विरोध करनेवालों को कड़ी सजा की चेतावनी दी ।

अहिंसा से मोहभंग

अफरीकी नेशनल कांग्रेस चालीस वर्षों से महात्मा गांधी की राह पर अहिंसक आंदोलन कर रही थी । परंतु उन्होंने पाया कि इस आंदोलन से उनकी समस्या का समाधान नहीं होनेवाला है । गोरी सरकार का अत्याचार बढ़ता ही जा रहा था । अहिंसक आंदोलन के बारे में लिखते हुए अफरीकी नेशनल कांग्रेस के एक प्रमुख नेता लूटू ली, जिन्हें बाद में नोबल शांति पुरस्कार मिला था, ने लिखा है—

''जब महात्मा गांधी के मार्ग पर अहिंसक आंदोलन का जवाब गोरी सरकार ने गोलियों से दिया तो मुझे ऐसा लगा कि मैंने अपने जीवन के तीस वर्ष जो जेल की सींखचों के बीच शांतिपूर्ण ढंग से बिताये हैं, वे बेकार गये । गोरी सरकार ने हमारे शांतिपूर्ण आंदोलन को हमारी कमजोरी समझा और धीरे-धीरे हमसे वे अधिकार भी छीन लिये जो पहले हमें प्राप्त थे ।''

३० मई १९६१ को लंदन के कुछ प्रसिद्ध पत्रकारों को एक साक्षात्कार में मंडेला ने कहा—

''अब मैं इस बात से पूर्णतः सहमत हूं कि महात्मा गांधी का दिखाया हुआ अहिंसा का मार्ग मेरा रास्ता नहीं हो सकता है । मैं इस अध्याय को यहीं समाप्त कर रहा हूं ।''

६ महीने के बाद दक्षिण अफरीका के कई शहरों में सरकारी इमारतों एवं अन्य प्रतिष्ठानों पर अश्वेत लोगों ने हमला करना शुरू कर दिया जिसकी जवाबदेही 'उमाखोटो सिज्वे' नामक एक अफरीकी इमारतों संस्था ने अपने ऊपर ली जिसका नेतृत्व मंडेला कर रहे थे । उस समय तक गोरी सरकार ने यह अनुभव नहीं किया था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि शार्पविले का गोलीकांड यह रंग लाएगा । देश में अफरीकी नेशनल कांग्रेस के नेताओं की धर-पकड़ जोरों से शुरू हो गयी । दो साल तक मंडेला भूमिगत रहे । मंडेला की पत्नी विनी मंडेला ने लिखा है कि इस अवधि में उनके पति सिनेमा के अभिनेता की भांति बर्ताव करते थे और इस तरह से अपना चेहरा बदल लेते थे कि कई बार स्वयं उन्हें मंडेला को पहचानने में कठिनाई होती थी । इसी दौर में मंडेला देश से चुपचाप खिसक गये और उन्होंने कई अफरीकी और यूरोपीय देशों का दौरा किया तथा इन देशों के नेताओं से अपील की कि दक्षिण अफरीका की आजादी की लड़ाई में वे सहयोग करें और संघर्षरत दक्षिण अफरीका के अश्वेत लोगों के नेताओं को आर्थिक सहायता दें । अफरीका के अश्वेत लोगों ने यथासंभव सहायता देने का

मंडेला : जब वे अपने कबीले के युवराज थे ।

"गोरी सरकार ने मुझे अपराधी घोषित किया इसलिए नहीं कि मैंने कोई अपराध किया था बल्कि इसलिए कि मैंने अपने लोगों के लिए आजादी मांगी थी ।"

वायदा किया परंतु पश्चिम के गोरों ने मुंह मोड़ लिया ।

सी. आई. ए. की मदद से गिरफ़्तार

दक्षिण अफरीका सरकार के लिए मंडेला सिरदर्दी का कारण बन गये थे और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि उन्हें कैसे गिरफ़्तार किया जाए । उसने अमरीका की गुप्तचर संस्था सी. आई. ए. की मदद ली । एक दिन मंडेला नैटल प्रांत में एक गोरे व्यापारी की लंबी गाड़ी के ड्राइवर के रूप में जा रहे थे कि सी.आई.ए. और दक्षिण अफरीका की पुलिस ने उन्हें धर दबोचा । उन पर यह आरोप लगाया गया कि बिना उचित पासपोर्ट के उन्होंने विभिन्न देशों की यात्रा की थी और देश के लोगों को रंगभेद नीतियों के खिलाफ भड़काया था । उन्हें पांच वर्ष की कठोर कारावास की सजा हुई ।

जुलाई १९६३ में जोहनिसबर्ग के नजदीक रिब्रोनिया कस्बे में पुलिस ने अफरीकी नेशनल कांग्रेस के प्रायः सभी चोटी के नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया और उनके दफ़्तर से जो कागजात बरामद हुए उसके आधार पर मंडेला पर फिर से मुकदमा चलाया गया । इस बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें सबसे खतरनाक मुजरिम के रूप में अदालत में पेश किया गया ।

यह मुकदमा कई महीनों चला । प्रायः सभी कैदी आश्वस्त थे कि उन्हें प्राणदंड दिया जाएगा । मंडेला को भी पूरी उम्मीद थी कि उन्हें मृत्यु दंड मिलेगा । परंतु इस बीच भी वे लंदन विश्वविद्यालय की कानून की डिग्री हासिल करने के लिए पत्राचार द्वारा पढ़ाई करते रहे । मंडेला के साहस को देखकर लोगों को आश्चर्य होता था । अंत में वह दिन भी आ गया जब इन लोगों को सजा सुनायी जानेवाली थी ।

मंडेला अपने साथियों को समझा रहे थे कि एक न एक दिन इस दुनिया से सबको जाना होता है । यदि देश की आजादी के लिए अपनी जान कुर्बान करनी हो तो हंसते-हंसते उस सज. को सुन लेना चाहिए । अदालत में कुछ ऐसा प्रदर्शित नहीं करना चाहिए कि अपनी मौत की सजा सुनकर हम लोग घबरा गये हैं । क्योंकि इससे भविष्य में आजादी की लड़ाई लड़नेवालों को घोर निराशा होगी । मंडेला ने अपने साथियों से कहा कि जैसे ही मुझे मौत की सजा सुनायी जाएगी मैं निम्नलिखित बयान दूंगा ।

''गोरी सरकार, यदि आप समझते हैं कि मुझे मृत्यु दंड देने से दक्षिण अफरीका की आजादी की लड़ाई समाप्त हो जाएगी तो आप एक भ्रम में हैं । मेरी मौत मेरे लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी और वह निश्चित रूप से अपने संघर्ष को तब तक जारी रखेंगे जब तक देश को पूर्ण आजादी प्राप्त नहीं हो जाती ।''

मौत की बजाय आजीवन कारावास

पता नहीं क्यों गोरों ने मौत की सजा आजीवन कारावास की सजा में बदल दी । मंडेला और सिसुलू समेत सभी आठ चोटी के नेता पूरी जिंदगी के लिए सींखचों के पीछे डाल दिये गये । उसके बाद मंडेला को एक जेल से दूसरे जेल घुमाया गया और उनके साथ अत्यंत ही बर्बरतापूर्ण व्यवहार किया गया । अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा है—

''शुरू के दस वर्षों तक मुझे रोबिन द्वीप के जेल में रखा गया जहां पागल और कोढ़ी रहते थे । वहां मुझे सात बजे सुबह से चार बजे शाम तक पत्थर चूना की खानों में पत्थर तोड़ने का काम दिया गया था जो अत्यंत ही उबाऊ और कष्टदायक था । परिणामस्वरूप मुझे क्षय रोग ने पकड़ लिया । वहां जिंदगी इतनी कष्टदायक थी कि जैसे ही मेरे काम में थोड़ी ढील होती, गोरा गार्ड मेरे समीप आता और मुझ पर लात-जूतों की वर्षा कर देता । फिर मुझे भूखा अकेले कई दिनों तक सेल में डाल दिया जाता ।''

मंडेला पर जेल में अमानुषिक अत्याचारों की खबर कभी-कभी पश्चिम के समाचारपत्रों में छप जाती थी जिससे विश्व जनमत दक्षिण अफरीका की गोरी सरकार के विरुद्ध होता जा रहा था । इसी कारण १९७५ के आसपास उन पर जेल में अत्याचार कम कर दिया गया और उन्हें पढ़ने के लिए कुछ पुस्तक और पत्रिकाएं दी जाने लगीं । सन १९८२ में उन्हें केप टाउन के पास दूसरी जेल में डाल दिया गया जहां वे अन्य कैदियों के लिए शिक्षक का काम करने लगे ।

सरकार द्वारा समझौते का प्रस्ताव

१९६९ में गोरी सरकार ने मंडेला को एक संदेश भेजा कि उन्हें रिहा कर दिया जाएगा यदि वे इस बात की गारंटी दें कि वे या उनकी संस्था अफरीकी नेशनल कांग्रेस भविष्य में हिंसा का सहारा नहीं लेगी । मंडेला ने इस तरह की गारंटी देने से इनकार कर दिया । फिर १९८५ में मंडेला को दूसरा संदेश भेजा गया कि उन्हें रिहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया जाएगा बशर्ते वे प्रिटोरिया सरकार की कुछ शर्तों को मान लें । मंडेला ने उत्तर में कहा कि वे जेल में मर जाएंगे परंतु अपने देशवासियों के साथ गद्दारी नहीं करेंगे । अपने देशवासियों के नाम संदेश में उन्होंने कहा—

'इसमें कोई शक नहीं कि मैं जेल से बाहर आना चाहता हूं, अपनी आजादी अपनी आजादी चाहता हूं, परंतु मुझे आप सबों की आजादी और देश की आजादी अपनी आजादी से अधिक प्रिय है।'

१९८७ में दक्षिण अफरीका की सरकार ने देश में फिर से आपातकालीन स्थिति की घोषणा कर दी और रंगभेदी नियमों को और अधिक सख्त कर दिया । परंतु मंडेला को फिर संदेश भेजा कि यदि वे और उनकी संस्था हिंसा को छोड़ दे तो उनकी रिहाई हो सकती है । इसके जवाब में मंडेला ने कहा कि पहले राष्ट्रपति बोथा हिंसा का त्याग करें, अश्वेतों पर होनेवाले अत्याचारों को बंद करें और देश में व्याप्त रंगभेद नीति को समाप्त करें तभी वे कोई गारंटी दे सकते हैं ।

क्लार्क की भूमिका

राष्ट्रपति बोथा रंगभेद के कट्टरवादी समर्थक थे । इस बीच ब्रिटेन को छोड़कर दुनिया के प्रायः सभी देशों ने दक्षिण अफरीका के खिलाफ आर्थिक प्रतिबंध लगा दिया था जिससे वहां की अर्थव्यवस्था चरमरा गयी थी । गोरे व्यापारी धीरे-धीरे दक्षिण अफरीका छोड़ रहे थे । गोरों में से अधिकतर लोगों को यह बात समझ में आ रही थी कि अब उनका आधिपत्य बहुत दिनों तक नहीं रहेगा । इसी कारण उदारपंथी क्लार्क जब गत वर्ष देश के राष्ट्रपति चुने गये तो सारी दुनिया में यह उम्मीद जगी कि दक्षिण अफरीका के अश्वेत लोगों के साथ किसी न किसी तरह का न्याय अवश्य होगा । कट्टरपंथियों को क्लार्क ने समझाया कि विश्व का जनमत उनके खिलाफ है और ऐसी हालत में यदि वे सच्चाई को नहीं देखते हैं तो केवल अपने हास्यास्पद अंत को समीप बुला रहे हैं और वह अंत अत्यंत ही भयानक और हिंसक होगा जहां श्वेतों की संतानों को दक्षिण अफरीका में रहना अत्यंत ही कठिन हो जाएगा । इसलिए उचित यह होगा कि अश्वेत नेताओं से मैत्रीपूर्ण और सद्भावपूर्ण वातावरण में बातचीत की जाए और उन्हें राजनीति में उचित हिस्सेदारी दी जाए । कट्टरपंथियों ने क्लार्क पर यह आरोप लगाया कि वे दक्षिण अफरीका के गोर्बाचेव बनने का प्रयास कर रहे हैं जिससे इतिहास में उनका नाम अमर रहे । इसके जवाब में उन्होंने कहा कि वे केवल दीवार की लिखावट को देख रहे हैं और दक्षिण अफरीका को एक भयानक हिंसक क्रांति से बचा रहे हैं ।

अफरीकी राष्ट्रीय क्रांति के महापुरुष डॉ. नेलसन मंडेला की रिहाई दक्षिण अफरीका के इतिहास में एक नये अध्याय की शुरूआत हो रही है । दक्षिण अफरीका के शासन की बागडोर अश्वेतों के हाथ में जाने में शायद अभी कई वर्ष लगें, परंतु इस दिशा में एक निश्चित ही स्वस्थ शुरूआत हो चुकी है ।

मैसूर का असली नाम 'महिषासुर' था । चामुंडी की पहाड़ी भी यहां पर है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा नियम नहीं है

ए.के. खरे, मंडला : मैं मध्य प्रदेश विद्युत मंडल में कार्यालय सहायक श्रेणी-३ के पद पर कार्यरत हूं। मेरी पत्नी नरसिंहपुर स्थित शासन से सहायता प्राप्त एक प्राइवेट स्कूल में शिक्षिका हैं। मैंने अपने विभाग के संबंधित अधिकारी को अपनी पत्नी के नरसिंहपुर में नौकरी का विवरण देते हुए स्वयं के अनुरोध पर बिना टीए/डीए के नरसिंहपुर स्थानांतरण चाहा था, परंतु मेरा स्थानांतरण उसी अनुरोध पर अंबिकापुर से मंडला कर दिया गया। इस स्थानांतरण से मैं न तो अपने घर पहुंचा और न मुझे टीए/डीए ही मिला।

इस संबंध में क्या कोई ऐसा विधान है कि जिस कर्मचारी की पत्नी नौकरी करती हो, तो उस कर्मचारी को इसी शहर में रखा जाए, जहां पत्नी हो, ताकि पति-पत्नी एक ही शहर में रह सकें ?

पति व पत्नी को एक ही स्थान पर कार्यरत रखे जाने के विषय में कोई नियम नहीं है। स्थानांतरण साधारणतम काम की आवश्यकता के आधार पर किया जाता है। प्रशासनिक अधिकारी ही आपके प्रार्थना-पत्र पर विचार करके आपकी सहायता कर सकते हैं, पर इस संबंध में आप अधिकार-स्वरूप अपने स्थानांतरण की मांग नहीं कर सकते।

शिक्षा मंडल की गलती

नारायण सिंह, होशंगाबाद : माध्यमिक शिक्षा मंडल, भोपाल के कार्यालय ने गलती कर अंक सूची में मेरी जन्म-तिथि १५.७.६६ के स्थान पर १५.४.६६ कर दी गयी। मैंने भी उस समय ध्यान नहीं दिया और उसी अंक सूची के आधार पर बी.ए. भी कर लिया। इसी तरह मेरे मित्र के भाई का नाम भी अंक सूची में नागर की जगह 'अंगर' कर दिया गया। उसने पचास रुपये जमा कर यह गलती ठीक करवायी। क्या बोर्ड की गलती का हमें आर्थिक शुल्क देना चाहिए ? क्या मैं पांच वर्ष बाद अपनी जन्म-तिथि ठीक करवा सकता हूं ?

यह तो ठीक ही है कि आपने अपनी परेशानी के निवारण के लिए कदम उठाने में अनावश्यक विलंब कर दिया है। बी.ए. की परीक्षा तथा कॉलेज प्रवेश के समय आवेदन-पत्र में आपने अपनी जन्म-तिथि लिखी होगी। यह कौन-सी जन्म-तिथि लिखी है—ठीक वाली या बोर्ड के प्रमाणपत्र के अनुसार ?

मेरे विचार से आप अपनी जन्म-तिथि ठीक करवाने के लिए कार्रवाई कर सकते हैं। अगर आप प्रमाणपत्र प्राप्त होते ही गलती सुधरवाने का आवेदन करते तो अच्छा रहता। साधारणतया बोर्ड की स्वयं की गलती सुधारने के लिए कोई शुल्क मांगना उचित नहीं माना जा सकता। परंतु यदि बोर्ड ने यह शुल्क जमा करवाने के नियम बना रखे हैं तो उन्हें निरस्त करवाने के लिए लंबी लड़ाई लड़नी पड़ेगी। नियमों को बदलने का प्रशासनिक अधिकार बोर्ड या सरकार को है तथा निरस्त करने का उच्च न्यायालय को।

नियुक्ति नियमित करने की समस्या

विकास कुमार, भागलपुर : मैं भागलपुर विश्वविद्यालय के एक महाविद्यालय में तृतीय वर्गीय कर्मचारी हूं। अठारह मास पूर्व तत्कालीन प्राचार्य ने बिना किसी विज्ञापन या आरक्षण के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक पारिश्रमिक के आधार पर मेरी अस्थायी नियुक्ति कर दी थी । छह मास तत्कालीन उपकुलपति ने भी मेरी नियुक्ति को स्वीकृति दे दी थी । पर वर्तमान कुलपति बिना विज्ञापन-आरक्षण के की गयी ऐसी नियुक्तियों को अवैध मानते हैं । मैं दैनिक वेतन पर ही कार्य कर रहा हूं । मैं अपनी नियुक्ति नियमित कराना चाहता हूं । कृपया सलाह दें ।

पूर्व कुलपति द्वारा आपके पक्ष में लिया गया निर्णय आपको सेवा में बने रहने का अधिकार देता है । यह माना जाएगा कि उनके आदेश के द्वारा अनियमितताओं को नियमित कर दिया गया है । नये कुलपति का पुराने आदेश को समाप्त करने का प्रयास आपके अधिकार के विरुद्ध है तथा वैधानिक नहीं माना जा सकता । अठारह महीने से लगातार काम करते रहने के आधार पर आपको नियमित किए जाने के लिए आवेदन करने का अधिकार है । यदि अधिकारी आपकी प्रार्थना स्वीकार नहीं करते तो आपको मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय में समादेश याचिका देकर अपने अधिकार रक्षण के लिए कार्रवाई करनी चाहिए ।

दांपत्य अधिकार

महावीर प्रसाद, लखना (इटावा) : इटावा में एक निजी फर्म में कार्य करने के दौरान मेरा इसी फर्म के एक कर्मचारी की बेटी से प्रेम हो गया और बाद

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ — रामप्रकाश गुप्त

में विधिवत विवाह भी । विवाह के बाद मेरी पत्नी के पिता उसे विदा कराकर कानपुर ले गये । बाद में मैं जब अपनी पत्नी को लेने गया तो न तो पत्नी ने मेरे साथ आना स्वीकार किया और न उसके पिता ने उसे भेजा । ज्यादा जोर देने पर उन्होंने वैवाहिक संबंधों को नकारते हुए कहा कि यह विवाह ही नहीं हुआ । कृपया मेरा मार्गदर्शन करें ।

आपके विरुद्ध आपकी पत्नी ने किसी प्रकार का कोई विवाद न्यायालय में प्रारंभ नहीं किया हुआ है । विवाहित पत्नी का संबंध केवल कहनेभर से समाप्त नहीं हो जाता । आप अपनी पत्नी को अपने पास रखने के लिए कानूनी कार्रवाई कर सकते हैं । इसके लिए आप दांपत्य संबंधों की पुनर्स्थापना के लिए न्यायालय में आवेदन देकर मांग कर सकते हैं कि आपकी पत्नी आपके साथ रहे । आपके पत्र में दिये विवरण के आधार पर मुझे ऐसा कोई कारण दिखायी नहीं देता कि न्यायालय आपका आवेदन क्यों न स्वीकार करे । ●

तैमूर के राज्य के पड़ोस में प्लेग की महामारी फैली थी । इस पर एक बार दरबार में बात चलने लगी तो तैमूर ने डींग हांकी : "जब से मैंने समरकंद के शासन की बागडोर संभाली है तब से कभी प्लेग की महामारी नहीं आयी है ।" तख्त के पास बैठे नसरुद्दीन ने टिप्पणी की : "अल्लाह कितना दयालु है कि उसने समरकंद में एक साथ दो प्लेग नहीं भेजे है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूसी लेखिका

भारत मेरे जन्म का देश है

● विजया

प्रिय अवस्थीजी,

शुभ प्रणाम,

आपको याद होती होगी, आपकी लेनिनग्राद यात्रा । हमारी पहली मुलाकात विज्ञान अकादमी में हुई । और दूसरी मुलाकात इज्वारा में हुई । मैंने और मेरी सहेली ने यूलिया आपसे हिंदी में बातचीत की । आपकी उपहार में दी हुई पत्रिका हमें बहुत अच्छी लगी ।

इस साल की फरवरी में मैंने भारत यात्रा की । २३ दिन तक मैं भारत में रही थी । ५ दिन में बंबई में रही । तत्पश्चात दक्षिण भारत गयी थी । मैंने मैसूर, कोडाई-कनाल,

बांसुरी का स्वर

वह बांसुरी का स्वर जो इतना उजला है—
यह मुझे संदेश है
यह उदास, आशा, इंतजार
और सपने की पूर्ति है ।

और मेरा मन जैसे पक्षी है
ऊपर की ओर
वह उत्साह के साथ उड़ान में जाता है
संगीत से संगम करना चाहता है
बांसुरी के साथ गाता है ।

मैं मनोहर प्रदेश देखूंगी
वह मेरे सपने की भूमि है
तेज रंग, नृत्य, गीत
सूर्य का प्रकाश, प्रेम, फूल...

प्राचीन मंदिर की सीढ़ियां
थके पांव से दर्द दूर करेंगी
और मैं वहीं
विनय में स्तंभित हो जाऊंगी
जहां भगवान रहते हैं ।

तारे की मोती की चूड़ियां
रात मुझ पर पहनेगी
और बांसुरी के गीत की तरह
अपनी रोशनी को चांद धार बांधेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्टोरिया शिलिना लेनिनग्राद की एक भारत प्रेमी रूसी युवती, जिसने अपना नाम 'विजया', 'रख लिया है । परस्तुत है, 'विजया' का अपनी भारत-यात्रा के पश्चात संपादक के नाम एक पत्र, जो हिंदी में ही लिखा था ।

ऊटी, मदुराई, कन्याकुमारी, कोचीन, त्रिवेंद्रम, कोवलाम-बीच, बैंगलूर, धारवाड़ और दिल्ली देखी ।

आपका सुंदर देश मुझे बहुत-बहुत अच्छा लगा । पुस्तक के वर्णन से भी वह अधिक सुंदर और अच्छा है । मैंने बहुत-से मंदिर और महल देखे । मैंने बहुत सुंदर प्रकृति-फूल और पेड़, जंगल में पशु औार पक्षी देखे । पहाड़ और समुंद्र देखा । पहली बार मेरे जीवन में मैंने इतने सुंदर दृश्य देखे । मैं बहुत प्रभावित हूं । विशेषकर मुझे भारतीय लोग अच्छे लगे । मैंने भारतीय कपड़े पहने, भारतीय खाना खाया । मैंने भगवान की पूजा की । मेरे लिए भारत विदेश नहीं है, मेरे जन्म का देश हो गया है । मैंने

राग की मृदुता चांद की रोशनी में
फूल और धुएं की सुगंध है
जो दुनिया में है सब कुछ मैं भूल जाऊंगी
जो पहले मेरे साथ हुआ था ।

अपने को हाथ से स्पर्श करने के लिए
लोग मैं दूर तक जाऊंगी
बांसुरी की मधुर उदासी ने
मुझको रास्ते में बुलाया ।

जिस तरह पतंगा शोले की तरफ उड़ता है
उसी तरह मैं भी बांसुरी की आवाज की तरफ
लड़का दौड़ती हूं
जब तो श्याम-मुखी कृष्ण बांसुरी बजाते हैं
उस गीत को, जो प्यार, रति और वियोग का है

और वे चांद की रोशनी में
मेरे साथ नाचते हैं
चांद आकाश की काली गद्दी पर सम्राजता है
ताकि हमें चांदी की शराब पिलाये
जो हमारी हथेलियों में आकाश के प्याले से
खिलती है ।

— विजया

(विक्टोरिया शिलिना)

VIKTORIYA SHILINA
Flat 37,
PR KOSMONAVTOV—48—1—37
196 233, LENINGRAD, USSR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत कुछ देखा और जाना । लेकिन मेरे लिए यह कम है । और भी देखने और जानने की इच्छा है । आशा है कि मैं दूसरी बार भारत जाऊंगी ।

मेरी यात्रा के बाद मेरे पास तीन फोटो-अलबम हैं । हर दिन मैंने डायरी भी लिखी । अब मैं यात्रा के बारे में किताब लिख रही हूं ।

भारतीय साहित्य के प्रति मेरी गहरी अभिरुचि है । विशेषकर भारतीय कविता के प्रति । भारतीय साहित्य की कृतियों को मैं न केवल स्वयं ही पढ़ती हूं बल्कि इसकी जानकारी अन्य लोगों को भी देने की कोशिश करती हूं । हमारे यहां सोवियत-भारत मैत्री का क्लब है । इसका नाम 'कमल' है । इसके अध्यक्ष वारान्निकोव जी हैं । हमारे क्लब में हम लोग भारतीय लेखकों व कवियों की रचनाओं को सुनाते हैं । भारतीय फिल्मों और कलाकारों के विषय पर बातें करते हैं । जिन लोगों ने भारत की यात्रा की, वे अपना भारत संबंधी संस्मरण भी सुनाते हैं । और स्क्रीन पर स्लाइड्स दिखाते हैं । हमारे क्लब में भारतीय नृत्य तथा हिंदी भाषा की शिक्षा दी जाती है । गरमी के दिनों हम लोग अपने क्लब में भारतीय यात्रियों से मिलते हैं । हम लोग भारतीय लेखकों संबंधी समारोह भी आयोजित किया करते हैं ।

अब मैं हमारे क्लब के सदस्यों को हिंदी भाषा पढ़ाती हूं । मैं भी भारतीय कवियों के कविताओं का हिंदी से रूसी में पद्यानुवाद करती हूं । इन कारण से मैं अपनी हिंदी की जानकारी बढ़ाना चाहती हूं । हिंदी भाषा सीखने के लिए भारत जाने का मेरा सबसे बड़ा स्वप्न है ।

क्या आपकी सोवियत संघ की यात्रा आपको पसंद आयी ? हमारा लेनिनग्राद आपको कैसे लगा ?

इस चिट्ठी के साथ दो मेरी कविताएं और दो हिंदी से रूसी में पद्यानुवाद भेज रही हूं । हिंदी में मेरी कविताओं का गद्यानुवाद मैंने स्वयं किया । इसमें कुछ गलतियां है । इसके लिए मुझे क्षमा कीजिए ।

यदि आपकी पत्रिका में भारत के बारे में या प्रेम के विषय पर कोई अच्छी कविताएं हैं तो मुझे भेजिए कृपया । मैं रूसी भाषा में इसका पद्यानुवाद करूंगी ।

मेरी सहेली यूलिया आपको अपना नमस्कार भेज रही है ।

आपको और आपके परिवार को मेरी और मेरे परिवार की तरफ से बहुत-बहुत प्यार ।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में आपकी विजया

सौंदर्य-बोध मानव आत्मा को ईश्वर का सर्वोत्तम वरदान है । —डब्लू. एच. हडसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

अवसाद

इंद्रकुमार अवस्थी रायपुर; उम्र २४ वर्ष है । आठ माह पूर्व अवसाद से ग्रस्त था । स्थानीय डॉक्टर की गोलियों से शरीर पीला पड़ गया, जलन होने लगी तथा भूख नींद गायब हो गयी । उलूल-जुलूल बातें करने लगा । फिर किसी और शहर के मनोचिकित्सक द्वारा ३ माह गोली खाने से सही तो हो गया, परंतु नींद अभी भी गायब है । किसी भी इलाज से कोई फायदा नहीं ।

हमारे विचार में आपका रोग मूलतः अवसाद (डिप्रैशन) नहीं था । कई बार कुछ मानसिक परेशानी अथवा रोग डिप्रैशन का भ्रम देते हैं तथा सही निदान न होने पर गोलियों के खाने से ऐसी मनःस्थिति उत्पन्न हो सकती है । ३ माह एक मनोचिकित्सक के इलाज से आप यदि सही हो गए हैं, तो नींद भी आनी ही चाहिए । इसके लिए नींद की गोली का प्रयोग न करें अपितु अपनी जांच कराएं । नींद किसी वजह से ही गायब होती है या फिर अत्यंत चिंता आदि से । आपमें यह रोग नहीं, परंतु रोग का लक्षण है । कई बार लोगों को भ्रम भी होता है कि उन्हें नींद नहीं आती । वास्तव में वह सोते हैं । इसलिए अपनी पत्नी या माता-पिता किसी से पुष्टि करा लें ।

हीन भावना की शिकार

क. खे. ग. लखनऊ; मैं १९ वर्ष की छात्रा हूं । मैं अपने जीवन में पढ़-लिखकर कुछ बड़ा बनना तथा आत्मनिर्भर होना चाहती हूं । सबसे बात करने का मन करता है— छोटे-छोटे बच्चों के साथ खेलने का भी । जब मैं पढ़ने बैठती हूं, तब सोचती हूं अपने लक्ष्य में सफल होऊंगी या नहीं । मेरी बहन मुझसे हर क्षेत्र में आगे है । माता-पिता की ओर से कोई कमी नहीं । कई बार मैं उसके नजरिए से काम करने की कोशिश करती हूं— सोचती हूं यदि वह मेरी जगह होती तो क्या करती । वह गंभीर स्वभाव की है, बच्चों से नहीं खेलती, किसी भी विषय पर जवाब दे देती है । मैं सोचती हूं— क्या मुझे हंसमुख होना चाहिए या गंभीर । अपने से छोटों पर रौब मारना चाहिए या नहीं । इसी उधेड़बुन में व्यवहार करने की सोचती हूं । एक ज्योतिषी ने कहा था कि खूब पढ़ेगी, पर स्तर मध्यम दर्जे का ही रहेगा । तब अधिक पढ़ने से व मेहनत करने से क्या लाभ ? ऐसा सोचती हूं । मेरी बहन हर क्षेत्र में आगे है । हीन भावना की शिकार हूं भीतर से दम घुटता है । वह मेरा काम कर देती है, परंतु मुझे जब कहती है तो अपमानित महसूस करती हूं । मुझे डर है, कहीं मैं उससे ईर्ष्या न महसूस करने लगूं । जो आगे जाकर घातक सिद्ध हो । मार्गदर्शन करें ।

आपकी समस्या अपनी पहचान बनाने से है । आपको अपना व्यक्तित्व निखारना है । आपकी बहन यदि गंभीर हैं और आप हंसमुख तो आप अपनी प्रकृति को बदलने का प्रयत्न न करें । आप स्वाभाविक रूप से रहें— अपनी बहन की नकल न करें । आपमें भी अच्छे गुण हैं, जिन्हें आप उभरने नहीं दे रही हैं, क्योंकि आप हर समय अपनी तुलना बहन से करती रहती हैं । इस प्रकार अपने व्यक्तित्व को उभरने नहीं देतीं । ज्योतिषी कई बार घरवालों के मुख से अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके मुख से कही बात द्वारा अंदाजा लगा कर बोल देते हैं । कर्म का स्थान अपना है । यदि आप मेहनत करेंगी तो फल मिलेगा ही । हां, आप अपना लक्ष्य अपनी क्षमताओं को देखकर निर्धारित करें ।

यह भय क्यों

राकेश चंद्रपुरा, बिहार : २५ वर्ष का अविवाहित, महत्त्वाकांक्षी शिक्षित युवक हूं । बचपन से ही भावुक, विचारपूर्ण एवं अच्छा कलाकार रहा हूं । दुर्भाग्यवश मुझे एक सामान्य पद पर नियुक्ति मिली, जिसे विवश होकर मैंने स्वीकार किया । इस पद पर नियुक्ति से मुझमें हीन भावना आ गयी । तब मैंने अपने दिमाग में सकारात्मक चिंतन डालने शुरू किये तथा अच्छे पद की तैयारी में लग गया । परंतु इधर पिछले ७-८ माह के दौरान उल्टे विचार दिमाग में आते गये । पिछले दो-तीन माह से नकारात्मक चिंतन को सकारात्मक रास्ते पर लाने की कोशिश करता रहा । पागल शब्द मेरे दिमाग में समाकर फोबिया का रूप ले चुका है । मैंने स्टेज पर पागल का अभिनय कई बार किया तथा प्रशंसा का पात्र बना व इनाम बटोरे । परंतु अब इस शब्द से ही डरता हूं । वैज्ञानिक, राजनीतिक व आध्यात्मिक पुस्तकें खूब पढ़ता हूं । परंतु 'भय' दृढ़ता पूर्वक मेरे मानस पर छाता जा रहा है । कृपया सुझाव दें ।

हरेक मनुष्य को दोनों प्रकार के नकारात्मक चिंतन व सकारात्मक चिंतन आते हैं । ऐसा नहीं कि मन में नकारात्मक चिंतन आ ही नहीं सकते । इसलिए हर समय केवल मन में उनको न आने देना या फिर उन्हें परिणित करने की सोच, एक रस्साकशी की-सी मनोस्थिति उत्पन्न हो, सारा मनोबल इसी में व्यर्थ हो जाता है । वास्तव में हमें आशावादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए न कि निराशावादी । इसका तात्पर्य कदापि नहीं कि हम अपना मनोबल इस रस्साकशी में लगा दें । दिमाग को स्वाभाविक रूप से कार्य करने दें, उसके भीतर अप्राकृतिक रूप से छेड़छाड़ करने से ही ऐसा भय उत्पन्न हुआ है । आपको केवल फोबिया है, परंतु मनोचिकित्सक होने के नाते हम आपको अवगत करा दें कि ऐसे लोग कभी वास्तविक रूप से पागल नहीं होते ।

दिवास्वप्न

सु. कु. केअनझार, उड़ीसा : मैं १८ वर्ष का युवक हूं । पौलिटैक्निक इंस्टीट्यूट में द्वितीय वर्ष की पढ़ाई कर रहा हूं । मैं एक खाता-पीता मध्यम श्रेणी परिवार से हूं । समस्या यह है कि मैं न चाहते हुए भी दिवास्वप्न देखता हूं । जैसे मुझे क्रिकेट खेलने का बहुत शौक है । मैं उसमें बुलंदियों तक पहुंचने का दिवास्वप्न देखता हूं । अपनी मनपसंद लड़की को पा लेने का दिवास्वप्न; संसार में खूब नाम और पैसा कमाने का दिवास्वप्न । मुझे दिवास्वप्न देखते समय एक अजीब-सा सुख अनुभव होता है । मैं जानता हूं कि दिवास्वप्न कभी हकीकत में परिणित नहीं होते । ऐसा मैंने अनुभव किया और प्रायोगिक रूप से प्रमाणित होते देखा है । जैसे किसी मैच में बहुत सारे रन बनाने का दिवास्वप्न और इसी मैच में बुरी तरह असफल होना आदि । मैं समझता हूं कि इस दिवास्वप्न के पीछे शायद मेरा इंद्रियों पर नियंत्रण न होना है । मैंने पढ़ा है जो आदमी इंद्रियों पर नियंत्रण नहीं रख पाता वह सफलता प्राप्त नहीं कर पाता । कृपया मुझे इस आदत से छुटकारा दिलाने का सुझाव दें ।

दिवास्वप्न मन की एक स्वाभाविक क्रिया है । इंद्रियों के नियंत्रण का इससे कोई संबंध नहीं । यह भी सही नहीं है कि यह कभी वास्तविकता में परिणित नहीं होते । वास्तव में दिवास्वप्न देखना तथा कार्यशील होने में संतुलन रखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक है। यदि आप कार्यशील व गतिशील नहीं केवल शेखचिल्ली की भांति स्वप्न देखते हैं तो अवश्य ही वह हकीकत से कहीं परे होते हैं। वास्तव में जो हम यथार्थ रूप में नहीं पा सकते, उसे हम स्वप्न में देखकर अपने मन को प्रसन्न कर लेते हैं। परंतु, यदि हम मेहनत से कार्य करते हैं तो हमारे स्वप्न इस कार्य को आगे बढ़ाने में सक्रिय होते हैं। दिवास्वप्न के गुण व मात्रा भी इसी मनःस्थिति से प्रभावित होते हैं। जो व्यक्ति कार्यशील कम होते हैं, उनमें दिवास्वप्न बढ़ जाते हैं तथा मनुष्य को वह अपनी ओर खींचते हैं। इनसे मुक्ति तो नहीं मिल सकती, हां वह बहुत कम हो सकते हैं। इसके लिए आप कार्यशील, गतिशील बनें।

वहम

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

म. सिंह सेंगर, गोंडा : १८ वर्ष का युवक हूं। ३-४ माह पूर्व मामाजी की एक बस दुर्घटना में अचानक मृत्यु हो गयी। पते के अभाव से घर में सूचना ३-४ दिन बाद मिली। दुर्घटना इतनी भीषण थी कि बस देखकर रोंगटे खड़े हो गये। घर परिवारवाले समय के साथ भूलने व बदली परिस्थितियों से समझौता करने की चेष्टा कर रहे हैं। परंतु तब से मन में एक डर-सा पैदा हो गया है। कहीं भी यात्रा पर जाने से पहले एक पत्रे पर अपना वर्तमान पता तथा जानेवाली जगह का नाम लिखकर अपने पास रख लेता हूं। मुझे यात्रा से पहले ऐसा लगता है कि कहीं पते के अभाव से मेरे परिवार को भी समय से सूचना न मिल पाए। क्या वास्तव में निकट भविष्य में मेरे साथ कुछ ऐसा होने वाला है या यह केवल मन का वहम है।

चूंकि आपके परिवार के निकट संबंधी के साथ ऐसा हुआ, इसलिए आपके मन के ऊपर इस बात की छाप पड़ी। परंतु एक दुर्घटना होने का अर्थ यह कदापि नहीं कि आप पत्रे पर पता लिखते हैं तो दुर्घटना आने वाली है। यह तो केवल वहम ही है। पाश्चात्य देशों में लोग अपने पर्स में हमेशा अपना कार्ड जिस पर न केवल पता बल्कि अपना रक्त समूह तथा कोई और बीमारी—जैसे मधुमेह आदि भी लिखी रहती हैं। ऐसा यदि आप चाहें तो कर सकते हैं। वह एक बार रख फिर चिंता नहीं करते। आपका बार-बार इस क्रिया को करने से मन में मृत्यु, दुर्घटना का भय, निराशावादी विचार आदि हैं। आप उसी के बारे में सोचते रहते हैं। आप एक बार अपने साथ कार्ड रख फिर भूल जाएं कि आप यात्रा पर भी हैं तथा कुछ हो सकता है। यदि फिर भी भय पीछा न छोड़े तो घटना-स्थल पर जाकर या फिर मन में पूरी प्रकार से विचारों को आ लेने दें तथा डर समाप्र करने की कोशिश करें। इस प्रकार आप अपने पर नियंत्रण रख सकते हैं।

चित्रकारी मूक कविता है और कविता बोलती हुई तसवीर। —साइमनडीज

जननी का हृदय शिशु की पाठशाला है। —डब्लू. एच. बीचर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

सफलता

तलहटी से हम
पहाड़ी रास्तों-सी टेढ़ी-मेढ़ी
खतरनाक
व्यवस्थाएं
कागज की नाव-से तैरते
समाधान
फिर भी
हम बाज नहीं आये
फसलें
सफलता की
लहलहायीं
सीढ़ीदार खेतों में

एकाकीपन

यादों के पर्वतों पर
चढ़ते-उतरते
कब सूरज सिंदूरी हो चला
पता ही नहीं चला
एकाकीपन मन का उतना ही
व्यस्त हुआ

त्रस्त इतना हुआ जैसे
बिना आरक्षण के यात्रा करता रहा

सतह पर नदी के
हलका हो तैरता रहा

सैकड़ों अनुभूतियां खट्टी-मीठी
घेरती हैं
अकेलापन फिर भी अकेलापन है

उपलब्धियां

उलझन की बावड़ी
भटकन का झुरमुट
कंटीली झाड़ी-सी कटुता
बाढ़ उपेक्षा की
ये हैं हमारी, आपकी
आकाशीय उपलब्धियां

आकांक्षा

ड्राइंग-रूम में
हर दीवार पर
या सजावट के लिए रखे हुए
शीशे के रेक्स पर
जगलों से तलाशे टिक्स
या पास के माली के घर से
चूल्हे में जलाने की लकड़ी में से
ढूंढ़ी गयी सूखी लकड़ी
प्रतिबिंब है हमारी 'थकान' का
सूखी लकड़ी या टिक्स के साथ सजा
बड़ी-बड़ी हरी पत्तियों वाला मनीप्लांट
संकेत है
कुछ हरा-भरा करने की आकांक्षा का

परिवर्तन

एक नन्हीं रंगीन चिड़िया
तार पर लटके
गर्म मोजे पर बैठी फुदककर
फिर मफलर पर
और फिर
चहचहाकर स्वेटर पर
उसमें
कुछ परिवर्तन की साथ थी

कु. रंजना शर्मा
—३८ लिटन रोड, देहरादून—२४८००१

आत्मकथ्य:

पारिवारिक साहित्यिक माहौल ने लिखने की प्रेरणा दी । शोषित-पीड़ित जन और मानवीय संवेदनाओं को शब्द देते हुए सामाजिक सरोकार से जुड़ाव ।

संप्रति : स्वतंत्र लेखन एवं महादेवी डिग्री कॉलेज पुस्तकालय विभाग में कार्यरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा नहीं होना चाहिए

लोग सुन रहे हैं, लोग सुना रहे हैं
मैं सुनता हूं, चुपचाप
सुना है, चौराहे के पास
दंगा कटा है'
कल बाजार गया था वर्माजी का लड़का
अभी तक लापता है'
मैं सुनता हूं चुपचाप
ऐसा नहीं होना चाहिए'
और सुना है, इस बार शहर
जलनेवाला है'
अरे भाई, क्या करोगे
मंदिर-मसजिद का मामला है'
फिर मैं सुनता हूं, फिर वे
बोलते हैं, वही शब्द. . .
ऐसा नहीं होना चाहिए'
अरे भाई तुम समझे नहीं
यह प्रशासन का निकम्मापन है'
अब यार, बहस की बात ही नहीं
चुनाव का सीजन है'
लेकिन चाहे जो हो
ऐसा नहीं होना चाहिए'
लेकिन ऐसा होता है
और इसलिए होता है कि तुम
कहते हो
'ऐसा नहीं होना चाहिए'
इसे रोकना चाहिए
की जगह

गुस्सा क्यों नहीं आता

तुम्हें गुस्सा क्यों नहीं आता
जब तुम्हारा शहर
कत्ल होता है
तुम्हें गुस्सा करना होगा कि
तुम आदमी हो और
आदमी रहना चाहते हो

ये मुमकिन है कि तुम
गुस्सा करने लगोगे
लेकिन कब
जब तुम दाढ़ी, जनेऊ और टोपी
की भाषा के बदले
आदमी की भाषा
समझने लगोगे
तुम्हें जरूर गुस्सा आएगा
उन पर, जो तुम्हें
धर्मग्रंथ झुनझुने की
तरह धरा देते हैं
जब तुम गीता या कुरान
खुद पढ़ने लगोगे
अगर तुम्हें इतने पर भी
गुस्सा नहीं आता तो
थोड़ी हिम्मत करो
चाकू किसका है और गरदन
किसकी
देखने की कोशिश करो
और, कुछ समझ में आये
तो दूसरों को भी समझाओ
उन्हें गुस्सा करना सिखाओ
गुस्सा उनके खिलाफ
जो तुम्हें कत्ल करना सिखाते हैं
आदमी का, आदमीयत का

शोषित शोषक

तुम शोषित हो, वह शोषक है
तुम सोते हो, वह जागता है
तुम चुप हो, वह डांटता है
तुम रोते हो, वह गाता है
तुम छोटे हो, वह बड़ा है
वह शोषक है, तुम शोषित हो
वह सोएगा, अगर तुम जागते हो
वह चुप होगा, अगर तुम डांटते हो
वह रोएगा, अगर तुम गाते हो
वह घटेगा, अगर तुम बढ़ते हो
कर लोगे तुम इतना
तो तुम्हें यकीन हो जाएगा
वह जरूर घटेगा और घटते-घटते
अस्तित्वविहीन हो जाएगा

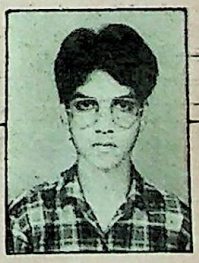

राजेश प्रियदर्शी

संपर्क :—द्वारा, श्री सचित कुमार सिन्हा, ७१, हरमू रोड, किशोरगंज [illegible]
रांची—८३४००१

आत्मकथ्य

सामाजिक दायित्व एवं प्रतिबद्धता की बातें बड़ी अच्छी लगती हैं लेकिन ईमानदार चिंतन के क्रम में इनके लिए कुछ कर पाने में खुद को बेबस महसूस करता हूं तो कविताएं लिखता हूं ।

संप्रति :-अध्ययन । शिक्षा—स्नातक, उम्र—२० वर्ष, ३ वर्षों से सक्रिय रंगकर्म में बतौर अभिनेता संलग्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी : अच्छी और नयी

□ देवीशंकर अवस्थी

विवाद का केंद्रबिंदु है कि अच्छी कहानी को नयी होना ही चाहिए या नहीं ? पुरानी यानी पुराने युगबोध की कहानी को नामवरसिंह अच्छी नहीं स्वीकार करते । यह बात 'एक शिल्पहीन कहानी' और 'वापसी' के विश्लेषण द्वारा उन्होंने सिद्ध की है । इस सिलसिले में उन्होंने जो बात कही है उससे लगता है कि भावुकता को ही वह पुराने बोध के अंतर्गत खतियाना चाहते हैं । भावुकता की प्रचुरता के कारण ही उन्हें 'धरती अब भी घूम रही है' अच्छी नहीं लगी, गोकि उसकी गिनती अब 'क्लासिक कहानी' के तौर पर होने लगी थी । मूर्तिध्वस्तीकरण का कार्य आलोचकों ने बहुधा किया है और हम उसे यदि हिंदी कहानी के क्षेत्र में घटित होता हुआ देख रहे हैं तो विचलित होने के बजाय कुछ और 'क्लासिक' कहानियों की ओर आलोचक प्रवर का ध्यान आकर्षित करें ।

ससुर पतोहुवाली कहानी

चूंकि बात ससुर-पतोहूवाली कहानियों से प्रारंभ हुई थी, इसलिए स्वाभाविक रूप से सास-पतोहूवाली एक कहानी और याद आ जाए तो उचित ही होगा । प्रेमचंद की एक मशहूर कहानी है : 'बूढ़ी काकी' । बहुत-से प्रतिनिधि संकलनों में उसे संकलित पाया जा सकता है । नामवरजी की विश्लेषण पद्धति पर चलकर देखें तो ज्ञात होगा कि एक बुढ़िया है जिसे दिखायी भी नहीं देता, पति ही नहीं जवान पुत्र भी स्वर्ग जा चुके हैं (हाय-हाय) । जायदाद भतीजे के नाम लिख दी है (वाह-वाह) । स्वादेंद्रिय ज्यादा मुखर हो गयी है (च-च-च) । घर में परवाह कोई नहीं करता । केवल एक छोटी लाडली प्रेम करती है (और जिसे सबसे छोटा बच्चा प्रेम करे वह अवश्य नितांत पवित्र एवं करुणा का पात्र होना चाहिए) । घर में एक उत्सव हो रहा है, पकवानों की धूम है और उसका बालमन नहीं मानता— नीचे आ जाती है और भतिजबहू उसे दुत्कार देती है । फिर मन नहीं मानता और पंगत के बीच पहुंच जाती है तो भतीजे महाशय उठाकर फेंक जाते हैं (दो-दो बार का अपमान भला किसे न खलेगा ?) । फिर आती है लाडली अपने हिस्से की पूड़ियां लेकर, जो कि आग पर घी का काम करती है । परिणामस्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...लाडली के सहारे झूठी पत्तलों को चाटने ...जाती है। (नामवरजी के शब्दों को उधार ...तो 'कौन ऐसा कठकरेज होगा' जो एक ...बुढ़िया की इस दारुण दुर्दशा से द्रवित ...हो उठेगा ?) और स्वयं पतोहू आखिरकार ...हो ही उठती है। उसे ऐसा प्रतीत हुआ, ...जमीन रुक गयी आसमान चक्कर खा रहा है। (विष्णु प्रभाकर की कहानी 'धरती अब ...घूम रही है' के वाक्यों से मिलाइए !) ...और भय से उसकी आंखें भर आयीं। ...नैतिक धक्के से उसके हृदय में सच्चाई और ...फूट पड़ती है। वह काकी को भरपेट ...कराती है, काकी भी बच्चों की तरह ...करती है, रोम-रोम से सदिच्छाएं ...लती हैं और रूपा (पतोहू) 'इस स्वर्गीय ...का आनंद लूटने में निमग्न थी।'

इस तरह कहानी पढ़कर व्रतों-त्यौहारों में ...जानेवाली कहानियों के बारे में बड़ी-बूढ़ी ...की तरह पाठक भी कह सकता है कि ...उनके दिन बहुरे वैसे सबके दिन बहुरें।' ...भला, सो सब भला। तथा बकौल ...सिंह यह सफलतावादी दर्शन है। 'ऐसे ...में सत्य के लिए कोई जगह नहीं है और न ...जगह सत्य की कोई उम्मीद की जा सकती ...' इस तरह प्रेमचंद की एक कहानी की ...को ध्वस्त करने का मुझको संतोष प्राप्त ...है और कुछ पूर्ववर्ती आलोचकों के ...उन्हें द्वितीय श्रेणी की प्रतिभा या ...लियों' के साथ सतह पर का कलाकार ...का साहस मैं भी कर सकता हूं। ...कार यह कहानी भी एक की ही है और ...कहानी केवल एक की हो उसके बारे में

षष्ठि पूर्ति-श्रद्धांजलि

डॉ. देवी शंकर अवस्थी का जन्म ५ अप्रैल १९३० को उन्नाव जिले के सधनी बालाखेड़ी में हुआ था। बहुत छोटी आयु में अचानक वे दुर्घटनाग्रस्त हुए और उनकी मृत्यु हो गयी। थोड़े समय में ही श्री देवी शंकर अवस्थी ने ९ पुस्तकों की रचना की। हिंदी के आलोचना जगत में वही एक व्यक्ति थे जो नयी पीढ़ी को साथ लेकर चल रहे थे। उनकी मृत्यु के बाद यह काम आज तक किसी आलोचक ने नहीं किया। हम यहां कादम्बिनी में पहली बार डॉ. देवी शंकर अवस्थी की एक रचना प्रकाशित कर रहे हैं। रचना से स्पष्ट है कि डॉ. अवस्थी का हिंदी जगत में समुचित मूल्यांकन नहीं किया गया। कम से कम नयी पीढ़ी को इन्हें याद करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर दुःख क्या ? कहानी खतम हुई, आंसू बहे, आंसू सूखे, कहानी खतम हुई ।' और यदि बिंबों वगैरह की बात न उठायी जाए तो नामवरजी चुटकी बजाते 'मेघदूत' को भी उड़ा देंगे, क्योंकि वह विरह एक ही दंपति का तो है ।

नयेपन की भावुकता

इससे यह न समझा जाए कि मैं 'एक शिल्पहीन कहानी' की वकालत करना चाहता हूं । प्रेमचंद की कहानी को उद्धृत करने का एक तात्पर्य यह भी है कि इस कहानी के पुरानेपन को और साफ करके दिखाया जा सके । शिल्प उसका अधिक सायास और जटिल है तथा नैतिकताबोध का वह धक्का भी नहीं है, जो 'बूढ़ी काकी' में अंत में प्रमुख बन जाता है । उसका कारण यह भी है कि 'निर्गुण' की कहानी के पात्र—बेटा और बहू—आधुनिक हैं, यथार्थ का आग्रह था कि उन पर नैतिक बोध का धक्का न डाला जाए । पर यही इस कहानी की मुख्य कमजोरी बन जाती है । पुरानी शराब को नयी बोतल में (पुरानी व्यथा को नये पात्रों के माध्यम से) ढालना इसे कमजोर कर देता है, जबकि प्रेमचंद में यह असंगति नहीं मिलती । इसके अतिरिक्त प्रेमचंद अपनी 'बूढ़ी काकी' को असाधारण नहीं बनाते, जबकि 'निर्गुण' का नायक असाधारणता ग्रहण कर बैठता है । हमें लगता है कि पुरानेपन की बात करते समय मात्र भावुकता (हाशिये पर नामवर जी भावुकता पर एकाधिक बार हल्ला बोल चुके हैं) और भावुकता के प्रसंग में ही 'एक' की कहानी, 'सत्य की जगह' और 'जीवनसत्य की खोज' आदि बातों की चर्चा वस्तुतः स्थापनाओं का गड़बड़झाला बन जाती हैं, क्योंकि इन प्रश्नों पर अलग से प्रश्न और विवाद खड़े होते हैं । 'भावुकता' नयेपन की भी होती है । छोटे-से 'ताजमहल' वाली अपनी टिप्पणी में स्वयं नामवरजी ने 'कल्ट आफ एक्सपीरिएंस' की आधुनिकता राजेन्द्र यादव की कहानी में प्रश्न हुए भी कहा था : 'इतनी प्रतीकयोजना से यदि भावुकता की सृष्टि न होगी तो कब होगी ?' जहां तक 'एक' की ही कहानी का संबंध है, उसमें भी 'वैयक्तिक संबंधों' की बारीकियों और निजी अनुभूतियों के छोटे-छोटे क्षणों के ब्योरे की निंदा कर चुके हैं । यह भी पुरानेपन का अनिवार्य लक्षण सिद्ध नहीं होता । इसके अतिरिक्त दूसरा प्रश्न यह भी है कि [illegible] की कहानी क्या सचमुच ही ऐसी ही विस्मरणीय एवं उपेक्षणीय होती है— खास करके कहानी-जैसी मूलत : वैयक्तिक और निजी कला में । ऐसा लगता है कि कहानियों का [illegible] करते समय नामवरजी के मन में 'उपन्यास' रहता है । लोगों ने उन पर कविता के नजरिये से कहानी पढ़ने का आरोप लगाया है, पर इन टिप्पणियों से मुझे लगता है कि वह उपन्यास की दृष्टि से कहानी पढ़ते हैं । इसी कारण एक कहानी का खंडन, जीवनसत्य की उपलब्धि विराट ताजमहल की समग्र भावना की इतने महत्त्वपूर्ण ढंग से चर्चा करते हैं तथा अनुभूति के चित्रण से तनिक घबराते से दिखते हैं ।

वैयक्तिक अनुभूतियां

इसी प्रसंग में एक बात अवश्य उल्लेखनीय है कि वैयक्तिक अनुभूतियों पर आधारित होते हुए भी कहानीकार को यह जरूर देखना होगा कि इन निजी अनुभवों की अच्छाइओं में कैसे एवं क्योंकर दूसरे लोग हिस्सा बटा सकते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभूतियों का ज्यों का त्यों चित्रण आज की तथाकथित 'नयी' या 'आधुनिक' कहानियों में देखा जा सकता है, पर सवाल उन्हें पुनर्रचित एवं पुनर्गठित करने का होता है । उदाहरणार्थ मोहन राकेश के नये संग्रह 'एक और जिंदगी' में से तीन कहानियां— 'सुहागिन', 'मिस पाल' एवं 'एक और जिंदगी' ली जाएं, तो प्रथम और तृतीय कहानी में एक प्रकार का आत्मचरितात्मक फोटोग्राफिक रूप उभरता है, जबकि 'मिस पाल' में वही रचना (या बच्चों) की दुनिया को बहुत अधिक निर्वैयक्तिक एवं कलात्मक धरातल पर आ सकी है । पर उससे भी ज्यादा गुजरी स्थिति तब आती है, जब अनुभूति की पूंजी और शक्ति चुक जाती है और मात्र चुन-सुनकर स्थूल ऐंद्रिय बोध में कुछ अर्थ या संकेत भरे जाते हैं । 'नयी कहानियां' के पिछली अंक में प्रकाशित चंद्रगुप्त विद्यालंकार की ही कहानी 'पतझड़' को लिया जाए । यह स्वयं चन्द्रगुप्तजी की प्रिय कहानी है । इसमें दिल्ली की सड़कों और प्लेसों के वर्णन मिलेंगे । पांच बूढ़ों के वैसे लंबे-चौड़े वर्णन मिलेंगे जैसे कि 'खोए हुए लोगों' के बारे में पुलिस में दर्ज कराये जाते हैं । लेखक ने एक अखबारी नुमाइंदे की तरह तटस्थ भाव से सब सुनकर रिपोर्टिंग करता है और परिणाम है कि सारी कहानी एक अखबारी रिपोर्ट भर है और जिस बधावासिंह को वह पूरी संघर्षरत पीढ़ी का प्रतीक मानते हैं, वह रिपोर्टर की अपनी टिप्पणी भले मान ली जाए— पाठक के मन में किसी ओर से वह प्रतीक नहीं उभरता । यह जो कहानी का माध्यम चन्द्रगुप्तजी को इतना नपा-तुला, एक्रैक्ट और कठिन लगने लगा है, उसका कारण माध्यम का विकास उतना नहीं है, जितना खुद उनकी अपनी पूंजी का खतम हो जाना है, अन्यथा आज से बीसेक साल पहले लिखी उनकी 'काम-काज' कहानी इतनी एक्रैक्ट हो गयी है और इतनी नपी-तुली कि कहानी (शार्ट स्टोरी) को अपेक्षित लंबाई तक पहुंचाने के लिए उन्हें तीन चित्रों की श्रृंखला देनी पड़ी है (गोकि अपने आप में प्रत्येक चित्र एक 'मुकम्मिल' कहानी है) । वस्तुतः कहानी सदा नपी-तुली और एक्रैक्ट रही है— सामान्य रूप में ।

अपनी बात समाप्त करते हुए मात्र दो बातें कहना चाहूंगा : अच्छी कहाने के प्रसंग में फाकनर की ये पंक्तियां मुझे काफी दूर तक सार्थक लगती है कि मनुष्य के हृदय का अपने आप द्वंद्व ही एक ऐसी समस्या है, जो अच्छे लेखन को निर्मित कर सकती है, क्योंकि एकमात्र वही सृजन की पीड़ा, परिश्रम एवं लिखने के काबिल होती है । 'नयी' के संबंध में मात्र इतना कि 'नयापन' निरर्थक होता है यदि वह अनुभवों की संकुलता में नयी अंतरदृष्टि न प्रदान करे तथा वस्तुपरकता की एक नयी प्रक्रिया को ही विकसित न करे ।

संस्कृत के 'भृतहरि शतक' का सर्वप्रथम यूरोपीय भाषा में अनुवाद डच पादरी एब्राहम रॉजर्स ने सन १६३१ में किया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

अंजु, भागलपुर ।

प्रश्न : दोनों हथेलियों पर छोटी-छोटी फुंसियां उगकर खुजलाती हैं । ये फुंसियां पककर बड़े फोड़ों के रूप में विकसित होकर पूरी हथेली पर घाव का रूप धारण कर लेती हैं, कभी-कभी नाखूनों के अंदर भी घाव फैल जाता है, और नाखून काला पड़कर धीरे-धीरे सड़ जाता है । दायें पैर की एड़ी के निकट भी एग्जिमा-जैसा घाव है । अनेक प्रकार के इलाज से तात्कालिक फायदा होता है, किंतु पुनः वही स्थिति बन जाती है ।

उत्तर : गंधक रसायन तीस ग्राम, रस माणिक्य दस ग्राम, गिलायसत्व दस ग्राम सभी दवाओं की साठ मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । शारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें । केशरे गुगल एक वटी, आरोग्यवर्धनी वटी, दो वटी दिन में दो बार पानी से लें । एक वर्ष तक नियमित सेवन करने से स्थायी लाभ होगा ।

नलिनी, शुक्ल ।

प्रश्न : पेट दर्द व उल्टी ५ माह से है । दो वर्ष पूर्व अपेंडिसाइटिस हो जाने से आप्रेशन किया गया । आप्रेशन के दौरान ओवरी में एक सिस्ट का भी पता लगा, उसे भी उसी ऑप्रेशन के साथ निकाल दिया गया । अब दूसरी ओवरी पर भी एक छोटी-सी सिस्ट का ज्ञान सोनोग्राफी जांच से हुआ है । चार वर्ष से विवाहित हूं, अभी कोई संतान नहीं । फिर आप्रेशन करवाना पड़ा तो संतान होना असंभव है । पहले सिस्ट की जांच करवाने पर कैंसर के कोई लक्षण नहीं पाये गये । चिंता में परेशान हूं ।

उत्तर : स्वर्ण सूत शेखर रस दस ग्राम, प्रवाल पंचामृत रस दस ग्राम अस्सी मात्रा में बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । नारिकेल क्षार चौथाई-चौथाई चम्मच भोजन बाद पानी से लें । कांचनार गुगल एक-एक वटी दिन में दो बार पानी से लें । छह माह तक नियमित सेवन करें ।

विनोद कुमार, चंडीगढ़ ।

प्रश्न उम्र १७ वर्ष । जब भी मैं चावल आलू उड़द दाल, अंडा आदि खाता हूं तथा सुबह सोकर उठता हूं, तो मुंह पर सूजन हो जाती है ।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें ।

मनु, लालवानी, इंदौर ।

प्रश्न : सिर भारी रहता है । शौच खुलकर नहीं आता— कभी चक्कर आने लगते हैं । कभी-कभी छोटे-छोटे कीड़े निकलते हैं ।

उत्तर : कृमिमुदगर रस एक-एक वटी सुबह-शाम गर्म पानी से लें । विडंगारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

किशोरी लाल, थाना ।

प्रश्न : मेरी पत्नी को दायें पैर में कमर से लेकर नीचे तक बहुत दर्द रहता है, छह महीने से परेशान हूं ।

उत्तर : रास्ना गूगल दो-दो वटी सुबह-दोपहर-रात गर्म पानी से लें । दशमूलारिष्ट दो चम्मच, अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...प्रसाद, पडरोना

प्रश्न: सिर में जोरों से दर्द, चिड़चिड़ापन, दिल में ...कन, पढ़ने में मन नहीं लगता, दिमाग थोड़ी देर ...थक जाता है। जीवन में निराशा नजर आती ...मित्र से झगड़ा होने के पश्चात ऐसा हो रहा है।

उत्तर : ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच ...-रात दूध से लें। अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, ...स्वतारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें।

...लाल वर्मा, ग्वालियर

प्रश्न : उम्र छयालीस वर्ष। सिर चकराना तथा ...रहना। पंद्रह वर्ष से उच्च रक्तचाप से पीड़ित हूं।

उत्तर : सर्पगंधावटी एक-एक वटी ...-शाम पानी से लें। ब्रह्म रसायन एक-एक ...रात दूध से लें।

...दिल्ली

प्रश्न : उम्र पैंतीस साल। दो बच्चों की मां। ...का जन्म आप्रेशन से, बच्चों के जन्म के ...सारे बदन में दर्द विशेषकर पेट के नीचे के ...में हर समय दर्द। एलोपैथी इलाज किया है।

चंद्रप्रभा वटी एक-एक वटी सुबह-शाम ...पानी से। दशमूलारिष्ट दो-दो चम्मच ...के बाद पीयें।

अजय कुमार, उन्नाव।

प्रश्न : चार वर्ष से कान बहता है तथा दूर की नजर कमजोर होती जा रही है।

उत्तर : सप्तामृत लोह तीस ग्राम साठ मात्रा में बनाएं। एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें। सारिवादि वटी एक वटी आरोग्यवर्धनी वटी, एक वटी, दोपहर रात-पानी से लें।

उषा, भिंड।

प्रश्न : आयु इक्कीस वर्ष। तीन वर्ष से मिर्गी रोग से परेशान हूं।

उत्तर : वात्तकुलातंक रस छः ग्राम अस्सी मात्रा बनाएं। सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें। सारस्वतारिष्ट दो चम्मच, अश्वगंधारिष्ट दो-चम्मच भोजन बाद पीयें।

प्रीतम सिंह, बरेली।

प्रश्न : मेरी माताजी की उम्र साठ वर्ष है। लगातार बलगम तर थूक आता रहता है। हमेशा थूकती रहती हैं। प्रभावशाली दवा लिखें।

उत्तर : च्यवन प्राश अवलेह एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें। द्राक्षारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें।

कविराज वेद व्रत शर्मा
बी-५७ कृष्णानगर दिल्ली।

नाम..... आयु.....

रोग के लक्षण: ..... कब से है .....

अब तक क्या इलाज किया

वैद्य की सलाह

द्वारा— संपादक —'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, नयी दिल्ली—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ. नगेन्द्र : आज

अक्लांत साहित्य साधक डॉ. नगेन्द्र

● नरेन्द्र कोहली

बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी डॉ. नगेन्द्र २२ मार्च १९९० ई. को अपने जीवन के पचहत्तर वर्ष पूरे कर, छहत्तरवें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। डॉ. नगेन्द्र का प्रथम और सबसे महत्त्वपूर्ण परिचय, उनके साहित्यकार का परिचय ही है। उन्होंने अपना साहित्यिक जीवन काव्य-सृजन से आरंभ किया था। उनकी कविताओं के दो संकलन— 'वनबाला' तथा 'छंदमयी'— प्रकाशित भी हुए थे। हिंदी तथा अंगरेजी में एम. ए. करने के पश्चात डॉ. नगेन्द्र शोध-कार्य की ओर प्रवृत्त हुए। शोध-कार्य के संदर्भ में, भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य शास्त्र से उनका घनिष्ठ संपर्क हुआ; और वे क्रमशः उसमें गहरे पैठते गये। इससे उनका काव्य-सृजन क्षीण हो गया, किंतु हिंदी में, मौलिक चिंतन से संपन्न, एक सृजनशील आलोचक का प्रादुर्भाव हुआ।

आलोचक नगेन्द्र क्रमशः शास्त्र की ओर अग्रसर होते गये और उनकी प्रखर बौद्धिकता ने हिंदी में, भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र के मानक ग्रंथ प्रस्तुत किये। उनकी दृष्टि व्यावहारिक आलोचना से आगे बढ़कर, शास्त्र में लीन हो गयी। इससे व्यावहारिक आलोचना की हानि अवश्य हुई; किंतु शास्त्र के बिना आलोचना का न तो आधार बन पाता है; और न वह स्तरीय आलोचना हो पाती है। डॉ. नगेन्द्र ने वस्तुतः हिंदी आलोचना तथा हिंदी काव्यशास्त्र के स्तर को उच्चता ही नहीं, श्रेष्ठता प्रदान की।

गुणवत्ता के प्रति सजग उनकी प्रतिभा ने उन्हें संपादन की ओर प्रवृत्त किया। उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा तथा प्रखर बौद्धिकता ने संयुक्त रूप से जब संपादन-कर्म को अपने हाथ में लिया, अथवा संपादन-नेतृत्व प्रदान किया

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक अंधड़ों के इस युग में विद्वानों को उनका श्रेय प्राप्त हो सके, ऐसा कोई मार्ग हमारा समाज अभी खोज नहीं पाया है !

डॉ. नगेन्द्र : युवावस्था का एक चित्र

हिंदी वाङ्मय को अनेक उच्च कोटि के ग्रंथ ...हुए।

...कालीन भारतीय-परिदृश्य की ...कताओं को देखते हुए, डॉ. नगेन्द्र ने ...में भी अनेक ग्रंथ प्रस्तुत किये। उनके ...ग्रंथों का तो अंगरेजी में अनुवाद हुआ ही ...अंगरेजी में अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का ...भी किया है।

डॉ. नगेन्द्र व्यवसाय से अध्यापक रहे हैं। ...अध्यापक रूप ने एक ओर जहां उनके ...चक' को अपनी बात साफ करने तथा ...करने का अवसर दिया; वहीं साहित्य ...एवं परख का अपने छात्रों में प्रसार ...किया। वस्तुतः एक अच्छे अध्यापक में ...विद्यार्थी, अनुसंधित्सु, सहृदय, आलोचक, ...कार, सर्जक-साहित्यकार तथा प्रशासक ...सम्मिश्रण होता है। डॉ. नगेन्द्र ने अपने ...-कर्म को जिस श्रेष्ठता तथा गंभीरता ...किया है— उसका प्रमाण, उनके शिष्यों की ...पीढ़ियां हैं। उनके शिष्यों का कहना है ...डॉ. नगेन्द्र साहित्य का ज्ञान और समझ भी ...और परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने की क्षमता भी। उनके व्याख्यान, न साधारण छात्रों के सिर के ऊपर से गुजर जानेवाले अबोधगम्य व्याख्यान थे, न मेघावी छात्रों के लिए कम महत्त्वपूर्ण तथा अनुपयोगी। वे हर कोटि के छात्र के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण हुआ करते थे।

समाज तथा साहित्य के प्रति योगदान के लिए सरकार और समाज ने उनका सम्मान करते हुए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार (१९६४), पद्मभूषण (१९८३), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान सम्मान (१९८७), मानद उपाधियां (डी. लिट्.-१९८०), साहित्य वाचस्पति इत्यादि अवश्य दी हैं; किंतु सृजन, आलोचना, शास्त्रकर्म, अध्यापन, संपादन तथा प्रशासन के क्षेत्रों में, उत्कृष्टता तथा श्रेष्ठता स्थापित करने वाले इस क्लांतिहीन साधक को समाज ने उसका प्राप्य दिया हो— यह स्वीकार करना कठिन है। हमने अभी उनका श्रेय उन्हें नहीं दिया है। राजनीतिक अंधड़ें के इस युग में विद्वानों को उनका श्रेय प्राप्त हो सके— ऐसा कोई मार्ग, हमारा समाज अभी खोज नहीं पाया है।

—१७५, वैशाली, दिल्ली-३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक समाचार

मानस संगम की रजत जयंती समारोह कानपुर में इलाहाबाद के मुख्य न्यायाधीश के. सी. अग्रवाल 'सुमित्रा' पुस्तक का विमोचन करते हुए।

—मोहन अवस्थी

हाइकु कविता पर गोष्ठी

'भारतीय हाइकु क्लब' के तत्वावधान एवं डॉ. सत्य भूषण वर्मा के संयोजन में हाइकु कविता पर केंद्रित एक विचार गोष्ठी का आयोजन विगत १७ फरवरी को जवाहरलाल नेहरू वि.वि., नयी दिल्ली के रसियन स्टडीज परिसर में किया गया। इस अवसर पर श्री वी.के. साहनी द्वारा निर्मित हाइकु पर पहली वीडियो फिल्म भी दिखायी गयी। गोष्ठी के दूसरे चरण हाइकु संकलन 'हाइकु-१९८९' पर चर्चा हुई, जिसमें सर्वश्री देवेन्द्र सत्यार्थी, डॉ. मोतीलाल जोतवाणी, डॉ. सत्यपाल चुघ, डॉ. कमल किशोर गोयनका, डॉ. राज बुद्धिराजा, डॉ. वेदज्ञ आर्य तथा श्री राधेश्याम (रुड़की) ने भाग लिया। ज.ने.वि.वि. में जापानी भाषा विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर सत्यभूषण वर्मा ने भारतीय भाषाओं में हाइकु के सृजन के संबंध में अद्यावधिक जानकारी दी।

—कमलेश भट्ट 'कमल'

उपराष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा अशोक लव की पुस्तक, 'हिंदी के प्रतिनिधि साहित्यकारों से साक्षात्कार' का लोकार्पण करते हुए

भोपाल में मार्च '८७ के गैस त्रासदी के शिकार ४८ नन्हें बच्चों की देख-रेख में लगी संस्था, 'अरुणोदय आश्रय' ने नन्ही पौध के उत्थान के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये हैं। उनकी स्कूली शिक्षा के अलावा संपूर्ण विकास का कार्य संस्था ने अपने हाथों में लिया हुआ है—

—डॉ. विपुल

इंडो-नार्विजन कल्चरल फोरम के तत्वावधान में संत हाकलवर्ड गिरजाघर ओसलो में अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव संपन्न हुआ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

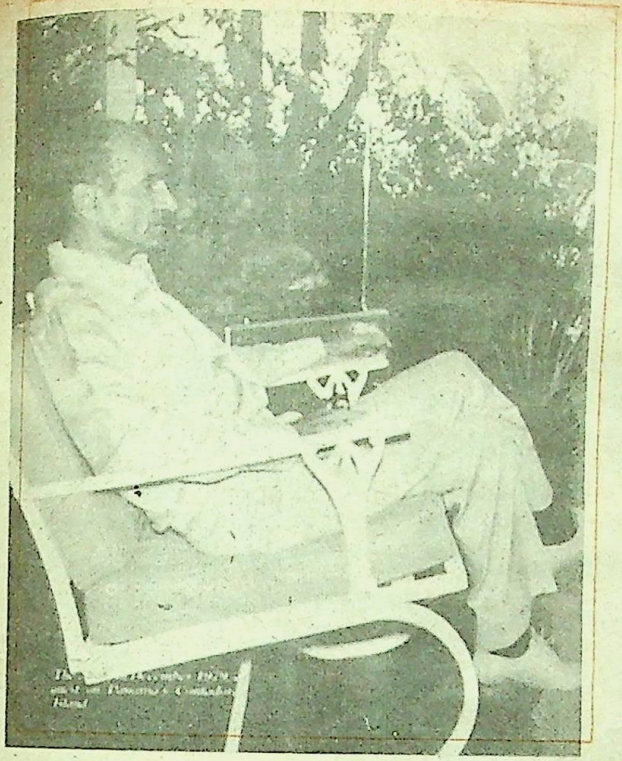

शाह के अंतिम दिन

● विलियम शॉक्रास

ईरान के शाह को अपने निर्वासित जीवन में ही इस रहस्य का पता चला कि मैं कैंसर की प्राणघातक बीमारी के चंगुल में हूं। तब उनकी राजनीतिक शरण की खोज अच्छे इलाज की खोज में बदल गयी। लेकिन विडंबना यह है कि धनी और शक्तिशाली लोगों को अकसर बढ़िया इलाज नहीं मिलता। पेश है विलियम शॉक्रास की पुस्तक, 'दि शाहाज लास्ट राइड' का सार संक्षेप। एक समाप्त होते राज वंश की वेदना और पीड़ा का मार्मिक चित्रण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी १९८० के अंत की बात है एक दिन पनामा में अमरीका के राजदूत रंबलर मास की टेलीफोन की घंटी बजी । दूसरी ओर थे रॉबर्ट आरमाओ । ईरान के निर्वासित और रोगी शाह के यहां पश्चिमी देशों के मुख्य प्रतिनिधि, ईरान के शाह इन दिनों अपनी अंतिम दुखद यात्रा के दौरान पनामा की सरकार के मेहमान थे । रॉबर्ट आरमाओ ने कहा, ''मैं तुम्हें सावधान करना चाहता हूं । वे लोग शाह को ले गये हैं । मैं सोचता हूं उनका अपहरण कर लिया गया है ।''

''हे भगवान ! अब क्या होगा ?'' मॉस सोचने लगा । पिछले कुछ सप्ताहों से इस तरह की अफवाहें थी कि पनामा के सैनिक तानाशाह ओमर तोरिजास ईरान के शाह मुहम्मद रजा शाह पहलवी को देश से बाहर निकालना चाहते हैं । यह कहा जा रहा था कि शाह को अमरीकी दूतावास के बंधकों के बदले अयातुल्ला खोमैनी को सौंप दिया जाएगा । तेहरान के अमरीकी दूतावास में बंद अमरीकी बंधकों को अब तीसरा महीना पूरा होने को था । शाह आशंकित थे, उनके कुछ सहयोगी चिंतित थे और मॉस को लगा कि आरमाओ को हिस्टीरिया का दौरा पड़ा है ।

आरमाओ ही नहीं, 'वाइट हाउस' सहित कुछ अन्य लोगों को भी परेशानी थी । इन लोगों को तोरिजास के इरादों पर गंभीर संदेह था । वह शराबी था और उसे मादक द्रव्य लेने की लत थी । राष्ट्रपति कार्टर के सुरक्षा सलाहकार जिगन्यू ब्रेजिंसकी को चिंता थी कि अमरीकी बंधकों को रिहा करने के वचन के बदले में कहीं तोरिजास ईरानियों को शाह को न सौंप दे ।

एम्बलर मॉस को ऐसा कोई डर नहीं था । उन्हें विश्वास था कि तोरिजास पर भरोसा किया जा सकता है । लेकिन आशंका और डर छूत की बीमारी की तरह है । जब आरमाओ ने उन्हें बताया कि शाह को अकेले ले जाया गया है, उन्हें लगा कि उनके पैर कमजोर हो गये हैं । उन्होंने पूछा, ''तुम कहना क्या चाहते हो ?'' आरमाओ ने बताया, ''वह कल सवेरे किसी बड़ी इमारत, को देखने जाने वाले थे ।''

''हां'' मॉस ने कहा ।

''कर्नल नोरेगा के आदमी आये । उन्होंने कहा कि रजा शाह को रात पनामा शहर में बितानी है और वहीं से तड़के रवाना होना है ।'' मॉस अपने माथे का पसीना पोंछने लगा । पनामावासी चाहते थे कि शाह अपनी पूंजी पनामा में लगाएं । आरमाओ का विचार था कि तोरीजास ने शाह को इसीलिए पनामा बुलाया था । उसकी नजर पहलवी वंश की दौलत पर थी । शाह कानटाडोरा द्वीप में रहते थे । शाह और रानी फराह डीबा कुछ इमारतें देखने गये लेकिन एक समस्या थी । शाह और रानी को एक सज्जित आवास की ज़रूरत थी । कोई भी पनामाई करोड़पति यों ही अपना मकान छोड़ने और अपना सामान-फर्नीचर, परदे, चांदी के बरतन भांडे, चीनी मिट्टी के बरतन, शराब के प्याले, तस्वीरें व पेंटिंग— बेचने को तैयार न था । शाह ऐसी आकर्षक कीमत देने को तैयार न थे, जिसे देख कोई भी पनामाई तैयार हो जाए ।

शाह कानटाडोरा हवाई पट्टी से कुछ ही मिनट की दूरी पर थे । हवाई पट्टी से पनामा सिटी की उड़ान में कुछ मिनट और लगते थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनामा में हर आदमी की पत्नी के अलावा एक प्रेमिका होती है । शाह ने कहा कि मैं भी पनामा के इस जीवन को देखना चाहूंगा । इसलिए नेशनल गार्ड ने पनामा होटल में एक सूट बुक किया और एक युवती को भोजन पर बुलाया ।

ईरान में आयातुल्ला खुमैनी के नेतृत्व में जनता पर भारी जुल्म किये गये । शाह की मृत्यु के दो महीने बाद ईरान और इराक में युद्ध शुरू हो गया । शाह ने इस युद्ध को टाल दिया था ।

''क्या किसी को थोड़ी-बहुत तफरीह करने का अधिकार नहीं है ?

पनामा के राष्ट्रपति ने पूछा, ''साफ-साफ बताओ । इशारों में बात मत करो ।''

अमरीका के राजदूत ने कहा, ''राष्ट्रपति रोयो के धैर्य ने जवाब दे दिया ।''

उन्होंने कहा, ''इतने नादान न बनो । मैं एक औरत की बात कर रहा हूं ।''

मॉस को लगा कि वह अपनी कुरसी से गिर पड़ेगा । वह चिल्लाया, ''क्या? शाह ।''

''हां'' ।

''हे भगवान, एरिसटाइडेस, भगवान का शुक्र है'' मॉस ने कहा । उसे आश्चर्य हुआ । उसका बोझ हट गया । उसने आरमाओ को टेलीफोन किया और कहा ''बाब देखो । मैं तुम्हें सब कुछ नहीं बता सकता हूं क्योंकि यह खुली लाइन है । लेकिन मैं जानता हूं कि शाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक-ठाक हैं । मैं राजदूत के रूप में तुम्हें भरोसा दिलाता हूं । किसी किस्म की कोई समस्या नहीं है ।

बाद में नोरिएगा ने बताया कि शाह के नगर में रात बिताने के लिए वह जिम्मेदार था । उसने दावा किया कि एक दिन बातचीत में शाह ने बताया कि वह द्वीप के जीवन से उब गये हैं । नोरिएगा ने शाह को लेटिन अमरीका के वांकों के जीवन के बारे में बताया । पनामा में हर आदमी की पत्नी के अलावा एक प्रेमिका होती है । शाह ने कहा कि मैं भी पनामा के इस जीवन को देखना चाहूंगा ।

इसलिए नेशनल गार्ड ने पनामा होटल में एक 'सूट' बुक किया और एक युवती को भोजन पर बुलाया । नोरिएगा का दावा था कि वह वैश्या नहीं थी किसी भले घर की महिला थी । नेशनल गार्ड शाह को सीधे होटल में ले गये । शाह ने गार्ड और उस औरत के साथ भोजन किया और फिर वह शयन कक्ष में चले गये ।

शाह के अंतिम जीवनवृत्त में इस घटना का वर्णन दूसरे ढंग से इस प्रकार है, ''एक अवसर पर मैं अमरीकी राजदूत के साथ गुप्त बातचीत के लिए पनामा सिटी गया । राजदूत का कहना था कि राष्ट्रपति कार्टर ने मेरे लिए संदेश भेजा है । मेरे सलाहकार रॉबर्ट आरमाओ मेरे साथ आना चाहते थे, लेकिन पनामा के अधिकारियों ने उन्हें आने नहीं दिया ।''

अगर एंबलर मॉस तेहरान में रहे होते तो उन्हें शाह की इन रंगीन रातों की कहानी सुनकर आश्चर्य नहीं होता । राजदरबार में केवल सेक्स की चर्चा होती थी । शाह की ताजा पसंद कौन है । शाह की जुड़वां बहन राजकुमारी अशरफ के बारें में अनेक सनसनीखेज गप्पें उड़ती रहती थीं ।

निर्वासन के दौरान शाह के पास अशरफ की टक्कर का और कोई प्रचारक न था । वह एक सुंदर तूफानी महिला थी । वह पहलवी राजवंश की बहुत ही शक्तिशाली और विवादास्पद महिला थी । शाह के निर्वासन के अठारह महीनों के दौरान, उसने कीसिंजर और राकफेलर के साथ मिलकर शाह के पक्ष में अनेक बार हस्तक्षेप किया ।

समकालीन तानाशाही में आम तौर पर एक चरित्र ऐसा होता है, जिसे समाचार पत्र 'ड्रेगन लेडी' कहते हैं । वह हमेशा तानाशाह की पत्नी अथवा नजदीकी रिश्तेदार होती है । ईरान में 'ड्रेगन लेडी' अशरफ थी । वह स्वयं को शाह की किसी पत्नी से शाह के नजदीक समझती थी । वह बेहद दिलफेंक थी । यह आरोप लगाया जाता था कि वह मादक पदार्थों की तस्करी में शामिल थी । उसने अपने तरह-तरह के व्यापार से करोड़ों डालर कमाये थे ।

लोग अशरफ से डरते थे, उससे नफरत करते थे और उसकी तारीफ करते थे । लेकिन कोई उसकी उपेक्षा नहीं कर सकता था ।

ईरानी कहते अशरफ और उसके भाई के 'जीन' आपस में बदल गये । अशरफ को लड़का और ईरान का शाह होना चाहिए था । अशरफ भी यह मानती थी कि वह अपने भाई से अधिक मजबूत और जिद्दी है । ''मुझे हमेशा लगता था कि मुझे उसकी रक्षा करनी है । जब मैं बहुत छोटी थी तब भी उसे नहीं छोड़ती थी ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशरफ अपने भाई के जन्म के कुछ घंटों बाद पैदा हुई । लोगों को राजकुमार के जन्म पर खुशी हुई थी । अशरफ भी जल्दी ही यह समझ गयी । "यह कहना कि मैं अनचाही थी कठोर लग सकता है लेकिन बिलकुल गलत नहीं है ।" उसने आत्मकथा के पहले पृष्ठ पर लिखा, "मैंने बहुत जल्द महसूस कर लिया कि मैं बेकार हूं । मुझे अपने लिए जगह बनानी होगी । बचपन में लोग मुझे देखते भी नहीं थे ।"

अशरफ को अपने भाई से बेहद प्यार था । अशरफ के एक प्रेमी ने बाद में लिखा "उसका भाई उसकी आंखों का तारा था, उसकी जान था, और उसकी नसों में बहनेवाला खून था ।" जब रजा शाह को पढ़ाई के लिए स्विट्जरलैंड भेजा गया तब अशरफ को ऐसा लगा, "मानो मुझे अपने एक हिस्से से जुदा कर दिया गया हो ।"

अशरफ का पहला विवाह विफल रहा । वह काम-क्रीड़ा की दृष्टि से इतनी अनजान थी और अपने पति से इतनी घृणा करती थी कि उसके साथ सोने से पहले मुझे 'ट्रेंक्वेलाइजर' लेनी पड़ती थी । अशरफ ने उसे तलाक दे दिया और किसी अन्य के साथ प्रेम करने लगी । लेकिन रजाशाह को यह आदमी पसंद न था और उसने विवाह की अनुमति नहीं दी । बाद में अशरफ ने दावा किया कि वह इसके लिए अपने भाई की आभारी है । क्योंकि मैंने यह समझ लिया कि 'मैं कोई ऐसा काम नहीं कर सकती जिससे मैं अपने भाई से अलग-थलग पड़ जाऊं ।'

लगभग इस समय, द्वितीय महायुद्ध अंत का समय व अशरफ की रंगीन जिंदगी के

अशरफ

अनेक चर्चे थे । उसके व्यक्तिगत जीवन के बारे में अनेक तरह की अटकलें लगायी जाने लगीं । उसके भाई ने सुझाव दिया कि अफवाहों को समाप्त करने के लिए वह दूसरा पति चुन ले । इसलिए अशरफ ने इजिप्ट के अहमद शफीक से विवाह कर लिया । लेकिन ये चर्चाएं जारी रहीं ।

दूसरे महायुद्ध के बाद लोग उसे 'ब्लैक पैंथर' कहने लगे । युद्ध के बाद जब सोवियत संघ ने ईरान के अजरबेजान प्रांत से हटना नामंजूर कर दिया वह स्टालिन से भेंट करने गयी । अशरफ के अनुसार उसने अपने तर्कों और बुद्धि से स्टालिन को बहुत प्रभावित किया । उनकी दस मिनट की बैठक ढाई घंटे तक चली । स्टालिन ने उसके देश प्रेम की प्रशंसा की और उसे सच्चा देश भक्त कहा । स्टालिन ने उससे कहा कि तुम अपने भाई से कह देना अगर उसके पास तुम्हारी तरह के दस लोग हों तो उसे चिंता करने की जरूरत नहीं है । उसके बाद स्टालिन ने अशरफ को एक बढ़िया 'सेबल' कोट दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह की तारीफ से फूलकर वह राजनीति में और हस्तक्षेप करने लगी । १९५१ की अमरीकी दूतावास की एक रिपोर्ट में कहा गया है, "उसका उद्देश्य अनुचित और उसके कार्य अकसर फूहड़ रहे हैं । लेकिन उसमें फैसला करने की नैसर्गिक शक्ति है, जो शाह के घनिष्ठ सहयोगियों में नहीं है । उसका जोरदार व्यक्तित्व, कार्रवाई करने का उसका प्रचंड आग्रह उसके भाई को निष्क्रियता छोड़ने के लिए बाध्य कर सकता है ।"

जैसे-जैसे पचास और साठ के दशक में शाह अधिक शक्तिशाली और आत्मविश्वास से परिपूर्ण होते गये उन्हें अशरफ को देश में अधिक राजनीतिक शक्ति देना अनुचित लगने लगा । अतः उसकी शक्ति एवं क्षमता का उपयोग अन्य क्षेत्रों में किया गया— जैसे कि महिलाओं के अधिकार और संयुक्त राष्ट्र भी । शाह ने १९७० में उसे चीन भेजा, यह एक सफल यात्रा रही और इसके परिणामस्वरूप ईरान और चीन ने फिर पूरे राजनयिक संबंध स्थापित किये । १९७१ में जब चीन को संयुक्त राष्ट्र में अपना स्थान मिला, तो चीनी प्रतिनिधि मंडल ने पहला निमंत्रण जो स्वीकार किया वह था संयुक्त राष्ट्र में ईरान के राजदूत के यहां राजकुमारी अशरफ के साथ दोपहर का भोजन ।

चीन के बाद राजकुमारी अशरफ ने भारत, पाकिस्तान, उत्तर कोरिया और अनेक अफरीकी देशों की यात्रा की । ७० के दशक में संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन के दौरान अशरफ अपने देश के प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व करती थी । उसने बड़ी योग्यता के साथ इन दायित्वों का निर्वाह किया । लेकिन इसी के साथ वह ईरान में उन सभी वस्तुओं का प्रतीक बन गई जिनके कारण ईरान की जनता पहलवी राजवंश से घृणा करती थी ।

१९७६ की एक सी.आई.ए. रिपोर्ट में कहा गया है, 'वित्तीय भ्रष्टाचार और सफलतापूर्वक युवकों का पीछा करने में राजकुमारी की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली है ।' इन प्रेमियों के साथ उसके संबंध मित्रतापूर्वक समाप्त हो जाते थे । राजकुमारी के प्रेमी बनने के बाद इनमें से कुछ सरकारी सेवा में पदोन्नति भी पाते थे । सी.आई.ए. रिपोर्ट में कहा गया है कि अशरफ के व्यापारिक उद्यम अगर पूरी तरह गैर कानूनी नहीं तो उसकी सीमा पर थे । अशरफ ने हमेशा इस बात का खंडन किया कि उसने कभी भी कोई गलत काम किया है ।

अशरफ अकेले यह सब नहीं कर रही थी । १९७० में ईरान व्यापारियों और औरतों के लिए एक नयी दुनिया बन गया । दलाली, रिश्वत, एजेंटों की फीस, राजकुमारी और जन संपर्क अधिकारियों के बीच गुप्त समझौते १००-१०० डालर के नोटों से भरे, विमानों से हाथों-हाथ लाये गये । सेमसो नाइट 'ब्रीफकेस' कैरेबियन और लीचरेनस्टीन पोस्ट बाक्स पतोंवाली कंपनियां, शाह के साथ निजी भेंट में किये गये ऑर्डर और उन्हें रद्द करनेवाले ऑर्डर— इन सबसे ईरान का व्यापार चल रहा था ।

हमेशा ऐसा नहीं था । साठ के दशक में जब शाह की श्वेत क्रांति से साक्षरता बढ़ रही थी, महिलाओं की स्थिति सुधर रही थी, ग्रामीण गरीबी दूर हो रही थी तो बढ़ते हुए मध्य वर्ग लोगों में आशा की भावना पैदा हो रही थी । इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुर्यों के कारण पश्चिमी देशों में भी शाह की बहुत अच्छी छवि थी । लेकिन सत्तर के दशक में शाह के मित्रों ने उन्हें खाड़ी का पुलिसमैन बना दिया । तेल से हुई बढ़ी आय से शाह अपनी सैनिक क्षमता बढ़ाने लगे । ईरान में असंतोष फैलने लगा । तेल की आय में महंगाई के दबाव में भ्रष्टाचार और दमन दोनों बढ़ने लगे । अनेक सुशिक्षित युवक जो सौदे तय कराते थे, वास्तव में शाह की गुप्त पुलिस 'सवाक' के एजेंट थे ।

'सवाक' का मुख्य उद्देश्य गुप्त सूचना एकत्र करना और भय पैदा करना था । अगर कोई आदमी 'सवाक' के चंगुल में फंस जाता था तो फिर उसका मुक्त होना असंभव था । 'सवाक' सभी राजनीतिक अपराधों की जांच करनेवाली और आरोप लगानेवाली एकमात्र एजेंसी थी । वह लोगों को गायब करा देती थी । पुराने कैदियों की गवाही के अनुसार 'सवाक' के यातना देने के तरीकों में शामिल थे चाबुक लगाना और पीटना, बिजली के झटके, नाखून और दांत निकालना, मलाशय में उबलता पानी पहुंचा देना, अंड ग्रंथियों से भारी वजन लटका देना, बंदियों को किसी शैय्या से बांधकर फिर उसे धीरे-धीरे गरम करना, गुदा में टूटी हुई बोतलें डाल देना और बलात्कार ।

'सवाक' केवल शाह के प्रति जवाबदेह था । सत्तर के दशक के मध्य तक अभिजात वर्ग के लोग भी 'सवाक' से डरने लगे । भय और ढोंग के इस वातावरण में कुछ लोगों की चांदी होने लगी । शाह के दोस्तों ने अपने आपको विभिन्न विदेशी निगमों का 'एजेंट' नियुक्त करा लिया । उनका कहना था कि उनकी

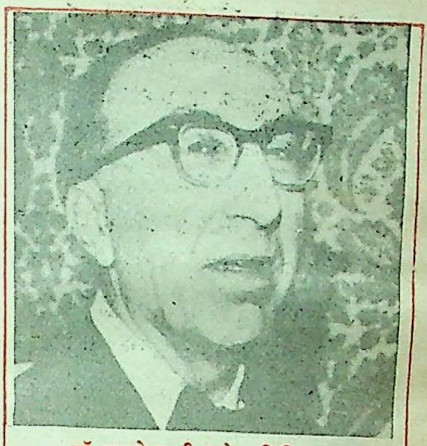

डॉ. माइकेल डी. बके (चिकित्सक)

सहायता के बिना कुछ भी नहीं हो सकता, कोई ठेके नहीं मिल सकते । पहलवी वंश के एक व्यक्ति ने खुलेआम राष्ट्रीय संग्रहालय से कुछ कला कृतियों की चोरी की और अपने लाभ के लिए उनका निर्यात कर दिया । शाह ने सत्तर के दशक में भ्रष्टाचार रोकने की आधे दिल से कोशिश की, लेकिन तब तक बहुत देर हो गयी थी ।

महत्त्वाकांक्षी ईरानी केवल शाह के एजेंट बन सकते थे । उससे राजदरबार का भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया । लोग हर तरीके से दौलत कमाना चाहते थे । उसका प्रदर्शन करना चाहते थे ।

तेहरान में भड़ुआगिरी एक कला बन गया था । व्यापार और सेक्स एक-दूसरे से जुड़ गये थे । शाह के अनेक सलाहकार उन्हें लड़कियां भेजते थे ।

इस तरह की कहानियां अनेक हैं । शाह ने एक मंत्री की लड़की के साथ हेलीकॉप्टर में इस्फहान के ऊपर उड़ते हुए अपनी काम वासना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरी करने की जिद की । शाह का एक प्रेम-पुत्र फ्रांस में था, शाह की एक प्रेमिका ने अपने कपड़ों का बिल पेरिस में ईरान के दूतावास को भेज दिया, शाह रानी के सामने बेशर्मी के साथ अपनी रंगरेलियों की चर्चा करते थे ।

यूरोपीय लड़कियों में शाह को बड़े मुंहवाली स्वर्णाभकेशी पसंद थीं । किसी समय लुफ़्तहांसा की विमान परिचारिकाएं पसंद की जाती थीं । वर्षों तक पेरिस की मैडम क्लाड शाह को लड़कियां भेजती रही ।

शाह को लड़कियों की जरूरत अपने को तनाव मुक्त रखने और संगत के लिए होती थी । कहा जाता था कि उनकी दिलचस्पी 'सेक्स' में विशेष नहीं थी । अधिकांश लड़कियों ने पाया कि शाह एक दुःखी व्यक्ति थे ।

फरवरी १९८० तक, जब शाह ने कर्नल नोरिएगा के सुझाव पर पनामा सिटी में रात बितायी, तब उन्हें ईरान छोड़े एक वर्ष हो गया था । वह कैंसर से गंभीर रूप से पीड़ित थे । यद्यपि डॉक्टरों के आठ दल उनका इलाज कर रहे थे तथापि, अत्यधिक गोपनीयता के कारण इलाज अच्छा नहीं हो रहा था ।

शाह की बीमारी का इलाज करनेवाले पहले डॉक्टर थे जीन वरनॉर्ड और जार्ज फ्लेंड्रिन । ये दोनों फ्रांसीसी डॉक्टर रक्त रोगों के विशेषज्ञ थे । उन्हें १९७४ के वसंत में तेहरान बुलाया गया । शाह ने इन डॉक्टरों को बताया कि मेरी बांयीं पसली के नीचे सूजन हो जाती है । कभी-कभी यह बढ़ जाती है और फिर ठीक हो जाती है ।

डॉक्टरों ने शाह से बीमारी का पूरा हाल पूछा । उनकी अस्थि मज्जा और रक्त के कुछ नमूने एकत्र किये । उन्होंने शाह के निजी डॉक्टर अकुल अदाली को बताया कि शाह को पुराना लसीका कोशिका ल्यूकेमिया है । डॉक्टर अदाली ने डॉक्टरों से कहा कि वे शाह के सामने कैंसर अथवा ल्यूकेमिया शब्द का उल्लेख न करें । इसलिए डॉक्टरों ने शाह से कहा कि उन्हें वालडेन ट्राम्स की बीमारी है, जिसके लिए अभी कोई इलाज की जरूरत नहीं है बाद में बरनॉर्ड और फ्लेनड्रिन की गहराई से जांच न करने के लिए आलोचना की गयी, किन्तु बिना व्यापक जांच और एक्सरे के डॉक्टर कुछ नहीं कर सकते थे । शाह अपनी बीमारी किसी को प्रकट नहीं करना चाहते थे ।

उन्हें फ्रांसीसी डॉक्टरों पर भरोसा था । उनका अनुमान था ब्रिटिश डॉक्टर उनकी बीमारी से फायदा उठाएंगे और अमरीकी डॉक्टर उसकी सूचना फौरन अमरीकी विदेश मंत्री और 'सी.आई.ए' के निदेशक को दे देंगे । अगर वाशिंगटन को पता लग गया तो वह उसका समर्थन बंद कर देंगे । और शाह की इस आशंका में कुछ सच्चाई थी । इसलिए अगले चार वर्षों तक हर महीने डॉ. फ्लेनड्रिन गुप्त रूप से तेहरान की यात्रा करते रहे ।

फ्लेनड्रिन और वरनॉर्ड ने १९७७ में फैसला किया कि अब रानी को बीमारी के बारे में बता दिया जाना चाहिए । उन्होंने रानी को अधिक साफ-साफ बताया और कैंसर शब्द का इस्तेमाल किया । रानी को लगा कि उसके पति को अपनी बीमारी के बारे में और जानना चाहिए । लेकिन फिर भी शाह के सामने कैंसर शब्द का उच्चारण नहीं किया गया । तथापि शाह समझ गये कि उनकी बीमारी गंभीर है ।

अप्रैल १९७९ के अंत में शाह को अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरदन में एक सूजी हुई ग्रंथि दिखायी दी। इससे फ्रेनड्रिन को चिंता हुई। वह महामाज पहुंचा, जहां शाह को कुछ समय के लिए रुकने की अनुमति मिली थी। और उसने शाह की अस्थि मज्जा का एक नमूना लिया। पेरिस में ऊतकों के परीक्षण से उसमें बहुत असामान्य लसिका कोशिकाएं मिलीं। फ्रेनड्रिन ने अधिक गहन केमोथैरेपी करना शुरू किया। यद्यपि शाह की गुप्त रूप से चिकित्सा कराने की इच्छा के कारण फ्रांसीसी डॉक्टर वह इलाज नहीं कर सके जो वह करना चाहते थे। बाद में सितंबर में जब शाह मेक्सिको में थे, उनकी दशा गिरने लगी। शाह के अमरीकी सलाहकार चिंतित हो गये। रॉबर्ट आरमाओ ने राकफेलर कार्यालय के जोसेफ रीड से बात की और रीड ने ऊष्ण कटिबंधी बीमारियों के विशेषज्ञ डॉ. बेन कीन को बुलाया। कीन ने सुझाव दिया कि शाह को पीटर स्मिथ बताकर इलाज किया जाए।

कुछ वर्ष पहले कीन को स्वीडन के एक प्रमुख उद्योगपति मार्कस वालेनवर्ग का इलाज करने को बुलाया गया था। उनका फेफड़ा भयंकर बीमारी से दूषित हो गया था। जब कीन ने उनकी जांच की वह मौत के सन्निकट थे। कीन ने स्वीडन के डॉक्टरों से कहा "इस व्यक्ति का इलाज इसका असली नाम बताकर नहीं किया जा सकता। अगर इसे बचाना है तो इसका इलाज एक मामूली आदमी की हैसियत से, पीटर स्मिथ के रूप में किया जा सकता है।" परिचर्या के लिए रखे गये आशंकित डॉक्टरों के दल इसका इलाज नहीं कर सकते। इसका इलाज सर्वोत्तम डॉक्टरों के दल को अस्पताल में करना चाहिए। वीलेनवर्ग को

डॉ. जॉर्ज फ्रेंडरिन (चिकित्सक)

पीटर स्मिथ के नाम से अस्पताल में भरती किया गया। इलाज सफल रहा।

रीड ने कहा कि अब एक नया 'पीटर स्मिथ' है मेक्सिको में ईरान का शाह। वह मलेरिया और पीलिया से पीड़ित हैं। क्या कीन वहां जाने की कृपा करेंगे ?

इस प्रकार एक और 'पीटर स्मिथ' पैदा हो गया। कीन ने एक महत्त्वपूर्ण लेकिन विरोधाभाषी तथ्य की ओर संकेत किया। धनी और शक्तिशाली लोगों को अपने महत्त्व के कारण हमेशा सर्वोत्तम चिकित्सा नहीं मिलती। निजी चिकित्सा व्यवस्था में अकसर इतने अच्छे उपकरण आदि नहीं होते जितने सार्वजनिक अस्पतालों में होते हैं। निजी अस्पतालों में गंभीर बीमारियों का अच्छा इलाज नहीं किया जा सकता। डॉक्टर लोग महत्त्वपूर्ण लोगों का इलाज करते समय खतरा लेना पसंद नहीं करते। शाह का इलाज गुप्त रूप से नहीं किया जा सकता था। इसलिए उन्हें पीटर स्मिथ बनाना जरूरी था। बाद में कीन ने स्वयं कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उन्हें (शाह को) सर्वोत्तम चिकित्सा मिलनी चाहिए थी। वास्तव में उन्हें सबसे खराब चिकित्सा मिली।

जब तक कीन वहां पहुंचा, तब तक शाह पूरी तरह से पीलिया रोग के शिकार हो चुके थे। उनका भार ३० पौंड कम हो गया था। गरदन में बहुत तकलीफ थी और 'गालस्टोन' को निकालने की आवश्यकता थी। डॉ. फ्रेनड्रिन चाहते थे कि शाह की चिकित्सा मेक्सिको में हो परंतु शाह के अमरीकी सलाहकारों के सामने उनकी एक न चली, क्योंकि वे न्यूयार्क में इलाज करवाने के पक्ष में थे। शाह के अमरीका जाने पर तेहरान में अमरीकी दूतावास के कर्मचारियों की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती थी। राष्ट्रपति कार्टर की अनुमति मिलने के पश्चात शाह को २२ अक्तूबर, १९७९ को अत्यंत गोपनीय ढंग से 'ला गारडिया' हवाई अड्डे पर उतारा गया। उन्हें छद्म नाम से न्यूयार्क के एक अस्पताल में भरती किया गया।

अस्पताल में उनके 'गालस्टोन' को तो निकाल दिया गया, परंतु अपने सामान्य आकार से तिगुनी स्पलीन (तिल्ली) को निकाला जाए अथवा नहीं यह निश्चय नहीं हो पाया। डॉक्टरों का मत था कि अत्यंत दुर्बलता के कारण शाह एक और ऑपरेशन नहीं करा सकते हैं। इसी स्पलीन के कारण अंततः शाह का देहांत हुआ। शाह भयंकर रूप से बीमार थे और उनके पास उनकी देखभाल करनेवाला कैंसर विशेषज्ञ नहीं था।

चार नवम्बर १९७९ को सैकड़ों हथियारबंद ईरानियों ने तेहरान स्थित अमरीकी दूतावास को घेर कर उसके ६६ अमरीकियों को बंधक बना लिया और फिरौती के रूप में शाह की वापसी की मांग की। अमरीका के लिए यह एक लज्जाजनक स्थिति थी और अब अमरीका को यह स्पष्ट हो गया था कि शाह का अमरीका से बाहर जाना ही उनके हित में है। शाह के स्वास्थ्य में सुधार की प्रतीक्षा होने लगी और दो दिसंबर को शाह को उनकी पत्नी एवं कुत्तों सहित कड़े सुरक्षा प्रबंध के साथ बहुत ही गुप्त रूप से एनटोनिओं के निकट लाक लैंड हवाई अड्डे पर ले जाया गया। यहां से उन्हें एक एंबुलेंस में एक सैनिक अस्पताल के मनोरोग विभाग में पहुंचा दिया गया। सुरक्षा की दृष्टि से इस स्थान को सर्वोत्तम बताया गया, परंतु शाह की पत्नी ने वहां रहना स्वीकार नहीं किया।

शाह के लिए शरणस्थली के रूप में पनामा को सबसे उपयुक्त देश माना गया, क्योंकि शाह दक्षिण अफरीका नहीं जाना चाहते थे। शाह के पिता को जब ईरान से निकाला गया था, तब उन्होंने जोहान्सबर्ग में आश्रय लिया था और वहीं पर उनका देहांत हुआ था। शाह को पनामा के कोन्टाडोरा टापू पर रखा गया और कार्ल्स गारसिया को उनका चिकित्सक नियुक्त किया गया। वहां शाह का स्वास्थ्य बुरी तरह से गिरने लगा और उनके जीवित रहने की आशा क्षीण होने लगी।

शाह के प्रत्यर्पण (वापसी) के संबंध में ईरानी प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करने के लिए एक प्रतिनिधि मंडल पेरिस भेजा गया। इस प्रतिनिधि मंडल में डॉ. गारसिया को भी शामिल किया गया, जिन्होंने बाद में बताया कि ईरानी प्रतिनिधि मंडल ने अपरोक्ष रूप से उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(शाह को) मौत की नींद सुला देने का सुझाव दिया था । डॉ. गारसिया के अनुसार ईरान प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य का कहना था कि रैबीज को समाप्त करने के लिए कुत्ते को ही मौत के घाट उतार देना सबसे सरल उपाय है । उन्होंने कहा कि यदि शाह ही समाप्त हो जाएं तो बंधकों की समस्या स्वयं समाप्त हो जाएगी ।

ईरानियों का कहना था कि शाह ने उन पर बहुत अत्याचार किए हैं और हजारों ईरानियों को मौत के घाट उतरवाया है । ईरान की संपत्ति लूटी है । ईरानी शाह, किसिंगर और रॉकफेलर ने ईरान को अमरीकी विदेश नीति का एक माध्यम बनाया हुआ था । इनका मत था कि हजारों ईरानियों पर किये गये अत्याचारों के मुकाबले केवल ५३ अमरीकियों को बंधक बनाना एक मामूली-सा अन्याय था ।

ईरानियों ने बंधकों के विषय में बातचीत करने आये जिमी कार्टर के प्रमुख स्टाफ अधिकारी से साफ कहा कि यदि अमरीका शाह को समाप्त कर दे तो सारी समस्या का हल अपने आप हो जाएगा । उन्होंने कहा कि सी.आई.ए. ने हजारों ईरानियों को मौत के घाट उतारा है, अब शाह पनामा में हैं, बीमार हैं, फलतः शाह को एक इंजेक्शन लगाकर समाप्त किया जा सकता है । अमरीका ने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया ।

इधर पनामा में डॉक्टरों के मध्य तरह-तरह के विचार-विमर्श चल रहे थे । डॉ. कीन ने विश्व प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. माइकेल डीबेके को पनामा बुलाया, जबकि शाह को हृदय की कोई बीमारी नहीं थी । डॉ. डीबेके जब अन्य अमरीकी अधिकारियों के साथ पनामा

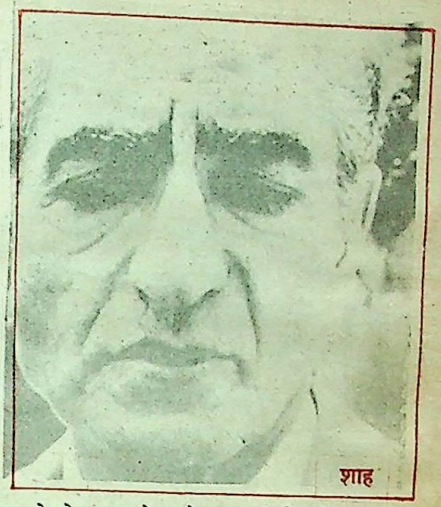

शाह

आये तो सुरक्षा के कड़े उपाय किये गये, जिससे दोनों देशों के मध्य तनाव उत्पन्न हो गया । सुरक्षा के नाम पर डॉक्टर को अस्पताल पहुंचने में विलंब को अमरीका ने पनामा का शाह को समाप्त करने का षडयंत्र माना । जबकि अमरीकियों के व्यवहार से पनामा वाले बहुत नाराज हुए और उन्होंने इसे अमरीका के घमंड की संज्ञा दी । इस प्रकार दोनों के मध्य तनाव की स्थिति बन गयी । पनामा किसी भी स्थिति में नहीं चाहता था कि शाह की मृत्यु उनके देश में हो जबकि ऐसे बहुत से लोग थे जो चाहते थे कि शाह यहीं पर समाप्त हो जाए । ईरानियों ने तो ऐसे डॉक्टरों के लिए पुरस्कार की घोषणा तक की थी जो शाह को समाप्त कर दे । शाह को मारने के लिए दस्ते भेजे गये हैं, ऐसे समाचार भी मिल रहे थे । शाह को सी.आई.ए. वाले ही समाप्त कर देंगे, ऐसी अफवाहें भी जोरों पर थीं । पनामा एवं अमरीका के डॉक्टरों के मध्य तनाव की स्थिति में विचार-विमर्श चलता रहा और शाह के ऑपरेशन में विलंब होता गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब अमरीकी डॉक्टर शाह को पनामा से बाहर ले जाने की बात करने लगे । पनामा में शाह को भी अपना जीवन खतरे में दिखायी देने लगा था ।

जब यह सारा नाटक चल रहा था, तब शाह की पत्नी फराह अपना बहुत-सा समय मिस्र की जेहान सादात के साथ टेलीफोन पर बात करने में बिता रही थी । फोन पर एक बार उसने कहा कि हम बहुत निराश हैं, शाह के ऑपरेशन में तनिक भी विलंब नहीं होना चाहिए । परंतु हम पनामा में ऑपरेशन नहीं कराना चाहते, क्योंकि यहां हमें किसी पर भी विश्वास नहीं रहा । उन्होंने कहा कि मैं हर कीमत पर शाह को पनामा के अस्पताल से बाहर निकालना चाहती हूं ।

श्रीमती सादात ने पूछा, "क्या अमरीकी सरकार तुम्हारी मदद नहीं कर सकती ।"

शाह की पत्नी ने कटुता से उत्तर दिया, "अमरीका सरकार ? इस जीवन के लिए तो उन्होंने पर्याप्त मदद कर दी है ।"

"श्रीमती सादात ने उन्हें मिस्र आकर ऑपरेशन कराने के लिए कहा । बाद में श्री सादात ने उनसे कहा कि ऐसा कह कर उन्होंने ठीक ही किया । पनामा में शाह दंपत्ति पर तरह-तरह से दबाव डाले जा रहे थे । उनका फोन काट दिया गया था— उन्हें बताया गया कि उन्होंने बिल का भुगतान नहीं किया था । फिर तोरिजास से फराह को संदेश भेजा कि रानी को उसके साथ दूसरे द्वीपों में पुरानी इमारतों को देखने जाना चाहिए । फराह ने कहा कि वह शाह के ठीक होने के बाद जाना पसंद करेगी । तोरिजास का कहना कि रानी को अकेले उसके साथ चलना चाहिए । रानी यह सुन आशंकाओं से घिर गयी ।

जिमी कार्टर ने अनवर सादात से शाह के मिस्र पहुंचने पर अपनी चिंता व्यक्त की । सादात ने कहा, "जिमी तुम मिस्र की नहीं अपने बंधकों की चिंता करो ।" शाह के पनामा छोड़ने से पहले ईरान ने उनके प्रत्यर्पण के दस्तावेज पेश किये । लेकिन यह पता लगने पर पनामा के विदेश मंत्री अपने पिछले कमरे के दरवाजे से गायब हो गये । संयोग ऐसा कि उस दिन पनामा के विदेश मंत्रालय में कोई वरिष्ठ अधिकारी नहीं था । ईरानी अधिकारियों ने थक कर वे कागज एक जूनियर अधिकारी को दिये ।

शाह के पनामा छोड़ने के दिन टोरिजान ने आदेश दिया कि रानी के शयन-कक्ष की चादरें न बदली जाएं । मैं उसके साथ तो नहीं सो सका लेकिन मैं उसकी चादरों पर सोऊंगा ।

अंततः शाह को मिस्र लाया गया । २६ मार्च को उनका ऑपरेशन किया गया जबकि दिसम्बर से इसकी आवश्यकता अनुभव की जा रही थी । डॉ. डीबेके ने जब शाह का स्पिलीन बाहर निकाला तो वह सामान्य आकार से दस गुना बड़ा हो चुका था । ऑपरेशन करने में एक घंटा और बीस मिनट का समय लगा । शाह की हालत बहुत खराब थी, परंतु अभी भी डॉक्टरों को थोड़ी-बहुत आशा थी कि शायद वह जीवित रह जाएं । अधिकांश डॉक्टरों का मत था कि शाह के जीवन के दिन बहुत गिने-चुने रह गये हैं ।

इस बीच शाह के मिस्र पहुंचने की समस्त पश्चिम एशिया में प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुई । कट्टरवादी मुसलिम समुदाय प्रदर्शन करने लगे । शाह की मिस्र में उपस्थिति ने इस क्षेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तनावग्रस्त कर दिया था । ऑपरेशन के दस दिन के बाद शाह को अस्पताल से छुट्टी मिल गयी । कुछ दिन उनकी हालत में सुधार होता दिखायी दिया, परंतु फिर उनकी हालत बिगड़ने लगी और राजपरिवार के सदस्यों एवं डॉक्टरों के मध्य शाह के इलाज को लेकर विवाद बढ़ने लगे । लगभग आठ डॉक्टरों एवं विशेषज्ञों के दल शाह के इलाज के विषय में अलग-अलग परामर्श दे रहे थे । इस स्थिति में शाह की पत्नी बहुत ही असमंजस की स्थिति में थी । शाह की हालत निरंतर बिगड़ती जा रही थी और उन्हें वापस अस्पताल में भरती किया गया । डॉ. फ़्लेनडरीन को फिर से पेरिस से बुलाया गया । वह एक फ्रांसिसी डॉक्टरों के दल के साथ काहिरा आये । ३० जून को ऑपरेशन करने पर शाह के पेट में से लगभग डेढ़ लीटर मवाद निकला । इस ऑपरेशन के बाद पूरी जुलाई मास शाह की हालत नाजुक बनी रही । उन्हें खाने, बैठने और चलने-फिरने में अपार कष्ट होने लगा । पेट में निरंतर रक्त स्राव होता रहता था । इस कारण उनके बार-बार ऑपरेशन करने पड़े । शाह ने कभी कोई शिकायत नहीं की । २६ जुलाई को शाह की हालत बहुत खराब हो गयी और डॉक्टरों ने आशाएं छोड़ दीं । शाह को ग्यारह यूनिट खून देने के बाद डॉक्टरों ने आशा छोड़ दी । शाह की बहन राजकुमारी अशरफ ने मन ही मन निर्णय लिया कि उन्हें भी अपना जीवन शाह के साथ ही समाप्त कर देना चाहिए और उन्होंने कमरे में जा कर नींद की गोलियां खा लीं, परंतु नींद नहीं आयी । लगभग पांच बजे वह शाह के कमरे में आयी । तब तक शाह जीवित थे । तभी यकायक मशीन ने काम करना बंद कर दिया । राजकुमारी ने शाह के शरीर से लिपट कर अपने भाई के शरीर के अंग-अंग को चूमा वह बेहोश हो गयी । जब उन्हें होश आया तो उन्होंने पुनः नींद की गोलियां खा कर आत्महत्या करनी चाही, परंतु इन गोलियों का भी मनोवांछित परिणाम

इनके भी बयां जुदा जुदा

उन्हीं लोगों में उठना, बैठना अच्छा लगा हमको
जो अपना जहन, अपनी आंख, अपनी आन रखते हैं ।

—इकबाल उम्र

रूठ जाना तो मुहब्बत की अलामत है मगर,
क्या खबर थी मुझसे वह इतना खफा हो जाएगा ।

—बशीर बद्र

'वसीम' हम भी बिखरने का हौसला करते,
हमें भी होता जो कोई संवारने वाला ।

—वसीम बरेलवी

मुझको जीने का भी हक देते नहीं शहरपनाह,
एक कहीं से जो मेरे कद के बराबर होते ।

—हबीब हाशिमी

हम जहां भी रहे जंगल में रहे,
हमसे रिश्तों की तिजारत न हुई ।

निदा फाज़ली

जब मैं भी वही चाहूं, जब तू भी वही चाहे,
फिर गम का सबब क्या है क्यों रोने को जी चाहे ।

शाज़ तमकंत

बच्चों ही सी फितरत है हम अहले मुहब्बत की,
ज़िद करना, मचल जाना, फिर खुद ही बहल जाना ।

सागर आज़मी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं निकला तो उन्होंने इसे भगवान की मरजी माना जो उन्हें जीवित रखना चाहता था ।

रानी, फराह एवं बच्चे शाह के समीप थे और उन्हें ढाढ़स बंधा रहे थे परंतु शाह ने स्पष्ट कह दिया कि मौत मुझे लेने आ गयी है । २७ जुलाई १९८० को दस बजे के आस-पास शाह इस लोक से विदा हो गये । फराह और उनका परिवार १९८२ के प्रारंभ तक काहिरा में ही रहे । फिर नये शाह रजा मोरक्को चले गये, क्योंकि वह यह दिखाना चाहते थे कि वह अपनी मां से स्वतंत्र हैं । १९८४ में २३ वर्ष की आयु में वह अमरीका चले गये । वहां वह वाशिंगटन के बाहर रहने लगे । निश्चय ही वह अपनी गद्दी प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे । उन्हें सफलता नहीं मिली । १९८६ में ज्ञात हुआ कि उनको अपने पिता की तरह सी.आई.ए. का सहयोग मिल रहा है ।

रानी. फराह अपने तीनों बच्चों फरानाज, अली रजा और लैला के साथ १९८२ में अमरीका चली गयी । बच्चों ने वहीं अपनी शिक्षा पूरी की । शाह की बहन राजकुमारी अशरफ न्यूयार्क और पेरिस में रहने लगी । वह हमेशा शोक के वस्त्रों में रहती थी ।

पनामा के शासक जनरल ओमर टोरिजास, जो शाह को एक हेलिकाप्टर या खूबसूरत सफेद घोड़ा लेकर ईरान जाने की सलाह देते थे एक विमान दुर्घटना में मारे गये । उनका विमान अगस्त १९८१ में एक पहाड़ी से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था ।

ईरान में आयातुल्ला खुमैनी के नेतृत्व में जनता पर भारी जुल्म किये गये । शाह की मृत्यु के दो महीने बाद ईरान और ईराक में युद्ध शुरू हो गया । शाह ने इस युद्ध को टाल दिया था और दोनों देशों के बीच समझौता करा दिया था । अनुमान है कि युद्ध में तीन लाख ईरानियों एवं एक लाख इराकी मारे गये । शाह के शासनकाल में ईरान को ओमन में मार्क्सवादी विद्रोह को कुचलने के अलावा और कोई युद्ध नहीं करना पड़ा था ।

प्रस्तुति—श्री हरि

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. ६७० संतरे, २. मंगल, ३. क. १९८९ के अंत में १६.४ प्रतिशत या १०३६.२२ करोड़ रु. की गिरावट, ख. १९८८ तथा १९८९ के अंतिम शुक्रवार को क्रमशः ६३१३.५२ करोड़ रु. तथा ५२७७.३ करोड़ रु., ४. क. हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में 'संजय पनबिजली परियोजना' (विगत जनवरी में भूतपूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा उद्घाटन), ४० मेगावाट क्षमता की ३ इकाइयां, ख. प्रदूषण तथा पंक जमने की समस्याओं से मुक्त, ५. इंडियन एयरलाइंस की २६ वर्षीया कैप्टेन निवेदिता भसीन (इस वर्ष जनवरी से कार्यभार संभाला), ६. क. शंकर पिल्लै (२६ दिसं. १९८९ को ८७ वर्ष की आयु में निधन), ख. कार्टूनिस्ट के रूप में, ७. क. गुजरात के कच्छ अपतट में (साढ़े ७ हजार घन मीटर प्रतिदिन), ख. कटक (उड़ीसा), ८. क. मालदीव, ख. पाकिस्तान का अब तक का सबसे बड़ा सैनिक अभ्यास (दिसं. '८९), ९. राष्ट्रपति निक्सन, १०. बीकानेर से ३५ कि.मी. दूर देशनोक गांव में करणीमाता का मंदिर, ११. क. कविवर सूरदास, ख. मथुरा, १२. भारतेंदु हरिश्चंद्र, १३ पेस्ट्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान

दिसंबर-९६ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए । सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं । कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं— पाठकों के सुपरिचित कंप्यूटर ज्योतिषी— अजय भाम्बी

गोपाल प्रसाद, नयी दिल्ली

प्रश्न : पत्नी का बर्ताव कब सुधरेगा ? क्या जीवन नरक बना रहेगा ?

उत्तर : आपकी कुंडली में सप्तम् भाव (पत्नी का) दूषित है, जिसके कारण कष्ट है । पत्नी की कुंडली से ही मालूम पड़ेगा कि उनका बर्ताव सुधरेगा या नहीं ।

अशोक कुमार कंसारा, विसनगर

प्रश्न : हमें संतान कब प्राप्त होगी ?

उत्तर : संतान होने की संभावना कम है ।

प्रियंका निगम, जबलपुर

प्रश्न : मेडिकल का योग है या नहीं ? यदि है तो कब तक ?

उत्तर : मेडिकल का योग है । प्रयास करें सफलता मिलेगी ।

नुसरत अली खां, बदायूं

प्रश्न : अपना स्वयं का मकान कब तक बन पायेगा ?

उत्तर : १९९३ से पूर्व आपका स्वयं का मकान होगा ।

शेर सिंह नेगी, गढ़वाल

प्रश्न : मुकदमे का परिणाम क्या होगा ? कितना समय लगेगा ?

उत्तर : परिणाम आपके पक्ष में रहेगा । जून के बाद इसमें गति आयेगी ।

कमल कुमार 'कमल', मुंगेर

प्रश्न : राजसत्ता में कब आऊंगा ?

उत्तर : इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में ।

बृज भूषण, कोटा (राजस्थान)

प्रश्न : अस्थि रोगी हूं, विवाह कब होगा ? क्या सफल रहेगा ?

उत्तर : अगस्त '९० और मार्च '९१ के मध्य संभावना है । अच्छा रहेगा ।

दिलीप कुमार सिंह, रांची

प्रश्न : विश्व भ्रमण पर कब जाऊंगा ?

उत्तर : जून के बाद संभावना बनती है ।

जवाहर 'तरुण', सागवाड़ा

प्रश्न : अधिकारी बनने का योग कब है ? रत्न बतायें ?

उत्तर : शनि की महादशा में जब बुध की अंतर्दशा आयेगी । पन्ना धारण करें ।

जगदीश नारायण शर्मा, इटावा

प्रश्न : चंद्रमा किस भाव में है ? यदि चंद्रमा नवम् भाव में ही रह गया हो तो क्या फिर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़पति बनने का योग बनता है ?

उत्तर : चंद्रमा नवम् भाव में है और फिर भी करोड़पति बनने का योग है ।

अशोक कुमार शर्मा, फैजाबाद

प्रश्न : आर्थिक विपन्नता कब दूर होगी ?

उत्तर : अपने व्यय को ठीक से संचालित करें अगला वर्ष आर्थिक स्थिति के लिए उत्तम है ।

आशीष, सीतापुर

प्रश्न : स्वास्थ्य लाभ कब से ?

उत्तर : मंगल की महादशा से ।

विनोद कुमार, डुमरी

प्रश्न : राजयोग कब से कब तक ? राजयोग के फलस्वरूप प्रशासनिक सेवा में चयन कब होगा ?

उत्तर : कुंडली में राजयोग विद्यमान है, लेकिन बहुत स्पष्ट नहीं है । अतः अत्यधिक प्रयत्नों के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी ।

पी.डी. शर्मा, बीकानेर

प्रश्न : संतान का योग है या नहीं ? यदि है तो कब तक ?

उत्तर : संतान योग है । अगले वर्ष संतान प्राप्त होगी ।

बलवंत सिंह, नयी दिल्ली

प्रश्न : क्या जीवन में निजी मकान होगा ? रत्न भी सुझायें ?

उत्तर : शनि की महादशा में बुध का अंतर समाप्त होने से पूर्व स्वयं का मकान होगा । नीलम धारण करें ।

शिखा जायसवाल, देहरादून

प्रश्न : मानसिक शांति कब एवं विवाह कब ?

उत्तर : २० मार्च से शनैः-शनैः मानसिक शांति मिलना प्रारंभ होगी । विवाह अप्रैल '९१ से पूर्व ।

सुरेन्द्र कुमार, अंबाला छावनी

प्रश्न : बैंक में पदोन्नति एवं स्थानांतरण कब ?

उत्तर : दोनों ही कार्य इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में ।

रम्पू श्रीवास्तव, मुजफ्फरपुर

प्रश्न : अधिकारी बनने का योग है या नहीं ?

उत्तर : जी हां, योग है ।

डॉ. मनोज अवस्थी, बिघनू

प्रश्न : आर्थिक उन्नति कब तक ?

उत्तर : अप्रैल '९० से शुभ समय प्रारंभ हो रहा है ।

अजय कुमार, मेरठ

प्रश्न : व्यवसाय अथवा नौकरी कब तक ?

उत्तर : व्यवसाय करना ठीक रहेगा । इसी वर्ष में व्यवसाय हो जाएगा ।

सुषमा कुमारी, गया

प्रश्न : शिक्षा कितनी ? शादी कब ? पति कैसा ?

उत्तर : बाधा के साथ उच्च शिक्षा । शादी अगले वर्ष । पति स्वस्थ एवं सुशील ।

भगवंत, इंदौर

प्रश्न : पूर्ण भाग्योदय कब ? रत्न बतायें ?

उत्तर : पूर्ण भाग्योदय ३६ वर्ष के उपरांत । पुखराज धारण करें ।

प्रताप सिंह कुशवाह, रतलाम

प्रश्न : स्वास्थ्य कब तक ठीक ? पूर्णतया अच्छा समय कब से ? कृपया अच्छा रत्न सुझायें ?

उत्तर : स्वास्थ्य में सुधार और अच्छा समय भी जून से प्रारंभ होगा । नीलम धारण करें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कु. कुमकुम पंत, दिल्ली

प्रश्न : क्या मैं विदेश जाऊंगी ? कब तक ?

उत्तर : विदेश जाएंगी, लेकिन अभी नहीं ।

फूलचन्द शर्मा, जबलपुर

प्रश्न : काल-सर्प योग का जीवन पर क्या प्रभाव रहेगा ?

उत्तर : ४८वें वर्ष के साथ ही काल-सर्प योग का प्रभाव समाप्त हो जाएगा ।

राधिका, पटना

प्रश्न : क्या आई.ए.एस. का योग है ?

उत्तर : योग तो है, लेकिन बहुत परिश्रम की आवश्यकता है ।

अशोक कुमार मिश्र, सारण (छपरा)

प्रश्न : जून तक होनेवाली संतति की आयु ? आरोग्यता ?

उत्तर : इस बार की संतान ठीक रहेगी ।

अनुपम सक्सेना, खड़गपुर

प्रश्न : भाग्योदय एवं नौकरी कब तक ?

उत्तर : भाग्योदय में समय, नौकरी जल्दी ही प्राप्त होगी ।

सुरेश शंकर दास, नागपुर

प्रश्न : व्यवसाय व आर्थिक प्रगति के लिए कौन-सा रत्न लाभदायक रहेगा ?

उत्तर : मूंगा और पुखराज मिलाकर धारण करें ।

सिंहनाथ त्रिपाठी, वाराणसी

प्रश्न : स्थानांतरण कब तक ?

उत्तर : स्थानांतरण अगस्त तक हो जाएगा ।

भांबी कंसलटेंसी,
डी-२/२, जनकपुरी नयी दिल्ली-५८

९८

नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना ..... सन .....

जन्म-स्थान ..... जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा ..... वर्तमान .....

पता .....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि ९८ 'कादम्बिनी',
हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयीदिल्ली—११०००१

अंतिम तिथि : २० अप्रैल, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : मास उत्साहवर्धक होगा । नवीन कार्यों में आशातीत सफलता प्राप्त होगी । प्रियजनों का सहयोग मिलेगा । १ से ७ के मध्य पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा । संपत्ति कार्यों में अवरोध होंगे । ८ से १५ के मध्य आर्थिक संसाधनों का विकास होगा । शत्रु-पक्ष की सक्रियता चिंतनीय होगी । अस्वस्थता पर व्यय होगा । १६ से २४ के मध्य विलासितादायी अथवा विशिष्ट वस्तु पर व्यय होगा । लेखन कला, सृजन अथवा सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी । मासांत में मांगलिक कार्यों के लिए यात्रा का योग होगा । विशिष्ट योजना की पूर्ति होगी ।

महिलाओं के पारिवारिक दायित्व बढ़ेंगे । आजीविका की दिशा में अपेक्षित लाभ मिलेगा । सामाजिक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा ।

विद्यार्थियों को शिक्षा संबंधी कार्यों की अधिकता होगी । मित्रों का सहयोग मिलेगा ।

वृषभ : मास में अभीष्ट सफलता प्राप्त होगी । संपत्ति समस्या का समाधान होगा । साहसिक प्रयास से रुका कार्य पूर्ण होगा । १ से ७ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी । अकारण तनाव होंगे । आकस्मिक धन लाभ होगा । पारिवारिक कार्यों पर व्यय होगा । ८ से १५ के मध्य जोखिमपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी । नवीन योजना में राजकीय सहयोग मिलेगा । १६ से २४ के मध्य आवेग, उद्वेग तथा व्यर्थ विवाद का सामना करना होगा । स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । धर्म आध्यात्म में रुझान होगा । मासांत में पुरुषार्थ तथा पराक्रम से कार्यों में उपलब्धिपूर्ण सफलता मिलेगी । शत्रु-पक्ष पर विजय मिलेगी ।

महिलाओं के लिए मास लाभदायी होगा । रोजगार की दिशा में विशिष्ठ सफलता मिलेगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा ।

विद्यार्थियों को कार्यों की अधिकता होगी । स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें, वरिष्ठजनों का सहयोग मिलेगा ।

मिथुन : मास रचनात्मक कार्यों के लिए अनुकूल होगा । सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठा बढ़ेगी । शत्रु-पक्ष का पराभव होगा । १ से ७ के मध्य राजकीय कार्यों में लाभदायी स्थितियों का उदय होगा । उच्चाधिकारियों के सहयोग से

ग्रहस्थिति— सूर्य १४ अप्रैल से मेष से, मंगल १२ से कुंभ में, बुध मेष में, गुरु मिथुन में, शुक्र २८ से मीन में, शनि राहु मकर में, केतु कर्क में हर्षल नेपच्यून धन में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रुओं का पराभव होगा । ८ से १५ के मध्य धन, संपत्ति व वाहन पर व्यय होगा । न्यायालयीन समस्या हल होगी । स्वजनों का सहयोग मिलेगा । १६ से २४ के मध्य आर्थिक योजनाओं की पूर्ति होगी । धार्मिक तथा रचनात्मक कार्यों में रुचि बढ़ेगी । उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से पदोन्नति अथवा उत्तम पद की स्थापना होगी । मासांत में सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों से यश मिलेगा । मनोवांछित सुख मिलेगा ।

महिलाओं को आर्थिक दिशा में सफलता मिलेगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा स्वजनों से भेंट अथवा उपहार मिलेगा ।

विद्यार्थियों को श्रम साध्य सफलता मिलेगी । आमोद-प्रमोद से बचें ।

कर्क : मास मिश्रित फलदायी होगा । शत्रु-पक्ष से चला आ रहा विवाद बढ़ेगा । निकटजनों से सावधानी रखें । राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी । १ से ७ के मध्य उच्चाधिकारियों के सहयोग से उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य बढ़ेगा । शत्रु-पक्ष की प्रबलता रहेगी । प्रियजनों से व्यर्थ विवाद टालें । ८ से १५ के मध्य अस्वस्थता तथा पीड़ा का सामना करना होगा । संपत्ति के कार्यों में व्यवधान होंगे । आध्यात्मिक अभिरुचि बढेगी । लेखन-सृजन संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी । १६ से २४ के मध्य पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी जोखिमपूर्ण कार्य नहीं करें । निकटजन के कारण भावनात्मक पीड़ा होगी । मासांत में इच्छित स्थान की यात्रा होगी । अधीनस्थ वर्ग से लाभ मिलेगा । नवीन योजनाओं में सफलता मिलेगी ।

महिलाओं को पारिवारिक कारणों से खिन्नता रहेगी । रोजगार की दिशा में विशिष्ट लाभ मिलेगा । मांगलिक कार्यों में व्यय होगा ।

विद्यार्थियों के शिक्षा कार्यों में व्यवधान उपस्थित होंगे । वरिष्ठजनों का सहयोग उत्साहवर्धक होगा ।

सिंह : मास में आर्थिक दिशा में चले आ रहे प्रयास सार्थक होंगे । संपत्ति विवाद का समाधान होगा । शत्रु-पक्ष पर विजय मिलेगी । कार्यों की अधिकता से दिनचर्या अव्यवस्थित रहेगी । १ से ७ के मध्य पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । स्वजनों के सहयोग से आर्थिक संसाधन में वृद्धि होगी । शत्रु-पक्ष पर विजय मिलेगी । ८ से १५ के मध्य नवीन कार्यों में धन व्यय होगा । प्रियजनों से भेंट होगी । आमोद-प्रमोद पर व्यय होगा । १६ से २४ के मध्य मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी । यात्रा अभीष्ट फलदायी होगी । संपत्ति के विवाद

पर्व और त्योहार

१ अप्रैल सूर्य षष्ठी, २ अशोकाष्टमी, ३ रामनवमी व्रत, ५ कामदा एकादशी व्रत, ७ शनि प्रदोष महावीर जयंती, ८ दमनक चतुर्दशी, १० चैत्री पूर्णिमा हनुमान जयंती, १३ संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, गुड फ्रायडे, १५ ईस्टर संडे, १८ शीतलाष्टमी, २१ वरुथनी एकादशी, २३ सोम प्रदोष, २५ दर्श अमावस्या, २७ अक्षय तृतीय, परशुराम जयंती इदुल फितर, २९ आद्य शंकराचार्य जयंती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का समाधान होगा । मासांत में आकस्मिक धन लाभ होगा । सामाजिक यश तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।

महिलाओं को पारिवारिक सुख मिलेगा । आजीविका संबंधी अनुकूल अवसर मिलेंगे । कलात्मक कार्यों से यश मिलेगा ।

विद्यार्थियों को शिक्षा संबंधी कार्यों में उल्लेखनीय सफलता मिलेगी ।

कन्या : मास श्रेष्ठ फलदायी होगा । राजकीय एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । स्वजनों के सहयोग से संपत्ति विवाद हल होगा । उन्नति के नवीन पथ का उदय होगा । १ से ७ के मध्य राजकीय कार्यों में उल्लेखनीय सफलता मिलेगी । कार्यों की अधिकता होगी । शत्रु-पक्ष के प्रयास विफल होंगे । ८ से १५ के मध्य पारिवारिक कार्यों से अर्थव्यवस्था अव्यवस्थित होगी । अस्वस्थता पर व्यय होगा । जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा । १६ से २४ के मध्य सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । राजनीतिक व्यक्ति से अनपेक्षित लाभ मिलेगा । मासांत में संपत्ति के विवाद का समाधान होगा । स्वजनों का सहयोग मिलेगा । यात्रा लाभदायी होगी ।

महिलाओं को स्वास्थ्य चिंता होगी । रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । आर्थिक अस्थिरता रहेगी ।

विद्यार्थियों को परीक्षा प्रतियोगिता में लाभ मिलेगा । स्वजनों से सहयोग मिलेगा ।

तुला : मास में पराक्रम तथा पुरुषार्थ से सफलता मिलेगी । राजकीय कार्यों में प्रगति होगी । शत्रु-पक्ष से सावधानी रखें । १ से ७ के मध्य शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग लाभदायी होगा । संपत्ति के कार्यों में व्यय होगा । गुप्त शत्रुओं की चिंता होगी । ८ से १५ के मध्य साहसिक प्रयासों से सफलता मिलेगी । नवीन वाहन अथवा संपत्ति का सुख मिलेगा । पारिवारिक वातावरण से खिन्नता रहेगी । १६ से २४ के मध्य अथक परिश्रम एवं साहसिक कार्यों से विशिष्ट उपलब्धि होगी । उच्च अथवा अभीष्ट परिवर्तन का योग होगा । मासांत में शत्रु-पक्ष से सावधानी रखें । धैर्य तथा संयम से कार्य करें ।

महिलाओं को पारिवारिक सुख मिलेगा । राजकीय वातावरण उत्साहवर्धक होगा । सुखद समाचार मिलेगा ।

विद्यार्थियों को अध्ययन की अधिकता होगी । वातावरण उत्साहवर्धक होगा । नवीन मित्रों से लाभ मिलेगा ।

वृश्चिक : मास में धैर्य तथा संयम से कार्य करें । पारिवारिक कारणों से चिंता होगी । श्रम की अधिकता होगी । आकस्मिक लाभ मिलेगा । १ से ७ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । पारिवारिक वातावरण से खिन्नता होगी किंतु जीवनसाथी से मनोबल मिलेगा । ८ से १५ के मध्य संपत्ति के कार्यों में व्यवधान होंगे । शत्रु-पक्ष से तनाव होगा । राजकीय कार्यों में वांछित प्रगति होगी । रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । १६ से २४ के मध्य आत्मविश्वास तथा साहस से रुका कार्य पूर्ण होगा । नवीन स्थान की यात्रा होगी । मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी । मासांत में अस्वस्थता पर व्यय की अधिकता होगी । कार्यों में शिथिलता होगी । व्यर्थ उद्वेग तथा आवेग से बचें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाओं को यात्रा योग होगा । पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठा बढ़ेगी । आजीविका संबंधी कार्यों में अवरोध उपस्थित होंगे । स्वजनों से भेंट होगी ।

विद्यार्थियों को शिक्षा कार्यों में सफलता मिलेगी । सुखद समाचार मिलेगा । पुरस्कार अथवा लाभ मिलेगा ।

धनु : मास में कार्यों की अधिकता होगी । विगतकाल से चली आ रही समस्या का समाधान होगा । आर्थिक स्थिति में सुधार होगा । १ से ७ के मध्य उच्चाधिकारियों से निकटता बढ़ेगी । कार्यों की अधिकता होगी । शत्रु-पक्ष के प्रयास विफल होंगे । रचनात्मक कार्यों के प्रति उदासीनता रहेगी । ८ से १५ के मध्य नवीन योजना की पूर्ति में उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा । आर्थिक संसाधनों का विकास होगा । प्रियजन के कारण मानसिक खिन्नता होगी । १६ से २४ के मध्य लंबित समस्या का समाधान होगा । व्यक्तित्व के विकास में प्रियजनों का सहयोग मिलेगा । धर्म आध्यात्मिक अथवा रचनात्मक कार्यों में रुझान बढ़ेगा । मासांत में अकारण विवाद टालना हितकर होगा । जीवनसाथी का सहयोग उत्साहवर्धक होगा ।

महिलाओं को सामाजिक तथा पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी । सुखद समाचार मिलेगा । साधारण अस्वस्थता का सामना करना होगा ।

विद्यार्थियों को शिक्षा कार्यों की अधिकता, श्रम साध्य सफलता तथा पुरस्कार मिलेगा । यात्रा टालना हितकर होगा ।

मकर : मास में आत्मविश्वास तथा परिश्रम से प्रतिकूल परिस्थितियों के होते हुए विजय मिलेगी । शत्रु-पक्ष का पराभव होगा । नवीन स्थान की यात्रा होगी । १ से ७ के मध्य संपत्ति के कार्यों में सफलता मिलेगी । नवीन स्थान की यात्रा होगी । स्वजनों के विरोध आपके बुद्धि चातुर्य से दूर होंगे । ८ से १५ के मध्य धर्म, आध्यात्म के प्रति रुझान बढ़ेगा । प्रियजन को अस्वस्थता का सामना करना होगा । न्यायालयीन कार्यों में सफलता मिलेगी । १६ से २४ के मध्य सामाजिक तथा पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी । मांगलिक कार्यों में व्यय होगा । अज्ञात भय तथा चिंता का सामना करना होगा । मासांत में नवीन दिशा के प्रयास साकार होंगे । प्रियजनों से भेंट होगी । आमोद-प्रमोद पर व्यर्थ व्यय होगा ।

महिलाओं को वस्त्राभूषण लाभ मिलेगा । आजीविका की दिशा में उदासीनता रहेगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा ।

विद्यार्थियों को शिक्षा, परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी । प्रवास टालना हितकर होगा । मित्रों से सावधान रहें ।

कुंभ : मास में आध्यात्मिक तथा सृजन संबंधी कार्यों में रुचि बढ़ेगी । पारिवारिक विवाद टालना हितकर होगा । जोखिमपूर्ण प्रयासों में हानि की संभावना होगी । १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारियों को शत्रु-पक्ष प्रभावित करेंगे । अकारण विवाद तथा विरोधाभास का सामना करना होगा । धैर्य तथा संयम से कार्य करें । ८ से १५ के मध्य धर्म व आध्यात्म के प्रति रुझान बढ़ेगा । सामाजिक तथा वैयक्तिक कार्यों में उदासीनता रहेगी । जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा । १६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घना, काला और शक्तिशाली बनाम फीके और श्वेत जीवाणुनाशक

प्रतिद्वन्दीविहीन बेंगाल केमिकल का फिनियोल

बेंगाल केमिकल्स का लैम्प ब्रांड फिनियोल का हर बूंद स्पष्ट रूप से फर्क लाता है। क्यों कि यह १००% जीवाणु-मुक्त, साफ और स्वस्थ गृह रक्षा के लिये है। यह इतना शक्तिशाली और प्रभावी होता है कि अगर तमाम श्वेत लिक्विड क्लीनरों को एक साथ मिला दिया जाय तो भी विकल्प की कोई संभावना नहीं रहती है।

सही पसंद : लैम्प ब्रांड फिनियोल। लैम्प ब्रांड फिनियोल की एक बोतल से आप ५० बोतल, ज्यादा शक्तिशाली, घना और मितव्ययी घर में बने, असली श्वेत फिनियोल तैयार कर सकते हैं। यानी लैम्प ब्रांड अपनी कीमत का बेहतरीन सौदा है। फिनियोलों में बिलकुल उत्तम कोटि का।

BC PL

लैम्प ब्रांड फिनियोल खरीद लीजिये।
यह है समय की कसौटी पर कसा, भरोसेमंद और बुनियादी।

बेंगाल केमिकल्स एण्ड फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड

(भारत सरकार का एक उद्यम)
६, गणेश चन्द्र एवेन्यू, कलकत्ता-७०० ०१३.

ISI बी आइ एस प्रमाणित फिनियोल

ASPALIN/3-88

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से २४ के मध्य लेखन, सृजन अथवा कलात्मक कार्यों की अधिकता होगी । यश तथा कीर्ति मिलेगी । आर्थिक अस्थिरता का सामना करना होगा । मासांत में पारिवारिक विवादों की अधिकता होगी । वरिष्ठजनों के सहयोग से तनाव शिथिल होंगे । संपत्ति के कार्यों में विलंब होगा । जोखिमपूर्ण कार्यों से दूर रहें ।

महिलाओं को रक्त तथा उदर विकार का सामना करना होगा । रोजगार संबंधी धीमी प्रगति होगी । पारिवारिक वातावरण सामान्य होगा ।

विद्यार्थियों को अवरोधक स्थितियों के बावजूद शिक्षा कार्यों में सफलता मिलेगी । रचनात्मक कार्यों से यश मिलेगा ।

मीन : मास में व्यर्थ विरोधाभास तता प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना होगा । आर्थिक दिशा में श्रम की अधिकता होगी । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । १ से ७ के मध्य शत्रु-पक्ष के कारण आजीविका के क्षेत्र में विविध समस्याओं का सामना करना होगा । धैर्य तथा संयम से प्रतिकूल स्थितियों पर नियंत्रण होगा । रुका हुआ धन मिलेगा । ८ से १५ के मध्य भावुकता का सामना करना होगा । जल्दबाजी में लिया गया निर्णय हानिकारक होगा । रचनात्मक तथा सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । पारिवारिक सहयोग उत्साहवर्धक होगा । स्वजनों से सहयोग अथवा सहायता मिलेगी । दौड़-धूप की अधिकता होगी । पारिवारिक सुखद समाचार मिलेगा । मासांत में व्यक्ति विशेष से भेंट होगी । पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी । यात्रा लाभदायी होगी ।

महिलाओं को पारिवारिक सहयोग के बावजूद व्यर्थ तनाव होंगे । आत्मशक्ति से लाभ मिलेगा । आजीविका के क्षेत्र में स्वल्प परिवर्तन होगा ।

विद्यार्थियों को श्रम साध्य सफलता मिलेगी । स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें ।

— ज्योतिष धाम पत्रिका
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर, गोविंदपुरा,
भोपाल (म.प्र.)

प्रेमिका : याद है, हमारी मुलाकात पहली अप्रैल को हुई थी ?

प्रेमी : मैं कैसे भूल सकता हूं, आज तक इसीलिए 'अप्रैल फूल' बना रही हो ।

"आज मैंने मैनेजर को 'अप्रैल फूल' बनाया है ।"

"कैसे ?"

"सुबह उनकी बीवी को फोन करके, मैंने गुडमार्निंग कर बॉस को सिनेमा का प्रोग्राम याद करवाया ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अंत में

एकी अमर :
फटे कागजों को
जोड़ने का उपक्रम

छाया : ए.पी. वैसोई

टी हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में
मुद्रित तथा प्रकाशित
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-प्रसिद्ध शृंखला

नये प्रकाशन

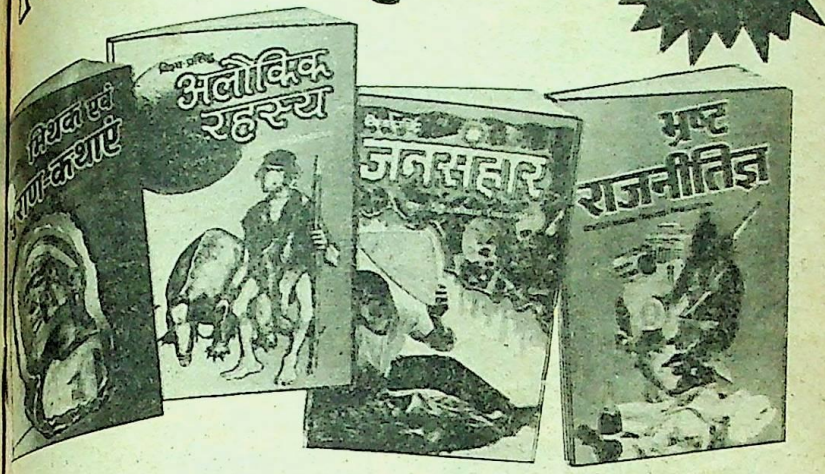

मूल्य: 18/- प्रत्येक डाकखर्च: 4/- प्रत्येक

के साथ चार पुस्तकें मंगाने पर डाकखर्च माफ

English Editions of 27 titles available.

अपने निकट के बुकस्टॉल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टॉलों पर मांग करें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता:—

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

शोरूम: 10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.

VAN/PM

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोतीलाल बनारसीदास

भारतीय धर्म, दर्शन, इतिहास, संस्कृति, कला, साहित्य, भाषा विज्ञान, आयुर्वेद तथा ज्योतिष आदि विषयों पर उत्कृष्ट तथा प्रामाणिक साहित्य के प्रकाशक

★ हमारे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन ★

धर्म व दर्शन

वाल्मीकि रामायण: काव्यानुशीलन—शिव बालक राय (सजिल्द: रु. १३०); (अजिल्द: रु. ९०)

वैदिक धर्म एवं दर्शन (२ भागों में)—मूल ले. कीथ अनुवादक सूर्यकान्त (रु. ३००)

भारतीय दर्शन की रूपरेखा—हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा (सजिल्द: रु. ७०); (अजिल्द: रु. ४०)

इतिहास व संस्कृति

भारतीय श्रृंगार—कमल गिरी (रु. ९०)

वीर विनोद: मेवाड़ का इतिहास (२ भागों व ४ जिल्दों में)—श्यामल दास (रु. ८००)

श्रेव्य युग (Hindi Translation of Classical Age) सं. रमेशचन्द्र मजूमदार (सजिल्द: रु. १५०); (अजिल्द: रु. १२०)

साहित्य

आधुनिक नाटक का अन्वेषण: कुछ पश्चिमी दस्तावेज—कुँवर जी. अग्रवाल (रु. ६०)

कलिदास और उनकी काव्यकला—वागीश्वर विद्यालंकार (सजिल्द: रु. १००); (अजिल्द: रु. ७०)

कलिदास—चन्द्रबली पाण्डेय (सजिल्द: रु. १००); (अजिल्द: रु. ७५)

भरत और भारतीय नाट्यकला—सुरेन्द्रनाथ दीक्षित (रु. २००)

भवभूति और उनकी नाट्यकला—अयोध्या प्रसाद सिंह (सजिल्द: रु. १००); (अजिल्द: रु. ७५)

आयुर्विज्ञान

अपक्वव भोजन (अथवा रोगों, व्यसनों तथा विषों से मुक्त एक नया संसार)—अशार्विरतेर होंवानैसियन (रु ३५)

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र—धर्मदत्त वैद्य (सजिल्द: रु. १७५); (अजिल्द: रु. १३०)

भारत भैषज्य रत्नाकर (५ भागों में)—रसवैद्य नगीनदास छगन लाल शाह (रु. ५००)

मानव शरीर रचना (On the pattern of Grey's Anatomy) ३ भाग—मुकुन्द स्वरूप वर्मा (सजिल्द: रु. ३८०); (अजिल्द: रु. २६५)

ज्योतिष व गणित

आप और आपकी राशि—केवल आनन्द जोशी (रु. २८)

वैवाहिक विलम्ब के विविध आयाम एवं मन्त्र—मृदुला त्रिवेदी (सजिल्द: रु. ६५); (अजिल्द: रु. ४५)

सचित्र हस्तरेखा सामुद्रिक शिक्षा—एन.पी. ठाकुर (रु. २०)

वी.पी.पी. द्वारा भी उपलब्ध। संपूर्ण सूचीपत्र के लिये लिखें:—

मोतीलाल बनारसीदास

41-यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007

शाखाएं: ★ अशोक राजपथ, पटना ★ चौक, वाराणसी ★ 120, रायपेटा हाई रोड, मैलापुर, मद्रास ★ 24, रेसकोर्स रोड, बंगलौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर जी स्टोन क्लीनिक

बिना ऑपरेशन गुर्दे की पथरी से छुटकारा

- क्योंकि उन्हें हमारी निष्ठा, समर्पण की भावना और विशेषज्ञता पर भरोसा था।
- क्योंकि वे स्वास्थ्य जैसी बहुमूल्य सम्पत्ति के साथ कोई जोखिम नहीं लेते
- क्योंकि हम बेहतरीन लिथोट्रिप्सी इलाज करते हैं।
- क्योंकि हम बड़ी पथरी (3 सेमी. और अधिक) वाले तथा अधिक खतरे की आशंका वाले मरीज़ों का इलाज कर सकते हैं और करते हैं।

आर. जी. स्टोन क्लीनिक

इस क्षेत्र में भारत का प्रथम और आज दक्षिण एशिया में सर्वोत्तम संगठन - आपके लिए लाया है यह क्रान्तिकारी इलाज। यह सुविधा

आर जी स्टोन क्लीनिक

बम्बई में भी उपलब्ध है।

परिणाम जापान में लिथोट्रिप्सी पर 7वीं विश्व कांग्रेस में प्रस्तुत किए जाएंगे।

कुछ परिणाम	
कुल उपचारित मरीज़ (आयु वर्ग 4 से 98 वर्ष)	2500
उपचारित पथरी का आकार	3 मि.मी. से 7.5 से.मी.
मूत्राशय में विभिन्न स्थानों पर उपचारिता पथरी के मामले	563
अधिक खतरे की आशंका वाले उपचारित मरीज़ (मधुमेह, उच्च रक्तचाप, गुर्दा बेकार हो जाना)	565
कठिन उपचारित मामले (हार्स शू गुर्दा, दो मूत्राशय)	25
एक गुर्दे वाले उपचारित मरीज़	96
पिछले इलाज के बाद दोबारा पथरी वाले उपचारित मरीज़	452

2500 मरीज़ों से पूछिए उन्होंने क्यों हम पर विश्वास किया

दिल्ली

आर. जी. स्टोन क्लीनिक

एफ-12, ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली-110065.
फोन: 6444511, 6444588, 6449122

☐ कृपया लिथोट्रिप्सी के बारे में विस्तृत सामग्री मुझे भेजिए।

नाम _____

पता _____

_____

भारत में लिथोट्रिप्सी चिकित्सा का सर्वप्रथम और सबसे अनुभवी केन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

१. **प्राधान्य**— क. अगुआई, ख. अधिकार, ग. प्रमुखता, घ. आधिपत्य ।

२. **पृच्छा**—क. भीख, ख. पूछने की इच्छा, ग. शिक्षा, घ. उपदेश ।

३. **इच्छामृत्यु**— क. इच्छाओं का अंत, ख. मृत्यु की इच्छा, ग. इच्छानुसार मृत्यु, घ. मृत्यु का भय ।

४. **परीक्षण**— क. प्रश्न, ख. जांच, ग. इम्तहान, घ. पूछताछ ।

५. **पिशुन**— क. घृणायोग्य, ख. पतित, ग. चुगलखोर, घ. पिशाच ।

६. **सौख्य**— क. सखापन, ख. निकटता, ग. सरलता, घ. सुख ।

७. **गूढ़साक्षी**— क. सच्चा गवाह, ख. गुप्त गवाह, ग. गवाही, घ. सबूत ।

८. **तात्त्विक**— क. वास्तविकता, ख. ईमानदार, ग. कठोर, घ. गुणवान ।

९. **चापल्य**— क. जागरूकता, ख. शोखी, ग. सक्रियता, घ. चंचलता ।

१०. **कनिष्ठ**— क. निकटतम, ख. सबसे हल्का, ग. सबसे छोटा, घ. न्यून ।

११. **आवाहन**— क. आना, ख. आमंत्रण, ग. आतिथ्य, घ. पूजा ।

१२. **प्रत्युत**— क. लेकिन, ख. अलावा, ग. बल्कि घ. साथ-साथ ।

१३. **जराजीर्ण**— क. फटा-पुराना, ख. प्राचीन, ग. बूढ़ा तथा दुर्बल, घ. मृत्यु के निकट ।

१४. **भावशून्य**— क. नीरस, ख. कठोर, ग. भावना से रहित, घ. विकृत मस्तिष्क वाला ।

उत्तर

१. ग. प्रमुखता, सर्वोपरिता । समाज में उन्हीं व्यक्तियों को **प्राधान्य** मिलता है जो उसकी सेवा में निरंतर संलग्न रहते हैं । (मूल—प्रधान)

२. ख. पूछने की इच्छा, किसी विषय में पूछताछ । **पृच्छा** के बिना प्रगति का मार्ग अवरुद्ध रहता है । (मूल—प्रच्छा)

३. ग. इच्छानुसार मृत्यु । सभी को **इच्छामृत्यु** प्राप्त नहीं होती । (इच्छा +मृत्यु)

४. ख. जांच, परख । प्रत्येक बात का सत्य की कसौटी पर **परीक्षण** करके देखो । (मूल-परि +ईक्ष)

५. ग. चुगलखोर; अधम । जो **पिशुन** है वह कभी दूसरों के बारे में सच्ची राय नहीं दे सकता । (संज्ञा-पिशुनता)

६. घ. सुख । जीवन में सभी **सौख्य** की कामना करते हैं ।

७. ख. गुप्त गवाह, वह गवाह जिसने छिपकर कोई बात सुनी या देखी हो । वह इस घटना का **गूढ़साक्षी** है । (गूढ़ +साक्षी)

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. क. वास्तविक, असली । जीवन का **तात्त्विक** बोध किसी बिरले को ही होता है । (मूल-तत्त्व)

९. घ. चंचलता, चपलता । **चापल्य** बचपन का प्रतीक है । (मूल-चपल)

१०. ग. सबसे छोटा । सहदेव पांडवों का **कनिष्ठ** भ्राता था । (कन्+इष्ठ)

११. ख. आमंत्रण, किसी उद्देश्य के लिए बुलावा । सच्चे नेता समाज की बुराइयां दूर करने के लिए जनता का **आवाहन** करते हैं । ('आह्वान' भी प्रचलित)

१२. ग. बल्कि । सत्य को न केवल मानना ही ठीक है, **प्रत्युत** उसे व्यवहार में भी लाना चाहिए । (प्रति+उत्)

१३. ग. बूढ़ा तथा दुर्बल । जो **जराजीर्ण** हैं उनकी देखरेख की उचित व्यवस्था होना जरूरी है । (जरा+जीर्ण)

१४. ग. भावना से रहित, जिसमें विचारने या महसूस करने की क्षमता न हो । इतना **भावशून्य** तो शायद ही कोई हो जो पड़ोसी के दुःख-सुख को महसूस न करे । (भाव+शून्य)

१५. ख. प्राप्ति । मनुष्य को अपनी **लब्धि** से संतुष्ट रहना चाहिए ।

पारिभाषिक शब्द

Return	=विवरणी
Reminder	=स्मरण-पत्र/तगादा
Memorandum	=ज्ञापन
Lexicon	=कोश
Lexicography	=कोश-विज्ञान
Lecturer	=प्राध्यापक
Professor	=आचार्य
Reader	=उपाचार्य
Vice-Chancellor	=कुलपति
Chancellor	=कुलाधिपति

समस्या-पूर्ति—१२८

रातभर

प्रथम पुरस्कार

ये किसान माटी के बेटे
धू को देते श्रम-प्रसूत वर
कर्म-साधना में रत रहते
बना खेत-खलिहानों को घर
तन्मयता में जान न पाते
सोये हैं या जगे रातभर

—धर्मनाथ प्रसाद

प्रवक्ता (हिंदी)
सनातन धर्म इंटर कॉलेज, उरई
जिला—जालौन (उ.प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

स्वप्न ही बुनते रहे हैं उम्रभर
लौ बुझी फिर भी अडिग हैं राह पर
वृषभ का ही साथ सूखी धरा पर
है किसे चिंता संवारे कौन घर
बीनते तृण व्यथा के इस बिंदु पर
कल्पना की इक सुबह की रातभर

—गीता त्रिवेदी

द्वारा—श्री ओ.पी. त्रिवेदी, डी.एस.पी.
नेहरू चौक, बिलासपुर (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

सच्चे जनसेवक की सच्ची संपत्ति

चंपारण सत्याग्रह के सदर मुकाम मोतीहारी में गांधीजी सहयोगी कार्यकर्ताओं को निर्देश दे रहे थे—'सुनो, आज अवंतिका आनेवाली होगी, उसे स्टेशन से लिवा लाना और कमरे में ठहरा देना।'

उनकी एक बात पर एक ने कहा, 'बापू, ये कमरे उनके लायक नहीं हैं।'

'क्यों ?'

'जो दूसरे और पहले दर्जे में सफर करने का आदी हो उसे भला इन साधारण कमरों में रहना, चटाई पर सोना क्योंकर पसंद होगा ?'

'तो वह उच्च श्रेणी में सफर करती हैं ?'

'अभी तक तो यही करती आयी हैं।'

'अभी तक तो किया सो किया, पर अब वह जनसेवक के तौर पर आ रही हैं। जनसेवक के अनुरूप अगर तीसरे दर्जे में आयीं तो उन्हें यहां रखूंगा, वरना बंबई वापस भेज दूंगा।' गांधीजी का रुख कड़ा था।

'पर बापू. . . 'एक, दूसरे ने हिचकिचाते हुए कहा।

'बोलो।''

'उनके पास पैसा है, वह भी उन्हीं का कमाया हुआ। उसे खर्च करने में क्या बुराई है ?'

'खर्च का मतलब अपव्यय तो नहीं। अपव्यय तो विषाक्तता फैलाने की तरह से है। जो आलस्य फैलाता, दुर्व्यसनों की बटालियन खड़ी करता और दूसरों को भी वैसा करने के लिए ललचाता है, ऐसा करनेवाला जनसेवक कभी नहीं हो सकता।'

पूछनेवाले स्वयंसेवक गांधीजी के सबसे छोटे पुत्र देवदास गांधी के साथ अवंतिका बाई को लेने स्टेशन पर गये। देवदास ही अकेले उन्हें पहचानते थे। श्री देवदास ने आशा के मुताबिक उन्हें दूसरे दर्जे के डिब्बों में खोजा लेकिन कहीं पता न चला। तब वे निराश होकर डेरे पर वापस आये और खबर दी कि अवंतिका बाई इस गाड़ी से नहीं आयीं। यह सुनकर सब लोग हंसने लगे, क्योंकि वे दोनों पति-पत्नी पहले ही आकर एक साधारण कमरे में ठहर चुके थे। यात्रा उन्होंने तीसरे दर्जे में की थी। इस प्रकार बापू की कसौटी पर अपने को खरा साबित किया।

शाम को गांधीजी उन्हें समझाने लगे, किस तरह बड़हखा गांव जाकर कार्यक्रम शुरू करना है। इस पर कस्तूरबा ने कहा कि 'ये आज ही आयी हैं और कल दीवाली है। अच्छा हो दिवाली मनाकर जाएं।'

'नहीं ऐसा नहीं होगा, इन्हें कल सुबह ही निकलना होगा।' गांधीजी का स्वर तेज था।

'एक दिन में क्या हो जाएगा ?'

'जलयान के दिशा निर्देशक (नेव्हीगेटर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की एक सेकेंड की चूक से हजारों की जानें समाप्त हो जाती हैं । फिर एक दिन में तो छियासी हजार चार सौ सेकेंड होते हैं । तुम्हें विचार करना चाहिए कि सेकेंड किसका है ? निठल्ले का नहीं जनसेवक का । मैंने इस महत्त्वपूर्ण को सारा कामकाज छोड़कर बुलाया है। इस तरह समय की बरबादी करेगी, तो कैसे काम होगा ?'

बा के पास कोई जवाब नहीं था ।

'नहीं बापू ! मैं पूरी तरह से आपकी बात मानने को तैयार हूं आप तो मुझे यह बताएं कि बड़हखा गांव के कायाकल्प के लिये क्या करना है ?'

'गांव की समस्याओं का तो वहीं जाकर अध्ययन करना होगा, उसी के अनुरूप समाधान खोजने होंगे । लेकिन एक चीज का ध्यान रखना, गांववाले तथा अन्य सभी तुम्हारे हर पहलू को देखेंगे । भली प्रकार जांच-परख के बाद ही तुम्हारे प्रति उनमें विश्वास जगेगा । फिर तो बाकी काम सरल हो जाएगा ।' बापू ने बता दिया ।

'इसके लिए क्या करना होगा ?'

'दो ही चीजें—सादगी और निष्ठा का परिपालन । एक तुम्हें विश्वस्त बनाएगी और दूसरी तुम्हारे काम की गति को कई गुना बढ़ा देगी । प्रत्येक जनसेवक की यही संपत्ति है ।''

इस सूत्र को पा अवंतिका बाई तैयारी करने में जुट गयीं ।

ज्ञान गंगा

यतो वाचो निवर्तन्ते, अप्राप्य मनसा सह ।
आनंदं ब्रह्मणो विद्वान्, न विभेति कदाचन ।।

(तैत्तिरीय उपनिषद् २/२)

वाणी जहां से लौट आती है, मन जिसे प्राप्त नहीं कर सकता, उस आनंदरूप ब्रह्म को जो जान लेता है, वह कभी किसी से भयभीत नहीं होता ।

अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन ।

(वृहदारण्यक उपनिषद् २/४/३)

धन से अमरता की आशा न करो ।

कार्याणां कर्मणां पारं यो गच्छति स बुद्धिमान् ।

(वाल्मीकि रामायण, युद्धकांड ८८/१४)

जो अपने कर्त्तव्यों को अंत तक पार (पूरा) कर देता है, वही वास्तव में बुद्धिमान् है ।

यथा वक्ता तथा श्रोता तत्र सौख्यं विवर्धते ।

(भागवत पुराण माहात्म्य ४/३९)

जहां वक्ता और श्रोता एक समान हों वहां सुख की वृद्धि होती है ।

विस्मयः सर्वथा हेयः प्रत्यूहः सर्वकर्मणाम् ।

(हितोपदेश २/१५)

विधि के विधान की चिंता बिलकुल छोड़ देनी चाहिए । क्योंकि यह सब काम में बाधक होती है ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

अप्रैल अंक में 'किसी ने आकाश को बनाया नहीं है' चिंतनपरक, खोजपरक, ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित लेख पढ़कर अंतर्मन प्रफुल्लित हो उठा । बहरहाल परिवर्तन, परिवर्धन और परिमार्जन नियति है जो टाले नहीं टल सकती । स्थायित्व को अंगीकार करने का मतलब विकास को झुठलाना तथा जड़ता को गले लगाना होगा । सब-कुछ बदल रहा है, परिवर्तन यहां तक है कि हम एक ही जल में दो बार स्नान नहीं कर सकते । विकास के कोई दो क्षण एक समान नहीं होते । जोड़ और तोड़ विकास के ये दो रूप हैं । संभवतः हेगल-जैसे महान दार्शनिक को इसी से प्रभावित होकर थीसिस, एंटीथीसिस और सेंथेसिस के माध्यम से विकास को स्वीकार करना पड़ा हो ।

यदि जड़ता नहीं तो विविध आयाम, अवश्य होंगे, दृष्टिकोण होगा तो दृष्टिकोण-भेद भी होगा, इसके कारण अनेक मंतव्य भी होंगे । तभी तो भारत-जैसे एक संस्कृति-प्रधान देश में बृहस्पति ने निराभौतिकवादी दृष्टिकोण दिया, तो वात्स्यायन कामशास्त्र में ही डूबे रहे तथा कौटिल्य ने कूटनीति के दांवपेच में जीवन बिताया, तो पतंजलि, गौतम कणाद तथा शंकर आदि ने आध्यात्मिक दर्शन दिये । सबमें कुछ-न-कुछ मूल है । सत्य सबमें है । फिर भी मानवकृत कुछ भी चिरंतन, कूटस्थ नहीं । जो स्वयं कृत है उसकी कृति शाश्वत कैसे हो सकती है जो स्वयं नश्वर है वह अमरत्व का निर्माता कैसे हो सकता है ? सचमुच आक्रोश-जैसे तत्व जो निर्माण से परे हैं वे नित्य, विभु हैं, कृत तो अनृत और असत होगा ही ।

वास्तविकता यह भी है कि धरा पर धर्म-जैसे पावन साधन की भी तस्करी कम नहीं हुई । धर्म के नाम पर, जितने रक्त बहाये गये, शोषण किये गये, उतना संभवतः किसी अन्य के नाम पर नहीं हुआ । कणाद् ने भले ही कहा हो 'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः ।" अर्थात जिससे मोक्ष की प्राप्ति और विकास की सिद्धि हो वह धर्म है । 'आत्म शुद्धि साधन धर्म' अर्थात आत्मा की शुद्धि का साधन धर्म है फिर भी धर्म के नाम पर सहस्राधिक कुत्सित कार्य हुए और भारत—जैसे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में धर्म के नाम पर जितना खून-खराबा हो रहा है उतना अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है ।

व्यक्ति चाहे महापुरुष हो या योगी, उसकी भी कुछ-न-कुछ सीमा है । वह भी न तो अनंत को समझ सकता है और न ही उनका प्रतिपादन ही कर सकता है । फिर हम हठवादी और दुराग्रही तथा अंधविश्वासी क्यों बनें फिर क्यों न अनेकांत दर्शन को समझें और स्यादवाद की शैली को अपनाकर संघर्ष, विरोध और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असामंजस्य को समाप्त करें । अलम ।

—आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'
प्रवक्ता दर्शनशास्त्र, ब्राह्मी विद्यापीठ,
लाडनूं-३४१३०६ (राज.)

सांत्वना पुरस्कार

अप्रैल अंक में नेल्सन मंडेला पर 'मेरी मौत प्रेरणा का स्रोत बनेगी' शीर्षक लेख पढ़ने को मिला । सचमुच मंडेला—जैसे ऊंचे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनवरत लड़नेवाले व्यक्ति के लिए महान-जैसे संबोधन भी छोटे पड़ने लगते हैं । नेल्सन मंडेला की रिहाई गोरी सरकार की मजबूरी ही है और यह मजबूरी पैदा हुई है नेल्सन के संघर्ष से । मंडेला ने अपने जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण वर्ष ऐसे बिताये हैं कि वह अफ्रीका के इतिहास की नींव बन चुकी है ।

मंडेला कई वर्षों तक जेल में रहे और कभी भी अश्वेतों के हितों के विरुद्ध कोई समझौता नहीं किया, हालांकि ये समझौते उनके लिए जेल के फाटक बड़ी आसानी से खोल सकते थे । मंडेला एक दबे-कुचले गये समुदाय के लिए वर्षों जेल में रहे, सिर्फ इतना कहना मंडेला के संघर्ष की गाथा को हलका बनाना होगा । मंडेला तो प्रकाश स्तंभ बने रहे, प्रेरणा स्रोत बने रहे । यह सच है कि वे अश्वेत अफरीकियों के हित के लिए लड़ते रहे, लेकिन मंडेला आज विश्व के सभी दलित वर्गों के लिए संघर्ष कर रहे जननेताओं और जन-साधारण के लिए आदर्श हैं, अनुकरणीय हैं ।

यह मंडेला-सरीखे दृढ़ व्यक्ति के लिए ही संभव था कि वह जेल के अमानवीय वातावरण में अश्वेतों के हितों के लिए चिंतित रहा और उनकी बेहतरी की आस लिए न कभी झुका, न मुड़ा, न टूटा । मंडेला की यही विशेषताएं उन्हें प्रेरक बनाती हैं । मंडेला आज इन यातनाओं से गुजरने के बाद भी इतने व्यवस्थित और पूर्वाग्रहों से मुक्त दिखते हैं कि आश्चर्य होता है ।

इस दौर में नेल्सन के संघर्षों ने दुनिया के सभी 'मानवों' के हृदय में एक उम्मीद जगायी है कि विश्व का बड़ा भू-भाग रंगभेद के अभिशाप से मुक्त होने जा रहा है । हम नेल्सन को कभी नहीं भुला सकेंगे लेकिन हमें ऑलिवर टांवों और बाल्टर सिसलू को भी याद रखना चाहिए ।

—राजेश प्रियदर्शी
७१, हरमू रोड, रांची (बिहार)

एक अघोषित विशेषांक

अप्रैल अंक एक अघोषित विशेषांक-सा लगा । 'समय के हस्ताक्षर' स्तंभांतर्गत स्व. अमृतलाल नागर जी को श्रद्धास्वरूप अर्पित शब्द-सुमन, और हिंदी आलोचना जगत् के एक गुमनाम पुरोधा डॉ. देवीशंकर अवस्थी का आलोचनात्मक लेख 'कहानी'' : अच्छी और नया प्रस्तुत अंक के विशिष्टाकर्षण हैं । स्व. अवस्थीजी के उक्त लेख को पढ़ने के बाद उनकी आलोचनात्मक शैली के पैनेपन का अवबोध हुआ । किंतु विडंबना यह है कि उनका जन्म 'शवपूजकों के देश' (भारतवर्ष) में हुआ था । इस देश ने कदाचित् ही किसी साहित्यकार का उसके जीवनकाल में समुचित मूल्यांकन किया हो या फिर उसे अपेक्षित सम्मान दिया हो । श्री गजानन माधव मुक्तिबोध का दृष्टांत हमारे सामने है । बहरहाल, मुझे संतोष है तो बस यही कि कम-से-कम अब स्व.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीशंकर अवस्थी का समुचित मूल्यांकन संभव हो पाएगा, तथा हिंदी आलोचना के आकाश में वे एक नक्षत्र की भांति स्थापित हो पाएंगे ।

श्री शिवबचन चौबे का लेख 'राजा रामचंद्र की जय' वस्तुतः डॉ. विद्यानिवास मिश्र कृत 'मेरे राम का मुकुट भींग रहा है' की कोटि का एक उत्कृष्ट आलेख है । 'एक बार बोलिए, प्रेम से बोलिए, राजा रामचंद्र की जय' नामक वाक्यांश की गवेषणात्मक व्याख्या सचमुच श्लाघनीय है ।

—कुमार निर्मलेन्दु

— श्री बाई.पी. सिंह केंद्रीय विद्यालय, उर्वरक नगर, बरौनी

नागरजी की दृष्टि में 'कादम्बिनी'

अप्रैल अंक में श्री अमृतलाल नागर पर लेख पढ़ा, खूबसूरत लगा ।

सन १९७८ में प्रेमचंद जन्म शताब्दी में परिचय हो जाने के बाद मेरी भी स्व. नागरजी से मुलाकातें होती रही हैं । एक दफा वे पूछ बैठे कौन-कौन-सी पत्रिकाएं पढ़ते हो ?

मैंने 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' 'धर्मयुग' आदि के नाम गिना दिये । 'कादम्बिनी' का जिक्र न करने पर वे बोले- 'कादम्बिनी' नहीं पढ़ते ।'

मैं 'कादम्बिनी' पर उनकी राय जानने के लिए चुप रहा । वे बोले—जैसे मिठाइयों में मोतीचूर के लड्डू का स्थान है, वैसे ही पत्रिकाओं में 'कादम्बिनी' का ।

एक बार मैं पहुंचा तो वे लड्डू खा रहे थे । मेरी ओर इशारा करते हुए बोले— 'खाओ न ।'

मैंने दो खा लिये और संकोचवश रुक गया । वे लड्डू मुंह में रखते हुए बोले—'नये लोगों में बस यही खराबी है, कम पढ़ते हैं और कम खाते है, जो नया-नया लेखक अपनी इस आदत से बाज नहीं आएगा वो 'पों' बोल जाएगा ।' वो लड्डू मेरी ओर बढ़ते हुए बोले— 'अब बोलो तुम्हें 'पों' थोड़े ही न बोलना है ।'

भांग के प्रति भी उनका आग्रह बड़ा मजेदार होता था । वे जिद कर जाते थे : 'अरे भईया, यह शिव का प्रसाद है, लो न ।'

मैं विनयपूर्वक मना कर देता । एक बार तो वे अड़ गये— 'देखो तुम को बतावें, एक ब्राह्मण और था सुमित्रानंदन पंत, उसे भी चखवा के माना मैं । देखो कितना बड़ा लेखक बना वो ।' इतना कहकर ठहाका लगा उठे ।

एक बार वे पान लगाकर मुझे दे रहे थे । मैंने छेड़ दिया—छोड़िए ये पान खाना-खिलाना ।'

पान देते हुए बोले—'देखो, तुम को बतावें, मैं वो चीज खाता-खिलाता हूं जो स्वर्ग में नहीं मिलती । गांठ बांधो, चार चीज़ें स्वर्ग में नहीं मिलतीं । नंबर एक-पान, दो-शिव प्रसाद (भांग), तीन-पुरातत्व की वस्तुएं, यही तीनों में पास हैं ।' वे रुक गये ।

मैंने पूछा— 'नंबर चार ।'

'प्रेमिका की मुसकान ।' इतना कहकर वे ठहाका मार उठे ।

वास्तव में ऐसा मजेदार और मंजा हुआ शख्स मैंने दूसरा नहीं देखा । पचासों यादें बार-बार, रह-रहकर जेहन में उठती हैं ।

—आनंद शर्मा
बोलती

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगला अंक

कहानी-विशेषांक

संग्रहणीय विशेषांकों की परंपरा में एक और विशेषांक

इस विशेषांक में पढ़िए भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठित लेखकों की श्रेष्ठ कथा-कृतियां

प्रत्येक कहानी अपने आप में अनुभवों का एक विचित्र संसार

● अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराइए

हिंदी का कवि अमीर खुसरो

अप्रैल अंक में धरोहर के अंतर्गत अमीर खुसरो पर आलेख पढ़ने को मिला । अभी कुछ वर्षों पूर्व इस बात पर संदेह प्रकट किया जाने लगा था कि हिंदी के शब्दों का इतना शुद्ध प्रयोग करनेवाला हिंदी के पद व पहेलियां लिखनेवाला क्या वही अमीर खुसरो था, जो कि फारसी का कवि था, और जिसने फारसी में अनेक 'मसनवियां' और ऐतिहासिक ग्रंथ लिखे ? लेकिन अमीर खुसरो ने अपने 'गुर्रत-उल-कमाल' में जो कुछ लिखा है उससे संदेह की कोई गुंजाइश नहीं रहती कि हिंदी के पदों का रचयिता अपने काव्य में हिंदी के शब्दों और मुहावरों का सार्थक प्रयोग करनेवाला खुसरो यही अमीर खुसरो था ।

खुसरो को भारतीय होने का अभिमान था । वह कहता है कि—"मैं भारतीय तुर्क हूं और तुर्हें हिंदवी में उत्तर दे सकता हूं । अरबी की बातें करने के लिए मेरे पास मिस्री-शक्कर नहीं है ।" वह आगे कहता है कि —"चूंकि मैं हिंद का तोता हूं इसलिए मुझसे हिंदवी में कुछ पूछो ताकि मैं मीठी बात कर सकूं ।"

खुसरो के पश्चात भी मुसलमान विद्वान खुसरो को ही हिंदी में काव्य रचना का श्रेय देते रहे हैं । प्रसिद्ध उर्दू कवि मीर तकी मीर लिखता है कि उसके समय में भी अमीर खुसरो के हिंदी-गीत दिल्ली में बहुत ही जनप्रिय थे ।

खुसरो की फारसी और हिंदी की मिश्रित भाषा का एक और उदाहरण :

जो हाल मिसकी मुकुन तगाफुल, दुराय नैना बनाय बतियां
कि ताने हिज्रां न दारम, ए जां । न लेहु काहें लगाय छतियां
शबाने हिज्रां दराज चूं जुल्फ व रोजे वसलत चूं उम्र कोतह
सखी ! पिया को जो मैं न देखूं तो कैसे काटूं अंधेरी रतिया

—जगदीश ज्वलंत
उज्जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

वर्ष ३०, अंक ७
मई १९९०

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

राजेन्द्र अवस्थी
अविवाहित मां शब्द नया नहीं है २१

राधानाथ चतुर्वेदी
जरमन एकीकरण से २६

भगवती प्रसाद डोभाल
तपी दोपहरी जेठ की ३२

डॉ. बैकुंठनाथ ठाकुर
मंत्र विज्ञान और योग ४२

सुरेश धींगड़ा
महाकवि बिहारी ६२

डॉ. अशोक जेरथ
लद्दाख के रहस्यभरे बौद्ध मंदिर ६८

ललन कुमार प्रसाद
संतरे खाइए, स्वस्थ रहिए ८१

चौकीदारी के लिए चीते, तेंदुए ८६

स्थायी स्तंभ :

पैनी नजर- ६, शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए- ८, आस्था के आयाम- १०, ज्ञान-गंगा- ११, प्रतिक्रियाएं- १२, काल-चिंतन- १८, गोष्ठी- ५२, सीपिकाएं- ८५, आइए चलें जंगल की ओर- ११४, बुद्धि विलास- १४१, तनाव से मुक्ति- १५४, यह महीना और आपका भविष्य- १६५, क्या करेंगे आप- १७०, प्रवेश- १७२, ज्योतिष-समस्या और समाधान- १७४, नयी कृतियां- १७९, इनके भी बयां- १८२, और अंत में—१९८,
आवरण : निहाल चंद्र व ज्ञान दीक्षित

डॉ. सुधीर खेतावत
अद्भुत करिश्मे ८८

डॉ. समर बहादुर सिंह
उन्हें संगीत घुट्टी में ९२

डॉ. रवीन्द्र कुमार वर्मा
सूचना पाने का अधिकार ९६

इन्दिरा मोहन
वेदांत और इक्कीसवीं सदी १०८

हबीब खान
दो लाख में बौना ११६

भूत प्रेतों का आतंक १२०

सी.एस., 'नाज' मानिकपुरी
हिंदी मानकीकरण में गजलिया काव्य शैली १२२

अमृतलाल वेगड़
मां नर्मदे दीप जलाना १२७

अशोक कुमार
मैं मरने के बाद १३५

अमरेश्वर दुबे
कहां है विराट नगर १४९

डॉ. मोहनानन्द मिश्र
मिथिला की नारियां १५७

डॉ. उमा मैठानी
राष्ट्रभाषा एवं संस्कृति १६१
मारिशस में आयुर्वेद सम्मेलन १७६

सार-संक्षेप

जार्ज मुरे, जॉन टोलंड
हत्यारों का अंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कहानियां एवं हास्य व्यंग्य

कृष्ण मुरारी तिवारी
डेढ़ दांत का हाथी ३५

सातोमी तान
अभिशप्त रात ४८

पुष्पा सिंह
संदेश ५६

राधा कृष्ण प्रसाद
अस्मिता ७३

वेद प्रकाश सिंह
ग्रीन कार्ड का मायावी मृग १०२

श्रीकांत चौधरी
दूसरा हरिश्चंद्र ११९

कन्हैयालाल गांधी
सामजस्य १४२

कविताएं

लक्ष्मीमल सिंघवी
सान्निध्य का क्षण २९

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
फिर अनबोली तृप्ति चल रही ९०

डॉ. रवीन्द्र भ्रमर
हम-तुम मिले बहुत दिन बाद ९०

डॉ. सविता सौरभ
उत्तरहीन प्रश्न ९१

सच्चिदानंद सिन्हा
बीतना ९१

वेदप्रकाश दुबे
अकसर ९५

डॉ. नरेश
विप्लवों का दौर है १०७

सुषमा अरोरा
परावर्तित प्रकाश ११३

कल्पना सिंह
वक्त का सूरज ११३

मजहर अहमद खान
पाच रास्ते ११३

बृजेश भट्ट
गीत १६४

संपादकीय परिवार

सह संपादक दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक :प्रभा भारद्वाज
भगवती प्रसाद डोभाल
उप-संपादक :डॉ. जगदीश चंद्रिकेश,
सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग-प्रमुख :सुकुमार चटर्जी
चित्रकार :पार्थ सेनगुप्त
पता :सपादक
'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि.,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१

मूल्य :

वार्षिक : ७५ रुपये
द्विवार्षिक : १४५ रुपये,
विदेशों के लिए : २९० रुपये वार्षिक
वायु सेवा से, समुद्री जहाज से : १३५ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंतन-चिंतन

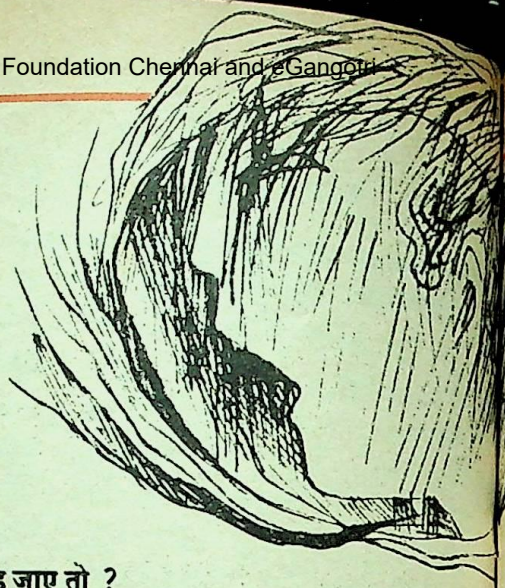

— विवेक स्वयं असमंजस में पड़ जाए तो ?

□

— अनेक क्षण जीवन में आते हैं जब ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है ।

— विवेक भटकन की भंवर में उसी तरह फंस जाता है जैसे अचानक सहज स्थिति में कोई यात्री झंझावात में घिर जाए ।

— झंझावात शक्तिपुंज होता है और उससे लड़ने की शक्ति मनुष्य में कम होती है— यह सोचना अनुचित नहीं है, परंतु सत्य कुछ और पारिभाषित करता है ।

— एक पथिक अपनी यात्रा में सहज रूप से चल रहा था । यात्रा उसके एकांत क्षण थे, स्पष्ट है वह स्वयं असहज स्थितियां उत्पन्न नहीं करना चाहता था । चलते हुए वह एक बाग में पहुंचा । जो पतझड़ के बाद खुला और शून्य के विराट में अधनंगा खड़ा था । उसकी दृष्टि धरती पर गयी; उस धरती पर जो जीवनी शक्ति है । उसने देखा धरती शांत नहीं थी । यहां-वहां उभरती दृष्टिगोचर हो रही थी । यह उभारना उस समय उसी तरह था— जैसे किसी सुगढ़ चेहरे में कीलें उठ आती हैं

— चेहरे पर कीलों का उठना कुछ समय के लिए बदसूरती का आभास दे सकता है, किंतु वे कीलें इस सत्य का परिबोध भी हैं कि यौवन की देहरी दूर नहीं है ।

— वह बाग भी यौवन की देहरी पर खड़ा था । कुछ समय के बाद यही कीलें तिरोहित हो जाएंगी । सच कहा जाए तो वे अंकुर थे— ढेर-से बिछे हुए अंकुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

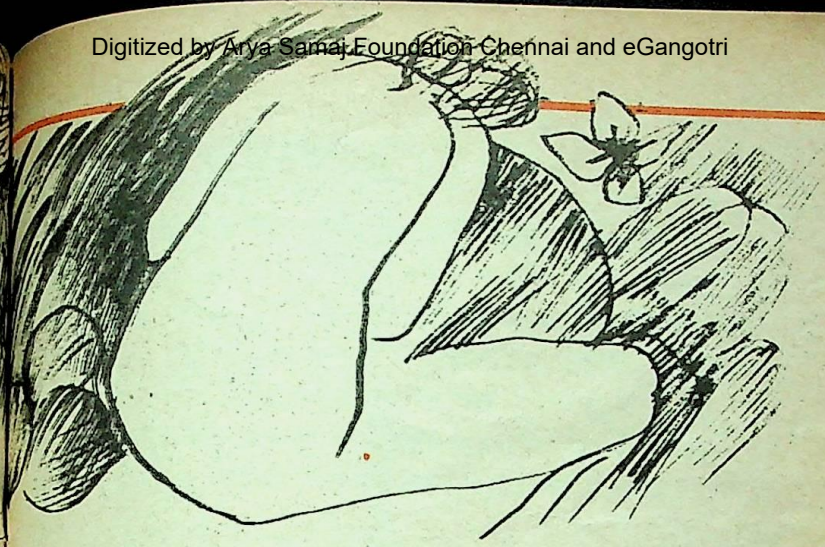

— अंकुर पृथ्वी के गर्भ से बाहर आकर अचानक फूटेंगे और वह सूना बाग एक बार फिर हरितिमा और पुष्पों के सौंदर्य से आच्छादित हो जाएगा ।

— यात्री ने झुककर देखा, सचमुच नन्हा-सा अंकुर उभरने के लिए प्रयत्नरत है । यात्री रुक गया । वह परेशान क्यों है ? युद्ध-रत अंकुर है अथवा वह महान धरती जो उसे जन्म देने के लिए आतुर है; जन्म देने के पूर्व आश्वस्त होना चाहती है कि अंकुर किसी का ग्रास न बने, वह बोधि-वृक्ष हो ।

— यही क्षण था जब यात्री दृढ़ संकल्पी हो गया; वह भी तो धरती पर खड़ा है; यही धरती उसकी शरण दायिनी है ।

— शरणदाता मिल जाए तो बोधत्व की प्रगति में देर नहीं लगती ।

— विवेक पानी की लहरों-सा हिल रहा है या हवा-सा लचक खाता है तो— स्वीकारिए वे नवजात शिशु की किलकारी है ।

— किलकारी वह जो संपन्न भविष्य को आश्वस्त करती है ।

— किलकारी वह जो पले हुए क्षणों में वापस नहीं लौटती; आश्वस्त करती है आनेवाले बालपन को ।

— बालक समय को अपनी मुट्ठियों में भींचता हुआ यौवन की देहरी पर पहुंचता है ।

— यौवन मनुष्यता के वीरत्व का सशक्त इतिहास है ।

— एक किलकारी से जो कुछ आरंभ हुआ था, वह इतिहास के पृष्ठों में महानता के गीत रचने लगा है, कीलों-सा दिखनेवाला बाग सौंदर्य-चेतना का महासागर बन गया है ।

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— घबराने से काम नहीं चलता ।

— अग्नि-परीक्षा से कोई नष्ट नहीं होता, वह स्वर्ण की तरह तेजस्वी होकर दीप्ति पाता है ।

— क्षणिक अस्वस्थ व्यक्ति, जब स्वास्थ्य लाभ करता है तो पहले से अधिक शक्ति पाकर उभरता है ।

— यात्राएं जितनी कष्टदायिनी होंगी, गंतव्य उतना ही सुरक्षित होगा ।

— युद्ध की विभीषिका में विनाश फलता-फूलता है, लेकिन विनाश के बाद देश और मनुष्य की संरचना अधिक चैतन्य होती है ।

— विनाश से उभरे राष्ट्र असीम बलिष्ठ हाथों की हथेलियों में फिसलते हुए नये स्वरूप के कायाकल्प में खड़े दृष्टिगोचर होते हैं ।

□

— प्रकृति कालचक्र है : विनाश और निर्माण साथ-साथ चलते हैं ।

— मनुष्य जीवन प्रकृति का एक अंग है : विवेक और अविवेक दोनों सार्थक संज्ञाएं हैं ।

— कहा जा सकता है असत्य और व्यभिचार नहीं होगा तो सत्य और स्वरूप जीवन-संधि का बोध कहां से उभरेगा ।

— अर्थ हुआ कि महानता के लिए लघुता आदरणीय है; विवेक के लिए अविवेक निश्चित तत्व है और अमरता के लिए अवरोधों के भंवर-जाल किसी महान इमारत की नींव का काम करते हैं ।

□

— असमंजस में जब विवेक पड़ जाए तो बुद्धि को सहचर बनाइए : बुद्धि और विवेक में अंतर है । बुद्धि मूल-नक्षत्र है और विवेक उल्काओं का चादर है । इसी चादर को मंदिर और मस्जिदों में चढ़ाया जाता है । यानी विवेक दान योग्य है, बुद्धि मनुष्य की स्थायी मूल-चेतना है ।

— इस परम सत्य को समझने के बाद पारिभाषित करने के लिए कुछ भी शेष नहीं रहता; शेष रहती है महान उर्वर मस्तिष्क की बुद्धि चेतना जो विवेक और अविवेक के साथ उसी तरह खेलती रहती है । जैसे बिल्ली चूहे से खेलती है । मनोरंजन के क्षण हैं उसके लिए; क्षणिक आवेगों के लिए धैर्य और संयम की शिला सहयोगिनी बनती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

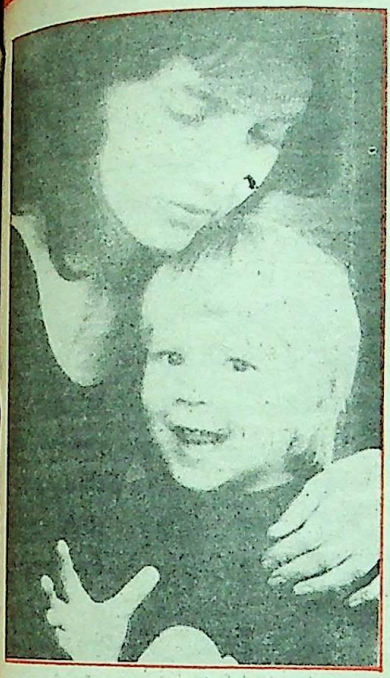

अविवाहित मां नया शब्द नहीं है !

● राजेन्द्र अवस्थी

प्रहा में पहले भी कई बार गया हूं और अपनी हर यात्रा में मेरे मित्र ओदोलेन स्मेकल ने चार्ल्स विश्वविद्यालय में आमंत्रित किया है । इस बार भी मैं वहां गया । ऐसे युवा प्रेमियों से मिलने में हमेशा आनंद आता है जो भारतीय भाषाओं का अपने देश में अध्ययन करते हैं । भारतीय संस्कृति और साहित्य से परिचित होने के लिए उनके श्रम देखने योग्य हैं । इस बार हिंदी और तमिल पढ़ने वाले छात्र और छात्राएं थीं । इन सबके चेहरों पर उत्साहपूर्ण आभा थी । लगभग बीस छात्र और छात्राएं दो भाषाएं पढ़ रहे हैं । पढ़ते हैं तो स्वाभाविक है कि उनके मन में अपार जिज्ञासा है कि इन भाषाओं के साहित्य में क्या है और उस साहित्य के माध्यम से वे किस सीमा तक भारत को देख सकते हैं ।

प्रहा के एक प्रकाशन गृह ने मेरे हिंदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास 'जंगल के फूल' का चेक भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया है। यह मेरे लिए सुखद सूचना थी कि छपते ही उपन्यास की एक लाख प्रतियां बिक गयीं। विद्यार्थियों ने बाजार से उपन्यास खरीदना चाहा, ताकि वे मेरे आटोग्राफ (हस्ताक्षर) ले सकें। डॉ. स्मेकल ने बताया कि किसी तरह केवल पांच प्रतियां उपलब्ध हो सकी हैं। मैंने पांच छात्र और छात्राओं की प्रतियों में हस्ताक्षर दिये और फिर उनके साथ चित्र लिये गये। पढ़ने के प्रति उनमें जो गर्मजोशी है और भारत देखने की जो लालसा है, उसका केवल अंदाज ही लगाया जा सकता है। कई तरह के प्रश्न उन्होंने पूछे. विदेशी विद्यार्थियों के मुंह से हिंदी सुनना सुखद ही नहीं है, कहीं हमें अपने भीतर—झांकने का अवसर भी देता है—अपने देश में हम किस तरह अंगरेजियत के शिकार हैं।

प्रिंस चार्ल्स विश्वविद्यालय में हमने काफी समय व्यतीत किया। लेका भी हमारे साथ थी और अपने व्यतीत के कई संस्मरण उसे याद आ रहे थे। इसलिए भी कि वह इसी विभाग की छात्रा रह चुकी है। फिर वह भारत गयी और उसे आशा थी कि कुछ ही दिनों के बाद वह उसी विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका बन जाएगी।

हिंदी पढ़नेवाले युवा छात्र और छात्राएं प्रतिवर्ष वहां प्रवेश लेते हैं। इनमें से जो भी भारत आये हैं, वे इस देश की महानता के गुणगान करते थकते नहीं।

प्रहा में मैं इस बार एक सप्ताह रुका। एक दिन अचानक मुझे मेडम मारकोवा का फोन मिला; वे मुझसे मिलना चाहती हैं। मैंने मिलने की अनुमति तत्काल उन्हें दी तो वे होटल याल्टा में चली आयीं। अत्यंत मिलनसार मारकोवा को भारतीय साहित्य में गहरी अभिरुचि है। उन्होंने काफी अध्ययन किया है और यहां के नये-से-नये साहित्य से परिचित हैं।

पुस्तकें : प्रिय उपहार

मारकोवा प्रहा में हिंदी पढ़ाती हैं। हिंदी अध्यापक होने के कारण उनके उच्चारण भी साफ-सुथरे हैं। वे अनेक भारतीय ग्रंथों का अनुवाद कर चुकी हैं। उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि वे मेरी कहानियों के भी अनुवाद करना चाहेंगी। मैंने अपनी तीन कहानी संग्रह उनको दिये। यहीं पता चलता है कि विदेशी पुस्तकों का उपहार पाकर कितने खुश होते हैं। मारकोवा के लिए वे सब अमूल्य धरोहर थीं। मैं प्रहा में जितने दिन रहा मारकोवा से मेरा संपर्क निरंतर बना रहा।

चेकोस्लोवाकिया मैं कई बार आ चुका हूं, यह मैंने पहले कहा है। इस बार दिल्ली की शारदा यादव भी चेक भाषा के आगे के

चेकोस्लोवाकिया में पहले जनमत अविवाहित माताओं के विरुद्ध था। उस समय भी कुछ लड़कियां ऐसी थीं जो अविवाहित मां बन जाती थीं। पर सन १९८८ से स्थिति बदल गयी है। अब सरकार भी अविवाहित माताओं के प्रति अधिक उदार हो गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्ययन के लिए प्रहा में थी । वहां के पारिवारिक और सामाजिक जीवन से वह भलीभांति परिचित है । उसके सहारे मैंने युवा पीढ़ी की मानसिकता को जानने का पूरा प्रयत्न किया । भारत के लोगों के लिए निश्चय ही ये तथ्य चौंका देने वाले होंगे ।

चेकोस्लोवाकिया में अविवाहित मां नया शब्द नहीं है । यह इन लोगों के लिए आज सामान्य बात है । विश्वविद्यालय में पढ़नेवाली अधिकतर लड़कियां खुशी से अविवाहित मां बनना चाहती हैं ।

इस विषय पर चेकोस्लोवाकिया में अनेक लोगों से जो चर्चा हुई उसके कुछ अंश ज्ञानवर्धन के लिए प्रस्तुत हैं ।

कोशित्से (स्लोवाकिया) इंजीनियर कातेरिना के अनुसार— "विश्वविद्यालय के पहले वर्ष में ही मेरी मित्रता एक लड़के से हो गयी । पढ़ाई समाप्त होने के पश्चात हमने विवाह किया लेकिन दुर्भाग्यवश मैं मां नहीं बन सकी । फिर भी किसी प्रकार दो वर्ष तक हम साथ रहे । डॉक्टरों ने बताया कि हम दोनों ही ठीक हैं लेकिन फिर भी हमारे आंगन में कोई फूल नहीं खिल सका । बच्चे के लिए मेरा मन बहुत आतुर था लेकिन फिर हम जुदा हो गये और अलग-अलग रहने लगे । मैं बहुत परेशान थी । इसी बीच मेरी मित्रता एक विवाहित पुरुष से हो गयी । दो मास के पश्चात ही मुझे पता चला कि मैं मां बननेवाली हूं । यह जानते हुए भी कि आगे क्या होनेवाला है, मैं पूर्णतया संतुष्ट थी । वह भी होनेवाले बच्चे को अपने पास ही रखना चाहता था । मेरा अपना मकान था, वेतन अच्छा था । इसलिए तुरंत ही मैंने उस व्यक्ति से संबंध तोड़ दिये । जैसे ही मेरे पहले पति को पता चला कि मैं मां बननेवाली हूं वह उसी समय मेरे पास आया तथा साथ रहने का आग्रह किया । और हम पुनः

साथ-साथ रहने लगे । हमारे एक बेटा पैदा हुआ जो आज तेरह मास का है । सबसे ज्यादा प्रसन्न वह अपने पिता (अर्थात मेरे पहले पति) के साथ रहता है । आज अपने तीन सदस्यीय परिवार पर मुझे बहुत गर्व है ।"

बहुत-सी महिलाएं इस बात पर बल देती हैं कि ऐसे पुरुष जिन्हें वे अपने बच्चों का पिता बनाना चाहती हैं, बहुत कम हैं और यदि हैं भी तो वे विवाहित हैं इसलिए भी वे अविवाहित मां ही रह जाती हैं । तलाक यहां बहुत जल्दी हो जाते हैं । बहुत-सी लड़कियां सोचती हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलाक के पश्चात भी अकेले ही रहना पड़ेगा इसलिए वे विवाह और तलाक की नौबत ही नहीं आने देतीं और अविवाहित मां की भांति ही जीना ज्यादा पसंद करती हैं। बहुत-सी महिलाओं को एक बच्चे का पालन-पोषण करना अत्यंत सरल लगता है इसलिए वे विवाह के अन्य झंझटों में न पड़कर अविवाहित मां की तरह ही जीवन व्यतीत करती हैं।

सलाह अविवाहित मांओं को

अविवाहित मां के अनुभव भी कम दिलचस्प नहीं होते हैं। एक अविवाहित मां के अनुसार—

"अविवाहित मां की तरह ही मैंने अपनी बेटी का पालन-पोषण किया। जब वह इक्कीस वर्ष की हुई तो वह भी अविवाहित मां बन गयी। पुत्र को जन्म देने के डेढ़ वर्ष पश्चात तक मेरी बेटी बिलकुल कहीं नहीं गयी। विवाह के नाम से ही जैसे उसे घृणा हो गयी थी। क्रिसमस के समय मेरी पड़ोसिन की बेटी उसे बुलाने आयी ताकि नाच-गाने से उसका मन थोड़ा बहल जाए। बहुत देर तक वह जाने के लिए राजी नहीं हुई लेकिन जब हम दोनों ने ही उसे बाध्य किया तो हमसे परेशान होकर वह वहां चली गयी। वहां उसका परिचय एक ऐसे व्यक्ति से हुआ, जो उससे मित्रता करने का बहुत इच्छुक था। मेरी बेटी ने एकदम स्पष्ट बता दिया कि वह एक अविवाहित मां है। उस व्यक्ति ने कहा उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता।

उस समय वह छोटा बच्चा केवल अठारह मास का था और आज उसकी उम्र आठ वर्ष की है। उसकी पांच वर्षीय छोटी बहन भी है लेकिन उसे इस बात का पता बिलकुल नहीं है कि उसके पिता कोई और हैं। हम अनेक बार सोचते हैं कि उसे यह बात बता दी जानी चाहिए या नहीं लेकिन मेरा दामाद कहता है कि इस बारे में हमें परेशान नहीं होना चाहिए, वक्त आने पर वह उसे स्वयं सब कुछ बता देगा।

मैं सब अविवाहित माताओं को यह सलाह देना चाहती हूं कि वास्तव में बच्चे का असली पिता वही है, जो उसकी देखभाल करता है। मेरे विचार में अविवाहित व तलाकशुदा मां में कोई अंतर नहीं है। प्रत्येक अविवाहित मां को यदि संभव हो तो बच्चे के जन्म के दो वर्ष पश्चात अवश्य विवाह कर लेना चाहिए। उसे केवल यह नहीं देखना चाहिए कि वह व्यक्ति देखने में सुंदर है या फिर उसे मनोरंजन करना आता है या नहीं। जिंदगी केवल मनोरंजन ही नहीं बल्कि समस्याओं से परिपूर्ण है।"

कुछ लोगों का विचार है कि अविवाहित मां अकेले होने के कारण तथा काम से थकी होने के कारण अपने बच्चे का पालन-पोषण करने में असमर्थ होती हैं लेकिन फिर यही स्थिति तलाकशुदा या विधवा मां के साथ भी तो होती है! अंत में तीनों ही एकाकी हो जाती हैं।

पहले नहीं थी ऐसी स्थिति

चेकोस्लोवाकिया में पहले स्थिति ऐसी नहीं थी। जनमत अविवाहित माताओं के विरुद्ध था। उस समय भी कुछ लड़कियां ऐसी थीं जो अविवाहित मां बन जाती थीं और किसी कारणवश विवाह नहीं कर पाती थीं। कुछ महिलाएं जो कामकाजी महिलाओं के छात्रावास में रहती थीं, बच्चे को अपने पास नहीं रख सकती थीं। उनके लिए बहुत समस्याएं थीं। ऐसी स्थिति में वह किसी निस्संतान दंपति को ढूंढ़ती थीं और उनसे बच्चे को अपनाने की प्रार्थना करते हुए कहती थीं, "मेरे बच्चे को अपना लीजिए, मैं इसे घर नहीं ले जा सकती क्योंकि मेरे पिताजी मुझे वहां जाने पर मार डालेंगे, इसके अतिरिक्त मेरे पास कोई चारा नहीं है।" उस समय अविवाहित मां की आर्थिक स्थिति भी ज्यादा अच्छी नहीं थी। हालांकि उस समय भी बच्चे के पिता की तरफ से खर्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...चे का असली पिता वही
...रता है । मेरे विचार में
...मां में कोई अंतर नहीं
...को यदि संभव हो तो
...ज्ञात अवश्य विवाह का
...यह नहीं देखना चाहिए
...र है या फिर उसे
...ा नहीं । जिंदगी केवल
...मस्याओं से परिपूर्ण

...है कि अविवाहित मां
...ा काम से थकी होने
...पालन-पोषण करने में
...फिर यही स्थिति
...के साथ भी तो होती
...की हो जाती हैं ।

ऐसी स्थिति

...हले स्थिति ऐसी नहीं
...माताओं के विरुद्ध
...लड़कियां ऐसी थीं जो
...थीं और किसी
...पाती थीं । कुछ
...हिलाओं के छात्रावास
...ने पास नहीं रख
...हुत समस्याएं थीं ।
...निस्संतान दंपति को
...को अपनाने की
..., "मेरे बच्चे को
...नहीं ले जा सकती
...हां जाने पर मार
...पास कोई चारा नहीं
...त मां की आर्थिक
...हीं थी । हालांकि उस
...तरफ से खर्चा

...हता था, चार माह का प्रसूति अवकाश और ...शु गृह की सुविधा भी थी । यह सब कुछ ...ते हुए भी बहुत कम लड़कियां ही अविवाहित ...बनने के लिए तैयार होती थीं ।

...न १९५८ से पहले ऐच्छिक गर्भपात भी ...ल नहीं था । लेकिन तब से स्थिति बहुत ...ल गयी है । सन १९५८ से गर्भपात कानून ...ई अवस्था हो जाने के कारण जो स्त्री गर्भपात ...न चाहती थी, उसे स्वीकृति के लिए एक ...र्ग के समक्ष प्रस्तुत होना पड़ता था । ...र्ग के समक्ष प्रस्तुत होना थोड़ा अटपटा तो ...रूर लगता था लेकिन अधिकतर गर्भपात ...ी अनुमति मिल ही जाती थी ।

परिवर्तन १९८८ से

...लेकिन १९८८ से स्थिति एकदम बदल गयी ...। अब इस प्रकार के आयोग की स्वीकृति की ...बिलकुल आवश्यकता नहीं है । यह केवल ...विवाहित मां पर ही निर्भर करता है कि वह मां ...न चाहती है या नहीं ।

...इन तीस वर्षों के अंदर लोगों के विचारों में ...काफी परिवर्तन आया है । अब कोई भी ...ता अपनी बेटी के अविवाहित मां बनने पर ...को जान से मारने की धमकी नहीं देता । यद्यपि ...ता-पिता अपनी बेटी के अविवाहित मां बन जाने पर ज्यादा प्रसन्न नहीं होते फिर भी वह परिस्थितियों से समझौता कर लेते हैं और प्रत्येक कार्य में उसकी सहायता करते हैं ताकि उसे कोई कठिनाई महसूस न हो ।

सरकारी सुविधाएं

इस समय अविवाहित मां को सरकार से काफी सुविधाएं उपलब्ध हैं । जो ऋण सरकार द्वारा नवदंपति को मिलते हैं, वही ऋण अविवाहित मां को भी उपलब्ध हैं । मकान के आवंटन में भी अविवाहित मां को प्राथमिकता दी जाती है । जब तक अविवाहित मां काम पर नहीं जाती या बच्चा शिशु गृह में नहीं जाता तब तक उसे सरकार से आर्थिक सहायता, प्रसूति अवकाश व अन्य सुविधाएं भी मिलती रहती हैं । इस प्रकार अविवाहित मां आर्थिक रूप से अब एकदम स्वतंत्र हो गयी है । वह कहीं भी किसी भी जगह आ-जा सकती है । वह कहीं भी रह सकती है । कोई भी इस बात की ओर बिलकुल ध्यान नहीं देता कि वह अविवाहित है या तलाकशुदा । इसलिए आज अधिकांश लड़कियां अविवाहित मां बनना ज्यादा पसंद करती हैं । चेकोस्लोवाकिया की अपेक्षा पूर्वी जरमनी में अविवाहित माताओं की संख्या काफी अधिक है ।

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार सन १९८५ से ९० के दौरान भारत में प्रति व्यक्ति की औसत आयु बढ़कर ५७.८ वर्ष हो गयी है, जबकि विश्व में सबसे अधिक जापान में ७८.२ वर्ष है, जिसमें पुरुषों की औसत आयु ७५.४ और महिलाओं की ८१.१ वर्ष है, लेकिन भारत में पुरुषों और महिलाओं की औसत आयु लगभग बराबर ही है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरमन एकीकरण

सागर की लहरों को स्पर्श करता हांगकांग का हवाई अड्डा। ब्रिटिश एयरवेज (बि.ए) का जेट हांगकांग-बंबई-लंदन यात्रा के लिए तैयार खड़ा था। प्योंगयांग, उत्तरी कोरिया की राजधानी में एक सप्ताह तक आकाशवाणी के विशेष संवाददाता के रूप में दक्षिण-दक्षिण सहयोग संबंधी गुटनिरपेक्ष देशों के सम्मेलन के समाचार देने के बाद १६ जून १९८७ की उस रात मैं भी स्वदेश वापस लौट रहा था। मेरे बैठने के तुरंत बाद एक गोरे सज्जन मेरी बगल की सीट पर आकर बैठे। विमान कुछ देर बाद ही रवाना हुआ और उसके साथ ही हम लोगों की औपचारिक-शिष्टाचार विनिमय के बाद हलकी-फुलकी बातचीत।

विमान की कार्यदक्ष परिचारिकाओं ने जल्दी ही कुछ पेय दिये और फिर भोजन। काफी दिनों बाद भारतीय भोजन परोसा गया था। उसे देख और करने के बाद बड़ा संतोष अनुभव हुआ। इसी दौरान मेरे सहयात्री ने (उनका नाम हैंस मान लेते हैं।) मुझे बताया कि वे चीन से लौट रहे हैं और जरमन इंजीनियर हैं। मेरे पूछने पर उन्होंने कहा कि वे अपनी मां और पत्नी के साथ पूर्व-जरमनी में यानी (बर्लिन के पूर्वी हिस्से में रहते हैं और उनकी दो पुत्रियां अपने पतियों के साथ पश्चिम-जरमनी में। उनके पास पारिवारिक सदस्यों के चित्र थे। कुछ सामिग्री बड़े गर्व से भी उन्होंने दिखलायी।

अपनी बेटियों और उनके बच्चों के चित्र दिखलाते हुए हैंस की आंखें नम हो आयीं और कहने लगे कि ना जाने वह दिन कब आएगा जब हम लोग एक दूसरे से मिलने के लिए पूर्ण स्वतंत्र होंगे और बर्लिन दीवार से छुटकारा पा खुली हवा में सांस ले सकेंगे। एक उच्छवास के साथ उन्होंने विश्वास व्यक्त किया लेकिन एक दिन ऐसा आएगा जरूर! जल्दी ही।

इतिहास परिवर्तन से बेखबर

जब बातचीत हो रही थी, उस समय किसी को पता नहीं था कि ५८ वर्ष का इतिहास बदल जाएगा। स्वतंत्र चुनाव होंगे, जिनमें पूर्व-जर्मनी के लोगा बिना किसी दबाव के मत डाल सकेंगे। अनेक दल तो चुनाव में भाग लेंगे लेकिन उनका चुनाव-नारा एक ही होगा और वह होगा "जरमन राष्ट्र के दोनों भागों का एकीकरण।" हां, यह एकीकरण कितने गति से हो, यह मतभेद का विषय हो सकता है। मार्च १९९० के चुनावों के परिणामों ने सिद्ध कर दिया है कि साथ पूर्वजरमनवासी एकीकरण चाहते हैं और वह भी शीघ्रातिशीघ्र। जरमन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

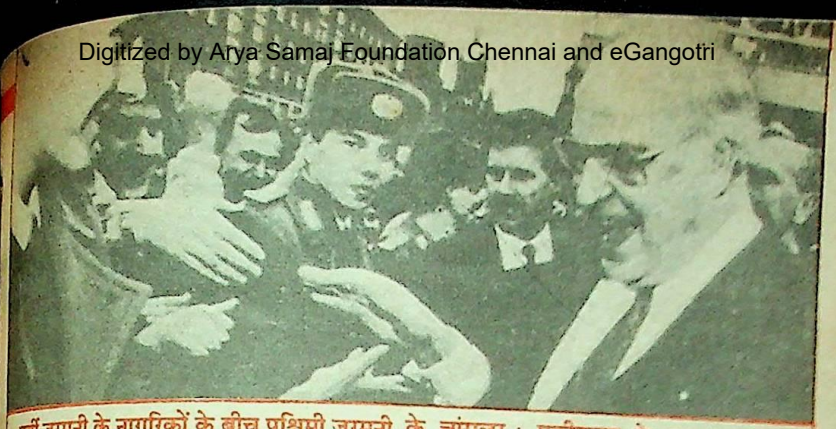

पूर्वी जरमनी के नागरिकों के बीच पश्चिमी जरमनी के चांसलर : एकीकरण के सूत्रधार

फ्रांस के एक विचारक के अनुसार जरमनी के लोगों ने लोकतंत्र की उपयोगिता को समझ लिया है । वे उसके आदर्शों को मन के साथ बांध चुके हैं । उन्होंने जितना भी संभव है, अपने विश्वासों को व्यावहारिक और कार्यरूप में दिखला दिया है । वे सीख गये हैं कि सबके साथ सहयोग में ही उनकी खुशहाली है ।

...भरते हुए सवाल

● राधानाथ चतुर्वेदी

राजनयज्ञ डॉ. कोनराड सीट्ज के शब्दों में यह एकीकरण केवल जरमनी का ही नहीं होगा— यह एकीकरण यूरोप के द्वितीय महासमर के अंत में यूरोप के कृत्रिम विभक्तीकरण की भी समाप्ति कर देगा ।

एकीकृत जरमनी की सीमाएं

यह सच है कि विभक्त-जरमनी के एकीकरण का संबंध भावनात्मक ही नहीं आर्थिक-सामाजिक और राजनीतिक अनिवार्यताओं से भी जुड़ा है और यह भी तथ्य है कि इस समय जरमनवासी, चाहे वे पूर्व के हों या पश्चिम के 'जरमन यूरोप' नहीं, 'यूरोपियन जरमनी' चाहते हैं, लेकिन नाजी-जरमनी ने, जिसे 'थर्ड रीश' भी कहते हैं, जो कार्य किये थे, उनकी वजह से पोलैंड आदि-जैसे छोटे राष्ट्र सशंक दृष्टि से देखते हैं । इन छोटे-छोटे यूरोपीय राष्ट्रों के बहुत से निवासी जब नाजी अत्याचारों और बर्बरताओं का स्मरण करते हैं तो उनके दिल दहल जाते हैं । अमरीका में रहनेवाले यहूदी-अमरीकी तथा अन्य देशों के यहूदी भी कुछ कम, कुछ ज्यादा, पर घबराते अवश्य हैं । ऐसा नहीं है कि मित्र-राष्ट्रों को युद्ध-समाप्ति के समय पता नहीं था कि एक न एक दिन जरमनी एकता के सूत्र में ग्रंथित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य होगा लेकिन वह समय दूर है, यह सोचकर मौन धारण कर लिया गया था ।

सन १९४५ में युद्ध की समाप्ति सन्निकट थी, उस समय भी युद्धोत्तर-जरमनी की सीमाओं के विषय में पोट्सडैम सम्मेलन में विचार हुआ था और मित्रराष्ट्र इस बात पर सहमत थे कि जरमनी के जो हिस्से पश्चिमी पोलैंड को दे दिये गये हैं— वे पोलैंड के पास ही रहेंगे । बहुत-से लोगों को याद होगा कि पोलैंड में कुछ जरमन बहुल क्षेत्र थे । उन तक पहुंचने के लिए हिटलर ने डांजिंग पट्टी की मांग की थी । और फिर उसे लेने तथा अन्य मांगों को लेकर युद्ध छेड़ दिया था । यह घटना १ सितंबर १९३९ को हुई थी । यही कारण है कि ओडर-नीस के क्षेत्र पोलैंड को दे दिये गये थे लेकिन पोट्सडैम सम्मेलन ने अंतिम सीमाएं निर्धारित नहीं की थी । उस समय कह दिया गया था कि जब शांति संधि होगी तो यह प्रश्न तय कर दिया जाएगा । शांति-संधि हुई नहीं और निर्णायात्मक रूप से इस प्रश्न का फैसला हुआ नहीं ।

सन १९५१ में अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस ने पश्चिम जरमनी से कहा था कि वे जरमन एकीकरण का तभी समर्थन करेंगे जब जरमनी यह आश्वासन देगा कि उसकी जो युद्धोत्तर सीमाएं हैं, वह अपने आपको उन्हीं तक मर्यादित रखेगा । उस समय जरमनी की प्रतिक्रिया बड़ी तीखी हुई थी । तत्कालीन पश्चिम-जरमन प्रधानमंत्री कोनराड ने कहा था कि अगर मित्रराष्ट्र ऐसी शर्त लगाएंगे तो उनके देश को सोचना पड़ेगा कि वह उत्तर अटलांटिक संधि संगठन 'नाटो' का सदस्य बनना स्वीकार करे या नहीं । लेकिन मित्रराष्ट्र अपनी बात पर दृढ़ रहे । कोनराड चुप्पी साध गये और बात आयी-गयी हो गयी ।

वर्तमान प्रधानमंत्री हेलमट कोहल ने एकीकरण की दस-सूत्री योजना रखी— लेकिन उसमें सीमाओं का कोई जिक्र नहीं है । जब उनसे प्रश्न किया गया तो उनका उत्तर था कि इस समय जरमनी वर्तमान सीमाओं में कोई परिवर्तन नहीं चाहता— लेकिन भविष्य के संबंध में वे कुछ नहीं कह सकते । लेकिन हाल में जरमन विदेश मंत्री श्री गेशनर ने कनाडा, (ओटावा) में कहा है कि जरमनी अपने पड़ोसी देशों के किसी क्षेत्र को नहीं चाहता । उसकी कोई क्षेत्रीय-महत्त्वाकांक्षाएं नहीं है । परंतु पोलैंड संतुष्ट नहीं है । उसका कहना है कि पश्चिम-जरमनी के प्रधानमंत्री का मौन असंदिग्ध प्रश्न पर संदिग्ध स्थिति का जनक है ।

मित्र राष्ट्रों का मत

मित्र राष्ट्र इस विषय में एकमत है । सोवियत संघ ने तो अपनी स्थिति पहले ही स्पष्ट कर दी है । अमरीका ने कह दिया है कि वह वर्तमान यूरोप के मानचित्र में किसी भी देश की सीमारेखाओं में किसी भी परिवर्तन का समर्थक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। फ्रांस पक्के तौर पर ओडर-नीस रेखा का समर्थक है। ब्रिटेन का भी यही मत है, हालांकि उसने सार्वजनिक रूप से कोई ऐलान नहीं किया है। लेकिन एक बात तय है कि अगर पश्चिम-जरमनी से इस समय सन १९५१ की तरह स्पष्ट रूप से बात कर ली जाए तो उच्चतम स्तर पर वर्तमान सीमाओं के संबंध में उसका वचन प्राप्त किया जाएगा और इस तरह पूर्व यूरोप तथा फ्रांस आदि जैसे देशों के कुछ हलकों में जो भय व्याप्त है, वह बहुत हद तक दूर हो जाएगा।

भय और आशंका के आधार

ये जरमनी के पड़ोसियों की आशंकाओं और भय के आधार हैं— और सुदृढ़ आधार हैं। लगभग पैंतालिस वर्ष तक अपने आपको हिटलर की अग्नि में जलाने के बाद, अपनी अस्मिता को अजनबीपन की गहराइयों में डुबाने के बाद अब जरमनी नये रूप में संसार में अवतरित होने के लिए तैयार हो रहा है। बड़े जतन से बनायी गयी लोहे-इस्पात से भी पुख्ता बर्लिन की दीवार गिर चुकी है। अगले छह-सात मास या संभवतः कुछ और भी जल्दी लगा— जरमनी की नियति के दर्शन वहां के लोगों को होनेवाले हैं। आठ करोड़ जरमनी के लोग उस क्षण की व्याकुल प्रतीक्षा में हैं। जो काम सरदार पटेल ने भारत की छह सौ से भी ज्यादा देशी रियासतों और रजवाड़ों के विलय से किया था, वही सन १८१५ में जरमनी में बिस्मार्क ने किया था। बिस्मार्क ने लगभग १८०० छोटी-छोटी जर्मीदारियों को मिलाकर जरमनी बनाया था। आज दोनों जरमन-भागों को एकता के सूत्र पाश में आबद्ध करने के लिए

सान्निध्य का क्षण

यह विदाई का नहीं है,
है हमारे स्नेह का
सान्निध्य का क्षण
उसी क्षण के हम सभी
समवेत कण हैं
एक यात्रा के पथिक हम
हम क्षणिक हैं किंतु
यात्रा यह सनातन
अभिव्यक्ति का अभियान यह
शाश्वत चिरंतन
अभिव्यक्ति जो चैतन्य की गंगा
सींचती है जो हमारी चेतना की भूमि
और जो देती क्षितिज हमको
हम क्षितिज के पुत्र हैं
हम भगीरथ भी
हम रथी हैं, सारथी भी
और हैं रथ भी
यज्ञ हैं हम, मंत्र भी हैं
और दृष्टा भी
हम स्वयं ही अग्नि हैं
हम साधना हैं और समिधा भी

बी ८, एन.डी.एस.ई. पार्ट २ नयी दिल्ली-११००४९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटिबद्ध श्री कोहल की तुलना बिस्मार्क से की जा रही है । 'हम भी कुछ हैं' की भावना जोर पकड़ रही है । सच भी है, संयुक्त जरमनी के सामने सारे यूरोपीय देश बौने-से लगेंगे ।

आर्थिक और सैनिक शक्ति

पूर्व और पश्चिम जरमनी की संयुक्त सैनिक शक्ति देखी जाए तो पता लगेगा कि उनके पास अठारह लाख सैनिक हैं, जिनमें नियमित और आरक्षित दोनों किस्मों के सैनिक शामिल हैं । यूरोप के किसी एक देश के पास इतनी बड़ी फौज आज भी नहीं है । इनमें इतनी बड़ी सेना रखने की क्षमता भी नहीं है । भले ही पूर्वी जरमनी कुछ उन्नीस पड़ता हो लेकिन जहां तक पश्चिम-जरमनी का संबंध है उससे मिलने के बाद नियति आधारित जरमन-व्यवस्था के उत्पादन के आगे यूरोपीय समुदाय का कोई देश टिक नहीं पाएगा । युद्धोत्तर जरमनी— विभाजित जरमनी लड़ाई के बाद की व्यवस्था को निर्धारित करनेवाला अनिवार्य तत्व था । जब यह लुप्त हो जाएगा तो एक तरफ यूरोपीय-समुदाय के देशों को और दूसरी तरफ अमरीकी सैनिक समर्थित उत्तर अटलांटिक संधि संगठन के सदस्यों को पारस्परिक संबंधों की समीक्षा ही नहीं पुर्नव्याख्या और परिभाषा फिर तैयार करनी होगी । लेकिन इन बातों का जरमनों पर कोई असर नहीं है । उनका कहना है कि हमें कुछ बनकर दिखाना है— करके तो दिखा ही दिया ।

यों सोवियत संघ या अमरीका की तुलना में संयुक्त जर्मनी कोई विश्व महाशक्ति नहीं बन सकेगा और न ऐसा दावा ही कर सकता है । न तो वह इन दो महाशक्तियों के बराबर क्षेत्रफल के स्वामित्व की बात कर सकता है और न उसकी बड़ी जनसंख्या की शेखी बघार सकता है । उसके पास कोई बड़ी नौसेना भी नहीं है— परमाणुचालित पनडुब्बियों की तो बात ही छोड़नी होगी । जरमनी के पास कोई परमाणु अस्त्र-शस्त्र नहीं है । कोई अंतरराष्ट्रीय उत्तरदायित्व नहीं है । हां, व्यापार करने के सिवा आर्थिक-उन्नति के लक्ष्य को छोड़ और कोई जिम्मेदारी नहीं है । विश्व-शक्ति होने के बावजूद सोवियत प्रभाव क्षेत्र में पहले दरार पड़ी और अब वह बर्लिन दीवार की तरह टुकड़े-टुकड़े होकर गिर रहा है ।

निर्यात मूलक अर्थव्यवस्था

अभी हमने चर्चा की है कि जरमनी के सामने आर्थिक-लक्ष्य के सिवा अन्य कोई उद्देश्य नहीं हैं । इस समय भी उसकी स्थिति अत्यंत सुदृढ़ है । निर्यात के क्षेत्र में जहां सोवियत संघ का निर्यात सबसे कम लगभग ११०० अरब डॉलर है, जापान का २६४१ अरब डॉलर है, अमरीका का ३२१० अरब डॉलर है, वहीं संयुक्त-जरमनी का निर्यात ३५४० अरब डॉलर है । अतएव यों भी जरमनी के दोनों भाग निर्यात व्यापार के शिखर पर आसीन हैं । हां, व्यापार संतुलन क्षेत्र में वह स्थान जापान को प्राप्त है ! उसका भुगतान संतुलन ७७५ अरब डॉलर है । संयुक्त जरमनी का ७३९ अरब डॉलर है । इसका मतलब है कि जापान अपने व्यापार से संयुक्त जरमनी की तुलना में ज्यादा मुनाफा कमा रहा है । सोवियत संघ और अमरीका दोनों ही इस मामले में पिछड़े हुए हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकीकरण का मूल्य

...न-जरमनी को एकीकरण का मूल्य चुकाना ...ा। जहां तक पूर्व-जरमनी का संबंध है, ...की अर्थ-व्यवस्था सर्वथा जर्जर है। कब ...स्त गिर पड़े— कोई नहीं कह सकता। ...त तो यह है कि निर्धनता का पहाड़ टूटकर ...न-जरमनी में आ गिरेगा। यह मत है ...ल पश्चिम-जरमनवासियों का। और खर्च ...ड़े— केवल स्वास्थ्य तथा चिकित्सा-जैसी ...ाजिक सेवाओं को ही ले लें तो पूर्व-जरमनी ...क्षेत्र पर पश्चिम जरमनी को ६ खरब डॉलर ...लगभग ६० अरब रुपयों) का खर्च वहन ...ना पड़ेगा। यह कोई मामूली रकम नहीं है। ...र्व-जरमनी की अर्थव्यवस्था की पुर्नरचना से ...लगभग १४ लाख व्यक्ति बेकार हो जाएंगे। ...लस्वरूप पश्चिम जरमनी के लोगों को अधिक ...र-भार उठाना पड़ेगा। लोगों की बचत पर ...सीधा प्रभाव पड़ेगा। मुद्रास्फीति रोकने के ...ए पश्चिम जरमन को बैंकों को ब्याज की दर ...बढ़ानी होगी। हो सकता है, पश्चिम जरमनी में ...गों को अपने वेतन भी घटाने पड़ें। लेकिन ...र्व-जरमन अपने परिश्रम, त्याग और बलिदान ...से पश्चिम-जरमन बंधुओं के सहयोग से यह ...स्थिति तत्काल नहीं तो कुछ समय बाद संभाल ...लेंगे— ऐसी उनको आशा है।

राजनीतिक-विचार मंथन

...मिक-व्यवस्था की बात के अलावा एक और ...प्रश्न भी इस समस्या का है। वह है— ...राजनीतिक चिंताधारा-ऊहापोह और मंथन, ...झकझोर। जरमनों का युवा वर्ग कुछ सशंक ...। उसका कहना है कि कहीं एकीकरण से ...नई राष्ट्रीयतावादी उग्रधारा न बहने लगे। उग्र-राष्ट्रवाद के कारण जिस नाजीवाद ने जन्म लिया था— उसकी सर्वाधिक कीमत जरमन युवकों ने ही चुकायी थी— यह बात तरुणवर्ग भूला नहीं है। लेकिन प्रौढ़ जरमनों का कहना है कि वे नाजीवाद किसी भी हालत में पनपने नहीं देंगे। आज वे लोग जरमनी में नहीं रहे हैं जिन्होंने हिटलर और उसके साथियों का समर्थन किया था। वह सन ३० का दशक था— यह बीसवीं सदी का आखिरी और दसवां दशक है। उनका कहना है कि हमने नाजीवाद और उग्रवाद, सैन्यवाद के परिणामों के बोधपाठ को भलीभांति हृदयंगम कर लिया है। जरमनी के पड़ोसी और पोलैंड के बाद सर्वाधिक क्षति उठानेवाले देश फ्रांस के एक विचारक के अनुसार जरमनी के लोगों ने लोकतंत्र की उपयोगिता को समझ लिया है। वे उसके आदर्शों को मन के साथ बांध चुके हैं। उन्होंने जितना भी संभव है, अपने विश्वासों को व्यावहारिक और कार्यरूप में दिखला दिया है। वे सीख गये हैं कि सबके साथ सहयोग में ही उनकी खुशहाली है।

जरमन-एकीकरण से हैंस और उनकी पत्नी जैसे नाना-नानी अपने पोते-पोतियों, पुत्रों और पुत्र-बधुओं से मिल सकेंगे— यह खुशी की बात है। लेकिन यह पुनर्मिलन अन्य देशों के परिवार-जनों को उग्र जरमन राष्ट्रवाद द्वारा वियोग की आग में नहीं झोंकेगा— भविष्य से यही आशा हमें करनी चाहिए। यही जरमनी एकीकरण की दीर्घ गाथा की सुखांत दिशारेखा है।

— फ्लैट नं. ८, मैत्री अपार्टमेंट्स ए-३,
पश्चिम विहार नयी दिल्ली-११००६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपी दुपहरी जेठ की

● भगवती प्रसाद डोभाल

प्रकृति की विचित्र लीला है । मनुष्य मात्र उसका मूक दर्शक है, आनंद लेता है । कुछ करने की सोचे भी तो उसके बस से बाहर है । वर्षभर में प्रकृति कितने ही परिधान बदलती है जो इसके जीवंत होने का प्रतीक है । प्रकृति के परिधानों को बदलने में सूर्य की अहं भूमिका है । एक के बाद एक चादर बदल कर ओढ़ने की इस कला में ऐसा लगता है-जैसे सूर्य पृथ्वी और चंद्रमा के बीच कोई समझौता हो रखा है । उसी के अनुसार सूर्य अपनी ऊष्मा पृथ्वी को देता है । और पृथ्वी उस ऊष्मा का भरपूर फायदा उठाती है ।

बर्षभर के बारह महीनों की तबदीली भी पृथ्वी पर सूर्य-चंद्र और नक्षत्रों के आपसी ताल-मेल का परिणाम है । इसीलिए हमारे यहां वर्ष का पहला महीना चैत्र का होता है और तीसरा महीना जेठ का । इस मास की पूर्णिमा के दिन चंद्रमा जेष्ठा नक्षत्र में रहता है । ग्रीष्म ऋतु का यह पहला महीना और संवत् का तीसरा मास है ।

रंग-बिरंगी चादर

बसंत की रंग बिरंगी चादरें अपना रूप इस ऋतु में बदल देती हैं । और ऐसा लगता है कि सूर्य इस ऋतु में पृथ्वी से यह समझौता कर आता है कि मैं सबसे ज्यादा तपाने का समय तुमसे लूंगा । जेठ की दुपहरी जहां व्यक्तियों को कुम्हलाकर वृक्षों की छाया तले सुस्ताने को बाध्य करती है, वहीं वनस्पतियां खुश मिजाज से फूलने के बाद फलती हैं । बसंत की आम्र-बौर बदलकर फलों के राजा आम को पेश करती है और शिशिर की नंगी शाखायें इस जेठ की तपन में ऐसा सुंदर हरित आवरण पत्तियों के द्वारा ओढ़ लेती हैं, कि मन करता है वातानुकूलित कमरों को त्यागकर किसी घने पीपल, नीम या आम्र वृक्ष की छाया में प्रकृति का आनंद लूटें । कृत्रिम परिवेश को त्यागकर प्रकृति के साथ रमने की यह इच्छा हर व्यक्ति में लालायित रहती होगी । इसीलिए जेठ मास को देखकर ही कालिदास ने कहा होगा—

पाद : पिवन्ती पादपाः

यानी वृक्ष पैरों से जल पीते हैं, इसलिए पादप कहलाते हैं । वास्तविकता यही है । कवि भी इससे अछूता नहीं रहा । घोर गरमी में जब सारे जंतु झुलसने की स्थिति में रहते हैं, तब वनस्पतियां अपने पैरों (जड़ों) से पानी पीकर सबको हरा-भरा करने की कोशिश करती हैं ।

कवींद्र रवींद्र भी इस जेठ महीने की तपन को इस तरह अभिव्यक्त कर गये—

शीतलता का दान पान रवि किरणों का

जेठ का महीना जब अपना महीनों में बड़ा होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेठ की दुपहरी जब तपनी शुरू होती है, तब सागर को भी पी लेती है। जहां जमीन की सतह पर पानी का अभाव दिखता है, वहीं नदियों में ग्लेसियरों को पिघलाकर पानी की क्षति-पूर्ति भी कर लेती है।

का एहसास तीक्ष्ण ऊष्मा उड़ेलकर देने की प्रक्रिया में रहता है, और अधिकांश बसंतमयी वनस्पतियां फलों से लद जाती हैं, तब गुलमोहर अपने सुर्ख लाल फूलों से हमारा स्वागत करता हुआ खड़ा रहता है, तब कवि मन भी दहक उठता है—

'डारन पै डोलत अंगारन के पुंज हैं'

या इस तरह से—

आगसी लगी है बन बागन बसंत में'

प्रकृति के इस मायारूप पर स्वयं श्रीकृष्ण ने भी श्रीमद्भागवत में कहा है—

'पत्रपुष्पफलच्छायामूलवल्कलदारुभि ।
गंधनिर्यासभस्मास्थित तोक्मैं कामान्वितन्वते'

अर्थात—वृक्ष का जीवन सर्व श्रेष्ठ है। संसार भी तो सनातन महावृक्ष है। इसकी जड़ें तना, डालियां, पत्ते फूल तथा फल संसार का ही तो प्रतीक हैं।

प्राण फूंकती हैं

वास्तव में हमारी संस्कृति के वाहक यही वृक्ष हैं। मनुष्य मात्र निहित स्वार्थ से भरा है। वनस्पतियां अपना थोड़ा जीवन भी संसार पर न्यौछावर कर देती है। जेठ का महीना व्यक्ति को तपन से झुलसाने वाला लगता है लेकिन रवि किरणें वनस्पतियों के माध्यम से हमें प्राण देती रहती हैं। कितना आश्चर्यजनक है यह संतुलन प्रकृति का—

जेठ की दुपहरी जब तपनी शुरू होती है, तब सागर को भी पी लेती है। जहां जमीन की सतह पर पानी का अभाव दिखता है, वहीं नदियों में ग्लेसियरों को पिघलाकर पानी की क्षतिपूर्ति भी कर लेती है। यह अहसास नहीं होने देती की तुम प्यासे ही प्राणांत कर दो। प्रकृति की रग-रग को भिगोने वाली वर्षा की प्रत्येक बूंद भी जेठ की तपन के भीतर छिपी होती है। धरती पर फलों से लदा जेठ, आसमान में घने मेघों को समेटता रहता है। इसीलिए इस जीवंत प्रक्रिया को अपने में समेटे जेठ की तपन महीनों में अपनी जेष्ठता की भी गरिमा लिए हुए है। हर मायने में अन्न-धन्न का यह वाहक महीना है। इसी मास एक पर्व गंगा दशहरा भी आता है। शायद इस दशहरे का भी सांकेतिक अर्थ यही है कि, अवश्य प्रकृति के साथ नहायें और मनुष्य उसकी समीपता का आनंद ले।

आप यदि इन दिनों पर्वतों में पहुंचे हों तो फलों से लदे झुरमुटों और पेड़ों को देखकर आनंदित हो जाएंगे। इस समय लगता है वनस्पतियां फलों को बांटने के लिए आतुर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका भरोसेमंद फ़ैरेक्स, अब 'स्वाद में सबसे आगे'!

जब आपका शिशु ४ महीने का हो जाए, उसे नया स्वादिष्ट फ़ैरेक्स देना शुरू कीजिए. शुरू में एक छोटे चम्मच फ़ैरेक्स को ३-४ छोटे चम्मच गुनगुने पानी में मिलाकर दीजिए. फ़ैरेक्स अब पहले से भी ज़्यादा स्वादिष्ट, और पौष्टिक है.

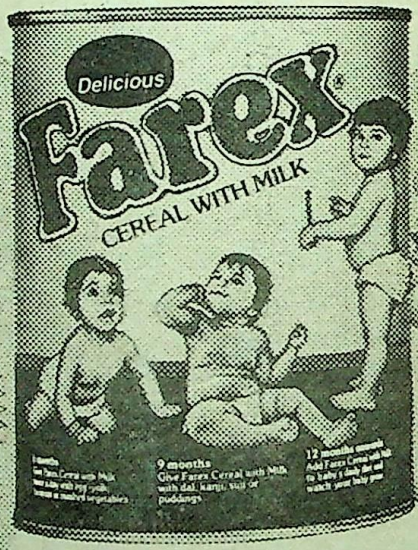

• ज़्यादा स्वादिष्ट
• ज़्यादा पौष्टिक

फ़ैरेक्स®-
स्वाद भी पाए, बढ़ता भी जाए... मुन्ना.

GX/65/173 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

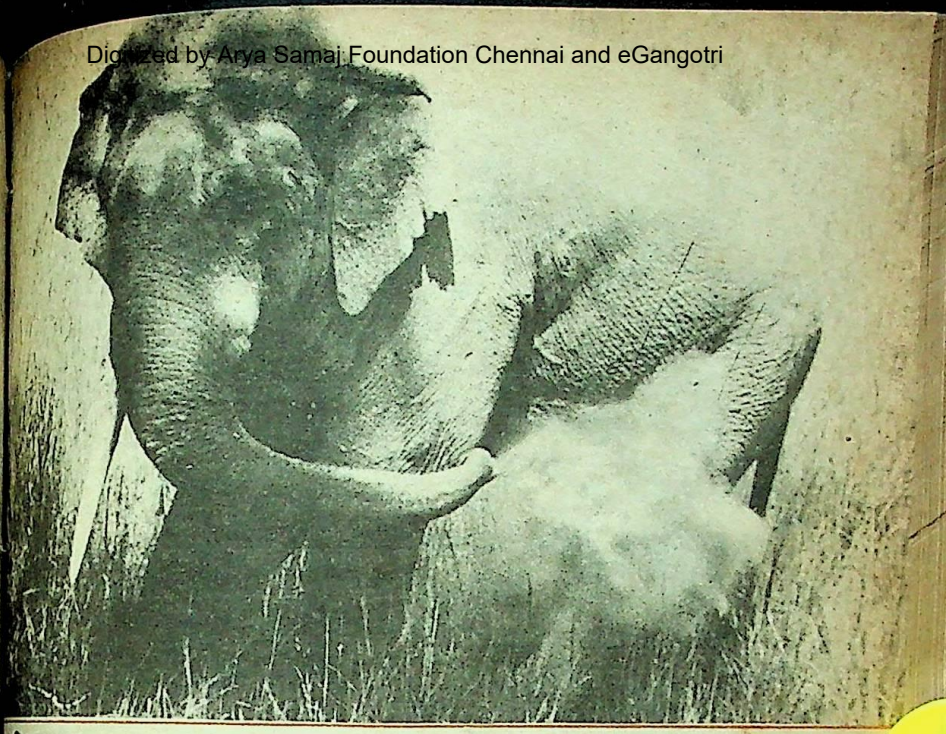

शिकार कथा

डेढ़ दांत का बदमाश हाथी

● कृष्ण मुरारी तिवारी

डेढ़ दांतवाले बदमाश जंगली हाथी का आज भी जब कभी मुझे स्मरण हो आता है, तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। काफी वर्ष पूर्व इस हाथी का आतंक-क्षेत्र हिमालय की तलहटी में फैले हल्द्वानी वन क्षेत्र के पूर्वी भाग में व्याप्त था। यहां के जंगल पहाड़ी और मैदानी, दोनों क्षेत्र में पड़ते थे। साल के घने और उत्तम कोटि के वन इस क्षेत्र के भांबर क्षेत्र में थे। लगभग एक हजार मीटर की ऊंची पहाड़ियां भी मुख्यतः साल के वृक्षों से ढकी रहती थीं। परंतु मैदानी भाग में विभिन्न प्रकार की अन्य मूल्यवान वृक्ष प्रजातियों जैसे, शीशम, सेमल, खैर, कंजू, हल्दू, फल्दू, तून आदि के वन थे। मैदानी भाग के वन क्षेत्र में कहीं-कहीं पर वृक्षों का घनत्व बहुत कम था। उत्पादकता बढ़ाने के लिए ऐसे क्षेत्रों में वृक्षारोपण की योजना चलायी जा रही थी।

इन वनों में केवल जंगली हाथियों के झुंड ही नहीं थे बल्कि शेर, तेंदुआ, चीतल, सांभर आदि जंगली जानवर भी बड़ी संख्या में थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस संस्मरणात्मक लेख के लेखक श्री कृष्ण मुरारी तिवारी का वनों से गहरा संबंध रहा है । वे भारत सरकार के वन विभाग में अनेक उच्च पदों पर कार्य कर चुके हैं । सरकार ने उनकी सेवाओं के लिए उन्हें पद्मश्री अलंकरण से सम्मानित किया है ।

उस समय इन जंगली जानवरों के सीमित शिकार की कानूनन अनुमति थी, परंतु जंगली हाथियों का शिकार एकदम मना था । इसके लिए एक अलग से हाथी संरक्षण कानून, १८८७ बना हुआ था । संभवतः इसलिए कि हाथियों की जनसंख्या वृद्धि-दर बहुत कम थी और जिंदा हाथियों के पकड़ने का प्रावधान था । इस कानून के तहत केवल ऐसे हाथियों को मारने की अनुमति थी, जो बदमाश घोषित किये जाते थे । कोई भी हाथी बदमाश तब घोषित किया जाता था, जब वह आदमियों को मारने लगता था ।

हाथी मूलतः शुद्ध शाकाहारी

यों तो हाथी शुद्ध शाकाहारी होता है । अतः वह आदमियों को क्यों मारने लगता है, अब भी एक रहस्य है । अब भी हाथी का झुंड आदमियों को कभी भी नहीं मारता है । यदि आदमी झुंड के रास्ते में गलती से आ भी जाता है, तो हाथी समूह एक तरफ हो जाता है ।

आदमियों को मारनेवाले हाथी प्रायः एकड़ होते हैं, जो अपने झुंड से निकाल दिये जाते हैं । प्रकृति ने इस जानवर की प्रजनन-प्रक्रिया में यह सुनिश्चित किया है कि भावी संतान केवल हृष्ट-पुष्ट स्वस्थ हाथियों से ही जन्मे । जब झुंड में कोई बच्चा हाथी युवा हो जाता है, तो वह झुंड के अगुवा हाथी को चुनौती देता है । दोनों में मल्ल युद्ध होता है और यदि इस मल्ल युद्ध में अगुवा हाथी हार गया, तो वह झुंड से निष्कासित हो जाता है । अब वह प्रायः अकेले वन में विचरण करता है । इस प्रकार के मल्ल युद्ध में हाथी के सामने के दांत भी कभी-कभी टूट जाते हैं ।

आतंक निष्कासित हाथी का

हलद्वानी प्रभाग का डेढ़ दांतवाला हाथी भी निष्कासित हाथी था । इस हाथी की पहचान दूर से ही हो जाती थी, क्योंकि इसका दायां दांत आधे पर से टूटा था । आदमियों को देखते ही उनकी तरफ दौड़ पड़ना, सड़क पर चलते मोटर गाड़ियों का रास्ता अवरुद्ध कर देना और आसपास के गांवों में आतंक मचाना इसकी सामान्य आदत थी ।

हलद्वानी वन क्षेत्र के पूर्वी हिस्से में जो शारदा नदी के किनारे टनकपुर तक आता था, इस डेढ़ दांतवाले हाथी के आतंक से पिछले पांच सालों से ग्रस्त था । मैं सन १९७० में यहां का प्रभागीय वन अधिकारी होकर आया । मुझे यह बताया गया कि पिछले वर्ष इस हाथी ने दो मजदूरों की हत्या कर दी थी । कई एक मजदूरों की झोपड़ियों को गिरा दिया था । और तो और मेरे पूर्वाधिकारी की चलती जीप पर पीछे से आक्रमण कर दिया था । दो माह बाद मुझे सूचना मिली कि टनकपुर के पास के वन में एक मजदूर को बदमाश हाथी ने मार दिया है । मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...निरीक्षण करने गया तो देखा कि हाथी ...दूर की झोपड़ी भी तोड़-फोड़ दी थी । ...ले माह फिर सूचना मिली कि ...पानी ब्लाक में वृक्षों को चिह्नित किये जाने ...कार्य पर गये उप राजिक की उस हाथी ने ...कर दी है । अब मेरे लिए यह आवश्यक ...था कि इस बदमाश हाथी का अंत किया ...। विभागीय अभिलेखों से मुझे पता लगा ...यह हाथी शिकारियों के चंगुल में भी नहीं ...रहा है ।

विशालकाय हाथी को बंदूक की गोली से ...आसान नहीं है, जब तक कि गोली ...के पीछे या मस्तक के उस स्थान पर न ...जहां सूड़ का मिलान लेते हुए थोड़ा हिस्सा ...फूला रहता है । मेरा स्वयं का अनुभव ...मारने का नहीं था । परंतु मैं जंगली ...के व्यवहार तथा कार्य-कलापों से ...भांति परिचित था ।

एक बार सन १९५३ में, मेरा एक जंगली ...से बड़े रोमांचक परिस्थितियों में सामना हो ...था । मैं उस समय हरिद्वार के लैंसडाउन ...प्रभाग का प्रभागीय अधिकारी था । इस ...प्रभाग में जंगली हाथियों का बाहुल्य था । ...दिन को लगभग दस बजे मोटर सड़क से ...खुली फोर्ड कार से जंगल निरीक्षण करने ...रहा था । एक घाटी पार करने पर ज्यों ही ...एक छोटे-से मैदानी भाग में आया, तो ...लगभग पचास मीटर दूरी पर एक ...काले सुडौल हाथी को खड़ा पाया । ...तो पसीने छूट गये । पर कार का चालक ...था, उसने मुझे ढाढ़स दिया कि यह ...अभी चला जाएगा । थोड़ी देर बाद

वह डेढ़ दांतवाला खतरनाक हाथी था । उसके कारण वन में रहनेवाले बेहद आतंकित थे । उसे मारने के सारे प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुए थे । लेकिन एक दिन...

देखता हूं कि वह हाथी मेरी कार की ओर आने लगा । चालक ने मोटर का लंबा हार्न बजाया । आवाज सुनते ही हाथी एक तरफ जंगल में चला गया ।

इस प्रकार की कई एक मुठभेड़ हाथियों से होती रही । सबसे दिलचस्प घटना तो सन १९५४ में हुई । मुझे सूचना दी गयी कि ३ कि.मी. दूर पेली गांव के लोगों ने एक जंगली हाथी मार दिया है । मैं स्वयं यथा स्थान पहुंचा । वहां पर देखता हूं कि एक स्वस्थ एवं पाठा हाथी चारों पैर पर बैठा है । देखने पर कहीं भी गोली के निशान नहीं दिखायी दिये । केवल मुंह के अंदर से खून की कुछ बूंदें बही हुई थीं । गांववालों से पूछने पर पता लगा कि यह हाथी पास के एक झोपड़ी में रात आकर धान की ढेरी खाने लगा था । गांव वाले आवाज सुनकर जाग गये और एक ग्रामीण ने भरुआ बंदूक अंधेरे में चलायी । फिर हाथी की आवाज आना बंद हो गयी । सबेरे उन्होंने देखा कि हाथी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकदम मरा बैठा हुआ है। बारीकी से देखने से पता लगा कि बारूद का एक छर्रा ठीक सामने सूड़वाले जोड़ के स्थान पर लगा था। यह भाग इतना कोमल होता है कि छर्रे की मार भी जान लेवा होती है।

हाथी से निपटने की रणनीति

बहरहाल, मैंने यह निश्चय किया कि बदमाश हाथी को मारने का प्रयत्न मैं स्वयं करूंगा। मैंने इसको मारने की रणनीति बनायी। मेरे दो अधीनस्थ कर्मचारी बहादुर किस्म के थे और शिकारी थी थे। उनसे मैंने विचार-विमर्श भी किया। पहले मैंने सोचा कि यदि हमारी गोली सही स्थान पर न पड़ी तो हाथी हम पर हमला करेगा। फिर उससे कैसे बचा जाएगा। इस प्रकार के जंगली हाथी के संभावित हमले से बचने के दो उपाय थे। एक तो यह कि साथ में एक शिकारी कुत्ता ले चला जाए जो हाथी को भौंक-भौंककर परेशान करेगा और हाथी उसमें उलझ जाएगा। होता यह है कि कुत्ता हाथी के पीछे इधर-उधर दौड़कर भौंकता है, हाथी उसकी ओर घूम-घूमकर भगाने लगता है। पर इसमें मुझे आशंका यह हुई कि हाथी अपने सिर को स्थिर नहीं रखेगा जिसके कारण बंदूक की गोली मस्तक के मर्म-स्थान पर लगना कठिन होगा। दूसरा उपाय जो मुझे वानिकी प्रशिक्षण के समय मेरे प्राध्यापक ने बताया था उसका भी मुझे स्मरण आया। हमारे प्रशिक्षक असम संवर्ग के अधिकारी थे। वे बताया करते थे कि जंगली हाथियों के वनों में जब वे जाते थे तो अपने पास एक छाता अवश्य रखते थे। जब कभी भी उन्हें यह खतरा महसूस होता था कि कोई हाथी उन पर हमला करनेवाला है, तो वे उसके सामने अपना छाता तुरंत खोल देते थे। छाते का खुलना और हाथी का भागना लगभग क्षणभर में साथ होता। मैंने सोचा बचाव के लिए यह तरकीब अधिक अच्छी रहेगी। मेरे हाथ में बंदूक होगी और दो बहादुर साथियों के हाथ में एक-एक छाता रहेगा।

प्रतीक्षा डेढ़ दांतवाले हाथी की

उपरोक्त प्रकार की रणनीति सुनिश्चित करने के पश्चात अब हम इस सूचना की प्रतीक्षा करने लगे कि बदमाश डेढ़ दांतवाला हाथी कहां है। एक सप्ताह बाद सूचना मिली कि यह हाथी सेनापानी वन विश्राम गृह से दो कि.मी. दूर गुलियापानी ब्लाक में देखा गया है। इस ब्लाक में प्राकृतिक घने जंगल नहीं थे। परंतु १५-२० वर्ष पुरानी प्लांटेशन थी जिसमें सेमल, शीशम, खैर आदि के वृक्ष, लगभग १०-१५ मीटर ऊंचाई के, लाइनों में लगे थे। ऐसे में जंगली हाथी को मारना आसान लगा। हाथी सेमल की छाल अपने बड़े दांतों से निकालकर जब खाने में व्यस्त रहेगा तो गोली निशाने पर मारने में अधिक आसान होगा। मोटर सड़क भी दूर न थी।

हम लोग संध्या को लगभग चार बजे हाथी की तलाश में धीरे-धीरे सावधानी से आगे बढ़ रहे थे। सहसा एक वृक्ष तोड़ने की आवाज दूर से आयी। हमलोग सावधान हो गये कि हाथी अब दूर नहीं है। आवाज के सहारे आगे बढ़ते गये। इस बीच मैंने अपने साथ लाये टैलकम पाउडर को हवा में उछाला। यह देखने के लिए कि हवा का रुख किधर है। सावधानी यह बरतनी होती है कि हवा हमारी तरफ से हाथी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

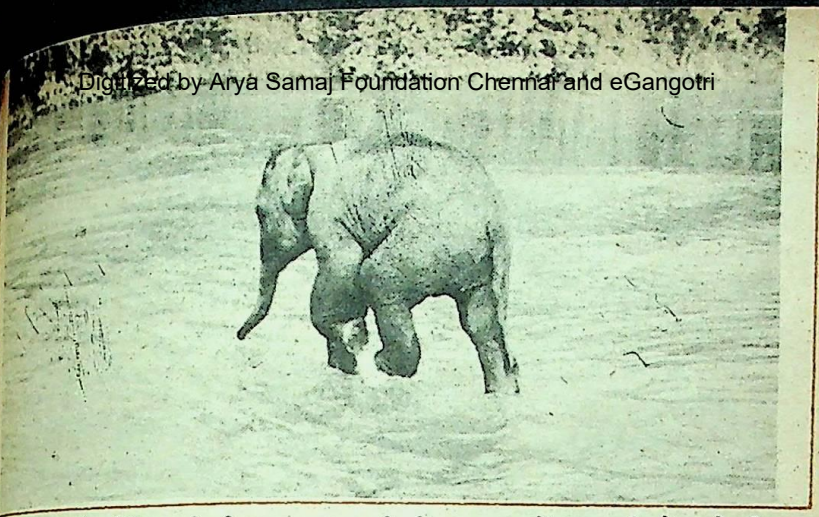

ओर न जा रही हो क्योंकि हाथी की घ्राण शक्ति बहुत तेज होती है और वह पहले ही जान जाता कि आदमी किधर है । हवा के रुख का ध्यान रखते हुए हम लोग हाथी के काफी पास, लगभग ५० मीटर की दूरी पर आ पहुंचे थे । हाथी की आकृति दिखायी देने लगी थी । अब मैं इंतजार कर रहा था कि हाथी अपना मस्तक दो-चार सेकेंड के लिए स्थिर करे तब मैं गोली दाग दूं । मैं गोली दागने का समय सुनिश्चित कर रहा था कि तभी पेड़ों के टूटने और डालों के एक-दूसरे से टकराने की जोर की आवाज आयी । बदमाश हाथी ने हमें देख लिया था और एकदम हमला बोल दिया था । हाथी हमारे सामने १० मीटर के अंतराल पर ज्योंही पहुंचा हमारे दोनों बहादुर साथियों ने छाता फड़क-फड़ाक कर खोल दिया । छाते को फूलता देख हाथी उलटे पांव भाग खड़ा हुआ । हम बची लाखों पाये । हम लोग हांफते हुए फिर सड़क पर आये और वहां से वन विश्राम गृह ।

असफलता पर ग्लानि

मुझे अपनी असफलता पर बड़ी ग्लानि हो रही थी । अब मुझमें इस हाथी को मारने की शक्ति नहीं रह गयी थी । दूसरे दिन सबेरे जब हम विश्राम गृह के एक ओर टहलते हुए पहुंचे तो देखा कि वहां हाथियों के दो नर कंकाल पड़े हैं । बंगले के चौकीदार ने बताया कि ४-५ वर्ष पूर्व इसी क्षेत्र में दो हाथी बदमाश घोषित किये गये थे । उन्हें एक विदेशी शिकारी ने मारा था । अभिलेखों से पता चला कि बदमाश हाथियों को एक जरमन युवा शिकारी ने मारा था । वह पश्चिमी जरमन गणराज्य दूतावास में प्रथम सचिव था और नाम था नेस्ट्राय । कार्यालय आकर मैंने श्री नेस्ट्राय को पत्र लिखा । उन्होंने तुरंत स्वीकारात्मक उत्तर भेजा और साथ में एक प्रार्थना भी । उन्होंने प्रार्थना यह की थी कि उनके राजदूत महामहिम गुंतर दिहेल शेर का शिकार करना चाहते हैं और उनके लिए जौलासाल शिकार ब्लाक आरक्षित कर दिया जाए । सौभाग्य से यह शिकार ब्लाक मेरे ही नाम आरक्षित था । मैंने श्री नेस्ट्राय को उत्तर दे दिया कि उनके राजदूत सहर्ष जौलासाल शिकार ब्लाक में मेरे अतिथि होकर शिकार कर सकते हैं ।

जौलासाल वन विश्राम की सफाई-पुताई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या हाथी काले छाते से डरता है ? खुले काले छाते को देखकर भाग जाया करता है ?

करा दी गयी और एक बाथरूम में यूरोपियन स्टाइल का कमोड लगवा दिया गया । लगभग दस दिन बाद श्री नेस्ट्राय अपने राजदूत के साथ हलूद्वानी पहुंच गये । शाम को मैंने उनका स्वागत चाय के साथ किया । महामहिम गुंतर दिहेल ने मुझे एक पुस्तक 'आई प्वाइंट टू इंडिया' (मेरा इशारा भारत की ओर) उपहार-स्वरूप भेंट की । यह पुस्तक मैक्समूलर द्वारा लिखित विशेष निबंधों का संकलन थी ।

अंतिम मुठभेड़

महामहिम राजदूत तो जौलासाल विश्राम गृह अपने शिकार के लिए पहुंचे । श्री नेस्ट्राय ने सेनापानी विश्राम गृह में रहने की अनुमति मांगी जहां से वे बदमाश हाथी को मारने का प्रयत्न करते । मैं स्वयं हलूद्वानी से दूर लगभग २० कि. मी. स्थित चोरगलिया वन विश्राम में पहुंच गया । २४ जनवरी की रात्रि को लगभग ९ बजे चौकीदार ने चोरगलिया में मेरा दरवाजा खटखटाया । मैं पेट्रोमेक्स की बत्ती में काम कर रहा था । दरवाजा खोलने पर देखा कि श्री नेस्ट्राय अपने एक साथी के साथ खड़े हैं । उचित अभिवादन के पश्चात मैंने उन्हें बैठाया । वे बड़े थके-थके लग रहे थे । उनका पहला वाक्य था हम बड़े भूखे हैं, पहले हमें कुछ भोजन कराइए, तब शिकार की बातें करेंगे । आधे घंटे के अंदर उन्हें गरम-गरम पूड़ी, सब्जी और खीर का भरपेट भोजन कराया । आप विश्वास नहीं करेंगे नेस्ट्राय साहब ने कम-से-कम २० पूड़ी खायी ।

भोजन के पश्चात उन्होंने बताया कि दिनभर अथक परिश्रम करने के बाद गुलियापाली के वन में उन्हें बदमाश हाथी लगभग ५ बजे संध्या को मिल गया और उन्होंने उसे सदा के लिए सुला दिया है । पर अगले क्षण में उन्होंने कहा, 'बदमाश हाथी का मरना और मेरा जिंदा रहना मेरी मां के कारण ही हो पाया है ।' मैंने पूछा, 'आपकी मां क्या आपके साथ थीं ?' उन्होंने कहा, 'नहीं ।' और तब आगे मां की ममता का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया ।

उन्होंने बताया कि कुछ वर्ष पूर्व जब उन्होंने इस वन विश्राम में दो बदमाश हाथी मारे थे तो उसके बाद अपने घर जरमनी गये । हाथी मारने के लिए वे एक शक्तिशाली नयी राइफल लेना चाहते थे । एक राइफल ऐसी थी जिसमें एक साथ तीन गोलियां रखी जा सकती थीं और दूसरी ऐसी थी जिसमें चार गोलियां रखी जा सकती थीं । दूसरे प्रकार की राइफल का दाम अधिक था और वजन भी कुछ ज्यादा था । अतः उन्होंने पहले प्रकार यानी तीन गोलीवाली राइफल खरीदी । उन्होंने यह बात अपनी मां को बतायी । उनकी मां ने बहुत जोर दिया कि वह इस राइफल को बदलकर चार गोलीवाली राइफल ही ले आये । उन्होंने मां की बात मान ली और ४५८ बोर की ४ गोलीवाली मैगनम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे । उनका पहला
, पहले हमें कुछ
र की बातें करेंगे ।
रम-गरम पूड़ी, सब्जी
न कराया । आप
साहब ने
यी ।
ने बताया कि दिनभर
ाद गुलियापाली के
लगभग ५ बजे संध्य
उसे सदा के लिए
क्षण में उन्होंने कहा,
और मेरा जिंदा रहना
या है ।' मैंने पूछा,
ाथ थीं ?' उन्होंने
ागे मां की ममता का
न किया ।
वर्ष पूर्व जब उन्होंने
ाश हाथी मारे थे तो
नी गये । हाथी मारने
नयी राइफल लेना
सी थी जिसमें एक
सकती थीं और
गोलियां रखी जा
ी राइफल का दाम
कुछ ज्यादा था ।
ानी तीन गोलीवाली
ह बात अपनी मां को
जोर दिया कि वह
वार गोलीवाली
ने मां की बात मान
ोलीवाली मैगनम

ही क्रय की । उन्होंने आगे बताया कि
से लगभग पौने पांच बजे उन्हें बदमाश
ी का आकार लगभग १०० मीटर दूर
उन्होंने दिया, तब उन्होंने पावडर की डिबिया
कर हवा का रुख अध्ययन करने के
पावडर उड़ाया । अभी वे हवा का रुख
रहे थे, तभी वृक्षों और डालों के तोड़ने की
तेज आवाज आयी और बदमाश हाथी
काफी नजदीक आ गया । उन्होंने
झटपट धांय-धांय तीन गोलियां चलायीं पर
उनके बिलकुल पास आ गया । अंत में
हिम्मत कर चौथी गोली भी दाग दी ।
गोली के लगते ही हाथी चिघ्घाड़ कर
मुड़कर भागा । उन्होंने यह तो नहीं देखा
हाथी गिर गया है पर उन्हें ऐसा लगा कि दूर
भारी चीज धराशायी हो गयी है । सूर्य
अस्त डूब चुके थे । देखने का समय नहीं
। उन्होंने मुझे बताया कि वे दूसरे दिन सबेरे
फिर सूचना देंगे ।
दूसरे दिन सबेरे नौ बजे हमें सूचना मिली
हाथी मर गया है । हम अपने बच्चों के साथ
देखने गये । हाथी एकदम मरा पड़ा था ।
उसके भयंकर रूप को देखकर मेरे बच्चे
में जाने से डर रहे थे । ध्यान से देखने से
चला कि हाथी के पिछले पैर में बंदूक के
के जख्म थे जिसमें कीड़े पड़े हुए थे ।
तः पास के किसी बड़े किसान ने उसे
किया था । शायद इसी कारण यह हाथी
दियों से बदला ले रहा था !

—सी-३८, पार्क जे-२,
महानगर एक्सटेंशन, लखनऊ

ई, १९९०

शराब-विक्रेता की सहायता ने बदल दिया अमरीका का इतिहास

अमरीकी जनता का स्वतंत्रता संग्राम १७७७ में नाजुक दौर में था । अमरीकी स्वतंत्रता सैनिकों के पास न तो प्रशिक्षित सेना थी, न हथियार थे और न पैसे थे । ऐसे संकट के समय फिलाडेलफिया के एक शराब-विक्रेता जैकब डेहेवन ने जॉर्ज वाशिंगटन की सहायता की ।

जेकब ने जार्ज वाशिंगटन को स्वर्ण और सामान की सप्लाई के रूप में तीन लाख पौंड दिये । यह जैकब की जीवनभर की कमाई थी । जॉर्ज वाशिंगटन ने इस पैसे से सेना को प्रशिक्षण दिया । उसके लिए हथियार और रसद खरीदी । सभी यह स्वीकार करते हैं कि अगर उस मौके पर जैकब की सहायता नहीं मिलती तो अमरीका का इतिहास कुछ और होता ।

ब्रिटिश नेताओं ने १७८१ में यार्कटाउन में जार्ज वाशिंगटन के सामने आत्म-समर्पण किया । १७८३ में अमरीका की स्वतंत्रता की घोषणा की गयी । १७८९ में वाशिंगटन पहली बार और १७९२ में दूसरी बार देश के राष्ट्रपति बनाये गये । लेकिन जैकब की अमूल्य सहायता लौटाने की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया । जैकब की मृत्यु मुफलिसी में हुई ।

इसके बाद जैकब के उत्तराधिकारियों ने समय-समय पर अपना पैसा प्राप्त करने का प्रयत्न किया । लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली । अब जैकब की एक वंशज, थेल्मा वीसनफोर्थ पैसे की अदायगी के लिए 'अंकल सैम' को अदालत में घसीट ले गयी है । उसने ६ प्रतिशत ब्याज के साथ, जिसे देने की जॉर्ज वाशिंगटन ने सहमति दी थी, मूल ऋण की वापसी की मांग की है । २१२ वर्ष पूर्व ली गयी यह राशि अब ५७ अरब ८० करोड़ डॉलर हो गयी है । — न.पं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्र विज्ञान और योग

● डॉ. बैकुंठनाथ ठाकुर

मंत्र इस युग की बहुत बड़ी आवश्यकता है। आज की भौतिकवादी परंपरा और सभ्यता ने व्यक्ति का जीवन इतना अधिक कोलाहलपूर्ण और अशांत बना दिया है कि वह इसी विषम जाल में उलझकर रह गया है। स्वाभाविक है कि इस विषम स्थिति से वह उबरकर रचनात्मक दिशा ढूंढ़ना चाहेगा और युग की कुंठा से मुक्ति का मार्ग तलाशेगा। वह जितनी व्यग्रता से अपनी अशांति दूर करने का उपाय सोचेगा, उतनी ही तीव्रता से वह एक परम शक्ति की शरण में आएगा और अध्यात्म तथा उपासना का शांतिदायक संसार उसकी अनेक विध समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करेगा। वस्तुतः मंत्र का अर्थ भी मनन करने योग्य शब्द-ध्वनि ही है, जिसकी बार-बार आवृत्ति कर के तनाव और चिंताओं से मुक्ति पायी जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि हम अंतर्मुखी बनें, अपनी समस्याओं का समाधान बाहर की अपेक्षा अपने भीतर ही ढूंढ़ें और अपने से बड़ी किसी शक्ति में विश्वास करें। यह बड़ा लाभकारी होता है। इस विश्वास को मंत्र से और अधिक दृढ़ किया जा सकता है। ईश्वर के नाम-स्मरण से प्राप्त बल और आत्मविश्वास मानवीय साहस और आशावाद को बनाये रखता है और उसके मनोबल को क्षीण नहीं होने देता। आस्था एवं श्रद्धा के साथ ईश्वर के नाम की उपासना और भगवत् स्मरण आज के भीषण कलिकाल में बड़ा सार्थक है। चूंकि बात मंत्र की हो रही है इसलिए इसको धारण करनेवाले मन पर भी विचार करना आवश्यक है।

विचारों की अनदेखी प्रक्रिया

मनुष्य का मन बड़ा चंचल होता है, वह चेतन ही नहीं, अचेतन अवस्था में भी बराबर कुछ न कुछ सोचता रहता है। मन के परदे के पीछे विचारों की अनदेखी प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। मन कोई स्वतंत्र वस्तु नहीं है, बल्कि यह तो विश्वव्यापी चेतना का या मूलतत्व का प्रतिरूप मात्र है। जब आप मन को नियंत्रित करने की बात करते हैं, तो आपको यह भी जानना होगा कि आपका अभिप्राय क्या है। आप निश्चित रूप से अपनी भावनाओं, विचारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्र किसी देवी, देवता या उपादान का नाम नहीं है— बल्कि मंत्र तो मन के विस्तार, मनःशक्ति के लिए और फिर उस शक्ति के निष्कासन का स्रोत है । मंत्र ध्यान का एक बड़ा अच्छा साधन है ।

के ढांचे और आकांक्षाओं को सामाजिक परिवेश और परिस्थितियों के अनुसार एक नियंत्रित और निश्चित दिशा दे सकते हैं, किंतु आपके मन का वास्तविक स्वरूप जो विश्व-चेतना का एक अंश है अजेय और सर्वव्यापी है । इस पर नियंत्रण नहीं किया जा सकता है । इसलिए बुद्धिजीवियों को जानना चाहिए कि अपनी वैचारिक प्रक्रिया को पूर्णतः समझने और नियंत्रित करने के लिए मन के आंतरिक प्रदेश में प्रवेश करना और मंत्र का अर्थ जानना आवश्यक होगा । यही मंत्र-विज्ञान है । मंत्र किसी देवी, देवता या उपादान का नाम नहीं है— बल्कि मंत्र तो मन के विस्तार, मनःशक्ति के विस्तार और फिर उस शक्ति के निष्कासन का स्रोत है । इसके साथ ही मंत्र ध्यान का एक बड़ा अच्छा साधन है । मंत्र रूप जिस ध्वनि को हम उत्पन्न करते हैं और मन के अंदर ग्रहण करते हैं वह मन की सतह पर पहले तरंगें पैदा करती है और ये ध्वनि-तरंगें धीरे-धीरे हमारी चेतना की परतों में उतरने लगती हैं ।

ध्वनि की यह तरंगें जब मन

की गहराइयों को छूती हैं, तब उन्हीं गहराइयों से एक नयी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है, जो व्यक्ति को नया मनोबल, साहस और शक्ति से संपन्न करता है । जैसे एक छोटी कंकड़ी को तालाब के जल में फेकने से एक केंद्र-बिंदु से लहरें उत्पन्न होकर पूरे तालाब को आंदोलित करती चली जाती हैं, उसी प्रकार मंत्र से उत्पन्न मानसिक तरंगें भी धीरे-धीरे व्यक्ति के अंतर्मन और उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को बदलने की क्षमता रखती हैं ।

मंत्र की प्रविधि

मंत्र की प्रविधि यह है कि इसमें सबसे पहले मन को नासिका के अग्र भाग पर केंद्रित करना पड़ता है । यह जरूरी है क्योंकि पुतली के हिलने-डुलने से मस्तिष्क का लय बिगड़ जाता है । परिणामस्वरूप चेतना का स्तर दृढ़ नहीं रह पाता । इसलिए आंखों को पूरी तरह स्थिर रखना पड़ता है । स्थिरता लाने के लिए एक केंद्र नासिका के अग्रभाग को चुनिए, नेत्रों को स्थिर करके बंद कीजिए और मन को वहीं स्थिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीजिए । नाक का सीधा संबंध परिनियम से होता है, जो शरीर के मुख्य केंद्र मूलाधार चक्र का निवास है । नासिका के अग्रभाग पर ध्यान लगाने से प्रवृत्तियां नासिकाग्र से पेरिनियम तक चलती हैं । मंत्र जाप के समय नासिकाग्र पर ध्यान रखना और श्वास-प्रश्वास के प्रति सजग होना आवश्यक है । तत्पश्चात अपने मंत्र को श्वास के साथ संयुक्त करना उचित होता है । श्वास लेते और छोड़ते समय मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

मंत्राभ्यास के समय मन की चंचलता से विचलित नहीं होना चाहिए, बल्कि मन का सामना करना और साक्षी भाव से समस्त प्रक्रिया को देखते जाने की कला जाननी चाहिए । चिंतन एक सतत प्रक्रिया है । मन के बारे में गहराई से सोचें तो यह अवश्य अनुभव करेंगे कि मन न तो कहीं गमन करता है और न भ्रमण करता है । यह समय और स्थान से रहित एक वस्तु है । मन को हम अनेक खंडों में पाते हैं अथवा मन की अनेक परतें होती हैं, इसीलिए लगता है कि यह चलायमान है— ठीक उसी प्रकार जैसे हमें प्रतीत होता है कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य घूमता है । जबकि, वास्तविकता इससे उलटी है । इसे सही-सही समझना आवश्यक है क्योंकि, यह योग का विषय है और योग में इसकी काफी उपयोगिता है । ऐसा लगता है कि विचार-प्रवाह मन में आ-जा रहे हैं, भावनाएं उन्मत्त हो रही हैं, चित्त का आवेग हमें त्रस्त कर रहा है । किंतु, यह तो वस्तुतः आपका अपना अनुभव है । यह वास्तविक नहीं है । चूंकि संपूर्ण वस्तुओं को आप खंड-खंड में देख रहे हैं इसीलिए ऐसा लगता है कि आपका मन निरंतर भ्रमणशील है— कभी अतीत से वर्त्तमान की ओर कभी वर्तमान से भविष्य की ओर, परंतु वास्तविकता यह नहीं है और ब्रह्मांडीय-मन बड़ा व्यापक है । यह देश-काल के प्रभाव से मुक्त रहता है । देश और काल तो इसके भीतर ही समाहित होते हैं । चूंकि मंत्र का संबंध मन से है, इसलिए पहले मन के बारे में ही हम बातें कर रहे हैं ।

आप कौन हैं

मंत्र-साधना के समय कभी-कभी गलत विचार भी सामने आते हैं और लोग इसे त्यागने की कोशिश करते हैं । लेकिन इन्हें त्यागने या इनसे मुक्ति पाने की कोशिश में ही लोग अपने व्यक्तित्व में दुहरापन पैदा करते हैं । यहां पहले यह सोचिए कि आप कौन हैं और आप किसे वश में करना चाहते हैं ? गलत विचार कौन कहां से भेज रहा है और उसका नियंत्रक कौन है । दोनों वस्तुतः आप ही हैं । एक आपका मन और दूसरे स्वयं आप—लेकिन आपको अपने भीतर ही दो का बोध हो रहा है । साधना या मंत्र जाप के क्रम में मन का यही द्वैध-भाव आदमी के व्यक्तित्व को तोड़ता है । इसी कारण आज हमारी पूरी भौतिकवादी सभ्यता न्यूरोटिक बनती जा रही है । इसलिए व्यक्तित्व के विखंडन को समाप्त करने के लिए सर्वप्रथम आवश्यक यह है कि साधना या मंत्र-जाप के समय जो भी शुभ या अशुभ विचार मन में उदित हो रहे हैं, उन्हें आप रोकें नहीं-आप देखेंगे कि मन की लगाम ढीली करते ही अशुभ विचार स्वतः धीरे-धीरे मंत्र-ध्वनि में तिरोहित हो जाएंगे । इससे मन की स्वाभाविक पूर्ण अवस्था का क्रमशः उदय होगा और मन प्रकाशित होने लगेगा । इसलिए पहले मन को बंधनहीन ढीला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़कर उसमें गोते लगाने और सभी विचारों का दृढ़तापूर्वक सामना करने की ताकत अपने भीतर लानी होगी, तभी धीरे-धीरे मंत्र-साधना फलवती होगी। इस समय मन की जितनी गहराइयों में हम जाएंगे, मन के उतने ही सुषुप्त क्षेत्रों तक हमारी पहुंच होगी। इससे आप न केवल अपनी प्रवृत्तियों, आकांक्षाओं और स्वप्नों का आकलन कर सकेंगे, बल्कि उस आकलन या 'ऐसिसमेंट' से आप नये अनुभव भी प्राप्त कर पाएंगे। इसीलिए मंत्र-अभ्यास के पूर्व यह भावना छोड़ देनी चाहिए कि इसके द्वारा मन का नियंत्रण संभव है। तभी हम पूर्णता की ओर अपने कदम बढ़ा सकेंगे। मंत्र-जाप के क्रम में कभी-कभी तो ऐसे भयानक विचारों का सामना आपको करना पड़ सकता है कि मानसिक या भौतिक धरातलों पर ऐसी कल्पना की ही नहीं जा सकती हैं। फिर भी साधना करनेवाले मंत्र-साधन इसलिए करते हैं कि हमें इसी अशुभ विचारों की सरणी से शुभ विचारों का और भावनाओं का चयन करना पड़ता है। यदि अशुभ होगा ही नहीं तो शुभ का क्या महत्त्व होगा—बुरा होगा ही नहीं तो अच्छाई को कौन पूछेगा। मन में भी इसी सापेक्ष क्रम से विचार-प्रक्रिया चलती रहती है। इस वैचारिक-प्रक्रिया के अटपटेपन को मंत्र संतुलित करता है।

महार्थ मंजरी में एक श्लोक आता है—वह इस प्रकार है—

ज्वार्यमाणा ये मंत्रा न मंत्राश्चापि तद्विद्।

अर्थात, मनन-योग्य शब्द-ध्वनि ही मंत्र है। मनन से पराशक्ति का अभ्युदय होता है, उसका वैभव प्रकाशमान होता है और कुंडलिनी

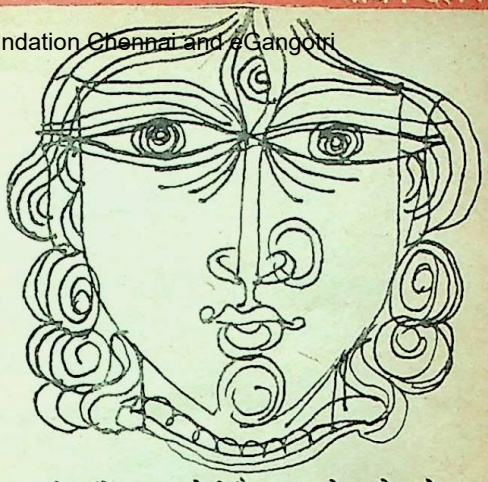

धीरे-धीरे जाग्रत होती है। ऊपर के श्लोक से स्पष्ट है कि मंत्र में शब्द और ध्वनि का संयोजन आवश्यक है। हमारा देश भारत शब्द का उपासक रहा है। यहां शब्द को ब्रह्म की संज्ञा दी गयी है। यहां के हर कार्य में शब्द का अनुवेध आवश्यक है। जीवन मात्र अपनी समस्त अनुभूति को शब्दों के माध्यम से ही व्यक्त करते हैं। इसलिए शब्द का साक्षात्कार अपनी आत्मा का साक्षात्कार है— क्योंकि शब्द केवल व्याकरण से ही नहीं बनते, उन शब्दों की अपनी आत्मा भी होती है और उनसे साक्षात्कार सद्गुरु की कृपा से ही होता है। शब्द की मूल अवस्था नाद बिंदु और बीज है। नाद के रूप में वह शिव-स्वरूप सारे संसार में व्याप्त है, क्योंकि हमारे कंठ में आकर व्यक्त होनेवाला शब्द अपने प्रारंभिक स्तर पर नाद-रूप में प्रकट होता है। मंत्र की साधना में हम शब्द के मूल-स्वरूप बीज को आधार बनाते हैं। यह बीज धीरे-धीरे अपनी नादमयी अवस्था में प्रकट होता है, इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि शब्द की यह मूल-प्रकृति हमारे मानसिक संसार और बाहरी वातावरण में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशिष्ट प्रकार का परिवर्तन ला दे । यहां यह जानना चाहिए कि बीज मंत्र जैसे—ह्रीं, क्लीं, श्रीं आदि बड़े सशक्त होते हैं और उनका संबंध पंचतत्वों— आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी से होता है ।

प्रकृति की कार्य-विधि समझने के लिए हम अपने चारों ओर के दृश्य-जगत को ही आधार बना सकते हैं । उसके गहन अध्ययन से यह समझा जा सकता है कि किस प्राणी को प्रकृति ने कौन-सा अक्षर दिया है और उसके आचार में तथा आकार-प्रकार में किस तत्व की प्रमुखता है । उसमें जिस तत्व की प्रमुखता होगी प्रकृति ने उसे वही स्वर प्रदान किया होगा । इस रहस्य को समझ लेने पर हम षट्कर्मों के रहस्य को भी समझ जाएंगे । मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि मारण, मोहन और उच्चाटन जैसे षट्कर्म भी मौलिक रूप में सतो गुण, रजो गुण और तमो गुण पर आधारित हैं । आकर्षण – सम्मोहन रजोगुण की क्रिया है, मारण-उच्चाटन आदि तमोगुण की और शांति पुष्टिकर कर्म सत्वगुण की क्रिया है । इन कर्मों की सिद्धि के लिए जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं वे हमारे शरीरवर्त्ती षड्चक्रों में से उन चक्रों को प्रभावित करते हैं जिनमें ये शब्द उपस्थित हैं । और वे चक्र चूंकि मूल बिंदु है, इसलिए उनकी क्रियाशीलता से वाह्य जगत प्रभावित होता है । इन चक्रों की क्रिया स्वतंत्र है, ये बाहरी प्रयत्न से प्रभावित नहीं होते हैं परंतु, हमारे विशेष शब्द बोलने पर ये स्पंदित होते हैं । विद्युतधारा के बार-बार आवेशित करने से अर्थात मंत्र-जाप करने से हमारे आंतरिक व्यक्तित्व में वह विशेषता परिलक्षित होने लगती है । जरूरत है तो केवल आस्था और विश्वास की—क्योंकि मंत्र एक सत्य है । आवश्यकता केवल इतनी है कि हम सच को सच ही मानकर चलें— उस पर संदेह नहीं करें । मंत्र के बारे में इसी दृष्टि से विचार करना आज के युग की बहुत बड़ी आवश्यकता है । इसके बिना सारी वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद हमारी आत्मा विकसित नहीं हो सकेगी और मनुष्य अपनी आत्मा के विराट् सत्य को पहचान पाने में सफल नहीं होगा ।

पांच कोष

मंत्र दो अन्य रूपों में भी अध्ययन का विषय बन सकता है । पहला है ध्वनि और दूसरा है भावना । शब्द से ध्वनि होती है जो व्यक्त है, परंतु भावना अव्यक्त होती है । सुविधा के लिए हम भावना को विद्युत का प्रतीक मान सकते हैं । यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि हमारे शरीर की सचेतनता के पीछे, इस दृश्य शरीर के अलावा दो शरीर और हैं । पंचभूतों से बने इस शरीर को देह कहा जाता है । देह में प्राण का निवास है । योगी लोग इसे 'फिजिकल बॉडी' कहते हैं । एक दूसरा भी शरीर है जिसे भौतिकशास्त्र की दृष्टि से 'ऐस्ट्रल बॉडी' कहते हैं (भारतीय शैली में पुदगल कहते हैं) । इसके अलावा एक मनोवैज्ञानिक देह भी है, जिसे 'साइकोलॉजिकल बॉडी' के नाम से जाना जाता है । व्यक्ति में जो पांच कोष होते हैं उनमें- क. अन्नमय एवं प्राणमय कोश का समावेश भौतिक देह में, ख. मनोमय या आनंदमय कोष का समावेश मानसिक शरीर में तथा ग. चैतन्यमय कोष का समा वेश वैद्युतिक या ऐस्टल बॉडी में हो जाता है । हमारी भावना को स्थूल देह तक आने के लिए वैद्युतिक शरीर से होकर गुजरना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है। इसका अर्थ यह हुआ कि जो भावना सूक्ष्म रूप से हमारे मन का विषय थी उसे तरंगों के रूप में लाने के लिए विद्युत रूप ग्रहण करना पड़ता है और अंततः मूर्त्त रूप लेने के लिए स्थूल शरीर तक आना पड़ता है। भावना जब ध्वनि का रूप ग्रहण करती है, तो उसमें शक्ति एवं सामर्थ्य की न्यूनता या अधिकता व्यक्ति की मानसिक या यूं कहें वैद्युतिक क्षमता पर निर्भर करती है। हमारी बात में वजन आना, हमारी बातों का प्रभावोत्पादक होना आदि तथ्यों के पीछे वही वैद्युतिक-शक्ति कार्य करती है। मंत्र वह सार्थक शब्द है जो ध्वनि के रूप में माना जाता है। इस तत्व का जब भावनाओं की वैद्युतिक शक्ति से समागम होता है, तो मंत्र का स्वरूप बनता है। मंत्र न केवल भावनात्मक शक्ति है न कोरी ध्वनि ही है। बल्कि ध्वनि की शक्ति को विचार की विद्युतीय-शक्ति से गुणित करने पर उसका गुणनफल मंत्र माना गया है। इसी भावना की वैद्युतीय शक्ति से गुणित करने पर उसका गुणनफल मंत्र माना गया है। इसी भावना की वैद्युतिक-शक्ति को 'विल पावर' या इच्छा-शक्ति के नाम से जाना जाता है।

मंत्र के जप से मन की शक्ति का विस्तार होता है और उसकी ऊर्जा को एक नयी दिशा मिलती है। व्यक्ति की सोयी हुई शक्तियों को उद्दीप्त करने तथा अपनी आत्मा में सोयी हुई विराट् सत्ता को पहचानने के लिए दो ही रास्ते हैं। पहला मंत्र, दूसरा योग।

मंत्र इस विश्व में व्याप्त अनेकत्व में एकत्व का संधान करता है। जीवन और जगत का परम सत्य उद्घाटित करने की क्षमता मंत्र और उसके प्रयोग में ही है। योग प्राण तत्व को आधार मानता है और उसका अंतिम लक्ष्य भी मुक्ति है। मंत्र आकाश तत्व की उपासना करता है। इसलिए आज के अशांत वातावरण से ऊपर उठकर जीवन का सही अर्थ खोजने के लिए मंत्र और योग की बहुत आवश्यकता है।

—निदेशक, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी,
प्रेमचंद मार्ग, राजेन्द्रनगर,
पटना-८०००१६

धुम्रपान छुड़ाने की गोली

प्लानटेशन, फ्लोरिडा, अमरीका के एक भारतीय डॉक्टर अब्दुल्ला फतेह ने एक गोली ईजाद की है, जो धुम्रपानियों की सिगरेट आसानी से छुड़ा सकती है। 'निक फिट' नाम की यह चमत्कारी गोली अब फ्लोरिडा के बाजारों में बिक रही है। डॉ. फतेह का दावा है कि यह गोली अत्यधिक धुम्रपान करनेवाले की आदत भी लगभग एक महीने में छुड़ा सकती है और ६० से ८० प्रतिशत मामलों में पूरी सफलता मिली है।

इस गोली में मुख्य तत्व हैं लोबलीन सल्फेट जो सिगरेट छुड़ाने की प्रायः सभी दवाओं में इस्तेमाल होती है, लेकिन सिगरेट छोड़नेवाले इसके तल्ख स्वाद की शिकायत करते रहे हैं। 'निक फिट' का स्वाद भी अच्छा है और रूप व गंध भी। साथ ही यह सस्ती भी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिशप्त रात

• सातोमी तोन

जापान चैरी के फूलों का देश कहा जाता है । चैरी फूलों का सौंदर्य उसके पंखुड़ी-पंखुड़ी झड़कर बिखरने में है । इसके विपरीत कैमेलिया का गहरे लाल रंग का फूल पंखुड़ी-पंखुड़ी नहीं, किसी मनुष्य के कटे हुए सिर की तरह पूरा का पूरा गिरता है । तोन सातोमी द्वारा रचित प्रस्तुत कहानी वांतो (तोक्यो-योकोहामा भूक्षेत्र) के भयंकर भूकंप के तत्काल पश्चात की मानसिक पृष्ठभूमि में लिखी गयी थी और सर्वप्रथम १९२३ में प्रकाशित हुई थी । कहानी जापान के इस अंध-विश्वास पर आधारित है कि कैमेलिया के फूल का गिरना अशुभ का सूचक है ।

वह तीस पार कर चुकी थी पर अभी अविवाहित थी । बांयीं करवट लेटी, कुछ नीचे झुकी हुई, वह लाल रंग के लैंप-शेड की रोशनी में पत्रिका पढ़ रही थी । रात सर्द और स्तब्ध थी । हवा का नाम तक न था । आधी रात भी न बीतने पायी थी लेकिन सड़क पर देर तक चलनेवालों के कदमों की आवाजें भी आहिस्ता-आहिस्ता मंद पड़ चुकी थीं ।

पृष्ठ पलटते समय उसकी दृष्टि अपनी बीस वर्षीया भतीजी पर पड़ी । दोनों के बिस्तरों में शायद छह इंच का फासला होगा । लड़की उसकी ओर मुंह किये लेटी थी । वह सोता हुआ चेहरा अत्यंत सुंदर था । रजाई की मखमली मगजी के बाहर से सिर्फ उसकी नाक और आंखें साफ नजर आती थीं । बुआ ने उस पर नजर जमाकर उसे इस तरह निहारा, जैसे वह उस चेहरे को पहली बार देख रही हो । 'तू कितनी भोली है !'

वह लड़की के साथ चुहल करना चाहती थी और खुलकर हंसना चाहती थी । लेकिन लड़की जैसे सांचे में ढली मूर्ति की तरह नितांत चुप सो रही थी । यहां तक कि उसकी सांस लेने की आवाज भी सुनायी नहीं देती थी । बुआ मन-ही-मन धीरे-से हंसी । शरीर की हिलन-डुलन से जमीन पर बिछी हुई नयी तातामी (चटाई) जो इस नये घर में आने से कुछ ही दिन पहले बदली गयी थी, चरमरायी और उसके चेहरे और गरदन के ऊपर हवा की फुरहरी-सी उठी ।

एक मिनट तक वह केवल इसी बात में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठंडी रात का सन्नाटा उनकी हंसी से टूट रहा था । उन्हें अपनी हंसी की आवाज दबानी पड़ रही थी और वह कोशिश हंसी को और भी गुदगुदा देती थी । एक अजीब तमाशा था ।

कोशिश रही कि कहानी कितनी आगे बढ़ी है । दुर्भाग्यवश नींद आंखों से भाग चुकी थी ।

बहुत दूर कहीं किसी इंजिन ने सीटी दी । रात बहुत ही चुप थी । ऐसी चुप्पी उसने कभी नहीं जानी थी । उसका मन हुआ कि आया को जगाकर अपने बिस्तरे ऊपर बिछाने को कहे, जिससे वे तीनों साथ सो सकें । लेकिन इस समय उठना मुसीबत लग रहा था और वह फिर पढ़ने लगी । नायक और नायिका के संबंध चरम सीमा पर पहुंच गये थे लेकिन घटित कुछ नहीं हुआ । पुरुष पात्र बेजान थे, शायद ही उनमें से कोई उसकी स्मृति में उतरा । उसके मन में कुछ भी समा नहीं रहा था, पर वह पढ़े जा रही थी ।

पट् ! यह आवाज उसके तकिये के पास हुई । आवाज होने से न पहले कुछ हुआ, और न बाद में । इतना अवश्य स्पष्ट था कि कोई चीज चटाई पर गिरी थी । वह क्या हो सकती थी ? यह देखने का साहस वह न बटोर सकी । पत्रिका को धीरे-से बिस्तर पर टिकाकर उसने अपना बांया हाथ रजाई के अंदर खींच लिया और दोनों हाथों को वक्ष पर रख लिया । बांयें हाथ की ठंड दूसरे हाथ की गरमाई में डूब गयी ।

उसकी भतीजी की खिंची हुई आंखें उस पर गौर से मंडरा रही थी ।

"क्या है ? क्या हुआ, सेच्चान ?" बुआ ने

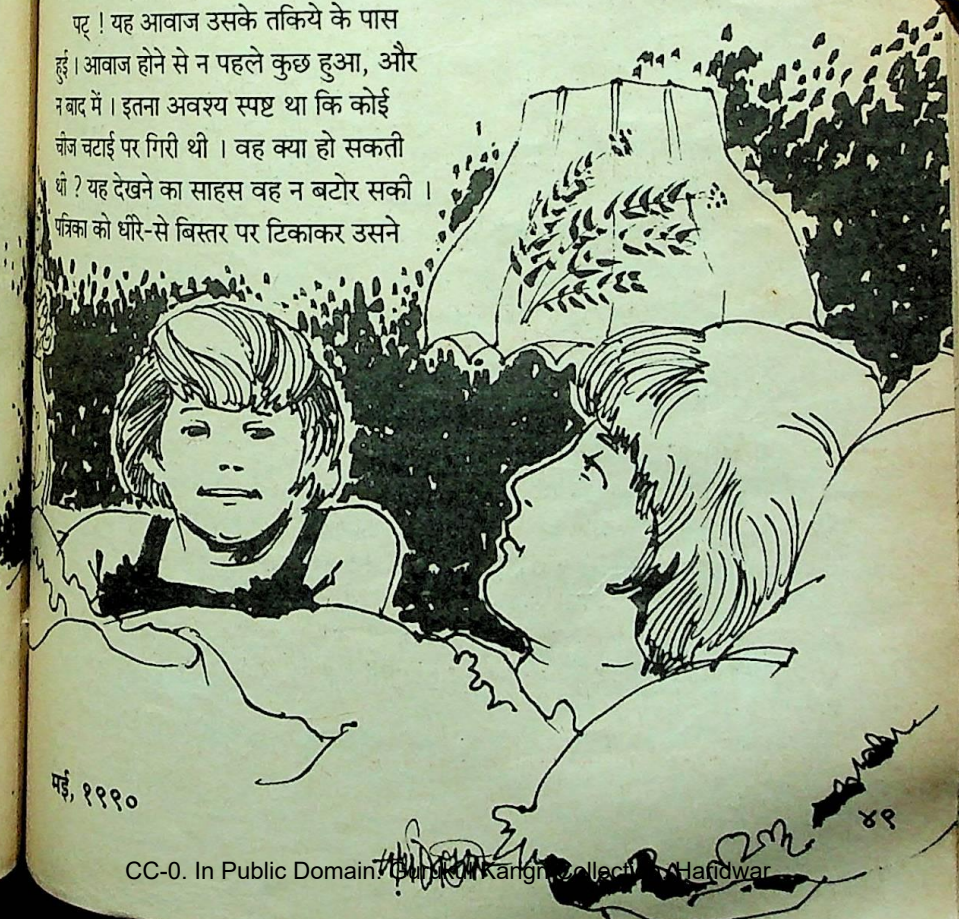

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

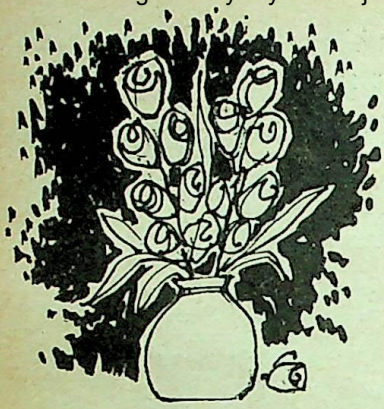

पूछा ।

"कुछ नहीं" लड़की रजाई समेत उछल पड़ी और बुआ की गोद में सिर गड़ा दिया ।

"सेच्चान, मैं तुझसे पूछ रही हूं ! क्या बात है ? क्या हुआ ?"

सेच्चान ने अपने सिर को थोड़ा-सा उठाकर कहा, "मत पूछो, मुझे नहीं मालूम ?"

बुआ ने अपनी गोद से भार को जबरन हटा दिया और बिस्तर के सिरहाने के पार दूर नजर डाली । उसके अनुमान से कई फुट दूर ताक के नीचे एक बड़ा लाल कैमेलिया का फूल गिरा पड़ा था । कैमेलिया के फूल अपने पुराने बगीचे में छोड़ते उन्हें बहुत ही बुरा लगा था इसलिए वे कुछ फूलों को टहनियों समेत तुड़वाकर अपने साथ ले आयी थीं । हरा गुलदस्ता लगभग एक सप्ताह पुराने कैमेलिया के फूलों से भारा था ।

"बचपना मत करो ।" बुआ ने उसे सांत्वनाभरे प्यार से कहा । लड़की भी बिस्तर से उठी ।

"क्या बात है ?" सेच्चान ने पूछा ।

"यही तो मैं पूछ रही हूं ।" बुआ ने कहा ।

"लेकिन तुमने..."

"मैंने कुछ नहीं किया ।"

"कुछ नहीं किया ! तुम मेरे ऊपर चिल्लायी थीं ।"

"तू मुझे ऐसे क्यों देख रही थी, आधी आंखें बंद करके ।"

"तुम तो पहले से ही डरी हुई थीं । तुमने पढ़ना बंद कर दिया था और अपने हाथ रजाई में खींच लिए थे । इनकार मत करो ।"

"क्या तूने मुझे देखा था ?"

"मैंने सोचा, डाकू घुस आये हैं ।"

"बेवकूफी की बातें मत कर । लेकिन तू जाग कैसे गयी ?"

"तुमने मुझे पुकारा जो था !"

"मैंने नहीं पुकारा । मैं क्यों तुझे पुकारती ?"

"तुमने नहीं पुकारा ?"

"नहीं ।"

"तब तो शायद मैं सपना देख रही थी ।"

"वह तो कैमेलिया था । कैमेलिया गिरा था ।"

"नहीं, नहीं ! ऐसी बात मत करो ।" वह फिर बुआ से लिपट गयी ।

"सेच्चान,... । तुम इतनी घबरा क्यों रही हो !"

"लेकिन तुम ऐसी बात क्यों कर रही हो ?"

"मैंने ऐसी क्या बात कही है, जो तुझे परेशान कर दे ? तू खुद देख ले ।"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं देखना ।"

"पागल मत बन । कैमेलिया के गुच्छे में से एक फूल गिरा था जिसने तुझे जगा दिया ।"

"ओह !" लड़की ने सिर उठाया और सहमकर बुआ के कंधे के ऊपर से ताक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...घुमायी ।

...सुर्ख लाल फूल कैसा डरावना लग ...है ।"

...लाल हो या सफेद ! जब गिरने का समय ...है तो गिरता ही है ।"

...कैसा घिनौना लग रहा है, जैसे खून का ...है ।"

"और अगर तू इसे उठाकर फेंक दे तो ?"

"मैं नहीं फेंक सकती । तुम फेंक दो ।"

"इसके पड़े रहने से कोई हानि नहीं है । हम ...तक यहीं छोड़ सकते हैं ।"

"नहीं, नहीं, मैं इसे नहीं देख सकती ।"

"बेकार की बातें मत कर । मुझे सोने दे ।"

...बार उसकी झिड़की में व्यग्र आक्रोश था । ...भतीजी को एक तरफ धकेल दिया और ...खींचकर मुंह ढांप लिया ।

"तुम बहुत बेईमान हो ।" बुआ के धक्के से ...-सी वह लड़की जहां थी, वहीं की वहीं ...के अंदर सिर से पांव तक सिकुड़कर ...-सी बन गयी ।

निःस्तब्धता ने दोनों को घेर लिया । सेच्चान ...समय तक गुमसुम लेटी रही । जब उसका ...घुटने लगा तो उसने डरते-डरते अपना सिर ...से बाहर निकाला । उसकी बुआ बांयी ...मुंह किये लेटी हुई थी । रजाई, बदस्तूर, ...कंधे के चारों ओर कसकर लिपटी हुई ...। लड़की ने दूसरी ओर करवट ले ली । ...शेड से हलकी ऊदी रोशनी कमरे के दूर कोनों तक बिखर रही थी और लकड़ी के परदे पर चित्रित सत्रहवीं शताब्दी की सुपरिचित सुंदरी के मुखारविंद पर जैसे मृत्यु की-सी छाया डाल रही थी ।

"उफ्, मुझे डर लग रहा है ।"

लड़की ने फिर करवट बदली ।

बुआ को उसकी हरकतों पर हंसी आ गयी । उसके स्वभाव के कितना विपरीत था यह वह बहुत कम हंसती थी । लेकिन उस समय वह अपनी चमकदार रजाई फिर से नकुरी तक खींचकर हंसी से दोहरी हो रही थी । उसका सारा शरीर हिल रहा था । आंखें मुंदी थीं और वह हंसे ही जा रही थी । पहले जैसे लड़की ने उसे देखकर भी अनदेखा कर दिया पर कब तक !

उसने फिर बुआ की तरफ देखा और जैसे उसने अपना ही बिंब देख लिया हो । वह भी बेतहाशा हंसने लगी और हंसती ही चली गयी । एक शब्द भी उसके मुंह से नहीं निकल पा रहा था । हंसी से उसका बुरा हाल था । ठंडी रात का सन्नाटा उनकी हंसी से टूट-टूट रहा था । उन्हें अपनी हंसी की आवाज दबानी पड़ रही थी और वह कोशिश हंसी को और भी गुदगुदा देती थी । एक अजीब तमाशा था । वह जितना ही सोचती, सारी स्थिति उन्हें उतनी ही हास्यास्पद लगने लगी ।

अनुवाद : सुषमा जैन

कलाकार की भाव-राशि अथाह एवं अचिंत्य है । —*मैक्सिम गोर्की*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

सूर्य भूषण, झुमरीतिलैया (बिहार)

प्र. हिचकी क्यों आती है ?

☐ मानव शरीर में छाती और पेट के बीच डाइफ्रैम होता है । सांस लेते समय यह डाइफ्रैम नीचे हो जाता है और इस तरह पेट को दबाता है, जिससे फेफड़ों में हवा भर जाती है । इसी प्रकार सांस से हवा बाहर निकालते समय यह डाइफ्रैम ऊपर जाता है तथा हवा फेफड़ों से बाहर निकल आती है । इस क्रिया में कोई आवाज नहीं होती । लेकिन कभी गैस बनने या पेट में अम्लता बढ़ने से डाइफ्रैम सिकुड़ जाता है, जिससे फेफड़ों में जानेवाली हवा को बाधा पड़ती है । इस कारण एक आवाज होती है जिसे हिचकी कहते हैं ।

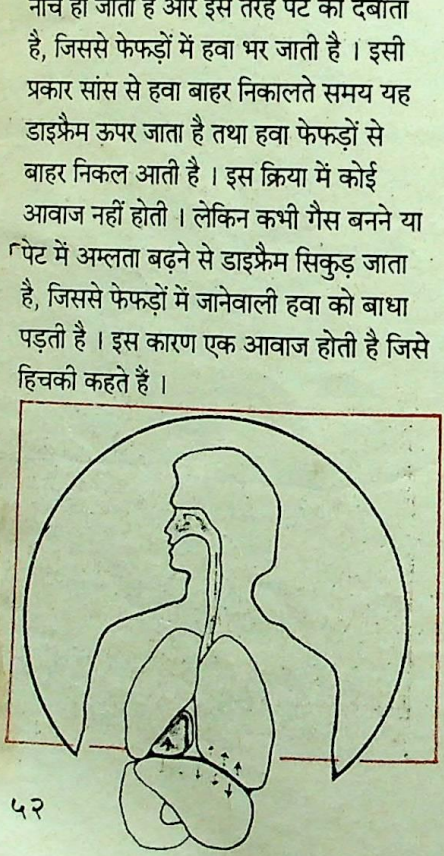

प्रवीण जैन, उज्जैन

प्र. रुद्राक्ष क्या है तथा यह कितना चमत्कारिक और उपयोगी है ?

☐ रुद्राक्ष मुख्य रूप से दक्षिण एशिया के देशों, उत्तरी आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और नेपाल में पाया जाता है । इसके कुछ वृक्ष असम, बिहार, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में भी देखे गये हैं । इसका वैज्ञानिक नाम 'एलिओकार्पस' है । संसारभर में रुद्राक्ष की लगभग १२३ प्रजातियां मिलती हैं । रुद्राक्ष चमत्कारिक तो नहीं, किंतु औषधीय गुणवाला जरूर बताया जाता है । इसे वात-विकार दूर करनेवाला, कृमिनाशक, कासनाशक (खांसी तथा प्रसूति में लाभदायक बताया गया है । हृदय के रोगियों तथा उच्च रक्तचाप पीड़ितों को इसे धारण करने की सलाह दी जाती है ।

(स्रोतः : 'वर्ल्ड फेमस कार्निवरस एंड अदर वंडर प्लांट्स)'

शारदाबख्श सिंह, हरदोई

प्र. टी. वी. कितनी दूरी से देखना चाहिए तथा अन्य सावधानियां क्या हैं ?

☐ टी. वी. सदा आठ-दस फुट की दूरी से देखना चाहिए । अंधेरे में कभी न देखें और कमरे में ऐसा प्रकाश जलाये रखें, जिसकी रोशनी टी.वी. के परदे पर निरंतर पड़ती रहे । लेटकर टी. वी. देखने से आंखों पर जोर पड़ता है । बीच-बीच में दृष्टि को टी. वी. परदे से हटाते रहना चाहिए । रंगीन टी. वी. स्वाभाविक रंगों में देखें, अधिक गहरे या हलके रंग भी हानिकारक हैं ।

सत्या सोनी, अंबाला छावनी

प्र. अमरीका के कैलिफोर्निया राज्य में सबसे खतरनाक भूकंप आते हैं, यह क्यों ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...पूर्वार्ध वैज्ञानिक इसके लिए सैन ...फाल्ट को जिम्मेदार बताते हैं । पृथ्वी ...के दो बड़े खंडों के बीच के जोड़ को ...फाल्ट कहते हैं । पृथ्वी के अंदर ...से उक्त पपड़ी के ये खंड अलग ...अपने स्थान से हिल जाते हैं जो भूकंप का ...बनते हैं ।

...ला परवीन, कानपुर

...बुरके (परदे) की प्रथा कब, कैसे और ...कारण शुरू हुई ? मुसलिम समाज के ...अनिवार्य परदे की प्रथा और किसमें है ?

...इस आशय के अभिलेख उपलब्ध हैं ...की प्रथा इस्लाम से ही प्रारंभ हुई । ...सन सात में हबश (अफरीका) से एक ...पैगम्बर से मिलने आया था । उस ...हजरत ने उपस्थित स्त्रियों को अपना तन ...से ढक लेने की 'हिदायत' दी थी । इसके ...कुरान शरीफ के १८वें सितारा में भी ...है : '...मामिन औरतों से भी कह दो कि ...अपनी निगाहें नीची रखा करें और ...शर्मगाहों की हिफाजत किया करें । ...आराइश (जेवर पहनने के अंगों) को ...न होने दिया करें, अपने सीनों पर ...ओढ़े रखा करें ।' मुसलिम समाज के ...अनिवार्य परदे की प्रथा अन्यत्र नहीं ...। उत्तर भारत में भी हिंदुओं में परदे का ...लेकिन बुरका नहीं, मुसलिम प्रभाव से ...हुआ ।

...शर्मा, ध्रागंध्रा (गुजरात)

...कौरव-पांडव युद्ध को 'महाभारत' क्यों ...है ?

☐ ये दोनों भरतवंशी थे इसलिए 'भारत' ...। इसी प्रकार भरतवंशियों के युद्ध की संज्ञा 'भारत' हुई । पाणिनीय सूत्र ४/२/५६ (संग्रामे प्रयोजन योद्धाभ्यः) के अनुसार योद्धाओं के नाम से युद्ध का नाम रखा जाता था । 'महाभारत' के आदि पर्व में 'महाभारताख्यानम्' (५६/३०) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसका तात्पर्य है, 'भारतों के महान संग्राम की कहानी' । महाभारत उसका संक्षिप्त रूप है ।

देवराज सूद, ऊना (हिमाचल)

प्र. ट्यूलिप वृक्ष और ट्यूलिप में क्या भिन्नता है ? पुष्प का आकार और रंग कैसा होता है ?

☐ ट्यूलिप एक बारहमासी शाकीय (हर्बेशस) पौधा है, जो कंद (बल्ब) से उत्पन्न होता है । अधिकतर ट्यूलिप पौधों में नीलाभ-हरित पत्तियोंवाला (घंटी के आकार का) अकेला पुष्प लगता है । इसके कुछ अन्य रंग भी विकसित किये गये हैं । इसका मूल स्थान

लंदन में बिग बेन टॉवर के सामने खिलते हुए ट्यूलिप के फूल

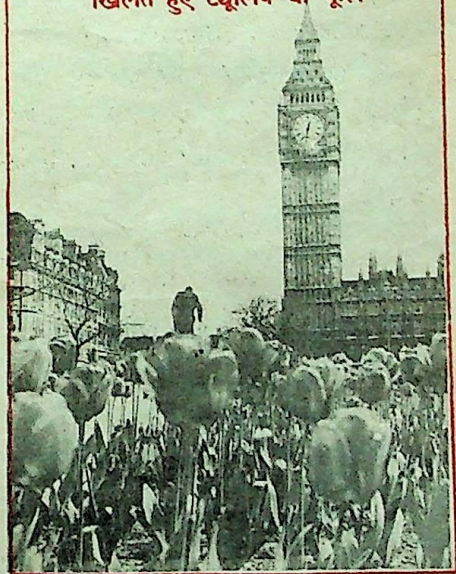

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'प्राचीन विश्व' है। ट्यूलिप हालैंड, जर्मनी, अमेरिका और इंगलैंड में ट्यूलिप की व्यापार के लिए पैदावार की जाती है। ट्यूलिप वृक्ष का मूल स्थान उत्तरी अमरीका है। यह वृक्ष ५८ मीटर तक ऊंचा होता है। इसमें हरित आभा वाले सफेद और पीले ट्यूलिप-जैसे फूल निकलते हैं। *स्रोतः : मैक. एनसाइक्लपीडिया*

श्रीकांत अत्रि, अलवर

प्र. जयपुर शहर का निर्माण कब हुआ और रूपरेखा (प्लान) किसने बनायी ?

☐ जयपुर का निर्माण कार्य शनिवार, १८ नवंबर, १७२७ की मध्याह्न से प्रारंभ हुआ था। इसके प्रणेता, हिंदू शिल्प शास्त्र के ज्ञाता, महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय थे, जिनकी योजना को मूर्तरूप दिया वास्तुकार विद्याधर चक्रवर्ती ने। *(स्रोत : महारानी गायत्री देव कृत 'दिल्ली, आगरा, जयपुर')*

विभा जैन, नयी दिल्ली

प्र. क्या सिर दर्द के रोगियों की संख्या संसार में बढ़ रही है ?

☐ अमरीका के सिरदर्द चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. डेविड कॉडन के अनुसार पर्यावरणीय कारणों से ऐसे रोगियों की संख्या वृद्धि पर है।

राधिका प्रसाद सिंह, सीतामढ़ी

प्र. न्युमैटिक टायर का आविष्कार कब और किसने किया ?

☐ वायवीय टायर (न्युमैटिक) का आविष्कार स्कॉटलैंड के जॉन ब्वायड डनलप (सन १८४०-१९२१) ने सन १८८७ में किया था। वस्तुतः, यह आविष्कार पहले साइकिल के लिए हुआ था, बाद में इसे कार के लिए विकसित कर लिया गया।

रेखा जालान, इंदौर

प्र. हमारी गरीबी का मुख्य कारण क्या है ?

☐ बड़ी जनसंख्या। आबादी की दृष्टि से संसार में भारत दूसरा बड़ा देश है। भारत की जनसंख्या संसार की कुल जनसंख्या की लगभग १५ प्रतिशत है, जबकि उसका भौगोलिक क्षेत्रफल मात्र २.४ प्रतिशत है।

सिकंदर अली, रीवा

प्र. भारत की साक्षरता प्रतिशतता कितनी है ?

☐ भारत में साक्षरता की दर ३६.२३ प्रतिशत है—पुरुष ४६.८९ प्रतिशत और स्त्री २४.८२ प्रतिशत। (इस साक्षरता दर में असम को शामिल नहीं किया गया है क्योंकि उसके आंकड़े प्राप्त नहीं हो सके)। देश में सबसे ऊंची साक्षरता दर केरल की है (७०.४२ प्रतिशत) तथा यहां महिलाओं की साक्षरता दर भी सबसे ऊंची (६५.७३ प्रतिशत) है। केंद्र शासित राज्य क्षेत्रों में चंडीगढ़ सबसे आगे है। इसकी साक्षरता प्रतिशतता ६४.७९ है। इसी प्रकार स्त्री साक्षरता (५९.३१ प्रतिशत) में भी यह आगे है।

नरेन्द्र कुमार शर्मा, आगरा

प्र. उपनिषद् तथा ब्राह्मण ग्रंथ कितने हैं ? इनके नाम क्या हैं ?

☐ वैसे तो उपनिषदों की संख्या सैकड़ों की मिलती है, किंतु इनमें प्रधान दस माने जाते हैं, जो कि इस श्लोक में परिगणित हैं :

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, माण्डूक्य तितिरः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं दश॥

इनके अतिरिक्त कौषीतकि, श्वेताश्वतर तथा मैत्रायणीय उपनिषद् भी प्राचीन माने जाते हैं। ब्राह्मण साहित्य बड़ा विशाल था, किंतु आज अनेक ब्राह्मण कालकवलित हो गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

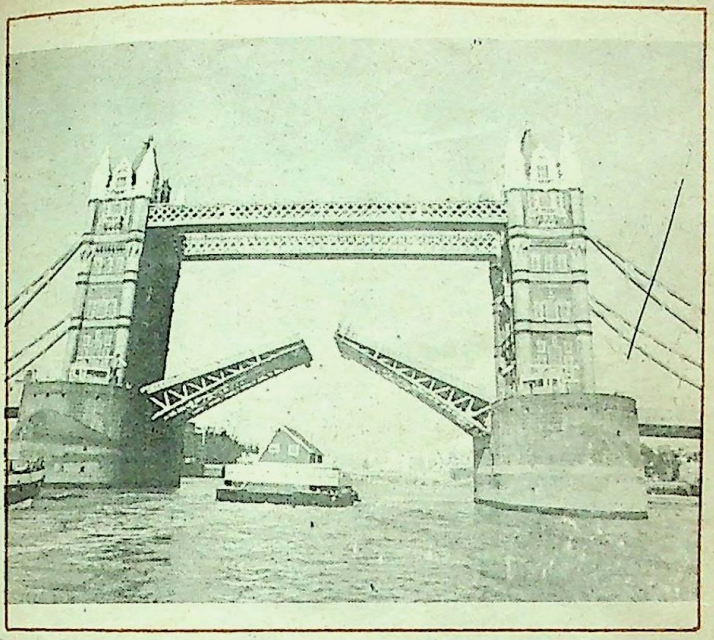

...लिफ्ट ब्रिज
...स्थित
...ब्रिज

...ब्राह्मणों की संख्या वेदानुसार यह है : ...वेद (१) ऐतरेय ब्राह्मण, (२) शौखायन ...; **शुक्लयजुर्वेद** (३) शतपथ ब्राह्मण; ...यजुर्वेद (४) तैत्तरीय ब्राह्मण; **सामवेद** ...ब्राह्मण) (५) ताण्डय, (६) षड्विंश, ...) सामविधान, (८) आर्षेय, (९) दैवत, ...) उपनिषद्, (११) संहितोपनिषद्, ...) वंश, (१३) जैमनीय; **अथर्ववेद** ...ब्राह्मण (स्रोत 'वैदिक साहित्य और ...—डॉ. वल्देव उपाध्याय पृ. ३१८-३३४)

...नंद त्यागी, कलकत्ता

...संसार में सर्वप्रथम पुल कब बना था, लिफ्ट ...किसे कहते हैं ?

□ बेबिलोन में यूफ्रेट्स नदी पर ई.पू. ...३० में लकड़ी का पुल बनाये जाने का ...उपलब्ध है । लिफ्ट ब्रिज में पुल के बीच ...खंभों के बीच का भाग दो भागों में इस प्रकार विभाजित होता है कि आवश्यकता पड़ने पर उसे ऊपर उठाया जा सकता है । चित्र में देखें कि मोटर नौका को किस प्रकार रास्ता दिया गया है । गिनीज बुक ऑव वर्ल्ड रिकार्ड्स के अनुसार नील नदी पर ई.पू. २६५० में पुल बना था ।

—सूत्रधार

''यह कपड़ा क्या भाव है ?''
''पांच रुपये मीटर है साहब ।''
''नहीं भाई, तीन रुपये मीटर दो ।''
''अरे साहब, चार रुपये मीटर तो घर में पड़ता है ।''
''तो ठीक है फिर आपके घर आकर ही ले जाऊंगा, अपने घर का पता बता दीजिए ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदेशा

● पुष्पा सिंह

पापा प्लेटफार्म-टिकट लेने के लिए रुक गये थे, और मैं आगे बढ़ आयी थी ।

यह संयोग ही था कि जब मैं पिछली बार आयी थी, तब सर्दी का मौसम था और मैंने यही चूड़ीदार सेट पहना हुआ था । खयाल आया कि मैं काफी आगे निकल आयी हूं । सीट नंबर तो देख लूं, हाथ का बैग नीचे रखकर कुली को रुकने को कहा ।

टिकट निकालकर देख ही रही थी कि कुली ने टिकट पर झांकते हुए कहा, 'डी ट्वेंटी फाइव ।'

कुली से सामान ऊपर की बर्थ पर रखवाते हुए सोचा, लाख कोशिश करो फिर भी सामान ज्यादा हो ही जाता है । पति की फरमाइश, बच्चों की फरमाइश, आस-पड़ोस की फरमाइश और तरह-तरह की फरमाइश, जिनसे शायद कभी पीछा नहीं छूटेगा ।

मुझे अपनी सीट पर सुरक्षित बैठाकर पापा नीचे उतर आये और खिड़की पर खड़े हो गये ।

थोड़ी देर प्लेटफार्म पर आने-जानेवालों को देखते रहे फिर बोले, "नोटों की गड्डी संभालकर रख ली न ?"

"ओ पापा, क्यों चोरों को मेरे पीछे लगाते हो, भूल गये पिछली बार क्या हुआ था," मैंने कृत्रिम क्रोध में कहा, "वो तो गनीमत समझो कि सामान बच गया, वरना तुमने तो अपनी ओर से पूरा इंतजाम कर ही दिया था ।" मैं कह ही रही थी तभी उन्होंने मेरा ध्यान उसकी ओर आकर्षित किया, "यह वही लड़का तो नहीं है !"

मैंने चौंकते हुए पूछा, "कौन ?"

"जो पिछली बार तुमसे अपना 'संदेश' भिजवा रहा था ।"

मैंने सतर्क होकर उसकी ओर देखा, "लगता तो वही है ! शायद, इसने अपने बाल की स्टाइल बदल दी लगती है ।" अबकी मैंने थोड़ा और गौर से उसकी तरफ देखा । वही छरहरा बदन, पांवों में चप्पल, वो कभी इधर, कभी उधर बेचैनी से कुछ खोज रहा था । उसे देखकर मैं उत्तेजित हो गयी । पापा पशोपेश में थे । मैंने पुष्टि करते हुए कहा, "हां, यह वही है, कितना धूर्त लग रहा है, जरूर फिर किसी शिकार के चक्कर में है । देखो, कैसे देख रहा है हमारी तरफ, जैसे हमें जानता ही न हो । घुटा हुआ मुजरिम है । उसने हमें अच्छी तरह पहचान लिया है ।"

हमें अपनी ओर देखते हुए देखकर वो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शा

सिंह

सकी ओर देखा,
ायद, इसने अपने
ाती है।" अबकी
ी तरफ देखा। वहां
प्पल, वो कभी इधर,
छ खोज रहा था। उसे
यी। पापा पशोपेश में
कहा, "हां, यह वहीं
जरूर फिर किसी
देखो, कैसे देख रहा है
नता ही न हो। घुट्टा
हमें अच्छी तरह

ते हुए देखकर वो

...जाकर एक चाय की स्टाल पर खड़ा
...।
...नजरें बराबर उसकी गतिविधियों पर
...। उसने कुछ खरीदा और फिर आकर
...ड़ा हो गया। वो सुपारी का पैकेट था,
...ने खरीदा था। एक कोने से फाड़कर
...ने खड़े-खड़े सुपारी निकाली और मुंह
...कर चबाने लगा। मैं उसको एकटक
...ही थी। फिर पापा से बोली, "पापा,
...कड़ना क्यों नहीं देते, यह फिर किसी को
...बनाएगा ?"
...दिन यह वर्धमान तक मेरे साथ आया
...दिन भी वह ऐसे ही सुपारी चबा रहा
...शायद, सिगरेट नहीं पीता।" मैं लगातार
...चते हुए कहे जा रही थी, "देखो, कैसे

वो के पास वाले खाने में रख दिया था न ?" मैंने उसके हाथ में, उस दिन तो तुम्हीं से डाट पेन लिया था न ? मैसेज लिखने को ! देखो, वो टी टी से फिर शायद, कुछ कह रहा है", और पापा ने फिर एक बार घूमकर उसकी ओर देखा, "शिकार फांस लिया है शायद !" और मेरे मन में अनेकों शंकाएं उठने लगीं।

दस हजार की गड्डी वैसे तो मैंने सुरक्षित स्थान पर ही रखी है, पर चोर तो सूंघकर पता कर लेते हैं। आज तो डिब्बा भी खाली पड़ा है, कुछ रौनक ही नहीं है गाड़ी में। लक्षण कुछ ठीक नहीं दिखते। मुझे लेडीज में सीट क्यों नहीं मिली ? यही सब सोच-सोचकर मन ही मन घबरा उठी।

"पापा तुम तो इतने अनुभवी हो फिर इस उचक्के के चक्कर में कैसे फंस गये उस दिन ?" मैंने पूछा और वो लाचारी से मुसकुरा दिये। लाचारी, मदद की भावना की, सच्ची इंसानियत की।

एक बंगाली मोशाय मेरे सामने की सीट पर धड़धड़ाते हुए आकर बैठ गये। एक पंजाबी लड़का पहले से ही बैठा था। हमारी बातों को वह बड़े ध्यान से सुन रहा था।

बंगाली बाबू का चेहरा कुछ असुविधाजनक लगा। वो नाक-भौं सिकोड़े बैठे थे। उनके पास एक पुराना ब्रीफकेस था। घिसा-पिटा जिसका लाक एक तरफ से लूज था और बार-बार फटाक की आवाज के साथ खुल जाता था और वे बार-बार दबाकर उसे बंद कर देते थे।

सिगनल हो गया, मुझे अचानक उस उचक्के की फिर याद आ गयी। मैंने एक नजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्लेटफार्म वाली वो सामने ही डिब्बे के दूसरे दरवाजे के सामने खड़ा था और देखते-देखते ही लपककर चढ़ गया । ''यह तो हमारी ही बोगी में चढ़ गया'', मैंने पापा से शंका प्रकट करते हुए कहा । वे बेबसी से उसे देखने लगे, उनका वश चलता तो वे उसके बाल पकड़कर सीधा प्लेटफार्म पर दे मारते ।

पापा मुझे अब भी जाते समय 'खुदरा' जरूर देते हैं जैसे पहले हॉस्टल जाते समय देते थे । मैं खुदरा के नाम पर ज्यादा से ज्यादा पाकेट-मनी बटोर लेती । गाड़ी चलनेवाली थी । पापा ने पर्स निकालकर कुछ और रुपये देते हुए कहा, ''लो, ये तुम्हारा खुदरा, तुम तो भूल ही गयी थी ।''

''जी नहीं, पापा ! मैं सोच रही थी कि तुम्हें याद है कि नहीं ।'' मैंने रुपयों को देखा, पचास थे । उनको तंग करने की सूझी, बच्चों की तरह जिद करते हुए कहा, ''और दो, इतने से क्या होगा ?''

''क्यों, इतना काफी नहीं है ?''

मैंने भी हठ किया, ''नहीं, मुझे और चाहिए ।''

''और नहीं है, सारी चेंज तुमको दे दी ।''

गाड़ी चलने लगी—''पापा अपनी सेहत का ध्यान रखना'', और मैंने आखिरी बार हाथ हिला दिया । पापा कितने अच्छे हैं । वो मेरा कितना खयाल रखते हैं । बड़े-बड़े बच्चों की मां हो गयी हूं, लेकिन अब भी मुझे वही निकी समझते हैं । मैंने अपनी सामनेवाली बर्थ को देखा, बंगाली बाबू का तना चढ़ा चेहरा कुछ नरम पड़ गया था और वे हाथ पर हाथ रखे इतमीनान से बैठे थे, तभी उनके ब्रीफकेस ने ध्वनि की और Gangotri

तरह झेंप गये, क्योंकि काफी देर बाद ऐसा हुआ था । उन्होंने झल्लाकर उसे एक हाथ से दबाकर रख लिया । पंजाबी लड़के ने अपने पांव मेरी सीट पर फैला लिये और पत्रिका देखने में मग्न हो गया । यह जरूर कहीं दूर से आ रहा होगा मैंने सोचा । और गाड़ी यहां पर बदली होगी । बाल धूल में सने हैं । चेहरा काफी थका-सा लग रहा है 'जीन्स' भी कितनी मैली है ।

मझले कद का वह हट्टा-कट्टा लड़का जिसकी नाक थोड़ी-सी पकौड़ी-सी दिख रही थी, किसी भले घर का लग रहा था । इससे कोई खतरा नहीं हो सकता ! फर्ज करो वो उचक्का मेरा सामान उठा ले जाए तो ? तो क्या यह मेरी मदद करेगा ? कौन जाने किस वेश में कौन बैठा है । मैं उठ गयी बाथरूम जाने के बहाने । यह देखने के लिए भी कि डिब्बे में और कौन-कौन कहां-कहां, कैसे लोग हैं । सारे डिब्बे में तीन-चार औरतें और कुछ बच्चे दिखे दूसरे यात्रियों की मात्रा भी बहुत कम थी । दूर का सफर करनेवाला कोई नहीं दिखा । मैं क्यों इस थर्ड क्लास गाड़ी में बैठी । पर इस वक्त कोई दूसरी ट्रेन सिलीगुड़ी जाती भी तो नहीं ! आज इतने कम लोग क्यों जा रहे हैं ? शायद, वर्धमान से चढ़ जाएं । और वर्धमान की याद आते ही जनवरी की वह घटना फिर ताजा हो गयी ।

संदेश भेजनेवाला वो लड़का या तो इसी बोगी में बैठा है या फिर बगलवाली में । मैंने उसे चढ़ते हुए देखा था ।

मैं इस कदर डरी हुई क्यों हूं ? मेरे साथ दूसरे यात्री भी तो हैं । बकवास है, आजकल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेजें ।'' मैसेज और टेलीफोन नंबर लिखकर उसने पापा को दे दिया और पापा ने मुझे । मैंने मन में सोचा बेकार ही शक कर रही थी । बेचारा मुश्किल में पड़ गया है । मैसेज ही तो देना है इसमें क्या बुराई है ? लेकिन यह तो बाद में समझ में आया कि उस संदेश में उसने रुपये किस पते पर भेजे जाएं यह तो लिखा ही नहीं था । गाड़ी चलने में अभी भी पांच-दस मिनट बाकी थे । उसने पापा से बातचीत का सिलसिला जारी रखते हुए पूछा, ''ये सिलीगुड़ी में रहती हैं ?'', ''हां'', उन्होंने छोटा-सा उत्तर देकर उससे पूछा, ''आप भी वहीं के हैं ?'' ''हां, मैं वहां रहता हूं, दुकान है मेरी वहां, यहां घूमने-फिरने आया था. . . क्या पता था ये सब हो जाएगा!'' पापा ने भी पूछ लिया, ''आपकी अटैची कैसे गायब हो गयी ?'' ''बस जी, मैं एक जगह चाय पीने उतरा था, वापस आया तो पाया अटैची गायब है, अब घर भी लौटूं तो कैसे, एक भी पैसा नहीं है ।''

उसने आहिस्ता-आहिस्ता पापा का विश्वास जीत लिया और अपने प्रति सहानुभूति की मात्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भांपते हुए चाल चल दी। अगर आप सिलीगुड़ी तक का टिकट बनवा दें, तो बड़ी मेहरबानी होगी। मैं वहां पहुंचते ही इनको रुपये दे दूंगा।'' पापा को सोचते देख उसने आगे कहा, ''यदि आपको यकीन न हो तो मेरी घड़ी रख लीजिए।'' उसने घड़ी उतारने का नाटक करते हुए कहा।

''अरे नहीं-नहीं, इसका हम क्या करेंगे ?'' फिर थोड़ा सोचकर बोले—''पर तुम्हारा टिकट कैसे बनेगा, गाड़ी तो चलनेवाली है, तुम पूछ लो, यह टी टी सामने खड़ा है न, इससे पूछ लो, अगर यह मान जाए तो पैसे हम दे देंगे।''

मुझे आश्चर्य हुआ, ''तुम वाकई उसे रुपया दोगे ?''

''मैं कहां दूंगा वो तो तुम्हें ही देने हैं, मेरे पास तो हैं नहीं, जितने थे वह तुमको दे दिये।''

''नहीं, मैं नहीं देती, यदि इसने न लौटाये तो ?''

''तो तुम मुझसे इसके डबल ले लेना।''

''नहीं, डबल नहीं, चौगुना लूंगी ''

''अच्छा ठीक है।''

टी टी से बात करके वह आ गया और कहा, ''वो मान गया है, रास्ते में मेरी टिकट बना देगा।''

''ठीक है तो आओ, बैठ जाओ'' और मेरी ओर देखते हुए बोले, ''मैंने इनको कह दिया है कितने रुपये चाहिए ?''

''बस सौ से काम चल जाएगा।''

''ठीक है यह दे देगी !''

''बहुत-बहुत मेहरबानी आपकी, क्या करूं मैं आपको तकलीफ नहीं. . . ''

''अरे, कोई बात नहीं, हो जाता है कभी-कभी ऐसा भी।''

मैं लेडीज कैबिन में थी, वह उसकी बाहरवाली सीट पर बैठ गया और अंदर की तरफ बराबर देखता रहा। मुझे उसका इस तरह देखना अच्छा न लगा फिर भी मन में उसके प्रति विश्वास जमाने की कोशिश की।

गाड़ी चलने से पहले पापा ने एक बार फिर ताकीद की, ''सामान संभालकर रख लेना, कहीं चोरी न हो जाए।'' उन्होंने मजाकिया ढंग से हंसते हुए कहा। मैंने भी उसी अंदाज से कह दिया, ''चोरी का इंतजाम तो कर ही दिया है, रही-सही कसर भी पूरी हो जाएगी।''

हमारी कैबिन में बस हम तीन औरतें ही थीं, मेरी बर्थ पर मैं अकेली ही बैठी थी। मैंने बाहर बैठे उस अजनबी से पूछ ही लिया, ''सिलीगुड़ी में आप कहां रहते हैं ?''

''जी'', वो थोड़ा चौंका, और तब उसने एक ऐसी जगह का नाम बताया, जिससे मैं अच्छी तरह वाकिफ थी और मुझे उस पर पूरा भरोसा हो गया।

बात करते-करते वह कब आकर मेरी बगल में बैठ गया, पता ही न चला। बातचीत के दौरान उससे थोड़ी आत्मीयता-सी हो गयी थी। हमदर्दी के तौर पर मैंने उससे पूछा, ''खाना तो आपने खाया नहीं होगा ?''

''जी नहीं, बस अब तो घर पहुंचूंगा तभी खाऊंगा।'' मैंने सोचा, शायद यह तकल्लुफ कर रहा होगा। इसलिए कह दिया, ''शरमाने की कोई बात नहीं, खाने-पीने के लिए कुछ और रुपये चाहिए तो ले लीजिएगा।''

''जी बहुत-बहुत शुक्रिया, बड़ी मेहरबानी आपकी।'' थोड़ी देर बाद वह उठकर बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उसकी
ा और अंदर की
ुझे उसका इस तरह
भी मन में उसके
शंश की ।
पा ने एक बार फिर
ाकर रख लेना, कहीं
नजाकिया ढंग से
ी अंदाज से कह
कर ही दिया है,
ाएगी ।''
तीन औरतें ही थीं,
ठी थी । मैंने बाहर
लिया, ''सिलीगुड़ी

और तब उसने एक
जिससे मैं अच्छी
स पर पूरा भरोसा

आकर मेरी बगल
। बातचीत के
-सी हो गयी थी ।
पूछा, ''खाना तो

र पहुंचूंगा तभी
यह तकल्लुफ
दिया, ''शरमाने
के लिए कुछ और
।''
बड़ी मेहरबानी
उठकर बाहर

हटा गया और फिर आकर बोला, ''लाइए, रुपया दे दीजिए, टी.टी. आ गया है ।'' मैं रुपया निकालने लगी तो वह मेरे और भी नजदीक आ गया और बैग में झांक-झांककर देखने लगा । बीस रुपये लेने के बाद बोला, ''बीस रुपया और दे दीजिए, चाय-पानी के लिए ।'' मैंने २० रुपये और दे दिये ।

कुछ देर वह बाहर ही टिकट बनवाने के बहाने खड़ा रहा । फिर वापस आकर मेरे पास बैठ गया । वर्धमान आने में अभी थोड़ी देर थी । उसका मेरे पास फिर आकर बैठ जाना अच्छा न लगा । थोड़ी रुखाई से बोली, ''टिकट बन गयी आपकी ?'' वह चौंका, ''हां ।'' ''तो जाइए, अपनी सीट पर बैठिए, यहां क्यों बैठे हैं ?'' वह तुरत उठकर बाहर चला गया ।

वर्धमान आ गया था । मैं बोतल में पानी भरना चाहती थी । उसने कहा, ''लाइए मैं भर लाऊं और कुछ चाहिए तो ला देता हूं ।''

''नहीं सिर्फ पानी चाहिए ?'' गाड़ी चलने को हुई उसने बोतल लाकर देते हुए कहा, ''मैं बगल में ही बैठा हूं कुछ चाहिए तो कहिएगा ।''

''ठीक है ।'' और मैंने कैबिन बंद कर लिया ।

शाम होने को आयी और उसके साथ सरदी भी बढ़ गयी । खयाल आया, उसके पास तो कुछ ओढ़ने-बिछाने को है नहीं । मैं अपने दो कंबलों में से एक उसे दे सकती हूं । मैंने कंबल उठाया और जहां उसने अपनी सीट बतायी थी उस ओर बढ़ गयी । वह कहीं नजर नहीं आया । सोचा, शायद टायलेट में हो । पर वह कहीं भी नहीं था । मैंने आंख फाड़-फाड़कर चारों ओर उसे खोजा, पर वह तो लापता हो चुका था ।

आज फिर उसे देखकर सारी घटना ताजा हो गयी थी । डिब्बे में बैठे हर एक आदमी में उसकी सूरत दिखने लगी । उफ ! इतना लंबा सफर कैसे कटेगा ? बंगाली तो भला ही दिखता है । पंजाबी से पूछूं वह कहां जा रहा है । इसी उधेड़बुन में थी कि तभी वह टी.टी. जिससे वह उचक्का बात कर रहा था, आया और खड़ा होकर अपनी लिस्ट में गौर से कुछ देखने लगा । उसके चेहरे पर कुछ अजीब से भाव आये, जवान-सा लड़का था । नया-नया ही नौकरी पर लगा होगा ! मुझे लगा यह जरूर उससे मिला हुआ है । शंका ने फिर घेर लिया । मुझे रुपये साथ लेकर नहीं चलना चाहिए था । लेकिन टिकट चेक करके वह चुपचाप चला गया । मैंने चैन की सांस ली और बर्थ पर लेट गयी । लेकिन वह लड़का दिखायी नहीं दिया । सोचा, शायद मेरी ही तरह किसी से सौ-सवा सौ रुपये लेकर वह वर्धमान पर उतर गया होगा । इस बार संदेशे का शिकार कोई और सहृदय मासूम बना होगा ।

—१-१०-२४७/२ अशोक नगर एक्सटेंशन,
हैदराबाद (आं.प्र.)

''आजकल वह तुम्हारी बहुत बुराई करता फिर रहा है और तुम हो कि कुछ करते ही नहीं ।''
''अगर कोई गधा तुम्हें दुलत्ती मारे तो तुम भी गधे को दुलत्ती मारोगे क्या ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि-शिरोमणि बिहारी

● सुरेश धींगड़ा

बड़ा कवि कौन है, अधिक लिखनेवाला, महाकाव्यों की रचना करनेवाला अथवा कम, लेकिन सटीक लिखनेवाला ? यह प्रश्न अधिकतर उठाया जाता है । इसलिए कभी तुलसी महान कहलाते हैं, तो कभी सूर; कभी देव बड़े होते हैं, तो कभी बिहारी; कभी प्रसाद को यह स्थान प्राप्त होता है, तो कभी निराला को । लेकिन कम लिखने से किसी गहन कवि का साहित्य में स्थान कम हो जाता है, यह बात हर युग में कोई-न-कवि झुठलाता आया है ।

रीतिकालीन कवि बिहारी ऐसे ही कवि हैं, जिनका कद कम लिखने के बावजूद बड़ा है । उनके समान कम रचना करके इतना अधिक सम्मान प्राप्त करनेवाला कवि संभवतः दूसरा नहीं है । दूसरी भाषाओं में कुछ ऐसे उदाहरण अवश्य मिल जाते हैं, जिन्होंने संख्या की दृष्टि से बहुत कम कविताओं की रचना की है, लेकिन समाज और साहित्य में उनका स्थान बहुत ऊंचा है । बलगारियायी कवि वापृत्सारोव एक ऐसा ही उदाहरण है । इस संदर्भ में इस तथ्य पर ध्यान देना अनिवार्य है कि हिंदी में बिहारी या बलगारियायी में वापृत्सारोव को यह स्थान उनकी कविता की शक्ति के कारण या उनके काव्यालोक के क्षेत्र-विशेष के कारण मिला है । बिहारी के संदर्भ में श्रृंगार की मुक्तक-रचना की विशिष्ट शैली ही काव्य-मर्मज्ञों को उनकी ओर खींचती रही है । इस शैली की प्रायः सभी विशेषताएं बिहारी के मुक्तकों में मिल जाती हैं ।

आचार्य केशव से संपर्क

बिहारी का जन्म १५१५ ई. में ग्वालियर के केशवराय के यहां हुआ था । केशवराय पुत्र-जन्म के कुछ समय बाद ग्वालियर छोड़कर ओरछा चले गये । वहीं बिहारी का संस्कृत और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

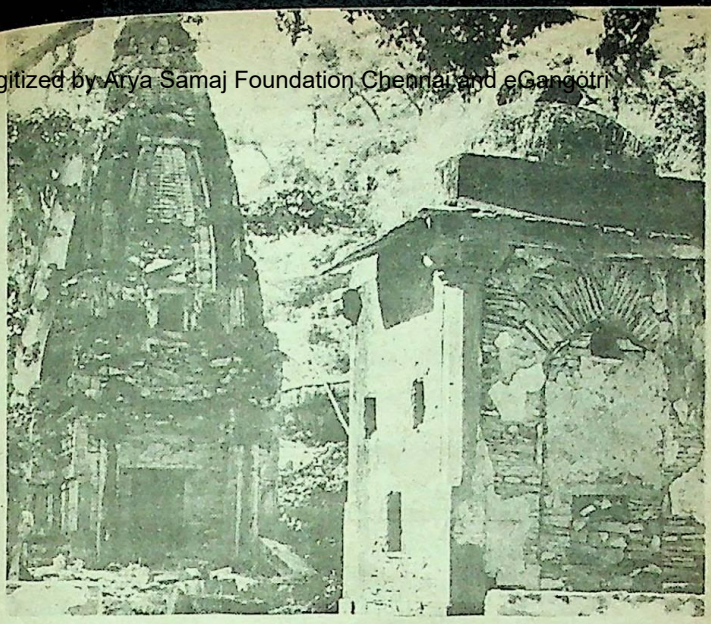

...कवि बिहारी
...
...समाधि

...कृत आदि काव्य-ग्रंथों से परिचय हुआ और ...ही उस समय के उद्भट कवि-आचार्य ...व से संपर्क भी । उनसे बिहारी ने ...-शिक्षा ग्रहण की । इस शिक्षा के ...मस्वरूप बिहारी की कविता पर केशव का ...प्रभाव परिलक्षित होना स्वाभाविक जान ...ता है । संभवतः इस कारण तथा कुछ ...हारी के पिता का नाम कवि केशव से मिलने ...कारण राधाकृष्ण दास ने अपने एक निबंध में ...हारी को कवि केशव का पुत्र सिद्ध करने का ...यास भी किया है । यों, बिहारी धौम्य-गोत्री ...वारी चौबे थे और इनका विवाह किसी माथुर ...ण की बेटी से हुआ था । कालांतर में ...ने अपने भतीजे निरंजन को गोद ले लिया ...क्योंकि इनकी अपनी कोई संतान नहीं हुई ।

बिहारी ओरछा में अधिक टिके नहीं ...वहां से आगरा चले गये । वहां उन्होंने उर्दू ...फारसी का अध्ययन किया तथा अब्दुर्ररहीम खानखाना के संपर्क में आये । लोकश्रुति के अनुसार बिहारी ने खानखाना की प्रशंसा में कुछ दोहे कहे, जिस पर इन्हें पर्याप्त पारितोषिक मिला । इसके बाद बिहारी के लिए दरवाजे खुलते चले गये । वस्तुतः वह काल शासकों के आश्रय में पलने का काल था । बिहारी भी इसके अपवाद नहीं थे । उन्हें मुगल बादशाह शाहजहां के साथ-साथ जोधपुर तथा बूंदी रियासतों से भी वृत्ति मिलती थी । जयपुर नरेश के तो वे विशेष कृपा-पात्र थे । कहा जाता है कि जयपुर नरेश जयसिंह ने उन दिनों एक अत्यंत सुंदर कन्या से विवाह किया था और उसके सौंदर्य से अभिभूत होकर राज-काज सब भूल रनिवास के होकर रह गये थे । ऐसे अवसर पर बिहारी ने जाकर उनकी सेवा में एक दोहा भेजा :

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल
अली कली सो ही बंध्यौ आगे कौन हवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर रेलवे आपके नित्य जीवन का अभिन्न अंग

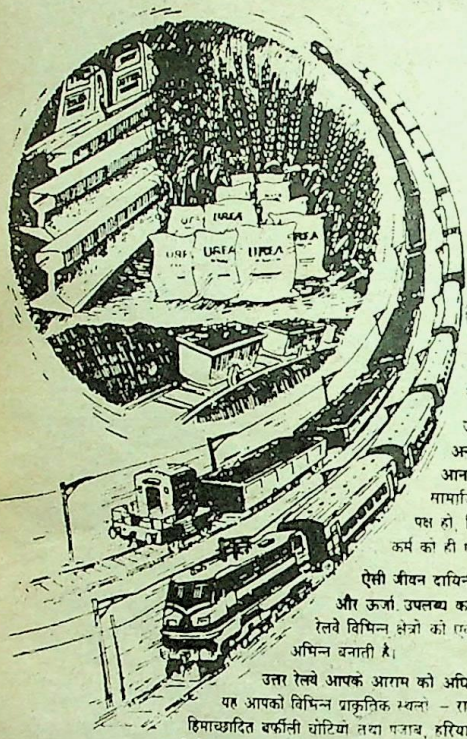

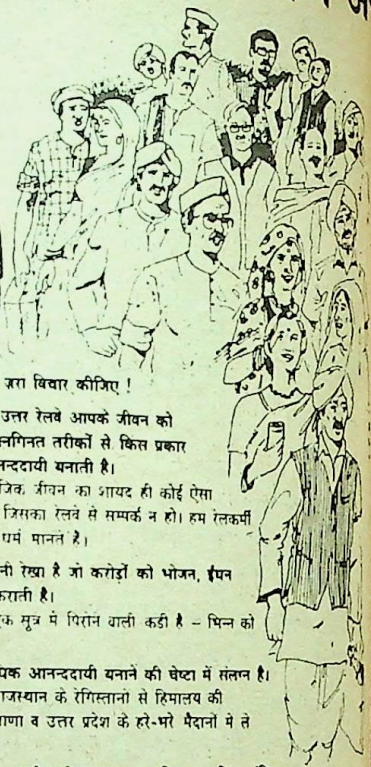

ज़रा विचार कीजिए !

उत्तर रेलवे आपके जीवन को अनगिनत तरीकों से किस प्रकार आनन्ददायी बनाती है।

सामाजिक जीवन का शायद ही कोई ऐसा पक्ष हो, जिसका रेलवे से सम्पर्क न हो। हम रेलकर्मी कर्म को ही धर्म मानते हैं।

ऐसी जीवन दायिनी रेखा है जो करोड़ों को भोजन, ईंधन और ऊर्जा उपलब्ध कराती है।

रेलवे विभिन्न क्षेत्रों को एक सूत्र में पिरोने वाली कड़ी है – भिन्न को अभिन्न बनाती है।

उत्तर रेलवे आपके आराम को अधिक आनन्ददायी बनाने की चेष्टा में संलग्न है।

यह आपको विभिन्न प्राकृतिक स्थलों – राजस्थान के रेगिस्तानों से हिमालय की हिमाच्छादित बर्फीली चोटियों तथा पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश के हरे-भरे मैदानों में ले जाती है।

उत्तरी भारत में रेलवे लगभग सवा सौ वर्षों से राष्ट्रीय विकास के प्रत्येक प्रयास – परिवहन, हरित क्रांति, ऊर्जा उत्पादन, तीव्र औद्योगीकरण आदि में सक्रिय योगदान दे रही है।

उत्तर रेलवे प्रतिदिन 900 मेल/एक्सप्रेस एवं सवारी गाड़ियों में 11 लाख यात्रियों का वहन करती है। साथ ही प्रतिदिन 2 लाख टन माल ढोया जाता है।

उत्तर रेलवे की दैनिक गतिविधियों में शामिल है –

- 47,000 टन अनाज का उत्तर के उपजाऊ क्षेत्र से देश के विभिन्न भागों को परिवहन
- 62,000 टन कोयला, उद्योगों के लिए पहुँचाना
- 15,000 टन पेट्रोलियम पदार्थों का यातायात
- 17,000 टन खाद ढोना

ये सब देश में आत्म विश्वास तथा आत्म सम्मान की भावना की जागृति लाने में सहायक है।

रेल पटरियों का जाल, जीवन दायिनी शिराओं और धमनियों की भाँति काम कर रहा है।

उत्तर रेलवे करोड़ों देश वासियों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में सतत प्रयत्नशील है।

उत्तर रेलवे

उत्तरी क्षितिज में स्थिर और निरंतर चमकता हुआ नक्षत्र है – उत्तर रेलवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि बिहारी पूर्णरूपेण कवि बने रहे, आचार्यत्व की ओर उन्होंने कभी कदम नहीं बढ़ाये । बिहारी अपने समाज का साक्षात अनुभव कर वर्णन करनेवाले कवि हैं । वस्तुतः यह बिहारी का लोकज्ञान और लोकानुभव है, जो उन्हें बड़े कवियों की श्रेणी में ला खड़ा करता है ।

जयसिंह को सचेत करने के लिए इतना ही पर्याप्त था । वे राज्य-कर्म की ओर लौट आये । बिहारी की काव्य प्रतिभा ने उन्हें जयपुर निवासत से ग्राम भी पुरस्कार में दिलवाया और आस्थान-कवि का पद भी ।

रसिक नागर सभ्यता के प्रतीक

बिहारी का समय शोषकों और शोषितों में बटे समाज का था । राज्यकर्मी जनता का शोषण करते थे क्योंकि राज्य-नियमों के अंतर्गत उन्हें एक निश्चित धन-राशि राज्य-कोषों में जमा करानी होती थी । इनके साथ-साथ एक वर्ग और था, जिसमें राज्याश्रित विद्वान थे । इनके व्यवहारों में मध्य-वर्ग और उच्च-वर्ग के संस्कारों का विचित्र मिश्रण मिलता था । एक ओर वैभव तथा दूसरी ओर व्यक्तिगत आकांक्षाएं इन्हें घेरे रहती थीं । विलास की ओर झुकाव और परंपरा का संस्कार इनके व्यक्तित्व का अंग बन गये थे ।

यह एक ऐसी नागर सभ्यता थी, जो उसी युग की उपज थी । बिहारी भी इसका अपवाद नहीं थे । बिहारी अपने समय के अनुरूप रसिक थे और उनकी रसिकता नागर-जीवन के साथ जुड़ी हुई थी और उसमें सम्मिश्रण था व्यंग्य-विनोद का । बिहारी के अनेक दोहे उनकी इन प्रवृत्तियों की ओर संकेत करते हैं :

चल्यौ जाइ, ह्यां को करै हाथिन को व्यापार
नहिं जानतु इहिं पुर बसैं धोबी, ओड़, कुंभार

या,

गदराने तन गोरटी, ऐपन-आड़ लिलार
हूठ्यौ दै, इठलाई, दृग करै गवाँरि सुवार

परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि बिहारी अपने युग की प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व मात्र करते हैं । इसके विपरीत वे अपने समाज की आलोचना करते हुए इस ओर स्पष्ट संकेत करते हैं कि वे सामंत-वर्ग के पतन पर आलोचनात्मक दृष्टि रखे हुए हैं । यही कारण है कि बिहारी राजाओं और जागीरदारों के दोहरे शासन और उनके अनाचारों-दुराचारों का विश्लेषण करते हैं :

बिसम दुराज प्रजान में क्यों न बढ़े दुखदंद
अधिक अंधेरी जग करै मिलि मावस रवि चंद

बिहारी अपने समाज का साक्षात अनुभव करके वर्णन करनेवाले कवि हैं । वस्तुतः यह बिहारी का लोकज्ञान और लोकानुभव है, जो उन्हें बड़े कवियों की श्रेणी में ला खड़ा करता है ।

बिहारी-काव्य की विशेषता

लोक-ज्ञान के साथ-साथ बिहारी शास्त्र-ज्ञान और काव्य-ज्ञान से भी परिपूर्ण थे । रीति का उन्हें सम्यक् ज्ञान था । अतः उनकी 'सतसैया' के ७१३ दोहों और सोरठों तथा तीन कवित्तों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामग्री में से काफी अनुपात श्रृंगार क्षेत्र का है, जिसमें नायक-नायिका, सौंदर्य-वर्णन, प्रेम-वर्णन, हाव-भाव, लोक-व्यवहार, नेत्रों की चंचलता, संचार, बेधकता, विशालता आदि का वर्णन है । बिहारी-काव्य की विशेषता यह भी है कि उसमें हाव-भावों के साथ-साथ अनुभावों की योजना भी अत्यंत सुंदर है । लेकिन शास्त्रज्ञ होने के बावजूद बिहारी ने स्वयं को रीति के साथ किसी ऐसे बंधन में नहीं बांधा, जिससे कल्पना की स्वच्छंदता अवरुद्ध हो जाए । वे सीमांत पर चलते हुए रीतिबद्धता और रीतिमुक्ति के क्षेत्रों में संचरण करते रहे । यही कारण है कि बिहारी उत्कट सौंदर्य का वर्णन करते समय काव्य के बाह्य-तत्वों—अलंकारादि की, काव्योपयोगिता का ध्यान बराबर रखते हैं । इसलिए उनके दोहों में अनुप्रास, वीप्सा, यमक, रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा, श्लेष आदि अलंकारों की विशाल संख्या होने पर भी उनका स्वरूप बिगड़ा नहीं है और न अलंकार भरती के लगते हैं । बिहारी ने इस क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का भरपूर उपयोग करते हुए चमत्कार और अनुभूति दोनों का ध्यान रखा है :

मरकत-भाजन-सलिलगत इंदु कला कैं देख
झींन झगा मैं झलमलैं स्यामगात नखरेख

बिहारी निंबार्क-संप्रदाय में दीक्षित थे और अनेक दोहों में उन्होंने अपनी भक्ति-भावना को प्रकट भी किया है । परंतु बिहारी की कला उन्हें काव्य की उस सर्वमान्य भूमि पर ला खड़ा करती है, जहां पहुंचकर निर्गुण राम और सगुण राम या कृष्ण में कोई भेद नहीं रहता । इसलिए उनमें न तो कोरा भक्त-कथन है और न अपने पूर्ववर्ती भक्त-कवियों का 'विनयी-भाव', वे भक्ति को भी रसिक के दृष्टिकोण से प्रकट करते हैं :

थोरे ही गुन रीझते बिसराई वह बानि
तूमहूं, कान्ह. मनोभए आज काल्हि के दानि

और

मकराकृति गोपाल कैं सोहत कुंडल-कान
धर्यौं मनो हिय-धर समरू, ड्योढ़ी लसत निसान

बिहारी की भाषा काफी सीमा तक शुद्ध साहित्यिक ब्रज है, यद्यपि इनकी भाषा में कुछ पूर्वी और बुंदेलखंडी प्रयोग भी मिलते हैं और सूफियों के प्रभाव से कुछ लाक्षणिक प्रयोग भी । भाषा में सांगरूपकों का निर्वाह, पर्याय-व्यापारों का समावेश, विशिष्ट चेष्टाओं का संयोजन, मुहावरों का प्रयोग, सांकेतिक शब्दावली और व्याकरण का गठन कुछ ऐसी विशेषताएं हैं, जो बिहारी को अपने समकालीनों से अलग खड़ा कर देती हैं । हां, बाद के अनेक कवि—मतिराम, रसलीन, पद्माकर, रत्नाकर आदि उनके भाषा-प्रयोगों और शैलीगत विशेषताओं से प्रभावित दीखते हैं । बिहारी का यह प्रभाव, उनके काव्य की विशेषता और महत्त्व की स्थापना करता है । उनके काव्य की भावात्मकता और पैनापन सहृदयों को गहरे तक बींध देता है । इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बिहारी पूर्णरूपेण कवि बने रहे, आचार्यत्व की ओर उन्होंने कभी कदम नहीं बढ़ाये । रीतिकाल के इस सघनतम कवि का १६६३ ई. के आसपास देहांत हो गया और इसके साथ ही रीतिमुक्त काव्य-परंपरा पर एक विराम भी लग गया ।

—५ सी/३, न्यू रोहतक रोड,
नयी दिल्ली-११०००५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

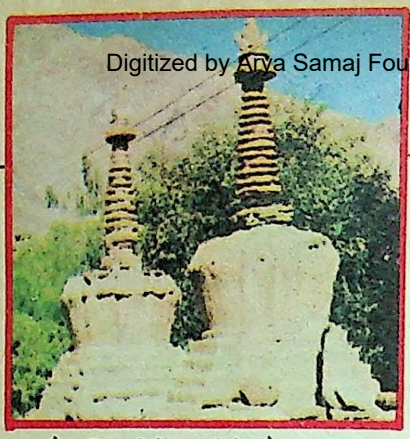

बौद्ध-भिक्षुओं के अवशेषों और संसार की भौतिक वस्तुओं के लिए हुए सौरवन

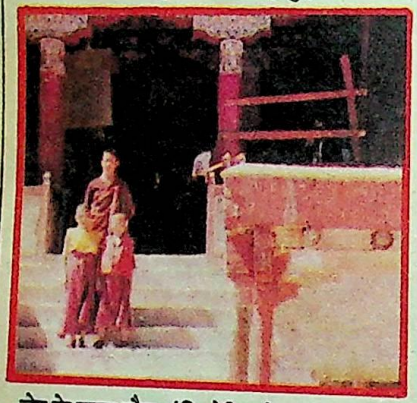

लेह के मुख्य बौद्ध-मंदिर हेमिस के बाहर नव-शिक्षित बौद्ध भिक्षु अपने गुरु के साथ

लद्दाख के रहस्य भरे बौद्ध मंदिर -गुम्पा

● डॉ. अशोक जेरथ

नंगे पर्वतों की श्रंखलाओं पर स्थित सफेद रंग के पत्थरों से बनायी गयी किलेनुमा इमारतें जिन्हें रंग-बिरंगी झंडियों से सजाया जाता है, लद्दाख में चारों ओर फैली हैं । इन तक पहुंचना

जीवैत्साल का बौद्ध गुम्पा चीनी पगोडा शैली का है और अभी हाल में ही निर्मित हुआ है

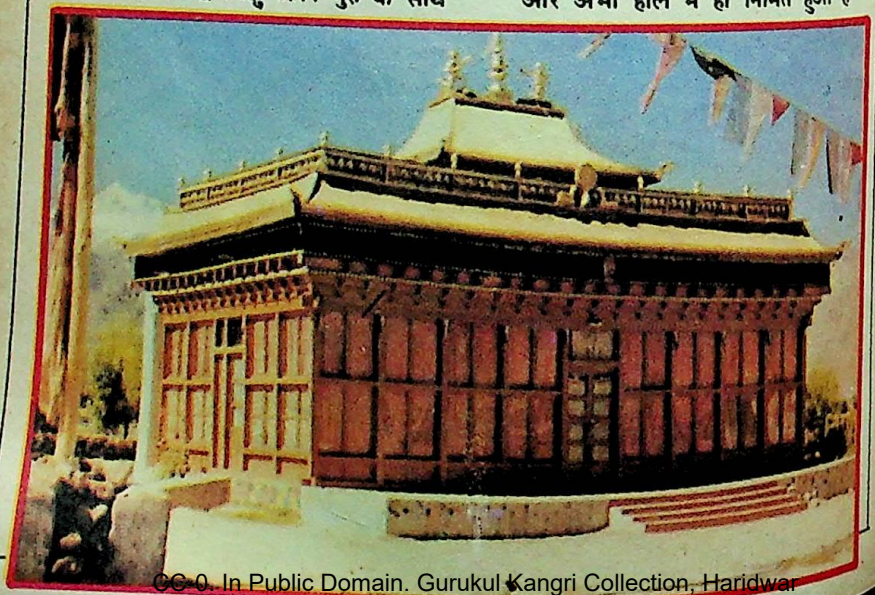

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा कठिन कार्य है किंतु यह सदा तस्वीरों की तरह आकर्षक होते हैं । यह इमारतें ज्ञान की अक्षय भंडार और उच्चतर शिक्षा के माध्यम कही जा सकती हैं । इन्हें गुम्पा या बौद्ध-मंदिर कहा जाता है । अतीत में इनका प्रयोग किलों की तरह ही सुरक्षा के लिए किया जाता था । बौद्ध भिक्षु कुछेक हथियारबंध किसानों के साथ, जिनका नायक 'खरपों' कहलाता था, इस किलेनुमा इमारतों की रक्षा करता था । पुराने बौद्ध मंदिरों में हेमिस थिक्से, शे, शंकर, स्पितुक, फ्यांग, लामा-यूरू, खरबू आदि विदेशी पर्यटकों तथा विद्वानों के आकर्षण का केंद्र रहे हैं । इन बौद्ध स्थानों में हजारों बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियां रहते हैं । इन संस्थानों की बाहरी दीवारें भिक्षुओं के रहने के लिए बनाये गये कमरों की होती हैं और अंदर का भाग कई बड़ी इमारतों में बंटा होता है । एक खुला कमरा दैनिक पूजा-पाठ के लिए तथा धार्मिक अनुष्ठान के लिए होता है । इन संस्थानों की बाहरी दीवारें चूने से पुती होती हैं । अकसर यह बौद्ध-मंदिर ऐसी जगहों पर होते हैं, जहां शांत वातावरण हो और भीड़-भाड़ न हो ।

कनिंघम के अनुसार इन संस्थानों को शहरी भीड़ के इलाकों और रौनक के प्रभाव से दूर स्थापित किया जाता था । इन बौद्ध मंदिरों की सीमा पर पिरामिड-जैसे बने हुए ग्रौनदे हैं जिन्हें 'सॉरतन' कहा जाता है । इन सारतन और बौद्ध मंदिरों को बीच से अकसर तीन-चार फुट मोटी और पांच फुट ऊंची एक दीवार दोनों को जोड़ती है । ऐसी बड़ी पत्थरों की बनी दीवारों पर 'ओम मनै पद्मनै हों', वज्रपाणि हों' और 'ओम वागेश्री हों' आदि मंत्र खुदे. चौड़े-चौड़े

गुम्पा अर्थात बौद्ध मंदिर : अतीत में जिनका प्रयोग सुरक्षा के लिए एक दुर्ग की भांति किया जाता था । लद्दाख में ऐसे गुम्पा यत्र-तत्र स्थित हैं । आज वे धार्मिक केंद्र होने के साथ-साथ पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र भी बने हुए हैं ।

पत्थर रख दिये जाते हैं । कई बार इन पत्थरों पर महात्मा बुद्ध और मैत्रेय के अत्यंत सुंदर चित्र खुदे होते हैं । इन दीवारों को 'मने' की दीवार कहा जाता है । ये दीवारें एक कथन के अनुसार लोगों को बुरी नजर से बचाती हैं । 'मने दीवार' जो 'हेमिस' के बौद्ध-मंदिर तक जाती है, लगभग डेढ़ किलोमीटर लंबी, पांच फुट ऊंची और बाईस फुट चौड़ी है । इस दीवार के बीच-बीच में सॉरतन सजे हैं । एक विश्वास के अनुसार सॉरतन उच्चतम बौद्ध 'सांग्य कोनचोक' को समर्पित हैं । स्वयं सॉरतन का अर्थ दो भागों में ढूंढ़ा जा सकता है । चौ+तन अर्थात पवित्र कुंभ, मुख्य पिरामिड में धर्ममंत्र कागज पर, कपड़े पर और पत्थरों पर लिख कर रख दिये जाते हैं और इनके साथ दुनिया में भौतिक सुख में प्रयोग में होनेवाली चीजें भी रख दी जाती हैं ।

गुम्पा बहुत बड़े मंदिर होते हैं, जिनमें सभागृह, पूजागृह, लामाओं के रहने के लिए कमरे, साधना और ध्यान के लिए प्रकोष्ठ और एक बहुत बड़ा केंद्रीय प्रकोष्ठ बुद्ध के किसी न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी प्राचीन की बहुत बड़ी प्रतिमा देखने को मिलती है । ये प्रतिमाएं बौद्ध साक्य थुबा या भविष्य में आनेवाले महात्मा बुद्ध, जिसे चंबा या बुद्ध मैत्रेय कहा जाता है कि प्रतिमूर्ति होती हैं, दूसरे प्रकोष्ठों में या फिर केंद्रीय प्रकोष्ठ में भी एक ओर मंजुश्री, वज्रपाणि, तारा या शक्ति तथा महाकाली की मूर्तियां होती हैं । मूल बैक के पास एक चट्टान में खुदी हुई 'अवलोकतेश्वर' की पचास फुट से भी ऊंची प्रतिमा दर्शकों को आश्चर्यचकित कर देती है ।

सोने की मूर्तियां

अधिकतर ये बौद्ध-मंदिर लेह नगर के आसपास फैले हुए हैं । सबसे पास शंकर का बौद्ध मंदिर है और लेह बाजार से लगभग तीन किलोमीटर दूर है । इस बौद्ध-मंदिर में महात्मा बुद्ध की सोने की छोटी-छोटी मूर्तियां और आश्चर्य में डाल देनेवाली अनेक रंगीन तस्वीरें हैं । यह कभी 'सपितुक' के लामा कौशक बकुला का रहने का स्थान भी था । लेह से लगभग नौ किलोमीटर दूर श्रीनगर सड़क पर पीत बौद्ध-दर्शन वालों की एक बौद्ध मंदिर सपितुक गुम्पा, एक ऊंची चोटी पर स्थित है । यहां मुख्य लामाओं के रहने के स्थान, एक पुस्तकालय और लामाओं को पढ़ाने के लिए एक संस्थान भी है । सपितुक गुम्पा अपने सरदी में होनेवाले एक पर्व के लिए प्रसिद्ध है, जब महाकाली की प्रतिमा के मुखपर से आवरण हटाया जाता है । इसके एक कमरे में अलग-अलग प्रकार के अद्‌भुत मुखौटे रखे गये हैं, जिन्हें 'डैविल डांस' के नृत्य में प्रयोग किया जाता है ।

मक्खन से भरा हुआ दीपक

लेह से लगभग १५ किलोमीटर दूर लमवाली सड़क पर 'शे' का प्रसिद्ध बौद्ध मंदिर है, जिसमें एक बहुत बड़ी बुद्ध की मूर्ति जो लगभग ४० फुट ऊंची है और दो मंजिलों तक जाती है, स्थापित है । 'शे' कभी लद्दाख की राजधानी था और राजाओं और राजसी महलों के लिए प्रसिद्ध था । 'शे' के बौद्ध-मंदिर में मक्खन से भरा हुआ एक दीपक जलता रहता है, जो अंधेरे वातावरण को दूर करता है । भित्ति चित्र इतने बड़े और सुंदर हैं कि दर्शक आश्चर्यचकित रह जाते हैं । यहीं से लगभग ५ किलोमीटर आगे एक पहाड़ी की चोटी पर 'थिक्सेस' का प्रसिद्ध बौद्ध-मंदिर है । यहां वर्ष में एक बार मेला लगता है और लद्दाख से अतिथियों को इसे देखने के लिए बुलाया जाता है । इस मंदिर को सीढ़ी दर सीढ़ी बनाया गया है, कुछ सौ सीढ़ियां ऊपर चढ़ने पर हमें प्रार्थना चक्रों की करीने से सजी एक कतार दिखायी देगी । ये चक्र चक्कियों की तरह बने होते हैं, जिनके दो कोने घूरियों में होते हैं, चक्रों को हिलाने से ये घूरियों पर घूम जाते हैं, इन चक्रों में मंत्र लिखे और कागज के टुकड़े पड़े होते हैं । बाहरी आवरण पर भी मंत्र लिखे होते हैं । एक चक्र में जितने मंत्र पड़े होते हैं और जितनी बार यह चक्र घूमता है, गुणा करके इतना फल पाने की अपेक्षा बौद्ध-श्रद्धालुओं को रहती है । लगभग हर बौद्ध-मंदिर के प्रांगण में ऐसे धर्म-चक्र लगे होते हैं । थिंकसे गुम्पा में सीढ़ियां जाने से पहले एक बहुत बड़े खुले प्रांगण में रुक जाती हैं, जहां प्रांगण के बीचों बीच एक बहुत बड़ा धर्म ध्वज फहराता है । यहीं से दक्षिण दिशा में ऊपर जाती सीढ़ियां मैत्रेय की बहुत बड़ी स्थापित मूर्ति के मंदिर में हमें ले जाती हैं । यह पीले रंग की बैठी हुई बौद्ध प्रतिमा लगभग तीस फुट ऊंची है । और दो मंजिलों में पूरी होती है । ध्यानावस्था में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्ध की मूर्ति जो
और दो मंजिलों तक
" कभी लद्दाख की
ं और राजसी महलों
के बौद्ध-मंदिर में
दीपक जलता रहता
ो दूर करता है। भित्ति
हैं कि दर्शक
। यहीं से लगभग ५
ड़ी की चोटी पर
द्ध-मंदिर है। यहां वर्ष
और लद्दाख से
के लिए बुलाया जाता
र सीढ़ी बनाया गया
चढ़ने पर हमें
ी सजी एक कतार
क्रियों की तरह बने
रियों में होते हैं, चक्रों
घूम जाते हैं, इन
गज के टुकड़े पड़े
र भी मंत्र लिखे होते
ा पड़े होते हैं और
ा है, गुणा करके
बौद्ध-श्रद्धालुओं को
द्ध-मंदिर के प्रांगण में
। थिंकसे गुम्पा में
बहुत बड़े खुले
ां प्रांगण के बीचों
वज फहराता है।
र जाती सीढ़ियां
त मूर्ति के मंदिर में
रंग की बैठी हुई
फुट ऊंची है। और
ध्यानावस्था में

कादम्बिनी

अर्धमुंदित आंखों के माध्यम से तेज की अविरल धारा चारों ओर प्रवाहित होती है। लंबे कानों में बड़े-बड़े दो बाले लटकते हैं, जिन्हें कीमती पत्थरों से सजाया गया है। सर पर पांच पंखुरियों वाला ताज है, जिनमें पांच ज्ञाण बुद्ध प्रतिमूर्तित किये गये हैं, हाथ छाती के आगे कमल के फूल की तरह खुले हैं। ताज के दोनों ओर सर्प आकार में दो रेशमी सुर्ख कपड़े की झालरें कंधों तक झुक आयी हैं। प्रकोष्ठ को अनेक बुद्ध चित्रों से सजाया गया है। इस मंदिर के बिलकुल सामने सीढ़ियों के दूसरी ओर एक बहुत बड़ा प्रार्थना सभागृह है, जिसमें सामने मंच पर वरिष्ठ लामा चांग पा की ध्यानावस्था में एक मूर्ति स्थापित है। यह लगभग चार फुट ऊंची है। इसी मंच पर दलाई लामा की एक बड़ी हुई तस्वीर भी रखी गयी है। इसी मंच पर दूसरे बड़े लामाओं की प्रतिमूर्तियां भी सजाकर रखी गयी हैं। अनेक मक्खन के दीपक इस मंच पर सजे पड़े हैं, जिन्हें प्रतिष्ठित आगंतुकों द्वारा प्रदीप्त किया जाता है और पूजा की जाती है।

इन पंक्तियों के लेखक को भी एक दीपक प्रज्वलित करने के लिए कहा गया था। सारे प्रकोष्ठ का फर्श कई कतारों में बंटा है, जिनमें आसन बिछे होते हैं, जहां बैठकर लामा पूजा करते हैं। प्रकोष्ठ का दक्षिण पार्श्व कई प्रकार के तांत्रिक आकारों से चित्रित है। ये अच्छी आत्माएं कहलाती हैं, जो दुष्ट आत्माओं के साथ युद्ध कर उन्हें भगाती हैं। प्रकोष्ठ के बायें पार्श्व में बहुत बड़े-बड़े रैक पड़े हैं, जिन पर हस्तलिखित पुरानी पांडुलिपियां पड़ी हैं, जिन्हें लकड़ी के फ्रेमों में संभाल कर रखा गया है। इसी प्रकोष्ठ में अनेक प्रकार के छोटे-बड़े नगाड़े भी पड़े हैं, जिन्हें पूजा के समय प्रयोग किया

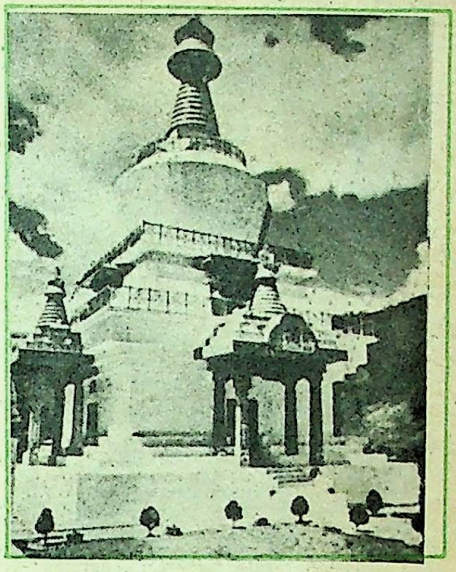

जाता रहा होगा। मुख्य प्रकोष्ठ एक भीतरी प्रकोष्ठ तक जाता है, जो एक तंग रास्ते से सभागृह से जुड़ा है। प्रकोष्ठ के केंद्र में बुद्ध की प्रतिमा स्थापित है, जिसके दोनों ओर बुद्ध मैत्रेय की प्रतिमूर्तियां हैं। इस प्रकोष्ठ के बायीं ओर एक चामुंडा देवी की प्रतिमा स्थापित है, जिसके ग्यारह मुख हैं। इसी के साथ एक महाकाली की प्रतिमा है। जिसका मुख ढका हुआ रहता है और वर्ष में केवल एक बार उत्सव के समय खोला जाता है। सभागृह के नीचे एक ओर एक शैक्षणिक संस्थान है, जहां बौद्ध भिक्षु धर्म और दर्शन की शिक्षा पाते हैं।

अद्भुत पर्व हेमिस

सिंधु नदी को पार कर स्तकना के पास से पहाड़ी दर्रों की ओर चढ़ते हुए पहाड़ी चश्मे के साथ-साथ रास्ता लद्दाख के अति चर्चित बौद्ध मंदिर में जाता है, एक बहुत बड़े प्रांगण को बायीं ओर से बौद्ध भित्तिचित्रों से सजी दीवार घेरती है, तो दायीं ओर हेमिस के कई मंजिला मंदिर स्थापित हैं और बीच में दो बहुत ऊंचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म-ध्वज फहराते हैं । इस बौद्ध संस्थान का मुख मुदिर पदमसंभव की प्रतिमा से प्रभामान है । इसका बरामदा कुछ अद्‌भुत आकारों से चित्रित है । ऊपर के मालों के मंदिरों में भी अनेक बौद्ध-प्रतिमाएं स्थापित हैं । दूसरे माले पर पदम संभव, तारा मां, निम्पा और दस फुट ऊंची बुद्ध की पीतल की बनी प्रतिमा स्थापित है । हेमिस गुम्पा अपने भित्तिचित्रों थंकाओं और रोल किये गये सक्रालों के लिए प्रसिद्ध हैं । एक लामा के अनुसार इस गुम्पा में विश्व में सबसे बड़ा एक थंका है जो बारह वर्ष में एक बार बाहर निकाला जाता है । हेमिस का पर्व बहुत प्रसिद्ध पर्व है, जो लोकगीतों, नृत्यों की सुगंध से महकता है । इस पर्व का सबसे बड़ा आकर्षण 'मास्क डांस' है । अद्‌भुत मुखौटे लगाये हुए चरित्र जब प्रांगण में थिरकते हैं, तो लगता है हम संसार के किसी अद्‌भुत द्वीप पर खड़े आश्चर्य से भरे समय को धकेल रहे हैं । यह पर्व जून के दूसरे सप्ताह में मनाया जाता है ।

तिब्बती शैली की गुम्पा

लेह को वापस आते हुए चोगलमसर के पास अभी हाल ही में निर्मित एक बौद्ध गुम्पा तिब्बती शैली का संकेत देता है । उसे 'जीवैत्साल' अर्थात शांति का घरौंदा कहा गया है । इसमें रखने के लिए थंकाओं का निर्माण बहुत तेजी से हो रहा है । बाहर मैदान में बुद्ध की एक बुहत बड़ी प्रतिमा संगमरमर के ऊंचे मंच पर स्थापित है । वस्तुतः यह बौद्ध-मंदिर और मैदान दलाई लामा के प्रवास के समय प्रयोग किया जाता है । दलाई लामा यहां आकर ठहरते हैं और लद्दाख के बौद्ध-श्रद्धालुओं को यहीं प्रवचन देते हैं ।

मनीषियों के लिए आकर्षण

लेह से वापसी पर लेह-श्रीनगर मार्ग पर लगभग ६७ किलोमीटर पर आलची का सुप्रसिद्ध बौद्ध-मंदिर है । वस्तुतः यह मुख्य मार्ग से लगभग चार किलोमीटर नदी के दूसरी ओर स्थित है । यह बौद्ध-मंदिर हरियाली से घिरे परंतु एक वीरान से स्थान पर है । इसे ११वीं शताब्दी में बनाया गया था । यहां साक्यमुनि की अनेक प्रतिमूर्तियां स्थापित हैं और अनेक पुरातन भित्तिचित्रों से सजा यह बौद्ध-मंदिर मनीषियों के आकर्षण का केंद्र रहा है । केंद्रीय प्रकोष्ठ, जो सभागृह और पूजा गृह भी है, में सैंकड़ों वर्षों से ताजा रंगों से सुसज्जित भित्तिचित्रों का एक अद्‌भुत संसार है ।

उपर्युक्त बौद्ध-मंदिरों के अलावा एक अन्य लामायुक्त बौद्ध गुम्पा है, जो संसार की सबसे ऊंची सड़क पार कर लेह से लगभग १२७ किलोमीटर दूर स्थित है । यह यहां का सबसे पुराना मंदिर भी है और इसी के अनुकूल प्राचीन थंका, भित्तिचित्र और दूसरी तस्वीरें प्रसिद्ध हैं । यहां भी गरमियों में एक उत्सव मनाया जाता है ।

मूल बैक यानि कि लेह से लगभग १९० किलोमीटर दूर श्रीनगर मार्ग पर ही एक चट्टान से खुदी लगभग पचास फुट ऊंची अवलोकतेश्वर की प्रतिमूर्ति मीलों से दिखायी देती है । यहीं पर एक बौद्ध मंदिर भी है, जिसकी दीवारों को विभिन्न चित्रों से सज़ाया गया है । वस्तुतः यहीं से बौद्ध-संस्कृति शुरू होती है और वापसी पर यहीं बौद्ध-श्रद्धालु हमें विदा करते हैं— 'जुले' कहकर, जिसका अर्थ स्वागत और विदा दोनों ही लिया जा सकता है— है न कितना अद्‌भुत शब्द !

—आकाशवाणी जम्मू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्मिता : एक आत्मबोध

● राधाकृष्ण प्रसाद

व्यस्त महानगर । सांझ के झुटपुटे में एकाएक दोनों की मुलाकात हो गयी । सुरेखा ने अपनी नयी 'फियेट' को रोकते हुए कहा—

"अरी कल्पना, तू यहां !"

कल्पना पास आकर बोली—"हां, बस का इंतजार कर रही हूं ।"

"आ, तुझे ड्रॉप कर दूं । कहां से आ रही है ?"

कल्पना बोली—"मां के लिए दवा खरीदने गयी थी ।"

"भीतर आ जा न ।"

कार फिर स्टार्ट हो गयी । सुरेखा हंसकर बोली—"अरे सुना, क्या कर रही है इन दिनों ? अभी भी कविताएं लिख रही है ?"

कल्पना ने उत्तर दिया—"पी.एच.डी. के लिए थीसिस लिख रही हूं ।"

सुरेखा गाड़ी चलाती रही । मजाक के स्वर में बोली—"थीसिस लिखकर ही जीवन गुजार देगी ? शादी नहीं करेगी ?"

"शादी नहीं करूंगी, यह मैंने कब कहा ? बिना दहेज वाला एक दूल्हा ढूंढ़ दे न । तू तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानती है, एक दुर्घटना में पिताजी की असमय मृत्यु हो गयी । मां ने स्कूल की नौकरी कर हम दोनों बहनों को पढ़ाया-लिखाया । अब दहेज के लिए मोटी रकम कहां से देगी ?'' कुछ उखड़े स्वर में कल्पना का उत्तर था ।

''तू कहीं नौकरी कर लेती ! तू तो एम.ए. में टॉपर थी ।''

''नौकरी नहीं मिली तभी तो रिसर्च कर रही हूं । तेरी तरह किस्मतवाली तो हूं नहीं कि पास करते ही बड़ी कंपनी में अच्छी नौकरी मिल गयी । शादी भी हो गयी और अब एक बेटे की मां भी बन गयी हो ।''

लाल बत्ती के कारण चौराहे पर गाड़ी रोकनी पड़ी । गाड़ी का इंजन चालू था । हंसकर सुरेखा ने अपनी क्लास फेलो और सहेली की ओर देखा —''हां कल्पना, किस्मत ने साथ दिया है । कंपनी के एम.डी. मेरे पापा के मित्र हैं । मेरा मैनेजमेंट का डिप्लोमा भी सहायक हुआ ।''

कल्पना ने उसांस लेकर कहा—''नौकरी करना तो चाहती हूं सुरेखा । मां पर कब तक बोझ बनी रहूंगी ? अगले साल वह रिटायर भी कर जाएंगी, लेकिन मेरी मां को मेरी नौकरी से ज्यादा मेरे विवाह की चिंता है । आज पंद्रह दिनों से बीमार चल रही हैं ।''

''मेरी कंपनी का विस्तार हो रहा है । कई नयी जगहें भरी जानेवाली हैं । न हो तो एक दिन मेरी कंपनी में आ । मैं एम.डी. से तेरी भेंट करा दूंगी ।''

''एक सप्ताह बाद आ सकती हूं सुरेखा । तब तक मैं अपना पेपर सबमिट कर दूंगी ।''

''ठीक है । कंपनी के नये पदों के लिए विज्ञापन निकलनेवाले हैं । तू भी 'टाइम्स' देखती रहना ।''

हरी बत्ती मिलते ही गाड़ी भागने लगी । वह शीघ्र ही एक कॉलोनी के मुहाने पर आकर रुक गयी । सुरेखा बोली—''ले, तेरे घर का लेन आ गया ।''

कल्पना ने कहा—''एक कप कॉफी नहीं पीयेगी ?''

सुरेखा ने गाड़ी स्टार्ट करते हुए कहा—''नहीं कल्पना, आज नहीं, फिर कभी । मेरा छह महीने का बेटा इंतजार कर रहा होगा । फिर कभी । बॉय....''

''बॉय....''

*

मां के खांसने की आवाज आ रही थी । कमरे में घुसते ही कल्पना बोली—''मां, तुम्हारी खांसी तो गयी नहीं । कल तुम मेरे साथ 'एक्सरे हाउस' चलो ! डॉक्टर जैन ने एक्सरे कराने का सुझाव दिया था ।''

मां खांसी को रोकने का प्रयास करती बोली—''ऐसा कुछ नहीं है बेटी । फिजूल में रुपये बरबाद करने से फायदा ! ठीक हो जाऊंगी ।''

खांसी कुछ थमी तो अपनी बात के सूत्र को आगे बढ़ाया—''पड़ोस की मिसेज माथुर बतला गयीं कि उनके भांजे का विवाह ठीक हो गया—सिर्फ अस्सी हजार पर बात पक्की हो गयी । वे लोग तो पचास हजार पर हमारे यहां राजी थे । तुम्हारी ही जिद थी कि दहेज मांगनेवाले के यहां संबंध नहीं करेगी । लड़का बैंक में था—क्लर्क था तो क्या हुआ—मिसेज माथुर बता रही थीं कि सालभर के भीतर वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़ी ने टन्-टन् कर सुबह पांच बजने का संकेत दिया । इस संकेत ने जैसे कल्पना को भी दिशा-निर्देश कर दिया । वह उठी । बाथरूम गयी । कपड़े बदले । सूटकेस में अपने सामान पैक किये और सूटकेस हाथ में लेकर कमरे से निकल आयी ।

...क्सर बन जाएगा ।'' मां के स्वर में पश्चात्ताप था ।

''मां, तुम व्यर्थ में मेरी चिंता करती रहती हो । दहेज देने के लिए तुम यह घर गिरवी रख रही थीं । मैं मर जाऊंगी लेकिन घर गिरवी नहीं रखने दूंगी ।'' कल्पना कुछ आक्रोश में थी ।

मां ने सूत्र को बढ़ाया—''बेटी, तुम्हारी उम्र निकली जा रही है । सत्ताईसवां चढ़ रहा । तुम्हारी छोटी बहन भी तेईस की हो चली ।''

कल्पना ने कहा—''मां, अब मैं नौकरी के लिए चेष्टा करूंगी । अब तक थीसिस के कारण नौकरी के लिए प्रयत्न नहीं कर रही थी— और मां, एक बात सुन लो । घर बेचकर तुम मेरे लिए वर ढूंढ़ो, यह मैं मरते दम तक स्वीकार नहीं करूंगी ।''

कमरे में सन्नाटा छा गया । बेटी की बात सुनकर मां सहम गयीं । कुछ क्षणों तक उनकी सांसें भी थम गयी ।

*

सप्ताह बीतते-न-बीतते एक दिन कल्पना अपनी सहेली सुरेखा के पास जा पहुंची । बोली—''तेरे ही पास आयी हूं । तेरी कंपनी ने जन-संपर्क अधिकारी का विज्ञापन निकाला है । सोचा—''मैं भी भाग्य आजमा लूं । तू तो जानती है—मास कम्युनिकेशन की डिग्री मेरे पास है । मेरी थीसिस भी इसी से संबंधित है ।''

सुरेखा ने कहा—''यह विज्ञापन पढ़कर मुझे तेरा ध्यान आया था । लेकिन सोचती थी कि तू शायद कॉलेज या युनिवर्सिटी के जॉब में जाना पसंद करे ।''

कल्पना ने जवाब दिया—''नहीं सुरेखा, बीमार मां को छोड़कर कहीं दूर के कॉलेज में नौकरी करने नहीं जा सकती । यह नौकरी यदि मुझे मिल जाए तो बहुत सहूलियत होगी ।''

सुरेखा बोली—''मैं तुझे एम.डी. से मिला दूंगी ।''

कल्पना ने कहा—''मैं सिफारिश के लिए नहीं कह रही—पर यह जरूर चाहूंगी कि मेरे साथ भेद-भाव न बरता जाए ।''

सुरेखा ने उत्तर दिया—''इस मामले में एम.डी. बहुत सख्त हैं । कर्मचारियों को कंपनी ऊंचे वेतन देती है, इसलिए योग्य व्यक्तियों को ही चुनती आयी है । लंच के बाद दो बजे मैं उनसे तुम्हें मिला दूंगी ।''

*

कल्पना को नौकरी मिल गयी । ऊंची नौकरी ही कही जाएगी । कुल मिलाकर तीन हजार रुपये की नौकरी ।

एक मंजिल पाकर वह खुश थी—लेकिन मां की बेचैनी बढ़ती जा रही थी । एक शाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब वह काम से लौटी तो मां ने कहा—"बेटी कल्पना..."

"क्या है मां ?" मां का स्वर सुनकर चौंकी ।

"अरे बेटी, कभी-कभी तो मेरे पास भी बैठने का समय निकाल ले । नौकरी करते हुए तुझे छह महीने हो गये । हर वख्त काम के पीछे पागल रहती है । बेटी, अब तो तू मुझे चिंता से मुक्त कर दे ।"

बेटी बोली—"मां, तुम मेरे लिए इतनी चिंतित क्यों रहती हो । तुमने मेरे ब्याह के लिए विज्ञापन छपवाया था ?"

मां ने उत्तर दिया—"हां बेटी, उस विज्ञापन को पढ़कर मेरे पास कुछ पत्र आये हैं । उनमें एक मुझे पसंद है । लड़का कॉलेज में इतिहास पढ़ाता है । परिवार आर्य समाजी है । लड़के के पिता अंडर सेक्रेटरी की पोस्ट से रिटायर हुए हैं । बड़े लड़के की शादी हो गयी और वह किसी बैंक में काम करता है । वे लोग दहेज विरोधी हैं । मैंने विज्ञापन में यह लिखवा दिया था कि दहेज चाहनेवाले कृपया संपर्क न करें । बेटी, सुबह-शाम उनके घर में हवन होता है । आर्य समाज मंदिर में बहुत सादगी से ब्याह करेंगे । तू कहे तो उन्हें बुलवा भेजूं ।"

बेटी बोली—"मां ब्याह क्या बहुत जरूरी है ?"

मां ने तर्क दिया—"बेटी, तेरे बाद तेरी बहन की भी चिंता करनी है । जब तक बड़ी का ब्याह नहीं हो, छोटी की बात कैसे चलायी जा सकती है ?"

बेटी ने हथियार डाल दिये—"ठीक है मां, मैं वहीं करूंगी जिससे तुम्हारी चिंता दूर हो । ... लेकिन मां, मैं नौकरी नहीं छोड़ूंगी ।"

मां के चेहरे पर खुशी की झलक उभरी—"वे लोग प्रगतिशील विचारों के हैं । उन्होंने तो खुशी जाहिर की है कि लड़की ऊंचे पद पर ऊंचा वेतन पा रही है ।"

कल्पना निर्विकार स्वर में बोली—"तो ठीक है, बात पक्की कर लो ।"

*

मंगल-वाद्य और वैदिक मंत्रों के बीच कल्पना सुहागवती बन गयी । पति का नाम है राजेश आर्य । सास ने नयी बहू का स्वागत करते हुए कहा—"आओ बेटी कल्पना ! इस घर को संभालो । हम लोग तो बूढ़े हुए । तुम्हारे श्वसुर को भी रिटायर हुए सात साल हो गये । तुम्हें तो पता लग गया होगा कि हमारा परिवार कितना बड़ा है । राजेश मंझला है । महेश सबसे बड़ा है । वह कानपुर में अपने बाल-बच्चों के साथ रहता है । बैंक में काम करता है । उसके बाद विभावती है । ससुराल फरीदाबाद में है । बेचारी को तीन बेटियां ही हैं । एक बेटे की आश लगाये हैं । निभा और विद्याधर पढ़ रहे हैं । निभा संस्कृत में एम.ए. कर रही है, उसके विवाह की चिंता है । विद्याधर इंजीनियरिंग पढ़ रहा है । क्यों बेटी, तुम्हारी नौकरी महेश की तरह बदली वाली तो नहीं है ?"

कल्पना ने उत्तर दिया—"जी, बदली वाली तो नहीं है, लेकिन कंपनी के काम के सिलसिले में बाहर जाना पड़ता है ।"

सास ने आश्चर्य प्रकट किया—"हाय राम, अकेली टूर पर जाती हो ?"

कल्पना ने सिर झुकाकर कहा—"मांजी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरी के तो अपने कुछ नियम होते हैं।"

सास प्रशंसा के स्वर में बोली—"तभी तो इतनी तनख्वाह है तुम्हारी ! राजेश तो एक कॉलेज में पढ़ाता है, लेकिन पगार के नाम पर हजार रुपये से ज्यादा नहीं लाता। सुना, तुम तीन हजार पाती हो !"

कल्पना ने मृदु स्वर में जवाब दिया—"जी, सब भत्ते मिलाकर तीन हजार हो जाते हैं।"

सास ने आशीर्वाद दिया—"वाह, दूधों नहाओ, पूतों फलो। लेकिन एक बात तुमसे कहने को सोच रही थी, बहू।"

"जी, कहिये न।"

"घर और बाहर तुम हमेशा सिर पर पल्ला रखा करो। राजेश के पिताजी कहते हैं, नयी बहू का सिर उघारे घूमना ठीक नहीं। और हां बहू, सुना तुम्हें सबेरे-सबेरे पलंग-चाय लेने की आदत है।"

कल्पना इस तथ्य को कैसे छिपाती ? सिर झुकाकर बोली—"हां मांजी, लेकिन कल से नहीं पीऊंगी।"

सास ने बहू की ओर लाड़ से देखते हुए कहा—"बुरी आदत है बेटी। राजेश भी बिना स्नान-ध्यान किये चाय नहीं पीता। वह तो नौकरी में आने के पहले तक चाय का स्वाद नहीं जानता था। हमारे परिवार में आर्य धर्म का पालन होता है, बेटी ! तुम शाकाहारी हो न ? मास-मछली तो नहीं खातीं ?"

कल्पना झूठ बोलने की अभ्यस्त नहीं थी। बोली—"जी, शाकाहारी हूं। पहले कभी-कभी उबले अंडे खा लेती थी। अब वह भी नहीं खाऊंगी।"

सास ने इत्मीनान की सांस ली—"अंडा

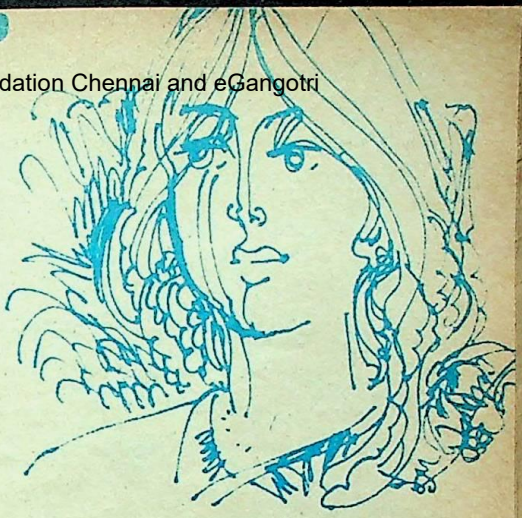

खाना भी आर्य धर्म में वर्जित है बेटी..."

बहू ने सिर झुकाकर आर्य धर्म को मान लिया।

*

शिमला घूमकर पति-पत्नी 'हनीमून' भी मना आये। परिचय के क्रम में, संवेदनशील, कविता का स्पंदन नहीं हुआ। कल्पना को लगा—दो शरीर आपस में परिचित हुए हैं, मन तो अपरिचित ही रह गया !

पति के रूप में जो व्यक्ति उसके जीवन में आया, वह केवल 'पति' ही रहा, सखा या सहचर नहीं। पति के अधिकारों के प्रति चौकस, शंकालु, हीन ग्रंथियों से ग्रस्त एक अंतर्मुख प्राणी !

छह महीने बीतते-न-बीतते कल्पना के विवाहित जीवन में दरार आ गयी।

जाड़े की एक शाम। अंधेरा गहरा रहा था। अपने दफ़्तर से जब वह लौटी, तब उसका पति कमरे में चहलकदमी कर रहा था। आते ही फूटा—"क्यों, आज फिर देर हो गयी !"

कल्पना संयत स्वर में बोली—"काम समेटते-समेटते भी देर हो गयी। कई प्रेसों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना पड़ा । कंपनी का एक विज्ञापन कल के ही दैनिक पत्रों में छपना है ।''

राजेश ने खीझे स्वर में कहा—''तुम्हारी नौकरी तो मेरी समझ में नहीं आती । सबेरे आठ बजे जाती हो और आठ बजे रात को लौटती हो !''

कल्पना ने हाथ की कलाई घड़ी की ओर देखकर उत्तर दिया—''अभी आठ कहां, सवा सात ही तो बजे हैं ।''

''पांच बजे दुनिया के दफ़र बंद हो जाते हैं, एक तुम्हारा ही सात बजे तक खुला रहता है ।''

''तो क्या करूं, बतलाओ ?''

''यह भी बतलाने की चीज है ? जानती हो, लोग क्या कहते हैं ?''

''क्या कहते हैं ?''

''अब यह मुझसे मत कहलवाओ । कल तुम्हारे दफ़र का गुप्ता मिला था । वह कह रहा था....''

कल्पना ने बात काटकर तेज आवाज में पूछा—''क्या कह रहा था ?''

''वह मेरे साथ स्कूल में पढ़ता था । इंटर के बाद तुम्हारे यहां क्लर्क है । उसने कहा कि मैं तुम्हारे द्वारा एम.डी. तक सिफारिश पहुंचवा दूं कि उसे सुपरवाइजर का ग्रेड दिया जाए ।''

''मेरे द्वारा !'' कल्पना के मुंह का स्वाद कड़वा हो गया । पति ने व्यंग्य से बुझा वाक्य छोड़ा—''उसके कहने का आशय था कि तुम्हारी एम.डी. से खूब बनती है... वह तुम पर...''

कल्पना ने तीखे स्वर में प्रतिकार किया—''तुम जानते हो, तुम क्या बक रहे हो ? वे मेरे पिता की उम्र के हैं...''

राजेश जहर के तूणीर फेंकता रहा—''हुंह ! मुझे खूब पता है, इन कंपनियों में ऊंची तनख्वाह पर सुंदर लड़कियां क्यों रक्खी जाती हैं ।''

कल्पना का चेहरा गुस्से से लाल हो उठा—''तुम बहुत घटिया लहजे में बात कर रहे हो''—कहकर वह कमरे से निकल गयी ।

*

महीने की पहली तारीख थी ।

सास ने रुपये गिने । सौ के पंद्रह नोट थे । वह आश्चर्य चकित होकर बोली—''यह क्या बहू ! डेढ़ हजार रुपये ! तुम्हें तो तीन हजार मिलते हैं !''

कल्पना ने जवाब दिया—''मांजी, एक हजार रुपये अपनी छोटी बहन को दिये हैं । वह कंप्यूटर का कोर्स कर रही है । उसे छह महीने की फीस जमा करनी थी ।''

सास का स्वर सास-जैसा हो गया—''एक हजार रुपये अपनी लाड़ली बहन को दे आयी ! तुम्हारी मां को तो पेंशन मिलती है !''

कल्पना ने स्वर को मुलायम बनाकर कहा—''पेंशन के रुपये से घर का खर्च मुश्किल से चलता है । बहन की जरूरत को ध्यान में रखकर ही...''

''जरूरत तो हमें भी है बहू ! अभी तक नये फ्लैट की पूरी किस्ते नहीं चुकायी गयी हैं । हजार रुपये हर महीने भरने पड़ते हैं । राजेश के रुपये से क्या घर-गृहस्थी चलती है ?... और बाकी पांच सौ कहां हैं ?''

''बाकी पांच सौ मैंने कुछ कपड़े खरीदने और फुटकर खर्च के लिए रख छोड़े हैं । हर रोज आपसे पैसे मांगना अच्छा नहीं लगता ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम पांच सौ रुपये अपने शृंगार-पटार पर खर्च कर दोगी बहू ! तुम्हारे पास सात-आठ साड़ियां तो हैं ही । ऐसा नहीं चलेगा हमारे यहां । हम लोगों ने दहेज के नाम पर तुम्हारी मां से कुछ नहीं मांगा । वह तो पंद्रह तोले सोने के पुराने गहने देकर बैठ गयीं । हम तो यह सोचकर चुप रह गये कि कमाऊ बहू आ रही है वह हमारे अरमान पूरे करेगी । चाहती तो दहेज के लिए लाख रुपये ले सकती थी ! पांच-सौ रुपये तुम्हें सजने-धजने के लिए चाहिए । तुम्हारा अब मायके से क्या नाता ? आगे से ऐसी हरकत मत करना, समझी ?"

कल्पना ने सिर झुकाकर सास का आदेश सुन लिया ।

*

उस दिन दफ़्तर से घर समय पर लौट आयी थी कल्पना । चाय का कप पति को थमाकर बोली—"सुनो जी, मुझे फिर कल सबेरे बंबई जाना है ।"

राजेश के माथे पर बल पड़ गये । पूछा—"क्यों ?"

"कंपनी की मीटिंग है ।"

"पिछले महीने ही तो कलकत्ता गयी थीं । तुम्हारा क्या हर मीटिंग में रहना जरूरी है ?"

"जरूरी नहीं होता तो जाती क्यों ? कंपनी की पी.आर.ओ. हूं । मुझे मीटिंग की रिपोर्ट प्रेस में देनी होती है ।"

"बहाने न ढूंढ़ो । यह क्यों नहीं कहतीं कि तुम्हें पंख फैलाकर उड़ना अच्छा लगता है ।" पति के स्वर में व्यंग्य था ।

"तुम कहना क्या चाहते हो ?" पत्नी संयत थी ।

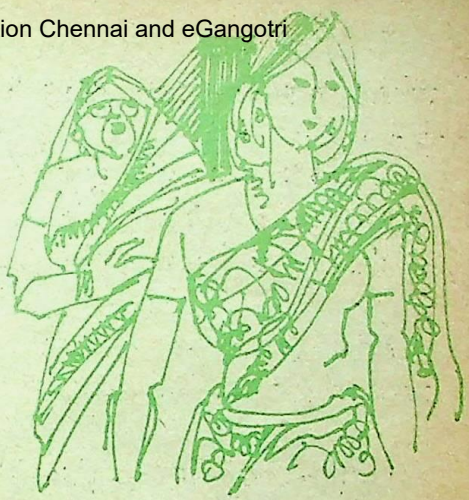

पति के स्वर की धार पैनी हो गयी—"मतलब तो तुम समझती ही हो । कंपनी ऐसे ही नहीं तुम्हें इतनी मोटी तनख्वाह देती है—हवाई जहाज से उड़ने का मौका देती है । बॉस के साथ..."

कल्पना रोने-रोने को हो गयी । बोली—"तुम्हारा सोच घटिया है ।"

पति ने निर्मम प्रहार किया—"मेरा तो सोच ही घटिया है—तुम्हारा तो काम भी घटिया है ! लेडी पी.आर.ओ. हुंऊ... डिगनिफायड 'कॉल गर्ल' !"

कल्पना गुस्से से कांपने लगी—"अपने मुंह पर काबू रखो... इसी मुंह से तुम सुबह-शाम 'गायत्री मंत्र' जपते हो !"

राजेश पर पत्नी के गुस्से का कोई असर नहीं पड़ा । वह ऊंची आवाज में बोला—"अगर तुम बंबई गयीं तो इसका नतीजा भुगतना पड़ेगा । कंपनी को 'सिक' रिपोर्ट कर दो—अभी, इसी समय ।"

"नहीं, यह मुझसे नहीं होगा ।" कल्पना का स्वर धीमा किंतु दृढ़ था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति ने ऊंचे ही स्वर में चेतावनी दी—"तो मेरा फैसला भी सुन लो । बंबई से लौटकर तुम यहां नहीं आओगी ।"

*

उस रात पलभर के लिए भी कल्पना की पलकें बंद नहीं हुईं । वह घायल मछली की तरह छटपटाती रही । उसे फैसला करना था कि क्या वह खूब तड़के उठकर एम.डी. को फोन कर 'सिक रिपोर्ट' कर दे । बंबई की फ्लाइट आठ बजे थी । या वह अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़े ? उसके सुरुचिहीन-असंस्कृत पति ने उसे 'कॉल गर्ल' की पहचान दी है । इस पहचान को लेकर क्या वह सारी जिंदगी एक झूठ के साथ चिपकी रहे ?

घड़ी ने टन्-टन् कर सुबह पांच बजने का संकेत दिया । इस संकेत ने जैसे कल्पना को भी दिशा-निर्देश कर दिया । वह उठी । बाथरूम गयी । कपड़े बदले । सूटकेस में अपने सामान पैक किये ।

वह सूटकेस हाथ में लेकर कमरे से निकल गयी । सास बरामदे में खड़ी थी ।

पूछा—"सबेरे-सबेरे सूटकेस लेकर कहां जा रही हो ?"

"एयरपोर्ट जा रही हूं ।" कल्पना का उत्तर था ।

"फिर कहीं जा रही हो ?"

"बंबई ।"

"फिर कोई मीटिंग है ?"

"हां' !"

"राजेश कह रहा था कि तुम्हें अब कहीं बाहर जाने नहीं देगा । इससे कुल की बदनामी होती है । उसने तुम्हें जाने की अनुमति दे दी है ?"

"नहीं !"

"फिर भी तू जा रही है ?"

"हां !"

"उसके आदेश का पालन नहीं करेगी ?"

"अब इसकी जरूरत नहीं रही ।"

"क्या मतलब है तुम्हारा ? लौटकर कब तक आओगी ?"

"अब नहीं लौटूंगी ।" कहकर वह घर से बाहर निकल, टैक्सी स्टैंड की ओर बढ़ गयी ।

—शारदा कुटीर, १७ श्रीकृष्ण नगर
पटना-८००००१

फालतू चरबी की छंटाई

आयोवा (अमरीका) के एक भारतीय प्लास्टिक सर्जन डॉ. एन. के. पांडेय ने चमड़ी के नीचे मौजूद चरबी के तहों को खींचकर निकालने की तकनीक लिपोसक्शन में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है । इस तकनीक में पेट और कूल्हों पर जमा चरबी की तहों को पतली नलियों से खींचकर निकाला जाता है । यह तकनीक काफी लोकप्रिय और सफल है ।

डॉ. पांडेय अमरीकी वायुसेना के आयोवा के एयर कमांड हॉस्पिटल के प्रमुख व कास्मेटिक सर्जरी के विशेषज्ञ हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

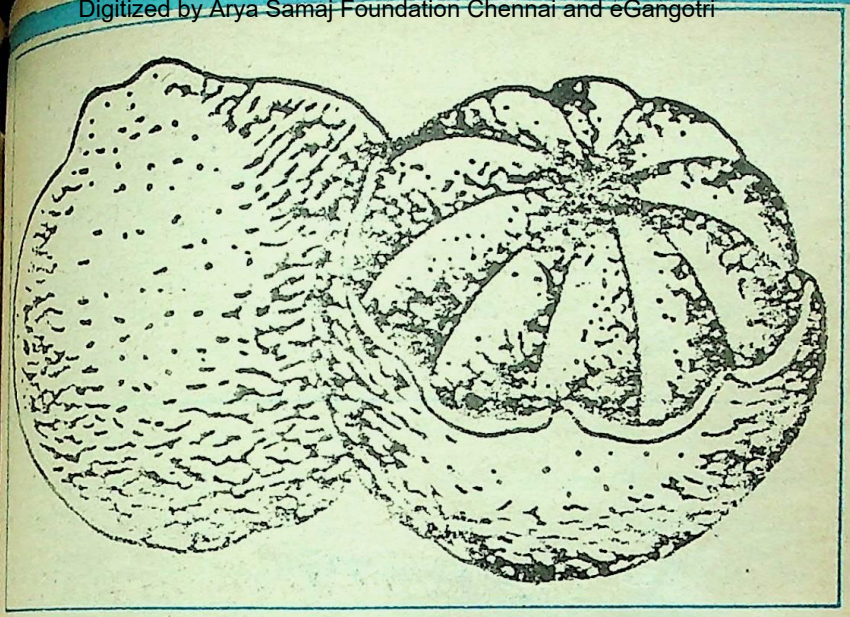

संतरे खाइए, स्वस्थ रहिए

● ललन कुमार प्रसाद

हमारे देश में जिन फलों का रासायनिक महत्त्व है, उनमें संतरा अपना विशेष स्थान रखता है। इसका जन्म चीन में हुआ है। यह चीन का मूल फल है, लेकिन अपनी पौष्टिकता, स्वाद एवं उपयोगिता की बदौलत आज सारी दुनिया में इस फल ने लोकप्रियता प्राप्त कर ली है। हमारे देश में असम, सिक्किम, मध्य प्रदेश, पंजाब और महाराष्ट्र (नागपुर) में इसकी अधिक खेती होती है। भारत में लगभग ६५,००० एकड़ भूमि में इसकी बागवानी फैली हुई है। सबसे अधिक मध्य प्रदेश में लगभग २०,००० एकड़ भूमि में इसके बाग फैले हुए हैं। परंतु सबसे बढ़िया किस्म के संतरे नागपुर में ही पैदा होते हैं, क्योंकि जलवायु की दृष्टि से इसके लिए नागपुर से अच्छी जलवायु देश के अन्य भागों में कहीं नहीं मिलती। इसलिए संपूर्ण देश में नागपुर के संतरे सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय हैं।

संतरा है क्या ?

इसका वैज्ञानिक नाम 'साइट्रस औरेंटियम' और 'साइट्रस वलौरिस' है। संस्कृत में इसे नारंग, नागरंग, त्वकसुगंध व मुखप्रिय; हिंदी, मराठी और गुजराती में संतरा, नारंगी, नौरंगी व नारिंग; बंगला में नारेंगा लेबू व कमला लेबू और अंगरेजी में औरेंज कहते हैं। इसकी उपयोगिता को देखते हुए यूरोप में लोग इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोल्डेन औरेंज (स्वर्ण-सेव) भी कहते हैं ।

कच्ची हालत में इसका छिलका हरा होता है, लेकिन पकने पर पीला हो जाता है । इसे केवल पके रूप में ही खाया जाता है । इसका छिलका मोटा होता है । छिलके को उतारने पर नीचे पीली और नारंगी रंग की फांकें मिलती हैं, जिन्हें चूस-चूसकर या रस निकालकर खाया जाता है । संतरे की फांकों में से जो बीज निकलते हैं, वे नींबू के बीज से मिलते हैं । श्रेष्ठ संतरे वही होते हैं जो आकार में बड़े और जिनके छिलके चिकने, नरम और पतले होते हैं । ऐसे संतरे अधिक मीठे होते हैं और उनमें से रस भी अधिक निकलता है ।

पोषक तत्व

संतरे में जल ८७.८ प्रतिशत, कार्बनिक पदार्थ १०.६ प्रतिशत, प्रोटीन ०.९ प्रतिशत, वसा ०.३ प्रतिशत, कैल्सियम ०.०५ प्रतिशत और फास्फोरस ०.०२ प्रतिशत होता है । इसके प्रति १०० ग्राम में पोटैशियम १९.७ मिलीग्राम, मैग्नेशियम १२.९ मिलीग्राम, गंधक ९.३ मिलीग्राम, सोडियम २.१ मिली ग्राम, तांबा ०.०७ मिली ग्राम और लौह ०.१ मिली ग्राम होता है । इनके अतिरिक्त इसके प्रति १०० ग्राम में विटामिन-ए ३५० आ. रा. इकाई, विटामिन-बी ४० आ. रा. इकाई और विटामिन-सी ६८ आ.रा. इकाई होता है । इसके १०० ग्राम रस से ४९ कैलोरी ऊर्जा मिलती है ।

संतरे की विशेषताएं

संतरा ही एक ऐसा फल है जिसमें नर और मादा दो किस्में होती हैं । नर किस्म का नाम संतरा है और मादा किस्म का नाम नारंगी । नर किस्म का आकार बड़ा होता है और मादा किस्म का छोटा ।

आम, केला, सेव, पपीता आदि फलों को पेड़ से कच्चा ही तोड़ने के बाद कृत्रिम ढंग से पकाया जाता है । किंतु संतरा ही एक ऐसा फल है जो पूरी तरह वृक्ष पर ही पकता है । कृत्रिम उपायों से पकाये जानेवाले फलों में वह स्वाभाविक गुण नहीं रह जाता जो प्राकृतिक रूप से पकनेवाले फलों में पाया जाता है । इस तरह हम पाते हैं कि संतरा ही एक ऐसा फल है जिसके पकने पर प्राकृतिक गुण नष्ट नहीं होते ।

संतरे का रस पहले से ही पचा हुआ होता है जो शरीर में पहुंचकर शीघ्र ही पोषण कार्य करता है । इसलिए कमजोर तथा थके व्यक्ति के लिए संतरा ताजगी पैदा करनेवाला पोषक एवं उत्तम फल है ।

संतरे में प्रोटीन और एल्बूमिन की मात्रा बहुत ही कम होती है । फिर इसमें एक साथ २३ स्वास्थ्यवर्द्धक गुण विद्यमान हैं । इसलिए किसी भी रोग की दशा में जब और कोई खाद्य पदार्थ ग्रहण नहीं किया जा सकता, संतरे का रस धड़ल्ले से ग्रहण किया जा सकता है । यह रोगी की शक्ति को संतुलित रखते हुए मल-मूत्र निस्सारक है, जिससे बुखार में कोई उपद्रव उत्पन्न नहीं होता । बुखार की अवस्था में इसे पीने से बार-बार लगनेवाली प्यास शांत हो जाती है । साथ ही इसका रस बुखार में पर्याप्त पोषण प्रदान करता है । इसलिए बुखार की अवस्था में यह सबसे अच्छा आहार है ।

संतरे से प्राप्त खमीर 'विटामिन बी-कांप्लेक्स' का सबसे बड़ा प्राकृतिक स्रोत है ।

संतरे में विद्यमान विटामिन-सी (एस्कार्बिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एसिड) उसी में विद्यमान साइट्रिक एसिड की बदौलत शीघ्र नष्ट नहीं होता ।

संतरे में विद्यमान विटामिन-सी और कैल्शियम संयुक्त रूप में होने से एक-दूसरे के गुणों में वृद्धि करते हैं ।

फल उपयोग

आयुर्वेद के प्रसिद्ध चिकित्सक महर्षि चरक और सुश्रुत ने संतरे को भोजन में रुचि पैदा करनेवाला, वायु विकार को नष्ट करनेवाला और हृदय को बल देनेवाला फल बताया है । यदि भोजन के साथ दो संतरे प्रति दिन खा लिये जाएं, तो शरीर में कार्य करने की क्षमता बढ़ जाती है और आलस्य पास नहीं फटकता है । खासकर ऐसे लोग जो बैठकर काम करते हैं अर्थात् चलते-फिरते बहुत कम हैं, उन्हें संतरे का प्रयोग नित्य करना चाहिए, क्योंकि नित्य इसके सेवन से पेट में किसी प्रकार का भारीपन उत्पन्न नहीं होता । ऐसा इसलिए कि पेट की अपच, भारीपन आदि दूर करने में संतरे का सेवन रामबाण दवा है । संतरे का सेवन रक्त शुद्ध करता है । इसलिए जो व्यक्ति इसका सेवन करते हैं उनकी त्वचा में सुर्खी आ जाती है और चेहरे पर कांति बढ़ती है । अर्थात इसका सेवन करने से सौंदर्य बढ़ जाता है । संतरे की तासीर ठंडी होती है । इसलिए इसके सेवन से पेट की गरमी, खून की गरमी और गले की खुश्की दूर हो जाती है । गरमी में लगनेवाले पित्तज अतिसार (दस्त) में संतरे के रस का सेवन बहुत लाभ पहुंचाता है । यह शरीर में ताजगी लाता है । इसलिए जो व्यक्ति नियमित रूप से दो संतरे का सेवन करते हैं, उन्हें अपने अंदर आश्चर्यजनक रूप से ताजगी महसूस होती है ।

संतरे के कुछ प्रमुख औषधीय उपयोग निम्न प्रकार हैं :

अम्लता

यह एक भयंकर उदर रोग है । इसमें भोजन ठीक से नहीं पचता, खट्टी डकारें आती हैं और कंठ व छाती में जलन होती है । संतरा अम्लता का दुश्मन है । संतरे के रस में थोड़ा भुना हुआ जीरा और सेंधा नमक का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से अम्लता से उत्पन्न होनेवाले रोग दूर हो जाते हैं ।

पेट-दर्द

पेट-दर्द होने पर एक प्याला संतरे के रस में जरा-सी भुनी हुई हींग मिलाकर पीने से तुरंत लाभ पहुंचता है ।

अजीर्ण

एक प्याला संतरे के रस में एक चुटकी सेंधा या काला नमक और थोड़ा-सा काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर पीने से तत्काल फायदा होता है । उपर्युक्त तरीके से संतरे के रस का सेवन कुछ दिनों तक नित्य करते रहने पर अजीर्ण जड़ से खतम हो जाता है ।

कब्ज

कब्ज यानी पेट में संचित मल को दूर करने के लिए संतरे का नियमित सेवन एक उत्तम औषधि है ।

पाचन शक्ति में वृद्धि

पाचन शक्ति कमज़ोर हो जाने पर आहार अच्छी तरह नहीं पचता और उसमें सड़न होने लगती है । फलस्वरूप गैस की उत्पत्ति होती है, जिससे जठर में खराबी होने लगती है । लेकिन संतरा जठर और आंतों के मार्ग की सफाई कर उनकी खराबी सुधारता है । फलतः संतरे के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवन से इन दोनों मार्गों की पाचन शक्ति में वृद्धि होती है । साथ ही संतरे का सेवन खाने में रुचि उत्पन्न करता है और जीभ के स्वाद को बढ़ाता है । संतरा भोजन को पचाकर किसी प्रकार का विकार भी उत्पन्न नहीं होने देता है । अतः भोजन के बाद संतरे का सेवन अवश्य करना चाहिए ।

बाल रोग

दांत निकलते बच्चे को कै, दस्त, बुखार आदि रोग सताने लगते हैं । इनके निवारण हेतु दांत निकलते बच्चे को संतरे का रस हलका गरम करके पिलाते रहने से विशेष लाभ होता है । संतरे के रस में अंगूर का रस मिलाकर सेवन करने से बालकों के सूखा रोग में काफी लाभ पहुंचता है ।

गर्भवती स्त्रियों के लिए विशेष लाभकारी

संतरे के रस में थोड़ा-सा शहद मिलाकर दिनभर में तीन बार एक-एक प्याला पिलाने से गर्भवती स्त्रियों की कै, दस्त और कब्ज की शिकायत दूर हो जाती है ।

इन्फ्लूएंजा

इस रोग में एक-एक प्याला संतरे का रस दिनभर में चार बार सेवन करने से बहुत लाभ पहुंचता है । जहां इन्फ्लूएंजा की बीमारी फैली हो, वहां के लोग यदि संतरे का सेवन प्रतिदिन करें तो इस रोग के आक्रमण से बचे रह सकते हैं । संतरे का सेवन करते रहने से अन्य संक्रामक रोग भी सहसा नहीं हो पाते ।

हिस्टीरिया

इस रोग से पीड़ित युवा स्त्रियों को शीघ्र लाभ पहुंचाने में संतरे का सेवन जादू-जैसा प्रभाव दिखलाता है ।

त्वचा रोग

ताजा संतरे के छिलके को पीसकर शरीर पर मलने से दाद, खुजली, फोड़ा-फुंसी आदि चर्म रोगों को दूर करने में काफी मदद मिलती है । संतरे के ताजा छिलके को रगड़ने से झाईं-मुहांसे दूर हो जाते हैं । इसका प्रयोग चेचक के दाग को भी बहुत हद तक हलका कर देता है । संतरे के छिलके से बने उबटन का प्रयोग त्वचा की ताजगी और कोमलता बनाये रखने का एक सस्ता और आसान तरीका है ।

एक उत्तम मूत्रल

संतरे का रस एक उत्तम मूत्रल भी है । इसलिए शरीर के अंदर फैले विषों को पेशाब के साथ बाहर निकालकर शरीर का विशोधन करता है ।

नेत्र रोग

संतरे में विटामिन-ए की मात्रा अन्य सभी फलों से अधिक होती है । इसलिए इसका सेवन करते रहने से आंखों को कम दिखायी देनेवाला दोष धीरे-धीरे दूर हो जाता है ।

हृदय रोग

संतरे का सेवन हृदय रोगियों के लिए अच्छा है, क्योंकि यह हृदय के लिए बल पैदा करता है ।

संतरे के साथ एक खास बात यह भी है कि आजकल इसकी इतनी नस्लों का विकास हो गया है कि ये साल में बारहों महीने उपलब्ध रहते हैं । वास्तव में संतरा मनुष्य के लिए प्रकृति का एक अनुपम उपहार है ।

— रसायनशास्त्री,
प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्व विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना-८००००५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिव्यक्ति

मौन आह्वान

हिले नहीं अधर, पर
बातें हो चुकीं
पलकें उठीं-झुकीं
हमें पी चुकीं

— हरिदत्त पंत 'हरिदास'

दर्द

दर्द : एक अजनबी
जो सफर में मिल जाए
और फिर बातों ही बातों में
अपना बन जाए

यादें

यादें : मन के निश्चल जल में
जैसे आ गिरे
कोई कंकड़

— संदीप राज

संसारी

एक वह जो अकेला बैठा है
अकेला नहीं भीड़ साथ में है
उस अकेले का हाथ
कितने लोगों के हाथ में है

संन्यासी

एक वह जो भीड़ में है
किंतु भीड़ उसमें नहीं
होने को वह है
वैसे वह नहीं कहीं

पहचान

हमारे होने से
हमारी पहचान होती है
जैसे दूकान में सामान होने से
दूकान होती है

— रमेशचंद्र शर्मा 'चंद्र'

नदी

चौकड़ी भरती
चंचल हिरणी है
नदी प्रेम की

बूंद

बूंद एक
ठहरी गुलाब पर
कंपता सूर्य

आकाश

रहा कांपता
तारोंभरा गगन
सूनी घाटी में

— सुरेश सिंह

सार्थक शब्द

जो पूरा कर दें अर्थ
वो कहां मिलेंगे
शब्दकोष के
भीतर या बाहर

परिचय

वक्त, कितना भारी है
परिचित गरदनें हैं
परिचित आरी है

— दीपंकर झा 'दीप'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

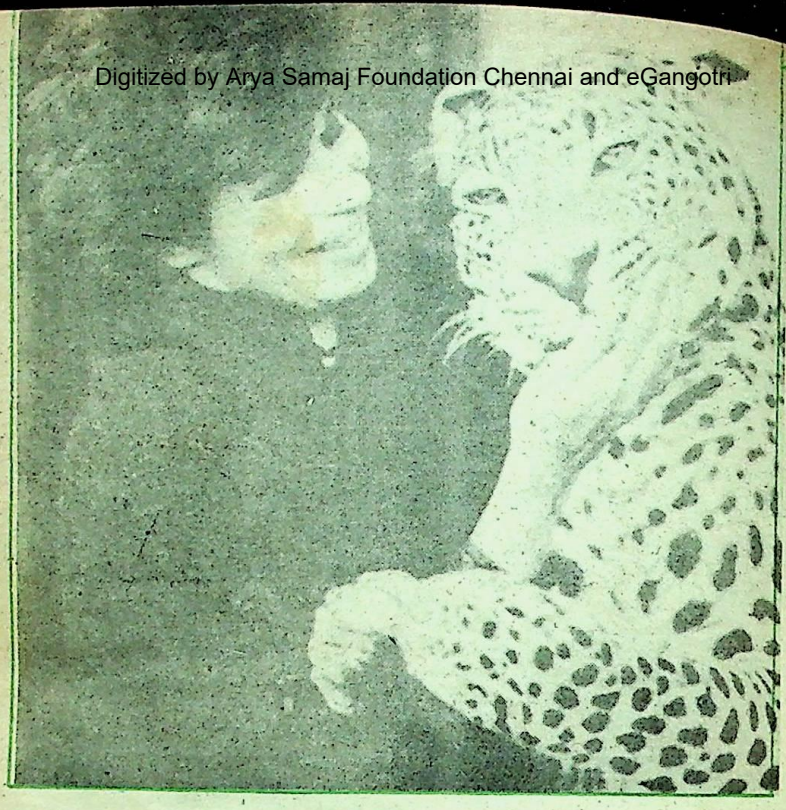

'प्यारी किट्टी' एक महिला के

चौकीदारी के लिए चीते और तेंदुए

इटली में आजकल एक नया शौक लोकप्रिय हो रहा है— सिंह, चीते, तेंदुए पालने का ! आमतौर पर घरों के द्वार पर एक पट्टी टंगी होती है— 'कुत्तों से सावधान ।' मिलान (इटली) में कुछ अट्टालिकाएं ऐसी हैं, जिनके मुख्य द्वार पर चेतावनी टंगी है— 'सिंहों से सावधान ।'

'न्यूजवीक' में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, कुछ लोग इन हिंस्र पशुओं को चौकीदारी के लिए भी पालते हैं ताकि चोर डर जाएं । पर इसमें खतरे भी हैं । पालेरमो नामक स्थान के स्टोर-मालिक ने स्टोर की रखवाली के लिए एक तेंदुआ पाला था । एक रात वह निकल भागा । राह में उसने एक युवती को घायल कर दिया । अनुमान के अनुसार इटली के लो-बार्डी नगर में पचास सिंह एवं २० चीते पाले जा रहे हैं।

हिंस्र पशुओं को पालतू जानवरों की तरह पालने का यह शौक अधिकारियों के लिए चिंता का विषय बन गया है । चिड़ियाघरों के अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीते के बच्चों के साथ स्नान

हिंस्र पशुओं को पालने का शौक रोमांचक तो है ही, साथ ही वह उन्हें पालनेवालों के अहम की भी तुष्टि करता है । लेकिन इटली में लोग मनोरंजन के लिए नहीं, दुकानों और मकानों की चौकीदारी के लिए हिंस्र पशुओं को पाल रहे हैं ।

...शान हैं । कारण, हिंस्र पशुओं के वयस्क हो ...र लोग उन्हें चिड़ियाघरों को भेंट देना चाहते ...र चिड़ियाघरों में इतना स्थान नहीं है कि वे ...शुओं को रख सकें ।

...के पूर्वी छोर पर तोर सान गिबोवानी ...क क्षेत्र में एक श्यामल मादा चीता ला पेनत्रा ...ग बेहद आतंकित हैं । उसे पकड़ने की हर ...ज बेकार हुई है । ला पेनत्रा की तरह ऐसे कई ...जीव हैं, जो अपने-अपने स्वामियों की कैद से ...ल भागे हैं ।

...टली की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि ...का से जहाजों द्वारा मध्य यूरोप को भेजे ...ले पशु इटली होकर ही भेजे जाते हैं । कुछ ...पशु इटली में ही बिक जाते हैं । इटली की ...इस व्यापार को नियंत्रित करने के लिए अभी ...कोई कानून भी नहीं बना पायी है । फलतः ...व्यापार खूब फल-फूल रहा है । विश्व वन्य जीवन कोष के पीयर लोदेंजो फ्लोरियो के अनुसार, 'इटली एक विशाल छिपा हुआ चिड़ियाघर बन गया है ।' फ्लोरिया के अनुसार इटली में लगभग एक हजार से तीन हजार हिंस्र पशु पाले जा रहे हैं ।' पर लोगों का यह शौक दूसरों के लिए काफी महंगा सिद्ध हो रहा है । यही नहीं, कभी-कभी तो ये पालतू हिंस्र पशु अपने स्वामियों के लिए कठिनाइयां पैदा कर देते हैं ।

हिंस्र पशु अपनी जंगली आदतें नहीं भुला पाते और मौका पाते ही आक्रमण कर बैठते हैं । उत्तरी इटली के नगर अरसागो सेपदियो में एल्सा और कीरा नामक दो सिंहनियों ने अपने मालिक की अनुपस्थिति में उसकी बड़ी बहन और उसकी सहेली को मार डाला ।

ये दोनों महिलाएं उन सिंहनियों की देखभाल कर रही थीं । बाद में किसी ने, दोनों सिंहनियों को विष दे दिया ।

...ई, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

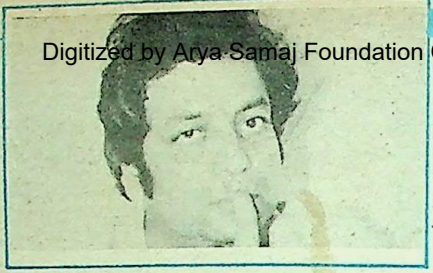

नाक और होंठ के मध्य में स्थित बिंदु

बेहोशी, मिरगी, चेहरे का लकवा, हृदय-दौरा, हिस्टीरिया, सदमा, अचानक पीठ दर्द, चेहरे का लकवा, चेहरे की सूजन आदि में इस बिंदु पर दबाव दें ।

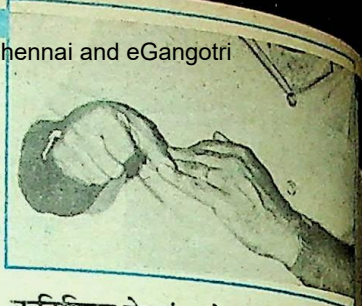

कनिष्ठिका के अंदर के किनारे पर नख के पास स्थित बिंदु

अधिक पसीना आना, हथेली के रोग, अंगुली में दर्द, आर्थराइटिस होने पर इस बिंदु पर दबाव लाभकारी होता है ।

अद्‌भुत करिश्मे : अप

कलाई से दो अंगुल दूर मध्य में स्थित बिंदु

जी घबराना, कै होना, मिरगी, अस्थमा, चक्कर-आना, अनिद्रा, धड़कन बढ़ना में इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

एक्यूप्रेशर चिकित्सा की एक प्राचीन विधि है । इस चिकित्सा पद्धति में शरीर के विभिन्न स्थलों को दबाकर रोगों का उपचार किया जाता है । पाठकों के लाभ के लिए इस अंक से हम शरीर में स्थित कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं एवं उन पर दबाव देने से दूर होनेवाले रोगों का परिचय दे रहे हैं । इन्हें प्रस्तुत कर रहे हैं—डॉ. सुधीर खेतावत :—

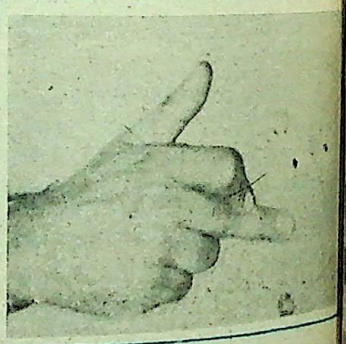

नाभि से छह अंगुल ऊपर स्थित बिंदु

सीने में दर्द, पेट दर्द, हिचकी, दमा, खांसी, हृदय रोग, ब्रोकांयटिस होने पर इस बिंदु पर दबाव दें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

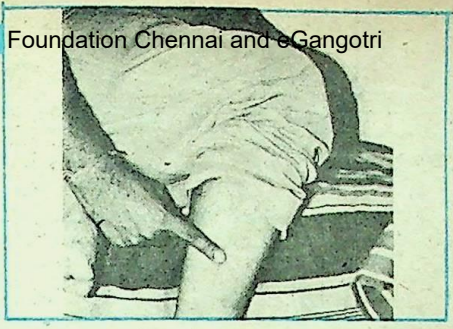

...ली और दूसरी अंगुली के मिलन स्थान ...स्थित बिंदु

...आर्थराइटिस, पैरों में दर्द, अंगुलियों में ...व सूजन होने पर इस बिंदु पर दबाव

टखने और घुटने के मध्य बिंदु से दो अंगुल ऊपर की ओर स्थित बिंदु

साइटिका, पैर दर्द, टखने की सूजन, पिंडलियों का दर्द होने पर इस बिंदु पर दबाव दें ।

...ने : अप...ाज स्वयं कीजिए—२१

...ष्ठिका के बाहरी किनारे पर स्थित बिंदु

...में दर्द, लकवा, दर्द रहित प्रसव, अंगुलियों ...सूजन व दर्द होने पर इस बिंदु पर दबाव देना ...ए।

अंगूठे और अंगुली के मध्य में ऊपर की ओर स्थित बिंदु

सूजन, पॉलीन्यरोपेथी, लकवा, अंगूठे में दर्द आदि में इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

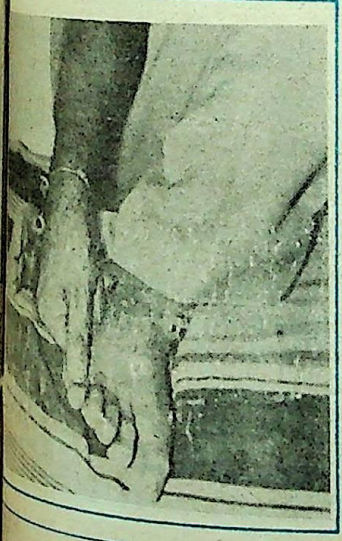

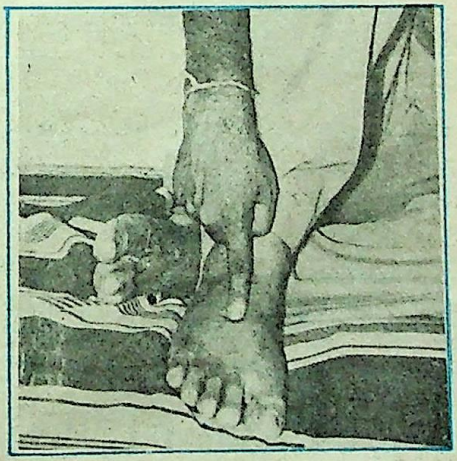

—एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण एवं उपचार केंद्र,
नीलकमल सिनेमा परिसर इंदौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंग-तरंग

हम-तुम मिले बहुत दिन बाद

एक पुरानी छत के नीचे
हम-तुम मिले बहुत दिन बाद

दूर कहीं गूंजी शहनाई, गौने की सुध बरबस आई
खिरकी पर थिरकी पुरवाई
पर्दे हिले बहुत दिन बाद

तस्वीरों की गर्द हटाकर, मद्धिम-सी बाती उकसाकर
साधों की सूनी ड्योढ़ी पर
दीपक जले बहुत दिन बाद

सरस उठी यादों की क्यारी, महकी जीवन की फुलवारी
बेला और चमेली बनकर
हम-तुम खिले बहुत दिन बाद

इस क्षण बुनते प्रीत पुरानी, उस क्षण कहते कथा-कहानी
साथ-साथ रोने-हंसने के
ये सिलसिले बहुत दिन बाद

एक पुरानी छत के नीचे
हम-तुम मिले बहुत दिन बाद

—डॉ. रवीन्द्र भ्रमर

शाकुंतलम्, मैरिस रोड, अलीगढ़

फिर अनबोली तृप्ति चल रही

मेरे मुरझाये जीवन को तुमने सींच दिया
मरे फूल-पत्तों पर रस की रूप-घटा उतरी
बे मौसम मन पर मंडरायी जल की श्याम परी
सोये सपनों के मुख पर ममता की धार बही
लगता है जग में हरियाली कहीं न शेष रही

मेरे मन का मरण तुम्हीं ने जैसे खींच लिया

मुरदा दिल की मिटी धड़कनों के स्वर फिर जागे
फिर अनबोली तृप्ति चल रही सुधियों के आगे
जैसे घिरा शिशिर का शशि गरमी के घेरे में
फूटीं चांदी की राहें पतझड़ के डेरे में

भटके मरु में जैसे मधु का सिंधु उलीच दिया

कांप रहीं जीवन की टूटी घड़ियां जुड़-जुड़कर
कांप रहे नभ से उतरे तारे सुख की भू पर
शुभ्रधार में बहे हृदय के दीपक सब मेरे
तुमको ही अर्पित जलभरे क्षणों के ये फेरे

मेरे मुरझाये जीवन को तुमने सींच दिया

—रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

पचपेढ़ी, दक्षिणी सिविल लाइन्स, जबलपुर

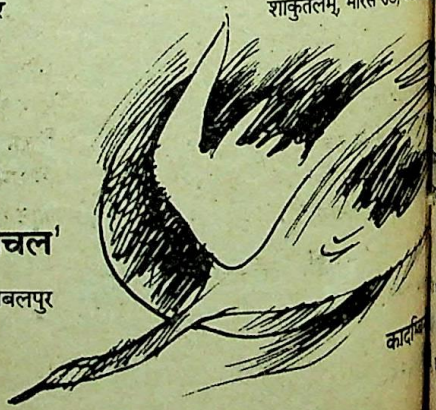

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरहीन प्रश्न

...दिन सपनों के
...वापस बुला सकोगे

...हे प्यार जताने
...बांसुरी बजाने
...अभिलाषा को
...दिला सकोगे
...वापस बुला सकोगे

...ऋतुएं बीती हैं
...की गागर रीती है
...के अंधकार में
...दीपक जला सकोगे
...वापस बुला सकोगे

...उत्तरहीन प्रश्न है
...सारा प्रयत्न है
...आगे बंजर है
...के खिला सकोगे
...वापस बुला सकोगे

...है भूल-भुलैया
...छल गया कन्हैया
...अहिल्याओं के शव को
...से जिला सकोगे
...वापस बुला सकोगे

—डॉ. सविता सौरभ
...मालवीय नगर, जयपुर-३०२०१७, राजस्थान

बीतना

मैं बीत रहा हूं इस क्षण
किसमें, किसमें
जान रहा यह कौन

यह सुनने को
सखा, तात, ओ मेरे
आतुर मेरा मौन

क्या बीत रहा होना मेरा ऐसा
होना होगा
टुकड़ा, टुकड़ा

अथवा विभव सकल जीवन का
उसमें, उसमें, होगा
निखरा, बिखरा

क्या एक प्रहर का एक प्रखर
तब से, कबसे
होगा एक सत्य व एक स्वप्न

क्या एक पूर्ण का एक पार्श्व
रचता होगा
एक पार्श्व व एक पूर्ण का एक स्वप्न

बीत रहा हूं
इस प्रकार मैं
जिसमें, जिसमें

उसको, उसको, मैं जान रहा
करता आलोकित
फिर भी पूछ रहा मैं
मैं बीत रहा हूं इस क्षण
किसमें, किसमें,
जान रहा यह कौन

—सच्चिदानन्द सिन्हा
भूमि सुधार आयुक्त, बिहार, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

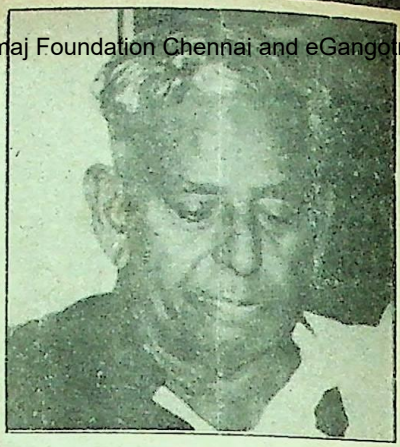

श्रद्धांजलि : बहुमुखी गायक-पंडित राम चतुर मलिक

उन्हें संगीत घुट्टी में पिलाया गया था !

डॉ. समर बहादुर सिंह

ग्यारह जनवरी, १९९०, बस्ती के बीच उभरता, पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल और उसमें करीब महीनेभर से पड़ा, मौत से जूझता एक अलबेला गायक—पंडित राम चतुर मलिक। नब्बे की ओर उन्मुख मलिक अरसे से चारपाई पकड़े हुए थे। एक तो बढ़ती उम्र का कहर, दूसरे अभावों-यंत्रणाओं का असहाय भार। वह जर्जर काया आखिर कब तक इन आघातों को झेलती। उस जानलेवा ठंड में दिल का आखिरी दौरा पड़ा-इतना जबर्दस्त कि फिर वह उससे उबर न सके। नाद का वह अनुपम उपासक, बिहार की वह विभूति और हिंदुस्तानी संगीत का वह गर्व और गौरव सदा-सदा के लिए अनहद नाद में विलीन हो गया।

पं. रामचतुर मलिक का नाम तो मैंने बचपन से सुन रखा था, पर दर्शन उनके हुए साठ के दशक के ढलते सालों में। मैं आकाशवाणी, पटना का केंद्र निदेशक था और मलिक हमारे केंद्र के वरिष्ठ और सम्मानित कलाकार। प्रसारण के लिए वह पटना आते रहते और कभी भी आते, मुझसे जरूर मिलते। क्या कलाकार व्यक्तित्व था उनका बाहर-भीतर दोनों रस-प्लावित। गोरा, सुगढ़, चेहरा, कढ़े-केश और पान की लालिमा से रंगे, विहंसते होंठ। गठीला-मंझोला बदन कुर्ता, धोती और सदरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचतुर मलिक मूलतः ध्रुवपदिये थे । गायन की इस शास्त्रीय विद्या पर उनका अद्‌भुत अधिकार था । ध्रुवपद आज लुप्तप्रायः हो चला है, किंतु मलिक की गायकी ने उसे सदैव संजीदा बनाये रखा । उनकी गायकी में स्वर-ताल और साहित्य का बड़ा मनोहारी मिलन होता । उनकी मधुपगी, कसी-मंजी, रियाजी आवाज में राग की आलापचारी सुनते ही बनती ।

उठता । दरबारी तहजीब में
, मलिक की जुबान में एक अजीब
होती । मैं उन्हें छेड़ता रहता और वह
ज्ञान और अनुभव की पिटारी से अनमोल
बिखेरते रहते ।

इस सदी के शुरू में जनमे मलिक को
घुट्टी में पिलाया गया था । उनके पिता
जंग राम मलिक अपने समय के उत्कृष्ट
थे, अतः प्रारंभिक प्रशिक्षण पुत्र को
ही मिला । बाद में एक अन्य मूर्धन्य
पं. छितिपाल मलिक से भी उन्होंने
ली । पढ़ने-लिखने में उतनी रुचि नहीं
इसलिए सारा समय गाने के रियाज में ही
। सालों साधना चलती रही । और फिर
गायन में जो निखार-संवार आया, वह
लोकप्रियता को प्रचारित-प्रसारित करने
। अब वह दरभंगा रियासत के दरबारी
क बन गये ।

दरभंगा राज्य तब अपने कला-प्रश्रय के
विख्यात था । न जाने कितनी जानी-मानी
तिक हस्तियां उस दरबार से जुड़ी हुई थीं ।
दे नवाज बिसमिल्ला खां, ठुमरी मलिका
देवी और हर दिल अजीज कुंदन लाल
—सब उस दरबार की शोभा बढ़ा रहे
थे । मलिक को मनचाहा अवसर मिला और उस दरबार के वह भी एक रत्न बन गये । और फिर सम्मानों का जो सिलसिला चला, वह चलता ही गया । ऐसी ही प्रतिभाओं को मद्देनजर रख यह शेर रचा गया था :

हुजूमे बुलबुल हुआ चमन में
किया जो गुलने जमाल पैदा
कमी नहीं कद्रदों की अकबर
करे तो कोई कमाल पैदा

संगीत जगत का शायद ही ऐसा कोई सम्मान हो, जो उन्हें न मिला हो । भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से विभूषित किया, संगीत नाटक अकादमी ने उन्हें अपना पारितोषिक दिया, मध्य प्रदेश सरकार ने उन्हें तानसेन-पुरस्कार प्रदान किया और खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डॉक्टर' की मानद उपाधि दी । इनके अतिरिक्त कितने अन्य संगीत-संस्थानों ने उन्हें सम्मानित कर अपना गौरव बढ़ाया ।

ध्रुवपद के मौलिक गायक

रामचतुर मलिक मूलतः ध्रुवपदिये थे । गायन की इस शास्त्रीय विद्या पर उनका अद्‌भुत अधिकार था । ध्रुवपद आज लुप्तप्रायः हो चला है, किंतु मलिक की गायकी ने उसे सदैव संजीदा बनाये रखा । उनकी गायकी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

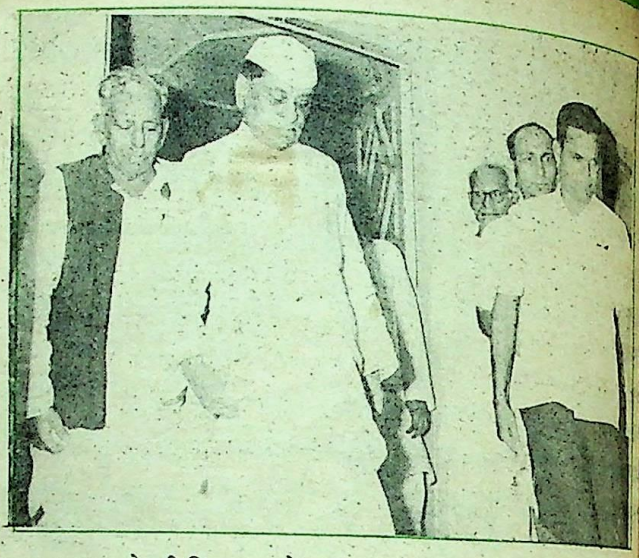

बांयें से पं. राम चतुर मलिक, स्व. सत्यनारायण सिन्हा (भूतपूर्व सूचना एवं प्रसारण मंत्री) एवं एकदम दायें लेखक

स्वर-ताल और साहित्य का बड़ा मनोहारी मिलन होता । उनकी मधुपगी, कसी-मंजी, रियाजी आवाज में राग की आलापचारी सुनते ही बनती । उनका भावभरा स्वर, लगाव, उनके भीड़-गमक भरे स्वर-गुच्छ और उनकी राग की क्रमशः कलात्मक अभिव्यंजना सभी अनूठे होते । आलाप के बाद जब गीत उभरता और उसमें लयदारी की छटा बिहरने लगती, तो उनका ध्रुवपद-गायन सचमुच 'मोहिनी रूपम्' बन जाता ।

ध्रुवपद के साथ खयाल, ठुमरी, टप्पा और विद्यापति के पद भी वह बड़ी खूबसूरती से गाते । जब खयाल की अवतारणा करते, उसे अपनी मोहक स्वरावलियों और बहुरंगी तानों से सजाते, तो आश्चर्य होता कि एक ध्रुवपदिया खयाल इतनी सहजता और सफलता से गा सकता है । और ठुमरी ? उसका कहना ही क्या । उनके बोल-बनाव में जो विलक्षणता होती, उनमें सभी शैलियों का मधुर मिश्रण होता ।

स्वर के जादूगर

मलिक दरबारी गायक थे, अतः दरबार के रंग-ढंग, उसके रीति-रिवाजों से खूब परिचित थे । मंच पर बैठते ही वह श्रोताओं का मूड भांप लेते और उसी के अनुरूप वह अपनी प्रस्तुति ढाल लेते । सन '७० के आस-पास की बात है । दरभंगा में आकाशवाणी का नया केंद्र खुल रहा था । दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल डॉ. आदित्य नाथ झा उसका उद्घाटन करने आये थे । उस अवसर पर एक समारोह का भी आयोजन किया गया था । आमंत्रितों के अतिरिक्त अपार जन-समूह उमड़ पड़ा था, उस दिन नया रेडियो स्टेशन देखने । बैठने का इंतजाम फर्श पर था । भीड़ वश के बाहर होती जा रही थी । झा साहब का भाषण तो लोगों ने किसी तरह सुना किंतु उसके बाद भीड़ अनियंत्रित होने लगी । जलसे का परिचालन मैं स्वयं कर रहा था । तत्काल मुझे सूझा कि पं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादूगर

थे, अतः दरबार के
जों से खूब परिचित
श्रोताओं का मूड
नुरूप वह अपनी
७० के आस-पास की
शवाणी का नया केंद्र
पूर्व उपराज्यपाल डॉ.
द्घाटन करने आये
समारोह का भी
आमंत्रितों के
उमड़ पड़ा था, उस
खने । बैठने का
ड़ वश के बाहर होती
भाषण तो लोगों ने
के बाद भीड़
लसे का परिचालन मैं
मुझे सूझा कि पं.

कादम्बिनी

...ही इस समय भीड़ को व्यवस्थित कर
...है। मैंने अनुरोध किया । मलिक मंच पर
...और उन्हें देखते ही भीड़ उल्लसित हो
...शामियाना तालियों की गड़गड़ाहट से
...उठा । तानपूरे की जोड़ी छिड़ी, सरंगिये
...तबलेवाले ने अपने साज सम्हाले और
...हो गया मलिक का गायन । पहले
...-धमार और फिर खयाल-ठुमरी ।
...उन्होंने किया विद्यापति के पद से । वह
...मक भीड़ अब प्रशंसक श्रोता बन गयी
...लगा, जैसे मलिक ने उन पर जादू फेर
...हो । सब ठगे-से उस संगीत-सरिता में
...खो, अवगाहन करते रहे ।

...कुछ दिन पहले मलिक से लखनऊ में
...हुई थी । हमारे आमंत्रण पर वह उत्तर
...संगीत नाटक अकादमी के अभिलेखागार
...रिकार्डिंग करने पधारे थे । देखते ही
...विभोर हो गले लग गये । हमें संतोष है
...की वह अनुपम गायकी अकादमी में
...है ।

अंतिम अवसर मिला उन्हें सुनने का, कुछ
...पहले दिल्ली से प्रसारित आकाशवाणी के
...कार्यक्रम में । उस प्रोग्राम का समापन
...हुए उन्होंने राग खमाज के स्वरों में बुनी
...अत्यंत मोहक ठुमरी सुनायी । बोल थे—
...बिन नाहीं आवत चैन ।' इधर
...ओं-अभावों ने उन्हें इस कदर बेहाल कर
...था, कि वह 'प्रिय मिलन' को बेचैन हो
...थे । आखिर वह घड़ी आ ही गयी और वह
...को प्यारे हो गये ।

'मानस'-बी-१२८, रामसागर मिश्रा नगर,
लखनऊ-२२६०१८

...ई, १९९०

अकसर

अकसर ऐसा ही होता है
वक्त एक चिड़िया की तरह
दुबक जाता है
बस्तियों, पगडंडियों, कछारों में

हथेलियों पर
खुद-बखुद कुछ कहता-सुनता
आसमान उतर जाता है
सरसराने लगती हैं पत्तियों-सी
हवाएं हर मोड़ पर

और
इनसान की आंखों से बोलते हुए
झर-झराते हैं गीले शब्द
जिन्हें. . .
अनदेखा कर देते हैं लोग
और शब्द अनमने-से उदास
रह जाते हैं

लेकिन. . . क्यों

पता नहीं
जिंदगी में क्यों, कुछ
ऐसा भी होता है
जिसकी वजह
कोई नहीं जानता
अकसर बिना वजह ही
कुछ-न-कुछ होता है

—वेदप्रकाश दुबे
१०३-ए, एल.आई.जी. फ़्लैट्स
राजौरी गार्डन (एक्सटेंशन)
नयी दिल्ली—११००२७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना पाने का अधिकार : एक समीक्षा

• डॉ. रवीन्द्र कुमार वर्मा

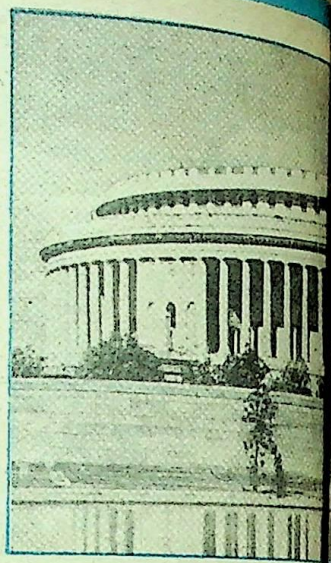

वर्ष १९८९ राजनीतिक दृष्टिकोण से बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा है, संपूर्ण विश्व में प्रजातांत्रिक मूल्यों का बोलबाला रहा । चीली, नामीबिया चेकोस्लोवाकिया, रूस और भारत में महत्त्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन हुए । नव निर्वाचित प्रधानमंत्री एवं उनके सहयोगी नागरिकों के राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजग होने का दावा कर रहे हैं । इसी क्रम में दूरदर्शन की स्वायत्तता एवं नागरिकों को सूचना पाने का अधिकार देने की बात जोर शोर से चल रही है । इस संदर्भ में दो-तीन प्रश्न महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं— भारत में इसके औचित्य के कौन-कौन कारक हैं ? वर्तमान संदर्भ में नागरिकों को सूचना प्राप्त करने के कौन-कौन संवैधानिक उपबंध हैं ? इसके प्राप्त होने के बाद समाज में क्या-क्या खतरा पैदा हो सकता है यहां इन्हीं प्रश्नों के आलोक में सूचना पाने के अधिकार पर एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है ।

जनहित के नाम पर गोपनीयता

प्रजातांत्रिक व्यवस्था जनेच्छा पर आधारित है । अतः जनता के लिए यह जानना जरूरी कि उसके द्वारा मनोनीत सरकार क्या, क्यों कैसे कर रही है । प्राचीन व्यवस्था में शासक आनुवंशिक या शक्ति के आधार पर या परंपराओं के आधार पर जनता पर शासन करते थे, जिसमें यह समझा जाता था, कि जनता को जानने का अधिकार नहीं है । शासक और जनता के बीच संपर्क कम होता था । संसदीय संस्थाओं के उदयकाल में भी संसदों में केवल उन्हीं विषयों पर विवाद होता था जिन विषयों पर शासक विवाद करना चाहते थे । आज भी विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र में भी यह कहकर संसद को चुप करा दिया जाता है कि अमुक सूचना को जनता के सामने लाना जनहित के विरुद्ध होगा । सूचनाओं को गुप्त रखने हेतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ।

ाम पर गोपनीयता

स्था जनेच्छा पर आधा

लिए यह जानना जरूरी

ीत सरकार क्या, क्यों

चीन व्यवस्था में शासक

के आधार पर या

पर जनता पर शासन क

जाता था, कि जनता

हीं है । शासक और

कम होता था । संसद

न में भी संसदों में केव

द होता था जिन विषयों

चाहते थे । आज भी

में भी यह कहकर सं

ता है कि अमुक सूचना

जनहित के विरुद्ध

गुप्त रखने हेतु

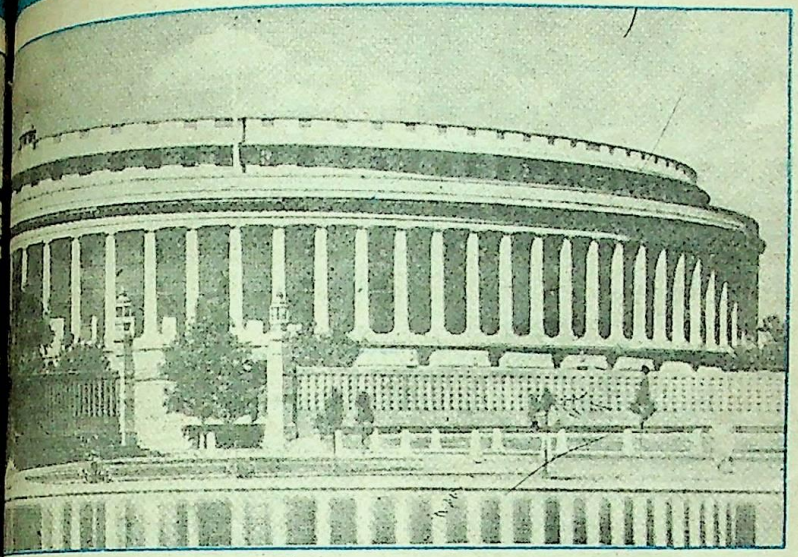

...शियल सीक्रेट एक्ट'—जैसे उपबंध ...न सभी प्रजातंत्रों में उपबंधित हैं । ...प्रायः सूचनाएं इन्हीं नियमों की आड़ में ...के सामने नहीं आने देती हैं । हाल में ...सरकार ने भी ठक्कर आयोग की रिपोर्ट, ...तोप सौदे से संबंधित सूचनाओं आदि ...ता के सामने नहीं आने दिया । यहां तक ...ध्यक्ष (राष्ट्रपति) को भी कुछ सूचनाओं ...त रखने का उदाहरण हमारे सामने है । ...मान परिप्रेक्ष्य में यही कहा जा सकता है ...रिकों का यह अधिकार उतना ही ...र्ण है जितना उनको अपना शासक चुनने ...ना पाने के अधिकार की अनुपस्थिति में ...क्ति का अधिकार एवं प्रतिनिधि चुनने ...अधिकार अर्थहीन हो जाता है । इतिहास ...त का साक्षी है कि जो सत्ताधारी होते हैं वे ...गलतियों या लापरवाहियों को दबाने ...अपनी उपलब्धियों को सही या गलत तरीके से उभारने का प्रयास करते आये हैं । ऐसी परिस्थिति में जनता यदि पर्याप्त रूप से अवगत नहीं रहेगी तो शासकों का सही आकलन नहीं कर सकती । भारत में आम आदमी अपनी जीविका जुटाने में इतना व्यस्त रहता है कि सरकार के कार्यकलापों की ओर ध्यान ही कम देता है और जब आवश्यकता पड़ती है तो अपने को असक्षम पाता है ।

उत्पत्ति

सूचना पाने के अधिकार का बीजारोपण संयुक्त राज्य अमरीका ने किया । अमरीकी संविधान के प्रथम संशोधन में यह उपबंध किया गया कि कांग्रेस '' (अमरीकी संसद) वैसा कोई कानून नहीं बनाएगी जो धर्म की स्थापना हेतु या मुक्त अभिव्यक्ति में बाधक या बोलने की स्वतंत्रता या प्रेस की स्वतंत्रता में बाधक, या शांतिपूर्ण ढंग से इकट्ठा होने से रोकता हो या जनता को अपनी मांगों से रोकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो ।'' संयुक्त राष्ट्र संघ के मानवाधिकारों की घोषणा में भी कहा गया, ''प्रत्येक व्यक्ति को विचारों एवं उनकी अभिव्यक्ति का अधिकार है । यह अधिकार बिना किसी हस्तक्षेप के विचार रखने और सूचना चाहने, पाने एवं देने के अधिकार को, जो किसी भी जरिए से हो, समाहित करता है ।''

प्राप्त जानकारी के अनुसार संयुक्त राज्य अमरीका ही प्रथम राष्ट्र है जिसने अपने नागरिकों को सूचना पाने का अधिकार दिया । यहां तक कि यहां के नागरिकों को सरकारी कागजातों को जांचने का अधिकार भी प्राप्त है ।

यद्यपि स्वीडन ने सन १९४९ में अपने नागरिकों को सरकारी फाइलों के परखने का अधिकार दिया, परंतु इस अधिकार की अच्छी-खासी सीमाएं भी निर्धारित कर दीं । सन १९६६ में अमरीकी संसद द्वारा 'फ्रीडम ऑव इनफारमेशन एक्ट' पारित किया गया । पुनः इस अधिकार को 'फ्रीडम ऑव प्राइवेसी एक्ट' सन १९७४ द्वारा और मजबूत कर दिया गया । सन १९६६ में पारित कानून के अनुसार कोई व्यक्ति (प्रेस सहित) सरकार के किसी विभाग से किसी भी विषय पर सूचना मांग सकता है और सरकार को वह सूचना उपलब्ध करानी होती है । परंतु चालू जांच और सुरक्षा संबंधी विषयों पर सूचनाएं सरकार नहीं देगी । सन १९७४ की 'प्राइवेसी एक्ट' के अनुसार व्यक्ति को अपने से संबंधित कोई भी सूचना सरकार से प्राप्त करने का अधिकार है । इस कानून के तहत खुफिया विभाग, जैसे एफ.बी.आई. की फाइलों से भी सूचनाएं प्राप्त की जा सकती हैं । डेनियल बी. मॉकावीट्ज ने लिखा है, ''इन दो कानूनों द्वारा सरकारी कार्यकलापों को जनता के सामने सुलभ के लिए खुला कर दिया गया है ।''

सूचना के सामान्य स्रोत

यदि सूचनाओं के स्रोत पर्याप्त हों, तो इन अधिकारों की आवश्यकता नहीं होती है । भारतीय नागरिकों के समक्ष सूचना के स्रोतों के रूप में आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं समाचार पत्र हैं । सर्वप्रथम समाचार पत्रों को ही ध्यान में रखा जाए, तो हम पाते हैं कि जनता को इस माध्यम से पर्याप्त एवं सही सूचनाएं प्राप्त नहीं होती हैं । समाचार पत्र तीन प्रकार के रोगों से ग्रसित होते हैं— पहला अखबार मालिकों के हित में सूचनाओं को दबाना (जिसे अंगरेजी में सप्रेसन कहते हैं) । दूसरा संपादकों के पूर्वाग्रह एवं अखबार मालिकों की प्रवृत्तियों के चलते किसी समाचार को अनावश्यक रूप से उछालना (बुमिंग) तथा तीसरा सूचना के स्रोत को छिपाना । अकसर यह देखा जाता है कि कुछ समाचार पत्र किसी समाचार को महत्व नहीं देते जबकि दूसरे समाचार पत्र उसी समाचार को नमक-मिर्च लगाकर छापते हैं । समाचारों में अकसर 'एक प्रवक्ता', 'विश्वस्त सूत्रों', 'ऐसा कहा जाता है', 'ऐसा समझा जाता है', द्वारा सूचना के स्रोतों का वर्णन मिलता है । ऐसी स्थिति में अखबार के पाठक सही बातों का अंदाजा नहीं लगा सकते हैं । जो बात इन सबों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है वह यह है कि अधिकांश जनता (करीब ७० प्रतिशत) निरक्षर है फलतः यह स्रोत उनके लिए कोई अर्थ नहीं रखता । वे अखबारों से सूचनाएं प्राप्त नहीं कर सकते हैं ।

रेडियो (आकाशवाणी) और दूरदर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्वपूर्ण स्रोत है । नागरिक इन माध्यमों से भी जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं, परंतु यह भी निश्चित है कि ये स्रोत सरकार के उपक्रम के रूप में हमारे समक्ष हैं । फलतः यह स्पष्ट है कि जो सूचनाएं सरकार नहीं देना चाहेगी उसे इन माध्यमों द्वारा प्रसारित नहीं किया जाएगा । सन १९८९ के लोकसभा चुनावों के समय दूरदर्शन पर सभी राजनीतिक दलों को प्रचार हेतु मौका मिलता था, परंतु सरकार की ओर से यह निर्देश था कि बोफोर्स तोप सौदे पर तथा राममंदिर जन्मभूमि पर चर्चाएं नहीं होंगी । यह मात्र एक नमूना है । वास्तव में तो होता यह है कि सरकार अपनी छवि को उजागर करने हेतु इस सशक्त माध्यम को प्रयोग में लाती है । यही कारण है कि भारतवासी अपने देश में घट रही घटनाओं की सही जानकारी हेतु अपने देश की आकाशवाणी की अपेक्षा बी.बी.सी. (ब्रिटिश, ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन) द्वारा प्रसारित समाचारों पर ज्यादा निर्भर करते हैं ।

उपलब्ध वैधानिक उपबंध

भारतीय नागरिकों को किसी कानून द्वारा कोई अधिकार उपलब्ध नहीं, परंतु भारतीय संविधान की धारा १९ (१) के तहत भाषण एवं अभिव्यक्ति की मौलिक स्वतंत्रता प्राप्त है । इसकी सीमाएं धारा १९ (२) में निर्धारित कर दी गयी हैं । ऐसा विद्वानों का मत है कि अभिव्यक्ति एवं भाषण की स्वतंत्रता में सूचना पाने का अधिकार भी समाहित है । भारतवर्ष में राजनीतिक एवं सामाजिक वस्तुओं को समझने हेतु वैदिक काल से ही प्रेरणा दी जाती रही है । ऋग्वेद में मानव का यह कर्त्तव्य समझा जाता है कि वह जाने कि 'विद्या' या 'अविद्या' क्या है, अर्थात मानव सत्य या उसके विभिन्न पहलुओं को जाने ।

सन १९६५ में भारत में 'प्रेस काउंसिल ऑव इंडिया' का गठन किया गया परंतु उसमें कुछ त्रुटियों को ध्यान में रखते हुए पुनः सन १९७८ में 'प्रेस काउंसिल ऑव इंडिया एक्ट' द्वारा इस संस्थान को कुछ अधिक शक्तियां दी गयीं । समाचार पत्रों के (ऊपर वर्णित) दोषों पर नियंत्रण हेतु संहिता को मजबूती से लागू करना काउंसिल का कार्य है । लोकसभा सचिवालय द्वारा प्रकाशित 'ए नेशनल इनफोरमेशन पॉलिसी' (१९८५) शीर्षक पुस्तक में स्पष्टतः संहिताएं वर्णित हैं । यहां संहिताओं का विवरण नहीं दिया जा रहा है ।

इसके अतिरिक्त करीब सात ऐसे कानून बनाये गये हैं, जो प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाते हैं । इन कानूनों में प्रमुख 'प्राइवेसी एक्ट', 'कस्टमस एक्ट' (धारा ५ से ११), 'पब्लिकेशन ऑफ बुक्स एक्ट' आदि हैं । इतना ही नहीं असम, बिहार व जम्मू एवं काश्मीर विधायिकाओं ने समाचार पत्रों पर प्रतिबंध

वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय नागरिकों को सूचना का अधिकार मिलना ही चाहिए परंतु संभावित खतरों को ध्यान में रखते हुए इसकी सीमाएं भी निर्धारित की जानी चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाने हेतु विधेयक पारित किये जो गहन आंदोलन के फलस्वरूप वापस ले लिये गये। विगत दिनों श्री राजीव गांधी के नेतृत्व में भी प्रेस सेंसर विधेयक लोकसभा में आया परंतु राष्ट्रीय स्तर पर विरोध के चलते इसे वापस ले लिया गया।

स्वस्थ जनमत के लिए अनिवार्य

जब तक सही सूचनाएं जनता के सामने नहीं आएंगी, जनमत का निर्माण नहीं हो सकेगा। स्वस्थ जनमत का निर्माण ही स्वस्थ प्रजातंत्र दे सकता है। सूचनाओं के सार्वजनिक होने के पश्चात ही किसी खास नीति को मान्यता (लेजिटिमेसी) प्राप्त हो सकेगी, प्रजातंत्र एक शासन विधि ही नहीं, बल्कि जीवन का एक तरीका है। स्वस्थ जनमत एवं लेजिटिमेसी के अभाव में प्रजातांत्रिक राष्ट्र कहलाने का हक किसी राष्ट्र को नहीं है। फिनलैंड ने सन १९५१ में ही अपने नागरिकों को यह अधिकार दे दिया है। डेनमार्क में सन १९६४ से और नार्वे में सन १९७० से ही इसे अधिकार के रूप में मान लिया गया है।

सन १९७८ में फ्रांस ने कानून द्वारा जनता को यह अधिकार दे दिया है। इंगलैंड में 'ब्रीफ्रॉन सीक्रेट्स केस' १९७७ के एक फैसले में कहा गया है, "एक प्रजातांत्रिक सरकार का कर्त्तव्य है कि वह देखे कि सूचनाएं वृहद स्तर पर प्रसारित की गयी हों क्योंकि यही जनता को सार्वजनिक मामलों में सरकार पर नियंत्रण रखने का अधिकार देता है।"

चूंकि भारत एक गरीब देश है, इसलिए सार्वजनिक धन का थोड़ा भी दुरुपयोग यहां की अर्थव्यवस्था का नासूर हो जाता है। परंतु आये दिन हमारे देश में सार्वजनिक धन का दुरुपयोग होता रहता है, जनता मूक रहती है, क्योंकि विरले लोगों में इन बातों की चेतना है उन्हें सरकार से सूचना पाने का अधिकार ही नहीं है। कई बार विधानसभाओं एवं लोकसभा में उठाये गये प्रश्नों के उत्तर में यह कह दिया जाता है कि जनहित में अमुक सूचना देना अनुचित है। ए.जी. नूरानी ने एक जगह लिखा भी है, "सरकारी धन का उपयोग निर्धारित आदर्शों एवं उद्देश्यों के तहत किया जाना चाहिए तथा उस धन को तत्कालीन शासकों की इच्छा पर नहीं छोड़ा जाना चाहिए। केवल कर दाता ही नहीं बल्कि किसी नागरिक को ऐसे मामलों में सूचना प्राप्त कर न्यायालय की शरण लेनी चाहिए।" (देखें इक्नामिक एंड पोलिटिकल वीकली, नवंबर १९, १९८३)।

संभावित खतरे

अब यह प्रश्न उठता है कि क्या इस अधिकार को देने से समाज को खतरे हैं? मुख्य रूप से यह तर्क रखा जाता है कि सरकार के कार्यों में कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती हैं, क्योंकि भारतीय समाज विचित्र चरित्रों का समूह है तथा समय से पहले ही छींटाकसी एवं रुकावटें उत्पन्न होने लगेंगी। कुछ लोग मान्य या अमान्य साधनों से कुछ सरकारी या व्यक्तिगत सूचनाएं प्राप्त कर अशांति फैला सकते हैं तथा किसी व्यक्ति या समूह को हानि पहुंचा सकते हैं। कुछ पूर्वाग्रह से ग्रसित समाचार पत्र इसका दुरुपयोग कर लाभ उठा सकते हैं। ऐसा होने से दूसरे समाचार पत्रों के अधिकार का भी हनन होगा। इस प्रकार राजनीतिक, व्यावसायिक एवं अन्य निहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र्यों द्वारा इस अधिकार का गलत प्रयोग हो ...ता है। सूचनाओं को प्राप्त करने के पश्चात ...तत्व राष्ट्र की सुरक्षा एवं सरकार को ...रूप से चलाने में बाधक बन ...कते हैं।

सैनिक तैयारियां, युद्ध, हथियार, सुरक्षा, ...नीतिक एवं आर्थिक मेल-जोल, पुलिस द्वारा ...राधिक जांच एवं व्यवस्थापरक खोजों में ...ाएं आ सकती हैं। अंतरराष्ट्रीय जासूसी एवं ...राधियों की चालाकीपूर्ण गतिविधियां बढ़ ...कती हैं। भारत में अधिकांश जनता इन सारी ...तों को समझने के लिए तैयार नहीं है।

अतः समाचार पत्रों पर संहिता द्वारा अनुशासन, दूरदर्शन-रेडियो की स्वायत्तता एवं संवेदनशील राष्ट्रीय मामलों, आपराधिक छानबीन को ध्यान में रखकर ही सूचना पाने के अधिकार का मजमून तैयार किया जाना चाहिए। सारांश यह है कि वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय नागरिकों को सूचना का अधिकार मिलना ही चाहिए, परंतु संभावित खतरों को ध्यान में रखते हुए ही इसकी सीमाएं भी निर्धारित की जानी चाहिए।

—फैलो, जगजीवन राम संसदीय अध्ययन एवं राजनीतिक शोध संस्थान, पटना

कोई और भी है !

ऊंचे पर्वत से आसपास का रमणीय दृश्य देखते ही पर्यटक ने कैमरा निकाला और उतारने लगा छबियां अपनी फिल्मों पर। काम में वह इतना डूब गया कि यह भूल गया कि वह कगार तक पहुंच गया है। फिर तो वही हुआ, जो होना था। वह कगार से नीचे गिर पड़ा। गिरते-गिरते उसे वास्तविकता का ज्ञान हुआ और उसने कगार के नीचे उगे एक नन्हे से वृक्ष को पकड़ लिया। वह गिरने से तो बच गया, पर समस्या यह भी कि ऊपर कैसे चढ़े।

उसने पूरी शक्ति से पुकारा, ''कोई ऊपर है। कोई ऊपर है।'' काफी देर बाद गुहार का उत्तर मिला, ''हां, मैं ऊपर हूं।''

''भाई, एक रस्सी लाओ और मुझे बचाओ।''

''ठीक है, मैं तुम्हें बचा सकता हूं। पर क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास है।''

''हां भाई, पूरा विश्वास है।''

तो जो मैं कहूंगा, वैसा ही करोगे। विश्वास है न।''

''हां भाई, तुम तो ईश्वरीय दूत की तरह हो। तुम जैसा कहोगे, वैसा ही करूंगा।''

''ठीक है तो, जिस पेड़ को पकड़े हो, उसे छोड़ दो, सब ठीक हो जाएगा।''

थोड़ी देर शांति छायी रही। इसके बाद संकटग्रस्त पर्यटक ने फिर पुकारा, ''अरे, ऊपर कोई और भी है ! कोई और भी है !

व्यवसायी घर पहुंचा तो सीधे सोफे पर जाकर गिर पड़ा। वह बेहद थका प्रतीत हो रहा था। पत्नी ने सहानुभूतिपूर्ण स्वरों में पूछा, ''क्या आज बहुत ज्यादा काम करना पड़ा ?''

''हां भाई, आज कंप्यूटर दगा दे गया और सारे दिन हम लोगों को अपने दिमाग से काम लेना पड़ा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ग्रीन कॉर्ड' का मायावी स्वर्ण-मृग

● वेद प्रकाश सिंह

"विमान अब प्रस्थान के लिए प्रस्तुत है ! कृपया अपनी कुरसी की पेटी बांध लें, कुरसी सीधी रखें और धुम्रपान न करें।"

व्योमबाला के इस उद्घोष से भी जब नीता की तंद्रा भंग न हुई तो बगल में बैठी उस श्यामवर्णी युवती ने धीमे-से उसके कंधे को हिलाते हुए मृदु स्वर में कहा, "बहन ! विमान प्रस्थान करने को है, कृपया अपने कुरसी की पेटी बांध लें।"

युवती के स्पर्श से नीता की तंद्रा भंग हो गयी। उसे अपनी स्थिति का अहसास हुआ। श्यामवर्णी युवती को धन्यवाद देते हुए उसने अपनी पेटी बांध ली और कुरसी सीधी कर ली। क्षणभर में वह पुनः अतीत में लौट गयी। विगत वर्षों की घटनाएं एक-एक कर उसकी आंखों के समक्ष गुजरने लगीं। ... एशियाई ओलंपिक खेल प्रतियोगिता में उसकी अप्रत्याशित पराजय; श्रीकांत से आकस्मिक परिचय और परिचय का अंतरंग मैत्री में बदलना; श्रीकांत द्वारा उसके साथ विवाह कर अमरीका जा बसने का आकर्षक प्रस्ताव; चट मंगनी और पट ब्याह और श्रीकांत के साथ न्यूयार्क के लिए प्रस्थान; न्यूयार्क में वैवाहिक जीवन के शुरू के मौज-मस्ती के दिन; फिर धीरे-धीरे श्रीकांत के रुख में परिवर्तन और उपेक्षा तथा अंततः नंदिता को लेकर श्रीकांत से विग्रह, अलगाव और अंततोगत्वा तलाक . . . !

पांच वर्ष पूर्व एयर इंडिया के विमान से ही नीता दिल्ली से न्यूयार्क आयी थी। परंतु तब वह अकेली न थी। उसके साथ उसका पति श्रीकांत था। श्रीकांत के प्रस्ताव के बाद, उसके माता-पिता ने विवाह में तनिक देर न की थी। घर बैठे, अमरीका में बसा संपन्न जमाई अनायास ही हाथ लग जाए, तो कौन भारतीय मां-बाप इनकार कर सकता है।

श्रीकांत कौन है, न्यूयार्क में कैसा जीवन व्यतीत करता है, उसकी मान्यताएं क्या हैं, इसकी किसी ने कोई चिंता नहीं की। उस समय तो अमरीका जाने की उमंग में नीता के सामने ये सब प्रश्न गौण थे, अनावश्यक थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

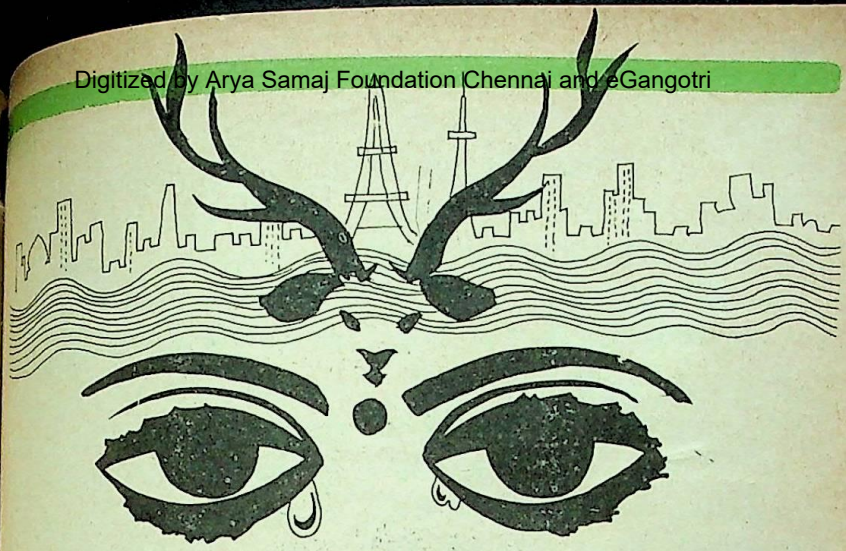

न्यूयार्क पहुंचते ही श्रीकांत ने एक डिपार्टमेंट स्टोर में उसे सेल्स गर्ल की नौकरी दिलवा दी थी वहां और भी बहुत-सी लड़कियां, श्वेत, अश्वेत, अमरीकी, वेस्टइंडीज और स्पैनिश, काम करती थीं। भारतवंशी वेस्टइंडीज नंदिता भी इनमें से एक थी। भारतवंशी होने के कारण नीता उसे अधिक पसंद करती थी। पति से तलाक लेकर नंदिता न्यूयार्क में स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर रही थी। सप्ताहांत में अक्सर नीता उसे अपने साथ अपने एपार्टमेंट में ले आती थी। धीरे-धीरे श्रीकांत के साथ भी नंदिता की अच्छी जान-पहचान हो गयी थी।

श्रीकांत और नंदिता स्वतंत्र विचार के उन अमरीकी युवा-युवतियों में थे, जिन्हें 'गर्ल फ्रेंड' और 'ब्वाय फ्रेंड' बनाने और बनने की शिक्षा १०-१२ साल की उमर से ही मिलने लगती है। स्वाभाविक था कि दोनों एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते और अपने परिचय को मैत्री के रूप में बदलते। परंतु नीता को इसका एहसास न हुआ क्योंकि अभी तक वह अमरीकी समाज की इस नयी व्यवस्था और उसके व्यावहारिक अर्थों और अभिप्राय से सर्वथा अनभिज्ञ थी। उसके और श्रीकांत के बीच नंदिता आ चुकी है, इसका एहसास जब नीता को हुआ तो वह बेहद घबरा उठी। वस्तुतः वह उसी समय से चिंतित रहने लगी थी जब न्यूयार्क आने के कुछ ही दिनों बाद, कुछ भारतीय मित्रों से उसे यह पता लगा था कि उससे विवाह करने से पूर्व श्रीकांत दो पत्नियों को तलाक दे चुका है। परंतु, यह जानकारी होने के बाद भी नीता ने श्रीकांत से कुछ कहा नहीं था क्योंकि वह अपने वैवाहिक जीवन में किसी प्रकार का विग्रह नहीं पैदा करना चाहती थी।

धीरे-धीरे श्रीकांत के व्यवहार में भी बहुत अंतर आ गया। वह रात देर गयी तक गायब रहता, बात-बात पर नीता पर झुंझला उठता और उसके हर काम में मीन-मेख निकालता।

जब एक दिन नीता ने उसके बदले हुए व्यवहार की शिकायत करते हुए एपार्टमेंट में 'बोर' होते रहने की शिकायत की तो श्रीकांत ने झुंझलाकर उत्तर दिया, "क्या चाहती हो! क्या चौबीसो घंटे मैं तुम्हारी गोद में बैठा रहूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीता के तन-बदन में श्रीकांत के इस उत्तर से आग लग गयी । वह बोली, "मेरी आंखों में धूल झोंककर नंदिता के साथ मौज-मस्ती करते तुम्हें शरम नहीं आती । मुझे सब मालूम है । मैं अंधी तो नहीं हूं ।"

चोरी खुल जाने से श्रीकांत क्षणभर के लिए स्तंभित हो उठा । परंतु फिर संभलकर बोला, "तो क्या गुनाह करता हूं ! यह भारत नहीं, यह अमरीका है, पूरी तरह आजाद मुल्क है, हर मर्द, हर औरत आजाद है, अपनी मरजी की मालिक है । तुम भी चाहो तो अपने 'ब्वाय फ्रेंड' के साथ इसी प्रकार घूम-फिर सकती हो, मौज कर सकती हो ।"

"तुमको ही मुबारक हो इस प्रकार की मौज-मस्ती और इस प्रकार का जीवन ।"

"ठीक है ! यदि तुमको यह सब अच्छा नहीं लगता, घृणित प्रतीत होता है तो अपने देश लौट जाओ, मैं टिकट की व्यवस्था अभी कर देता हूं ।"

श्रीकांत के इस दो टूक निर्मम उत्तर से नीता चौंक पड़ी ।

"लेकिन, मुझे तो इस प्रकार की स्थिति स्वीकार्य नहीं !" वह बोली ।

"यह तो तुम्हारी समस्या है, मेरी नहीं ! मुझसे तो जब कहोगी, दिल्ली की सीट बुक करा दूंगा ।"

"परित्यक्ता के रूप में ! हरगिज नहीं । इस हालत में तो मैं कभी स्वदेश वापस नहीं लौटूंगी । क्या मुख दिखाऊंगी अपने स्वजनों को ।" बिना कुछ उत्तर दिए मुख बिचकाकर श्रीकांत वहां से चला गया ।

श्रीकांत के इस क्रूर व्यवहार से नीता का कोमल दिल टूट गया । शरम के कारण वह मां-बाप को कुछ लिख भी नहीं सकती थी ।

झगड़ा होने के दूसरे ही दिन श्रीकांत अपना सामान उठाकर अपनी 'गर्ल फ्रेंड' नंदिता के यहां चला गया । और उसके जाने के तीसरे ही दिन श्रीकांत के वकील की मारफत नीता को 'तलाक' का नोटिस मिल गया । इधर रहने के लिए जगह ढूंढ़ने की समस्या भी थी क्योंकि नीता अकेले उस एपार्टमेंट का किराया नहीं भर सकती थी ।

साहस बटोरकर कई दिन बाद जब नीता काम पर गयी तो उसके उतरे हुए मुख और सूजी हुई आंखों को देखकर उसकी एक सहेली मार्था ने भांप लिया कि 'दाल में कुछ काला है ।' लंच में नीता ने उसे अपनी सारी समस्याएं बतायीं । अपनी मान्यताओं का जिक्र किया ।

'ओह ! मैं मानती हूं कि हर देश की मान्यताएं भिन्न-भिन्न होती हैं । हो सकता है तुम्हारे यहां इसे बुरा मानते हों परंतु इस देश में तो इस प्रकार के किस्से रोज ही होते रहते हैं ।

सहेली ने उसे बहुत समझाने की कोशिश की । परंतु नीता किसी प्रकार इस स्थिति को स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत न हुई । परंतु उसने परित्यक्ता के रूप में स्वदेश वापस न लौटने का भी संकल्प दुहराया और यह निर्णय किया कि यहां रह कर ही वह अपने को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करेगी और ज्ञानोपार्जन करेगी । शीघ्र ही आर्थिक दृष्टि से वह पूरी तरह आत्मनिर्भर हो गयी । परंतु श्रीकांत ने उसके साथ जो व्यवहार किया था और परित्यक्ता का जो जीवन उसे जीना पड़ रहा था, उसके कारण वह आत्मग्लानि और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ताप में बराबर झुलसती रही । और, तब ...चानक ही उसे पिता के मृत्यु शैय्या पर होने ...समाचार मिला था । पिता को अंतिम समय ...ने की इच्छा पर वह काबू नहीं पा सकी और ...चाहकर भी उसे स्वदेश जाने का अप्रिय ...र्णय करना पड़ा था ।

★★★★

तभी व्योमबाला ने आकर उसका ध्यान भंग ...र दिया । वह उससे नाश्ते के लिए पूछ रही ...थी । नीता ने उसे अपनी रुचि का नाश्ता लाने ...का निर्देश दिया और हाथ-मुंह धोने चली ...गयी । लौटी तो नाश्ता तैयार था । बगल में ...बैठी श्यामवर्णा युवती ने भी अपना नाश्ता अभी ...प्रारंभ नहीं किया था । शायद नीता का ही ...इंतजार कर रही थी । नीता को देखकर हंसकर ...बोली, "आइए ? मैं तो आपका ही इंतजार कर ...रही थी ।"

नीता के बैठते ही श्यामवर्णा युवती ने बातों ...का सिलसिला छेड़ दिया । बातों-बातों में उसने ...बताया, "बंबई जा रही हूं ! कई सालों ...बाद !" फिर मुसकराकर बोली, "हम बंबई के ...ही रहनेवाले हैं । मेरा नाम स्मिता है । पिछले ...१० वर्षों से मेरा परिवार न्यूयार्क में बस गया ...है । मैं एक एटार्नी के ऑफिस में काम करती ...हूं ।"

"मेरा नाम नीता है । वैसे मैं भी कई सालों ...से न्यूयार्क में ही रहती हूं ।" फिर न जाने क्या ...सोचकर पूछ बैठी, "आप ! अकेले ही यात्रा ...कर रही हैं ।"

स्मिता के मुख पर क्षणभर के लिए विषाद ...की रेखा-सी उभरी; फिर लुप्त हो गयी और वह ...हंसकर बोली, "अकेले यात्रा करने में क्या ...परेशानी है ? न जाने कितनी औरतें अकेले ही

नीता और स्मिता अमरीका में बसी दो भारतीय युवतियां—तरह-तरह के छल-फरेबों की शिकार ? और उन्हें धोखा देनेवाले और कोई नहीं, स्वयं उनके पति ही थे ! क्यों किया उन्होंने ऐसा !

यात्रा करती हैं ! और शायद आप भी अकेले ही सफर कर रही हैं ।"

और फिर स्वयं ही बात को आगे बढ़ाते हुए कहने लगी, "इस बार तो अकेले ही जा रही हूं । माता-पिता को अवकाश ही नहीं मिल पाया ।"

"और आपके पति !"

नीता के प्रश्न का बहुत ही सहज भाव से मुसकराकर उत्तर देते हुए बोली, "पति नहीं हैं ! गत वर्ष ही उससे तलाक हो चुका है ।"

नीता को युवती के इस उत्तर से एक आघात-सा लगा; उसका अपना घाव हरा हो गया । अफसोस प्रकट करते हुए उसने कहा, "माफ कीजिएगा ! शायद मुझे आपसे ऐसा प्रश्न नहीं पूछना चाहिए था !"

"बहन ! जो यथार्थ है, सत्य है, उसे कैसे और कब तक अस्वीकारा जा सकता है; यद्यपि हमारे अहम को इससे ठेस पहुंचती है । आप नहीं तो कोई और यही प्रश्न पूछ सकता था और हर बार झूठ बोलकर मैं अपने आप को ही तो धोखा देती रहती । जीवन की जो यथार्थता है, उसे सहज भाव से स्वीकार करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है । परंतु, मेरी बात छोड़िए । आपने अपने बारे में तो कुछ बताया ही नहीं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीता ने उसे अपनी आप-बीती सुना दी । फिर बातचीत का रुख बदलकर नीता ने उससे पूछा, ''इस बार बंबई जाना कैसे हो रहा है ?''

स्मिता कुछ देर मुस्कराती रही; फिर बोली, ''हां, आजकल बिना प्रयोजन कोई कहां जाता है ! प्रयोजन तो कुछ विशेष ही है परंतु आपसे क्या छिपाना । वस्तुतः यहां अमरीका में स्थायी या अस्थायी रूप से आ बसी भारतीय युवतियों का भारत जाने का बहुधा एक विशेष प्रयोजन हुआ करता है— अपने लिए योग्य वर की तलाश ! यही उनकी सबसे बड़ी समस्या है । रहती तो आधुनिक अमरीका में हैं जिसकी सामाजिक मान्यताएं विपरीत हैं और जिसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भारत से सर्वथा भिन्न है ! अमरीका में रहते हुए भी अपने परिवारों के अंदर उन्हें भारतीय समाज द्वारा निर्धारित सीमाओं में ही रहना पड़ता है । अमरीका में किसी विदेशी से ब्याह रचाना न तो मेरे माता-पिता को स्वीकार होता और न मुझे ही रास आता । इसीलिए जब यहां कोई अच्छा भारतीय वर न मिला तो माता-पिता मुझे लेकर बंबई चले आये ! वहां यह जानकर कि कोई भारतवंशी अमरीकी नागरिक कन्या अपने लिए भारतीय वर चाहती है, उम्मीदवारों की भीड़ लग गयी । भारत में तो हर महत्त्वाकांक्षी युवक का यह सपना रहता है कि किसी भारतवंशी अमरीकी युवती या लड़की से शादी कर 'ग्रीन कार्ड' प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त कर ले । उनकी नजर केवल 'ग्रीन कार्ड' रूपी मायावी मृग पर होती है । आप तो देख ही रहे हैं कि मैं काली हूं और सुंदर भी नहीं हूं । परंतु, बंबई में सुंदर और सुशील वर मिलने में मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई, लड़के ने केवल इतना पूछा था कि शादी करने के कितने दिन बाद वह अमरीका जा सकेगा ! जब उसको यह उत्तर मिला कि 'अविलंब' तो वह तुरंत ब्याह करने के लिए राजी हो गया । मैं एक माह के अंदर ही अपने पति को साथ लेकर न्यूयार्क लौट आयी । न्यूयार्क पहुंचते ही पति ने मेडिकल कॉलेज में दाखिला लेने की इच्छा प्रकट की । मैं न्यूयार्क विश्वविद्यालय में कंप्यूटर विज्ञान का अध्ययन कर रही थी परंतु मैंने अपनी पढ़ाई स्थगित कर नौकरी कर ली ताकि पति को लेकर अलग घर बसा सकूं और पिता पर और आर्थिक भार न पड़ने दूं ।

जब तक मेरे पति की पढ़ाई चलती रही सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा । लेकिन डिग्री प्राप्तकर अच्छे-से अस्पताल में नौकरी मिलने के बाद पतिदेव के तेवर बदलने लगे । असलियत यह थी कि अपने कॉलेज की ही एक लड़की को उसने अपना 'गर्ल फ्रेंड' बना लिया था और मुझसे पिंड छुड़ाकर उससे शादी रचाना चाहता था । एक दिन वह कुछ कहे बिना घर छोड़कर चला गया । दूसरा कदम तलाक के अलावा और क्या हो सकता था । बहुधा यही तो होता आया है । 'ग्रीन कार्ड' रूपी मायावी मृग को पाने के लिए भारतीय युवक पहले आंख मूंदकर विवाह करने के लिए तैयार हो जाते हैं परंतु मन में बेईमानी होने के कारण, जैसे ही 'ग्रीन कार्ड' उनके हाथ आ जाता है, गिरगिट की तरह रंग बदलकर उलटा आंखें दिखाने लगते हैं । तलाक देकर किसी आधुनिका से विवाह कर लेते हैं या देश जाकर नया ब्याह रचा लाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलाक के बाद मेरे सामने भी कई अहम प्रश्न उठ खड़े हुए जिनका समाधान मुझे ही ढूंढना था। मानसिक शक्ति संजोने के लिए मैंने अत्यंत मनोयोगपूर्वक 'गीता' के अंगरेजी अनुवाद का अध्ययन जारी रखा। जैसे-जैसे मैं गीता के गूढ़ रहस्य और साभिप्राय उपदेशों को समझने की कोशिश करने लगी, मार्ग धीरे-धीरे मेरे समक्ष स्पष्ट होने लगा। अंततः मैं यह समझ गयी कि अतीत तो निःशेष हो चुका था; इसलिए अर्थहीन हो चुका था; और जो अभी घटा ही नहीं हुआ था, उसके बारे में अकारण चिंता करना नितांत मूर्खता थी। सर्वोत्तम तरीका बुद्धिपूर्वक और विवेक के साथ वर्तमान को जीना था— भावना के धरातल से उतरकर यथार्थता की ठोस भूमि पर खड़े होकर ! मार्ग स्पष्ट हो जाने पर मैंने पुनः विवाह करने का निर्णय कर लिया। भले ही उसकी शर्त यह क्यों न हो कि मुझे अमरीका छोड़कर उसके साथ उसके देश में रहना होगा। "तो क्या आप 'ग्रीन कार्ड' का परित्याग करने के लिए तैयार हो जाएंगी," आश्चर्य से नीता ने पूछा। श्रीकांत से तलाक हो जाने के बाद, 'ग्रीन कार्ड' के लिए नीता ने जो आवेदन दिया था, उसको श्रीकांत ने 'इमीग्रेशन विभाग' को पत्र लिखकर अस्वीकृत करवा दिया था और अनेक बार कोशिश करके भी नीता 'ग्रीन कार्ड' प्राप्त नहीं कर पायी थी। वह यह विश्वास ही नहीं कर पा रही थी कि कोई विवाह करने के लिए 'ग्रीन कार्ड' का परित्याग करने के बारे में भी सोच सकती है।

"यदि इस कीमत पर अनिश्चतता समाप्त हो जाए और छलनापूर्ण कृत्रिम जीवन से मुक्ति मिलकर विश्वास और स्नेह की छाया में जीवन व्यतीत करने का अवसर मिले तो मेरी राय में सौदा बुरा नहीं," हंसकर स्मिता ने उत्तर दिया।

विप्लवों का दौर है

स्वप्न आहत नींद गहराती नहीं
अब निशा भी दिल को बहलाती नहीं

कैसे मानूं याद करते हो मुझे
खत नहीं, चिट्ठी नहीं, पाती नहीं

विप्लवों का दौर है अब गांव में
कोई मां बच्चों को दुलराती नहीं

सभ्यता का चीर कितना भी धुले
अंध विश्वासों की बू जाती नहीं

स्वर पराजित शब्द अक्षम हैं 'नरेश'
अब गजल हमसे कही जाती नहीं

—डॉ. नरेश

अध्यक्ष, भाई वीर सिंह आधुनिक साहित्य पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

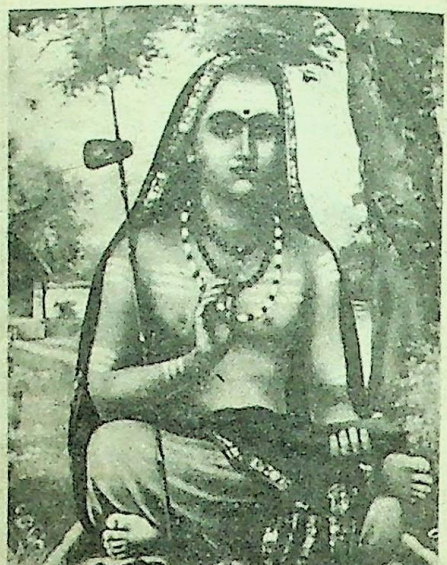

वेदांत और इक्कीसवीं सदी

● इन्दिरा मोहन

इतिहास साक्षी है भारतीय आध्यात्मिक मनीषा, समाज के साथ-साथ करवटें बदलते हुए सदैव जीवंत एवं गतिशील रही है। उसने हर युग में जन-समूह का मार्ग दर्शन कर उसे संबल दिया है। काल प्रवाह के मध्य *'सनातनो नित्य नूतनः'* की भूमिका हमारी संस्कृति ने वेदांत के आधार पर निभायी। वेदांत तो आत्मा का धर्म है। किसी एक वर्ग, किसी एक जाति, संप्रदाय या मत का धर्म नहीं, वह तो इन सबका स्रोत है, इन सबका आधार है। स्वामी रामतीर्थ कहते हैं,

"वेदांत के तथ्यों को ग्रहण कर आत्मसात कर लो, इन्हें स्वरूप में ढाल लो फिर तुम ईसाई धर्म अथवा अन्य कोई भी धर्म कहो, नाम का हमारे लिए कोई महत्त्व नहीं।"

उपनिषदों की संपूर्ण धार्मिक दार्शनिक परंपरा वेदांत के रूप में जानी जाती है। इसमें विकास के आधार पर तीन प्रस्थान हैं— उपनिषद, भगवत् गीता और ब्रह्मसूत्र।

वेदांत के अनुसार सारे विश्व में जो कुछ भी दीख रहा है वह और कुछ नहीं एक महान सत्य का आनंदमय प्रकाश है। सारे ब्रह्मांड में एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...हुए व्याप्त है— सब कुछ उसी में से उत्पन्न
...पुनः मूल में ही विलीन हो जाता है ।
...उदिदं ब्रह्म'
...इंद्रियों द्वारा अनुभव होनेवाली विविधता
...नहीं "नेह नानास्ति किंचन"-जैसे सोने से
...विभिन्न आभूषण सोना ही है । नानात्व
...काल में है, निरपेक्ष सत्य तो केवल
...है । पर उसकी प्राप्ति के मार्ग अनेक हैं—
...द्विप्रा बहुधा वदंति

— ऋग्वेद ।

...अलग-अलग धर्म हो सकते हैं, लेकिन लक्ष्य
...अलग नहीं है ।

आत्मा ही सब-कुछ

...ज्ञवल्क्य अपनी पत्नी मैत्रयी से कहते हैं
...संसार में जो कुछ है वह आत्मा ही है ।
...से बढ़कर कुछ भी प्रिय नहीं । 'मैं हूं'

असंख्य ब्राह्मणों को परास्त कर, जनक-सभा से गोधन और स्वर्ण हरण किया था । इसी आनंदस्वरूप आत्मा को जानकर राजा जनक विदेह कहलाये ।

ईश्वर को माननेवाला व्यक्ति समाज में एकता के दर्शन सरलता से कर सकता है । जब एक ही ईश्वर जगत का निर्माता है तो विश्व के सभी मानव उसी की कृति हैं । इसी आधार पर वेदांत विश्व को अनेक देश, अनेक जाति अथवा खंड-खंड रूप में न देखकर एक अखंड पृथ्वी या कुटुंब के रूप में देखता है ।

आचार्य शंकर का योगदान

अद्वैतवाद की यह परंपरा वादरायण के ब्रह्मसूत्र से शुरू होकर शंकराचार्यजी द्वारा जन-जन में संचरित हुई । ७वीं ८वीं सदी में आचार्य शंकर ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व

विश्व के सभी प्रमुख विचारक इस बात से सहमत हैं कि वर्तमान समस्याओं का समाधान चाहे वे आर्थिक हों या राजनीतिक, रंगभेद हो या सांप्रदायिक कट्टरता— वेदांत के व्यावहारिक प्रयोग द्वारा संभव है क्योंकि यह दर्शन मानव मात्र में ही नहीं, प्राणि मात्र में समत्व और एकत्व बुद्धि जाग्रत करता है ।

...भान हर व्यक्ति को हर काल में होता है ।
...भी वस्तु स्वयं प्रिय नहीं होती— पत्नी,
...धन, यश आदि केवल इसलिए प्रिय हैं
...कि 'मैं' आत्मा को प्रिय हैं । आत्मा हमारी
...का अंतर्तम सत्य है, हमारा वास्तविक
...है, उसकी प्राप्ति के लिए कहीं जाना नहीं
...न ही बाह्य साधनों की जरूरत, जैसे सूर्य
...देखने के लिए कोई अन्य प्रकाश जरूरी
...होता ।

...आत्मा को जानकर ही याज्ञवल्क्य ने

द्वारा वेदांत सिद्धांत का इतना विशद प्रतिपादन किया कि उनके बाद वेदांत, शंकर-दर्शन के समानार्थक हो गया । यद्यपि सत्य का साक्षात्कार करनेवालों में से आचार्य शंकर पहले नहीं थे, किंतु उस सत्य को लोक ग्राह्य बनानेवालों में वे श्रेष्ठतम थे । जहां एक ओर आचार्य शंकर ने विविध मत-मतांतरों, संप्रदायों को 'एक ब्रह्म का सत्य' के सूत्र में पिरोया, वहां वर्तमान समय में स्वामी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, दयानंद, स्वामी रामतीर्थ, अरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि दार्शनिक संतों ने वेदांत के व्यावहारिक स्वरूप द्वारा जीवन की विषमताओं का एकमात्र समाधान ढूंढ़ा । आत्म बोध की यह समग्रता २०वीं सदी के आते-आते तिलक, गांधी, विनोबा भावे के जीवन से फूट पड़ी— फलस्वरूप सौम्य-सात्विक, सत्य-अहिंसा का तप विजयी घोषित हुआ । कोलाहल और सक्रियता की शक्ति निःसंदेह महान है परंतु अनंत है शांति और नीरवता की शक्ति, जिनमें महान शक्तियां कार्य करने हेतु तत्पर रहती हैं ।

वेदांत केवल राष्ट्र विशेष के पुनरुत्थान के लिए आवश्यक नहीं वरन् मानव मात्र के संरक्षण के लिए उपयोगी है । यदि जीवन एक है तो जीवन का विज्ञान भी एक है । आदमी पूर्व का हो या पश्चिम का, उसकी शारीरिक आवश्यकताएं एक हैं, आत्मिक आवश्यकताएं एक हैं । देशों की दीवारें खींचकर मनुष्य को मनुष्य से अलग नहीं कर सकते ।

वेदांतः सहज मानव धर्म

वेदांत तो सहज मानव धर्म है, अतः विश्व धर्म के उपयुक्त है । यह किसी व्यक्ति विशेष द्वारा किसी देश अथवा किसी काल विशेष के लिए नहीं चलाया गया वरन् पक्षपात रहित न्यायाधीश की भांति सभी धर्मों को सब राष्ट्रों के आचार-विचार के अनुकूल अपने-अपने स्थान पर बैठाता है । इसमें किसी प्रकार की कट्टरता नहीं, स्वामी विवेकानंद के अनुसार, 'यह उस विशाल सागर के समान है जिसके वक्ष पर युद्ध पोत और साधारण बेड़ा, दोनों पास-पास रहते हैं ।'

वेदांत कहता है विश्व की अराजकता और संकटपूर्ण स्थिति के मूल में मनुष्य का सीमाबद्ध होकर सोचना है । मनुष्य जब अपने 'मैं' को जाति, धर्म, देश आदि सीमाओं में बांध लेता तभी अराजकता और अनर्थ उत्पन्न होते हैं । विश्व के सभी प्रमुख विचारक इस बात से सहमत हैं कि वर्तमान समस्याओं का समाधान चाहे वे आर्थिक हो, या राजनीतिक, रंगभेद हो या सांप्रदायिक कट्टरता— वेदांत के व्यावहारिक प्रयोग द्वारा संभव है क्योंकि यह दर्शन मानव मात्र में ही नहीं, प्राणि मात्र में समत्व और एकत्व बुद्धि जाग्रत करता है ।

वेदांत बाहरी विभिन्नता और पार्थक्य मिथ्या की राय नहीं देता वरन् विभिन्नता में एकता का आनंद खोजता है— छाया का आनंद धूप के रहने में ही है । कार्य कारण में भेद मानना हैं— दोनों का अस्तित्व एक-दूसरे पर निर्भर जैसे वर्षा का कारण जल है और जल का वर्षा । एकता एकरूपता नहीं है, इसलिए आचार्य शंकर ने एक केंद्र नहीं बनाया— दिशाओं में चार मठ बनाये । उन्होंने पूरे देश एक-सी व्यवस्था हो, इस बात पर बल नहीं दिया । केवल समस्त व्यवस्थाओं को एक चिदाकाश देकर साकार बनाया— उनकी देन है कि आज भी गंगोत्री का जल रामेश्वरम् चढ़ता है ।

हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पहले देखा था कि सारा ब्रह्मांड भूमि, सूर्य, चंद्र, जल, वायु, जड़-चेतन सहित एक शक्ति से ओत-प्रोत है, जड़ तत्व और कुछ नहीं चेतन का निष्क्रिय रूप है । सृष्टि की सारी प्रणाली, सारी योजना इसी चेतन का क्रमशः उद्घाटन है । आईंस्टीन, हाइजनबर्ग-जैसे वैज्ञानिकों ने इस सत्य को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...मिदं सर्वम्''
...विश्व का एकमात्र सत्य है— इसके
...कुछ नहीं— मैं अपने पड़ोसियों से
...हूं, द्वेष करता हूं तो स्वतः अपने से ही
...हूं, द्वेष करता हूं। 'मैं ब्रह्म हूं', 'ब्रह्म
...'— यह सूत्र मिलते ही ईसा के मानव
...लाम के भाईचारे, बौद्धधर्म की
...करुणा को आधार मिल जाता है।
...शंकर *'अहं ब्रह्मास्मि'* कहेगा तो मुसलिम
...*अनहलक'* की घोषणा करेगा। ईसाई ''मैं
...पिता एक हैं'' कहेगा। बौद्ध धर्म का
...ब्रह्म ही तो है। धर्म का मुख्य तत्व
...बाह्याचार नहीं प्रत्युत वह अंश है,
...मनुष्य परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त कर
...एवं दिव्यता का अनुभव करता है।

संघर्ष का कारण

...'अहम्' के दो अंग जड़ और चेतन
...वेदांत की घोषणा है कि चेतन तत्व ब्रह्म का
...है जो अपनी सीमा त्याग, असीम के
...एकाकार होना चाहता है, दूसरा जो जड़
...है, वह सीमा से चिपककर पदार्थों से सुख
...चाहता है। इन दोनों भावनाओं का
...संघर्ष का मूल है। कामना के कारण
...अच्छे-बुरे की, रुचिकर-अरुचिकर,
...दुःख के द्वंद्व में फंसा रहता है। वेदांती
...है कि सब कुछ भले की ओर जानेवाला
...ईश्वर सर्वत्र है, सर्व मंगलमय है।
...से रहित आत्मा कार्य सदैव समग्र एवं
...पूर्ण होता है।
...का साक्षात्कार करने के कारण हर
...समष्टि में और समष्टि से जुड़ने के कारण
...में निवास करता है।

अथर्ववेद में एक मंत्र है— मन से एक बनो, विचार से एक बनो— मन से एक होना, समाज की समरसता का सार है जहां संघर्ष, संशय, असहयोग के स्थान पर सत्य-अहिंसा, सहयोग-सदाचार की तरलता समाज के सभी अंगों को स्नेहयुक्त करती है। आज यदि हम अपनी सीमित सापेक्ष उन्नति खोजेंगे तो निराशा ही हाथ लगेगी— विश्व कल्याण के बिना आत्म-कल्याण संभव नहीं। जिस समाज में मनुष्य केवल अपने आपको ही भोग का एकमात्र साधक मानता है, और चाहता है सारे भोग मुझसे संबंधित हो जाएं, उस समाज में मानसिक तनाव उसी अनुपात से बढ़ता चला जाता है। इस तत्व को आधुनिक समाज भोग रहा है।

ज्ञान के आनंद की पूर्णता स्थूल स्तर पर संभव नहीं— उसकी खोज तो सूक्ष्म के उच्च स्तर पर ही हो सकती है। जहां पवित्रता की यह सात्विकता आती है, वहीं से वेदांत का आरंभ समझना चाहिए।

भारत में दर्शन को जीवन से पृथक कभी नहीं समझा गया चाहे चार्वाक हो अथवा शंकर। वह पाश्चात्य दर्शन की भांति केवल तत्वों की मीमांसा नहीं करता है। पाश्चात्य दर्शन की गति स्थूल पदार्थों में है। वे प्रायः दृश्य जगत के छानबीन में लगे हैं। भारतीय दार्शनिक सदैव प्रकृति सृष्टि की खोज में लीन रहे। वर्तमान समय में वैज्ञानिक दृष्टि भी द्वैतवाद से अद्वैतवाद की ओर बढ़ रही है। २०वीं सदी के आरंभ तक हमारी दृष्टि में द्रव्य और शक्ति का भेदभाव था— दोनों अलग हैं, दोनों नष्ट नहीं होते, किंतु अणुबम के विस्फोट ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रव्य और शक्ति के अभेद को बताया । इसी प्रकार मानस तत्व और भौतिक तत्व की एकता सिद्ध हो गयी । हमारे यहां 'जैसा खावे अन्न, वैसा बने मन' एक प्राचीन कहावत है । आज चिकित्सा शास्त्र भी कहता है कि अधिकांश रोग मन के कारण हैं— मन के तनावों का असर शरीर पर निश्चित पड़ता है । पश्चिम का विज्ञान यंत्रों द्वारा इस परिणाम पर पहुंचा है कि जीवधारी और वनस्पति का अलगाव असंभव है, दोनों का एक नाम प्रकृति है । पश्चिम ने विज्ञान और कल-पुर्जों पर अगाध विश्वास किया किंतु अब वह अपने विज्ञान के बोझ तले जा रहा है— समझ नहीं पाया कि इन आदर्शों को व्यावहारिक बनाने के लिए आध्यात्मिक परिवर्तन जरूरी है । आपसी भाईचारे के बिना विज्ञान का उपयोग कैसे हो सकता है ? नियंत्रण कैसे हो सकता है ?

प्रश्न है कि समाधान व्यक्ति के लिए खोजा जाए अथवा समष्टि के लिए । कल्याण तो समाज का होना है पर वह होगा व्यक्ति के माध्यम से । निराकार समूह के सुख-दुःख की कल्पना कैसे की जाए ।

अतः मुक्ति समाज की नहीं, व्यक्ति की होगी, केंद्र सदा व्यक्ति रहेगा, लेकिन उसका प्रसार और प्रचार समाज की ओर होगा । फलतः अहम् के संकीर्ण दायरों से निकलते ही बहुजन हित के सुधार और विकास की प्रक्रिया स्वतः तेज हो जाएगी । वेदांत व्यक्ति और समाज के मध्य स्वस्थ संतुलन स्थापित करने में सक्षम है । उसकी उदार पृष्ठभूमि भौतिकता और आध्यात्मिकता के बीच सामंजस्य रख सकती है । आज भी वेदांत के प्रकाश में संभावनाओं के मंत्र-बीज सुगबुगा रहे हैं । उसकी व्यापकता में प्रत्येक धर्म के लिए, प्रत्येक संप्रदाय के लिए आश्रय है, मानवमात्र के लिए उसकी बाहें फैली हैं । वह तो उस महासेतु के समान है, जिसके द्वारा विश्व अथाह, अतीत से अज्ञात भविष्य में निर्भय-निःसंकोच प्रवेश कर सकता है । प्रो. राधाकृष्णन ने उचित कहा है— *"विश्व न पूर्व की थाती है न पश्चिम की, न धर्म की न विज्ञान की । वह उसी सत्य का अनुगामी होकर रहेगा जो उसके समस्त प्राणियों के लिए कल्याणकर है ।*

"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गम्यं"

— १२ लखनऊ रोड, दिल्ली-

निकारागुआ के मानगुआ शहर के किनारे पर स्थित झील मृतप्रायः हो चुकी है । इसका कारण मनुष्य द्वारा इसके संरक्षण की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाना है । अनुमान किया जाता है कि इस झील को पुनर्जीवन प्रदान करने के लिए लगभग २० करोड़ अमरीकी डॉलर का खर्च होगा, जबकि देश की कुल आय केवल तीन सौ करोड़ डालर प्रति वर्ष है । यह झील जो कभी पशुओं को पीने के लिए पानी प्रदान करती थी, करीब के शहर के लोगों को मछलियां प्रदान करती थीं, जहां छोटी-छोटी नौकाओं का क्रीड़ा-स्थल हुआ करता था, अब वही झील मल के ढेर में बदल गयी है । इसके अलावा यहां पास में स्थापित एक प्लास्टिक फैक्ट्री द्वारा प्रतिदिन जहरीला पदार्थ इस झील में छोड़ दिया जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परावर्तित प्रकाश

...में उलझे ये स्वप्न
...सहमे-से
...उजाले से डरकर
...परावर्तित होता
...प्रकाश
...है
...के लिए दृष्टिहीन
...कोमल नयनों को
...अंधकार
...मृदुल स्वप्न को
...जाता है
...पूर्व-कक्ष में
...अवशेष छोड़े

—सुषमा अरोरा

...तेलीवाड़ा शाहदरा दिल्ली—११००३२

वक्त का सूरज

वह मेरी नहीं
हथेलियां वक्त की थीं
जो कभी तुम्हारे सामने फैलीं
और तुमने एक स्नेह-स्पर्श की ओट में उन पर
न जाने कितने कैक्टसों को बो दिया
उस रोज, मैंने निस्तेज होते हुए
तुम्हारे रवि-मस्तक को देखा था
और शायद तभी से सूरज
मेरी हथेलियों पर उगे
कैक्टसों में उतर आया है

—कल्पना सिंह

प्रेमाश्रम निकट—न्यू गोदाम गया—८२३००१

पांच रास्ते

एक

'पगडंडी'
पतली होती है
हाथ-में-हाथ लिये
सहारा देकर
कड़ी बनाकर चले थे
युग बीत गये

दो

'गली'
संकीर्ण होती है
ठीक उसी तरह
जैसे
आज के
इनसान का दिल

तीन

'सड़क'
काली होती है
सभी से पूछती है
ऐसा क्यों
काला रंग शोक का प्रतीक
बदहवास वाहन
मुझे कुचल जाता है
फिर
स्याह को मुखर करता
मातम

चार

'दो-राहा'
टकरा जाता है
जब सामना होता है
टकराव में
भोर हुई में
बचता है एक
मात्र एक

पांच

'चौराहा'
जहां मिलन होता है
ओम का, खांडा का
हिलाल का, क्रास का
विभाजन रेखा
बीच खड़ा
एकाकी मानव

—मजहर अहमद खान

महल्ला—साजगरीपोरा (हवल)
श्रीनगर—१९००११ (कश्मीर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आइए चलें जंगलों की ओर

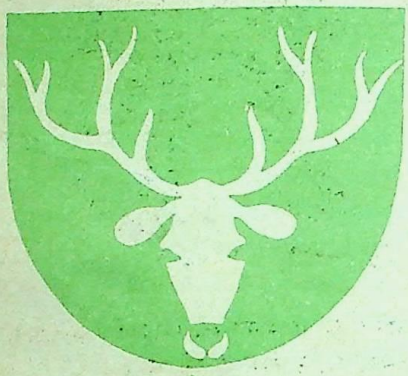

संकट में है बंदरों का अस्तित्व

भारत के उत्तरी और मध्य के हिस्सों में आमतौर पर पाया जाने वाला बंदर भी मनुष्य के समान नर वानर गण का सदस्य है । गुलाबी चेहरा और नारंगी-लाल रंग का पृष्ठ भाग इसकी पृथक पहचान बनाते हैं । बंदर गठीले बदन के मालिक होते हैं । एक युवा बंदर की ऊंचाई ४५ से ६० से. मी. तक होती है किंतु मादा ऊंचाई में कुछ कम होती है ।

बंदरों के विषय में यह मान्यता है कि ये पूर्णरूप से शाकाहारी होते हैं उचित नहीं है क्योंकि ये कीट तथा छोटे जीव-जंतुओं का भी भक्षण कर जाते हैं । झुंड की महत्त्वपूर्ण और जटिल सामाजिक व्यवस्था बंदर को अपने पर्यावरण, खतरों से सुरक्षा, निवास स्थान, भोजन और जाति की निरंतरता आदि के संबंध में महत्त्वपूर्ण लाभ प्रदान करती है । झुंड का नेतृत्व करनेवाले अपनी सीधी और स्थिर पूंछ के कारण अलग ही पहचानने में आ जाते हैं ।

आधुनिक चिकित्सा इतिहास में शोध के क्षेत्र में गैर मानव पर वानर समुदाय के सदस्य अति महत्त्वपूर्ण हो रहे हैं । बंदर के शारीरिक गुण मानव शरीर से बहुत मिलते हैं । बंदर के साथ तुलनात्मक अध्ययन में आर. एच. तत्व मानव रक्त में लगभग एक जैसे पाये गये । इससे रक्त स्थानांतरण की नयी तकनीक सामने आयी है जो उनके जीवन की रक्षा में सहायक हो सकी है । अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी बंदर का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । १९४९ में एक बंदर को राकेट के जरिए अंतरिक्ष में पहुंचाया गया जो अंतरिक्ष में रहने वाला धरती का प्रथम जीव रहा । पर मानव का निकट संबंधी होने के कारण ही आज इसका जीवन मुसीबत में पड़ गया है ।

लुप्त नहीं हुआ है जावा का गैंडा

यह आशंका थी कि वियतनाम युद्ध के कारण वहां के गैंडे नष्ट हो गये हैं । पर हाल ही में वहां लुप्त प्राय हो चुका जावा का गैंडा १५ वर्ष बाद दिखायी दिया । उक्त जानकारी अंतरराष्ट्रीय वन्यजीवन संरक्षण द्वारा दी गयी है । गैंडा वियतनाम में १९७३ से नहीं दिखायी दिया था । युद्ध के दौरान और बमों के धमाकों के बीच गैंडे के विलुप्त होने का अंदेशा था । इसे १९८८ में उस समय पुनः खोजा गया जब एक आदिवासी शिकारी ने हो ची मिन्ह शहर के दक्षिण-पूर्व में एक युवा मादा गैंडे को मार गिराया था और उसे बेचने का प्रयास किया था । वाइल्ड लाइफ कनजरवेशन इंटरनेशनल के सायंस डायरेक्टर श्री जार्ज शेलर ने इस क्षेत्र में सर्वे किया था । उनके अनुसार इस क्षेत्र में कोई दस-पंद्रह गैंडे जीवित बचे हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र जटिल सामाजिक व्यवस्था
ण, खतरों से सुरक्षा, निवास
ति की निरंतरता आदि के
भ प्रदान करती है। शुंड का
ी सीधी और स्थिर पूंछ के
ानने में आ जाते हैं।
ा इतिहास में शोध के क्षेत्र
मुदाय के सदस्य अति
बंदर के शारीरिक गुण भ
हैं। बंदर के साथ
आर. एच. तत्व मानव
ये गये। इससे रक्त
कनीक सामने आयी है
क्षा में सहायक हो सकी है।
बंदर का महत्त्वपूर्ण योगदा
बंदर को राकेट के जरि
या जो अंतरिक्ष में रहने
हा। पर मानव का निरंत
ही आज इसका जीवन
।

ा

गये हैं। पर हाल ही
उक्त जानकारी
७३ से नहीं दिखायी
होने का अंदेशा था।
ने हो ची मिन्ह शहर
का प्रयास किया
ार्ज शेलर ने इस क्षेत्र
बचे हैं।

कादम्बिनी

१९९०

नहीं देतीं बड़ी-बड़ी आंखें

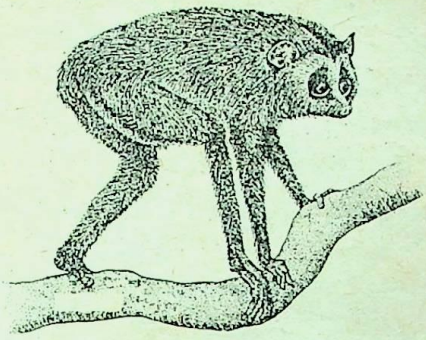

दिनों जब इन समुद्री यात्री अनदेखे भूखंड
खोज के उपरांत वापस लौट रहे थे तो पूर्वी
के जंगलों से विजातीय वनस्पति और
को अपने साथ लेते गये। इनमें से एक
सबसे अलग दिखने वाला था, जिसे देखकर
लिन भी थे और प्रसन्न भी। यह और कोई
लोरिस था। ऐसा माना जाता है कि
शब्द इस भाषा से लिया गया है, जिसका
अर्थ है 'मसखरा'। भारत में लोरिस परिवार
और स्लेंडर लोरिस नामक दो प्रजातियां
करती हैं।

लोरिस दक्षिणी भारत और श्रीलंका के
उष्णकटिबंधीय वनों में पाया जाता है। लोरिस
की प्रकृतिय प्रवृति के होते हैं और फिर भी इन्होंने
को केवल वृक्षों तक ही सीमित नहीं रखा
एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर जाते समय या
क्षों में भ्रमण करते समय भूमि पर उतरते
वृक्ष की शाखा के ऊपर और नीचे दोनों ही
लोरिस के लिए अनुकूल हैं और एक
ये घंटों लटके रह सकते हैं। वानर
के अन्य प्राणियों की अपेक्षा इनकी
या रीढ़ की हड्डी अधिक लंबी होती है,
प्रकृति के लिए आवश्यक नमनीयता
धिक मात्रा में अतिरिक्त रूप से उपलब्ध
है।

लंबे पैर लंबे होते हैं। सिर गोलाकार होता है
छोटी-नोकीली थूथन का अंतिम सिरा सफेद रंग
होता है। बालों से ढके इसके कान न अधिक
होते हैं और न ही अधिक छोटे और पूंछ तो
नाममात्र की पायी जाती है। इस छोटे
प्राणी का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण
इसकी बड़ी-बड़ी चमकदार या भूरी
वाली आंखें हैं। जिस प्रकार मनुष्य में
आंखें चेहरे पर सामने की ओर होती हैं उसी प्रकार इसकी आंखें भी सामने की ओर होती हैं, जिन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह हमेशा चौंका-चौंका सा रहने वाला प्राणी है।

स्लेंडर लोरिस नर वानर गण का सदस्य है। स्वभाव से निशाचरी स्लेंडर लोरिस दिन में विश्राम करता है। धुंधलका छाते ही यह एक हाथ के बाद दूसरा हाथ शाखाओं पर जमाते हुए धीरे-धीरे सक्रिय होने लगता है। लोरिस अपनी आलसी प्रवृति के विपरीत अपने शिकार तक बगैर आवाज किये पहुंच सकता है और उस पर तीव्रता से आक्रमण कर सकता है। स्लेंडर लोरिस उल्लू के समान चीख भी सकता है और कट-कट की ध्वनि भी निकाल सकता है। यह अपने क्षेत्र का सीमांकन स्व-मूत्र को हथेलियों या तलवों से रगड़कर करता है। घसीट-चिह्न भी इसे पूर्व पहचान में सहायक होते ही हैं। यह एकांतप्रिय प्राणी है और शांतिपूर्वक बगैर किसी को नुकसान पहुंचाये जंगल में रहता है। किंतु इसकी बड़ी-बड़ी और खूबसूरत आंखें ही इसकी दुश्मन बन गयी हैं। इस कारण काफी समय से इसे अधिक से अधिक संख्या में पकड़ा गया है और इसकी हत्या की गयी है। इसके पीछे यह भ्रामक धारणा रही है कि इसकी आंखें नेत्र उपचार में अचूक औषधि का काम करती हैं। इसी प्रकार के अंध विश्वासों ने स्लेंडर लोरिस के जीवन को खतरे में डाल दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो लाख में बौना

● हबीब खान

दुनिया के सबसे छोटे कद वाले इनसान के रूप में अब गुल मोहम्मद का नाम चर्चित होने लगा है। 'गिनीस बुक' में दर्ज सबसे अधिक बौने व्यक्ति का नाम नेलसन डी.ला. रोजा है, जिसका क़द २८.३ इंच है— जबकि गुल मोहम्मद का कद उससे भी ३ इंच कम है, मात्र २५ इंच और वजन १५ किलो। उम्र है ३३ वर्ष।

दिल्ली निवासी गुल मोहम्मद की खबर जब अखबारों में छपी तो हताशा और गुमनामी की जिंदगी बसर करनेवाले इस बौने की कद्र दुनिया में बढ़ गयी। १९८८ के अगस्त माह से ही वह अखबारों में लगातार चर्चा का विषय बना हुआ है। अमरीका, इंगलैंड, पाकिस्तान आदि देशों के अखबारों में उसके विषय में लिखा तो गया ही, वहां के दूरदर्शनों पर भी उसकी फिल्में दिखलायी गयीं। 'नेशनल इंक्वायर' (फ्लोरिडा, अमरीका) ने उसके पास १५० डॉलर का एक चेक भेजा और गुलमोहम्मद को 'शार्टेस्ट मैन ऑव द वर्ल्ड' कहकर सम्मानित किया। इसी तरहइंगलैंडसे बी.बी.सी. वालों ने भी चेक भेजकर उसका सम्मान किया। दिल्ली दूरदर्शन पर भी ३१ दिसम्बर '८८ की रात्रि को 'हंगामे' के अंतर्गत उसकी फिल्म दिखलायी जा चुकी है।

गुमनामी की जिंदगी से राहत

दो वर्ष पूर्व तक गुल मोहम्मद गरीबी के अंधेरे में गुमनामी की जिंदगी जी रहा था। भला हो उन अखबारनवीसों का जिन्होंने उसे 'हाईलाइट' तो किया ही और साथ-साथ उसे धन भी दिलवाया। उसी धन से उसने अभी बीते वर्ष अपनी एक सौतेली बहन के हाथ पीले किये और अभी एक और छोटी सौतेली बहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उसे शादी करनी है । परिवार के खर्च चलाने के लिए एक कोई ढंग का रोजगार खड़ा करना है । मां, भाई, सौतेले पिता व खुद के रहने के लिए एक घर भी बनाना है । और उसकी यह भी तमन्ना है कि आम आदमियों की तरह विवाह कर अपना घर भी बसाये । उसके लिए ये काम अब मुश्किल नहीं होंगे ।

छोटे-छोटे हाथ-पैरों वाले गुल मोहम्मद के सिर और पेट बड़े नजर आते हैं । पेट बड़ा होने के कारण आज से कुछ वर्षों पहले वह चल-फिर भी नहीं सकता था । डॉक्टर के सुझाव पर कई वर्षों से वह केवल दो रोटियां और हरी सब्जी ही खाता है । दिन चाय और बिस्कुट पर व्यतीत करता है और एक बंडल बीड़ियां दो दिनों में फूंक डालता है । वह अपने डेढ़ बित्ते के हाथों से खुद नहा-धो भी नहीं सकता । इन कामों के लिए हमेशा उसे एक व्यक्ति की जरूरत पड़ती है जो उसे नहला-धुलाकर कपड़े पहनाता है और उसके अन्य कामों में मदद पहुंचाता है । गुल मोहम्मद पढ़ना-लिखना नहीं जानता ।

गुल मोहम्मद का एक जुड़वा भाई भी पैदा हुआ था जो जन्म लेने के कुछ ही देर बाद मर गया था । उसका अपना एक छोटा सगा भाई भी है, जो बालिग है । वह कपड़ों पर कढ़ाई का काम करता है । उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है । उसकी मां ने दूसरी शादी कर ली है और वह खुरेजी में रहती है । उसका सौतेला बाप रिक्शा खींचने का काम करता है । वह अपने मामा के घर पर बल्ली मारान (दिल्ली) में रहता है । वे ही उसकी देख-रेख और परवरिश करते हैं ।

एक बार उसके मामा ने उसे मिठाई की दुकान कर दी थी ताकि उसका मन उसमें लगा रहे और कुछ आमदनी भी होती रहे । लेकिन वह दुकान चला नहीं सका । रोज दो-चार लड़के उसकी दुकान से मिठाई चुराकर भाग जाया करते और गुल मोहम्मद उन्हें दौड़कर पकड़ नहीं पाता । दुकान में काफी घाटा हुआ । फलतः उठा लेनी पड़ी । उसके बाद उसने मामा के घर पर ही चाकलेट और बिस्कुट की दुकान बरामदे पर लगायी, लेकिन दिनभर की बिक्री से मात्र तीन-चार रुपये का ही फायदा होता था । इससे गुल मोहम्मद का खर्चा चलना भी मुश्किल होता था । अतः खीज कर उसने यह काम भी बंद कर दिया ।

अभी पिछले वर्ष जब अखबारों में गुल मोहम्मद की चर्चा जोरों से हुई थी तो फिल्म के निर्देशक-निर्माता श्री ओ.पी. रल्हन का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हुआ था और उन्होंने

गुल मोहम्मद : जिसे 'दुनिया के सबसे छोटे इनसान' का खिताब दिया गया है । अखबारों में प्रचार के कारण गुल मोहम्मद को गुमनामी की जिंदगी से राहत तो मिल चुकी है, पर उसे शिकायत है कि तैंतीस वर्ष का हो जाने के बाद भी उसे मताधिकार क्यों नहीं मिल रहा है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मों में काम करने का न्योता देकर उसे बंबई बुलाया था । अपने मामा के साथ तब वह बंबई भी गया था, मगर संयोगवश रल्हन साहब से उसकी भेंट नहीं हो पायी और वह वहां चार-पांच दिन रुककर फिर दिल्ली लौट आया । अब बुलावा आने पर ही वह पुनः बंबई जाएगा ।

इससे पहले एक सर्कस में काम करने का भी उसे मौका मिला था और सर्कसवालों ने उसके घरवालों को दो लाख रुपये देकर खरीदना चाहा था । मगर घरवाले इनकार कर गये थे कि सर्कस में उसकी देखभाल चौबीसों घंटे आखिर कौन करेगा ? साथ ही गुल मोहम्मद अपने मामा-मामी का घर छोड़ने के लिए राजी नहीं हुआ ।

हर शुक्रवार को नमाज

गुल की टांगे इतनी छोटी हैं कि शरीर का वजन भी ज्यादा देर तक संभाल नहीं पातीं । किसी तरह मटक-मटककर चल तो वह सकता है, मगर भाग-दौड़ उससे बिलकुल नहीं हो पाती । कुछ दूर चलने के बाद ही वह थक जाता है, तो मामा या मामी उसे गोद में उठा लेते हैं । हर शुक्रवार को उसके मामा नमाज अदा करवाने के लिए उसे मसजिद ले जाते हैं जहां वह दुनिया में अमन-चैन कायम करने और लोगों की सुख-समृद्धि के लिए अल्लाह से याचना करता है ।

मताधिकार का अधिकार क्यों नहीं

उसे सरकार से इस बात की शिकायत है कि उसके छोटे भाई को तो वोट देने का अधिकार मिल गया, मगर उम्र में उससे काफी बड़ा होने के बावजूद उसे वोट देने का अधिकार क्यों नहीं दिया जाता जबकि उसकी उम्र ३३ वर्ष हो चुकी है । भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी से वह हाथ मिला चुका है । अब वह वर्तमान प्रधान मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह से भी हाथ मिलाना और उनसे अपनी फरियाद करना चाहता है ।

उसके घरवालों ने बताया कि गुल मोहम्मद का नाम-यश ज्यों-ज्यों बढ़ रहा है, उसके स्वभाव में भी कुछ-कुछ परिवर्तन आने लगा है । अब वह अपने घरवालों पर भी जोर डालने लगा है कि वे उसे केवल 'गुल या गुल मोहम्मद कहकर न पुकारें, बल्कि गुल मोहम्मद साहब कहकर संबोधित करें । आखिर क्यों न हो वह दुनिया में सबसे छोटे कद का बौना इनसान जो है ? आखिर वह भी तो एक हस्ती है ।

—३८७ हौज काजी दिल्ली-६

"तुम पचास रुपये वाली साड़ी खरीदकर लायी हो, इसके लिए तुम्हें शर्म आनी चाहिए ।"

"हां, मुझे शर्म तो आयी थी," पत्नी ने कहा, "लेकिन क्योंकि, इससे ज्यादा खर्च बरदाश्त करने की तुम्हारी हैसियत नहीं थी, इसलिए पचास रुपये वाली साड़ी ही मुझे लेनी पड़ी ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचिवालय में सनसनी-सी व्याप्त थी । मुख्यमंत्री ने एक निजी पत्र मुख्य सचिव को लिखा था, जिसका आशय यह था कि राज्य के सभी विभागों के प्रमुखों को, कलेक्टरों और कमिश्नरों को भी यह कठोर हिदायत दी जाए कि वे मुख्यमंत्री के परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों, मित्रों को नियम-निर्देश के विपरीत किसी भी

दूसरा हरिशचंद्र

● श्रीकांत चौधरी

प्रकार का लाभ या रियायत नहीं देंगे, न उनके प्रभाव या दबाव में काम करेंगे ।

मुख्य सचिव और विभागों के सभी हेड चकित स्तब्ध, परेशान-से थे । कुछ को तो शक था कि मुख्यमंत्री का दिमाग सही नहीं है, कुछ की राय तो ये थी कि ऐसे आदमी को मुख्यमंत्री के आसन की बजाय हिमालय की गुफाएं ठीक हैं ।

कुछ ने मुक्तकंठ से इस आदेश की प्रशंसा की और हरिश्चंद्र का दूसरा अवतार माना ।

कुछ दिनों बाद की घटना है....

मुख्यमंत्री के चेंबर में फायनेंस सेक्रेटरी लज्जित भाव से खड़े थे ।

"आपको मालूम है कि ये मेरे समधी के सगे भाई हैं ?"

"जी सर"

"आपको मेरे पी.ए. ने फोन भी कर दिया था ?"

"जी सर"

"मेरा लड़का विजयसिंह इनको लेकर आपके पास मिलाने गया था ?"

"जी सर"

"फिर भी आपने इनकी 'इंटरनेशनल वेलफेयर स्कीम' पर चार-पांच आब्जेक्शन लगा दिये ?"

"सर, दरअसल शासन के रूल्स रेग्यूलेशन के मुताबिक इनकी स्कीम और आवेदनों में बहुत-सी खामियां हैं, कुछ कानूनों का पालन सर, जरूरी है । आखिर पचास लाख का मामला है सर ।"

"तो नियम कानून मेरे रिश्तेदारों से भी बड़े हैं ? शासन मैं करता हूं कि आप ?" तमतमाकर मुख्यमंत्री ने कहा ।

"नहीं सर, आप ही बड़े हैं मैं तो ये निवेदन कर रहा था कि आपने पिछले महीने चीफ सेक्रेटरी साब को लिखा कि आपके किसी रिश्तेदार, परिवार के सदस्यों को कोई रियायत न दी जाए ।" दीनहीन आवाज में सेक्रेटरी ने कहा ।

"हद हो गयी, आपको, प्रैक्टीकल नालेज बिलकुल भी नहीं है । किसने सेक्रेटरी बना दिया आपको । ये सब तो पब्लिक इमेज के लिए करना पड़ता है । आपने इसको सीरियसली ले लिया ।"

"सॉरी सर ।" क्षमायाचना के स्वर में सेक्रेटरी ने कहा । वह अकड़ भी सकता था, मगर उसे फायनेंस सेक्रेटरी के पद पर बने रहना था । मगर विधि का लिखा को मेटनहारा ।

अपराध अक्षम्य था । सेक्रेटरी को मुर्गीपालन केंद्र का संचालक बनाकर राज्य के आदिवासी क्षेत्र में भेज दिया गया था ।

—सिविल जज एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट
कवर्धा-४९१-९९५, जिला- राजनांदगांव (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

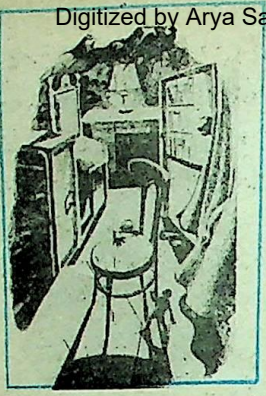

सोवियत संघ में राष्ट्रपति गोर्बाचोव की उदार नीतियों के फलस्वरूप अब भूत-प्रेतों के उत्पात की खबरें प्रमुखता से सामने आ रही हैं। वैज्ञानिक भूत-प्रेतों के रहस्य को समझने की कोशिश कर रहे हैं।

एक साधारण फ्लैट में अचानक एक दिन एक अलमारी अपने आप हिलने लगी। प्लेटें, प्याले और दूसरी चीजें हवा में तैरती नजर आने लगीं। अजीब-अजीब आवाजें आने लगीं। जो लोग वहां मौजूद नहीं थे वे बोलते हुए सुनायी देने लगे। नल से अपने आप पानी बहने लगा। यहां तक कि छत से पानी का फव्वारा छूटा और वहां रहनेवालों के सिर पर गिरने लगा...।

कुछ ऐसी ही घटनाओं का समाचार

भूत-प्रेतों का आतंक

सोवियत अखबारों में हाल ही में छपा था। टी.वी. पर मास्को के एक छात्रावास की ऐसी ही विचित्र घटनाओं पर एक लंबा कार्यक्रम पेश किया गया। जो लोग इस तरह की बातों में दिलचस्पी लेते हैं वे इसे भूत-प्रेत का मामला बताते हैं। इस विषय में जो अनेक धारणाएं प्रचलित हैं तथा जो स्पष्टीकरण दिये जाते हैं उनकी चर्चा यहां कर रहे हैं।

विचारणीय प्रश्न

जनसंचार माध्यम भूत-प्रेतों के समाचार बराबर दे रहे हैं और उन घटनाओं का विश्लेषण कर के उन्हें समझने की कोशिश में हैं। जानकार लोगों का कहना है कि इस किस्म की हरकतें बढ़ती जा रही हैं। पर ऐसा क्यों ?

एक मनोरोग चिकित्सक और सम्मोहन विद्या के ज्ञाता का कहना है : "भूत-प्रेत का मामला बड़ा ही दिलचस्प है। इस सदी के आरंभ से ही विभिन्न देशों में वहां के सुप्रसिद्ध विद्वानों ने इनका उल्लेख किया है। प्रश्न यह है कि इस तरह के मामलों पर किस सीमा तक विश्वास किया जा सकता है ? इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है। फिर जब लोग काला जादू, सम्मोहन, अदृश्य मानव, प्रेत पूजा और तरह-तरह के रीति रिवाजों की चर्चा करने लगे तो किसी नतीजे पर पहुंचना भी उतना ही कठिन है। इस सिलसिले में अकसर लोग गलत शब्दावलि का प्रयोग करते हैं और उन्हें विषय

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ठीक-ठीक ज्ञान भी नहीं होता है । प्रचलित धारणाओं में बहुत कम ऐसी हैं जिनका कोई वैज्ञानिक आधार हो ।

"स्पष्टतः इसका एक कारण यह है कि एक लंबे अर्से तक समाचारपत्र इस तरह के विषयों की चर्चा नहीं कर सकते थे । साथ ही ऐसा सुयोग भी नहीं मिल सका कि विधिवत् वैज्ञानिक जांच की जा सके । जो लोग यह सब करने के फेर में पड़ते थे उन्हें न जाने क्या-क्या भोगना पड़ता था । आज ग्लासनोस्त के जमाने में हम अलौकिक बातों के बारे में लिख सकते हैं और हमें लिखना चाहिए ।"

चंद बयान

प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि भूत-प्रेत बड़े विचित्र ढंग से प्रकट होते हैं । चीजें अपने आप उछलने लगती हैं । जगह-जगह आग लग जाती है, पानी निकलने लगता है, पर सदा उस समय जब कि वहां मौजूद लोगों का ध्यान कहीं और हो । अभी तक किसी ने भी ऐसी प्रेत-बाधा को शुरू होते नहीं देखा है । यह भी है कि अभी तक भूत-प्रेत घरों में प्रगट होते रहे हैं, ऐसा नहीं सुना गया है कि वे कार्यालय, कारखाने या किसी ऐसी ही इमारत में दिखायी दिये हों ।

ऐसी घटनाएं हुई हैं कि भूत-प्रेत का संबंध किसी एक व्यक्ति से हो और जब वह व्यक्ति कहीं अन्यत्र जा बसा हो तो वहां भी भूत प्रगट हुआ ।

ऐसा तो सुना गया है कि भूत मनुष्यों से संपर्क करते हैं पर अधिकतर वे इनसानों, उनकी इच्छाओं— आकांक्षाओं से बेखबर विचरण करते रहते हैं ।

कुछ करना होगा

इस विषय में विशेषज्ञों में मतभेद भी है । एक सज्जन से हमारी बात हुई तो उन्होंने कहा कि इस समय भूत-प्रेतों के बारे में बीस के लगभग धारणाएं हैं जिसका अर्थ है कि इस सारे कार्य-व्यापार का सही कारण विज्ञान की पहुंच से अभी दूर है ।

पर भूत-प्रेत प्रगट होते ही रहते हैं । हाल ही में एक प्रेत मास्को के एक मकान में प्रगट हुआ और उसकी हरकतें आज भी जारी हैं । दीवार घड़ी की सुइयां मनमाने ढंग से घूमने लगती हैं, फर्श पर जगह-जगह पानी इकट्ठा हो जाता है, चीजें कहीं की कहीं पहुंच जाती हैं । यह सब विशेषज्ञों की तेज नजर और भांति-भांति के उपकरणों की मौजूदगी में होता रहा है ।

यह सोचना बुद्धिमानी की बात नहीं होगी कि इस सारे मामले का रहस्य जल्दी ही खुल जाएगा । इसलिए बेहतर यही है कि इस पर विचार जारी रखा जाए । पर ये भूत-प्रेत वैज्ञानिक शोध का विषय होने के साथ ही घरों में परेशानी भी पैदा कर रहे हैं । अगर किसी फ्लैट में उसके साबुन, टूथपेस्ट, तौलिये वगैरा ने यह ठान लिया हो कि वे रह-रह कर शौचालय की नाली में गायब हो जाएंगे तो यह कोई बड़ी सुखद बात नहीं है । इस तरह की घटना एक सज्जन के साथ घट चुकी है । या फिर किसी के फ्लैट के पर्दों, बिजली के तारों और कपड़ों से अचानक लपटें निकलने लगें । या रसोई के बर्तन हवा में उड़ने लगे और घर की मालकिन के सिर पर गिरने लगें तो ? ये सभी बातें विचारणीय हैं तथा इस विषय में अनुभवों का आदान-प्रदान होना चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी के मानकीकरण में गजलिया काव्य-शैली का योगदान

● सी. एस. 'नाज' मानिकपुरी

कोई बोली, भाषा उस समय कहलाती है जब उसमें काव्य-रचना होने लगती है और काव्य साहित्य का ऐसा भंडार सामने आ जाता है जो हर दृष्टि से उच्च कोटि का होता है। किसी नयी भाषा के सृजन में जो पहल करते हैं, वे देश के अनपढ़ गंवार होते हैं। ये अपनी बोली में तुकबंदी करना प्रारंभ कर देते हैं फिर उस बोली को धीरे-धीरे इस योग्य बना देते हैं कि पढ़े-लिखे लोगों का झुकाव भी उसकी ओर हो जाता है और वह बोली, बोली से भाषा बन जाती है।

अतीत में हिंदी किसी भाषा का नाम नहीं था, वरन् यह वह नाम था जो भारतवर्ष की हर उस स्थानीय बोली के लिए प्रयोग होता था जो आर्य परंपरा से जुड़ी हो अर्थात् संस्कृत की बिगड़ी हुई सूरत हो। समस्त बोलियों के लिए यह नाम उन नवनिवसित मुसलमानों ने दिया था जो आठवीं शताब्दी ईसवी तक यहां आकर बस चुके थे। उस समय से आज तक शब्द, 'हिंदी' इसी अर्थ में प्रयोग होता आ रहा है। जब इनमें से कुछ बोलियां काव्य साहित्य से मालामाल हो गयी और उनमें गद्य की परंपराओं ने भी जड़ पकड़ ली, तो वे बोलियां हिंदी से कटकर अलग भाषाएं बन गयीं जैसे गुजराती, मराठी, सिंधी, पंजाबी और बंगला। जिन बोलियों में गद्य की परंपराएं न आ सकीं, वे बृहत हिंदी का अंग ही रहीं जैसे अवधी, राजस्थानी, ब्रज भाषा और भोजपुरी आदि।

फिर एक ऐसा समय आया कि हिंदी से संबद्ध सारी बोलियों के घोल को मथकर अमृत निकालने की चेष्टा की गयी। यह प्रयास हिंदी के मानकीकरण की प्रक्रिया था। इससे खड़ी बोली का जन्म हुआ जो बीसवीं शताब्दी के आते-आते मानक हिंदी हो गयी। मुसलमान साहित्यकारों ने इस मानक हिंदी को हिंदुई (हिंदुवी) कहा क्योंकि भाषा के मानकीकरण में आदि से अंत तक हिंदी का ही हाथ काम करता रहा है।

कबीर की गजल सबसे पुरानी

उत्तरी भारत में भाषा के इतिहास में हमें जो सबसे पुरानी गजल मिलती है, वह पंद्रहवीं शताब्दी ईसवी की कबीरदास की गजल, "हमन को इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या" है। कबीर के साहित्य में खड़ी बोली की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस गजल का होना आश्चर्यजनक है क्योंकि यह वह युग था जिसमें उस भाषा की कल्पना ही असंभव है जिसे हम मानक हिंदी या उर्दू कहते हैं। कबीर की गजल का निखरापन, साहित्यिक रख-रखाव और सज-धज यह प्रकट करते हैं कि हिंदी में गजल की परंपरा और पहले आ चुकी थी।

नाथ संप्रदाय के साधुओं, प्राणनाथ आदि ने शाहजहां के शासनकाल में या उससे पूर्व खड़ी बोली की गजलिया शैली का सूत्रपात किया था। इनमें कोई भी दिल्ली या उसके निकटवर्ती क्षेत्र का न था। प्राणनाथ गुजराती थे, नामदेव मराठी थे और गोरखनाथ और उनके शिष्य पूर्वी उत्तरप्रदेश के थे। चैतन्य महाप्रभु के बंगला काव्य में भी कहीं-कहीं गजलिया शैली का पुट मिलता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हिंदी के मानकीकरण में खड़ी बोली की गजलिया शैली ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया है और इस प्रक्रिया में संपूर्ण भारत का योगदान था।

हिंदी बनाम देहलवी या रेखता

इस शैली को जबाने देहलवी या रेखता उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में या अठारहवीं शती के अंतिम दशक में उस समय कहा गया जब मुसलमानों का इस ओर झुकाव हुआ, लेकिन फिर भी हिंदू साहित्यकार इसे हिंदी ही कहते रहे और मुसलमानों में भी इसे हिंदी कहना बंद नहीं हुआ।

बीसवीं शताब्दी में इस शैली का नाम उर्दू उस समय मान्य हुआ जब मुसलमान कवि (शायर) हिंदू कवियों की गजलिया शैली को बहिष्कृत करके इस शैली को अपनी तहजीबी जबान (सांस्कृतिक भाषा) बनाने में सफल हो गये। इसका सबसे बड़ा प्रमाण है मौलाना मुहम्मद हुसैन 'आजाद' की पुस्तक 'आबेहयात' जो उर्दू भाषा और साहित्य के इतिहास की पहली पुस्तक है। इस पुस्तक में एक भी नाम हिंदू का नहीं है। एक जगह हाशिये में 'फिदवी' लाहौरी का नाम आ गया है, लेकिन इसलिए नहीं कि वह हिंदू था, वरन् इसलिए कि वह मुसलमान हो गया था।

अठारहवीं शती के पूर्वार्द्ध के मुसलमान और हिंदू शायरों के तुलनात्मक अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वह शैली या भाषा जिसे आज उर्दू कहा जाता है, वह उन हिंदू शायरों की शैली है जिन्हें साहित्य में उर्दू भाषा के इतिहासकारों ने स्थान नहीं दिया !

भाषागत अंतर

मुसलमानों ने जब इस शैली को जबान (भाषा) कर अपनाया, तो उन्होंने हिंदुओं के रंग में शेर कहने (काव्य रचना करने से) परहेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया और उनकी गजलिया शैली को जबाने हिंदुवी कहकर अपनी महफिलों से बाहर कर दिया और अपनी घटिया गजलिया शैली को मान्यता देकर अपनी साहित्यिक दुकान चमकायी। मुसलमानों की उर्दू की गजलिया शायरी और हिंदुओं की हिंदुवी की गजलिया शायरी में एक विशेष अंतर था, वह यह कि हिंदुओं की शैली में फारसी और तुर्की भाषा के शब्दों की भरमार होती थी। मुसलमान शायरों की उर्दू में फारसी और अरबी के मुकाबले में हिंदी और संस्कृत को अधिक मान्यता दी गयी थी।

हिंदुवी शैली का प्राचीन युग: १५७५ ई. से १६६६ ई. तक

उर्दू के साहित्यकार और कवि यह तो मानते हैं कि उर्दू भाषा का जन्म शाहजहां के शासनकाल में हुआ किंतु इस युग में वे उर्दू के किसी ऐसे मुसलमान शायर को ढूंढ़ नहीं सके जिसका संबंध लालकिले से रहा हो। न वे यह भी प्रमाणित कर सके कि शाही दरबार में उर्दू को मान्यता प्राप्त थी।

इस युग में हमें फ़ास्सी के दो ऐसे हिंदू शायर मिलते हैं जिनका संबंध दाराशिकोह से था और जो शाहजहां के भी दरबार के शायर थे। इनमें एक का नाम चंद्रभान 'बरहमन' है और दूसरे का वली राम 'वली'। इन दोनों ने बोलचाल की भाषा में (खड़ी बोली में) भी गजलें कहीं, लेकिन वे उन्हें किले के भीतर ले जाने की कभी भी इजाजत न पा सके, क्योंकि इस भाषा को (फास्सी-अरबी मिश्रित खड़ी बोली को) किले में शाही मर्यादा के खिलाफ समझा जाता था। परिणाम यह हुआ कि यह भाषा किले के बाहर हिंदुओं में हिंदी के नाम से प्रचलित हुई और मुसलमानों ने इसे हिंदुवी कहकर इसका तिरस्कार किया। 'बरहमन' के दो शेर देखिए—

पिया के नाम की सुमिरन किया चाहूं करूं कैसे ?
न तस्बिह है, न सुमिरन है, न कंठी है, न माला है॥

'बरहमन' वास्ते असनान के फिरता है बगिया में
न गंगा है, न जमुना है, न नदी है, न नाला है॥

'बरहमन' और वली राम 'वली' देहलवी से पहले और उनके समकालीन बहुत-से हिंदू नाम मिलते हैं जिनकी हिंदी में यह 'हिंदुवी' झलक है। गुजरात के मशहूर संत कवि प्राणनाथ इसी युग के हैं। इन्होंने अपने आपको हिंदुस्तानी, हिंदुवी और हिंदी का शायर कहा है। इनका मुख्य विषय इसलामी दर्शन है। ये 'कुलजुम स्वरूप' के लेखक हैं जो इनकी कविताओं का संग्रह है। इसकी शैली गजलिया है और इस संग्रह में कुछ गजलें भी हैं।

शाहजहां के युग में हिंदुवी शैली अर्थात् गजलिया शायरी की दागबेल पड़ी थी, वह भी किले के बाहर, इसलिए इसके जन्म के कारण में किसी मुसलमान शायर के होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

मुहम्मद हुसैन 'आजाद' ने इस हिंदुवी शैली को उर्दू कहकर इसे मुसलमानों की तहजीबी जबान साबित करने की कोशिश में 'वली' दक्खिनी को उर्दू शायरी का बाबा आदम कहा है जो केवल इस हद तक सही हो सकता है कि वे पहले शायर नहीं, वरन् पहले मुसलमान शायर हैं। 'वली' दक्खिनी की उर्दू शायरी की शुरुआत १७२२ ई. से है जब दिल्ली आकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ने शायरी का नया रंग अपनाया था। १७५० ईसवी तक की मुसलमानों की उर्दू ...री के नमूने देखिए—

...से नैन जब मिलाय गया
...के अंदर मेरे समाय गया ।।
...गर्म से मेरे दिल में
...नयन आग-सी लगाय गया ।।
...कांटी मेरे दिल की तेरी अंखियों ने
...पलक नहिं ये कतरनी है मगर चोरों की ।।
...शीरीं पै श्रीजन के नहीं खत्ते सियाह
...छूटी है मिठाई पै शकर खोरों की ।।

—'आबरू'

...सुना मोती ने तुझ दन्यां के मोती का बहा
...में शर्मिंदगी सूं डूब जूं पानी बहा ।
...कीमत

—'हातिम'

...आ गया है उसके, मेरी है सफेद रेश
...है अब तक तलक भी वो मिलने
...सुबह ।।
...आ गया है=चेहरे पर बाल उग आये हैं

—'मजमून'

...सारे शेर उर्दू साहित्य के इतिहास की हर ...में मिलते हैं। अब जरा इस समय तक ...हिंदू शायरों के शेर देखिए जिनकी कहीं चर्चा ...नहीं होती:

...जवानी हो, नशा हो, सरे जू हो
...हो पै जानां मेरे आगोश में तू हो ।
...जिंदगी का लुत्फ तब ऐ खिज्र खुश औकात
...हाथ में सागर हो, सुराही हो सुबू हो ।।
...को कहा देख के कब शोख ने
...दू हो, फिलनार हो, काफूर हो, छू हो ।।
...हुआ, खराब हुआ, दरबदर हुआ,
...आशिकी के पंथ में जिसका गुजर हुआ ।।
...मुझे न मारो कातिल का मुंह दिखाओ
...क्या करेगा, जल्लाद को बुलाओ ।।

—आफताब राय 'रुसवा'

नाजे बेजा न लुत्फे बे मौका
दिलबरों की अदा है क्या-क्या कुछ ।।
नहीं मालूम क्या निस्बत है शैख इस आफरीनिश में
हमें ऐसा खराबाती किया, तुझ को मुनाजाती ।।

—टेक चंद 'बहार'

यह न जानो कि मेरे आंख से आंसू टपका
निश्तरे इश्क लगा जिससे ये लोहू टपका ।।
'बरहमन' इश्के बुतां की हुई लज्जत मालूम
पक्के फोड़े की तरह जब दिले बदखू टपका ।।

—'बरहमन'

मुहब्बत की भी कुछ होती हैं क्या ऐ हमनशीं राहें ?
कि खूबां यूं हमें दुख दें, हम उनको इस तरह चाहें ।।
इधर नाला किया हमने उधर वह मुजतरिक होकर चला आया
अजब दिन थे कि जिन रोजों में रखती थीं असर आहें ।।
अपने मजहब में है इक शर्त तरीके अखलास
कुछ गरज कुफ्र से रखते हैं, न इस्लाम से हम ।।
गोकि कुछ लुत्फ के काबिल दिले रंजूर नहीं,
पर तेरी बंदानवाजी से ये कुछ दूर नहीं ।।

—सेवक राय 'बेताब'

कभी तो मेहरबां हो हम पै ऐ बुत कि आखिर हम भी हैं बंदे खुदा के ।
जूं नगीं रख तू मुझको सीना फिगार कि तेरा इमसें नाम होता है ।।

—मन्ना सिंह 'आशना'

फूल पर नर्गिस के गोया दनए शबनम नहीं
आशिकों के हाल पर आंसू बहाती है बहार ।।

—रायआनंद राम 'मुखलिस'

तूने हमारे दिल को सताया तमाम उम्र
करता कोई किसी से है इतनी बुराइयां ।।

—सीता राम 'उम्दा'

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध के इन मुसलमान और हिंदू शायरों के तुलनात्मक अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैली या भाषा जिसे आज उर्दू कहा जाता है, वह प्रथम युग के उन मुसलमान कवियों की शैली अथवा भाषा का विकसित रूप नहीं है, वरन उन हिंदू शायरों की शैली है जिन्हें साहित्य में उर्दू भाषा के इतिहासकारों ने स्थान नहीं दिया और जिनकी भाषा का हिंदुवी कहकर तिरस्कार किया। प्रथम युग के इन हिंदू शायरों ने गजलिया शायरी में अपना रंग कायम रखने के लिए नयी राहें तलाश कीं और लकीर के फकीर नहीं हुए। नये-नये प्रयोग उनकी मौलिकता के द्योतक हैं जो मुसलमानों की घिसी-पिटी लीक से भिन्न थे। मुसलमानों के यहां इसका अभाव था कि वे क्या कहें अर्थात् उनके पास विषय नहीं थे जिस पर वे शेर कहते। उनके नजदीक तुक पर तुक बैठाना ही शायरी थी।

हिंदी-संस्कृत या फारसी-अरबी

एक बात आश्चर्य की यह भी है कि मुसलमान हिंदी और संस्कृत के शब्दों का प्रयोग अधिकता से करते थे, हिंदू नहीं करते थे और फारसी और अरबी के शब्दों का प्रयोग तो हिंदुओं की तुलना में उन्हें आता ही नहीं था। यह बात हिंदी और उर्दू के गद्य के इतिहास के अध्ययन से और भी स्पष्ट हो जाती है। उस युग में इन मुसलमान शायरों के पास गद्य की कोई भी भाषा नहीं थी। वे अपनी पुस्तकों में प्राक्कथन आदि फारसी में लिखते थे। इस युग में यदाकदा वहाबियों और दक्खिनी कवियों के गद्य के कुछ नमूने अवश्य मिल जाते हैं जिनकी भाषा ऐसी नहीं है जिसे वर्तमान उर्दू का प्रारंभिक रूप माना जा सके, वरन् ऐसी है जो वर्तमान हिंदी का प्रारंभिक रूप मालूम होती है। इसके विपरीत हिंदी गद्य के इतिहास में जो नमूने हमें मिलते हैं, वे शत-प्रतिशत आज की उर्दू-जैसे हैं। इस सच्चाई से लोगों (हिंदू-मुसलमान दोनों) के दिलों का चोर पकड़ा जाता है कि जो कुछ हिंदू देवनागरी लिपि में लिखें वह हिंदी है और उर्दू लिपि में लिखें, वह हिंदुवी है, भले वह आज की उर्दू-जैसी हो और जो कुछ मुसलमान उर्दू लिपि में लिखें वह उर्दू है, भले ही वह आज की हिंदी-जैसी हो।

बाबाये उर्दू मौलवी अब्दुल हक कहते हैं—

"शेरो अदब (कविता और साहित्य) का कोई शोबार (विभाग) ऐसा नहीं है जिसमें हिंदुओं के जहने रसा (दूर तक पहुंचनेवाली बुद्धि) और फिक्रे बुलंद (उच्च विचारों) ने मोजजे (चमत्कार) न दिखाये हों। बाज शोबों के तो पेशवा (अगुआ) भी यही हुए हैं। कोई दौर ऐसा नहीं गुजरा जिसमें हिंदू बुलंद पाया (उच्चकोटि के) शायर और इंशा परदाज (लेखक) न हुए हों।"

पाकिस्तान के साहित्यकार 'मखमूर' अकबराबादी तो यहां तक कहते हैं कि "उर्दू हिंदुओं की जबान है। इसे जिंदा रखने या खत्म करने का हक सिर्फ हिंदुओं को है।" इसमें इतना और जोड़ दीजिए कि हिंदी मुसलमानों की भाषा है जिससे उन्नीसवीं शताब्दी में मुसलमानों ने मुंह फेर लिया और हिंदुओं से उर्दू को छीनकर उसे अपना बनाने की चेष्टा की।

—३३ मियांपुर, जौनपुर
(उ. प्र.)-२२२००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज शरद पूर्णिमा थी— चंद्र के राज्याभिषेक की रात । लेकिन इस वीरान इलाके के टुइयां-से गांव में किसी ने इसका उत्सव नहीं मनाया । न भजन-मंडली, न गीत, न संगीत । मैं अकेला ही चांदनी में नहाता रहा ।

मां नर्मदे, दीप जलाना भला !

● अमृतलाल वेगड़

...रे मंदिरों की तरह हमारी नदियां भी ...र्धमुख हैं । बड़ी नदियों में एक नर्मदा ...जो पश्चिम-वाहिनी है । अमरकंटक से ...लकर, कर्क-रेखा के प्रायः साथ-साथ, ...ल की ओर चल देती है । ज्यों-ज्यों आगे ...ती है, मानो पानी के भार से नीचे की ओर ...लती है । फिर भी, मोटे तौर पर वह सीधे ...र की ओर बहती है ।

...किंतु इसमें एक अपवाद है । अमरकंटक से ...र के बाद, डिंडौरी से सीधे जबलपुर आने ...बाय, वह दक्षिण की ओर एक बड़ा लपेटा ...ती है । इसी अर्द्ध-चंद्राकार के मध्य में है ...ला । मंडला मानो नर्मदा के कान-कुंडल में ...है ।

...ात भोर वेला मंडला से निकल पड़े । रात ...में बितायी । दूसरे दिन दोपहर को कछारी ...है । नर्मदा की ऊंची कगार पर कृषक ...न्नी बैठे थे । रास्ता पूछने हम उनकी ओर ...ी स्त्री ने हांक लगायी, "जूते उतारकर ...ओ, महाराज !"

हमने चप्पलें उतार लीं । उनके पास जाकर बैठे । हमारी यात्रा के बारे में जानकर बहुत खुश हुए । दोनों ने कहा, "आज यहीं रुक जाइए ।" मैंने कहा, "दीवाली तक हमें अमरकंटक पहुंचना है । जितना आगे बढ़ जाएं, उतना ही अच्छा ।" पति ने कहा, "तब आप बकछेरा में रुकिए । वहां मेरा साढ़ू भाई रहता है । नाम है मनसुख । उसी के यहां ठहरिए । आज दशहरा है । दशहरे का जुलूस देखने मेरी स्त्री मंडला जा रही है, उसी के साथ जाइए । आधी दूर तक आप दोनों का रास्ता एक है । आगे का रास्ता वह बता देगी ।"

घरोबा हो गया तो मैंने स्त्री से पूछा, 'आपने हमें जूते उतारने के लिए क्यों कहा था ?'

'वहां हमारा खलिहान है । खेत-खलिहान लक्ष्मी होते हैं । वहां जूते पहनकर नहीं चलते ।'

.....

बकछेरा पहुंचकर मनसुख को उसके साढ़ू भाई का राम-राम कहा, तो वह चकित रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया । सारी बात बतायी तो उसने खुशी से अपने यहां ठहरा लिया ।

यहां से मोहगांव । यहां सामने से बुढ़नेर नर्मदा में आ मिली है । किनारे पर एक बाबा थे । मैंने उनसे पूछा, 'जब यहां इतनी ठंड पड़ रही है, तो अमरकंटक में पता नहीं कितनी ठंड होगी !'

उन्होंने कहा, ''अमरकंटक तो बद्रीनाथ का टुकड़ा है !''

नर्मदा के किनारे-किनारे आगे बढ़े । कई जगह तो खांडे की धार पर चलने-जैसा था तो कहीं घनी लतर-पतर । समझ में नहीं आता था कि किस लतर को पकड़ें और कहां से ! जैसे-तैसे मानोट पहुंचे । वहां से लिंगा ।

सुबह गांव के बाहर जमीन पर बिछे टेढ़े-मेढ़े धुआंरे फीते को देखकर मैं समझ गया कि यह धुआं नहीं, भाप है । और जहां-जहां यह भाप है, नीचे नर्मदा है । सुबह के धुंधलके में भाप की चादर ओढ़े सोयी नर्मदा बड़ी मोहक लग रही थी । लिंगा घाट में पश्चिम-वाहिनी नर्मदा थोड़ी देर के लिए पूर्व-वाहिनी हो गयी है । इसलिए इसकी धारा को यहां सूरजमुखी धारा कहते हैं । नर्मदा में ऐसे स्थान बहुत कम हैं ।

लिंगा से एक संन्यासी का साथ हो गया । एक चादर और मिट्टी के एक पात्र के अलावा और कुछ नहीं रखते थे । रास्ते में बातें होने लगीं तो कहने लगे, 'अच्छा, यह बताइए, स्वाद किस में है, जीभ में या गुलाब जामुन में ?'

मेरे अनुरोध पर जवाब भी उन्होंने ही दिया, 'यदि गुलाबजामुन में स्वाद है, तो वह तश्तरी में रखे-रखे ही स्वाद देगा और यदि जीभ में स्वाद है, तो फिर गुलाबजामुन खाने की क्या जरूरत ? दरअसल स्वाद न केवल जीभ में है और न केवल गुलाबजामुन में । दोनों के योग में है । इसी प्रकार जीवन को केवल आत्मा या केवल शरीर मानना गलत है । सार्थकता दोनों के मिलन में है ।'

क्या बढ़िया बात कही !

....

रोज सुबह उधर सूरज निकलता, इधर हम निकलते । रास्ते में एक संन्यासी की कुटी पड़ी । वहां बैठे । वे नर्मदा परिक्रमा कर चुके थे । कहने लगे, 'परिक्रमा में तीन साल, तीन महीने, तेरह दिन लगे थे । उन दिनों मैं अन्न नहीं लेता था । कंद-मूल, फल-फूल, या दूध-दही । यह भी मांगता नहीं था । अनायास मिल जाता, तो ही लेता ।'

'यदि न मिला तो ?'

'तो मां का दूध ।'

इस आदमी की श्रद्धा देखकर मैं चकित रह गया । इसके लिए नर्मदा का पानी, पानी नहीं मां का दूध है ।

नर्मदा की खड़ी चट्टान में पगडंडी धागे की तरह पतली हो गयी थी । हम रस्से पर चलनेवाले नट की तरह नपे-तुले कदम रखते हुए आगे बढ़ रहे थे । रास्ते में बरतन के दो फेरीवालों का साथ हो गया । टूटे-फूटे बरतन लेते थे, बदले में गुड़ देते थे ।

शाम को खापा पहुंचे । फेरीवाले आगे निकल गये । संन्यासी पीछे रह गये थे । हम आश्रय की खोज में थे कि एक लुहार ने हमें अपने यहां ठहरा लिया । मैंने भी सोचा, इस ठंड में लुहार के घर से बढ़कर रैनबसेरा भला और क्या हो सकता है ? भट्टी के पास ही सोये । रात को जो भी उठता, कोयले डालकर धौंकनी चला देता ।

सुबह आगे बढ़े । जब दो पगडंडियां आगे तो हम असमंजस में पड़ जाते । सुनसान इलाके में किससे पूछते । डोकरघाट के निकट सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

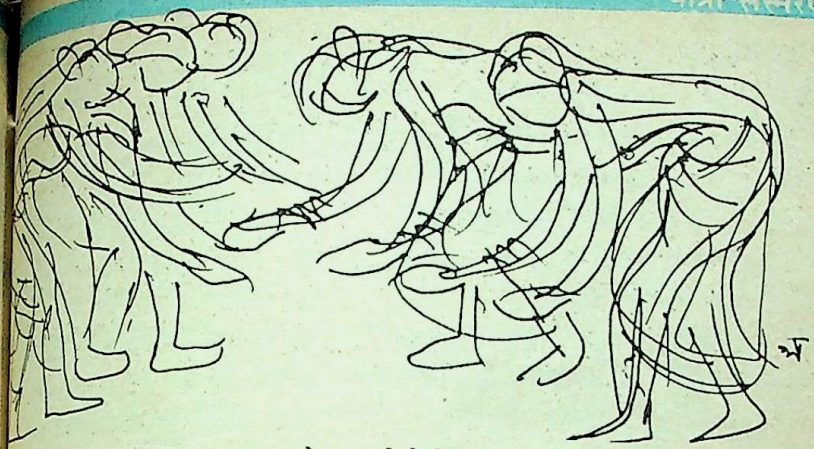

पगडंडी थी, वह अस्पष्ट थी । पहाड़ पर जो
कही थी, वह साफ थी । हम उसी पर चले ।
पर चढ़ते चले गये, पर कहीं कुछ भी
दिखा, तो संदेह हुआ कि कहीं भटक तो
गये । यादवेन्द्र ने कहा, "आप यहां पेड़ के
बैठिए, मैं आगे जाकर पता लगाता हूं ।"
वह उधर गया, इधर मैं स्केच करने में मगन
गया ।

कोई दस-पंद्रह मिनट के बाद गंभीर स्वर
पड़ा । सोचा, दूर बहती नर्मदा का स्वर
। लेकिन स्वर तेज होता गया तो मेरा ध्यान
। सामने तो कुछ नहीं था, पर ज्यों ही ऊपर
, तो मेरे छक्के छूट गये । मेरे सिर पर
मक्खियों का झुंड मंडरा रहा था ! मैं सिर
पर रखकर भागा ।

वह पगडंडी जंगल को जाती थी, इसलिए
नीचे उतरे । कुछ दूर झोपड़ियां दिखायी
थीं । वहां से पगडंडी मिल गयी ।
नदी को पार करके आगे बढ़े । वहां
-तट के भीमकाय अर्जुन वृक्षों को देखकर
रह गये ।

आगे एक बाबाजी की कुटी पड़ी । वहां से
जी का फिर साथ हो गया । कुटरई में
के घर रहने की व्यवस्था हो गयी । बैठे
ही थे कि आवाज सुनायी दी, 'टूटे-फूटे बरतन
गुड़ के बल्दी गो !' फेरीवाले भी आ पहुंचे ।

आज शरद-पूर्णिमा थी— चंद्र के राज्याभिषेक की रात । लेकिन इस वीरान इलाके के टुइयां-से गांव में किसी ने इसका उत्सव नहीं मनाया । न भजन-मंडली, न गीत-संगीत । मैं अकेला ही चांदनी में नहाता रहा । देर तक चांद को निहारता रहा । मुझे वह दुर्गा-प्रतिमा की तरह जान पड़ा । विधाता इसे आहिस्ता-आहिस्ता करके चौदह दिनों में गढ़ता है, पंद्रहवें दिन इसमें प्राण-प्रतिष्ठा करता है, फिर अमावस्या को इसे नील गगन में सिरा देता है । सर्जन-विसर्जन का यह खेल निरंतर चलता रहता है ।

....

नर्मदा के किनारे-किनारे चलने के आग्रह के कारण दूसरे दिन शाम को हम एक ऐसे गांव जा पहुंचे, जहां कोई भूला-भटका ही जाता है । गांव का नाम था छिनगांव । गिनती के घर । थककर इतने चूर हो गये थे कि आगे जाने की हिम्मत नहीं थी और इस गांव में आश्रय देने के लिए कोई तैयार न था । पता नहीं कैसे, यहां के लोग हमें चोर समझ बैठे थे ।

आखिर एक गरीब दंपती से अनुमति लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके आंगन में सामान रखा । थोड़ी देर में रात हो गयी । घुप अंधेरा, अनजान जगह । इतने में दो आदमी आये । उनके मुंह से शराब की बास आ रही थी । आते ही हमसे जवाब-तलब करने लगे । जिसके आंगन में पड़े थे, उसे भी आड़े हाथों लिया । 'ये कौन हैं तुम्हारे, क्यों अपने यहां जगह दी, रात को अगर कोई वारदात हुई, तो इसका जिम्मेदार कौन होगा ?'

हमारा पक्ष लेते हुए घर की स्त्री ने कहा, "कोई आ ही जाए, तो क्या हम उसे भगा दें ? फिर ये चोर नहीं हो सकते । चोर दिन को आकर टोह ले जाते हैं, फिर रात को चोरी करने आते हैं । ये बेचारे तो शाम को आये हैं और जब से आये हैं, कहीं नहीं गये ।"

लेकिन जो नशे में हो, उसे कोई क्या समझाये । धीरे-धीरे और भी लोग जमा हो गये । उन शराबियों ने ऐसा माहौल बना दिया कि सभी को यह विश्वास हो गया कि हमारे गांव में दो शातिर बदमाश आ गये हैं और आज रात सावधान नहीं रहे तो किसी के भी घर चोरी हो सकती है । हमारे ऊपर पहरा देने कुछ लोग वहीं जम गये ।

चांद निकला तो कुछ हिम्मत बंधी । कोई दो घंटे बीत गये । नींद तो क्या आती, किसी तरह पड़े थे । तभी हवा में थिरकती हुई मधुर स्वर-लहरी सुनायी दी— अद्‌भुत थी उसकी मिठास, दिव्य था उसका प्रभाव । ऐसे मीठे गीत तो सुने नहीं थे । कितने स्वाभाविक, कितने सहज, कितने कोमल ! एक पल में मैं अपने सारे दुःख-दर्द भूल गया । अवहेलना, अपमान, ठिठुरन, हर चीज गायब हो गयी । बस, रह गये वे गीत और उनकी मिठास ।

पड़ोस के आंगन में गांव की किशोरियों ने अपने मीठे कच्चे स्वरों में रीना गीत शुरू किये थे— चोरों के भय से उन्हें सारी रात जागरण जो करना था !

अभिशाप को इस तरह वरदान में बदलते कभी नहीं देखा था । सुनते-सुनते कब नींद आ गयी, कुछ पता भी न चला ।

....

सुबह उठे तो बिस्तर ओस से भीग गया था । आश्चर्य इस बात का हो रहा था कि बाहर खुले में, ऐसी ठंड में, नींद क्यों कर आयी । उस रात किसी के यहां भी चोरी होती, तो पकड़े हम ही जाते । लेकिन कहीं से कोई शिकायत नहीं आयी, तो फिर छिनगांव में छिनभर के लिए भी रुके नहीं ।

बरछा में एक पेड़ से डाकघर के डिब्बे को लटकते देखा तो उसमें चिट्ठी छोड़ी । वह मिल तो गयी, लेकिन बुझे तारे के प्रकाश की तरह घर पहुंचने में उसने बहुत समय लिया । मैं लौटने के बाद पहुंची ।

बरछा से जो पहाड़ लांघा, तो सामने नर्मदा । थोड़ा चलने पर जोगीटिकरिया पहुंचे । दूसरे दिन लुकामपुर । यहां इतनी साफ-सुथरी कुटी मिली कि दो दिन रह गये । नदी से पानी लाने के लिए बाल्टी की जरूरत पड़ी, पड़ोस में मांगने गया तो घर की स्त्री ने पूछा, 'आप कै मूर्ति हैं, महाराज ?'

तो अब हम मूर्ति हैं !

मैं समझ गया । मैंने कहा, "हम दो हैं लेकिन हमें सीधा नहीं, बाल्टी चाहिए ।" बाल्टी मिल गयी । पानी लेकर कुटी आया ।

रात को नर्मदा की मर्मर ध्वनि बराबर सुनाई देती । प्रायः हर रात कल-कल बहती नर्मदा का रव सुनायी देता । दिन में वह भले ही नर्मदा है, रात में रेवा है । दिन में वह दृश्य है, तो रात में श्राव्य ।

●●●

भिनसारा होते ही चल पड़े । रामघाट के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

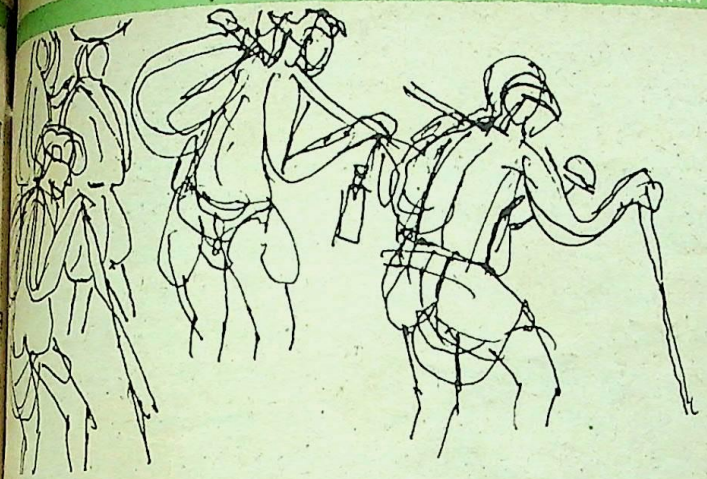

को देखकर सहस्रधारा का स्मरण हो
। अंतर यह है कि सहस्रधारा के प्रपात
तक बगरे हैं, जबकि यहां के प्रपातों का
क ही जगह इकट्ठा हो गया है । घोड़े के
के आकार की एक विस्तृत सपाट चट्टान से
जलधाराएं गिरती हैं । मोर जैसे पंख
कर नाचता है, उसी तरह नर्मदा ने यहां
जलधाराएं फैला दी हैं । वैसे प्रपात बहुत
हैं, इक्के-दुक्के होते, तो शायद ध्यान भी न
। पर ये तो हैं दल के दल, झुंड के झुंड ।
-से इन प्रपातों को, लगता है, गोद में
महला लूं, फिर कुलाचें भरने के लिए
।

से चलते समय अचानक मेरा ध्यान
की ओर गया और मैं ठिठक गया ।
फीकी दुपहरिया में चांद ! धुंधला और
के पास लेकिन मैदान में डटा हुआ ।
ये यह दम-खम कहां कि आधी रात को
दे ! चांद रमता जोगी है, उसका कोई
ठिकाना नहीं । रात को गायब और दिन को
। दिक्-काल के बंधन से मुक्त है यह
नारे जीवन में सूरज का अनुशासन भी हो
और चांद का स्वैरविहार भी हो । नियम का कठोर पालन भी हो और मौज-मस्ती की गुंजाइश भी हो ।

शाम को दूधीसंगम पहुंचे । वहां एक बैगा वृद्धा ने परकम्मावासियों के लिए कुटी बना रखी है, उसी में रहे ।

सुबह नर्मदा की बांकी चितवन देखते हुए आगे बढ़े । शरद ऋतु के आकाश में सफेद बादलों के झुरमुट नजर आने लगे थे । एकाकी निर्जन पथ । गांव भी पड़ते तो नाममात्र के—पंद्रह-बीस घर यहां, दस-पांच घर वहां, बस हो गया गांव ! इसे टोला कहते हैं ।

दोपहर को बीजापुरी पहुंचे । फिर बसंतपुर होकर कंचनपुर । कंचनपुर में ठहरने की व्यवस्था हो पाएगी, इसमें संदेह था । पास के गांव के लड़के ने कहा, "आप चिंता न करें । यहां व्यवस्था होती है, तो ठीक है, वरना मैं आपको अपने गांव ले चलूंगा । बहुत बड़ा गांव है मेरा—सत्ताईस घर हैं वहां !"

पर वहां व्यवस्था हो गयी ।

दूसरे दिन एक फेरीवाले का साथ हो गया । उसके साथ एक स्त्री भी थी । दोनों बिलासपुर जा रहे थे । आज वहां साप्ताहिक बाजार है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेरीवाला कपड़े की दुकान लगाएगा और स्त्री चूड़ियों की ।

छोटा-सा गांव है बिलासपुर । चारों ओर पहाड़ियों से घिरा, हरियाली में डूबा । लेकिन कैसा बाजार ! कपड़ों की चार-पांच दुकानें छोड़ दें, तो पूरे बाजार में पांच सौ रुपये का भी माल नहीं था ।

सुबह चल दिये । ऊंची पहाड़ी पगडंडी पर से भीमकुंडी दिखायी देने लगा । नीचे के खेतों से कुहासा उठ रहा था और लहराती बदली-सा फैल रहा था । मानो पृथ्वी के थाल से धूप का धुआं उठ रहा हो ।

नर्मदा दिन पर दिन छोटी होती जा रही थी । भीमकुंडी की शिशु नर्मदा को देखकर चकित रह गये । इसे पार करने में आधा मिनट भी न लगता । पानी में घड़ा मुश्किल से डूबता था ।

समझ गये कि अब अमरकंटक ज्यादा दूर नहीं ।

अब हम बहुत सावधान होकर चल रहे हैं । कहीं ऐसा न हो कि नर्मदा को झरना समझकर पार कर बैठें ।

रात घुघवा में रहे । यहां से जंगल विभाग की कच्ची सड़क मिल गयी । पहाड़ की तलहटी के शाल-वन में से जाती है ।

दमगढ़ से मेकल पर्वत ने नर्मदा को मानो अपनी भुजाओं में उठा लिया है । यहां से अमरकंटक की चढ़ाई शुरू हो गयी । टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी से होते हुए कोई दो घंटे में हम ऊपर आ गये । छोटा-सा मैदान पार करके थोड़ा उतरे तो कपिलधारा पहुंच गये ।

कपिलधारा ! प्रपात-बाहुल्या नर्मदा का सबसे पहला और

सबसे ऊंचा प्रपात । नीचे उतरकर, प्रपात के पायताने खड़े होकर, उसे आपादमस्तक देखने लगे । प्रपात से उठती हुई झंकारमय ध्वनि घाटी को थपथपा रही थी । नीचे नदी की तेज धारा चट्टानों में से भागती चली जा रही थी । हम श्रद्धावनत यह देखते रहे ।

सहसा मैं जोर से चिल्लाया,
'नर्मदा-आ-आ !'

समूची घाटी ने प्रतिध्वनि के रूप में उत्तर दिया, 'हां-आ-आ !'

कुछ लोग प्रपात के पीछे खड़े थे । नीचे जहां पानी गिरता है, वहां खोह है, इसलिए प्रपात के पीछे जाया जा सकता है । चारों ओर दर्शक, बीच में प्रपात ! देखने की ऐसी सुविधा बहुत कम प्रपात देते हैं ।

नीचे जाकर दूधधारा भी देख आये । यहां का नैसर्गिक सौंदर्य इतना भा गया कि रात यहीं रह गये । सुबह नहाकर चले । अमरकंटक में कल्याणदासजी के आश्रम में रहे । सामान रखकर नर्मदा-कुंड गये ।

कुंड को देखते ही मेरी आंखों में आंसू की दो बूंदें छलकीं । आखिर हम नर्मदा के उद्गम तक पहुंच गये थे ।

तीसरे दिन दीवाली थी । हमने दीवाली यहीं मनाने का निश्चय किया । कल्याणदासजी ने अपने आश्रम में बड़े प्रेम से रखा । लाखों की लागत से आश्रम बन रहा है, लेकिन खुद केवल लंगोटी पहनते हैं, बाहर खुले में सोते हैं—तीसों दिन, बारहों माह । अमरकंटक की ठंड और वर्षा का क्या कहना, लेकिन इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता । कहने लगे, 'यह लंगोटी ही मेरी जागीर है । काम पूरा होते ही चल दूंगा । जोगी रमता भला ।'

कई वर्ष हिमालय में रहे हैं । नर्मदा परिक्रमा तो कब की कर चुके हैं । तीन दिन तक उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

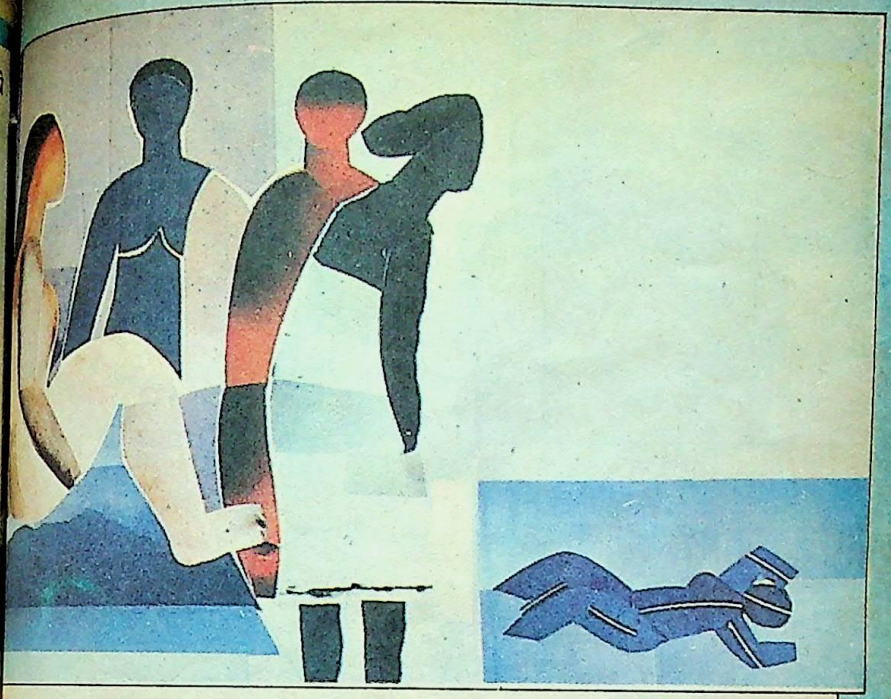

नर्मदा के तट पर
चित्रकार : अमृतलाल वेगड़

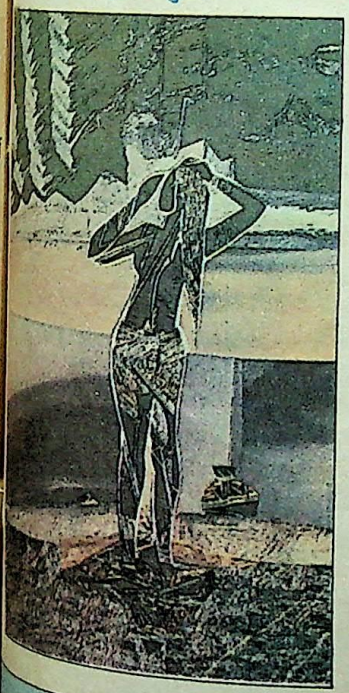

प्रथम प्रिय आदिवासी युवती

स्नेहपगा आतिथ्य पाते रहे ।

दीवाली की रात को स्त्रियां नर्मदा-कुंड में दीप छोड़ रही थीं । अंधेरी रात में कुंड में झिलमिलाते दीपों का केसरिया उजाला मैं देर तक देखता रहा ।

आखिर मुझसे रहा न गया । एक स्त्री से एक दीया मांग लिया और अपने हाथ से जलाकर कुंड में छोड़ा । फिर मन ही मन बोला, 'मां नर्मदे, तेरी पूजा में एक दीप जलाया है । बदले में तू भी एक दीप जलाना—मेरे हृदय में । बड़ा अंधेरा है वहां, किसी तरह जाता नहीं । तू दीप जला दे, तो दूर हो जाए । इतनी भिक्षा मांगता हूं, मां । तो दीप जलाना, भला ?'

१८३६, राइट टाउन, जबलपुर—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे अपने 'ऐक्टिंग कैरियर' से पूरा संतोष है । मुझे महान अभिनेता बनने की भी इच्छा नहीं । मैं मरने के बाद जीना नहीं चाहता ऐसी कोई इच्छा नहीं कि मरने के बाद लोग याद रखें ।

"मैं मरने के बाद जीना नहीं चाहता"

—अशोक कुमार

किसी जिंदगी में किसी भी चीज का पहला दिन बहुत गड़बड़ी का दिन रहा है । ज्योतिष के अनुसार मेरा जन्मदिन तेरह तारीख और शुक्रवार को बहुत ही अशुभ है । इस दिन ही 'यीशु' को सूली पर चढ़ाया गया था ।

जिस दिन मैं पैदा हुआ उसी दिन मेरी दादी सीढ़ी से गिर पड़ीं और उनकी मृत्यु हो गयी । मेरी शिक्षा की शुरुआत भी कुछ इसी तरह हुई । मेरी 'पाटी-पूजा' का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया था, हमारे शहर, खंडवा के इकलौते फाटक हिंदी हाईस्कूल' (इस स्कूल के ग्राउंड के दो फाटक होने के कारण यह अपने नाम से मशहूर था) के हेडमास्टर मुझे कलम पकड़ाने की रस्म पूरी करने आनेवाले थे, तैयारी पूरी हो गयी । खंडवा के सभी गण्यमान्य व्यक्ति आये थे, 'पाटी-पूजा' के लिए हेडमास्टर साहब का इंतजार था, लेकिन हेडमास्टर साहब आते-आते सीढ़ी से गिर पड़े, उनका पैर टूट गया ।

अब जनेऊ (यज्ञोपवीत) को ही लीजिए । जनेऊ के दिन सभी मेहमान आ गये । यज्ञोपवीत का मुहूर्त आ गया, सब लोग हैरान ! पंडितजी अभी तक नहीं आये । उनको बुलाने के लिए एक आदमी भेजा गया । मालूम पड़ा, पंडितजी यहां पधारने के बजाय परलोक सिधार गये । उनका हार्टफेल हो गया था ।

ऐक्टिंग की शुरुआत भी गड़बड़ी से हुई, यह बात १९३५ की है । उन दिनों डायरेक्टर हिमांशु राय मुझे स्क्रिप्ट राइटिंग (पटकथा-लेखन) की ट्रेनिंग दे रहे थे । ट्रेनिंग क्या थी, मैं अंगरेजी फिल्मों की स्क्रिप्ट का अनुवाद करता रहता था । हिमांशु राय ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालांकि कहा था कि तुम अनुवाद करो, मैं बाद में देखूंगा, पर उन्होंने कभी देखा नहीं ।

हीरो कहीं गया

एक बार उनका हीरो कहीं चला गया था । उनको मेरा चेहरा-मोहरा पसंद आ गया और उन्होंने कहा, "चलो, ऐक्टिंग करो !" मैं घबड़ा गया । उन दिनों फिल्मों में ऐक्टिंग करना अच्छा नहीं समझा जाता था, मैंने कहा, "मैं कैसे कर सकता हूं ऐक्टिंग ? घर के लोग क्या सोचेंगे ? हमारे परिवार में इससे गड़बड़ी मच जाएगी !" उन्होंने कहा, "कोई गड़बड़ी नहीं होगी, सिर्फ यह एक फिल्म कर लो ।" फिल्म का नाम था 'जीवन-नैया' हीरोइन थीं देविका रानी और निर्देशक थे हिमांशु राय ।

निर्देशक हिमांशु राय ने मुझे शॉट समझाया, हीरोइन विलेन के शिकंजे में फंसी थी और मुझे शॉट के बीच में आ कर उसको छुड़ाना था । उन्होंने शॉट समझाते हुए कहा, 'मैं पहले साउंड बोलूंगा, फिर साउंड से कैमरा की आवाज आएगी । शॉट शुरू होने के बाद तुम मन में एक से दस तक गिनती गिनने के बाद फील्ड में आ जाना । मैंने पूछा, 'डायलॉग वगैरह...' ! उन्होंने कहा, "नहीं, कोई डायलॉग नहीं । तुम गिनती पूरी करके ही आना ।" मैं खिड़की के पीछे छिप कर बैठ गया । साउंड शुरू हुई । कैमरा स्टार्ट हुआ, सब ठीक-ठाक था, लेकिन क्लैप की जो 'खट' से आवाज हुई, मैं घबरा गया । सारे निर्देश भूल गया और घबराहट में दोनों के बीच जाकर कूद पड़ा । हीरोइन एक तरफ दूर जा पड़ी और दूसरी तरफ विलेना । मैं बीच में खड़ा था । डायरेक्टर ने 'कट-कट' कहकर शॉट रोका, उन्होंने मुझसे कहा, "यह तुमने क्या किया !" मैंने कहा, "सॉरी, मैं भूल गया था," विलेन अपनी जगह से उठ नहीं पा रहा था, सो डॉक्टर को बुलाना पड़ा ।

"हम रहनेवाले खंडवा के हैं, लेकिन मेरा जन्म अपने ननिहाल, भागलपुर में हुआ था । पिताजी की शादी इतनी दूर इसलिए हुई, क्योंकि नाना बहुत अमीर थे, उनकी बहुत बड़ी 'स्टेट' थी । बत्तीस वर्ष की उम्र में ही उनको 'राजा' की पदवी मिल गयी थी, पर वे अकसर बीमार रहा करते थे, उन्हें किसी पढ़े-लिखे, मगर स्वस्थ-से पहलवान किस्म के दामाद की जरूरत थी । पिताजी उन दिनों लॉ की पढ़ाई कर रहे थे और सेहत में किसी पहलवान से कम न थे । बस, फिर क्या था, पहली ही नजर में नानाजी को पसंद आ गये । उन्होंने पता लगवाया कि वे ब्राह्मण हैं या नहीं ? वे ब्राह्मण तो थे ही, सो विवाह हो गया ।

मेरे पिताजी मध्यम वर्ग के खानदान से थे । पिताजी वकील थे और उनके पिताजी यानी मेरे दादाजी भी वकील थे । मेरी मां बहुत पढ़ी-लिखी थीं । जैसा कि मैंने पहले बताया वे बहुत संपन्न परिवार की थीं, उनको पढ़ाने के लिए लंदन से गवर्नेस बुलायी गयी थी । बचपन में वे मुझे शेक्सपियर, थॉमस हार्डी, जैसे महान लेखकों की रचनाएं कहानी की 'फॉर्म' में सुनाया करती थीं । दूसरी तरफ मेरी बुआ अत्यंत धार्मिक स्वभाव की थीं । वे अकसर मुझे रामायण, महाभारत, भागवत आदि धार्मिक ग्रंथों की कहानियां सुनाया करती थीं । मां और दादी के साथ मैंने सारे तीर्थों की यात्रा बचपन में ही कर ली थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

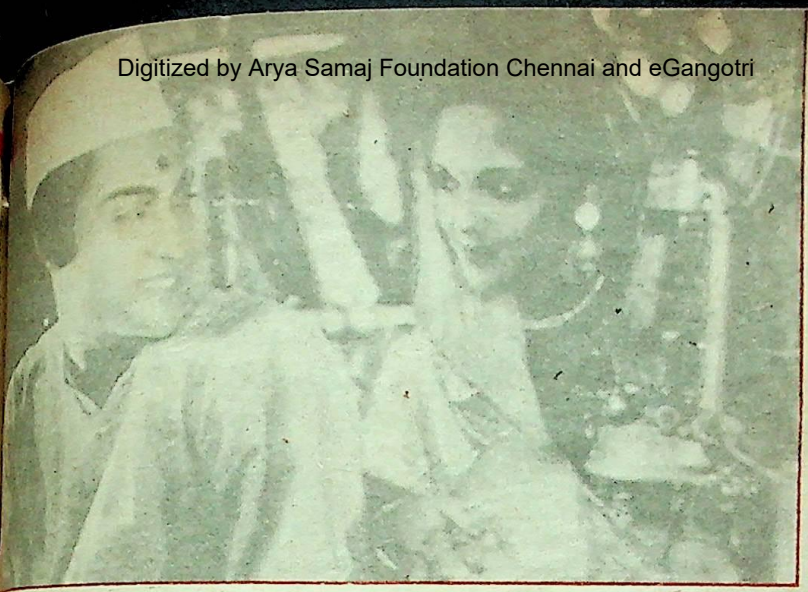

क कुमार और देविका रानी, 'अछूत कन्या' में

अंगरेजी साहित्य मां से सुना

इन कहानियों का मुझ पर बहुत प्रभाव
हुआ। भारतीय और पाश्चात्य साहित्य को पढ़ने
में जहां मेरे अंदर इच्छा पैदा हुई, वहीं उनको
समझने में आसानी हुई। पढ़ते हुए लगता था,
इसे पहले कहीं पढ़ा या सुना है। इस बारे में
एक वाकया सुनाता हूं। एक बार शूटिंग के
दौरान मेरी आंख में कुछ पड़ गया, दो-तीन
दिनों तक बड़ी तकलीफ रही। छुट्टी ले कर मैं
चला गया, वहीं आंख का इलाज करवाया,
वापस आते समय, स्टेशन पर मैंने कोनाल्ड
डायल की कहानियों की एक किताब खरीदी।
पढ़ते समय मुझे लगा कि इस कहानी का यह
अंत होना चाहिए या इस परिस्थिति में इस चरित्र
को इस समस्या का यही हल होना चाहिए। मेरे
आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मैंने देखा कि
लेखक ने भी वही हल दिया था, जो मैंने सोचा
था। इस तरह एक के बाद दूसरी, प्रत्येक
कहानी के समय यही बात हुई। मैं हैरान, ऐसा
क्यों हो रहा है ? फिर याद आया, ये कहानियां
तो मैंने मां से सुनी थीं।

बचपन की एक और दिलचस्प घटना याद आ रही है। छुट्टियों में मैं अकसर अपने ननिहाल, भागलपुर चला जाता था। वहां मेरे नाना ने तीन-चार कॉटेज बनवाये थे। वहां, दोस्तों के साथ एक लड़का आता था। वह छोटी-छोटी कहानियां लिखता था, जो पत्र-पत्रिकाओं में छपती थीं। लेकिन, पढ़ा-लिखा ज्यादा नहीं था। एक दिन नानाजी ने उससे कहा, "तुम अशोक को कहानियां सुनाया करो" वह मुझे कहानी सुनाने लगा। लेकिन मैं तो खुद कहानी सुनाने का शौकीन था। कहानी सुनाने में आनंद आता था, वही कहानियां, मां और बुआ से सुनी हुई। उसने नानाजी से कहा, "यह कहानी सुनता ही नहीं, उलटे मुझको ही कहानी सुनाने की जिद करता है। नानाजी ने कहा, "कोई बात नहीं, तुम इससे कहानी सुना करो।" अब मैं उसको कहानी सुनाने लगा।

इस घटना के बीस साल बाद कलकत्ते में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'न्यू थियेटर' ने मुझे काम करने के लिए बुलाया। मैं वहां गया, तो एक दिन शरत बाबू (शरतचंद्र चट्टोपाध्याय) मुझसे मिलने आये। मैंने उनको नमस्कार किया, तो उन्होंने कहा, "मुझे पहचाना नहीं ?" मैंने कहा, "नहीं।" उन्होंने कहा "अरे, बचपन में मुझे इतनी कहानियां सुनाया करते थे। मैं हड़बड़ा गया, "आपको और मैं कहानी सुनाया करता था," वे बोले, "भूल गये, भागलपुर में !" मैंने कहा, "याद तो आ रहा है, लेकिन पहचान नहीं सका।" शरत् बाबू ने कहा, "अब जो कहानी पसंद हो ले जाओ।"

मैं बहुत 'सिंपल' था, मेरे कोई ज्यादा दोस्त-यार नहीं थे, कोई 'ग्रुप'-जैसा नहीं था। लिखने-पढ़ने में अच्छा था, खेलता भी था। पहला लड़का होने के नाते दादाजी बहुत प्यार करते थे। स्कूल से आने के बाद अपने साथ घुमाने ले जाते थे। मैं ज्यादातर अपने 'पेरेंट्स' के साथ ही रहता था। स्कूल के बाद कॉलेज में मैंने साइंस लिया था, क्योंकि मेरे एक अंकल जरमनी में काम करते थे और उन्होंने कहा था कि साइंस पढ़कर जरमनी आओ, मैं अपनी कंपनी में लगा दूंगा। लेकिन उनकी 'डेथ' हो गयी। मैंने बी.एससी. करने के बाद लॉ ज्वाइन कर लिया। उन दिनों मैं कलकत्ते में था। उन्हीं दिनों हिमांशु राय जरमनी से आये थे। मेरे बहनोई (एस. मुखर्जी) की उनसे जान-पहचान थी। जरमनी जाकर काम करने की इच्छा थी; इसलिए लॉ छोड़ कर एस. मुखर्जी के साथ बंबई चला आया, हिमांशु राय के पास कि वे जरमनी की किसी कंपनी में 'रिकमेंड' कर देंगे। लेकिन उन्होंने कहा, "वहां जा कर क्या करोगे ? यहीं मैं जो कहता हूं, करो।" और मैं 'लेबोरेटरी' में काम करने लगा। यह बात १९३४ की होगी। इसके कुछ ही दिनों बाद वे मुझे 'स्क्रिप्ट राइटिंग' की ट्रेनिंग देने लगे। बाद में ऐक्टिंग में कैसे आया, बता ही चुका हूं।"

शिकायतों का शिकार

उन दिनों मुझे ढाई-तीन सौ रुपये महीने मिलते थे। मैंने एक कॉटेज ले लिया था। मैं कहता था, मेरी इनकम पांच-छह सौ रुपये महीने हो जाए तब शादी करूंगा, लेकिन माता-पिता चाहते थे कि मैं उसी वक्त शादी कर लूं, घरवालों के सामने एक और अड़चन थी हिमांशु राय मुझे एकदम पश्चिमी रंग में ढाल रहे थे। होटल में— घर में किस तरह खाना-पीना, उठना-बैठना, चलना-फिरना, बातचीत करना चाहिए। इन सब बातों की एक तरह से ट्रेनिंग चल रही थी। मैं इस ट्रेनिंग से ऊब चुका था। मगर घरवाले सोचते थे, यह एकदम पश्चिमी रंग में रंग गया है, इसलिए परेशान थे, इसे कोई लड़की पसंद भी आती है या नहीं। मां ने जो लड़की पसंद की थी (मेरी पत्नी शोभा देवी), ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थी मां परेशान थीं, मैं लड़की पसंद करूंगा या नहीं। लेकिन वे यह भी अच्छी तरह जानती थीं कि मैं पिताजी से बहुत डरता था। डरता कैसे नहीं, आखिर पहलवान थे ! मां ने पिताजी से टेलिग्राम करवा दिया। मैं जबलपुर स्टेशन पहुंचा। स्टेशन पर पिताजी खड़े थे। उन्होंने कहा, "आगे जाओ, लेडीज कंपार्टमेंट में तुम्हारी भाभी हैं, उनसे पूछो, उन्हें कुछ चाहिए तो नहीं," मैंने भाभी से पूछा, कहां जा रही हैं ? उन्होंने कहा, तुम्हारी शादी है।" मैं सकते में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शादी, मेरी शादी ?" उन्होंने कहा, "इसमें चौंकने की क्या बात है ।"

घर पहुंचे, तो मां ने मुझे देख कर कहा, "आ गया, शादी के लिए राजी हो गया ?"

"हां," उन्होंने कहा, "लड़की तुझे आ गयी ?" मैंने कहा, "मां, जो लड़की पसंद है, मुझे भी पसंद है ।"

मुझे अपनी पसंद की लड़की दिखाने ले लड़की को सजा-बजा कर रखा गया उसका बेसुरा गाना भी सुनना पड़ा । शादी तय हुआ शुक्रवार । बाद में जब वालों को मालूम पड़ा कि लड़के का भी शुक्रवार है, तो उन्होंने कहा, "नहीं, के दिन तो शादी नहीं हो सकती, जिस का जन्म होता है, वह दिन उसके अशुभ होता है ।" आगे छह महीने तक मुहूर्त नहीं था । मैंने सोचा, 'चलो, जान जल्दी वापस भी जाना था । उन दिनों फिल्म की शूटिंग चल रही थी । पर उन्होंने कैसे एक तरकीब निकाली, कहा, "कल हो सकती है," मैंने कहा, "यह कैसे हो है ?" पर जो होना था, सब हुआ । तार किया गया । मगर इतनी जल्दी आता ? न मेरे रिश्तेदार आये, न उनके, सिर्फ पांच थे । मैं, पिताजी और मेरे भाई । शादी का इंतजाम एक कमरे में गया था । हम वहां जा कर बैठे । पंखा खराब होगा, जिसे खूब तेल-वेल कर चलने की हालत में लाया गया था । चला, तो 'छपाक-छपाक' तेल उड़ कर हमारे कपड़ों पर पड़ने लगा । खैर, बदले, शादी हुई । दूसरे दिन मैं पत्नी को ले कर घर वापस आया, तो दीदी (श्रीमती एस मुखर्जी) ने कहा, "दादा मुनि, आखिर आप शादी के लिए तैयार हो ही गये ।" मैंने कहा, "शादी के लिए तैयार नहीं, शादी तो हो गयी ।" अब दीदी और जीजा लगे बिगड़ने, "यह क्या बात है ? हमें बताया तक नहीं..." इस तरह शादी कर के भी मुझे लोगों की शिकायतों का शिकार होना पड़ा ।

अभिनय में रुचि नहीं

मुझे अभिनय में बिलकुल रुचि नहीं थी । मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे एक्टिंग करनी होगी, मेरे दादाजी, पिताजी दोनों ही वकील थे । मुझे भी वकील बनना था या फिर कोई और काम करके अपने माता-पिता, परिवार का पालन-पोषण करना था ।और मैंने किया भी । हां, एक बार स्कूल में मुझे स्टेज पर ले गये थे, लेकिन ऐक्टिंग करते नहीं बनी । छोटा-सा रोल था । बस, मुझे स्टेशन पर बैठना था । हीरो-हीरोइन के आने पर 'चलो भाई, गाड़ी का वक्त हो गया' कह कर स्टेज से चला जाना था, ताकि उनको बात करने का मौका मिल सके । मगर मैं अपनी जगह से उठा ही नहीं । पेपर से मुंह ढांककर बैठा रहा, लोग स्टेज के पीछे से चिल्लाने लगे, "अरे भाई, इसको जाने दो' वगैरह ।"

शुरू-शुरू में सोचता था, फिल्म का कैरियर है, बस ५-१० साल चलेगा । लेकिन पांच साल हुए, फिर दस साल हुए, फिर बीस हो गये और अब चालीस से ऊपर हो रहे हैं, लेकिन मैंने फोटोग्राफ्स वगैरह का कोई 'रेकॉर्ड' नहीं रखा । ऐसी बात नहीं कि दूसरे ऐक्टर अच्छे नहीं थे या उन्होंने कोशिश नहीं की होगी । ग्रहों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पोजीशन (स्थिति) के अनुसार आदमी की जिंदगी बदलती रहती है या फिर स्थिर रहती है। आप चाहें तो भी नेपोलियन नहीं बन सकते। अब यही देखो, मेरे मामा अच्छे गायक थे उनका प्रभाव पड़ना ही था, सो मुझे भी संगीत का शौक हो गया, सीखा भी, शुरू-शुरू में अपने लिए गाने गाये भी, जैसा कि उन दिनों चलन था, सभी ऐक्टर अपने गाने खुद गाते थे, इसके बावजूद मैं 'सिंगर' (गायक) नहीं बन सका, किशोर बन गया, अपने ग्रहों की स्थिति के अनुसार।'' मैं विदेशी फिल्में भी देखता था। उनकी 'नेचुरल ऐक्टिंग' और बातचीत करने का ढंग मुझे जंचता था। इसलिए मैंने भी अपनी ऐक्टिंग को स्वाभाविक बनाने की कोशिश की, अब भी करता हूं, असल में 'सक्सेस' (सफलता) के लिए स्ट्रगल (संघर्ष) करना चाहिए और उसको बनाये रखने के लिए काम के प्रति डिवोशन (समर्पण) फिर ग्रहों की स्थिति के अनुसार 'सक्सेस' मिलती होगी तो मिलेगी, नहीं तो नहीं मिलेगी।

हमारी 'ट्रेनिंग' इस तरह की नहीं थी। जरमन लोग 'बांबे टाकीज' में बहुत 'डिसिप्लिंड' (अनुशासित) होते थे। 'स्क्रिप्ट' देख लो, सेट पर कुछ नहीं करो। हमें वही करना होता था, जो डायरेक्टर कहता था। हम सिर्फ सुझाव दे सकते थे। आज भी मैं सुझाव ही देता हूं, फिर डायरेक्टर माने या न माने। इस तरह 'डायरेक्शन' की तरफ खयाल ही नहीं गया या यूं कहें उसे अपने 'फील्ड' (कार्य क्षेत्र) के बाहर की चीज समझता रहा।

बस, फिल्मों में कई तरह के काम कई लोग करते हैं, तो मैंने सोचा, फिल्म बनाकर देखा जाए। 'बांबे टाकीज' के बैनर में मैंने 'मजबूर' और 'महल' बनायी। इसके बाद 'अशोक कुमार प्रोडक्शंस' में 'मां', 'परिणीता', 'समाज', 'कल्पना', 'रागिनी' और 'तेरी सूरत मेरी आंखें' जैसी फिल्मों का निर्माण किया। डायरेक्टर विमल राय को सबसे पहले मैंने ही 'मां' और 'परिणीता' फिल्में दी थीं। फिल्म-निर्माण में मुझे फायदा नहीं हुआ। फिल्में चलती थीं, लेकिन पैसा नहीं आता था, तो मैंने सोचा, चलो फिर से ऐक्टिंग शुरू की जाए। वास्तव में, फिल्म बनाने के चक्कर में मैं ऐक्टिंग से 'आउट' हो गया था। यह बात ४७-४८ के करीब की होगी। उन दिनों राज कपूर, दिलीप कुमार फिल्मों में आये थे। मैंने 'संग्राम', 'दीदार', 'समाधि' आदि बाहर की फिल्में साइन कीं और वे हिट हो गयीं। इन्हीं दिनों मेरी अपनी 'महल' और 'परिणीता' खूब चलीं, और मैं फिर से ऐक्टिंग में जम गया।

मुझे अपने 'ऐक्टिंग कैरियर' से पूरा संतोष है। किसी महान रोल की 'ऐंबिशन' नहीं। मुझे महान अभिनेता बनने की भी इच्छा नहीं है। मैं मरने के बाद जीना नहीं चाहता। ऐसी कोई इच्छा नहीं कि मरने के बाद लोग याद रखें। वास्तव में कोई याद करता भी नहीं, यह तो याद कराया जाता है। मरने के बाद लोगों को जिंदा रखा जाता है 'मॉन्यूमेंट्स' (स्मारक) या जन्मतिथि—पुण्यतिथि मना कर, लेकिन कब तक ?

दृष्टांत मानवता की पाठशाला है —*बर्क*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि विलास

...ी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये ...के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं ...ाए गए हैं। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे ...ाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे ...ें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, ...ों से अधिक में साधारण और आधे से कम ...अन्य।

— संपादक

...क कक्षा में ४० छात्र हैं, जिनकी औसत ...१५ वर्ष हैं। यदि इनमें २० छात्रों की ...उम्र १६ वर्ष है तो शेष छात्रों की औसत ...कितनी है ?

...'तीन बीघा' गलियारा क्या है ? यह भारत ...किस पड़ोसी देश से संबंधित है ?

...क. देश में इस समय कितनी शहरी ...बस्तियां हैं ? इनमें कितनी बड़ी तथा कितनी ...प्रथम एवं छोटी श्रेणी की हैं ?

...शताब्दी के अंत तक शहरी आबादी देश ...कुल आबादी का कितना होने की संभावना ...?

...क. दुनिया के किस गेंदबाज ने सबसे ...पहले टेस्ट क्रिकेट में ४०० विकेट लेने का श्रेय ...प्राप्त किया है ? कब ?

...उसने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कब किया ?

...क. संयुक्त राष्ट्र वर्ष १९९० को किस रूप ...मना रहा है ?

...दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय संगठन ने वर्ष ...९० को कौन-सा वर्ष घोषित किया है ?

...क. इस वर्ष विश्व कप हाकी खिताब ...किसने जीता तथा किसे हराकर ?

...भारत का कौन-सा स्थान रहा ?

...क. किस सर्वश्रेष्ठ महिला जिम्नास्ट ने गत वर्ष के अंत में अपना देश छोड़कर एक अन्य देश में शरण ली ? जिम्नास्टिक में उसका क्या रेकार्ड है ?

ख. देश छोड़ने का कारण क्या बताया था ?

८. क. इस वर्ष गणतंत्र-दिवस पर 'महावीर चक्र' पदक से किसे सम्मानित किया गया ?

ख. इस वर्ष का 'अंतरराष्ट्रीय गांधी पुरस्कार' किसे प्रदान किया गया ? किस उपलक्ष्य में ?

९. क. दुनिया का कौन व्यक्ति अब तक सबसे अधिक समय तक बेहोशी की हालत में रहा ?

ख. उसका अंत कैसे हुआ ?

१०. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

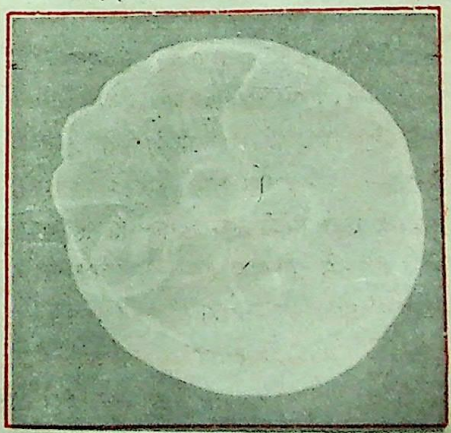

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात तो तुम्हारी ठीक है, परंतु मुझे यह चिंता हो रही है कि मेरे माता-पिता तुम्हें स्वीकारेंगे अथवा नहीं, विशेषकर मेरी मां तुम्हें अपने मन में स्थान देगी अथवा नहीं ।

सामंजस्य

● कन्हैया लाल गांधी

जमनादास कह रहे थे, "जब बिजिनेस-मैनेजमेंट की सुविधायें देश में अनेक स्थानों पर उपलब्ध हैं, तो इस प्रशिक्षण के लिए विदेश जाने से क्या लाभ ?" हरिशंकर का मत था, "अमरीका और हिंदुस्तान के प्रशिक्षण में जमीन आसमान का अंतर है । हम अभी तक परंपरागत तौर-तरीकों से गाड़ी चलाते आ रहे हैं, जबकि अमरीका अनुसंधान करते-करते हमसे दो सौ साल आगे निकल चुका है ।"

जमनादास अपने पुत्र हरिशंकर की अपेक्षा बहुत कम पढ़े-लिखे थे, परंतु उन्होंने जमाना देखा था । उन्हें अपने काम के बारे में पूरी जानकारी थी । अपने बेटे की बात का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा, "परंतु तुम्हें इसी फैक्टरी में ही तो काम करना है और इन्हीं मजदूरों के साथ । फैक्टरी की मशीनें पुरानी हैं और श्रमिकों की शिक्षा अधूरी, इसलिए आधुनिकतम गैजिट्स पर सीखा हुआ ज्ञान तुम यहां प्रयोग में नहीं ला सकोगे । इस मार्ग पर चलने से तुम्हें निराशा के सिवाय कुछ नहीं मिलेगा ।"

"आप देखेंगे कि विदेश से लौटने के चार-पांच वर्ष के अंदर मैं अपने उद्योग की शक्ल ही बदल दूंगा । इसका निवेश बढ़ा दूंगा और उत्पादन चार गुना कर दूंगा," बेटे ने कहा ।

हरिशंकर के उन दावों के बारे में पिता ने टिप्पणी करना व्यर्थ समझा क्योंकि इनकी सफलता अथवा असफलता भविष्य के गर्भ में निहित थी । परंतु जमनादास की आंखें मानों यह कह रही थीं, "संस्कारों को बदलने के लिए कई दशक चाहिए । आदमी के संस्कार मशीनों की रफ़्तार से नहीं बदलते ।"

अपनी बात को थोड़ा मोड़ देते हुए हरिशंकर ने कहा, "यदि मैं कूप-मंडूक की भांति यहीं पड़ा रहूंगा, तो मेरे संदर्श में कैसे विस्तार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

? यदि मुझे फैक्टरी का कार्यभार
लना है, तो यह आवश्यक है कि मैं पश्चिम
किसी प्रगतिशील देश में कुछ समय के लिए
और देखूं कि विज्ञान द्वारा उन्होंने अपने
र्थिक और सामाजिक जीवन को किस प्रकार
रिवर्तित किया है और फिर
बिजनेस-मैनेजमेंट का कोर्स केवल दो वर्ष का
ता है।"

हरिशंकर की मां सत्यवती, जो अब तक यह
ब कुछ खामोशी से सुन रही थी, ने बात को
ोड़ते हुए कहा, "क्या रखा है इस बहस में ?
टों में से कोई एक दूसरे का कहा मान
ओ। कितना सत्य है इस कथन में, 'एक ने
हा, दूसरे ने मानी, नानक कहें दोनों ज्ञानी ।'
ब उन दोनों में से किसी ने कुछ नहीं बोला तो
त्यवती पति की ओर देखते हुए बोली,
नो, आप बड़े हो, आप ही मान जाओ ।
ये का दिल रख लो ।"

जमनादास के चेहरे पर हल्की-सी मुसकान
ागृत हो गयी । इस प्रकार के विवाद में मां का
वोट सदैव पुत्र के पक्ष में ही जाता था । सब
कह-सुनकर जीत हरिशंकर की ही हुई ।

कभी-कभी समय सचमुच उड़ता है । वह
दिन भी आ गया जब हरिशंकर अमरीका जाने
के लिए हवाई-अड्डे पर वी. आई.पी. लाऊंज में
फूल-मालाओं से लदे खड़े थे ।

उसकी बड़ी बहन ने थाली हाथ में ली, भाई
की आरती उतारी; उसे तिलक किया, उसके मुंह
में थोड़ा मीठा दिया और सुखद-यात्रा के लिए
उसे आशीर्वाद दिया । हरिशंकर की ऐसे
कर्मकांडों में कोई आस्था नहीं थी, परंतु कम से
कम ऐसे अवसर पर वे अपनी अग्रजा का दिल
नहीं तोड़ना चाहते थे । माता-पिता के
चरण-स्पर्श कर, सभी से यथायोग मिलकर
हरिशंकर विमान में चले गये ।

अमरीकी विश्वविद्यालय में शीघ्र ही
हरिशंकर ने अपने बुद्धि-कौशल की गहरी छाप
बिठा दी । पहली वार्षिक परीक्षा में उन्होंने प्रथम
स्थान प्राप्त किया ।

उसकी कक्षा में डाली नाम की एक लड़की

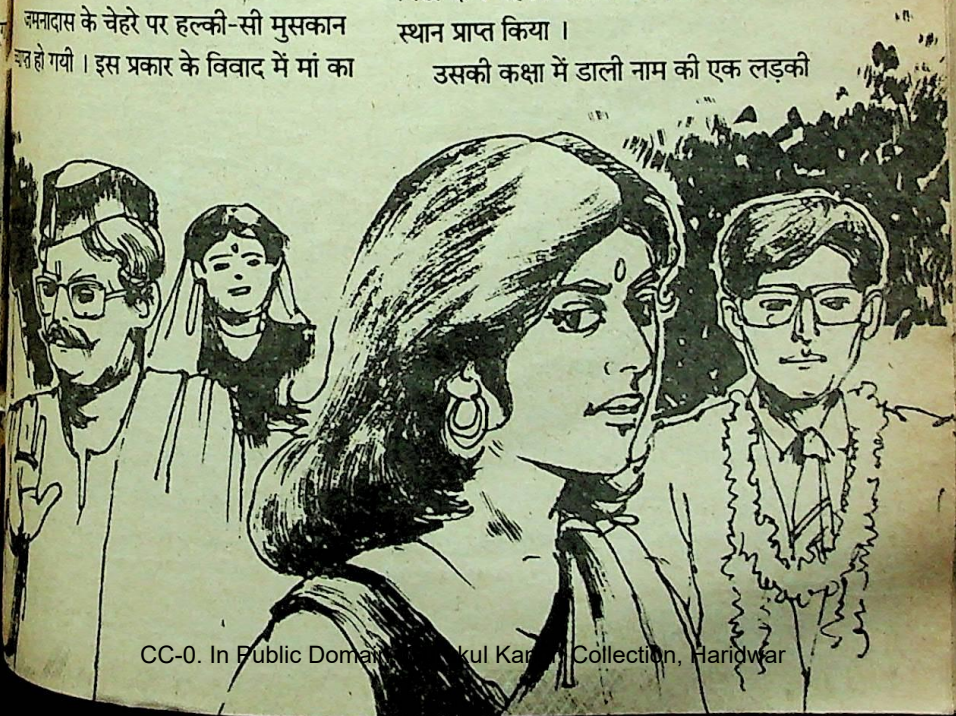

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी पढ़ती थी । उसके माता-पिता दो पीढ़ियों से अमरीका रह रहे थे । सहपाठी के रिश्ते में धीरे-धीरे प्रेम का रंग चढ़ने लगा । आखिर एक दिन हरिशंकर ने डाली के सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया ।

"लेकिन तुम्हारे माता-पिता तो भारत में हैं । क्या उनकी अनुमति के बिना तुम शादी कर लोगे ? यदि उन्होंने न माना तो ?" डाली ने प्रश्न किया ।

"मैं अपने माता-पिता का एकमात्र पुत्र हूं मैं उनकी कमजोरी जानता हूं; इसलिए अपने माता-पिता को राजी करने में मुझे कठिनाई नहीं होगी ।"

डाली ने हल्की-सी मुसकान के साथ कहा, "हां, कुछ इधर-उधर का झूठ-सच बताकर झांसा दे दोगे । बिजनेस-मैनेजमेंट की ट्रेनिंग यहां काम आयेगी न ?"

"डाली, क्या तुम नहीं मानती कि जीवन साथी का निर्णय तो हमारे जन्म से पहले ही हो चुका होता है ?" हरिशंकर ने पूछा ।

"पूर्व-जन्म और कर्मफल में मेरी पूरी आस्था है, परंतु उसके साथ मैं यह भी मानती हूं कि इनसान अपनी स्वतंत्र इच्छा से कुछ हद तक अपनी तकदीर को बदल भी सकता है ।"

डाली का उत्तर सुनकर हरिशंकर चकित रह गया । इतने समय से विदेश में रहकर भी डाली भारतीय संस्कृति को कितनी गहराई से समझती है । वह डाली की आकृति और उसके दर्शन ज्ञान से पूरी तरह सम्मोहित था । तनिक संभलते हुए उसने कहा, "तुम ठीक कहती हो । परंतु इस काम में मेरे हाथ की लकीरें और मेरी स्वतंत्र-इच्छा से मुझे यही संकेत मिलता है कि विधाता ने हम दोनों को एक-दूसरे के लिए ही बनाया है ।"

डाली निरूत्तर रह गयी । लज्जा से उसने आंखें नीची कर लीं । हरिशंकर की दो वर्ष की अवधि समाप्त होने में अब केवल कुछ मास ही रह गये थे । यदि उसे डाली को अपने साथ ले जाना है, तो उनका विवाह शीघ्र ही संपन्न हो जाना चाहिए । दोनों का विवाह संपन्न हो गया और हरिशंकर ने इसकी सूचना अपने माता-पिता को भी भेज दी ।

पत्र सुनते ही हरिशंकर की मां सत्यवती बहुत तिलमिलायी । उसने जमनादास पर प्रश्नों की बौछार कर दी, जैसे इस विवाह के जिम्मेदार वही हों । वह कहती गयी, "क्या इसीलिए हमने उसे अमरीका भेजा था, मालूम नहीं लड़की किस जाति की है ? पता नहीं गोरों की तरह उसने कोर्ट-विवाह तो नहीं किया ? खिलाड़ के फेरे भी डाले थे या नहीं ? कहीं लड़की स्कर्ट-पैंट तो नहीं पहनती ?"

जमनादास ने कहा, "तुम्हीं ने तो सिफारिश की थी कि लड़के को अमरीका जाने दो ।"

"मुझे क्या मालूम था कि वहां जाकर वह अंगरेजों-जैसे करतूत कर बैठेगा ।"

"चलो, अब लकीर पीटने से क्या लाभ ? कौन जानता है, इस बहु के आने से और उसकी संतान से तुम्हारे कुल का नाम और अधिक रौशन हो जाए," जमनादास ने कहा ।

"बहु की संतान ? हरिशंकर का पुत्र ? मेरा पौत्र !" इन विचारों से सत्यवती का नारी-हृदय आत्मविभोर हो उठा । उसने केवल इतना ही कहा, "हे ईश्वर ! दोनों को खैर-खुशी से ही यहां लाना ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी कक्षा में डाली नाम की एक लड़की भी पढ़ती थी । उसके माता-पिता दो पीढ़ियों से अमरीका रह रहे थे । सहपाठी के रिश्ते में धीरे-धीरे प्रेम का रंग चढ़ने लगा । आखिर एक दिन हरिशंकर ने डाली के सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया ।

बस, बहु को देखने से पहले ही उसे ...र कर लिया ?'' जमनादास ने थोड़ा मजा ...हुए कहा ।

अच्छा चुप रहो ।'' सत्यवती ने कहा । अमरीका में दो वर्ष का प्रशिक्षण समाप्त हो ...था । हरिशंकर भारत लौट रहे थे । डाली ...कि जैसे-जैसे उनका जहाज भारत के ...पहुंच रहा था, हरिशंकर के चेहरे पर कुछ ...टपकने लगी थी । डाली ने पूछा, ...क्या बात है, तुम घबराये-घबराये-से ...लग रहे हो ? तुम्हें तो खुश होना चाहिए ...कि दो वर्षों के बाद तुम अपनी बहन और ...माता-पिता से मिल रहे हो ।''

बात तो तुम्हारी ठीक है, परंतु मुझे चिंता ...है कि मेरे माता-पिता तुम्हें स्वीकारेंगे ...नहीं, विशेषकर मेरी मां तुम्हें अपने मन ...देगी अथवा नहीं ?''

...कायक जहाज के कैप्टेन ने घोषणा की, ...ही क्षणों में हमारा विमान हवाई-अड्डे पर ...वाला है । कृपया अपनी-अपनी पेटी बांध ...और धूम्रपान बंद कर दीजिए । आशा है ...आपकी यात्रा सुखद रही ।'' थोड़ी देर में ...धावक-पथ पर भाग रहा था । जहाज ...और मुसाफिर नीचे उतरने लगे । हरिशंकर ...तक खोया-खोया-सा था । उसका मन ...ही प्रश्न पर केंद्रित था— डाली...मां... ...कृति ?

दूर से दोनों ने देख लिया कि काफी लोग एयर-पोर्ट के बाहर फूल-मालाएं लिए उनके स्वागत के लिए खड़े हैं ।

हरिशंकर मौन था । कस्टम्स से बाहर आते ही उसने देखा कि उसके माता-पिता और उसकी बहन उसके स्वागत में उपस्थित जन-समूह में सबसे आगे खड़े थे । बहन ने भागकर भाभी को गले लगा लिया और उस पर चुंबनों की बौछार कर दी । जब सास आगे बढ़ी तो डाली ने उसके चरण-स्पर्श किए । सत्यवती ने बहु को गले लगाया; उसका सिर चूमा और उसे शत-शत आशीर्वाद दिया । हरिशंकर टेढ़ी निगाहों से यह सब देख रहा था । उसका डर बिलकुल निराधार निकला । डाली ने भी हरिशंकर की ओर थोड़ा घूमकर देखा मतलब स्पष्ट था ।

बहु की सौम्यता और रमणियता देख सास का रोम-रोम प्रसन्न हो रहा था । घर पहुंचकर सत्यवती ने स्थानीय एवं पारिवारिक मान्यताओं के अनुसार बहु का स्वागत किया ।

दूसरे दिन से सेठ जमनादास ने हरिशंकर को अपनी फैक्टरी का मैनेजिंग-डायरेक्टर घोषित कर दिया । हरिशंकर को तीन मास में कारोबार की समस्त पेचीदगियां समझ में आ गयीं । जमनादास अब अपना अधिक समय पूजा-पाठ में व्यतीत करने लगे ।

उन दिनों लोगों पर अपने बच्चों को पब्लिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूलों में पढ़ाने की सनक सवार थी । हरिशंकर ने निश्चय किया कि वह एक पब्लिक स्कूल खोलेगा । स्कूल की सोसायटी में वह शहर के ऐसे प्रभावशाली लोगों को सदस्यता देगा, जिनसे उसे अपने व्यवसाय में मदद मिल सकती है ।

हरिशंकर ने मंदिर के मुख्य-ट्रस्टी को बुलवाया । उसे अपने आयोजित स्कूल का मैनेजर बनाने का लालच दिया । यह भी कहा, "सरकार से मैं स्वयं निपट लूंगा ।" बस काम बन गया । मुख्य-ट्रस्टी ने पूरा सहयोग देने का वचन दिया । मुख्य-ट्रस्टी ने भक्तगणों में यह प्रचार भी शुरू कर दिया कि नये सेठ साहब ने जनता की भलाई के लिए एक बहुत अच्छे स्कूल की योजना बनायी है । इस प्रकार उसके अवैध कार्य को कुछ वैधता भी प्राप्त हो गयी ।

जमीन पर कब्जा करते ही उसने स्कूल की इमारत बनवानी शुरू कर दी । इसके लिए एक लाख का खर्चा था । हरिशंकर के पास अपनी फैक्टरी के विस्तार और नवीकरण के लिए नंबर दो के पांच लाख रुपये रखे थे । उसे फैक्टरी की नयी मशीनरी मंगवाने के लिए नंबर एक के चार लाख रुपये की जरूरत थी । उसके दिमाग ने काम किया । उसने पांच लाख रुपये स्कूल को दान दे दिये । स्कूल की आमदनी पर कोई टैक्स नहीं होता; इस प्रकार पांच लाख की राशि पर टैक्स बच गया । एक लाख स्कूल की इमारत के लिए रखकर उसने स्कूल की सोसायटी को चार लाख के अपनी फैक्टरी के शेयर खरीदने के लिए राजी कर लिया । जब सोसायटी के सदस्य उसी ने ही नियुक्त किये थे, तब उसकी बात फिर कौन टाल सकता था ।

इस चार लाख से उसे फैक्टरी के विस्तार और उसका उत्पादन बढ़ाने के लिए वांछित राशि भी उपलब्ध हो गयी ।

हरिशंकर का पुत्र एक वर्ष का हो चुका था । इस अवसर पर हरिशंकर ने डिनर का प्रबंध किया था ।

संयोग से डिनर के दूसरे दिन हरिशंकर का पुत्र बीमार पड़ गया । सेठ साहब के पास पैसा तो पानी की तरह था, इसलिए महंगी से महंगी दवाइयां बच्चे को दी गयीं, परंतु बालक ठीक होने का नाम नहीं लेता था । सात दिन की बीमारी में तीन डॉक्टर बदले गये, परंतु बालक और अधिक कमजोर होता जा रहा था । हरिशंकर की मां ने कहा, "इसे ओझा के पास क्यों नहीं ले जाते । वह सैकड़ों बच्चों को ठीक कर चुका है । सारे शहर में वह प्रसिद्ध है ।"

"मुझे जादू, टोने, झाड़, फूंक आदि में तनिक भी विश्वास नहीं है," हरिशंकर ने उत्तर दिया ।

"तुम ही इसे समझाओ ! मैं तो सारी उम्र इसे समझाती-समझाती थक गयी । इसके पल्ले कुछ पड़ता ही नहीं ।" सत्यवती ने बहु की ओर देखते हुए कहा ।

"मां, कुछ आधुनिक जमाने की बात करो । यदि आप सौ साल पुरानी परंपराओं एवं विश्वासों की बातें करोगी, तो उन्हें कौन मानेगा," हरिशंकर ने कहा, पूर्व इसके कि डाली कुछ कह पाए ।

बात काटते हुए सत्यवती ने कहा, "यह दर्शन और विज्ञान की चर्चा का समय नहीं है । मैं तो आज ही बच्चे को ओझा के पास ले जाऊंगी ! देखूंगी, यह (हरिशंकर की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

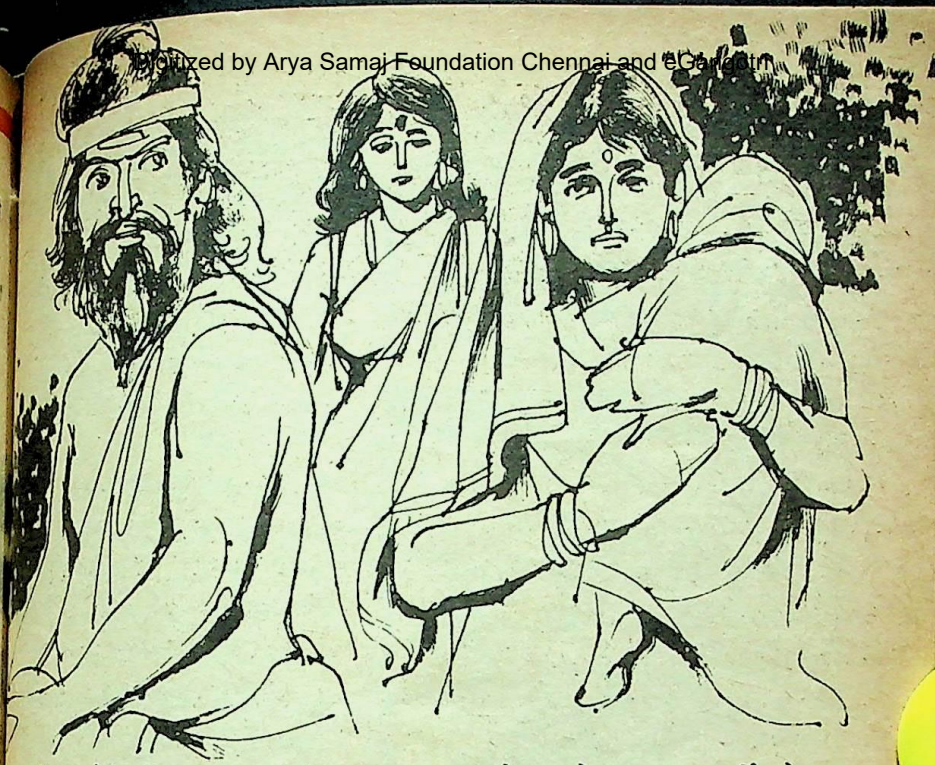

(क्रोध करते हुए) कैसे नहीं मानता ? यदि मेरी बात नहीं मानोगे, तो मैं भी अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगी। बच्चा कमजोर होता जा रहा है और तुम अज्ञानता और नवीनता के चक्कर में पड़े हो।"

डाली ने हस्तक्षेप किया और कहा, "माता जी! जाने दीजिए गुस्से को ! इन्हें (हरिशंकर को) मैं राजी कर लूंगी।"

रात के खाने से निवृत्त होकर सत्यवती, डाली और हरिशंकर बच्चे को लेकर ओझा के घर जाने के लिए तैयार हो गये। ओझा उनके घर से दस किलोमीटर दूर नदी के किनारे एक झुग्गी में रहते थे। वे झाड़-फूंक का काम रात्रि के बारह बजे शुरू करते थे। ओझा का कहना था, "यह समय उन्होंने गुरु के आदेश पर ही चुना है। परंतु यह भी ठीक है कि अस्वाभाविक समय में यदि कोई काम किया जाए, तो लोगों का ध्यान अपने आप से उस तरफ आकर्षित हो जाता है। दूसरा, यह भी है, कि ऐसा काम उजाले में करने से उनका रहस्य शीघ्र खुल जाएगा और नग्न सत्य जल्दी सामने आ जाएगा।

ओझा को सेठ हरिशंकर के आने की सूचना शाम से कर दी गयी थी। सेठ साहब पैसेवाले आसामी थे। उनके पहुंचते ही उनकी बारी लग गयी।

ओझा ने हरिशंकर और डाली से सामनेवाली नदी से स्वच्छ-पानी का लोटा भर लाने को कहा। दोनों ने ऐसा ही किया। ओझा ने दोनों को झुग्गी में पड़ी एक अनोखी-सी मूर्ति के सामने प्रणाम करने को कहा। ओझा ने कुछ निरर्थक मंत्रों का उच्चारण भी किया। तत्पश्चात् उसने बच्चे को उसी लोटे के पानी से नहलाया। फिर दो-एक मंत्र बोले और झाड़-फूंक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप

अपने घर को कम खर्च में सजाना चाहते हैं. कमरों में सही प्रकार की फर्नीचर सैटिंग चाहते हैं. परदों, दीवारों व फर्नीचर में सही तालमेल चाहते हैं. हर कमरे में बहुपयोगी अलमारियां चाहते हैं. सही प्रकार की योजनाओं की जानकारी चाहते हैं तो हिन्दी में पत्राचार द्वारा इन्टीरियर डेकोरेशन सीखिए

अपनी योग्यता बढ़ाएं, ज्ञान बढ़ाएं, घर सजाएं.

इन्टीरियर डेकोरेशन

हॉबी / सर्टिफिकेट कोर्स

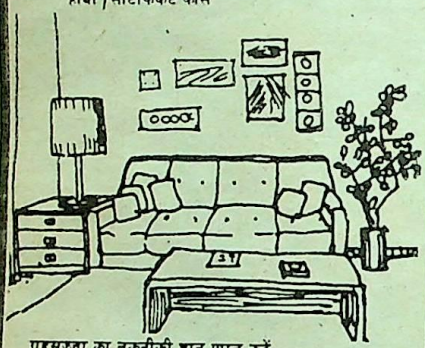

गृहसज्जा का तकनीकी ज्ञान प्राप्त करें.
सुविधानुसार घर बैठे खाली समय में अध्ययन करें.
आसान भाषा में विशेषज्ञों द्वारा तैयार पाठ्यक्रम
मंहगी पुस्तकें खरीदने की जरूरत नहीं.
कोर्स फीस का आसान किश्तों में भुगतान
कोई तकनीकी न्यूनतम योग्यता आवश्यक नहीं.
हिन्दी में पत्राचार द्वारा इन्टीरियर डेकोरेशन का एकमात्र कोर्स
महिलाओं, गृहिणीयों, एवं छात्र-छात्राओं के लिए सर्वोत्तम.
अपनी योग्यता बढ़ाएं तथा घर भी सजाएं
बेडरूम, ड्राइंग/डाइनिंग, रसोईघर, आंगन आदि की सजावट स्वयं कम खर्च में करें.
रंगयोजनाओं, बहुपयोगी बिल्ट-इन फर्नीचर, परदे, प्रकाश व्यवस्था, नयी सजावट सामग्री, पौधों, फर्नीचर-अरेन्जमेन्ट, क्रपबोर्ड तथा अलमारियों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

हर स्त्री, हर गृहिणी के लिए आवश्यक

AID

विवरण के लिए जवाबी लिफाफा भेजें

एकैडमी ऑफ इन्टीरियर डेकोरेशन
10A/14 शक्ति नगर, दिल्ली-110007

प्रक्रिया की । अंत में उसने आदेश दिया कि बच्चे को तीन दिन तक कोई दवाई नहीं देनी । शायद अनुभव से ओझा जानता था कि उसके पास अधिकांश लोग तभी आते हैं, जब वे बच्चे को दवाइयां खिला-खिलाकर हार जाते हैं । अतः इन बच्चों का सबसे बड़ा इलाज उन्हें दवाइयों से छुटकारा दिलाना ही है ।

सत्यवती ने तीन दिन तक कड़ी नजर रखी कि बच्चे को कोई दवाई न दी जाए । संयोग से बच्चा ठीक होने लगा । ओझा का नुस्खा चल गया । जमनादास कहने लगे, "मैं तो पहले ही कहता था कि दवाइयां कम करो ।" हरिशंकर का मत था, "बच्चा दवाइयों से ही ठीक हुआ है । दवाई को असर करने के लिए समय तो लगता ही है । सत्यवती गर्व से कहती थी, "भला, तुम बाप-बेटा कैसे मानोगे कि बच्चा मेरे उपाय बताने से ही ठीक हुआ है ?"

डाली गहन मुद्रा में थी । वह शायद इस तलाश में थी कि सच्चाई कहां है— परंपरा में अथवा नये ज्ञान में; धर्म में या अर्थ में; आध्यात्मिक विज्ञान में अथवा भौतिक-विज्ञान में ? न जाने वह कितनी देर तक इस खोज में भटकती रहती, तब ही उसने बच्चे के रोने की आवाज सुनी । उसे लगा कि शायद वह चिल्लाकर कह रहा था, 'सामंजस्य' । वह भागकर बच्चे के कमरे में गयी । मां को देखकर बच्चे के होंठों पर मुसकान दौड़ गयी । सत्यवती के अनुमान की पुष्टि के लिए इतना ही पर्याप्त था । अभी भी यह प्रश्न उसे आक्रांत कर रहा था, "आधुनिक युग में मानवता कहां खो गई है ?"

बी-३०८, सरस्वती विहार
दिल्ली-११००३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...प देश की हृदय स्थली मध्य प्रदेश को ...तो जानते हैं ना ? मध्य प्रदेश के कई ...र्यटन केंद्रों का आपने सैर भी किया ...। बस्तर की आदिवासी संस्कृति ने आपका ...देह होगा, वहां की लोक परंपरा घोटुल ने ...के बदन में उत्तेजना पैदा की होगी । ...गढ़ की सांस्कृतिक परंपरा से भी आप ...होंगे । सरगुजा के साल वनो में विश्व की ...तम नाट्य शाला और महाकवि ...दास द्वारा प्रसूत मेघदूत की प्रसूत स्थली ...ड़ के आपको अभिभूत किया होगा । ...हो के विश्व प्रसिद्ध मंदिरों की शिल्पकला ...आप भूल पाए हैं ? सांची के बोद्धस्तूपों ...इतिहास भी आप जानते होंगे ।

नूपुरों की रुनझुन

...गना लक्ष्मीबाई एवं दुर्गावती के प्रसंग ...देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत कर रहे होंगे । भेड़ाघाट का जल प्रपात आप देखते रह गये होंगे । महाकाल का आशीष भी आपने पाया होगा । मांडू के किले से आती नूपुरों की रुनझुन और मालवी लोक गीत आपके कानों में रस घोल रहे होंगे । कान्हा किसली का राष्ट्रीय उद्यान, शिवपुरी का राष्ट्रीय उद्यान और बांधवगढ़ की नैसर्गिक छटा भी आप भूले नहीं होंगे । पर क्या आपको याद है, कई राज्यों की जीवन दायिनी गंगा—जैसी पवित्र नर्मदा एवं सोन नदी का उद्गम कहां है ? मुझे मालूम है आप फौरन कहेंगे—अमरकंटक ।

आजकल दूरदर्शन पर महाभारत की बड़ी धूम है । बच्चा-बच्चा शकुनी, विराटनगर, मत्स्यदेश और कीचक को जानने लगा है । यूं तो जानने के लिए महाभारत में महत्त्वपूर्ण दूसरे पात्र भी हैं, दूसरे नगर भी हैं, जिनके बारे में आप बहुत कुछ जानते होंगे । पर कुछ के बारे

कहां है विराटनगर ?

● अमरेश्वर दुबे

इस पूरे क्षेत्र का भ्रमण करने पर यह सहज ही अनुमान लगता है कि यहां कभी बहुत विकसित सभ्यता रही होगी । इस बात का प्रमाण देती हैं जिले के विभिन्न भागों में हजारों की संख्या में पाषाण प्रतिमाएं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज जिसे शहडोल के नाम से जाना जाता है, उसे प्राचीनकाल में विराटनगर के नाम से जाना जाता था । इसी विराटनगर का संबंध महाभारत से है । यह तथ्य इस क्षेत्र में निर्विवाद है । यूं तो मान्यताओं के आधार पर हर अंचल के लोग अपने क्षेत्र का संबंध राम और कृष्ण से जोड़ लेते हैं ।

में सोचते होंगे कि फलां राज्य कहां रहा होगा, राजकुमार उत्तर की कर्म स्थली पर पांडवों का दुर्योधन से विराट युद्ध भी कहीं हुआ होगा । कीचक वध कहां हुआ था ? पांडवों के अज्ञातवास वाला विराटनगर भी तो कहीं इसी देश में रहा होगा । हालांकि हमारे इतिहासकारों ने इन सबको ढूंढ़ निकालने में अपनी कोई कसर नहीं छोड़ी । सब कुछ इतिहास के पन्नों में सुरक्षित कर रखा है, पर समय-समय पर प्राप्त नये प्रमाणों, नये तथ्यों ने पुरानी मान्यताओं को सदा ही चुनौतियां दी हैं ।

इस लेख के प्रारंभिक पंक्तियों में बांधवगढ़ और अमरकंटक का जिक्र आया है एवं अगली पंक्तियों में महाभारत की चर्चा की गयी है । यूं सरसरी तौर पर देखने से इनमें कोई तालमेल बैठता नहीं दीखता, पर और गहरे उतरा जाए तो इनके साथ एक नाम और उभरता है 'शहडोल' । उक्त दोनों ही पर्यटन क्षेत्र शहडोल जिले में ही हैं । तो क्या शहडोल का संबंध महाभारत से है ? उत्तर हां में मिलता है ।

जयपुर-विराटनगर नहीं

आज जिसे शहडोल के नाम से जाना जाता है उसे प्राचीनकाल में विराटनगर के नाम से जाना जाता था । इसी विराटनगर का संबंध महाभारत से है, यह तथ्य इस क्षेत्र में निर्विवाद है । यूं तो—मान्यताओं के आधार पर हर अंचल के लोग अपने क्षेत्र का संबंध राम और कृष्ण से जोड़ लेते हैं, पर जिसने भी महाभारत का अध्ययन किया हो उसका इस अंचल को देखकर यह कह देना कि इसे लोगों ने राजा बसंत (जिन्हें मत्स्य नरेश कहा गया था) की विराटनगरी यूं ही मान लिया है, गलत होगा ।

इस अंचल के खोजी-प्रवृत्ति एवं इतिहास में रुचि रखनेवालों में एक हैं—श्री बालमुकुंद मिश्र, जिन्होंने मध्य प्रदेश शासन के अनुरोध पर ५वीं कक्षा के छात्रों के लिए शहडोल जिले का इतिहास भी लिखा है । श्री मिश्र पिछले कई वर्षों से इस दिशा में कार्य कर रहे हैं कि जयपुर को —विराटनगर मानना न केवल भूल होगी, वरन भावी पीढ़ी को ऐसा मानकर हम इतिहास की गलत जानकारी देंगे । एक मुलाकात में श्री मिश्र कहते हैं कि विद्वतजनों को अपने दिमाग में एक बात स्पष्ट कर लेनी चाहिए कि मत्स्य देश और विराटनगर दोनों एक ही जगह के नाम नहीं हैं । ये दोनों अलग-अलग स्थान हैं ।

विराटनगर और मत्स्य देश दोनों को अलग-अलग कर महाभारत में वर्णित तथ्यों प्राकृतिक, कृषि, जलवायु, भूमि आदि के वर्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को दृष्टिगत रखते हुए यदि इस क्षेत्र का भ्रमण किया जाए, तो यह सहज ही प्रमाणित हो जाएगा कि वर्तमान का शहडोल जिला ही अतीत का वह विराटनगर है, जहां पांडवों ने एक वर्ष का अज्ञातवास व्यतीत किया था । आइए पहले यह देखें कि राजस्थान के विराटा नामक स्थान को विराटनगर मानने में क्या कठिनाई है ।

सबसे बड़ी बात महाभारत में विराटनगर की जिस, भौगोलिक स्थिति का वर्णन है वह राजस्थान की मरू भूमि नहीं, बल्कि एक हरा-भरा उपजाऊ क्षेत्र हैं । वह, पर्वतों, नदियों, झरनों, सघन वन और अपार प्राकृतिक संपदा वाला कोई अन्य क्षेत्र है । जरासंघ के भय से जब महाराजा बसंत मत्स्य देश छोड़कर भागे थे, तब उन्हें किसी ऐसे ही स्थान की तलाश थी जहां छिपकर वो इत्मीनान से रह सकें और शक्ति संचय कर सके । अतः उन्होंने अपनी दूसरी पत्नी के भाई कीचक की सहायता से मेकल राज्य पर आक्रमण किया और इस राज्य को जीतकर इसे अपनी शरण स्थली बनाया ।

इस क्षेत्र की मैकल पर्वत श्रेणियां आज भी वह कहानी दुहराती आपको नजर आ जाएंगी । यहां के घनघोर वन, नर्मदा और सोन का उद्गम अमरकंटक और उपजाऊ भूमि प्रमाणित करती है कि विराटनगर यहीं रहा होगा ।

दूसरी बात, महाभारत में उल्लेख है पांडवों को विराटनगर जाते हुए घनघोर वनों से होकर गुजरना पड़ा, जहां कई हिंसक पशुओं से भी उनका सामना हुआ है । इसके अलावा विराटनगर की दूरी इतनी थी कि वहां पहुंचते-पहुंचते उनके दाढ़ी-मूंछ बढ़ गये थे ।

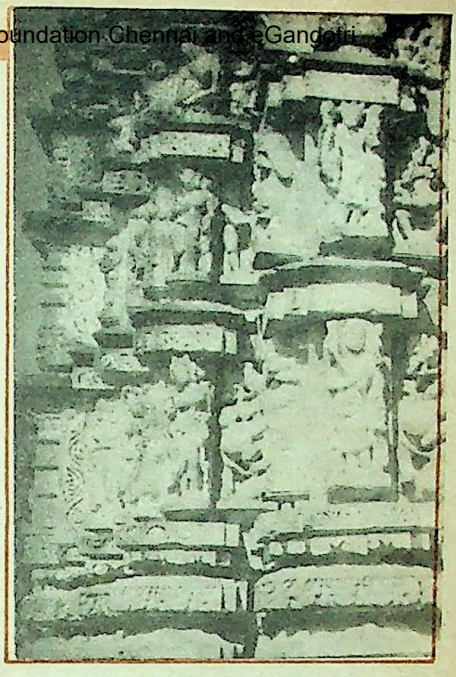

अब यह अविश्वसनीय ही लगता है कि जयपुर से विराटानगर (जिसे अब तक विराटनगर माना जाता रहा है) जाने में पांडवों की दाढ़ी-मूंछ बढ़ जाए और इतना घनघोर जंगल भी हो कि हिंसक वन्य पशुओं से सामना हो ।

तीसरी बात, यह बात भी किंचित अविश्वसनीय लगती है कि हस्तीनापुर नरेश के गुप्तचर दिल्ली के इतने करीब जयपुर के विराटनगर में रह रहे पांडवों का पता न लगा सके ।

अतः उक्त तथ्य स्वतः ही प्रमाणित करते हैं कि जयपुर (राजस्थान) का विराटा नामक स्थान विराटनगर नहीं हो सकता । हां, जयपुर मत्स्य देश अवश्य रहा होगा जो ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित भी है, पर विराटनगर तो आज का शहडोल ही हो सकता है ।

इस पूरे क्षेत्र का भ्रमण करने पर यह सहज ही अनुमान लगता है कि यहां कभी बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकसित सभ्यता रही होगी । इस बात का प्रमाण देती है इस जिले के विभिन्न भागों में हजारों की संख्या में बिखरी पड़ी कल्चुरी युगीन बल्कि यूं कहा जाए ९वीं से ११वीं सदी के समय की पाषाण प्रतिमाएं । जिसमें शिव-पार्वती-दुर्गा, हरिहर, गणेश, विष्णु और बौद्ध प्रतिमाएं प्रमुख हैं ।

लावा की ग्यारह परतें

कई ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्त्व के मंदिर हैं जिनका कोई लिखित प्रमाण मुझे उपलब्ध नहीं हो सका, क्योंकि कहीं भी इसके इतिहास विषयक लेख होने की जानकारी नहीं मिली । इस जिले के अमरकंटक क्षेत्र में नारियल, शंख और वृक्षों के फॉसिल्स बहुतायत से पाये जाते हैं । भूगर्भ विज्ञानियों के अनुसार इस क्षेत्र में ग्यारह बार ज्वालामुखी का विस्फोट हुआ है । लावा की ग्यारह परतें सहज ही देखने को मिलती है । कुछ वर्ष पूर्व इसी क्षेत्र में प्राप्त वृक्ष का एक फॉसिल्स प्रधानमंत्री को भेंटस्वरूप भेजा गया ।

इस क्षेत्र के निवासी यह तथ्य निर्विवाद रूप से स्वीकारते हैं कि यहीं कीचक का वध हुआ था । यहीं कीचक की एक विशाल पाषाण प्रतिमा भी मिली थी, जिसे स्वर्गीय रीवा महाराजा यहां से उठवाकर ले गये थे । यह प्रतिमा अब कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित है । हालांकि पुरातत्वेत्ताओं ने इसे यक्ष की प्रतिमा कहा है ।

इस क्षेत्र को विराटनगर प्रमाणित कराने के उद्देश्य से ८७ वर्षीय समाज सेवी श्री सांधोसिंह पिछले ५७ वर्षों से इस दिशा में कार्य कर रहे हैं । श्री सिंह अपने अनेक खोजपूर्ण लेखों द्वारा यह प्रमाणित कर चुके हैं कि यही शहडोल विराटनगर है । आवेदन-पत्र देकर कई बार शासन से निवेदन करते रहे हैं कि शहडोल का नाम विराटनगर रखा जाए । श्री सिंह के अनुसार उत्तरा-अभिमन्यु विवाह भी यहीं हुआ था, इस स्थान को वर्तमान में शंहशाही आश्रम के रूप में यहां के लोग जानते हैं ।

शहडोल ही विराटनगर है यह तथ्य विंध्यप्रदेश शासनकाल में प्रकाशित पुस्तक 'विंधय भूमि प्रदेश परिचय अंक' एवं म.प्र. शासन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'म.प्र. दर्शन' में भी स्वीकार किया गया है ।

आप कटनी से पाली होते हुए सड़क मार्ग से शहडोल आइए, सोहागपुर पहुंचते ही एक बोर्ड आप देख पाएंगे जिस पर आज भी 'विराटनगर' ही लिखा हुआ है, दरअसल यहां से शहडोल नगर आरंभ हो जाता है । यह क्षेत्र विराटनगर से सोहागपुर और फिर शहडोल कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ, इसके पीछे कई तथ्य हैं जिनका जिक्र यहां अप्रासंगिक होगा ।

तालाब ही तालाब

महाराजा विराट के नाम पर यहां एक अति प्राचीन विराट मंदिर भी है जिसे प्रसिद्ध पुरातत्व वेत्ता राखाल दास बैनर्जी ने भी राजा विराट द्वारा निर्मित बताया है । ऐसा 'महाभारत कालीन विराटनगर के सचित्र दर्शनीय स्थान' नामक पुस्तिका के पृष्ठ ७ पर कहा गया है । इस मंदिर पर बाद में खजुराहो शैली की मूर्तियां चारों ओर से लगा दी गयी हैं वे आज भी दृष्टव्य हैं । हालांकि संरक्षण के अभाव में अधिकांश भाग बालू का ढेर दिखने लगा है ।

शहडोल में आज भी ताल-तलैया इतनी मात्रा में हैं कि जिनकी गिनती करते आप परेशान हो जाएंगे । शहर के विकास के साथ हालांकि इनका अस्तित्व भी समाप्त होता जा रहा है फिर भी बहुत सारे तालाब आज भी सहज ही देखे जा सकते हैं ।

कहा जाता है यहां पूरे ३६६ तालाब थे जिनका निर्माण अपने अज्ञातवास के दौरान पांडवों ने किया था ।

दूसरा प्रमाण 'सभी' का वो वृक्ष है जिस पर देवलोक से प्राप्त एवं अपने सभी शस्त्र पांडवों ने अज्ञातवास के पूर्व छिपा रखे थे । यह वृक्ष आज भी उस युग की कहानी कह रहा है । एक बात जो अविश्वसनीय लगती है वो ये है कि दुनिया में कोई इतना पुराना वृक्ष है ही नहीं । इस विषय पर वनस्पति विज्ञानियों का कहना है कि जिस तरह इनसान की एक निश्चित आयु है उसी तरह वृक्षों की भी आयु निश्चित होती है ।

वैसे भी इस क्षेत्र में अनेक प्राचीन खंडहर हैं, गुफाएं हैं, शिलालेख हैं जिनका अध्ययन संरक्षण बहुत आवश्यक है । कल्चुरी कालीन मूर्तियां तो यहां हजारों की संख्या में बिखरी पड़ी हुई हैं, जिसे कुछ लोग तो स्मगलरों को सौंप चुके हैं । यहीं एक कंकाली दैवी की सेवा करनेवाले महात्मा ने बताया कि मुझे कई बार मारा-पीटा गया है । ताकि इस प्राचीन प्रतिमा को ले जाने दूं । दो-तीन बार इस प्रतिमा की चोरी हो चुकी है जिसे पुलिस के सहयोग से बरामद कर लिया गया है । अब भी वह महात्मा बहुत आतंकित रहते हैं कि पता नहीं कब लोग मुझे गोली मार कर यह प्रतिमा ले जाएं । कुछ प्राचीन प्रतिमाएं स्थानीय लोगों के घरों की शोभा बढ़ा रही हैं इस क्षेत्र में भी यदि खुदाई की जाए तो ढेरों नये तथ्य, उपलब्ध हो सकेंगे ।।

बहरहाल इतिहासवेत्ताओं, विचारकों, विद्वानों और ऐतिहासिक स्थलों में रुचि रखनेवालों के लिए यह क्षेत्र आज भी बहुत कुछ कह रहा है । अपनी बांहें पसारे आवाज दे रहा है, मुझे बचाओ, मुझे सहेजो, पढ़ो, जानो, मध्य प्रदेश में स्थित मैं मत्स्य देश का विराटनगर हूं । मैं प्राचीन मानव संस्कृति का जीता-जागता प्रमाण हूं । भविष्य के लिए बिजली, कोयला और कागज ही नहीं, कागज पर उतारने के लिए भी बहुत कुछ दे सकने में समर्थ हूं ।

कार्यक्रम अधिकारी आकाशवाणी
शहडोल (मध्य प्रदेश)-४८४००१

कर्म सदैव सुख न ला सके परंतु कर्म के बिना सुख नहीं मिलता । —*डिसराइली*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

कोई कार्य नहीं कर सकता

प. कु., सीतापुर : मैं एक २९ वर्ष का विवाहित युवक, सहायक लेखाकार, व दो छोटी-छोटी लड़कियों का पिता हूं। ऑफिस या व्यक्तिगत कार्य हेतु लिखते समय दबाव के साथ ही लिख पाता हूं। साथ ही शरीर के अन्य हिस्सों पर भी तनाव-सा महसूस होता है। जिसकी वजह से जल्दी थक जाता हूं। सुबह उठते ही कोई भी कार्य करने का मन नहीं करता। न दैनिक काम करने का न तत्पश्चात् ऑफिस जाने का। प्रायः ९-१० बजे ही बिस्तर से उठ पाता हूं। इस कारण ऑफिस लेट हो जाता हूं। उच्चाधिकारी से कार्य पूरा न होने के कारण दंड भी पा चुका हूं। ऑफिस कार्य में मन नहीं लगता। बहुत जरूरी कार्य कर पाता हूं। भविष्य अंधकारमय मालूम पड़ता है। आत्मविश्वास की कमी भी है। कहीं नौकरी न चली जाए। कभी-कभी दो-दो, तीन-तीन दिन तक ब्रश नहीं करता व न ही नहाता हूं अजीब-सा मन रहता है।

आपको अवसाद या उदासीनता की बीमारी के लक्षण हैं। इसका सही इलाज मनोचिकित्सक द्वारा संभव है। इसलिए तुरंत अपना इलाज कराएं। दबाव से ही लिख सकना भी अवसाद है, चिकित्सा से सही होते ही ठीक हो जाएगा।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। — संपादक

छोटी उम्र में शादी

अ.क., उदयपुर (राज.) : १७ वर्ष की दसवीं की छात्रा हूं। एक वर्ष पूर्व विवाह एक बेरोजगार युवक से घरवालों ने कर दिया। तय हुआ कि जब नौकरी करने लगेंगे तब मुझे स्थायी रूप से ससुराल भेजा जाएगा। लेकिन एक दिन ससुराल में रहना आवश्यक था। पति को लाख मना करने पर भी उन्होंने संभोग करने पर जोर डाला तथा मुझे मानना पड़ा। अब मैं घर आकर पढ़ाई में लग गयी, परंतु मुझको सब बातें याद आती हैं, मैं उत्तेजित हो जाती हूं तथा हस्तमैथुन करती हूं। इस पर भी जब संतुष्ट न हुई तो चाचा जो मेरी उम्र के हैं, उनसे कहा कि वह मुझसे संभोग करें। लेकिन उन्होंने मुझे समझाया कि ऐसा करना नैतिकता नहीं है। फिर उन्होंने हमारे यहां आना कम कर दिया। परंतु जब भी वह आते हैं, तब मन खुश हो जाता है, परंतु वह मुझ से बात भी नहीं करते। मुझे अब किसी भी पुरुष के स्पर्श से उत्तेजना हो जाती है। यहां तक कि जब मेरे पिता भी प्यार से बिठाते हैं, तो उनमें मैं पति का रूप देखती हूं। मैं यह जानते हुए कि मेरी आयु यह सब सोचने की नहीं, फिर भी अपने को वश में नहीं रख पाती, क्या करूं ?

आपने खुलकर अपनी समस्या व्यक्त की— ऐसी क्षमता बहुत कम स्त्रियों में होती है। साथ ही आपके चाचा का चरित्र भी सराहनीय है। वास्तव में बहुत कम मर्द ऐसा कर पाते हैं। आप सचमुच अपने को भाग्यशाली समझें कि आपका गलत उपयोग नहीं किया गया। मेरे विचार में आपको अपनी काम-इच्छा पर कुछ लगाम तो लगानी ही पड़ेगी। समाज के मूल्यों का भी ध्यान रखना होगा। आप अपने पति से संपर्क जारी रखें, ताकि आपका झुकाव 'किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूं पुरुष' को लेकर न हो ।

यह कैसा जिन्न ?

म. त., इंदौर : कुछ ही दिन पूर्व बड़े भाई का तिला तय हुआ । बाद में किसी शुभचिंतक से पता चला कि लड़की के साथ जिन्न सहवास करता था । इस कारण उसके घरवाले बहुत परेशान थे । उस शुभचिंतक ने अनजाने में मुझसे जिक्र किया वही उसे ओझा से ठीक कराने ले गया । अब वह कुछ ठीक है । लड़की जब दिशा-मैदान के लिए या फिर घर पर अकेली होती थी तब ही यह घटना घटती थी । १५-२० मिनट बाद वह सामान्य हो जाती थी, फिर बेहद सुस्त हो वह रोने लगती थी । क्या यह कोई मनोरोग है अथवा जिन्न का वास ।

आपको किसी भी तरीके से इस लड़की की मनोवैज्ञानिक जांच अवश्य करानी चाहिए । चूंकि बाहर का कोई व्यक्ति नहीं दिखता, जिससे लड़की बात करती हो या फिर शरीर के बिना वजह हिलने आदि को देखकर ऐसा निष्कर्ष आम लोग लगा लेते हैं । वास्तव में यह केवल अंधविश्वास है । मिरगी अथवा साइकोसिस आदि रोग के लक्षण भी कुछ ऐसे ही होते हैं— इसलिए मनोरोग विशेषज्ञ द्वारा जांच आवश्यक है ।

पक्षाघात

देवेन्द्र कुमार वलेचा, आगरा : १२ नवंबर १९८८ में पति को पक्षाघात हुआ, जिससे सीधे हाथ, पैर व जीभ पर असर पड़ा । वे अब बोलते तक नहीं । इस कारण मस्तिष्क पर काफी तनाव रहता है । वह क्या काम करें कि उनका मस्तिष्क शांत रहे । सुझाव दें ।

वास्तव में जब ऐसा रोग अचानक हो जाता है, तब आदमी के भविष्य के सपने, आर्थिक स्थिति पर असर और सामाजिक समस्याएं भी साथ हो जाती हैं, जिनसे जूझना उसके लिए कठिन हो जाता है । आपको चाहिए विवेक से काम लें । उन्हें एक अच्छे स्नायु विशेषज्ञ को दिखाएं तथा मूल रोग-जैसे उच्च रक्तचाप अथवा मधुमेह आदि रोगों का निदान कराएं । फिर आपको किसी मनोचिकित्सा तथा व्यवसाय चिकित्सा व शारीरिक विज्ञान विशेषज्ञ द्वारा कुछ कसरतें करानी चाहिए तथा उन्हें स्वयं सीखकर आप भी उन्हें करा सकती हैं । वाणी विशेषज्ञ की भी इन्हें आवश्यकता है । धीरे-धीरे इनकी हालत सुधरने लगेगी । तभी किसी काम में पुर्नस्थापन संभव है ।

मां का व्यवहार

श. रानी, भागलपुर : मैं १७ वर्ष की छात्रा हूं जो अब घरेलू तनाव के कारण कल्पना की दुनिया का सहारा लेती हूं, इसका पढ़ाई पर बुरा असर हुआ । घर में तनाव का कारण है— ४६ वर्षीया मां जो पढ़ी-लिखी तो हैं, परंतु साथ ही अंधविश्वासी भी, वह बहुत शक्की हैं तथा उनकी दृष्टि से वह जो सोचती हैं वह सब सही है बाकी झूठ है, घर में बहुत गलत व्यवहार करती हैं । अकारण क्रोध तथा शंकाओं से ग्रस्त उनका व्यवहार प्रायः असंतुलित रहता है । वह बहुत पूजा-पाठ भी करती हैं । अपनी गलती कभी नहीं मानतीं, केवल अपने आपको सती-साध्वी महिला समझती हैं और बाकी सबको झूठा और पापी । पहले मुझ पर तथा अब पिता पर आरोप लगाती हैं, कहती हैं, "वह पापी, शराबी तथा पर-स्त्रीगामी है ।" वास्तव में पिताजी ऐसे कुछ नहीं हैं, मां को उच्च रक्तचाप की बीमारी है । हर समय ज्योतिष और तंत्र के पीछे लगी रहती हैं । मां की कई बातें रहस्यमयी लगती हैं— जैसे अपनी पढ़ाई व शादी के बारे में बातें न करना ।

आपकी माताजी 'पैरान्वाइड स्टेट'-जैसे मनोरोग से ग्रस्त हैं, उनका गलत व्यवहार भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी रोग की उपज है, ऐसे मनुष्य को केवल समझाने आदि से कोई लाभ नहीं पहुंच सकता । आपको उन पर क्रोध नहीं करना चाहिए । शीघ्र किसी मनोचिकित्सक द्वारा उपचार कराएं ।

अचानक बेहोश होना

सु.प्र., आसनसोल (प. बंगाल) : मेरी दीदी की आयु २३ वर्ष है, ४ वर्ष पूर्व विवाह हुआ तथा अब एक बच्ची भी है, शादी के लगभग दो साल बाद से वह कभी बेहोश हो जाती हैं, खासतौर से पूर्णिमा के रोज । ये बेहोशी कभी-कभी कुछ समय के लिए आती है और कभी-कभी बहुत देर तक रहती है । अचानक दिन में बहकी-बहकी बातें करने लगती हैं, ऐसे समय में किसी को नहीं पहचानतीं । आजकल उनका स्वास्थ्य भी खराब रहने लगा है ।

इस रोग का पता लगाने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि क्या यह रोग बच्ची पैदा हो जाने के पश्चात कुछ ही दिन बाद शुरू हुआ ? साथ ही जब वह ठीक हो जाती हैं, तब उन्हें बीमारी की बातें कितनी याद रहती हैं ? उनकी स्नायु जांच व मनोवैज्ञानिक जांच होनी आवश्यक है । कभी-कभी मिरगी का रूप भी ऐसा हो सकता है । सही रोग का पता लगने पर ही इसका इलाज संभव है ।

साइकोन्यूरोसिस

डी.के. श्रीवास्तव, दुर्ग : ३० वर्ष का अंतर्मुखी, बैंक में कार्यरत हूं । घर में सबसे बड़ा हूं । १५-१६ वर्ष की आयु से ही अधिक सोचना, घबराहट तथा नकारात्मक दृष्किोण का शिकार हूं । शादी से पूर्व मार्च '८६ में एक रात अचानक दिल की धड़कन बढ़ गयी, तब हृदय रोग विशेषज्ञ द्वारा एक माह उपचार के पश्चात उसने कहा कि यह दिल की बीमारी नहीं है और फिर मुझे मनोचिकित्सक के पास भिजवा दिया । उनका कहना है कि आपको 'साइकोन्यूरोसिस' की बीमारी है । इसके लिए मुझे सोचने का नजरिया बदलना होगा । अपने आपको असुरक्षित महसूस करता हूं । कई बार ई.सी.जी. करा चुका हूं । धड़कन किसी समय तेज हो जाती है तो कभी कम । खाना खाने के बाद वह अवश्य बढ़ जाती है, सीने में दर्द, दबाव तथा भारीपन-सा महसूस होता है । दवाई खाते यह स्थिति बनी हुई है । इसलिए ट्रैंक्युलाइजर लेता ही रहता हूं । कोई पारिवारिक समस्या भी नहीं । कृपया कुछ सुझायें ।

आपको पहले यह देखना होगा कि कोई और शारीरिक रोग जैसे पेट का रोग, मधुमेह अथवा थाइराइड ग्रंथि का रोग तो नहीं । इसके लिए उपयुक्त जांच करानी आवश्यक है । यदि यह जांच किसी शहर के बड़े अस्पताल में ही संभव हो तो वहां से विशेषज्ञों की सलाह लें । मन तथा तन जुड़े रहते हैं । इससे नकारात्मक दृष्टिकोण, असुरक्षा व अधिक सोच का भी असर हो सकता है । इसका इलाज केवल ट्रैंक्युलाइजर द्वारा नहीं । यह केवल थोड़े समय के लिए दिये जाते हैं न कि सारी उम्र के लिए । आपको यदि वास्तव में कोई शारीरिक रोग न निकले तो फिर आप नित व्यायाम करें— दौड़ लगाएं, साइकिल चलाएं, अपनी नब्ज स्वयं न देखें ।

हर मनुष्य की दिल की धड़कन बढ़ती-घटती रहती है । ऐसा होना आवश्यक भी है, क्योंकि कभी शरीर के कुछ अंगों को ज्यादा आक्सीजन व पोषण की आवश्यकता होती है । आप योगासन भी कर सकते हैं, जिससे मन तथा तन दोनों स्वस्थ रहें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथिला का कण-कण वृंदावन की ब्रजधूलि के समान राधा-माधव के भाव से ओत-प्रोत रहा है । भक्ति मार्ग का यह गोलोक और साकेत दोनों है ।

मिथिला की नारियां

● डॉ. मोहनानन्द मिश्र

भारतीय इतिहास में मिथिला की नारियों का अभूतपूर्व योगदान है । विद्या तथा शासन के क्षेत्रों में उनके कार्यों की चर्चाएं यत्र-तत्र होती हैं, किंतु उनके जीवन की सभी विशेषाओं के संबंध में जानकारी नहीं मिलती है । प्रो. राधाकृष्ण चौधरी ने लिखा है कि यह सच है कि मिथिला ने सीता, गार्गी, मैत्रेयी, सुलभा, लखिमा, धीरमती, विश्वासदेवी और चन्द्रकला-जैसी नारियों को पैदा किया, किंतु वे मरुभूमि में ओस बिंदु के समान थीं ।

ब्रह्म विद्या की व्याख्या

मध्यकालीन भारत में भक्ति की जो निर्मल गंगा प्रवाहित हो रही थी, उसमें मिथिला की अनेक विदुषियों ने सहज ही गोता लगाया था । विशेषतः कृष्णभक्ति की परंपरा में इनका उल्लेख आज भी होता है । मिथिला का कण-कण वृंदावन की ब्रजधूली के समान राधा-माधव के भाव से ओत-प्रोत रहा है । भक्तिमार्ग का यह गोलोक और साकेत दोनों है । विद्यापति के पूर्व भी यहां वैष्णव-भक्ति का व्यापक प्रभाव था । यह वही देश है जहां की नारियां प्राचीनकाल में ब्रह्मविद्या की व्याख्या करती थीं । कभी यहीं पर आचार्य मंडन की पत्नी भारती ने आदि शंकराचार्य को पराजित किया था । इसी पुण्यभूमि पर मैत्रेयी और गार्गी के ब्रह्मोपदेश हुए थे । वाचस्पति मिश्र की सर्वस्व समर्पिता भार्या भामती भी इसी धरती की अनमोल रत्न थीं ।

इस प्रकार मिथिला में अनेक नारियां हुईं जिन्होंने ज्ञान और भक्ति के क्षेत्र में सामाजिक संस्करण प्रस्तुत किया । आश्चर्य है कि अभी तक अध्ययन और अनुसंधान के माध्यम से इस विषय को प्रकाश में लाया नहीं जा सका है । राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने साकेत, यशोधरा, जयद्रथवध और द्वापर-जैसी रचनाओं के माध्यम से उर्मिला, मांडवी और यशोधरा के चरित्र को प्रस्तुत करने का साहसपूर्ण प्रयास किया । मैथिली साहित्य में केवल सीता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित्र को ही धार्मिक कथा के रूप में लोकायन का विषय बनाया गया, किंतु अहिल्या के मर्म को मर्मस्पर्शी बनाने का किसी ने प्रयास नहीं किया । मध्यकालीन नारियों के संबंध में केवल चर्चा मात्र ही है । इनके संबंध में साहित्य और इतिहास दोनों ही मौन हैं ।

विभिन्न ग्रंथों और जनश्रुति के अनुशीलन से मिथिला की नारियों के संबंध में कुछ अज्ञात सूचनाएं मिलती हैं जो इस प्रकार हैं—

लखिमा ठकुराईन

मिथिला के विद्वान चंडेश्वर ठाकुर की यह पत्नी थी । मिथिला की जनश्रुति के अनुसार इन्होंने प्रायश्चित लिखकर पं. हरिनाम उपाध्याय की पत्नी का उद्धार किया था । संस्कृत और मैथिली में इनकी अनेक रचनाओं की चर्चा है, किंतु आज वे केवल जनश्रुति में ही सुरक्षित हैं । एक समय किसी पंडित ने लखिमा की विद्या की परीक्षा लेने की ठानी । लखिमा ने पंडित को बड़ा ही सटीक उत्तर दिया था—

सत्यं ब्रवामि मकरध्वज वाणमुग्ध
नाहं त्वदर्थ मनसा परिचिंतयामि
दासोऽय में विघटितस्वतः व तुल्य रूपः
सत्वं भवेत्रहि भवेदिति मे वितर्कः ।

इसमें कवियित्री कहती है कि हे कामदेव के वाण से विदग्ध, मैं तुम्हारे प्रति आकर्षित नहीं हूं । मैं तो दास की खोज में हूं, वह तुम्हारे समान ही है, तुम वही हो या नहीं, यही मैं तर्क कर रही हूं ।

लखिमा ठकुराईन धारा-प्रवाह संस्कृत बोलती थी । यहां तक जनश्रुति है कि संस्कृत साहित्य की गरिमा के क्षेत्र में रघुवंश को काव्य के रूप में नहीं स्वीकार करती थी और कहती थी—

रघुवंश मपि काव्यं, तस्माऽपि टीका,
साऽपि संस्कृतमयी ?

विद्यापति के गीतों में मुख्य रूप से शिवसिंह एवं लखिमा का वर्णन है । राजाशिवसिंह देव एवं सुलतान के बीच सन् १४१६ ई. में युद्ध हुआ, ऐसा समझा जाता है । उस युद्ध में

कवियित्री कहती है कि कामदेव के वाण से विदग्ध, मैं तुम्हारे प्रति आकर्षित नहीं हूं । मैं तो दास की खोज में हूं, वह तुम्हारे समान ही है, तुम वही हो या नहीं, यही मैं तर्क कर रही हूं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथिला नरेश का निधन हुआ अथवा स्वेच्छा से उन्होंने आजीवन अज्ञातवास का कठोरव्रत धारण कर अपनी मर्यादा की रक्षा की जिसका वर्णन मिलता है । पति के देहावसान के संबंध में विश्वसनीय समाचार के अभाव में लखिमा रानी मिथिला के सिंहासन पर बैठी तथा उसने १२ वर्षों तक पति के लौटने की आशा में राज किया ।

ग्रियर्सन के अनुसार लखिमा रानी पद्मसिंह के पश्चात मिथिला की गद्दी पर आसीन हुई किंतु ग्रियर्सन ने स्वयं लिखा है कि १२ वर्षों तक शिवसिंह का कोई समाचार दिल्ली से लखिमा रानी को न प्राप्त हो सका, तब वह सती हो गयी । प्रो. राधाकृष्ण चौधरी भी ऐसा मानते हैं । मजुमदार मानते हैं कि लखिमा रानी ने पति-वियोग से पीड़िता एवं दुःसतप्ता होकर विद्यापति सहित चुने हुए अपने पति के कतिपय विश्वस्त सभासदों के साथ गिरिनारायण उपनामधारी राजा पुरादित्य के राजभवन में त्रिविनिली में जाकर शरण ली । लखिमा रानी कविता करने में कुशल थी ।

लालमती व हासिनी देवी

कीर्तिनारायण की पुत्री के रूप में इसकी चर्चा है । इसने राजा सिंह नारायण को कवित्व शक्ति प्रदान की थी । सन् १६१० ई. में भगवतीपुर में इसकी राजधानी थी । भगवतीपुर शिलालेख से लालमती के संबंध में जानकारी मिलती है ।

विद्यापति ने अपने गीतों में इसे देवसिंह की पत्नी के रूप में स्वीकार किया है किंतु कहीं-कहीं गजसिंह की पत्नी के रूप में वर्णन है । यह कृष्ण भक्तिन थी । 'नानारागगीतम्' के पद्यों में भी हासिनी देवी का उल्लेख है । काव्य-कला में यह प्रवीणा थी ।

रूपमती-राजमती

काठमांडौ शाखा के राजा प्रतापमल्ल देव की दो पत्नियां थीं । उनका विवाह मिथिला में हुआ था । उनकी रानी का नाम रूपमती और राजमती था । इन दोनों के संबंध में यह कहा जाता है कि ये कविता लिखा करती थीं । प्रताप को कवीन्द्र प्रतापमल्ल कहा जाता है । इनकी रानियां संस्कृत व मैथिली भाषा में अधिकार रखती थीं । नेपाल के कांतिपुर की तुलजा भवानी के मंदिर के शिलालेख में उनकी देवी वंदना विषयक मैथिली के दो विलक्षण गीत हैं, जिनसे उनकी प्रतिभा के संबंध में जानकारी मिलती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरमदेवी व चन्द्रकला

यह कंसनारायण की पत्नी थी । भागीरथपुर लेख से इसकी पुष्टि होती है । कंसनारायण का दूसरा नाम लक्ष्मीनाथ था । इसका समय ई. १४९४ ई. से १५३४ ई. तक का है । गोविंद ने भी अपने गीत में इसके संबंध में लिखा है । 'रागतरंगिणी' में भी एक पद्य है जिसमें सोरम देवी की चर्चा है । यह शास्त्रों के संबंध में पर्याप्त ज्ञान रखती थी ।

लखिमा ठकुराईन के समान यह भी कवित्व प्रतिभा से युक्त थी । लोचन ने अपनी 'रागतरंगिणी' में इसके एक पद्य का उल्लेख किया है, जिसमें "**चन्द्रकलाहे वचन करसी, मानिनी माधव अनुसरसी**" का संदर्भ है । इसमें चन्द्रकला ने प्रीतिकरी रागिनी का प्रयोग किया है । प्रो. राधाकृष्ण चौधरी ने इसे विदुषी के रूप में स्वीकार किया है ।

विश्वास देवी

पद्मसिंह राजा शिवसिंह का छोटा भाई था । वह संतानहीन था । अतः इसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी रानी विश्वास देवी मिथिला के सिंहासन पर बैठी । लखिमा रानी के समान उसने भी १२ वर्षों तक शासन किया ।

विद्यापति ने शैवसर्वस्व सार तथा गंगावाक्यावली में उसके गुणों की प्रशंसा की है । वह विद्याप्रेमी तथा विद्वानों को आश्रय देनेवाली महिला शासिका थी ।

माधवी, मधुमती देवी

इसका पूरा नाम माधवी दास है । यह कृष्णभक्त कवियित्री थी । यह पं. जगन्नाथ की शिष्या थी । डॉ. सुकुमार सेन इसे पुरुष कवि मानते हैं । राजेश्वर झा ने इसे मैथिल ललना के रूप में स्वीकार किया है । माधवी चैतन्य महाप्रभु के युग की महिला थी । इसकी अधिकांश कविताएं ब्रजबोली में हैं ।

मैथिली गीतों की परंपरा में इसका उल्लेख है । रामभद्रपुर पदावली में अमृतकर की भणिता में मधुमती की चर्चा है—

सुकवि अमृतकर गाओलरे
पुहुवी नव पञ्चवान
मधुमति देवि××××ल...
हरि विरेसर जान ।।

कमलावती

यह कृष्णनारायण की पत्नी व कृष्ण की उपासिका थीं । काव्य-रचना के प्रति इनका विशेष आकर्षण था—

रसमय श्याम सुंदर गाव,
सकल अधिक भेल मनमथ भाव ।
कृष्ण नारायण ई रस जान
कमलावति पति गुणक निधान ।।

मिथिला की इन विदुषियों में ज्ञान और भक्ति की धारा समान रूप से प्रवाहित होती थीं । मिथिला की विदुषियों के संबंध में जितना कहा जाए कम ही होगा ।

चंदर दत्त द्वारी रोड
पो. ऑ.-टी. बियासी टाऊन
बी. देवघर (बिहार)

"एक महिला की दृष्टि में आदर्श पुरुष बनने के लिए क्या करना चाहिए ?"
"जिंदगीभर कुंवारा रहना चाहिए ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐंग्लिश समाज का क्षेत्र लंदन के समीप एक छोटा-सा गांव है। उसके अपने समाज के ३० प्रतिशत शब्द हैं। शेष ७० प्रतिशत शब्द बाहर की जातियों एवं प्रदेशों के हैं, जिसे वे गर्व से अपना मानते हैं।

राष्ट्रभाषा एवं संस्कृति

● डॉ. उमा मैठानी

आज संपूर्ण राष्ट्र के विश्वविद्यालयों तथा तकनीकी विषयों की संस्थाओं में शिक्षा के पाठ्यक्रम में रटंत एवं घोटंत ज्ञान की प्रतियोगिता चल रही है। छात्र की प्रारंभिक शिक्षा के साथ स्वयं सोच कर लिखने तथा पढ़ने का मानसिक विकास का सत्य कहीं खो गया है। अमरीका में तो सत्यपुराण कथाओं और जीवन मूल्यों पर कई संगोष्ठियां आयोजित की गयीं। जिसके माध्यम से वहां शिक्षा की पद्धति बदलने की बात उठी है। जरमनी में टी. वी. देखनेवाले छात्रों का सर्वेक्षण कर पाया गया कि निरंतर टी. वी. देखने के पश्चात छात्रों के ज्ञान का सूत्र कहीं खो गया है। जो छात्र कक्षा में उच्च स्थान पाते थे, एक वर्ष उपरांत वे सब अनुत्तीर्ण हो गये। इसीलिए वहां छात्रों के लिए कार्यक्रमों का निषेध कर उनके लिए एक विशेष चैनल प्रारंभ किया गया है। जो छात्रों के मन एवं मस्तिष्क में परिवार एवं वातावरण के प्रकृति प्रदत्त संस्कार और आचरण की शृंखला पिरोकर उसे समाज एवं काल से जोड़ते हैं।

अंगरेजी शब्दकोष के साथ चलती है।

यह संपूर्ण विषयों के आचार्यों का मत है कि पाठ्यक्रम के विषयों की महत्ता का आधार भाषा है। किंतु उसका विभाजन करना अनिवार्य है। साहित्य, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, दर्शन आदि सभी विषयों की अपनी-अपनी भाषा एवं शब्दावली होगी, किंतु उसकी रूपता सरल एवं सुगम होनी चाहिए। अंगरेजी भाषा नहीं है। वह एक विशाल शब्दकोष के साथ चलती है। ऐंग्लिश समाज का क्षेत्र लंदन के समीप एक छोटा-सा गांव है। उसके अपने समाज के मात्र ३० प्रतिशत शब्द हैं, शेष ७० प्रतिशत शब्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर की जातियों एवं प्रदेशों के हैं, जिसे वे गर्व से अपना मानते हैं । भारतवर्ष में ऑक्सफोर्ड के जो शब्दकोष आये हैं उनके अंत में 'चमचा', 'चार सौ बीस' आदि सैकड़ों शब्दों की सूची समस्त भारतीय भाषाओं की है, जिसको उनका कोष चलन में अपना स्वीकारता है । इसे भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि अंगरेजी पुस्तकालय व ज्ञान की भाषा है । उसमें १९वीं शती से भारतीय समाज, इतिहास, रामायण, महाभारत, पुराण आदि पर अनेक विश्वकोष छपे हैं । वे भारतीय नहीं थे फिर भी जितना हमारे समाज के ज्ञान में प्रवेश पा सके हमें नयी दिशा दे गये ।

हमारी हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम में कहीं मूल कमी है । अन्यथा बीस साल तक हिंदी पढ़नेवाला युवा जब नौकरी पर आता है, तब वह सचिवालय का अधिकारी हो अथवा लिपिक, पहले प्रशासकीय कोष मेज पर रखता है और तब एक नयी व्यावहारिक भाषा गढ़ता है । विद्वान सेमिनारों में भाषण देते हैं तो अंगरेजी के शब्द अनायास ही उनके मुख से फूटते हैं । हम साधारण पत्र अपने प्रियजनों को लिखते हैं तो अंगरेजी शब्दों एवं मुहावरों का अनुवाद कर लिखते हुए अपनी बात समझाते हैं । यह मानसिकता स्वतंत्रता के चालीस वर्ष पश्चात् भी क्यों है ? यह बात अन्य प्रांतीय भाषाओं (बंगाली को छोड़कर) में भी देखने को मिलती है । बंगाली एक आदर्श रखती है । गुरुदेव टैगोर ने संस्कृत भाषा के दुरूह शब्दों को तराश कर छोटे, सरल एवं सुलभ शब्द बनाये और इस प्रकार आधुनिक बंगाली को एक सशक्त भाषा के रूप में सजाया-संवारा । गुरुदेव की आस्था अपनी दुधबोली माता के दूध से पायी संस्कारी भाषा से रही । उसी भाषा की कसौटी पर उन्होंने बंगला शब्दों को नयी भावना एवं शक्ति दी ।

भाषा शरीर की शिरायें

शब्द प्राणवान होते हैं, उसकी श्वासों में हम जीवन एवं समाज के विस्तार के साथ एक बीते हुए युग से वर्तमान समाज की दिशा प्राप्त करते हैं । दुधबोली से जुड़कर एक क्षेत्रीय ग्रामीण समाज की भाषा बनती है । नगर एवं मुहल्लों के समाज की भाषा में दुधबोली के शब्दों का सुंदर मिश्रण होता है, जिस प्रकार प्रत्येक ग्राम की अपनी भाषा होती है, उसी प्रकार प्रत्येक मुहल्ले की भी अपनी भाषा होती है । ये राष्ट्रभाषा के शरीर की शिरायें होती हैं । जो एक राष्ट्रीय स्वरूप की रचना करते हुए भाषा को झंकारित करती हैं ।

आज एक आम शिकायत सुनने में आती है कि हमारे विश्वविद्यालय के स्तर में गिरावट आ रही है । यह सत्य नहीं है । कारण स्वयं आलोचक अपनी सही पहचान कर उत्तरदायित्व ठीक प्रकार से नहीं निभा पा रहे हैं । क्या कोई अभिभावक गहन रुचि के साथ यह देखता है कि बच्चों को भाषा का क्या पाठ्यक्रम प्रायमरी में पढ़ाया जा रहा है । क्या उसने कभी यह जानने की चेष्टा की है कि प्रायमरी की पुस्तकों में भाषा के जो पाठ पढ़ाये जा रहे हैं, उसमें भारतीय लोक-कथाएं नहीं है वरन् विदेशी लोक कथाओं के अनुवाद हैं । कविताएं, लोरियां तक अंगरेजी कविताओं की छाया लिए हुए हैं । जो पौराणिक कथाएं संकलित हैं, उनकी नैतिक शिक्षा का रूप है—'एकलव्य को अंगूठा काट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालांतर में राष्ट्रीय आंदोलन ने देश-भक्ति का एक रूप पकड़ा और देश-भक्ति की प्रमुखता के मध्य भाषा की बात छूट गयी । स्वतंत्रता के उपरांत हिंदीवालों को यह भ्रम रहा कि अंगरेजी, अंगरेजों के साथ चली जाएगी ।

कर गुरु दक्षिणा' देनी पड़ी कारण कि वह शूद्र था। कैकेयी विमाता थी जो दुष्ट होती है । इससे यह स्पष्ट है कि हम राष्ट्रभाषा के नारे तो खूब लगाते हैं, परंतु उसकी भारतीय एवं राष्ट्रीय पहचान बनाने में असफल सिद्ध हुए हैं ।

संस्कृत भाषा का प्राच्य काल से ही अपना विशिष्ट महत्त्व रहा है, जिसने भारतीय भाषाओं को ही नहीं वरन् पूर्व एशिया एवं यूरोप की भाषाओं के विकास में प्रमुख योगदान दिया है ।

अंगरेजी के आगमन के उपरांत नगरीय भाषा में फारसी, अरबी के शब्दों की बहुलता रही। हिंदी गद्य की भाषा ग्रामीण संस्कारों को न अपना कर संस्कृत भाषा से अपने को जोड़ने के प्रयास में असफल रही ।

हिंदी ग्रामीण बोलियों से जुड़े

हिंदी भाषा कोश के निर्माण में भाषा की बात गहराई से नहीं सोची गयी । पाठ्यक्रम की भाषा अंगरेजी होने के कारण पहले स्कूली अंगरेजी कोषों का निर्माण हुआ । हिंदी के शब्द नगरों से लिए गये थे । अंगरेजी का भाव समझाये बिना ही अनुवाद कर गढ़ दिये गये । फिर इन हिंदी कोषों को जमा कर हिंदी-अंगरेजी कोष बने । हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने के संकल्प के लिए उसके 'भारतीय राष्ट्रीय भाषा कोष' का संपादन होता तो वह राष्ट्रभाषा की रीति बनती और आज हिंदी का विरोध नहीं होता । हिंदी को राष्ट्रभाषा की मान्यता मिले इसके लिए पहली शर्त यह है कि हिंदी पहले अपनी ग्रामीण बोलियों से जुड़कर उसका विश्वास प्राप्त करे साथ ही इतरभाषी विद्वानों से वार्तालाप कर उसे भारत की भारती बनाये । राष्ट्रभाषा सबल होगी तो संदेह स्वयं मिट जाएंगे । हमारा देश भारत है । हमें एक भाषा चाहिए । भाषा का निराकरण होने पर देश की एकता एवं अखंडता बढ़ेगी ।

कालांतर में राष्ट्रीय आंदोलन ने देश-भक्ति का एक रूप पकड़ा और देश-भक्ति की प्रमुखता के मध्य भाषा की बात छूट गयी । स्वतंत्रता के उपरांत हिंदीवालों को यह भ्रम रहा कि अंगरेजी, अंगरेजों के साथ चली जाएगी और उसका स्थान स्वयं ही हिंदी ले लेगी । वे भूल गये कि भारत के अपने कई भौगोलिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र हैं । हिंदी प्रदेशों के क्षेत्रीय समाज एवं लोगों की आकांक्षाओं को बूझ कर उसकी अपनी व्यक्तिवादी राष्ट्रीय पहचान बनायी जाती तो वह समाज भी हिंदी के प्रति आस्थावान होता और हिंदी को बल मिलता, जिससे वह इतर भाषाओं की सांस्कृतिक उपराष्ट्रीय शक्ति प्राप्त कर एक हो जाती ।

राष्ट्रीय सद्भावना की आवश्यकता

उर्दू एक नगरीय भाषा है फिर भी उसका भारतीय राष्ट्रीय इतिहास है । इसका अपना स्वयं का साहित्य है, उसकी भाषा शैली श्लाध्य है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे हिंदी से जुड़ना है । वह गांव की देहाती भाषा नहीं है । हमें फारसी, अरबी प्राच्य साहित्य इतिहास पर गर्व है । उसके विद्वानों ने भारत आकर अनुसंधान कर भारत के संबंध में कई सुंदर आंकड़े जमा करके हमारी संस्कृति, ज्योतिष एवं गणित पर प्रकाश डाला है । भारतीय गिनती और शून्य का ज्ञान फारसी, अरबी ग्रंथों से ही यूरोप गया है । वे भारतीय यूरोपीय संस्कृति के सहयोगी माध्यम रहे हैं । इसका हमें गर्व है । भाषा का प्रश्न एक दिन राष्ट्रीय सद्भावना से सुलझेगा । हमारा भी कुछ दायित्व है । हम अपने प्रकृति प्रदत्त शब्दों एवं धार्मिक संस्कारी शब्दों का संकलन कर हिंदी को दें । हिंदी में लिखते समय कुछ सशक्त शब्द व्यवहार में लाएं ।

हम सामाजिक प्राणी हैं । यातायात की उपलब्धियों से राष्ट्र एक हो गया है तो राष्ट्रभाषा का नवीन रूप देदीप्यमान होगा । भाषा के एक होने में निःसंदेह संपूर्ण कलह शांत होंगे । प्रत्येक व्यक्ति अपनी बात समझाने में समर्थ होगा और समझेगा । झगड़े मिट जाएंगे, आतंकवाद समाप्त होगा । ऐसा लगता है कि आतंकवादी अपनी बात समझाने में कहीं दिशाहीन हो गये हैं, इसलिए उन्होंने आतंक का आश्रय लिया है । संपूर्ण भारतवासियों को एक बार पुनः एक जुट होकर देश को बिखरने से बचाना है, जैसे कि वह स्वतंत्रता के चार दशक पूर्व एक हुए थे ।

—हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल

गीत

छुईमुई रिश्तों की
अनछुई कतरनें ।
टूटी सलाइयों
किस तरह बुनें ।

दायरों में सिमट गये
पीड़ा के स्वर ।
खोखली संवेदनाएं
मिलतीं जर्जर ।
विसंगति जीवन में—
व्यंग्य हो गयी,
कुंठाएं, विवशता की
बांसुरी सुनें ।

अपनापन शहरों का
धुआं हो गया ।
आदमी तो पिंजरे का
सुआ हो गया ।
धागा तलाशते ही—
पांव सुई हो गये,
माला के लिए
झरे फूल क्या चुनें ।

नातों की सौंधी
अब गंध कहां है ।
मीरा दीवानी-सा,
छंद कहां है ।
हो न जाए झीनी
चादर कबीर की,
संयम की रुई फिर
किस तरह धुनें ।

● बृजेश भट्ट
जी-१०६, पटेलनगर—३
गाजियाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित शिव प्रसाद पाठक

मेष : साहस तथा परिश्रम से वातावरण अनुकूल होगा । नवीन योजनाओं से भाग्योदय होगा । यात्रादि पर व्यय होगा । पारिवारिक सुखद समाचार मिलेगा । १ से ७ के मध्य राजकीय अधिकारियों के सहयोग से नवीन योजनाओं में प्रगति होगी । नवीन आर्थिक संसाधन का उदय होगा । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । ८ से १५ के मध्य संपत्ति, वाहन अथवा परिवार संबंधी सुखद समाचार मिलेगा । शत्रु पक्ष के साथ वैमनस्यता क्षीण होगी । १६ से २४ के मध्य यात्रादि की अधिकता तथा आर्थिक अस्थिरता का योग उपस्थित होगा । भावुकता पूर्ण निर्णय टालें । स्वास्थ्य पीड़ा संभावित है । मासांत में रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी । आमोद-प्रमोद पर व्यय होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी ।

महिलाओं को आजीविका की दिशा में विशिष्ट लाभ मिलेगा । स्वजनों से भेंट होगी । पारिवारिक कार्यों में यश मिलेगा । रक्त विकार से पीड़ा होगी ।

विद्यार्थियों को सुखद समाचार मिलेगा । प्रयास में सावधानी रखें । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा ।

वृषभ : मास में भावुकता तथा अंधविश्वास से कष्ट होगा । आजीविका संबंधी उदासीनता रहेगी । पुरुषार्थ से विषम परिस्थितियों में उल्लेखनीय उपलब्धि होगी । १ से ७ के मध्य संपत्ति, वाहन संबंधी कार्यों में सावधानी रखें । निकटजनों से हानि संभावित है । ८ से १५ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा, किंतु कार्य क्षेत्र में अरुचि विद्यमान रहेगी । १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक रुझान बढ़ेगा । श्रम साध्य प्रयास से विशिष्ट लाभ प्राप्ति का योग होगा । मांगलिक कार्यों पर व्यय होगा । मासांत में दौड़धूप की अधिकता होगी । सामाजिक तथा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । यात्रा लाभदायी रहेगी ।

महिलाओं को अस्वस्थता तथा उदासीनता का सामना करना होगा । आजीविका संबंधी प्रयास सफल होंगे । व्यर्थ विवाद टालें ।

ग्रह स्थिति : सूर्य १४ मई से मेष में, मंगल २२ से कुंभ में, बुध मेष में, गुरु मिथुन में, शुक्र २५ से मीन में, शनि मकर में, राहु मकर में, केतु कर्क में, हर्षल नेपच्यून धनु में एवं प्लेटो तुला राशि में परिभ्रमण करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों को रचनात्मक कार्यों से यश मिलेगा । प्रियजनों से भेंट होगी । वाहनादि से सावधानी रखें ।

मिथुन : मास संघर्ष तथा उद्वेग पूर्ण रहेगा । पारिवारिक वातावरण से खिन्नता रहेगी । शत्रु पक्ष से सावधानी हितकर होगी । १ से ७ के मध्य प्रियजनों की चिंता, आजीविका संबंधी उदासीनता का सामना करना होगा । ८ से १५ के मध्य अस्वस्थता पर व्यय होगा । निकटजनों के सहयोग से विद्यमान समस्याओं का समाधान होगा । १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । संपत्ति कार्यों में व्यर्थ विलंब होगा । शत्रु पक्ष गुप्त षडयंत्र कर हानि पहुंचाने का प्रयास करेगा । मासांत में साहस तथा परिश्रम से प्रतिकूल स्थितियों पर नियंत्रण होगा । स्वविवेक से कार्य करें ।

महिलाओं को मानसिक तनाव की अधिकता होगी । उच्चाधिकारियों का सहयोग प्रतिकूल स्थितियों में उत्साहवर्धक होगा । व्यर्थ विवाद टालें ।

विद्यार्थियों को जोखिमपूर्ण कार्य टालना हितकर होगा । पठन-पाठन की उदासीनता रहेगी, वरिष्ठजनों का सहयोग मिलेगा ।

कर्क : मास उन्नत फलदायी होगा, लंबित योजनाओं में सफलता मिलेगी । प्रियजनों का सहयोग उत्साहवर्धक होगा । २२ मई के पश्चात विशिष्ट उपलब्धि होगी । १ से ७ के मध्य राजकीय सहयोग से लंबित योजनाओं में सफलता मिलेगी । यात्रा लाभदायी होगी । प्रियजनों से भेंट होगी । ८ से १५ के मध्य भौतिक सुख साधनों की वृद्धि होगी । विलासितादायी वस्तु पर व्यय होगा । अस्वस्थता पर व्यय होगा । १६ से २४ के मध्य रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों से प्रतिष्ठा बढ़ेगी । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । उत्तम सत्संग सुख होगा । मासांत में संपत्ति संबंधी समस्या का निराकरण होगा । वैभव में वृद्धि होगी ।

महिलाओंको आर्थिक दिशा में सफलता मिलेगी । नवीन दायित्व से कार्याधिक्य रहेगा । स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें ।

विद्यार्थियों को मनोनुकूल समाचार मिलेगा । उत्साह तथा प्रसन्नता दायी वातावरण होगा ।

सिंह : मासारंभ में विषम तथा संघर्षपूर्ण स्थितियों का उदय होगा । उत्साह में पराक्रम तथा पुरुषार्थ से सफलता प्राप्त होगी । १ से ७ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी । शत्रु पक्ष के कारण कार्यों में विलंब होगा । नवीन कार्यों में धन व्यय होगा । ८ से १५ के मध्य

पर्व और त्योहार

१ गंगा सप्तमी, मई दिवस, २ बगलामुखी जयंती, ५ मोहनी एकादशी व्रत, ७ प्रदोष, ८ नृसिंह चतुर्दशी, ९ वैसाली पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, १३ संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी, १८ शीतलाष्टमी, २१ एकादशी व्रत, २४ स्नान आदि की अमावस्या, २५ चंद्रदर्शन, २६ रम्भा तृतीया, २७ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, २९ विंध्यवासिनी पूजा, ३१ धूमावती जयंती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्वस्थता तथा प्रियजनों के क्लेश से पीड़ा होगी। परोपकारी कार्यों से कष्ट का सामना करना होगा। १६ से २४ के मध्य संपत्ति के कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रु पक्ष से सुलह होगी। सुखद समाचार मिलेगा। मासांत में आध्यात्मिक रुझान बढ़ेगा। सामाजिक कार्यों में व्यस्तता होगी। परिवार में धार्मिक, मांगलिक कार्य की संपन्नता होगी।

महिलाओं में अस्वस्थता तथा भावनात्मक दृढ़ता होगी। आर्थिक दिशा में विशिष्ट लाभ संभावित है। स्वजनों का सहयोग मिलेगा।

विद्यार्थियों को कार्यों की अधिकता होगी। यात्रा उत्साहवर्धक होगी। सुखद समाचार मिलेगा।

कन्या : मास में पारिवारिक तथा आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा। आकस्मिक धन लाभ होगा। आध्यात्मिक अथवा रहस्यात्मक विषयों में रुझान बढ़ेगा। १ से ७ के मध्य शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से योजनाओं में प्रगति होगी। आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। ८ से १५ के मध्य पारिवारिक कार्यों में धन व्यय होगा। यात्राओं की अधिकता होगी। मांगलिक कार्य की पूर्णता से प्रसन्नता होगी। १६ से २४ के मध्य उदर विकार एवं मानसिक विभ्रम का सामना करना होगा। आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी। उच्चाधिकारी वर्ग से संयमित व्यवहार रखें। मासांत में आर्थिक दिशा में सफलता मिलेगी। धर्म, रहस्य, विषयों का सत्संग होगा। विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी।

महिलाओं को रक्त अथवा उदरविकार का सामना करना होगा। विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा। आजीविका क्षेत्र में प्रगतिकारक समय होगा।

विद्यार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी। आमोद-प्रमोद पर नियंत्रण रखें।

तुला : मास में सतर्कता से कार्य करें। पारिवारिक वातावरण खिन्नतापूर्ण होगा। आर्थिक अस्थिरता का उदय होगा। शत्रु पक्ष की सक्रियता बढ़ेगी। १ से ७ के मध्य शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग से व्यर्थ विरोधाभास रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखना हितकर होगा। कार्यों की अधिकता रहेगी। ८ से १५ के मध्य पारिवारिक कार्यों में धन व्यय होगा। निकटजन के व्यवहार से खिन्नता होगी। आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी। १६ से २४ के मध्य संपत्ति संबंधी कार्यों में शत्रु पक्ष से पीड़ा होगी। विवादों को टालना हितकर होगा। विलासितादायी वस्तु पर व्यय होगा। मासांत में आर्थिक अस्थिरता चिंतनीय होगी। पारिवारिक वातावरण मनोनुकूल होगा। शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे।

महिलाओं को धैर्य तथा संयम रखना चाहिए। कार्यों की अधिकता के बावजूद यश प्राप्ति का अभाव होगा। आर्थिक चिंताएं रहेंगी।

विद्यार्थियों को अनियमित जीवन के कारण कष्ट का सामना करना होगा। परीक्षा प्रतियोगिता परिणाम उत्साहवर्धक होगा।

वृश्चिक : नवीन योजनाओं से भाग्योदय होगा। साहसिक प्रयासों में लाभ होगा। पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति मनोनुकूल होगी। १ से ७ के मध्य नवीन कार्यों में व्ययों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अधिकता होगी । उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा । आकस्मिक यात्रा से महत्त्वपूर्ण कार्य पूर्ण होगा । ८ से १५ के मध्य श्रम की अधिकता से अस्वस्थता होगी । संपत्ति संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी । १६ से २४ के मध्य जोखिमपूर्ण कार्य लाभदायी सिद्ध होंगे । परिवार तथा समाज में यश बढ़ेगा । शत्रु पक्ष पर कुठाराघात होगा । मासांत में सृजन-लेखन अथवा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा ।

महिलाओंको उत्साहवर्धक वातावरण मिलेगा । स्वजनों के सहयोग से विशेष लाभ होगा । आर्थिक स्थिति में सुधार होगा ।

विद्यार्थियों को परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी । नवीन कार्य की पूर्ति हेतु यात्रा होगी ।

धनु : मास में मनोनुकूल सफलता मिलेगी । शत्रु पक्ष पर विजय मिलेगी । आकस्मिक धन लाभ होगा । १ से ६ के मध्य राज्याधिकारी वर्ग का सहयोग सफलतादायी होगा । पारिवारिक उत्तरदायित्वों की पूर्ति होगी । आकस्मिक धन लाभ होगा । ८ से १५ के मध्य धर्म, अध्यात्म के प्रति रुझान बढ़ेगा । शत्रु पक्ष के षडयंत्रों का भंडा फोड़ होगा । शत्रुओं पर विजय मिलेगी । १६ से २४ के मध्य न्यायालयीन विवादों का निराकरण होगा । लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । मासांत में पारिवारिक सुख मिलेगा । आमोद-प्रमोद पर व्यय होगा । प्रिय जन से भेंट होगी ।

महिलाओं को यश तथा सम्मान मिलेगा । रचनात्मक कार्यों में विशेष सफलता मिलेगी । दायित्वों की अधिकता होगी ।

विद्यार्थियों को परीक्षा प्रतियोगिता संबंधी सुखद समाचार मिलेगा । पारिवारिक सुख मिलेगा ।

मकर : मास में उत्तरदायित्वों की अधिकता होगी । भौतिक सुखों के प्रयास पूर्ण होंगे । अंतर्कलह टालना हितकर होगा । १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा । नवीन पद अथवा दायित्व मिलेगा । संपत्ति के कार्यों में सफलता मिलेगी । ८ से १५ के मध्य शत्रु पक्ष से चला आ रहा विरोध दूर होगा । संयम तथा धैर्य सहित श्रम करेंग । महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्रतीक्षित है । १६ से २४ के मध्य उदासीनता तथा विरक्ति बढ़ेगी । भावुकतापूर्ण निर्णय अहितकर होगा । मासांत में आकस्मिक धन लाभ होगा । विवाद तथा तनाव दूर होंगे । संपन्नता के प्रयास साकार होंगे ।

महिलाओं को पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी । व्यर्थ तनाव टालना हितकर होगा । संपत्ति के कार्यों में सफलता मिलेगी ।

विद्यार्थियों को उत्साहवर्धक समाचार मिलेगा । सुखद यात्रा होगी । परोपकार से यश मिलेगा ।

कुंभ : मास में सम्मान तथा सफलता मिलेगी । विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी । बहुमूल्य वस्तुओं पर व्यय होगा । १ से ७ के मध्य विषम स्थितियों में उच्चाधिकारी सहयोग सफलतादायी होगा । आकस्मिक धन लाभ होगा । अनियमित जीवन से अस्वस्थता का उदय होगा । ८ से १५ के मध्य धन संपत्ति तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...कारों में वृद्धि होगी । सामाजिक जीवन में ...ता बढ़ेगी । १६ से २४ के मध्य इच्छित ...ों की यात्रा होगी । बहुमूल्य वस्तु पर धन ...व होगा । प्रियजनों से भेंट होगी । मासांत में ...र्थिक दिशा में चले आ रहे प्रयास सार्थक ...गे । रचनात्मक एवं कलात्मक अभिरुचि में ...द्धि होगी । सुखद समाचार मिलेगा ।

महिलाओं को यात्रा योग होगा । ...कस्मिक धन लाभ होगा । सुखद समाचार, ...व वृद्धि होगी ।

विद्यार्थियों को परीक्षा प्रतियोगिता के लिए ...ु समय है । मित्रों तथा परिजनों का सहयोग ...लेगा । यात्रा सुखद रहेगी ।

मीन : मास में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि होगी । ...जीविका संबंधी प्रयास पूर्ण होंगे । नवीन ...जनाओं में सफलता मिलेगी । आध्यात्मिक ...भिरुचि बढ़ेगी । १ से ७ के मध्य नवीन ...तरदायित्वों की अधिकता होगी । न्यायालयीन विवाद हल होंगे । धन लाभ होगा । ८ से १५ के मध्य आपकी मानसिक क्षमता से उच्चाधिकारी प्रभावित होंगे । शत्रु पक्ष का पराभव होगा । १६ से २४ के मध्य आत्म-विश्वास तथा परिश्रम से लंबित कार्य पूर्ण होंगे । संपत्ति लाभ का योग उपस्थित होगा । मासांत में पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । स्वजनों का सहयोग मिलेगा । परिचय क्षेत्र का विस्तार होगा ।

महिलाओं को दायित्वों की अधिकता होगी । नवीन आर्थिक संसाधन का उदय होगा । आमोद-प्रमोद पर व्यय होगा ।

विद्यार्थियों को शिक्षा प्रतियोगिता में अनुकूल प्रगति होगी । मासांत में संकल्प पूर्ति होगी ।

—ज्योतिष धाम पत्रिका
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर गोबिंदपुरा
भोपाल (म.प्र.)

मादक पदार्थों की जांच

ब्रिटिश एयरोस्पेस ने 'कंडोर' नामक एक ऐसी शिनाख्त प्रणाली विकसित की है, जो छिपाकर ले जाए जा रहे हशिश और कोकीन-जैसे मादक पदार्थों को तलाश लेने में अचूक है । अब तक यह कार्य विशेष प्रकार के प्रशिक्षित कुत्तों से लिया जाता था, क्योंकि कुत्तों की घ्राण-शक्ति बहुत ही तेज होती है, लेकिन यह प्रणाली कुत्तों की घ्राण-शक्ति से भी अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुई है । इस प्रणाली ने कई बार तो कुत्तों को भी पीछे छोड़ दिया है । इस प्रणाली से वे पदार्थ भी पकड़ में आ गये हैं, जो कुत्तों की घ्राण-शक्ति से छूट गये थे । यह एक इलेक्ट्रोनिक प्रणाली है । इसमें एक स्पेक्ट्रोमीटर लगा होता है । मादक पदार्थ की उपस्थिति से जब आसपास की हवा में परिवर्तन होता है, तो स्पेक्ट्रोमीटर की सुई सक्रिय हो जाती है और भारी भरकम सामान के ढेर में छिपाकर रखे गये मादक पदार्थ भी इसकी पकड़ से बच नहीं पाते ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या करेंगे आप ?

'क्या करेंगे आप' स्तंभ के लिए आप रंग और व्यंग्य की तरंग में डूबी अपनी खिलखिलाती हुई, गुदगुदा देने वाली रचनाएं भेजें। आपकी रचना आठ पंक्तियों से अधिक न हो।

आगामी काव्यचर्चा का विषय है —

'मैनेजर होता चिड़ियाघर का'

संपर्क 'क्या करेंगे आप'
द्वारा : संपादक 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स भवन नयी दिल्ली-१
अंतिम तिथि : २० मई

हों बहनजी या हों अंकलजी

संपादकजी
प्रस्तुत विषय
बड़ा 'निराला' है
बहनजी, 'महादेवी' की
गीतमाला हैं— तो
अंकलजी, 'बच्चन' की
मधुशाला हैं।

— विजय मोहोर

म.नं. ३७१, स्टेट बैंक कॉलोनी
लक्ष्मीपुर, चेरीताल, पोस्ट-जबलपुर (म.प्र.)

प्रतिवेसिन है चतुर सयानी
रिश्ता जोड़ा बहन जेठानी
कभी मांगने को खुद आती
कभी-कभी बच्चों को पिठाती
'वे' तो फूले नहीं समाते
जब संबोधित होते 'लाला'
'हों बहनजी या अंकलजी'
मेरा ही पिट रहा दिवाला

— परमजीत कौर

कार्यपालक दंडाधिकारी पूर्णिया-८४४३०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीतकर जैसे ही, बन गया मैं मिनिस्टर
चाचा बन गया, कोई बन गयी सिस्टर
अचानक दोष भूल, गुण ही गुण गाने लगे
साथ-साथ दोस्तों का, बिगड़ा काम बनाने
बहनजी या हों अंकलजी, सभी से रिश्ता टूटा
पद छिनते ही हो गया हर एक रिश्ता झूठा

— महेन्द्र कुमार वर्मा

हैड पोस्ट ऑफिस के पीछे
पन्ना-४८८-००१ (म.प्र.)

गली-गली में चर्चा होगी
होंगे अपनी कार में
काट रहे हम होंगे
के प्यार में
खेंगे अब बूथ लूटना
के बाजार में
आओ मिलकर विनती कर लें
के दरबार में
विजयी-बहनजी, या हों अंकलजी
आगामी सरकार में

— प्रणव कुमार मुखर्जी

विद्या कॉटेज
पावर हाऊस चौक
माड़ीपुर, मुजफ्फरपुर-८४२००१

बहनजी या हों अंकलजी
हैं एक नंबर के फर्जी
पड़े तो माथा चूमें
तो होती है इलर्जी
अपनी तो यही रीति रही है
'कादम्बिनी' से प्रीति रही है
बनी 'कादम्बिनी' प्यारी
अंकल बस 'राजेन्द्र अवस्थी'

चंद्र भूषण पांडेय 'भूषण'

ग्राम+पो.—सरांव
जि.-छपरा (सारण), पिन-८४१२१२

सरदी में चाहिए रजाई, अथवा हों कंबल जी
कर्मवती-सी बहन चाहिए, नेहरू-से अंकल जी
हिरणाकश्यप-सा पिता न हो, हो कैकेयी-सी मदर नहीं
इच्छा है पुत्र श्रवण-सा हो, ले जन्म भरत-सा ब्रदर कहीं

— महेश चंद्र त्रिपाठी

प्रवक्ता : अंगरेजी
महात्मा गांधी इंटर कॉलेज, सिंधाव, जिला : फतेहपुर

पड़ा सभी पर इसका साया
कौन अछूता है रह पाया
यह महानगर की बस सेवा
कुछ सुख देवा कुछ दुःख देवा
बस आने को बस पाने को
क्षणभर बस में बस जाने को
झेला करते हैं दंगल जी
हों बहनजी या हों अंकल जी

— उत्तम प्रकाश

बी-१९, सैलानी भवन, घौंडा, दिल्ली-५३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलमोहर का छलावा

सिंदूरी-सी सांझ ढलती हुई
रक्ताभ अंबर
दूर-दूर तक छिटका हुआ
शोख लालिमा का गुलमोहर
पल-पल झड़ता रहा
अपलक प्रतीक्षा आनेवाली भोर की
कहीं गुलमोहर का रंगीन छलावा तो नहीं

विद्रोह

बेहद लाल होता आसमान
फिर स्याह-सी होती शाम
अगली सुबह
फिर गुस्से से लाल सूरज
जहानभर में आग लगाने की तैयारी
किरणों-सी छिटकती विद्रोह की चिनगारी

सहयात्री चांद

पगडंडी का सफर
एक शुरुआत तन्हा-तन्हा
पर यह देवदार और चिनार
और इन्हीं के बीच
हमसे छिपता-छिपता
पर पीछे चल देता है चांद
अरे भाई
क्योंकर पीछे छिपे हुए चलते हो
दोस्त बुरे नहीं हो
चाहो तो बराबर-बराबर हो
चल सकते हो
कम-से-कम कुरेदकर
सवाल तो नहीं करते हो
चांदनी की चादर बिछाते हो
पर ख्वाबों के दायरे में
कैद तो नहीं करते हो
यूं भी तुम जमीन के
तंग होते दायरों से दूर
अच्छे दोस्त हो
साथ ही चल सकते हो

वह एक कैक्टस

वह एक कैक्टस
जो कभी-कभी
रेतीली बंजर जमीन पर
आप-ही-आप उग आया करता है
वह एक कैक्टस
जो सिर्फ कांटों का पर्याय हो सकता है
तलाश
रेत में पानी के एक चश्मे की
जो रेगिस्तान के कैक्टस को
अस्तित्वहीन कर सके
संबंधों की हरियाली हरिया सके
पर लगता है
अब तो कैक्टस
कमरे की सजावट का
हिंसा है
आधुनिक होने का
दंभ है
संबंधों की ऊष्मा
कैक्टस की सतहों-सी
चुभती है
और इस एहसास
के साथ
कि यह कैक्टस ही
नयी संस्कृति का बोध

अनामिका श्रीवास्तव

सरोजिनी नायडू छात्रावास इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

आत्म-कथ्य

यूं तो संपूर्ण जीवन ही कुछ रंगीन और कुछ बदरंग अनुभूतियों को समेटते हुए असंबद्ध क्षणों की एक भंवर है, जिसमें विचारों की वर्तुलाकार लहरें हिलोरें मारती हैं । आसपास से गुजरते कुछ क्षणांशों में जब संवेदनाओं का असंपृक्त रह पाना संभव नहीं होता, तब चंद अक्स कविता की शक्ल में कागज पर उभर जाते हैं ।

जन्म— २२ नवंबर, १९६५, शिक्षा— एम.ए. (राजनीति शास्त्र), रुचियां— लेखन, नाटकों, वाद-विवाद आदि में भाग लेना ।

संप्रति— शोध-कार्य एवं आकाशवाणी, इलाहाबाद में आकस्मिक उद्घोषिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रमोहन वर्मा

द्वारा—श्री मदनलाल वर्मा, १, सुभाष चौक, नरसिंहगढ़ (म. प्र.) ४६५-६६९

आत्मकथ्य

दैनंदिन प्रतिद्वंद्विता के चौराहे पर खड़ा होकर जब भी मैं शब्दों की बौछार में भीगता हूं तो अपने नजदीक ही 'कविता' का अहसास करता हूं।

उम्र : २२ वर्ष, शिक्षा : बी.ई. (मेकेनिकल)

रंगमंच

दो तूलिका के
एक बिंदु पर
गोष्ठी की है
कुछ रंगों ने मिलकर
बोलना चाहता है
आकाश के बराबर बिछौना
हवा सिकुड़ता है
जहरीली हवा के अतिक्रमण से
लाल मेरे लहू में जिंदा है
अपना वर्तमान मुट्ठी में थामे
काला बैठ गया वापस
फीकी हंसी हंसकर
लेकिन
सफेद, कहां है सफेद
बताओ मुझे तलाश है उस गुमशुदा की

संघर्ष

संघर्ष ने तैरना चाहा
जलधारा के विरुद्ध
वह डूबने लगा
उसने चिढ़ाना चाहा
बादलों के झुंड को
वह गिर पड़ा, पंख फड़फड़ाकर
संघर्ष
क्या तुमने, चलना सीखा था कभी

बदलते समीकरण

एकलव्य
तुम्हारे अंगूठे से
रिसते हुए खून ने
एक परिभाषा लिखी थी
कलियुगवाले
उसे पढ़ नहीं पाते
उन्हें समझाओ
एक बूंद लहू में छिपे
लाल रंग की कीमत

सफर

मेरे आंसू
चुपचाप खड़े थे
धरती के एक टुकड़े पर
पनाह लिये
हवा की फटकार से
सब गुम हो गये गरम हवा में
अब हवा
दरवाजे पर खड़ी है
तख्ती लिये
उसे चाहिए फिर से
मेरी आंखों में बसेरा

आज की खबर

एक हड़ताल
चबूतरे पर बैठी है
एक दंगा
पेड़ पर टंगा है
एक षड्यंत्र
आस्तीन में लिपटा है
सब
अपनी बारी के इंतजार में
जमाये हुए हैं गिद्ध दृष्टि
विकास की सुइयों पर
और
अखबार के एक कोने को
कोई चिंता नहीं है
आनेवाले कल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष समस्या और समाधान

ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान

प्रविष्टि-९७ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए । सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं । कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं— पाठकों के सुपरिचित कंप्यूटर ज्योतिषी— अजय भाम्बी

उदयन शर्मा, वृन्दावन

प्रश्न : सत्ता कब और किस स्तर की प्राप्त होगी ?

उत्तर : सत्ता तो प्राप्त होती नहीं जान पड़ती लेकिन प्रशासनिक अधिकारी बनने का योग है ।

कैलाश शर्मा, कोटा (राजस्थान)

प्रश्न : अपना उद्योग कब ?

उत्तर : इस वर्ष के उत्तरार्ध में ।

नुसरत अली खां, बदायूं

प्रश्न : मेरा स्वयं का मकान निर्माण-कार्य कब तक संभव है ?

उत्तर : १९९१ के अंत तक ।

ज्वाला पाठक, कोंच (गया)

प्रश्न : निलंबन से मुक्ति कब तक ?

उत्तर : आपको निलंबन से मुक्ति सितंबर '९० और अप्रैल '९१ के मध्य होगी ।

जगदेव सिंह, जहानाबाद

प्रश्न : पारिवारिक समस्याओं का निवारण कब तक ? रत्न सुझाएं ?

उत्तर : अगस्त '९० से पारिवारिक समस्याओं से शनैः-शनैः राहत प्राप्त होगी । छह रत्ती का नीलम धारण करें ।

कु. रेखा रानी शर्मा, मुजफ्फरनगर

प्रश्न : शादी कब और कैसे घर में ?

उत्तर : शादी मार्च, १९९१ तक और शादी से पूर्व कुंडली मिलान अवश्य कराएं ।

डॉ. डोगर प्रसाद, डबरा (ग्वालियर)

प्रश्न : चिकित्सा क्षेत्र में कब तक सफल होऊंगा ? रत्न बतायें ?

उत्तर : दो वर्षों (आगामी) के भीतर डॉक्टर के रूप में अच्छी प्रकार स्थापित हो जाएंगे । छह रत्ती का मोती धारण करें ।

कृष्ण चन्द्र, मैनपुरी (उ. प्र.)

प्रश्न : दुकान के ऋण से कब तक मुक्ति मिलेगी ? रत्न भी सुझाएं ?

उत्तर : जुलाई '९० से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा । पांच रत्ती का पन्ना धारण करें ।

निर्मला, बिहार शरीफ (बिहार)

प्रश्न : संतान का योग है या नहीं ? उपाय बतायें ?

उत्तर : संतान की संभावना कम है । सूर्य की आराधना करें शायद लाभ हो जाए ।

प्रखर मिश्र, चम्पा

प्रश्न : क्या मैं विदेश जा सकूंगा ?

उत्तर : हाल फिलहाल तो कोई योग नहीं है, लेकिन १९९३ में जाने का एक योग बनता है ।

दीपक शर्मा, देहरादून

प्रश्न : आर्थिक एवं संपत्ति विवाद कब तक निपटेंगे ?

उत्तर : आपकी राशि से बृहस्पति २० जुलाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...होगा और लगभग एक वर्ष रहेगा ...शनि भी लाभदायक स्थिति में और ...अनुकूल रहेगी । तभी झंझटों से मुक्ति ...

...बाबू, मुरादाबाद

...विभागीय पदोन्नति कब होगी ?

...इस वर्ष तो नहीं होगी । अगले वर्ष होने ...संभावना है ।

...आकांक्षा निगम, उज्जैन

...नौकरी या व्यवसाय ? व्यवसाय कौन-सा ...?

...फिलहाल व्यवसाय के विषय में न ...। अगले तीन वर्ष तक नौकरी करना ठीक ...।

के.एल. बंथिया, जयपुर

प्रश्न : नौकरी संबंधी परेशानियों से छुटकारा कब तक ?

उत्तर : जुलाई '९० से आपका बहुत अच्छा समय आ रहा है ।

नंद किशोर अग्रवाल, नेवरा

प्रश्न : ऋण मुक्ति कब होगी ?

उत्तर : अगले वर्ष से ऋण मुक्त होने लगेंगे ।

राकेश श्रीवास्तव, कानपुर

प्रश्न : आई.ए.एस. में होने की संभावना है ? हां, तो कब ?

उत्तर : इस वर्ष प्रयास करें, सफलता मिलेगी ।

— भाम्बी कन्सलटेंसी

डी-२/२, जनकपुरी नयी दिल्ली-११००५८

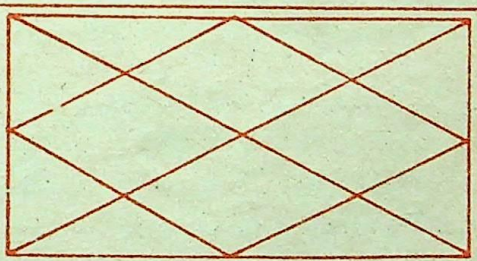

११

नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना..... सन.....

जन्म-स्थान..... जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा ..... वर्तमान .....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

.....

संपादक (ज्योतिष विभाग–प्रविष्टि : ९९) 'कादम्बिनी',

हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

अंतिम तिथि : २० मई, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारीशस में अंतरराष्ट्रीय आयुर्वेद सम्मेलन

अंतरराष्ट्रीय आयुर्वेदिक सम्मेलन
धन्वंतरि की पूजा करते हुए मारीशस
गवर्नर जनरल श्री रिंगाडू एवं वयोवृ
चिकित्सक पं. जगदीशप्रसाद शर्मा

नयी दिल्ली का अंतरराष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान [इंटरनेशनल इस्टीट्यूट ऑव आयुर्वेदिक साईसेज] आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को अंतरराष्ट्रीय मान्यता दिलाने के लिए वर्षों से प्रयत्नशील है । इसमें उसे सफलता भी मिली है । मारीशस सरकार ने एक विधेयक पारित कर आयुर्वेद को एलोपैथी के समकक्ष मान्यता प्रदान कर दी है । अब संस्थान इस बात के लिए प्रयत्नशील है कि अन्य देश भी इस चिकित्सा पद्धति को मान्यता प्रदान करें ।

अंतरराष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के तत्वावधान में मारीशस के मोका स्थित महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट में प्रथम अंतरराष्ट्रीय आयुर्वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया । यह सम्मेलन भारत सरकार, मारीशस सरकार और मारिशस के 'ह्यूमन सर्विस ट्रस्ट' के श्री धनदेव बहादुर एवं श्री विजय मधु के सहयोग से सफल हो सका । इस सम्मेलन में सोवियत संघ, नीदरलैंड और नार्वे के प्रतिनिधियों के अलावा भारत एवं मारीशस के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया ।

इस सम्मेलन में मारीशस के गवर्नर जनरल श्री रिंगाडु, प्रधानमंत्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ, उप-प्रधानमंत्री एवं वित्तमंत्री श्री लक्ष्मी नारायण नायडु एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री जगदीश गोवर्धन और मारीशस असेंबली के स्पीकर ने सक्रिय रूप से भाग लिया ।

इस सम्मेलन में अनेक प्रस्ताव पारित कर आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता प्रतिपादित की गयी । एक प्रस्ताव में मारीशस सरकार से अनुरोध किया गया कि वह देश में आयुर्वेदिक औषधियों के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद सम्मेलन में आये प्रतिनिधियों के साथ मारीशस के प्रधानमंत्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ (मध्य में)

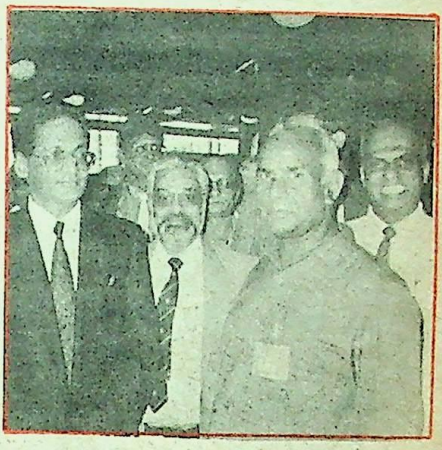

आयुर्वेदिक सम्मलेन में मारीशस के उपप्रधानमंत्री एवं वित्तमंत्री श्री लक्ष्मीनारायण नायडू (एकदम बायें)

आवश्यक जड़ी-बूटियों के संरक्षण और विकास के लिए कदम उठाये और एक म्यूजियम स्थापित करे।

एक अन्य प्रस्ताव द्वारा मारीशस में अंतराष्ट्रीय शोध केंद्र की स्थापना का अनुरोध किया गया ताकि आयुर्वेद का विकास हो सके। सम्मेलन में एक घोषणा स्वीकार की गयी जिसमें कहा गया कि 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' द्वारा २००० ईस्वी तक सबके लिए स्वस्थ जीवन की उपलब्धि में आयुर्वेद और अन्य देशी चिकित्सा पद्धतियां महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है। कारण इन पद्धतियों का आधार प्राकृतिक संसाधन हैं और वे आसानी से जनता द्वारा अपनायी जा सकती हैं। इस घोषणा में विभिन्न देशों द्वारा आयुर्वेद एवं अन्य देशी चिकित्सा पद्धतियों को सरकारी मान्यता देने की आवश्यकता प्रतिपादित की गयी। घोषणा में इन चिकित्सा पद्धतियों की सीमाओं को स्वीकार करते हुए कहा गया कि आधुनिक वैज्ञानिक उपायों द्वारा इन चिकित्सा पद्धतियों को और प्रभावी बनाना चाहिए। आयुर्वेद एवं अन्य चिकित्सा पद्धतियों को संपूर्ण विश्व में लोकप्रिय बनाने के लिए भारत सरकार एवं मारीशस सरकार के अलावा इन देशों के स्वयंसेवी संगठनों को भी आगे आने का आह्वान किया गया। घोषणा में कहा गया कि यद्यपि 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' ने देशी चिकित्सा पद्धतियों को मान्यता दी है तथापि, इन चिकित्सा पद्धतियों के विकास के लिए आर्थिक एवं तकनीकी संसाधन जुटाने की आज महती आवश्यकता है।

सम्मेलन में संस्थान के महासचिव श्री राजेन्द्र अवस्थी ने संस्थान द्वारा आयुर्वेद के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

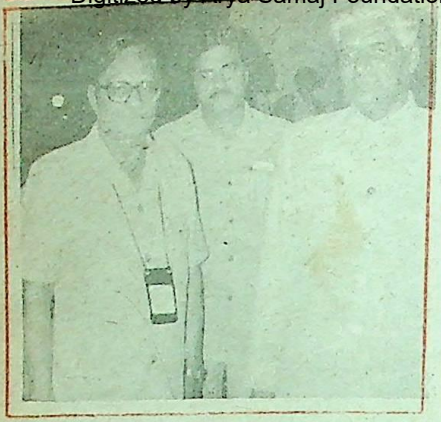

सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि

आयुर्वेद सम्मेलन का उद्घाटन

प्रचार और प्रसार के लिए किये जानेवाले प्रयत्नों पर विस्तृत प्रकाश डाला । संस्थान के अध्यक्ष पं. जगदीश प्रसाद जी शर्मा ने भी अपने दीर्घ अनुभवों की जानकारी देते हुए आयुर्वेद की उपयोगिता पर प्रकाश डाला । सम्मेलन में विभिन्न सत्रों के दौरान आयुर्वेद की उपयोगिता पर विचार-विमर्श किया गया । इन सत्रों के विषय थे—'एक संपूर्ण चिकित्सा पद्धति के रूप में आयुर्वेद', 'नशे के उन्मूलन में आयुर्वेद की भूमिका', 'मारीशस के आम रोग', '२००० ई. तक सबके लिए स्वस्थ जीवन और उसे उपलब्ध कराने में आयुर्वेद की भूमिका ।'

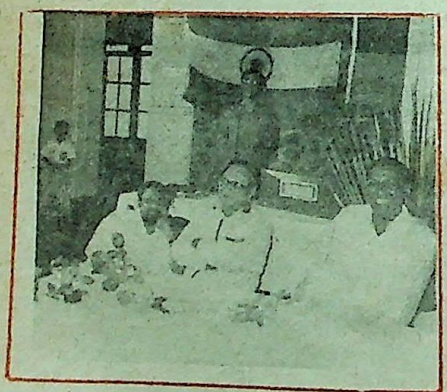

मारीशस में आयोजित कवि-सम्मेलन : काव्य पाठ करते हुए श्री सुरेश नीरव

कवि सम्मेलन

इस अवसर पर मारीशस की विभिन्न साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं ने कवि सम्मेलन भी आयोजित किये, जिसमें प्रधानमंत्री, उप-प्रधानमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री तथा अन्य अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित हुए। भारत से गये कवियों ने जिनका नेतृत्व 'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी कर रहे थे, इस अवसर पर सरस काव्य पाठ किया । सम्मिलित कवियों में सर्वश्री कुंअर बेचैन, सुरेश नीरव, डॉ. अहिल्या मिश्र, वेद प्रकाश सुमन, डॉ. रमासिंह, मनोहर मनोज, प्रभा भारद्वाज, प्रकाश प्रलय, सुरेश शुक्ल, शिवशंकर अवस्थी, जितेंद्र राठौर के अतिरिक्त मारिशस के राष्ट्रकवि मधुकरजी ने भी काव्य पाठ किया । ये कवि सम्मेलन मारीशस की संसद तथा महात्मा गांधी संस्थान मोका के अतिरिक्त अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण स्थानों पर आयोजित किये गये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

हिंदी में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर सशक्त कृतियों के सृजन की परंपरा स्वर्गीय वृंदावन लाल वर्मा के बाद प्रायः समाप्त-सी हो गयी है। ऐतिहासिक कथानकों को आधार बनाकर बहुत कम अच्छे उपन्यास लिखे गये हैं। इस दृष्टि से कथाकार शिवप्रसाद सिंह की नवीनतम कृति 'नीला चांद' उल्लेखनीय है।

'नीला चांद' ऐतिहासिक, शास्त्रीय और लोककृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित एक रोचक कृति है। इसमें लेखक ने परमभट्टारक विद्याधर के कलचुरि वंशज कीर्तिवर्मा और काशी नरेश कर्णसौकीर्ण के संघर्ष की रोमांचक कहानी कही है। उपन्यास का प्रारंभ होता है, खजुराहो के मंदिरों के विनाश और युद्ध में पराजित कीर्तिवर्मा के सोद्देश्य पलायन से। उसके पलायन का उद्देश्य है, शक्ति एकत्र कर लक्ष्मी कर्ण का ऐन केन प्रकारेण पराभव। और इसमें अंततः वह सफल भी होता है। यह इसलिए कि लक्ष्मी कर्ण दुराचारी है, उसके मंत्री, सेनापति और अधिकारी विलासी हैं, तांत्रिकों के जाल में उलझे हुए। दूसरी ओर लक्ष्मी कर्ण की नीतियों से त्रस्त जनता कीर्तिवर्मा के साथ है। और यही जनशक्ति कीर्तिवर्मा की सफलता का कारण भी बनती है।

इस उपन्यास को लिखने में अनेक ऐतिहासिक कृतियों की सहायता ली गयी है, अतः कथानक की प्रामाणिकता भी बनी हुई है। यदि इस उपन्यास के ऐतिहासिक पक्ष को छोड़ भी दें तो भी यह एक पठनीय कृति है। कारण, लेखक ने इसमें कुछ ऐसे पात्रों की रचना की है, जिनके आचार-विचार, व्यवहार और मान्यताएं आज के पाठक के लिए भी उपयोगी और महत्त्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए तपस्विनी श्री मां, कर्त्तव्यनिष्ठ सेनापति गोपाल भट्ट और आर्य रज्जुक। ये तो उपन्यास के महत्त्वपूर्ण पात्र हैं, लेकिन जन-सामान्य का प्रतिनिधित्व करनेवाले भी कुछ चरित्र ऐसे हैं, जो थोड़ी देर के लिए उपन्यास में आते हैं, लेकिन अपनी छाप छोड़ जाते हैं।

'नीला चांद' :

लेखक—शिवप्रसाद सिंह, प्रकाशक—वाणी प्रकाशन, ४६९७/५, २१ ए दरियागंज, नयी दिल्ली। मूल्य-एक सौ बीस रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. (१४ वर्ष), २. प. बगाल के कूचबिहार जिले में १७८ मी. लंबा और ८५ मी. चौड़ा गलियारा, जो तीन ओर से बांग्लादेश से घिरा है। १९७४ के द्विपक्षीय समझौते द्वारा यह बांग्लादेश को दिया जानेवाला है। इसके बदले बांग्लादेश भारत को बेरूगाड़ी क्षेत्र १९७४ में ही दे चुका है, ३. क. ३,२४५ शहरी बस्तियां, जिनमें २७०७ बड़ी तथा ५३८ मध्यम एवं छोटी श्रेणी की हैं (अंतिम दो में से प्रत्येक बस्ती की आबादी ५ लाख से कम है), ख. तिहाई, ४. क. न्यूजीलैंड के रिचर्ड हैडली ने विगत ४ फर. को क्राइस्टचर्च में भारत के विरुद्ध पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में मांजरेकर को बोल्ड करके, ख. १९८५ में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध पहले टेस्ट मैच में— १ पारी में ९ विकेट तथा टेस्ट मैच में १५ विकेट लिए), ५. क साक्षरता वर्ष, ख. बालिका वर्ष, ६. क. हालैंड ने पाकिस्तान को ३-१ से हराकर जीता, ख. १०वां स्थान (अर्जेंटीना से हारकर), ७. क. रूमानिया की नादिया कोमेन्सी ने अमरीका में राजनीतिक शरण ली (१९७६ ओलंपिक में जिमनास्टिक की सातों स्पर्धाओं में पूरे दस अंक अर्जित किये), ख. 'उन्मुक्त जीवन व्यतीत करने' की अभिलाषा, ८. क. सेवन असम राइफल्स के सेकंड लेफ्टीनेंट राजीव संधु को मरणोपरांत —श्रीलंका में भारतीय शांति सेना के अभियान में अदम्य शौर्य का प्रदर्शन (लिट्टे उग्रवादियों द्वारा मारे गये), ख. बेल्जियम के डॉ. माइकल एफ. लेशाट तथा भारत के डा. आर.डी. वार्डेकर को कुष्ठरोग निवारण में महत्त्वपूर्ण योगदान, ९. क. पूर्वी नीदरलैंड की ४७ वर्षीया श्रीमती इनकी स्टीनिसन १९७४ से लगातार १६ वर्ष बेहोश रही, ख. कृत्रिम पोषण बंद किये जाने से पति ने कानूनी तौर पर मृत्युदान दिलाया (२० जनवरी, १९९०) १० 'मून जेली' नामक मछली।

कैकेयी की राम भक्ति

चतुरंग : श्री राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह वयोवृद्ध साहित्यकार हैं। 'चतुरंग' उनके चार उपन्यासों का संकलन है। ये उपन्यास हैं— 'बहारें फिर न आएंगी', 'गुल हुए चिराग महफिल के', 'राजमणि' और 'रूपान्तर'। ये चारों उपन्यास सामंती जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज कहे जा सकते हैं।

'बहारें फिर न आएंगी' में लेखक ने सामंतशाही से जुड़े रीति-रिवाजों, परंपराओं, राजा-रानियों, खवास-खवासियों और उनसे संबंधित घटनाओं का स्वाभाविक, सरस और यथार्थ चित्रण किया है।

'गुल हुए महफिल चिराग के' उपन्यास में केवल सामंती जीवन का ही चित्रण नहीं है, वरन उसमें स्वाधीनता से दो दशकों के पूर्व के जनजीवन को रेखांकित किया गया है। इस काल में अंगरेज शासकों की भूमिका, जमींदारों के अत्याचारों, नमक-सत्याग्रह, स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े प्रसंगों का भी चित्रण किया गया है।

तीसरा उपन्यास **'राजमणि'** तवायफों की जिंदगी और तहजीब का प्रामाणिक दस्तावेज कहा जा सकता है। यह उपन्यास पुरानी खानदानी तवायफों के व्यक्तित्व पर नया प्रकाश डालता है।

'चतुरंग' में संकलित—चौथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—'रूपान्तर' स्वाधीनता के बाद
जीवन में आये परिवर्तनों को सामने
है।
दर्ज उपन्यास पाठक को उस जीवन से
कराते हैं, जो अब अतीत हो चुका है
राजेश्वर बाबू-जैसे वयोवृद्ध अनुभवी
की स्मृतियों में सुरक्षित है।

:
क-राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह,
क-अर्चना पब्लिकेशन्स, २८६, चाणक्यपुरी
ड

कैकेयी की रामभक्ति' : एक खंड
है। रचयिता हैं—शिवबचन चौबे। इस
व्य की रचना पुरानी लीक से हटकर की
जो एक नवीन और साहसिक प्रयोग
ने सर्गों में विभाजित नहीं किया गया है।
कथा के भिन्न-भिन्न रूपों को उसके
क प्रवाह में समाहित कर दिया गया

सही है कि कैकेयी ने लोकहित के लिए
किया। अगर राम वन नहीं जाते तो
का रूप क्या होता ? समस्या राम को
लने की नहीं अपितु धरती को आसुरी
को मुक्ति दिलाने की थी। राम कैकेयी
नों में कहीं पाप नहीं देखते। वे तो
उसकी वंदना करते हैं। कैकेयी के
मानस में एक भावनात्मक भ्रांति फैली
। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने
में उसके चरित्र को एक नया आयाम
। इस खंड काव्य में उस परंपरा को
दिशा मिली है।
तक भरत के मातृनिंदक होने का प्रश्न
ने पूरी चेतना के साथ पुरानी मान्यताओं

का संतुलित खंडन किया है।

लेखक ने इस काव्य में रावण के गुणों और अवगुणों का भी तथ्यपरक विवेचन किया है। कैकेयी तथा भरत के चरित्रों में भी कवि ने अपनी मौलिक प्रतिभा को स्पष्ट किया है। इस खंडकाव्य की भाषा एवं शैली प्रौढ़, प्रांजल एवं प्रवाहमयी है।

कैकेयी की रामभक्ति :
लेखक-शिवबचन चौबे, प्रकाशक-हिंदुस्तान पेपर प्रोडक्ट्स. १३ न, बोनफील्ड लेन, कलकत्ता

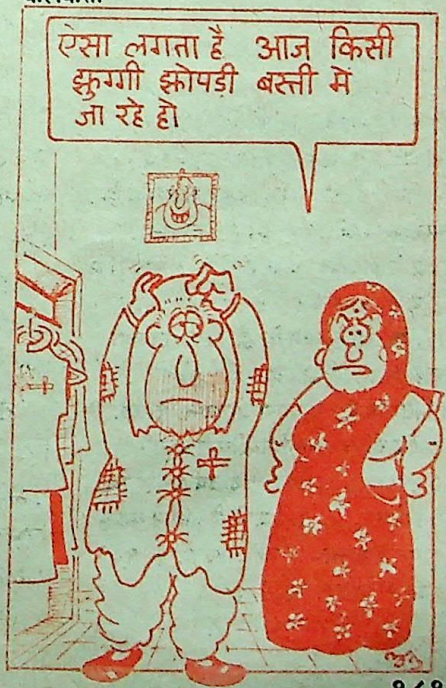

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके भी बयां जुदा जुदा

क्या तुम्हें गैर की बातों पे यकीं होता है
कम से कम मुझसे तो कह दो कि नहीं होता है ।

अतह देहलवी

खूबसूरत जो भी होगा मुझको देखेगा जरूर
आइने-सा मैं लगा बैठा हूं इक दीवार से

सिमाब सुलतानपुरी

कुछ ने शैतान पढ़ा कुछ ने फरिश्ता समझा
तूने क्या लिख दिया 'जगदीश' की पेशानी पर

जगदीश जैन

रात के बाद वही रात का घेरा निकला
जुल्म के शहर में सूरज भी अंधेरा निकला

कुमार पाशी

हमीं पे तोहमते दीवानगी है क्यूं आखिर
बहार खुद भी तो दीवानावार आई है

जकिया सुल्ताना नैयर

मुसकराती रहती है गुनगुनाती रहती है
किस तरह यकीं कर लूं बोलती नहीं आंखें

जमील ताबां

सफर में धूप तो होगी जो चल सको तो चलो
सभी हैं, भीड़ में तुम भी निकल सको तो चलो

निदा फाज़ली

चिराग बनके जले दिल गुलाब बनके खिले
सकूं की आस किसे है मिले मिले, न मिले

गुलाम रबानी ताबां

वह शख्स भला मेरा क्या साथ निभाएगा
मौसम की तरह जिसने सीखा है बदल जाना

सागर आजमी

शायद उसे भी ले गये अच्छे दिनों के काफिले
इस बाग में एक फूल था तेरी तरह हंसता हुआ

बशीर बदर

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

प्राप्ति-स्वीकार

आस्था के गीत : भानुशंकर मेहता, विश्व प्रकाशन, चौक, वाराणसी

मेरी कोख का पांडव : विकेश निझावन, तालिका प्रकाशन, ए-४७/२, शास्त्री कॉलोनी, अंबाला छावनी, हरिद्वार

प्रतिनिधि इन्शाइए : सलीम आगा, सुभाष चुघ, शब्दालोक प्रकाशन, अबोहर

चंद्रोदय : विनीत विक्रम बौद्ध, सम्यक् साहित्य संस्थान, भारत भवन, पंडरा,रीवा

एकै साधै : महेंद्र कुमार, श्रुति प्रिंटर्स, आगरा

आदिहीन अनन्त यात्रा : विपिन अग्रवाल, लोकभारती प्रकाशन, १५ए महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद

एक आलपीन ओर : महेश संतुष्ट, राज पब्लिशिंग हाउस, ९/५/२६, पुराना सीलमपुर पूर्व दिल्ली-३१

प्यासा पंथी : खारा पानी, आनंद लीला : विद्याभूषण श्री रश्मि, गीतांजलि प्रकाशन, दिव्यधाम, खगौल

मुनि द्वेष : डॉ. दर्शन त्रिपाठी, दीपक पब्लिशर्स, भाई हीरा गेट, जालंधर

दरख्त की व्यथा : वेदप्रकाश पांडेय, राजश्री प्रकाशन, बड़ौरा, डेढ़गांवा, गाजीपुर (उ. प्र.)

दस्तक : देवेन्द्र कुमार चौबे, अयन प्रकाशन, १/२०, महरौली, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार-संक्षेप

हत्यारों का अंत

अपराधी कितना ही चतुर क्यों न हो, अंततः वह कानून की गिरफ़्त में आ ही जाता है। वांडरर और डिलिंगर भी ऐसे ही दो खतरनाक अपराधी थे। वांडरर ने अपनी मंगेतर को राह से हटाने के लिए दो-दो हत्याएं कीं। वह बच भी जाता लेकिन एक संपादक की सूझबूझ के कारण न केवल वह पकड़ा गया वरन उसे फांसी के तख्ते पर भी चढ़ना पड़ा

जॉन डिलिंगर ने पुलिस की निगाह से बचने के लिए रूप तक बदल लिया था, लेकिन एक दिन वह पुलिस के हाथों मारा गया। सार-संक्षेप के अंतर्गत प्रस्तुत है—जॉर्ज मुरे द्वारा लिखित 'द रेगुड स्ट्रेंजर' तथा जॉन टोलांड द्वारा लिखित 'द लॉस्ट डेज ऑव डिलिंगर' का सार। प्रस्तोताः नवीन पंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजनबी फटीचर

समाचार पत्रों की शानदार उपलब्धियों की जानकारी रखनेवाले लोग 'फटीचर अजनबी' की कथा से अपरिचित नहीं हो सकते।

कहानी द्वितीय महायुद्ध से पहले की है। द्वितीय महायुद्ध और कोरिया युद्ध से लौटनेवाले सैनिकों का उस जोशो-खरोश से स्वागत नहीं किया गया, जैसा प्रथम महायुद्ध के बाद फ्रांस से लौटनेवाले सैनिकों का किया गया था। फ़्लोरिडा तट से नब्बे मील दूर, क्यूबा में स्पेन-अमरीका युद्ध को छोड़कर, अमरीकी सैनिकों ने प्रथम महायुद्ध के दौरान विदेशी धरती पर पहली बार अपने जौहर दिखाये थे। कुछ वर्षों तक उन सभी सैनिकों को भयमिश्रित सम्मान से देखा जाता था, जिन्होंने फ्लैंडर्स (फ्रांस) में लड़ाई लड़ी थी।

इस कथा के नायक कार्ल वांडरर की कथा को सही परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए इस बात को याद रखना जरूरी है।

कार्ल ओटो वांडरर जरमन मूल का था। उसने बड़े यत्न से पैसा बचाया और जब वह २७ वर्ष का था तब वह अपने पिता के साथ मिलकर एक बूचड़ की दुकान का मालिक बन गया था। यह १९१६ की बात है, जब मैक्सिको के डाकुओं ने पैंचो विला के नेतृत्व में न्यू मैक्सिको में कोलंबस नामक स्थान पर हमला किया। वांडरर ने इलिनाइस की पहली घुड़सवार सेना में शामिल होकर सीमा पार की। उसने दक्षिण सीमा पार की और सुंदरियों के साथ आनंद और उल्लास में कुछ दिन बिताये।

इस क्षेत्र में शांति स्थापित होने तक अमरीका मित्र देशों के साथ प्रथम महायुद्ध में भाग लेने की तैयारी करने लगा था। कार्ल वांडरर फौरन सेना में भरती हो गया। वह पहले भी अनेक लड़ाइयों में भाग ले चुका था। वह पहली अमरीकी फौजी टुकड़ियों के साथ यूरोप रवाना हुआ। उसे युद्ध में भाग लेने से पहले ही सेकंड लेफ्टीनेंट की स्वर्ण पट्टिका दे दी गयी थी। १९१९ के बसंत में जब वह शिकागो लौटा तो उसके सभी पड़ोसियों ने उसका स्वागत किया।

वांडरर की उम्र बत्तीस वर्ष हो गयी थी। अक्तूबर में उसने २० वर्षीया रूथ जानसन से विवाह किया। रूथ की मां के पास बहुत बड़ा मकान था। उसने नवविवाहित दंपत्ति को अपने मकान में रहने का निमंत्रण दिया। नवदंपत्ति ने खुशी से इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया क्योंकि वे पैसा बचाना चाह रहे थे। उस क्रिसमस के बाद रूथ ने कार्ल को बताया कि गरमियां समाप्त होने तक वह पिता बन जाएगा।

यह युवा जोड़ा एक दिन, २१ जून १९२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शाम को पड़ोस में फिल्म देखकर लौट रहा था। जब वे दरवाजा खोलकर अपने घर में पहुंचे तो उनके पीछे चुपचाप एक आदमी भी भीतर आ गया। वांडरर ने बाद में पुलिस को बताया :

"मेरी पत्नी कमरे के स्विच पर हाथ रख रही थी तभी मैंने एक आवाज सुनी : बत्ती मत जलाओ। मेरा हाथ अपनी पिस्तौल पर गया।"

वांडरर ने कहा कि अजनबी ने पहली गोली चलाने से पहले गोलियों की बौछार की। फिर उसने कई गोलियां और चलायीं। अब तक वांडरर के हाथ में उसका कोल्ट-४५ सैनिक आटोमेटिक रिवाल्वर आ गया था। उसने उसे अजनबी की ओर करके खाली कर दिया। कुल मिलाकर उसने चौदह गोलियां चलायीं। गोलियों की बौछार से छोटी-सी इमारत हिल उठी।

वांडरर की सास उसी समय सोने गयी थी। वह फौरन बाहर निकलकर आ गयी। उसने देखा कि वांडरर खून से लथपथ गिरे व्यक्ति को घूंसों और अपनी पिस्तौल से पीट रहा है।

रूथ जानसन वांडरर को सात महीने का गर्भ था। वह केवल अपनी मां से कुछ ही शब्द कह सकी, "मेरा बच्चा, मेरा बच्चा मर गया है।" उसे दो गोलियां लगी थीं। अजनबी को चार गोलियां लगी थीं। उसे रेवंसवुड अस्पताल में मृत घोषित किया गया। उसकी जेब में ३ डॉलर ८० सैंट मिले। रूथ वांडरर को फिर होश नहीं आया। अपनी शैया पर ही उसका प्राणांत हुआ।

एक फौजी की पत्नी और उसके गर्भस्थ

शिशु की अनावश्यक हत्या से शिकागो में दुःख की लहर फैल गयी। वांडरर ने यद्यपि अपनी पत्नी के हत्यारे को मार दिया था, तथापि उसकी गृहस्थी मिट्टी में मिल गयी। पड़ोसियों ने वांडरर की खूब प्रशंसा की। उनके बच्चे उसे पूजने लगे। कब्रिस्तान में वांडरर दुःख से पागल हो गया था। लोगों ने उसे बड़ी कठिनाई से रूथ के ताबूत पर गिरने से रोका।

इस हत्याकांड में इस्तेमाल पिस्तौलें लगभग एक-सी थीं, दोनों भारी सैनिक कोल्ट आटोमेटिक थीं। हर अखबार में उनकी तसवीरें छपीं। हरेक ने तसवीरें देखी और इस विचार मात्र से लोग कांपने लगे कि इन हथियारों ने किस तरह हत्याएं कीं। फिर लोगों ने इस कांड का पूरा विवरण जानने के लिए अखबारों की एक-एक पंक्ति पर आंखें गड़ा दीं। लोग इस हत्याकांड का पूरा ब्यौरा जानना चाहते थे।

सब लोग इन तसवीरों को देख गहरे सोच में पड़ जाते थे। 'दि हेराल्ड इक्जामिनर' के संपादक वाल्टर होवे ने तसवीरों को देखा और उनकी उत्सुकता हिलोरें लेने लगीं। दोनों पिस्तौलें लगभग एक-सी थीं।

होवे की समझ में यह बात तो आ गयी कि फ्रांस से लौटा एक फौजी अफसर इस तरह की सैनिक रिवाल्वर रखे। लेकिन एक फटीचर अजनबी जिसके पास कुछ ही डॉलर थे, अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास ऐसी पिस्तौल रखे, यह बात उसकी समझ में नहीं आयी । अगर इस आदमी की हालत उतनी पतली थी, जितनी उसके चेहरे से दिखायी दे रही थी तो उसने पिस्तौल बेचकर दस-बीस डॉलर क्यों नहीं वसूल लिये ? संपादक ने अपना टेलीफोन उठाया और पुलिस मुख्यालय के समाचार कक्ष में अपने रिपोर्टर से कहा कि वह फटीचर अजनबी और वांडरर के पिस्तौल का नंबर पता करके बताए । पिस्तौलों के नंबर मिलने पर उसने कोल्ट आर्म्स कंपनी को एक तार किया । उसे जिस सूचना की जरूरत थी, वह दूसरे दिन मिली ।

वांडरर की पिस्तौल सेना के भंडार से जारी की गयी थी । वे पिस्तोलों की उस खेप में थीं, जो प्रथम विश्व युद्ध के शुरू में प्रशिक्षण शिविरों को भेजी गयी थीं । शायद यह पिस्तौल वांडरर को तब सहायक हथियार के रूप में जारी की गयी थी, जब वह अधिकारी प्रशिक्षण स्कूल से लौटा था ।

दूसरी पिस्तौल १९१३ में शिकागो में हथियारों की दुकान, वान लेनगर्क एंड एंटोनी को एक खेप में भेजी गयी थी । होवे ने हैरी रोमानोफ से कहा कि वह पिस्तौल के बारे में पूरी सूचना पता करे । वह पिस्तौल वाबाश एवेन्यू स्टोर से निकलने के बाद किसके-किसके पास रही । रोमानौफ ने पता लगाया कि उसे पीटर हाफमैन नाम के टेलीफोन की मरम्मत करनेवाले मिस्तरी ने खरीदा । दूसरे दिन रोमानौफ ने हॉफमैन से इसके बारे में पूछा । उसने बताया कि मैंने उसे अपने साले डाकिये फ्रेड वांडरर को बेच दिया था । फ्रेंड वांडरर कार्ल ओरो वांडरर का चचेरा भाई था ।

संपादक को यह सूचना पहुंचाने के बाद रोमानौफ से कहा गया कि वह हत्या की छानबीन करनेवाले पुलिस दल के साथ फ्रेड वांडरर के घर पहुंचे । उन्होंने फ्रेड को आधी रात में उठाया । 'निस्संदेह पिस्तौल मेरी है । मैं जानता हूं कि वह कहां है । मैंने उसे कार्ल वांडरर को दे रखा है ।' उसे यह पिस्तौल दोहरे हत्याकांड के दिन शाम को सात बजे दी गयी थी ।' फ्रेड वांडरर को उस सनसनीखेज मामले के बावजूद जिसमें उसका भाई भी शामिल था, अपनी पिस्तौल का ध्यान भी न था । उसके दिमाग में यह बात आयी ही नहीं । और अब जब इसके निहितार्थ उसकी समझ में पूरी तरह आये तो वह—फ्रेड वांडरर—बेहोश हो गया ।

रोमानौफ लेफ्टीनेंट जॉन नार्टन के नेतृत्व में पुलिस दल को कार्ल वांडरर के घर ले गया । फौजी 'हीरो' को संदेह में गिरफ़्तार कर लिया गया । उसके पास हर बात का जवाब था । पत्नी की मृत्यु के कारण अपनी विक्षिप्तावस्था में उसने गलत पिस्तौल को अपनी बता दिया होगा । उसने याद दिलाया कि मुझे किस तरह घायल अजनबी के साथ संघर्ष करना पड़ा था, कैसे मैं उसे फर्श पर काबू में लाने का प्रयत्न कर रहा था । यह संभव है कि उसके हाथ में दोनों पिस्तौलें आ गयी हों । वांडरर की कहानी सच लग रही थी । यह साबित करने का कोई तरीका न था कि सैनिक पिस्तौल उसे ही जारी की गयी थी ।

जब हत्या की जांच करनेवाला पुलिस दल वांडरर से आगे पूछताछ कर रहा था, रोमानौफ ने जल्दी से वांडरर के फ़्लैट की तलाशी लेने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैसला किया। दोहरी हत्या समरडेल पुलिस जिले में की गयी थी और रोमानौफ उस जिले के पुलिस अधिकारी लेफ्टीनेंट माइक लोफटस को जानता था। रोमानौफ ने लोफटस के सामने एक प्रस्ताव रखा।

अगर लोफटस सहयोग करे तो 'हेराल्ड' एंड इक्वामिनर' उसे हत्या का रहस्य सुलझाने का पूरा श्रेय देगा। रोमानौफ और लोफटस रूथ वांडरर की मां के यहां जाएंगे। वहां वांडरर अभी भी रह रहा था। वहां लोफटस उसे बातों में लगाएगा। रोमानौफ टेलीफोन करने की अनुमति मांगेगा। यह टेलीफोन वांडरर के शयन कक्ष में था।

यह योजना सफल रही। रोमानौफ ने जल्दी से कमरे की तलाशी ली, उसे कमरे में अनेक लड़कियों के साथ सस्ती बाजारू तसवीरें मिलीं। अधिकांश तसवीरें शिकागो के दो क्रीड़ा स्थलों, वाइट सिटी और रिवरव्यू में ली गयी थीं। तसवीरों में वांडरर एक लड़की के साथ था।

रोमानौफ ने तसवीरें अपनी जेब में रखीं। मेज की दराजों की तलाशी ली, मेज पर रखी मंजूषा को ध्यान से देखा फिर उसने कूड़े की टोकरी की जांच की। उसे उसमें एक पत्र के टुकड़े मिले। उसने उन्हें भी अपनी जेब के हवाले किया।

लेफ्टीनेंट के दफ़्तर में पहुंचकर रोमी ने सभी टुकड़ों को मिलाकर रखा। यह पत्र वांडरर द्वारा एक लड़की को लिखा गया था। पत्र वांडरर की पत्नी की मृत्यु के १५ दिन बाद लिखा गया था। पत्र में कहा गया था : "प्रिये ! मैं आज अकेला हो गया हूं। मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा हूं... मेरी इच्छा है कि तुम मेरे पास होतीं। अगर तुम मेरे पास अकेले नहीं आना चाहती हो तो तुम अपने साथ हिल्डा को ला सकती हो। जूलिया मेरी प्राण। शुभ रात्रि !"

रोमानौफ के पास खोज के लिए केवल एक सूत्र था—जूलिया का नाम। उसने क्रीड़ा-स्थली के चक्कर लगाये, फोटोग्राफरों को जूलिया का चित्र दिखलाया लेकिन कोई वांडरर के साथ उस लड़की को पहचान नहीं सका। इसलिए वह वांडरर से मिलने गया। अकेले, जेल में उसकी कोठरी में। वांडरर रोमानौफ को पहचानने लगा था। उसने पूछा :

"तुम क्या चाहते हो ?"

"मुझे जूलिया ने भेजा है। वह तुमसे मिलने आ रही है।"

"यहां नहीं, उसे मत आने देना।"

"मैं उसे रोकने की कोशिश करूंगा। मैं उसे फोन करूंगा। उसका फोन नंबर क्या है ? मैं भूल गया हूं ?"

वांडरर ने उसे एक फोन नंबर बताया। रोमानौफ जूलिया के पास पहुंचा। वह सोलह वर्ष की एक सुंदर लड़की थी। वांडरर ने उसे अपने को अविवाहित बताया था और उससे विवाह का प्रस्ताव किया था।

रोमानौफ ने लेफ्टीनेंट माइक लोफटस को बुलाया। पुलिस ने जूलिया को गिरफ़्तार कर लिया। कुछ ही घंटों बाद कार्ल वांडरर ने हत्या का अपराध स्वीकार कर लिया।

लोफटस को अपराध की गुत्थी सुलझाने का श्रेय मिला और रोमानौफ को एक सनसनीखेज समाचार अपने पत्र के अंतिम संस्करण के प्रकाशन से कुछ ही पूर्व।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वांडरर के मुकदमे तक इस समाचार को सुर्खियों में रखने की जरूरत थी । इस बात की आशंका थी कि अगर अपराध को प्रमाणित करने के लिए और गवाही इकट्ठा नहीं की गयी तो वांडरर अपनी बात से मुकर न जाए । वाल्टर होवे ने रोमानौफ को पुलिस के साथ मिलकर जांच जारी रखने को कहा । उसने अन्य रिपोर्टरों को मामले के दूसरे पहलुओं का पता लगाने को कहा ।

'हेराल्ड एंड इक्वामिनर' के कर्मचारियों में आस्टिन ओ मैली भी था । प्रतिभाशाली और विद्वान । उसमें शर्लाक होल्म्स की तरह किसी मामले की तह में जाने की क्षमता थी । ओ मैली को पता चला कि रूथ जानसन वांडरर ने अपनी मौत के दिन सेकेंड सिक्युरिटी बैंक से डेढ़ हजार डॉलर निकाले थे । इस पैसे का कोई पता नहीं था । रूथ ने अपनी मां को उस समय बताया था कि वे लोग (कार्ल और रूथ) एक मकान खरीदने की तैयारी कर रहे हैं ।

ओ मैली ने अपनी गाड़ी वांडरर की सास के घर के सामने खड़ी की । उसने तब तक इंतजार किया जब तक कि उसकी सास खरीदारी करने घर से नहीं निकल गयी । फिर उसने 'मास्टर की' की सहायता से घर का ताला खोला । घर के भीतर पहुंचकर उसने सावधानी से उन सभी जगहों की तलाशी ली जहां पैसा छिपाया जा सकता था । वांडरर की अल्मारी में कमीज रखने की जगह में पैसा रखा हुआ था । वांडरर की अल्मारी के निचले हिस्से में उसे प्रेम पत्रों का एक पुलिंदा मिला । प्रेम में पागल एक लड़की ने अपने भावी जीवन साथी को ये पत्र लिखे थे । ये पत्र उस दौरान लिखे गये थे जब रूथ जानसन वांडरर गर्भवती थी ।

वांडरर ने पुलिस को बताया कि विवाह के बाद भी उसने अन्य लड़कियों के साथ संबंध रखना जारी रखा । इस बीच उसे लगा कि एक फौजी 'हीरो' एक ही औरत के साथ विवाह बंधन में बंधकर नहीं रह सकता । वह फिर से सेना में जाना चाहता था । इसमें उसकी पत्नी बाधक थी । तब उसने रूथ से मुक्ति पाने का षड्यंत्र रचा, सारी योजना बहुत ही सावधानी से बनायी गयी थी ।

उसने इस समस्या पर गहराई से विचार करना शुरू किया । उसने इसका तरीका सोचा । उसे एक 'बटमार' की जरूरत थी । वह ऐसे व्यक्ति की तलाश में सस्ते शराबघरों के चक्कर लगाने लगा । एक ऐसे शराबघर में उसकी अल वाटसन से भेंट हुई । अल वाटसन कनाडा का मूल का था और यूरोप में अमरीकी सेना में काम कर चुका था । वाटसन जेम होटल में एक रात का ५० सेंट किराया देकर रहता था । उनकी भेंट तब हुई जब वाटसन ने वांडरर से शराब का दाम देने का अनुरोध किया ।

वांडरर ने वाटसन को अनेक जाम पिलाये । उसने बाद में वाटसन को बताया कि अगर वह अपनी पत्नी की नजर में उसे एक बार फिर 'हीरो' बनने में सहयोग करे तो वह उसे १० डॉलर देगा । योजना यह थी कि अजनबी वांडरर के घर के निकट अंधेरी गली में वांडरर से मिले, वांडरर उसे एक पिस्तौल दे दे, वाटसन उनको लूटने का नाटक करे । वांडरर एक मुक्का लगा उसे धराशायी कर दे । वांडरर की पत्नी देखे कि उसका बहादुर पति किस तरह निहत्थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक हथियारबंद आदमी का सामना करता है और उसे गिरा देता है ।

वांडरर की जेब में अखबारों की कतरनें थीं, जो साबित करती थीं कि वह फौजी हीरो है । उसके पास पिस्तौल थी, जिसे वह हमेशा अपने पास रखता था । अल वाटसन को लगा कि वह आसानी से १० डॉलर कमा सकता है । वाटसन योजना से सहमत हो गया । वांडरर ने उसे ५ डॉलर पेशगी में दे दिये ।

वांडरर ने इस बात की अच्छी तरह पुष्टि कर ली कि जो आदमी उसका और उसकी पत्नी का इयोढ़ी में पीछा करे वह अल वाटसन ही हो । इसके बाद उसने दोनों पिस्तौलों को निकाला और उनके घोड़े चढ़ाये । उसने एक से वाटसन पर दूसरी से अपनी पत्नी पर गोलियां चलायीं । दोनों के गिरने के बाद उसने दोनों पर यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह जिंदा न बचने पाये अतिरिक्त गोलियां चलायीं ।

कार्ल वांडरर पर मुकदमा चलाया गया । उस पर रूथ जानसन वांडरर की हत्या का आरोप लगाया । उसे दोषी पाया गया और २० वर्ष की कैद की सजा सुनायी गयी ।

वाल्टर होवे को इस फैसले से जबरदस्त धक्का लगा । उसकी नजर में यह न्याय की हत्या थी । उसने हर रोज जूरी के उन सदस्यों की फोटो छापना शुरू किया जिन्होंने कार्ल ओटो वांडरर के साथ इतना उदारता का व्यवहार किया था । उसने जूरी के सदस्यों के नाम पते और टेलीफोन नंबर प्रकाशित किये । उसने 'हेराल्ड एंड इक्ज़ामिनर' के पाठकों से अनुरोध किया कि वे उन्हें टेलीफोन करके, बेहतर हो, आधी रात में—बताएं कि लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं ।

दि 'हेराल्ड एंड इक्ज़ामिनर' ने मांग की कि वांडरर पर फटीचर अजनबी की हत्या का आरोप लगाया जाए, उसे जेल से लाकर उस पर दूसरी हत्या का मुकदमा चलाया जाए । एक निष्ठावान संघर्षशील संपादक समाज की सोयी आत्मा को उठा सकता है । राज्य के वकील ने जूरी के सामने गवाही रखी, जूरी ने आरोपों को सही पाया, और फौजदारी अदालत के मुख्य न्यायाधीश ने वांडरर पर हत्या का अभियोग लगाया ।

इस बार दोषी पाये जाने पर वांडरर को फांसी की सजा सुनायी गयी । जूरी के एक सदस्य ने बाद में बताया कि वह स्वयं और उसके साथी वाल्टर होवे भयभीत थे । वह उनके बारे में क्या छाप दे इस आशंका से वे इतने डरे थे कि उन्होंने फांसी की सजा के अलावा किसी अन्य विकल्प पर विचार ही नहीं किया ।

दूसरे मुकदमे के दौरान उस शराबघर का मालिक, जहां अल वाटसन रहता था । हाल में मरे अल वाटसन के बारे में भावुक हो गया । मुकदमे से शराबखाने का काफी प्रचार हो गया था और उस पर लोगों की भीड़ उमड़ने लगी थी । शराबखाने के मालिक ने वाटसन के शव को पॉटर्स फील्ड से हटवाकर नियमपूर्वक ईसाई विधि से उसका अंतिम संस्कार कराया । उसकी कब्र पर जो पत्थर लगाया गया उसमें लिखा था —'फटीचर अजनबी ।'

कार्ल ओटो वांडरर को १९ मार्च १९२१ को फांसी दी गयी । इस अवसर पर दो रिपोर्टर उपस्थित थे । 'हेराल्ड एंड इक्ज़ामिनर' का चार्ल्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेकआर्थर और 'डेली न्यूज' का बेन हेच ।

मौत की प्रतीक्षा क़रनेवाले सबसे प्रसिद्ध कैदी के साथ अपनी दैनिक भेंट वार्ता से उन्हें पता चला कि वांडरर बचपन में अच्छा गायक था । यह समाचार दोनों पत्रों में भी प्रकाशित हुआ । उसकी आवाज अभी भी सुरीली थी । मेक आर्थर और हेच के अनुरोध पर उसने अपनी पसंद का गीत 'ओल्ड पाल व्हाय डोंट यू आंसर मी' सुनाया ।

यह भय पैदा करनेवाला गीत था । पहला गीत समाप्त होने पर वांडरर ने शैरिफ हौफमैन द्वारा पेश नकाब (मुखावरण) को हटा दिया और दूसरा गीत गाने लगा । हत्यारे के चेहरे पर बहनेवाले आंसुओं ने श्रोताओं को बता दिया कि भय, आतंक अथवा पागलपन के दौरे के कारण उसका मन टूट रहा है ।

हर किसी को यह देख परेशानी हुई । शैरिफ हौफमैन ने दूसरे गीत के मध्य में वांडरर के चेहरे पर नकाब डाल दिया । फिर पीछे खड़े डिप्टी को इशारा किया गया और फंदा डाला गया । कार्ल वांडरर एक प्राण के झटके के साथ लुप्त हो गये ।

डिलिंगर के अंतिम दिन

साउथ बेंड डाके से दो सप्ताह पहले डिलिंगर की भेंट पाली हैमिल्टन से हुई थी । पाली एक आकर्षक छब्बीस वर्षीया युवती थी और शिकागो के एक रेस्तरां में काम करती थी । रेस्तरां की अन्य 'वेटरिस' (परिवेषिकाएं) उसे चिढ़ाती थीं कि वह ऐसे आदमी के साथ बाहर जाती है जो "डिलिंगर-जैसा दिखायी देता है ।" पाली डिलिंगर के साथ उस आदमी की अद्‌भुत समानता के बावजूद हमेशा की तरह हंस देती थी ।

उसके लिए वह जिमी लारेंस, एक क्लर्क था । वह अत्यंत विनम्र था, धीरे बोलता था और उदार था । वह उसके लिए हीरे की एक अंगूठी खरीद चुका था और उसने उसे अपना दांत लगाने के लिए ५० डॉलर दिये थे ।

पाली ने अपनी मित्र एना सेज से एक कमरा किराये पर लिया । एना सेज के पास नार्थ साइड (उत्तरी दिशा) में एक एपार्टमेंट था । श्रीमती सेज एक भारी-भरकम चौड़े मुंह की ४२ वर्षीया महिला थीं । उसका उच्चारण एकदम विदेशी था । वह लगभग पंद्रह वर्ष पहले रोमानिया से अमरीका आयी थी और एक चकलाघर चलाती थी । उसे दो बार इस आरोप में सजा भी हुई थी । इंडियाना के गवर्नर लेसली ने उसे दोनों बार क्षमा प्रदान कर दी थी । इसके बाद मैकनट गवर्नर हो गया और श्रीमती सेज के बुरे दिन आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...। मैकनट ने तीसरी बार श्रीमती सेज को ...दान करने से इनकार कर दिया । इसके ...द इमिग्रेशन ब्यूरो (आप्रवास कार्यालय) ...छनीय विदेशी के रूप में उसे रोमानिया ...ने की तैयारी करने लगा ।

इसी एपार्टमेंट में पाली का २३ वर्षीय पुत्र, ...शिओलाक भी रहता था । अनेक बार वह ...र उसकी प्रेमिका डिलिंगर और पाली ...न्टन के साथ फिल्म देखने अथवा नाइट ...ब में भी गये । डिलिंगर हमेशा ऐसा ...खाता था मानो कि उसे कोई चिंता नहीं है । ...के साथियों का खयाल था कि वह एक ...रामपसंद, दूसरों का ध्यान रखनेवाला और ...दिल अजीज आदमी है ।

जुलाई के मध्य तक श्रीमती सेज के ...स-पड़ोस में डिलिंगर अत्यधिक लोकप्रिय हो ...या था । सड़क के उस पार कभी-कभी वह ...योग्राफ बार्बर शाप में बाल कटाता था । ...र्बर शाप के मालिक के पुत्र लुई सेल्फो ने एक ...र उसकी हजामत करते हुए पाया कि उसकी ...नियां और मूंछें एकदम काली कर दी गयी ...। लुई ने सोचा कि यह आदमी विचित्र ...। . . . ।

मिशिगन सिटी छोड़ने के बाद डिलिंगर ...ली बार एक सामान्य नागरिक की तरह रह ...ा था । अपराधियों के साथ उसके संबंध पूरी ...ह समाप्त हो गये थे । कुछ लोग तो समझने ...गे थे कि वह मर गया है । सेंट पाल में पैट ...ने एक रिपोर्टर से कहा, "जॉन डिलिंगर ...ा कुछ बैंकों को लूटे जाने की सभी खबरें ...कवास हैं । मेरे पास इस बात की पक्की खबर ...कि 'लिटिल बोहेमिया' छोड़ने से कुछ पहले वह मारा गया था ।" (लिटिल बोहेमिया शिकागो के बाहर एक सैरगाह थी । वहां डिलिंगर एफ बी आई द्वारा पकड़े जाने से बाल-बाल बचा । डिलिंगर को पकड़ने के प्रयत्न में अनेक निर्दोष व्यक्ति मारे गये थे ।) लेकिन इस तरह की अफवाहों के बावजूद डिलिंगर की खोज जारी थी ।

अब तक डिलिंगर सोचता था कि वह सुरक्षित है, उसे कोई मार नहीं सकता । हर सफल अपराधी ऐसा ही सोचता है । लेकिन सांसारिक दुनिया में रुचि और उसका रस लेने के बाद पहली बार डिलिंगर को मौत का डर सताने लगा था ।

फिर भी, वह कानून का उपहास करता था । एक दिन शाम को टहलते हुए वह श्रीमती सेज के साथ शिकागो पुलिस के मुख्यालय में पहुंच गया । वहां पहुंचकर उसने पुलिस सार्जेंट से एक काल्पनिक कैदी लड़की के बारे में पूछताछ की ।

जॉन डिलिंगर सोचता था कि उसे एना सेज के कारण कोई परेशानी नहीं हो सकती । वह श्रीमती सेज पर पूरी तरह विश्वास करता था । वह अधेड़ उम्र की महिला थी और जब उसे अंततः पता लगा कि वह कौन है, उसका रवैया सहानुभूतिपूर्ण था—एक मां की तरह ।

डिलिंगर को गिरफ़्तार कराने पर आकर्षक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कार था। एना सेज के लिए यह जबरदस्त प्रलोभन था लेकिन उसके सामने इससे भी बड़ा एक प्रलोभन था। उसे लगा कि डिलिंगर संबंधी सूचना उसका निर्वासन रोकने में सहायक हो सकती है। वह ईस्ट शिकागो में इंडियाना के सार्जेंट मार्टिन जारकोविच से भेंट करने गयी। वह कई वर्षों से सार्जेंट को जानती थी।

श्रीमती सेज ने जारकोविच को बताया कि डिलिंगर उसके एपार्टमेंट में आता है। अगर मुझे निर्वासित करने की कार्यवाही रोक दी जाए तो मैं कानून के साथ सहयोग करूंगी। जारकोविच ने यह प्रस्ताव अपने अफसर कैप्टन टिमोथी ओ'नील के पास भेजा। नील डिलिंगर के मामले की खोज करनेवाले जासूसों का प्रमुख था।

सार्जेंट जारकोविच और कैप्टन ओ'नील ने शिकागो कार्यालय के प्रमुख पर्विस को टेलीफोन किया। उन्होंने बताया कि उनके पास डिलिंगर के बारे में कुछ सूचना है। वह किसी गुप्त स्थान पर इस बारे में आगे विचार-विमर्श करना चाहते हैं।

पर्विस ने यह अनुरोध स्पेशल एजेंट सैम काउले तक पहुंचा दिया। काउले ने भेंट के लिए समय और स्थान तय कर दिया। इस बैठक में ईस्ट शिकागो के पुलिस सार्जेंट जारकोविच ने काउले और पर्विस को बताया कि डिलिंगर पाली हैमिल्टन से मिलने के लिए सेज एपार्टमेंट में आता है। जारकोविच ने बताया कि अधिक ब्योरा बताने से पहले श्रीमती सेज शिकागो कार्यालय के प्रमुख से स्वयं बात करना चाहती हैं।

लगभग रात ९ बजे जारकोविच और पर्विस निर्धारित स्थान पर पहुंचे उनके पीछे एक अन्य कार में काउले और ओ'नील थे। तीस मिनट बाद एना सेज भी वहां पहुंची। पर्विस ने एना को अपनी कार में बिठाया और उसे एक एकांत स्थान में ले गया। श्रीमती सेज ने पर्विस को बताया कि पहले उसे पता नहीं चला कि डिलिंगर कौन है। लेकिन जब उसने पहचाना तो उसने डिलिंगर को उसकी समाचारपत्रों में छपी तसवीर दिखायी। डिलिंगर ने तसवीर देखने के बाद यह बात फौरन मान ली कि वह कौन है। पर्विस को इस विषय में अधिक बताने से पहले वह यह आश्वासन चाहती थी कि एफ. बी. आई. रोमानिया को उसका निर्वासन रोकने में उसकी सहायता करेगा। पर्विस ने कहा कि यह मेरे अधिकार क्षेत्र के बाहर की बात है। लेकिन उसने वायदा किया कि वह इस बात का पूरा प्रयत्न करेगा कि एना सेज को अमरीका न छोड़ना पड़े।

एना सेज इस आश्वासन से संतुष्ट हो गयी। फिर वह यह वचन चाहती थी कि उसे डिलिंगर को गिरफ़्तार कराने का पुरस्कार दिया जाएगा। पर्विस ने कहा कि मैं कोई निश्चित वायदा नहीं कर सकता। मैं केवल यह गारंटी दे सकता हूं कि उसे अच्छी-खासी रकम मिलेगी।

एना सेज कुछ देर तक सोचती रही। फिर वह डिलिंगर को पकड़ने में पुलिस की सहायता करने को सहमत हो गयी। उसे विश्वास था कि डिलिंगर कल, रविवार को पार्टी तथा उसे फिल्म दिखाने ले जाएगा। वे शायद मारब्रो थियेटर जाएंगे।

काउले ने हूवर को टेलीफोन किया। हूवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने कहा कि अगर संभव हो तो डिलिंगर को जीवित पकड़ा जाए । पुलिस के एजेंट अपने साथ केवल पिस्तौल रखेंगे और तब तक हथियारों का इस्तेमाल नहीं करेंगे जब तक कि एकदम जरूरी न हो जाए । हूवर यह नहीं चाहते थे कि डिलिंगर को पकड़ने के प्रयत्न के दौरान निर्दोष लोगों की जान जाए ।

फिर काउले और उसका सहायक वर्जिल पीटरसन मारब्रो गये और उन्होंने सभी प्रवेश और निकासी द्वारों और आपात द्वारों के विस्तृत नोट लिये ।

रविवार, २२ जुलाई : मौसम गरम और उमसभरा था । लिटिल बोहेमिया कांड की तरह इस बार भी शिकागो में मौजूद हर एजेंट को चौकस किया गया और दोपहर तक बैंकर्स बिल्डिंग के कार्यालय उपस्थित लोगों से भर गये । कुछ एजेंटों का खयाल था कि पिछली कई बार की तरह इस बार भी यह भ्रामक 'अलार्म' था । लेकिन जब काउले ने बोलना शुरू किया तो यह स्पष्ट हो गया कि अपराधी की खोज निर्णायक दौर में पहुंच गयी है ।

काउले ने उपस्थित लोगों को दो बार योजना समझायी । उसके बाद पर्विस ने कहा "दोस्तो, आप सभी जॉन डिलिंगर के चरित्र से परिचित है । अगर. . . हमने उसे खोज निकाला और फिर भी वह भाग निकला तो यह सब हम सबके लिए डूब मरने की बात होगी । डिलिंगर को पकड़ने में कुछ खतरा हमेशा है । आशा है कि हम उसे जीता-जागता पकड़ लेंगे. . . और इस काम में किसी एजेंट को चोट नहीं लगेगी । अगर डिलिंगर किसी तरह का प्रतिरोध करे, तो आप में से हरेक अपनी रक्षा करने के लिए आवश्यक उपाय करेगा ।"

इसके बाद ईस्ट शिकागो के पांचों अफसरों के साथ एजेंटों का परिचय कराया गया ताकि एजेंट उनको अच्छी तरह पहचान लें । जारकोविच ने बताया कि डिलिंगर ने आपरेशन कराकर किस तरह अपना चेहरा बदल लिया है (श्रीमती सेज के एपार्टमेंट में आने से पहले डिलिंगर ने अपना चेहरा आपरेशन कराकर बदल लिया था) । अब तक हर आदमी अच्छी तरह समझ गया था कि उसे क्या करना है ।

शाम को साढ़े पांच बजे एना सेज का टेलीफोन आया । उसने बताया कि आज रात डिलिंगर मुझे और पाली को फिल्म दिखाने ले जाएगा । वह हमें शायद मारब्रो या बायोग्राफ ले जाएगा ।

उसने कहा, "जब मुझे पक्की सूचना मिलेगी, मैं फिर टेलीफोन करूंगी ।"

यह नयी बात थी । काउले को बायोग्राफ के बारे में कुछ पता न था । उसे केवल यह मालूम था कि श्रीमती सेज के यहां से वहां पहुंचने में कुछ ही मिनट लगते हैं । उसने बायोग्राफ के प्रवेश और निकासी द्वारों का नक्शा बनाने के लिए दो एजेंटों को वहां भेजा । तनावपूर्ण चौकसी शुरू हो गयी । अंत में सात बजे श्रीमती सेज ने फिर टेलीफोन किया । वह फुसफुसायी, "वह यहां है । वह अभी-अभी आया है । हम थोड़ी देर में रवाना हो जाएंगे । मैं अभी भी यह नहीं जानती कि हम बायोग्राफ जाएंगे या मारब्रो ।" उसने टेलीफोन रख दिया ।

पर्विस श्रीमती सेज को जानता था । इसलिए यह फैसला किया गया कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बायोग्राफ के बाहर एक कार में बैठकर प्रतीक्षा करे । अगर डिलिंगर उस थियेटर में आये तो वह सूचना दे । जारकोविच और स्पेशल एजेंट चार्ल्स बी. विनस्टीड मारब्रो में रहेंगे । काउले और अन्य लोगों का मुख्य दल बैंकर्स बिल्डिंग में इंतजार करेगा । जरूरत पड़ने पर वह किसी भी जगह पहुंच जाएगा ।

पर्विस और उसके साथी एजेंट राल्फ ब्राउन ने अपनी गाड़ी थियेटर के प्रवेश द्वार के समीप पार्क की । घंटे भर तक ये लोग थियेटर जानेवालों को देखते रहे । डिलिंगर का कहीं पता न था । पर्विस सोचने लगा कि या तो हम लोग देर में आये हैं या डिलिंगर मारब्रो चला गया है । उसी समय एना सेज और एक दंपति वहां से गुजरे । डिलिंगर गहरे रंग का चश्मा, धूसर रंग की पैंट, धारीदार कमीज, धूसर चकत्तेवाली टाई और स्ट्रा हैट पहने था । पाली हैमिल्टन उसकी बांह पकड़कर चल रही थी ।

डिलिंगर टिकट लेने गया । इस बीच श्रीमती सेज और पाली इंतजार में रुकी रहीं । जैसे ये लोग थियेटर में घुसे ब्राउन ने काउले को फोन किया; फिर पर्विस ने एक टिकट खरीदा और वह एयर कंडीशंड सभागार में गया । लगभग हर सीट भरी थी और डिलिंगर का पता लगाना असंभव था । पर्विस की हिम्मत दोबारा हाल में जाने की नहीं हुई, वह टिकट की खिड़की पर पहुंचा । उसे पता लगा कि फिल्म अभी शुरू हुई है और चौरानवे मिनट तक चलेगी; पूरी फिल्म दो घंटे चार मिनट की थी ।

वह लौटकर अपनी कार में गया, उसने ब्राउन को सभी कुछ बताया, फिर वह फिल्म कब समाप्त होगी यह पता लगाने के लिए खजांची के पास गया । टिकट खिड़की की महिला की समझ में नहीं आ रहा था कि उसे कितनी बार वही बात बतायी जाए । पर्विस फिर टिकट जमा करनेवाले के पास गया, उसने उसके साथ खड़े होकर हाल में झांका और फिर वह कार में लौट आया ।

बैंकर्स बिल्डिंग में काउले वाशिंगटन में हूवर को नवीनतम जानकारी दे रहा था । उन्होंने डिलिंगर को बायोग्राफ के हाल में पकड़ने की संभावनाओं पर विचार किया । लेकिन विचार-विमर्श के बाद उन्होंने इस विकल्प को छोड़ दिया क्योंकि हाल के भीतर अनेक निर्दोष लोगों के मारे जाने का खतरा था । यह फैसला किया गया कि योजना के अनुसार हाल से निकलते समय उसे पकड़ा जाए ।

काउले ने अपने आदमियों को बायोग्राफ में अपनी-अपनी जगह लेने का आदेश दिया । मारब्रो में तैनात जारकोविच और एजेंट विनस्टीड को आदेश दिया गया कि वह फौरन बायोग्राफ थियेटर के उत्तर में रिपोर्ट करें । जब तक काउले बायोग्राफ में पहुंचा पर्विस खजांची से तीसरी बार सवाल कर चुका था । वह आशंकित होकर फिर से हाल में भी झांक चुका था । अब खजांची चिंतित होने लगा क्योंकि कुछ ही समय पहले थियेटर में डाका पड़ा था । क्या थियेटर को फिर लूटने का प्रयत्न किया जा रहा है ?

काउले शांत था, वह बहुत कम बोल रहा था । उसने पर्विस से कहा कि वह थियेटर के प्रवेश द्वार की बायीं ओर के दरवाजे पर खड़ा रहे । जब डिलिंगर और पाली बाहर निकलेंगे वे श्रीमती सेज के एपार्टमेंट में जाने के लिए उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रास्ते से जाएंगे । जब वह गुजरे उनकी पहचान की पुष्टि के लिए पर्विस अपना सिगरेट जलाएगा । दस फुट दूर ब्राउन के साथ एफ. बी. आई. की कार में एजेंट एच. ई. हालिस होगा; उससे कुछ ही गज की दूरी पर जो दरवाजा है वहां एक अन्य एजेंट रहेगा । यहां से सौ फुट दूर एक गली थी, इस गली से सेज के एपार्टमेंट को एक छोटा रास्ता था । यह थियेटर के पीछे भी जाता था । गली के सिरे पर दो एजेंट रखे गये थे । पर्विस के सिगार जलाते ही उन्हें थियेटर की ओर बढ़ना था । इस प्रकार डिलिंगर दोनों तरफ फंस जाएगा ।

काउले ने ईस्ट शिकागो के दो पुलिसवाले और दो एजेंट प्रवेश द्वार के दायीं ओर भी नियुक्त कर दिये थे ताकि अगर डिलिंगर और उसके साथ की दो औरतें थियेटर से निकलने के बाद उस दिशा की ओर बढ़ें, तो उन्हें रोका जा सके ।

थियेटर के सामने सड़क के उस पार थे काउले, जारकोविच, पांच एजेंट और ईस्ट शिकागो पुलिस के कैप्टन ओ'नील । अगर किसी तरह डिलिंगर दोनों दलों से बचकर निकल जाए, तो ये लोग उसे पकड़ते । इसके अलावा हर दरवाजे और गली में एजेंट थे । एफ. बी. आई. हर तरह से स्थिति का सामना करने को तैयार था ।

लेकिन कोई आदमी यह नहीं बता सकता था कि डिलिंगर कब आएगा । वह एक मिनट में भी आ सकता था और कुछ घंटे बाद भी । क्या वह दायें-बायें जाएगा अथवा आपात द्वार से बाहर आएगा । पर्विस सबसे अधिक विकल था ।

लगभग इसी समय थियेटर की एयर कंडीशनिंग यूनिट का इंजीनियर बाहर तापमान लेने आया । जब उसने लोगों को गली में चक्कर लगाते और एक आदमी को बायलर रूम के ऊपर खड़े देखा तो वह चिंतित हो गया । वह थियेटर मैनेजर चार्ल्स शेपिरो के कार्यालय में गया । उसने कहा कि उसे आशंका है थियेटर पर डाका पड़ सकता है ।

प्रबंधक एक और डकैती के बारे में चिंतित नहीं था । चोर थियेटर के पीछे यों चक्कर लगायेंगे ? उनका लक्ष्य टिकट की खिड़की हो सकती है । उसी समय खजांची ने उसे इशारा किया । वह भी इंजीनियर की तरह डरी हुई थी । उसने सड़क के उस पार एक आदमी की ओर इशारा किया जो नानबाई की दुकान की सीढ़ियों पर बैठा था । आधा दर्जन और लोग भी पास ही में चक्कर लगा रहे थे । एक नाटा अशांत आदमी उससे तीन बार पूछ चुका था कि फिल्म कब समाप्त होगी ?

शेपिरो ने शैफील्ड स्ट्रीट पुलिस स्टेशन को फोन किया, "कृपा करके सादी वरदी में एक पुलिस दल यहां भेज दें । यहां डकैती पड़ सकती है ।"

लगभग १० बजकर २० मिनट पर एक सिटी पेट्रोल कार ने गली के अंत में प्रवेश किया, वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी और गली के सिरे पर खड़े दो आदमियों के सामने रुक गयी । एक जासूस उछलकर बाहर आया । उसने स्पेशल एजेंट रे सुरान पर अपनी शाटगन तान दी ।

सुरान ने शिकागो पुलिस के इन लोगों को तत्काल विश्वास करा दिया कि वह फेडरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एजेंट है और एक अपराधी को पकड़ने में लगा है। पुलिस कार मुड़ी और फिर गायब हो गयी।

सादी पोशाक में शिकागो पुलिस के दो और अधिकारी शेपिरो के कार्यालय में पहुंचे। मैनेजर ने दरवाजा बंद किया और उन्हें बाहर खड़े संदिग्ध लोगों और अपने संदेह के बारे में बताया। जब पुलिस अधिकारियों ने उससे उन्हें दिखाने को कहा, तो शेपिरो ने कहा कि आप बाहर जाकर उन्हें स्वयं देख लें। सादे वरदीवाले दो अधिकारी बाहर आए, दायीं ओर मुड़े और एक एजेंट के पास पहुंचे। उन्होंने उससे पूछा कि वह कौन है और क्या कर रहा है ?

भीतर हाल में 'मैनहैटन मेलोड्रामा' फिल्म समाप्त होने को थी। साढ़े दस बजे कुछ लोग हाल से बाहर निकलने लगे। डिलिंगर और उसकी दो महिला साथी बाहर आनेवाले पहले लोगों में थे। वे ठीक उसी समय बाहर निकले जब प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर तैनात फेडरल एजेंट शिकागो पुलिस को अपने परिचयपत्र दिखा रहे थे।

सौभाग्यवश ये तीनों बायीं दिशा में पर्विस की ओर मुड़ गये और उन्होंने यह सब नहीं देखा।

पर्विस ने हाल से पहले दर्शक के निकलते ही अपनी दियासलाई निकाल ली थी। वह हर निकलनेवाले को गौर से देख रहा था। अचानक उसने दो औरतों के साथ डिलिंगर को देखा। जैसे ही पर्विस ने दियासलाई जलाकर सिगार जलाया, डिलिंगर ने उसकी ओर सीधे देखा। उसकी नज़र में कुतूहल का भाव न था।

डिलिंगर अगली ड्योढ़ी में एक ओर एजेंट के सामने से गुजरा। एजेंट ने कहा, "ट्रा हैट और चश्मे में डिलिंगर है।" वह तेजी से आगे बढ़कर डिलिंगर के दायें हो गया। पीछे से पिस्तौल निकालकर हालीस और पर्विस भी आ रहे थे। यकायक डिलिंगर ने अपनी पैंट की दाहिनी जेब में हाथ डाला और थोड़ा झुकते हुए गली की ओर भागा।

अब डिलिंगर के दाहिने हाथ में एक कोल्ट आटोमेटिक रिवाल्वर था। पर्विस के रुकने के आदेशों की ओर कोई ध्यान नहीं देते हुए वह गली की ओर दौड़ता गया। उसे पता लग गया होगा कि उसके साथ धोखा किया गया है—एक औरत ने उसे धोखा दिया है।

हालीस और दो अन्य एजेंटों ने भागनेवाले व्यक्ति पर गोली चलायी। एक गोली डिलिंगर की बायीं ओर लगी। दूसरी उसकी झुकी कमर में लगते हुए दाहिनी आंख से बाहर निकल आयी। डिलिंगर जमीन पर ढेर हो गया उसके पैर अभी भी पटरी पर ही थे। उसका सिर गली में पड़ा था, पर्विस झुका, उसने डिलिंगर से बात करने की कोशिश की। उसे कोई उत्तर नहीं मिला।

एना सेज और पाली हैमिल्टन दोनों गायब हो गयी थीं। वह अकेला था।

गली में आगे श्रीमती एट्टा नटालस्की अपने भाई को चीखकर बता रही थीं "ओह, मौरी उन्होंने मुझे गोली मार दी है।" डिलिंगर को ढेर करनेवाली एक गोली उसके पैर में लगी थी। एक अन्य औरत, थेरेसा पालुस जो थियेटर से डिलिंगर के पीछे-पीछे चल रही थी, उसे भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...लगी थी । उसके बायें घुटने से खून ...था । उसने सड़क पार की और वह ...हो गयी ।

...-पड़ोस में उत्तेजना थी लेकिन डर का ...नहीं था । इस इलाके के लिए मारपीट, ...कोई अनहोनी बात नहीं थी । यह स्थान ...राज से कुछ ही दूर था, जहां सैंट ...दिवस पर हत्याकांड हुआ था । ...और उसके विपक्षी गुट की लड़ाई में ...के आदमियों ने विपक्षी गुट के सात ...की दिन-दहाड़े हत्या कर दी थी । ...डिलिंगर को एक एंबुलेंस में रखा गया । ...एजेंट भी उसमें चढ़े । एंबुलेंस उसे ...ब्रदर्स हास्पिटल में ले गयी । डिलिंगर ...ही मर चुका था । उसे कुक काउंटी के ...में ले जाया गया ।

जब डिलिंगर का शव एफ. एफ. हार्वे फ्युनरल होम में पहुंचा तो उसे एक बार फिर प्रदर्शन के लिए रखा गया । अगले कुछ घंटों तक नगर के लोग कतार बनाकर उसके सामने से निकलते रहे ।

डिलिंगर को दफन करने के बाद इस तरह की अफवाहें फैलने लगीं कि कब्र में गलत आदमी है । १९६१ के ग्रीष्म में एक आदमी ने कहा, "मैंने कुछ समय पहले जॉनी को मिशीगन में एक मोटल में देखा था ।" एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "जॉनी कुछ ही दिन पहले इस नगर में होकर गुजरा । वह मुझे देखकर मुसकराया ।"

जॉन डिलिंगर—व्यक्ति और मिथक—अपने समय की उपज थे । यद्यपि वह वैसा नहीं था जैसा लोग सोचते थे। ●

समस्या-पूर्ति—१३०

जाने कब

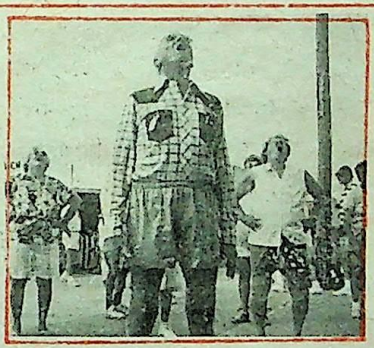

यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए, इसे लेकर आपको एक छंदबद्ध कविता लिखनी है । रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो । समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार चित्र के नीचे दी गयी पंक्ति कविता के अंत में ही आनी चाहिए ।

इस नियम की पूर्ति न करनेवाली प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा, जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा । प्रविष्टि पोस्टकार्ड पर ही भेजें ।

प्रथम पुरस्कार : ६० रुपये ● द्वितीय पुरस्कार : ४० रुपये

अंतिम तिथि : २० मई, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाया : शिव चन्द्र

और अंत में

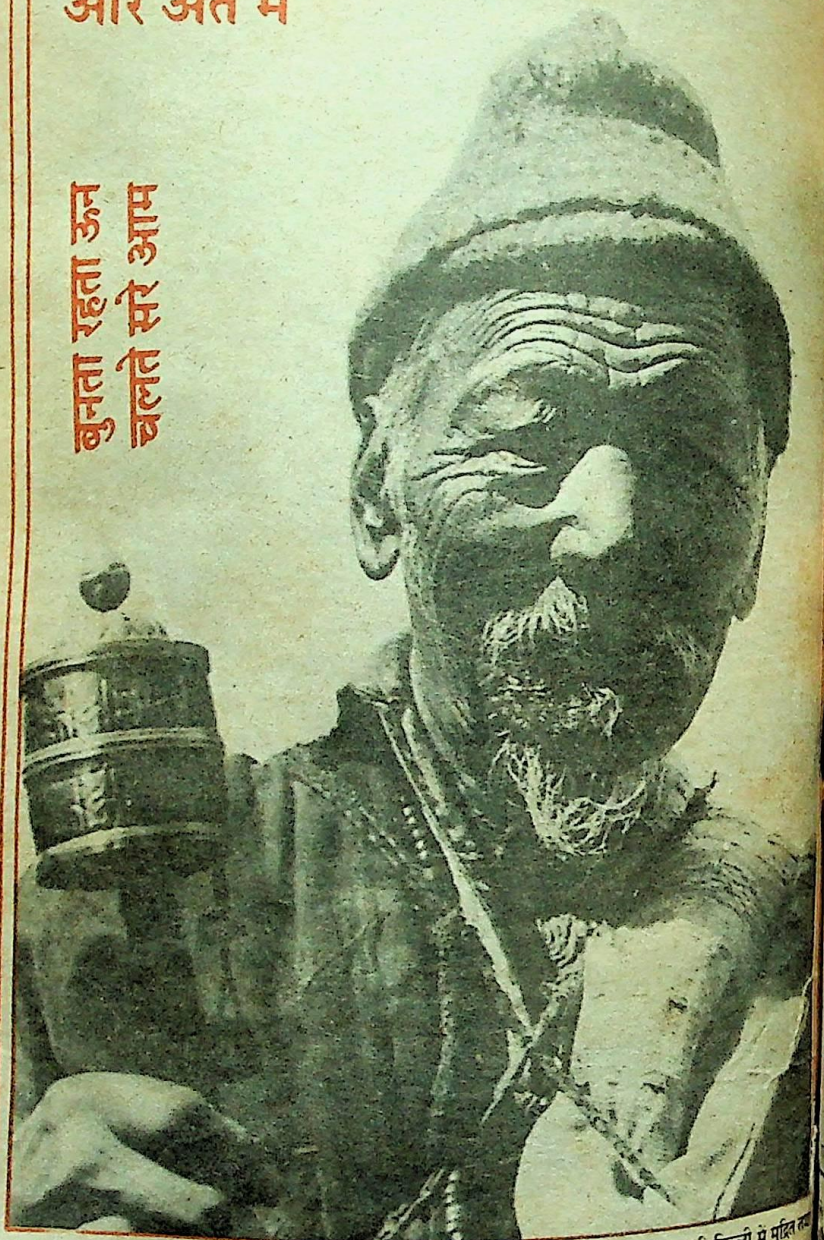

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा
प्रकाशित
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-प्रसिद्ध शृंखला

नये प्रकाशन

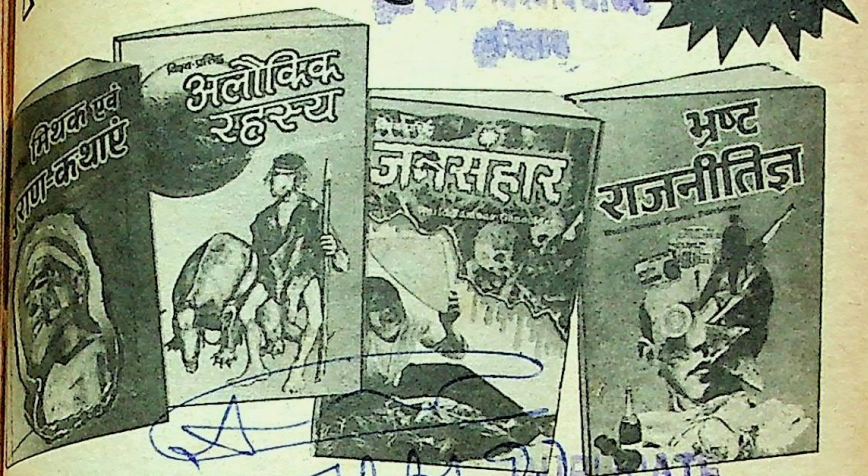

मूल्य: 18/- प्रत्येक डाकखर्च: 4/- प्रत्येक

एक साथ चार पुस्तकें मंगाने पर डाकखर्च माफ

English Editions of 27 titles available.

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डे पर स्थित बुकस्टालों पर मांग करें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता:—

पुस्तक महल, रवारी बावली, दिल्ली-110006

शोरूम: 10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.

VAN.PM

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर का समय पर भुगतान
करे चिंता शांत

कर अपवंचन अपराध है

क्या आप जानते हैं कि यदि आपकी आय/धन, कर-योग्य है तो आपको अपनी आय/धन की विवरणी दाखिल कर स्वेच्छा से उसे घोषित करना है और उस पर कर अदा करना है ।

कर-योग्य आय/धन को छिपाने और कर अदा न करने पर ब्याज, जुर्माना लग सकता है और मुकदमा भी चलाया जा सकता है ।

कृपया इससे बचने के लिए सुनिश्चित करें कि- –

* यदि आयकर/धनकर देय है तो अपनी आयकर/धनकर विवरणी दाखिल करें;
* अपनी आयकर/धनकर विवरणी निर्धारित समय के अंदर दाखिल करें;
* विवरणी में दी गयी सूचना पूरी और सही हो ।

कर कानूनों का पालन करें और दंड की कार्रवाई से बचें ।

यदि कोई कठिनाई हो, तो कृपया अपने जनसंपर्क/आयकर अधिकारी से संपर्क करें ।

आयकर विभाग
आयकर निदेशालय
(ग.सां.प्र. एवं जन संपर्क)
नयी दिल्ली

DAVP 90/3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी विशिष्ट आकर्षण जुलाई अंक में

कांपते शहर-मुसकराते गांव — क्यों कांप रहे हैं शहर ? क्यों दूभर होता जा रहा है शहरों में जीना प्रतिदिन ! क्यों पनप रही है फॉर्म हाउस-संस्कृति ! एक दिलचस्प लेख

गंगोत्री की गुणगाथा — गंगोत्री के अज्ञात तथ्यों पर प्रकाश डालनेवाला सचित्र लेख

आइए खरगोश पहनें — जो हां, खरगोश पालिए और आय में वृद्धि कीजिए। एक नया रोजगार— आसान और सस्ता। विशेष लेख

कुछ अन्य दिलचस्प लेख

● भरेपन में खोखलापन ● मोचियों का अंधविश्वास ● 'उलाक' ● पोथी के पन्नों पर ओंकारेश्वर ● विश्व मंच पर 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' ● किस्सा ठगों के गांव का ! ● घने जंगलों में खूंख्वार गोरिल्लाओं के बीच

यही नहीं और भी अनेक रचनाएं,
कहानियां, कविताएं और सभी स्तंभ

प्रतीक्षा कीजिए
अगस्त में एक और विशेषांक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

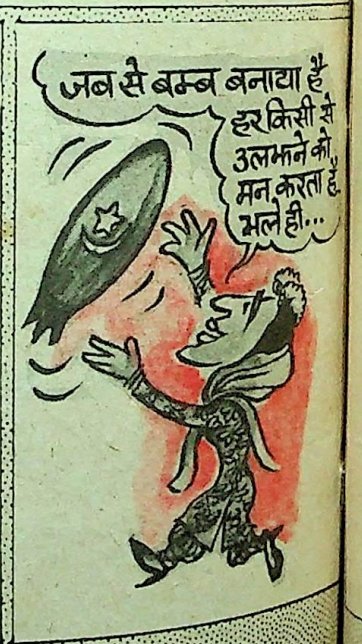

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशील कालरा

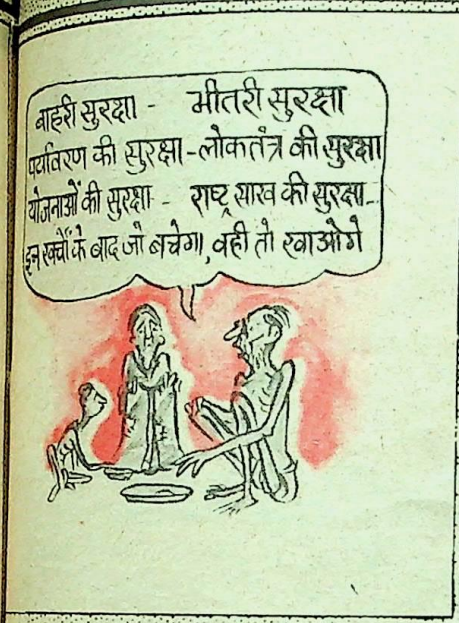

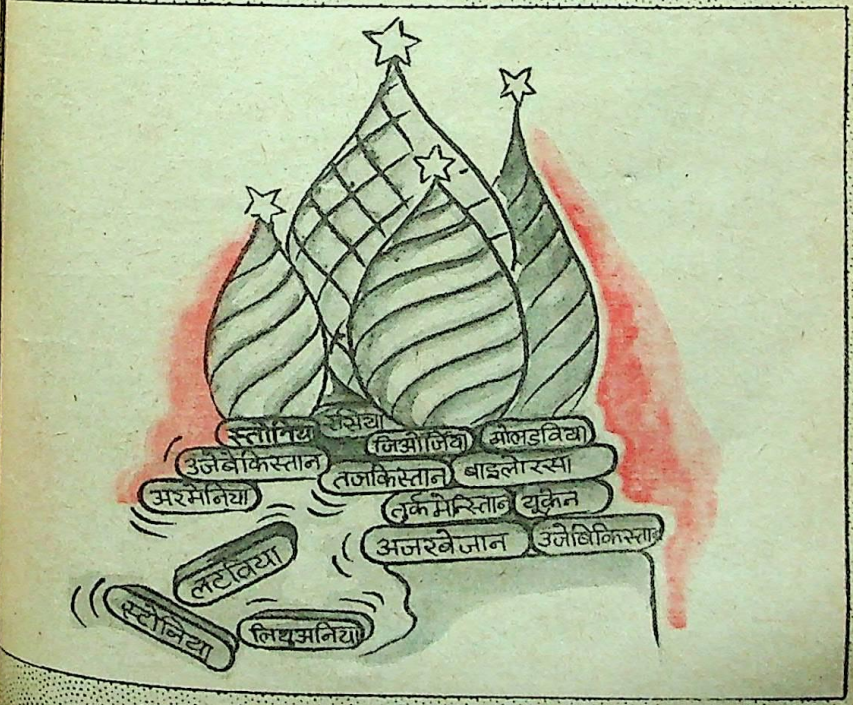

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उनके बाद उनके अर्थ भी। अर्थ देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही अर्थ हों, उन पर निशान लगाइए और फिर वहां दिये गये अर्थों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● **ज्ञानेन्दु**

१. **उत्स**—क. ज्ञान, ख. जन्म, ग. स्रोत, घ. सच्चाई।

२. **अंतर्हित**—क. सम्मिलित, ख. छिपा हुआ, ग. बीच में स्थित, घ. अंदर की ओर।

३. **दारुण**— क. अत्यधिक, ख. दयापूर्ण, ग. दरिद्र, घ. कठोर।

४. **निर्द्वंद्व** — क. भेदभावरहित, ख. जीवन की परस्पर विपरीत अवस्थाओं से अप्रभावित, ग. शोरगुल से दूर, घ. भयरहित।

५. **वसुंधरा**— क. विश्व, ख. पृथ्वी, ग. वीणा, घ. दिशा।

६. **प्रहर्ष**—क. आराम, ख. हंसी, ग. अत्यधिक खुशी, घ. रोमांच।

७. **संत्रास**—क. पीड़ा, ख. शंका, ग. निरुत्साह, घ. भय।

८. **मायावी**—क. भ्रमपूर्ण, ख. दोषमय, ग. छल-कपट से काम लेनेवाला, घ. विश्वासघाती।

९. **समायुक्त**— क. तैयार, ख. साथ जुड़ा हुआ, ग. सुव्यवस्थित, घ. घटित।

१०. **मत्सर**—क. ईर्ष्या, ख. ठगी, ग. लालची, घ. मछली।

११. **प्राणशक्ति**—क. स्वास्थ्य, ख. जीवनदायी शक्ति, ग. बलिष्ठता, घ. ऊर्जा।

१२. **ईक्षित**—क. इच्छित, ख. देखा हुआ, ग. परखा हुआ, घ. बुलाया हुआ।

१३. **क्षुभित**—क. विचलित, ख. आंदोलित, ग. भूखा, घ. कुचला हुआ।

१४. **दीपित**—क. प्रत्यक्ष, ख. जोशीला, ग. प्रकाशयुक्त, घ. डरा हुआ।

१५. **दुर्दम**—क. घनघोर, ख. जिसे दबाना कठिन हो, ग. जिसमें दम न हो, घ. निराश।

उत्तर

१. ग. स्रोत, जहां से पानी निकलता हो। वेदों में भारतीय दर्शन का **उत्स** है।

२. ख. छिपा हुआ, गुप्त। उसके **अंतर्हित** भाव को समझने का प्रयास करो।

३. घ. कठोर, निष्ठुर। जीवन में कभी-कभी **दारुण** दुःख झेलने पड़ते हैं।

४. ख. जीवन की परस्पर विपरीत अवस्थाओं से अप्रभावित। **निर्द्वंद्व** होकर जीवन बिताना अत्यंत कठिन है। निर+द्वंद्व। (द्वंद्व=हर्ष-विषाद, सुख-दुःख आदि) घ. भयरहित। वह निर्द्वंद्व हो विचरण करता है।

५. ख. पृथ्वी। **वसुंधरा** नाना रत्नों से भरी है। ('वसु' तथा 'धृ' से)

६. ग. अत्यधिक खुशी। **प्रहर्ष** के दिन प्रायः विद्युत-किरण की भांति ही होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. घ. भय, आतंक । मानवता को **संत्रास** से मुक्ति दिलाने का अनवरत प्रयास होना चाहिए । ('सम्' तथा 'त्रस्' से)

८. ग. छल-कपट से काम लेनेवाला, भ्रांति पैदा करनेवाला । रावण बड़ा **मायावी** था ।

९. ख. साथ जुड़ा हुआ, संबद्ध । सत्य एवं सत्पथ **समायुत** हैं । (सम् +आ +युत)

१०. क. ईर्ष्या, डाह । **मत्सर** प्रायः मनुष्य के जीवन को अशांत बना देता है । ग. लालची, लोभी । यह जरूरी नहीं कि अभाव के कारण मनुष्य **मत्सर** बन जाए ।

११. ख. जीवनदायी शक्ति । सचेतन समाज ही राष्ट्र की **प्राणशक्ति** होती है ।

१२. ख. देखा हुआ । जो **ईक्षित** है उस पर अविश्वास नहीं किया जा सकता । ('ईक्ष' से)

१३. ख. आंदोलित, क्रोधित । वह जरा-सी बात पर ही **क्षुभित** हो गया । ('क्षुभ्' से)

१४. ग. प्रकाशयुक्त, प्रज्वलित । सत्यमार्ग सदैव **दीपित** रहता है । ('दीप्' से)

१५. ख. जिसे दबाना कठिन हो । स्वाधीनता की मांग **दुर्दम** होती है । (दुर् +दम)

पारिभाषिक शब्द

Apartheid	=प्रथक्वासन
Resources	=संसाधन
Retired	=निवृत्त
Proportional - Representation	=आनुपातिक प्रतिनिधित्व
Sabotage	=भितरघात
Repository	=निधान/संग्रह
Net Amount	=शुद्ध राशि
Invoice	=बीजक
No objection - certificate	=अनापत्ति प्रमाण-पत्र

समस्या-पूर्ति—१२९

आनंद

प्रथम पुरस्कार

श्रम के नूपुर बांध, अभावों की दे-देकर थाप
संघर्षों की नृत्य कला में पग उठते चुपचाप
श्री से हीन जिंदगी तब भी, लगता ऐसा छंद
चौपाई में रामकथा का, ज्यों मिलता आनंद

—प्रशांत अवस्थी

द्वारा— श्री शांतिस्वरूप अवस्थी अधिवक्ता,
तहसील-जलालाबाद, जिला- शाहजहांपुर (उ.प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

देवासुर संग्राम छिड़ा है इस जगती में चारों ओर
कोई आंसू बहा रहा है कोई गाता आत्म विभोर
थिरक-थिरक नाचें-गायें, ढोलक का स्वर करें न मंद
चिंताओं की चिता जलादें, तब पायें शाश्वत आनंद

—कु. रेणु सोनी

पुराने डाकघर के निकट, पो. डीडवाना (राज.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

'कादम्बिनी' उच्च-स्तरीय पाठ्य-सामग्री प्रस्तुत करने के कारण सुधी पाठकों के बीच आदृत है । सामान्यतया उसके प्रत्येक स्तंभ पठनीय ही नहीं, स्मरणीय भी होते हैं । कभी-कभी कुछ लेख या उनके अंश भी पाठकों पर अपना विशेष प्रभाव छोड़ जाते हैं । इसी प्रकार का विशेष प्रभाव मुझ पर कृपाल वर्मा की 'प्रसंग' कहानी और शिवबचन चौबे के 'राजा रामचन्द्र की जय' लेख के निम्नांकित अंश छोड़ गये हैं—

'हम सब इस महाशक्ति में शामिल न जाट थे न राजपूत । गोरखे थे न ईसाई । न मुसलमान थे न अहीर-गूजर ! हम सब सैनिक थे—भारतीय थे । एक देश की संतान—हम-अपनी समूची आन-बान और शान के साथ जूझने को तैयार खड़े थे ।'

—'प्रसंग' कहानी से

इसे पढ़ने के बाद मैं देर तक सोचता रहा कि इस देश के सैनिकों के ये मनोभाव क्या हम सामान्य भारतीय नागरिकों के मन में नहीं भरे जा सकते हैं ? आज जब हम जाति, धर्म, भाषा, प्रांत आदि के नाम पर अपने को वर्गों और उपवर्गों में बांटते जा रहे हैं, क्रमशः कमजोर होते जा रहे हैं तथा देश की एकता और अखंडता पर प्रश्नचिह्न लगाते जा रहे हैं; उस समय क्या इस प्रकार के भाव भरने के कार्य का शुभारंभ सरकार की ओर से नहीं हो सकता है, जो विभिन्न आवेदन-पत्रों या कार्यों के लिए अनावश्यक रूप से जाति, धर्म, भाषा आदि की पूछ-ताछ करती हैं ? क्या केवल भारतीय कहकर हम अपना पूरा परिचय नहीं दे सकते हैं ? क्या अपने नामों के साथ से जाति सूचक उपनामों को हटाकर हम भारतीय बनने की पहली सीढ़ी पर नहीं चढ़ सकते हैं ? क्या भाषा के आधार पर पुनर्गठित राज्यों (प्रथम विशिष्ट राजनीतिक भूल) को प्राकृतिक सीमाओं के आधार पर सीमांकित करके देश की महान विभूतियों, कृतियों, स्थलों या संख्याओं के आधार पर उनका नामकरण नहीं कर सकते हैं ? क्या हम जातियों और उपजातियों के आधार पर लड़े जानेवाले चुनावों के कारण उपजे वर्ग विद्वेष को कम करने के लिए जातिगत आधार पर राजनैतिक पार्टियों द्वारा वोटरों की समीक्षा तथा प्रत्याशियों का चयन बंद नहीं कर सकते हैं ? क्या जातिगत आधार पर आरक्षित परिवारों को ही आर्थिक आधार पर आरक्षण नहीं दे सकते हैं ? (दोनों आधारों पर सामान्यतः वही वर्ग आरक्षण का लाभ प्राप्त करेगा । केवल अवांछित लाभ लेनेवाले कट जाएंगे और कुछ अन्य जरूरतमंद लाभान्वित हो जाएंगे ।) क्या हम सैनिकों की भांति अपनी-अपनी आस्था के अनुसार एक ही परिसर में मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च बनाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश-बंदना नहीं कर सकते हैं ? क्या देश की बहुसंख्यक जनता द्वारा बोली जानेवाली भाषा को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करते हुए भारतीय भाषाओं में समूचे राष्ट्र को एक समान शिक्षा व्यवस्था की तहत (समान पाठ्यक्रम, समान वेतन क्रम) शिक्षित नहीं किया जा सकता है ?

अंत तक में भी लेखक की भांति पूछता रह जाता हूं। कि ***'जाति, धर्म, वर्ग, ऊंच-नीच और छूत-अछूत के निरर्थक प्रसंग क्या कभी समाप्त नहीं होंगे ?'***

आपत्ति काल में हमने सदैव एकता का परिचय दिया है और देश की अखंडता और सम्मान की रक्षा की है, किंतु आज के जीवन में पनपी इस भेद और कटुता की भावना का समूल नाश इस देश की प्रथम आवश्यकता है, जिसकी उपेक्षा सर्वनाश कर सकती है । यह कार्य तभी संभव है जब राजनैतिक इच्छा शक्ति दृढ़ होगी, लोकतांत्रिक संस्थाओं का सहयोग मिलेगा तथा नागरिकों के मन में देश के प्रति निष्ठा की भावना जागृत होगी ।

'राम ने जनहित में संकटों का आकंठ गरलपान करके भी अपना कंठ नीला नहीं होने दिया । अपने समस्त सुखों की बलि देकर भी प्रजा को दुःखों से दूर रखना केवल 'राजा राम' के लिए ही संभव था ।'

—'राजा रामचंद्र की जय' से

उपर्युक्त वाक्य मुझे आज के शासकों के लिए एक आचरण संहिता प्रस्तुत करता प्रतीत हुआ । काश ! देश के कर्णधार इस स्तर तक पहुंच पायें ।

—गंगाप्रसाद द्विवेदी
प्रधानाचार्य, श्री ब्रजेश्वरी इंटर कॉलेज, धकआर
(बढ़नी)

कादम्बिनी कहानी-प्रतियोगिता

अब अंतिम तिथि :
३० जून १९९०

'कादम्बिनी' का पिछले चार वर्षों से नियमित पाठक हूं । मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि यह हिंदी भाषा की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है ।

अप्रैल अंक में युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ का सारगर्भित लेख 'किसी ने आकाश को बनाया नहीं है' पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

'धर्म ने शायद इतने अनर्थ दुनिया में किये हैं, जितने अधर्म के नाम पर शायद ही हुए हों' वाक्य भूत और वर्तमान में खरा उतरा है और वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए शायद, भविष्य में भी खरा उतरे ।

जहां तक क्रांति की बात है, सिर्फ क्रांति-क्रांति कहने मात्र से क्रांति नहीं होगी, बल्कि क्रांति तो मजबूत इरादों के साथ सतत प्रतिक्रिया द्वारा ही संभव हो सकती है । इसी संदर्भ में चीनी नेता माओ ने कहा था कि 'क्रांति कोई चाय पार्टी नहीं होती' —

बेगराज जांगिड़, लाडनूं (नागौर)

अप्रैल अंक में 'किस्सा निर्भीक' विधायक और 'विख्यात' थाना प्रभारी का' शीर्षक लेख पढ़ा । न्यायाधीश लेखक के ऐसे कटु अनुभव है तो वर्त्तमान व्यवस्था में आम नागरिक को कैसे कटु अनुभव होते रहते होंगे, इसका अंदाज सहज ही लगाया जा सकता । प्रकरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख 'लघु हृदय तुम्हारा अमर छंद' महादेवी वर्मा के जन्म-दिन के उपलक्ष में पढ़ा । महादेवी वर्मा के साहित्य की प्रशंसा में शब्द बौने हो जाते हैं और लगता है सूरज को दीपक दिखा रहे हों । महादेवी वर्मा का दर्शन, अध्यात्म तथा काव्य जिस महारस की रचना करते हैं वह अलौकिक है । 'अतीत के चलचित्र से' महादेवी वर्मा की पंक्तियां "वास्तव में जीवन सौंदर्य की आत्मा है पर वह सामंजस्य की रेखाओं में जितनी मूर्तिमत्ता पाता है उतनी विषमता में नहीं" पढ़कर महसूस हुआ कि जीवन को सौंदर्य की आत्मा कहना और उसे सामंजस्य की रेखाओं से जोड़ना उन-जैसे विराट, महान व्यक्तित्व के ही वश की बात है ।

लेखक के अनुसार आज की परिस्थिति में जब मूल्यों का इतना विघटन हो रहा है तब न्यायालय में तो बाद में पहुंचते हैं, प्रथम तो पुलिस ही न्याय अन्याय जो भी कुछ करना है, कर देती है और उसी आधार पर फैसले होते हैं ।

देश में अपराधियों के हौसले बुलंद हैं । भ्रष्टाचार पहले भी था, लेकिन भ्रष्ट गतिविधियां चोरी-छुपे चलती थीं । भ्रष्टों को पकड़े जाने का डर था पर अब ऐसी बात नहीं । आज जो देश की, समाज की, जनता की सोचता है, वह सरकारी व्यवस्था में बुरे दिन देखता है, चाहे वह विधायक हो या आई.एस. हो या चपरासी हो या दरोगा ! ऐसी व्यवस्था में बदलाव आवश्यक है ।

—मोहनलाल परसाई), सीतामऊ, मंदसौर

लघु हृदय तुम्हारा अमर छंद

AIDI

हिन्दी मे पत्राचार द्वारा गृह सज्जा सीखिए

इन्टीरियर डेकोरेशन

(सर्टिफिकेट एव हॉबी कार्स)

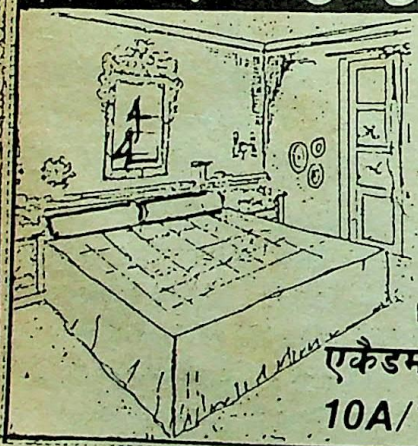

गृहसज्जा का तकनीकी ज्ञान प्राप्त करें.
सुविधानुसार घर बैठे खाली समय में अध्ययन करें.
आसान भाषा में विशेषज्ञों द्वारा तैयार पाठ्यक्रम
मंहगी पुस्तकें खरीदने की जरुरत नहीं.
कोर्स फीस का आसान किश्तों में भुगतान
कोई तकनीकी न्यूनतम योग्यता आवश्यक नहीं
हिन्दी में पत्राचार द्वारा इन्टीरियर डेकोरेशन का
एकमात्र कोर्स

विवरण के लिए जवाबी लिफाफा भेजें :-

एकैडमी ऑफ इन्टीरियर डेकोरेशन
10A/14 शक्ति नगर दिल्ली-7

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महादेवी की रचनाओं को बिलकुल नये ढंग से देखने-पढ़ने की आवश्यकता हो गयी है । वास्तव में जिन्होंने महादेवी के साहित्य का रसास्वादन नहीं किया वे अभागे ही हैं । इस संदर्भ में एक बात और कि आज साक्षरता का प्रतिशत है ही कितना ? जितने साक्षर हैं क्या उनकी रुचि उत्कृष्ट साहित्य में है ? इस आपाधापीवाले भौतिक युग में कितने प्रतिशत है पत्रिका के मुखपृष्ठ पर सदैव भिन्न-भिन्न रूपों में 'नारी (शक्ति ?) का चित्र' । खैर इसके प्रति कोई दुराग्रह नहीं है । 'इंद्र' अपने 'राज' में मेघों को अमृतमय जल की आपूर्ति यथावत करते रहें, यही प्रार्थना है, बस ।

—नलिन पांडे लखनऊ

अम्बुदमयी 'कादम्बिनी'

मेरे चातक मन को 'कादम्बिनी' की फुहारों से जो अपूर्व संतुष्टि प्राप्त होती है वह अकथनीय है । विगत एक दशक से अधिक समय से तो मैं ही इसकी 'विकासोन्मुख-यात्रा' को गतिवान देख रहा हूं और यह हो भी क्यों न जब 'नीला अनंत आकाश' इसका कार्य क्षेत्र हो ।

विशेषांक की प्रवृत्ति तो प्रायः सभी पत्रिकाओं में हो गयी है किंतु उससे कुछ 'ग्रहण' करना यह तो इसी पत्रिका का स्वाभाविक गुण है । दीपावली हो तो हर पृष्ठ पर झिलमिलाता प्रकाश, होली हो तो हर पृष्ठ कौतुकता से ठसाठस रंगभरा । यह सब संभवतः छोटी-छोटी बातें हों, किंतु समग्र रूप में यही 'अमिट छाप' होती है, जो दस्तक देती है ।

—नीति अग्निहोत्री इंदौर

ज्ञान-गंगा

अकीर्तिं विनयो हन्ति, हन्त्यतर्थं पराक्रमः ।
हन्ति नित्यं क्षमा क्रोधमाचारो
हन्त्यलक्षणम् ।।

(महाभारत, उद्योगपर्व ३९/४२)

विनयभाव अपयश का नाश करता है, पराक्रम अनर्थ को दूर करता है, क्षमा सदा ही क्रोध का नाश करती है और सदाचार कुलक्षण का अंत करता है ।

अतीतानुसंधानं भविष्यदविचारणम् ।
औदासीन्यमपि प्राप्ते जीवन्मुक्तस्य
लक्षणम् ।।

(विवेकचूडामणि ४३३)

बीती हुई बात को याद न करना, भविष्य की चिंता न करना और वर्तमान में प्राप्त होनेवाले सुख-दुःखादि में उदासीनता—यह जीवनमुक्त का लक्षण है ।

नाफुसन्तं फुसति, फुसन्तं च ततो फुसं ।

(संयुक्तनिकाय १/१/२२)

नहीं छूनेवाले को नहीं छूता है, छूनेवाले को ही छूता है । अर्थात जिसकी कर्म के प्रति आसक्ति नहीं है, उसको उस कर्म का विपाक (फल) नहीं लगता है, आसक्तिपूर्वक कर्म करनेवाले को ही कर्मविपाक (फल) का स्पर्श होता है ।

यदा वै करोति अथ निस्तिष्ठति,
नाऽकृत्वा निस्तिष्ठति ।

(छान्दोग्य उपनिषद ७/२१/१)

निष्ठा उसी को प्राप्त होती है, जो कर्मण्य होता है । बिना कर्मण्यता के निष्ठा नहीं होती ।

प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

वर्ष ३०, अंक ८ जून, १९९०

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

वैदिक आख्यान/रतनलाल जोशी/ सहस्त्रार्जुन..... २८

साहस कथा :वह ह्वेल/डेविड गंसटन.....३२

असमी :हुक्का/ लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ..... ३५

मणिपुरी :भाई-बहन/खुमनथेम प्रकाश सिंह..... ४४

तमिल :राख/वासंती..... ५६

गुजराती :मुखियानी/पन्नालाल पटेल..... ६८

बांग्ला :हथियार/आशापूर्णा देवी..... ७५

हिंदी :कलकतिया/केवल सूद..... ८५

मराठी :तीनों की मांग/वि.वा. शिरवाडकर..... ९२

उड़िया :सेनापति/ मनोज दास.....१०२

उर्दू :रिश्ते-नाते/उजरा असगर १०८

पंजाबी :तुम्हारा कमरा मेरा कमरा/ दिलीप कौर टिवाना ११५

सिंधी :कवि/ मोहन कल्पना ११८

मलयालम :कलमी पौधा/सि.वि. श्रीरामन १४२

तेलुगू :तलाश/डी. केशव राव.....१६०

कन्नड़ :भगवान/अनुपमा निरंजना.....१६७

थाई :मेखला/ शंकरलाल मस्करा १७८

स्थायी स्तंभ

पैनी-नजर-६, शब्द-सामर्थ्य-८, समस्या-पूर्ति-९, प्रतिक्रियाएं-१०,ज्ञान गंगा-१३, काल-चिंतन- १६, ज्ञान-गंगा, गोष्ठी-५०, आस्था के आयाम-५४, बुद्धि-विलास-१०१, इनके भी बयां-१२३, विधि-विधान-१२८, दस्तक-१६८, प्रवेश-१७६, वैद्य की सलाह-१८०, क्या करे आप-१८२, तनाव से मुक्ति-१८५, यह महीना और आपका भविष्य-१८८, ज्योतिष : समस्या-समाधान-१९३, सांस्कृतिक समाचार-१९६, और अंत में-१९८

आवरण :हेमा अहलूवालिया (माडल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

निबंध एवं लेख

राजेन्द्र अवस्थी/रूस की नयी पीढ़ी..... २१
भगवान सिंह / है कोई खरीदार..... ४०
डॉ. राम प्रसाद मिश्र रहीम..... ६३
डॉ. सुधीर खेतावत/ अद्‌भुत करिश्मे ९०
मुनि किशनलाल/हींकार मंत्र.....१३४
रघुनाथ सिंह 'यादवेन्द्र' / प्रेम क्रीड़ाएं.....१३१
बद्रीप्रसाद जोशी समर्पित १३५
केशवदेव मिश्र 'कमल' / सनक लेखकों की.....१४१
अंकिचन/ कितनी सार्थक होगी.....१५२

कविताएं

गंगाप्रसाद विमल/काव्य यात्रा..... ४८
डॉ. इशाक अश्क/दो नवगीत ९८
दिनेश शुक्ल/लोग ९९
आनंद वल्लभ शर्मा 'सरोज'/ धूप छांही दोहे..... ९९

संपादकीय परिवार

सह-संपादक दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज,
भगवती प्रसाद डोभाल
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश,
सुरेश नीरव,
धनंजय सिंह

कला विभाग-प्रमुख सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त

पता : संपादक 'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

मूल्य :

वार्षिक :७५ रुपये द्विवार्षिक :१४५ रुपये,
विदेशों के लिए २९० रुपये वार्षिक वायु सेवा से, समुद्री जहाज से १३५ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल चिंतन

—वातावरण भयग्रस्त है, हम भयभीत हैं, आखिर किससे, क्यों ?

□

—भय का माध्यम वातावरण नहीं होता । यह एक सतही कल्पना है कि जो कुछ हमें ओढ़े हैं, जिनसे हम घिरे हैं, जो हमें कहीं मजबूर करते हैं—वे भय के आयाम हैं ।

—कहीं पढ़ा एक सत्य :

ब्राजील के इराकी दूतावास का एक कर्मचारी । वर्षों वह वहां रहा । स्वदेश लौटने लगा तो उपभोक्ता वस्तुओं के साथ एक डिब्बा भी अपने साथ ले चला । गत्ते का डिब्बा था और उससे आवाज़ें आ रही थीं । वास्तव में उस डिब्बे में दो तोते बंद थे । इन तोतों को उसने प्यार से पाला था । इनसे प्रतिदिन बातचीत करता था । इतने प्रशिक्षित कि तोते और मनुष्य भाषा का भेद खो चुके थे । चिंतन परिष्कृत था, इसलिए कि तोतों से जो भी प्रश्न वह करता, वे उत्तर देते थे । अरबी भाषा में दोनों ने तारतम्य बना लिया था । वह जब तक ब्राजील में रहा, उसने सारा प्यार और चेतना तोतों के साथ जोड़ ली ।

विमान तल पर अधिकारियों ने उस इराकी को रोका : ब्राजील के तोते बाहर नहीं ले जाये जा सकते । यह विधान है और विधान की अवज्ञा कानून की व्यवस्था में आती है । अधिकारियों ने आश्वासन दिया, वे तोतों को मुक्त कर देंगे । इराकी को स्वीकार्य नहीं था । वह तोते नहीं अपने अत्यंत आत्मीय मित्र अपने देश ले जा रहा था । स्वप्न था कि बगदाद में इनकी चर्चा होगी ।

कर्मचारी यथाशक्ति चिंतित खड़ा रहा और जब मजबूर व्यवस्था ने हिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

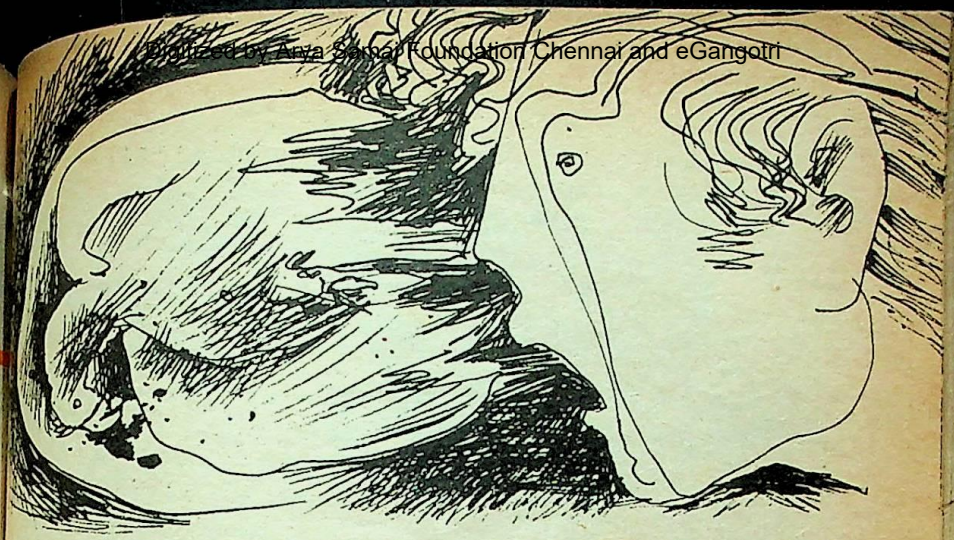

से अस्वीकार कर दिया, तो उस इराकी ने दोनों तोतों की गरदन मरोड़ दी। वे निष्प्राण हो गये, निष्क्रिय हो उनके स्वर लुप्त हो गए।

इराकी विमान पर चढ़कर स्वदेश चला गया। एक प्रश्न उभरता है, क्या हो सकता था। न्याय-व्यवस्था क्या अंधी लकीर है। वह व्यक्ति चाहता तो व्यवस्था से लड़ सकता था, उसे झुका सकता था।

—वह इराकी कर्मचारी का भय था।

—भय ने समस्त आत्मीयता का संहार कर दिया।

—भय भावनाओं को पी गया।

—भय का आभास कि नीला अंतरिक्ष जलती हुई अंगीठी है।

—भय का आभास कि चांद एक अंगारा है।

—भय यानी अशांति।

□

—सच पूछिए तो सोचना सबसे बड़ा भय है।

—इराकी ने अपनी तरह से सोचा।

—हम दूसरी तरह से सोचते हैं : कल क्या होगा ? आनेवाला समय कैसा होगा ?

—हम यात्रा करते हैं तो भयातुर कि विमान क्षतिग्रस्त न हो जाए, रेल दुर्घटना-ग्रस्त हो सकती है, बस खड्डे में गिर सकती है।

—उठते, बैठते, चलते, सोते कोई न कोई भय हमें आच्छादित किये है।

□

—कर्मचारी हैं तो अफसर का भय है !

—अफसर हैं तो सत्ता का भय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

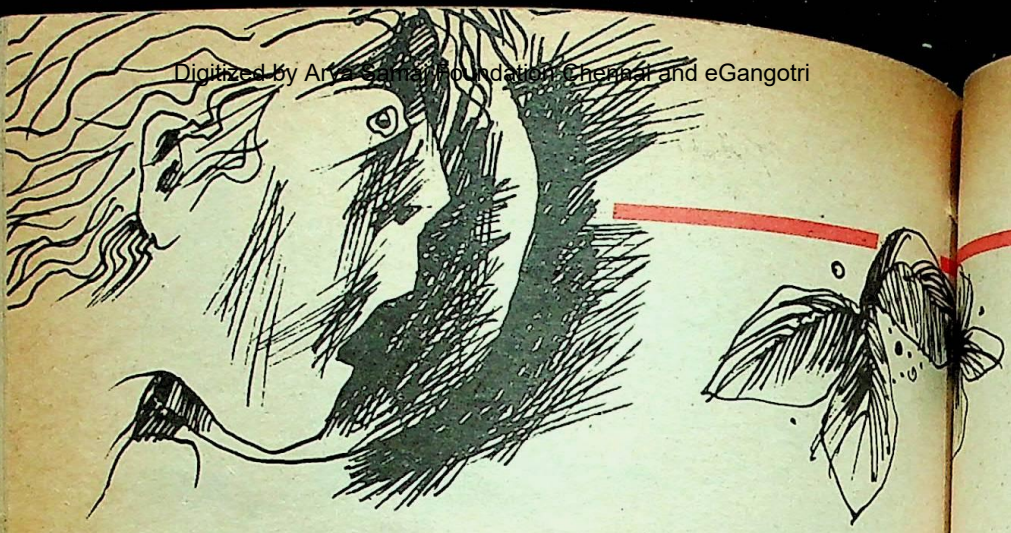

—सत्ता में हैं तो जनता का भय है।

—भय एक भेड़िया है। भेड़िया स्वयं वृद्ध और असहाय हो सकता है पर कमजोर जानवरों के लिए वह स्वस्थ्य भेड़िया है।

—जंगल कभी गये हैं ? घोड़े पर सवारी की है ? जंगल में शेर हो और आप घोड़े पर सवार हों, तो कितनी ही नकेल क्यों न खींचें, घोड़ा शेर के सामने आपको ले जाएगा।

—कबूतर शांत आंगन में बैठा है, बिल्ली की आंख मिली कि कबूतर ने आंखें बंद कर लीं, बिल्ली का शिकार हुआ वह।

—बंदरों में शोर और हलचल मच जाती है जब कोई हिंसक पशु वृक्ष के नीचे से गुजरता है। यह जानते हुए भी कि वह हिंसक पशु वृक्ष पर नहीं चढ़ सकता, बंदरों की पकड़ ढीली हो जाती है।

□

—मनुष्य इनसे भिन्न नहीं है।

—मनुष्य का मूलाधार है स्मृति। वर्षों का व्यतीत उसकी स्मृति-पटल पर हलका-सा धक्का लगते ही उभर आता है।

—स्मृति को नियंत्रित करना कठिन है।

—स्मृति का उद्गार चिंतन या सोचने से होता है।

—यह चिंतन या सोच ठीक वही तत्व है, जिसे गाय या बंदर जुगाली कर अपने गले के पास थैलियों में भर लेते हैं। भूख का आभास होते ही उसका अंश उनका सार्थक साथी बनता है।

—मनुष्य भी जुगाली करता है; विचारों की जुगाली; उसी से स्मृति-खंड के उभरते ही वह व्यतीत को वर्तमान में बदल देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

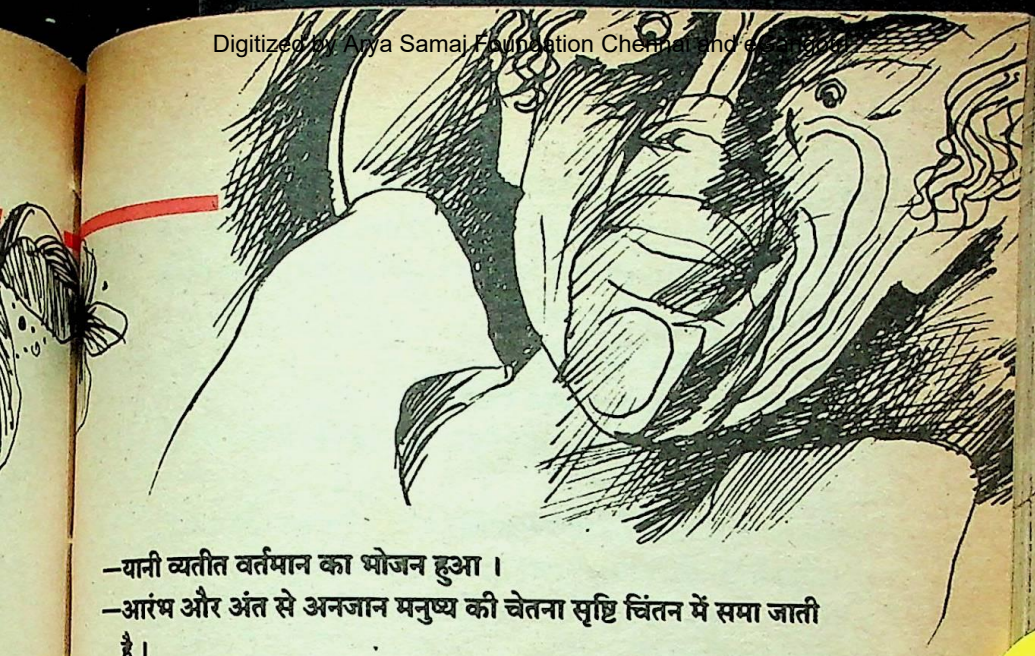

—यानी व्यतीत वर्तमान का भोजन हुआ ।
—आरंभ और अंत से अनजान मनुष्य की चेतना सृष्टि चिंतन में समा जाती है।
—चिंतन कालातीत है ।
—अंधकार हो या प्रकाश, चेतन बुद्धि हो या अवचेतना में विश्राम करती बुद्धि, चिंतन या सोचना एक हिंसक प्राणी की तरह जागृत रहता है ।
—इस प्रक्रिया में कहा जा सकता है कि सोचना गति है । सोचना स्मृति है अथवा सोच एक विचार कोष है ।
—विचार-कोष जोड़ता भी है, तोड़ता भी है ।
—जोड़ता है विचार कोष जब संयम हो ।
—तोड़ता है विचार कोष जब आदिम प्रहरी पीड़ित कर जाए ।
—स्पष्ट है विचार का अस्तित्व है—भय ।

□

—किसी पागल को देखिए : दो तरह के पागल—एकदम बुद्धि से विदा, दूसरे जिनमें बुद्धि का नन्हा जीव शेष है । पहला भयग्रस्त नहीं होगा, क्योंकि वह सोच की विभक्ति को नहीं पहचानता । दूसरा हिलते हुए जाले-सा भय में झूलता मिलेगा, क्योंकि उसका सोच उल्काओं की तरह आता-जाता रहता है ।
—पागल से परे शाश्वत चिंतन के द्वार हैं । मनुष्य का शरीर नश्वर है, सोच आत्मा की तरह अमर है ।
—सोच दिग्विजय है और मुंह से बाहर आते ही वह वायु तत्व का एक पिंड बन जाता है । यह पिंड अजर-अमर है । वह हवा में फैलकर मीलों और सदियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की यात्रा करता है ।

—सोच ही तो है जो अंततः शिलालेख बनता है ।

—आदिम सभ्यता के विकास-क्षणों में जब भौतिक आयाम नहीं थे, यही सोच था, यही चिंतन था, यही विचार था, अनश्वर बना रहा और आज हमारे ज्ञान का अपूर्व भंडार बना ।

—सोच ने ही सभ्यता को जन्म दिया ।

—सोच ने ही दिग्विजय के वातायन खोले ।

—वही सोच है जो भय भी बना और निरंतर हमें भयभीत किये जाता है ।

□

—ज्ञान अपार अनंत है । आज तक न कोई दावा कर सका और न कर सकता है कि वह समस्त ज्ञान का अध्येता बन गया है ।

—ज्ञान अनंत-अपार है इसीलिए उसके विश्लेषण वेद से बने पुराणों और संहिताओं की तरह हैं ।

—रस्सा खींचनेवाले दलों की तरह ज्ञान खींचा जाता है और उसका मात्र एक लघुतम खंड, जिसे मिल जाता है, भागता है, घोषित करता है वह सामर्थ्यवान हो गया ।

□

—जीवन सीमित है, यह कहते हैं तो अर्थ होता है शरीर सीमित है ।

—सीमा का स्वीकार्य बच्चे का खुनखुना नहीं है, इसलिए, सोचिए यहीं ठहर कर ।

—स्वीकार करें सोचना भय है । शेष रह जाता है उसे सीमित करना और संयमित कर प्रयोगशाला की परखनली से उतना ही लेना जितना आवश्यक है ।

—सोच को कैद नहीं किया जा सकता, इसलिए यह सहज नहीं है, लेकिन कैदी अपने दुर्व्यवहारों के बावजूद सद्-व्यवहार तो कर सकता है ।

राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ने रूस का चेहरा

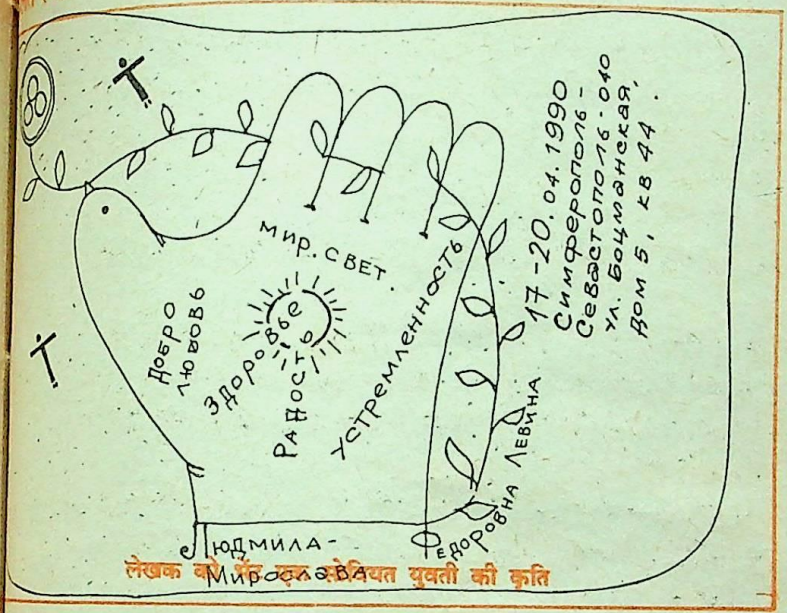

लेखक को मिला सोवियत युवती की कृति

'मुक्त रूस' जहां बहुत कुछ आशा और सुविधा का क्षेत्र बना है, वहीं विघटन की समस्याएं और क्षेत्रीयवाद उभरकर सीधे सामने आये हैं।

...स की नयी पीढ़ी भारतीय संस्कृति की खोज में

● राजेन्द्र अवस्थी

...न ही में मैं सोवियत संघ की यात्रा से ...टा हूं। रूस मेरे लिए नया नहीं है। ...बार वहां गया हूं और शायद ही कोई ...ी जो अनदेखा रह गया हो। मास्को से ...वोस्तोक तक सभी कुछ देखा है। इस बार की यात्रा मास्को, सिंफपूल और ब्लेक सी के किनारे बसे सौंदर्य क्षेत्र याल्टा तक रही।

बहुत पहले मैंने लिखा था कि जब गर्वाचोव रूस में उदार नीति आरंभ करने जा रहे थे तो उन्होंने योजनाबद्ध ढंग से काम किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याल्टा के एक भवन का प्रवेश द्वार

बुद्धिजीवियों से लेकर किसानों तक से उन्होंने संपर्क किया। इसके बाद एक नीति की घोषणा की, जिसमें खुलेपन और स्वतंत्रता को बल मिला। गर्बाचोव की इन घोषणाओं ने रूस के ही नहीं दुनिया के इतिहास में परिवर्तन की तीव्रतम लहर ला दी है। लगता है साम्यवाद आगे चलकर मात्र चिंतन और इतिहास का विषय रहेगा।

इन दिनों रूस में परिवर्तन इतने तेजी-से हो रहे हैं कि आज का निर्णय कल यदि बदल दिया जाए तो आश्चर्य नहीं होगा। वहां की जनता भी परेशानी से यह सब देख रही है। लेकिन इनके पीछे एक ही दलील है कि वर्षों से जो व्यवस्था रूस में चली आयी है, अचानक उसमें परिवर्तन होने से जनता सभी तरह के दबावों से मुक्त होना चाहती है। जहां बोलने, लिखने और कला करने की आजादी न रही हो, वहां एकदम 'खुलापन' आ जाए तो ऐसी स्थिति पहले अव्यवस्था की होती है। अव्यवस्था को व्यवस्थित करने में संयम और धैर्य की जरूरत है। गर्बाचोव उस संयम का परिचय दे रहे हैं।

रूसी जनता साम्यवाद के प्रभाव को छोड़कर अब नये सांस्कृतिक और दार्शनिक मूल्यों की खोज में है। इन मूल्यों का पथ-प्रदर्शक कोई नहीं है, इसलिए वे बेचैन हैं। समूचे रूस में योग, मेडीटेशन और एक नयी सभ्यता की खोज हो रही है। प्रसन्नता की बात यह है कि इस खोज में भारतीय जीवन और दर्शन वहां उभर रहा है। हमारे वेद, पुराण और संहिताओं की व्याख्या हो, इसकी चाह है, लेकिन अभी तक कोई ऐसा व्यक्ति नहीं पहुंचा जो रूसी जनता को ऐसी शांति दे सके। मैं कह सकता हूं कि रूस की युवा पीढ़ी बेहद बेचैन है। इस बेचैनी का लाभ कुछ लोग उठा रहे और योग तथा ध्यान (मेडीटेशन) की दुकानें खोल रहे हैं। उनका ज्ञान इतना अधकचरा कि वे दुकान तो खोल लेते हैं, जनता की पिपासा को शांत नहीं कर सकते। इसके लिए भारतीय दूतावास को पहल लेनी पड़ी। दूतावास की मदद से रूसी टेलीविजन पर की शिक्षा दी जा रही है। युवाओं के लिए टेलीविजन के 'एज्यूकेशनल चेनल' पर १५-२० मिनट का कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। शनिवार और रविवार को अनेक 'आस सिखाये जाते हैं, जिन्हें अस्सी करोड़ रूसी जनता देखती है। कार्यक्रम भारतीय दूतावास के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र में हो

याल्टा के एक
में भाग लेने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याल्टा के एक दुर्गमुषा भवन के सामने वे लेखक जो संस्कृति के माध्यम से शांति-सम्मेलन में भाग लेने सोवियत संघ गये।

...लिखने और काम
...हो, वहां एकदम
...सी स्थिति पहले
...अव्यवस्था को
...और धैर्य की जरूरत
...का परिचय दे रहे हैं
...के प्रभाव को
...क और दार्शनिक
...न मूल्यों का
...इसलिए वे बेदेन
...शन और एक नई
...है। प्रसन्नता की
...रतीय जीवन और
...हमारे वेद, पुराण
...इसकी चाह है,
...ा व्यक्ति नहीं पहुं
...ांति दे सके। मैं
...पीढ़ी बेहद बेचैन
...कुछ लोग उठा रहे
...टेशन) की दुकान
...इतना अधकचरा
...हैं, जनता की
...पकते। इसके लि
...लेनी पड़ी।
...टेलीविजन पर
...वाओं के लिए
...न चेनल' पर
...प्रस्तुत किया
...को अनेक 'आत्म
...ी करोड़ रूसी
...भारतीय दूतावास
...तिक केंद्र में हो

...कहीं टेलीविजन के कैमरे शूटिंग करते हैं
...रात तक वे सारे कार्यक्रम पहुंचाते हैं।
...स्थानीय सांस्कृतिक केंद्र में योग की शिक्षा
...लों की संख्या इतनी अधिक है कि इस
...६०० व्यक्ति प्रतीक्षा सूची में हैं।
...क्षा का पूरा कोर्स एक वर्ष का है।
...योग के सिवाय सांस्कृतिक और
...ख्यवादी मूल्यों को भी सम्मिलित किया
...है। कार्यक्रम प्रार्थना से शुरू होता है :

...मा ज्योतिर्गमय
...मा सद्गमय

(इत्यादि)

भारतीय वेद-ध्वनियां रूस की हवाओं में मिलकर एक आस्थावान संस्कृति को जन्म दे रही हैं।

मैं एक उदाहरण देना चाहूंगा। याल्टा में मेरा लंबा भाषण हुआ था। उसमें रूस के सिवाय अनेक देशों के युवा और विद्वान व्यक्ति उपस्थित थे। यहां तक कि लिथवानिया के पांच सदस्य भी वहां आये थे। मैंने भाषण के आरंभिक अंशों में सांस्कृतिक मूल्यों की चर्चा करते हुए उनको भारतीय और ग्रीक दर्शन के साथ समाविष्ट किया। इसके बाद जीवन और

रूस के बाजार प्रायः खाली पड़े हैं।
...भारत या अन्य देशों से सामान आता है तो तुरंत बिक जाता है।

...१९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु की अवधारणाएं समझायीं । फिर बताया कि गीता ने स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया है कि आत्मा अजर-अमर है, हम पहले यहां जरूर हुए होंगे और शायद आगे भी हों। यही कारण है कि हम यहां मिले हैं । हमारा मिलना महज एक घटना नहीं है । इसके बाद मैंने स्पष्ट रूप से समझाया कि मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं नियंता है । अपने भीतर यदि वह आत्मबोध (सेल्फ कांसेसनेस) जागृत कर ले, तो अनेक भावी घटनाओं और दुर्घटनाओं से स्वयं परिचित हो जाएगा । आत्मबोध की जागृति सनातन मनुष्यता की अनश्वरता का मूल-चक्र है । मेरा भाषण काफी लंबा था और दुभाषिए ने मेरे अंगरेजी भाषण का इतना सटीक रूसी अनुवाद किया कि श्रोता हतप्रभ रह गये । मैं भीड़ में घिर गया और वहां की जनता का अपार प्यार मुझे मिला ।

यह है नये रूस का परिदृश्य । उनकी मानसिक भूख जिस तरह उभरी है यदि उचित

भोजन नहीं मिला, तो एकदम बिखराव की स्थिति पैदा हो सकती है । भारतीय दर्शन के साथ-साथ भारतीय ज्योतिष, तंत्र, मंत्र, योग और जीवन मूल्यों की पहचान करानेवाले साहित्य की वहां भूख है । बहुत से लोगों ने अरविंद और विवेकानंद से लेकर जे. कृष्ण तक के चिंतन को समझना चाहा । वे मानने लगे हैं कि पुनर्जन्म होता है । धर्म में उनकी आस्था बढ़ रही है । धर्म के मायने रूस में ईसाई और मुसलिम संप्रदाय मुख्य हैं, पर आस्था जिस ओर उनकी जा रही है, वह कुछ अलग है । भारतीय तत्वज्ञान और मीमांसा वे पहचानना चाहते हैं । 'ऊं' ज्ञानयोग का है, यह मानना उनके लिए बहुत सहज है महिलाओं ने अपने ही सोच-विचार से बनाये और मुझे भेंट किये । कुंडलिनी चक्र शोध करनेवाले एक छात्र से मेरी भेंट हुई श्री यंत्र पर भी काम कर चुके हैं और उनकी अपनी परिभाषाएं हैं । कई बार तो हमसे भी हुई । निष्कर्ष यह निकला कि रूसी यदि भारत का यह अपार ज्ञान उपलब्ध जाए तो उनकी छटपटाहट को शांति मिल

रूस में और भी परिवर्तन हो रहे हैं । टेलीविजन पर अब पांच भाषाएं सिखायी रही हैं, उनमें अंगरेजी प्रमुख है । कुछ बाद रूसी जनता काम चलाऊ अंगरेजी सीख ले तो आश्चर्य नहीं होगा । रूस के शहर में मैंने कभी बोर्ड लगे नहीं देखे बार तो नियोन साइन भी लगे दिखायी टेलीविजन पर विज्ञापन दिखाना भी शुरू दिया गया है और अमरीका तथा यूरोप फिल्में धड़ल्ले से दिखायी जा रही हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

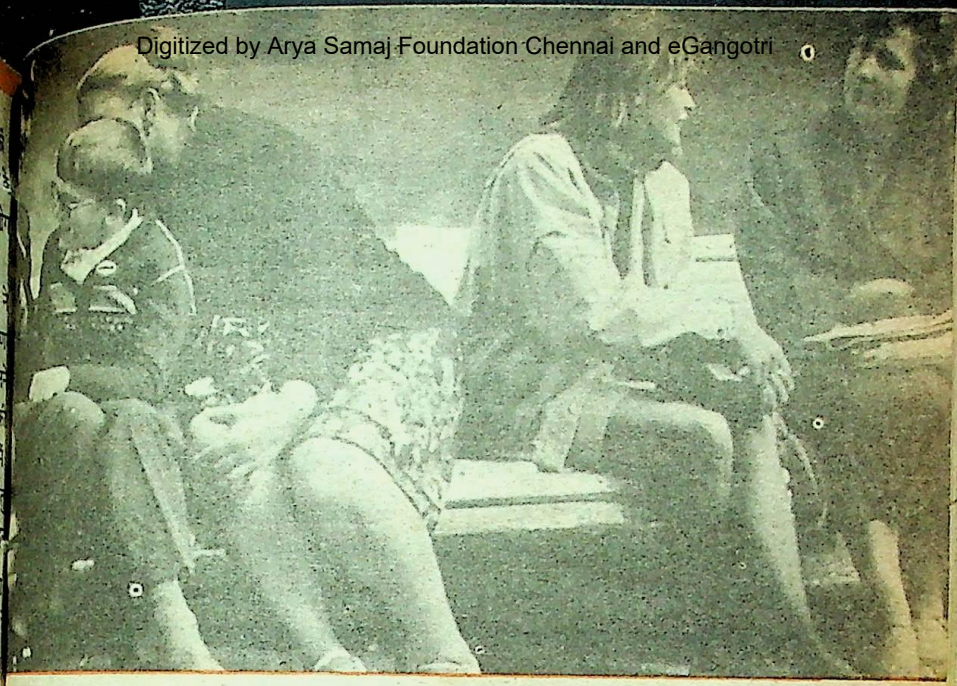

कभी फिल्मों में चुनाव किया जाता है और कदम खुली फिल्में नहीं दिखायी जातीं। लेकिन यह बहुत समय तक नहीं चलेगा।

रूस धीरे-धीरे उपभोक्ता संस्कृति की ओर बढ़ रहा है। विदेशियों को होटल में पहले प्रवेश दिया जाता है। रूसियों को 'क्यू लाइन' लगानी पड़ती है। हम 'क्यू' में खड़े थे तो होटल का एक अधिकारी हमें तुरंत ले गया। उसने बताया कि विदेशी सीधे आ सकते हैं। डालर की मांग बढ़ रही है। इसलिए रूस में रूबल की दो दरें हैं—एक तो व्यापारिक दर। उसके अनुसार रूबल बहुत महंगा है यानी एक डालर में ०.६८ रूबल मिलते हैं। व्यापार और ड्यूटी फ्री शॉप में यही दर लागू होती है। लेकिन पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए रूबल की दूसरी दर है, यानी एक डालर में बारह या तेरह रूबल। बैंक के बाहर तो १६-१७ रूबल तक मिल जाते हैं। इससे रूस में आर्थिक गिरावट आयी है। यह गिरावट वहां की सरकार के लिए भी चिंता का विषय है, लेकिन एक बात मैंने देखी, उनमें अटूट विश्वास है कि यह थोड़े समय रहेगा। एक दबा हुआ राष्ट्र जब अचानक 'मुक्त' होता है तो ऐसी समस्याएं सामने आती ही हैं। जो भी हो, गर्वाचोव के लिए यह एक बहुत बड़ी चुनौती है।

रूस में एक बात का ध्यान रखना और जरूरी है—वहां होटलों के दरों में भी भेद है। यानी किसी भी होटल का कमरा रूसी नागरिक को बहुत सस्ता मिलेगा तो पर्यटक को उसी कमरे के कई गुने दाम देने होंगे।

पढ़ने का शौक हर रूसी को है, इसलिए वहां लेखक बनकर आराम से रहा जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

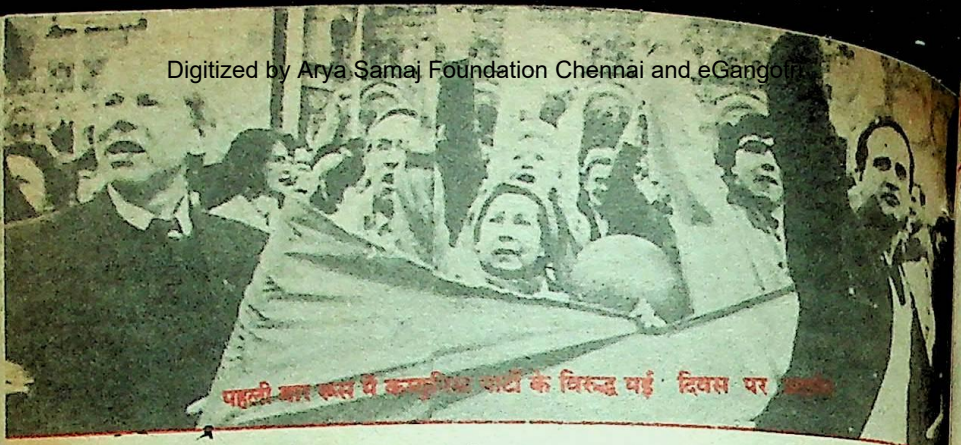

पहली बार रूस में कम्युनिस्ट पार्टी के विरुद्ध नई दिवस पर

रूस की पुलिस को मलेशिया कहते हैं। पहले मलेशिया का इतना रौब-दौब था कि वह अपना सफेद डंडा हिलाकर सीधे दिखा देता था तो कार चाहे किसी की क्यों न हो, वहीं उसे रुकना पड़ता था। अब मलेशिया मजे में घूमती है। जनता तनिक भी भयभीत नहीं है। मलेशिया का वह रौब 'आजादी' और 'खुलेपन' में उड़ गया है। शिकायत भी करें तो उसका कोई अर्थ नहीं है।

रूस के बाजार प्रायः खाली पड़े हैं। कभी भारत या अन्य देशों से सामान आता है तो तुरंत बिक जाता है। इस बार तो दूध और दही भी कहीं-कहीं कभी मिला है। बाजारों में लंबी 'क्यू' लगी होती है और खरीददार उसी से घबरा उठता है। एक बात की खुशी अवश्य होनी चाहिए कि यदि कहीं बहुत लंबी लाइन दिखे, तो समझ लीजिए कोई नयी पुस्तक बाजार में आयी है। पढ़ने का शौक हर रूसी को है, इसलिए वहां लेखक बनकर आराम से रहा जा सकता है। विक्रय के क्षेत्र में विशेष योगदान टेलीविजन का भी है। मैंने वहां कार्यक्रम देखे। छह मिनट का कार्यक्रम भले हो, किसी नयी पुस्तक की पूरी चर्चा किसी समीक्षक से अकेले करायी जाती है। वहां लेखक उपस्थित नहीं होता, होती है उसकी कृति। वाचक उस कृति का विषय प्रतिपादित करता है फिर यहां-वहां से उसके कुछ अंश पढ़े जाते हैं। अंत में लेखक, प्रकाशक का नाम, पुस्तक कहां उपलब्ध है और उसका मूल्य क्या है, घोषित किया जाता है। रूसी टेलीविजन पर मैंने यह अपने ढंग का कार्यक्रम देखा है।

'मुक्त रूस' में अनेक प्रतिबंधित लेखक जनता के सामने आ रहे हैं और उनकी रचनाओं का प्रकाशन हो रहा है। ये वे रचनाएं थीं जिनके प्रकाशनों पर पहले रोक लगी थी। नोबल पुरस्कार प्राप्त लेखक बोरिस पास्तरनाक और सोलजेनित्सन अब घृणा के पात्र नहीं हैं। यह अपने आपमें बहुत बड़ी उपलब्धि है। लेखक संगठन का ढांचा भी पहले से बदल रहा है। नये संगठनों के लिए खुली छूट है।

'मुक्त रूस' जहां बहुत कुछ आशा और सुविधा का क्षेत्र बना है, वहीं विघटन की समस्याएं और क्षेत्रीयवाद उभरकर सीधे सामने आये हैं। लिथवानिया, लातिविया, जार्जिया आदि अनेक गणराज्य अलग होने के लिए तैयार हो रहे हैं। मैं नहीं जानता गर्बाचोव इस नयी और गंभीर समस्या का कैसे सामना करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें तो क्या करें ?

—वी. सुमिन

शादी करना भी एक मुसीबत है । पर आजकल उससे भी ज्यादा मुश्किल काम है मर्द की तलाश, क्योंकि पता ही नहीं चलता कौन औरत है और कौन मर्द । दोनों एक जैसे काम करते हैं, दोनों ही 'जींस' और 'स्नीकर्स' पहनते हैं और दोनों की केशसज्जा समान होती है । आजकल मर्द गुमनामी में रह रहे हैं और औरतें ऊपर उछल रही हैं । सब एक हैं, न कोई मर्द और न कोई औरत । बस सिर्फ मजदूर हैं, किसान हैं, बुद्धिजीवी हैं ।

पर क्या करूं, बच्चे मुझे बड़े अच्छे लगते हैं और मेरी इच्छा है मेरे अपने बच्चे हों । इसलिए मैं एक अदद पति की तलाश में निकली । यहां-वहां सब जगह मैं ढूंढ़ती फिरी । एक दिन एक निर्माण स्थल से गुजर रही थी कि देखा कि क्रेन जाम हो गयी है और चारों ओर बावेला मचा हुआ है । लोग चिल्ला रहे थे, "क्या करें ? अरे, क्या करें ?" तभी मैंने उसे देखा—लंबा, तगड़ा, नयी जैकेट पहने । उसने क्रेन के बाल्टे के नीचे कंधा लगाकर हुमका और क्रेन चालू हो गयी ।

अब अपनी हालत का क्या बयान करूं ? टहलती हुई उसके पास गयी और कहा, "दोस्त, एक सिगरेट देना !" पतली-सी आवाज में उसने कहा, "माफ कीजिएगा, मैं महिला हूं ।" हे भगवान ! अब किससे शादी करूं ! जो भी अच्छा मर्द दिखायी देता है वह औरत निकलता है ।

अगले दिन मैं व्यायामशाला गयी । वहां कसरती लोगों की भीड़ लगी थी । कुछ लोग कलाबाजी खा रहे थे, कुछ मुग्दर भांज रहे थे, और कुछ फुटबॉल के मैदान में डटे थे । एक फुटबॉल खिलाड़ी ने आवाज मारी, "अरी गाल्या, इधर दे न !" तभी एक तरफ एक लंबा-तगड़ा आदमी नजर पड़ा जो कोई पहले का चैंपियन या प्रशिक्षक था । मैंने उससे कहा, "आप मुझे पांच मिनट का वक्त देंगे ?" उसने मेरा हाथ पकड़कर ऐसा दांव लगाया कि मैं हवा में उछल गयी और उछलकर बेहद खुश हुई । जब जमीन पर पैर टिके तो देखा वह अपने होंठों पर लिपिस्टिक लगा रही थी । मैंने पूछा, "क्या आप महिला हैं ?" उसने मुझे घूरकर देखा और बोली, "मिस्टर आपसे मतलब ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्रार्जुन से रावण की मुठभेड़

● रतनलाल जोशी

तपोव्रत से सिंचित और बज्र-बाहुओं से रक्षित आर्यों का यज्ञ-वृक्ष अपनी शाखा-प्रशाखाओं में विस्तार पा रहा था। अगस्त्य, वशिष्ठ और विश्वामित्र ने अपनी विभूतियां सींचकर उसे आर्य-जीवन का कल्पवृक्ष बना दिया था। पांचाल और कौसल इस संस्कृति के प्रमुख गढ़ थे। ये दोनों प्रदेश ही आर्यावर्त के कीर्ति-तोरण थे। पांचाल में सम्राट दिवोदास के पराक्रमी पुत्र सुदास का अजेय ध्वज फहराता था और कौसल में इक्ष्वाकुवंशीय महाराज दशरथ के शौर्य का सूर्य मध्याह्न पर था। आर्यावर्त की सीमा को छूता हुआ दक्षिण-पूर्व में माहिष्मती का इतिहास-विश्रुत साम्राज्य था, वहां हैहय कृातवीर्य का पुत्र सहस्रार्जुन राज्य करता था। कार्तवीर्य सहस्रार्जुन ने अपने अद्वितीय बल-विक्रम से माहिष्मती को युग की सबसे समृद्ध नगरी बना दिया था। अपरिमित चतुरंगिनी के अतिरिक्त विशाल नौसेना भी उसके पास थी। माहिष्मती नगरी नर्मदा के तट पर अवस्थित थी और सप्तद्वीप-नौ खंडों के व्यापारी जहाज माहिष्मती के तट पर लंगर डालते थे।

मृत्यु का बदला

इन राज्यों के आसपास असुरों के शक्तिशाली राज्य थे। दशरथ की सहायता से पांचाल-पति दिवोदास ने असुरेंद्र शम्बर को परास्त कर दिया था, किंतु उसका सेनापति वचिंन और पुत्र भेद फिर शक्तिशाली हो गये थे। भेद अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए यत्र-तत्र बिखरे सारे अनार्य-बल को एक सूत्र में बांध रहा था। दक्षिण में राक्षसराज रावण लंका से कैलाश तक अपना एकच्छत्र प्रभुत्व स्थापित करने की तैयारियां कर रहा था।

सुदास युद्ध की तैयारी कर रहे थे। इस बार कार्तवीर्य सहस्रार्जुन को भी उन्होंने ससैन्य आमंत्रित किया। सहस्रार्जुन की बड़ी महत्त्वाकांक्षा थी कि वह उत्तरापथ में भी अपनी धाक जमाये। अतः सात अक्षौहिणी सेना लेकर वह पांचाल पहुंच गया। किंतु महामात्य वशिष्ठ सहस्रार्जुन के आचरण से काफी क्षुब्ध थे। सहस्रार्जुन ने ऋषि जमदग्नि के आश्रम को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

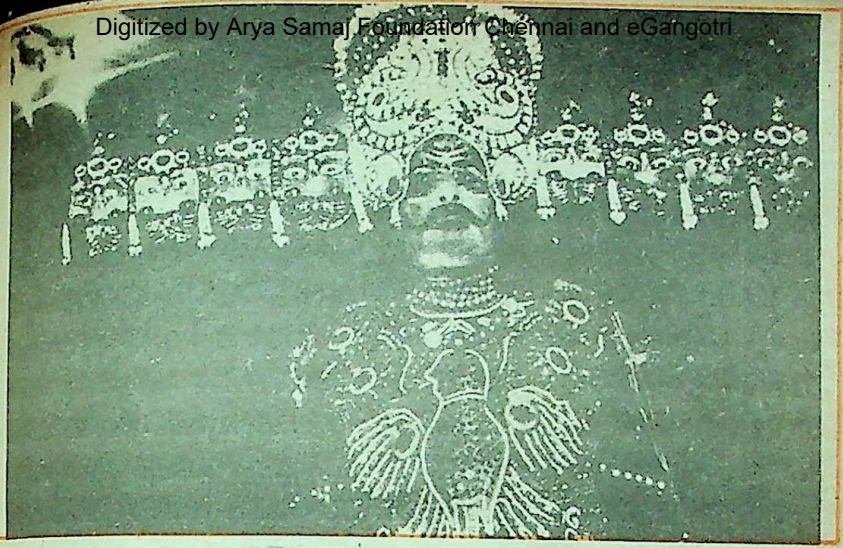

उजाड़ था और स्त्री-हरण एवं बहु-विवाह जैसे अनार्य-कृत्य वह करता रहता था । पांचाल आते समय भी उसने जमदग्नि ऋषि की पत्नी रेणुका को बंदी बना लिया था । आचार-धर्म को आर्य-संस्कृति का मेरुदंड माननेवाले मुनि वशिष्ठ के लिए यह असह्य था । उन्होंने सहस्रार्जुन की भर्त्सना की और उसे दंड देने के लिए भरतों (भरतवंशियों) और भृगुओं की सेना एकत्र कर ली । किंतु इसी समय सहस्रार्जुन को समाचार मिला कि लंकाधिपति रावण ने माहिष्मती पर आक्रमण कर दिया है । अतः वशिष्ठ से लोहा लेने के बजाय वह अपनी राजधानी की तरफ मुड़ा जहां राक्षसों की विशाल सेना राज्य की सीमा को लांघकर भूखे भेड़ियों की भांति माहिष्मती की दिशा में बढ़ रही थी ।

सहस्रार्जुन की ललकार

कई दिनों की यात्रा के बाद सहस्रार्जुन ने भी अपनी सेना को रावण के दल-बल के सामने अड़ा दिया और रावण को ललकारा । रावण अपने चुने हुए वीरों के साथ कार्तवीर्य के सम्मुख आया और गरजकर बोला— "अर्जुन, मैं तुम्हें अपना मित्र बनाने आया हूं, माहिष्मती देकर मेरी मैत्री का गौरव प्राप्त करो । यह सम्मान रावण ने किसी राजा को नहीं दिया है । तुम वीर-शिरोमणि हो और रावण वीरों का आदर करता है ।"

रावण के ये शब्द सुनकर सहस्रार्जुन काफी देर तक हंसता रहा, बोला— "रे पौलस्त्य, तेरे विषय में मैंने जो सुना था, तू वास्तव में वैसा ही वाचाल है । अस्तु, तू अब इतना कर कि माहिष्मती की सीमा छोड़कर चला जा, सीमोल्लंघन के तेरे अपराध को मैं क्षमा करता हूं । मैं व्यर्थ में मानव-रक्त बहाना नहीं चाहता ।"

रावण की भौंहें तन गयीं— "रे मदांध ! तू नहीं जानता कि किसके क्रोध को उभाड़ रहा है । मेरी यह गदा तेरे— जैसे अहंकारियों का मदभंग करने के लिए ही मेरे कंधे पर चढ़ी है । स्वयं की और अपनी प्रजा की कुशल चाहते हो तो मेरा प्रभुत्व स्वीकार कर ले । मैं तुझे यहां का सेनाध्यक्ष बना दूंगा ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

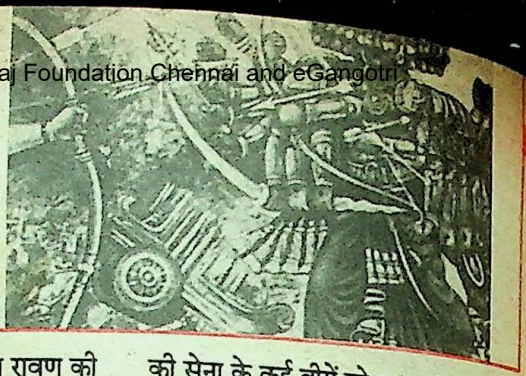

सहस्रार्जुन सहज मुस्कान के साथ रावण की बात सुन रहा था । अविचल भाव से ही उसने कहा— "रावण ! तेरे लिए कुशल इसी में है कि तू आर्यों से वैर मोल मत ले । आर्यों से टकराकर कोई अविकल नहीं बचा है । उनके सामने सत्य का प्रकाश और चरित्र का बल है । इसीलिए उनका पराक्रम अजेय है । मैं बहिष्कृत अवश्य हूं, किंतु तो भी हूं तो आर्य ही । मैत्री आर्यों से ही होगी, राक्षसों से नहीं । यों आर्य सब के मित्र हैं, किंतु प्रेम की मैत्री हमें मान्य है, पराभव की नहीं । पौलस्त्य रावण, तू वापस चला जा और सुखपूर्वक लंका एवं समुद्र पर शासन कर !"

किंतु रावण तो दिग्विजय के लिए निकला था । माहिष्मती की विश्व-विश्रुत वैभव-संपदा को हस्तगत करने के लिए वह बरसों से तैयारियां कर रहा था । उसने अपना शंख फूंका और सेना को आक्रमण करने की आज्ञा दे दी । स्वयं रथासीन होकर माहिष्मती की सेना पर टूट पड़ा । हैहयों ने भी अपने शंख फूंके और दोनों दलों में घमासान युद्ध छिड़ गया । संध्या तक युद्ध अनिर्णीत रहा ।

मकर व्यूह का संगठन

दूसरे दिन रावण ने अपनी सेना मकर-व्यूह में संगठित की और भीषण बाण-वर्षा करता हुआ वह हैहय-सेना की ओर बढ़ा । क्रुद्ध नागों की तरह फुंफकारते हुए उसके तीरों ने कार्तवीर्य की सेना के कई वीरों को धराशायी कर दिया । रावण की मार से चारों तरफ 'त्राहि-त्राहि' मच गयी । अपनी सेना का यह प्रतिहत संहार देख सहस्रार्जुन अपना रथ रावण के सामने लाया । दो भंयकर नागों की भांति दोनों युद्ध में गुंथ गये । अर्जुन अपने हस्तलाघव के लिए विख्यात था । इसीलिए वह 'सहस्रबाहु' कहलाता था । बात-की-बात में उसने रावण के रथ को बाणों से आच्छादित कर दिया । किंतु रावण भी दैव-दानव-कुलों का विजेता था । पराक्रमी नागों को उसने पराभूत किया था । उसने भी अनवरत बाण-वर्षा से सहस्रार्जुन के सारथी को विकल कर दिया ।

किंतु सहस्रार्जुन के सामने उसकी एक न चली । रावण को आहत्-विह्वल छोड़, अर्जुन राक्षस-सेना में घुस गया । राक्षस-सेना में भगदड़ मच गयी मानो सिंह मृगों के झुंड में घुस गया हो । रावण ने देखा तो विद्युत-गति से वह कार्तवीर्य के अवरोध को आ गया । रथ से नीचे उतर उसने अर्जुन को गदा-युद्ध के लिए ललकारा । अर्जुन भी नीचे उतरा और दोनों में भयंकर गदा-युद्ध होने लगा ।

शौर्य के साथ छल का प्रयोग

दोनों पक्षों की सेनाओं ने युद्ध रोक दिया और यह द्वंद्व-युद्ध देखने लगी । रावण मत्त गयंद की भांति वार-पर-वार करता जा रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। उसके पांवों की स्फूर्ति अपूर्व थी। शौर्य के साथ छल भी वह करता जाता था। उसने पूरी शक्ति के साथ गदा घुमायी और कार्तवीर्य की जांघ पर मारी। अप्रत्याशित प्रहार से सहस्रार्जुन भूमि पर लुढ़क गया। रावण ने उपयुक्त अवसर देखा और पृथ्वी पर आहत पड़े अर्जुन पर फिर गदा से वार किया। किंतु सहस्रार्जुन तो वज्रांग था। उसने रावण की गदा को अपने वृषभ-कंध पर झेला। गदा के दो टुकड़े हो गये। रावण अवाक् देखता रह गया उस लौह-पुरुष को जिसकी हुंकार से देश-विदेश का मल्ल-समाज कांपता था। उसने अपना खड्ग निकाला और सहस्रार्जुन पर झपटा। अर्जुन ने आगे बढ़कर रावण के वक्ष पर एक घूंसा मारा। खड्ग उसके हाथ से छूट पड़ा और वह धरती पर छटपटाने लगा।

सहस्रार्जुन की आंखों से अंगारे बरस रहे थे। दहाड़ते हुए उसने रावण से कहा—"छली, धूर्त! युद्ध के नियमों को भंग करने का दंड आज अर्जुन के हाथों तुझे अवश्य मिलेगा। उठ और प्रहार कर!"

रावण कृतांत के समान अर्जुन पर टूट पड़ा। मल्ल-विद्या-विशारद अर्जुन ने उसे एक ही पैंतरे में अपनी कांख में चपेट लिया। रावण की गरदन सहस्रार्जुन की कांख में दबी थी—पीड़ा के मारे रावण कराहने लगा। रावण को इसी प्रकार दबाये सहस्रार्जुन ने दोनों सेनाओं की परिक्रमा की और विजय का शंख बजाते हुए माहिष्मती आ गया।

१२, फिरोज गांधी मार्ग,
लाजपतनगर—३,
नयी दिल्ली—११००२४

वचन-वीथी

सबसे बड़ी चतुराई यह है कि कोई चतुराई न की जाए।

—फ्रांसीसी कहावत

मानव की सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा नहीं, चरित्र है और यही उसका सबसे बड़ा रक्षक है।

—हर्बर्ट स्पेंसर

ईश्वर प्रत्येक को सच और झूठ में से एक को चुनने का अवसर देता है।

—इमर्सन

सभी मनुष्यों के चेहरे वास्तविक होते हैं, उनके हाथ चाहे जैसे भी हों।

—शेक्सपीयर

जननी जननी है, जीवित वस्तुओं में वह सबसे अधिक पवित्र है।

—कॉलरिज

ईश्वर ने हमें दो कान दिये हैं, और दो आंखें, परंतु जिह्वा केवल एक इसलिए दी है कि हम बहुत अधिक सुनें और बहुत अधिक देखें, लेकिन बोलें बहुत कम।

—सुकरात

यशपूर्ण जीवन का एक व्यस्त घंटा कीर्ति रहित युगों से कहीं अधिक है।

—वाल्टर स्कॉट

ज्ञान सिर्फ सच्चाई में ही पाया जाता है।

—गेटे

झूठ के अनेक संयोग होते हैं, परंतु सत्य का केवल एक रूप होता है।

रूसो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह ह्वेल के पेट से जीवित निकला!

● डेविड गंसटन

किसी विशालकाय ह्वेल द्वारा जीवित निगल लिये जाने का विचार भी कौन अपने मन में लाना चाहेगा ? कितनी विचित्र और भयावह प्रतीत होती है ऐसी कल्पना भी । किंतु वास्तविक जीवन में कभी-कभी कल्पना से भी परे की घटनाएं घट जाती हैं । ऐसा ही हुआ था उस युवा मछुआरे के साथ । वह तेल के प्राकृतिक भंडार के रूप में विद्यमान दैत्याकार ह्वेलों का शिकार करता था । छोटी-छोटी नावों और हाथ में पकड़कर वार करने में प्रयुक्त होनेवाले हारपून के सहारे ही वह इन जल दैत्यों से टकराता था ।

ह्वेल द्वारा जीवित निगले जाने की घटना तो कौतूहलवर्धक है ही, पर इससे भी अधिक आश्चर्य की बात है निगल लिये जाने के बाद भी इस भयावह कांड का वर्णन सुनाने के लिए उस युवा मछुआरे का जीवित बच निकलना । है न ! आश्चर्य की बात । विचित्र, किंतु सत्य ।

जी हां, इस भयावह आतंककारी दुर्घटना में से जीवित बच निकलनेवाले उस युवा मछुआरे का नाम था जेम्स बार्टले !

समुद्री मछुआरा जेम्स बार्टले कोई पहली बार ह्वेल के शिकार के लिए नहीं निकला था । यद्यपि अभी वह युवा ही था और १८९० में अर्थात आज से सौ वर्ष पूर्व जब इंगलैंड से दक्षिणी समुद्र के मध्य स्टार ऑव ईस्ट, नामक जलयान चलने लगा था, तब उसके मन में किसी अनहोनी भयावह घटना की कल्पना भी उपजने का कोई कारण नहीं था ।

सन १८९१ की फरवरी का महीना था । अभी तक सब-कुछ ठीक प्रकार से चलता आया था । उस दिन वे लोग फॉकलैंड द्वीपों के तटीय समुद्र में ह्वेलों की खोज में थे कि अचानक उनकी नजर फव्वारे छोड़ती हुई एक विशालकाय ह्वेल पर पड़ी । 'वह देखो कितनी बड़ी ह्वेल समुद्र में तैर रही है' वह खुशी से चिल्लाया । और इसके साथ ही दो शिकारी नौकाएं, जिनमें से एक में बार्टले था ह्वेल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ी। पहली नौका के शिकारी ने बल्लम ह्वेल के शरीर में घोंप दिया और ह्वेल तेजी-से समुद्र के ऊपर उछली। पंद्रह फुट लंबी पूंछ दूसरी नौका से टकरायी और उसने उसमें सवार लोगों को समुद्र में झटका दिया।

एक आदमी डूब गया था। और जब बचे हुए लोगों की जांच की गयी तो पाया गया कि बार्टले गायब था। ह्वेल के शिकार के समय ऐसी घटनाएं होना आम बात थी। इसलिए कप्तान के खाते में बार्टले का डूबना दर्ज हो गया।

पर पहली नौका के शिकारी ह्वेल को मार गिराने में सफल हो गये। कुछ ही घंटों में उसका विशाल निर्जीव शरीर 'स्टार ऑव द ईस्ट' जहाज के पास पड़ा पाया गया, उसके कर्मचारियों ने तत्काल चरबी और गोश्त प्राप्त करने के लिए उसकी चमड़ी उधेड़ने का अरुचिकर कार्य आरंभ कर दिया। उसके विशालकाय पेट की खाल उतारने के लिए पूरे दिन, कुछ समय रात्रि में तथा अगले दिन प्रातःकाल तक का समय लग गया। उठाने के उपकरण लगाये गये और सारे शरीर को टुकड़ों में काटने के लिए डेक पर फैला दिया गया। तभी एक मछुआरा चीखा।

उसे ह्वेल के शरीर में विचित्र-सी हलचल होती दिखायी पड़ी थी। खाल उतारनेवाले अपने औजारों के साथ उस पर टूट पड़े कि देखें उसमें ह्वेल द्वारा चट की गयी हुई कौन-सी चीज निकलती है। ह्वेल अपने से आधे आकार की शार्क मछलियों आदि को भी निगल जाती है। इसलिए उन्होंने सोचा कि शायद इसके पेट में

उसे लगा कि वह किसी चिकने मार्ग में फिसल रहा था, जो खुद ही उसे आगे लिये जा रहा था।...उसने उस दुर्गंध और अंधकार भरे स्थान को टटोला तो दीवारें लिसलिसी और चिपचिपी लगीं। शीघ्र ही उसने भयानक सत्य को पहचान लिया।

कोई जीवित मछली है।

लेकिन उनकी उत्सुकता शीघ्र ही भय में बदल गयी। क्योंकि उसके पेट से मछली नहीं बल्कि उन्हीं का साथी बार्टले निकला। उसका शरीर मुड़कर दोहरा हो गया था और वह अंदर के पदार्थों से लथपथ था किंतु वह जीवित था। बार्टले गहरी बेहोशी में था। लेकिन उसे शीघ्रता से समुद्र के ठंडे पानी से सराबोर किया गया, तो धीरे-धीरे उसमें जीवन के चिह्न वापस आने लगे। कुछ समय के लिए सब मछली पकड़ना और खाल उतारना भूल गये।

बार्टले को कप्तान के निजी केबिन में बिस्तर पर लिटा दिया गया। धीरे-धीरे उसमें चेतना लौट आयी। लेकिन व्यर्थ, क्योंकि अब वह अनाप-शनाप ढंग से गिलबिल-गिलबिल कर रहा था। अधिकारियों तथा कर्मचारियों के अथक प्रयत्नों के बावजूद पूरे दो सप्ताह तक इसी अवस्था में रहा। इस अवधि में उसे उसकी तथा जलपोत की सुरक्षा की दृष्टि से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कप्तान के केबिन में ही ताले में बंद रखा गया ।

इस नारकीय पखवाड़े के बीत जाने के बाद बार्टले की दशा में सुधार आना आरंभ हुआ । वह मानसिक रूप से फिर से सामान्य हो गया । और शारीरिक रूप से भी वह ठीक ही था । केवल एक भयंकर बात यह थी कि जहां-जहां उसके शरीर पर कपड़े नहीं थे वहां-वहां ह्वेल के पेट के आमाशय रसों ने उसकी चमड़ी में घाव कर दिये थे । परिणामतः उसके गर्दन, चेहरा, हाथ आदि बुरी तरह से सफेद हो गये थे । उनमें जबरदस्त झुर्रियां पड़ गयी थीं और चमड़े के पुराने टुकड़े की तरह उसके अंगों में अकड़ाहट आ गयी थी । अपने शरीर की इस विद्रूपता की उपेक्षा करते हुए तथा उस संपूर्ण भयावह दुर्घटना को भुला देने का प्रयत्न करता हुआ वह तीसरे सप्ताह से अपने कामकाज सामान्य ढंग से निपटाने लग गया ।

मानसिक आघात से उबरने के बाद जब वह इस दुर्घटना के विषय में सिलसिलेवार बातें करने की स्थिति में आया तो बार्टले ने बताया उसे अपने समुद्र में उछाल दिये जाने की घटना बखूबी याद थी । तभी एक भीषण आवाज सुनायी पड़ी जो उसे लगा कि संभवतः समुद्र के पानी में ह्वेल की पूंछ के तेजी से घूमने से बननेवाली भंवर की आवाज थी । और बस उसके बाद वह गहरे अंधकार में डूब गया था । उसे लगा कि वह किसी चिकने मार्ग में फिसल रहा था, जो खुद ही उसे आगे लिये जा रहा था । कुछ ही क्षणों के बाद उसे लगा कि उसका फिसलना रुक गया था और अब वह किसी बड़े आकारवाले स्थान में था । उसने उस दुर्गंध और अंधकार भरे स्थान को टटोला तो दीवारें लिसलिसी और चिपचिपी लगीं । शीघ्र ही उसने भयानक सत्य को पहचान लिया । उसने समझ लिया कि बच निकलना संभव नहीं रहा था और जीवन के कुछ क्षण ही शेष रह गये थे । उसके दुर्भाग्य से ह्वेल के पेट के अंदर की भीषण जानलेवा गरमी उसके शरीर के रोम-रोम से शक्ति को चूसे और सोखे डाल रही थी । वहां मरघट की-सी शांति थी । लेकिन उसे सांस लेने में कोई रुकावट नहीं लग रही थी । अंततः वह चुक गया, मुख्यतः आघात के कारण और इसके बाद उसे कुछ याद नहीं रहा ।

बार्टले शीघ्र ही पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया और बताया जाता है कि अंतिम वर्षों में उसने संपूर्ण जीवंतता के साथ जीवन का आनंद लिया । उसे लगता था कि वह संसार का सर्वाधिक भाग्यशाली व्यक्ति था । यद्यपि भरपूर चिकित्सकीय प्रयासों के बावजूद उसकी चमड़ी के भूरेपन को दूर नहीं किया जा सका था ।

इस संपूर्ण घटना के तथ्यों का वर्णन जहाज के कप्तान तथा एक अन्य अधिकारी ने अलग-अलग स्थलों पर किया था । बाद में विख्यात फ्रांसीसी वैज्ञानिक डि पारविल ने इसकी सत्यता की जांच की तथा पूर्णतः तथ्यसंगत पाया और उन्होंने अपनी रिपोर्ट १९१४ में पेरिस से प्रकाशित 'जर्नल डेस डिबेट' में प्रकाशित भी किया था ।

प्रस्तुति : अभिमन्यु सिंह

ईश्वर प्रत्येक को सच और झूठ में से एक को चुनने का अवसर देता है ।

—इमर्सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाव अचानक तेजी-से मुड़ी और हुक्के पर रामेश्वर डांगोरिया की पकड़ ढीली हो गयी और वह छपाक की आवाज के साथ चिलम के साथ नदी में गिर पड़ा । इससे पहले कि केवट और पंडितजी 'नहीं, नहीं, क्या करते हो ?' की चेतावनी से रामेश्वर को रोकें वह अपने भारी-भरकम शरीर के साथ हुक्के को पकड़ने के लिए नदी की तेज धारा में कूद पड़ा । कुछ दूर तक नदी के ऊपर तैरता हुआ हुक्का तो दिखायी देता रहा लेकिन रामेश्वर डांगोरिया का कोई पता नहीं था ।

हुक्का

● लक्ष्मी नाथ बेजबरुआ

(१)

शाम हो गयी थी । डांगोरिया गंगाराम उसी समय कार्यालय से लौटे थे । नाश्ता करने के बाद वह अपनी हवेली (कोठी) के सामने के आंगन में बैठे थे । उनका थका भारी-भरकम शरीर एक कुरसी पर टिका था । कुरसी की हथेलियां गायब थीं । डांगोरिया लुप्तप्राय गौरव और प्रताप की छाया में दिन बिता रहे थे । उसके हाथ में एक चांदी का हुक्का था । उसके पैरों में लकड़ी की खड़ाऊं थी । खड़ाऊं के मूंठ हाथी दांत के थे । उनके गले में तुलसी की माला पड़ी थी ।

फिर कदमों की भारी आवाज के साथ किसी ने प्रवेश किया । अरे ! यह तो पंडितजी हैं । वह एक जोड़ी पुराने फटे 'स्लिपर' पहने थे । जब वह चलते उनकी लंबी चोटी हवा में लहराती थी । सुपारी के रस से भीगे उनके होंठ मुस्कराहट देते समय उसी तरह खुलते थे— जैसे कि तंबाकू का बटुआ खुल जाता है ।

इसके बाद दिलचस्प बातचीत शुरू हुई । गंगाराम ने अतिथि के लिए 'चिलम' लाने का आदेश दिया । यह देखकर कि नौकर रतिया चिलम तैयार करने में देर कर रहा है गंगाराम ने अपने लड़के रामेश्वर को आवाज लगायी । लेकिन वह 'अभागा' घर पर नहीं था । पांच वर्ष की महिंदरी ने बाहर आकर चौंका देनेवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह खबर दी— रामेश्वर तंबाकू पीने के लिए फैसलानवीस के घर गया हुआ है । जब यह पता लगा कि रतिया ने रामेश्वर को हुक्का पीना सिखाया है सर्वनाश की भावना ने भयंकर गुस्से का रूप ले लिया । रामेश्वर और रतिया दोनों ने मालिक के चांदी के हुक्के से तंबाकू पीने का अभ्यास शुरू किया था ।

(२)

इसलिए घर के पुराने नौकर रतिया ने दो अक्षम्य अपराध किये थे— मालिक के हुक्के को अपवित्र करना और उनके पुत्र रामेश्वर को बिगाड़ना । रतिया को नौकरी से हटा दिया गया । इससे पहले उसकी कसकर पिटाई की गयी । रतिया को सजा मिलनी ही थी, लेकिन किसी ने यह पता लगाने की कोशिश नहीं की कि वास्तविक अपराधी कौन है । निश्चय ही असली अपराधी रतिया नहीं था, रामेश्वर या फैसलानवीस का पुत्र अथवा तंबाकू पीनेवालों का कोई दल भी अपराधी नहीं था । फिर अपराधी कौन था ? सच कहा जाए तो पता चलेगा कि असली अपराधी घर में ही था । उसका नाम बताने के लिए स्पष्ट भाषी होना पड़ेगा ।सच्चाई यह है कि मुख्य अपराधी भारी-भरकम शरीर, बड़ी पगड़ी, बड़े तकिये और बड़े पेटवाला था । असली अपराधी डांगोरिया गंगाराम था ।

नीति वचन से उदाहरण प्रबल होता है । रामेश्वर उसी पिता के हाड़-मांस का हिस्सा था, जिसका विकास तंबाकू सेवन से हुआ था । अपने पिता की देखा-देखी रामेश्वर ने तंबाकू को फौरन अपना लिया । शीघ्र ही डांगोरिया गंगाराम का कुलभूषण और डांगोरिया की

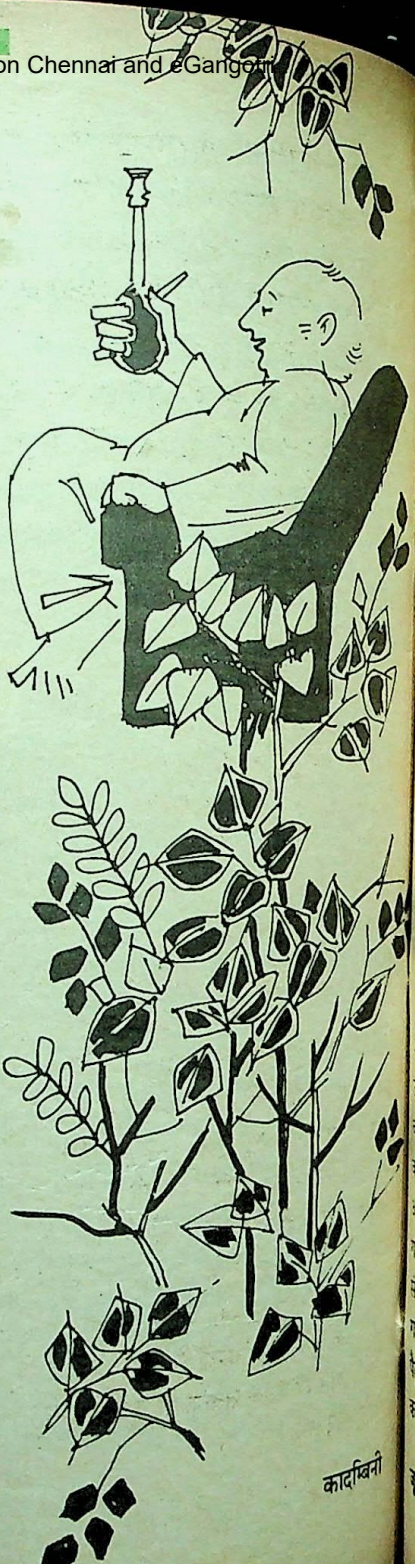

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कहानी की पृष्ठभूमि असम पर अंगरेजी अधिकार और अहोम राजदरबार की समाप्ति के बाद पुराने असमिया कुलीन वर्ग का ह्रास है। यह कहानी वास्तव में हास्य के आवरण में छिपी गंभीर और मर्मस्पर्शी वेदना को प्रकट करने की बेजबरुआ की क्षमता को प्रकट करती है। प्रस्तुत रचना में दिखाया गया है कि दरिद्रता को प्राप्त, अभिजात वर्ग का वंशज, (कहानी का नायक) किस तरह अपनी पुरानी समृद्धि के प्रतीक के साथ करुणाजनक ढंग से चिपका हुआ है।

आंखों का तारा रामेश्वर इस क्षेत्र में तंबाकू का सबसे बड़ा प्रेमी हो गया।

(३)

कुछ वर्ष बाद रामेश्वर को परिवार और जमींदारी का भार सौंपकर गंगाराम स्वर्ग सिधार गये। जमींदारी के नाम पर शेष बची थीं कुछ झोंपड़ियां, बांस के झुरमुट, फलों के कुछ पेड़ और थोड़ी-सी जमीन। जमींदारी गले-गले तक ऋण में डूबी थी। एक चीज और बच गयी थी, चांदी का हुक्का— मृतक का आजीवन साथी।

इस तरह जमींदारी की जिम्मेदारी मिलने पर शीघ्र ही रामेश्वर का आकार-प्रकार बढ़ गया, उसका शरीर भारी हो गया, उसकी गरदन पर बहुत अधिक चरबी चढ़ गयी, और वह भैंसें की गरदन की तरह दिखायी देने लगी। उसकी आवाज मोटी, भद्दी और फटे ढोल की तरह हो गयी। जमींदारी संभालने के बाद रामेश्वर की संपूर्ण इच्छाएं चांदी का हुक्का पाकर पूरी हो गयीं। हुक्के के लगातार कशों से उसके प्राचीन पैतृक निवास की बैठक तंबाकू के गाढ़े धुएं से खाली पड़ने लगी।

रुपया रुपये को खींचता है और कर्जदार ऋण के बोझ में डूबता जाता है। रामेश्वर को काफी पैतृक ऋण मिला था। इन ऋणों से उबरने के लिए उसने नये ऋण लिए। और इस तरह जमींदारी पर ऋणों का बोझ बढ़ने लगा। कालांतर में ये ऋण बहुत अधिक हो गये। रामेश्वर के साहूकार नित्य उसके घर के चक्कर लगाने लगे, तकादे करने लगे। फिर, ऋणों की वसूली के लिए नालिशें दायर होने लगीं। अदालतों ने 'डिक्री' कर दी। अदालतों की ये डिक्रियां गदले पानी में भैंस के पैरों पर लगी जोंक की तरह रामेश्वर पर चिपक गयीं। सूराखोंवाले बरतन से निकलनेवाली रेत की तरह रामेश्वर की सभी धन-संपत्ति, कीमती वस्तुएं, आभूषण आदि घर से लुप्त होने लगीं। रामेश्वर ने असीम धैर्य के साथ प्रभु की इच्छा समझकर अपने भाग्य को स्वीकार कर लिया। केवल एक बार वह अपने आंसू नहीं रोक सका— जब कुर्क अमीन उसके पिता का चांदी का हुक्का ले जाने लगे। उसने अपने आंसू पोंछे। उसके बाद क्या किसी ने उसे आंसू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहाते देखा ? चांदी का हुक्का चला गया । लेकिन दूसरे ही दिन उसके स्थान पर नारियल का हुक्का आ गया ।

यह नया हुक्का केवल एक आने (छह पैसे) का था । लेकिन यह भी पुराने हुक्के की तरह तंबाकू के जोरदार कश देता था और बैठक को धुंए के बादलों से भर देता था । रामेश्वर समझदार आदमी था । वह बेमतलब दुःखी होनेवाला व्यक्ति नहीं था । जमीन-जायदाद के बोझ से मुक्त होने के बाद अब उसके पास समय की कमी नहीं थी । अब वह बेफिक्री से हुक्का पी सकता था । एक तरह से यह मुसीबत उसके लिए ईश्वरीय वरदान थी । कम से कम वह तो अपने दुर्भाग्य को इसी रूप में देखता था । इस भावना से उसे शांति मिलती थी, और उन लोगों को भी, जो उसका ह्रास देख रहे थे ।

अनेक लोग इस बात पर माथापच्ची करने लगे कि रामेश्वर पर इतना अधिक ऋण कैसे हुआ ? इस चिंता में कुछ गंजे भी हो गये । हुक्का प्रेम के अलावा तो उसमें और कोई ऐब नहीं था । हुक्के की लगातार गुड़गुड़ से इतना अधिक ऋण नहीं हो सकता था । अब कारण जो भी रहा हो रामेश्वर को विरासत में जो मूल्यवान वस्तुएं मिली थीं, वह सभी विलीन हो गयीं । केवल एक हुक्का बचा— वह भी चांदी का नहीं, बल्कि नारियल का, उसका सस्ता विकल्प ।

दुर्भाग्य बाढ़ की तरह आता है, और रामेश्वर का दुर्भाग्य अपने साथ उसकी मां, बहन और पत्नी को ले गया । दूसरों को वह अब एकदम अकेला लगता था लेकिन इस विपत्ति में वह अपने को अकेला नहीं समझता था । उसका एक विश्वासपात्र मित्र था— हुक्का । हुक्का हाथ में लेकर भव्य और विशाल काया के स्वामी स्वर्गीय गंगाराम डांगोरिया का पुत्र रामेश्वर डांगोरिया निरुद्देश्य और अकेले शहर के चक्कर लगाता था ।

(४)

इसके बाद रामेश्वर की पंडितजी के साथ यकायक भेंट हो गयी । दोपहर हो गयी थी । रामेश्वर पेड़ के नीचे छाया में शांति से हुक्का गुड़गुड़ा रहा था । हुक्के की गुड़गुड़ समीप की झाड़ी में बैठे झींगुरों के स्वरों के साथ मिलकर एक नये संगीत की रचना कर रही थी । पंडितजी उधर से गुजरे । वह रामेश्वर को कठिनाई से पहचान सके । एक फटा छाता लेकर अपनी सुपरिचित चुटिया लहराते हुए

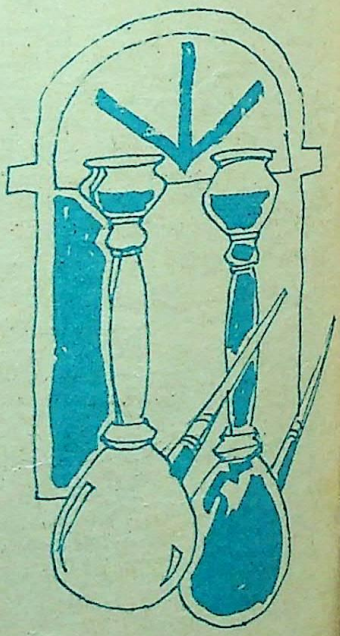

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडितजी नदी पार जाने के लिए घाट पर जा रहे थे। कल सबेरे दक्षिण पाट मंदिर में स्वर्गीय गोसाई का श्राद्ध था। दोनों की बातचीत से पता चला कि रामेश्वर को भी वहीं जाना है। इसलिए दोनों साथ-साथ रवाना हुए।

(५)

एक छोटी खुली नाव पर रामेश्वर डांगोरिया और पंडितजी दक्षिण पाट मठ को जा रहे थे। पंडितजी चुपचाप बैठे थे। वह शायद इस बात का हिसाब लगा रहे थे कि कल श्राद्ध में उन्हें क्या दक्षिणा मिलेगी। उन्हीं की बगल में रामेश्वर डांगोरिया बैठा था। वह शांति से हुक्के के कश लेकर धुआं उड़ा रहा था। वह आदमी सोच में पड़ा था। लेकिन उसके चेहरे से इस बात का पता नहीं चल रहा था कि वह किन विचारों में खोया है।

तभी अचानक वातावरण में केवट की आवाज गूंज उठी, 'अरे देखो नदी के उस पार पेड़ों से घिरा मठ दिखायी देने लगा है।'

'सच! तुमने कहां बताया ?' जैसे ही उसके शब्द समाप्त हुए पवित्र तीर्थ की ओर नाव अचानक तेजी-से मुड़ी और हुक्के पर रामेश्वर डांगोरिया की पकड़ ढीली हो गयी और वह छपाक की आवाज के साथ चिलम के साथ नदी में गिर पड़ा। इससे पहले कि केवट और पंडितजी 'नहीं नहीं, क्या करते हो ?' की चेतावनी से रामेश्वर को रोक वह अपने भारी-भरकम शरीर के साथ हुक्के को पकड़ने के लिए नदी की तेज धारा में कूद पड़ा। कुछ दूर तक नदी के ऊपर तैरता हुआ हुक्का तो दिखायी देता रहा लेकिन रामेश्वर डांगोरिया का कोई पता नहीं था।

(६)

सूर्यास्त पर नाव दक्षिण पाट के घाट पर लगी। पंडितजी ने केवटों से धीरे-से कहा, "भाई जरा हिसाब समझ लो। मैं आधा किराया दूंगा। बाकी आधा रामेश्वर डांगोरिया को देना था जो इस नाव के यात्री थे।"

केवट ने उसकी बात सुनकर कहा, "नहीं, नहीं, पंडितजी, आपको कुछ नहीं देना है। आज का दिन हम सब के लिए खराब रहा है। एक आदमी की जान चली गयी।" पंडितजी ने इस बात का उत्तर आशीर्वादों की झड़ी लगाकर दिया। जब वह नदी के तट पर ऊपर को चढ़ने को थे उनकी नजर बहती झाड़ियों में फंसी एक वस्तु पर पड़ी। उन्होंने एक टहनी से उसे समीप खेंचा। 'हे भगवान !' वह वस्तु थी स्वर्गीय रामेश्वर डांगोरिया का हुक्का।

अनुवादक : नवीन पंत (अंगरेजी से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कोई इनका खरीदार ये हैं हांगकांग के भारतीय

●भगवान सिंह

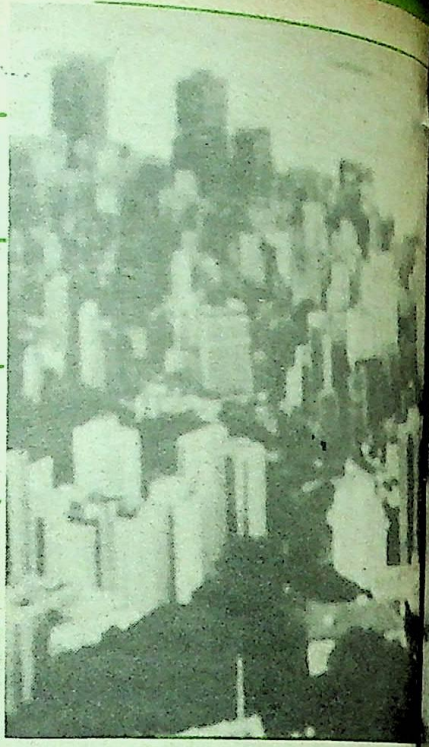

हांगकांग प्राकृतिक सौंदर्य का सर्वोत्कृष्ट चित्र है । नीले समुद्रों, हरी पहाड़ियों और ऊंचे पर्वतीय शिखर, गहरा जल, उस पर रेंगती हुई नावें, याचें, सड़कें, कार और दूसरे वाहन, कदाचित ब्रह्मा ने अपनी तूलिका की कलात्मक लकीरें यहीं बिखेर दी हों । उस पर मानव ने सैकड़ों मंजिल ऊंची इमारतें खड़ी कर, ऊंचाई-दर-ऊंचाई, चौड़ाई से अधिक चौड़ाई, बनाकर समुद्र तट की पहाड़ियों के दामन को विभिन्न रंगों में रंग दिया है । हर दो साल बाद देखिए तो पड़ोस की पहाड़ियां अब गगनचुंबी अट्टालिकाओं से घिर गयी हैं । यहीं श्रीमती हुवेनसांग ने अपने रोमांटिक उपन्यासों की पृष्ठ-भूमि बनायी । परंतु अब तो रोमांसिकता से व्यावसायिक और दुकानदारी अधिक बढ़ गयी है । यही नहीं, कायलून के टापू से जिस पर हवाई जहाजों का अड्डा है, जिससे हांगकांग के बीच के गहरे समुद्रों में फेरी से आर-पार कर रही दो चौड़ी-चौड़ी सड़कें हर समय कार और अन्य वाहनों के लिए प्रयुक्त होती रहती हैं । इन सबके कारण हवाई जहाज का अड्डा भी चौड़ा, बड़ा और विस्तृत होता ही चला जा रहा है । कुलून से हांगकांग तक मेनलेंड चीन तक आकाश की ओर मुंह बाये फ़्लैटों की ऊंचाइयां दृष्टि की दूरगामी शक्ति के विस्तृत होने में रुकावट डालती है ।

धन की मंडी

सारे देशों के व्यापारी लोग हांगकांग आते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

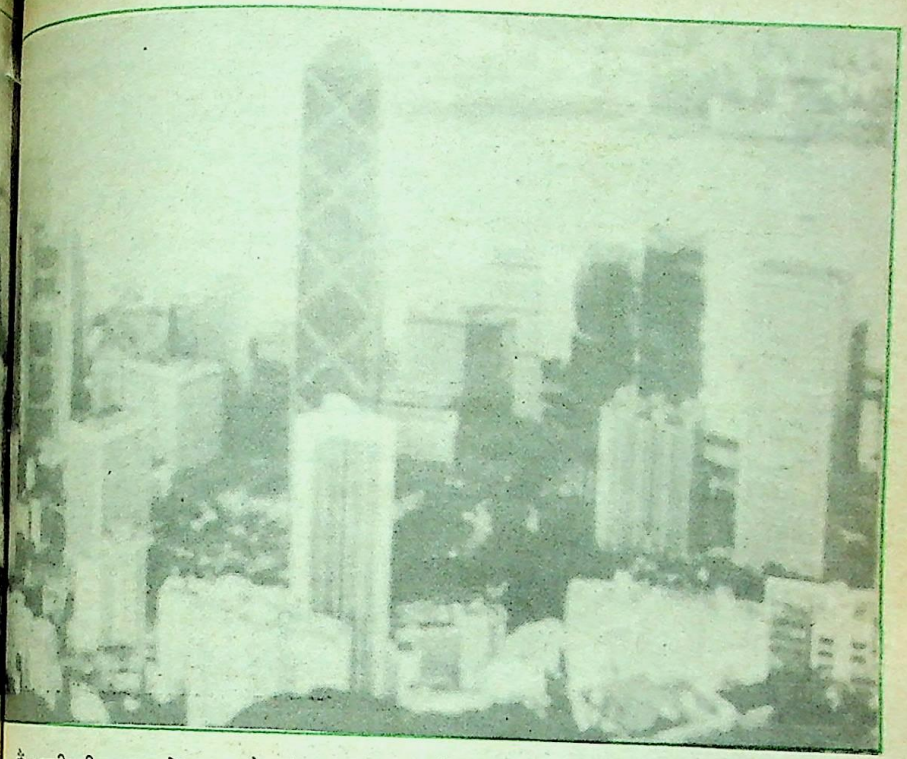

हैं। खरीदारी का यह केंद्र रहा है । टेक्स फ्री सामान की सबसे बड़ी मंडी, जहां सस्ती चीजें बहुतायत से मिलती हैं । इसलिए लोग जापान जाते भी एक रात हांगकांग का आनंद लेने के लिये यात्रा में विराम देते हैं । हांगकांग धन की मंडी है । दुनियाभर की बहुराष्ट्रीय कंपनियां यहां से व्यापार करती हैं । यही तो कारण है कि हर व्यक्ति की जिसे शीघ्र धन उपार्जन की आकांक्षा है, हांगकांग की ओर हाथ जोड़कर सूर्य नमस्कार करता है ।

कुछ साल से इसके आस-पास के क्षेत्रों के देशों में राजनीतिक उथल-पुथल होने के कारण हांगकांग में घुसपैठियों की भीड़ लग गयी है । सारे प्रतिबंधों के बावजूद लोग नाव में बैठकर हांगकांग के टापुओं की कटी-छिपी गहराइयों में घुस आये हैं, हांगकांग में जीवन बिताने ।

हांगकांग धन की मंडी है । दुनियाभर की बहुराष्ट्रीय कंपनियां यहां से व्यापार करती हैं । यही तो कारण है कि हर व्यक्ति की जिसे शीघ्र धन उपार्जन की आकांक्षा है, हांगकांग की ओर हाथ जोड़कर सूर्य नमस्कार करता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल वियतनाम देश के ४०,००० बोटमैन नाम से जानेवाले शरणार्थी हांगकांग में आ उतरे थे। इन सबको हांगकांग की सरकार ब्रिटिश सरकार के इशारे पर हांगकांग से बाहर भेजने पर उतारू है। यद्यपि अमरीकन प्रेसीडेंट और शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र के हाई कमिश्नर दोनों ही जबरदस्ती करने की इस योजना से सहमत नहीं हैं। संयुक्त राष्ट्र का तो यह मत है कि इन वियतनामी लोगों को स्वेच्छा से अन्य देशों में बिखर जाने को प्रोत्साहित करना चाहिए, बजाय कि उन्हें जबरदस्ती जहाज में लादकर सुदूर देशों में उतार दें। चीन की राजधानी पीकिंग में जून में हुए भीषण कत्ले-आम से हांगकांग निवासियों का दिल दहल गया है। अपनी नागरिक स्वतंत्रता और सुरक्षा के लिए सन १९९७ के बाद का समय बहुत ही भयावह और सामान्य जीवन को अस्थिर करनेवाला लग रहा है। अतएव उससे पहले के पांच-सात वर्ष और भी चिंतन का विषय बन गयी हैं। साथ ही हांगकांग में बंदियों के शिविर में हालात बिगड़ते जा रहे हैं। इन बंदी शिविरों में रहनेवाले वियतनामियों को घर जाने अथवा खाली करने की जबरदस्ती से डर लग रहा है।

प्रवासी भारतीयों की चिंता

यूं तो पिछले तीस वर्षों में मैं करीब पंद्रह बार हांगकांग ठहरा हूंगा, परंतु पिछले तीन वर्षों में दो बार हांगकांग में ठहरा हूं और दोनों बार भारतीय प्रवासियों की बैठकों में भी भाग लिया है। उन्हें अपने भविष्य की गहरी चिंता है। यही विचार दिल और दिमाग पर अंकित कर लाया हूं। एक बार तो सबसे बड़े भारतीय व्यापारी श्री हरीलाला के नेतृत्व में एक दल भारत में वापस आने की कल्पना का अन्वेषण करने के लिये आया था। कुछ ने अंडमान निकोबार द्वीपों पर अपनी और अन्य पूंजी लगाकर नया हांगकांग बनाने का सुझाव भी दिया था। कुछ कारण इस प्रकार हैं। कि हांगकांग-जैसा ही टापू अंतरराष्ट्रीय जलमार्ग से इतनी कम दूरी पर है कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार का केंद्र बनने में बड़ी सहूलियत होगी। पूर्व और पश्चिमी यूरोप के सुदूर के व्यापार में निकोबार टापू माध्यम का काम भी कर सकता है। भारतीय पूंजीपतियों में भी कुछ चर्चा रही। परंतु इंडोनेशिया के निकट स्थित होने के कारण भारत सरकार ने कोई सक्रिय कार्यवाही नहीं की।

हांगकांग में हिंदुस्तानियों का मनोबल भी धीमे-धीमे मद्धम पड़ता जा रहा है। हजारों हिंदुस्तानी प्रवासियों को चीन के आधिपत्य से डर लगता है। इंगलैंड उन्हें लेने को तैयार नहीं। यद्यपि हांगकांग हलचल में है, जिसका भविष्य डर और संशय के घेरे में है।

भविष्य की असुरक्षा

ब्रिटेन और चीन की बातचीत के बीच में हांगकांग का भावी रूप कई तरह से बनता-बिगड़ता दिखायी देता रहा है। यह तो निश्चय है कि ब्रिटेन जो अभी तक उसे अपना उपनिवेश बनाये हुए है चीन से हुए समझौते के अनुसार १ जुलाई १९९७ को स्वतंत्र करके चीन को लौटा देगा। चीन ने सिद्धांत रूप से यह तो

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान लिया है कि ब्रिटेन के चले जाने के बाद हांगकांग चीन की एक विशेष प्रशासनिक इकाई बनकर रहेगा और आगामी पचास वर्ष तक उसके वर्तमान न्यायिक, सामाजिक, और आर्थिक, पूंजीवादी स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा। हांगकांग निवासी अपने भविष्य के बारे में जानने को बहुत उत्सुक हैं। उनका एक प्रतिनिधि मंडल चीन के सर्वेसर्वा नेता डेंग जिआउ पिंग से मिला था। लेकिन उनकी इस बात से संतुष्ट होकर नहीं लौटा कि हांगकांग के भविष्य के बारे में सब कुछ निश्चित हो चुका है और उसमें अब कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता। चीन ब्रिटेन के उस सुझाव को मानने के लिये तैयार नहीं है कि ब्रिटेन के छोड़ने से पहले वहां एक विधायका परिषद का गठन कर दिया जाएगा और चीन उस पर अपना शासन उसी परिषद द्वारा चलाता रहेगा। इसका अर्थ है कि चीन ब्रिटेन से किये इकरार के होते हुए भी हांगकांग पर-जैसे भी चाहे शासन करेगा।

ज्यों-ज्यों १९९७ नजदीक आती जा रही है, त्यों-त्यों भारतीय व्यापारियों में भय और अनिश्चितता बढ़ती जा रही है। हांगकांग में हिंदुस्तानियों का मनोबल भी धीमे-धीमे मद्धम पड़ता जा रहा है। हजारों हिंदुस्तानी प्रवासियों को चीन के आधिपत्य से डर लगता है। इंगलैंड उन्हें लेने को तैयार नहीं। यद्यपि हांगकांग हलचल में है, जिसका भविष्य डर और संशय के घेरे में है। राजनीतिक व्यवस्था, चीन की करनी और कथनी के महान अंतर से बड़ी दुनिया की तूफानी जलधारा के कगार पर खड़ी है। इंगलैंड और चीन की संधि के अनुसार सन १९९७ में चीन की प्रभुसत्ता के बाद हांगकांग एक स्वायत्त शासित चीनी टापू हो जाएगा। हांगकांग एवं ब्रिटेन तथा चीन तीनों ने इस राजीनामें पर हस्ताक्षर किये हैं। सन १९९७ में हांगकांग में रहनेवाले चीनी वंशज, चीनी नागरिक बन जाएंगे। लेकिन ११,००० भारतीय वंशज यदि वे चाहें तो भी चीन की नागरिकता के अधिकारों से वंचित रहेंगे। अर्थात ये लोग किसी भी राष्ट्र के नागरिक नहीं होंगे। नागरिकता के अधिकारों से हर प्रकार से वंचित। यद्यपि ब्रिटेन की पार्लियामेंट की सलेक्ट कमेटी ने इस बात की सिफारिश की है कि उन्हें चीन के स्वामित्व के बाद इंगलैंड में जा बसने की छूट होनी चाहिए। ये लोग भारत या पाकिस्तान में बसने के भी हकदार नहीं हैं। उनके समूह को ब्रिटिश साम्राज्य का नागरिक बना दिया जाए। अर्थात इनको विदेशों में बसे इंगलैंड के नागरिकों—जैसा बचाव का नागरिक अधिकार दिया जाए। परंतु लगता है कि इन भारतीयों का भविष्य अंधकार के घेरे में है। उधर चीनी सरकार ने एलान कर दिया है कि हांगकांग सन १९९७ में चीनी प्रभुसत्ता के भीतर आ जाएगा और उसे किसी भी प्रकार से अंतरराष्ट्रीय गलियारा नहीं बनने दिया जाएगा। चूंकि बहुत से अन्य विकसित देशों की बहुत सारी पूंजी हांगकांग में लगी हुई है। वे हांगकांग देश का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप बनाने में दिलचस्पी रखेंगे। अतः चीन को भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साफ-साफ घोषणा करनी पड़ी है। परंतु सवाल तो इन बेसहारा भारतीय प्रवासियों का है जो घर के रहेंगे न बाहर के।

भू.पू. उच्चायुक्त अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मणिपुरी कहानी

भाई-बहन

● खुमनथेम प्रकाश सिंह

एक वृद्ध को निड.थेमचामयुम (राजपरिवार) के घर की बगीची के सामने दो-तीन बार खड़े, बड़बड़ाते हुए देखा । वह कुछ देर बड़बड़ाकर चला जाता था । एक दिन उसके नजदीक पीछे जाकर सुना, वह कह रहा था, "बदनामी की, बदनामी की, संतोष हुआ होगा, संतोष हुआ होगा ।"

कहा जाता है कि यह वृद्ध शगोलतोड.बा नामक स्थान का है । सुना है, वह इसी निड.थेमचामयुम में रहता था । मुझे पक्का विश्वास हो गया कि थोकचोम-परिवार जिस जगह रहता है, उसे लोगों द्वारा निड.थेमचामयुम कहने के पीछे कोई बात अवश्य है । एक दिन मैंने अपना कर्त्तव्य मानते हुए इसी महल्ले के एक वृद्ध के पास जाकर पता लगाया । और पा भी लिया :

निड.थेमचामयुम के इसी दलान में शगोलतोड.बा के इस वृद्ध ने थंबालसना और थंबालमरिक् नाम के भाई-बहनों को पाला-पोसा था । ये भाई-बहन जुड़वां थे । उनकी मां, जो राजघराने में ब्याही गयी थी, उनको जन्म देते ही चल बसी । दोनों में से एक को बुआ सना ले गयी, दूसरे को मौसी । बुआ राजघराने से थी ।

युद्ध की अव्यवस्था में वे मिल-जुल नहीं सके । कहा जाता है कि उनके पिता अड.ौसना ने युद्ध के समय ठेकेदारी में बहुत पैसा बटोरा । युद्ध के बाद अंत में यह दलान बनवाया ।

जापान के युद्ध के समय यहां आश्चर्यजनक रूप से पैसा बिखरा हुआ था । त्रिपुरा बैंक के टूट जाने से अड.ौसना का सारा धन डूब गया, इसी कारण वह मर गया । बाप-दादों का कहा सही है, 'बेटे, स्थायी संपत्ति तो पृथ्वी माता ही है ।' अड.ौसना ने जो पांच परी (एक परी=ढाई एकड़) खेत खरीद लिया था, उसी स्थायी संपत्ति के कारण भाई-बहन को किसी के द्वारे खड़ा नहीं होना पड़ा ।

अपना घर-दलान बनवाने के बाद अड.ौसना ने भाई-बहन को लाकर रखा । जब दोनों को लाया गया, तब थंबालमरिक यौवन के निकट थी और थंबालसना नटखट लड़का था । कहने को भाई-बहन थे, किंतु जन्म से साथ-साथ न रहने के कारण, नये-नये मिलने से दोस्तों की तरह रहते थे । थंबालमरिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनाथ भाई-बहन को लेकर समाज में तरह-तरह की चर्चाएं होने लगी थीं । वास्तविकता का पता लगने के बाद भी लोगों ने उनसे सहानुभूति नहीं दिखायी । फलतः एक दिन....

शांत-स्वभाव के कारण अधिक समझदार थी ।

बाप की मृत्यु होने पर आकर रहनेवाली बुआ सना भी अधिक दिन नहीं ठहर सकी । पिता द्वारा नियुक्त शगोलतोड.बा के वृद्ध ने भाई-बहन को पाला । घर खाता-पीता था, पांच एकी खेत से खाने के लिए रखकर शेष को बेचने से पैसे की तकलीफ नहीं थी, किंतु परिवार पैसेवाला नहीं था । तब भी लोग सोचते थे कि बहुत है ।

बड़ा होकर जब थंबालसना पढ़ने बैठा, तब थंबालमरिक ने कोयेत्मचा (छोटी पगड़ी) बुनकर उसकी सहायता की । शगोलतोड. बा का यह वृद्ध बाग-बगीचे और खेत की देखभाल करता था, कहीं कुछ बिगड़ न जाए । थंबालसना मैट्रिक पास करके एक ऑफिस में क्लर्क बन गया । कहावत है, खाने की कमी न रहने पर अमीरी आ जाती है, निड.थेमचामयुम के इस परिवार को संपन्न कहा जाने लगा ।

जल्दी बढ़कर युवती हो जाने से थंबालमरिक को देखकर आश्चर्य होने लगा । कई बार उसका हाथ मांगनेवाले आये ।

"निड.थेमचामयुम भाई-बहन शादी-विवाह की बात नहीं करते, क्या बात है ? क्या ये दोनों चुकसाबा कराना चाहते हैं ?" लोगों का कहना है । चुकसाबा वह धार्मिक कृत्य है, जो परिवार की किसी असामान्य घटना को रोकने के लिए किया जाता है ।

"कौन बड़ा है, लड़की या लड़का, ये दोनों कैसे हैं, लड़का दीदी नहीं कहता, लड़की बड़ा भाई नहीं कहती, दोनों नाम लेते हैं, यह कैसा आचार है ? यह क्या ढंग है ? हम नहीं जानतीं ।" महल्ले की रमणियां अकसर बात करती हैं ।

"आह, अड.सना का जीवन छोटा था, दोनों संतान की शादी-विवाह तक जीता, तो देखकर उसे कितनी खुशी होती । किंतु मनुष्य के भाग में जो लिखा है, उसे मिटाया नहीं जा सकता । पूर्व जन्म में मां-बाप की उपेक्षा करने के कारण, इन बच्चों का इस जन्म में मां-बाप द्वारा पालन-पोषण नहीं मिला !" यह बुजुर्गों का कथन है ।

बुआ सना, मौसी ने कन्यादान की बहुत कोशिश की, कि थंबालमरिक की आयु निकल जाएगी । किंतु थंबालमरिक कभी नहीं मानी, बहुत जोर देने पर कह देती थी, "मैं शादी नहीं करूंगी ।" लड़की जब नहीं मानी, तो लड़के के लिए बात चली, थंबालसना भी नहीं माना । वह कहता था, कि अपने लिए वह स्वयं अपनी पसंद की लाएगा, अन्य कोई उसकी चिंता न करे । जब वे ऐसे हो गये जैसे पत्थर पर पानी डाला जाता है, तो सबने दोनों भाई-बहन के विवाह की बात छोड़ दी ।

"भाई-बहन बतानेवाले दोनों युवक-युवती, कहा जाता है कि जुड़वां हैं, बचपन में साथ नहीं रहे, आयु भी तीस को पहुंचनेवाली होगी, अभी तक एक ने शादी के बारे में नहीं सोचा, दूसरे ने अपने लिए लड़की ढूंढ़ने का विचार नहीं किया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन दोनों का यह कैसा व्यवहार है ? हम तो शर्म से गड़े जाते हैं ।'' औरतों ने इसी प्रकार बोलना शुरू किया । कुछ बुजुर्ग कहते, ''उन दोनों को मां-बाप ने पाला-पोसा नहीं, इसलिए एक-दूसरे को नहीं छोड़ सकते, कितने प्यारे हैं, प्राचीनकाल के खम्बा-खम्रु भाई-बहन जैसे ही हैं ये, निड.थेमचामयुम का यह परिवार यदि निर्धन होता, तो दोनों भाई-बहन को कितना कष्ट होता ।''

दूसरों के दोषों को खोजने, रहस्यों को जानने और अपने को श्रेष्ठ मानने की इच्छा ही संसार है । अगर यह न होता, तो जिसे आज विकास कहते हैं, वह पोखरी के पानी की तरह प्रकृति की दया पर ही रह जाता । किंतु प्रकृति हमें क्या दे रही है ? प्रकृति की निर्मित को भंग करके, प्रकृति को विजय करके हमें क्या लाभ ? इसकी खोज करनेवाला पागल है । यदि पागल न हो, तो पतंगा लौ में क्यों कूदे ?

एक दिन दोनों भाई-बहन परदेस के लिए चले गये । शगोलतोड.बा के वृद्ध ने उस घर की रखवाली की । महल्ला आंदोलित हो उठा, भाई-बहन के जाने के बारे में ऐसे ही अनुमान लगाने की प्रतिद्वंद्विता होने लगी, जैसे पानी में गिरी वस्तु का पता लगाने में । किंतु मुश्किल तो यह है, कि वस्तु का मालिक न होने से कोई भी कूदकर डुबकी नहीं लगाता । सभी युवाओं का कहना है, ''बच्चा न हो जाए, इसी से वे दोनों ऑपरेशन कराने गये हैं ।'' सभी बुजुर्ग कहते हैं, ''कितने प्यारे हैं ये भाई-बहन, अपने माता-पिता के लिए तीर्थयात्रा पर निकले होंगे ।'' ये दोनों ही बातें सही लगती थीं ।

कुछ दिन बाद, भाई-बहन आ पहुंचे । परदेस से आने के बाद महल्ले के सभी युवाओं ने भाई-बहन को व्यंग्यात्मक दृष्टि से देखना शुरू किया । वे परस्पर ऐसी बातें करते थे, जैसे कि पिछले दिनों में अंधेरे में टटोली गयी वस्तु मिल गयी हो ।

शत्रु न होने पर भी दूसरों की हार पर प्रसन्न होनेवाले, लाभ न होने पर भी दूसरों की हानि के लिए बोलने में विश्राम पानेवाले समाज को फिर मुंह नहीं दिखाएगी, यही सोचकर थंबालमरिक घर से नहीं निकली । थंबालसना भी हमेशा दुःखी रहता था । भाई-बहन का यह व्यवहार सही में संदेहजनक बन गया । यह स्पष्ट हो गया कि उन्होंने कुछ ऐसा छिपा रखा है, जिसे वे किसी दूसरे को बताना नहीं चाहते । बगीचे के कोने में शगोलतोड.बा के वृद्ध को आंसू पोंछते हुए बैठे, कई बार देखा गया ।

उनके घर के इस व्यवहार पर चुप न रह सकने के कारण महल्ले के कुछ बुजुर्गों ने इस वृद्ध से जाकर पता लगाया । पहले तो वृद्ध ने, 'कुछ नहीं', कह कर नकारा, किंतु अंततः बिना कहे न रह सकने पर बोला, ''थंबालमरिक को कोढ़ है, बहुत दिन हो गये ।''

जब यह दिखा था, तभी इलाज करा लेते तो अच्छा होता, किंतु समाज ! तेरे डर से गुप्त रखने के कारण अनेक बर्बाद हो गये । आश्चर्यजनक है समाज का चरित्र, असाध्य बीमारी से भी अधिक महत्त्व है समाज का, बहुत जहरीला ।

यह बात महल्लेभर में फैल गयी कि थंबालमरिक को असाध्य बीमारी है । सब डरें कि निड.थेमचामयुम के घर में प्रेत है । इसके बाद अविलंब थंबालमरिक को असाध्य रोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अस्पताल में ले गये ।

परछिद्रान्वेषण के बराबर आनंद और कहां ? भाई-बहन की चर्चा बंद नहीं हुई । असाध्य रोग के कारण अस्पताल पहुंचने से, क्या हो गया इन्हें, सोचने के बजाय महल्ले की सारी युवतियां बोलीं कि भाई-बहन की अनैतिकता के कारण ही भगवान ने यह दंड दिया है ।

यह सोचकर, कि अब तो इसकी दीदी न रहने के बराबर ही है, बुआ और मौसी ने इस घर को खड़ा रखने के लिए एक लड़की खोजना आवश्यक समझकर, दौड़-धूप कर थंबालसना का विवाह करा दिया ।

आशा थी कि थंबालसना का विवाह हो जाने पर निड.थेमचामयुम के परिवार के विषय में चर्चा रुक जाएगी, किंतु जल्दी ही एक नया तूफान आ गया—थंबालसना की पत्नी मायके जाने के बाद फिर वापस नहीं आयी । इस महल्ले में इतनी सारी रमणियों के रहते थंबालसना की पत्नी कितने दिन टिकती । इस बार तो महल्ले को पार करके रास्ते पर आने-जानेवाले तक इसी परिवार की बातें करते थे । थंबालसना का अपने ऑफिस में बैठना दूभर हो गया । उसने ऑफिस से लंबी छुट्टी ली और घर बैठ गया ।

सबकी बातें न सुन सकने के कारण घर में छिपे रहने से भी परछिद्रान्वेषियों को संतोष नहीं हुआ । कुछ ने कहा, "उसे भी असाध्य रोग हुआ होगा ।" कुछ बोले, "अपराध के बोझ के कारण बाहर नहीं निकल सकता ।"

'थंबालसना ! तुम भी डरपोक हो, सच क्या है, झूठ क्या है, यह तो तुम्हीं जानते हो, सबके इतनी चर्चा करने पर बाहर आ कर स्पष्ट करो न, छिपते क्यों हो ?' थंबालसना से हमदर्दी रखनेवाले, किसी की कहीं हुई बात है यह ।

कैसे स्पष्ट किया जाएगा ? कहां ? किससे ? अपनी ही बात का स्वयं विश्वास न करनेवाले इस युग में थंबालसना की बात का कौन विश्वास करेगा ?

एक सुबह शगोलतोड.बा के वृद्ध द्वारा जगाये जाने पर थंबालसना की नाड़ी बंद मिली, निड.थेमचामयुम के आंगन में पुलिस और महल्लेवाले इकट्ठे हो गये । बताया गया कि नींद की गोलियां अधिक खा लेने से थंबालसना नहीं उठा । उसके तकिये के नीचे एक चिट्ठी मिली, वह पुलिस ले गयी । चिट्ठी में लिखा था—

"समाज,

कहा जाता है कि मनुष्य के बिना जीवित नहीं रह सकता । समाज ने मुझे अपने लायक नहीं समझा, अतः समाज-मुक्त स्थान पर जा रहा हूं । दीदी को मत बताइए कि मैं चला गया ।"

अनुवादक : इबोहल सिंह काङ्जम

बार-बार यत्न करने से असंभव भी संभव हो जाता है । —योगवाशिष्ठ

मिथ्या दूरदर्शी नहीं होती है । —प्रेमचंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य-यात्रा

स्वाधीनता के बाद हिंदी के जिन कवियों ने अपने कथ्य एवं शिल्प द्वारा काव्य-जगत में विशिष्ट स्थान बनाया है, उनमें गंगाप्रसाद विमल प्रमुख हैं। ठोस वैचारिक धरातल पर लिखी गयी उनकी कविताएं अपने समय का प्रतिबिंब भी कही जा सकती हैं। गंगा प्रसाद विमल ने गीत भी लिखे हैं और अतुकांत कविताएं भी। 'कादम्बिनी' के इस नये 'काव्य-यात्रा' स्तंभ में प्रस्तुत हैं, उनकी कुछ कविताएं। समय-समय पर हम इस स्तंभ में अन्य प्रमुख कवियों की रचनाएं भी प्रकाशित करेंगे।

हिम-दर्शन

केवल आसमान
देखता है अपना मुंह

ग्रीष्म में
बहती है नदियां
रास्ता बनाती
चट्टानों से

चट्टानों से झरता है दिन
श्वेताभ
हिम सरोवर में

धीरे-धीरे पिघलती है बर्फ
धीरे-धीरे जैसे
द्रवित होती हैं पुण्याभ चट्टानें

भविष्य

स्मृति और कल्पना से भी परे
वह एक सोचा हुआ भविष्य
अब तक आया ही नहीं

प्रतीक्षा में था मैं
जंगलों से नगरों की यात्रा में
भटकाव और दुराव के बीच
छिपाता रहा वह छोटा-सा
अकल्पित-सा स्वप्न
छिपाता रहा उसे भाषा से
चिह्न से
संकेतों से

टोहता रहा हर पड़ाव पर
शायद कोई इंगित
उसे मेरे पास ले आये

इतने वर्तमानों के बीच
युद्ध आये। विपदाएं। हताशाएं
प्रतीक्षारत रहा
रहूंगा जब तक देख पाऊंगा
अपनी आत्मा के दर्पण में
वह सुरक्षित-सा भविष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीहड़ का मतलब

बीहड़ का मतलब
शब्दकोश में होगा
वैसा नहीं
जैसा यह जीवन है

जीना तो सपने का
फैलाव है
जैसे ही जीते हुए जागता हूं
सपने से
तभी टकराता हूं खुद के
छलावे से
मैं न हुआ जैसे यह कोई
दूसरा आदमी हो
सवाल करता हुआ
सबसे अपनापन जताते हुए
बचाते हुए

छद्म को
बीहड़ का कोई मैदान नहीं
आत्मा का रोना भी नहीं
ठीक-ठीक अपने ऐन्द्रिक
ग्रास्य को
जैसे ही जानता हूं परिज्ञान में
लगता है
बीहड़ उग आया है

अर्थवान
बीहड़ है
काटना यह दिन
दूसरे दिनों की तरह
बीत जाएगा
लेकिन न बीतेगा बीहड़
जिसके चेहरे पर
खिंची है अमरत्व की रेखा
खिंचा है जो मेरे यथार्थ के साथ
जीते जी मेरे साथ सटा है जो जीवन-सा ।

गंगाप्रसाद विमल

पहाड़ों के बादल

गलबाहियों दिये
बादल
ढंक रहे हैं शिखरों को
फिर आएंगे
घाटियों की ओर
बरसेंगे हफ़्तों-अनवरत
और बहा ले जाएंगे
हवा के साथ
मौसम की ऊष्मा ।

मौसम की ऊष्मा ।
ऊष्मा जो
शिशिर के महीनों
सिर्फ सपनों में
करवटें बदलती है
धीरे-धीरे
जम जाएगी स्मृति में
और बादल
आते रहेंगे
हर मौसम का
अपना ही रंग लिये हुए
पहाड़ों की ओर
आते ही रहते हैं बादल
हर मौसम ।

३ए/११ डब्लू ई ए करोल बाग नयी दिल्ली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

अतुल नागर, जयपुर

प्रश्न : ऑक्सफर्ड और कैंब्रिज विश्वविद्यालयों में कौन पुराना है ?

ये दोनों ही विभिन्न कॉलेजों के संधित (फेडरेटिंग) विश्वविद्यालय हैं । ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय से संबद्ध प्रथम कॉलेज (युनिवर्सिटी कॉलेज) की स्थापना सन १२४९ में हुई थी, जब कि कैंब्रिज विश्वविद्यालय से संबद्ध पीटरहाउस कॉलेज सन १२८४ में स्थापित किया गया था ।

सुनील अग्रवाल, रायरंगपुर (उड़ीसा)

प्रश्न : सबसे पहला 'दादा साहब फालके पुरस्कार' किसे मिला था ?

देविका रानी रोरिख को १९६९ में

अभिषेक नैथानी, पौड़ी-गढ़वाल

प्रश्नःसाइबरनेटिक्स क्या है ?

यह विज्ञान की वह शाखा है जिसके अंतर्गत जीवधारियों के शरीर तथा यांत्रिक (मेकैनिकल) और विद्युत प्रणालियों के भीतर की नियंत्रण एवं कार्य व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है । इस विज्ञान के जनक अमरीकी गणितज्ञ नारवर्ट वीनर थे जिनकी खोज से यह तथ्य उजागर हुआ कि प्राणियों और मशीनों के अंदर स्वचालित नियंत्रण तथा सूचना संचारण की व्यवस्था एक जैसी है । इस अध्ययन से ही ऐसा कंप्यूटर बनाने की दिशा में काम प्रारंभ हुआ जो मनुष्य के मस्तिष्क की तरह काम कर सके ।

जयंती, जमशेदपुर

प्रश्न : लाजवंती का पौधा छूते ही मुरझा जाता है, लेकिन कुछ देर बाद फिर पूर्व स्थिति में आ जाता

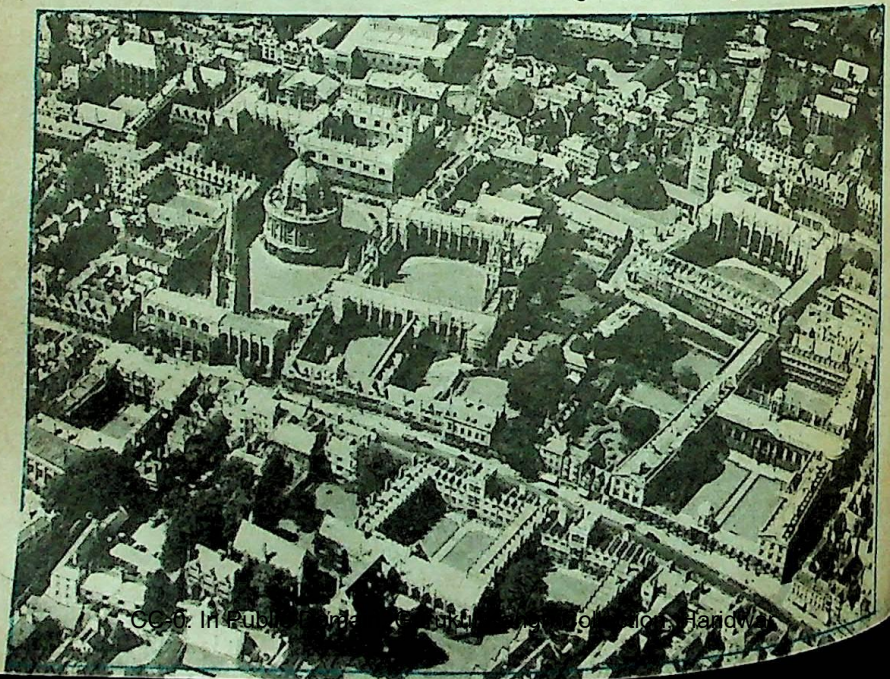

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

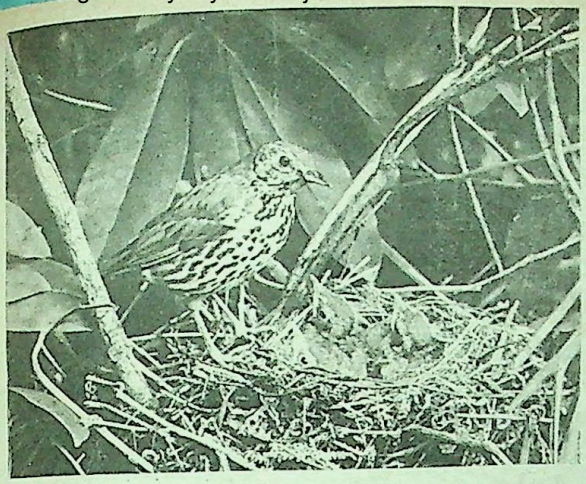

ऐसा क्यों होता है ?

इस पौधे के डंठल में पत्तियों के जोड़ों के नीचे छोटे-छोटे दाने होते हैं जिनमें पतली झिल्लीवाली अनेक कोशिकाएं होती हैं । पौधों द्वारा जल का चूषण किये जाने पर ये दाने पानी से भर जाते हैं । यदि इनमें से जल निकल जाए तो ये दाने शिथिल हो जाते हैं । जब छुईमुयी के इन पौधों का स्पर्श किया जाता है तो इनका जल बहकर डंठल में चला जाता है जिससे पत्तियां मुड़ी जैसी देखाई देने लगती हैं । वही जल धीरे-धीरे इन दानों में पुनः भर जाता है और पत्तियां पूर्व स्थिति में वापस आ जाती हैं

संजय कुठालिया, पटना

प्रश्न : पोलियोमाइलाइटिस (बाल पक्षाघात) इधर ६०-७० वर्षों से तंग कर रहा है, पहले क्यो नहीं था ?

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यह नया रोग नहीं, कम से कम साढ़े तीन हजार वर्ष पुराना है ।

मदालसा माहेश्वरी, वर्धा

प्रश्न : पक्षी, विशेषतया गौरय्या, मिट्टी में क्यों स्नान करते हैं ?

जुओं आदि से छुटकारा पाने के लिए ।

पृथपाल सिंह, पटियाला; भुवनेश्वरी देवी, बक्सर

प्रश्न : मधुमक्खी-जैसा शाकाहारी जीव भी डंक क्यों मारता है ? पृथ्वी पर कब से इसका अस्तित्व है, और संसार में यह कहां-कहां पायी जाती है ?

कदाचित् आत्मरक्षा के लिए यह उसका अस्त्र है, किंतु सभी मधु-मक्खियां शाकाहारी नहीं होतीं । इनमें एक जाति सड़े-गले मांस का भक्षण करती है, तथा एक अन्य जाति पुष्प-पराग न पीकर सीधे पुष्प ही खा जाती है । पृथ्वी पर इसका अस्तित्व कम से कम ३ करोड़ वर्षों से है । अब यह हिमालय की पादगिरियों से लेकर केंद्रीय अमरीका के वर्षावनों तक में मिलती हैं । (स्रोत : इकालॉजी ऐंड नेचुरल हिस्ट्री ऑव ट्रॉपिकल बीज, ले डेविड रुबिक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

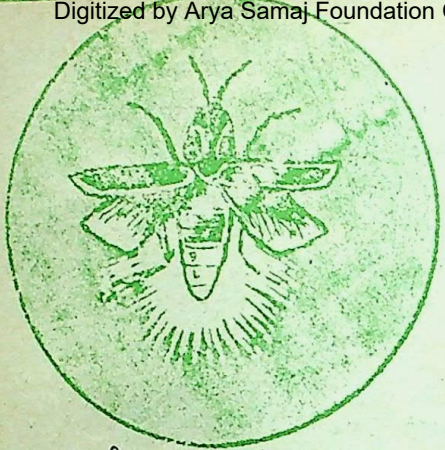

मुक्ता भारती, छतरपुर (म.प्र.)

प्रश्न : जुगनू कीट है या पतंग ? यह रोशनी या चमक कैसे उत्पन्न करता है ?

जुगनू काले रंग का एक कीड़ा है जो फूलों के रस पर जीवित रहता है । ये कीट उष्ण क्षेत्रों में अधिक पाये जाते हैं । इनके शरीर का चमक पैदा करनेवाला भाग इनके पेट के नीचे होता है । 'लुसीफेरिन' और 'लुसीफेरेज' नामक दो रसायन इनके शरीर में होते हैं । 'ऑक्सीजन' के साथ मिलकर 'लुसीफेरिन' प्रकाश पैदा करता है । इस मिश्रण के साथ मिलकर 'लुसीफेरेज' उत्प्रेरक का काम करता है ।

गोपाल चतुर्वेदी, गुना

प्रश्न : महाभारत में वर्णित 'घोष यात्रा' से क्या मंतव्य है ?

प्राचीन काल में प्रति वर्ष राज्य के 'गोधन' की गणणा होती थी । इसके लिए अधिकारियों के दौरे को 'घोष यात्रा' कहते थे ।

संदीप सरतालिया, देवास

प्रश्न : 'ग्रीनपीस' आंदोलन क्या है, और यह किन देशों से संबंधित है ?

यह एक अंतरराष्ट्रीय आंदोलन है तथा पर्यावरण की रक्षा करना इसका उद्देश्य है । परमाणु परीक्षणों के विरोधी इस आंदोलन की शाखाएं यूरोप के लगभग सभी देशों में हैं । इसकी शुरुआत कोई २० वर्ष पूर्व कनाडा में हुई थी, तथा सन १९८४ में जहां इसकी सदस्य संख्या चार लाख थी वहां अब यह ४० लाख तक पहुंच चुकी है ।

रघुराज दिनोदिया, पिलानी

प्रश्न : रात और दिन वर्ष भर कहां बराबर अवधि के होते हैं, और क्यों ?

विषुवत रेखा पर रात और दिन बराबर अवधि के होते हैं । यह क्रम वर्ष पर्यंत इसलिए चलता है क्योंकि यह रेखा पृथ्वी के मध्य में स्थित है, और चूंकि सूर्य के संबंध में पृथ्वी का मध्य भाग सदा एक ही स्थिति में रहता है इसलिए रात और दिन भी सदा बराबर अवधि के होते हैं ।

भोला दत्त जोशी, नयी दिल्ली

प्रश्न : प्लास्टिक मुद्रा किसे कहते हैं ?

बैंकों द्वारा जारी 'क्रेडिट कार्ड' को प्लास्टिक मुद्रा कहते हैं ।

प्रदीप कुमार यादव, भागलपुर

प्रश्न : सागर-समीर और भू-समीर में क्या अंतर है ?

सागर-समीर दिन में समुद्र से भूमि की ओर चलती है जो दिन के समय समुद्र की तुलना में अधिक गरम होती है । दिन के समय समुद्र पर उच्च चाप रहता है और भूमि पर निम्न, और वायु सदा उच्च चाप की ओर से निम्न की ओर बहती है । रात में यह स्थिति उलट जाती है । समुद्र की तुलना में भूमि जल्दी ठंडी और गरम होती है । भूमि के ठंडे होने से उस पर दबाव बढ़ जाता है जिससे हवा समुद्र की ओर जाने लगती है । इसे भू-समीर कहते हैं ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रंजन सक्सेना, भरतपुर

...: एक देश में वनों के लिए कितना भाग ...ांत होना चाहिए, भारत में क्या स्थिति है ?

भारत में लगभग ७५१.८ लाख हेक्टेयर ...में वन लगे हुए हैं जो कि इस देश के कुल ...लिक क्षेत्र का २२.७ प्रतिशत है ।

...ज्ञों के अनुसार भारत-जैसे उष्ण देश में ...में कम एक-तिहाई भाग में जंगल होने ...ए ।

...नैन क्रिस्टी, रांची

...: गांधी जी द्वारा संपादित अंगरेजी साप्ताहिक ...ाम क्या था ?

'यंग इंडिया' ।

...दन पांडेय, कानपुर

...: मुसलमानों की सर्वाधिक संख्या की दृष्टि से ...र के तीन बड़े देश कौन-से हैं ?

'द स्टेट्समैन इअर बुक' (८७ ब्रिटिश ...रण) के अनुसार ये तीन देश हैं : ...डोनेशिया (१७ करोड़ २० लाख), ...लादेश (१० करोड़ ४१ लाख) और ...किस्तान (१० करोड़ २२ लाख) ।

...द प्रसाद राजन, बिहार शरीफ (नालंदा)

...: दक्षिण अमरीका को लैटिन अमरीका क्यों ...ते हैं ?

क्योंकि दक्षिण अमरीका के अधिकतर देशों ...टिन संबद्ध भाषाएं बोली जाती हैं ।

...ज भारद्वाज, कालका

...: वायोमास क्या है ?

प्रकृति में उपजी प्रत्येक प्रकार की वनस्पति, ...घास, खेत में खड़ी फसल, नारियल के ...ल, वायोमास हैं ।

...रुनाथ कथूरिया, मुरादाबाद

...: वर्तमान राष्ट्रपति भवन का पुराना नाम क्या ...और इसमें सबसे पहले कौन रहा था ?

इसका पिछला नाम 'वायसरायज हाउस' है, सबसे पहले लार्ड अर्विन (इरविन) इसमें रहे ।

भूपेन्द्र नारायण मंडल, टाटानगर

प्रश्न : महाभारत ग्रंथ का इतना महत्त्व क्यों है ? उसमें धर्म और अधर्म से लड़े गये युद्ध के वर्णन के अतिरिक्त शिक्षा क्या है ?

महाभारत में कहा गया है : "यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ।" (आदि पर्व, ५६/३३) । अर्थात जो कुछ महाभारत में है वही अन्यत्र है, जो इसमें नहीं वह और कहीं नहीं है । लोकमान्य तिलक के अनुसार महाभारत में धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और मोक्षशास्त्र सभी कुछ आ गया है ।

प्रफुल्ल कुमार देव, सहारनपुर

प्रश्न : कलियुग को कितने वर्ष बीत चुके हैं ।

हिंदुस्तान इअर बुक के अनुसार फरवरी, ९० में कलियुग के ५०९२ वर्ष पूरे हो चुके हैं ।

कृष्णावतार भदौरिया, एटा

प्रश्न : मोटर वाहन 'जीप' का यह नाम क्यों है, इसका तात्पर्य क्या है ?

वस्तुतः इस वाहन का नाम 'जनरल परपज वेहिकिल' है जिसका संक्षिप्त रूप 'जी.पी.' हो गया है । आगे चलकर अंगरेजी के ये दो अक्षर मिलकर एक शब्द 'जीप' में परिवर्तित हो गये ।

— सूत्रधार

परदे पर फिल्म चल रही थी । दर्शक सांस रोके अगले दृश्य की प्रतीक्षा कर रहे थे । सहसा नायक ने नायिका को एक थप्पड़ मार दिया ।

थिएटर में छाये सन्नाटे को एक नन्हे बच्चे की आवाज ने तोड़ा— "मम्मी, इसने आपकी तरह उलटकर थप्पड़ क्यों नहीं मारा ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

एवरेस्ट से नीचे कूदनेवाला बहादुर बोइमिन

इतिहास तो सभी पढ़ते हैं मगर बिरले ही लोग ऐसे होते हैं जो इतिहास बनाते हैं। विगत २४ सितम्बर ८८ का दिन सदा संसार के इतिहास की अत्यंत रोमांचक व आश्चर्यजनक घटना से भरा हुआ माना जाएगा। इस दिन फ्रांस के बहादुर पर्वतारोही जीन मार्क बोइमिन ने हिमालय के संसार-प्रसिद्ध सर्वोच्च शिखर माउंट एवरेस्ट से नीचे कूदकर एक विश्व-रेकॉर्ड कायम कर दिया।

सबसे पहले एवरेस्ट शिखर पर चढ़कर जिस प्रकार तेनसिंह और हिलेरी ने सारी दुनिया में धूम मचायी थी, वैसी ही धूम बहादुर बोइमिन ने एवरेस्ट से कूदकर मचायी है। यूरोप और अमरीका के पत्रों ने तो बोइमिन के इस दुस्साहस को तेनसिंह और हिलेरी की एवरेस्ट-विजय से भी अधिक महत्त्वपूर्ण बताया है। लंदन टाइम्स और न्यूयार्क टाइम्स ने तो उसे नोबेल अथवा अन्य पुरस्कार प्रदान करने की मांग की है। रूस और चीन के अखबारों में भी उसके साहस की प्रशंसा हुई है।

बला का साहसी, कमाल का शक्तिशाली एवं अद्‌भुत शौर्य का धनी बोइमिन अगस्त ८८ के अंतिम सप्ताह में अपने १४ सदस्यीय पर्वतारोही दल के साथ काठमांडू पहुंचा। स्थानीय पोर्टरों और शेरपाओं के अलावा शक्तिशाली कैमरों से लैस फोटोग्राफर भी उसके साथ थे। सितम्बर में भीषण तूफानों का सामना करते हुए बोइमिन और उसके साथियों ने एवरेस्ट की चढ़ाई शुरू की। उन्होंने घुटने-घुटनेभर बरफ में ऊपर चढ़ते हुए एक के बाद एक कुल ४ आधार शिविर बनाये। जब वे १० हजार फुट की ऊंचाई पर पहुंचे तब बोइमिन ने वहां बनाये गये आधार शिविर में अपने अधिकांश साथियों और सामान को छोड़ दिया। एक-दो फोटोग्राफरों और ३-४ साथियों को लेकर वह शेष १९ हजार फुट की चढ़ाई के लिये आगे बढ़ा।

हवा पतली होती जा रही थी। वे सभी ऐस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क लगाये हुए थे । मौसम बदतर होता चला
हा था । बरफीली हवाएं तथा बरफ की
ना गड़गड़ाहट के साथ फिसलती हुईं
चानें और किसी भी क्षण मौत का खौफ भी
इमिन को एवरेस्ट तक पहुंचने से रोक नहीं पा
था । वह रह-रहकर मन में ईश्वर से यही
ना हुआ अपनी चढ़ाई चढ़ रहा था, "हे
र मुझे सफलता दे ।"

अंत में भारी कष्ट सहता हुआ वह और
के साथी सभी एवरेस्ट की चोटी पर पहुंच
। सौभाग्य से उस समय आकाश बिलकुल
क था । सूर्य की किरणें मानों जांबाज
इमिन का स्वागत कर रहीं थीं क्योंकि असली
ल तो वह अब दिखलाने जा रहा था ।
ने एवरेस्ट के शिखर से चारों तरफ नीचे
ली चमकीली बर्फानी चोटियों को देखा ।
के साथी फोटोग्राफरों ने उसके अनेक चित्र
रे । कुछ मिनट चोटी पर सुस्ता कर तथा
ने साथियों को बाद में लौटने की जरूरी
दायतें देकर वह एवरेस्ट से नीचे कूदने के
ये तैयार होने लगा । उसके साथी आश्चर्य से
खें फाड़े उसे टुकुर-टुकुर ताक रहे थे क्योंकि
ह एक ऐसा काम करने जा रहा था जो अब
क संसार में किसी ने नहीं किया था । उसने
ाथ लाये हुए हलके लंबे पैराशूट (पेरापेंट)
को खोला, अपने शरीर को पैराशूट की रस्सियों
बांधते हुए वह मुसकराया । फिर साथियों से
दा लेते हुए क्षण मात्र में वह नीचे धरती की
ओर कूद पड़ा । आधे मिनट तक तो वह एक
त्थर की तरह नीचे गिरा परंतु दूसरे ही मिनट में
उसका पैराशूट खुल गया और उसमें हवा भर
गई । अब वह मंथर गति से नीचे उतरता चला
जा रहा था । एवरेस्ट पर खड़े उसके साथी फिल्मकार उसकी फिल्म उतार रहे थे । हिमालय की चोटियां स्तब्ध भाव से उसे निहार रहीं थीं ।

पैराशूट के जरिये मार्क बोइमिन की यह कुदान केवल कुछ ही मिनट की थी । एवरेस्ट की २९ हजार फुट ऊंची चोटी से कूद कर वह लगभग १० हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित अपने आधार शिविर में पहुंच गया, जहां उसके पीछे छूटे साथियों ने उसका भारी स्वागत किया और उसके चित्र उतारे । कुछ ही घंटों में उसके एवरेस्ट पर छूटे साथी भी नीचे उतरकर उससे जा मिले और फिर तो सभी मिलकर नीचे उतरकर काठमांडू पहुंच गये ।

शीघ्र ही बोइमिन के इस ऐतिहासिक शौर्य का समाचार दुनिया के सभी देशों तक पहुंच गया, जिसे सुनकर लोग स्तब्ध रह गये ।

बाद में बोइमिन ने पत्रकारों को बतलाया कि इसके पहले भी वह १९७९ में हिमालय की-के-२ चोटी से ७०० मीटर ऊंचाई से तथा बाद में ८०० मी. की ऊंचाई से कूद चुका है ।

—मुकुन्द दास माहेश्वरी

तद् वै दैवं मतो येनानन्दयेव भवति, अथो न शोचति ।

(बृहदारण्यक उपनिषद् १/५/१९)

वह दैवी (दैवी-गुण संपन्न) मन है जिससे मनुष्य आनंदित रहता है और शोक नहीं करता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राख

● वासंती

भाई के जिम्मे माता-पिता को छोड़ राघव अपनी पत्नी के साथ अम[illegible] का जा बसा था, पर देश की यादें, माता-पिता की यादें उसे सदैव व्यथित करती रहीं । और एक दिन...

सिगनल परिवर्तित होने की अधीर प्रतीक्षा करती सामने कारों की लंबी कतारें थीं । "यह तो होना ही था ।" राघव बुदबुदाया और अपनी कार का इंजन बंद कर दिया ।

राधिका ने किताब के ऊपर से सिर उठाया और कतार में खड़ी कारों पर दृष्टि डाली और कहा— "शिट" ।

"क्या तुम इस शब्द के अलावा अन्य कोई शब्द नहीं जानतीं ।"

राघव के इस अप्रत्याशित क्रोध से राधिका हतप्रभ रह गयी और उसने कहा, "माफ करेंगे डैडी । लेकिन यह वैसा बुरा शब्द एकदम नहीं है ।"

राघव ने फुफकारते हुए कहा, "मैं तुम्हारे मुंह से इस तरह के गंदे शब्द एकदम सुनना नहीं चाहता ।" इसके पश्चात पता नहीं कौन-सी एक स्पष्ट बात उसके दिमाग में कौंध गयी कि उसने अपने को रोक लिया फिर कहने लगा, "अपने बचपन के दिनों में हम छोटे बच्चे अपने पिता से इतना डरते थे कि सामने आने में भी हिचकते थे ।"

राधिका ने चुइंगम चबाते हुए बोलना जारी रखा, "हे भगवान ! मैं इस तरह के स्थान पर और देर तक रही तो पागल हो जाऊंगी ।"

अब वाहन सरकने लगे थे । राघव ने भी तनाव-मुक्ति की सांस ली । जैसे ही उसने कार की गति तेज की, उसे अभी-अभी पुत्री के साथ हुई बहस की याद आने लगी और फिर उसने इस सोच को परे ढकेल दिया । उस विचार को जारी रहने देने का कोई तुक भी नहीं था क्योंकि उससे केवल चुइंगम चबाती राधिका के गुस्से को ही हवा मिलती । अतः उसने चुप रह जाना ही अच्छा समझा ।

उसने राधिका पर तिरछी दृष्टि डाली । वह आज दक्षिण-भारतीय चोली-घाघरा पहनी हुई थी क्योंकि किसी ईसाई पर्व के उपलक्ष्य में स्कूल में अवकाश था । उसके केश सीधे संवरे थे । उसके वक्षस्थल पर दो चोटियां पड़ी थीं । भारत में उसे देखकर कोई यह नहीं कह सकेगा कि यह लड़की अट्ठारह की नहीं बारह वर्ष की है । राघव ने गौरव महसूस करते हुए सोचा. राधिका का वर्ण और उसका गठन उसके तमिलवासी होने का प्रमाण था लेकिन जैसे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

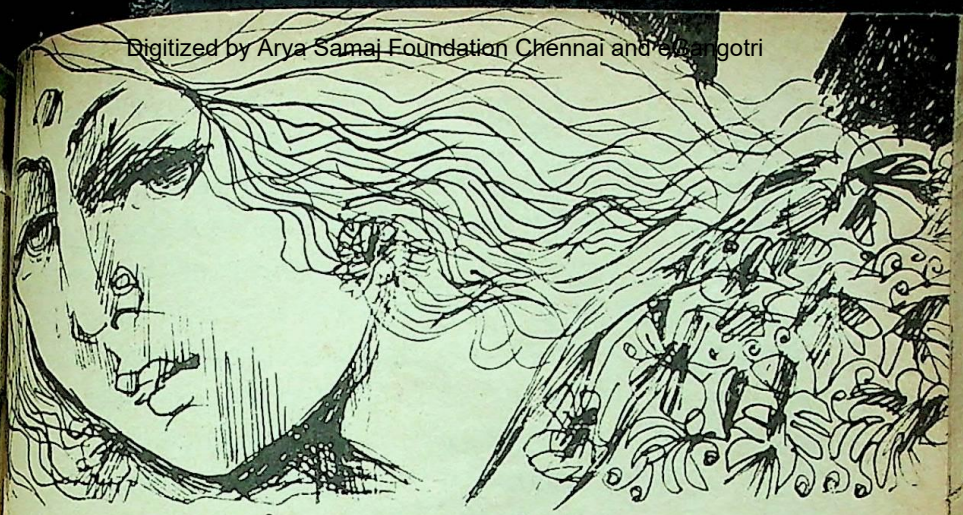

देखने को उसका मुख खुलता, अमरीकावास का असर स्पष्ट निसृत होने लगता । वाणी और कम्प्यूटर की तरह क्षिप्र विचार-प्रवाह से वह कुछ अमरीकी लगती थी ।

एक क्षण के लिए राघव भी चकित रह गया, 'दस वर्षों के पश्चात इसका क्या होगा ?' लेकिन तुरंत उसने सोचना बंद कर दिया ।

अतीत की स्मृतियां बोझ थीं और वर्तमान तो एकदम धूमिल तथा भविष्य एक प्रश्नचिह्न बनकर सामने था, जिसे वह यथासंभव सामने नहीं आने देना चाहता था । उसे ऐसा महसूस होता था जैसे वह एक छात्र है, जिसने परीक्षा की पूर्ण तैयारी ही नहीं की है ।

× × ×

इन दिनों प्रायः वह स्मृतियों में डूबता-उतराता है । अतीत की याद अनायास, सहज और मथनेवाली है । जैसे वह सोते वक्त सहेजी गयी बातों को सुबह याद करते हुए जागता है । सुबह उठते ही उसे भारती की कविता 'चेंतामिलनाडु' लोकधुन में सुनायी दी । इतने दिनों के पश्चात भी उसका एक अंश कहीं भुलाया जा सका है । उसने एक के पश्चात एक-एक अभिव्यक्ति टा, ना, ना, टा, ना ना— तथा उसके ताल अपनी अंगुलियों से थाप देते हुए उसने सुना । उसे लगा, जैसे वह एक बाहरी व्यक्ति है और यह गीत उसके अंदर की गहरायी में भी बज रहा है, जिसमें उसका भी योग हो गया है ।

''वेदम निरैन्द तमिलनाडु....'' वेदों के स्वर से पूरित धरती और साहस से पूरित तमिल-भूमि... ।

''इतनी सुबह तुम्हारा गाना'' विजी ने जब पूछा तो वह यथार्थ की धरती पर लौट आया । जब वह ससंकोच उठा और अपने दांत ब्रश करने लगा, शब्द उसके दिमाग में गूंजने लगे— 'कल्वी शिरन्द तमिलनाडु.... ज्ञान की भूमि, महान कम्बन की धरती, तमिल भूमि ।'

वह वॉस बेसिन पर अपने बायें हाथ से ताल देने लगा । उसकी आंखों की जो परछाई आइने पर पड़ रही थी । उनसे आंसुओं की एक तसवीर उभरती थी । उसने इसे पहचाना और अपने चेहरे को तुरंत धो डाला ।

× × ×

आइने में एक दूसरा चेहरा भी था । वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके पिता की थी, जो आक्रोश में कह रहे थे, "चुप रहो तुम तो इस तरह गा रहे हो जैसे कवि भारती के समकक्ष हो, बहुत हो चुका अब तो तुम कुछ अच्छा काम करो, जाकर सब्जियां खरीद लाओ।"

वह बाजार की ओर जाते हुए भी उस स्वर से पूरित था। जब वह रास्ते पर पहुंचा, कवि भारती के शब्द पुनः उसके होंठों पर थरथराये— "अच्चमिलै— मैं निर्भीक हूं।"

बाजार की ओर जाती राह के किनारों पर मारगोसा के वृक्ष थे। मारगोसा पुष्पों की गंध उस गीत की ही तरह पूरी राह उसका पीछा करती रही। कोई महक जो मारकोसा पुष्प और आम्रमंजरी की महक की तरह थी तो वह थी धरती की महक। समय-समय पर वे ही पुरानी महकें इस पार अमरीका के वसंत में पत्रविहिन वृक्षों पर तथा अमरीकी शिशिर में किसी के ओवरकोट को कसकर पकड़े कांपते हाथों तक पहुंचती थीं।

× × ×

"ब्रेक-फास्ट के लिए आ रहे हो।" विजी ने पूछा।

"आ रहे हैं।"

नाश्ते हेतु दलिये के बहुत से बड़े डब्बे मेज पर पड़े थे। उसने उसमें से एक को खोला और अपने प्लेट में कुछ डालकर ऊपर से दूध उड़ेल लिया।

"हलो डैड।" छोटी बेटी ने अभिवादन किया और मेज के किनारे बैठ गयी।

"हलो!"

इस छोटी उम्र की रोली-पोली को देखकर उसको कुछ अपराध-बोध हुआ कि कहीं बच्चों के स्वस्थ विकास में कुछ अस्वाभाविक तो नहीं। अपनी बेटी की इस उम्र में वह वस्त्रविहीन घूमता था केवल निकर पहनकर। स्कूल जाते वक्त ही कमीज पहननी पड़ती थी।

वे गरमी की रातों में बरसाती पर सोते थे। गरमी की घमोरियों पर चंदन का लेप लगाकर वह लेटा-लेटा तारे गिनता रहता। उसके दादा भी उसकी बाजू में न जाने कितनी बार सुनाया करते और कभी ऊबते नहीं थे।

मेज पर पड़े दलिये के हरे, नीले, लाल डब्बे बिखरकर दूसरा दृश्य उपस्थित कर रहे थे।

— "बाय, बाय डैड।"

"शीला! तुम्हारे डैड आज विचारों में डूबे हुए हैं।" विजी ने कोट और ऊंची एड़ी के जूते पहनते हुए कहा।

"हो सकता है कि वे अपने पिताजी के विषय में सोच रहे हों।" राधिका बोली।

उसने अपना सर झटककर राधिका की ओर देखा, उसके जींस और टॉप्स तथा पोनी टेल और च्यूइंगम चबाते मुख को देखा। क्या उसके होंठों से कोई व्यंग्य प्रतिभाषित हो रहा था? वह बेचैन हो उठा।

क्या वह उसकी ही बेटी है या किसी आधिभौतिक जगत की प्रतिनिधि है? उसे आश्चर्य हुआ।

"यह हो भी सकता है"... वह रोली-पोली अपनी बहन के समर्थन में चहकी। खड़े होते हुए उसे अपने पैर दुर्बल लगने लगे।

"मैं बच्चों को छोड़ने जा रही हूं" विजी ने कहा। और रूटीन के अनुसार उसने भी 'बाय' कहा। बंद दरवाजे के अंदर से उसे विजी की आवाज सुनायी पड़ रही थी जो बच्चों से कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह कर सको''— मां ने सलाह दी ।

''तुम भी हद करती हो । लड़का अपनी दसवीं कक्षा की परीक्षा के लिए प्रार्थना कर रहा है और तुम उसमें न जाने कितनी याचनाएं और जोड़ रही हो । ठीक है— वह मांगा जा सकता है । वस्तुतः कोई आदमी अपना कर्त्तव्य समझता है या नहीं— यह बड़ी बात है ।''

उसने अपना सर उठाया और उसे आश्चर्य हुआ कि उसके पिता ने किसके लिए यह आलोचना की ।

× × ×

''हाय डैड । क्या आप ठीक हैं ? राधिका ने पूछा, ''हां अवश्य'' उसने अपनी आंखें मलते हुए कार स्टार्ट की । उसके सर में हलका-सा दर्द था । वह कुछ परेशान था, उसे लग रहा था जैसे वह कोई मौखिक परीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दे रहा हो ? यह उसका अतीत था या वर्तमान, राख में दबे अंगारे नये थे या पुराने ? यह कैलिफोर्निया था या कुंबाकोनम ? अब वह चौड़े रास्ते को छोड़कर बायीं ओर मुड़ा तो उसे घर दिखलायी पड़े, जो बड़े नहीं थे लेकिन देखने में सुंदर और करीब-करीब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

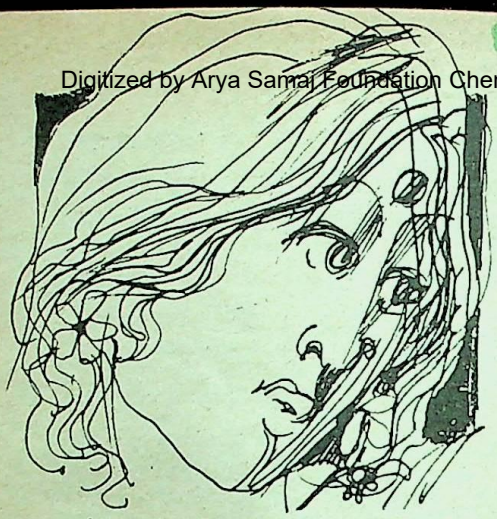

एक-जैसे । उसे नर्सरी राइम्स की किताब की तसबीरें याद आयीं, जिसमें बच्चों के साथ माताओं की तसबीरें थीं और वे बच्चे अमरीकी थे, अपनी भूमि के प्रति गौरवान्वित दीखते उन सबसे अलग... ।''

''पारुकुल्ले नल्लनाडु... मेरी धरती सारे संसार से अच्छी है । वह राधिका की ओर देखकर मुसकराया । उसे अपनी ही आवाज से परेशानी हुई । उसने कहा, ''यह पंक्ति कवि भारती की है, क्या यह जानती हो ?''

''तुम ठीक कहते हो !'' राधिका ने उसकी ओर प्रश्नभरी निगाहों से देखकर पूछा ।

उसे लगा वह उसके मुंह से चुइंगम निकालकर बाहर फेंक दे ।

× × ×

अब वह अपनी मां के पास है । मां के वक्षस्थल को ढंकता हुआ चिनालपेट साड़ी का किनारा जर्जर हो गया है । मां की ओर सीधी दृष्टि नहीं डाल सकता । मां के साथ जाते हुए वह दूर स्थित मंदिर और धूलभरी गली में खेलते बच्चों को देखता रहा ।

''राघव । आखिर क्यों ? तुम इतनी दूर विदेश जाना चाहते हो ?'' मां की आवाज में एक भय था, ''तुम्हें तो यही इतनी अच्छी नौकरी मिल गयी है, मिली है न ।''

''लेकिन मां, मुझे वहां बहुत अधिक पैसे मिलेंगे ।''

''उतने पैसे मिलेंगे, उन पैसों का क्या होगा अपने देश और अपने लोगों से दूर जाकर उन पैसों का क्या ? मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम हमें छोड़कर चले जाओगे ?''

''लेकिन विजी जाना चाहती है'' राघव ने विरोध व्यक्त करते हुए कहा, ''हमें अपनी जिंदगी के विषय में भी सोचना है । भाई किता तुम्हारी देखभाल करेगा, ठीक है मैं वादा करता हूं कि हरेक वर्ष आऊंगा । मां, तुम चिंता मत करो ।''

उसकी मां ने अपनी साड़ी से आंसू पोंछते हुए कहा, ''ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे ।'' यह इंगित करते हुए कि इसके सिवा और किया भी किसने ? उसने आज तक ईश्वर के सिवाय किसी की ओर नहीं देखा, किता की ओर भी नहीं ।

× × ×

जब राघव घर पहुंचा, उसने पाया— एक भूरी चमड़ीवाला अजनबी प्रतीक्षा कर रहा है—'ये श्री रामास्वामी हैं' विजी ने परिचय दिया । ''ये बर्कले में दस वर्ष रहे और कल्पना करो कि अब तक इनसे हमारी मुलाकात नहीं हुई ।''

रामास्वामी ने नाटकीय मैत्री प्रदर्शित करते हुए हाथ हिलाया और राधिका की-सी वाक्-ध्वनि में कहा— ''मैं त्रिचनापल्ली का हूं ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजी नये परिचय से प्रोत्साहित होकर शराब आयी। राधिका और शीला अपनी टी. वी. व्यस्त थीं। दो या तीन पेग के पश्चात राघव हो गये और रामास्वामी की ओर आकर्षित । अपनी आंखों की हल्की धूमिलता के जूद उसने अपनी जड़ों की पकड़ महसूस ।

"अच्छा रामास्वामी, तुम अमरीका में कितने से हो ?"

"बारह।"

"ये तो बहुत बुरा है, बहुत ही बुरा।" राघव सर हिलाकर कहा— "और तुम।"

"पंद्रह वर्ष। और अब तक मुझे यह नहीं मालूम कि मैं अब क्या हूं ? विजी क्या मैं एक भारतीय हूं या अमरीकी ?"

रामास्वामी अपनी ही समस्याओं में उलझा पड़ा। विजी ने राघव को सावधान किया— "बहुत हो गया और नहीं पीना।"

"रामास्वामी ! सबसे मजेदार बात यह है कि मैं अपने बचपन की स्मृति को ही सर्वश्रेष्ठ मानता हूं। पिता का निरंतर उलाहना और मां की निरंतर उन्हें शांत रखने की कोशिश, कवि भारती के गीत... तुम जानते हो... तमिलनाडु...।"

"मुझे भय है कि मैं तमिल भूल गया हूं।"

"हे भगवान ! यह तो अच्छा हुआ। मेरी बेटी विजी तमिल पढ़ नहीं सकती। वह दिल्ली में पली है और भी क्या तुम जानते हो ? मेरे पिताजी इसीलिए दिल्ली से पुत्रवधू लाना नहीं चाहते थे।"

"रामास्वामी ! बुरा न मानिए, इनको कुछ हो गयी है।"

"और इस दिल्ली की पुत्रवधू ने मुझे अमरीका में नौकरी करने के लिए विवश किया। उसे ससुरालवालों की सांस्कृतिक परंपरा और कुंबकोनम के लोगों का साथ रास नहीं आया। हम अपने माता-पिता को भाई के जिम्मे रखकर वहां से भाग आये। इसी ने मुझे ऐसा करने को विवश किया, इसी औरत ने।"

"राघव, प्लीज शांत हो जाओ, तुम भारत वापस भी जा सकते हो।"

"यही तो समस्या है कि मैं नहीं जा सकता। मैं तो अब वहां के लिए आउटसाइडर, बाहर का आदमी हो गया हूं। वहां से मेरे पत्राचार के भी संपर्क अब नहीं रहे।" राघव हथेलियों में चेहरा छिपाकर फफक पड़ा।

रामास्वामी उठ खड़े हुए, "विजीजी, आप कभी स्वदेश हो आइए।"

"हां, अवश्य ! हम अभी तक तो नहीं जा सके, हर वर्ष जाने में कुछ-न-कुछ अड़चनें लगी ही रहीं... लेकिन मैंने इनको इस कदर हतोत्साहित कभी नहीं देखा।... शायद इन्होंने कुछ ज्यादा ही पी ली हो ?" विजी झेंपती हुई बोली, "क्या मैंने ही इन्हें यहां आने को विवश किया। यदि अपने लोगों से ये इतने संबद्ध थे तो वहीं रह जाते।

उसको रुआंसी होती देख रामास्वामी परेशान हो गये उन्होंने उसकी पीठ थपथपाकर कहा, "कोई बात नहीं।" और चले गये। राघव बाथरूम गये और कै करने लगे। विजी दरवाजे पर प्रतीक्षा कर रही थी।

"तुम्हें इतना अधिक पीने की क्या जरूरत थी ?"

"तुम्हें मुझे शराब देने की क्या जरूरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी ?''

''क्यों मुझे हर बात के लिए दोष देते हो ? तुम्हारा अपना दिमाग नहीं है क्या ?''

वह चुपचाप पड़ा रहा, उसके सर में दर्द होने लगा था ।

''ओह रामास्वामी, वह अपनी भाषा भी भूल गया । कैसा आदमी है ? उसे शर्म नहीं आती ?''

''अब क्या तुम सोने की चिंता नहीं करोगे ?'' विजी ने कहा ।

× × ×

उसने अपनी आंखें बंद कर लीं । उसे अपने पिता के उलाहने याद आये । ''अब रसोई में क्या कर रही हो ?''

''नौकर कुछ राख मांग रहा है, उसे बरतन मांजने हैं ।''

''अपने को जलाओ मत, अब तक राख में कुछ चिनगारियां हैं । अपने हाथ लकड़ी जलानेवाले स्टोव के मध्य डालकर राख निकालते हुए उसने आग की जलन महसूस की ।

× × ×

''छि, छि रामास्वामी तुम अपनी तमिल कैसे भूल गये ?''

टेलीफोन बजने लगा और वह अचानक जाग उठा ।

''हैलो !''

''क्या आप अन्ना (भैया) हैं ?''

''क्या तुम किता हो ?''

''हां, दो दिनों से मैं आपसे संपर्क करना चाह रहा था । एक दिन पूर्व पिता का देहांत हो गया है । मैंने तार द्वारा आपको सूचना दी है । उनकी अंतिम क्रिया हो गयी । आपकी प्रतीक्षा का कोई अर्थ नहीं था लेकिन आशा करता हूं कि अंतिम संस्कारों के लिए आप अवश्य आएंगे । मां के अंतिम संस्कारों के वक्त तो आप नहीं आ सके थे ।''

''मैं आ रहा हूं किता !''

''पिताजी चाहते थे कि यदि आप आयें तो उनकी राख गंगा में विसर्जित करें ।''

''क्या ?''

''राख...''

लाइन कट गयी । यह उसका अतीत था या वर्तमान ? स्वप्न था या यथार्थ ? उसे यह भी पता न चला कि उसने विजी को कब जगाया ।

अनुवादिका—डॉ. मंजु ज्योत्स्ना

एक युवा दंपति छोटे बच्चे सहित फिल्म देखने गये । अंदर जाने से पहले गेट-कीपर ने चेतावनी दी कि अगर आपका बच्चा रोया तो आपको बाहर निकाल दिया जाएगा । और आपकी टिकट के पैसे लौटा दिये जाएंगे, इसलिए बच्चे को शांत रखिएगा ।''

थोड़ी देर में फिल्म चालू हुई, पत्नी ने पति के कान में कहा, ''ये फिल्म कैसी है ?''

''बिलकुल बकवास फिल्म है ।''

''तो फिर बच्चे को रुलाऊं ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहीम : लोक संस्कृति से जुड़े यथार्थदर्शी कवि

● डॉ. राम प्रसाद मिश्र

अब्दुर्रहीम खानखाना— तुलसीदास के समकालीन कवि। सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. रामविलास के शब्दों में रहीम 'न दरबारी कवि थे, न भक्त कवि थे, किंतु लोक संस्कृति से जुड़े हुए, यथार्थदर्शी, धर्म निरपेक्ष, नितांत लौकिक, अपने युग के श्रेष्ठ प्रतिनिधि कवि थे।'

अकबरी-दरबार के सर्वश्रेष्ठ कवि, हिंदी नीतिकाव्य के एक सीमांत, शास्त्रीयकाल के एक अद्वितीय अग्रदूत नवाब अब्दुर्रहीम खानखाना का जन्म बृहस्पतिवार १७ दिसम्बर, १५५६ ई. को लाहौर में हुआ। मिश्रबंधु ने 'विनोद' में उनका निधन-वर्ष सं. १६८४ वि. (१६२७ ई.) दिया है, जो ठीक है। रहीम का मकबरा दिल्ली की बस्ती निजामुद्दीन (ईस्ट) में मथुरा रोड पर स्थित है। उनका देहांत दिल्ली में ही हुआ था। यह मकबरा रहीम के पतन के समय ही अपूर्ण रह गया था और इसके गुंबद का संगमरमर कालांतर में सफदरजंग के मकबरे में लगा दिया गया था। इसके पास ही हुमायूं के मकबरे के मोड़ पर सड़कों के बीचोबीच इनके पिता बैरम खां का मकबरा है। इन दोनों मकबरों की विशेषता यह है कि यह दोगुंबदी है—नीचे से जो गुंबद लगता है वह छत है, जिसके ऊपर भी गुंबद है। महान रहीम का मकबरा जर्जर दशा में भी प्रभावी लगता है।

रहीम के पिता बैरम खां तातार तुर्क थे जो १६ वर्ष की उम्र में बाबर (जो उस समय काबुल हथियाकर वहां जम चुका था) की सेवा में आये थे। बाबर की मृत्यु के बाद हुमायूं की और हुमायूं की मृत्यु के बाद -उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटे अकबर की बैरम खां ने जो सेवा की, इतिहास की पुस्तकों में उसका विस्तृत उल्लेख मिलता है। अकबर के कहने पर बैरम खां ने सपरिवार मक्का के लिए यात्रा शुरू की लेकिन पाटन (गुजरात) में एक पठान गिरोह ने बैरम खां के शिविर पर आक्रमण कर दिया। बैरम खां को मार दिया गया और सब कुछ लूट लिया गया। पठान सरदार ने पितृहत्या का बदला लिया था। उस समय रहीम ४-५ वर्ष के ही बीच में थे। यह किसी प्रकार बचा लिये गये। बाद में यह मशहूर सिपह-सालार बने। इन्हें नवाब एवं खानेखानां के अलंकार प्राप्त हुए। किंतु यह कोरे सेनापति न थे, तुर्की, फारसी, अरबी इत्यादि के विद्वान भी थे तथा संस्कृत, अवधी, ब्रज, खड़ी बोली के विलक्षण काव्यसृष्टा थे। इन्होंने तुजुके-बाबरी का तुर्की से फारसी में अनुवाद किया तथा फारसी में एक दीवान भी रचा। इनकी विद्वता से प्रभावित होकर अकबर ने इन्हें बालक सलीम (बाद में जहांगीर) का शिक्षक नियुक्त किया था।

'विनोद' के अनुसार 'पंडित नकछेदी तिवारी ने लिखा है कि इन्होंने 'रहीम-सतसई', 'बरवै-नायिकाभेद', 'रास-पंचाध्यायी', 'मदनाष्टक', 'दीवान फारसी' और 'बाकयात बाबरी' का फारसी अनुवाद ये ६ ग्रंथ बनाये। इनमें से द्वितीय मुद्रित और प्रथम के हस्तलिखित दो सौ बारह दोहे हमारे पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। शेष ग्रंथ हमने नहीं देखे।' 'शिवसिंह सरोज' ने इनका 'श्रंगार-सोरठा' नामक एक ग्रंथ लिखा है। 'हिंदी साहित्य का इतहास' में इसके अतिरिक्त अन्य कृतित्व पर भी प्रकाश डाला गया है। भरतपुर के श्रीयुत पंडित मायाशंकर जी याज्ञिक ने इनकी और भी रचनाओं का पता लगाया है— जैसे 'नगर-शोभा', फुटकल बरवै, फुटकल कवित सवैये और रहीम का एक पूरा संग्रह रहीम—रत्नावली' के नाम से निकला है। 'हिंदी साहित्य कोश' में डॉ. रामचंद्र तिवारी के अनुसार' रहीम काव्य के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें रहीम-रत्नावली' (सं.-मायाशंकर याज्ञिक-१९२८ ई.) और 'रहीम-विलास' (सं. व्रजरत्नदास-१९४८ ई., द्वितीयावृत्ति) प्रामाणिक और विश्वसनीय हैं। इनके अतिरिक्त 'रहीमन-विनोद' (हिंदी साहित्य सम्मेलन) 'रहीम-कवितावली' (सुरेन्द्रनाथ तिवारी) 'रहीम' (रामनरेश त्रिपाठी), 'रहिमन-चंद्रिका' (रामनाथ 'सुमन'), 'रहिमन-शतक' (लाला भगवान दीन) आदि संग्रह भी उपस्थित हैं।

तुलसी और रहीम की मित्रता

तुलसी और रहीम की मिताई जगजाहिर है। रहीम बनारस के प्रशासक भी रहे थे। एक ब्राह्मण के कन्या विवाह संदर्भ याचना पर तुलसी ने यह शब्द लिखकर दिये और रहीम से मिलने को कहा :

सुरतिय, नरतिय, नागतिय, अस चाहति सब कोय।

जिस पर रहीम ने उसे भरपूर दान देते हुए यह शब्द लिखे और तुलसी को देने के लिए कहा :

गोद लिए हुलसी फिरे, तुलसी-सो सुत होय॥

प्रसिद्ध है कि एक सैनिक के अवकाश के अत्यधिक आग्रह पर रहीम ने कारण पूछा तो उसे नववधु का पत्र दिखाना पड़ा जिसकी इबारत थी :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

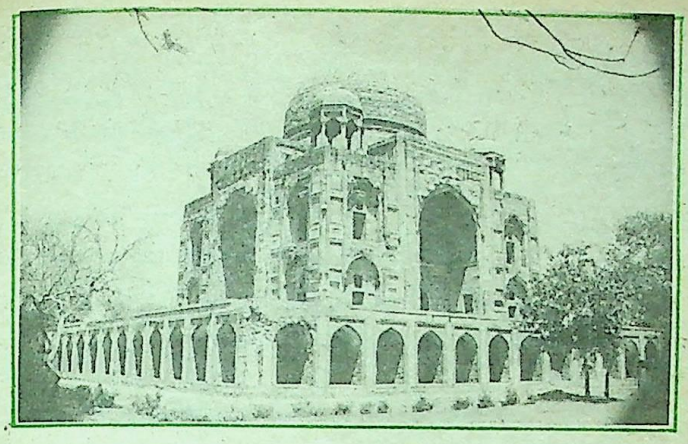

नयी दिल्ली स्थित रहीम का मकबरा

...प्रीति कर बिरवा चलेउ लगाय ।
...के सुधि राखेव मुरझि न जाय ।।

उसे तो अवकाश मिला ही, साहित्य को ...वै-नायिकाभेद'—जैसा उत्कृष्ट ...धी-काव्य भी मिला—और रहीम द्वारा ...वै-नायिकाभेद को तुलसी को दिखाने पर ...सी का 'बरवै रामायण' भी प्रकाश में आया, ...एक मनोहारी अलंकृतकाव्य है ।

...वै-नायिकाभेद एवं बरवै-रामायण शास्त्रीय ...विता के सुंदर निदर्शन हैं । अतः दोनों कवि ...वीकाल के अग्रदूत भी हैं ।

परिस्थितियों के घात-प्रतिघात में खडगजीवी ...द्धा का जीवन उत्थान-पतन में झूलने लगता ... खुर्रम (बाद में शाहजहां) के विद्रोह पर ...म का ढुलमुलपन उनके पतन का कारण ... । दो पुत्र पहले ही मर चुके थे । विधुर थे ... चित्रकूट में निर्वासित जीवन बिताना पड़ा ...तु अपने युग के हातिमताई को तब भी ...क-मुक्ति नहीं मिल सकी । एतद्संदर्भी दोहे ...द्ध हैं :

...ही लौ जीबो भलो दीबो परै न धीम ।
...न दीबो जीबो भलो मोहि न रुचै रहीम ।।

ये रहीम दर-दर फिरै, मांगि मधुकरी खाहिं ।
यारो यारी छोड़िए, वै रहीम अब नाहि ।
चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध-नरेश ।
जा पर विपदा परति है सो आवत यहि देस ।

अंतिम दोहा रीवा-नरेश को सुनाया गया तो उन्होंने दोहा रूपी पत्र-वाहक को एक लाख रुपया प्रदान किया । उनके प्रबल प्रतिद्वंद्वी महावत खां ने अवसर देखकर इनके एकमात्र अवशिष्ट पुत्र दराब खान उसके पुत्र एवं भतीजे को समाप्त कर दिया । रहीम के जीवन का आरंभ पितृनाश से हुआ, अंत वंशनाश से, किंतु वे एक बहुत ही महान जीवन जिये जो एक करुण-काव्य है, करुण-नाटक है, करुण-कथा है । हिंदी साहित्य में रहीम का द्विविध-महत्त्व है : वे देवसेन, कबीर, तुलसी, वृंद, गिरिधर एवं दीनदयाल गिरि की परंपरा में प्रतिष्ठित नीति काव्यकार भी हैं तथा कृपाराम, करन कवि, तुलसी (गीतावली एवं बरवै-रामायण में ऐश्वर्य चित्रण एवं अलंकृत-सृजन के कारण) एवं केशवदास की परंपरा में प्रतिष्ठित शास्त्रीयकाल-अग्रदूत भी हैं ।

१४ सहयोग एपार्टमेंट्स, मयूर विहार, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहीम के सुबोध दोहे

ध्यान और वंदना

जेहि 'रहीम' मन आपनो कीन्हो चारु चकोर
निसि-वासर लाग्यो रहे, कृष्ण चंद्र की ओर

प्रेम

'रहिमन' धागा प्रेम को, मत तोड़ो चटकाय
टूटे से फिर ना मिले, मिले गांठ पड़ जाय ।।

× × ×

कहा करौं वैकुंठ लै, कल्पवृच्छ की छांह ।
'रहिमन' ढाक सुहावना, जो गल प्रीतम बांह ।।

× × ×

जे सुलगे ते बुझ गये, बुझे ते सुलगे नाहिं ।
'रहिमन' दाहे प्रेम के, बुझि-बुझिकें सुलगाहि ।

राम-नाम

गहि सरनागति राम की, भवसागर की नाव ।
'रहिमन' जगत-उधार को, और न कछु उपाय ।

× × ×

मुनि-नारी पाषान ही, कवि, पशु, गुह मातंग
तीनों तारे रामजू, तीनो मेरे अंग ।।

× × ×

राम-नाम जान्यो नहीं, जान्यो सदा उपाधि ।
कहि 'रहीम' तिहि आपुनो, जनम गंवायो बादि ।

मित्र

मथत-मथत माखन रहे, दही मही बिलगाय ।
'रहिमन' सोई मीत है, भीर परे ठहराय ।।

× × ×

जे गरीब सों हित करें, धनि 'रहीम' ते लोग
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण-मिताई-जोग ।।

चेतावनी

सदा नगारा कूच का, बाजत आठों जाम ।
'रहिमन' या जग आइकै, को करि रहा मुकाम ।।

× × ×

'रहिमन' कठिन चितान तै, चिंता को चित चेत ।
चिता दहति निर्जीव को, चिंता जीव-समेत ।।

लोकनीति

'रहिमन' वहां न जाइये, जहां कपट को हेत ।
हम तो ढारत ढेकुली, सींचत अपनो खेत ।

खीरा को सिर काटिकै, मलियत लौन लगाय
'रहिमन' करुवे मुखन की, चहिए यही सजाय

× × ×

'रहिमन' अंसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ
जाहि निकारो गेह तें, कस न भेद कहि देइ

× × ×

'रहिमन' अब वे बिरछ कहं, जिनकी छांह गंभीर
बागन बिच बिच देखिअत, सेंहुड़ कुंज करीर

× × ×

'रहिमन' तब लगि ठहरिए, दान मान, सनमान ।
घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहि करिय पयान ।।

× × ×

जो 'रहीम' मन हाथ है, तो तन कहुं किन जाहि
जल में जो छाया परे, काया भीजति नाहि

आप बीती

चित्रकूट में रमि रहे, 'रहिमन' अवध नरेस
जा पर विपदा परत है, सो आवत यहि देस ।।

× × ×

ए 'रहीम' दर-दर फिरहिं, मांगि मधुकरी खाहिं ।
यारो यारी छांड़ि दो, वे 'रहीम' अब नाहीं ।।

स्व. वियोगी हरि द्वारा संपादित
'रहीम के सुबोध दोहे' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहीम : साहित्यकार भी, योद्धा भी

अब्दुर्रहीम खां खानखाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजराती कहानी

मुखियानी

● पन्नालाल पटेल

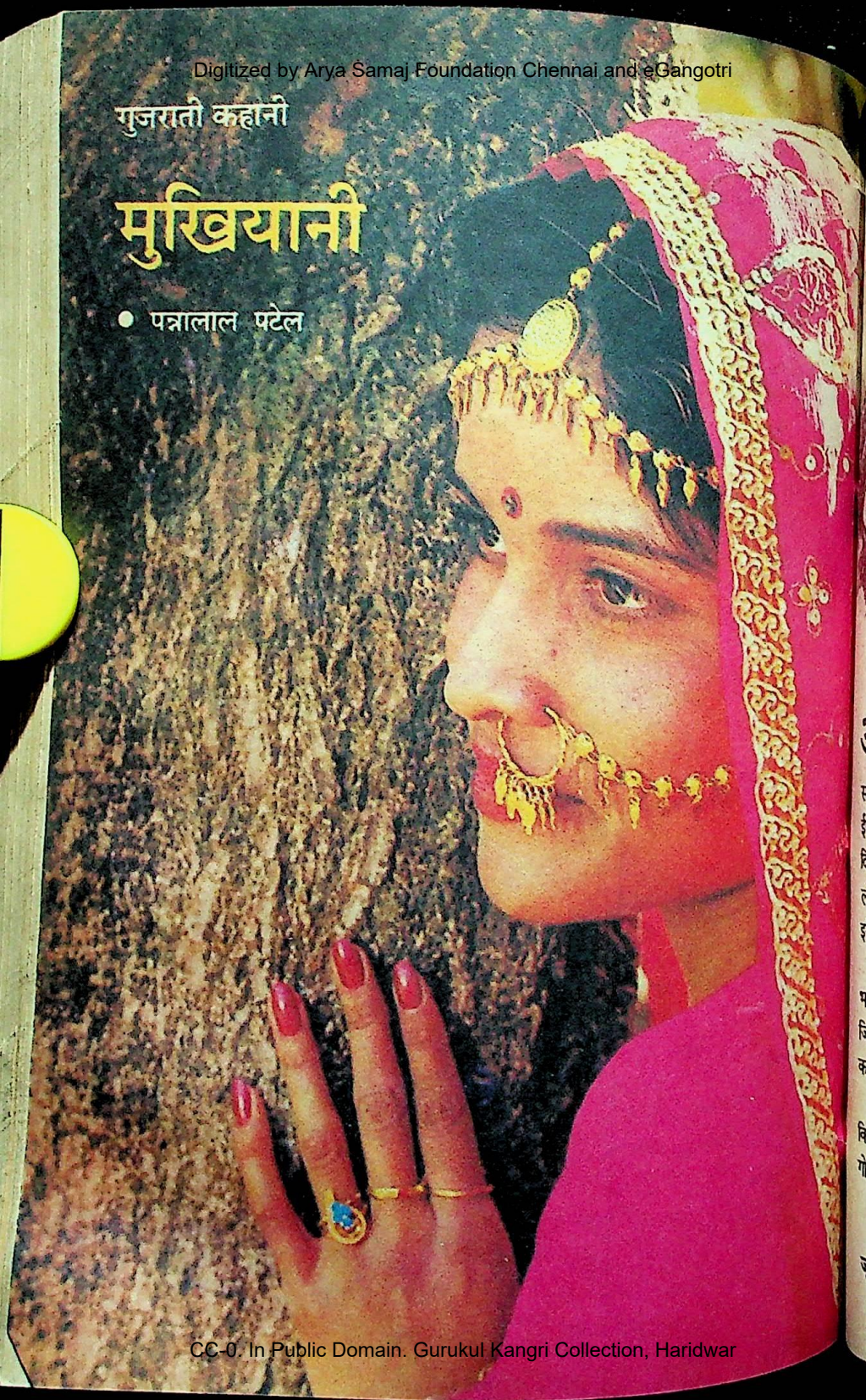

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंबा का स्वप्न जैसे टूट गया था । वह स्तब्ध रह गयी थी । केवल अंबा ही नहीं, सारा गांव स्तब्ध रह गया था । गोविंदराम ने ईर्ष्यावश कैसी चाल चली थी ? गांव में थोड़े दिनों तक इसी बात की चर्चा होती रही । कुछ लोग तो इस चुनाव में गोलमाल होने के कारण इसे रद्द करवाने का विचार कर रहे थे ।

कुछ लोगों ने कहा भी, "यह अनपढ़ भालूजी पंचायत का कामकाज कैसे करेगा ? जिसे अपना हस्ताक्षर करना भी नहीं आता, वह कायदे-कानून क्या जानता होगा ?"

लेकिन लोगों को यह समझने में देर न लगी कि भालूजी मात्र मोहरा है, वास्तविक सरपंच तो गोविंद मुखिया ही बना रहेगा ।

वालजी को अपने हारने का कोई गम नहीं था । बल्कि गोविंदराम ऐसी गंदी चाल चले इस बात का ही उसे भारी दुःख था । उन्होंने गांव के हित का जरा भी विचार नहीं किया । ऐसे भी गांव में ग्वालों तथा किसानों के बीच मारा-मारी होती रहती थी । अब यादव ही उप-सरपंच बना था । यही हाल ठाकुरों का भी था ।

वालजी स्वयं कितने धोखे में रहा ? ऐसा था तो उसे सभी सदस्यों से पहले मिल लेना था । उन हरिजनों को तो अपनी तरफ मिला लेना जरूरी था । कालूजी उसका मित्र था । उससे तो मिल लेना था न !

और घर पहुंचा तब अंबा ने भी यही बात कही, "लेकिन आप इन लोगों के विश्वास में रहे ही क्यों ? सामने कौन है यह तो देखना था न ! कालूजी को बुलवाया होता तो उन्हें कुछ लिहाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आती । चुनाव विजय प्राप्त करने के लिए सभी ओर से प्रयत्न करने होते हैं ।''

''कौन जानता था कि पीछे से ऐसी चाल चली जाएगी ?''

''यह तो ऐसा ही है । जिसने जीवनभर गंदी चाल चली है, वह और करेगा भी क्या ? अभी भी आप 'काका. . . काका. . . ' करते रहते हैं, लेकिन काका आपका सर्वनाश करने पर लगे हुए हैं ।''

''हम क्या, भगवान उनका अभिमान चूर करेगा । वह अधिक समय तक पाप का भार नहीं उठा सकते । तुम देखना तो, क्या होता है ?''

लेकिन अंबा को पति के इस आश्वासन से संतोष नहीं हुआ । उसने पति को झकझोरते हुए कहा, ''वह अपनी नाक काट गया । हाथ में आया स्थान छीन ले गया । फिर भी आपको कुछ नहीं लगता ?'' उसका उफनता रोष, पानी की भाप की तरह निकल पड़ा, ''आप इस मामले में इतने ढीले हैं यह पता होता तो आपकी जगह मैं खड़ी होती । फिर देखती कि सरपंच कौन होता ?''

वालजी की प्रकृति ऐसी थी कि वह जल्दी उत्तेजित नहीं होता था । अंबा के उत्तेजना से आरक्त चेहरे की तरफ मुसकराकर देखते हुए बोला, ''सच, तुम्हें ही खड़ी होना था । फिर तो अखबारों में भी समाचार आते कि एक ग्राम महिला सरपंच चुनी गयी है । तुम्हारा फोटो भी छपता. . . ''

''आप हंसी करते हैं ?'' अंबा ने उसी उत्तेजना के साथ कहा, ''यह कुछ हंसने की बात नहीं है । यह तो अपने घर की और गांव की इज्जत का सवाल है । अब तो मुखिया बनकर ही चैन लेना है । आप कल ही कलक्टर साहब से मिलकर उन्हें सारी जानकारी कराएं ।''

अंबा इस अन्याय से सुलग उठी थी ।

यही हाल अन्य तीनों सदस्यों का भी था । उनकी भी नींद उड़ गयी थी । उनमें से एक ने तो इस बात की दरखास्त भी दे दी कि चुनाव में गड़बड़ी हुई है, घूसखोरी हुई है ।

और वालजी को साथ लेकर वह सब कलेक्टर साहब से मिलने गये । कलेक्टर साहब को भी आश्चर्य हुआ कि ऐसी साधारण बातों में क्यों विलंब होता है ? उन्होंने 'तुरंत ध्यान दिया जाए' का नोट लगाकर अर्जी सचिव के पास भेज दी ।

सचिवालय में इन लोगों की मुलाकात अखबार के एक संवाददाता से हो गयी । इन लोगों ने सारी बातें उसे समझा दीं । सरपंच के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनाव में तहसीलदार साहब ने जो अन्याय किया था वह सारी बातें भी बता दीं। तहसीलदार साहब की वजह से ही वह अनपढ़ सरपंच बन पाया था। यदि ऐसी गड़बड़ी चलती रही तो ग्राम-पंचायत कैसे सफल होगी ?

दूसरे दिन अखबार में ये सारे समाचार प्रकाशित हुए। उन्हें पढ़कर गोविंद मुखिया को आश्चर्य हुआ। कलेक्टर साहब ने यह केस अपने हाथ में लिया है इसलिए तहसीलदार अब कुछ नहीं कर सकेंगे। फिर भी वह तहसीलदार से मिलने चल पड़े। अखबार में उनका उल्लेख भी था इसलिए वह ढीले पड़ गये थे। उन्हें तो अपनी बदली हो जाने का भय लगने लगा था।

और हुआ भी ऐसा ही।

पांच-सात दिनों के बाद कलेक्टर साहब के पी.ए. जांच करने आये। उन्होंने सरपंच के चुनाव के संबंध में लोगों से विवरण लिये। तब उन हरिजनों ने स्वीकार किया कि उन्हें तहसीलदार साहब ने भालूजी को मत देने को कहा था। उन्होंने गोविंदराम को भी बुलवाया। लेकिन वह जैसे कुछ जानते ही न हों इस तरह एकदम अपरिचित बन गये। साहब ने उनसे सीधा सवाल किया—"सरपंच का चुनाव था, उस दिन तहसीलदार साहब आपके यहां ठहरे थे, यह बात क्या सच है ?"

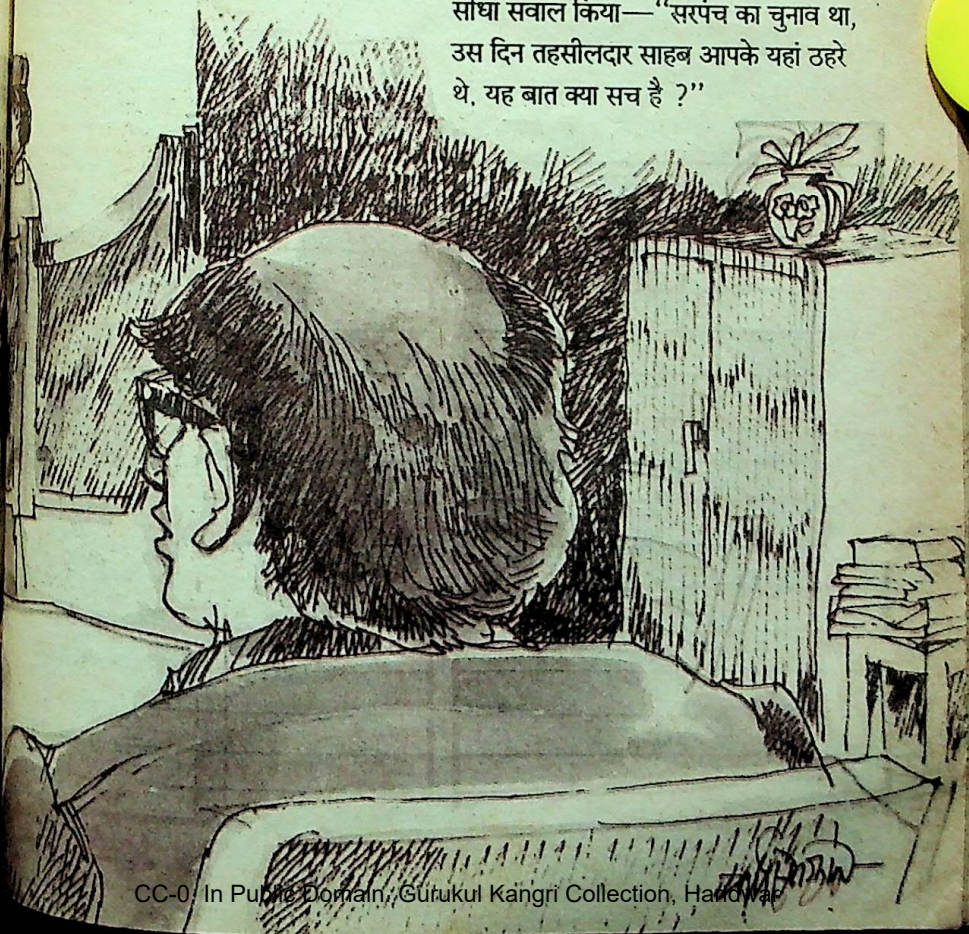

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह जब-जब इस गांव में आते थे, मेरे यहां ही ठहरते थे । गांव में दूसरा ऐसा कोई घर भी तो नहीं है. . . "

"मेरी बातों का सीधा जवाब दीजिए । मैं आगे-पीछे की बातें नहीं पूछता । उस दिन वह आपके यहां ठहरे थे या नहीं ?"

"जी, मेरे यहां ही ठहरे थे ।"

"खाना भी आपके यहां ही खाया होगा ?"

"जी हां, खाया था ।"

"वह दोनों हरिजन सदस्य भी आपके घर आये थे ?"

"हां, वह दोनों आये थे ।"

"उन्हें किसने बुलवाया था ?"

"यह मुझे नहीं मालूम ।"

"या तो आपने बुलवाया होगा या तहसीलदार साहब ने ? लिखिए तहसीलदार साहब ने उन्हें आपके घर पर बुलवाया था । हां, तो उन्होंने उन लोगों से क्या कहा था ?"

"यह मुझे याद नहीं है ।"

"आप वहां मौजूद थे या नहीं ?"

"था तो जरूर ।"

"तो क्या बात हुई, यह आपको नहीं मालूम ? चुनाव के संबंध में कुछ बातें हुई थीं ?"

"मैं दूसरे कार्य में व्यस्त था, इसलिए मैं नहीं बता सकता कि क्या बातें हुई थीं !"

"किस काम में व्यस्त थे आप ?"

गोविंदराम घबड़ा रहे थे । ये साहब तो उनकी तरफ देख भी नहीं रहे थे । फिर वह उन्हें किस तरह पटाते ?

"बोलिए न, चुनाव के काम में व्यस्त थे न ?"

"चुनाव से मेरा क्या संबंध था ? शायद कोई आया था उन्हीं से बातें कर रहा था ।"

"कौन आया था ? भालूजी तथा अरजुन आये थे ? आपने इन हरिजनों को लालच दिया था कि वे भालूजी को मत देंगे तो आप इन लोगों को दो-दो सौ रुपये देंगे ?"

"नहीं-नहीं, मैंने ऐसा कभी नहीं कहा ।"

"चुनाव हो जाने के बाद आपने इन लोगों को पैसा दिया भी था, क्या यह सच नहीं है ?"

"नहीं, मैंने कभी इन्हें पैसा नहीं दिया ।"

"और ये स्वीकार करें तो ?"

"किसी के दबाव में आकर भी ये ऐसा कह सकते हैं, लेकिन इस बात में तथ्य नहीं है । यह तो मुझे नीचा दिखलाने के लिए यह सब किया गया है । लोग चुनाव में हार गये हैं इसलिए कीचड़ उछाल रहे हैं । साहब, यह केस बिलकुल झूठा है । इसमें मेरा जरा भी हाथ नहीं है ।"

"किसका हाथ है यह पता लगाना मेरा काम है । इसकी चिंता आपको क्यों है ? और हां, मुखिया के पद के संबंध में क्या है ? आप तो कार्यकारी मुखिया हैं न ?"

"जी, हां ।"

"करसन पटेल का लड़का वालजी पटेल मुखिया के पद का हकदार है, यह बात सच है ?"

"जी ।"

"और अब वह वयस्क हो गया है और चार्ज मांगता है, तो आप क्यों नहीं दे देते ?"

"मेरी कहां ना है ? लेकिन उसने ही चार्ज लेने से इनकार कर दिया. . . "

"उसने इनकार किया इसका आपके पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई लिखित प्रमाण है ?''

''ऐसा कोई लिखित प्रमाण नहीं है मेरे पास।''

''तो आप उसे चार्ज दे क्यों नहीं देते ?''

''वह लेना चाहे तो मेरी ना नहीं है। बल्कि वह चार्ज ले ले तो मैं इस झंझट से मुक्त हो जाऊं।''

''मैं आपको इस झंझट से छुड़ाने ही यहां आया हूं। यह लीजिए, कलेक्टर साहब का ऑर्डर भी साथ लेता आया हूं।'' और ऑर्डर-पत्र देकर उसकी प्राप्ति-रसीद ले ली।

गोविंद मुखिया अब क्या करते ? चौपाल के बाहर भारी संख्या में लोग खड़े थे। आपस में वे चर्चा भी कर रहे थे कि 'अफसर हों तो ऐसे हों !'

गोविंदराम घर जाकर सारे कागजात उठा लाये। उन कागजातों की सूची बनाकर एक प्रति वालजी को सौंपकर उसके हस्ताक्षर लिये।

आज से वालजी पटेल गांव का मुखिया बन गया यह समाचार जंगल में फैली आग की तरह सारे गांव में फैल गया। लोग यह समाचार सुनकर खुश-खुश हो गये।

लेकिन वालजी से अधिक तो अंबा खुश हुई।

बात इतने से ही समाप्त नहीं हुई। कलेक्टर साहब के पी.ए. ने गांव के सरपंच भालूजी को भी बुलवाया। उनके आने पर पूछा, ''आप ही गांव के सरपंच हैं ?''

''जी, हां।''

''कहां तक शिक्षा प्राप्त की है आपने ?''

''मैं पढ़ा तो कुछ भी नहीं हूं।''

''फिर सरपंच बनना आपने क्यों पसंद

किया ?''

''लोगों की ऐसी इच्छा थी इसलिए मैं भी सरपंच के उम्मीदवार के रूप में खड़ा हो गया।''

''लोगों की ऐसी इच्छा थी या गोविंदराम की ?''

''जी, गोविंदराम तथा अरजुन यादव ने ही मुझसे खड़े होने के लिए आग्रह किया था। उन्होंने कहा था कि आप खड़े भर हो जायं, बाकी का वह सब सम्हाल लेंगे।''

''हूं... फिर आप सरपंच बन गये। अब ग्राम पंचायत का कामकाज कैसे करेंगे ?''

''गोविंदराम मुखिया ने कहा था कि वह सारा काम कर दिया करेंगे। मुझे केवल अंगूठा लगाना होगा और कुछ नहीं करना होगा...''

''तो...तो... आप गोविंद मुखिया के कहने से सरपंच हुए हैं ? क्यों, ठीक है न ?''

''जी, हां।''

साहब ने उनका बयान तैयार किया। हस्ताक्षर की जगह अंगूठे का निशान लगवाया। इसी तरह अरजुन यादव का बयान लिया। गांव के बड़े-बूढ़ों के विचार मांगे। सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों ने एक स्वर से कहा, "साहब, सारा गांव समझ रहा था कि इस बार वालजी पटेल सरपंच बनेगा। लेकिन भालूजी का नाम आया देखकर लोगों को आश्चर्य हुआ। इससे गांव का क्या काम होगा ? अपने हाथ में सत्ता रहे इसलिए गोविंद मुखिया ने यह चाल चली थी। इसके लिए उन्होंने पैसे भी खर्च किये थे ऐसा भी सुनने में आया है।"

साहब ने अपनी रिपोर्ट तैयार की और चले गये। साथ ही गांव में एक नयी हवा छोड़ते गये।

अंबा की खुशी की सीमा नहीं थी। वालजी की अर्जी का असर इतनी जल्दी होगा, इसकी उसे आशा भी नहीं थी। गोविंदराम का चेहरा उतर गया था। वह घर से बाहर ही नहीं निकलते थे। लोग तरह-तरह की बातें करते थे। कोई कहता—'गोविंदराम पर केस चलेगा। उन्होंने बहुत घोटाला किया है।'

उस रात अंबा ने हलुआ बनाया था। थाली में हलुआ देखकर वालजी ने पूछा, "आज क्या है जो..."

"क्यों, आज घर में बाप की इज्जत वापस आयी है। इससे अच्छा अवसर और क्या हो सकता है ?"

"हूं... यह क्यों नहीं कहती कि तुम मुखियानी बनी हो उसी उपलक्ष्य में यह..."

"हां, हां, मैं मुखियानी बनी हूं। मुखिया की पत्नी हूं तो मुखियानी बनूंगी ही न..." और वह जैसे जीवन की धन्यता अनुभव करती हो वैसे आनंद विभोर हो उठी। जैसे उसने कुछ प्राप्तव्य पा लिया हो वैसे उल्लास में उसका मन नाच उठा।

(अनुवाद : गोपालदास नागर)

एक सिपाही कैदी को जेल में ले गया। थोड़ी देर बाद जमादार आया और कैदी से बोला, "चल, इधर आ और इस कागज पर दस्तखत कर।"

"जमादार साहब, मुझे लिखना-पढ़ना तो आता ही नहीं।"

"क्या, तुझे दस्तखत करना नहीं आता ? जबकि तुझे सजा ही फर्जी दस्तख्त करने के जुर्म में हुई है।"

"यह तो मेरे वकील की गलती से हुई है। उसे मेरा केस ठीक ढंग से लड़ना ही नहीं आया।

* * *

विवाह की रीतियां विधिवत पूरी कराने के बाद पादरी ने उपस्थित लोगों से एक औपचारिक प्रश्न पूछा, "क्या इस विवाह पर किसी को आपत्ति है ?

"जी हां, मुझे।" एक दबा-सा स्वर उभरा।

पादरी ने सिर घुमाकर देखा, फिर डपटते हुए कहा, "तुम चुप रहो। तुम वर हो, तुम्हें आपत्ति का कोई अधिकार नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असीमा के चले जाने के बाद वह अपने आपको समझा रहा था और अपनी सुरक्षा के लिए सारे तर्क जुटा रहा था । रणवीर कभी ऐसा तो न था ! क्या उसे अपने आत्म....सम्मान की सुध नहीं थी ? लेकिन वह करे भी तो क्या... अभाव के चलते स्वभाव नष्ट हो जाता है.... ।

हथियार

● आशापूर्णा देवी

असीमा ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि रणवीर एक ऐसा प्रस्ताव सामने रखेगा । थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद वह बोली, "ऐसा भी हो सकता है ?"

"—एकदम नामुमकिन भी नहीं है ?" रणवीर के स्वर में व्यंग्य के साथ तीखापन भी घुला था, "क्यों...इससे क्या गर्दन कट जाएगी ?"

"बात गर्दन के कट जाने की नहीं हो रही है लेकिन..." असीमा ने आगे जोड़ा, "पिछले ग्यारह वर्षों से भेंट-मुलाकात नहीं हुई है...अचानक इतने दिनों के बाद वहां जाकर ऐसा एक प्रस्ताव..."

"हा...हा...हा..." रणवीर के स्वर में अब भी वही कड़वाहट घुली हुई थी । उसने कहा, "अब ऐसा कौन है भला जो पति और बेटे को लेकर घर-गिरस्ती भी करे और 'प्रथम प्रेम' के द्वार पर रोज हाजिरी भी लगाए ।...बोलो... ।"

"बस करो...ऐसी बेहूदी बातें न करो तो अच्छा... ।"

"वाह...पहले तो मैं एक भले आदमी की तरह ही बातें कर रहा था । तुमने ही सारा कुछ मोड़-मरोड़ दिया और मेरा मूड खराब कर दिया । और इसमें मुश्किल क्या है भला ?...कम उम्र में खेला-जानेवाला 'नैनमटक्का' लोग आसानी से नहीं भूलते...यह तो तुम मानती हो न... ? घोषाल साहब भी अपने शुरू-शुरू के दिनों में तुम्हें प्यारभरी नजरों से देखा करते थे...अब अगर आज तुम उनसे कोई अनुरोध करो तो वे उसे पूरा कर खुश ही होंगे ।"

असीमा गंभीर हो गयी और बोली, "आंख मटक्का के बारे में तुम्हारी जानकारी खासी तगड़ी है । खैर इस बात को जाने दो...और मान लो वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

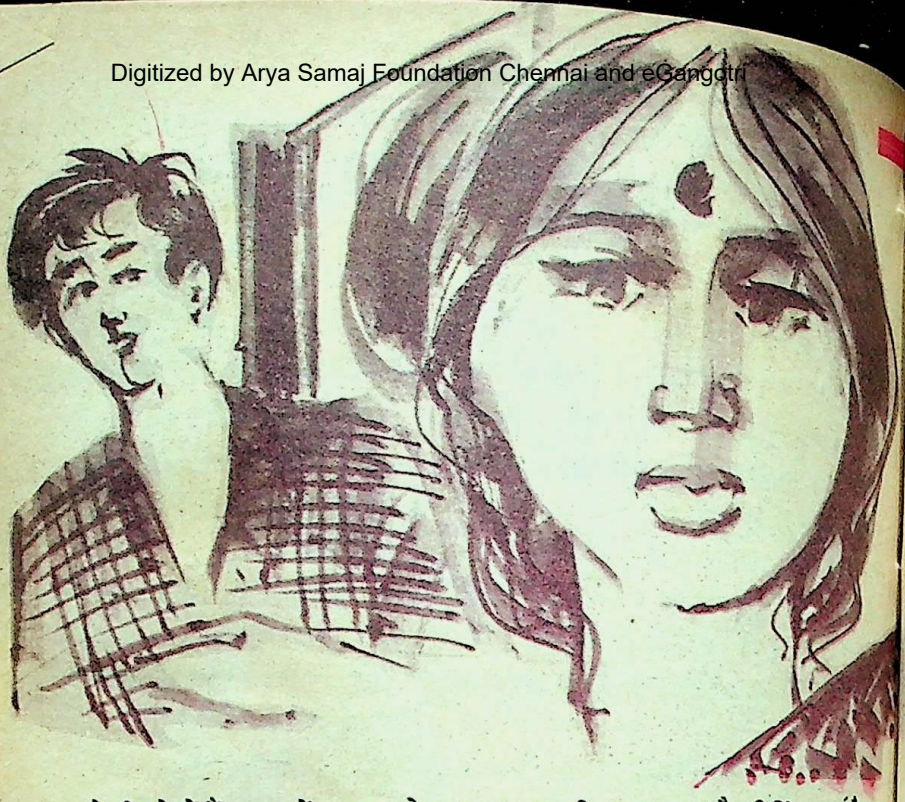

खुश हो भी गये तो मैं भला क्योंकर खुश हो पाऊंगी ? तुमने मेरे मान-सम्मान के बारे में कभी सोचा भी है ?"

रणवीर को यह सब सुनकर बड़ी हैरानी हुई । वह उसी तेवर में कहता चला गया, "इसमें सोचने-समझने की बात क्या है भला ? उस भले आदमी के हाथ में...हां...क्या कहते हैं उसे, 'ईश्वर की कृपा से'...बड़ी ताकत है । वह चाहे तो मेरे लिए एक अच्छी-सी नौकरी का जुगाड़ कर सकता है । बस याद दिलानेभर की बात है । अब इसे कहते हुए भी तुम अपने मान-सम्मान का रोना लेकर बैठ गयीं ? यह सब मेरी समझ में नहीं आता ।...

"तुम्हें कुछ समझाना तो और भी मुश्किल है..." कहती हुई असीमा खामख्वाह मेज पर पड़ी चीजों को सहेजने लगी ।

रणवीर का जबड़ा और भी भिंच गया और माथे की त्योरियां चढ़ गयीं । उसने तीखे स्वर में कहा, "जिस मर्द को अपनी बीवी की खुशामद करनी पड़े उस पर लानत है... ।"

"खुशामद, यह तुम मेरी खुशामद कर रहे हो ?" कहते-कहते असीमा का चेहरा लाल हो उठा ।

"और नहीं तो क्या ?" रणवीर ने झुंझलाकर कहा, "इतनी देर से जो कर रहा हूं उसे किसी भी जुबान में खुशामद ही कहेंगे ।...तुम तो ऐसे बिदक रही हो जैसे कि मैं किसी के घर में आग लगाने को उकसा रहा हूं । जबकि बात कुछ भी नहीं है । तुम्हारे साथ घोषाल साहब की पुरानी जान-पहचान है इसीलिए तुम उनके सामने बड़ी आसानी से मेरी बात रख सकती हो ।...और तभी तो इतनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो स्त्री अपने छोटे-से एकांत और शांत घर-संसार में आग लगाने को मजबूर की गयी थी, उसे अब एक पराये के घर में आग लगाते हुए भला क्यों हिचक होती ? ऐसी भावुकता से उसने अपने आपको मुक्त कर लिया था ।

चिरौरी कर रहा हूं ।''

''अच्छा इतना आसान है !''

असीमा के होंठों पर हलकी-सी मुसकान खेल जाती है । सचमुच...मीठी मुसकान की सतरें... ।

'इतना आसान है सब-कुछ ।'

ग्यारह साल तक कोई भेंट-मुलाकात न होने के बाद, वह देवव्रत के घर जाकर उससे मिले...और अपने बेकार पति के लिए कोई नौकरी जुगाड़ कर देने की चिरौरी करे । यह अब करना-धरना इतना आसान है ? रणवीर के हिसाब से तो यह बड़ा सहज जान पड़ता है । देवव्रत इतने दिनों तक असीमा का सहपाठी रहा है और उसके साथ असीमा की गाढ़ी छनती भी रही है...इसे रणवीर जानता है । उसका वही पुराना सहपाठी अब अपनी काबलियत के बल-बूते पर भाग्यलक्ष्मी को अपनी मुट्ठी में कैद किये हुए है—इसकी सूचना भी रणवीर खुद लिये आया था असीमा को सुनाने । 'घोषाल एंड कंपनी' के लंबे-चौड़े व्यापार और ताम-झाम के बारे में उसे जैसे ही पता चला,वह असीमा के पास दौड़ा चला आया ।

असीमा ने इस बारे में कोई जिज्ञासा नहीं दिखायी बल्कि उसने नाराजगी दिखाते हुए कहा, ''उसके ताम-झाम से मुझे क्या लेना-देना । जैसा है,उसका है ।...मेरे ठेंगे से...''

रणवीर ने अपना हाथ नचाकर,मुंह बिचकाकर और कंधा उचकाकर हंसते-हंसते बताया, ''अब चाहे जो हो...कभी तो उसके साथ तुम्हारा बड़ा मधुर संबंध था । अब तो वह सातवें आसमान पर है...यह जानकर तुम्हें खुशी होगी...इसीलिए बता रहा हूं ।''

लेकिन वह जो बता रहा है, वह तो कोई और बात है ।

और उससे जुड़ा जो संकट है...वह तो और भी भारी है । देवव्रत एक बहुत बड़ी कंपनी का भागीदार है...अगर वह चाहे तो चुटकी बजाते किसी को भी नौकरी दे सकता है ।...इसलिए उसके पास जाकर गिड़गिड़ाओ...कि मेरे पति को अपने अधीन बहाल कर लो । नौकरी न होने के कारण मैं बाल-बच्चों के साथ बड़ी मुसीबत में फंस गयी हूं ।...

'छी...छी...छी... ।'

असीमा ने संयत स्वर में कहा, ''सहज बने रहने और झेलने का माद्दा सबमें एक-जैसा नहीं होता । वैसे मैं तुमसे ही पूछ रही हूं...क्या तुम उसके मातहत काम कर सकोगे ?''

''क्यों नहीं...भला इसमें पूछने की ऐसी क्या बात है ? हूं ...'' रणवीर ने अपना मुंह उल्लू की तरह फैला दिया और बोला, ''भिखमंगे की भी कोई इज्जत होती है ? और काम नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

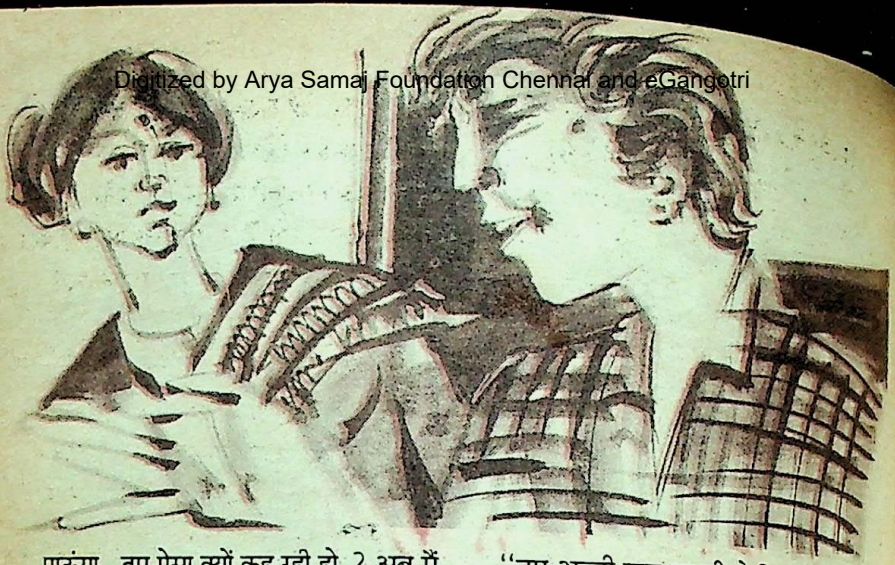

पाऊंगा...तुम ऐसा क्यों कह रही हो ? अब मैं उसके साथ कोई हाथापाई या मुठभेड़ के लिए तो नहीं जा रहा ? वह तो मुझे जानता भी नहीं ।...और तभी तो मैं तुम्हें यह पट्टी पढ़ा रहा हूं कि तुम उसके पास कुछ इस तरह जाना...जैसे कि चोरी-चोरी मिलने आयी हो । और मैं जैसा कि नियम है पूरी औपचारिकता के साथ वहां नौकरी के लिए आवेदन दूंगा । तुम उसे मेरा नाम-पता बताकर मेरे मामले में थोड़ा ध्यान देने का अनुरोध कर आओगी...बस । बस...बातों-बातों में बन गयी बात । उसके बाद कौन किसको डालने जाता है घास ? और वह ठहरा खुद कंपनी के मालिकों में एक...उसके सामने छोटे-मोटे कारिंदों की क्या बिसात ।''

असीमा ने गंभीर स्वर में पूछा, ''और अगर वह मुझे पहचान न पाया...तो ? बड़े लोगों का अपने गरीब दोस्तों को भूल जाना ही ज्यादा सुविधाजनक और स्वाभाविक होता है । मान लो... वह मुझे पहचान न पाए या पहचानने से मुकर जाए तो... ?''

''तुम तो खामख्वाह बात का बतंगड़ बना रही हो...'' रणवीर ने मुसकराते हुए आगे जोड़ा, ''तुम अच्छी तरह जानती हो कि वह तुम्हें पहचान लेगा । और मैं भी इसे खूब जानता हूं । जिसने तुम्हें एक बार देख लिया वह जिंदगीभर नहीं भूल सकता ।''

असीमा का चेहरा एक बार फिर लाल हो गया । लेकिन उसमें कोई उतावलापन नहीं था । उसने बड़ी शांति से ही कहा, ''मान लो उसने पहचान भी लिया...लेकिन इस बात की क्या गारंटी है कि वह मेरा अनुरोध स्वीकार कर लेगा ? ऐसा न हुआ तो मेरी इज्जत का क्या होगा ?''

''अनुरोध रखेगा कि नहीं...इस बात की कोई गारंटी नहीं...'' रणवीर ने कुटिल हंसी के साथ कहा, ''इसकी गारंटी है...जरूर है...मुझे मालूम है ।''

असीमा का चेहरा तमतमा उठा था ऐसा लग रहा था कि वह अब अपनी जुबान को काबू में रख नहीं पा रही थी । तभी बोली, ''अगर तुम्हें मालूम है,तो मुझे किस साहस के बूते पर वहां भेज रहे हो ?''

''अजीब परेशानी है...तुम मजाक तक नहीं समझतीं ?'' रणवीर एक बार फिर ठठाकर हंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ा और फिर बोला, "क्या तुम समझ नहीं पातीं ? तुम्हीं हो मेरा साहस...मेरी शक्ति । मजाक की बात छोड़ो । घोषाल साहब पुरानी दोस्ती के नाते कभी 'ना' नहीं कर पाएंगे, यह निश्चित है । अगर मैं उनकी जगह होता तो कभी ना नहीं कर पाता ।"

"तो फिर ठीक है । मर्द ही मर्दों की बात समझ सकते हैं । लेकिन मैं यह सब नहीं कर पाऊंगी ।"

"नहीं कर पाओगी...इतनी देर के बाद दो-टूक जवाव दे रही हो कि मैं नहीं कर पाऊंगी ।"

"जवाब न दूं और क्या करूं ? जो कर नहीं सकती..."

"हां, तुम भला, करोगी भी क्यों ?" रणवीर ने उत्तेजित होते हुए कहा, "तुम्हारी इज्जत मिट्टी में मिल नहीं जाएगी ? तुम्हारा सम्मान ढह जाएगा । मैं पूछता हूं मान-सम्मान-जैसी कोई चीज रह भी गयी है हमारे पास ? अपने चारों तरफ गौर से कभी देखा भी है ? घर-गिरस्ती के बारे में सोचा है...दोनों बच्चों की ओर तुम्हारा ध्यान भी जाता है ?".

पुराने तौर-तरीके वाले घर-संसार में, घर का अकेला कमाने-धमानेवाला ही अगर पिछले सत्रह महीनों से चुपचाप बैठा रहे और जिसे यह संसार चलाना पड़ता है, उसे यह सब जानने-समझने के लिए बाहर देखने की जरूरत कभी पड़ती भी है भला ?

तो भी...असीमा ने अपनी सूनी आंखों से एक बार सब कुछ देखा और उसकी सूनी नजरें पति पर आकर टिक गयीं । उसने कहा, "क्या मैं यह सब नहीं जानती "?

"इसका कोई लक्षण तो मैं नहीं देखता । तुम तो अपना झूठा मान-सम्मान लेकर ही पड़ी हुई हो । अपने बच्चों के बारे में...उनके सुख-संतोष के बारे में कभी सोचा भी है ? पता है...पिछले कई दिनों से घर में दूध तक नहीं आया है ? कितने दिनों से..."

"रुको भी... ।"

रणवीर यह सोच रहा था कि नारी का हृदय इन बातों को सुनकर पसीज उठता है । लेकिन असीमा के मुंह से 'रुको भी'...सुनकर उसका रहा-सहा विश्वास भी डिग गया ।

'लगता है...अब कोई दूसरा उपाय ढूंढ़ निकालना होगा ।'

इस बीच उसके चेहरे पर कई तरह के भाव आते-जाते रहे । अपने चेहरे को विकृत और कठोर बनाते हुए उसने अपनी बात को आगे बढ़ाया... "अच्छा...तो अब तुम्हारी डांट भी खानी पड़ेगी । ठीक ही तो है...बेकार आदमी का कैसा मान-सम्मान... ? अच्छा तो अब भीख मांगकर ही गुजारा करूंगा । पति फुटपाथ पर खड़ा होकर भीख मांगेगा और बच्चे भूख से बिलबिलाकर चूहे की तरह मर जाएंगे... पट...पट... । लेकिन इन सारी बातों से हमारी महारानी का क्या बिगड़ जाएगा ? उनकी शान को कोई बट्टा न लगे ।"

लगता है...इस बार रणवीर ने जबरदस्त जाल बिछाया है...अब की बार असीमा क्या बहाना करेगी ? रणवीर दबी-छिपी नजरों से असीमा की ओर देख ले रहा था । वह यह जानता था कि उसकी इस चाल की उस पर क्या प्रतिक्रिया हुई है ।...लेकिन वह ठीक से समझ न पाया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

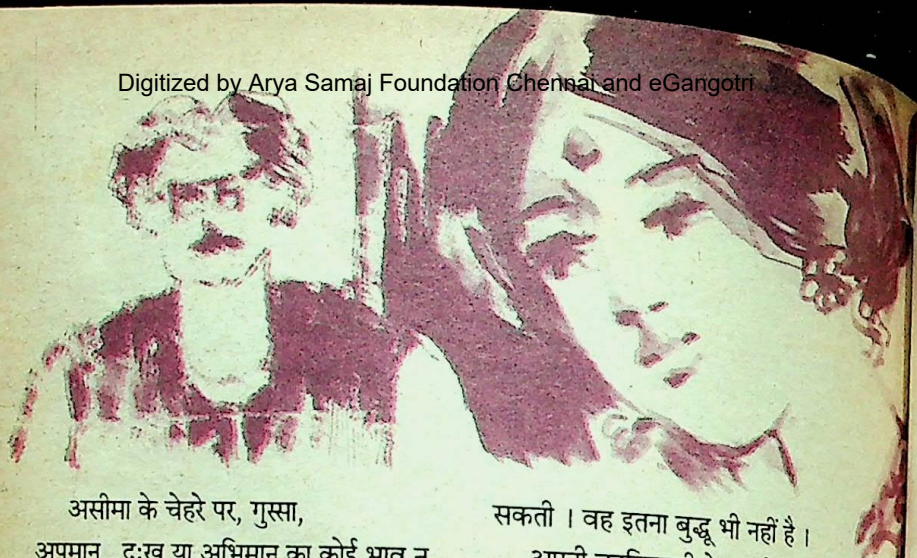

असीमा के चेहरे पर, गुस्सा, अपमान...दुःख या अभिमान का कोई भाव न था। हां...चेहरे पर एक तरह की कठोरता अवश्य आ गयी थी जैसी कि...पत्थर की मूर्ति में होती है। वहां कोई रंगिमा नहीं थी...रात की लालिमा नहीं थी, किसी तरह की फीकी या उदास तरलता भी नहीं थी...बस एक तरह की बेजान कठोरता भर थी।

"ठीक है...चली जाऊंगी..." और इतना कहकर असीमा कमरे से बाहर निकल गयी।

रणवीर अब थोड़ा-बहुत निश्चिंत रह सकता था। असीमा ने जब एक बार कह दिया, तो वह अपने वादे से कभी पीछे नहीं हटेगी। अगर वह एक बार वहां चली गयी तो उसका काम जरूर हो जाएगा...रणवीर को इस बात का पक्का भरोसा है।

घोषाल साहब के साथ उसकी पुरानी जान-पहचान है, इस बात की आड़ में पति की नौकरी के लिए आवेदन करने का प्रस्ताव सुनते ही असीमा की आंखों में जो आग सुलग उठी थी—रणवीर ने उसे भी ताड़ लिया था।... उस आग का रूप और रंग कैसा हो सकता है...उसे पहचानने में रणवीर से कोई गलती नहीं हो सकती। वह इतना बुद्धू भी नहीं है।

अपनी बदकिस्मती के चलते ही आज रणवीर की यह हालत है...वरना लिखाई-पढ़ाई में वह घोषाल से रत्ती भर कम नहीं। घोषाल भी तो एक ग्रेजुएट ही है।

बस...अपनी-अपनी तकदीर है।

पद और पैसेवालों की तरफ जलन से देखते रहने और किस्मत को कोसते रहने के सिवा इन काहिलों को कुछ आता भी है ?

न तो ये कोई मेहनत-मजूरी करेंगे...न तो इनमें कोई सोच-समझ होती है...और ना ही कोई जोड़-जुगाड़। बस...ले-देकर किस्मत का रोना रोते रहते हैं।

लेकिन जो भी हो, असीमा को समय रहते समझा-बुझाकर रास्ते पर लाना होगा। इतने दिनों के बाद असीमा एक छोटा-सा अनुरोध लेकर घोषाल साहब के पास जाएगी तो वे उसे अवश्य कृतार्थ करेंगे। मर्द का स्वभाव कैसा होता है कम-से-कम रणवीर तो इतना जानता ही है।

घर-गिरस्ती में रोज-रोज पैदा होनेवाली मुश्किलें, रसोईघर और भंडार में कुंडली मारकर बैठा अभाव जहां अट्टहास कर रहा होता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुननेवाले के मुंह पर और भी स्याही फिर गयी थी । जान पड़ा कि वह जलकर काली ही हो गयी है । असीमा ने ऐसा करने में अपनी तरफ से भी कुछ उठा न रखा ।

वहीं चारों ओर से 'नहीं है...कुछ नहीं है' की टेक लगातार सुनायी पड़ती है । लेकिन एक तरफ रख दिये गये बक्से में तड़क-भड़कवाले कपड़े तो अब भी पड़े हैं । जेवर वगैरह तो फिर भी और बड़ी आसानी से हाथ से निकल जाते हैं लेकिन कपड़े-लत्ते उनके मुकाबले कहीं ज्यादा दिनों तक साथ देते हैं । तभी कहीं बाहर जाते हुए मर्यादा की अब भी थोड़ी-बहुत रक्षा हो जाती है । इसीलिए असीमा सज-धजकर बाहर निकल गयी ।

और जब लौटी....

...तो हाथ का वैनिटी बैग बिछावन के ऊपर फेंककर वहीं पलंग के एक कोने पर बैठ गयी । उसे इस बात का भी खयाल न रहा कि पहले अपनी कीमती रेशमी साड़ी को उतारकर ठीक से रख दे ।

रणवीर खिड़की के पास ही रखी बेंत की एक कुरसी पर चुपचाप बैठा था । असीमा को बाहर भेजने के बाद से ही वह बेचैनी, कुंठा, शर्म, उतावली और मन में न जाने क्या-क्या...लिये बैठा था । बाहर जाने की तैयारी के समय असीमा ने जिस तरह की कठोर चुप्पी ओढ़ ली थी उससे रणवीर अपने तईं इतना भी साहस नहीं जुटा पाया था कि वह आगे बढ़कर उसका हौसला बनाये रखे ।

असीमा के चले जाने के बाद वह अपने आपको समझा रहा था और अपनी सुरक्षा के लिए सारे तर्क जुटा रहा था । रणवीर कभी ऐसा तो न था ! क्या उसे अपने आत्म-सम्मान की सुध नहीं थी ? लेकिन, वह करे भी तो क्या...अभाव के चलते स्वभाव नष्ट हो जाता है... ।

रणवीर दो मिनट तक खामोश पड़ा रहा, यह जानने के लिए कि असीमा अपनी तरफ से क्या कहती...करती है ? उफ...एक अजीब-सा सन्नाटा था । एक-एक मिनट, एक-एक घंटा जान पड़ता था । नहीं...अब नहीं सही जाएगी यह चुप्पी । इसलिए दो मिनट तक इंतजार करते रहने के बाद उसने कुरसी को थोड़ा-सा घुमाया और फिर झटके के साथ बोल उठा, "जैसा कि तुम्हारा डर था कहीं वही बात तो नहीं हुई ? तुम्हारा वह रईस दोस्त तुम्हें पहचान नहीं पाया ?"

असीमा उठी और रणवीर के सामने तनकर खड़ी हो गयी । उसके होंठों के कोने पर व्यंग्यभरी मुसकान खेल रही थी..."भला...पहचान कैसे नहीं पाता ? जिसने भी मुझे एक बार देख लिया है...वह भला कभी भूल सकता है मुझे ?"

रणवीर ने असीमा की तरफ देखा...सिर से पांव तक । असीमा का यह तेवर कोई नयी बात नहीं है बस भूली हुई-सी लगती है । महीनों हो गये असीमा का मेकअप से सजा-संवरा और निखरा ऐसा खूबसूरत चेहरा...देखा नहीं था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और...एक खास अदा के साथ रेशम की साड़ी में लिपटी उसकी यह सुडौल काया ।

क्या इससे रणवीर को खुशी हुई ।

अगर ऐसा होता तो उसकी आंखें सुलग नहीं उठतीं इस तरह ? उसने अपना हाथ पिछले तीन-चार दिनों से गालों पर उग आयी दाढ़ी पर यूं ही फिराया । इसके बाद बड़ी मुश्किल से उगायी गयी हंसी के साथ बोला, "मेरे ही हथियार से मेरा कत्ल किये जा रही हो ? तुम्हारे वहां जाने का क्या नतीजा निकला आखिर ? अपना उतरा चेहरा देख रही हो ?"

"तो और क्या करूं ? असीमा ने जैसे बड़ी हेठी के साथ होंठों को भींचते हुए कहा, "नौ सौ पचहत्तर रुपये की एक छोटी-सी नौकरी मिल भी गयी तो मारे खुशी के नाचने लगूं ? कोई बात हुई ?"

"नौ सौ पचहत्तर ?"

"नौ सौ पचहत्तर रुपये की नौकरी ?"

रणवीर को उसकी पिछली नौकरी में भी इतनी रकम नहीं मिलती थी । उसने बड़ी मुश्किल से होंठों पर आती हंसी को कुचलते हुए पूछा, "बात क्या है ?...सच कहा तुमने...तुम मजाक तो नहीं कर रही हो ?"

"मुझे क्या पड़ी है कि मैं तुमसे मजाक करती रहूं ?"

रणवीर के चेहरे पर एक तरह की निराशा और आंखों में विचित्र लालसा-सी जाग उठी थी । नौकरी मिल गयी इससे बड़ी खुशी की बात और क्या है भला ? वैसे रुपये का आंकड़ा अवश्य ही उतावली पैदा कर देनेवाला था ? और जैसा बताया गया था ठीक वैसा ही हुआ । सचमुच, असीमा की अब भी कोई-न-कोई कीमत तो है । सिर्फ आंखों में ही नहीं उसके सारे शरीर में एक नामालूम-सी आंच है ।...रणवीर को जैसे इस बात की उम्मीद हो चली थी कि उसका काम नहीं होनेवाला । और अगर बात बनी न होती, तो उसे कहीं ज्यादा खुशी होती ।

ज्यादा-से-ज्यादा यही होता कि कुछ और महीनों तक घर में दूध नहीं आता । बच्चों की देह पर उभर आनेवाली ऊबड़-खाबड़ हड्डियां कुछ और नुकीली हो जातीं ।...यही होता न...

हां...हां...बहुत कुछ हो जाता...अप्रिय और अनिष्टकर...लेकिन रणवीर अपनी ही आंखों में इतना गिर तो न जाता । असीमा को जबरदस्ती बाहर भेज देने के पीछे जो ताकत काम कर रही थी...वह किसी नौकरी पाने की आशा से नहीं बल्कि नौकरी पाने और न कर पाने की इच्छा से... ।

लेकिन बात जो भी हो...बताना तो चाहिए । घात लगाकर जानना पड़ेगा कि इसके लिए उसे क्या कहना-करना पड़ा...कौन-सी जुगत भिड़ानी पड़ी । इस बीच अपने को तसल्ली देने का कोई बहाना मिल जाएगा ।

..."तो फिर जाते ही भेंट हो गयी थी उससे ?"

"मिलता नहीं तो मैं इतनी जल्दी लौट कैसे आती ?"

'मैंने तो सोचा था कि वह ठहरा तुम्हारा पुराना दोस्त...तुम्हें जल्दी छोड़ेगा नहीं...रोके रखेगा ।"

रणवीर के धीरे-धीरे स्याह होते जाते मुंह की ओर आंखें फाड़कर देखते हुए असीमा ने अपनी खनकती आवाज में कहा, "तुम्हारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचना कुछ गलत नहीं था । बीमार दिमाग शैतान का कारखाना होता है...इस बात को तो बच्चे भी जानते हैं ।''

रणवीर अचानक कुरसी से उठ खड़ा हुआ और उसे डपटते हुए बोला, ''बातों...बातों में ही मत बहलाओ...वहां क्या हुआ...यह तो बताओ ?''

लेकिन असीमा न तो इस धमकी से जरा-सा भी विचलित हुई...और ना ही उसके पांव कांपे। उसने बड़ी स्थिरता से आहिस्ता-आहिस्ता बताना शुरू किया...बड़े आराम से... ''इसमें बताने को ऐसा है भी क्या ? वहां गयी...सब-कुछ बताया और बात बन गयी । नियुक्ति-पत्र मिला और मैं कृतार्थ हो गयी । कल से ही जाना पड़ेगा ।''

''इतनी जल्द...नियुक्ति-पत्र भी मिल गया...कल से ही जाना पड़ेगा ?'' मानो इतनी देर तक वह किसी तपती और पिघलती राह से गुजरता हुआ उसे पीछे छोड़ आया था । ''काम क्या है...इस बारे में तो मैं कुछ जान ही नहीं पाया । यह भी नहीं सोच पाया कि काम मेरे लायक है भी या नहीं ?...एकबारगी नियुक्ति-पत्र मिल गया...अगर मैं कल न जाऊं तो... ?''

असीमा की हंसी अचानक उसके कानों में पड़ी...यह कोई साधारण हंसी नहीं थी...ऐसी हंसी शायद कभी इस घर में नहीं गूंजी थी— यह हंसी दीवार से टकराकर छत तक फैल गयी थी...किसी झरने की कल-कल की तरह...घंटी की ध्वनि की तरह...

''भला तुम्हारे जाने की क्या जरूरत है ? मैं अकेली ही चली जाया करूंगी । दफ़्तर तो पास ही, धर्मतल्ला में ही है...वहां तक जाने में मैं कोई रास्ता नहीं भूल जाऊंगी... ।''

''अच्छा...तो यह नौकरी तुम्हें मिली है...मुझे नहीं ।'' रणवीर चीखना चाहता था पर थम गया ।

''और क्या ? मुझे यह अच्छी तरह मालूम था कि तुम इसके लिए मरते दम तक राजी नहीं होगे ।..है न ! और तभी मैंने तुम्हारा नाम लिये बगैर अपने बारे में ही बातें की थीं । मैंने कहा कि दूसरे के पैसे पर रोटियां तोड़ते-तोड़ते उकता-सी गयी हूं । छोटी-मोटी कोई नौकरी मिल जाए तो करना चाहूंगी । उसने कहा, ''क्यों नहीं अभी ले लो...और मुझ पर रहम करो ।''

सुननेवाले के मुंह पर और भी स्याही फिर गयी थी । जान पड़ा कि वह जलकर काली ही हो गयी है । असीमा ने ऐसा करने में अपनी तरफ से भी कुछ उठा न रखा ।

जो स्त्री अपने छोटे-से एकांत और शांत घर-संसार में आग लगाने को मजबूर की गयी थी, उसे अब एक पराये के घर में आग लगाते हुए भला क्यों हिचक होती ? ऐसी भावुकता से उसने अपने आपको मुक्त कर लिया था ।

(अनुवाद : डॉ. रणजीत साहा)

जो काम पड़ने पर समय पर सहायक होता है, वही सच्चा मित्र है । —गौतम बुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक

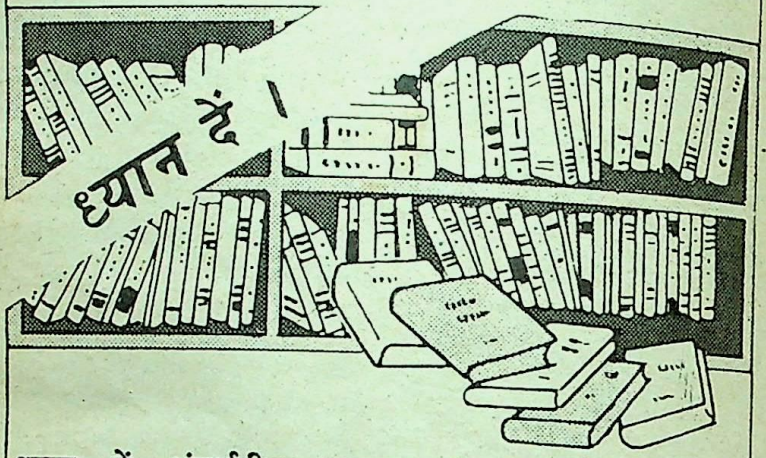

भारत में अंतर्राष्ट्रीय मानक पुस्तक अंकन प्रणाली (आई.एस.बी.एन.) को लागू करने के लिए आप राजा राममोहन राय राष्ट्रीय इकाई, शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली की सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं।

- इस योजना के अंतर्गत कोई भी भारतीय प्रकाशक मुफ़्त में पंजीकरण करा सकता है। यदि आपने अभी तक स्वयं को पंजीकृत नहीं किया है तो अब तत्काल करा लें।
- आई.एस.बी.एन. योजना से प्रकाशक ऑर्डर देने, स्टॉक-कंट्रोल, बुक कीपिंग तथा पुस्तकों की बिक्री का विश्लेषण करने के लिए एवं निर्यात को बढ़ोतरी हेतु आसान और अंतर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत पद्धति का लाभ उठा सकेंगे।

अधिक जानकारी के लिए लिखें या सम्पर्क करें :

लाइब्रेरियन

आई.एस.बी.एन. डिविजन,
राजा राममोहन राय राष्ट्रीय इकाई,
ए-1 डब्लू. 3, कर्जन रोड बैरेक्स,
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001
टेलीफोनः 381739

DAVP 89/1229

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

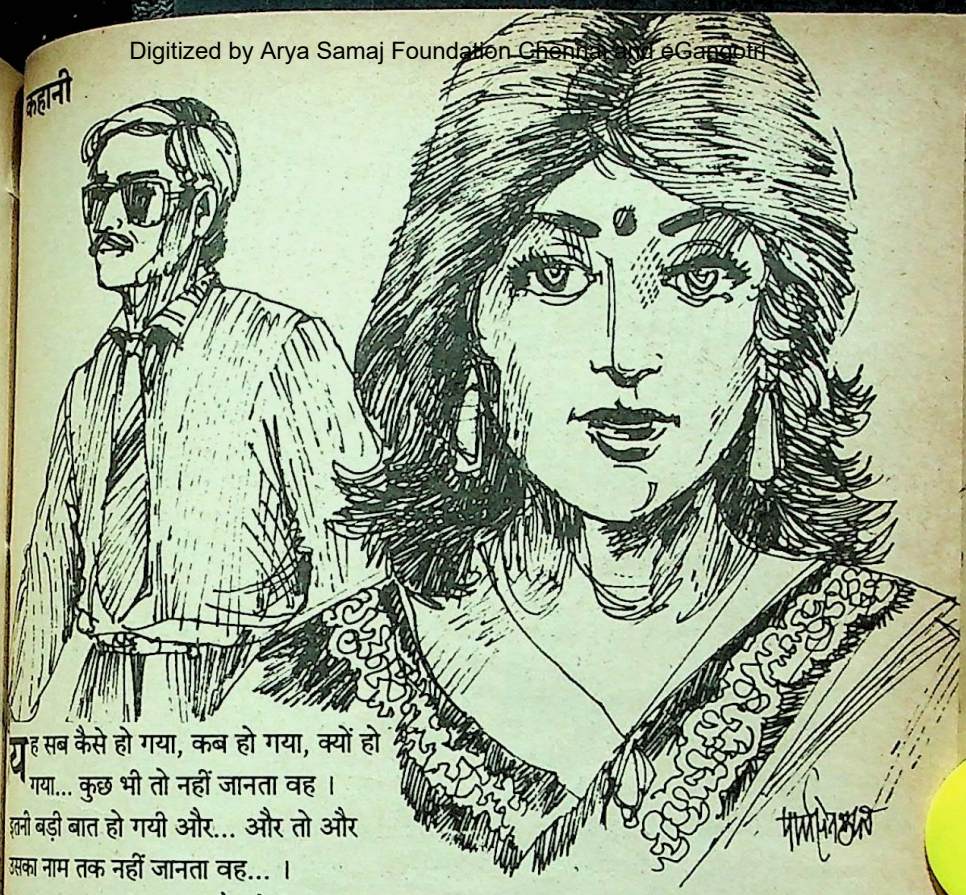

कलकतिया

● केवल सूद

यह सब कैसे हो गया, कब हो गया, क्यों हो गया... कुछ भी तो नहीं जानता वह। इतनी बड़ी बात हो गयी और... और तो और उसका नाम तक नहीं जानता वह... ।

बस इतना ध्यान आ रहा है उसे कि एक बार अचानक सामने पड़ जाने पर उसने बिना झिझक उसे मुसकराकर एक अजीब अंदाज से देखा था... कोई लड़की या कोई औरत ही पहली बार मिलने पर किसी भले आदमी को ऐसे देख सकती है, यह उसने कभी सोचा भी नहीं था। सोच भी नहीं सकता था— हां, कल्पना जरूर कर सकता था। उसी तरह जैसे उसने स्पर्श के बारे में की थी।

वह सकपका-सा गया था। इधर-उधर देखा था।

किसी ने देखा तो नहीं।

नहीं, आसपास कोई नहीं था।

फिर यह ध्यान आया था कि कुछ भी तो ऐसा नहीं था उन नजरों में जिससे किसी गलतफहमी में पड़ा जाए... ।

दफ़्तर के काम में लग जाने के बाद इस सारी घटना को सिरे से ही भूल गया था।

फिर पता नहीं कब, रात को, या शाम को बस में बैठे-बैठे इस बात का ध्यान आने पर कुछ याद आया... लड़की की शक्ल तो नहीं... सिर्फ यह याद आया कि एक बार बस-स्टैंड पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके पति ने दोनों का परिचय करवाया था... ।

तब उसे न कुछ लगा था, न हुआ था... ।

वह एक साधारण-सी लड़की थी... और वह पैडस्टल पर खड़ा एक बुत था ।

फिर अब यह अहसास क्यों ?... ।

बल्कि आज तो जैसे दफ़्तर से उसी के लिए निकला था... ।

सोचा था, आज की शाम उसके ही साथ, दूसरी स्पर्शा के साथ घूमेगा । और कुछ ऐसा ही हुआ था... ।

उसे वर्षों बाद एक विचित्र-सी अनुभूति हुई थी... ।

अब वह कहीं भी अकेला नहीं था... न बस में बैठे हुए, न बाजार में चलते हुए... ।

पहले तो कभी कुछ नहीं महसूस होता था— जैसे मन नाम की चीज उसके पास अब नहीं रह गयी थी... मन के स्तर पर वह कभी कुछ महसूस कर ही नहीं सकता था... ।

पर अब जैसे सब फिर से लौट आया है... यह सब कब लौटा, कौन-सा पल था वह, वह उसे याद करना चाहता है, उसे पकड़ना चाहता है... ।

पर सफल नहीं हो पाता... ।

ठीक से यह सारी बात एक ही व्यक्ति समझ सकता है, बता सकता है... और वह है स्पर्शा... स्पर्शा नं. २, पहली स्पर्शा तो कोई है ही नहीं... ।

पर वह क्यों बताने लगी—

ये लड़कियां, ये औरतें इस मामले में बड़ी चीज होती हैं... कितना कुछ सहज भाव से ही संजोकर रख सकती हैं । इसको कोई हिसाब नहीं... ।

नहीं, वह नहीं बताएगी... ।

मत बताओ—

वह उसे पागल बना छोड़ देगी— या फिर बुद्धू—

बस हो गया काम—

वह जानता है, वह बुद्धू है, इसमें नयी बात कौन-सी है— बुद्धू न होता तो इस चक्कर में पड़ता । —कितना बड़ा खतरा मोल ले रहा है वह... घर-गृहस्थी... नौकरी... सारा जीवन ही जैसे दांव पर लगा जा रहा हो... ।

पर शायद यह सारा कुछ स्पर्शा पर अधिक लागू होता है... वह औरत... उसका पति उसे कभी क्षमा नहीं करेगा... उसकी पत्नी तो दो-चार दिन बक-झक कर फिर चुप हो जाएगी... उसकी मजबूरियां उसे सब करने पर मजबूर कर देंगी... ।

स्पर्शा ने क्या यह सारा कुछ नहीं सोचा... ।

उसे लगता है... स्पर्शा ने अवश्य ही सोचा है... बहुत कुछ सोचा है... उसने जिस अंदाज से देखा था, उसे ध्यान में रख सोचने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वह उसके बारे में सब कुछ नहीं तो बहुत कुछ जानती होगी... जो नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी, उसे जाना होगा... और उसके
मन को समझाने की कोशिश भी जरूर की
होगी... उसमें सफल न होने पर ही उसने इस
अंदाज से देखने का फैसला किया होगा... एक
ही नजर में सब कह डालने का फैसला... ।

सोचता है... ऐसी क्या मजबूरी रही होगी
उसकी... ।

स्पर्शा की मजबूरी कुछ भी रही हो... स्पर्शा
से पहले साक्षात्कार के बाद उसकी मजबूरी
जरूर ही यह हो गयी थी कि वह स्पर्शा के
प्रेम को स्वीकार कर ले ।

दूसरी बार जब स्पर्शा सामने आयी थी और
उसने पहले वाले अंदाज को दुहराया था तो
उसने उसी अंदाज से उत्तर दिया था... और
दोनों कच्चे धागों के बंधन में बंध गये थे... ।

उस दिन के बाद उसे सब अच्छा-अच्छा
लगने लगा था— हर वक्त स्पर्शा का स्पर्श
अनुभव होता रहता था... मखमली स्पर्श... ।

दफ्तर में स्पर्शा का नाम 'कलकतिया' घास
पड़ गया था । पर 'घास' शब्द का प्रयोग यार
लोगों ने जान-बूझ कर छोड़ दिया था । शायद
इसलिए कि किसी महिला को घास कहना, भले
ही कलकतिया, कुछ अच्छा नहीं लगता... ।

पर यार लोगों ने उसका नाम कलकतिया
क्यों ही क्यों रखा, बंगाली 'रशोगुल्ला' क्यों
नहीं... यह बात उसे कुछ अजीब-सी लगी... ।

पर जिस किसी ने भी उसका यह नाम रखा
है, ठीक ही रखा है... ।

स्पर्शा के पास से गुजरने पर कुछ इसी तरह
का अहसास होता है— जैसे कोमल हरी-हरी
'कलकतिया' घास पर पैर रख दिया हो... ।

वह उसे छूकर देखना चाहता है... चाहत के
इस मौसम को भरपूर जीना चाहता है । यह
उसके जीवन का सबसे सुंदर मौसम है... उसे
वह किसी कीमत पर भी खोना नहीं चाहता...
नहीं चाहता कि मन फिर सूख जाए... ।

अब यह मौसम तब आया है, जब वह मान
चुका था कि अंदर हमेशा पतझड़ रहेगा... ऐसे
वक्त यह फुहार पड़ी है जब वह मान चुका था
कि अब फुहार का मौसम सदा के लिए बीत
चुका है... ।

लेकिन यही तो संभव नहीं, यही मुश्किल है, मन रे ! इस संभव-असंभव के चक्कर में मत पड़ना... स्पर्शा को भी न पड़ने देना ... अगर ऐसा न किया तो दो गृहस्थियों का खून तुम्हारे सिर होगा... ।

वह इस फुहार को, इस कलकतिया घास
को मन के 'ग्रीन हाऊस' में सुरक्षित कर लेना
चाहता है... ।

पर क्या ऐसा संभव है... क्या इस मखमली
अहसास को लंबे समय तक कायम रखा जा
सकता है... इस तरह के सवाल उसे परेशान
कर जाते हैं... ।

जानता है जमाना खराब है, इसी वजह से
अहसास को अहसास तक ही सीमित रखना
चाहता है... ।

स्पर्शा से बात करने का मन होता है, उसे
छूने का दिल करता है... पर वह जानता है उसे
कुछ ऐसा नहीं करना चाहिए, स्पर्शा भी तो ऐसा
ही कुछ चाह सकती है, बल्कि चाहती ही होगी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर पहल करनेवाली तो वही है... कितने सपने लेकर वह इस राह पर निकली होगी... जो अपने पति से नहीं पाया होगा... वह उससे पाना चाहती है... ।

स्पर्शा, तुम क्या पाना चाहती हो, पूछना चाहता है उससे... ।

पर नहीं पूछेगा, और न स्पर्शा को ही कुछ पूछने देगा... ।

इसी बात को सोच कर कई बार उसे शिद्दत से यह अहसास होता है कि उसके और स्पर्शा के बीच एक झीना-सा, पर ऐसा फौलादी परदा तना हुआ है जिसे हटाया नहीं जा सकता... उन दोनों के बीच एक ऐसा जाल तना हुआ है, जिसमें से वे एक-दूसरे को देख भर सकते हैं, मुसकरा भी सकते हैं, पर इधर-उधर देख लेने के बाद, इस बात के प्रति आश्वस्त हो जाने के बाद कि उनकी चोरी पकड़नेवाला तो कोई आस-पास नहीं... ।

जिस दिन ऐसा हो गया... जीना मुश्किल हो जाएगा... दोनों में से किसी की नौकरी भी जा सकती... इज्जत भी जा सकती है... ।

पर अभी तो वक्त का हर पहलू उसी के नाम है—

एक छोटी-सी घटना याद आती है... ।

बस में चढ़ा था । बस के चलने में कुछ देर थी । खिड़की में से देखा बाहर सड़क पर, बस से सटे हुए चार-पांच नौजवान चल रहे थे । फिर सहसा वे बस में चढ़ आये थे ।

एक चश्मेवाले नवयुवक ने पूछा था, "बीड़ी किसने फेकी ?" बाकी युवक उसके पीछे थे ।

जहां वह खड़ा था, उसके पास वाली सीट पर बीच में बैठे एक देहातीनुमा युवक ने डरते-डरते कहा था—"मैंने... ।"

"देख कर नहीं फेंक सकते थे...?"

"गलती हो गयी..."

नौजवान बुड़बुड़ाते हुए नीचे उतर गये थे । एक काली पगड़ी वाले की बात उसने सुन ली थी, "अब सालों को चश्मे भी हमें ही लगवाकर देने होंगे...!"

वह पहले युवक के सवाल पर ही उससे कुछ ऐसा निवेदन करना चाहता था कि 'छोड़िए, जाने दीजिए ।'

पर फिर यह सोचकर चुप हो गया था कि स्पर्शा साथ होती तो क्या उसे बोलने देती—नहीं, बोलने देती... ।

धीरे से हाथ पर छूते हुए धीमी पर कड़ी आवाज में कहती, "आप चुप नहीं खड़े रह सकते... ।"

और वह चुप ही खड़ा रह जाता । जैसे रह ही गया था ।

सिर्फ आखिर वाले युवक की बात सुनकर बुदबुदाया था... या अल्लाह, इतनी नफ़रत... एक आदमी की गलती पर भी क्या सबको 'चश्मा' लगेगा... ।

बाद में उसने सोचा था—यह क्या... क्या स्पर्शा यहां तक पहुंच गयी है... या... या... वह उस पर इतना आश्रित हो गया है दो ही दिन में... ।

कुछ तो है... नहीं तो घर में अब पहले की तरह क्लेश क्यों नहीं होता... ।

आज सुबह जब दफ़्तर जाने के लिए तैयार हो रहा था, तब पत्नी चाय ले आयी थी... तैयार होते-होते ही चाय का प्याला उठा चुस्की लेनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली थी तो चाय के कतरे सफेद पैंट पर धब्बे बन टंग गये थे... पत्नी के फूहड़पन के प्रतीक... उसने प्लेट की ओर देखा था... उसकी हुई चाय भरी थी । आज से पहले जब भी कभी ऐसा कुछ होता, तब सुबह ही महाभारत शुरू हो जाता था । पत्नी रोने-धोने बैठ जाती थी— 'बच्चों को तैयार करो, खुद भी तैयार हो, आपका भी सब करो... जरा-सी चाय प्लेट में आ गयी तो... आपको भी तो भगवान ने आंखें दी हैं...'

और वह भूखा दफ़्तर चला जाता था ।

लेकिन आज ऐसा नहीं हुआ... वह पत्नी की ओर देख मुसकरा दिया था और पैंट बदल दफ़्तर चला गया था... ।

सोचता है, स्पर्शा के साथ भी ऐसा ही कुछ ज़रूर होता होगा । अब वह झल्लाती नहीं होगी... ना बच्चे पर, ना सास पर, और ना ही अपने मिस्टर पर... ।

वह स्पर्शा से कहेगा— 'हां, ऐसा ही करते रहना... बात तो इस अहसास की है, हम भाग्यशाली हैं कि वह हमें मिल गया है... आओ इसे संभाल कर रखें, और सब ओर संगीत बांट दें...'

लेकिन यही तो संभव नहीं... यही मुश्किल है... मन रे ! इस संभव-असंभव के चक्कर में मत पड़ना... स्पर्शा को भी न पड़ने देना... अगर तुमने ऐसा न किया तो दो गृहस्थियों का खून तुम्हारे सिर होगा... ।

प्यार ने उसे एक साथ कितना तोड़ और जोड़ दिया है... हिसाब करने पर उसे 'जोड़' वाला पलड़ा ही भारी लगता है... ।

तुम्हें कैसा लगता है, स्पर्शा !

नहीं, कुछ बोलना नहीं, बोलोगी तो यह तिलस्म-सा टूट जाएगा... ।

बस, तुम देखती भर रहना, उस खूबसूरत से अहसास को मेरे लिए आंखों में छुपाये रखना, कलकतिया घास के अहसास को... मैं पास से गुजरूंगा तो आंखों से उसका स्पर्श कर लूंगा, 'कलकतिया'... !

—बीआईए/६०-ए, जनकपुरी,
नयी दिल्ली-११००५८

उस दिन गिरजाघर में रोम के सभी संभ्रात नागरिक इकट्ठा थे । लोग फुसफुसा कर बातें कर रहे थे । उनके बीच चर्चा का विषय था 'शैतान' पादरी ने उन सभी को 'शैतान' को प्रत्यक्ष दिखाने का वायदा किया था । लंबे सफेद चोगे में पादरी ने हॉल में प्रवेश किया । सब तरफ सन्नाटा खिंच गया, लोग उत्सुक और भयभीत । धीरे-धीरे हाल की सभी लाइटें बुझ गयीं और सामने के बड़े परदे पर फैतान की आकृति उभरने लगी । एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी, भयानक के भयानकतम शैतान की आकृतियां सामने थीं ।

बैठे हुए लोग चीखने लगे, आंखे बंद करके हाथ उठा प्रार्थना करने लगे ताकि शैतान उनकी आंखों से दूर हो जाए । धीरे-धीरे हॉल में उजाला फैल गया और लोगों ने राहत की सांस ली । यह बात है, जब रोम में पहली बार एक पादरी ने फिल्म का प्रदर्शन किया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

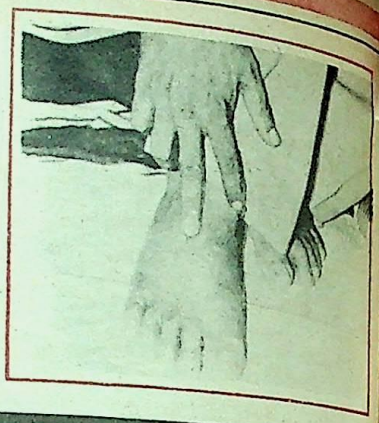

पैर के ऊपरी भाग पर चार अंगुल ऊपर तीसरी अंगुली की सीध में स्थित बिंदु

ऐंठनदार नसें, लकवा, पांव में सूजन, आर्थराइटिस व पैरों में दर्द होने पर इस बिंदु पर दबाव दें ।

अद्भुत करिश्मे : अप

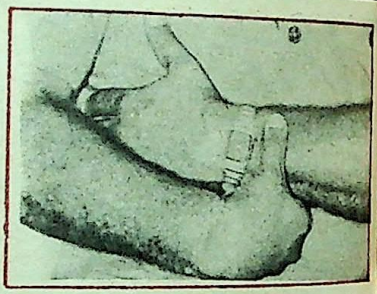

कलाई से तीन अंगुल दूर तर्जनी की सीध में स्थित बिंदु

आर्थराइटिस, गरदन का दर्द, हाथ का लकवा ऑप्टीक एट्रापी में इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

एक्यूप्रेशर चिकित्सा की एक प्राचीन विधि है । इस चिकित्सा-पद्धति में शरीर के विभिन्न स्थलों को दबाकर रोगों का निवारण किया जा सकता है । पाठकों के लाभ के लिए हम एक्यूप्रेशर की विधियां प्रकाशित कर रहे हैं । इन्हें प्रस्तुत कर रहे हैं एक्यूप्रेशर-चिकित्सा के जाने-माने विशेषज्ञ— डॉ. सुधीर खेतावत

पैर की तीसरी अंगुली के नख के बाहरी कोने पर स्थित बिंदु

खांसी, सिरदर्द, अनिद्रा व बहरापन होने पर इस बिंदु पर दबाव लाभकारी है ।

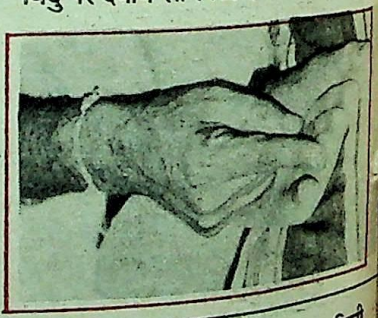

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंधे के जोड़ से तीन अंगुल दूर स्थित बिंदु

गरदन दर्द, कंधे का दर्द, कमर दर्द, हाथ का सूखा हो जाने पर इस बिंदु पर दबाव दें ।

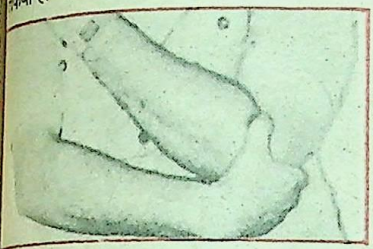

कोहनी की मूल सिलवट के कोने पर स्थित बिंदु

हाथ का दर्द, पीठ दर्द, कंधे का दर्द, बुखार, चर्मरोग, पित्ती होने पर इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

अपना इलाज स्वयं कीजिए-२२

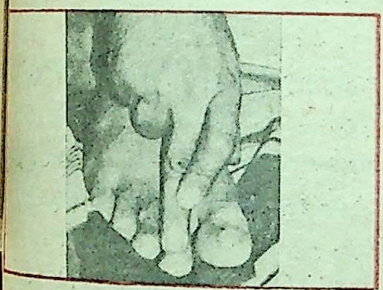

हथेली की मूल सिलवट में स्थित बिंदु

खांसी, ब्रोंकायटिस, खांसी, सीने का दर्द, फेफड़ों की नसें, पीठ व कंधे का दर्द, हाथ व कलाई का दर्द होने पर इस बिंदु को दबाइए ।

पैर के अंगूठे और प्रथम अंगुली के मध्य स्थित बिंदु

अनिद्रा, कंधे का दर्द, गरदन का दर्द, एग्जीमा तथा नसों का खिंचाव आदि होने पर इस बिंदु पर दबाव दें ।

पैर की तर्जनी के ऊपरी भाग पर नख के पास स्थित बिंदु

अपचन, अनिद्रा, सायनस, दाढ़ का दर्द, टांसिल होने पर इस बिंदु पर दबाव दें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मराठी कहानी

तीनों की मांग

● वि.वा. शिखाडकर

'राजा' नामक कुत्ता पड़ोसी की बिल्ली का पीछा करते तेजी से दौड़कर कमरे के बाहर हो लिया और मैं उसके लौटने की प्रतीक्षा में कमरे में अकेले ही बैठा रहा ।

दियाबत्ती करने का समय तो चुक गया था परंतु प्रकाश की आवश्यकता का अनुभव किये बिना बत्ती न जलाने का मेरा स्वभावनियम होने के कारण मैंने ट्यूब का बटन ऑन नहीं किया । शत्रुपक्ष की छिपी सेना अवसर मिलते ही सिर उठा देती है उसी प्रकार दरवाजे की दराज से, वेंटिलेटर और खिड़की के एक खुले पल्ले से बढ़ता हुआ अंधकार कमरे में प्रवेश कर रहा था । यह अंधकार धीरे-धीरे बढ़ता ही जा रहा था, परंतु मैं उस बढ़ते हुए अंधकार में अन्यमनस्क भाव से चिंतन में मग्न था ।

मन भी कैसा विचित्र है ? वह अधिक समय तक स्थिर रह ही नहीं सकता । दिमाग में विचार आया आत्मा का !

इतना गंभीर विषय !

क्यों ?

क्या कारण था ?

इसका कारण यह कि आज सुबह मेरी जेब में चार आने खुनखुना रहे थे और मैंने अपने परिचित कबाड़ी की दुकान पर एक पुरानी 'भगवद्गीता' देखी थी । उसमें वर्णित अविनाशी आत्मा का वर्णन— 'य एनमवेत्ति हन्तारम्'...किंवा नैनं छिन्दति शस्त्राणि.... इतने पुनीत और सामर्थ्यशाली आत्मा को मानव की क्षुद्र और अमंगल देह में जकड़ा जाए, इसका मुझे आश्चर्य हुआ । जड़ जवाहर, रत्नों के मूल्यवान् आभूषण तो तिजोरी में रखे जाने चाहिए उन्हें यदि साबुन की डिबिया में रख दिया जाए तो उनकी कीमत क्या होगी ? मन को यह भाव भार-सा प्रतीत हुआ ! "नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक :..." इस गंभीर विचार-भाव के भार से मन को हलका करना ही था, तब तक.... दरवाजे का एक फट्टा सरका और अभ्यागत ने प्रश्न किया—"क्या मैं अंदर आ सकता हूं ?"

"जी हां ! आइए ! पधारिए !"

वे सज्जन अंदर आये । कैसा भव्य दिव्य रूप ! कितना आकर्षक व्यक्तित्व ! दबंग पुरुष ! उस सज्जन की लंबाई मेरे मन को अकारण ही व्यग्र करने लगी । मैंने उन्हें संकेत द्वारा कुरसी पर बैठने का आदेश दिया । सज्जन बैठ गये । मैंने उन्हें गौर से देखा । कमरे में अंधकार बढ़ रहा था, इस कारण मैं उन्हें ठीक से नहीं देख पाया । उनकी लंबाई के समान ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

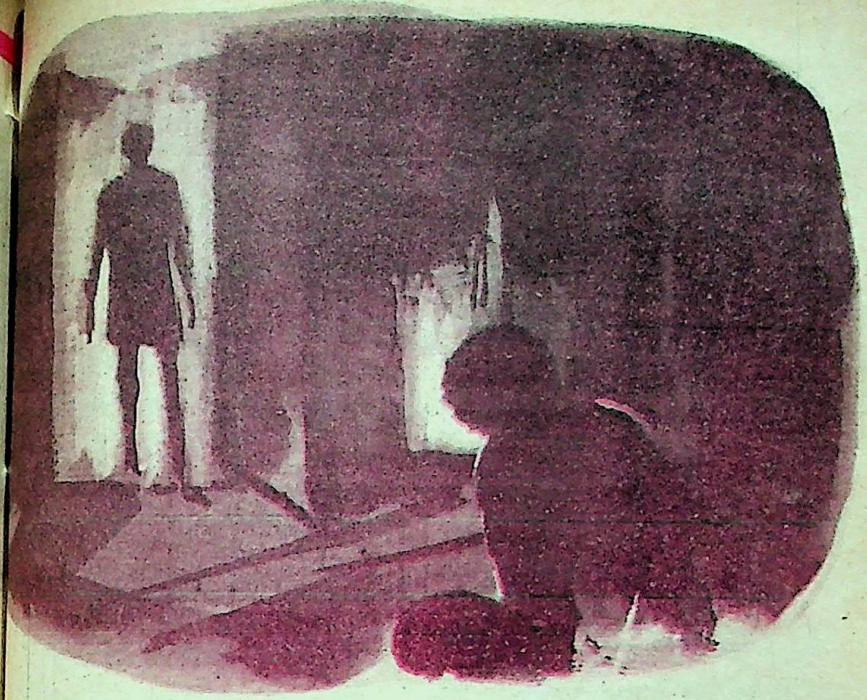

उसका अंतर्मन भी गूढ़ रहस्यमय रहा होगा, इसलिए उसे समझ पाना मेरे बस की बात नहीं थी। उनका श्यामवर्ण भी वैसा ही था जैसी उनकी लंबाई ! उनके दांत और नेत्र अपने अस्तित्व की पहचान उस अंधकार में भी करा दे रहे थे।

"आपका परिचय" ?

"मैं ? मेरा नाम सुनकर आप चकित तो नहीं होंगे न ?"—वह बोला

"बिलकुल नहीं"। आश्चर्यचकित कर देनेवाले अनेक व्यक्ति इसके पहले भी इस कमरे में आ चुके हैं।"

"लेकिन मैं इनसान नहीं, शैतान हूं—" वह बोला !

एक क्षण के लिए दोनों ओर स्तब्धता थी।

थोड़ी देर के लिए मैं हिचकिचाया अवश्य ! पर इस सत्य को झुठलाया कैसे जाए ? सामनेवाला व्यक्ति, उसके शब्दों की क्या प्रतिक्रिया होती है इसे जान लेने के लिए चुपचाप मुझे घूर रहा था। लेकिन उसे कुछ परिणाम दिखायी नहीं पड़ा। मैंने तुरंत अपने आप को संभाला और पूछा—"बत्ती जला

मैंने उन्हें गौर से देखा। कमरे में अंधकार बढ़ रहा था, इस कारण मैं उन्हें ठीक से नहीं देख पाया। उनकी लंबाई के समान ही उनका अंतर्मन भी गूढ़ रहस्यमय रहा होगा, इसलिए उसे समझ पाना मेरे बस की बात नहीं थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी गर्दन पर के सफेद घने बालों को हाथ से सहलाते हुए मैंने उसे आश्वस्त किया और मैं बोला—"लाडले मेरे ! डरो मत ! मेरे राजा ! उन दोनों को मैंने जो नहीं दिया वह मैं तुम्हीं को दे देता हूं ।"

दूं ?"

"नहीं जी" आपके समान मुझे भी अंधकार प्रिय है" । मैं प्रकाश में एक बार उसे देखना चाहता था, परंतु उसे शायद प्रकाश की जरूरत न हो इस विचार से चुपचाप बैठा था ।

"आपके आगमन का उद्देश्य ?"

"मुझे आपकी आत्मा चाहिए ।"

"क्या ?" मुझे लगा मैंने कुछ गलत सुना है इसीलिए आश्चर्य से पूछा ।

"आप अपनी आत्मा किसी को दे देना चाहते हैं न !"

"जी हां ।"

"मुझे उसकी जरूरत है ।"

"रद्दी बेचने और खरीदनेवाले कबाड़ी के समान आप, आत्मा कहीं मिलती है, इसकी खोज करते दरवाज्जे-दरवाज्जे घूम रहे हैं क्या ?"

"जी नहीं !" जहां प्राप्त होने की संभावना है वहीं मैं जाता हूं ।"

"आप शायद मेरी बदनामी कराना चाहते हैं ।"

"क्षमा कीजिए ! आप मुझे गलत समझ रहे हैं ।"

"लेकिन मेरी ही आत्मा पाने के लिए आप इतने उत्सुक क्यों ?"—मैंने प्रश्न किया ।

"बात यह है कि मैं कई दिनों से आपके चरित्र पर आंख गड़ाये बैठा हूं । आपके मन में जो अनेक विचार अनेक बार आये हैं उनके संबंध में सोचकर भी मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।"

"मन में कौन-से विचार कब और कैसे आते हैं इसके संबंध में सोचने की कोई जरूरत नहीं है । वे पानी के बुलबुलों के समान उठते और विलीन हो जाते हैं ।"

"लेकिन संसार की इस सनातन लड़ाई में आप मेरे ही विचार-पक्ष के हैं, या कम-से-कम उस ढंग से सोचते हैं इसलिए....."

"यह तो आपका स्वप्नदर्शी रूप है । दूसरा कारण ?"

"आपकी पूरी परिस्थिति ! जिसके संबंध में मुझे कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं ।"

"बिलकुल नहीं । क्योंकि उसके संबंध में आपकी कल्पनाएं, भावनाएं गलत भी हो सकती हैं ।"

अपनी दोनों भुजाएं उस अंधकार में फैलाते हुए वह बोला—"इस जगती का अमित सुख, ऐश्वर्य वैभव सब-कुछ मैं आपके चरणों में प्रस्तुत करने को तैयार हूं । आप मुझे अपनी आत्मा दीजिए ।"

"मैंने दरवाजे की ओर देखा ! मेरे जीवन का संचित सुख, वैभव ऐश्वर्य—वह चार पैरोंवाला 'राजा' बिल्ली के पीछे दौड़ा था, वह अब तक वापस क्यों नहीं आया—इसके लिए मैं चिंतित था ।

"आप कोई भी इच्छा प्रगट कीजिए मैं उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पहले से अधिक अंधकार कमरे में था इस कारण बत्ती जलानी ही थी। क्योंकि अंधकार में आगंतुक के रूप-रंग को समझ पाना संभव नहीं था. उसकी देहयष्टि आकर्षक थी, आवाज में माधुर्य था इतना ही मैं उस अंधकार में समझ पाया था।

पूरी कर दूंगा, चाहे वह कितनी ही महान क्यों न हो ?"—उसने कहा ।

"एक इच्छा है" वह बहुत महान, वहान न होने के कारण आप तुरंत पूरी कर सकते हैं"—

"कहिए !"

"आप किसी और संभावित ग्राहक के पास चले जाएं। मेरा 'राजा' अभी लौटेगा। आपकी इस विशाल देहाकृति को देखकर वह घुर्राएगा।"

"ठीक है ! फिर कभी"—कुछ अस्पष्ट-सा बुदबुदाते हुए वह देहाकृति कुरसी पर से उठी और चलने लगी और कुछ ही क्षणों में अंधकार में विलीन हो गयी।

दरवाजा उढ़काकर मैं आरामकुरसी पर लुढ़क गया कुछ देर बाद ट्यूब लगाकर राजा के वापस आने तक अखबार ही देखा जाए इस विचार में ही था कि पुनः दरवाजे पर थाप पड़ी।

"मैं अंदर आ सकता हूं ?"—प्रश्न में बड़ी विनम्रता थी।

मेरी अनुमति प्राप्त होते ही उस व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश किया और सामनेवाली कुरसी पर विराजमान हो गयी। अब पहले से अधिक अंधकार कमरे में था इस कारण बत्ती जलानी ही थी। क्योंकि अंधकार में आगंतुक के रूप-रंग को समझ पाना संभव नहीं था, उसकी देहयष्टि आकर्षक थी, आवाज में माधुर्य था, इतना ही मैं उस अंधकार में समझ पाया था।

"बत्ती जला दूं।"

"नहीं ! जब अंतर्मन आलोकित हो, प्रकाशपुंज से भरा हो, तो बाहर के अंधकार की कौन परवाह करता है ?"

"अजी साहब ! इस 'ब्लैक आउट' के जमाने में मन को आलोकित रखना टेढ़ी खीर है।"

"लेकिन आपकी बात तो कुछ और है"—

"मेरे लिए आपके मन में बड़ा आदर भाव दिखायी पड़ रहा है। आपने मेरी कथा, कविता पढ़ी है क्या ?'

आगंतुक मुसकराते हुए बोला—"मैं स्वयं कवि हूं।"

वाह ! तो कवितापाठ कर हम दोनों एक दूसरे की प्रशंसा क्यों न करें ?"

"मेरी कविताओं का पाठ मैं स्वयं नहीं करता वर्षा ऋतु में गंभीर घन गर्जन से लेकर कोकिला की पंचमतान का नाद सर्वत्र मेरी कविता का प्रभाव प्रतिभासित है।"

"आपकी बात मैं कुछ समझा नहीं"—आप अपना नाम या उपनाम बताने का कष्ट करेंगे ?"—

—"जी हां ! मुझे परमेश्वर कहते हैं !"

"याने सकल सृष्टि का पालनकर्ता, दयाधन कृपाघन, निर्गुण, निराकार....."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां भई, हां । वही हूं मैं ! विश्वबोझ के साथ-साथ मुझे इन विशेषणों का भी 'बोझ' ढोना पड़ता है ।

"लेकिन.... ! मेरे-जैसे नाचीज के घर आपका आगमन क्यों कर हुआ ?"

"मुझे आपकी आत्मा चाहिए ।"

"मेरी आत्मा ?" मैं सुनकर आश्चर्यचकित हो कुरसी से उठ खड़ा हुआ । अभी-अभी एक सज्जन...."

"मैं जानता हूं ।" उन्हीं के पीछे-पीछे इधर मैं आपके यहां आया हूं । वह यहां से वापस गये मेरे भय से,आपके कुत्ते के डर से नहीं..."

अखिल ब्रह्मांड के स्वामी ने 'मेरे राजा' के श्रेय को अपनी ओर खींच लिया था, इसलिए मैं जरा नाराज ही था ।

"आपने उस शख्स को अपनी आत्मा नहीं दी इसलिए मैं आपका शुक्रगुजार हूं ।"

"धन्यवाद !"—मैंने कहा ! "लेकिन वह मैंने आपके लिए सुरक्षित रखी है, इस खयाल से आप मुझे धन्यवाद दे रहे होंगे, तो वह पूर्णरूप से गलत होगा ।"

"मतलब ! आप मेरी मांग को ठुकरा देंगे ?"

"वाह भई, वाह ! जो एक को नहीं दिया वह दूसरे को कैसे दे दूं ?"

" 'एक' और 'दो' दोनों एक नहीं हैं इसलिए—"

"लेकिन केवल मेरी आत्मा को ले जाने के लिए आप स्वर्ग से पधारे हैं ?" मैंने आश्चर्य से प्रश्न किया ?

नाहम् वसामि वैकुंठे योगिनाम् हृदयैर वौ
गायन्ति मद् भक्ता यत्र तत्र तिष्ठामि नारद !

लेकिन मैं आपका भक्त भी नहीं हूं और योगी तो बिलकुल नहीं ।"

"आप योगी भी हैं ! और भक्त भी ।"

"अरे भई वाह । यह तो सरासर जुलुम का

उसकी गर्दन पर के सफेद घने बालों को हाथ से सहलाते हुए मैंने उसे आश्वस्त किया और मैं बोला—"लाडले मेरे ! डरो मत ! मेरे राजा ! उन दोनों को मैंने जो नहीं दिया वह मैं तुम्हीं को दे देता हूं ।"

रहे हैं आप"

"आपके चरित्र की ओर अनेक वर्षों से मैं गौर से देख रहा हूं । इसी कारण इस बुलंद आवाज में बोल रहा हूं । आपके मन में जो विचार आते हैं उनसे मेरा मन आनंद से पुलकित हो उठता है । और मैंने तो पहले ही कह दिया है कि यह मेरे मन में का 'मानव' है ।"

शैतान और भगवान दोनों को एक ही समय प्रिय लगनेवाले अपने व्यक्तित्व के प्रति आज पहली बार मुझे प्रसन्नता हुई । मैं मन-ही-मन खुश हो उठा । लेकिन मेरे चरित्र-संबंधी विचार करते समय, मेरे हाथों से किये गये कार्यों से अधिक मेरे मन में आनेवाले भावों को ही शैतान और भगवान दोनों महत्त्व देते हैं । मानवी व्यवहार में आचरण का मूल्य होता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रों का नहीं। मानवी व्यवहार की वह एक ...त ही है क्योंकि विचार पूर्ण रूप से अपना ...ता है, और आचरण समाज की अनेक ...ाओं की प्रतिक्रिया होती है !

कुछ क्षण मैं निश्चेष्ट हो स्तब्ध बैठा रहा। ...ज्ञान से वादों में उलझने का सामर्थ्य और ...हस मुझमें नहीं था।

"तब मैं आपकी सहमति ...समझूं ?"—उसने प्रश्न किया।

"जी नहीं ! बिलकुल नहीं।"

"क्यों ? क्या कारण ?"

"कारण यह कि जिस प्रकार बुरे की बुराई ...र मैं विश्वास नहीं करता, उसी प्रकार भले की ...लमनसाहत पर भी मेरा विश्वास नहीं"— मैंने ...हा।

"बहुत अच्छा ! फिर कभी !"—कहकर, ...ह उठा और बाहर चला गया।

मैंने आरामकुरसी से उठकर ट्यूब ऑन कर ...। प्रकाश से कमरा भर गया ! बड़ी कुशलता ...ंजे से दरवाजे को धकेलकर 'राजा' अंदर ...या। बिल्ली का पीछा कर उसे खदेड़ देने पर वह हर समय ऐसा ही उल्लसित होता है। यह बात अलहिदा कि बिल्ली कभी उसकी चपेट में नहीं आती।

कमरे में प्रवेश करते ही उसने छलांगें लगायीं और बाद में मेरी कुरसी के सामने आकर रुक गया। अवश्य उसे कुछ संदेह हुआ था। बार-बार वह कुरसी सूंघे जा रहा था। दो-चार चक्कर लगाये उसने कुरसी के चारों ओर और एकदम उसने मेरी ओर छलांग लगायी।

आगे के दोनों पैर मेरी छाती में धंसाकर एकटक वह मेरी ओर देखे जा रहा था। उसके उस शंकाकुल पर, स्वामिभक्तिपूर्ण नेत्रों के प्रश्न-भाव को मैंने तुरंत समझा। उसकी गर्दन पर के सफेद घने बालों को हाथ से सहलाते हुए मैंने उसे आश्वस्त किया और मैं बोला—"लाडले मेरे ! डरो मत ! मेरे राजा ! उन दोनों को मैंने जो नहीं दिया वह मैं तुम्हीं को दे देता हूं।"

(अनुवाद : डॉ. विद्याकेशव चिटको)

मयखाने में पहुंचे शराबी ने पास बैठे व्यक्ति से पूछा, "जीविकोपार्जन के लिए आप क्या करते हैं ?"

"मैं सर्कस में हूं। तोप से मुझे गोले की तरह छोड़ा जाता है।"

"इसमें तो बहुत साहस की जरूरत है।"

"तभी तो मैं यहां आता हूं। यहां आये बिना काम पर जा नहीं सकता।"

* * *

"कैदी नं. १५, तुम्हें जेलर साहब बुला रहे हैं।"

"क्यों ? जेलर साहब को मुझसे क्या काम है ?"

"उनकी अलमारी नहीं खुल रही है, उसका ताला खोलने के लिए तुम्हें बुलाया है।"

"जाओ, उनसे कह दो कि मुझे अभी फुरसत नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रीष्म : दो नवगीत

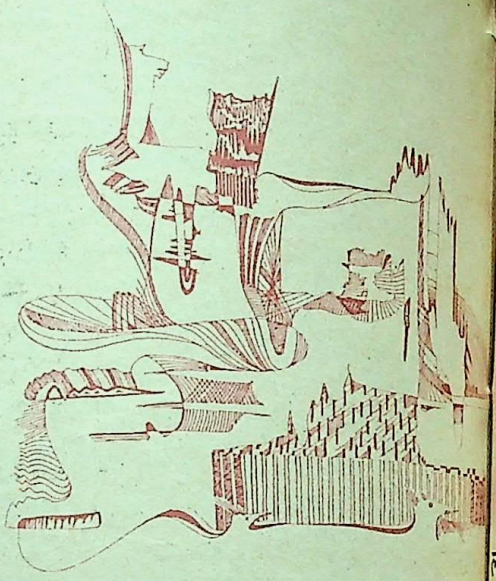

दुपहरी आग का दरिया हुई
दिन हुए
फिर देखिए
अखबार-जैसी सुर्खियों वाले
फूल
खुशबूई रुमालों का
हिलाना
वृक्ष
धूल ओस से आंखें
मिलाना
शशि से
लेकर चरण तक
सख्त सम्मन, कुर्कियों वाले
नीम
गाछों की सघन छाया
छरेरी
आग का
दरिया हुई तचती
दुपहरी
प्राण-मन पर
धूल बन झरते
बुरादे, बुरकियों वाले

बुन रहा दिनमान सन्नाटे

ये हवा के — बुन रहा
गर्म — दिनमान
बेहद तेज फरांटे — चारों ओर सन्नाटे
फूल-गालों पर — आंजने
लगाते — दृग में लगी
बेरहम चांटे — दिशियां ममीरा
गुलदुपहरी — फिर हुई
गर्भिणी-सी — नदियां अभागिन
छांह में लेटी — स्वल्प नीरा
प्यास — भूलकर
पद्मासन जमाये— — सब शोखियां
ओंठ पर बैठी — जूड़ो, कराटे

— डॉ. इसाक 'अश्क'

शुजालपुर मंडी, जिला शाजापुर (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग भटके उसूल की हद तक

धूप जैसे बबूल की हद तक
लोग भटके उसूल की हद तक

दो सपनों ने किया समझौता
आंसुओं से दुकूल ही हद तक

बन नदियों में बो गया पत्थर
लहर के साथ कूल की हद तक

बुध मौसम ने निचोड़ा जीभर
सूखे पेड़ों को फूल की हद तक

गांव ने रोज गरीबी बेची
शहर में आ के धूल की हद तक

हाँ ही आंखों पे था काला जादू
अपने चश्मे थे भूल की हद तक

चन्द चिंता का विषय बनते गये
अक्षरों की, स्कूल की हद तक

— दिनेश शुक्ल

रामेश्वर रोड, खंडवा-४५०००१ (म.प्र.)

धूप-छांही दोहे

(१)
ज्योतिर्किरण समेटकर ग्राम-वधू-सी धूप
अंधियारे को फटकती नित प्रति लेकर सूप

(२)
ईर्ष्या वश तम खोदता ज्यों-ज्यों गहरा कूप
भय खा ढलती उम्र-सी सांझ पड़े नित धूप

(३)
उसको क्या दुःख क्यों पड़ा उसका पीला रूप
मेरे चेहरे-सी लगे सुबह-सुबह की धूप

(४)
चाटुकारिता के नहीं चटकेंगे स्तूप
कितनी भीषण क्यों न हो दोपहरी की धूप

(५)
धूप सराहे किस तरह वर्षा का व्यक्तित्त्व
पानी-पानी कर दिया जब उसका अस्तित्त्व

(६)
होकर चंचल गर्व से इठला पड़ती छांह
वृक्ष तले छिप धूप की जब मरोड़ती बांह

(७)
मानव जीवन से रचा अपना विषम विवाह
धूप-छांह ने संधि की छोड़ सौतिया डाह

(८)
बड़ा चतुर है करा के धूप-छांह का मेल
दोनों के संग खेलता दिन दोरंगा खेल

(९)
अंधियारा घिरने लगा जब करने को चोट
किरणें बतियाने लगीं छिप झुरमुट की ओट

— आनन्दवल्लभ शर्मा 'सरोज'

महा वनपाल का कार्यालय, चाथम, पोर्ट ब्लेयर,
(अंडमान) ७४४१०२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्बाध फर्राटा

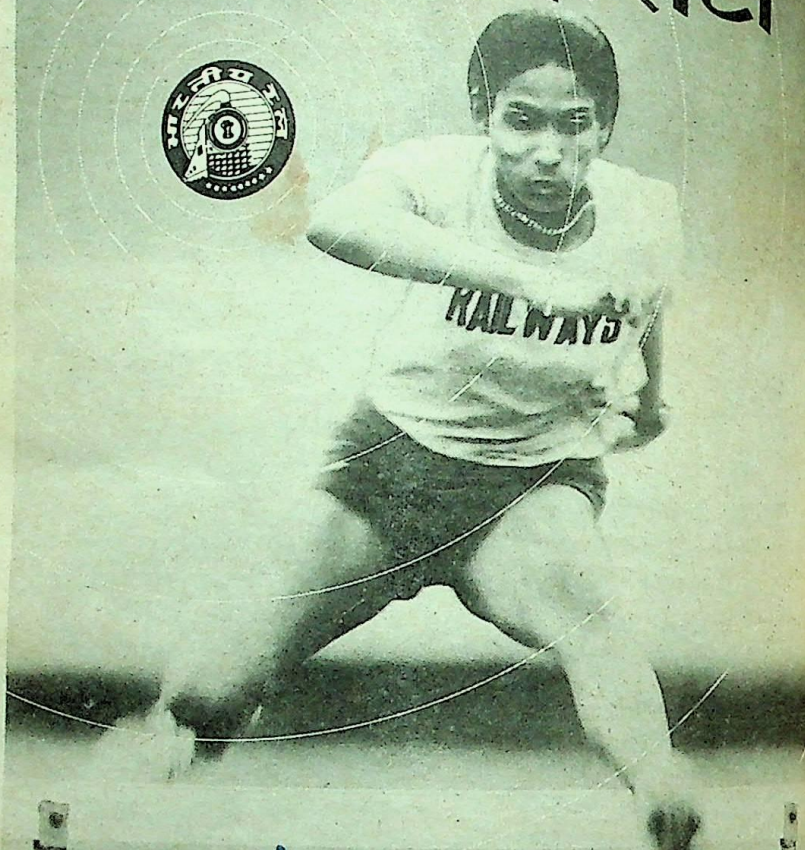

दौड़ शुरू, गज़ब रफ्तार पर दमदार कदमों की लयकारी, अन्तिम चरण में विस्फोटक फर्राटा — पहला स्थान, और विजय मंच पर राष्ट्रीय सम्मान की पताका लहराई.

स्टेफी डिसूज़ा, वी॰ अनुसूया बाई, गीता जुत्शी, एंजेल मेरी जोसेफ, एम॰ डी॰ वालसैम्मा, वन्दना शानबाग, आशा अग्रवाल, पी॰ टी॰ ऊषा. एम॰ सटन, जी॰ पी॰ भल्ला, गुलज़ारा सिंह, टी॰ आर॰ जोशी, के॰ एल॰ पावेल, जरनैल सिंह, आर॰ ज्ञानशेखरन्, गोपाल सैनी, साबिर अली, राज कुमार, बहादुर प्रसाद और उनके अनेकों साथी. इनमें से हरेक एथलेटिक सितारे ने पिछले कुछ दशकों में बड़ी शान से रेलवे का प्रतिनिधित्व किया और देश को जीत का सेहरा पहनाया है. उनकी यशस्वी सफलता पुरानी यादों को ताज़ा करती है. उनका दृढ़ संकल्प हमें विजय के शिखरों पर पहुंचाने की प्रेरणा देता है.

क्रीड़ा-जगत में भारतीय रेल का कीर्तिमान अनोखा है. विभिन्न राष्ट्रीय चैम्पियनशिपों में रेलवे हर साल बीस से भी अधिक खिताब जीतती है.

"अर्जुन" पुरस्कार से सम्मानित हर चौथा खिलाड़ी रेलवे का प्रतिनिधि होता है यह प्रतीक है भारतीय रेल के विशाल परिवार के सोलह लाख लोगों की शक्ति, शारीरिक क्षमता और टीम-भावना का.

जी हाँ, भारतीय रेलवे का निष्ठा अविचल है. एशिया में रेल मार्गों के इस सबसे विस्तृत जाल पर हर रोज़ एक करोड़ दस लाख लोग सफर करते हैं. हर रोज़ दस लाख टन माल ढोया जाता है. हर रोज़ पृथ्वी से चंद को दूरी तय होती है. एक बार नहीं, चार बार. भारतीय रेल का लक्ष्य है बेहतर उत्पादकता और जनता की अधिकाधिक सेवा.

क्रीड़ा-जगत का आदर्श है—'तीव्रतर, उच्चतर और दृढ़तर' बनना. भारतीय रेल हर मैदान में इस सूत्र को साकार बनाने में संलग्न है.

भारतीय रेल
सतत शिखर की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं छिपे मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम हैं अल्प।

—संपादक

क. 'ट्राइटन' सौरमंडल के किस ग्रह का उपग्रह है ?

ख. उसका आकार कितना है ?

ग. उसकी विशेषता क्या है ?

२. क. अफरीका में आखिरी उपनिवेश कौन-सा था, जो अब स्वतंत्र हो गया है ?

ख. उस पर किसका आधिपत्य था ?

३. क. देश में गरीबी की रेखा से नीचे जनसंख्या का प्रतिशत अनुपात कितना है ?

ख. इससे दस वर्ष पूर्व कितना था ?

४. पिछले कुछ वर्षों में देश में वन-क्षेत्र में कमी होने की वार्षिक दर क्या रही है ?

५. किस महापुरुष को मरणोपरांत तीन दशक से भी अधिक समय बीतने पर देश के सर्वश्रेष्ठ अलंकरण 'भारत-रत्न' से सम्मानित किया गया है ?

६. क. सर्वाधिक प्रतिष्ठित धार्मिक पुरस्कार 'टेम्पलटन पुरस्कार' इस वर्ष किसे प्रदान किया गया है ?

ख. यह पुरस्कार कितनी राशि का है ?

७. क. देश को 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा किसने दिया था ?

ख. उसने किस संगठन की स्थापना की थी ?

८. क. 'उसने कहा था' कहानी का लेखक कौन है ?

ख. उसकी अन्य दो कहानियां कौन-सी हैं ?

९. देश में सबसे पहली निम्नलिखित संस्थाएं कहां और कब खुलीं ?

क. मेडिकल कालेज, ख. इंजीनियरिग कालेज, ग. महिला-विद्यालय।

१०. अंगरेजी को देश की राजभाषा बनाने का काम किसने शुरू किया था ?

ख. उससे पहले राजभाषा क्या थी ?

११. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

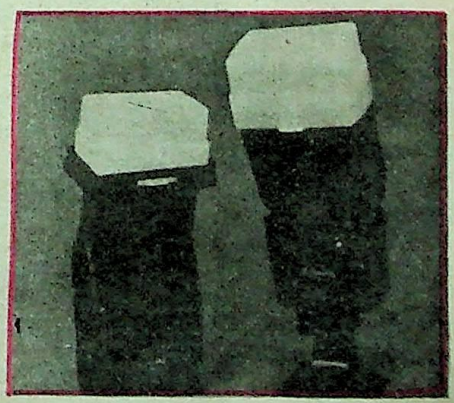

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेनापति

● मनोज दास

वे सेवा-निवृत्त मेजर थे, पर सारा शहर उन्हें 'जनरल' कह कर पुकारता था । कुछ युवा रंगकर्मियों के अनुरोध पर जनरल ने एक नाटक में भूमिका करना स्वीकार कर लिया । लेकिन नाटक के प्रदर्शन के दिन डॉक्टरों ने जनरल को अभिनय करने से मना कर दिया...फिर क्या हुआ ?

हमारे छोटे-से शहरी-जीवन में फिर कभी वैसा उन्माद नहीं छाया था । हालांकि, वहां जीवन का मतलब हम अपने कई लोगों को समझाया करते थे और जीवन का चरम प्रमाण प्रस्तुत करते थे साल में एक बार-कोई नाटक मंचन करके ।

हवा की व्यापक महक और कोयल का दुस्साहस हमें पहाड़ पर बनी कोठी के फाटक तक ले आये थे ।

फाटक के उस ओर से भौंका था तीन बड़े कुत्तों ने, लेकिन हमारे पक्ष में था बसंत । इसलिए उन कुत्तों से न घबराकर प्यार से तरह-तरह की आवाजों से उन तीनों के साथ हमने मित्रता स्थापित करने की कोशिश की । भले ही हम सहसा सफल न हुए हों पर हमारे अनुरोध से आकर्षित हो बाहर आये स्वयं सेनापति ।

'सुसंध्या जनरल !' हमने एक स्वर में कहा । हालांकि, वे मेजर जनरल के रूप में सेवा-निवृत्त हुए थे, उन्हें 'जनरल' कहकर संबोधित करना शिष्टता है, यह हम जानते थे ।

जनरल भल्ला खुश नजर आये । एक हाथ से कुत्तों को संभालते हुए दूसरे हाथ से उन्होंने फाटक खोला ।

ऊंचाई में वे हमसे डेढ़े थे । उनकी मूंछें दो हथौड़ियों के मेल-सी दिख रही थीं ।

"समझे युवकों, भौंकनेवाले कुत्ते काटते नहीं, यह जो अंगरेजी की कहावत है, इस पर जरा भी विश्वास मत करना । क्योंकि, इस कहावत के बारे में खुद कुत्तों को कोई जानकारी नहीं है, यह चेतावनी तो किसी विद्वान ने दी है ।"

हम लोग उनके चबूतरे में सजी कुरसियों पर बैठने के फिराक में थे । उन्होंने अपने पैजामे की जेब से एक कागज निकालकर हमारे आगे धर दिया । वह एक नोट था ।

"जी ?"

"इससे ज्यादा की उम्मीद मत करो । इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

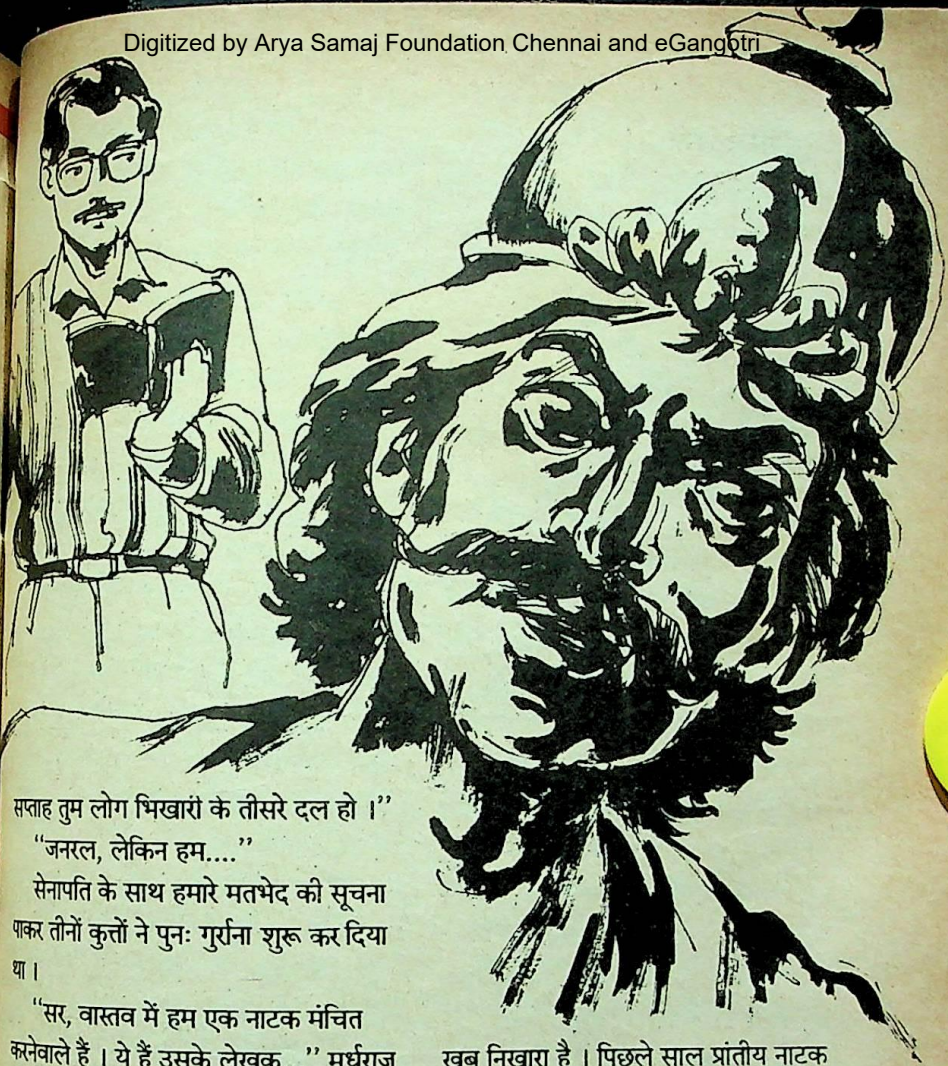

सप्ताह तुम लोग भिखारी के तीसरे दल हो ।"

"जनरल, लेकिन हम...."

सेनापति के साथ हमारे मतभेद की सूचना पाकर तीनों कुत्तों ने पुनः गुर्राना शुरू कर दिया था ।

"सर, वास्तव में हम एक नाटक मंचित करनेवाले हैं । ये हैं उसके लेखक..." मर्धराज ने मेरी ओर संकेत करते हुए कहा, "और ये हैं निर्देशक ।"

मैं और मर्धराज एक साथ शरमाये ।

सेनापति ने तब तक वह नोट वापस नहीं लिया था । उसे रूमाल की तरह गुड़ीमुड़ी कर रहे थे ।

"नाटक के तीसरे अंक के तीसरे दृश्य में एक छोटी-सी भूमिका है—सेनापति की । लेकिन हमारे लेखक ने उस पात्र के व्यक्तित्व को खूब निखारा है । पिछले साल प्रांतीय नाटक प्रतियोगिता में वह पुरस्कृत भी हुआ था ।"

"और, सर, मर्धराज-यही है, वह निर्देशक के रूप में जाने-माने मर्धराज ।"

"और, सर, यदि हमसे कोई गलती हो रही हो तो क्षमा कीजिएगा । हमने सोचा, यदि स्वयं जनरल भल्ला इस भूमिका में आयें तो कितना अच्छा हो ! एक सचमुच का सेनापति अब तक किसी नाटक में सेनापति होने की जानकारी हमें नहीं है," मैंने कहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह वाकई एक ऐतिहासिक घटना होगी, जनरल," अध्यापक बांटू ने कहा ।

"यह भूमिका होगी कितनी जीवंत !" मर्धराज ने कहा ।

"इस शहर के लोग चौंकेंगे और खुश होंगे," मैंने दुबारा कहा ।

सेनापति ने वह नोट जेब में रख लिया । उसके बाद उन्होंने अट्टहास किया प्रचंड । हम मुग्ध हुए और बैठ गये ।

अभी तक चबूतरे में सिर्फ एक ही बत्ती जल रही थी । उन्होंने और दो स्विच दबा दिये । पूरी दीवार पर उनके योद्धा-जीवन की नाना कृतित्वों की यादगारभरी तसवीरें झिलमिला उठीं ।

रोशनी के प्रवाह में उनका चेहरा पालतू बाघ-सा भीषण सुंदर दिखायी दिया । वे पुनः हंसने लगे ।

उसके बाद बहुत-सी अनर्गल बातें कहने और बार-बार हंसते हुए उन्होंने हमारा प्रस्ताव स्वीकार करने की बात स्पष्ट कर दी ।

उनसे विदा लेकर लौटते समय खुशी से विभोर हो काफी देर तक हमलोग बातचीत नहीं कर सके थे । सेनापति के सानिध्य ने हमें कितनी जल्द वयस्क बना दिया था ।

वे कोई मामूली सेनापति नहीं थे । उनके बारे में हमने कई कहानियां सुन रखी थीं । सारी की सारी वीरता तथा मनोरंजकता से जुड़ी हुई । पिछली लड़ाई में, किसी दुर्गम इलाके में, एक बार किसी पहाड़ पर चढ़कर उस ओर की स्थिति का जायजा लेना आवश्यक जान पड़ा । लेकिन सिकुड़े और चढ़ाईदार रास्तों से होकर जीप से पहाड़ की चोटी पर पहुंचना बड़ा मुश्किल था । अपने ड्राइवर को झिझकते देख सेनापति ने उसे इतनी जोर-से थप्पड़ मारा था कि बेचारा छिटककर दूर जा गिरा । सेनापति ने करीब अन्य बीस जीपों को अपने पीछे-पीछे आने का निर्देश देकर रॉकेट की रफ़्तार से खुद जीप चलाकर पहाड़ की चोटी पर जा पहुंचे । ऊपर पहुंचकर उन्होंने देखा कि उन्हें उस पहाड़ी इलाके का गलत भौगोलिक मानचित्र उपलब्ध करवाया गया है । चोटी पर हाथ-भर जगह भी नहीं थी । देखते-देखते उनकी जीप विपरीत दिशा में लुढ़कने लगी । उसके पीछे-पीछे सारी जीपें लुढ़कने लगीं ।

सेनापति से अनजान पहाड़ के उस ओर छिपी बैठी थी शत्रुओं की एक बटालियन । हमारी बीस जीपों के दुर्धर्ष और प्रबल अवतरण ने उन्हें हत्प्रभ कर दिया था । ऐसी अप्रत्याशित स्ट्रेजी न समझ पाकर वे तितर-बितर हो गये । और इस तरह उस लड़ाई में बिना खून-खराबे के हमारी जीत हुई ।

उस समय सेनापति ने अट्टहास किया था । काफी देर तक पहाड़-कंदराओं में वह अट्टहास प्रतिध्वनित हुआ था । समसामयिक सैनिक इतिहास में प्रचंडतम अट्टहास के रूप में वह एक किंवदंती बन गया था ।

सेवा-निवृत्ति के बाद एक दिन वही सेनापति हमारे ऊंघते शहर में कोठी लेकर रहेंगे, यह हमारी कल्पना से परे थी । और जब यह संभव हो गया, तो हमारे नाटक के जरिए उनकी उसी ऐतिहासिक हंसी की प्रस्तुति भी असंभव नहीं होगी, इसी विचार से हम उनसे मिले थे ।

और ऐसा लगा था, हमने भी युद्ध जीत लिया ।

दूसरे दिन सेनापति से मिलने पर उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

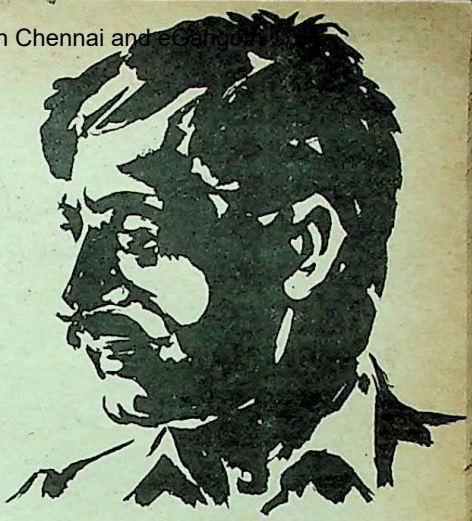

प्रस्ताव रखा रिहर्सल उन्हीं के घर में हो । उनकी पत्नी और पुत्री कहीं दूर गयी थीं, इसलिए हमारे शोर-शराबे से उस सुंदर कोठी के गूंजने में कोई हर्ज नहीं था । कहना न होगा कि वह प्रस्ताव हमने सहर्ष स्वीकार कर लिया !

शुरू-शुरू में कुत्ते कुछ समस्याएं उत्पन्न करते थे । हालांकि, वे बंधे होते लेकिन रिहर्सल के समय जब नाटक का राजा चिल्लाने को बाध्य होता था, तब कुत्ते भी संवेदना के करुण स्वर छोड़ते थे । पर धीरे-धीरे वे इससे भी अभ्यस्त हो गये ।

शत्रु पक्ष के राजकुमार को राजकुमारी चाहने लगी थी । लड़ाई के दौरान वह छिपकर पिता के सेनापति से मिलती है और सिसक-सिसककर रोती हुई यह अनुरोध करती है कि सेनापति शत्रु-पक्ष के राजकुमार को क्षत-विक्षत नहीं करेंगे । उस अपूर्व अनुरोध से चौंकते हुए सेनापति करता है अट्टहास । विस्मय, खीझ, और दया के मेल से अद्‌भुत गूंज थी उस अट्टहास में । हालांकि, नाटक में घटना-प्रवाह आकस्मिक रूप से एक नया मोड़ लेता है और सेनापति को दुबारा सबके सामने आना या हंसना नहीं पड़ा ।

जब तीसरे अंक का तीसरा दृश्य आनेवाला था, उस समय मर्धराज गद्‌गद् होकर कह रहा था, "अरे रे, आपको उठने की जरूरत नहीं ! आप तो स्टेज में ही संभाल लेंगे ।"

अतः सेनापति सोफे पर बैठे-बैठे ही हंसते थे । रिहर्सल के दौरान पंद्रह दिनों तक सेनापति यही करते रहे ।

खुद सेनापति का नाटक में सेनापति बनने की बात शहर भर में फैल गयी थी । जब हम पान-सिगरेट की दुकानों के आगे खड़े होते तो हमें यह अहसास होता कि लोगों की निगाहें तारीफभरे अंदाज में हमें घूर रही हैं ।

स्वयं सेनापति ने भी यह खबर दूर-दराज के लोगों को निश्चित रूप से भिजवायी थी । नाटक प्रस्तुति के दिन सुबह ही उनकी सफलता की कामना करते हुए दो टेलिग्रामों का पहुंचना हमने देखा था । उसमें से एक उनकी पत्नी का था; और दूसरा दामाद समेत एक महीने के नाती के नाम का ।

लेकिन उस दिन सुबह से ही सेनापति गंभीर लग रहे थे । क्रमशः उस गंभीरता ने इतना विशाल रूप धारण कर लिया कि अपराह्न में मैं और मर्धराज उनसे उस बारे में सवाल करने को तैयार होकर उनकी कोठी में जा पहुंचे ।

कोठी से बाहर निकल रहे थे सेनापति के अंतरंग मित्र वृद्ध डॉक्टर उग्रसेन । हमें देखते ही उन्होंने कहा, "मैं तुम बच्चों को ढूंढ़ रहा था । क्या तुम लोग अपना नाटक एक महीने बाद नहीं कर सकते ?"

हमारे कुछ कहने से पहले, ही पीछे से एक डपटभरी आवाज आयी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बकवास मत करो, डॉक्टर !"

"तुम बड़े जिद्दी आदमी हो, भल्ला ! तुमसे लेटे रहने को कहा ना था !" उग्रसेन ने पलटकर डांटा ।

"सुनो उग्र, दोस्त होकर तुम दुश्मनों जैसी हरकतें मत करो । तुम जानते हो, एक दिन मैंने तेज आंधी और हिमपात को तुच्छ मानकर अपनी सेना लिए हुए शत्रु के चंगुल से एक उपत्यका का पुनरूद्धार किया था; तुम यह भी जानते हो, किस तरह एक बार लगातार गोलावर्षण के बीच से आगे बढ़ते हुए मैंने शत्रुओं पर आक्रमण करके कैसी तबाही मचा दी थी । आज डर जाऊं मैं ?" इतना कहकर सीना दबाये सेनापति पुनः कोठी में चले गये ।

"भल्ला ! तुम बेहद जिद्दी हो !" कहकर डॉक्टर चले गये ।

मैं और मर्धराज सन्न रह गये । उसी शाम तो नाटक होनेवाला है, तारीख बढ़ाने के प्रस्ताव से हम पागल-से हो गये । हालांकि, सेनापति के अलावा भी वह नाटक किया जा सकता है । उस तरह का बदलाव कितना ही शर्मनाक क्यों न हो, उस छोटी-सी भूमिका के लिए कलाकारों की कमी नहीं थी ।

लेकिन वह प्रस्ताव सेनापति अपनी ओर से न रखे, तो हम कुछ कर भी नहीं सकते थे !

सेनापति का बावर्ची हमें अंदर बुला ले गया ।

आलीशान बिस्तर पर सेनापति लेटे हुए थे । हमें देख वे धीरे-धीरे मुसकराये । आम तौर पर वह गंभीर रहते थे या फिर अट्टहास करते थे- इस तरह मृदु-मुसकान करते हमने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था । न जाने क्यों, उनकी वह मुसकराहट अति सुंदर लगने पर भी मुझे उससे दुःख हुआ ।

"उग्रसेन पागल है ! वह सोचता है, मैं दर्शकों का सामना करने से डरता हूं और इसीलिए मेरे सीने में दर्द शुरू हो गया है । मुझे कुछ नहीं हुआ है, समझे ? तुम लोग निश्चिंत रहो ।" उन्होंने सीने पर दोनों हाथ रखकर सवाल किया, "क्या तुम्हें भी लगता है, मैं डर रहा हूं ?"

"नहीं जनरल ! भला, इतना बड़ा अवास्तविक सवाल हमारे मन में उठ सकता है ?"

हंसने का विफल प्रयास करते हुए बाहर आकर हमने अपनी-अपनी छाती में दर्द महसूस किया ।

शाम तक डॉक्टर उग्रसेन तीस मील दूर शहर से विशिष्ट हृदय-रोग विशेषज्ञ डॉक्टर कर्मकार को ले आये । डॉक्टर कर्मकार के साथ आया था उनका सहायक ।

नाटक शुरू होने से पहले विंग्स में सोफे पड़ गये थे और डॉक्टरों ने अपने औजार सहित स्थान ग्रहण कर लिया था । हमारी ओर से कहीं कोई कमी न रह जाए, इसलिए हमने अपने दल के दो युवा डॉक्टरों को भी रंगमंच के अंदर सीने पर स्टेथो चमकाते हुए गश्त लगाने को छोड़ दिया था । इसके अलावा मर्धराज के पिता, जो कि सुप्रसिद्ध होमियोपैथ थे, उन्हें भी इस संकट की सूचना मिली थी और वे ग्रीन-रूम में एक ओर अपना छोटा-सा बक्सा धरकर गाल में हाथ रखे बैठे रहे ।

हमारी मानसिक स्थिति कैसी भी क्यों न रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेहद अभ्यस्त अभिनय में किसी ने कोई
नहीं निकाली । आया तीसरे अंक का
दृश्य । सेनापति सजे-धजे बैठे थे । परंतु
वे हंस रहे थे, ना ही किसी से बातें कर रहे

मंच पर उनके प्रवेश करते ही स्तब्ध रह गया
गृह । विंग्स के भीतर सांस-थामे हम देख
थे । डॉक्टर वर्ग सोफा छोड़कर खड़े हो
थे ।

राजकुमारी के यथाविधि अपना अनुरोध
करने के बाद सेनापति को दो शब्द
कर हंसना था । उन्हें जो कुछ कहना था
, लेकिन उसके बाद बगैर हंसे खड़े रहे ।
का दाहिना हाथ धीरे-धीरे सीने तक चला
।

मर्धराज और हमारा चेहरा फक्क पड़ गया ।
कर्मकार का सहयोगी स्क्रीन की रस्सी
युवक की ओर जाने लगा । उसने निश्चय
स्क्रीन की रस्सी छुड़वाकर उस दृश्य को
ही समाप्त कर दिया होता । डॉक्टर
स्थान काल भूलकर केवल पात्रों को
करके मंच में जाने के लिए उठ खड़े हुए ।
लेकिन ठीक उसी वक्त सेनापति ने हंसना
कर दिया । कितनी प्रचंड थी वह हंसी !
कुमारी रो पड़ीं । जनता मंत्रमुग्ध हो गयी ।
सभी चकित थे ।

आवश्यकता से दुगुनी तेज व पांचगुनी लंबी
हंसकर अंत में सेनापति निवृत हो गये ।
गिर गया । डॉ. उग्रसेन, डॉ. कर्मकार
अन्य लोग अंदर दौड़ गये । प्रेक्षागृह

तालियों से गूंज रहा था, सेनापति ने पहले जो सीने पर हाथ रखा था, उसे लोगों ने परिपक्व अभिनय के ही हिस्से के रूप में स्वीकार किया था ।

उम्मीद से भी अधिक सफल हुई थी हमारी प्रस्तुति ।

सेनापति को तत्काल ढोकर कोठी में ले जाया गया और बिस्तर पर लिटाया गया । उन्हें होश नहीं था । होश आने पर वे बार-बार हंसे थे । वैसी खुश करनेवाली हंसी उन्होंने पहले कभी नहीं हंसी थी, यह बात हमें उनके बावर्ची ने बतलायी थी ।

उनकी अस्वस्थता की खबर पाने के दो दिनों के भीतर उनके दामाद सहित, बेटी और नाती-नतनी सभी आ गये थे । फलस्वरूप हम फिर उनकी कोठी में नहीं जा सके ।

सेनापति स्वस्थ हो गये; लेकिन कुछ महीने बाद दुबारा हृदय-रोग से पीड़ित होकर चल बसे ।

अखबारों में उनके जीवन की अनेक वीरताभरी कहानियां प्रकाशित हुईं । लेकिन हम वह सब पढ़कर संतुष्ट नहीं हो सके । हमारी ओर से अध्यापक बांटू संपादकों को पत्र लिखकर यह बताना चाहते थे कि एक विशेष परिस्थिति में हमारे नाटक में अभिनय करना ही सेनापति के जीवन की श्रेष्ठतम वीरतापूर्ण घटना है । लेकिन पत्र का मर्म कई लोग ठीक से नहीं समझेंगे, इसी आशंका से हमने वह छपने नहीं भेजा ।

अनुवाद : डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र

कोई मनुष्य मानवता से बड़ा नहीं है । —बेडोर मार्कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिश्ते-नाते

● उजरा असगर

गर्मियों की दोपहर ढल चुकी है। शाम के साये गहरे होते जा रहे हैं। घर में आज बहुत चहल-पहल है।

गोगो आज चार वर्ष बाद अमरीका से घर आ रही है अपने पति के साथ। अब वह गोगो नहीं रही बल्कि, गौहर मसूद बन चुकी है और दो नन्हें-नन्हें बच्चों की मां भी। मैं बड़े-से दालान में सरकंडे के मोढ़े पर बैठी भागते-दौड़ते लोगों को देख रही हूं, जो गौहर मसूद के स्वागत की तैयारियों में लगे हैं। रमजू ने फूलों की क्यारियों को पानी से सींच दिया है और कच्चे आंगन में छिड़काव भी कर दिया है। मिट्टी की सोंधी-सोंधी खुशबू मेरे नथुनों में घुसती चली जा रही है और साथ ही उदासी भी धीरे-धीरे मेरी रग-रग में ऐसे भरती जा रही है, जैसे दिल को कोई मुट्ठी से मसल रहा हो। सहन में पलंगों पर सफेद-सफेद चादरें बिछायी जा रही हैं और नयी-नयी कुरसियों को सजाया जा रहा है।

मगर अम्मा को तो नये फैशन की वस्तुओं से घृणा है। यह भला सरकंडे के मोढ़े और रंगीन पाटियों की पीढ़ियां क्यों नहीं बिछवातीं? मैं सोचती हूं और इत्मीनान से बैठी हुई, भागते-दौड़ते नौकरों और सलाह देती अम्मा को देखती रहती हूं।

'ऐ है, यह लड़की भी जाने किन ख्यालों में खोयी बैठी रहती है—गुमसुम...,' अम्मा की आवाज घर के किसी कोने से आकर मेरे कानों से टकराती है और मैं मुसकरा पड़ती हूं। एक फीकी मुसकान। गोगो और नाजिथ कहा करते थे, 'बाजी, यह हलकी-हलकी मुस्कराहट बड़ी जान-लेवा होती है, अगर तुम्हें कोई ऐसे मुस्कराता हुआ देख ले तो बस....।'

'तो बस क्या... ?' भैया पूछते।

'जान दे बैठे', नाजिथ हंस पड़ता।

मगर अब नाजिथ या गोगो में से कोई भी नहीं जानता कि मेरे अंदर आज दर्द का असीम सागर हिलोरे ले रहा है। इन बीते वर्षों ने इस मुस्कराहट में इस सीमा तक जहर घोल दिया है कि शहद की मिठास का तो अनुभव ही नहीं रहा। आज यह मुस्कराहट निर्दयी हो सकती है, दुखद कहला सकती है, लेकिन जान-लेवा तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं ही हो सकती । गोगो को सचमुच अब अपने शब्द वापस लेने पड़ेंगे । मगर उसे आज फुरसत कहां होगी कि वह मेरी मुस्कराहट और उसकी बारिकियों पर ध्यान दे पाये । मोढ़े के पिछले गोले और आरामदायक भाग से टेक लगाये बैठी, मैं जाने क्या सोच रही हूं । नीले आसमान के पश्चिमी छोर पर एक बड़ा-सा तारा झिलमिला रहा है, जैसे वह जल की सतह पर हिलोरें ले रहा हो । शाम का पहला तारा वर्षों से यूं ही जगमगा रहा है, शायद, संसार के अस्तित्व में आने के समय से लेकर आज तक या उससे भी पहले से । शायद, यह तारा प्रकृति के प्रारंभ का संकेत हो, सुंदर और आकर्षक । संसार की ही भांति हृदय को मोह लेनेवाला और शांति लूट लेनेवाला । आकर्षक और विस्मित करनेवाला । इसी अंदाज और इसी रूप में देखा है ढलती शाम और उभरती रात के संगम पर झिलमिलाता एक खूबसूरत और चमकता तारा । और उसे देखकर मुझे कुछ याद आया है । दिल में किसी दर्द ने करवट बदली है और अहसास के तार झनझना उठे हैं ।

कॉलेज के लॉन में लगी मेजों पर सफेद चादरें और रंग-बिरंगे कपड़ों में सजे-धजे लड़के-लड़कियां घास पर बिखरे सुंदर फूलों की तरह आनंद-विभोर थे । तभी सरसराती हवा-जैसी आवाज मेरे कानों में पड़ी कि 'कितना सौंदर्य है कि देखनेवाला दीवाना हो जाए !'

मैंने घूमकर देखा, मेरे बराबर तुम खड़े थे । बोले, 'मैं आज की इस संध्या की चर्चा कर रहा था । सौंदर्य कुछ अधिक ही निखरा हुआ लगता है न ?' तुम शरारत से मुसकरा रहे थे और दूर आकाश पर एक तारा झिलमिला रहा था ।

'शायद ।'

'शायद नहीं, सच में ! मगर दुःख यही है कि आप मेरी आंखों से नहीं देख सकती न इसे ।'

तुम्हारे कथन में उदासी की झलक थी । मैंने बहुत दिनों से अनुभव किया । कॉलेज की

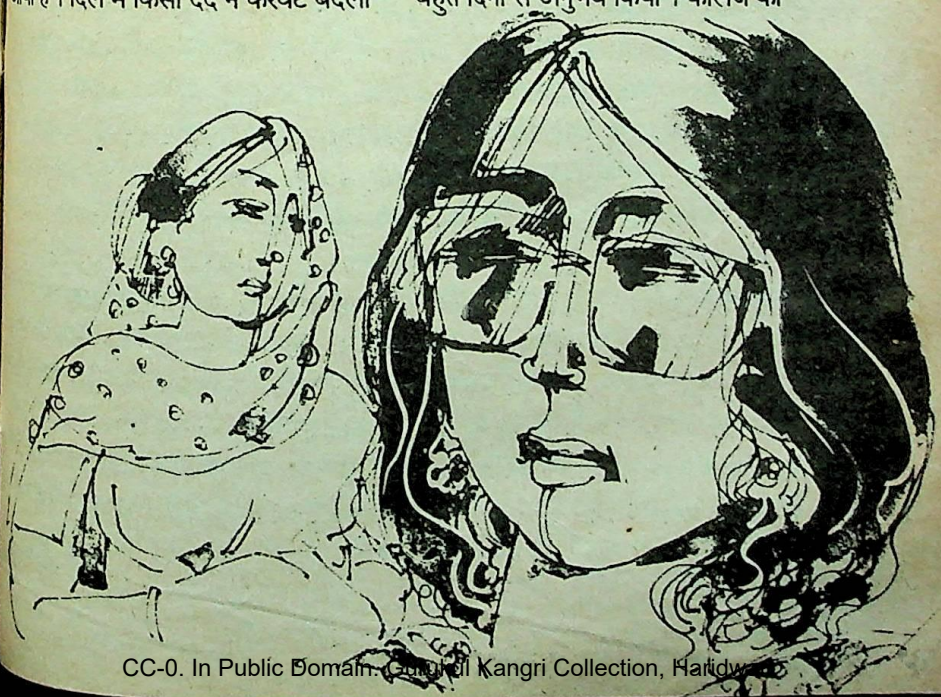

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया में मुझे फूंक-फूंककर कदम धरना था। आजादी बड़ी मुश्किल से बड़े बलिदान के बाद मिली थी मुझे। बाबा की सेवा-टहल ही घर से कब पांव बाहर निकालने देती थी। यह तो भैया थे कि किसी न किसी तरह कॉलेज तक जा पहुंचे थे। और वे हमारे लिए एक तरह से शिक्षा के द्वार बन गये थे। अब बाबा भी नहीं रहे। वह एक छायादार वृक्ष थे, जिसकी छांव अब हम पर नहीं रही थी, पर उनके व्यक्तित्व का भय हृदय के किसी कोने में अवश्य ही यथावत बना हुआ था, मैं कॉलेज की निर्लज दुनिया में पूरी तरह सजग थी, फिर भी एक अनुमान धीरे-धीरे पल रहा था और मुझे अपने में जकड़ता चला जा रहा था कि मुझे भी कोई चाहता है...कोई पसंद करता है।

मेरी रातें रंगीन स्वप्नों से बोझिल और दिल सुगंध से भरपूर रहने लगा था। मैं कहीं भी होती, शाम का वह पहला चमकता तारा हर जगह मेरी स्मृति का केंद्र रहता और साथ ही यह अनुमान कि वह भी इसे देख रहे होंगे।

क्षण-क्षण समय के पंख पर उड़ते रहे।

भैया ने लिखा— 'तुम्हारे कॉलेज में कोई साहब हैं, तुम्हारे लिए अपना रिश्ता भेजा है, तुम अवश्य जानती होगी, मैं पता लिख रहा हूं, तुम अपनी राय से अवगत कराओ, जिससे मैं उन्हें कोई खबर दे सकूं।'

हृदय धड़क उठा और भैया का पत्र हाथों में ही कांप उठा।

बड़े गंभीर और सिद्धांतवादी थे तुम, मुझसे स्वयं ही पूछ लेते भला! फिर मैंने सोचा था कि मगर तुम ऐसा करते तो, तुम्हारी उस प्रतिष्ठा पर आंच आती, जो कॉलेज के पूरे स्टाफ को प्रभावित किये हुए थी।

छुट्टियों में घर गयी तो गोगो शरारत से बोली, 'देखा, मर मिटा न कोई इस मुस्कराहट पर ?'

'गोगो तू भी कुछ पढ़ ले न!' मैंने वास्तविक बात टालकर उसे सलाह दी। मगर गोगो को रंगीन-भड़कीले कपड़े पहनने से ही फुर्सत कहां थी ? वह एक कान से मेरी सलाह सुनती और दूसरे कान से निकाल देती।

वह बरसात के दिनों में आंगन में खड़े आम के पेड़ की डाली पर झूला डलवाती, सखी-सहेलियों को इकट्ठा करती, रोज नये पकवान बनाती और अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर सारा दिन झूला झूलती और गीत गाती। पढ़ने-लिखने से उसका रिश्ता दूर का भी नहीं था। उसकी रुचियां अलग थीं, सोच अलग थी।

हम सोचते थे कि 'कैसे इसका जीवन सुधरेगा। फिर सोचते, पड़ जाएगी किसी जमींदार के पल्ले...।'

मैं उसे समझाती मगर उस पर कोई असर न होता। एम.ए. करते-करते मेरी आंखों पर ऐनक आ गयी, लेकिन गोगो वैसी ही थी—अल्हड़ और अनजान, बात बे-बात पर खिलखिलाकर हंस पड़नेवाली, इसी तरह तेज, वैसी ही चंचल।

पढ़-लिख लेने का प्रभाव यह पड़ता है कि गांव का वातावरण काट खाने को दौड़ता है और सुनसान दोपहर में मक्खियों की भनभनाहट, दूर से आती हुई रहट की आवाज या फिर गोगो और उसकी सहेलियों की हंसी की बेतरतीब आवाजें बहुत ही उबा देतीं। घबराकर मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

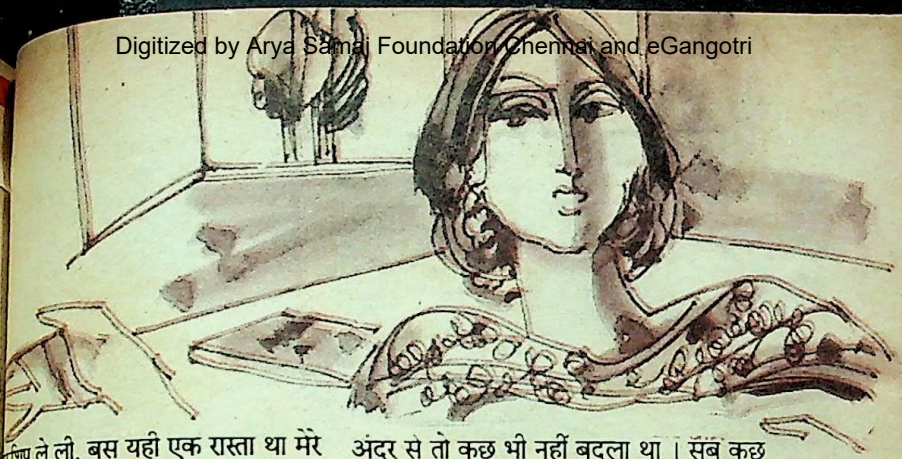

शिप ले ली, बस यही एक रास्ता था मेरे
फिर 'उनके' लायक भी तो बनना था, जो
से पी-एच.डी. की डिग्री लेने गये हुए

कितने बड़े साहब बहादुर बन कर
?' खाली पीरियड में स्टाफ के कमरे में
अकसर मैंने सोचा । और यह भी सोचा
मगर कहीं ऐसा न हो, कहीं मेरा सपना
ही न रह जाए ? क्या मालूम, वहां की
दुनिया में पहुंचकर उन्होंने अपना रास्ता
लिया हो... ? मगर नहीं, वह ऐसा नहीं
कते । वह कभी ऐसा नहीं करेंगे, उन्हें
-प्रिय है, वह सादगी की मूर्ति हैं । वह
भी मेरे थे, आज भी मेरे हैं और.... ।'
लते-बढ़ते दिन, भागते क्षण मुझे गंभीर
गये । मैं सादगी पसंद हो गयी । स्पष्टतः
बदल गयी थी, गोगो और नाजिथ मुझे
रान रह गये ।

जी बहुत पढ़-लिख गयी हैं', गोगो लंबी
खींचकर कहती, 'मैं भी ऐसी ही हो जाती
-पढ़कर—गुपचुप अपनी आदत में
' फिर वह खिलखिलाकर हंस पड़ती,
मौलसरी के बहुत-से फूल एक-एक कर
ड़े हों ।

, मैं बिलकुल बदल गयी थी । मगर अंदर से तो कुछ भी नहीं बदला था । सब कुछ वैसा ही था । वही धक-धककर धड़कता, बेकाबू-सा दिल, वैसे ही भीगे-भीगे भाव, उसी तरह जरा-सी आहट पर घबराकर चौंक उठना, मगर बाहर से बड़े गंभीर बने रहना, बहुत ही गंभीर । फिर भी, कभी-कभी यूं भी होता कि पूरी तरह संतुष्ट और गंभीर लोग किसी बिलकुल मामूली और महत्वहीन बात पर ऐसे चौंक उठते हैं कि पता नहीं क्या हो गया हो ? उस दिन फोन की घंटी सुनकर मैं भी ऐसे ही चौंक गयी थी । लपककर मैंने रिसीवर उठा लिया था ।

'अरे भई, क्या कर रही हो ! सुनो, फौरन आ जाओ, बस जल्दी से । देखो, ज्यादा देर मत लगाना । वह आ गये हैं अमरीका से...हां-हां तुम जल्दी पहुंचो ।' दूसरी तरफ से भैया ऊंचे स्वर में बोल रहे थे । मेरे बोझिल हृदय में एक धड़कन हुई और होठों में मुसकान थिरक उठी, मन चाहा कि गुनगुनाऊं, गाऊं कोई-सा चंचल गीत, मगर मैं एक शिक्षित और प्रौढ़ लड़की थी, कोई छिछोरी-सी छोकड़ी नहीं । अपने धड़कते हृदय को संभालकर मैं उठी और आवश्यक वस्तुएं समेटने लगी । सोचा, अच्छा तो अकेले हैं और बरसों पहले किये गये वायदे की स्वीकृति चाहते हैं, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका मतलब यह हुआ कि वह अकेले हैं और मेरी प्रतीक्षा में हैं ।

★ ★ ★

तब भी इसी तरह आंगन में छिड़काव किया गया था और बैठने के कमरे को स्वयं भैया ने अपने हाथ से अपनी देखरेख में सजवाया था । भैया की शिक्षा ने कम से कम यह तो किया ही था कि गांव में बना यह घर अब सभी शहरी सुविधाओं से भरापूरा हो गया था । वैसे,इस घर का सब कुछ बदल चुका था, सभी अंदाज और सभी तौर-तरीके, फिर भी अगर कुछ नहीं बदला था, तो वह थी— गोगो । आज भी वैसी ही अल्हड़ और अनजान, उसी तरह चंचल । बात-बात पर हंस पड़ने और फिर हंसी से लोट-पोट हो जाने की उसकी आदत आज भी वैसी ही थी ।

'इस तरह नहीं हंसते बेवकूफ', मैं उसे समझाती, 'इनसान बिलकुल देहाती लगता है—जाहिल ।' तो वह हंसकर कहती, 'लगने दीजिए मुझे जाहिल, मुझे बुद्धिमान लगकर करना भी क्या है ?'

मुझे अपने अमरीका से लौटनेवाले मंगेतर पर रौब भी तो डालना था, भला मगर इसे उससे क्या ? सफेद साड़ी और चंपा के फूल के गजरे बालों में लगाये मैंने बड़े उत्साह से कमरे में प्रवेश किया । वह बिलकुल वैसे ही थे, जरा भी नहीं बदले थे...वैसे ही उलझे-उलझे घने बाल, वही बड़ी-बड़ी कुछ कहती-सी नीली आंखें, धीरे-धीरे मुसकराते होंठ, संपूर्ण रूप से स्मार्ट । मैं कुछ सिटपिटायी, जैसे मेरे भीतर की लड़की जाग उठी हो । ठहरा हुआ शांत हृदय अचानक ही धड़क उठा था । मुश्किल से संभलकर मैं एक कुरसी पर टिक गयी । इन्हें बहनों और मेरे भैया ने शायद, अवसर की नजाकत को भांप लिया और बातों का रुख मोड़ दिया । उन्होंने एक उचटी-सी नजर से मुझे तभी देखा था, जब मैंने कमरे में प्रवेश किया था, वह भी ऐसे जैसे हमेशा से देखते आ रहे हों, न कोई आश्चर्य न अचंभा । बिलकुल शांत और भाव-शून्य ।

अधिक शिक्षित हो जाने पर मनुष्य कितना सभ्य हो जाता है—सोचते हुए मैं एक विश्वास के साथ उनकी बातों में शामिल हो गयी थी । वर्तमान राजनीति की बातें, देश के विभाजन की समस्या, युद्ध से हानि और शांति से लाभ की बहुत-सी बातें । एक तरह से दुनिया के हर विषय पर बात हुई और मैं बिना झिझक बोलती रही । और सोचती रही कि तुम यह देख-सुनकर कितने खुश होंगे कि मैंने किस सीमा तक स्वयं को तुम्हारे योग्य बना लिया है ।

'चलिए, खाना तैयार है ।' गोगो ने अपने स्वाभाविक हंसी के साथ अंदर आकर सूचना दी । तुम ऐसे चौंके जैसे पहली बार कोई अजीब-सी चीज देख ली हो । 'मेरी छोटी बहन है गोगो', मैंने परिचय कराया ।

'आप क्या करती हैं भई, क्या आप भी बाजी की तरह...' तुमने वाक्य अधूरा छोड़ दिया । आंखें निरंतर गोगो पर टिकी रहीं, वह दुपट्टा दांतों में दबाकर हंस पड़ी ।

'बहुत नालायक है, बड़ी मुश्किल से मैट्रिक किया है', मैंने शिकायत की ।

'बस, बहुत है और कितना पढ़ती... ?'

तुमने पहली बार मेरी तरफ देखा, लेकिन तुम्हारी आंखें गोगो पर ही टिकी रहीं । गोगो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

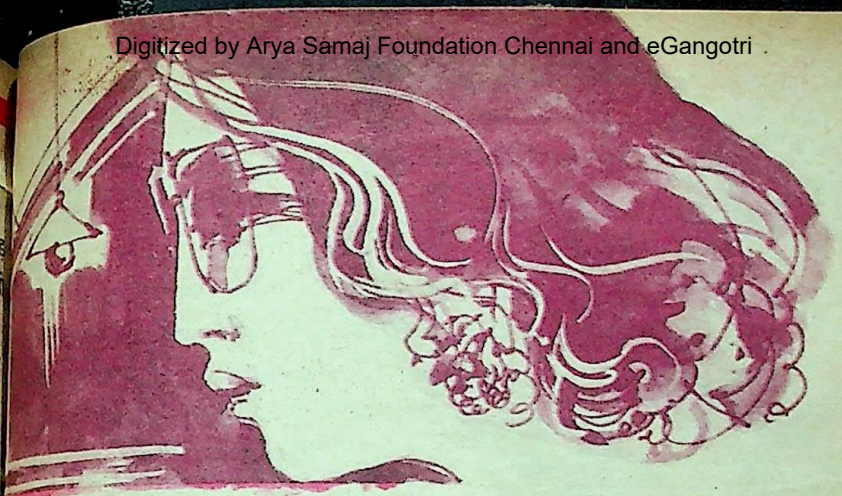

कर दोहरी-सी हो गयी और फिर भाग
। तुम उसका जाना अंत तक देखते रहे,
नेत्रों में चंचलता थी और होंठों पर
मान ।
क्या गोगो की मूर्खतापूर्ण देहाती अदा
दिल लूट ले गयी ?' एक क्षण को मेरे
क में एक कौंध-सी लपकी । मगर यह
हो सकता है ? मैं स्वयं ही अपनी सोच पर
दा हो गयी ।
आठ वर्ष बाद जो व्यक्ति संसार के सबसे
देश की खाक छानकर केवल मेरे लिए
ता आया हो, उसके बारे में भला मैं यह क्या
ने बैठ गयी और यह भी वास्तविकता है कि
लिखकर व्यक्ति पूरी तरह शंकालु हो जाता
।

खाने की मेज पर बैठकर नाजिथ ने ऐलान
, 'आज का सब खाना हमारी बाजी ने
बनाया है, अपने हाथों से ।'
इस बेतुकी बात की भला यहां क्या
श्यकता थी ?' मैंने नाजिथ को घूरा ।
'ओ भई, इतनी पढ़ी-लिखी लड़की यूं ही
ी-रोटी पकाये, बहुत-सी जाहिल लड़कियों
रह, तो यह अजीब बात है न—भाई
जान ।' नाजिथ ने तुम्हें संकेत करके मेरी बात का उत्तर दिया ।

'हूं', तुमने एक लंबी हूं के साथ सलाद अपनी प्लेट में डाली और डिश आगे बढ़ा दी । मैं चाहती थी कि तुम कुछ कहते, कोई फड़कता-सा वाक्य, कोई प्रशंसा का शब्द, कम से कम प्रेमभरी नजरों से मेरी ओर एक निगाह ही डाल लेते । मगर, तुम चुपचाप खाना खाते रहे । मैंने जो नयी-नयी चीजें तुम्हारे लिए इतनी मेहनत से तैयार की थी, मानों वे सब व्यर्थ थीं । और मेरा परिश्रम निरर्थक । मैं कुढ़कर रह गयी ।

'भोजन सचमुच बहुत स्वादिष्ट है,' तुम्हारी अम्मी ने शायद, मेरा दिल रखने को कहा ।

'बाजी, निश्चय ही बहुत कमाल की चीज है भई । इतनी शिक्षित, भोजन पकाने में अनुभवी और हर काम जाननेवाली ।' तुम्हारी बहन ने बड़ी सादगी से मुझे प्रोत्साहित किया और तुम मेरी तरफ देखकर धीरे-से मुसकराये तो लगा कि मेरी सारी मेहनत सफल हो गयी हो ।

तुम को बिदा करते हुए भैया बहुत गंभीर हो गये थे और अम्मी के चेहरे पर तो परेशानियों की परछाइयां रेंगने लगी थीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आप सोचकर जवाब दीजिएगा ।,' तुम्हारी अम्मी ने कार में बैठते हुए अम्मी से कहा था, और फिर कच्ची पगडंडी पर तुम्हारी गाड़ी धूल उड़ाती हुई चली गयी । धूल का बादल छटा, तो पश्चिम की तरफ बड़ा-सा तारा झिलमिलाता नजर आया । शायद,गाड़ी की खिड़की के शीशे से तुमने भी शाम का पहला तारा देखा हो, स्कूली-लड़कियों की तरह एक मूर्खतापूर्ण विचार उभरा और मैं मुसकरा दी ।

'बाजी, तुमसे एक बात करनी है', भैया ने मेरा बाजू पकड़कर धीरे-से अंदर धकेला ।

'कहिए', मैंने आश्चर्य से भैया के गंभीर चेहरे की तरफ देखा ।

'वह बाजी, बात कुछ यूं है कि....', भैया उधेड़-बुन में फंसे थे ।

'कहिए न, भैया, क्या बात है, मैं सब कुछ सहने के लिए तैयार हूं । क्या वह विवाह कर चुके हैं ?'

'नहीं, यह बात नहीं है बाजी ।'

'फिर क्या बात है ? कह डालिए, जो भी बात है ?' मैंने एक खोखली-सी मुसकराहट के साथ कहा ।

'इन्होंने गोगो का रिश्ता मांगा है ।'

एक क्षण तो मुझे यूं लगा, जैसे मैं कोई भयानक स्वप्न देख रही हूं या भूचाल आ गया है । मगर फिर जल्दी ही मेरी आंखें खुल गयीं और मुझे अपनी डिग्रियों के बंडल याद आ गये और अपनी आयु की प्रौढ़ता भी, संभलकर मैंने कहा, 'यह रिश्ता अच्छा है, कर दीजिए, हमारी गोगो तो बड़ी नसीबवाली निकली कि वे लोग इसका रिश्ता मांग रहे हैं ।'

इस समय अपनी आवाज स्वयं मुझे अजनबी लगी । भैया ने आश्चर्य से मुझे देखा

'यह तुम कह रही हो बाजी,तुम, जो सब आठ वर्षों से इस व्यक्ति की प्रतीक्षा में बैठी हो ।'

'हां भैया, यह मैं कह रही हूं, अपने दिल की तमाम गहराइयों से, और मैं तो बहुत पहले आपको बताना चाहती थी कि मैंने विवाह न करने का निर्णय ले लिया है । भला, इस आयु में कोई तुक है इस झंझट को मोल लेने की, और फिर जरा सोचिए तो सही, गोगो के लिए हम कितने परेशान थे, चलिए इसकी समस्या हल हो गयी । मेरा क्या है स्वयं कमाती हूं, जीवन सुख से व्यतीत हो रहा है ।' भैया ने गरदन झुका ली और मुझे लगा कि मेरी ऐनक के शीशे धुंधले पड़ रहे हैं । आंसुओं के कण पलकों पर अटककर रह गये हैं ।

☆ ☆ ☆

हम पढ़े-लिखे लोगों का यह भी तो हाल कि खुलकर रो भी नहीं सकते । मैं बरामदे के साये में मोढ़े पर बैठी सोच रही हूं गोगो नहीं गौहर मसूद आज तुम्हारा सामना कैसे करूंगी और तुमसे किस भाव से मिलूंगी साफ है कि सब कुछ बदल गया है । तुम भी और मैं भी मगर हृदय में पलती भावनाएं तो आज भी वैसे ही कोमल हैं, वक्ष में वही धड़कता दिल, वही गुपचुप स्मृतियों की भीड़ और वही पश्चिमी आकाश पर चमकता शाम का पहला तारा । रिश्ते बदल लेने से भावनाएं तो नहीं बदल जाती हैं— मसूद !

अनुवाद : कुलदीप कपूर

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

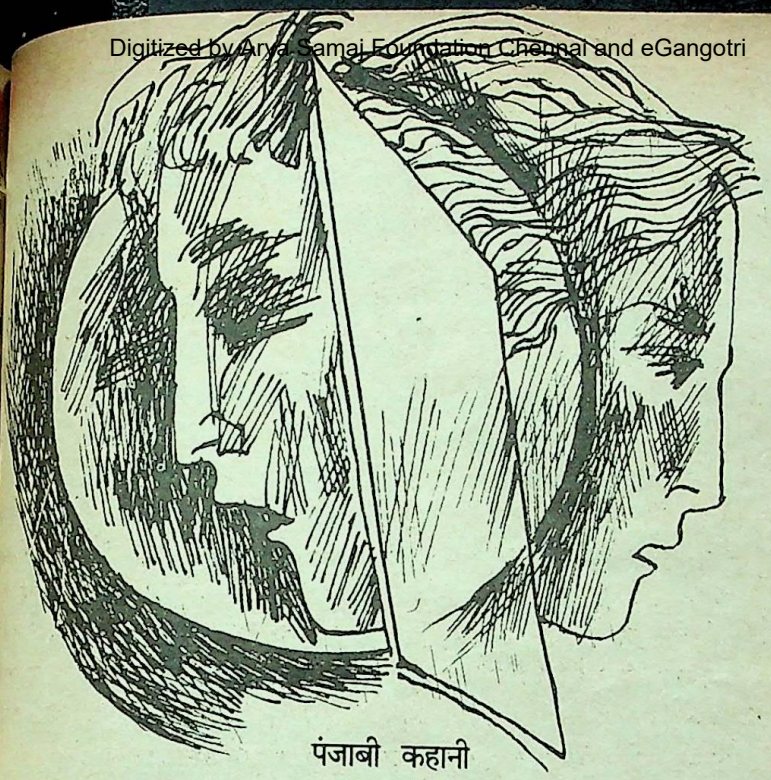

पंजाबी कहानी

तुम्हारा कमरा, मेरा कमरा

● दिलीप कौर टिवाना

दफ़्तर में मेरा कमरा और तुम्हारा कमरा साथ-साथ है। फिर भी यह कमरा न तो उस तरफ जा सकता है और न ही वह कमरा इस तरफ आ सकता है। दोनों की अपनी-अपनी सीमाएं हैं। दोनों के बीच में एक दीवार है। दीवार बहुत पतली-सी है। गलती से भी अगर कभी तुम्हारा हाथ दीवार से जा टकराता है, तो आवाज मेरे कमरे में पहुंच जाती है।

एक दिन तुम्हारी तरफ शायद कोई इस दीवार में कील ठोक रहा था, मेरे कमरे की सारी दीवारें धमक उठी थीं। मैं उठकर बाहर आ गयी कि देखूं। पर तुम्हारे कमरे के दरवाजे पर मोटा परदा लटक रहा था। मैं लौट आयी। आजकल लोग खामख्वाह अपने दरवाजे-खिड़कियों पर भारी परदे लगा लेते हैं, ताकि बाहर से किसी को कुछ दिखायी न दे, लेकिन तभी मुझे खयाल आया कि परदा तो मेरे दरवाजे के आगे भी है। कभी-कभी जब किसी कारण तुम अपने चपरासी को डांटते हो, मैं काम करते-करते कलम रखकर बैठ जाती हूं। मेरा मन करता है कि तुमसे पूछूं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आप सोचकर जवाब दीजिएगा ।,' तुम्हारी अम्मी ने कार में बैठते हुए अम्मी से कहा था, और फिर कच्ची पगडंडी पर तुम्हारी गाड़ी धूल उड़ाती हुई चली गयी । धूल का बादल छटा, तो पश्चिम की तरफ बड़ा-सा तारा झिलमिलाता नजर आया । शायद,गाड़ी की खिड़की के शीशे से तुमने भी शाम का पहला तारा देखा हो, स्कूली-लड़कियों की तरह एक मूर्खतापूर्ण विचार उभरा और मैं मुसकरा दी ।

'बाजी, तुमसे एक बात करनी है', भैया ने मेरा बाजू पकड़कर धीरे-से अंदर धकेला ।

'कहिए', मैंने आश्चर्य से भैया के गंभीर चेहरे की तरफ देखा ।

'वह बाजी, बात कुछ यूं है कि....', भैया उधेड़-बुन में फंसे थे ।

'कहिए न, भैया, क्या बात है, मैं सब कुछ सहने के लिए तैयार हूं । क्या वह विवाह कर चुके हैं ?'

'नहीं, यह बात नहीं है बाजी ।'

'फिर क्या बात है ? कह डालिए, जो भी बात है ?' मैंने एक खोखली-सी मुसकराहट के साथ कहा ।

'इन्होंने गोगो का रिश्ता मांगा है ।'

एक क्षण तो मुझे यूं लगा, जैसे मैं कोई भयानक स्वप्न देख रही हूं या भूचाल आ गया है । मगर फिर जल्दी ही मेरी आंखें खुल गयीं और मुझे अपनी डिग्रियों के बंडल याद आ गये और अपनी आयु की प्रौढ़ता भी, संभलकर मैंने कहा, 'यह रिश्ता अच्छा है, कर दीजिए, हमारी गोगो तो बड़ी नसीबवाली निकली कि वे लोग इसका रिश्ता मांग रहे हैं ।'

इस समय अपनी आवाज स्वयं मुझे अजनबी लगी । भैया ने आश्चर्य से मुझे देखा,

'यह तुम कह रही हो बाजी,तुम, जो आठ वर्षों से इस व्यक्ति की प्रतीक्षा में बैठी हो ।'

'हां भैया, यह मैं कह रही हूं, अपने दिल की तमाम गहराइयों से, और मैं तो बहुत पहले आपको बताना चाहती थी कि मैंने विवाह न करने का निर्णय ले लिया है । भला, इस उम्र में कोई तुक है इस झंझट को मोल लेने की, और फिर जरा सोचिए तो सही, गोगो के लिए हम कितने परेशान थे, चलिए इसकी समस्या हल हो गयी । मेरा क्या है स्वयं कमाती हूं, जीवन सुख से व्यतीत हो रहा है ।' भैया ने गरदन झुका ली और मुझे लगा कि मेरी ऐनक के शीशे धुंधले पड़ रहे हैं । आंसुओं के कण पलकों पर अटककर रह गये हैं ।

☆ ☆ ☆

हम पढ़े-लिखे लोगों का यह भी तो हाल कि खुलकर रो भी नहीं सकते । मैं बरामदे के साये में मोढ़े पर बैठी सोच रही हूं गोगो नहीं गौहर मसूद आज तुम्हारा सामना कैसे करूंगी और तुमसे किस भाव से मिलूंगी साफ है कि सब कुछ बदल गया है । तुम भी और मैं भी मगर हृदय में पलती भावनाएं तो आज भी ही कोमल हैं, वक्ष में वही धड़कता दिल, वही गुपचुप स्मृतियों की भीड़ और वही पश्चिमी आकाश पर चमकता शाम का पहला तारा । रिश्ते बदल लेने से भावनाएं तो नहीं बदल हैं— मसूद !

अनुवाद : कुलदीप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

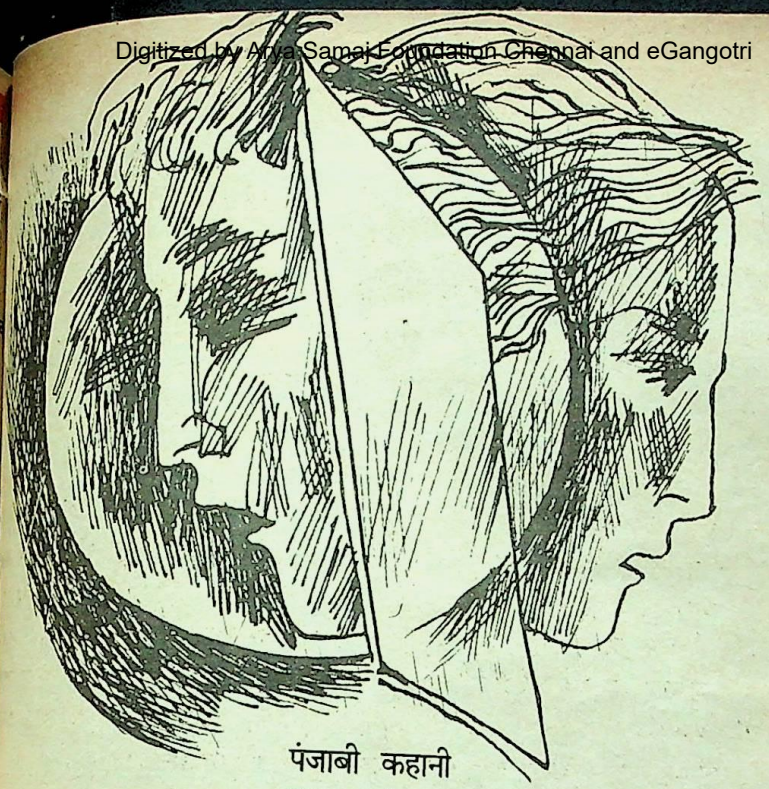

पंजाबी कहानी

तुम्हारा कमरा, मेरा कमरा

● दिलीप कौर टिवाना

घर में मेरा कमरा और तुम्हारा कमरा साथ-साथ है। फिर भी यह कमरा न तो उस तरफ जा सकता है और न ही वह कमरा इस तरफ आ सकता है। दोनों की अपनी-अपनी सीमाएं हैं। दोनों के बीच में एक दीवार है। दीवार बहुत पतली-सी है। गलती से भी अगर कभी तुम्हारा हाथ दीवार से जा टकराता है, तो आवाज मेरे कमरे में पहुंच जाती है।

एक दिन तुम्हारी तरफ शायद कोई इस दीवार में कील ठोक रहा था, मेरे कमरे की सारी दीवारें धमक उठी थीं। मैं उठकर बाहर आ गयी कि देखूं। पर तुम्हारे कमरे के दरवाजे पर मोटा परदा लटक रहा था। मैं लौट आयी। आजकल लोग खामख्वाह अपने दरवाजे-खिड़कियों पर भारी परदे लगा लेते हैं, ताकि बाहर से किसी को कुछ दिखायी न दे, लेकिन तभी मुझे खयाल आया कि परदा तो मेरे दरवाजे के आगे भी है। कभी-कभी जब किसी कारण तुम अपने चपरासी को डांटते हो, मैं काम करते-करते कलम रखकर बैठ जाती हूं। मेरा मन करता है कि तुमसे पूछूं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या बात है ?' लेकिन फिर खयाल आता है, तुमको शायद, यह अच्छा न लगे कि जब तुम चपरासी को डांट रहे थे, मैं सुन रही थी । तुम्हें तो इस बात का ध्यान ही नहीं रहता कि तुम अगर गहरी सांस भी लेते हो, तो वह भी मेरे कमरे में सुनायी देती है ।

एक दिन मेरे कमरे का पंखा बंद हो गया । शायद, बिजली चली गयी थी । कुछ क्षण मैंने इंतजार किया । फिर गरमी से घबड़ाकर मैं कमरे से बाहर बरामदे में आ गयी, जो कि दोनों कमरों के आगे साझी जगह है । मैं जानती थी तुम्हारे कमरे का पंखा भी बंद हो गया होगा । फिर भी मैंने जरा-सा तुम्हारे कमरे में झांककर पूछा, 'तुम्हारा पंखा चल रहा है क्या ?' मेरा मतलब था कि अगर नहीं चल रहा, तो तुम भी इस साझे बरामदे में आ जाओ । जब अंदर घुटन हो, तो पल-दो-पल के लिए बाहर आने में कोई हर्ज नहीं है ।

'नहीं पंखा तो नहीं चल रहा, लेकिन मैंने पिछली खिड़की खोल ली है,' तुमने कहा । मुझे शायद पिछली खिड़की का ध्यान ही नहीं आया, इसीलिए मैं कमरे से बाहर आ गयी थी ।

एक दिन काम करते-करते मेरे हाथों से कलम गिर गयी, निब टूट गयी । उस दिन मैंने सोचा कि तुम्हारे कमरे से कोई कलम मंगवा लूं । पर इस डर से कि कहीं तुम यह न कह दो कि तुम्हारे पास कोई फालतू कलम नहीं है, मेरी हिम्मत नहीं पड़ी । कई बार ऐसा भी होता है कि हम खुद ही सवाल करते हैं और खुद ही उसका जवाब दे देते हैं ।

कभी-कभी मैं सोचती हूं कि अगर दोनों कमरों के बीच की यह दीवार टूट जाए... । लेकिन इससे तुम्हारा कमरा एक अलग कमरा नहीं रह जाएगा, मेरा कमरा भी एक अलग कमरा नहीं रह जाएगा, फिर तो ऐसे लगेगा, जैसे बहुत खुला, बहुत बड़ा-सा एक ही कमरा है । लेकिन, ऐसा करना शायद, उचित न हो । बनानेवाले ने कुछ सोचकर ही यह अलग-अलग कमरे बनाये होंगे ।

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मैं इस पक्की सीमेंट की दीवार में से भी देख सकती हूं । तभी तो मुझे पता लग जाता है कि आज तुम काम नहीं कर पा रहे हो । कभी ऊपर छत की तरफ ताकने लगते हो, तो कभी हाथों की लकीरों की ओर । कभी फाइल खोलकर बैठ जाते हो, कभी बंद कर देते हो । कभी जूते उतार देते हो, और कभी पहन लेते हो ।

कभी-कभी तुम बहुत प्रसन्न होते हो, तो तुम मेज पर पड़े पेपरवेट को घुमाने लगते हो । धीरे-धीरे सीटी बजाते हो । इस दीवार का सहारा लेकर कुरसी पर बैठे-बैठे जमीन से पांव उठा लेते हो । उस वक्त मैं इधर जरा भी खटका नहीं होने देती कि कहीं तुम चौंक न जाओ ।

कभी-कभी आते-जाते समय तुम कमरे से बाहर मिल जाते हो । "कहिए, कैसी हैं ।" तुम पूछते हो ।

'ठीक हूं,' मैं जरा-सा मुसकरा कर कहती हूं । और तुम अपने कमरे में चले जाते हो और मैं अपने कमरे में । न वह कमरा इधर आ सकता है, न वह कमरा उधर जा सकता है । दोनों की अपनी-अपनी सीमाएं हैं । दोनों के बीच में एक दीवार है ।

बीच में चाहे दीवार है, फिर भी जिस दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम दफ़्तर न आओ, अपने कमरे में बैठे हुए न हो, मुझे कुछ अजीब-सा लगने लगता है। उस दिन मैं कई बार घड़ी देखती हूं। कई बार पानी पीती हूं। लोगों को टेलीफोन करती रहती हूं। सारे काम जो भी हो, निबटा देती हूं। 'आज साहब नहीं आये।' उधर से निकलते समय तुम्हारे चपरासी से पूछती हूं। फिर वह स्वयं ही बता देता है कि 'साहब बाहर गये हुए हैं', 'साहब की तबीयत ठीक नहीं है', 'साहब के रिश्तेदार आये हुए हैं' और 'साहब ने कितने दिन की छुट्टी ली है!'

और तब मुझे बहुत ऊल-जलूल बातें सूझती रहती हैं कि आज से सौ साल पहले इस कमरे में कौन बैठता होगा? साथवाले कमरे में भी कोई बैठता होगा? आज से सौ साल बाद इस कमरे में कौन बैठा होगा। साथवाले कमरे में कौन बैठा होगा? आदमी मरता क्यों है? फिर खयाल आता है, आदमी पैदा ही क्यों होता है? और फिर इन बातों से घबड़ाकर मैं दफ़्तर के अन्य कर्मचारियों से मिलने निकल पड़ती हूं।

"आये नहीं इतने दिन?" जानते हुए भी मैं तुमसे पूछती हूं।

"बीमार था", तुम कहते हो।

"अब कैसी है तबीयत?"

"हां ठीक हूं, धन्यवाद", कहते हुए तुम अपने कमरे में चले जाते हो और मैं अपने कमरे में चली जाती हूं। तुम अपने काम में डूब जाते हो और मैं अपने काम में।

एक बार मैं कई दिन छुट्टी पर रही।

"मेमसाहब नहीं आ रहीं?", तुमने मेरे चपरासी से पूछा था।

"जी, वे बीमार हैं", उसने बताया।

"अच्छा...अच्छा..." कहते हुए तुम अपने कमरे में चले गये।

डाक देने के लिए घर आये चपरासी ने मुझे बताया यह सब। अगले दिन जब बुखार जरा कम था मैं दफ़्तर आ गयी। तुम्हें शायद, पता नहीं लगा। उस दिन तुमने दो-तीन बार चपरासी को डांटा। कई बार कागज फाड़े, जैसे कुछ गलत लिखा गया हो। एक-दो मिलनेवालों को भी कहला भेजा कि किसी और दिन आयें।

किसी काम से तुम कमरे से बाहर निकले। मैं भी किसी काम से बाहर आयी।

"आयीं नहीं इतने दिन?" तुमने जानते हुए भी पूछा।

"बीमार थी।"

"अब कैसी हो?"

"हां ठीक हूं, धन्यवाद", कहकर मैं अपने कमरे में चली गयी और तुम अपने कमरे में चले गये। न यह कमरा उधर जा सकता है, न वह कमरा इधर आ सकता है। दोनों की अपनी-अपनी सीमा है। दोनों के बीच में एक पुखता दीवार है। एक कमरा तुम्हारा है। एक कमरा मेरा है। फिर भी मैं सोचती हूं कि यही क्या कम है कि दोनों कमरे साथ-साथ हैं, और दोनों के दरम्यान एक दीवार ही तो है।

अनुवादिका- मनजीत भाटिया

कला अनुकरण नहीं करती बल्कि व्याख्या करती है। —*मैजिनी*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंधी कहानी

कवि

● मोहन कल्पना

"मैंने तुम्हें कहा, तुम कविता करना छोड़ दो । यह काम यूरोपीय लोग करें तो करें, वे काफी धन कमाते हैं । इंडिया में क्या है ? यहां तो मरने के बाद ही कद्र होती है । जीवनकाल में केवल दुःख मिलता है ।"

'मां, चरण छूता हूं' सुगन ने अपने मित्र की कोठी में प्रवेश कर उसकी मां के पांवों पर हाथ रखे । बड़े-से हाल में सोफा सेट, कालीन, चित्र, टेलीफोन, टी.वी., वीडियो आदि । खिड़कियों और बाल्कनी के बड़े-से दरवाजे पर परदे ।

"भगवान नहा रहा है ।"

सुगन ने कोई उत्तर नहीं दिया ।

बाहर गरमी पड़ रही थी । हाल वातानुकूलित होने से सुगन के मुंह का पसीना अपने आप सूखने लगा था ।

जेवरात से सजी हुई बुढ़िया ने कमर पर हाथ रखकर पूछा, "नौकरी वगैरह करते हो या अभी तक कविता ही करते हो ?"

सुगन को एक बारगी उत्तर सूझा कि कविता करना अपने में एक बहुत बड़ी नौकरी है । उसमें कोई मालिक, कोई नौकर नहीं होता । कविता की सल्तनत में कवि शहंशाह है । मगर उससे बाहर, वह अपनी पत्नी और घर के अन्य सदस्यों का बोझ ढो सकता है या नहीं, यह कहना कठिन है । हां, मैं वह बोझ नहीं ढो सकता । पत्नी कैसे घर चलाती है, यह उसे पता होगा— उसने कभी कोई शिकायत नहीं की । आज मैं अपने पुराने मित्र से थोड़ी-सी मदद लेने आया हूं । कविता में यह मजबूरी नहीं होती । पर उसमें यह मजबूरी मायूसी की जगह अवश्य ले लेती है और मेरे लिए सब मानते हैं कि मैं दर्द का कवि हूं ।

सुगन ने मुसकराकर कहा, "नौकरी करता हूं ।"

"मुझे याद है, तुमने कवि होते हुए भी कराची के डी.जे. सिंध कॉलेज से परीक्षा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम स्थान पाया था । इस बात को लगभग बीस साल हो गये हैं ।...अभी तुम कल्याण शरणार्थी कैंप में ही रह रहे हो न ?''

"जी हां !''

"बहू कैसी है ?''

"सकुशल है ।''

"बच्चे ?''

"एक पांचवीं में और दूसरा सातवीं में पढ़ता है ।''

"भगवान ने तो अपने बच्चों को देहरादून में भेज रखा है । वे वहीं पढ़ते हैं । भगवान की जोरू अभी क्लब से नहीं लौटी है । अच्छा, मैं चलती हूं । आज वीरवार है, रात हो गयी है और मैंने अभी तक वीर-कथा नहीं बांची है । पूरा दिन उपवास रहा है ।...तुम चाय पीओगे ?''

"नहीं, मां । आप कथा बांचें ।''

बुढ़िया गयी । इतने में गाऊन में ढका हुआ भगवान आया । तपाक से बोला, 'अरे तुम, मेरा यार सुगन ! आओ यार, गले लग जाओ !'

सुगन उठ खड़ा हुआ । उसने उस हार्दिक आलिंगन में अपनी ओर से कोई उत्साह नहीं दिखाया ।

दोनों एक सोफे पर बैठ गये । हुक्म मिलने पर नौकर गिलास-टॉप के टेबल पर ब्लैक लेबल व्हिस्की की बोतल, आइस बाक्स, गिलास, सोडा, फाइव फाइव फाइव सिगरेट पैकेट, माचिस, ऐश ट्रे, खाली प्लेट और खानों में बंटा हुआ काजू, चिलगोजों और किशमिश का डिब्बा रखकर गया । यह सारा काम उसने तीन किस्तों में किया । भगवान ने दो गिलासों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्हिस्की डालकर एक गिलास उसकी ओर बढ़ाया और अपना गिलास उसके गिलास से टकराकर कहा, 'चीअर्स !'

सुगन ने गिलास टकराकर टेबल पर रख दिया ।

'शुरू करो ।'

'आज नहीं ।'

'यार, जिंदगी से कुछ तो राहत लें ।'

सुगन ने सिगरेट ली और सुलगायी । कहा, "मेरे लिए सिगरेट ही राहत है ।"

"तुम कौन-सी पीते हो ?"

"सिगरेट पीना बंद कर दिया है ।"

"असंभव !"

"बीड़ी पीता हूं ।"

"सिगरेट क्यों नहीं ?"

"खादी ग्रामोद्योग की नौकरी में एक साल में केवल पांच रुपये का इजाफा मिलता है । उससे केवल बीड़ियां पी जा सकती हैं ।"

"मैंने तुम्हें कहा, तुम कविता करना छोड़ दो । यह काम यूरोपीय लोग करें तो करें, वे काफी धन कमाते हैं । इंडिया में क्या है ? यहां तो मरने के बाद ही कद्र होती है । जीवनकाल में केवल दुःख मिलता है । तुमने कोई उस्ताद नहीं किया, मैंने 'अजीज' को उस्ताद किया था । पर उन्होंने सलाह दी, कविता करना तुम्हारे बस का नहीं, जाकर कोई धंधा करो । आज तुम्हारे पास कविता है, दौलत नहीं । मेरे यहां दौलत ही दौलत है ।"

"क्या तुम्हें शेख अयाज का स्मरण है ?"

"हां, हां, याद आ गया । क्या वह अभी कविता करता है ?"

"कविता जीता है ।"

"फिर ?"

"उसने एक जगह कहा है : अगर कविता में दौलत नहीं है, तो दौलत में भी तो कविता नहीं है ।"

भगवान ने बड़ा-सा ठहाका मारा । कहा, "तुम बुरा न मानो । दोस्ती में सच कहना चाहिए । सच्चे लोगों से बहस में जीतना संभव नहीं है ।"

सुगन मुसकराया ।

"याद है, मैं एक बार तुम्हारे घर आया था ? तुम्हारी पत्नी दादन काम में लगी थी । खुद कपड़े धो रही थी, खुद बरतन मांज रही थी । लेकिन मुझे बहुत बुरा लगा, जब उसने तुम्हारे लिए अखबार लिया । अगर वह अखबार लेना बंद करे, तो तुम बीड़ी की बजाय सिगरेट पी सकते हो ।"

सुगन का मन आहत हो उठा । इस जीवन में क्या एक ग्रेजुएट अखबार पढ़ने का सुख भी नहीं ले सकता ? उसे लगा, उसकी आंखों में खून का आंसू भर उठा था । मगर उसने कोई उत्तर नहीं दिया और वह मुसकराकर गम को पी गया ।

"काफी समय के बाद आये हो । व्हिस्की पीओ । जब दूसरा महायुद्ध समाप्त हुआ था, तब उसका दाम केवल दस रुपये था । आज उसके पंद्रह साल बाद इसका दाम एक सौ रुपये हो गया है ।"

"मैं एक शर्त पर व्हिस्की पीऊंगा ।"

"तुम्हारी सब शर्तें मंजूर हैं...मगर व्हिस्की पीओ ।"

"एक ही शर्त है ।"

"मंजूर है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, पहले वह शर्त सुनो ।"

"कहो ।"

"फर्ज करो, मुझे एक चीज चाहिए । फर्ज करो, व्हिस्की की बोतल चाहिए ।"

"लाख बोतलें, सुगन !"

"लाख नहीं", सुगन मुसकराया, बोला, "केवल एक ।" उसने एक लंबी सांस ली और कहा, "कहते हुए शर्म आती है, क्योंकि दोस्ती में यह बात नहीं आनी चाहिए । बहुत बार तुम्हारी कोठी तक आकर लौट गया हूं । आज बेशर्म होकर तुम्हारे यहां आया हूं । मुझे व्हिस्की की बोतल नहीं, एक सौ रुपये चाहिए ।"

"मैं तुम्हें पांच सौ रुपये दूंगा । यार, बैठो, कुछ पीओ, कुछ सुनाओ । उल्हासनगर की लोकल ट्रेन कब की है ?"

"भगवान, अब दोस्ती यह हो गयी है कि बंबई में कोई दोस्त आता है, तो उससे सिर्फ दो बातें पूछी जाती हैं—बंबई में कब आये ? वापस का रिजर्वेशन कब का है ?"

"मैंने तुमसे यह नहीं पूछा । अल्टमाऊंट रोड से वी.टी. तक कार में केवल दस मिनट लगते हैं । इस समय ट्रैफिक होता नहीं । इस हिसाब से मैं तुम्हारी कविता सुन पाऊंगा ।"

सुगन के चेहरे पर सख्त हो गयी पतली नसें चमड़ी का भीतरी तरफ ले उठीं और उसने शेर कहा,

तेरी अदाओं से दिक हूं, है जिंदगी शातिर,
गम के पहलू तो बदल, मैं शायर हूं आखिर ।

उसका मित्र हंसने लगा । सुगन को उसका हंसना अच्छा लगा । एक सच्चा मित्र ही दोषों पर हंसता है, आलोचना करता है । कैसी मुक्त है यह हंसी !

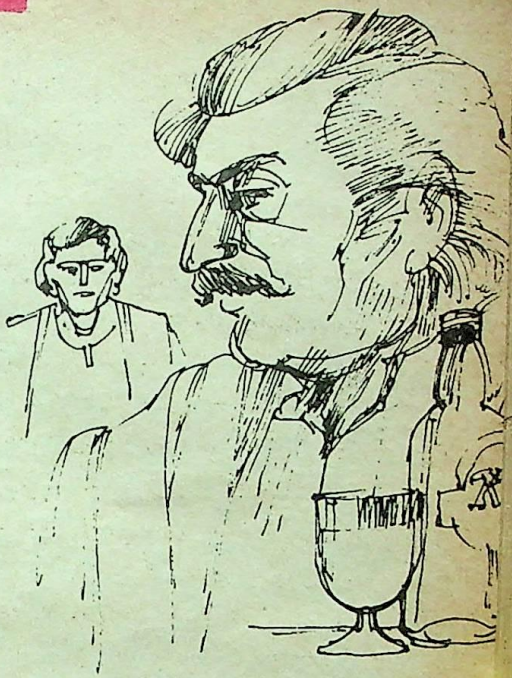

"तुम शायर हो, कवि हो, क्या इसीलिए जिंदगी तुम्हें रियायत दे दे ?"

अब सुगन मुसकराया ।

भगवान कहता गया, "यह शेर प्रभु को एक प्रार्थना है कि हे दीनदयाल ! तुम मेरा गम गलत न करो, उसका रूप बदल दो । अस्पताल के मरीज की रीढ़ की हड्डी टूटी पड़ी है । वह डॉक्टर से यों नहीं कहता कि तुम मुझे ठीक करो, मैं घर जाऊं ! रीढ़ की हड्डी टूटी पड़ी है, वह सिर्फ चाहता है कि डॉक्टर उसका इतना इलाज करे कि वह बिस्तर पर करवट बदल सके !"

सुगन ने कहा, "घुटन में थोड़ी-सी हवा भी अच्छी लगती है । मेरे दोस्त, मैं इतना सर्जनात्मक हूं...कि मुझे गम का भी बनावटीपन नहीं चाहिए ।"

"अब उल्हास नगर में तुम्हारे कई दोस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होंगे।"

"सिर्फ चार हैं।"

"कौन-कौन ?"

"मोहन कल्पना, ईश्वर अंचल, कृष्ण राही, नारायण भारती।"

"बंबई में ?"

"माल्ही, कीरत, उत्तम, सुंदरी, कला... ।"

"दिल्ली में ?"

"नारायण श्याम, लक्ष्मण कोमल... ।"

"पाकिस्तान में ?"

"शेख अयाज, रशीद भट्टी... ।"

"इसका मतलब हुआ, मैं इस लिस्ट पर नहीं हूं।"

"मैं समाजवादी हूं।"

"इसीलिए मैं तुम्हारा दुश्मन हूं ?"

"मैं पर्सनल प्रापर्टी के विरुद्ध नहीं, प्राइवेट प्रापर्टी के विरुद्ध हूं।

"अच्छा, अच्छा।"

"भारत में तो टी.वी., वीडियो का अभी कोई इस्तेमाल नहीं है, फिर तुमने ये सब क्यों लिये हैं ?"

"टोक्यो से लाया। कभी तो यहां काम आएंगे।"

" "

"...."

"और कोई कविता सुनाओ। कई साल हो गये हैं कोई कविता सुने," भगवान ने व्हिस्की पीते हुए साग्रह कहा।

"तुम्हारा होटल कैसे चल रहा है ? फाइव-स्टार है न ?"

"हां", भगवान ने कहा, "दुनिया में तीन प्रकार के लोग अधिक धन कमाते हैं—होटेलिअरस्, बिल्डिरस् और वाइन-मर्चेंट्स।"

सुगन ने बची हुई व्हिस्की पीते हुए कहा, "गिलास खाली है, अब मैं चलूंगा।"

सुगन उठ खड़ा हुआ, तो भगवान ने उसे बिठाकर कहा, "यार, तुम्हें कविता पसंद है और मुझे धन पसंद है। मेरा धन तुम्हारा, कुछ सुनाओ।

सुगन ने उसे अपनी और अन्य मित्र-कवियों की कविताएं सुनायीं। फिर वह उठ खड़ा हुआ। उसे लगा, जैसे उसने कोई लंबा अरसा जेल में बिताया हो।

भगवान ने नौकर से कहा, "शोफर को कहो कि वह गाड़ी गराज से बाहर निकाले और साहब को वी.टी. तक छोड़ आये।

इसके बाद वह दूसरे कमरे में जाकर कुछ रकम ले आया। बंटवारे से पहले सुगन ने सक्खर में खैरपुर की शराब पी थी। विलायती शराब पीने से उस पर खुमार चढ़ गया था। मगर उसने अपना हौसला कायम रखा।

भगवान उसे बाहर दरवाजे तक छोड़ने गया। निस्संदेह, वह कद में लंबा था।...उसने उसे पांच सौ रुपये दिये।

सुगन ने पहले नोटों की ओर, फिर उसकी ओर और फिर जाने के लिए सीढ़ियों की ओर देखा।

भगवान ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "तुम कोई फिक्र न करो। लेकिन दादन को समझाओ कि वह घर को ध्यान से चलाये।"

अब सुगन ने उसके मुंह में, ठीक उसकी आंखों में निहारा। उसे सूझा कि वह उसे कहे कि अगर उसका मतलब यह है कि मेरी पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को घर चलाना नहीं आता, तो मैं बड़ी से बड़ी कीमत पर भी उसे यह कहने का अधिकार नहीं दूंगा। मगर वह चुप रहा।

उसे अहसास हुआ कि उसने उसे जलील किया है। तो भी वह चुप रहा। उसने धीरे-से भगवान से कहा, "मैंने तुम्हारे साथ मजाक किया, मुझे पैसों की बिल्कुल जरूरत नहीं है।"

उसने उसके हाथ में पांच नोट वापस थमा दिये और वह बनावटी मुसकराहट के साथ सीढ़ियों से नीचे उतर गया। बाहर पैदल चल कर बस-स्टैंड पर आ खड़ा हुआ। उसकी आंखों में आंसू जमा न हो पाये, वे उसके मन में शब्दों का रूप लेने लगे—

हाय, ये मेरे अपने
और, मेरे सुनने की यह हालत !
जो देखो, वह नसीहत से
धमकाता रहता है !

उसने उस समय यह फैसला किया कि वह अपनी पत्नी से अपना यह दर्द नहीं बांटेगा। उसने अकसर अपने दर्द उसके साथ नहीं बांटे हैं। उसे बड़ा दुःख होगा कि वह मन में कितने दर्द लेकर जी रहा है। वह उसे दुःख नहीं देगा, चाहे उसने उसे केवल दुःख दिये हैं !

अनुवाद : डॉ. मोतीलाल जोतवाणी

इनके भी बयां जुदा-जुदा

जो भी गुजरा वह मेरी झोली में दुःख डाल गया
हाथ की तरह मुकद्दर ने पसारा है मुझे
—बिमलकृष्ण अश्क

एक ही क्यू में सभी लोग खड़े हैं लेकिन
मुझसे बढ़कर नजर आता नहीं तनहा कोई
—काविश बद्री

थी कोई बात जो हम बात बना लेते थे
एक तआल्लुक से थी जो कुछ भी थी खूबी हममें
—मनमोहन तल्ख

न मिल सको तो रहो दिल में याद की सूरत
जहां कहीं भी नजर आओ अजनबी बन जाओ
—सैयद अनवर

उसे भी अपने मसाइल में मुब्तिला न करो
उदास हो तो किसी दोस्त से मिला न करो
—अज्ञात

जब कोई नहीं सुनता बात दर्द मंदों की
बात और बढ़ती है मुख्तसर नहीं होता
—मुस्तफा जैदी

हम अहले इंतजार के आहट पे कान थे
ठंडी हवा थी गम था तेरा ढल चुकी थी रात
—फिराक गोरखपुरी

वो झूठ बोल रहा था बड़े सलीके से
मैं एतबार न करता तो और क्या करता
वसीम बरेलवी

इस शहर में दुश्मन तो मेरा कोई नहीं था
फिर किसने मुझे कत्ल किया सोच रहा हूं
—मखमूर सिद्दीकी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम शक्ति संपन्न ह्रींकार मंत्र

● मुनि किशनलाल

मनुष्य मेधावी प्राणी है। उसने अंतर शक्तियों को विकसित करने में अपनी मेधा (बुद्धि) का उपयोग किया है। शक्ति, ऐश्वर्य के विकास की ललक हर प्राणी में होती है। चैतन्य आवृत्त रहना नहीं चाहता। चेतना की लौ निरंतर जलती रहती है। उसको विकसित, प्रज्वलित बनाये रखना साधक की अपनी अभीप्सा है। भारतीय मनीषियों ने शक्ति, ज्ञान के विकास के लिए सदैव चिंतन किया है। कला, सौंदर्य के लिए एक ओर पुरुषार्थ किया तो दूसरी ओर मंत्र, तंत्र और यंत्र का भी मुक्तता से उपयोग किया।

ह्रींकार का स्वरूप

ह्रींकार क्या है ? इसके स्वरूप, शक्ति और सामर्थ्य के संबंध में जिज्ञासा होना सहज है। भारतीय परंपरा में शब्द को ब्रह्म माना गया है। एक ओर सर्वोच्च सत्ता परमात्मा को ब्रह्म कहा गया है तो दूसरी ओर शब्द को उस परम अस्तित्व से तौला गया है। यह तुलना नहीं अपितु शब्द के सामर्थ्य की सूचना है। पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण भारत के सभी क्षेत्रों में जो सर्वव्यापी मंत्र और प्रतीक हैं, वे 'ऊंकार' और 'ह्रींकार' एकाक्षर माया बीज हैं। इनकी स्तुति नाना रूपों में प्रज्ञा पुरुष करते हैं। ह्रींकार, एकाक्षर, आदि-रूप, मायाक्षर, कामदं, आदिमंत्र, त्रैलोक्यवर्ण, परमेष्ठि बीज के रूप में प्रतिष्ठित है। ह्रींकार केवल शब्द अथवा प्रतीक ही नहीं है अपितु स्वयं दिव्य शक्ति स्वरूप है, जिससे संसार का पार पाया जा सकता है। ह्रींकार पूर्ण मंत्र है। इसकी प्रतिष्ठा के लिए किसी अन्य मंत्र की अपेक्षा नहीं होती, क्योंकि 'ह्रींकार' स्वयं शक्ति स्वरूप साक्षात 'अर्हम्' है।

ह्रींकार की रचना

ह्रींकार परम अस्तित्व है। उसे अभिव्यक्ति देने के लिए शब्द का सहयोग लेना होता है। शब्द रचना की दृष्टि से 'ह्', 'र्' व्यंजन और 'ई स्वर है। चंद्र और बिंदु उस पर निहित है। शब्द आकृति है, संस्थान है, भौतिक तत्व है। शरीर-संस्थान से प्रतिक्षण अनंत-अनंत परमाणु संयुक्त होते हैं और बिछुड़ते हैं। प्रत्येक पदार्थ से तदाकार आकृतियां प्रतिक्षण निकलकर आकाश मंडल में फैलती हैं। ह्रींकार केवल बाह्य आकार रचना नहीं है, मानसी भी है। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावना से युक्त जब कोई आकृति संस्थान से जुड़ती है, तब वह भी भावभरी बन जाती है । बिना भाव के हजार बार उच्चारण करते जाएं, उसका कोई परिणाम नहीं आ सकता । भावना ही भवनाशिनी है . . . भावना ही शक्ति संपत्ति की सृजक है !

उसे मानस से जपते हैं, तब वह मानसी बन जाती है । मनोवर्गणाओं से निर्मित मानसिक 'ह्रींकार' सूक्ष्म मनोशक्ति के रूप में परिणित हो जाती है । मन के पार जब 'ह्रींकार' शक्ति चेतना में परिणित होती है तब वह चैतसिक बन जाती है । चैतन्य के एक-एक प्रदेश में वह प्रस्फुटित होती रहती है । उस स्फुरण से अनंतानंत कर्म वर्गणाएं निर्जरित होती हैं । चैतन्य शुद्ध स्वरूप में परिणमन करने लगता है हालांकि,यह स्फुरण संपूर्ण नहीं है फिर भी संस्कार विलय की दृष्टि से चैतन्य को अनावृत्त करता है । अनावरण अवस्था ही चेतना की शुद्ध अर्हता है । चौदहवीं सदी के समर्थ विद्वान जिनप्रभ सूरी कहते हैं— ' 'ह्रींकार' चौबीस तीर्थकरों की दिव्य शक्ति से संपन्न है ।' उसके साथ ग्रह, नक्षत्र और दिग्पाल भी अधिष्ठित हैं । यह परमेष्ठि मय है । सिद्ध चक्रमय है । देव, गुरु, धर्म के त्रिगुण संयुक्त पंच भूतात्मक बीजाक्षर हैं । जिस स्थान पर इसका बहुमान, स्मरन, प्रतिष्ठा होती है वहां समस्त सिद्धियां प्रतिष्ठित रहती हैं ।

'ह्रींकार' की देह रचना में 'ह्रीं' चौबीस तीर्थंकरों की शक्ति का प्रतीक है । उस पर आया हुआ चंद्र चिह्न सिद्धशीला का प्रतीक है, उस पर आया हुआ बिंदु सिद्ध आत्माओं के निराकार स्वरूप की अभिव्यक्ति है ।

ह्रींकार का जप और स्मरण

ह्रींकार की महिमा और महत्त्व वेद, आगम और त्रिपिटकों ने बतायी है । तीनों परंपराओं में शक्ति-स्वरूपा के रूप में ह्रीं को प्रतिष्ठित किया गया है । लब्धि, शक्ति, लक्ष्मी, समस्त ऐहिक और पारलौकिक सिद्धियां प्रदान करता है । ह्रींकार के महत्त्व और महिमा से आकर्षित व्यक्ति उसकी प्रतिष्ठा, स्मरण, जप के लिए लालायित होता है ।

ह्रींकार की देह रचना ह्रीं संस्थान से बनती है, संस्थान में निहित शक्ति भावना की है । भावना के द्वारा जब उसमें शक्ति जागरण की प्रक्रिया करते हैं तब भावों में रूपांतरण प्रगट होता है । भाव ही शक्ति और सामर्थ्य को उत्पन्न करते हैं । भावना से युक्त जब कोई आकृति संस्थान से जुड़ती है तब वह भी भावमयी बन जाती है । बिना भाव से हजार बार उच्चारण करते जाएं, उसका कोई भी परिणाम नहीं आ सकता । निर्जीव बलिष्ठ शरीर को सुंदर वस्त्र,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभूषण पहनाने से वह प्राणवान नहीं हो सकता है। भावना ही भवनाशिनी है। भावना ही भव-बंधन का उच्छेद करने वाली हैं। भावना ही शक्ति, संपत्ति की सृजक है।

'ह्रीं' की बाह्य संरचना रूपस्थ पिंडस्थ ध्यान का अंग है। 'ह्रींकार' बीजाक्षर है। एकाक्षरीपद है उसका ध्यान पदस्थ-ध्यान कहलाता है। जब पद का हलका उच्चारण करते हैं तब वह उपांशु जप कहलाता है। यह जप शब्दात्मक है। प्रारंभ में शब्द को धीरे उच्चारित किया जाता है। जब शब्द लय बद्ध बनकर मन में लीन होने लगता है तब शब्दात्मक उच्चारण नहीं रहता। मन में जप की एकलयता बनने से वह चेतना पर अनुभव होने लगता है। जप स्थल से सूक्ष्म से सूक्ष्म और सूक्ष्मतम बनकर सजीव अर्थात कार्यकारी होने लगता है।

ह्रींकार शक्ति विभिन्न रूपों में काम करती हैं। सर्वप्रथम शक्ति की सिद्धी आवश्यक है। सिद्धि के पश्चात अलग-अलग कार्यों के लिए भिन्न-भिन्न वर्णों में उसकी साधना की जाती है। श्वेत वर्ण अध्यात्म की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। मुक्ति की भावनावाला व्यक्ति श्वेत ह्रींकार का ध्यान एवं चिंतन करता है। श्वेत माला, श्वेत वस्त्र, स्थान, आसन आदि भी श्वेत होने से सफलता शीघ्र मिलती है। शरीर पर भी श्वेत चंदन से आलेप कर जाप करने से मंत्र सद्य फलदायी होता है। रक्त वर्ण के ध्यान से वशीकरण होता है। पीले वर्ण के ध्यान से 'श्री' (लक्ष्मी) की प्राप्ति होती है। नील वर्ण के ध्यान से शत्रु तथा बाधा उपस्थित करनेवाले तत्वों का विलय होता है।

'ह्रींकार मंत्र एक लाख जप करने से ऐच्छिक संपदाओं की उपलब्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। उसके लिए दशमांश होम करने का निर्देश है। किंतु जो परंपरा से होम आदि नहीं करते हैं, वे दशमांश से दुगुना जप कर लेते हैं, आर्थात सवा लाख का जप कर मंत्र की शक्ति को जगाने का पुरुषार्थ करते हैं।

ह्रींकार ध्वनि का स्वास्थ्य पर प्रभाव

ह्रींकार को परम ऐश्वर्य से संपन्न शक्ति के रूप में माना गया है। निस्संदेह ह्रींकार ऐसी शक्ति है जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से जप का प्रयोग करने पर इसका प्रभाव दर्शन केंद्र ललाट, आंख, मुख और मस्तिष्क पर होता है। साथ ही स्नायु तंत्र पर विशेष प्रभाव पड़ता है। ह्रींकार का जप अनुभव सिद्ध सत्य है। इससे शरीर मन और चेतना प्रभावित होती है। ह्रींकार का जप एवं ध्वनि के विस्फोट को अनुभवी व्यक्ति से सीखना चाहिए जिससे सफलता शीघ्र प्राप्त होती है।

ह्रींकार न मंत्र है,न तंत्र है,न यंत्र है। ह्रींकार अंतरंग शक्ति है। आत्मानुशासन का प्रतीक है। ध्यानावस्था में अंतर से प्रस्फुटित होने वाला बीज मंत्र है। दूसरे शब्दों में इस सच्चाई को इस प्रकार भी अभिव्यक्ति किया जा सकता है कि ह्रींकार कल्याण कारी मंत्र है, वह यंत्र भी है, तंत्र भी है अपने आप में स्वतंत्र तथ्य भी है।

ह्रींकार सिद्ध मंत्र

ह्रींकार स्वयं परम सिद्धि है,शुद्धि है। उसकी अनुकृति भी अपने आप में परिपूर्ण मंत्र है। ह्रींकार बिना किसी पूर्व और अपर संयोग के समर्थ सत्य है इसलिए केवल ह्रीं का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षरलेखन, जप, स्मरण, चिंतन, निधिध्यासन और ध्यान समस्त शक्तियों को प्रकट करनेवाला है। हींकार से संवेष्टित अथवा संयोजित हजारों प्रकार के मंत्र है, जिनसे आध्यात्मिक, मानसिक, शारीरिक समस्याओं के साथ भौतिक और दैवगतिक समस्याओं का भी समाधान मिलता है। प्रस्तुत है कुछ मंत्र :—

दृष्टि सिद्धि :— ह्रीं नमः । ऊँ ह्रीं नमः ।
शक्ति और सामर्थ्य :— ऊँ ह्रीं नमः।ऊँ ह्रीं सिद्धं नमः ।
बुद्धि और विवेक :— ऊँ ह्रीं ऐं नमः । ऊँ ह्रीं क्लीं नमः ।
ऐश्वर्य और स्मृति :— ऊँ ह्रीं श्री नमः ऊँ ह्रीं पुरुषादानीय पार्श्वनाथाय नमः ।
वक्तृत्व कला : ऊं ह्रीं श्रीं कीर्ति-कौमुदी बागेश्वरी प्रसन्न वरदे कीर्ति मुख मंदिरे स्वाहा ।

इच्छित फल-प्राप्ति मंत्र-सिद्धि से होती है। सिद्धि के लिए विशिष्ट मुहुर्त पुष्य नक्षत्र में विधिपूर्व प्रारंभ करें। साढ़े बारह हजार अथवा सवा लाख जप करें। इससे मंत्र सचेतन हो जाता है। उसके पश्चात प्रतिदिन एक सौ आठ बार मंत्र का स्मरण कर स्वयं का श्रेयस् साधा जाता है।

जन-कल्याणकारी नीतियों में यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया जाए तो निकट भविष्य में धूम्रपान से मुक्त समाज का सपना साकार हो सकता है। यह मत है अमरीका के एक जाने-माने जन-स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ. राबर्ट विंडम का। उनका कहना है कि हरेक बच्चे को तंबाकू से होनेवाले नुकसानों के बारे में बताया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि इस प्रकार के प्रयासों का ही फल है कि पिछले पच्चीस वर्षों में अमरीका में धूम्रपान से जुड़े खतरों के प्रति चेतना बढ़ी है, फलतः जहां सन १९६५ में ४० प्रतिशत वयस्क धूम्रपान करते थे, वहां सन १९८७ में यह प्रतिशत घटकर २९ रह गया है। अनुमान है कि सन २००० तक धूम्रपान से होनेवाली दो करोड़ मौतों को टाला जा सकेगा।

★ ★ ★ ★

धर्म के नाम पर चमत्कार दिखाकर ठगनेवालों की कमी कभी नहीं रही। ऐसी ही एक घटना के बारे में बाबर ने लिखा है, 'काबुल लेने के बाद मैं गजनी भी गया था। गजनी में कई पीरों और बादशाहों की कब्रें हैं। मुझे बताया गया कि यहां के एक गांव में एक ऐसा मजार है, जो दुरूद पढ़ने पर हिलता है। मैंने जाकर देखा। सचमुच हिलता जान पड़ा। पर भेद छिपा न रहा। मुजाविरों (दरगाहों के पंडे, जो चढ़ावे की आय पाते हैं) की चालाकी थी। एक चिलपा (मचानी जाफरी का फर्श जिस पर खड़े होकर दर्शन करते हैं) बना था, जो चढ़ते ही हिलने लगता था। इससे कब्र भी हिलती हुई लगती थी, जैसे नाव से किनारा चलता हुआ लगता है। मैंने चिलपा उखड़वा दिया, गुंबद बनवा दिया और मुजाविरों को धमका दिया कि यह सब मत करो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

मकान खाली कराना है

आर. के. शर्मा, इंदौर : मेरी एक मित्र के पिता पंद्रह साल पहले स्वर्गवासी हुए, उनके दो मकान थे एक मकान को किराए पर उठा गये थे। मित्र अपनी विधवा मां व तीन बहनों के साथ जिस मकान में रहती है, वह जर्जर हो चुका और जिसे तुड़ाने का नोटिस नगर निगम ने दे दिया है। अब किराए पर दिये मकान को खाली कराकर उन्हें उसमें रहना है। किराएदार कहता है कि मात्र एक सौ अस्सी रुपये माह भाड़े पर इतना बड़ा मकान दिलाओ तो खाली करेंगे। यह इंदौर शहर में संभव नहीं है। मेरी मित्र क्या कानूनी कदम उठाएं, जिससे मकान तुरंत खाली कराया जा सके।

मकान-मालिक को अपनी आवश्यकता के लिए मकान खाली करवाने का अधिकार है। मध्य प्रदेश एकोमोडेशन नियंत्रण अधिनियम-१९६१ की धारा १२-ई के अंतर्गत मकान-मालिक को यह अधिकार है कि वह रिहाइशी उपयोग के लिए दिये गये स्थान को अपने या अपने परिवार की आवश्यकता के लिए खाली करवा सकता है। इसके लिए मकान-मालिक को अपने क्षेत्र के संबंधित न्यायालय में दावा देना होगा। मकान जीर्ण-शीर्ण स्थिति में होने के आधार पर भी मकान खाली करवाने के लिए कार्यवाही की जा सकती है, परंतु यह तभी संभव है जबकि मकान मनुष्यों के रहने के योग्य सुरक्षित नहीं रहा हो। उक्त अधिनियम की धारा जो यह अधिकार स्वीकार करती है। आपकी मित्र उक्त अधिनियम का लाभ उठा सकती हैं।

तलाक चाहिए

रामसिंह राजपूत, बिलासपुर : मैं एक सुशिक्षित २४ वर्षीय शादीशुदा युवक हूं। मेरी शादी १९८६ में एक साधारण पढ़ी-लिखी लड़की से हिंदू धर्म के विधानानुसार हुई थी। शादी के बाद मेरी पत्नी एक वर्ष तक मेरे साथ रही। इस दौरान वह अपने मायकेवालों की बात मानकर हमारे घर के किसी भी सदस्य का कहना नहीं मानती थी। घर के सदस्यों के कुछ भी कहने पर झगड़ती थी। उसके व्यवहार से रुष्ट होकर मैंने उसे एक बार डांटा। इस पर उसने जहरीली दवा खा ली थी और एक बार कुएं में कूद गयी। इसी प्रकार आत्महत्या की कई कोशिशें की।

दरअसल, उसका नाजायज संबंध हमारे गांव में ही रहनेवाले उसके जीजा के साथ था। मैंने उसे अपने आचरण व व्यवहार में सुधार हेतु कई तरह से समझाया, परंतु इसका उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मेरा पारिवारिक जीवन मानसिक परेशानी युक्त तथा कलहपूर्ण हो गया था। अक्टूबर ८७ को उसके पिताजी हमारे यहां आये और मेरी अनुपस्थिति में घर के सदस्यों से बिना पूछे उसे अपने साथ ले गये। अपने मायके जाते समय वह घर में रखे आटे में डी.डी.टी. पाउडर मिला गयी। मेरे श्वसुर मेरे गांव अपने एक अन्य दामाद के यहां कई बार आये, परंतु हम लोगों से न उन्होंने कभी कोई बात की और न ही हमारे घर आये। अब वे अपनी लड़की को मेरे पास भेजने के पक्ष में नहीं हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र न ही वह मेरे पास आना चाहती है । उनका ...ना है कि मैं स्वयं आकर अपनी पत्नी को ले ...ऊं, जबकि वह आना ही नहीं चाहती और मैं भी ...ना नहीं चाहता ।

क्या ऐसी स्थिति में उससे किसी भी प्रकार का ...झौता किये बिना मैं तलाक ले सकता हूं ?

आपके पत्र में लिखे आधारों पर तलाक की ...र्यवाही की जा सकती है । तलाक की ...र्यवाही करने के लिए दूसरे पक्ष की सहमति ...ा समझौते की आवश्यकता नहीं होती । इसके ...र्गत तलाक के आवेदन में यह उल्लेख ...ना पड़ता है कि आवेदन दोनों पक्षों की ...ला-जुली से प्रस्तुत नहीं किया जा रहा । यह ...क है कि कानून में आपसी सहमति के ...धार पर भी तलाक लेने की व्यवस्था है । ...त्महत्या के प्रयास, घरेलू झगड़े, आटे में ...डी.टी. मिलाने के साथ-साथ दुराचरण की ...टनाओं का उल्लेख आवेदन में अवश्य करें ।

मकान पर जबरन कब्जा

शंभुनाथ प्रसाद, धनबाद : मैं करीब ७० साल ...मकान में रहता हूं । उसके रजिस्ट्री कागजात है । ...बीच हम मकान में ताला लगाकर क्वार्टर में ...ले लगे । मकान में भी आना-जाना करते रहे । ...बीच पड़ोस के एक व्यक्ति ने पुलिस को साथ ...के ताला तोड़कर सामान सहित मकान पर ...ब्जा कर लिया । इसके लिए मैंने उपायुक्त एवं ...पर जिला दंडाधिकारी को ज्ञापन भी दिया, ...किन कोई कार्रवाही नहीं हुई । मैं क्या करूं ?

मकान का ताला तोड़कर और आपके ...मान को अपने प्रयोग में लाकर ताला ...ड़नेवाले ने अपराध किया है । इस अपराध ...के लिए पुलिस विभाग को कार्यवाही करनी ...हिए । ताला तोड़ने तथा आपके सामान पर अधिकार जमाकर उसका उपयोग करनेवाला व्यक्ति भारतीय दंड संहिता के अंतर्गत दंड का अधिकारी होता है । यदि पुलिस कार्यवाही करने में आनाकानी करे, तब आपको संबंधित दंडाधिकारी के समक्ष आवेदन देकर अपराधियो को दंड दिलवाने के लिए कार्यवाही करनी चाहिए ।

मामला गबन का

अनिल कुमार, चंपारण : एक लिमिटेड कंपनी के शाखा कार्यालय में शाखा प्रबंधक व संग्रहकर्ता की मिली-भगत से खातेधारी से रुपया लेकर उसे रसीद नहीं देना आम बात हो गयी है ? इसके लिए हेड ऑफिस एवं सेक्टर ऑफिस में लिखित आवेदन दिया ? गबन साबित होने पर भी कानूनी कार्यवाही होगी या नहीं ? अगर नहीं होती है तो कहां पर आवेदन किया जाए ।

रुपया लेकर रसीद नहीं देना ठीक नहीं है । परंतु इस प्रकार दिये रुपये का कोई प्रमाण भी तो नहीं मिल सकता । ऐसी स्थिति में गबन प्रमाणित करने में परेशानी होगी । यह ठीक है कि गबन प्रमाणित होने पर गबन करनेवाले भारतीय दंड संहिता के अंतर्गत दंड के अधिकारी होते हैं और कानूनी कार्यवाही करके उन्हें दंडित कराया जा सकता है ।

पैसे नहीं लौटा रही

क.ख.ग,बी.के. कॉलोनी : मैंने एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में फिक्सड डिपोजिट पर राशि जमा करायी थी । मैच्योरिटी डेट को खत्म हुए सवा साल हो गया । परंतु कंपनी पैसे नहीं लौटा रही और न ब्याज ही दे रही है । कंपनी के मैनेजर का कहना है कि उनके पास पैसे है ही नहीं, तो दें कहां से ? स्थिति अनिश्चितता की है । कुछ लोगों का कहना है कि तीन साल बीत जाने पर पैसों के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दावा करने का हक ही खत्म हो जाता है । बताइए, मुझे क्या करना चाहिए ?

आपको रुपया वसूली के लिए तीन वर्ष के अंदर कार्यवाही करनी होगी, अन्यथा आपका दावा भारतीय मर्यादा अधिनियम के कारण न्यायालय में स्वीकार योग्य नहीं रह जाएगा । यह ठीक है कि मर्यादा अधिनियम आपका अधिकार समाप्त नहीं करता, परंतु अधिकार प्राप्ति के लिए कानूनी कार्यवाही पर रोक लगा देता है । यदि वह कंपनी चाहे तो तीन वर्ष के बाद भी रकम अदा कर सकती है ।

आपने यह नहीं लिखा कि आपने कुल कितनी राशि जमा की थी तथा अब कितनी राशि प्राप्त करनी है । रकम अदा करने में अयोग्य होने की स्थिति में कंपनी को समाप्त कराने के लिए भी कार्यवाही की जा सकती है ।

चाचाजी विरोध करते हैं

बरती देवी, लोदाम, रायगढ़ : मैं एक विवाहित महिला हूं, मेरे दो बच्चे हैं । पति शिक्षक हैं तथा दांपत्य जीवन ठीक चल रहा है । मैं अपने मां-बाप की इकलौती संतान हूं । मेरे पिताजी दो भाई हैं, जिनमें पिताजी बड़े हैं । चाचाजी अपने परिवार के साथ अलग रहते हैं । एकमात्र औलाद होने के कारण मेरे पिताजी मुझे कुछ जमीन लिख देना चाहते हैं । शादी से पूर्व चाचाजी भी सहमत थे । लेकिन अब वे विरोध करते हैं । वैसे, सभी अचल संपत्ति का बंटवारा हो गया है, लेकिन पुश्तैनी जमीन होने के कारण खतियान संलाती है । कृपया उचित सलाह दें । क्या मैं अपने बाप के हिस्से की जमीन ले सकती हूं ? इसके लिए क्या करना होगा ?

उचित यह रहेगा कि आपके पिताजी अपने भाई से जमीन का बंटवारा कर लें, इससे दोनों का हिस्सा अलग-अलग हो जाएगा । सरकारी फाइलों में भी दोनों का नाम अलग-अलग लिख लिया जाएगा । इस तरह जमीन का पूरा बंटवारा हो जाने के बाद आपके पिताजी आपके पक्ष में वसीयत कर सकते हैं तथा आपको उनके बाद जमीन पर पूरा अधिकार मिल जाएगा ।

जमीन शामलात में बने रहने से पिताजी के बाद परेशानी पैदा हो सकती है, इसलिए समय रहते ही कार्यवाही कर लेनी ही ठीक रहेगी ।

समस्या पेड़ की

अशोक कुमार शर्मा, दिल्ली : हमारे यहां एक बड़ (वट वृक्ष) का बहुत पुराना पेड़ है । जिसका तना आधा हमारे मकान में है तथा आधा चचेरे भाई के मकान में । चचेरा भाई अपना मकान तोड़कर मार्केट बनाना चाहता है । इसके लिए वह पेड़ को काटेगा । हमारे रोकने पर लड़ाई-झगड़े की नौबत आ सकती है । इसलिए हम चाहते हैं कि कानूनी तरीके से कोई ऐसा रास्ता निकल आये, ताकि वह उस जगह को छोड़कर बाकी जगह पर मार्केट बना ले । क्या हम ऐसा कर सकते हैं ?

पुराने पेड़ को काटने से पूर्व राज्य सरकार की अनुमति लेनी आवश्यक होती है । दिल्ली के उपराज्यपाल महोदय की अनुमति के बगैर पेड़ नहीं काटा जा सकता । आपकी शंका कहां तक ठीक है, यह तो आप जानें, परंतु मकान तोड़कर नयी मार्केट बनाने के लिए स्थानीय निकाय से नक्शे पास करवाना भी आवश्यक होता है । यदि आप समझते हैं कि पेड़ काटे जाने से आपको कोई विधि-सम्मत हानि होगी तो आप न्यायालय की शरण में जाकर निषेधादेश ले सकते हैं । ऐसा आदेश प्राप्त कर लेने के बाद लड़ाई-झगड़े की आशंका समाप्त-प्रायः हो जाएगी ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम क्रीड़ाएं कलाकार की दृष्टि

● रघुनाथसिंह 'यादवेन्द्र'

पद्मावती के असाधारण सौंदर्य ने, उसकी सदाशयता ने, पति-समर्पित-भावना ने, चिर प्रेयसी की परिकल्पना ने जयदेव के सुषुप्त कवि को पुनर्जीवित कर दिया । पद्मा को जयदेव ने राधा माना...स्वयं को छलिया कृष्ण... राधा-कृष्ण को समर्पित एक कालजयी रचना का जन्म हुआ ।'...'गीत गोविन्द' ।

राजस्थान के लोग जयदेव पर लट्टू हो गये । घर-घर कृष्ण की पूजा-वंदना होने लगी । वैष्णव लहर-सी चल पड़ी । वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी बढ़ते गये, राधा-कृष्ण जन-साधारण के आराध्य से राजस्थान के राजपरिवारों के भी आराध्य बन गये । किशनगढ़ के शासक सावंतसिंह भी वल्लभाचार्य संप्रदाय के अनुयायी बन गये ।

सावंतसिंह स्वयं संस्कृत, फारसी तथा मेवाड़ी भाषाओं के पंडित थे । उन्होंने संगीत तथा चित्रकला में निपुणता पायी थी, वे अच्छे चित्रकार थे । वे धार्मिक विचार के व्यक्ति थे और संतों के समान सरल जीवन व्यतीत करते थे । वे एक अच्छे कवि थे, उन्होंने बिहारी चंद्रिका लिखी और वृंद, हरचरनदास, हीरामल, मुंशी धनीराम आदि पर टीकाएं लिखीं और अपना उपनाम 'नागरीदास' रखा ।

सावंतसिंह के जीवन में जहां कृष्ण-प्रेम था, वहीं उनकी विमाता द्वारा देहली के मुगल अंतपुर से लायी एक सुंदरी 'बनीठनी' आन बसी । वे 'बनीठनी' के रूप पर मोहित हो गये और उसके प्रेमी बन गये और 'बनीठनी' उनकी अनुचरी बन गयी । जयदेव की तरह ही 'नागरीदास' ने अपनी रचनाओं में अपनी प्रेमिका का वर्णन राधा के रूप में किया । वास्तव में देखा जाए, तो किशनगढ़ चित्रकला शैली के संस्थापक 'नागरीदास' ही थे । जिन्होंने अपनी चित्रशाला स्थापित की और स्वयं उन्होंने स्त्री आकृतियों को एक सुमधुर काव्यमय कोमल मौलिकता प्रदान की ।

किशनगढ़ के चित्रों में नारी आकृतियों का विकास 'बनीठनी' के रूप में हुआ, इसके साथ ही ब्रज भाषा साहित्य की उपमाओं के आधार

'नागरीदास' ने 'बनी ठनी' के प्रति कृष्ण और राधा के रूप में अपने प्रेम की अभिव्यक्ति की, इसी कारण नवीन कलेवर और नवीन प्रेम-क्रीड़ाओं की कल्पना के आधार पर किशनगढ़ शैली कालजयी शैली बन गयी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर राधा के आदर्श सौंदर्य का चित्रांकन हुआ। यह सारा परिवर्तन 'नागरीदास' की कुशल बुद्धि का ही कमाल था, जिनके राजकाल में चित्रकारों ने परंपरा से हटकर, मीन नेत्र, गोल, भारी चेहरे न बना कर कमल और खंजन आकार के नेत्र, चाप के समान पतली भृकुटी, पतले सुकोमल अधर और लंबी-पतली नाक को चेहरे में बनाकर नारी के वीर भाव के बजाय माधुर्य एवं कोमलता, चंचलता तथा नारीत्व-भाव का ही अंकन किया। स्त्रियों को लतिकाओं के समान लचकदार, छरहरा और लंबा चित्रांकित किया गया। इस प्रकार बारीक, कोमल और भावपूर्ण रेखाओं में प्रवाह व गति लिए किशनगढ़ की नारी आकृतियां राजस्थान की अन्य शैलियों से भिन्न हैं।

नासिका और चिबुक आगे को निकली हुई। नेत्र जोधपुर शैली के नेत्रों से भी अधिक ऊपर को खचित। ठुड्डी के नीचे गले की रेखा ग्रीवा की ओर न जाकर ठुड्डी की निचाई से कान की ऊंचाई की ओर खिंची नासिका खूब लंबी और नोकदार। होठ गोल न होकर पतले एवं अग्रिम भाग कोण निकले हुए, ललाट भी आगे को न होकर किंचित नाक की सीध से पीछे की ओर दबा। नायिका का वर्ण चंदन से भी श्वेताभ, किशनगढ़ की तन्वी नायिकाओं की काली बुंदकीदार या आसमानी रंग की बारीक चुनरी में से झलकती, बल खायी चोटी, गालों पर खूब मोटी केशों की लटें व कैरी की मांत में अंकित घाघरे हृदय को डुला देते हैं।

नायक सिर पर हलकी गुलाबी सुनहरी पगड़ी में से बालों की लटें लटकती दीखती हैं। नायक का श्यामवर्ण, लंबी ग्रीवा, नासिका के नीचे गहरी नीलिमा, कान में लटकती बड़ी-बड़ी बालियां सौंदर्य की सूचक होती हैं।

गीत-गोविंद, भागवत पुराण तथा बिहारी चंद्रिका, राधा-कृष्ण के चित्रों का बाहुल्य लिये हुए किशनगढ़ शैली ने अठारहवीं शताब्दी के अंतिम चौथाई भाग में आश्चर्यजनक उन्नति की। यह सत्य है कि किशनगढ़ शैली को सुंदरी 'बनीठनी' के जीवित रूप से अत्यधिक प्रेरणा, नवीन रूप और आकार की चेतना मिली और इस शैली को अवश्य ही 'नागरीदास' ने 'बनीठनी' के रूप से प्रेरणा लेकर आरंभ किया।

स्पष्ट है कि कृष्ण और राधा को तत्कालीन प्रेमी और प्रेमिकाओं का रूप देने की चेष्टा की गयी, इस कारण यह भी हो सकता है कि 'नागरीदास' ने 'बनीठनी' के प्रति कृष्ण और राधा के रूप में अपने प्रेम की अभिव्यक्ति की, इसी कारण नवीन कलेवर और नवीन प्रेम क्रीड़ाओं की कल्पना के आधार पर किशनगढ़ शैली कालजयी शैली बन गयी।

— ५४८ बरकत नगर, टोंक फाटक, जयपुर-३०२०१५

"मेरा तो यह मानना है कि खाना पकाने के काम में लाने वाले पानी को कम से कम एक घंटे तक जरूर उबाला जाना चाहिए।"

"मालूम पड़ता है कि आप डॉक्टर हैं ?"

"नहीं, नहीं, मैं डॉक्टर नहीं, कोयले का व्यापारी हूं।"

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

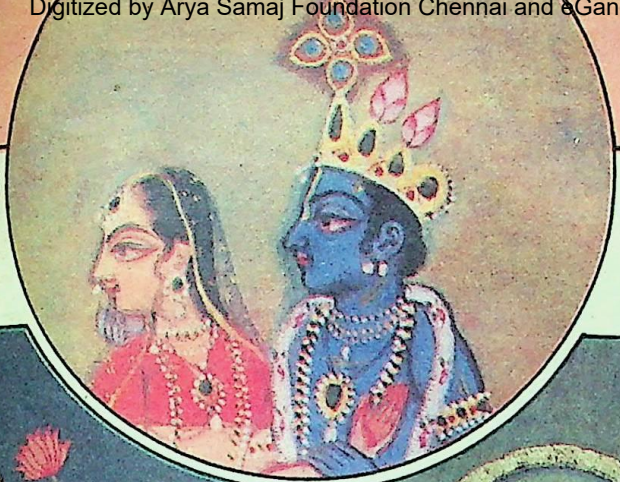

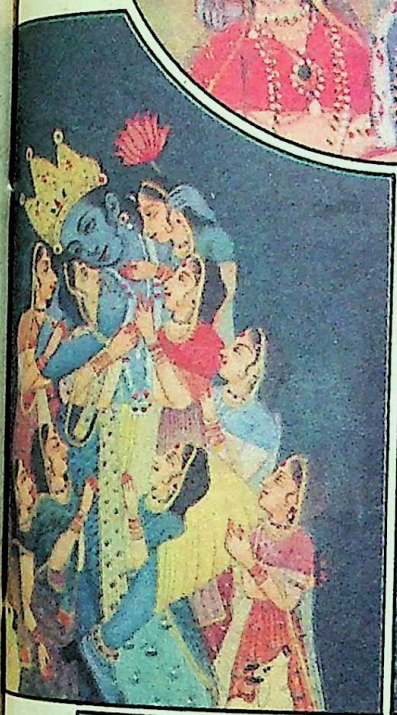

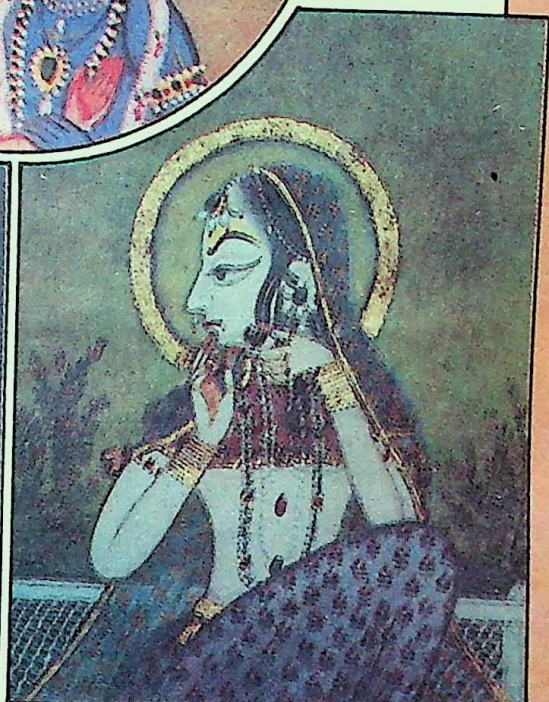

किशनगढ़
ली में अंकित
था और राधा

छाया : भगवानदास रूपाणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

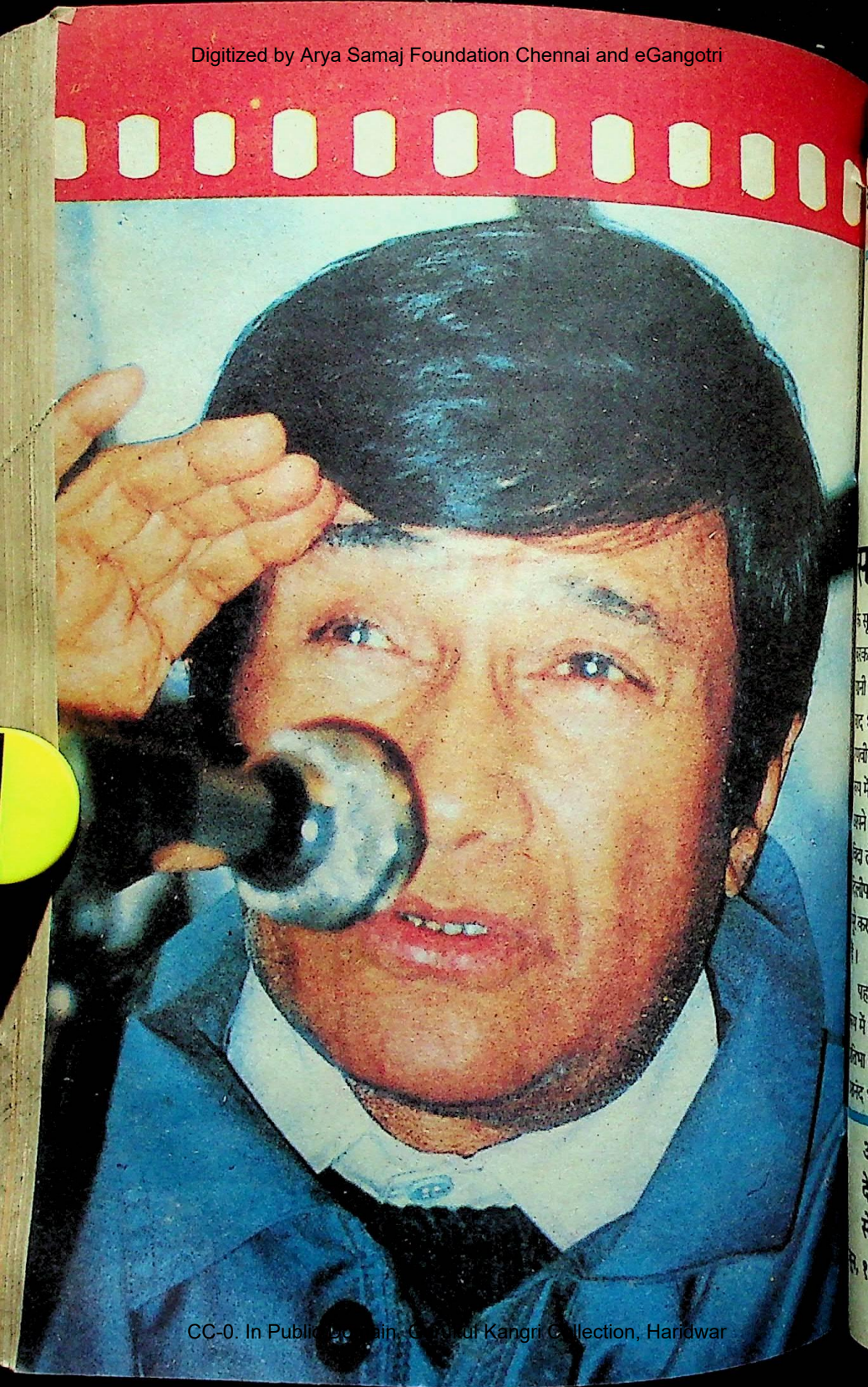

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला को समर्पित सदाबहार अभिनेता

● बद्रीप्रसाद जोशी

सन १९४४ और १९४६ के बीच तीन नये कलाकारों का उदय हुआ । उनकी कला के सूरज का वह उदयकाल मध्यांतर आने तक चमकदार है । सर्वप्रथम १९४४ में युसूफ खान, यानी कि दिलीप कुमार का उदय हुआ । इसके बाद १९४५ में देव आनंद आये और १९४६ में शमशेर राजकपूर, यानी कि राजकपूर हीरो के रूप में उभरे । इन तीन दिग्गजों में राज कपूर ने अपने जीवन के ४२ वर्ष फिल्म इंडस्ट्री को देकर विदा ले ली । वे हमारे बीच नहीं है, जबकि दिलीप कुमार अपनी अभिनय-यात्रा के ४५ वर्ष पूर्ण करने के बाद आज भी फिल्म क्षेत्र में अडिग है ।

पहले हीरो और फिर चरित्र अभिनेता के रूप में दिलीप कुमार आज भी अपनी अभिनय प्रतिभा का विलक्षण परिचय दे रहे हैं । देव आनंद भी ४४ वर्ष की अपनी अभिनय और फिल्म-निर्माण यात्रा द्वारा आज तक दर्शकों को मनोरंजन प्रदान कर रहे हैं । पर पिछले ६-७ वर्षों से वे कुछ थके-हारे से नजर आने लगे हैं । शायद उम्र का असर है, इसीलिए वे अपने पुत्र सुनील आनंद को लाइमलाइट में लाने का सतत प्रयास कर रहे हैं ।

देश भक्त पिता के देशभक्त पुत्र

देव आनंद ग्रेजुएट होने के बाद नौसेना में भरती होना चाहते थे, परंतु उस समय की ब्रिटिश सरकार ने आनंद परिवार का नाम काले आक्षरों में लिख लिया था, क्योंकि देव आनंद के पिता प्रखर देशभक्त थे । ब्रिटिश सरकार को उखाड़ फेंकने की साजिश का आरोप लगाकर, ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सजा दे दी । इसके साथ ही ब्रिटिश सरकार ने यह हुक्म दे दिया कि आनंद परिवार के किसी भी सदस्य को सरकारी नौकरी में स्थान न दिया जाए और न ही नौसेना

अनेक असफलताओं के बाद भी देवानंद ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा । वे फिल्मों में अपनी सेंचुरी बना चुके हैं । उन सभी दिक्कतों से वे गुजरे, जो किसी भी स्ट्रगलर को झेलनी पड़ती हैं ।

सितंबर १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से संपर्क स्थापित करने दिया जाए । इतनी सारी बंदिशों के कारण देव आनंद के बड़े भाई चेतन आनंद ने राजकुमार कॉलेज में अध्यापक की नौकरी करना स्वीकार कर लिया, जबकि देव आनंद अपनी किस्मत आजमाने बंबई चले आये ।

बंबई आने के बाद देव आनंद ने अपने भविष्य को लेकर कई योजनाएं बनायीं, पर किसी भी योजना पर वे अमल न कर सके । उनके एक दोस्त ने उन्हें नाटकों में काम करने की सलाह दी । देव आनंद आकर्षक रूप-रंग और प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे, साथ ही उनका हिंदी भाषा का ज्ञान का कोष भी विशाल था, इसलिए उन्होंने अपने दोस्त की सलाह मानकर, नाटकों में काम शुरू करते हुए अपने अभिनय-जीवन की शुरूआत की । उनके उस नाटक को देखने के लिए फिल्म क्षेत्र की कितनी ही हस्तियां भी उपस्थित थीं । उनमें से एक व्यक्ति ने देव आनंद को अपनी अगली फिल्म में लेने का निश्चय किया । लेखक से निर्देशक बने पी.एल. संतोषी, 'प्रभात फिल्म कंपनी' के लिए 'हम एक हैं' नामक फिल्म का निर्देशन कर रहे थे । उस फिल्म में तीन हीरो की भूमिकाएं थीं—हिंदू-मुसलिम और क्रिश्चियन । उन्होंने देव आनंद को हिंदू हीरो की भूमिका के लिए पसंद किया । और इस तरह 'हम एक हैं' में अभिनय से देव आनंद ने अपने फिल्म कैरियर की शुरूआत की ।

गुरुदत्त के साथ काम

'हम एक हैं' का निर्माण-कार्य पूना स्थित प्रभात स्टूडियो में हुआ था । उस समय सहायक निर्देशक के रूप में वहां गुरुदत्त काम कर रहे थे । साथ-साथ काम करते हुए देव आनंद और गुरुदत्त के बीच दोस्ती हो गयी और वे दोनों पूना में एक जगह किराये पर लेकर साथ-साथ रहने लगे ।

देव आनंद ने धीरे-धीरे फिल्म क्षेत्र में हीरो के रूप में अपना स्थान बना लिया था । बॉम्बे टाकीज की फिल्म 'जिद्दी' में कामिनी कौशल के साथ अभिनय करके उन्होंने काफी प्रतिष्ठा प्राप्त की ।

जिस प्रकार राज कपूर ने १९४८ में अपनी स्वतंत्र फिल्म संस्था 'आर.के. फिल्म्स' की स्थापना करके एक निर्माता और अभिनेता के रूप में ख्याति प्राप्त की, उसी तरह देव आनंद ने भी सोचा कि यदि वे निर्माता बन जाएं और साथ ही साथ अभिनय भी करें,तो उनकी प्रतिष्ठा और लोकप्रियता में चार चांद लग जाएंगे और आर्थिक मदद मिलेगी, अपनी इसी कल्पना को साकार रूप देते हुए उन्होंने १९४९ के अंत में 'नवकेतन' की स्थापना की, पर देव आनंद ने अपनी एक लीक बना ली कि वे निर्देशक नहीं बनेंगे और उसी लीक पर चलते हुए उन्होंने कभी भी अपनी फिल्मों का निर्देशन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

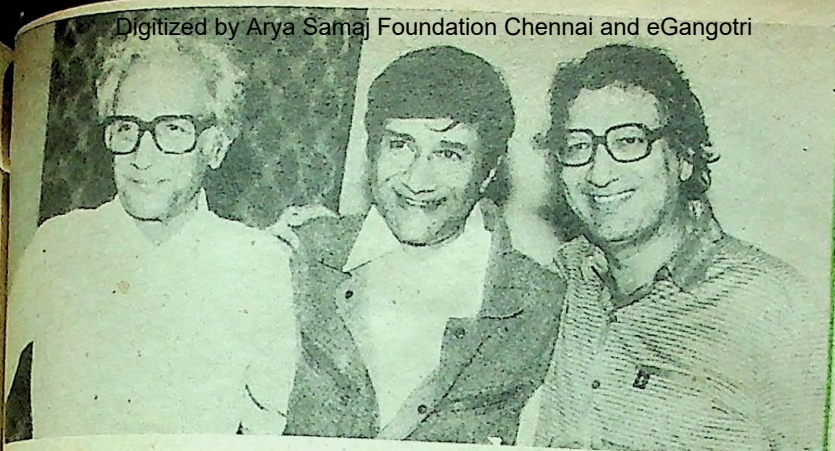

न करते हुए देव
दोस्ती हो गयी और
किराये पर लेकर

फिल्म क्षेत्र में होंगे
लिया था। बॉम्बे
कामिनी कौशल के
काफी प्रतिष्ठा प्राप्त

१९४८ में अपनी
फिल्मस' की
और अभिनेता के
तरह देव आनंद
ता बन जाएं और
रें,तो उनकी प्रतिष्ठा
लग जाएंगे और
इसी कल्पना को
१९४९ के अंत में
र देव आनंद ने
वे निर्देशक नहीं
ते हुए उन्होंने
र्देशन नहीं

देव। यदि वे अभिनेता, निर्माता और
र्देशक—तीनों की जिम्मेदारी निभाते तो बाहर
की फिल्मों में उन्हें कोई काम नहीं देता। निर्माता
सोचते कि वे खुद ही फिल्मों में इतनी
जिम्मेदारियां निभा रहे हैं तो दूसरों की फिल्मों में
अच्छा अभिनय नहीं कर सकेंगे। और
इसलिए...इस मामले में अपनी फिल्मों का
र्देशन न करने का फैसला करते हुए देव
आनंद ने बड़ी दूर की बात सोची थी।

आनंद और सुरैया की बेपनाह मुहब्बत

उसी दरम्यान विद्या सिन्हा के पिता श्री प्रताप
सिन्हा ने 'विद्या' नामक एक फिल्म बनायी,
जिसमें देव आनंद और सुरैया ने मुख्य भूमिकाएं
निभायीं। 'विद्या' में साथ-साथ काम करते हुए
देव आनंद और सुरैया एक-दूसरे के काफी करीब आये
और एक-दूसरे को पसंद करने लगे। सुरैया का
व्यक्तित्व अत्यंत ही मधुर था, इसीलिए देव
आनंद उनकी तरफ आकर्षित हुए। 'विद्या' के बाद
'नवकेतन' की फिल्म 'अफसर' में भी देव
आनंद और सुरैया ने मुख्य भूमिकाएं निभायीं
और इस दौरान वे एक-दूसरे से बेपनाह
मुहब्बत करने लगे और अंत में दोनों ने शादी
करने का फैसला कर लिया।

पर जब सुरैया के चाहनेवालों और उनके प्रशंसकों को यह खबर लगी, कि सुरैया एक हिंदू युवक के साथ शादी करने जा रही है, तो उन्होंने काफी शोर शराबा किया और सुरैया को घेरकर उनके हाथों में 'कुरान' देकर, उनसे यह कसम दिलायी कि वे किसी भी हिंदू के साथ विवाह नहीं करेंगी। और इस तरह धर्म के आगे सुरैया ने घुटने टेक दिये। वे हार गयीं और कौमवादी जीत गये।

देव आनंद के पहले प्यार की इतिश्री हो गयी। एक अध्याय समाप्त हो गया।

कुछ समय बाद उनकी संस्था 'नवकेतन' के लिए एक नयी अभिनेत्री आयी— मोना सिन्हा। उस अभिनेत्री का परदे का नाम रखा गया कल्पना कार्तिक। कल्पना ने देव आनंद के साथ 'टेक्सी ड्राइवर' में अभिनय किया। उसी दौरान दोनों के बीच प्रेम की कोंपलें फूटीं।

कल्पना कार्तिक से विवाह

कल्पना कार्तिक वास्तव में क्रिश्चियन थीं, इसलिए उनके सगे-संबंधियों की तरफ से इस विवाह में कोई बाधा नहीं थी। और...एक शुभ

१९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

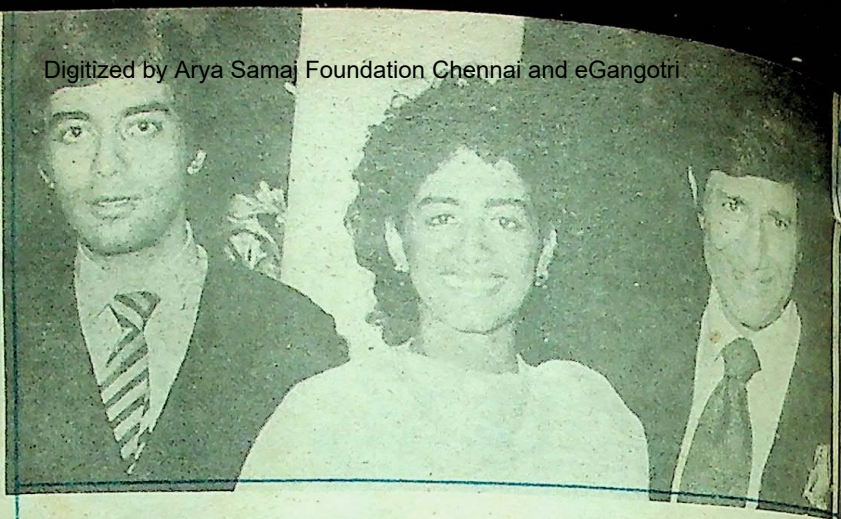

दिन देखकर देव आनंद और कल्पना कार्तिक विवाह-सूत्र में बंध गये । विवाह के बाद कल्पना ने फिल्मों में काम करना छोड़ दिया और वे सिर्फ श्रीमती देव आनंद बनकर रहने लगीं ।

शुरूआत में अनेक फिल्मी समीक्षक देव आनंद को अभिनेता मानने को तैयार ही नहीं थे । वे अक्सर देव आनंद का उपहास करते हुए कहते कि उन्हें अभिनय की बाराखड़ी सीखनी चाहिए, उन्हें अभिनय आता ही कहां है ? इतनी आलोचनाओं के बावजूद देव आनंद हीरो के रूप में आज तक फिल्म इंडस्ट्री पर छाये हुए हैं । इसके मुख्य कारण हैं—देव आनंद का सदाबहार व्यक्तित्व और उनका मिलनसार तथा मेहनती स्वभाव । इन दो कारणों के अतिरिक्त तीसरा कारण है उनकी संस्था 'नवकेतन' । किसी बाहर की फिल्म में अवसर न मिले तो वे स्वतंत्र रूप से 'नवकेतन' के बैनर तले फिल्म बनाना शुरू कर देते हैं ।

जुहू स्थित देव आनंद के निवास स्थान में एक विशाल टॉयलेट रूम है । वहीं वे सवेरे के कर्मों से निवृत्त होते हैं, वहीं वे अखबार भी पढ़ते हैं, दाढ़ी भी वे वहीं बनाते हैं । और दिन भर के अपने कार्यक्रमों की योजना भी वे वहीं बनाते हैं वे जब उस रूम में से बाहर निकलते हैं तो पूर्णरूप से तैयार होकर । सुबह वे सिर्फ चाय-नाश्ता कर घर से निकल पड़ते हैं । नियमित जीवन जीना देव आनंद का विशेष गुण है, शायद इसीलिए आज तक उनकी सदाबहार जवानी ने उनका साथ नहीं छोड़ा । उन्होंने अपने संस्मरणों में कहा भी है, "मेरी समझ में तरुणाई आपकी मनःस्थिति पर निर्भर है और बुढ़ापा भी पर । आशाएं जितनी जवान होंगी आप उतने ही जवान रहेंगे । निराशा आप की वृद्धावस्था का प्रतीक है ।"

अनेक कलाकार आये, पल भर को धमाके के साथ फिल्माकाश पर चमके, फिर किसी हवा के झोंके के साथ अदृश्य हो गये । पर लगातार अर्धसदी तक अपना कीर्तिध्वज फहराये रखना कोई आसान काम नहीं है । ऐसी कार्यक्षमता केवल देवानंद में थी ।

देव आनंद की एक बड़ी महत्वाकांक्षा थी—अंगरेजी फिल्म बनाकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करने की । इसलिए उन्होंने 'इलस्ट्रेटेड वीकली' में प्रकाशित हुई एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...नी 'गाइड' पर आधारित, अंगरेजी और ...—दोनों भाषाओं में फिल्म बनाने का ...य किया। विजय आनंद ने इस फिल्म के ...शक के रूप में भारी सफलता अर्जित की। ...कि अंगरेजी फिल्म अंतरराष्ट्रीय बाजार में ...ष नहीं चली। हिंदी में 'गाइड' को ...पूर्व सफलता मिली। शूटिंग के समय ...साधू समझकर लोग दूर-दूर से दर्शन करने ...थे। "गाइड" की सफलता विजय आनंद ...लिए एक नशा साबित हुई, जिसकी खुमारी ...तथाकथित भगवान रजनीश के आश्रम ...ले गयी। वे भगवे वस्त्र पहनकर फिल्म ...में घूमने लगे। अभिनेत्री बनने बंबई ...लवलीन नामक एक लड़की से प्रेम किया ...फिर विवाह। फिर कुछ ही महीनों बाद ...तलाक भी दे दिया।

निर्देशक बनने की इच्छा

देव आनंद के मन में एक बार निर्देशक ...का ख्याल आया और उन्होंने अपनी ...'प्रेम पुजारी' का निर्देशन किया। उस ...की कहानी भी उन्होंने ही लिखी थी, पर इतनी सारी जिम्मेदारियों को एक साथ निभाते हुए वे भटक से गये और 'प्रेम पुजारी' की पूजा ठीक से न हो सकी। और उन्होंने निर्देशन न करने का निर्णय लिया।

सन १९४४ में सिर्फ ३० रुपए लेकर आये देव आनंद 'चर्चगेट' स्टेशन पर मिलिट्री पोस्टल सेंसर आफिस में क्लर्क थे। बस, या लोकल ट्रेन से आफिस पहुंचते। उन सभी दिक्कतों से वे गुजरे, जो किसी भी स्ट्रगलर को झेलनी पड़ती हैं। अनेक असफलताओं के बाद भी देव आनंद ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे फिल्मों में अपनी सेंचुरी बना चुके हैं।

बेटे को दर्शकों पर थोपने की पेशकश

बेटे सुनील के लिए उन्होंने नयी अभिनेत्री नताशा सिन्हा की तलाश की। 'आनंद और आनंद' फिल्म के प्रदर्शन के पूर्व ही नताशा ने शादी कर ली और सुनील का भविष्य भी पिता के बैनर पर ही सिमट कर रह गया। एक बार फिर बेटे को अवसर दिया, 'मैं तेरे लिए' में लेकिन फिर भी बेटे को स्टार नहीं बना सके।

देव मां की आज्ञा का जीवनपर्यंत पालन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते रहे । उन्होंने अपने संस्मरण में एक स्थान पर कहा है 'मां बहुत बीमार थी, उनका अंतिम समय था, सब आंसू बहा रहे थे— 'मुझे पास बुलाकर कहा— 'देखो बेटे, तुम बहादुर हो, मां की एक बात मानोगे ? मैंने हां में गर्दन हिला दी । मां बोली—मेरे मरने के बाद तू रोना नहीं, कभी नहीं रोना इस अंतिम समय की आज्ञा को याद कर मैं अनेक बार असफल हुआ लेकिन कभी नहीं रोया ।'

जवां दिलों की धड़कन : देव-सुरैया की जोड़ी

इसी समय युवा सिने दर्शकों की एक आदर्श जोड़ी बन गयी थी । इतने साल गुजरने के बाद भी यह जोड़ी लैला-मजनू का दर्जा रखती है । दोनों की प्रणय जोड़ी बहुत चर्चित हुई । दोनों एक-दूसरे को अपनाना चाहते थे । अपने प्रेमपत्र पहुंचाने के लिए नित्य नये दूत खोजते थे । मेकअप वाले और आया को अच्छे पुरस्कार मिलते थे । एक बार तो देव ने कीमती हीरे की अंगूठी सुरैया को जाकर पहना दी । नानी ने देखा तो अंगूठी छीनकर समुद्र में फेंक दी । उनकी कई नायिकाएं आज दादी अम्मा बन गयी हैं पर देव अब भी हीरो की इमेज बनाये हुए हैं । उनका बंगला किसी हिल स्टेशन का गेस्ट हाउस लगता है । चारों तरफ ऊंचा परकोट, छाते की तरह चारों तरफ झुका हुआ छज्जा जिस पर खपरैल बिछी है । न नौकरों की भीड़, न ही दरबान, भीतर घुसते ही अलग-अलग माडल की देशी-विदेशी कारें कतार में खड़ी मिलेंगी । देव स्वयं अपने संस्मरण में सुनाते हैं— "खूब हंगामा होता । तरह-तरह की अफवाहें उड़तीं । सुरैया के साथ की यादें मुझे हमेशा आनंद देती रहती हैं । क्या हसीन दौर था । कैसी दीवानगी की हद तक मैं उस पर मरता था । कैसे गरमा-गरम भावभीने प्रेम-पत्र हम एक-दूसरे को लिखते थे । वे क्षण आज भी मधुर याद के रूप में सुरक्षित हैं ।"

देव की पसंद का अनुपात आज भी ६० और २० का ही है । उन्हें कभी 'स्वीट सेवंटीन' के साथ काम करने में झिझक नहीं होती । अपनी पुत्री की सिफारिश से वे टीना मुनीम को नायिका बना सकते हैं । परदे पर आने के पूर्व प्रेम-प्रकरण की चर्चा होगी फिर परदे की प्रेमिका बनकर दर्शकों के सामने वह सुंदरी सदाबहार नायक के साथ दर्शकों के सामने आएगी ।

देव से मिलनेवालों को आश्चर्य होगा कि इतनी जल्दी सामने आकर छोटी-सी कुरसी या तिपाई—जैसी सीधे बैठनेवाली कुरसी पर कैसे बैठ गया । हाथ मिलाते हुए देव-मुस्कान में सदाबहार नायक आपसे फौरन प्रश्न करेंगे मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं 'व्हाट केन आई डू फार यू' किसी की बुराई नहीं होगी । गोलमोल बातें भी नहीं, बस काम की बात हुई और खड़े हो जाएंगे—हाथ मिलाकर बेतरतीब दांत दिखाते हुए आपको विदा कर देंगे ।

"नौकरी छूट गयी तो तुम्हें भीख मांगनी पड़ेगी ।"
पत्नी भी कब चूकने वाली थी— "अभी भी तो मांगनी ही पड़ती है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनक लेखकों की

मोटी-मोटी पुस्तकें लिखना हंसी-खेल नहीं, फिर भी कुछ महान लेखकों ने श्रेष्ठ साहित्य की रचना की है । कहते हैं लिखने में 'मूड' का भी विशेष प्रभाव पड़ता है । अपने अनुकूल वातावरण मिलने पर लेखक जमकर लिखता है । विश्व के कुछ सुप्रसिद्ध लेखकों और कवियों के लिखने के निराले ही ढंग थे ।

स्विटजरलैंड-निवासी लेखक 'जोना स्पयारी' शहर की गड़गड़ाहट के बीच लिखते थे । जब उन्हें लिखना होता था तो वह तेज रफ़्तारवाली गाड़ी से यात्रा करते थे किंतु प्रतिदिन २०० किलोमीटर । इस प्रकार इस लेखक ने अपने ४० वर्ष के लेखकीय जीवन में अनेक ग्रंथ लिखे और लगभग २१ लाख ९० हजार किलोमीटर की रेलयात्रा की ।

× × ×

जर्मनी के कवि 'कार्ल बेन हेमबेल्ट' को लिखने की प्रेरणा संगीत से मिलती थी । उन्होंने अपनी पसंद के गाने टेप कर रखे थे । जब वह लिखना चाहते तो टेपरिकार्डर ऊंची आवाज में चलाते थे । इससे उनकी कलम निरंतर चलती रहती थी । उन्होंने ४५ वर्ष तक लेखन कार्य किया ।

अंगरेजी साहित्य के महान कवि व प्रकृति चित्रण के सर्वश्रेष्ठ सितारे विलियम वर्ड्सवर्थ की कविता में प्रकृति सौंदर्य का जो अद्वितीय वर्णन मिलता है, उसकी कोई बराबरी नहीं । उनका कविता लिखने का मूड जंगल में नृत्य करते मोर को देखकर बनता था । साथ ही वन्य पक्षियों की मधुर आवाज भी उन्हें लिखने को प्रेरित करती थी । इसके अतिरिक्त उनकी लिखने की कलम का ऊपरी भाग सुगंधित इत्र से भीगा रहता था । वे कलम को सूंघते रहते थे और पृष्ठ-पर पृष्ठ लिखते जाते थे ।

लेखक—'ज्यां पाल सार्त्र' के लेखन की शैली विचित्र ही थी । वह जब हाथ से लिखते-लिखते थक जाते थे तो पैरों से लिखने लगते थे । इसके लिए उन्होंने एक विशेष 'इजी चेयर' बनवायी थी, जिसके पायदान के ऊपर एक चिकनी लकड़ी का तख्ता-सा लगा था । इस तख्ते में कागज फिट कर दिया जाता था । सार्त्र आराम से कुरसी पर अधलेटे-से दाहिने पैर की अंगुलियों में पेंसिल पकड़े लिखते रहते थे । निश्चित ही बड़ा निराला ढंग था इस प्रसिद्ध दार्शनिक लेखक के लिखने का ।

—केशवदेव मिश्र 'कमल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

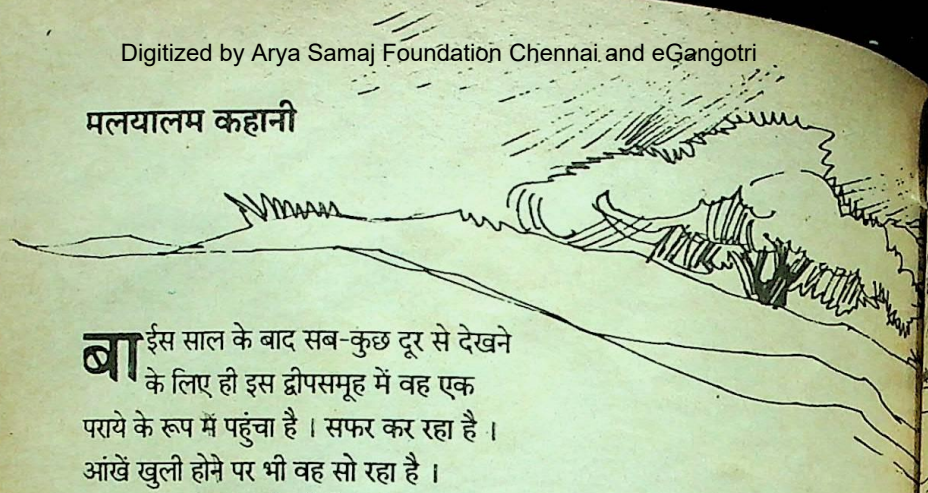

कलमी पौधा

● सि.वि. श्रीरामन

बाईस साल के बाद सब-कुछ दूर से देखने के लिए ही इस द्वीपसमूह में वह एक पराये के रूप में पहुंचा है । सफर कर रहा है । आंखें खुली होने पर भी वह सो रहा है ।

क्या-क्या याद करने को है उसके पास । पश्चिम बंगाल के शरणार्थी कैंपों से यहां प्रवासित करने के लिए उचित लोगों को चुनने से लेकर यहां जमीन की नाप देकर विस्थापित कराने तक का लंबा सफर । किसी कर्म-बंध के फलस्वरूप उसने भी उसमें भाग लिया ।

उस समय यहां पगडंडियां थीं । रास्ते की ओर गिरे हुए फालतू पौधों को हाथ से हटाकर हांफते हुए थके पैरों से दूरी को कोसकर चलते हुए एक-एक पल आज भी याद है ।

रोज दस-पंद्रह घड़ी चलता था । लोहे की तानवाली छतरी कंधे पर रखकर चलने से सभी कमीजों पर लोहे के दाग लगे थे । वही कमीजें लेकर जब वह शहर पहुंचा तो दोस्तों ने कहा, "शरणार्थियों के साथ रहकर तुम भी एक शरणार्थी बन गये हो । जैसे फादर डामियन को कोढ़ हुआ था... ।"

आज शरणार्थी प्रवासियों की स्थिति कितनी बदल गयी है ।

अब पक्की सड़क है । लोग बस में सफर करते हैं । अंधेरे भरे जंगल से आलोकित स्थान पर बस पहुंची है । रास्ते के दोनों ओर प्रकाश बढ़ रहा है । जंगल पार करने के बाद पड़ता है पहला गांव... कौसल्या नगर ।

कौसल्या नगर पार करके बकुलतल्ला । अब बकुलतल्ला में भीड़, बाजार और लकड़ी की कंपनी है । पुराना बकुलतल्ला । बहुत-से परिवारों के जमीन छोड़कर चले जाने से खेतों के बीच की झाड़ियों ने चेचकरू के समान उस गांव को विरूप बना दिया था ।

यहां सफर करते समय पुराने पूर्व पाकिस्तान-पश्चिम बंगाल की सीमा इलाकों की याद आती है... । बागवान स्टेशन पर उतरने पर जेस्सोर रोड है । बादशाह शेरशाह का बनाया हुआ ढाका तक लंबा पुराना राजमार्ग । सड़क के दोनों ओर छायादार पेड़ खड़े हैं । सुना है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुगल बादशाहों द्वारा और बाद में ईस्ट इंडिया कंपनीवालों के लगाये हुए हैं वे पेड़ ।

पंद्रह-बारह किलोमीटर जाने पर ईस्ट पाकिस्तान की सीमा है । आज इस द्वीप समूह में सफर करते समय अपने आप याद आ रहा है... हो सकता है पश्चिम बंगाल में सबसे ज्यादा परिचित स्थान वही है, इसलिए जेस्सोर रोड के बारे में याद आ गया... इच्छामती नदी यहां बहती है । नदी पर तब लकड़ी का पुल था । नदी पार शरणार्थियों के कैंप थे । ज्यादातर कैंपों की छतें नहीं थीं । शरणार्थी सड़क के किनारे और उसके भाग्य में लिखा था वह पेड़ की छाया में और बाकी लोग खेतों में थककर लेटते थे । कलकत्ता के शरणार्थी कैंपों के बारे में याद आने पर दासगुप्त बाबू की याद आती है । दासगुप्त बाबू भी शरणार्थी थे । विभाजन के पहले राजशाही जिले के एक कॉलेज में दर्शनशास्त्र पढ़ाते थे । विभाजन ने जब मातृभूमि से काटकर फेंका तो शरणार्थी बने । अंत में जेस्सोर रोड के शरणार्थी कैंप के रिहैबिलिटेशन अफसर बने । जिस दिन कलकत्ता लौटने का समय नहीं मिलता, उस दिन वह दासगुप्त बाबू के साथ रहता था ।

दासगुप्त बाबू के बारे में याद आया तो विश्वेश्वर गरामी की याद आयी । उस दिन अंधेरा होने के बाद ही वह युवती आयी थी । कंधे पर सोयी पड़ी बच्ची भी थी । दिन में उससे मिलने के लिए रिहैबिलिटेशन ऑफिस में पहले भी वह एक-दो बार आयी थी । घंटों तक वहां खड़ी रोयी थी । उसी प्रकार मिलने आना और बिना रुके रोना उसके पहले भी कई बार हुआ था । एक ही बात पर उसको अचरज हुआ था । एक मानव जीवी के पास इतने ज्यादा आंसू कहां से आये ? इतने आंसू कहां बचाकर रखे हैं ? रोज की तरह उस दिन भी उसने जवाब दिया था— 'कानून बदलने का मुझे क्या अधिकार है ? तुमको मैं कैसे सेटलर बनाकर स्क्रूट कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता हूं । वहां जाकर रहने के लिए एक सेटलर को परिवार चाहिए । परिवार का मतलब है पत्नी, पति और कम-से-कम एक बच्चा । ज्यादा बच्चे होने से ज्यादा अच्छा होगा । लेकिन तुम्हारा तो पति भी नहीं न है ?'

उस शाम दासगुप्त बाबू के घर में आने के समय भी उसने रोना थोड़ा भी कम नहीं किया था ।

उस दिन उसने उतनी ज्यादा शराब नहीं पी थी । अचानक उसके मन में एक विचार आया ।

''मैंने एक रास्ता ढूंढ़ निकाला है । अब तुम निश्चिंत होकर जाओ । कल दफ़्तर में आना । तुम्हें रिक्रूट करके ले जाऊंगा ।''

उसके जाने के बाद दासगुप्त बाबू ने जो सवाल किया उसका एक-एक शब्द आज भी याद है ।

''व्हाइ शुड यू गिव फाल्स प्रोमिसस टु पीपुल... ?'' (तुम लोगों को झूठा आश्वासन क्यों देते हो ?)

''दासगुप्त बाबू, मैंने बेकार नहीं कहा । दो लड़कियों को बगल में रखकर घूमता, इसकी तरह रोनेवाला एक शरणार्थी है न ?... इन दोनों को जोड़कर एक परिवार बनाना है...''

मैं नहीं जानता था कि उस दिन दासगुप्त बाबू क्यों उदास होकर खामोश बैठे थे । उन्होंने तत्वज्ञान पढ़ा और पढ़ाया था । फिर भी क्यों वह मौन बैठे, यह आज भी नहीं मालूम कर पाया ।

''लगता है वह संभव नहीं होगा । यह स्त्री इसी इलाके के पास किसी जिले की है । वह चिटगांव जिले के सिरे के किसी गिरिवर्ग प्रदेश का आदमी है । चिटगांव वाले साधारण तौर पर कठोर स्वभाव के हैं । उसकी पत्नी मरी नहीं है । शरणार्थी कैंप में सुनने में आया है कि एक ही लात मारी थी उसने । मैं नहीं जानता कि क्या वह इस पर राजी होगी ।''

उसके बाद उन्होंने जो वाक्य कहा, उसका हर शब्द आज भी याद है । ''हाउ यू बीन ए बंगाली, यू कुड हैव नोन द कलचरल डिस्पारिटी बिटवीन देम... और एक बात भी है । वह विधवा नहीं है । उसका पति कहीं पर बिछुड़ गया था ।''

''मैं एक बार कोशिश करके देखता हूं ।''

''जरूर कीजिए ।'' दर्शनशास्त्र में दासगुप्त बाबू ने जो वाक्य कहा था वह आज भी दुहरा सकता हूं, ''लेट अस ग्राफ्ट देम एंड सी द इफेक्ट ऑव ए ग्राफ्टेड प्लांट...''

अगले दिन उन दोनों को शरणार्थी कैंप के एक कोने में ले गया । बहुत संकोच के साथ, सूखे गले से, मैंने सब-कुछ बताया ।

बिश्वेश्वर गरामी ने कुछ भी नहीं कहा । उस औरत को आंखों से कई बार देखता रहा । पास में खड़ा हुआ तो उनके कलचरल डिस्पारिटी के बदले शारीरिक तौर में जो अंतर था, वह श्रद्धेय था । औरत की लंबाई उससे दो-तीन इंच ज्यादा थी । भूख ने उसके शरीर में हड्डियां छोड़कर बाकी सब-कुछ सोख लिया था । उसकी समझ में आया कि उतनी ऊंचाई एक भूखे शरीर के लिए एकदम शाप ही है । उसकी आंखों से आंसू गिरते रहे । आंचल से आंसू पोंछते हुए वह खामोश खड़ी रही ।

उन दोनों को रिहैबिलिटेशन ऑफिस में ले गया । एक-एक रिहैबिलिटेशन बॉंड निकाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

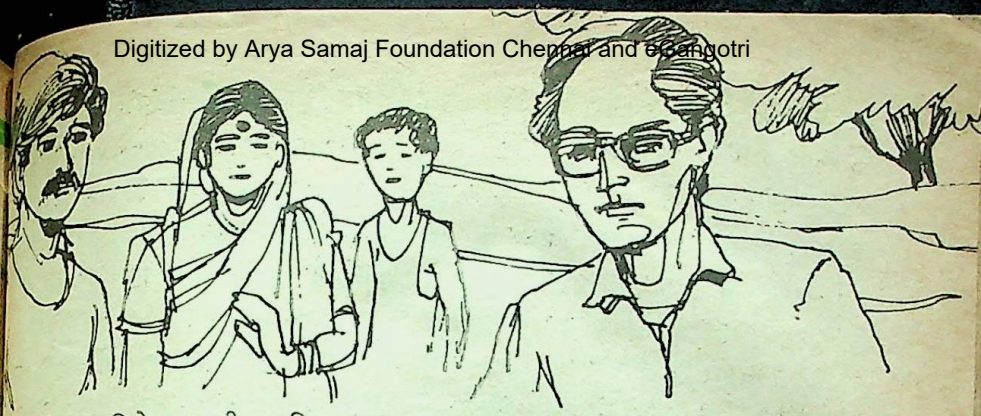

बौंड में लिखा : बिश्वेश्वर गरामी—परिवार का मुखिया।

"तुम्हारा नाम ?"

"मैथिलि परमाणिक।"

"आज से तुम मैथिलि परमाणिक नहीं, मैथिलि गरामी हुई।"

उसने लिख दिया : मैथिलि गरामी-पत्नी। बच्चों के खाने में उसकी दोनों लड़कियों का नाम लिखा। औरत ने लड़की का नाम अभी नहीं रखा था। इसलिए तीसरी बच्ची के स्थान पर खुकी लिखा—उसके माने लड़की है। बौंड में बिश्वेश्वर गरामी से बायें अंगूठे का निशान लगवाया।

अगले दिन सरस्वती पूजा थी। शरणार्थियों को कैंप के अधिकारियों ने पहले से चावल बांट दिया था। उस दिन दोपहर को वह यों ही कैंप में घूमने गया था। एक पेड़ की छाया में बैठी मैथिलि खाना बना रही थी। तीनों लड़कियां उसकी गोद में सिर रखकर सो रही थीं। बिश्वेश्वर गरामी द्वारा बढ़ाये हुक्के में वह आग रख रही थी। घंटों के अंदर युगों पुराना लगनेवाला सत्य। दासगुप्त बाबू को इसके बारे में बताया। वे स्तब्ध रह गये। किसी फिलोसफी से उसकी व्याख्या नहीं कर पाये। केवल इतना ही कहा—"ह्यूमन बीयिंग्स यू कैन एक्सप्लेन... बट नोट ह्यूमन लाइफ...।"

फिर भी कैंप में फुसफुसाहट हुई। कोई धार्मिक विधि किये बिना इस प्रकार जोड़ देते हो ? द्वीप में पहुंचने के बाद एक ब्राह्मण के सान्निध्य में सभी रिवाजों सहित शादी करानी थी। द्वीप में पहुंचते ही छोटे भाई-जैसा, या उससे भी ज्यादा, प्यार करनेवाले उस बंगाली उच्चाधिकारी को यह बात बता दी।

"तुम किसी विधि के झंझट में क्यों जाते हो ? वह सब भूल जाओ। वैसे ही एक गैर बंगाली को शरणार्थियों को बसाने के लिए भेजने में कई लोगों में असंतोष है। अगर कोई जान गया कि जो पति-पत्नी नहीं है, उन्हें फैमिली के रूप में चुन लिया है तो..."

एकदम कड़े होकर उसने कहा था : "यू लीव इट देयर !" (तुम इसे वहीं रहने दो !)

कोई रस्म अदा नहीं की। पंचवटी गांव में बिश्वेश्वर गरामी को पांच एकड़ खेत और एक घर अपने हाथ से लौटरी निकालकर दी। पांच एकड़ कहने से वे नहीं जानते थे। पंद्रह बीघा खेत कहने से उनकी समझ में आता था। बाद में पंद्रह बीघा जमीन मिलने की अर्हता भी उन्हें थी। खेत नाप देने के बाद इसके बारे में घोषणा करेंगे।

बस के सफर के बीच कहां से यह बात मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आ गयी, यह जान नहीं पाया । बहते पानी की तरह यादें हाथ से छूट रही थीं । अचानक उसने बस रोकने के लिए कहा ।

"साब, आपने तो बेटापुर का टिकट खरीदा है । यह तो पंचवटी है ।" बड़ी नम्रता के साथ कंडक्टर ने कहा ।

आज सबेरे कटमतल्ला रेस्ट हाउस के सामने उससे मिलने के लिए उस गांव की पुरानी पीढ़ी के सभी लोग आये थे । तब भी लोग आ रहे थे । उनके द्वारा प्रदर्शित आदर भाव देखकर वह कंडक्टर दंग रह गया । प्रवासियों को उससे मिलकर प्रणाम करने का अवसर देने के लिए कंडक्टर ने बीस मिनट के लिए बस रोकी थी । तब उसने मन-ही-मन कहा था कि वह एक अच्छा लड़का है ।

उसको उतारने के बाद बस आगे चली । बस छूटने के बाद उसे दुःख हुआ ! यह क्या-क्या कर रहा है ? उसने खुद से पूछा । उसे अपने आप पर घृणा होने लगी । क्यों बीच में उसने सफर तोड़ दिया । लक्ष्य भूल जाने की इस आदत के कारण वह कभी भी लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाया था । उसने खुद फैसला किया ।

समुद्र से आनेवाली हवा शरीर में लगी । बगल में खारा पानी चढ़ आनेवाला कच्छ है । उसके बाद समुद्र । किसी तरह की रुकावट के बिना बहनेवाली समुद्र की हवा । पंचवटी गांव के बीच वही पुराना इकलौता टीला । इस टीले के बगल में आज भी जंगली पेड़ों का घना अंधकार है । आज भी पेड़ों की चोरी को रोककर उस टीले को संरक्षण प्रदान किया गया है । इसलिए इस इलाके के बारे में जो भी यादें हैं, उसमें कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है ।

सफर बीच में भंग करने से दुःख नहीं हुआ । इस द्वीप समूह में ऐसी कोई भी जगह नहीं है जहां उसने काम नहीं किया हो । लेकिन उसे सबसे सुंदर लगा यह पंचवटी गांव । पुराने मानचित्र में पंचवटी का नाम हाप्पीवाली था । अंगरेजों द्वारा दिया गया रोमांटिक नाम ।

कंधे में बैग लटकाकर वह पंचवटी गांव की ओर चला । उस समय की पगडंडी अब नहीं है । हालांकि नयी सड़क भी पुराने जंगली झरने के किनारे से ही है । इस रास्ते से कितनी बार चला था । साथ में चपरासी भी होता था । फिर भी अकेले चलने का प्रयोजन ही था । जंगल में काम कर चुके पुराने चपरासी बहुत जल्दी-जल्दी आगे निकल जाते थे । जंगल में पहले-पहल आनेवाला व्यक्ति बहुत ही पीछे रह जाता था ।

पंचवटी गांव नजदीक आ रहा है । रास्ते में चल रहे सभी लोग युवक हैं । कोई भी परिचित नहीं दीख रहा है, इसमें आश्चर्य नहीं है । गांव में प्रवेश करनेवाले स्थान पर वह रुका । दूसरी दिशा से आये युवक से पूछा : "बिश्वेश्वर गरामी का घर कहां है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे यह भी पता नहीं कि बिश्वेश्वर गरामी आज जिंदा है या नहीं ।

"गरामी चाचा अभी यहां आएंगे । मैं जब आ रहा था तब रंक जाने के लिए तैयार होकर वे घर में खड़े थे । यहीं रुकने से हो जाएगा । पंच मिनट के अंदर यहां आ जाएंगे ।"

बैग नीचे रखने के बाद गांव की ओर नजर गड़ाकर वह खड़ा हुआ । लौटरी निकाली तो सबसे पहले निकला नाम बिश्वेश्वर गरामी का था । इस गांव में घूमने के बाद पहला घर । उस समय एक ही कतार में सरकार घर बनाकर देती थी । लोग घने जंगल के बीच में आ पहुंचे थे, इसलिए शरणार्थी मिलकर रहने की इच्छा रखते थे । फिर खेत दिया । शरणार्थी जंगल से परिचित हुए । अपने जीवन से बढ़कर अपनी जमीन की रक्षा करने की इच्छा उनके मन में आयी । घर तोड़कर उसका सामान ले जाकर अपनी रुचि के अनुसार अपनी-अपनी जमीन में फिर से घर बना दिया । उस जमाने में जमीन के नीचे में बड़े-बड़े जंगली पेड़ों के ठूंठ दिखायी पड़ते थे । प्रवासी उनको आग लगाते थे । शाम के समय वे जलते और धुआं छोड़ते रहते थे । वह एक वीभत्स दृश्य था । अब बड़े-बड़े सभी पेड़ों के ठूंठ जल चुके हैं और जड़ें तक उखाड़ दी गयी हैं । जमीन ठीक करके मेंड़ें बना दी हैं । यहां वर्षा होने के दृश्य को देखकर वह कितनी बार बैठा था । पहाड़ की ढाल से चांदी के धागे की तरह वर्षा के बिंदुओं का उतरते आना देखने के लिए । तीन-चार बूढ़े लोगों को दूर से चलकर आते देखा । पास आते-आते सबको उसने पहचान लिया । लेकिन सिर्फ बिश्वेश्वर गरामी का नाम ही याद है । उसके पैर में कुछ तकलीफ है । चलने में दिक्कत हो रही है । गठिया हो गया होगा । उन लोगों को ही ध्यान से देखकर वह खड़ा था—हो सकता है इसलिए पास आने पर चारों रुक गये ।

"क्या मुझे नहीं पहचाना ?" उसने पूछा ।

क्या जवाब देना है, यह जाने बिना चारों उसे घूरते रहे । क्या खुद परिचय कराना पड़ेगा ? अचानक एक ने कहा ।

"अगर ऐसा नहीं है तो मुझे माफ करना । हमारे पुराने कॉलोनाइजेशन असिस्टंट आफीसर हैं न ?"

उसने 'हां' नहीं कहा । इसी बीच चारों ठीक सामने आकर हाथ जोड़कर सिर नीचा करके खड़े हो गये ।

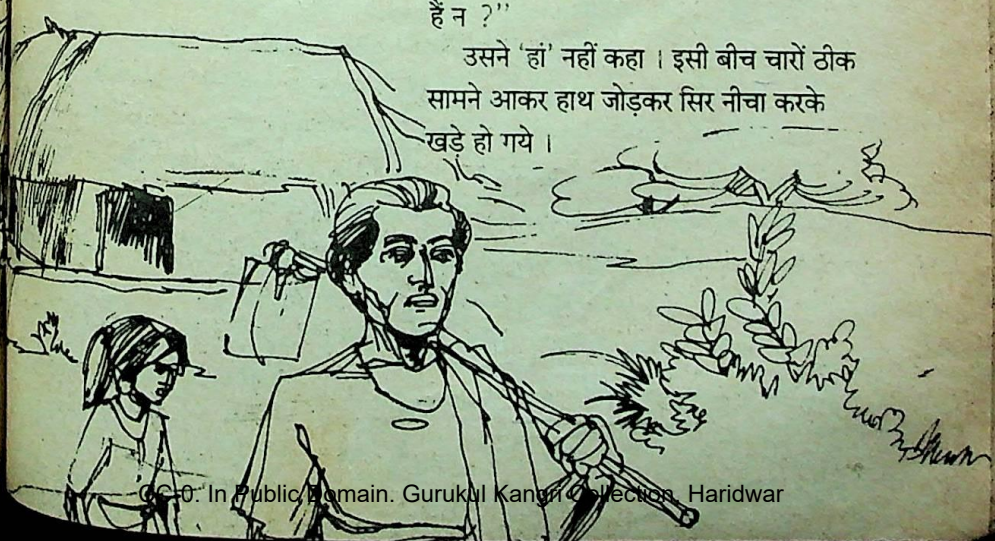

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रंक जाने के लिए निकले हैं न ? जाइए । मैं यहां जरा घूम-फिरकर बेटापुर जाऊंगा ।"

"पहले हमारे घर चलें । उसके बाद यहां की सब जगह ले जाकर दिखा दूंगा ।" बिश्वेश्वर गरामी ने कहा । हम लोगों के पुराने आफीसर को यहां अकेले छोड़कर जाना ठीक नहीं है । आप लोग चलिए । वहां कह देना कि इसी कारण से मैं नहीं आया ।"

उसको छोड़कर जाने के लिए औरों का मन नहीं हो रहा था । और कुछ देर खड़े होने के बाद हाथ जोड़कर विदा लेकर वे चले गये ।

दो दिन पहले रंक में गोली चली । दो बंगाली विद्यार्थी मरे । आज उसका विरोध प्रकट करने के लिए एक सभा हो रही है रंक में ।

उसने सोचा—बंगाली है । गोली चलाना और सभा बुलाना उन लोगों के खून में मिला हुआ है । कहीं भी जाएं ।

वे चले । पंचवटी गांव के बीच से बहता झरना पार किया । पुराने जमाने में इस झरने के दोनों ओर बेंत की झाड़ियां थीं । अब बेंत की झाड़ियां नहीं हैं । जंगली झरना सूखा पड़ा है ।

घर के आंगन में खड़ा होकर बिश्वेश्वर गरामी चिल्लाया —"बच्चों की मां, एक बार बाहर आओ । देखो कौन आया है..."

एक औरत बाहर आयी । पुरानी ऊंचाई को हरा देनेवाले ढंग से शरीर मोटा हुआ भी है । बहुत मोटे गाल, पान खाकर अच्छी तरह लाल किये होंठ । चौड़े माथे पर सिंदूर का एक बड़ा तिलक । एकदम मादक रूप । अगर उस दिन उसे इस रूप में देखता तो सहानुभूति के बदले उसके मन में जरूर कोई विकार आ जाता ।

वह घबड़ाकर खड़ी रही । फिर दौड़कर पैर छुए, चरणधूलि माथे पर लगायी । उसके बाद फूट-फूटकर रोने लगी ।

"बिना रोये तुम्हें कभी नहीं देख पाया ?" उसने हंसने की कोशिश की ।

"यह उस दिन का रोना नहीं है । यह खुशी का रोना है ।"

"अंदर आकर बैठिए ।"

वह अंदर चली गयी ।

बंगाल के गांवों की तरह घर बने हैं । रहने का कमरा बीच में और कुछ छोटे-छोटे कमरे उसके चारों ओर । रसोईघर और धान कूटने का कमरा है । धान कूटने का डेक्की नामक लकड़ी का यंत्र पड़ा है । उसको पैर से चलाने पर धान कुटता है ।

वह एक कप चाय और उबले हुए बत्तख के दो अंडे ले आयी ।

"खा लीजिए । कुछ ही देर में खाना तैयार हो जाएगा ।"

"अब इसके ऊपर से खाना भी ?"

"बिना खाना खाकर जाएंगे, क्या ? आज हम लोग समृद्ध हैं । बेचने के बाद भी हम लोगों के पास बांस की टोकरियों में अब भी कम-से-कम सौ मन धान पड़ा है ।"

बंगाली बांस की बड़ी टोकरियों में धान रखते हैं ।

उसने चाय पी । खूब ज्यादा बकरी का दूध डाली चाय । बकरी का दूध डालकर बनायी चाय पीये कितने दिन हो गये हैं ।

"मैंने सोचा था कि तुम लोग मुझे भूल गये होगे ।"

"ऐसा कोई भी दिन नहीं जिस दिन हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका नाम नहीं लेते हों । अंत में मैंने इसको हिम्मत बंधाया था कि हम लोग मद्रास जाएंगे । वहां से रामेश्वर और रामेश्वर से केरल । केरल में साब कहीं भी हो, हम लोग खोज निकालकर लेंगे..."

पहले बंगालियों को केरल का नाम लेना ही नहीं आता था । सब कुछ मद्रास था । आज तो बंगाल, केरल, त्रिपुरा-इस प्रकार एक नये मानचित्र ने रूप ले लिया है । हो सकता है इसलिए अलग से केरल की याद आयी होगी ।

"फिर भी इतने सालों बाद मुझे याद करते हैं..."

"अगर मानव है तो जरूर याद करेंगे । उस शाम को मैं दासगुप्त बाबू के घर आयी थी न ? मैं जानती थी कि आप वहीं हैं । मैं जानती थी कि आप क्या जवाब देने जा रहे हैं । साथ में पुरुष नहीं है, इसलिए परिवार के रूप में नहीं ले जा पाएंगे । अंतिम बार यह जवाब सुनने के लिए ही मैं आयी थी । उसके बाद मुझे बच्ची के साथ इच्छामती नदी में कूदकर मरना था... । लेकिन वहां आने पर मुझे एक दूसरी चीज ही मिली..."

"क्या तुम नहीं जानती हो कि तुम्हें ज्यादा बोलना या रोना नहीं चाहिए ?" बिश्वेश्वर गरामी ने उसको टोका ।

"आप नहीं जानते हैं । इसको हार्ट की बीमारी है ।"

"एक बात और बोलकर मैं चुप हो जाऊंगी । हम दोनों को परिवार बनाने के दूसरे दिन सरस्वती पूजा थी । उस दिन आपने मुझे एक साड़ी और इन्हें एक कमीज खरीदकर दिया था, यह कैसे भूल सकती हूं... ?"

इस बात को वह तो कब ही भूल चुका था । इच्छामती नदी के ऊपर बने लकड़ी के पुल के दोनों ओर बैठकर फेरीवाले कपड़े बेचते थे । वहां से उसने सबसे कम दाम की एक करघा साड़ी और कमीज खरीदा था ।

"हम दोनों एक बार बाहर घूमकर आएंगे । आपके द्वारा नापकर दी हुई जमीन आज चलकर देखनी है न ?" बिश्वेश्वर गरामी ने कहा ।

वे दोनों बाहर निकले । पैदल चलकर उसने पूरे गांव को देख लिया । वह तृप्त हुआ । सिर्फ पंचवटी गांव पर ही नहीं, पूरी मानवता की स्थिति पर तृप्ति हुई ।

बिश्वेश्वर गरामी की पत्नी ने भात परोसा । कद्दू के पत्ते से बनायी सब्जी । सिर्फ पत्ता नहीं, छोटे-छोटे कद्दू भी हैं । शाक को बंगाली साग कहते हैं । सबसे पहले वही परोसा जाता है । उसके बाद दाल और केकड़ा की कढ़ी । हाथ की पकड़ में नहीं समानेवाले बड़े-बड़े केकड़े ।

खाना खाते वक्त उसने पूछ लिया : "क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

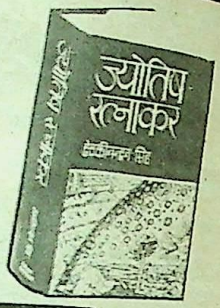

श्रेष्ठ ज्योतिष साहित्य

सुगम ज्योतिष (सिद्धांत, जातक, दशा, तांत्रिक, संस्कार, मुहूर्त और प्रश्न संबंधी सहस्त्राधिक विषयों का अपूर्व संग्रह)—देवीदत्त जोशी
सं. जर्नादन शास्त्री पाण्डेय (स.) 250 (अ.) 175

वैवाहिक विलम्ब के विविध आयाम एवं मंत्र—मृदुला त्रिवेदी (स.) 65 (अ.) 45

ज्योतिष रत्नाकर—देवकीनन्दन सिंह रु. मूल्य (सजिल्द) 190 (अजिल्द) 150

वी.एल. ठाकुर:
सचित्र ज्योतिष शिक्षा
ज्ञान खण्ड 55, **गणित खण्ड** (दो भाग) 140, **फलित खण्ड** (तीन भाग) 185, **वर्षफल खण्ड** 45, **प्रश्न खण्ड** 40, **मुहूर्त खण्ड** 16, **संहिता खण्ड** 30

मुकुन्द वल्लभ मिश्र:
अर्घमार्तण्ड (तेज मंदी का अनुपम ग्रन्थ) 16
कर्मठगुरु 32
फलितमार्तण्ड (हिंदी टीका) 50

गोपेश कुमार ओझा:
अंक विद्या (ज्योतिष) 18
जातकपारिजात (हिंदी व्याख्या सहित) दो भागों में (स.) 250 (अ.) 175
फलदीपिका—भावार्थबोधिनी (स.) 85 (अ.) 55

हस्तरेखा विज्ञान (शरीर-लक्षण सहित) (स.) 70 (अ.) 45

केदारदत्त जोशी:
मुहूर्तचिन्तामणि (स.) 95 (अ.) 65
बृहज्जातकम् (स.) 100 (अ.) 70
सिद्धांत शिरोमणे गोलाध्याय (स.) 160 (अ.) 120
ताजिक नीलकण्ठी— (स.) 100 (अ.) 70

चन्द्रदत्त पन्त:
चन्द्रहस्त विज्ञान (स.) 100 (अ.) 75

मुरलीधर चतुर्वेदी:
सारावली—श्रीमत्कल्याण वर्मा विरचित (हिंदी व्याख्या सहित) (स.) 110 (अ.) 70
होरारत्नम् दो भागों में (स.) 330 (अ.) 230
बृहद-देवज्ञरञ्जनम् (हिंदी व्याख्या सहित) दो भागों में (स.) 280 (अ.) 220
मुहूर्तगणपति (स.) 85 (अ.) 55

दीवान रामचन्द्र कपूर:
लघुपाराशरी भाष्य (स.) 60 (अ.) 45

रामचन्द्र पाण्डेय:
ज्योतिर्विदाभरणम् (स.) 160 (अ.) 120

ब्रजबिहारी शर्मा:
चमत्कार चिन्तामणि—हिंदी व्याख्या (स.) 140 (अ.) 90

वी.पी.पी. द्वारा उपलब्ध संपूर्ण सूची के लिए लिखें:—

मोतीलाल बनारसी दास
41-यू ए, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007.
शाखाएं: अशोक राजपथ, पटना • चौक, वाराणसी • 120 रायपेटा हाई रोड, मैलापुर, मद्रास • 24, रेसकोर्स रोड, बंगलौर

VANMB/189

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके देश में बंगाली हैं ?''

''तुम कैसी बेवकूफी की बातें कर रही हो ? इनका देश केरल है न ? वहां बंगाली कहां से आये ?''

''मेरा पूछने का कारण है । इतने सालों के बाद भी ये बंगला बोलते हैं ।''

तुम लोगों ने ही मुझे बंगला भाषा सिखायी थी । तुम लोगों के दुःख से मैंने बंगला भाषा सीखी थी न ? वह दुःख की भाषा है । मैं उसे कैसे भूल सकता हूं ? वह सब रहने दीजिए.. तुम्हारी लड़कियां सब... ?

''तीनों लड़कियों की शादी कर दी ।''

उन दोनों की तब भी तीन लड़कियां थीं । इस संग में क्या कोई बच्चा नहीं हुआ ? लेकिन पूछने की हिम्मत नहीं हुई ।

वह खाना खाकर उठा ।

''अब कुछ देर आराम कीजिए...''

''नहीं, मुझे तुरंत जाना है । शाम होने के पहले बेटापुर पहुंचना है । तभी तो निर्धारित स्थलों पर पहुंच पाऊंगा ।''

उसके साथ बिश्वेश्वर गरामी और उसकी पत्नी भी चली । गरामी की पत्नी जंगली झरने के किनारे तक गयी । उसे आश्चर्य हुआ । वह हंस रही है । हंसते हुए विदा कर रही है ।

उसने कहा, ''सभी बातें इन्हें बता देना । अगर मैं बताना शुरू करूंगी तो बुरी तरह रो जाऊंगी ।''

मना करने के बावजूद भी बिश्वेश्वर गरामी ने कहा कि वह रोड तक साथ चलेगा । गांव से पहाड़ के बगलवाले रास्ते में पहुंचा तो उसने पूछा, ''सभी घटनाएं बताने को उसने कह दिया था । क्या तुम दोनों के बीच झगड़ा होता है ?''

''झगड़ा तो होता ही है । मनमुटाव ज्यादा-से-ज्यादा दो दिन तक रहता है । उसके बारे में नहीं कहा । यह एक दूसरी बात है । उसका पहला पति किसी तरह खोजबीन करके उससे मिलने के लिए आया था ।''

''तब क्या कुछ गड़बड़ी हुई थी... ?''

कौन-सी गड़बड़ी ? उस आदमी से मुझे किसी तरह का अनिष्ट नहीं हुआ । बहुत अच्छा आदमी । लेकिन उससे मिलने के लिए वह राजी नहीं हुई । उसने कहा, ''मेरी सबसे मुसीबत के दिनों में ईश्वर-जैसे उस मद्रासी बाबू ने हम दोनों को जोड़ दिया था । अब इस जिंदगी में मुझे यही गांठ ही चाहिए... ।

यह सब बताते समय बिश्वेश्वर गरामी क्यों रोता है, पता नहीं चलता ।

उसकी आंखों से आंसू ढलक पड़े थे । लेकिन वह आंसू दुःख के नहीं थे । अपने हाथों से आरोपण किये हुए पौधे की शक्ति के बारे में सोचने पर हुआ आनंद से ही थे । ●

जब चोरों को घर में कुछ नहीं मिला और वे खाली हाथ लौटने लगे तो सोने का नाटक कर लेटे हुए घर के मालिक से न रहा गया, बोल पड़ा, ''चल पड़े भाई ?''

''हां भाई, खाली हाथ ही चल पड़े ।''

''अरे भाई, जब दिन में मुझे इस घर में कुछ नहीं मिला तो रात में तुम्हें क्या मिलना था ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयोजक : अकिंचन

कितनी सार्थक होगी युवा वर्ग से सामाजिक सुधार की आशा

एक ओर आज युवा पीढ़ी बेहिसाब कुसंस्कृत होती जा रही है, जिसके नेपथ्य में भारतीय चेतना सिसकियां भर रही है । दूसरी ओर, युवा वर्ग से दुनिया में शांति, सद्भावना और एकता के नये मानदंड स्थापित करने की आशा की जा रही है । वस्तुतः युवा वर्ग एक हौवा और हीनभाव मंडित चेतना का प्रतीक बन गया है । ऐसे में, युवा वर्ग से किसी भी बड़े और युक्ति-संगत सामाजिक सुधार की आशा कितनी सार्थक होगी ? वर्तमान परिस्थितियों में युवा वर्ग को कैसी दिशा देनी चाहिए ?

आइए, ऐसे ही कुछ सवालों के जवाब तलाशें । यहां इसी संदर्भ में देश के कुछ प्रगतिशील युवा साहित्यकारों एवं पत्रकारों के विचार प्रस्तुत हैं :—

युवा अपने कर्त्तव्यों के प्रति समर्पित हों

—निवेदिता

मधुबनी महिला कॉलेज (बिहार) में हिंदी की प्रवक्ता कु. निवेदिता जी कहती हैं कि किसी समाज या राष्ट्र की युवाशक्ति उसकी अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं आधारभूत शक्ति है । उनमें कुछ कर गुजरने का जोश चरमोत्कर्ष पर होता है । युग का जुआ बलिष्ठ युवा-कंधों पर ही टिका होता है । अतः इस वर्ग का सुरुचि संपन्न एवं सद्गुणी होना अत्यंत आवश्यक है । किंतु, यह खेद की बात है कि आज भारत की युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित होती जा रही है, उनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का अभाव आम बात है । देश के भविष्य में युवा आज मादक द्रव्यों के प्रवाह में मदहोश बहे जा रहे हैं—ऐसे में इनसे किसी बड़े सुधारवादी परिवर्त्तन की आशा करना असंगत-सा लगता है ।

आज युवा वर्ग के लिए सर्वप्रथम आत्मशुद्धि आवश्यक है । तब ही वह देश की प्रगति के लिए कार्य कर सकता है ।

आज आदर्शविहीन जीवन जीनेवाले युवाओं की एक लंबी छोर है । उनके पौरुष का स्वाभिमान बिखर चुका है, जीने की उद्दम प्रेरणा विलीन हो चुकी है । युवावर्ग के इसी दिशाहीन प्रभाव को सुधारने तथा उनमें नैतिक जागृति लाने, उनके स्वाभिमान को उत्प्रेरित करने की आवश्यकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश का युवा वर्ग निश्चय ही समाज-सुधार की आकांक्षा रखता है । लेकिन उसके सम्मुख प्रचंड कठिनाई है । ..... आज युवा वर्ग के लिए सर्वप्रथम आत्म शुद्धि आवश्यक है... युवा वर्ग से सामाजिक सुधार की कल्पना पत्थर पर दूब लगाने जैसी है !

आत्म-चेतना को प्रदीप्त कर अपना नैतिक धरातल ठोस करना सुधार के क्षेत्र में युवाओं का पहला कदम हो । जीवन के कटुसत्य से परिचित होकर वक्त की वाजिब पहचान करें । शिवत्व ही उनका मूलमंत्र हो । सुधार की भावना से ओतप्रोत युवा समाज, प्रांत और राष्ट्र से आगे बढ़कर विश्व-शांति स्थापित करने के लिए कृत संकल्प हो ।

नेहरू की नहीं गांधी की जीवन-दृष्टि चाहिए

—सुरंजन

मगध कविता मंच के संयोजक, कवि सुरंजन की मान्यता है—"यह तो एक निर्विवाद तथ्य है कि समाज हर स्तर पर भ्रष्ट हो गया है और इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि भ्रष्टाचार की गंगोत्री सत्ता के शिखर पर है । देश का युवावर्ग निश्चय ही समाज सुधार की आकांक्षा रखता है, और इसमें प्रयत्नशील भी होना चाहता है । लेकिन कठिनाई उसके सम्मुख प्रचंड है । पहली कठिनाई है बेरोजगारी, जो देश में प्रचलित शिक्षा-पद्धति से दूर होनेवाली नहीं है । अतः सबसे पहले शिक्षा का सही अर्थों में रोजगारोन्मुखी होना होगा । और दूसरा प्रयास यह कि संविधान में आवश्यक संशोधन कर सबों को रोजगार प्राप्त करने की गारंटी देनी होगी ।

"आज का युवावर्ग भी बुरी तरह सुविधाकांक्षी हो गया है । वह अनुभव करता है कि किसी साधन-संपन्न सत्ताधारी से संपर्क जोड़कर उसकी खुशामद कर सुविधाएं प्राप्त करे और ऐसे लोग भी अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु युवावर्ग का गलत उपयोग करना चाहते हैं । बड़े पैमाने पर चल रहे इस प्रयास को आज रोकने की जरूरत है, और शायद यह भी संभव है कि देश में एक वैचारिक क्रांति हो । पश्चिम की व्यावसायिक सभ्यता ने भारतवर्ष को आज बुरी तरह जकड़ लिया है, फलतः हमारे सोचने का तरीका ही बदल गया है । अधिक-से-अधिक धन प्राप्त करना और उसके सहारे भौतिक सुविधाएं प्राप्त करना हमारे युवावर्ग का भी लक्ष्य बन गया है, इसीलिए युवावर्ग भी भ्रष्टाचार के सभी तरीकों को अपनाने में कोई शर्म महसूस नहीं करता । चाहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदिता

सुरंजन

फजल इमाम मल्लिक

अवधेश प्रीत

वह परीक्षा में कदाचार हो, नौकरी पाने के लिए रिश्वत देने का कार्य हो, लूट, खसोट और डकैती जैसा व्यापार हो या दहेज लेना हो या पर्याप्त दहेज न मिलने के कारण नवविवाहिता को जलाकर मार डालना हो। चूंकि आज देश में राजनीतिक मगरमच्छ सर्वशक्तिमान हैं, इसलिए सुधार की दिशा में पहल भी राजनेताओं को करनी होगी। उन्हें 'सादा जीवन, उच्च विचार' को व्यवहार में उतारना होगा और टी.वी. तथा कंप्यूटर संस्कृति को कम-से-कम कुछ काल के लिए तिलांजलि देनी होगी।

"आज देश को नेहरू की दृष्टि की नहीं, गांधी की जीवन-दृष्टि की आवश्यकता है।"

खुद को टटोलना होगा

—फजल इमाम मल्लिक

किंतु कुछ विचार इनसे भिन्न भी हैं। 'सनद' के संपादक फजल इमाम मल्लिक का कहना है—"क्या सचमुच ऐसा लगता है कि आज का युवावर्ग गुमराह हो गया है ? जिंदगी के इस भागदौड़ में अकिंचनजी आप जिसे गुमराह होना मानते हों, वह आज के इस परिवेश में जहां आदमी-आदमी के रिश्तों को भूलता जा रहा है, एक सच्चाई भी हो सकती है जिसे हम आप न चाहकर भी अपना लेते हैं। सवाल यह भी उठता है कि अगर युवा पीढ़ी आज उस लीक पर नहीं चल रही है तो कसूर क्या केवल युवावर्ग का ही है। मेरे विचार से दोष हमारे अंगरेजों का भी है। वैसे इतना तो आप भी मानते होंगे कि बनी-बनायी परंपराएं तोड़ने पर कुछ सार्थक बातें भी सामने आती हैं। तब ऐसे में आप उसे क्या कहेंगे ?

"वैसे एक स्तर पर हम अपने रास्ते से हटे हैं, गुमराह भी हुए हैं, लेकिन जिस देश में भ्रष्टाचार, बेईमानी, चोरी, रिश्वत आम हो, डिग्रियों का बोझ लादने के बाद भी एक अदद अच्छी नौकरी नहीं मिलती हो, और स्कूल-कॉलेजों में राजनीति और गुटबंदी की पढ़ाई हो वहां आप या हम इस पीढ़ी से उम्मीद भी क्या कर सकते हैं। एक पूरे-के-पूरे असंतोष में हम जी रहे हैं, वहां सुधार जैसा शब्द बेमानी-सा लगने लगता है—तब ऐसे में हम कोई उम्मीद करें भी तो कैसे ? ऐसी बात नहीं कि रास्ता नहीं है—लेकिन उस पर पहले चलना कौन चाहेगा ? जब तक पूरी-की-पूरी व्यवस्था में सुधार नहीं आता, युवावर्ग असंतोष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

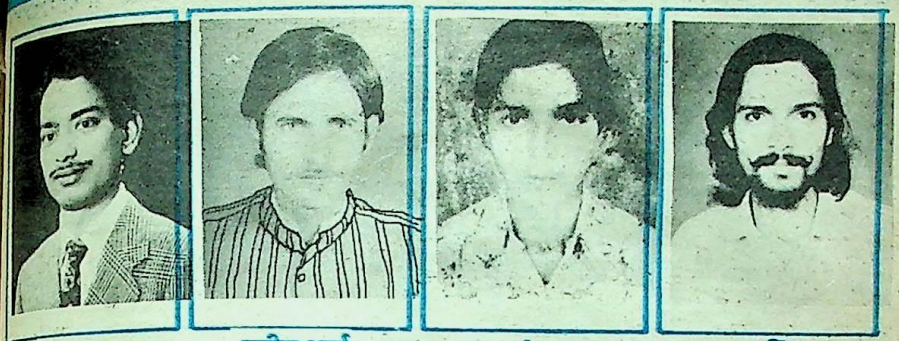

मुकेश प्रत्यूष | सतीश आर्य | हंसा | अकिंचन

में जीता रहेगा । वैसे उस रास्ते पर चलने के लिए हर व्यक्ति को अपने आप को टटोलना होगा और बिना किसी की रहनुमाई का इंतजार किये हरेक को खड़े हो जाना होगा । रहनुमाई के लिए 'मैं' बनकर आना होगा, तब जाकर शायद कोई हल निकले इस सामाजिक गुमराहपन का ।"

सुधार की बात बेमानी
—अवधेश प्रीत

इतना ही नहीं, दैनिक 'हिंदुस्तान' के पटना कार्यालय में उप-संपादक श्री अवधेश प्रीत की भी कुछ ऐसी ही मान्यता है—समाज सुधार की युवा आकांक्षा का क्या मतलब ?

सुधार की बात तो वहां उठती है, जहां कुछ बिगाड़ा हो । हमारे समाज में स्थितियां बिगड़ी नहीं, नष्ट हो गयी हैं । तब विकार से निजात पाया जाता है, न कि सुधार के भरोसे बैठा जाता है । ऐसे में मैं 'सामाजिक सुधार' की न अपेक्षा करता हूं, न ही इस तरह की बेबुनियाद आकांक्षा को तरजीह देता हूं ।

"समाज में वह सब कुछ जो अमानवीय है, अतिरंजित है, खत्म होना चाहिए, समूल ।

"मैं पूछता हूं कि समाज में आप क्या सुधार लाना चाहते हैं ? सड़े-गले और मर रहे समाज को मरहम-पट्टी के बूते पर कब तक जिंदा रखा जा सकता है ? ऐसा क्या बचा है, जिसे सुधार भर देने से समाज सुंदर, स्वस्थ और मानवीय हो जाएगा ? आपका आशय दहेज-प्रथा, जातीत संघर्ष और सांप्रदायिक संघर्षों— जैसे स्थूल मुद्दों से तो नहीं है ? अगर ऐसा है तो ये और ऐसी तमाम दूसरी सामाजिक समस्याएं सुधार के बूते पर हल नहीं हो सकतीं । इनके होने के कार्य-कारण संबंधों की पड़ताल किये बगैर कुछ भी निष्कर्ष देना महज कोरा आदर्श कहा जाएगा ।

"मैं यह मानता हूं कि सामाजिक समस्याओं की जड़ हमारी व्यवस्था है । यह मानिए कि जिस देश की व्यवस्था भ्रष्ट होती है, उस देश के नागरिक स्वयं भ्रष्ट हो जाते हैं । तो यह कहना कि व्यक्ति स्वयं को सुधारे तो समस्याएं निबट जाएंगी, निहायत बेमानी है । जब तक व्यवस्था पूरी तरह नहीं बदलेगी, समाज नहीं बदलेगा । समाज में सुधार की नहीं बुनियादी और रचनात्मक बदलाव की जरूरत है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवाओं में उच्छृंखलता के लिए दोषी कौन ?

—मुकेश प्रत्यूष

बावजूद इनके, सच्चाई से इनकार नहीं किया जा सकता है। इन मान्यताओं के अतिरिक्त, निवेदिता और सुरंजन की तरह कई और विचार प्राप्त हुए हैं, जिनके अनुसार सामाजिक सुधार की जरूरत है। भारतीय स्टेट बैंक (पटना) में कार्यरत युवा लेखक मुकेश प्रत्यूष कहते हैं कि 'अकिंचनजी, आपने सही पूछा है। मेरे विचार से आकांक्षाएं यदि समर्थ और दृढ़निश्चय की हों तो वे सदा युवा ही हुआ करती हैं, क्योंकि सिर्फ युवा में ही कुछ नया सोचने की शक्ति, करने की हिम्मत, परंपरा के प्रति विद्रोह की ताकत और परिणाम भुगतने के अंदेशों के प्रति एक अल्हड़ लापरवाही हुआ करती है।

"इतिहास भी गवाह है कि जब कभी समाज दकियानूस, पोंगापंथी या अधोगामी होने लगा है, युवाओं ने अपने जीने-मरने की परवाह छोड़कर उसे एक नयी दिशा, एक नयी गति देने की सार्थक कोशिश की है।

"आज समाज के जो हालात हैं, उन्हें देखते हुए किसी भी युवा का खामोश रह जाना असंभव है। पढ़ाई, नौकरी, व्यवसाय आदि में ही नहीं, अस्पताल, दफ़्तर या अन्य सार्वजनिक जगहों पर नाम पद या पैसे की वजह से जो दिन-ब-दिन विसंगतियां बढ़ती जा रही हैं, उनमें किसी युवा का खौल उठना कहीं से भी गलत साबित नहीं होता। लोग कहते हैं, आज का युवा ज्यादा उच्छृंखल है। लेकिन दोषी कौन है ? जब यह सवाल उठता है तो आरोप लगानेवाले बगलें झांकने लगते हैं। यकीन मानें, आज युवा कभी-कभार उबल रहे हैं पर एक क्रांति-बीज पनप रही है, हर प्रस्फुटित होते तन में और वह दिन दूर नहीं जब यह बीज एक विशाल रूख का रूप ले लेगा। फिर समाज बदलेगा, लोग बदलेंगे, मान्यताएं बदलेंगी।"

समाज को ईमानदार नेतृत्व चाहिए

—सतीश आर्य

गोंडा (उ.प्र.) के गीतकार सतीश आर्य की प्रबल आकांक्षाएं हैं— "जहां तक युवा वर्ग से सामाजिक सुधार की कल्पना की जाती है, मेरी दृष्टि में पत्थर पर दूब लगाने की बात लगती है। क्योंकि, आज समाज का जो परिवेश है, हर व्यक्ति का अपना ही विश्वास उसे डस रहा है। संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद एवं प्रांतवाद आदि के संकीर्ण विचार हमारे संस्कारों को बुरी तरह से प्रभावित कर रहे हैं। व्यक्ति-व्यक्ति में स्वार्थ की भावना इस तरह पैठ गयी है कि वह एक निमिष में हिंसा पर उतारू हो जाता है। ऐसे परिवेश में जहां युवकों का नैतिक मूल्य इतना गिर गया है, समाज सुधार की अपेक्षा कैसे की जा सकती है ?

"यदि कुछ युवक सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्सुक हैं, समाज सुधार की उनमें छटपटाहट है, तो वे सामने आयें और अपने जीवन मूल्यों से युवा साथियों को परिचित करायें। इनके सामने अपना एक उदाहरण प्रस्तुत करें।

"सामाजिक परिवर्तन के लिए युवा वर्ग का चरित्र एवं व्यवहार बदलना होगा। उसका नैतिक स्तर सुधारना होगा। समाज, प्रांत या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र को तभी सुधारा जा सकता है, जब उसका नेता स्वयं सुधरा हो । वह स्वयं शासन की डोरी में बंधा हो, कानून को मानता हो, कथनी-करनी में सामंजस्य रखता हो और स्वार्थ की भावना से रिक्त होकर समाज को समर्पित हो गया हो ।

भारतीय संस्कारों में जीना होगा —हंसा

कटिहार के युवा कवि एवं पत्रकार हंसा जी भी कहते हैं—"आज जब युवा पीढ़ी पतन के कगार पर है, तब सुधार या आमूल परिवर्त्तन की बात बहुत प्रासंगिक लगती है । देश में चारों तरफ फैले अनाचारों में युवा वर्ग का बहुत बड़ा हिस्सा डूबा हुआ है । यदि जरूरत पड़े किसी बिलकुल दूध के धोये नौजवान की, तो मैं, समझता हूं लाखों-लाख युवाओं को ठोकने-बजाने, देखने-भालने के बावजूद भी निराशा ही हाथ लगेगी ।

"सच पूछिए, तो हम आज, यदि युवावर्ग, जो कल का, कल क्यों, आज का निर्णायक वर्ग है, को पतन के चौराहे से प्रगति और समृद्धि के दामन में खींच लाना चाहते हैं तो सर्वप्रथम पाश्चात्य सौंदर्य, संस्कृति, रहन-सहन, रीति-रिवाजों की नकल बंद करनी पड़ेगी । युवा दार्शनिक स्वामी विवेकानंद के सिद्धांतों को स्वीकारना होगा । पॉप और डिस्को संगीत व संस्कृति से हमेशा-हमेशा के लिए दामन छुड़ाना होगा । आध्यात्मिक संस्कारों में जीना होगा, भारतीय संगीत और नृत्य से स्वयं को अभिन्न रूप में जोड़ना होगा, चूंकि इनमें परम शांति और चिरंतन प्रेम की बेशुमार गुंजाइश है ।

"दरअसल, हम भारतीय भारतीयता से टूटकर कभी शांति, सद्भावना और प्रेमपूर्ण जीवन जी नहीं सकते । पाश्चात्य सभ्यता में तीव्रता है, जो क्षणिक सुख प्रदान करता है, दीर्घकालिक परिणाम क्रूरतम होते हैं । यथा वहां शारीरिक संबंध सामान्य बात है, किसी भी परिस्थिति में, किन्हीं के साथ । इस संबंध का लगाव-बिंदु भी मुख्यतः शारीरिक सौंदर्य ही होता है । सौंदर्य सुख-भोग के पश्चात लगाव खत्म हो जाता है । पुनः स्त्री-पुरुष प्रेम की तलाश में बेचैन रहने लगते हैं ।

संपादक—'गूंज', मुख्य डाकघर,
कटिहार-८५४१०५ (बिहार)

बालक दस पैसे का सिक्का निगल गया तो उसकी मां घबराकर चीख-पुकार करने लगी । उसकी चीख-पुकार सुनकर सड़क से गुजर रहा एक अजनबी व्यक्ति घर में घुस आया और उसने बालक को उलटा लटकाकर जोर से एक झटका दिया । सिक्का बाहर निकल आया । महिला ने धन्यवाद देते हुए कहा, "डॉक्टर साहब, अगर आप समय पर न आये होते तो न जाने क्या होता ?"

"इसमें धन्यवाद देने की कोई बात नहीं है । एक बात आपको बता दूं कि मैं डॉक्टर नहीं हूं, बल्कि इनकम टैक्स विभाग का आदमी हूं । हम अच्छी तरह जानते हैं कि पैसा कैसे निकाला जाता है, भले ही दस पैसे का सिक्का ही क्यों न हों ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापानी हास-परिहास

"मां पूछे कि कहां गये थे तो कहना चिड़ियाघर" रेसकोर्स से लौटते हुए पिता ने छह वर्षीय बेटे से कहा।

घर पहुंचने पर बेटे ने यही बात कही।

"वहां कौन-कौन-से जानवर थे ?"

"सिर्फ घोड़े।" रेसकोर्स के खिलाफ मां की धमकियों से दुबके-सहमे बेटे ने कहा।

—

डॉक्टरी इलाज बहुत महंगा हो जाने से जापान में स्वास्थ्य बीमा अनिवार्य हो गया है। इसलिए आजकल डिस्पेंसरी व अस्पताल मरीजों से भरे रहते हैं। प्रौढ़ा-वृद्धा आतीं, पत्रिकाएं पढ़तीं, बातचीत करतीं और दवा लेकर लौट जाती हैं। जब श्रीमती तनाका लगातार तीन हफ़्ते से नहीं आयीं तब उनकी सहेलियां घबराकर बोलीं, "वे जरूर बीमार पड़ गयी होंगी।"

—

तोक्यो में सड़क पार करना बहुत मुश्किल हो गया है। एक युवक ने वृद्धा को परेशान देखकर जल्दी से उसका हाथ थामा और भागते-दौड़ते सड़क पार करा दी ?

"अरे, मैं तो इसी जगह लौट आयी जहां से चली थी।" वृद्धा बोली।

—

"कोई सेवा ?"
क्यातो जाते मित्र ने मित्र से पूछा।
"मेरे मित्र को संदेशा दे देना।"
"जी बहुत अच्छा।"
"अरे भाई संदेशा तो सुनते जाओ।"

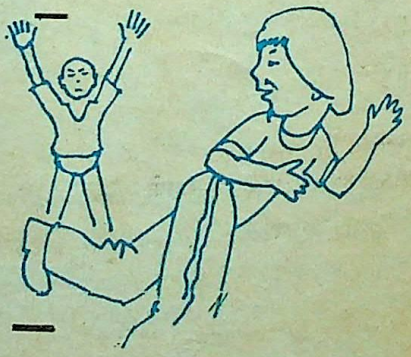

—

"चलो मिलकर 'साके' (धान-मदिरा) बनाएं। तुम चावल लाओ और मैं पानी।"
"यह तो सरासर ज्यादती है।"
"ज्यादती की क्या बात है ? बन जाने पर तुम चावल ले लेना और मैं पानी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—

श्रीमती तनाका ने अपने भुलक्कड़ मित्रों की सूची तैयार की और उन्हें इक्कीस तारीख को खाने पर बुलाया । बार-बार टेलीफोन पर याद दिलाने पर भी जब कोई नहीं आया तब इंतजार में आकुल-व्याकुल श्रीमती तनाका बहुत भन्नायीं ।

"पर मां, आज तो बीस तारीख है ।"

बेटी ने याद दिलाया ।

—

"शिष्टता से जमुहाई कैसे की जाए ?" इस विषय पर परिचर्चा के लिए प्रसिद्ध प्रोफेसर को निमंत्रित किया गया । लाख कोशिश करने पर भी जब वे जमुहा नहीं सके तो छात्र-छात्राएं ऊब-ऊबकर जमुहाने लगे ।

"कितने योग्य छात्र हैं ? बिना सिखाये ही सीख गये ।" प्रोफेसर ने प्रफुल्लित होते कहा ।

—

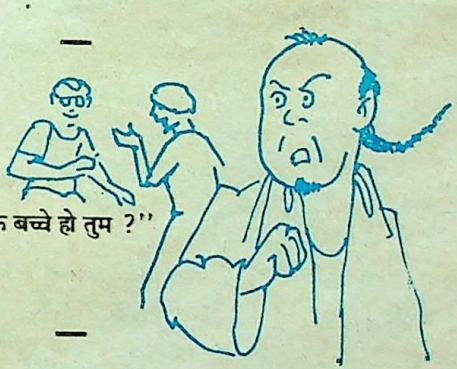

"यह ज्योतिषी धूर्त है ।"

"इसे कुछ नहीं आता ।"

"लूटता है ।"

"अभी ठिकाने लगाता हूं । किसके बच्चे हो तुम ?"

"आप ही बताइए न ।"

—

"बड़ी दूर से चला आ रहा हूं आपकी प्रशंसा सुनकर ।" हथेली बढ़ाते हुए नवयुवक ने कहा ।

"जन्म-तिथि और जन्म-वर्ष ?" ज्योतिषी की गणनापूर्ण दृष्टि ने पूछा ।

"मुझे पता होता तो आपके पास क्यों आता ?"

—

"गांव को कौन-सा रास्ता जाएगा ?"

"किसी गायवाले से पूछो ।"

—प्रस्तुति : राज बद्धिराजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेलुगु कहानी

तलाश

● डी. केशव राव

कुछ लोग अजीब ढंग के होते हैं। 'टेलीग्रोफोबिया' नाम का शब्द कानों में पड़ते ही वे हाई जंप करने करते हैं। शशिधर ऐसा ही एक अजीब व्यक्ति है। ऐसे व्यक्तियों को अंगरेज 'टेलिग्रोफिया' कहते हैं। हिंदीवाले 'तार-भीति' कहते हैं। यदि व्यक्ति तेलुगु भाषा-भाषी हो, तो क्या कहेगा ? शायद, 'तंती भयम' कहेगा।

उस दिन दफ़्तर का काम समाप्त होते ही शशिधर और उसका दोस्त राजु कैंटीन में खाना खाकर कमरे में आये और पसर गये। दफ़्तर के समय में परिवर्तन होने से आजकल उनको घर में ही सो लेने की सुविधा मिल गयी है। शशिधर सोदाहरण बता रहा है कि पर्सनल रजिस्टर में कैसे परिवर्तन करने चाहिए। राजु सावधान होकर सुन रहा है। इतने में दरवाजे पर खटखटाने की आवाज हुई।

यह कहकर कि 'देखो, कोई आया है !'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजु पानी पीने के लिए कमरे में गया । राजु ने लौटकर देखा कि शशिधर बेहोश हो फर्श पर गिरा पड़ा है ।

"तुमने क्या किया बे ?" कहता हुआ राजु डाकिये के पास दौड़ गया । फिसलते ऐनक को करीने से रखते हुए डाकिया शशिधर की ओर देख रहा था । राजु की बात सुनकर वह उसकी ओर मुड़ा ।

"मैंने कुछ नहीं किया सर ! मैंने कहा कि टेलिग्राम आये हैं । मेरी बात सुनकर ही वे बेहोश हो गये," डाकिये ने कहा,

"क्या टेलिग्राम्स आये हैं ?" राजु ने पूछा ।

"जी हां..."

"कितने हैं ?"

"तीन हैं, सर !"

"बात समझ में आयी । मेरे मित्र को जरा टेलिग्रोफोबिया' है !' राजु ने कहा ।

"मुझे क्या मालूम था ?" डाकिये ने कहा ।

"यदि सही हिंदी में कहना चाहे, तो उसी को 'तार-भीति' कहा जा सकता है," राजु ने कहा ।

"आप की बात सच है !" कागज निकालते हुए डाकिये ने कहा ।

"यदि आंध्र के मनोवैज्ञानिक हों, तो वे शायद इसे 'तंती भयम' कहेंगे," राजू ने कहा ।

"आप की बात सही है । मुझे बहुत पसंद आयी !" डाकिये ने कहा, "आप तो ये टेलिग्राम्स ले लीजिए, सर !" कहते हुए उसने राजु के हाथ में कागज थमा दिया । कागज पर हस्ताक्षर करके राजु ने तार ले लिये ।

डाकिये के जाने के बाद राजु ने तार खोलकर देखे, विवाह के संबंध के बारे में थे । शशिधर के रिश्तेदारों ने ही भेजे थे ।

इतने में शशिधर जरा हिला, तो 'अरे, शशि उठ रे !' कहते हुए राजु ने उसे हिलाया ।

"अरे, राजु !" कहते हुए शशिधर रुआंसा हो उठा और राजु का हाथ पकड़ लिया ।

"क्यों रोता है बे, बेवकूफ ! तुम्हारे तीन तार आये हैं...डरो मत ! सबके सब विवाह संबंधी हैं, उठ बैठो", राजु ने कहा ।

शशिधर संभल गया और बैठकर बोला, "बात क्या है, बताओ तो !"

"लो, यह देखो ! यह तो तुम्हारे मामा का भेजा हुआ तार है । शादी के लिए इंटरव्यू सातवीं को है । यह तो तुम्हारे मामा का दिया तार है । बाइसवीं को यानी परसों उनके गांव में लड़की देखनी है, यह तुम्हारे ताऊ का दिया हुआ तार है । चौबीस को उनके गांव में वधू को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखना यह चाचाजी का तार है ।'' राजु ने विवरण दिया ।

''सचमुच ?'' शशि ने पूछा ।

''मेरी बात पर विश्वास नहीं है, तो तुम स्वयं पढ़ लो...अब रवाना हो जाओ...बस का टाइम हो रहा है !'' राजु ने कहा ।

''मैं ?'' शशिधर ने आश्चर्य प्रकट किया ।

''तुम नहीं तो क्या मैं ?'' राजु ने डांटा ।

शशि ने कहा, ''तुम्हारे बगैर अकेला मैं कैसे जा सकता हूं ? यद्यपि, मैंने आग्रह किया, कि मैं अभी शादी नहीं करूंगा, वे तार पर तार भेज रहे हैं ।''

''ठीक कहते हो, वे तो तुम पर चढ़ाई कर रहे हैं और तुम मुझ पर,'' राजु ने कहा ।

''जो भी कहो, यदि तुम मेरा साथ दो, तो मैं किसी न किसी तरह इन आफतों का मुकाबला कर सकता हूं,'' शशि ने कहा ।

''यह तो सराहनीय बात है । बुजुर्गों का कहना है कि जरूरत पड़े, तो हजार झूठ कहकर भी शादी करनी चाहिए । बनी-बनायी बात पर पानी फेर देना पाप-कार्य है,'' राजु ने कहा ।

''हाय...हाय... ! ऐसा मत कहो । यह पाप नहीं, पुण्य है । किसी तरह यह पुण्य-कार्य करो,'' शशि ने अनुरोध किया ।

□□□

''खैर, तुम्हारी इच्छा के खिलाफ मैं कैसे जा सकता हं ? चलो चलें !'' राजु ने कहा ।

शशि और राजु शाम को उस गांव में पहुंचे, जहां शशि के चाचाजी रहते थे । रात को आराम करके सबेरे लड़की को देखने दोनों निकलें ।

शशि के चाचा ने कहा, ''तुम दोनों जाओ !''

''हम दोनों युवक हैं, बड़े लोगों के बिना कैसे जा सकते हैं जी !'' राजु ने कहा ।

''यह सब फार्मलिटी है बेटा, वे तो हमारे परिचित हैं । यों ही जाकर आना है जैसे, किसी फ्रेंड के यहां जाते हैं । लड़की को देखकर आओ । पसंद आये, तो बाकी बातें बाद में देखी जाएंगी,'' उन्होंने कहा ।

दोनों रवाना हो गये । शशि अपने चाचा का बड़ा आदर करता है । उनके खिलाफ एक लफ़्ज़ भी नहीं बोल सकता । शशि जब छोटा ही था कि उसके मां-बाप मर गये । उसके चाचाजी ने ही उसे पढ़ाया-लिखाया और बड़ा किया । इतना ही नहीं, बल्कि नौकरी भी दिलायी । इसीलिए वह अपने चाचा के प्रति कृतज्ञ रहता है ।

लेकिन इसी कृतज्ञता ने राजु को बड़ी दिक्कत में डाल दिया । वह सोचने लगा कि चाचाजी को कैसे बताएगा कि शशि को यह लड़की पसंद नहीं आयी है ।

घर का पता लगाकर वे वहां पहुंच गये । 'रमणराव' कहकर राजु ने दो बार पुकारा । कोई जवाब नहीं मिला । सांकल नहीं लगायी गयी थी । इसलिए दरवाजा खोलकर अंदर गये और 'रमण रावजी !' कहकर फिर पुकारा ।

थोड़ी देर में एक बुढ़िया आयी और कहा, ''आइए बेटे ! लड़का घर पर नहीं है । अभी आ जाएगा, बैठिए !''

शशि और राजु कमरे में गये । कमरे में हर सामान अस्त-व्यस्त पड़ा था । कुरसियों पर कपड़े लटक रहे हैं । वे दोनों आपस में देखने लगे कि कहां बैठें ।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

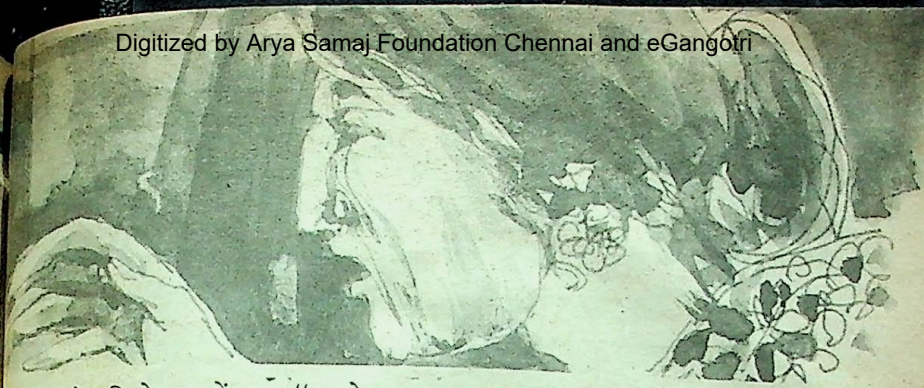

राजु ने शशि के कान में कहा, "तुम्हारे चाचा ने कहा है कि किसी भी बात की जिद्द मत करना।"

बुढ़िया ने पूछा, "क्या मैं जान सकती हूं कि तुम कौन हो और किस काम से आये हो ?"

"चलमय्या ने भेजा है जी !" राजु ने कहा। इससे बढ़कर उसे कोई और तरीका नहीं सूझा।

"खैर, बैठो बेटे ! कुरसियों पर जो कपड़े हैं, उन्हें बेंचों पर डाल दो और कुरसियों पर बैठ जाओ ! पढ़े-लिखे मालूम होते हैं !" बुढ़िया ने कहा।

"नो जिद !" राजु फुसफुसाया और कुरसियों पर पड़े कपड़े हटाकर कहा, "बैठो।"

"दूल्हे का बड़ा आदर किया जा रहा है रे !" शशि ने व्यंग्य किया, "मैंने नहीं सोचा था कि जिद न करने का परिणाम ऐसा होगा !"

दोनों बैठ गये। दो मिनट भी न बीते होंगे कि एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति घर में आया। राजु उठकर खड़ा हो गया और कहा, "नमस्कार ! मेरा नाम राजु है। यह शशिधर है। हमें चलमय्या ने भेजा है।"

उसने थैली नीचे रखी और सोचते हुए कहा, "क्या, चलमय्या ने भेजा ?" फिर तुरंत संभल गया और कहने लगा, "तब तो वह यही है, यह प्रश्न ही नहीं है कि किसने भेजा। गठिया के लक्षण साफ-साफ दिखायी दे रहे हैं।"

राजु ने पूछा, "क्या कह रहे हैं ?"

शशि खांसा।

उसने कहा, "देखा न ! यह खांसी, वही वात लक्षण है ! पेंसिलिन इंजेक्शन का एक कोर्स देकर, कासहरि गोलियां दो मंडल तक दी जाए, तो एकदम चंगा हो जाएगा।"

"जी नहीं ! हम... हम... हम... !" राजु ने कुछ कहना चाहा।

"हिचकिचाने की जरूरत नहीं, कहिए ! कोई भी बीमारी क्यों न हो, सब बीमारियों की दवा मेरे पास है। कैंसर तक के मरीज को चंगा कर दिया है जी कैंसर... !" उसने कहा। कहने के तरीके में घमंड झलकता था।

राजु को कुछ न सूझा कि क्या करना है। वह इधर-उधर देखने लगा।

शशि ने पूछा, "आपका नाम रमण राव ही है न ?"

"भिषग्राह और वैद्यविशारद मेरे टाइटल्स हैं। ... यह तो पुराना वात रोग है। यह जोर पर है। अरिष्टाएं, विटामिन टाब्लेट्स/ कैल्शियम और इंजेक्शन देने चाहिए !" उसने कहा।

"हम शादी-संबंध के लिए आये हैं जी ! सुना कि आप की बेटी है। मेरे दोस्त के चाचाजी ने कहा कि आपकी बेटी ने नाट्य भी सीख लिया है," राजु ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने राजु की ओर आश्चर्य से देखा और कहा, "हे भगवान ! चित्त-भ्रम की बीमारी है !"

शशि झटपट उठा और यह कहते हुए कि "राजु मैं जा रहा हूं !" बाहर चला गया । राजु भी उसके पीछे-पीछे चला । "अरे, डरो मत ! क्यों डरते हो ? असल में डरने की बात क्या है ? सब तरह की बीमारियों के लिए संजीवनी-जैसी...," पीछे से वह चिल्ला रहा था । राजु और शशि अनसुना करके चल पड़े ।

बाहर आने के बाद शशि ने कहा, "मेरे ताऊ के गांव चलोगे !"

"घर लौटे बगैर जाना है क्या !" राजु ने पूछा ।

"ताऊजी की बात के मुताबिक ही हमने व्यवहार किया । यद्यपि हमने कोई हठ नहीं किया, फिर भी उन्होंने हमारी बेइज्जत की । इसके बारे में ताऊजी को बताएंगे," शशि ने कहा ।

"क्या, तुम्हारे ताऊजी को मालूम नहीं होगा कि हम गलत घर पर पहुंच गये थे," राजु ने पूछा ।

"तब देखा जाएगा । अभी तो यह नौबत टल जाएगी ।" शशि ने कहा ।

"क्या, यह ठीक रहेगा ?" राजु ने संदेह प्रकट किया ।

"क्यों नहीं ? चल बस का समय हो गया है," शशि ने कहा ।

राजु और शशि ताऊ के गांव गये, वहां उन्होंने दो दिन आराम किया । तीसरे दिन ताऊ ने उनको एक लड़की दिखाने के लिए तैयार किया । इन दो दिनों में उन्होंने उसके परिवार के बारे में खूब बढ़ा-चढ़ाकर बताया । उनका कहना था कि लड़की अच्छी नौकरी कर रही है । उसके पिता बड़े अफसर है, लड़की भी बहुत सुंदर है ।

वे दोनों लड़की के घर गये । बड़े अफसर होने के बावजूद लड़की के पिता ने उनका बड़ा आदर-सत्कार किया !

जलपान करने के बाद लड़की के पिता ने शशि के ताऊजी से पूछा, "लड़की को बुलवाऊंगा ?"

ताऊजी ने कहा, "बुलवाइए !"

"आप जानते ही हैं कि मेरी लड़की भी नौकरी कर रही है । लड़का भी नौकरी कर रहा है, आज के लड़के नये आचार-विचार के होते हैं । यदि वे लड़की से बातचीत करना चाहते हैं, तो सहर्ष कर सकते हैं । हमारे सामने बतियाने में शायद वे सकुचाएं । यदि आप अन्यथा न समझें तो...," उन्होंने कहा ।

"आपका कहना सही है । चलिए, हम बाहर चलें !" शिवरामय्या ने कहा । राजु भी उनके साथ जाने के लिए तैयार हो गया ।

"तुम यहीं रहो । तुम सब यंगस्टर्स हो । मेरी लड़की के साथ उसकी फ्रेंड भी रहेगी," कहते हुए लड़की के पिता चले गये और शिवरामय्या भी ।

शशि ने कहा, "अरे, राजु ! लगता है कि इन लोगों ने आधुनिक उपन्यासों का अच्छा अध्ययन किया है । इसीलिए ये लोग ऐसे इंटरव्यू की व्यवस्था कर रहे हैं ।"

राजु ने कहा, "यह बिलकुल नया तरीका है । हम तो होपलेसली आउट ऑव डेट हो गये हैं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लड़की आयी और कहा, 'गुडमार्निंग !' उसके साथ एक और लड़की थी।

"आइ एम सरोजा, मीट माइ फ्रेंड ललिता !" समझने में देर न लगी कि अफसर की लड़की यही है।

"न... न... नमस्कार... ?" राजु हकलाया।

"गुडमार्निंग !" राजु ने बिना हिचकिचाहट के कहा।

सरोजा ने पूछा, "हू इज शशिधर ?"

"जी, मैं ही हूं !"

"योर फ्रेंड ?"

"जी, राजु हैं !"

सरोजा ने शशिधर से पूछा, "नौकरी के बारे में आपकी राय क्या है ?"

"नौकरी... नौकरी..." शशि जरा ठिठका।

"ड्यूटी आनेस्टी से करनी चाहिए... यह मेरी राय है। मेरा एक क्लर्क है। मेरे पिताजी के पास उसकी दाल नहीं गलती। मालूम है, एक दिन उसने क्या किया ?" लड़की ने कहा।

"बताइए... बताइए... !" राजु ने कहा।

शशि ने भी आतुरता दिखाते हुए कहा, "बताइए तो... !"

"पेर्सनल रजिस्टर में मेरे पिताजी के हस्ताक्षर करने के बाद उसने कुछ रेफरेंस जोड़ दिये," सरोजा ने कहा।

"बैड... वेरी बैड... !" राजु ने कहा।

"हां... हां... !" शशि ने कहा।

सरोजा ने पूछा, "आप ही बताइए कि ऐसे बदमाशों के साथ क्या करना चाहिए ?"

राजु ने शशि की ओर देखा। शशि ने कहा,

"वही.. ओह... !"

राजु ने कहा, "सच ही है !"

"मैं कहती हूं कि ऐसों को डिस्मिस कर देना चाहिए। आप की क्या राय है ?"

"हम फिर आयेंगे जी !" कहकर शशि बाहर चला गया।

"हमें जाना है जी !" कहकर राजु भी उठ खड़ा हुआ।

दोनों ने ताऊजी से कहा, "लड़की घमंडी है ! इसलिए यह हमारे लायक नहीं है।"

× × ×

दोनों मित्र फिर वहां से तीसरी लड़की की तलाश में निकले।

वे दोनों मामा शंकर राव के गांव पहुंचे। शशि के मामा शंकर राव रेलवे स्टेशन पर ही उनसे मिल गये।

दुपहर को अच्छी दावत दी।

भोजन करते समय शंकर राव कहने लगे, "अरे, शशि ! लड़की सुंदर ही नहीं, बल्कि विनयशील है। इसके अलावा नौकरी कर रही है। हां... दहेज तो जरा कम दे रहे हैं। असल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में, लड़की को देखने की जरूरत नहीं है । तुम से प्रस्ताव किये बिना स्वीकृति देना चाहता था । मेरा विश्वास है कि तुम जरूर पसंद करोगे !"

"मैं आपके खिलाफ कैसे चल सकता हूं मामाजी ?" शशि ने कहा ।

दूसरे दिन लड़की को देखने के लिए रवाना हुए ।

उनको देखकर लड़की के पिता ने कहा, "अच्छा, आप ठीक समय पर आ गये । मैं घबड़ा रहा था कि... ।"

औपचारिक बातों के बाद लड़की को लाकर चटाई पर बिठाया गया । लड़की ने लाल किनारेवाली सफेद साड़ी पहन रखी थी । ललाट पर छोटी-सी बिंदी ! लज्जा के मारे सिर झुकाकर जब वह आ रही थी, तो उसे देखकर शशि के हृदय में खलबली मच गयी थी । उसने मन ही मन सोचा, 'कुछ शैतान मुझे शादी न करने की सलाह क्यों देते हैं ?'

शशि के होनेवाले ससुरजी बोले, "लड़की से कुछ पूछना चाहते, तो पूछ लीजिए !"

शशि शर्मिंदा हो गया ।

शंकर राव ने कहा, "राजु, कम से कम तुम तो पूछो !"

राजु ने डरते-डरते पूछा, "तुम... तुम्हारा... नाम... ?"

सिर उठाये बगैर लड़की ने जवाब दिया, "सुजाता है," उसका मीठा स्वर शशि को ऐसा लगा, मानों वीणा बज उठी हो ।

शंकर राव ने कहा, "क्यों नकियाते हो बे ? देखो, लड़की कैसी बोल रही है !"

सुजाता के पिता ने कहा, "आज के लड़के ऐसे ही होते हैं जी, निर्भय होकर लड़कियों से बात करना भी नहीं जानते !" वह ऐसा ठहाका मारकर हंसे कि खपरैल उड़ जाए । उन्होंने फिर अपनी लड़की से पूछा, "बेटी, आज दफ़्तर नहीं जाओगी क्या ?"

सुजाता ने सिर उठाकर कहा, "गयी थी पिताजी ! आज सबेरे आपके लिए तार आया था न ! मैंने ही लिया उसे !" लड़की ने जवाब दिया ।

शशि को सुजाता की बातों में जरा कटुता सुनायी पड़ी । उसकी बातें बातों-जैसी सुनायी नहीं पड़ीं, बल्कि कट्ट कड, कट्ट कड, कट्ट कट्ट कड-सा सुनायी पड़ीं ।

"बल्लारी से आया है । बिजनेस संबंधी है !" सुजाता ने कहा ।

शशि को लगा कि कट्ट कड... कट्ट कड... कोई टेलीग्राफ मशीन बज उठी है ।

"लड़की टेलीग्राफिस्ट का काम कर रही है । बड़ी एफीशिएंट है ।" शंकर राव कह रहे थे ।

"हवा... हवा चाहिए... दम घुट रहा है !" कहते हुए शशि उठ खड़ा हुआ ।

"शशि... ! शशी..§!" पुकारते हुए राजु भी उसके पीछे दौड़ पड़ा ।

"क्यों भागते हो शशी... क्या बात है ?" शंकर राव ने पीछे-पीछे दौड़ने का प्रयत्न किया ।

बस में बैठकर शशि ने राजु से कहा, "इसीलिए तो अंगरेजों ने कहा है— सब लड़कियों का विवाह करना चाहिए, लेकिन किसी लड़के को शादी नहीं करनी चाहिए !"

"वह कैसे ?" राजु ने पूछा ।

बस रवाना हो गयी ।

अनुवाद : वाई.सी.पी. वेंकट रेड्डी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंगल की संपन्नता का प्रतीक जंगली कुत्ता

यों तो जंगली कुत्ते, बाघ, तेंदुए आदि के समान न तो शक्तिशाली होते हैं और न ही आकार में उनसे बड़े किंतु जंगली कुत्तों की झुंड-शक्ति और अचूक रणनीति का जंगल के सर्वोच्च परभक्षी कहे जानेवाले बाघ और तेंदुए भी लोहा मानते हैं

जंगली कुत्ते जितने क्रूर हैं उतने ही आकर्षक भी। दिखने में पालतू कुत्ते के समान, शरीर भेड़िये के समान, पतली टांगें और अपेक्षाकृत कुछ छोटी झबरा। कंधे तक ऊंचाई ४३ से ४५ सें.मी. और सिर से शरीर के अंतिम सिरे तक लंबाई ९० सें.मी.। पूंछ की लंबाई ४० से ४३ सें.मी. और इस भी कोई खास नहीं यही कोई २० किलो के आसपास, मादा वजन में नर से कुछ कम होती है। भेड़िये, पालतू कुत्ते और गीदड़ में रदनक दांतों की संख्या छह होती है जबकि जंगली कुत्तों में इनकी संख्या सात होती है।

जंगली कुत्ते अपनी लाल खाल, अंतिम सिरे पर काली लिये कानों और सघन पूंछ के कारण भेड़िये और पालतू कुत्तों की अपेक्षा आसानी से पहचाने में आ जाते हैं। ये अल्ताई पर्वत श्रृंखला से मध्य व पूर्वी एशिया, मंचुरिया के कुछ भाग और मलाया के जंगलों में भी पाये जाते हैं। भारत में ये हिमालय के उस पार और हिमालयी क्षेत्र सहित संपूर्ण भारतीय प्रायद्वीप के जंगलों में पाये जाते हैं।

भेड़िये के समान जंगली कुत्ते सामाजिक पशु हैं अर्थात ये समूह या झुंड में रहते हैं। झुंड में अकसर एक ही परिवार के सदस्य पाये जाते हैं और शिकार के समय कई परिवारों का झुंड भी देखा गया है और कभी-कभी एक झुंड में मात्र दो या तीन सदस्य भी देखे गये हैं। बच्चों और उनके पालकों का आपस में अटूट संबंध होता है।

ये शिकार की खोज गंध के द्वारा करते हैं और सूंघते-सूंघते शिकार के स्थान तक पहुंच जाते हैं। यह खोज कार्य झुंड में किया जाता है जिसमें काफी संख्या में सदस्य भाग लेते हैं। इस झुंड का नेतृत्व इनके नेता द्वारा किया जाता है, जिसे शिकार का पर्याप्त अनुभव होता है।

शिकार का चयन कर लेने और अपने साथियों को बुला लेने के बाद ये अपनी युद्ध-नीति में पुनः बदलाव करते हैं जिसके तहत ये झुंड में पहले भगदड़ मचा देते हैं और उनमें से किसी एक को अपना लक्ष्य बनाते हैं। यह लक्ष्य अकसर शिकार किये जानेवाले जानवर के बच्चे होते हैं। चयन हो जाने के बाद ये शिकार की घेरा बंदी करते हैं और उसे खूब दौड़ाते हैं और जब वह थककर चूर हो जाता है तो उस पर आक्रमण कर देते हैं। वे शिकार के गिरने का इंतजार किये बगैर उसे नोंच-नोंचकर खाना शुरू कर देते हैं।

जंगली कुत्तों का और जंगल की संपन्नता का सीधा-सीधा संबंध है। अर्थात यदि किसी जंगल में जंगली कुत्ते प्रचुर मात्रा में हैं तो निश्चित मानिए वह जंगल अन्य प्रजातियों के प्राणियों से संपन्न है। जंगल में जीवन और वनस्पति के मध्य संतुलन कायम रखने में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। मध्य प्रदेश के कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में यह बात आसानी से देखी जा सकती है। किंतु कुछ संरक्षित क्षेत्रों को छोड़कर जंगलों के भारी विनाश ने इस प्राणी के जीवन को संकटापन्न बना दिया है।

— विनोद तिवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

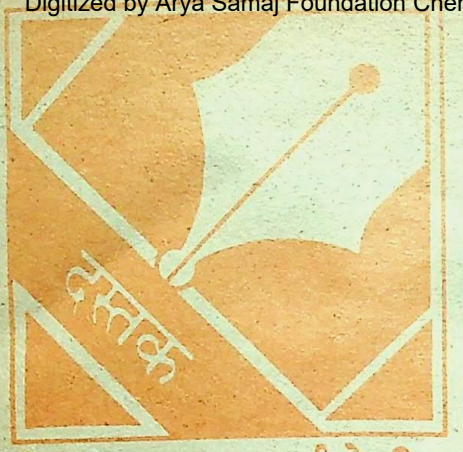

गीता-हाल का कर्मयोगी : किसी कंबल के साये में है

बी.एल. जेठू

बात काफी पुरानी है। मैं स्नातक पाठ्यक्रम के द्वितीय वर्ष में पढ़ता था। कॉलेज था शेखावटी क्षेत्र का सबसे बड़ा व मशहूर कॉलेज फतेहपुर (शेखावटी) मुझे याद है हमारे कॉलेज का पुस्तकालय गीता-हाल कहा जाता था, क्योंकि पुस्तकालय की दीवारों पर संगमरमर पत्थर पर संपूर्ण गीता सचित्र अंकित थी। उस दिन काफी सरदी थी। मैं और मेरे दो-तीन साथी बातें करते-करते गीता हाल में आये। देखते हैं कि एक ग्रामीण कुरसी पर बैठा है। किसी भी किसान की तरह वह मोटे कपड़े का ग्रामीण शक्ल का कमीज पहने हुए है व मोटे कपड़े की ही धोती पहने हुए है। राजस्थान में ऊंट की ऊन से बननेवाला कंबल भी उन्होंने इस प्रकार ओढ़ रखा था कि वह उनकी पगड़ी से लेकर ठेठ जूतों तक आ गया था। हम लोगों की राय में वह गांववाला एक खेतिहर था।

कॉलेज के दिन थे ऊपर से किशोर अवस्था अलग। हम फुसफुसाहट करते हुए उसके करीब चले गये और हमारा उपरोक्त विश्वास तब और पक्का हो गया जब हमने उनके हाथ में अंगरेजी का अखबार देखा। हमने सोचा भला हम भी अंगरेजी का अखबार आसानी से नहीं पढ़ सकते हैं, तो ये महाशय इसका क्या कर रहे हैं ? मेरे एक दोस्त ने उन्हें छेड़ना शुरू किया—"देखो बाबा अखबार लिए हुए है।"

मैं भी पीछे न रहा—"पढ़ सकना जरूरी थोड़े ही है तस्वीरें भी तो देख सकते हैं" "हां, तो बाबाजी क्या लिखा है ? कुछ पढ़ा ? हमें भी बताओ।" मेरे एक अन्य दोस्त ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा और हम सभी मुसकरा दिये। फिर कई और व्यंग्य-बाण उन पर हम कसने लगे।

वे ग्रामीण उठे। लाइब्रेरियन की मेज की तरफ गये। उनसे पेन मांगा और एक कागज पर कुछ लिखा और हमारी तरफ आये। मुझे वह पर्ची पकड़ायी और कहा—"भैया, इसे आधे घंटे बाद खोलना" और गीता हाल से बाहर निकल गये।

समय पर पर्ची खोली। हठात्। हमारी आंखें फटी-सी रह गयीं। अंगरेजी में कुछ लिखा था जिसे हम केवल लाइब्रेरियन साहब की सहायता से ही समझ पाये। इस प्रकार था उनका लिखा—"भैया, मैं इसी कॉलेज का प्रथम श्रेणी स्नातक हूं। खेती है अतः नौकरी कर, किसी नौकरी चाहनेवाले को वंचित न करूं यह सोच खेती ही करता हूं। आप कुछ भी समझें, मैं तो यहां कॉलेज दिनों की याद आने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी-कभी शहर आता हूं, तो यहां बैठता
धन्यवाद ।"

इसके बाद वर्षभर उस 'पुस्तक' को
ता-हाल में खोजता रहा । कभी नहीं आयी ।
वीं आज भी मेरे पास है । वह कंबल ओढ़े
म-मूर्ति आज भी मेरी आंखों के सामने रहती
कुछ कहता-सा लगता है वह उन्नत भाल ।
नतमस्तक हो जाता है मेरा सिर हर एक वैसे
भारतीय के आगे ।

व्याख्याता,
राजकीय उ.मा. विद्यालय,
जसवंतगढ़ (नागौर)

अत्यधिक आत्म-विश्वास से भी पतन

प्रणय कुमार मिश्र

बच्चे स्वभाव से ही नकलची होते हैं और ऐसी कोई भी अच्छी-बुरी घटना जो उनके बाल-मस्तिष्क पर अपना प्रभाव छोड़ जाती है, उसे अपने जीवन में उतारने की कोशिश अवश्य करते हैं ।

उन दिनों मैं माध्यमिक विद्यालय का छात्र था और मेरी अर्द्धवार्षिक परीक्षा चल रही थी । सभी विषयों में मुझे विज्ञान का विषय सर्वाधिक प्रिय था, अतः उस दिन जब विज्ञान का पत्र था, तो मैं बेहद खुश था । आशानुरूप प्रश्न आसान थे । मैंने निर्धारित पांच प्रश्नों को हल करने के बदले सभी आठों प्रश्नों को हल कर दिया और कुछ दिन पहले पढ़ी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की जीवनी से प्रेरित होकर अंत में लिखा, "कृपया, उपर्युक्त आठ में से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर की जांच कर लें ।"

परीक्षा समाप्त हो चुकी थी और कक्षा में उत्तर-पुस्तिकाएं दिखलायी जा रही थीं । मेरा क्रमांक पुकारा गया । मैं यह देखकर हैरान था कि निर्धारित १०० अंक में से मुझे ६० अंक ही दिए गये थे । मैं कुछ हड़बड़ाया और अपनी उत्तर-पुस्तिका को पलटा । देखा, अहंकार के मद में चूर मुझसे दो प्रश्नों के उत्तर गलत हो गये थे और शिक्षक महोदय ने अपनी जांच के क्रम में उन दो गलत उत्तरों को भी शामिल कर लिया था । साथ ही, उत्तर-पुस्तिका के अंत में लाल अक्षरों से लिखा था, "अत्यधिक आत्मविश्वास भी पतन का एक कारण है ।"

आज उस घटना को बीते वर्षों हो गये हैं, किंतु उत्तर-पुस्तिका के अंत में लिखी गयी टिप्पणी आज भी मेरी सोच पर दस्तक देती हुई मानों जीवन की सफलता का एक महत्त्वपूर्ण पाठ पढ़ा रही हो ।

क्वार्टर नं. २०५/सी.डी.,
मुंगेर लाइन कॉलोनी,
जमालपुर (बिहार), ८११२१४

दो महिला पर्यटक माउंट वरनान स्थित जॉर्ज वाशिंगटन के मकान को देखने गयीं । काफी देर सैर करने के बाद मकान से बाहर आते हुए एक महिला ने दूसरी महिला से कहा, "मकान तो बेहद सुंदर और प्रभावशाली है ।" "हां, मगर एक बात तुमने नहीं देखी । सारा का सारा फर्नीचर पुरानी शैली का था !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्नड़ कहानी

भगवान

● अनुपमा निरंजना

दूर से आ रही अस्पष्ट ध्वनि को शरदम्मा ने ध्यानपूर्वक सुना । हवा के तेज झोंके के साथ ढोल-नगाड़ों की आवाज सुनायी दे रही थी ।

"यह बैंड की आवाज है" शरदम्मा ने कहा । उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था । पास बैठी पड़ोसन ने कहा "ये शोर तो शादी के समारोह के समान लग रहा है । लेकिन यह महीना तो शादी के लिए शुभ नहीं है । है ना ?" शरदम्मा चुपचाप शोर की दिशा में देखने लगी ।

उसने देखा कि अंधेरे की काली चादर को भेदते हुए आसमान में रोशनी उभर रही है । तभी उसकी बेटी नलिन दौड़ती हुई आयी और हांफते हुए अपनी मां की गोद में बैठ गयी । उसने उत्सुकता भरे स्वर में पूछा, "अम्मा, क्या आपने देखा ? कितना सुंदर था ?"

"क्या ?" खयालों में खोयी शरदम्मा ने पूछा ।

"भगवान की सवारी थी ।"

शरदम्मा पड़ोसन की ओर मुड़ी और मुसकराने लगी । नलिन ने फिर कहा "अम्मा, अभी सवारी उस गली से गुजर रही है । उसमें लगी रोशनी बेहद खूबसूरत है ।"

अचानक शरदम्मा उठ खड़ी हुई । बेटी ने सवारी का जो वर्णन किया था, वही सब उसकी आंखों के सामने घूमने लगा ।

"तुम इतने आराम से क्यों बैठी हो ? जब सवारी हमारी गली से गुजरे तो हमें भगवान को कुछ फल और नारियल चढ़ाना चाहिए । हमें सारा सामान तैयार रखना चाहिए ।"

पूरा घर अंधेरे में डूबा हुआ था । शरदम्मा अंधेरे में स्विच टटोलने लगी । जल्दी ही कमरे में रोशनी हो गयी ।

शरदम्मा ने जैसे ही चांदी की तश्तरी निकाली नलिन अपनी अम्मा पर जोर डालने लगी, "अम्मा, क्या मैं इसे भगवान को भेंट कर सकती हूं ।"

"तुम तो इसे ठीक से उठा भी नहीं सकतीं ।"

"अम्मा, मैं इसे ठीक से उठा सकती हूं ।"

शरदम्मा चुप रही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिन ने कहा, "अम्मा, सवारी में भगवान की मूर्ति चमेली के कितने सुंदर फूलों से सजी है। अम्मा क्या तुम मेरे लिए ऐसे फूल खरीद दोगी।"

बेटी की बकबक सुनकर 'अम्मा' मुसकरायी। फिर वह फलों, नारियल, फूलों और कुमकुम से भरी थाली लिये हुए बाहर निकल आयी।

अभी तक सवारी उनकी गली तक नहीं पहुंची थी। बैंड की आवाज अब स्पष्ट सुनायी दे रही थी। नलिन ने अपनी मां की साड़ी खींचते हुए कहा "अम्मा, अम्मा।"

"हां।"

"अम्मा, पुजारी अच्छा आदमी नहीं है।"

मां अपनी छोटी-सी शरारती बच्ची की इस टिप्पणी पर चुप्पी साधे हुई थी।

"वह रथ पर बैठा है और भगवान को चढ़ाये जानेवाले सारे नारियल बटोर रहा है।"

शारदम्मा चुप थी। नलिन ने फिर पूछा "अम्मा, हम भगवान की पूजा क्यों करते हैं ?"

शारदम्मा को अपनी बेटी की मासूमियत और

मां की बातें सुनकर विमला गंभीर हो गयी। वह जानती थी कि उसकी मां जिंदगी की तमाम कठिनाईयां झेल चुकी है।

अनजानेपन पर तरस आ गया। अपने माथे से बालों को हटाते हुए उसने कहा, "भगवान हमें वह सब देता है जिसकी हम उससे प्रार्थना करते हैं।"

नलिन ने ध्यानपूर्वक अपनी मां की बातें सुनीं। उसके चेहरे पर हलकी-सी मुसकान दिखायी दी।

"अगर मैं परीक्षा में पास होना चाहूं तो क्या भगवान मेरी मदद करेंगे।"

"हां।"

नलिन सोच में पड़ गयी कि अब वह आगे क्या पूछे। उसकी आंखों में उसकी सहेली शांता की धुंधली तसवीर तैरने लगी। नलिन ने शांता को कई बार फटेहाल देखा था। उसे इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात का बहुत दुःख था कि शांता गरीब होने के कारण नये कपड़े तक नहीं खरीद सकती है ।

"अम्मा, क्या भगवान हमें धन दे सकता है ।"

"हां बेटी ।"

"तो फिर शांता इतनी गरीब क्यों है । उसकी मां भी तो वैसे ही पूजा करती है, जैसे तुम करती हो ।"

यह एक सीधा-सादा सवाल था । लेकिन शरदम्मा उसका जवाब देने में टालमटोल करने लगी ।

नलिन को निराशा हुई । उसने मान लिया कि भगवान दयालु नहीं है ।

लेकिन शरदम्मा जानती थी कि भगवान की तरफदारी कैसे की जाती है और उसने अपनी छोटी बिटिया को झिड़की दी, "बंद करो अपनी बकबक, बातूनी कहीं की ।"

एकाएक उनकी तरफ आ रही सवारी दूसरी ओर मुड़ गयी और रोशनी गायब हो गयी ।

शरदम्मा काफी निराश हो गयी भगवान उनकी गली तक नहीं पहुंच पाये ।

× × ×

नागरत्ना सोकर उठी और उसने आंखें धोयीं । जैसे ही उसकी नजर मुरझाये हुए चंपक के फूलों के हार पर पड़ी वह मुसकरा उठी ।

हां, ये वही चंपक के फूल थे जो उसने लगा रखे थे जब वह उन्हें देखने गयी थी ।

नागरत्ना के गाल सुर्ख लाल हो गये । उसने आसपास देखा कि कहीं कोई उसे देख तो नहीं रहा । पर उसकी चाची ने नागरत्ना को देख लिया और कहा, "जल्दी करो, कंघी करके चुटिया बना लो । ये महिलाएं दूल्हे के स्वागत के लिए तैयार हैं ।"

होनेवाली दुलहन नागरत्ना शरम से लाल हो गयी । तभी उसकी सहेली सुंदरी ने उसकी चोटी बनाने का दायित्व संभाल लिया ।

उस दिन उसकी मां ने उसके बालों को संवारते हुए कहा था, "तुम्हें शरमाना नहीं चाहिए, तुम्हें अपने पति को भगवान के रूप में देखना चाहिए ।"

उस दिन भय के कारण नहीं बल्कि उत्सुकतावश और खुशी के कारण सारे समय उसका मन कांपता रहा था । जैसे ही वह अतिथि कक्ष में पहुंची, वहां मौजूद मेहमानों के बीच में उसने अपने आपको अजनबी पाया और एकाएक उसके पैर सुन्न पड़ गये थे ।

किसी ने मधुर आवाज में पुकारा, "अंदर आ जाओ ।" जैसे ही वह कमरे में पहुंची सारा कमरा चंपक के फूल की खुशबू से भर गया । उसे बाद में सुंदरी से पता चला कि उसका होनेवाला पति उसे बहुत चाहता है । नागरत्ना सिर उठाकर उसे देखना चाहती थी लेकिन आधी पलकें उठाने के बावजूद एकाएक उसने अपनी नजरें झुका लीं । अंततः उसी ने पहल की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या तुम गाना जानती हो ।"

आह कितनी मिठास थी उस स्वर में । गीत के बाद उसने घर के बड़े बुजुर्ग लोगों के साथ-साथ उसके भी पैर छुए, लेकिन इस बार वह उसे एक नजर देख नहीं पायी । उसने किसी तरह नजर बचाकर उसे उस समय देखा जब वह कमरे से बाहर निकल रहा था ।

श्याम रंग होने के बावजूद वह देखने में काफी अच्छा लग रहा था ।

शादी का दिन करीब आता जा रहा था । नागरत्ना खुश थी कि वह जल्द उसके पास चली जाएगी और हमेशा उसी के साथ रहेगी । वह बहुत ही अच्छा आदमी था । उसके लिए खुद ही उसने सारी साड़ियां पसंद की थीं । उसका भावी पति हमेशा एक ही राग अलापता रहता, "पति ही भगवान है । उसकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए ।"

नागरत्ना ने जवाब में सिर हिला दिया ।

सुंदरी ने छेड़ते हुए कहा, "तुम किस चिंतन-मनन में पड़ गयी ।" कल्पनाओं में डूबी नागरत्ना एकाएक सहम गयी ।

"मैं जानती हूं, तुम सोच रही हो कि कृष्ण.... ।"

बगलवाले कमरे में बैठी महिलाओं ने उसकी बातें सुनीं और ठहाका मारकर हंस पड़ीं, उनकी हंसी के मारे सारे कमरे से ठहाके की आवाज सुनायी पड़ने लगी ।

सुंदरी ने अपना काम पूरा किया और खड़ी हो गयी । नागरत्ना को छेड़ते हुए उसने कहा, "तुम बहुत ही खूबसूरत लग रही हो । दूल्हे को तुम्हारे यहां होना चाहिए ।"

"माफ करो, नहीं तो एक बार फिर बगलवाले कमरे में ठहाके लगने लगेंगे ।" शिकायतभरे अंदाज में नागरत्ना ने कहा ।

जब सभी बाहर चले गये तो नागरत्ना ने खुद को आईने में निहारा, मोती और मणिक के बने झुमके उसके गालों को छू रहे थे । हीरों का हार सितारों की भांति चमक रहा था । उसके बालों में लगे चमेली के फूल उसके साथ लुका-छिपी का खेल खेल रहे थे ।

लेकिन दूल्हे की अगवानी करने गयी महिलाएं निराश होकर लौट आयीं ।

"बस नहीं आयी । हम तो इंतजार करके थक गये हैं ।" महिलाओं ने शिकायतभरे लहजे में कहा ।

नौ बज गये थे और सभी लोग इंतजार करते-करते धैर्य खोने लगे थे, नागरत्ना के दिमाग में एकाएक अशुभ विचार आने लगे ।

"हो सकता है, बस दुर्घटनाग्रस्त हो गयी हो ।"

उसकी आंखों में आंसू आ गये । नागरत्ना बिस्तरे पर लेट गयी, उसे नींद आ गयी, उसने सपना देखा कि वह उसके साथ टहल रही है ।

बाहर शोर-शराबा मच रहा था । एक बार फिर दूल्हे के बिना लोग थके-हारे लौट आये थे, बैंड बजना बंद हो गया था ।

बस नहीं आयी । किसी ने कहा, "भगवान ही जानता है कि क्या हुआ ।"

नागरत्ना ने आंखें खोलीं और वह स्तब्ध रह गयी ।

उसका भगवान उसका साथ नहीं दे सका ।

× × ×

सहमी हुई सुमंगलम्मा ने सड़क पर नजरें दौड़ायीं । दस-बारह बार वह ऐसा कर चुकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी । परेशानी बढ़ती जा रही थी लेकिन जिसका उसे इंतजार था वह अभी तक लौटकर नहीं आया था । हताश होकर वह दहलीज पर बैठ गयी । उसके दिमाग में हर तरह के विचार आने लगे ।

सुमंगलम्मा सोच रही थी, "उसके साथ क्या हो सकता है ।"

लेकिन जितनी बार वह इस सवाल का जवाब ढूंढ़ने की कोशिश करती हर बार वही सवाल उस पर हावी हो जाता था ।

"ओह क्या दुनिया है ।"

सुमंगलम्मा ने भारी मन से कहा ।

एकाएक उसके चेहरे पर संतोष का भाव झलकने लगा । उसने किसी को अपनी तरफ तेजी-से आते हुए देखा था । लेकिन करीब से उस व्यक्ति को देखने पर उसकी खुशी जाती रही ।

वह उसके पड़ोसी की बेटी थी ।

सुमंगलम्मा यह सोचते हुए अंदर चली गयी कि उसकी अपनी बेटी भी देर से आ सकती है । उसने भगवान की मूर्ति के आगे दीप जलाया और प्रार्थना किया, "भगवान, मेरी बच्ची की रक्षा करना ।"

टिमटिमाते हुए लौ को देखकर उसे लगा कि यह लौ धीरे-धीरे चिता की अग्नि बन गयी । वर्षों पहले अपने पति की जलती हुई चिता के सामने खड़े होकर उसने स्वयं को मौत के हवाले करने की बात सोची थी । लेकिन उसने संघर्ष किया और अपनी बेटी विमला की खातिर जीवित रही ।

उस समय विमला मात्र छह वर्ष की थी ।

उसकी इच्छा थी कि विमला स्कूल में अपनी पढ़ाई जारी रखे । लेकिन संसाधनों के अभाव के कारण उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी ।

जब विमला शादी योग्य हुई तो कई रिश्ते आये और उसे लोग देखने भी आये । लेकिन किसी से भी रिश्ता नहीं हो पाया । विमला ने गुस्से में कहा, "ये आदमी लड़की से नहीं बल्कि धन से शादी करना चाहते हैं ।"

उसने अपनी मां को आश्वासन दिया "मैं किसी भी हाल में शादी नहीं करना चाहती हूं । मैं नौकरी करूंगी और तुम्हारी देखभाल करूंगी ।" विमला की बातों से सुमंगलम्मा परेशान थी । ये सारी बातें सोचकर उसकी आंखों में आंसू आ जाते और वह उसे साड़ी के पल्लू से पोंछ लेती थी ।

बेचारी विमला । अगर उसके पिताजी जिंदा होते तो वह कितनी खुशहाल होती ।

सुमंगलम्मा सिसक-सिसककर रोने लगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर उसे गहरी नींद आ गयी ।

दरवाजे पर दस्तक के साथ किसी की पुकार सुनायी दी, "मां, मां ।"

मां ने दरवाजा खोला । विमला अंदर चली आयी ।

सुमंगलम्मा अपनी बेटी का चेहरा निहारने लगी । विमला गंभीर एवं शांत थी और उसके चेहरे से किसी तरह की घबराहट नहीं झलक रही थी ।

बिस्तर पर बैठते हुए विमला ने शांत भाव से कहा, "मुझे वह नौकरी नहीं मिली ।"

सुमंगलम्मा खुद को असहाय महसूस करने लगी और उसे चक्कर आ गया । वह दीवार के सहारे खड़ी हो गयी ।

अपनी मां के चेहरे को एकटक देखते हुए विमला ने कहा, "मां, मैं जानती हूं कि तुम्हें दुःख होगा । अगर मुझे यह नौकरी नहीं मिली तो क्या हुआ ? वैसे भी मुझे क्लर्की करना पसंद नहीं है । मैं कहीं भी अध्यापक बनना पसंद करूंगी ।"

विमला पूरे विश्वास और साहस के साथ बोली लेकिन बेटी की बातों से सुमंगलम्मा का दिल पसीज गया । वह उसके भविष्य को लेकर सोच में पड़ गयी ।

"विमला, अगर तुम्हारे पिताजी जिंदा होते तो हमारा भाग्य कुछ और ही होता ।"

इन्हीं शब्दों के साथ उसका सारा दुःख सामने आ गया । विमला को भी पिताजी की याद आ गयी और उसकी आंखों में आंसू भर आये ।

सुमंगलम्मा के मुंह से ये शब्द अचानक फूट पड़े थे लेकिन उसने खुद को तुरंत संभाला और कहा, "आओ विमलू, हमारे भाग्य में दुःख लिखा है । चलो खाना खायें । खाना ठंडा हो रहा है ।"

अतीत में खोयी सुमंगलम्मा विमला को खाना परोसते समय उसके भविष्य के बारे में सोच रही थी । काफी संयम बरतने के बाद भी वह खुद को संभाल नहीं पायी । उसने कहा, "विमलू मुझे डर लगता है, न । न जाने हमारे भाग्य में क्या लिखा है ।"

मां की बातें सुनकर विमला गंभीर हो गयी । वह जानती थी कि उसकी मां जिंदगी की तमाम कठिनाईयां झेल चुकी है ।

"मां, तुम क्यों डरती हो । मुझे जल्द ही नौकरी मिल जाएगी ।" विमला ने क्षणभर रुककर कहा, "जब तक मैं जिंदा हूं तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है ।"

सुमंगलम्मा को अपनी बेटी पर गर्व हुआ । उसे उसके लिए दुःख हुआ । उसके उम्र की लड़कियां अपने पति के साथ खुश रहती हैं जबकि विमला को नौकरी के लिए ठोकरें खानी पड़ रही हैं । वह हैरत में पड़ गयी कि भगवान उस पर कब दया करेंगे ।

"मां तुम किस सोच में पड़ी हो" विमला ने पूछा ।

"मैं हैरान हो रही हूं कि भगवान हम पर कब दया करेंगे । हम बद्‌किस्मत हैं, विमलू ।"

जवाब में विमला हंसी और उसने कहा, "दया के बारे में सोचना महज कायरता है ।"

मां को यह बात ठीक नहीं लगी और उसने धैर्यपूर्वक भगवान की दया का इंतजार किया ।

लेकिन भगवान भी कुछ नहीं कर सका ।

● अनुवाद : न.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन्हाई

अंधेरी में भटका हुआ
मैं हूं एक छोटा दिया—
उजालों से महरूम हूं
उम्मीदें ने तन्हा किया
रहा उलझनों में सदा
मेरी आस का काफिला
न होती अगर साथ लौ
यहां साथ किसने दिया
जमाने से बेजार हूं
अंधेरों का ही साथ है
कांपता है मेरा तन-बदन
जानकर अपनी तन्हाइयां
न होती अगर पास 'लौ',
उजाला भी यूं छोड़ता
कि जैसे सभी कुछ छीन कर
यों जीवन है जीने दिया

मर्यादा

उस दरख्त से पूछे
अकेला क्यों खड़ा है
इस युग की भागती-दौड़ती जिंदगी में
मर्माहत-सा क्यों पड़ा है
ये सवाल उससे क्यों पूछती हो
स्वयं से पूछे
क्योंकि तुम स्वयं उस-जैसी हो
अनजान पथ की राही
क्या सबसे अनूठी हो
तुम क्यों चुप हो
क्यों साथ नहीं देतीं तेज रफ़्तार जिंदगी का
पीछे छूट जाने का डर है
या आत्मविश्वास का हनन है
मुझे पता है वो बात
जिसने तोड़ रखा है तुम्हारा विश्वास
एक मर्यादा जो सब तोड़ चुके हैं
तुम नहीं तोड़ पायीं
जीवित रहने के संकल्प में
इस निश्चय को नहीं जोड़ पायीं
अपने को लड़की कहलाने की भावना से तिरस्कृत
तुम अपनी संवेदनाओं को नहीं छोड़ पायीं
इसीलिए आज दौड़ते युवक-युवतियों की भीड़ में
तुम अकेली रह गयीं
भारतीय अकेली रह गयीं
भारतीय नारी की छवि मलिन न होने देने की
कोशिश में अधूरी रह गयीं

दुःख की परछाईं

जब कभी जी नहीं बहलता
खिड़कियों के उनींदे द्वार खोल कर
दोहरा लेती हूं अपना अतीत
यूं ही आंख मूंद करके
कभी हम साया भी साथ नहीं होता
अकेले पन से घबराकर
बात कर लेती हूं अपने आप से
कोई बात ढूंढ़ कर के
कभी जब जी बहल रहा हो और
साथ कारवां भी हो
जाने किस-किससे भाग कर
सिसक सिसक कर रो लेती हूं
कोई भूली बात याद करके

आत्मकथ्य

व्यवसाय से मैं डॉक्टर हूं और गुरु तेग बहादुर अस्पताल में कार्यरत हूं। जीवन एवं मृत्यु को बहुत पास से अनुभव करते हुए मुझे जीवन नश्वरता का खासा अनुभव मिला। इन्हीं अहसासों को मैंने काव्य के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

डॉ. इला गुप्ता

बी-४, चंद्रनगर, सूर्यनगर के पास, (दिल्ली-यू.पी. बार्डर), गाजियाबाद (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विस्फोट

...है
...हास नहीं दुहरता है
...किन हकीकत में
...हास दुहर सकता है
...कुछ विस्फोटों के बाद
...विस्फोट काफी हैं
...पृथ्वी को उसके
...वस्था में पहुंचाने में
...विस्फोट होंगे
...पृथ्वी पहुंच जाएगी
...अवस्था में
...थी यह
...अवस्था में
...गी यह
...नवजात शिशु की तरह
...
...और
...बोध
...विस्फोट
...सकते हैं कभी भी
...इतिहास
...तो दुहर सकता है
...किसी भी क्षण

जंग अभी भी जारी है

प्रतिदिन
सुबह से शाम तक
वह एक जंग लड़ता है
अपनी ही खातिर
साथ में होता है
उसका वही पुराना बंदर
लेकिन आजकल
दिनभर की लड़ाई के बाद भी
वह नहीं जुटा पा रहा है
भरपेट भोजन
और लगने लगा है उसको
जंग नहीं चल पाएगी
किंतु
जंग अभी भी जारी है
और अब इस जंग को लड़ती है
उसकी पत्नी
प्रत्येक रात
इस आशा में कि
शायद वह कभी न हारेगी

चांद

चांद
तुम्हें देखकर
कुछ संतोष-सा होता है
सोचता हूं जब
तुम भी अकेले हो
मेरी ही तरह
उन तारों के बीच में
चांद
तुम्हें नींद नहीं आती
थककर सोते नहीं हो तुम
रात भर जगते रहते हो
मेरी ही तरह
चांद
तुम आ जाओ मेरे पास
या फिर बुला लो मुझे ही
अपने पास
शायद हम लोग भगा सकें
अपने इस अकेलेपन को
दुकेले बनकर

आत्मकथ्य

अपनी इस छोटी-सी उम्र में इस दुनिया को गहराई ...खने की कोशिश की है । और जो कुछ देखता हूं उसे ...दों का जामा पहनाने की कोशिश में प्रयासरत रहता हूं ।

प्रणव कुमार

द्वारा— क्वा. नं.— डी/
९१ वाष्प शक्ति प्रतिष्ठान
बरौनी-८५१११६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक थाईकथा

मेखला

आकाश में जब बिजली कौंधती है और बादलों की गरज सुनायी देती है तो थाइलैंड में माताएं बच्चों से कहती हैं—'डरो मत बच्चो । यह बिजली नहीं, मेखला के हीरे-मोती चमक रहे हैं । वह क्रूर देवता रामासुर को परेशान कर रही है—बस !'

मेखला थाई देश की एक देवी है, चमकीली आंखों और काले बालोंवाली । कहते हैं, मेखला का जन्म समुद्र के फेन से हुआ था । वह सारे संसार के समुद्रों, नदियों और तालाबों की देवी है ।

रामासुर आधा देवता और आधा दैत्य है । वह सदा हरे वस्त्र पहनता है और उसके हाथ में हीरे-मोती जड़ा एक फरसा रहता है । रामासुर ने एक तूफानी बादल में जन्म लिया था । इसीलिए वह अपने कपड़ों के ऊपर बादलों का लबादा भी पहनता है ।

सब देवी-देवता मेखला को बहुत पसंद करते हैं, क्योंकि उसका स्वभाव बड़ा मीठा है—हमेशा हंसती रहती है । उसे छेड़खानी में मजा आता है और रामासुर को परेशान करके तो बहुत खुश होती है मेखला ।

क्रूर रामासुर को देवलोक में कोई अच्छा नहीं समझता । जब भी वह किसी पर नाराज होता; उस पर अपना फरसा फेंक मारता था । इसीलिए देवतागण इस कोशिश में रहते कि मेखला और रामासुर एक-दूसरे से ज्यादा न मिलें । मेखला को शिव के पास रहने की आज्ञा मिली । वह वहीं बैठी-बैठी अपने हीरे-मोती चमकाती रहती ।

जब मेखला बड़ी हुई तो उसके पिता ने उसका विवाह शिव से कर दिया । शिव भी मेखला का चंचल स्वभाव जानते थे । वह चाहते थे कि उसमें और रामासुर में लड़ाई न हो । इसलिए उन्होंने मेखला से कहा, 'मेखला, तुम अपने हीरे-मोती के गहने चमकाते हुए रखा करो—जैसे आसमान में तारे चमकते हैं ।'

मेखला को शिव का आदेश मानना पड़ा लेकिन जल्दी ही वह ऊब भी गयी ।

एक दिन देवलोक में विशेष उत्सव था । जब धरती पर वर्षा प्रारंभ होती तो देवता भी उत्सव मनाते । उस उत्सव में मेखला को जाने की आज्ञा शिव ने दे दी । मेखला अपने रतन-जड़ित आभूषण चमकाती देवसभा में पहुंच गयी ।

उसके पहुंचते ही पूरी देवसभा मेखला की ओर ही देखती रह गयी । उसके रत्नाभूषण नक्षत्रों की तरह चमक रहे थे । मेखला को देखते ही रामासुर अपना फरसा उठाकर उसकी तरफ बढ़ा ।

मेखला रामासुर को देखकर खिलखिलाने लगी । उसे हंसता देख बाकी देवता भी हंसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

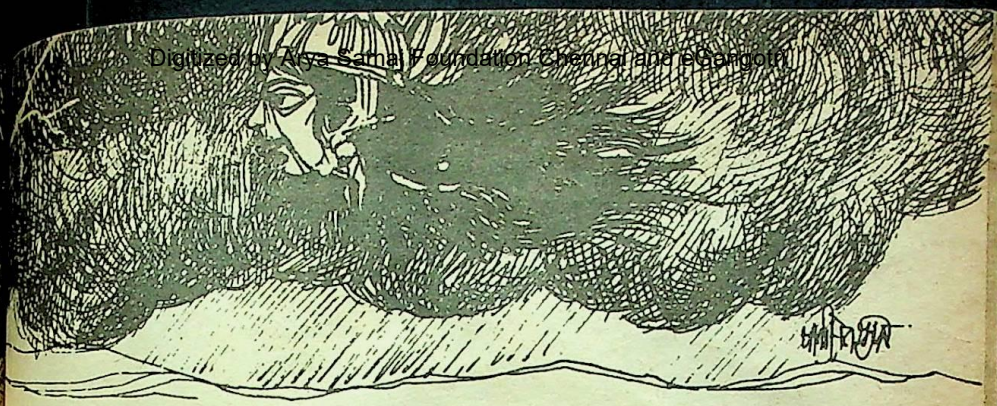

लगे।

'तुम्हें पता है, मालूम है मुझे' कहकर मेखला एक बादल में छिप गयी। फिर उसकी हंसी बादल के पीछे से सुनायी देने लगी।

मेखला की खोज में रामासुर आकाश में इधर से उधर दौड़ने लगा। उसके चलने से बादल इधर से उधर भागने लगे। तेज हवा बहने लगी।

और कोई होता तो रामासुर का रौद्र रूप देखकर ही डर जाता। पर मेखला जरा भी नहीं डरी, उसे तो इस लुका-छिपी में मजा आ रहा था। वह एक बादल के पीछे से निकलती और अपने आभूषण चमकाती हुई दूसरे बादल के पीछे चली जाती। इस तरह मेखला ने रामासुर को सारे आकाश में दौड़ा दिया। दौड़-भाग से थककर रामासुर क्रोध से और भी आगबबूला हो उठा।

मेखला : समुद्र के फेन से जन्मी नदियों और तालाबों की देवी।
रामासुर : स्वभाव से क्रूर, जिससे देवता भी दूर रहते।
और एक दिन जब मेखला और रामासुर में मुठभेड़ हुई तो क्या हुआ ?

'कहां तक छिपेगी मेखला, मैं उसे पकड़कर रहूंगा। मुझसे आज बच नहीं सकेगी।'—रामासुर क्रोध से भरकर चीखा और दुगुनी तेजी-से आकाश में दौड़ने लगा।

तभी मेखला एक काले बादल के पीछे से झांककर हंस पड़ी। अब तो रामासुर क्रोध से पागल हो उठा। उसने अपना फरसा तानकर मेखला की ओर फेंका। तभी मेखला ने अपने रत्नाभूषण चमकाये। उस चमक में रामासुर की आंखें चौंधियां गयीं। वह कुछ भी न देख सका।

मेखला हंसकर अपने आभूषण चमकाती, तो रामासुर अपना फरसा फेंकता—आकाश में जोर की गड़गड़ाहट होती। न जाने कितनी बार ऐसा हुआ। हर बार रामासुर का निशाना चूक गया।

किसी तूफानी रात में, जब आकाश में बादल छाये हों तो मेखला की शैतानी और रामासुर का फरसा फेंकना देखा जा सकता है। बादलों के बीच बिजली की कौंध मेखला के रत्नाभूषणों की चमक होती है और उसके बाद जो कड़कड़ाहट और गरज सुनायी देती है, वह रामासुर द्वारा फरसा फेंकने की होती है।

प्रस्तुति : नीला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

सरिता शाक्षी, रायबरेली

प्रश्न : उम्र पैंतीस साल । एक वर्ष से कब्ज रहती है । कभी-कभी खून आ जाता है ।

उत्तर : अभ्यारिष्ट दो-दो बड़े चम्मच भोजन के बाद पीयें ।

मीनू, गोरखपुर

प्रश्न : उम्र बीस वर्ष । बहुत दुबली-पतली हूं । स्तन का विकास भी नहीं है । भूख ठीक नहीं लगती । हीन भावना से ग्रस्त हूं ।

उत्तर : पुष्यानुग चूर्ण साठ ग्राम, न वायस तीस ग्राम, शंखभस्म दस ग्राम इन सबकी साठ मात्रा बनाएं । सुबह-शाम एक-एक मात्रा पानी से लें । द्राक्षारिष्ट दो चम्मच, अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पिएं । दिन में दो बार स्तनों पर सरसों के तेल की आहिस्ता-आहिस्ता मालिश करें ।

खेमराज, नवलगढ़

प्रश्न : लंबी सांस लेने पर दाएं सीने में असहनीय दर्द दस साल से है । उपयुक्त दवा लिखें ।

उत्तर : लवंगादिचूर्ण साठ ग्राम, श्रृंगभस्म तीस ग्राम, मुक्तासुक्ति भस्म पंद्रह ग्राम । इनकी साठ मात्रा बनाएं । सुबह-शाम एक-एक मात्रा पानी से लें । रात में च्यवनप्राशावलेह एक-एक चम्मच दूध से लें ।

दुलीचंद, सुजानगढ़

प्रश्न : गरमी में सिर के दाहिनी तरफ दर्द, दाहिनी आंख के ऊपर विशेष । गरदन के पीछे नसों में तनाव ।

उत्तर : त्रयोदशांग गूगल एक वटी, योगराज गूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । चंद्रप्रभावटी एक वटी रात दूध से लें ।

डी.एम., गोपालगंज

प्रश्न : उम्र बीस वर्ष । एक वर्ष से बहुत परेशान हूं । दाहिना पैर पतला हो गया है, कभी-कभी कंपन भी होता है ।

उत्तर : रसराज रस तीन ग्राम, अश्वगंधाचूर्ण तीस ग्राम इनकी तीस मात्रा बनाएं । एक मात्रा सुबह दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पिएं । महायोगराज गूगल एक वटी रात दूध से लें । छह माह नियमित दवा लें ।

दिनेश कुमार यादव, भोपाल

प्रश्न : उम्र सत्ताइस साल । स्मरण शक्ति कमजोर बनी रहती है । किसी कार्य में मन नहीं लगता ।

उत्तर : ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, सारस्वतारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

संगीता, पटना

प्रश्न : उम्र बाइस वर्ष । गाल पर झाईं कालापन है । बहुत इलाज कराया, कोई लाभ नहीं ।

उत्तर : केशोर गूगल एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें, आरोग्यवर्धनी वटी दो-दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वटी भोजन के बाद पानी से लें । छह माह नियमित औषधि सेवन करें ।

श्रीमती गंगा प्रसाद, मलगंदा (नेपाल)

प्रश्न : थोड़ा-थोड़ा सिरदर्द हमेशा बना रहता है । माह में एक बार भयानक दर्द होता है । पेट में जलन बनी रहती है । कंपकंपी, सनसनाहट और चक्कर भी आने लगते हैं । कुछ दिन छाती व कमर में भी दर्द होता है ।

उत्तर : योगराज गूगल एक वटी, शिरशूलादिवज्ररस एक वटी, सुबह-शाम गरम पानी से लें । गोदंती भस्म साठ ग्राम, देसी खांड दो सौ ग्राम, इन्हें भली प्रकार मिलाकर रख लें । आधा-आधा चम्मच दोपहर-रात पानी से लें ।

क.ख.ग., अजमेर

प्रश्न : बाइस वर्षीय अविवाहिता हूं । मासिक के समय पेट में बहुत दर्द होता है । गत पांच साल से बहुत परेशान हूं । एलौपैथी इलाज किया । कुछ समय से रक्त स्राव भी अधिक होता है । उलटियां आती हैं, उस समय चलने में शरम आती है ।

उत्तर : चंद्राशुरस छह ग्राम, स्वर्ण सूतशेखर रस तीन ग्राम, प्रवाल तीन ग्राम इनकी साठ मात्रा बनाएं । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । अशोकारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद दोनों समय पियें । दही-चावल-शीतल पेय कम मात्रा में सेवन करें ।

ललित शर्मा, शाहपुरा

प्रश्न : मेरी मम्मी की उम्र पैंतीस साल है । पिछले तीन साल से डकारें बहुत आती हैं । देर से पचनेवाली या तली वस्तुएं लेने से अधिक परेशानी होती है ।

उत्तर : सूतशेखररस दो-दो वटी सुबह-शाम पानी से लें । काकायनवटी दो-दो वटी भोजन के बाद पानी से लें ।

रामचंद्रामा, पूर्णिया

प्रश्न : हाथ-पैर में जलन । पेशाब करने से पहले कड़क महसूस होना, माथे में भारीपन । डेढ़ साल से परेशान हूं ।

उत्तर : गोक्षुरादिगूगल एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । चंदनासव दो-दो बड़े चम्मच भोजन के बाद पियें । चंद्रप्रभावटी एक-एक वटी रात दूध से लें ।

— कविराज वेदव्रत शर्मा

बी. ५/७ कृष्णनगर,
दिल्ली-११००५१

नाम..... आयु.....

रोग के लक्षण ..... कब से है.....

अब तक क्या इलाज किया .....

वैद्य की सलाह

द्वारा—संपादक—'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, नयी दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या करेंगे आप ?

मैनेजर होता चिड़ियाघर का

'क्या करेंगे आप' स्तंभ के लिए आप रंग और व्यंग्य की तरंग में डूबी अपनी खिलखिलाती हुई, गुदगुदा देने वाली रचनाएं भेजें। आपकी रचना आठ पंक्तियों से अधिक न हो।

आगामी काव्यचर्चा का विषय भी —

'मैनेजर होता चिड़ियाघर का'

संपर्क 'क्या करेंगे आप'
द्वारा : संपादक 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स भवन नयी दिल्ली-१
अंतिम तिथि : २० जून

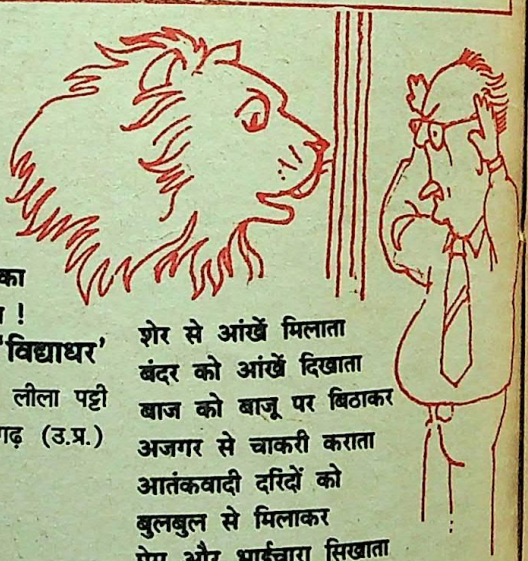

जब कभी आप चिड़ियाघर आते
वापस घर को पहुंच ना पाते
खाली पिंजड़े में भर देता
खाने को दूध बताशा देता
जन प्रसन्न होते देख, जीव बे-पर का
यदि मैनेजर होता मैं चिड़ियाघर का !

—इन्द्रेश 'विद्याधर'
ग्रा. व पो. लीला पट्टी
बनकटिया, जि.-आजमगढ़ (उ.प्र.)

'लाखपति' या 'करोड़पति' क्या
एक 'पति' भी जो मैं होता
तो क्या करीपन पर अपने
आठ-आठ आंसू मैं रोता
'पशुपति' भी तो कहलाता
चिड़ियाघर का मैनेजर होता

—मोहन कुमार सरकार
प्रशासनिक सेवा
अररिया ८५४३११

शेर से आंखें मिलाता
बंदर को आंखें दिखाता
बाज को बाजू पर बिठाकर
अजगर से चाकरी कराता
आतंकवादी दरिंदों को
बुलबुल से मिलाकर
प्रेम और भाईचारा सिखाता
हर दर्शक को अनुभव कराता
चिड़ियों की चहक, फूलों की महक का
मैनेजर होता यदि चिड़ियाघर का

—रामबाबू
आई.ए.एस.
सदस्य : लोक सेवा आयोग इलाहाबाद (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमतीजी की
चों-चों-चों-से
मन कभी नहीं घबराता
उनकी चहचहाहट से
घर को स्वर्ग बनाता,
यहां तक कि
केहरी-सा निर्भय घूमता
और भी बहुत-कुछ करता
पर परस्पर कभी नहीं लड़ता।

—रामेश्वरम्
२६-एल. आई. जी.,
धार-४५४००१ (म.प्र)

दुनियाभर के दुर्लभ पक्षी
फिर घर के कूकर में पकता
चिड़ियों-जीवों के दानों से
अपने घर का खर्चा चलता
जानवरों को अफीम देकर
खुद भी लेकर लंबी सोता
काम यही होता दिनभर का
मैनेजर होता चिड़ियाघर का

—परमजीत कौर
कार्यपालक दंडाधिकारी
पूर्णिया-८५४३०१

स्वागत करता गधा गेट पर
शेर सबको सैर कराता
बंदर सबको गीत सुनाता
हाथी सबको पानी पिलाता

फ्री एंट्री होती
बकरियां मेरी संतरी होती
सब कुछ होता उलटा-पुलटा
जब मैं मैनेजर होता चिड़ियाघर का।

—अरूण नागर
एफ-३, एन.पी.एल. कॉलोनी
न्यू राजेन्द्र नगर,
नयी दिल्ली-११००६०

यदि चिड़ियाघर का
मैं मैनेजर होता
चिड़िया घर अपनी
किस्मत को रोता
पशुओं के भोजन से भी
आधा हिस्सा बटवां लेता
भूख-प्यास से प्राणी मरते
पर मैं तनिक ध्यान न देता।

—अखिलेश कृष्ण श्रीवास्तव
बागेश्वर भवन, प्रभु टाउन,
रायबरेली-२२९००१

घूम रहे हैं जानवर जितने
मानवता की ओढ़े खाल
सबको पिंजड़ों में बंद कर दूं
बाहर से दो-दो नवताल
चाबी मैं ऐसे गुम कर दूं
कभी बाहर निकल न पाएं
पता भूल जाते सब घर का
यदि मैं होता मैनेजर चिड़ियाघर का

—विजय कुमार बजाज
बैंक ऑव बडौदा
नेपियर टाउन, जबलपुर-४८२००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

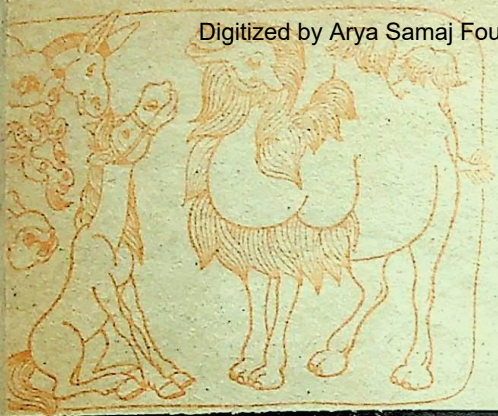

चीनी बोध कथाएं

ऊंट का आत्म-विश्वास

हिरन, चिंकारा, खरगोश, शिकारी कुत्ता और यहां तक कि भोंडा गधा भी जो जरा कुछ तेज दौड़ लेते हैं, ये सभी ऊंट की सुस्त चाल का मजाक उड़ा रहे थे। लेकिन वह इन सबकी बातों को अनसुना करके मस्त खड़ा था।

यह देखकर ऊंट के बूढ़े दोस्त घोड़े ने पूछा, "तुम इनकी बातों पर गुस्सा क्यों नहीं होते?"

"इसकी कोई जरूरत ही नहीं", ऊंट ने पगुराते हुए उत्तर दिया, "क्योंकि जब मैं तकलामकन रेगिस्तान पार करूंगा तब ये सब हंसना भूल जाएंगे।"

"क्यों?"

ऊंट बोला : "इनमें से किसी ने भी रेगिस्तान नहीं देखा है, और वहां पहुंचकर ही उनको मालूम होगा कि मुझ पर हंसना कितना मुश्किल है।

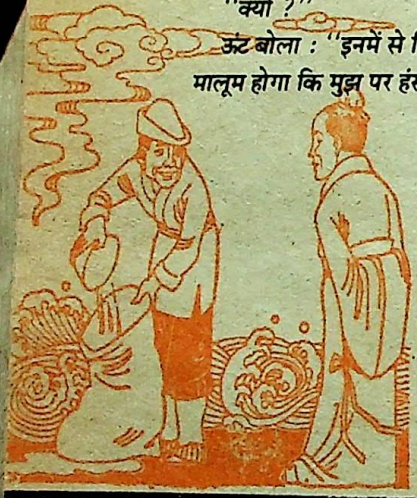

नमक का सौदागर

नमक के एक सौदागर को लोगों ने नदी किनारे देखा कि वह नमक के बोरों में दनादन पानी डाले जा रहा है।

एक राहगीर से जब नहीं रहा गया तो वह सौदागर से बोला, "भाई, इस तरह तो तुम अपना काफी नमक बहा दोगे!"

"नहीं मित्र", नमक का सौदागर बड़े गोपनीय ढंग से उसके कान में फुसफुसाया, "मैं इसी तरह कपास को भी भिगोकर ज्यादा कमा चुका हूं, अब नमक से आमदनी ज्यादा करने का रास्ता बना रहा हूं।"

लेकिन, यह क्या? कुछ ही देर में नमक तो आधे से भी कम रह गया।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

चीज खन-खन करती है

वि. कर्ण हसपुरा, औरंगाबाद : १५ वर्ष का दसवीं का छात्र हूं। पढ़ते समय मस्तिष्क में लगता है, जैसे कुछ चीज है जो खन-खन करती रहती है। इसके रहते मैं पढ़ाई नहीं कर पाता। मैं पढ़ाई छोड़कर कालीदास रंगालय थियेटर में नाटक करने लगा हूं। एक्सरे व डॉक्टरी इलाज कराने के बावजूद बीमारी ज्यों की त्यों बनी हुई है। दूर करने का कोई उपाय सुझाएं।

वास्तव में हमारा मस्तिष्क सैरीबरो स्पाइनल फ्लूयूड से घिरा होता है। इस प्रकार यह सर के अंदर सुरक्षित होता है, कोई ऐसी चीज नहीं होती जो खन-खन करने लगे। ऐसी चीज किसी रोग में भी नहीं बन सकती। यदि होती तो अवश्य ही एक्सरे व डॉक्टरी जांच द्वारा सामने आ जाती। आपने लिखा है कि यह केवल पढ़ाई के समय ही होता है। इसीलिए अब आप थियेटर की ओर आकर्षित हो गये हैं। यदि कुछ होता तो यह केवल एक परिस्थिति में होता, दूसरी में नहीं—यह भी तो असंभव है। वास्तव में आपकी समस्या तन की नहीं अपितु मन की है। इसलिए एक्सरे व और जांच सब सामान्य हैं। या तो आपकी पढ़ाई की तैयारी न होने तथा ऊंची महत्त्वाकांक्षा होने के कारण मानसिक तनाव बन गया है अथवा थियेटर आदि की ओर रुचि अधिक हो गयी है। वास्तव में मन में द्वंद्वपूर्ण स्थिति ही इस रूप में सामने आ रही है। आपको चाहिए कि आप लक्षण (खन-खन की आवाज) की ओर ध्यान न दें तथा अपने मन की द्वंद्वपूर्ण मनोस्थिति को समझें। तमाम उन तनावपूर्ण समस्याओं को समझ अपने आपको उनसे निकालें। रुचि का गला घोंट कर जब हम जबरन पढ़ने बैठते हैं तो भी ऐसी मनोस्थिति उत्पन्न हो सकती है। यदि आप अपना समय रुचि व कार्य में संतुलित करें। तो ऐसी समस्या उत्पन्न न होगी।

समलैंगिकता

एक बहन, खैरागढ़ (राज.) : ४० वर्ष की निसंतान विधवा अध्यापिका हूं तथा पिछले तीन साल से एक और ३७ साल की अध्यापिका जो ट्रांसफर होकर आयी, एक ही मकान में साथ-साथ रह रहे हैं। दोनों का यहां कोई रिश्तेदार नहीं। खाना-पीना, उठना-बैठना सब साथ होने के कारण यह संबंध प्रगाढ़ प्रेम में परिणित हो अब सहवास में बदल गये हैं। अब हम दोनों एक-दूसरे का स्तनपान व गुप्तांगों को रगड़कर इच्छा तृप्ति करते हैं। हम एक ही जाति की तथा एक ही ऊंचाई की हैं। अपने इस संबंध से हम खुश व तृप्त हैं। जब से हमने सुना है कि पुरुष समलैंगिक संबंध द्वारा एड्स हो जाता है, हमें तब से डर हो गया है कि स्त्री समलैंगिकता द्वारा भी क्या यह संभव है। हम दोनों शर्म के मारे अपना नाम व पता गुप्त रखना चाहती हैं। डॉक्टर साहब आशा है आप हमारी चिंता दूर करेंगे।

समलैंगिक संबंध चाहे पुरुष के हों अथवा स्त्री के, एड्स का कारण हो सकते हैं। वास्तव में एड्स के मरीज के कीटाणु जब किसी भी कारण हमारे रक्त में प्रवेश कर जाएं चाहे वह रक्तदान अथवा समलैंगिकता अथवा पुरुष-स्त्री सहवास, यह सब एड्स के कारण हो सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं । इसलिए जहां तक हो सके अपरिचित व कई लोगों से सहवास न करें या फिर पुरुष कंडोम का इस्तेमाल करें ।

झुकाव का असर

रतन थापा, नेपाल : मैं २६ वर्ष का अकेला, बिना कोई बंधन के एक बिजली मिस्त्री हूं । धन-दौलत कुछ नहीं । अपनी कमाई से जीवनी तथा साहित्य में जितना संभव हो, सब खरीदकर पढ़ता हूं । मैं विश्व शांति के लिए अपना कुछ योगदान देने के लिए बेचैन हूं । विश्व में हो रहे हरेक युद्ध व खून-खराबे से चिंतित हूं । मैं सोचता हूं कि इसी संकल्प को व्यावहारिक रूप देने के लिए दांपत्य जीवन से अलग रहना चाहिए । तनाव की स्थिति एक वर्ष से तब बनी, जब मैंने अपने मन में एक लड़की के प्रति झुकाव देखा । इससे मेरी भावना में एक दरार-सी पैदा हो गयी । वह ११वीं कक्षा में है तथा बीस वर्ष की है । मुझे न तो उसकी विचार श्रंखला का पता है न ही मैंने अपने भाव अभी तक उसे व्यक्त किये हैं । वह स्वीकार, इनकार क्या करेगी ? इसका भी मुझे कोई ज्ञान नहीं । परंतु मेरे मन में तनाव उत्पन्न हो गया है । दिमाग सही ढंग से काम नहीं कर रहा है, केवल रोजमर्रा की जिंदगी चला रहा हूं ।

आप एक आदर्शवादी व्यक्ति हैं । साथ ही आपमें व्यावहारिकता कम तथा कल्पना अधिक है । आप अपनी इच्छाओं का गला घोंट उन्हें दबाते आये हैं । विश्व शांति आप कैसे लाएंगे, कैसे आप उसे व्यावहारिक रूप देंगे, कैसे उसमें योगदान करेंगे—यह भी केवल कल्पना के स्तर पर ही है । इस आयु में स्वाभाविक ही है कि आपका झुकाव किसी लड़की की ओर हुआ । इस झुकाव से आपके जीवन का लक्ष्य व अपना मानसिक संतुलन डगमगा उठा है जो कि तनाव का कारण है । आपको चाहिए कि व्यावहारिक बनें, दुनियादारी सीखें । अपनी

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें । —संपादक

विचारधारा को अपने मित्रगण आदि से व्यक्त करें, वाद-विवाद करें—इस प्रकार आप वास्तविकता में कदम रख सकेंगे तथा कल्पना, आदर्श व व्यावहारिकता में संतुलन बना पाएंगे ।

दौरा पड़ता है

अ. कु. शर्मा, मेरठ : २५ वर्ष का शादीशुदा युवक हूं तथा न्यूजपेपर में कंपोजिटर हूं, १००० रु. पाता हूं । पेशाब का रोगी हूं, स्वप्नदोष चार-पांच बार महीने में हो जाता है । नवंबर १९८७ में दो बार दौरा पड़ा तथा अब ढाई-तीन महीने बाद दौरा पड़ जाता है । रात की भारी ड्यूटी है । सर में भारीपन व भन-भन की आवाज कानों में आती है । शरीर व हाथ में अचानक झटका लगता है । दौरा पड़ने से पहले मेरे कानों में तेज आवाज व पैरों में तेज झनझनाहट-सी होती चली जाती है और इतनी तेजी-से होती है कि मैं बेहोश हो जाता हूं । दौरा पड़ने के पश्चात् याददाश्त खतम हो जाती है । शरीर व पैरों में बेचैनी आ जाती है । अंगरेजी, आयुर्वेदिक तथा आजकल होम्योपैथिक दवा ले रहा हूं । डॉक्टर साहब क्या यह रोग मिरगी है, क्या मुझे दवा ४-५ साल लेनी पड़ेगी ? मुझे मानसिक तनाव तो नहीं ? न ही ऐसा रोग हमारे परिवार में किसी और को है । कभी-कभी कोई बात समझ ही नहीं आती ।

आपका रोग वास्तव में मिरगी का ही है । आजकल इसे हम रोग नहीं मानते, अपितु किसी रोग का लक्षण ही मानते हैं—इसलिए इसका कारण ढूंढ़ना भी आवश्यक है । यह केवल अच्छे स्नायु विशेषज्ञ द्वारा जांच करा व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ई. ई. जी., सी. टी. स्कैन आदि करा असली रोग का पता लगा उसे ठीक किया जा सकता है। ऐसा आवश्यक नहीं कि मिरगी पारिवारिक व वंशानुगत ही मानसिक तनाव या स्वप्नदोष इसके मूल कारण हैं। दौरा पड़ने से पूर्व झनझनाहट व कान में आवाज को हम 'औरा' कहते हैं तथा बेहोशी व बाद में भूल भी सभी मिरगी के ही लक्षण हैं। इसी वजह से कई बार बात समझ में भी नहीं आती। हलका दौरा केवल झटके का रूप लेकर हो जाता है।

लंबे अरसे तक इलाज आवश्यक है तथा आप दौरे से सही आधुनिक इलाज द्वारा मुक्ति पा सकते हैं।

भय के वातावरण में प्यार

सुशीलकुमार, कलकत्ता : २८ वर्ष का बी.ए. पास स्वस्थ युवक हूं। दो नौकरी छोड़ तत्पश्चात केंद्रीय सेवा में यहां पर हूं। बचपन से ही माता-पिता को लड़ते-झगड़ते देखा। मां-बाप का प्यार भी भय के माहौल में मिला। पिताजी ने आत्महत्या की धमकी देकर मेरी शादी एक अशिक्षित महिला से की। शादी के पहले पढ़ाई, प्रतियोगिता, मित्रों की गोष्ठी, राजनीति व सामाजिक घटनाओं में जितनी दिलचस्पी थी—अब शादी के बाद प्रायः सभी समाप्त हैं। पिताजी व उनके समर्थकों से घृणा हो गयी है। हालांकि मैं और मेरी पत्नी दोनों ही भावुक हैं और दोनों ही एक-दूसरे को बेहद प्यार करते हैं, पर एक-दूसरे को बर्दाश्त नहीं कर पाते है। इन दिनों कलकत्ता में मैं अकेला ही हूं। अकेला रहता हूं तो मन घर की ओर भागता है—घर में एक-दो दिन बाद ही पिताजी से झड़प। पत्नी के साथ भी कुछ ऐसी ही स्थिति है। चाहकर भी कुछ सामान्य स्थिति नहीं बना पाता हूं। कहीं मैं स्वयं असामान्य तो नहीं। परिणाम तनाव तथा इसका प्रतिकूल प्रभाव मेरी नौकरी पर भी पड़ा है। याददाश्त कमजोर है। कोई काम पूरा नहीं कर पाता। कभी मन करता है सब छोड़ भाग जाऊं। कल्पना में सबकी मृत्यु सोचता हूं। सिगरेट, उपन्यास, फिल्म, मदिरापान (यदाकदा) सभी की शरण ली, परंतु कोई स्थायी उपाय न मिला, क्या यह मनोस्थिति बाद में घातक सिद्ध हो सकती है ?

आप तनाव में हैं—इसमें कोई शक नहीं। आपकी कमजोर याददाश्त, काम को पूरा न कर पाना—यह भी तनाव के ही लक्षण हैं। आप इस समय अपने पिता से दूर हैं—जिनसे झड़प होती है—आप अपनी पत्नी को पास बुलाकर कलकत्ता में रहें। वैसे भी केंद्रीय नौकरी में स्थानांतरण होता ही है। शायद लंबे समय से पिताजी के साथ आप रहे हैं। आपकी पत्नी से झड़प जब साथ रहेंगे तो कम होगी, क्योंकि आप संयुक्त परिवार में रहकर जब घर के वातावरण से झल्ला उठते हैं तो ऐसी मनोस्थिति में अपनी पत्नी से भी गुस्सा करते हैं। कुछ न कुछ मनमुटाव जिंदगी का अभिन्न अंग होता ही है—ऐसा मानकर आगे बढ़ें। बचपन में घर के वातावरण के असर को अब भूल जाएं इस तरह से अपने परिवार (अपने पत्नी-बच्चों) के संग रहने का प्रयत्न करें। तनाव से भागने का तरीका है—सिगरेट, शराब या कल्पना में सबकी बारी-बारी मौत। भागने के बजाय, तनाव के कारण को आड़े हाथों लेना पड़ता है। सबसे पहले आपको प्रतिकूल परिस्थिति या बीता हुआ बचपन इन सबको दोषी ठहराने की मनोस्थिति त्याग—अपनी समस्या का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लें। फिर भागने के तरीके त्याग, तनाव के कारण समझें— फिर भी यदि समस्या न सुलझे तो मनोचिकित्सक द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : मास में अनिश्चितता तथा विषम स्थितियों का उदय होगा। साहसिक प्रयासों से सफलता मिलेगी, पारिवारिक सहयोग उत्साहवर्धक होगा। १ से ६ के मध्य नवीन कार्यों में धन व्यय होगा। आर्थिक अस्थिरता से व्यर्थ भय होगा। आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी। ८ से १५ के मध्य शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। शत्रु-पक्ष के प्रयास विफल होंगे। प्रियजनों से भेंट होगी। धर्म, आध्यात्म, रहस्य अथवा गूढ़ विषयों पर सत्संग होगा। १६ से २४ के मध्य जोखिमपूर्ण कार्यों से आर्थिक क्षति होगी। उदर अथवा रक्त संबंधी विकारों का सामना करना होगा। आत्म-विश्वास तथा पराक्रम से राजकीय एवं सामाजिक कार्यों में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। मासांत में संपत्ति संबंधी कार्यों की पूर्ति होगी। शत्रु-पक्ष का पराभव होगा। आमोद-प्रमोद पर व्यय होगा।

महिलाओं को संघर्षपूर्ण सफलता की प्राप्ति होगी। सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी। यात्रादि का योग उपस्थित होगा।

विद्यार्थियों को परीक्षा प्रतियोगिता संबंधी सुखद परिणाम मिलेगा। पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी।

वृषभ : मास मध्यम फलदायी होगा। शारीरिक अस्वस्थता होगी। आजीविका संबंधी प्रयासों के आशानुकूल परिणाम मिलेंगे। १ से ६ के मध्य पारिवारिक सुख उत्तम होगा। जमीन जायदाद के कार्यों की पूर्ति होगी। व्यावसायिक कार्यों की अधिकता से मानसिक तनाव बढ़ेंगे। ८ से १५ के मध्य शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। नवीन उत्तरदायित्व का योग होगा। १६ से २४ के मध्य स्वास्थ्य संबंधी पीड़ा का सामना करना होगा। वाहनादि का सावधानी से प्रयोग करें। पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा। शत्रु पक्ष पर विजय मिलेगी। मासांत में नवीन आर्थिक संसाधनों का उदय होगा। लाभदायी यात्राएं होंगी। आध्यात्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

महिलाओं को पारिवारिक सहयोग उत्साहवर्धक होगा। नवीन कार्यों में सफलता

गृह स्थिति : सूर्य १५ जून से मिथुन में, मंगल मीन में, बुध ८ से वृषभ में, २५ से मिथुन में, गुरु मिथुन में, शुक्र १९ से वृषभ में, शनि वक्री होकर पुनः धनु राशि में, हर्षल नेपच्यून धनु में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व और त्यौहार

२ जून गंगा दशहरा, सेतुबंध रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस, ४ निर्जला एकादशी तथा चंपक द्वादशी, ५ भौम प्रदोष, ८ स्नानदान व्रतादि की ज्येष्ठ पूर्णिमा, १२ संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, १६ शीतलाष्टमी, १९ योगिनी एकादशी व्रत, २० प्रदोष, २२ स्नान दान श्रद्धादि की दर्श अमावस्या, २४ चंद्र दर्शन रथ यात्रा, २६ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, २८ कुमार षष्ठी । विवस्वत सप्तमी (सूर्य पूजा), ३० दुर्गाष्टमी ।

मिलेगी । विशिष्ट कार्य की पूर्ति से यश प्रतिष्ठा वृद्धि होगी ।

विद्यार्थियों को शिक्षा कार्यों में सफलताजनक समाचार मिलेगा । आमोद-प्रमोद पर व्यय होगा । यात्राओं की अधिकता होगी ।

मिथुन : मास में प्रतिकूल स्थितियों पर आत्म-विश्वास से विजय मिलेगी । रोजगार की दिशा में गत्यावरोध होंगे । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से नवीन योजनाओं में प्रगति होगी । पारिवारिक वातावरण खिन्नतापूर्ण होगा । शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता चिंतनीय होगी । ८ से १५ के मध्य कार्यों की अधिकता तथा विरोधाभास का सामना करना होगा । धैर्य तथा संयम से कार्य करें । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी । १६ से २४ के मध्य प्रियजन के कारण भावनात्मक पीड़ा का सामना करना होगा । आध्यात्म के प्रति झुकाव बढ़ेगा । संपत्ति विवादों को टालना हितकर होगा । मासांत में शत्रु-पक्ष से सुलह होगी । मित्रों का समागम होगा, आमोद-प्रमोद पर धन व्यय होगा । व्यावसायिक कार्यों में व्यवधान उपस्थित होंगे ।

महिलाओं को पारिवारिक सहयोग मिलेगा । स्वास्थ्य संबंधी कष्ट होंगे । आजीविका के क्षेत्र में शत्रु-पक्ष प्रभावी होगा, पराक्रम से सफलता मिलेगी ।

विद्यार्थियों को सामाजिक एवं पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी । सुखद तथा मनोरंजक यात्रा होगी ।

कर्क : मास उपलब्धिपूर्ण होगा । आजीविका संबंधी प्रयास सार्थक होंगे । विगतकाल से चली आ रही समस्याओं का समाधान होगा । १ से ७ के मध्य शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से कार्यों में सफलता मिलेगी । नवीन उत्तरदायित्व तथा कार्यों की अधिकता होगी । ८ से १५ के मध्य राजनीतिक संबंधों का विस्तार होगा । मित्रों के सहयोग से लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी । १६ से २४ के मध्य रचनात्मक तथा सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी । आध्यात्मिक अभिरुचि का विकास होगा । मासांत में शत्रु पक्ष से सावधानी रखें । गुप्त षड्यंत्र द्वारा प्रतिष्ठा को क्षति पहुंचाएंगे ।

महिलाओं को उत्साहवर्धक सफलता मिलेगी । भेंट अथवा पुरस्कार प्राप्त होगा । मांगलिक कार्यों में यश मिलेगा ।

विद्यार्थियों को परीक्षा प्रतियोगिता में मनोवांछित सफलता मिलेगी । पुरस्कार अथवा सम्मान मिलेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह : मास में प्रतिकूल परिस्थितियों पर साहसिक प्रयासों से सफलता मिलेगी। पारिवारिक अथवा सामाजिक कार्यों पर धन व्यय होगा। पीड़ादायी यात्रायोग उपस्थित होगा। १ से ७ के मध्य शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। शत्रु पक्ष के कारण तनाव विद्यमान रहेगा। ८ से १५ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी। जोखिमपूर्ण कार्य टालना हितकर होगा। पारिवारिक अस्वस्थता पर व्यय होंगे। १६ से २४ के मध्य आध्यात्म के प्रति झुकाव बढ़ेगा। सत्संग सार्थक होगा। लंबित योजनाओं में वांछित प्रगति होगी। श्रम साध्य सफलता मिलेगी। मासांत में परोपकारी प्रयासों से पीड़ा होगी। पारिवारिक अथवा सामाजिक कार्यों में धन व्यय होगा। संपत्ति के कार्यों में उल्लेखनीय प्रगति होगी।

महिलाओं को अस्वस्थता का सामना करना होगा। पारिवारिक कार्यों में यश मिलेगा। आर्थिक अस्थिरता रहेगी। स्वजनों से भेंट होगी।

विद्यार्थियों को श्रम साध्य सफलता मिलेगी। मित्रों से व्यर्थ विवाद टालें। प्रवास पीड़ादायी होगा।

कन्या : मास मिश्रित फलदायी होगा। पारिवारिक कार्यों से पीड़ा होगी। सामाजिक जीवन प्रतिष्ठापूर्ण होगा। १ से ७ के मध्य लेखन सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। साहसिक प्रयासों से प्रतिकूल स्थितियों पर विजय मिलेगी। ८ से १५ के मध्य धन संपत्ति संबंधी दौड़धूप की अधिकता होगी। शत्रु-पक्ष के द्वारा व्यवधान उपस्थित होंगे। स्वजनों से पीड़ा होगी। १६ से २४ के मध्य सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी। संपत्ति के विवाद में विजयोपलब्धि उत्साहवर्धक होगी। मासांत में पारिवारिक वातावरण खिन्नतादायी रहेगा। व्यर्थ विवादों से भावनात्मक पीड़ा का सामना करना होगा। परोपकारी कार्यों से यश मिलेगा।

महिलाओं को सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आजीविका के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि होगी। पारिवारिक वातावरण तनावपूर्ण रहेगा।

विद्यार्थियों को साधारण सफलता का योग होगा। नवीन कार्यों में सफलता मिलेगी। प्रियजनों का सहयोग मिलेगा।

तुला : मास में शत्रु पक्ष से संघर्ष में विजय प्राप्त होगी। आर्थिक कार्यों में जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। भावुकता अथवा शीघ्रता में लिया गया निर्णय घातक होगा। १ से ७ के मध्य शत्रु-पक्ष के प्रभाव की अधिकता होगी। उच्चाधिकारी वर्ग से वैचारिक विषमता का सामना करना होगा। धैर्य तथा संयम से कार्य करना हितकर होगा। ८ से १५ के मध्य लेखन सृजन रचनात्मक अथवा सार्वजनिक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा। शत्रु पक्ष का पराभव होगा। १६ से २४ के मध्य रक्त संबंधियों से व्यर्थ विवाद तथा तनाव का सामना करना होगा। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। आजीविका की दिशा में प्रयास सार्थक होंगे। मासांत में परोपकारी कार्यों से बचें। भावुकतापूर्ण निर्णय अहितकर होगा। उदर विकार से पीड़ा होगी।

महिलाओं की आजीविका के क्षेत्र में उन्नति होगी। पारिवारिक सामंजस्य मनोनुकूल होगा। सुखद प्रवास होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों को सुखद समाचार मिलेगा। मांगलिक कार्यों हेतु यात्रा होगी।

वृश्चिक : मास में कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा। राजकीय सहयोग से प्रभाव-वृद्धि होगी। विवादास्पद कार्यों को टालना हितकर होगा। १ से ७ के मध्य यात्राओं की अधिकता होगी। आर्थिक अस्थिरता विद्यमान रहेगी। संपत्ति-कार्यों में धीमी गति से प्रगति होगी। स्वजनों से अकारण विरोध होंगे। ८ से १५ के मध्य आजीविका की दिशा में उच्चाधिकारियों की अनुकंपा का लाभ मिलेगा। नवीन योजनाओं में प्रगति होगी। शत्रु-पक्ष से सर्तकता हितकर होगी। १६ से २४ के मध्य उत्तेजना तथा आवेग पर नियंत्रण रखना हितकर होगा। आर्थिक संसाधनों का विकास होगा। मासांत में धर्म,आध्यात्म संबंधी रुझान बढ़ेगा। परोपकार में समय व्यतीत होगा।

महिलाओं को हठवादी प्रकृति त्यागकर संयम से कार्य करना हितकर होगा। आकस्मिक लाभ मिलेगा। स्वजनों से भेंट होगी। रचनात्मक कार्यों से यश मिलेगा।

विद्यार्थियों का मध्यम समय होगा। पारिवारिक सहयोग से समस्याओं का समाधान होगा।

धनु : मास में कीर्ति तथा सफलता मिलेगी। नवीन योजनाओं से भाग्य वृद्धि होगी। प्रियजनों का सहयोग मिलेगा। १ से ७ के मध्य आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आकस्मिक धन लाभ से लंबित समस्या हल होगी। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा। ८ से १५ के मध्य विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा। उत्साह तथा व्यस्तता की अधिकता होगी। संपत्ति संबंधी विवादों का स्वजनों के सहयोग से समाधान होगा। १६ से २४ के मध्य अपूर्ण योजनाओं में चमत्कारी प्रगति होगी। आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। औद्योगिक कार्यों में विशेष सफलता संभावित है। मासांत में धर्म, आध्यात्म के प्रति झुकाव बढ़ेगा। पारिवारिक वातावरण प्रसन्नतादायी होगा। सुखद समाचार मिलेगा।

महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। संकल्प पूर्ति अथवा विशिष्ट लाभ होगा। रक्त संबंधियों की चिंता होगी।

विद्यार्थी वर्ग की प्रियजनों तथा मित्रों से भेंट होगी। शिक्षा-कार्यों में शिथिलता होगी।

मकर : मास उत्साहवर्धक एवं उपलब्धिपूर्ण होगा। साहस तथा पराक्रम से प्रतिकूल परिस्थितियों पर नियंत्रण होगा। आध्यात्मिक तथा सृजन संबंधी कार्यों में रुझान बढ़ेगा। १ से ७ के मध्य उच्चाधिकारियों के सहयोग से आकस्मिक एवं अनपेक्षित लाभ मिलेगा। जोखिमपूर्ण सौदे लाभदायी होंगे। ८ से १५ के मध्य संपत्ति विवाद का समाधान होगा। पुरुषार्थ से प्रतिकूल स्थितियों पर नियंत्रण होगा। कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का सामना करना होगा। १६ से २४ के मध्य सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों से यश मिलेगा। आध्यात्मिक क्रियाकलापों की अधिकता होगी। मासांत में धार्मिक स्थल की यात्रा होगी। यात्रा उत्साहवर्धक तथा उपलब्धिपूर्ण होगी।

महिलाओं को पारिवारिक अथवा मांगलिक कार्यों से यश मिलेगा। रोजगार संबंधी दायित्व बढ़ेगा। स्वजनों से भेंट होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों को सुखद समाचार मिलेगा। सार्वजनिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी।

कुंभ : नवीन पद प्रतिष्ठा अथवा दायित्व मिलेगा। पारिवारिक कार्यों में व्यय होगा। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा। विवादास्पद कार्य टालना हितकर होगा। १ से ७ के मध्य शोध, लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों से लाभ मिलेगा। आध्यात्मिक रुझान बढ़ेगा। ८ से १५ के मध्य पारिवारिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यय होगा। प्रवास की अधिकता होगी। उच्चाधिकारी की अनुकंपा से नवीन पद दायित्व मिलेगा। १६ से २४ के मध्य संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्यय होगा।

महिलाओं को आर्थिक अस्थिरता होगी। आजीविका संबंधी उन्नति होगी। नवीन दायित्व से प्रसन्नता होगी। पारिवारिक चिंताएं रहेंगी।

विद्यार्थियों को उत्साहवर्धक समाचार मिलेगा। आमोद-प्रमोद की अधिकता से रचनात्मक कार्यों में अवरोध उपस्थित होगा।

मीन : आर्थिक साधनों में वृद्धि होगी। नवीन योजनाओं में धन व्यय होगा। शत्रु-पक्ष से सर्तकता रखें। अस्वस्थता का सामना करना होगा। १ से ७ के मध्य रुका हुआ धन मिलेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। उच्चाधिकारियों के सहयोग से नवीन आर्थिक संसाधनों का उदय होगा। ८ से १५ के मध्य जीवनसाथी से वैचारिक विषमता पीड़ादायी होगी। यात्रा तथा दौड़धूप की अधिकता रहेगी। रक्त संबंधियों के सहयोग से संपत्ति समस्या का समाधान होगा। शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता चिंतनीय होगी। १६ से २४ के मध्य शत्रु-पक्ष का पराभव होगा। रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी।

महिलाओं को उन्नति के अवसर मिलेंगे। राजकीय एवं पारिवारिक दायित्व बढ़ेंगे। आध्यात्मिक सत्संग होगा। उपहार, भेंट अथवा पुरस्कार मिलेगा।

विद्यार्थियों को उत्साहवर्धक परिस्थितियां मिलेंगी। सुषुप्त चेतना का उदय होगा।

ज्योतिषधाम पत्रिका, १२/४ ओल्ड सुभाष नगर, गोविन्दपुरा, भोपाल (म.प्र.)

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. नेपच्यून (वरुण) का, ख. लगभग पृथ्वी के चंद्रमा के बराबर, ग. वह उल्टी दिशा में ग्रह के चारों ओर घूमता है, २. क. नामीबिया, ख. दक्षिण अफरीका का, ३. क. २९.२ प्रतिशत (१९८७-८८), ख. ४८.७ प्र. श. (१९७७-७८), ४. ४७.६७५ हैक्टेयर (१९८१-८३ से १९८५-८७ की अवधि में) ५. स्व. डॉ. भीमराव अम्बेडकर (संविधान-निर्माता), ६. क. भारत के बाबा आम्टे (कुष्ट रोगियों के लिए जीवन समर्पित करनेवाले) तथा आस्ट्रेलिया के वैज्ञानिक धर्माचार्य चार्ल्स बीर्च को संयुक्त रूप से, ख. ६ लाख अमरीकी डॉलर, ७. क. अमर शहीद सरदार भगतसिंह, ख. हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन, ८. क. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, ख. 'सुखमय जीवन' तथा 'बुद्धू का कांटा', ९. क. कलकत्ता में (१८३५ ई.), रुड़की में (१८४७ ई.), कलकत्ता में (१८४९ ई.), १०. क. गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बेंटिंक ने (१८३७ ई.), ख. फारसी, ११. कैमरे की लाइट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' प्रविष्टि ९८ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए । सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं । कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं—पाठकों के सुपरिचित कंप्यूटर ज्योतिषी — अजय भाम्भी ।

किरण कुमार, हैदराबाद
प्रश्न : आर्थिक उन्नति कब तक ? रत्न सुझायें ?
उत्तर : २० जुलाई से आर्थिक स्थिति में तेजी से सुधार आएगा । पुखराज धारण करें ।

भूपेंद्र सिंह, हल्द्वानी, नैनीताल
प्रश्न : आत्मनिर्भरता कब से ? नौकरी या व्यवसाय ?
उत्तर : सितंबर '९० से सुखद समय प्रारंभ हो रहा है । व्यवसाय बेहतर रहेगा ।

अनिल कुमार पांडेय, कानपुर
प्रश्न : विद्यमान समस्याओं का समाधान कब होगा ?
उत्तर : समस्याओं के हल होने में अभी देर लगेगी ।

अशोक केशव, नरमुंडी (बिहार)
प्रश्न : कहीं दूर बसने की इच्छा, क्या पूरी हो पायेगी ?
उत्तर : निकट भविष्य में ही आपकी यह इच्छा पूरी हो जाएगी ।

सुमन जोशी, बीकानेर (राजस्थान)
प्रश्न : मेडिकल लाइन में जाने का संयोग कब तक है ?
उत्तर : इस बार प्रयास करें । सफलता मिलेगी ।

राकेश कुमार गुप्ता, सहारनपुर
प्रश्न : उ.प्र. सिविल सर्विस मिलेगी या नहीं ? रत्न सुझायें ।
उत्तर : उ.प्र. सिविल सर्विस मिलने की प्रबल संभावना है । नीलम धारण करें ।

कु. प्रभा नौटियाल, हरिद्वार
प्रश्न : नौकरी और मानसिक शांति कब मिलेगी ? कौन-सा रत्न धारण करें ?
उत्तर : पन्ना धारण करें, नौकरी और मानसिक शांति शीघ्र प्राप्त होंगी ।

शालिनी शर्मा, नयी दिल्ली
प्रश्न : विवाह कब होगा ? घर, वर कैसा होगा ?
उत्तर : आपका विवाह सितंबर '९० और मई '९१ के मध्य होगा । घर अच्छा होगा और वर के साथ तालमेल बैठाने में समय लगेगा ।

मुकुल राजमोहन मिथु, अजमेर
प्रश्न : सहायक जनसंपर्क अधिकारी पद पर पदोन्नति कब तक ?
उत्तर : इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में ।

सुनिता कुमारी, गया
प्रश्न : संतान और पति की नौकरी कब ?
उत्तर : संतान अगले वर्ष, लेकिन गर्भावस्था में स्वास्थ्य के प्रति जागरुक रहें । पति को नौकरी इस वर्ष मिलेगी । पति का भाग्योदय संतानोत्पत्ति के बाद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती आशा कुमारी, मुरगांव (बिहार)

प्रश्न : ग्रसित असाध्य रोग से छुटकारा कब तक ?

उत्तर : वास्तव में आपकी बीमारी की ठीक से डायगनोसिस (पहचान) नहीं हो पायी है । योग्य एवं अनुभवी चिकित्सक का परामर्श लें ।

नुसरत अली खां, कानपुर

प्रश्न : नौकरी में पदोन्नति एवं स्थानांतरण कब तक होगा ?

उत्तर : नवम्बर तक दोनों कार्य पूर्ण होंगे ।

भगवतीलाल पंचाल, सागवाड़ा (राजस्थान)

प्रश्न : विदेश कब जाऊंगा ?

उत्तर : इस वर्ष नहीं ।

डॉ. विजय कुमार वर्मा, मैरवा (बिहार)

प्रश्न : धारा ४०६ के अंतर्गत मेरे ऊपर लगाये आरोप का समाधान कब होगा तथा मेरी हार होगी या जीत ?

उत्तर : समाधान में समय लगेगा लेकिन आपके पक्ष में रहेगा ।

रश्मि दुबे, इलाहाबाद

प्रश्न : शादी कब ? पति कैसा एवं वैवाहिक जीवन कैसा रहेगा ?

उत्तर : शादी मार्च '९१ तक । पति सुंदर एवं योग्य होगा । वैवाहिक जीवन सुखद रहेगा ।

अरुण कुमार झा, रांची

प्रश्न : सितंबर १९८७ में नौकरी चली गयी । क्या फिर मिलेगी और कब ?

उत्तर : इस वर्ष संभावना नहीं है ।

गोपींद पंड्या, पिपलोदा

प्रश्न : राजनीतिक भविष्य कैसा होगा ?

१००

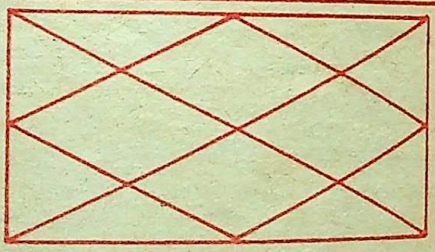

नाम.....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .....महीना..... सन. . .

जन्म-स्थान..... जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा (वर्तमान) .....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकाएं

.....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि—१००) 'कादम्बिनी',
हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

अंतिम तिथि : २० जून, १९९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर : हाल-फिलहाल बहुत अच्छा नहीं है ।

कौशल किशोर सिंह, बारा (नेपाल)

प्रश्न : १९९० की इंजीनियरिंग की परीक्षा में सफलता मिलेगी ?

उत्तर : सफलता प्राप्त होगी ।

जी. अस्थाना, लखनऊ

प्रश्न : पदोन्नति कब तक ?

उत्तर : पदोन्नति अगस्त '९० के बाद होगी ।

गोपाल कृष्ण सोनी, भीलवाड़ा (राजस्थान)

प्रश्न : भाग्योदय कब ? क्या राजयोग है ?

उत्तर : राजयोग है, भाग्योदय अगले वर्ष ।

कु. डेजी, बैतूल

प्रश्न : क्या विभागीय पी.एस.सी. परीक्षा में सफलता का योग है ?

उत्तर : सफलता का योग है ।

अशोक कुमार शर्मा, मनईपुर

प्रश्न : प्रवक्ता पद पर नियुक्ति कब होगी ?

उत्तर : प्रवक्ता पद पर नियुक्ति पांच माह के भीतर होगी ।

रजत श्रीवास्तव, नयी दिल्ली

प्रश्न : अधिकारी बनने का योग है या नहीं ? सफलताएं कब से ?

उत्तर : अधिकारी बनने का योग है, सफलताओं का सिलसिला अगस्त से प्रारंभ होगा !

शंभूराम सिंधी, भोपाल

प्रश्न : सेवानिवृत्ति के पश्चात कौन-सा व्यवसाय, वकालत कब से ?

उत्तर : व्यवसाय प्रारंभ करें । धीरे-धीरे कार्य जमेगा ।

राजेन्द्र कुमार, गाजियाबाद

प्रश्न : अच्छी नौकरी कब मिलेगी ? देश में या विदेश में ?

उत्तर : अच्छी नौकरी शीघ्र ही मिलेगी । विदेश में भी संभावना है ।

भूपेश शर्मा, दिल्ली

प्रश्न : निजी मकान व व्यवसाय कब तक ?

उत्तर : पहले व्यवसाय जमायें । मकान तो भाग्य में तीन हैं ।

चक्रधर सिंह, नैनीताल

प्रश्न : क्या विदेश में १९९० में शिक्षा का अवसर है ?

उत्तर : संभावना कम है ।

वीरेन्द्र कुमार वर्मा, अहमदाबाद (गुजरात)

प्रश्न : संतान योग है या नहीं ? है तो कब तक ?

उत्तर : संतान योग १९९१ के उत्तरार्द्ध में है ।

भाम्बी कन्सलटेंसी
डी-२/२, जनकपुरी, नयी दिल्ली—५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन करते हुए उपराष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा

हिंदी के प्रति रुचि जगाने की आवश्यकता

नयी दिल्ली । काशी नागरी प्रचारिणी द्वारा प्रकाशित हिंदी विश्व साहित्य कोश (प्रथम खंड) के प्रकाशनोद्घाटन के अवसर पर भाषण करते हुए उपराष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने कहा कि जब हिंदी से द्वेष रखनेवाले लोग भी उसमें ही बोलने का आग्रह करने लगेंगे, तभी हिंदी का विकास होगा । और यह कानून के माध्यम से नहीं बल्कि हिंदी में लोगों की रुचि जगाने से होगा ।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दिनेश सिंह ने की । मुख्य अतिथि श्री बलराम जाखड़ थे । डॉ. इंद्रनाथ चौधरी, डॉ. महेन्द्रकुमार, श्री गिरिजाकुमार माथुर ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए नागरी प्रचारिणी सभा के कार्यों की प्रशंसा की । इस अवसर पर सभा के प्रधानमंत्री श्री सुधाकर पांडेय ने सभा की वर्तमान गतिविधियों से परिचय कराया ।

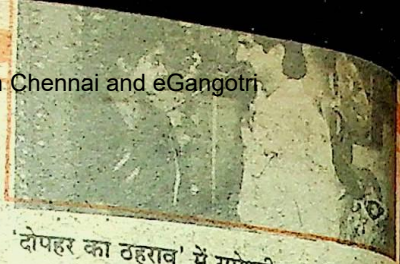

'दोपहर का ठहराव' में रामेश्वरी एवं मोहन गोखले

दोपहर का ठहराव

नयी दिल्ली । सुपरिचित लेखक एवं प्रशासक श्री उमेश सैगल के उपन्यास 'दोपहर का ठहराव' पर आधारित इसी शीर्षक का सीरियल दर्शकों द्वारा काफी सराहा जा रहा है । सभी सुखों के बावजूद जीवन की एकरसता से ऊबे एक प्रबंध निदेशक की मनःस्थिति और उसे तोड़ने के क्रम में उपजी पारिवारिक विडंबनाओं का इस धारावाहिक में सशक्त चित्रण हुआ है । धारावाहिक का निर्देशन-लेखन कामिनी सैगल एवं उमेश सैगल ने किया है ।

राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन

लखनऊ । भारतीय ज्योतिष परिषद एवं ज्योतिष योग पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में यहां १९वें राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन का आयोजन किया गया । इसका उद्घाटन शिक्षा एवं युवा कल्याण मंत्री श्री सच्चिदानंद बाजपेयी ने किया एवं अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष पं. के. ए. दुबे पद्मेश ने की । श्री पद्मेश ने कहा कि पंचांगों में एकीकरण न होने से कुंडलियां गलत बनती हैं और इसीलिए भविष्यवाणियां भी गलत होती हैं । सम्मेलन में २८६ ज्योतिषियों ने भाग लिया ।

डॉ. त्रिवेदी का सम्मान

देहरादून में साधूराम इंटर कॉलेज और उसके प्रबंध तंत्र की ओर से सुपरिचित कवि एवं पत्रकार डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी का अभिनंदन किया गया । इस अवसर पर सांसद श्री चंद्रमोहन नेगी ने डॉ. त्रिवेदी को दुशाला और मानपत्र देकर सम्मानित किया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

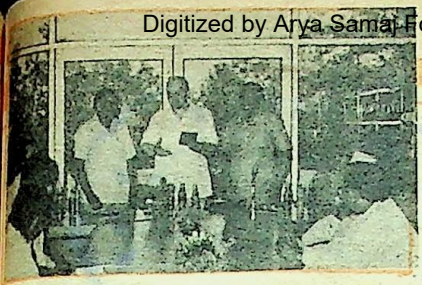

'आईना' का लोकार्पण करते हुए श्री पेचनीकोव । बायें लेखक एवं दायें श्री भारती

नाटक 'आईना' का लोकार्पण

नयी दिल्ली । सोवियत संघ के नयी दिल्ली स्थित सांस्कृतिक विभाग के पुस्तकालय में भारत के दौरे पर आये सोवियत फिल्म प्रतिनिधि मंडल के एक सदस्य श्री गेन्नादी पेचनीकोव ने डॉ. प्रेमशरण शर्मा के मंच नाटक 'आईना' का लोकार्पण किया ।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए बाल पत्रिका 'नंदन' के संपादक श्री जयप्रकाश भारती ने नाटक की विशेषताओं पर प्रकाश डाला ।

श्री गेन्नादी पेचनीकोव ने 'आईना' के रूसी रूपांतरण की आवश्यकता दर्शायी तथा फिल्म प्रतिनिधि मंडल की एक सदस्या ने इस नाटक पर रूसी में फिल्म बनाने का विचार भी व्यक्त किया । समारोह में केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक डॉ. गंगाप्रसाद विमल, डॉ. मस्तराम कपूर एवं सांस्कृतिक विभाग की एल. इर्वीनोवा ने भी अपने विचार व्यक्त किये ।

—सुनीलकुमार 'सरल'

गजलों की संगीतमय प्रस्तुति

राजधानी की साहित्यिक संस्था 'बरगद' ने त्रिवेणी सभागार में एक समारोह का आयोजन किया, जिसमें उपेन्द्रकुमार की गजलों व गीतों को संगीतबद्ध कर फरीद अहमद खां, डॉ. मानोषी मित्रा, रफीक अहमद खां, अब्दुर रहमान व मुकुल वर्मा ने प्रस्तुत किया ।

अध्यक्षता डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने की और संयोजन रईस मिर्जा ने ।

प्रस्तुति : बृजेश पांडेय

सरस्वती पुरस्कार

आठवां सरस्वती पुरस्कार डॉ. कमल किशोर गोयनका तथा लखनऊ के मंडलायुक्त श्री रमेशचंद्र द्वारा जनपद राय बरेली में खंड काव्य 'हुतात्मा' के रचयिता कविवर पं. बाल मिश्र को दिया गया ।

प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री शंभुशरण द्विवेदी 'बंधु' द्वारा संचालित इस समारोह की अध्यक्षता जिलाधिकारी रायबरेली श्री रामशरण वार्ष्णेय द्वारा की गयी ।

—कमलेश भट्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ अंत में

है तो मिट्टी का घोड़ा पर काम तो आ रहा है !

छाया : शिव चंद्र

110504

दी हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में
मुद्रित तथा प्रकाशित
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११००००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110504

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar